दुनिया के अजूबे कुदरत के करिश्मे

सामान्य ज्ञान (GENERAL KNOWLEDGE)

* संग्रीकरण :- सौ. प्रगती प्रभाकर अकिम

* छायांकन :- श्री सुधीर वासुदेवराज लिंगायत
आर्टटेक ग्राफीक्स, ७८९/९०, गुरुवार पेठ, पुणे- मो. ९४२२३६३३११

* सौजन्य :- पार्टस् कॉटेज, ६-ए, ताडीवाला रोड, दिवाडकर अपार्टमेंटस्, पुणे- ४११००१

* संशोधन, शुद्धिकरण:- श्री अशोक चांदमल सिंहल

* प्रेषक व्यवस्था :- श्री मोहन तुलस्यान (तुलस्यान एक्सप्रेस कुरिअर) फोन नं.२६११९२९१,
३, सागर अपार्टमेंटस्, फ्लॅट नं.८, ताडीवाला रोड, पूना-४११००१
घर-२६०५०७६१ मो.९८२३०४४८३२

* सहयोगी छायांकन :- रश्मि हीरा - संजय हीरा

* पॅकिंग श्री ओमप्रकाश बलभद्रप्रसाद अग्रवाल

* संकलन कर्ता :- श्री अनन्तसुत मणिरत्नम् महेन्द्रकुमार पाटोदिया

कोनार्क इन्क्लेव्ह, बी-८, बंड गार्डन रोड, पुणे - १

फोन नं. - २६१६२६७२, २६०५९६७४, २६०५९५०९

* प्रकाशन नारायणी देवी सांस्कृतिक भवन ट्रस्ट
श्री नारायणी धाम, सर्व्हे नं. ७४/१-बी, प्लॉट नं. १७-१८-१९,
कात्रज दूध डेअरी के पीछे, सातारा रोड, पुणे-४११०४३ फोन- २४३६५१५१

* अब वफा की उम्मीद भी किस से करें भला, मिट्टी के बने लोग कागजों में बिक जाते हैं।

* ऐ इंसान, दान करना है तो गरीबों को रोटी दान कर,
कब तक इन देवस्थानों, मंदिर मस्जिदों, गुरुद्वारों और गिरजाघरों को अमीर बनाता रहेगा।

* मूल्य - आपकी ज्ञानवृद्धि हो।

ग्रन्थ प्राप्ति का स्थान

१) महालक्ष्मी मंदिर,
नेहरू स्टेडियम के पास,
सारस बाग, पुणे- ४११०३७

२) नारायणी देवी सांस्कृतिक भवन ट्रस्ट, (राणी सती मन्दिर)
सर्व्हे नं. ७४/१-बी/२, प्लॉट नं. १८-१९,
कात्रज दूध डेअरी के पीछे, सातारा रोड,
पुणे- ४११ ०४६ फोन नं. २४३६५१५१

३) अमरनाथ अग्रवाल
१०३१, बुधवार पेठ, जगोबादादा तालीम के पास,
पूना-४११००२ फोन नं. ऑ.२४४७३३१० घर-२५४३०२७४

४) डॉ. सुशील भारूका
आर्च डेव्हलपर्स, सिटी प्राईड, मोंढा नाका, जालना रोड,
औरंगाबाद फो. ०२४०-२३४५९५५ मो. ९८२३०२८४१२

५) श्री जगदीश बाघमल अग्रवाल
हॉटेल टूरिस्ट, मंगलवार पेठ, पुणे- २

६) श्री शाम ग्यानीराम अग्रवाल
आज का आनंद, शिवाजीनगर, पुणे-५
फोन ऑ. २५५३४८८८

७) श्री सुशीलकुमारजी अग्रवाल
एस-३, जनता कॉलनी, जयपुर-३०२००४
फोन नं. ऑ. ०१४१-२६०६७४६, मो. ९८२९०६०६७४

८) श्री प्रेमप्रकाश सूतवाला
५६, नवशील अपार्टमेंट्स, ब्लॉक नं. ५,
फ्लैट नं. २, टैगोर रोड, कैंटोनमेंट्स,
कानपुर- २०८००४ मो. ९३३५८७२९४४

९) श्रीमती गीता जयप्रकाश गोयल
बिल्डिंग ९ए, ११ वां मजला, गंगा सॅटेलाईट,
वानवडी, पुणे- ४११०४० मो. ९८६०००००२२२
फोन नं. ऑ. २६१४०२५१ घर- २६८३७४३४

१०) शंकरलाल रिणवाँ
धानुका आश्रम, परिक्रमा मार्ग, रमण रेती,
वृंदावन- २८११२१ (यू.पी.) मोबाईल -०९७५६२५८२४२
फोन नं. ०५६५-३२९०८०४, २५४००७५, २५४०७३१

११) श्री विजय चौधरी
आशिष, विमान नगर, खामगांव-४४४३०३
फोन नं. (०७२६३) २५२४०३ ऑ. २५३११६

१२) श्री बनवारीलाल अग्रवाल
१६-११-७४१/डी/३६, मूसारामबाग,
हैद्राबाद- ५०००३६ मो. ९४२४६३५४९१९

१३) श्री किरण अग्रवाल
कुसुम बंगलो, आकाशगंगा सोसायटी,
कृष्णचरन अपार्टमेंटस् के सामने, काठे गल्ली, द्वारका,
नासिक - ००१ फो. (०२५३) ८०४६३३, मो. ९८५०३०४०६१

१४) श्री देवीप्रसाद सरावगी
गोकुलधाम,२९बी-२ रा मजला, ३२/१बी,
रामकृष्ण समाधि रोड, कलकत्ता-७०००५४
फोन नं. घर-२३२०१४१४ ऑ.२३५३८७६८

१५) श्री मोतीलाल डेंगला
अरुणोदय, ११८९/ए, १३-मेन हॉल, दूसरा स्टेज
बेंगलोर- ५६०००८ फो. २५२६४२०५, मो.९३४१२६२४९३

१६) अग्रवाल समाज, पुणे
श्री अग्रसेन भवन (वासुदेव जानी)
१०८८, रविवार पेठ, पुणे- ४११००२
फोन- २४४७६१६५, २४४७७७५६

१७) श्री राजेन्द्र बेनीप्रसाद मंगल
श्री खाटू श्याम मित्र मंडल, पूना
सी.एम.ई. पुणे- ४११०३१ मो. ९७६४४५५८५५

१८) श्री बनवारीलाल जाजोदिया
रघुमणि, डी-३४, एचआयजी कॉलनी,
शॉपिंग कॉम्प्लेक्स के पीछे, आग्रा-मुंबई रोड,
इंदौर- ४५२००१ (म.प्र.)
फो. २५५९४५१ मो. ९३००५६९४७१

१९) श्रीकांत रामस्वरूप मोरारका
नानसा गेट, स्टेशन नवलगढ़- ३३३०४२
जिल्हा- झुनझुनु (राजस्थान) मो. ९४१४३१५७३०

२०) श्री अनिल पाटोदिया, मुम्बई
लॉयड इस्टेट, सी-विंग, फ्लॅट नं. ३००३/३००४,
दोस्ती एकर्स के पास, वडाला (ई), मुम्बई मो. ९८२१७१८३७४

२१) श्री दिनेशजी अग्रवाल
३/ए, प्रस्तावना अपार्टमेंट, प्रतिष्ठा कॉम्प्लेक्स,
एक्स्पेरिमेंटल स्कूल के सामने, पारले पॉईंट, सूरत
मोबाईल - ९८२४१००९४०

दुनिया के अजूबे- कुदरत के करिश्मे

सामान्य ज्ञान (GENERAL KNOWLEDGE)

विषयसूची

श्री गणेश	५
संकलन कर्ता के उद्‌गार	१४
८४ लाख योनियों का वर्गीकरण	२५
दुनिया के अजूबे	२८
कुदरत के करिश्मे	
१ कला के जीव कीट-पतंग	५६
२ कला के जीव जगत जीव जंतु	७८
अ) सरीसृप (रेप्टाइल्स) रेंगनेवाले जीव जंतु	७९
ब) स्तनपायी (ममल्स) जीव जंतु	८२
क) जलजीव जगत	८८
३ कला के जीव वनस्पति जगत	१२७
४ कला के जीव पक्षी जीव जगत	१५५

५ कला के जीव अ) वन्य जीव जगत २१३

५ कला के जीव ब) ग्राम, जीव जगत २४२

५ कला के जीव क) बर्फीले जीव जगत २५६

६ कला का जीव मनुष्य २६७

७ कला के जीव १) महामानव

अ) वैज्ञानिक व गणितज्ञ २६९

ब) महापुरुष, महायोगी, सिद्धपुरुष, बुद्धिजीवी २८७

७ कला के जीव २) अति मानव ३०१

आविष्कार व खोज ३०२

१७ वीं कला का जीव भूमापुरुष ३१७

भौगोलिक ज्ञान ३१८

सामान्य ज्ञान ३८७

क्रीडा जगत ७७४

** जिंदगी किस्मत से चलती है, यदि बुद्धि से चलती तो बीरबल बादशाह होता।*

** कितना मुश्किल है, जिंदगी का सफर, भगवान मरने नहीं देते और इंसान जीने नहीं देते।*

** कोई भी चीज अपने कमाए हुए पैसों से खरीदो शौक अपने आप कम हो जाएंगे।*

श्री गणेश

प्रत्येक शुभ कार्य में सबसे पहले भगवान गणेश की ही पूजा की जाती है। देवता भी अपने कार्यों की बिना किसी विघ्न से पूरा करने के लिए गणेश जी की अर्चना सबसे पहले करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि देवगणों ने स्वयं उनकी अग्रपूजा का विधान बनाया है। सनातन एवं हिन्दू शास्त्रों में भगवान गणेश जी को, विघ्नहर्ता अर्थात सभी तरह की परेशानियों को खत्म करने वाला बताया गया है। पुराणों में गणेशजी की भक्ति शनि सहित सारे ग्रहदोष दूर करनेवाली भी बताई गई हैं। हर बुधवार के शुभ दिन गणेशजी की उपासना से व्यक्ति का सुख-सौभाग्य बढ़ता है।

गणेश के सभी अंगों से शिक्षा मिलती है। बड़ा पेट ज्ञान का संग्रह एवं पाचन शक्ति का महत्व बताता है। वाहन चूहा सबका ध्यान रखने की शिक्षा देता है। बड़ा मस्तिष्क दूर दृष्टि एवं उच्च विचार रखने की प्रेरणा देता है। छोटी आंखों से सूक्ष्म दृष्टि एवं हमेशा सक्रिय रहने की सीख मिलती है। एक दांत से निष्ठावान एवं लक्ष्यभेदी रहने की शिक्षा मिलती है। छोटे मुंह से बात कम एवं काम ज्यादा की सीख मिलती है। लंबी सूंड़ से सफलता की मुश्किल राह में नहीं घबराने की प्रेरणा मिलती है। माथे पर चन्द्र से मस्तिष्क शांत रखने की सीख मिलती है। बड़े कान से बोले कम सुनें ज्यादा की शिक्षा मिलती है। गणेश शक्ति ओर प्रतिबद्धता की ज्ञान देते हैं। हाथ का फरसा शक्ति का प्रतीक है। गणेश ने माता की आज्ञा का पालन करने के कारण सिर को गंवा दिया था। यह हमें आज्ञा पालन की सीख देता है। इससे लगन व निष्ठा रखने की प्रेरणा मिलती है।

परिवार और व्यक्ति के दु:ख दूर करते हैं यह सरल उपाय- बुधवार के दिन घर में सफेद रंग के गणपति की स्थापना करने से समस्त प्रकार की तंत्र शक्ति का नाश होता है।

हिन्दू धर्मशास्त्रों के मुताबिक कलियुग में भगवान गणेश के धूम्रकेतु रूप की पूजा की जाती है। जिनकी दो भुजाएं हैं। किंतु मनोकामना सिद्धि के लिये बड़ी आस्था से भगवान गणेश का चार भुजाधारी स्वरूप पूजनीय है। जिनमें से एक हाथ में अंकुश, दूसरे हाथ में पाश, तीसरे हाथ में मोदक व चौथे में आशीर्वाद है। इनमें खासतौर पर श्री गणेश के हाथ में मोदक प्रतीक रूप में जीवन से जुड़े संदेश देता है। बुधवार के स्वामी बुध ग्रह भी हैं जो बुद्धि के कारण भी माने जाते हैं। इस तरह बुद्धि प्रधानता वाले दिवस पर बुद्धि के दाता श्री गणेश की मोदक का भोग लगाकर पूजा प्रखर बुद्धि व संकल्प के साथ सुख-सफलता व शांति की राह पर आगे बढ़ने की प्रेरणा व ऊर्जा से भर देती है।

ब्याह व धन कमाना हर व्यक्ति के लिए अहम होती है। परिवार की बढ़ती जरूरतों से कई बार व्यक्ति कर्जदार बन जाता है, पर समस्या तब शुरु होती है जब कर्ज को चुकाने का वक्त आता है। अक्सर ऋण चुकाते-चुकाते इन्सान का सब्र जवाब देता है। ऐसी सारी परेशानियों से मुक्ति के लिए गणेश चतुर्थी एक उत्तम अवसर है।

अग्रपूज्य गणेश के भक्त की सबसे बड़ी चाहत होती है गजानन के दिव्य अष्टस्वरूपों के दर्शन करना। अष्टविनायक की यात्रा की गणेश भक्तों की सबसे बड़ी तीर्थयात्रा है। सिद्धिविनायक, गणेश जी का सबसे लोकप्रिय रूप है। गणेश जी की जिन प्रतिमाओं की सूंड़ दायी ओर मुड़ी होती है वे सिद्धपीठ से जुड़ी होती है और उनके मंदिर सिद्धि-विनायक मंदिर

कहलाते है। सिद्धि विनायक भक्तों की मनोकामना को तुरंत पूरा करते है। मान्यता है कि ऐसे गणपति जल्द प्रसन्न व जल्द ही कुपित भी होते है कहते हैं कि अष्टविनायक की तीर्थयात्रा करनेवाले सभी भक्तों के कष्ट विघ्नहर्ता देखते ही देखते हर लेते हैं। अष्टविनायक की दिव्य तीर्थयात्रा का बड़ा महत्व है। अष्टविनायक गणपति कहे जानेवाले सभी गणेश मंदिर महाराष्ट्र में मौजूद हैं। इनमें मौजूद गणेश भगवान की सभी आठ मूर्तियां स्वयंभू मानी जाती हैं यानी इन्हें किसी इन्सान ने नहीं बनाया हैं, बल्कि ये खुद प्रकट हुई हैं। इन मंदिरों का पौराणिक महत्व व इतिहास है। इन पवित्र प्रतिमाओं के साकार होने के क्रम से ही अष्टविनायक यात्रा की जाती है।

मोरेश्वर- सबसे पहले मोरेश्वर या मयूरेश्वर के दर्शन किये जाते हैं। मयूरेश्वर मंदिर मोरगांव में करहा नदी के किनारे स्थित है। यह महाराष्ट्र के पुणे में बारामती तालुका में स्थित है इस क्षेत्र को भूस्वानंद के नाम से भी जाना जाता है, जिसका अर्थ है समृद्ध भूमि। इस क्षेत्र का आकार मोर-सा है। इसलिए इस इलाके का नाम मोरगांव पड़ गया।

सिद्धिविनायक- गणपति का ये मंदिर महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले की करजत तहसील में भीम नदी के तट पर स्थित एक छोटे से गांव में है। सिद्धटेक स्थित सिद्धविनायक को सभी अष्टविनायक में परम शक्तिमान माना जाता है। यहां सिद्धटेक पर्वत था। जहां विष्णु ने तप कर सिद्धि हासिल की थी।

बल्लाळेश्वर- पाली स्थित बल्लाळेश्वर गणेश अकेले ऐसे गणेश माने जाते हैं, जिसका नाम भक्त के नाम से है। यहां गणेश की मूर्ति को ब्राह्मण की वेशभूषा पहनाई जाती है।

वरद विनायक- ये मंदिर महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के कोल्हापूर तालुका में एक सुंदर पर्वतीय गांव महाड़ में है। भक्तों में ऐसी श्रद्धा है कि यहां वरद विनायक गणेश अपने नाम जैसे ही सारी कामनाओं को पूरा होने का वर देते हैं। प्राचीन काल में ये स्थान भद्रक नाम से भी जाना जाता था। इस मंदिर में मंददीप नाम से एक दीपक निरंतर प्रज्वलित रहता है। ये दीपक सन १८९२ से लगातार जल रहा है।

चिंतामणि गणपति- चिंतामणि गणेश का मंदिर महाराष्ट्र के पुणे की हवेली तालुका में थेउर गांव में है।

मानव कल्याण के लिए श्री गणेश ने लिया था महोदर अवतार

श्री गणेश ने ८ बार अवतार लिया और मानव जाति को कष्टों से मुक्ति दिलाई ऐसा ही एक अवतार, महोदर अवतार के बारे में अहम् जानकारी।

श्री गणेश जी के ८ अवतार- पौराणिक कथाओं के अनुसार मानव जाति के कल्याण के लिए अनेक देवताओं ने कई बार पृथ्वी पर अवतार लिए हैं। श्री गणेश जी ने भी आसुरी शक्तियों से मुक्ति दिलाने और संसार की रक्षा के लिए ऐसा किया है। श्रीगणेश के इन अवतारों का वर्णन गणेश पुराण, मुदगल पुराण और गणेश अंक आदि अनेक ग्रंथों से प्राप्त होता है। उनके अवतारों की संख्या आठ मानी जाती हे। इन अवतारों के नाम इस प्रकार हैं, वक्रतुंड, गजानन, एकदंत, विघ्नराज, महोदर, लंबोदर, विकट और धूम्रवर्ण। इस क्रम में महोदर अवतार के बारे में यहां जानकारी दी गई हैं।

जब सब देवी, देवता, ऋषि, मुनि मोहासुर के भय से आक्रांत होकर छुपने के लिए स्थान तलाशने लगे और पृथ्वी पर धर्म, कर्म हानि होने लगी तो लोग, सूर्य देव की शरण में गए और उसे नष्ट करने का उपाय पूछने लगे।

भगवान गणेश ने महोदर रूप में मोहासुर नाम के राक्षस को पराजित किया था, जो कि दैत्यगुरु शुक्राचार्य का एक शिष्य था। मोहासुर ने अपने तप से सूर्य देव को प्रसन्न किया था और उनसे त्रैलोक्य विजय का वरदान प्राप्त कर लिया था। इसके बाद दैत्य गुरु शुक्राचार्य ने उसे असुरों का राजा घोषित कर दिया। सूर्य के वरदान और अपने बल से उसने तीनों लोकों पर विजय प्राप्त कर आतंक का साम्राज्य स्थापित कर दिया। उसके इसी आतंक का निवारण गणपति ने अपने तीसरे अवतार महोदर के रूप में किया था।

श्री गणेश ने मानव जाति के कष्टों का हरण करने के लिए ८ बार अवतार लिया।

इस बार किया कामासुर के अहंकार का नाश- कामा असुर के अत्याचारों का अंत करने के लिए भगवान गणेश ने विकट अवतार लिया था। प्राचीन काल में श्री विष्णु से काम असुर उत्पन्न हुआ था और उसने शिवजी से प्राप्त वरदान के बल पर तीनों लोगों को जीत लिया था। इस पर देवगणों ने भगवान श्री गणेश की उपासना की जिससे प्रसन्न होकर उन्होंने विकट अवतार में कामा असुर से युद्ध किया। जब अंत में पराजित कामासुर उनकी शरण में चला गया, तब ब्रह्मांड को उसके अत्याचारों से मुक्ति मिली।

विष्णु का अंश था कामासुर- पौराणिक कथा के अनुसार भगवान विष्णु जब जलन्धर के वध के लिए वृंदा का तप नष्ट करने पहुंचे तो उनके शुक्र से एक अत्यंत तेजस्वी असुर पैदा हुआ। कामाग्नि से पैदा होने के कारण उसका नाम कामासुर हुआ। दैत्यगुरु शुक्राचार्य से शिक्षा प्राप्त करके उसने भगवान शिव के पंचाक्षरी मंत्र का जाप करते हुए कठोर तपस्या की, जिससे अन्न, जल त्याग के कारण उसका शरीर जीर्ण शीर्ण हो गया। तब शिवजी ने प्रकट होकर वर मांगने को कहा। उसने कामना की उसे वह ब्रह्माण्ड का स्वामी, शिवभक्ति और मृत्युन्जयी होने का वरदान प्रदान किया जाए। दैत्यों का अधिपति बनने के बाद उसका महिषासुर की पुत्री से विवाह हुआ। इसके बाद कामासुर ने रावण, शम्बर, महिष और बलि को अपनी सेना का प्रधान सेनापति नियुक्त कर दिया। धीरे-धीरे उसने पृथ्वी के समस्त राजाओं को पराजित कर, स्वर्ग पर भी अधिकार कर लिया। तब महर्षि मुद्गल के मार्गदर्शन में सभी देवी, देवता और ऋषि, मुनि श्री गणेश की उपासना करने लगे। जिससे प्रसन्न होकर वे विकट अवतार में प्रकट हुए। तब सबने उनसे कामासुर के अत्याचारों से मुक्त कराने के लिए विनती की।

श्री विकट ने सभी देवी देवताओं के साथ मिलकर कामासुर की राजधानी को घेर लिया और उसको युद्ध के लिए ललकारा। घमासान युद्ध हुआ और कामासुर के दोनों पुत्र मारे गए। कामासुर ने क्रोधित होकर श्री विकट पर अपनी गदा फेंककर प्रहार किया परंतु वह विफल हो गया। अब श्री विकट ने क्रोधपूर्ण दृष्टि कामासुर पर डाली जिससे वो मूर्छित होकर पृथ्वी पर गिर गया। उसकी समस्त शक्ति नष्ट हो गई तब भयभीत कामासुर ने विकट जी के चरणों में अपना सिर रखकर क्षमा याचना की और अस्त्र शस्त्र त्याग उनकी शरण में आ गया।

हमारे आराध्य भगवान श्री गणेशजी के कई अवतार हैं। इनमें से आठ अवतार हैं। इनमें से आठ अवतार सबसे ज्यादा प्रसिद्ध हैं। इन अवतारों का नाम श्री गणेश द्वारा संहार किए गए असुरों के नाम के अनुसार ही रखा गया है।

वक्रतुण्ड- भगवान गणेश का पहला अवतार वक्रतुण्ड का है। श्री गणेश का यह रूप ब्रह्मरूप से संपूर्ण शरीर धारण

करने वाला, मत्सरासुर का वध करनेवाला तथा सिंह वाहन पर चलनेवाला है।

एकदंत- भगवान गणेश का दूसरा अवतार एकदंत है। यह अवतार देहि ब्रह्म का धारक, मदासुर का अंत करनेवाला तथा मूषक वाहन पर चलनेवाला है।

महोदर- भगवान गणेश का तीसरा अवतार महोदर का है। यह ज्ञान ब्रह्म का प्रकाशक, महोसुर का वध करनेवाला है।

गजानन- श्री गणेश का यह चौथा अवतार है। यह सांख्य योगियों को सिद्धि देनेवाला, लोभासुर का वध करनेवाला है।

लंबोदर- पांचवां अवतार लंबोदर सत्य स्वरूप, शक्ति ब्रह्म का धारक तथा क्रोधासुर का वध करनेवाला है।

विकट- भगवान गणेश का छठा अवतार विकट का है। यह कामासुर का वध करनेवाला तथा मयूर अर्थात मोर वाहन पर चलनेवाला है।

विघ्नराज- सातवां विघ्नराज का अवतार विष्णु ब्रह्म का वाचक, ममतासुर का वध करनेवाला तथा शेषनाग वाहन पर चलनेवाला है।

धुम्रवर्ण- भगवान गणेश का आठवां अवतार धुम्रवर्ण का है। यह अवतार शिव ब्रह्म स्वरूप, अभिमानासुर का वध करनेवाला तथा मूषक वाहन पर चलनेवाला है।

यह हिंदुओं का एक उत्सव है जो भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी से चतुर्दशी तक दस दिनों तक चलता है। भाद्रपद मास के शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को गणेश चतुर्थी भी कहते हैं। गणेशोत्सव कमोबेश पूरे देश में मनाया जाता है। महाराष्ट्र में भगवान श्री गणेश को मंगलकारी देवता के रूप में पूजा जाता है। दक्षिण भारत में इनकी विशेष लोकप्रियता कला शिरोमणि के रूप में है। गणेश हिंदुओं के आदि आराध्य देव है। हिन्दू धर्म में गणेश को एक विशिष्ट स्थान प्राप्त है। कोई भी धार्मिक उत्सव हो, यज्ञ, पूजन आदि सत्कर्म हो या फिर विवाहोत्सव हो सर्वप्रथम गणाधिपति की पूजा होती है।

इसलिए मनाया जाता है गणेशोत्सव - गणेशोत्सव यानी हर्ष और उल्लास का त्यौहार जो १० दिनों तक बड़े ही धूमधाम के साथ पूरे देश में मनाया जाता है। गणेश चतुर्थी का त्यौहार प्रति वर्ष भाद्रपद के चतुर्थी तिथि को होता है। शिवपुराण के अनुसार भाद्रपद मास के कृष्णपक्ष की चतुर्थी को मंगलमूर्ति भगवान गणेशजी का जन्म हुआ थां गणेश चतुर्थी का त्योहार मनाने की परंपरा तो वर्षों से चली आ रही हैं।

हर वर्ष पूरे देश में भगवान गणपति की स्थापना की जाती है। १० दिनों तक हम गणपति बप्पा की स्थापना कर उनकी पूजा अर्चना करते हैं। हमारे धर्म ग्रंथों के अनुसार महर्षि वेद व्यास ने महाभारत की रचना की है। लेकिन लिखना महर्षि के वश में नहीं था। अत: उन्होंने श्री गणेश जी की आराधना की और गणपति जी से महाभारत लिखने की प्रार्थना की। गणपति जी ने सहमति दी और दिन-रात लेखन कार्य प्रारम्भ हुआ और इस कारण गणेश जी को थकान तो होनी ही थी, लेकिन उन्हें पानी पीना भी वर्जित था। अत: गणपति जी के शरीर का तापमान बढ़े नहीं, इसलिए वेदव्यास ने उनके शरीर पर मिट्टी का लेप किया और भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी को गणेश जी की पूजा की। मिट्टी का लेप सूखने पर गणेश जी के शरीर में अकड़िन आ गई।

महाभारत का लेखन कार्य १० दिनों तक चला। अनंत चतुर्दशी को लेखन कार्य संपन्न हुआ। वेदव्यास ने देखा कि गणपति जी का शारीरिक तापमान फिर भी बहुत बढ़ा हुआ है और उनके शरीर पर लेप की गई मिट्टी सूखकर झड़ रही है,

तो वेदव्यास ने उन्हें पानी में डाल दिया। इन दस दिनों में वेदव्यास ने गणेश को खाने के लिए विभिन्न पदार्थ दिए। तभी से गणपति बैठाने की प्रथा चल पड़ी। इन दस दिनों में इसलिए गणेश जी की पसंद के विभिन्न भोजन अर्पित किए जाते हैं।

लंबोदर- पिता शिव के मोह से जन्मे क्रोधासुर के अंत के लिए हुआ लंबोदर अवतार जब समुद्र मंथन के समय भगवान विष्णु ने अमृत रक्षा के लिए मोहिनी रूप धारण किया था तो स्वयं शिव जी उनके रूप पर मोहित हो गए थे। इसके बाद मोहिनी रूप को त्याग अपने असली रूप में आये श्री हरि को देखकर उनका मोह क्रोध और क्षोभ में बदल गया और उनके स्खलन से क्रोधासुर नाम का राक्षस उत्पन्न हुआ जिसने सूर्य देव से ब्रह्मांड विजय का वरदान प्राप्त कर तीनो लोक कैलाश और बैकुंठ पर कब्जा जमा लिखा स्वयं सूर्यदेव को भी सूर्यलोक छोड़कर जाना पड़ा तब सब देवताओं की उपासना से प्रसन्न होकर भगवान गणेश ने लंबोदर अवतार लेकर क्रोधासुर से युद्ध कर उसे अपनी शरण में अपने पर विजय कर दिया।

विघ्नराज- मां पार्वती के हास्य से उपजे राक्षस को नियंत्रित करने गणपति आये विघ्नराज बनकर बताते हैं शिव प्रिया पार्वती अपनी सखियों से बात करते हुए हंस पड़ीं तो उनके हास्य से एक पुरुष प्रकट हुआ इसे माता पार्वती ने मम नाम दिया और गणपति की उपासना करने के लिए कहा। मम ने श्री गणेश से निर्विघ्न विजय का अजीब वरदान लिया और दैत्यों से मित्रता कर ली। इस मैत्री के चलते उसने तीनों लोकों को कष्ट में डाल दिया। जिस पर गणपति ने विघ्नराज अवतार लेकर उसको सबक सिखाया और पुन: राज्य स्थापित किया। मम असुर श्री गणेश के आदेश पर उस स्थान से दूर रहने चला गया जहां उनकी पूजा न होती हो।

एकदंत- भगवान गणेश ने एकदंत रूप में मदर सुर नाम के राक्षस को पराजित करके पाताल में भेज दिया था। गणपति का दूसरा प्रमुख अवतार एकदंत को माना जाता है। बताते हैं कि महर्षि च्यवन ने मद की सृष्टि की उसे महर्षि च्यवन के भ्राता दैत्य गुरु शुक्राचार्य ने शक्ति मंत्र देकर आदि शक्ति की साधना की प्रेरणा दी। इसके पश्चात उसने घोर तपस्या से आदिशक्ति से ब्रह्मांड विजय का वरदान प्राप्त किया। शक्ति संपन्न होने के बाद उसने तीनों लोकों के साथ ही कैलाश को भी जीत लिया। इस कारण धर्म-कर्म लुप्त हो गए असुरों से त्रस्त देवगण सनत कुमार के पास गए। जिन्होंने एकदंत की उपासना का परामर्श दिया। एकदंत की उपासना से प्रसन्न होकर भगवान श्री गणेश ने युद्ध में मदर सुर को परास्त कर उसे अपनी शरण में लेकर पाताल लोक में भेज दिया।

आरती में ताली बजाने से बढ़ती है रोग प्रतिरोधक क्षमता

आमतौर पर भगवान की स्तुति करते वक्त ताली बजाने का प्रचलन है। श्रीमद्भागवत के अनुसार कीर्तन में ताली की प्रथा भक्त प्रल्हाद ने शुरू की थी क्योंकि, जब वे भगवान का भजन करते थे तो जोर-जोर से नाम संकीर्तन भी करते थे तथा साथ-साथ ताली भी बजाते थे। इसके बाद अन्य लोग भी उनकी तरह करने लगे। सामान्यत: हम किसी भी मंदिर में आरती के समय सभी को ताली बजाते देखते हैं और हम भी ताली बजाना शुरूकर देते हैं। ऐसा करने से हमारे शरीर को कई लाभ प्राप्त होते हैं।

ओम की ध्वनि के साथ दुनिया अस्तित्व में आई। गणपति अथर्वशीर्ष के अनुसार ओम का अर्थ गणेश ही है। पाणिनी के अनुसार गणेश सभी दिशाओं के स्वामी हैं। इसलिए वाहन में गणेश जी की प्रतिमा रखी जाती है, ताकि आप कहीं भी

जाए, विघ्नहर्ता हर जगह साथ रहें।

माता-पिता की परिक्रमा कर प्रथमपूज्य बनने की कथा तो सभी जानते हैं। किन्तु विघ्नहर्ता और विघ्नहर्ता गणेश की कहानी भी रोचक है। गणेश जी का विवाह नहीं हो पा रहा था तो उन्होंने सोचा मैं किसी और का भी क्यों होने दूं? वे विवाहों में विघ्न डालने लगे। देवताओं की शिकायत पर ब्रह्मा ने अपनी मानस बेटियों रिद्धि-सिद्धि से उनकी शादी कराई। इसलिए उन्हें विवाह में प्रथम निमंत्रण दिया जाता है। वाहनों में स्थापित किया जाता है, ताकि विघ्न न आए।

श्रीगणेश करने का अर्थ है- काम आरंभ करना। गृह प्रवेश, नया वाहन, यात्रा आरंभ करने जैसे हर शुभ काम को शुरू करने में सबसे पहले गणेशजी की पूजा की जाती है और उनका चिन्ह स्वस्तिक बनाया जाता है। इस तरह काम के शुभ परिणाम की कामना की जाती है।

कहानी- वराह पुराण के अनुसार देवताओं व ऋषियों ने शिवजी से प्रार्थना की कि अच्छे लोगों के कामों में बाधा आती है। ऐसा नहीं होना चाहिए। तब शिवजी ने रुद्र के रूप वाला बालक प्रकट किया। उसके इस रूप से नाराज पार्वतीजी ने श्राप दे दिया कि इसका सिर हाथी का हो जाएगा। इस पर शिवजी भी नाराज हो गए और ऐसे कई बालक बना दिए। ब्रह्मा के समझाने पर वे माने। बालक को वरदान दिया- तुम्हारी पूजा सबसे पहले होगी, नहीं हुई तभी तुम विघ्न डालोगे।

आदि शंकराचार्य के अनुसार गणेश अजं (अजन्मे) और निराकार (बिना आकार के) हैं। वाल्मीकि ने कहा गणेश सभी कलाएं और विद्याएं सिखाने वाले हैं। इसलिए कलाकार कल्पना से चित्र, मूर्तियां बनाते हैं और उन्हें सजावट में भी पूरे सम्मान से स्थापित किया जाता है।

गणेशजी के हाथ में शस्त्र भी है और कलम भी। इस रूप में जब उनका चित्र या प्रतिमा सामने होती है तो वे हर काम को करने की हिम्मत देते हैं। वे अपने टूटे दांत से महाभारत लिखते दर्शाए गए हैं, उनके हाथ में मोदक है और चेहरा शांत है, इस तरह उनका पूरा व्यक्तित्व हर हाल में काम करने और आनंदित रहने के लिए प्रेरित करता है।

श्री गणेशजी के पिता भगवान शिव हैं। शिव का अर्थ होता है- कल्याण यानी सबका भला। उनकी माता हैं- मां पार्वतीजी। उनके बड़े भाई हैं श्री कार्तिकेयजी। उनकी पत्नी का नाम है- रिद्धि-सिद्धि एवं बुद्धि। उनके दो बेटे हैं क्षेम व लाभ जिनकी ॐ से उत्पत्ति हुई है। श्रीगणेश का शाब्दिक अर्थ है जो समस्त जीव-जाति के ईश हों। उनके नाम हैं- श्री गणेश, गणपति, विनायक, सुमुख, एक दंत, गणाधिपती, हेरम्ब, लंबोदर, विकट, धूमकेतु, गजानन, विघ्नेश, परसुपाणि, गजास्य, सूपकर्ण, मूषकवाहन इत्यादि। उनके झंडे पर मूषक का चिह्न है। ये बुद्धिमत्ता के देवता हैं। हमारे धर्म में पाँच देव हैं- श्री विष्णु, श्री शंकर, श्री शक्ति, श्री सूर्य, श्री गणपति।

नारद पुराण में संकटनाशक नामक गणेश स्तोत्र की रचना की गई है। इस स्तोत्र में गणेशजी के बारह नामों का उल्लेख करते हुए उनकी महिमा बताई गई है। बारह नामों से की गई पूजा से हर प्रकार का संकट दूर हो जाता है। ये बारह नाम हैं- वक्रतुंड, एकदंत, कृष्णपिंगाक्ष, गजवक्र, लंबोदर, विकटमेव, विघ्नराजेन्द्र, धूम्रवर्ण, भालचंद्र, विनायक, गणपति और गजानन। जिस प्रकार हमें दुर्गाजी के ५१ शक्तिपीठों के और शंकरजी के बारह ज्योतिर्लिंगों के स्थान ज्ञात हो चुके हैं, ठीक उसी प्रकार संकटनाशन गणेश स्तोत्र में उल्लेख किए गए गणेशजी के बारह स्थानों की भी खोज हो चुकी है। इन बारह

स्थानों की खोज करनेवाले महान संत तथा छत्रपति शिवाजी महाराज के गुरु समर्थ रामदास स्वामी हैं। समर्थ रामदास स्वामी के अनुसार वक्रतुंड दक्षिण भारत के कन्नूर स्थान में हैं जबकि एकदंत कलकत्ता के पास, कृष्ण पिंगाक्ष कन्याकुमारी में, विकटमेव ऋषिकेश में, विघ्नराजेन्द्र कुरुक्षेत्र में, धूम्रवर्ण केरल के कालीकट में, गणपति कर्नाटक के गोकर्ण महाबलेश्वर तथा गजानन गढ़वाल में गौरीकुंड के समीप सरकटा गणेश के रूप में प्रसिद्ध हैं।

भगवान श्रीगणेश बुद्धि प्रदान करनेवाले हैं। कोई भी शुभ कार्य उनकी पूजा के बिना पूर्ण नहीं होता। उनकी कृपा से समस्त वास्तु दोष दूर हो जाते हैं। भगवान श्री गणेश की आराधना के बिना वास्तु देवता की उपासना भी अपूर्ण मानी जाती है। वास्तु शास्त्र में भगवान श्रीगणेश की कृपा पाने के लिए कई उपाय बताए गए हैं।

भगवान श्रीगणेश जी को नमन करते समय मुख सदा पूर्व या उत्तर दिशा की ओर होना चाहिए। श्रीगणेशजी की पीठ के दर्शन कभी न करें। सामने से ही सदैव उनके दर्शन करें। या फिर दाएं या बाएं से दर्शन करना भी अशुभ नहीं है। माना जाता है कि श्रीगणेश की पीठ के दर्शन करने से घर परिवार पर दरिद्रता का प्रभाव बढ़ जाता है। घर में श्रीगणेश की बहुत सारी मूर्तियां न रखें। पूजा स्थान पर एक साथ श्रीगणेश की तीन मूर्तियां कभी न रखें। पीत वर्ण के गणपति सर्वोत्तम माने जाते हैं।

बच्चों के कमरे में उनकी मूर्ति लगाएं। शयन कक्ष में भगवान की मूर्ति न रखें और श्रीगणेश जी की तो कभी नहीं। घर में सकारात्मक ऊर्जा के लिए आम, पीपल एवं नीम से बने श्रीगणेश की मूर्ति लगाएं। इसे हमेशा घर के मुख्य द्वार पर लगाएं। घर में श्रीगणेश की वही मूर्ति स्थापित करें, जिसमें उनकी सूंढ़ बाईं ओर हो। कार्यस्थल पर खड़े हुए मुद्रा में श्रीगणेश का चित्र लगाना चाहिए। उनके दोनों पैर जमीन का स्पर्श करते हुए हों। इससे कार्यक्षेत्र में स्थिरता आती है। घर में सदैव बैठे हुए श्रीगणेश की मूर्ति रखना चाहिए। इससे परिवार में सुख शांति आती है।

गणेश पुराण के अलावा अन्य वेद हैं, जिनमें गणेश जी की महिमा का विवरण मिलता है। शिव पुराण में उन्हें शिव-पार्वती की संतान बताया है, लेकिन कुछ वेद उन्हें सभी तत्वों के देवता बताते हैं।

शिव पुराण- यह शैव मत का प्रमुख पुराण है। वेद व्यास इसके रचयिता हैं। उन्होंने इसमें सृष्टि के सृजन, संरक्षण व विनाश की व्याख्या की है। इसमें भगवान शिव के पूजन की विधियों का वर्णन हे।

गणेश पुराण- इसमें भगवान गणेश से जुड़ी कथा, कहानियां, पूजन की विधियों का विवरण है। मुदगल पुराण में गणेश मत के संस्कारों और चिंतन के बारे में बताया है।

एक बार गणेशजी गंगा के किनारे तपस्या कर रहे थे। तुलसी वहां आईं और उन पर मोहित हो गईं। उन्होंने विवाह की इच्छा प्रकट की जिससे उनकी तपस्या भंग हो गयी। गणेशजी ने तप भंग होना शुभ नहीं माना और तुलसी को श्राप दिया। तबसे तुलसी उन पर नहीं चढ़ाई जाती हैं।

गणेश चतुर्थी को गणेश उत्सव में मनाने की परंपरा १८९३ में शुरु हुई थी। इसे सार्वजनिक गणेशोत्सव के नाम से जाना जाता है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने सबसे पहले सार्वजनिक गणेशोत्सव मनाने की परंपरा चलाई।

गणेश अनादि हैं। इतिहास में भी इसके साक्ष्य हैं। उनकी पूजा के प्रमाण आज से ५००० साल पहले से मिलने लगते

हैं। वे अलग-अलग रूपों में विभिन्न संस्कृतियों में हैं। जापान में उन्हें कांगीतेन कहा जाता है। चीन, अफगानिस्तान, ईरान और मैक्सिको की माया संस्कृति तक में उनकी मूर्तियां मिली हैं।

ईरान के लोरिस्तान प्रांत में ३२०० साल पुरानी गणेश प्रतिमा मिली- माइथोलॉजी और सिम्बॉलिज्म के विशेषज्ञ लायर्ड स्क्रैन्टन की किताब प्वाइंट ऑफ ओरिजन: गोओबलकी टिपे एंड स्पिरिचुयल मैट्रिक्स फॉर द वर्ल्ड कॉस्मोलॉजीफ के अनुसार ईसा पूर्व ३००० में गणेश पूजा का उल्लेख मिलने लगता है। सिंधु घाटी और हड़प्पा सभ्यता में भी गणेश प्रतिमा मिली थी। वहीं ईरान के लोरिस्तान में १२०० साल ईसा पूर्व की गणेश प्रतिमा मिली है।

अफगानिस्तान के राजा खिंगाल ने ५वीं सदी में गणेशजी की मूर्ति को स्थापित किया। राबर्ट ब्राउन की किताब गणेश: स्टडीज ऑफ एन एशियन गॉड के मुताबिक अफगानिस्तान के उत्तरी काबुल में गणेश की एक प्रतिमा चौथी सदी की मिली है। वहीं पख्तिया प्रांत के गार्देज शहर में एक प्रतिमा ५वीं सदी की पाई गई। संगमरमर की इस मूर्ति पर दर्ज है- ये मनमोहक प्रतिमा महाविनायक की है, जिसे शाही राजा खिंगाल ने स्थापित कराया था। चीन में १४०० और जापान में १२०० साल पुरानी गणेश पेंटिंग मिली। चीन के मोगाओ गुफा में भी गणेश की छठी शताब्दी की पेंटिंग मिलती है। यह बौद्ध गुफा है। इसमें बौद्ध धर्म से संबंधित हजारों चित्र हैं। इस गुफा के २५ किमी के दायरे में ४९२ मंदिर हैं। माना जाता है कि बौद्ध धर्म ने ही यहां गणेश पूजा शुरू की। चीन से ही गणपति जापान भी पहुंचे। यही वजह है कि जापान में १२०० साल पुरानी गणेश प्रतिमा और चित्र मिले हैं।

तमिल में गणेश पिल्लें तो, तेलुगु में विनायाकुडू

तमिल में गणेशजी को विनायागार और पिल्ले भी कहा जाता है। तेलुगु में उनका नाम विनायाकुडू है। बर्मा में उन्हें पाली महा विनायक, थाइलैंड में फरा फिकानेत कहते हैं। गणेशजी की पूजा बौद्ध धर्म में भी होती है। गणेश पुराण के अनुसार इंसान के शरीर का मूलाधार चक्र गणेश कहलाता है। शिव महापुराण के अनुसार गणेशजी का रंग हरा और लाल है।

आदि शंकर ने गणेश के सार तत्व का बड़ा सुंदर वर्णन किया है। हालांकि गणेश भगवान को हाथी के सिरवाले रूप में पूजा जाता है, उनका यह स्वरूप हमें निराकार परब्रह्म रूप की ओर ले जाने के लिए है। वे अगम, निर्विकल्प, निराकार और एक ही है। अर्थात वे अजन्म हैं, गुणातीत हैं और उस परम चेतना के प्रतीक हैं जो सर्वव्यापी है। गणेश दिव्यता की निराकार शक्ति हैं, जिनको भक्तों के लाभ के लिए एक नैनाभिराम रूप में प्रकट किया गया है। गण यानी समूह। ब्रह्मांड परमाणुओं और विभिन्न ऊर्जाओं का समूह हे। इन विभिन्न ऊर्जा समूहों के ऊपर यदि कोई सर्वोपरि नियम न बनकर रहे तो यह ब्रह्मांड अस्त-व्यस्त हो जाएगा। परमाणुओं और ऊर्जा के इन सभी समूहों के अधिपति गणेश हैं। वह परमतत्व चेतना है, जो सब में व्याप्त है और इस ब्रह्मांड में व्यवस्था लाती है।

गणेश वही शक्ति है जिससे सब कुछ प्रकट हुआ और जिसमें यह सब कुछ विलीन हो जाना है।

हम सब इस कहानी से परिचित हैं कि गणेश जी कैसे हाथी के सिरवाले भगवान बने। शिव और पार्वती उत्सव मना रहे थे, जिसमें पार्वतीजी मैली हो गई। यह एहसास होने पर वे अपने शरीर पर लगी मिट्टी को हटाकर उससे एक लड़का बना देती है। वह स्नान करने जाती हैं और लड़के को पहरेदारी करने के लिए कहती हैं। जब शिव लौटते हैं, वह लड़का उन्हें पहचान नहीं पाता और उनका रास्ता रोक देता है। तब शिव लड़के का सिर काट देते हैं और अंदर प्रवेश कर जाते हैं।

पार्वती चौंक जाती हैं। वे समझाती हैं कि वह उनका बेटा था और उसे बचाने का निवेदन करती हैं। शिव अपने सहायकों को उत्तर दिशा की ओर इशारा करते हुए किसी सोते हुए का सिर लाने के लिए कहते हैं। तब सहायक हाथी का सिर लेकर आते हैं, जिसे शिवजी लड़के के धड़ से जोड़ देते हैं और इस तरह गणेश की उत्पत्ति होती है। पार्वती के शरीर पर मैल क्यों आया? सब कुछ जानने वाले शिव अपने ही बेटे को क्यों नहीं पहचान सके? शिव जो शांति के प्रतीक हैं, उनमें क्या इतना गुस्सा था कि वे अपने बेटे का सिर काट दें? और गणेश का सिर हाथी का क्यों हैं? इसमें कुछ और गहरा रहस्य छिपा हुआ है।

पार्वती उत्सव की ऊर्जा का प्रतीक हैं। उनका मैला होना इस बात का प्रतीक है कि उत्सव के दौरान हम आसानी से राजसिक हो सकते हैं। मैल अज्ञानता का प्रतीक है और शिव परमशांति और ज्ञान के प्रतीक हैं। गणेश द्वारा शिव का मार्ग रोकने का अर्थ है अज्ञानता (जो सिर का गुण है) जो ज्ञान को पहचान नहीं पाई। फिर ज्ञान को अज्ञानता मिटानी पड़ी। इसका प्रतीक यही है कि शिव ने गणेश के सिर को काटा।

हाथी का सिर क्यों? ज्ञान शक्ति और कर्म शक्ति दोनों का प्रतिनिधित्व हाथी करता है। हाथी का बड़ा सिर बुद्धि और ज्ञान का प्रतीक है। हाथी न तो किसी अवरोध से बचने के लिए घूम कर निकलता है और न ही कोई बाधा उसे रोक पाती है। वह सभी बाधाओं को हटाते हुए सीधे चलता रहता है।

गणेश का बड़ा पेट उदारता और पूर्ण स्वीकृति का प्रतीक है। उनका अभय मुद्रा में उठा हाथ संरक्षण का प्रतीक है- घबराओ नहीं मैं तुम्हारे साथ हूं और उनका दूसरा हाथ नीचे की तरफ है और हथेली बाहर की ओर, जो कहती है कि वह निरंतर हमें दे रहे हैं। गणेश जी का एक ही दंत है जो कि एकाग्रचित होने का प्रतीक है। उनके हाथों में जो उपकरण हैं उनका भी प्रतीक हैं। वह अपने हाथों में अंकुश लिए हुए हैं जो कि सजगता का प्रतीक है।

चेतना जागृत होने पर बहुत ऊर्जा निकलती है जो बिना किसी नियंत्रण के अस्त व्यस्त हो जाएगी। आखिरकार हाथी के सिरवाले गणेश की सवारी इतने छोटे से चूहे पर क्यों होती हैं? यह बात असंगत सी लगती है न? यहां भी एक प्रतीक है, जो बहुत गहरा है। जो बंधन बांध कर रखते हैं उसे चूहा कुतर-कुतर कर समाप्त कर देता है। चूहा उस मंत्र की भांति है, जो धीरे-धीरे अज्ञान की एक-एक परत को काटकर भेद देता है और उस परम ज्ञान की ओर ले जाता है जिसका प्रतिनिधित्व गणेश करते हैं।

❊ गरीब वो नहीं जिसके घर में नहीं हो खोखा और पेटी,
असली धनवान तो वही है जिसके घर में मुस्कुराएं बहू और बेटी।

❊ जिन्दगी तेरे ख्वाब भी कमाल के हैं।
तू गरीबों को उन महलों के सपने दिखाती है जिनमें अमीरों को नींद नहीं आती।

❊ डॉक्टर की आंख से भी आंसू छलक पड़े, जब एक मजदूर के बेटे ने उससे पूछा
क्या ऐसी कोई दवाई है जिससे भूख ही ना लगे?

संकलन कर्ता के उद्‌गार

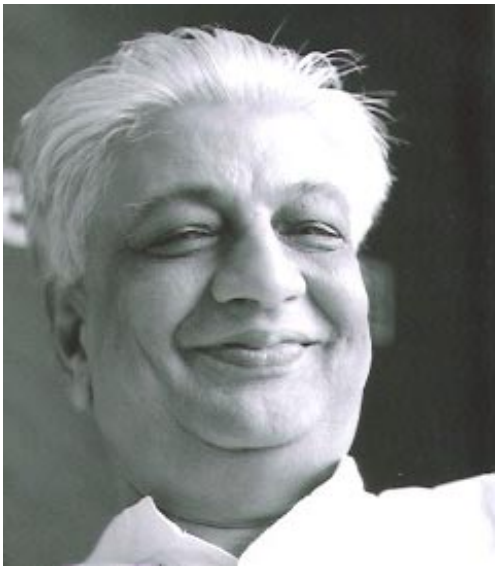

रात और दिन की गहमा-गहमी, आह और वाह, कौन जानता है, किस लिए हो रही है। लक्ष्य को तय किये बगैर लोग बस चले जा रहे हैं। बेखबर है इस बात से कि कौन सा रास्ता किस मंजिल की तरफ जायेगा? लोग बेखबर हैं इस बात से कौन सा रास्ता सही है और कौन सा गलत?

लोगों को इस बात की भी चेतना व समझ नहीं है कि बगैर दिशा और मंजिल से दूर जानेवाले रास्ते पर चलने से मंजिल दूर होती जाती है। कोई नहीं जानता कि ये दुनिया एक खेल तमाशा है। हर इन्सान चाहे माने या न माने एक ऐसा दिन और एक ऐसी मंजिल की तरफ बढ़ता चला जा रहा है जिसमें कोई शक नहीं, वो घड़ी आकर रहेगी। लेकिन लोग दुनिया में खोये हुए हैं। जहां सिर्फ धोखा ही धोखा है।

अगर हम ईश्वर की सौगातों को याद करेंगे तो आपको अपने अंदर ही सर से पैर तक, खुदा की बहुत सी नेमतें दिखाई देंगी। जिस्मानी सेहत, वतन में अमन, सुकून, खाना, कपड़ा, पानी-हवा यानी पूरी दुनिया आपके पास है और आपको अहसास भी नहीं, जिंदगी के मालिक हैं लेकिन इसका शुक्र नहीं। आपके पास आंखें हैं, जबान है, दो होंठ हैं, दो हाथ, पैर हैं, सब कुछ तो आपके पास। आखिर ईश्वर की किन-किन सौगातों का इंकार करेंगे।

आप नींद भर सोते हैं, जबकि कितने हैं कि दुनिया के गम ने उनकी नींदें उड़ा दी हैं। आप पेट भर खा रहे हैं जबकि कितने हैं जिनको खाना नहीं मिलता, बीमारियों ने उनके खाने-पीने को रोक रखा है। अपने कान के बारे में सोचें, आपकी सुनने की ताकत ठीक है, आंख के बारे में सोचें आप अंधे नहीं, अपनी त्वचा को देखें तो साफ-सुथरी, कोढ़ और खुजली से सुरक्षित है, अपनी अक्ल के बारे में सोचिए कि आप अक्लवाले हैं, आप पर कोई पागलपन या दीवानगी नहीं, सब कुछ तो है आपके पास, फिर किस बात का गम, गम न करें बल्कि उस ईश्वर का धन्यवाद अदा करें जिसने आपको वो दौलत अदा की है जो दुनिया में किसी दुकान से खरीदना चाहे तो हासिल नहीं कर सकते। क्या आप अपनी जिंदगी में पहाड़ जितना सोना लेकर अपनी आंखें दे सकते हैं, बड़े पहाड़ के जितना चांदी लेकर अपनी सुनने की ताकत दे सकते हैं, क्या किसी राज्य के बदले अपनी जबान दे सकते हैं और गूंगा होना पसंद करेंगे। क्या हीरे-मोती के बदले अपने हाथों का सौदा कर लेंगे? कितनी सौगातें है जो आपको मिली हैं, जिससे फायदा उठा रहे हैं लेकिन आपको इसका एहसास नहीं। आपको गर्म रोटी, ठंडा पानी, मीठी नींद और आराम हासिल है, लेकिन फिर भी परेशान व गमगीन हैं। आप ईश्वर की उन नेमतों के बारे में सोचें जो आपको हासिल हैं तो आप ईश्वर को धन्यवाद देंगे।

इंसानियत को टुकड़ों में बांटनेवाले धार्मिक नहीं होते। दुनिया में जितनी वस्तुएं हैं- जड़ हो या चेतन हो, हर वस्तु की अपनी-अपनी विशेषता है, अपना गुणधर्म है। उसी में उसकी विशेषता, उसी में उसका जीवन है। किसी वस्तु को अचेतन हम इसलिए कहते हैं कि उसमें स्वतंत्र मन नहीं है। पत्थर की अपनी विशेषता है। बालू में भी अपनी विशेषता है,

गुणधर्म है। इस दृष्टिकोण से चेतन में अचेतना में पार्थक्य बहुत कम है। जिसमें मन नहीं है उसे अचेतन कहते हैं और जिसमें मन है उसे चेतन कहते हैं, किंतु पेड़ और पौधों में भी मन है। जिसको हम स्थूल पदार्थ कहते हैं, उसमें भी मन है, विकसित रूप में नहीं है, अभिव्यक्त नहीं है। मन वहां भी है, किंतु वहां मन का जड़ पर नियंत्रण बिल्कुल नहीं है। अर्थात जड़ में भी मन और आत्मा है, किंतु उसकी जो सामायिक संरचना है, उसको मन चला नहीं सकता है। इसलिए एक स्वतंत्र जीवात्मा का अस्तित्व उसके लिए मानना संभव नहीं होता है। पेड़ पौधों में उनका मन शरीर को चलाता है, किंतु वह मन विवेक के द्वारा परिचालित नहीं होता है। यही पार्थक्य है। समूची दुनिया में जितने मनुष्य हैं, एक वर्ग में आ जाते हैं। मानव समाज एक सत्ता है, वह एक और अविभाज्य है। इंसानियत को जो टुकड़ों में बांटना चाहते हैं, वे धार्मिक नहीं हैं। ऑक्सीजन का अपना धर्म है, नाइट्रोजन का अपना धर्म है, वायु का अपना धर्म है, तथाकथित जड़वस्तु का अपना धर्म है, किंतु जड़ाधार पर मन का नियंत्रण नहीं रहने की वजह से मन की इच्छा अथवा अभीप्सा से जड़ संरचना का कोई संपर्क नहीं रहता है। किंतु पेड़-पौधे और जीव तथा मनुष्य में ऐसा होता है, क्योंकि कहीं प्रत्यक्ष रूपेण, कहीं अप्रत्यक्ष रूपेण, कहीं कम, कहीं अधिक जड़ संरचना पर मन का प्रभाव होता है।

इंसान जितना सोच सकता है, प्रकृति उससे भी कहीं ज्यादा रहस्यमय है। जल हो, थल हो, आकाश हो या आकाश के भी उस पार की अनजानी अनदेखी दुनिया हो, प्रकृति के रहस्य हर ओर ऐसा लबादा ओढ़कर बैठे है, जिसके पार देखना आसान काम नहीं है। अभी भी धरती पर ऐसे अनगिनत प्राकृतिक रहस्य हैं, जिन्हें इंसान सुलझा नहीं पाया है।

आकाशगंगा - इतिहास इस संदर्भ का साक्षी है कि प्राकृतिक आपदाओं के कारण कई समृद्ध सभ्यताएं नष्ट हो गयी। मानवीय विज्ञान चाहे कितना भी प्रगति कर ले लेकिन प्रकृति पर अब भी कब्जा नहीं जमाया जा सका है। यह संभव भी नहीं है। विज्ञान और तकनीक की प्रगति से हम होनेवाले नुकसान को सीमित जरूर कर सकते हैं लेकिन आपदाओं को निर्मूल नहीं किया जा सकता।

अबतक हम बाढ़, सूखा, भूकंप, ज्वालामुखी, बारिश, बादल का फटना, सुनामी, आकाशी आपदा आदि का नाम ही सुनते रहे हैं लेकिन जैसे-जैसे हम प्रकृति के रहस्यों के ऊपर से पर्दा उठाते जा रहे हैं नई-नई आपदाओं और उसके काम करने के तरीकों तथा उसके द्वारा होनेवाले नुकसानों का पता चल रहा है। इन दिनों इन्हीं आपदाओं में एक आकाशीय नदी में आनेवाली बाढ़ को चिह्नित किया जा रहा है।

कभी-कभी किसी खास क्षेत्र में अप्रत्याशित तरीके से बारिश हो जाती है। वह बारिश भी इतनी हो जाती है कि वहां बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न होने लगती है जबकि अमूमन लोग यह मानकर चलते हैं कि वह क्षेत्र बारिश की दृष्टि से औसत वर्षा वाला क्षेत्र है। उदाहरण के लिए इन दिनों राजस्थान के उन इलाकों में खूब बारिश हो रही है जहां किसी जमाने में बारिश होती ही नहीं थी।

वैसे ही पश्चिमी घाट पर्वत श्रेणी के पश्चिमी ढलान पर बारिश की बेहद कम गुंजाइश है लेकिन इन दिनों वहां भी बारिश अपेक्षा से ज्यादा हो रही है। सबसे चौंकानेवाली बात यह है कि विंध्य पर्वत श्रृंखला के दक्षिणी पदीय भाग में बारिश नहीं होनी चाहिए क्योंकि यहां बारिश होने के अनुकूल माहौल नहीं हैं लेकिन इन दिनों वहां भी बारिश हो रही है। विगत दिनों मध्य प्रदेश के कुछ इलाकों में जो बाढ़ आई, उसके लिए उन इलाकों में अपेक्षा से अधिक जलवृष्टि का होना ही बताया

जा रहा है। आखिर इस प्रकार की ऊटपटांग बारिश के पीछे का कारण क्या है? इस संदर्भ को मौसम विज्ञानियों ने बड़ी गंभीरता से लिया और इस प्रकार के अप्रत्याशित बारिश पर शोध प्रारंभ हुआ। ऐसा केवल भारत में ही नहीं हुआ है।

दुनिया के अन्य देशों में भी इस प्रकार की अप्रत्याशित प्राकृतिक घटनाएं घटी है। संयुक्त राज्य अमेरिका, अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका और चीन में बारिश के इस रूप पर मौसम विज्ञानियों ने जब शोध किया तो चौंकानेवाले तथ्य सामने आए। पता चला कि आकाश में पृथ्वी के वायुमंडल के अंदर ही एक स्तर पर कई जगह विशालकाय नदियों का निर्माण हो गया है। हालांकि हमारे पौराणिक मिथकों में आकाश गंगा की चर्चा है लेकिन इसके बारे में मुकम्मल जानकारी किसी के पास नहीं थी। अब विज्ञान के पास इस बात का पुख्ता प्रमाण है कि आकाश में भी नदियां हो सकती है। ये नदियां समय-समय पर व्यापक तबाही भी मचा सकती हैं। अब इस प्रकार के शोध सार्वजनिक होने लगे हैं।

गर्म हवा हल्की होकर ऊपर चली जाती है। यह पहले घनीभूत होती है और बाद में जल की बूंदों के रूप में इकट्ठा हो जाती है। वही जल आकाश में एक तल बनाकर यहां वहां घूमने लगते हैं। जब वायुमंडल के ऊपरी परतों पर दबाव पड़ता है तो यह नीचे की ओर झुक जाती है और जहां झुकती हैं वहां भरी तबाही मचा देती है। उस स्थान पर अप्रत्याशित बारिश हो जाती है। भविष्य में ग्लोबल वार्मिंग के कारण इस प्रकार की नदियां ज्यादा तबाही मचा सकती हैं।

इसकी लंबाई दो हजार से लेकर चार हजार किलोमीटर तक की होती है। इसकी चौड़ाई के बारे में बताया गया है कि यह तीन सौ से लेकर पांच सौ किलोमीटर तक की हो सकती है। नदी का मार्ग बिल्कुल धरती पर बहनेवाली नदियों के समान एकदम स्थिर तो नहीं होता है लेकिन इसकी धारा लगभग तय होती है।

इसके प्रवाह की दिशा भी तय होती है। जिस प्रकार ऊंचे स्थानों से नीचे स्थानों की ओर धरती की नदियां बहती है उसी प्रकार आकाश की नदियों में भी यही गुण होता है। इन नदियों का ज्यादातर हिस्सा वाष्पीकृत होता है। ये नदियां वायुमंडल के ऊपर सतह पर चलनेवाली हवा के पश्चिमी प्रवाह से ज्यादा प्रभावित होती है। बारिश के कारणों के बारे में भी लगभग इसी प्रकार की बातें बताई जाती है।

इस प्रकार की आपदा से विगत दो साल के अंदर कम से कम १० हजार लोगों की जान जा चुकी है। इन आपदाओं में विगत दो वर्षों के अंदर लगभग २०० अरब डॉलर का नुकसान हो चुका है। दुनिया में कई उदाहरण हैं जो यह साबित करने के लिए काफी है कि इस प्रकार की नदियां आनेवाले समय में और अधिक तबाही मचा सकती है। इस प्रकार की तबाही को रोकने के लिए प्रयास तो किए जा रहे हैं लेकिन अभी तक इस पर कोई ठोस प्रबंधन विकसित नहीं किया जा सका है।

पशु-पक्षी भी करते हैं भविष्यवाणी- भारत एक कृषि प्रधान देश है इसलिए बारिश की सटीक भविष्यवाणी बेहद महत्वपूर्ण होती है। वैज्ञानिक तो अपने अनुमानों के आधार पर वर्षा की भविष्यवाणी करते ही हैं, लेकिन ज्योतिष शास्त्र भी मौसम के पल-पल बदलते रंग के बारे में ग्रह-नक्षत्रों के आधार पर सटीक परिणाम बताता है।

प्रकृति के संकेत समझते हैं पशु-पक्षी - प्रकृति ने पशुओं को मनुष्य से अधिक संवेदनशील बनाया है, तभी तो वे आगामी खतरों का आभास कर लेते हैं और अपने व्यवहार के माध्यम से इसे अभिव्यक्त करते हैं। हालांकि पशुओं की ऐसी कोई भाषा या बोली नही है, जिसे मनुष्य समझ सके, लेकिन फिर भी आने वाले खतरों का आभास होते ही पशु-पक्षी विचित्र ढंग से व्यवहार करने लगते हैं, प्रकृति ने पशुओं को मनुष्य से अधिक संवेदनशील बनाया है, तभी तो वे आगामी

खतरों का आभास कर लेते हैं और अपने व्यवहार के माध्यम से इसे अभिव्यक्त करते हैं।

यदि मनुष्य पशु द्वारा दिए गए संकेतों को समझ सकते, तो शायद भीषण प्राकृतिक आपदाओं से वे भी अपना बचाव कर सकते। इसी प्रकार आज विश्वभर के विशेषज्ञ पशुओं की इस सांकेतिक भाषा का पता लगाने में लगे हुए हैं। पशु पक्षिओं को खतरों का पूर्वज्ञान हो जाता है, यह बाद अब निर्विवाद है। इसके कई उदाहरण हैं, जो यह दर्शाते हैं कि पशुओं को आनेवाले खतरों का एहसास समय से पूर्व हो गया था।

❋ बहुत से जीवों के नाम तो हम जानते हैं, लेकिन उनकी उम्र के बारे में आमतौर पर हमें कुछ भी ज्ञात नहीं होता। कुछेक प्राणियों की उम्र के बारे में जान लें- प्राणी जगत में सबसे अधिक औसत आयु अभी तक कछुए की आंकी गयी है। एक कछुआ औसतन १५२ वर्ष या इससे कुछ ज्यादा दिनों तक जीवित रहता है। हाथी दादा ६९ वर्षों तक जिन्दा रह सकते हैं। घोड़े की जिंदगी की दौड़ ५० वर्ष के लक्ष्य तक हो सकती है। बिल्ली २३ वर्षों तक जीवित रह कर चूहों को अपना भोजन बना सकती है। एक शेर ३० वर्ष तक जिंदा रहकर जंगल में राज करता है। जंगल के शानदार जीव बाघ की अधिकतम उम्र २५ वर्ष होती है। मेंढक १० वर्ष तक टर्रा सकता है। कुत्ता २७ वर्षों तक भौंकता है। चूहा जी सकता है ४ वर्ष तक।

इसके अलावा ग्रामीण क्षेत्रों के किसान आज भी पशु-पक्षी, आकाश में सारस का झुंड यदि गोलाकार परावलय बनाकर उड़ता दिखे, तो यह शीघ्र वर्षा का संकेत माना जाता है। भारतीय किसान इन्हें देखकर अपने खेतों मे बीज बोने की तैयारियों में लग जाते हैं। पेड़ों पर दीमक तेजी से घर बनाने लगें तो इसे अच्छी वर्षा का संकेत माना जाता है। मोरों का नाचना, मेंढ़क का टर्राना और उल्लू का चीखना तो पूरे भारत में वर्षा का संकेत माना ही जाता है। बकरियां अगर अपने कानों को जोर जोर से फड़फड़ाने लगें, तो यह भी शीघ्र वर्षा होने का सूचक माना जाता है। भेड़ें अगर अचानक अपने समूह में इकट्ठी होकर चुपचाप खड़ी हो जाएं, तो समझा जाता है कि भारी बारिश शुरू होने ही वाली है। यदि इल्लियां तेजी से अपने लिए छिपने की जगह ढूंढने लगें, तो इसे भी पानी जल्दी ही शुरू होने का संकेत माना जाता है। शाम ढलते समय अगर लोमड़ी की आवाज कहीं दूर से दर्द से चीखने जैसी आए, तो यह बारिश आने का आसार मानी जाती है।

मौसम का प्रभाव हर प्राणी पर पड़ता है, चाहे वह मनुष्य हो या जानवर। प्रकृति ने इन जीवों को प्रतिकूल परिस्थितियों में अपनी रक्षा कर सकने की क्षमता प्रदान की है। जानवरों की शारीरिक बनावट ही कुछ ऐसी होती है कि वे मौसमी प्रभावों को बर्दाश्त कर लेते हैं।

प्रकृति ने इनके शरीर पर बाल की परत तथा पक्षियों को पंख दिए हैं। ये गरम कपड़ों की तरह इनका सर्दी से बचाव करते हैं। जो जानवर पहाड़ों पर रहते हैं, उनके बाल घने तथा लम्बे होते हैं और जो जानवर पानी के अंदर रहते हैं, उनके बाल छोटे व मुलायम होते हैं। कुत्ते, बिल्ली और घोड़े आदि के बाल ठंड के मौसम में इनकी रक्षा करने के लिए पर्याप्त होते हैं। व्हेल तथा डॉल्फिन से शारीरिक ताप को बरकरार रखने के लिए प्रकृति ने उनकी चमड़ी के नीचे तेल से भरी ऊतक की परत प्रदान की है। लंगूर और बंदरों के बालों की परत सर्दियों में घनी और गहरी हो जाती है, जो उन्हें ठंड से बचाती है। शेर, वाघ, तेंदुआ, भेड़िया आदि जानवरों के शरीर पर भी सर्दी शुरू होते ही गहरे, घने बालों की परत आनी शुरू हो जाती है।

भारत में ऐसे कई ऐसे मकबरे, मंदिर, पार्क और ऐतिहासिक स्थल हैं, जो विश्व धरोहर यानी वर्ल्ड हेरिटेज में शामिल हैं। ये देश विदेश के पर्यटकों के आकर्षण के केंद्र हैं। इन जगहों पर सामान्य टूरिस्ट्स के साथ ही स्टूडेंट्स, रिसर्चर्स और स्कॉलर्स के अलावा धार्मिक वजहों से भी लोग आते हैं। हर साल यहां आनेवाले टूरिस्ट्स की संख्या लाखों तक पहुंच जाती है।

ईश्वर ने अपनी पराप्रकृति और अपराप्रकृति से मिलकर यह संसार बनाया है। ईश्वर की पराप्रकृति भौतिक पदार्थ का समूह है। पराप्रकृति में मूलभूत ११९ निखालस तत्व है। कुछ ठोस अवस्था में खनिज इत्यादि है और कुछ गॅस की अवस्था में है। ठोस अवस्था में जैसे- कोबाल्ट, निकल, टिटेनियम, लौह, पारा, तांबा, सोना, चांदी, जस्ता, शीशा, एल्युमिनियम, टंगस्टन, कार्बन, सोडियम, पोटॅशियम, साइनाइड इत्यादि। गॅस अवस्था में हाइड्रोजन, नायट्रोजन, हिलीयम, ऑर्गन, आयडीएन, ब्रोमाइड, लीथियम, ऑस्मियम इत्यादि। इन सबके परस्पर योग से तरह-तरह के रसायन और पदार्थ बने हैं। यह सब पंचमहाभूत अग्नि, वायु, जल, पृथ्वी, आकाश का निर्माण भी इन सभी ११९ तत्वों का मिश्रण है। यह सब पदार्थ ईश्वर की पराप्रकृति है। यह सब पदार्थ पराप्रकृति जो निर्जीव है और ८४ लाख योनियों के लिए उपयोगी है। ८४ लाख योनियों में १६ कला के जीव है जो सजीव है। इन सबका ब्रह्मांड में आगमन स्वेदज, अंडज, उद्भीज और जरायुज तरीके से होता है।

इन अपरा प्रकृति के ८४ लाख योनियों के शरीर नर और मादा के संयोग से बनते है। नर का वीर्य (सिमेन्स) मादा का रज (स्पर्मस्) एक कठोर बुदबुदे के रूप में पनपता है। इस बुदबुदे को भ्रूण (स्टेम सेल्स) कहते है। सब योनियों का शरीर नर और मादा के रूप में भ्रूण से कोशिकाएं (सेल्स) और उत्तक (टिश्यूज) से बने है। जो किसी अन्य पदार्थ से नहीं बन सकते। जब इन शरीरों में चेतन का प्रवेश होता है तो वह जीव कहलाता है। इन शरीरों में नर और मादा के शुक्राणु (जीन्स) पनपते है और उसी प्रकार का शरीर तैयार हो जाता है और शरीर के गुण और स्वभाव के अनुसार जीव क्रियाकलाप करने लगता है।

परा और अपरा प्रकृति का संघात, संमिश्रण ही यह संसार है। हर योनि के कार्यकलापों में व हर पदार्थ में आश्चर्य ही आश्चर्य भरा हुआ है। छठी कला का मनुष्य जीवन भी किसी आश्चर्य से कम नहीं है। प्रकृति के आश्चर्य कुदरत के करिश्मे से जाने गये है। और जीव के द्वारा निर्मित कार्यकलापों को दुनिया के अजूबों के नाम से जाने गये। छठी कला के जीव मनुष्य से सभी देवता व भूत भी डरते हैं। यहां तक कि सब योनियों के जीव भी मनुष्य के अधीन है। अन्य जीवों की योनियों के पास आहार, निद्रा, मैथुन, प्रजजन, उत्पत्ति इत्यादि सब कार्यकलाप होते हैं, प्रक्रिया होती है। उनके पास विवेक है, पर मनुष्य के पास इसके अतिरिक्त बुद्धि है। जिसके द्वारा नित्नये निर्माण करता है। सारी सृष्टि को पैदा करनेवाला जमीन, आसमान, चांद सितारे और सूरज और भी जो चीजें नजर आती है और नहीं आती है, जिसे मनुष्य जानता है और नहीं भी जानता है। यह सब चीजें ईश्वर ने पैदा की है और इन्सानों को फायदा पहुंचानेवाली व्यवस्था से जोड़ दिया है। सूरज जो जमीन को रौशनी और गर्मी देता है दरअसल ये आग का एक बहुत बड़ा गोला है जो पूरी दुनिया को रौशनी के साथ-साथ गर्मी भी देता है। सूरज एक सेकण्ड में जमीन पर जो गर्मी फेंकता है वो लाखों एटम बम जमीन पर गिराये जाने के बराबर है, जब कि एक एटम बम शहरों को तबाह करने के लिए काफी है। अब अगर सूरज की पूरी गर्मी जमीन पर आती, तो तमाम दुनिया जलकर खाक हो जाती, लेकिन ईश्वर अपनी कुदरत से सूरज के जरिये उतनी ही

रौशनी और गर्मी जमीन पर भेजता है जितनी हमें जरूरत है। ईश्वर बड़ी कुदरतवाला है। ईश्वर ने पृथ्वी के अंदर बहुत सारे खजाने पैदा किये है जिससे हमारी बहुत सी जरूरतें पूरी होती है। ईश्वर ने अपनी प्रकृति से चांद बनाया वो अपनी प्रकृति से दिखता है और छुप जाता है। कभी लकीर की तरह बारीक होता है तो कभी मोटा हो जाता है, कभी पूरा गोल हो जाता है और हर महीने के शुरु में पश्चिम की ओर आसमान से निकलता है। हजारों सालों से यही व्यवस्था चांद का निकलना और डूबना है। कभी ऐसा नहीं हुआ कि पश्चिम से निकलने की बजाय पूरब से निकले। चांद हमे ठंडी रौशनी प्रदान करता है। प्राचीन समय से ही आजतक दिन महीने साल का हिसाब रखता है। पृथ्वी से जिस भाग में ६ महीने सूरज नहीं निकला वहां भी चांद हर महीने निकलता और डूबता है। इससे पेड़, पौधे, वनस्पति, फल-फूल और रस प्रदान करता है। चांद के रास्ते और मंजिले चक्कर लगाने के लिए तय कर रखा है। चांद का रौशनी फैलाना, उसका घटते-बढ़ते रहना और हर महीने अपने निर्धारित समय पर निकलना और डूबना यह व्यवस्था ही प्रकृति की जबरदस्त निशानी है। हर चीज की व्यवस्था ईश्वर ने जरूरत के हिसाब से बनायी है। यह पृथ्वी पानी पर टिकी हुई है यह भी ईश्वर की कुदरत है। ईश्वर ने इस पर बड़े-बड़े पहाड़ बनाये है इसका जितना हिस्सा जमीन के ऊपर है उससे अधिक कही जमीन के नीचे है। इन पहाड़ों ने पृथ्वी को हिलने से रोक रखा है। अगर यह पहाड़ न होते तो इस पृथ्वी पर इतने भूकंप आते जमीन की सारी की सारी व्यवस्था मंजर और कहर में बदल जाती। यह पहाड़ ही कीलों का काम करते हैं जिसे जमीन को हिलने से बांध रखा है। इन पहाड़ों पर बड़े-बड़े सख्त पत्थर है जो जमीन से सैकड़ों हजारों फीट ऊंचे होते हैं। जहां पानी का नामोनिशान भी नहीं मिलता लेकिन ईश्वर की कुदरत से हजारों फीट ऊंचे पत्थरों में पानी के साफ-सुथरे चश्मे (झरने) उपलब्ध है। यह झरने पहाड़ों से निकलकर नदियों, नहरों में बदल जाते है।

कुदरत ने हमको हवा दी है जो हर प्राणी के लिये निहायत जरूरी है। अगर हवा न होती तो सूखी जमीन पर रहनेवाले प्राणी जिंदा न रह पाते। हवा की वजह से ही हमारे बदन की हर हालत संतुलित रहती है और हम सांस ले पाते है।

इसी तरह प्राणियों के लिए पानी भी बहुत आवश्यक है और पानी में रहनेवाले जीवों के लिए तो यह निहायत जरूरी है जो पानी के बगैर जिंदा नहीं रह सकते।

धरती से विभिन्न प्रकार के रंगबिरंगे कीमती पत्थर निकलते हैं जो हम अपने घरों के लिए इस्तेमाल में लाते है। कही कोयला निकलता है जो जलाने के काम में आता है और किसी जगह से पेट्रोल व तेल निकलता है जिससे बड़ी-बड़ी मशीनें, हवाई जहाज, रेल गाड़ी, दूसरी व्यवस्था चलायी जाती है। इसी जमीन में से सोना-चांदी निकलता है जिससे कीमती आभूषण बनाये जाते है। इसी जमीन से फल इत्यादि पैदा होते हैं जो शरीर को ताकत देते हैं। जमीन के अंदर अनगिनत खनिज है यह सब ईश्वर की ही देन है। आसमान में अनगित तारे झिलझिलाते हुए नजर आते है। रात के वक्त इन तारों से आसमान बहुत खूबसूरत नजर आता है। ईश्वर ने इन सितारों को इतनी अच्छी व्यवस्था के साथ आसमान में टांग रखा है। यह न तो आपस में टकराकर खत्म होते है और न ही जमीन पर गिरकर तबाही, मंजर और कहर फैलाते है। ईश्वर ने जमीन पर अनगिनत तरह के जानवर पशु-पक्षी पैदा किये है जिनमें से कुछ समुंदर में और कुछ पृथ्वी पर, कुछ हवा में उड़ते हैं, कुछ जंगलों में रहते है। यह सब प्राणी न तो खाने-पीने की चीजों को जमा करके रखते है। और न ही अपनी पीठ पर लादकर चलते है। रोज सुबह खाली पेट इस जमीन पर रोजी रोटी की तलाश में निकलते है और शाम को

भरपेट खाकर वापस आ जाते है। प्रकृति की लीला बड़ी विचित्र है। उसने इस पृथ्वी पर ऐसे अजब अनोखे जीव जंतुओं की रचना की है जिनकी विचित्रताओं को देखकर हम आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

जीव-जंतु आपकी भाषा नहीं बोलते, मगर उनकी अक्ल को आप कम मत समझना। इंसान के अलावा धरती पर कुछ ऐसे जीव भी हैं, जो बुद्धिमान और चालाक होते हैं।

इंसान दुनिया में सबसे ज्यादा बुद्धिमान प्राणी है, लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि धरती पर मौजूद अन्य जीवों के पास दिमाग बिल्कुल भी नहीं होता। भले ही हम उनकी भाषा को समझ नहीं पाते हैं, मगर बिना बोले भी वो अपनी भावनाओं को व्यक्त कर देते हैं। एक छोटी-सी चींटी कभी अपना रास्ता नहीं भूलती। यह बुद्धिमानी ही तो है।

मनुष्यों को संगीत बेहद पसंद होता है और संगीत कई बीमारियों के इलाज में भी मददगार होती है। बिल्लियों को भी संगीत खूब भाता है। खासकर शास्त्रीय संगीत। शास्त्रीय संगीत सुनते ही बिल्लियां शांत हो जाती हैं।

चमगादड़ के अलावा सभी पक्षी अंडे देते हैं जो उनपर बैठकर अपने अंडों को सेते है और कुछ दिनों बाद उनके बच्चे निकल आते है। उनके चारा व भोजन के लिए बेशुमार कीड़े मकोड़े उपलब्ध है। जिनको पकड़कर परिंदे अपने बच्चों के मुंह में डाल देते है। जब उनके शरीर पर पंख आने लगते है तो वो पक्षी बन बड़ी आसानी से खुद-ब-खुद उड़ना सीख जाते है। पक्षियों की खूबियों में एक तोता भी है जो हरे रंग का पक्षी है। उसकी आवाज का आनंद लेने के लिए लोग उसे घरों में पालते है। बड़ा ही समझदार और बोली में लोगों की नकल उतारने की काबिल रखता है। थोड़ी सी शिक्षा देने पर वह आपस में बातचीत करने लगता है। इस छोटे से परिंदे को सीखने और नकल उतारनेकी काबिलियत ईश्वर की देन है जो पक्षियों को इन्सान की बोली बोलने को कुदरत देता है। तोता और खरगोश, दो अकेले ऐसे प्राणी हैं जो बिना अपना सर घुमाए ही पीछे की ओर देख सकते हैं।

ईश्वर ने इस दुनिया को रंगबिरंगी चीजों से सजाया है उनमें से एक छोटी सी प्राणी तितली है। तितली दिनभर बगीचों और फुलवारी के आसपास मंडराती रहती है। उनका रस चूसकर अपना पेट भरती है। इसके शरीर पर इतने खूबसूरत पर होते है जैसे किसी माहीर व्यक्ति ने उसपर रंगबिरंगी तस्वीरे बनायी हो। उसके दोनों परों की डिजाइन एक जैसी होती है और उसे एक खूबसूरत प्राणी बनाया। ईश्वर ने एक छोटी सी प्राणी मकड़ी बनायी है वह देखने में छोटी है लेकिन ईश्वर ने इसको गजब की कलाकारी दी है जो अपने अंदर से इतना जाला निकाल देती है। जिससे उसका पूरा घर तैयार हो जाता है और शिकार करने के लिए जाल भी तैयार हो जाता है। मकड़ी का यह बारीक तार इतना मजबूत होता है कि जब कोई कीड़ा उसमें फंस जाता है तो हजार कोशिश करने के बाद भी वह उसमें से निकल नहीं पाता। कुदरत ने इस छोटी सी मकड़ी को ऐसा हुनर प्रदान किया है की बड़े ही नायब तरीके से अपना जाल बूनती है जो रेखा गणित के गणितज्ञ भी इस तरह की कलाकारी नहीं कर सकते। मकड़ी ने कभी भी किसी विद्यापीठ या महाविद्यालयों में शिक्षण प्राप्त नहीं किया पर उसकी कलाकारी रेखागणितज्ञ से भी श्रेष्ठ है। उसके जाल के कोण, समरेखायें अद्वितीय है। ईश्वर ने गिरगिट जैसा एक छोटा सा जानवर पैदा किया है इसके अंदर अजीबों गरीब करिश्मा है जों पूरे दिन सूरज की रोशनी में रहता है और अपना जरूरी आहार इकट्ठा कर लेता है। जब शाम होती है तो कीड़ों मकोंड़ा का शिकार करके अपना पेट भर लेता है। माहौल के रंग बदलने के साथ-साथ अपना रंग भी बदलते रहता है कभी लाल, तो कभी काला तो कभी हरा रंग बदल लेना है।

जिस रंग के पेड़-पौधों पर चढ़ता है उसी रंग को अपने में बदल देता है। इसकी आंखें ऐसी होती है जो चारों तरफ देख सकती है। ईश्वर ने एक छोटे से जीव में इतनी सारी खूबियां दे रखी है।

पृथ्वी पर हजारों प्रकार के जानवर पाये जाते हैं इसमें हर जानवर की बोली अलग-अलग है। घोड़ा हिनहिनाता है, हाथी चिंघाड़ता है, शेर दहाड़ता है। इनकी अलग-अलग बोलियों से हमें अंधेरे में ही अंदाज हो जाता है कि यह किस जानवर की बोली है।

कुदरत में बहुत तरह के जानवर भी है इनमें से ऊंट ऐसा प्राणी है जिसमें बहुत खूबियां है। वो महीनोंभर का पानी अपने अंदर समा लेता है। जब उसको रेगिस्तानी इलाके में सफर के दौरान पानी की जरूरत पड़ती है तो पेट में जमा पानी का इस्तेमाल कर लेता है। ऊंट के पैर नरम गद्दी की तरह होते है जिसकी वजह से वो रेत में नहीं धंसते और आसानी से रेगिस्तान में चल-भाग सकता है।

हिरण की नाभि में कस्तूरी को पैदा किया है। हिरण की नाभि में खून जमा होते रहता है और धीरे-धीरे एक ठोस की शक्ल में बदल जाता है। उसी ठोस पदार्थ में ऐसी खुशबू आ जाती है जिसे हम कस्तूरी कहते है। हिरण की नाभि में यह कस्तूरी पैदा हो जाने से उसे काफी तकलीफ होनी शुरु हो जाती है वो पेड़ों से अपने आपको रगड़कर उस कस्तूरी को जंगल में गिरा देता है और शिकारी कस्तूरी की सुगंध को सुंघकर उस कस्तूरी को लेकर बाजारों में बेचते है जिसकी उन्हें अच्छी कीमत अदा होती है।

जमीन पर तरह-तरह के पेड़ उग आये है जिनमें कुछ छोटे-बड़े है। कुदरत पृथ्वी की तह से पानी उठाकर पेड़ की जड़ तनों और पेड़ पृथ्वी, कलियों में पहुंचाता है। यह तमाम व्यवस्था ईश्वर की है।

ईश्वर ने नारियल का पेड़ बनाया है जिसका तना पत्ता, फल और फल के छिलके सब के सब मनुष्य के काम में आते है। इसके पेड़ समुद्र के किनारे पाये जाते है जिसकी जमीन खारे नमक से आच्छादित है। पर इसके फल में ऐसा मीठा पानी भरा है जो कई बीमारियों का इलाज करता है। नारियल के फल और पेड़ से तेल निकाला जाता है जो स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक उपयोगी है इसके तेल से शरीर की मालिश की जाती है। नारियल के रेशे से रस्सियां बनती है, पत्तों से चटाइयां और सींक से झाडू बनाये जाते है। इसकी जड़ों से नारियल में साफ-मीठा पानी पहुंचता है। प्रकृति के अन्य कुदरत के उपहारों में से एक गन्ना भी है जो देखने में पतले बांस की तरह होता है पर भरपूर रस से भरा हुआ होता है। जिससे शर्करा, और बेशुमार मिठाइयां और हलवे बनाये जाते है। गन्ने का रस बड़ी अच्छी दवाई में इस्तेमाल होता है। चिकित्सक रोगियों को उसका रस पीने की सलाह देते है।

हम इस गर्दिश में गुब्बार और प्रदूषित हवाओं में सांस लेते है धूल के कण भी हवा में शामिल हो जाते हैं और फेफड़ों में जा सकते हैं मगर कुदरत ने इससे सुरक्षा के लिए नाक से फेफड़े तक हवा के रास्ते में एक तरह की जाली म्यूकस पैदा कर दी है। जो हवाकी नालियों को तर और गीला रखता है। जब हवा इन नालियों से गुजरती है उसमें मौजूदा गर्द और बलगम चिपक जाते है और यह बलगम के जरिये सांस की नलियों से बाहर आ जाते है। कुदरत ने इसी तरह हमारे फेफड़े की हिफाजत की है। यह सब है ईश्वर की कुदरत।

ईश्वर ने सभी जीवों को दो छोटी सी आंखें प्रदत्त की है इन आंखों में देखने की जबरदस्त क्षमता है, जिसका करिश्मा यह

है कि उसके द्वारा वह पूरी सृष्टि को देख सकता है। यह कोई आश्चर्य से कम नहीं है। दुनिया की बड़ी ताकतें भी मिलकर एक आंख का भी निर्माण नहीं कर सकती। आंख कितनी बड़ी और अजीम ईश्वर की कुदरत है। पूरी सृष्टि जमीन व आकाश पहले मौजूद नहीं थे, कोई भी चीज नहीं थी पर ईश्वर जो सदा से है और सदा रहेगा। अपनी प्रकृति से सबको पैदा किया है तो सब कुछ अस्तित्व में आया। ईश्वर एक है वो किसी का मोहताज नहीं। सारी दुनिया उसकी मोहताज है। कोई चीज उसके जैसी नहीं वह सबसे अनोखा व निराला है, वही सबका उत्पन्न करनेवाला स्वामी और संहार करनेवाला है।

कुछ ऊंचे इलाकों और बुलंद पहाड़ों पर सर्द मौसम की वजह से बर्फ जम जाती है और पहाड़ों की चोटी बर्फ से ढक जाती है, जब कि जमीन की सतह से बुलंद और सूरज के करीब होने की वजह से सख्त गर्मी होनी चाहिए थी और पानी भी ठंडा होने के बजाए गर्म होता, लेकिन इसके बावजूद पहाड़ों पर सख्त बर्फ जमी रहती है और सर्द माहौल रहता है। यही नहीं, बल्कि जितना ऊपर जायें और ज्यादा सर्दी महसूस होगी, इन पहाड़ों की चोटियों पर बर्फ का जमना और सर्द माहौल का बनना ईश्वर की कितनी अजीम कुदरत है।

ईश्वर के मुक्त हस्त से प्रकट मानव जीवन अपने नैसर्गिक स्वरूप में कहीं भी असंतुलित नहीं है। इस स्थिति में न कोई धनी है, न निर्धन। किसी का जीवन अभाव और पीड़ा में भी नहीं हो सकता। जब तक संसार में प्राकृतिक आपदा से उथल-पुथल न हो, तब तक मानव का जीवन सदा सुखी, आनंद बटोरने के लिए ही निर्धारित है। आज का मनुष्य चिंता, अधीरता, रक्तचाप, परस्पर मतभेदों व विवादों से घिरकर जीवन को भावनात्मक रूप में संकीर्ण करने पर तुला हुआ है। हमें इस पतन से बचना चाहिए।

इसके लिए हमें स्थान-काल-परिस्थिति का ध्यान रखते हुए अपनी प्रकृति प्रदत्त स्थिति को कम से कम वैचारिक व भावनात्मक रूप में तो अपनाना ही चाहिए।

मानव को प्रकृति से एक स्वाभाविक भावना प्राप्त है। वह है, दया भावना। अंतर्मन में दयालुता का भाव व्यक्ति को शांत प्रवाहित जल की तरह रखता है। दया भाव अपने मूल रूप में सदा विद्यमान रहे, हमारा यही प्रयास होना चाहिए। प्राकृतिक नियमों के अनुसार चलनेवाले व्यक्ति के जीवन को बुरे, नकारात्मक भाव तथा वैचारिक आंदोलन से उपजी कुंठा स्पर्श भी नहीं कर पाती।

प्रकृति का हर पल हर क्षण निर्माण, संवरण होते रहता है। प्रकृति का कार्य ही निर्माण और सृजन है। इसी प्रक्रिया के दौरान नये-नये आश्चर्य फलीभूत होते रहते हैं। प्रकृति परिवर्तनशील है। ये ८४ लाख योनियों के जीवों की भाषा, वर्ण, जाति, धर्म, आहरा, संस्कृति, सभ्यता, सब विभिन्न है और वो अपनी भूमिका उसीके अनुसार क्रियाकलाप करते है। प्रकृति निर्जीव है पर जब चेतन जिस योनि को प्राप्त होता है उसीके स्वभाव के अनुसार प्रकृति के साथ जुड़कर गतिशील होता है।

मनुष्य का जीवन ईश्वर का दिया एक अनमोल तोहफा है। इसमें अनन्त संभावनाएं छिपी है। सब लोगों ने अपनी आत्मशक्ति को इतना ऊंचा उठाया कि उनकी कमियां उन्हें ऊंचा उठने से रोक नहीं सकी। दुनिया में ऐसा कुछ भी नहीं है जो इंसान नहीं कर सका।

यह सच है कि जीव जंतु हमारी भाषा नहीं बोलते, मगर उनकी अक्ल को आप कम मत समझना। इंसान के अलावा

धरती पर कुछ ऐसे जीव भी हैं, जो बुद्धिमान और चालाक होते हैं।

इंसान दुनिया में सबसे ज्यादा बुद्धिमान प्राणी है, लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि धरती पर मौजूद अन्य जीवों के पास दिमाग बिल्कुल भी नहीं होता। भले ही हम उनकी भाषा को समझ नहीं पाते हैं, मगर बिना बोले भी वो अपनी भावनाओं को व्यक्त कर देते हैं। एक कुत्ते को जब हम आवाज देते हैं तो वह क्यों हमें प्रतिक्रिया देता है?

प्रकृति की गोद में बहुत से रहस्य छुपे हुए हैं। धरती पर कहीं-कहीं ऐसे रोचक स्थान हैं जिसे देखने के बाद इंसान को हैरानी होती है। धरती की सुंदरता को बढ़ाने के लिए कहीं पर्वत एवरेस्ट के रूप में ऊंचे पहाड़, तो कहीं खूबसूरत वन, कहीं समुद्र तो कहीं रेगिस्तान देखने को मिलते है। यहां पर बहुत से झरने भी हैं, जो प्रकृति की सुंदरता में चार चांद लगाते हैं। वैसे तो आपने दुनिया के कुछ सबसे ऊंचे और सबसे लंबे झरनों के बारे में सुना होगा लेकिन कई अपेक्षाकृत अज्ञात झरने हैं जिन्हें केवल अजीब और अवास्तविक के रूप में वर्णित किया जा सकता है।

आज प्रकृति और पर्यावरण से मानव दूर होता जा रहा है। ऐसी मान्यता है कि प्रजापति दक्ष की पुत्री इरा ने वृक्षों एवं वनस्पतियों की सृष्टि कर पृथ्वी को शस्य श्यामला बनाया था, जिनसे वनों का विकास हुआ। प्रकृति ने सोलह श्रृंगार किया। निर्झर गाने लगे, नदियां थिरकने लगीं, रंग-बिरंगे फूल खिल गए। ईश्वर ने जमीन पर विभिन्न किस्म की पेड़-पौधे उगाए, उन पेड़-पौधों को इन्सान अपनी किसी न किसी जरूरत के लिए इस्तेमाल करता है, जिसमें कुछ पेड़-पौधों को अपने इलाज के लिए इस्तेमाल करता है और हर एक में ईश्वर ने अलग-अलग खासियत रखी है, कोई बुखार में फायदेमंद है, कोई सर्दी-जुकाम में फायदेमंद है, तो कोई खांसी में फायदेमंद है। इन विभिन्न जड़ी-बूटियों में बीमारियों से रोगमुक्ति किसने रखी है? ये ईश्वर की ही कुदरत है, जिसने पेड़-पौधों में बीमारियों की दवा रखी है। जीव-जन्तु, पेड़ पौधों तक में जब एक दूसरे के प्रति सेवा और सहयोग का भाव पनप रहा है, तो फिर मनुष्य जाति उससे क्यों पिछड़ी हुई है। हमें पेड़-पौधों से मिलनसारिता सीखनी चाहिए। एल्गी जाति के प्रोटोंकोकस पौधे और फंगस जाति के एक्टीनो माइसिटीज पौधे भी आपस में मिलकर एक दूसरे को सुन्दर ढंग से पोषण की वस्तुएं प्रदान करते हैं।

अब न घोंसले बनाती चिड़ियां दिखाई देती हैं, न ही उनकी चहचहाहट, गर्मियों की गरम और खामोश दोपहरों में नगमें बिखेरती है। एक ठहरी खामोशी है। एक गहरा सन्नाटा है। न टूटनेवाला ठहराव, बेहिसी (संवेदनहीन) है। इन्सानों के बीच तन्हाई है। आवाजों के दरमियान सन्नाटे हैं। अब तो सिर्फ यही जी करता है कि- काश। पलट जाऊं बचपन की वादियों में, जहां न कोई जरूरत थी न कोई जरूरी था। जरूरी नहीं जो साहिल की गोली खुश्क (सूखी) रेत पर हाथ पे हाथ देकर, सफर और लहरों के किस्से सुनाए। द्वीप, हवाओं और रंगों, अनदेखे मौसम और आंखों से ओझल, किनारे पर खड़े हुए दृश्यों और रंगों की बातें करे, वो उन वारदातों से कभी गुजरा भी होगा। दिल पर गुजरनेवाला एहसास इन्सान को उस मकाम से भी गुजार देता है जहां वो कभी जाना भी नहीं चाहता।

नैसर्गिक छटा के बावजूद उपत्यकाएं और नृत्य से शून्य थीं। अंत में शुकी ने मयूर को जन्म दिया। वह आकाश में काले-काले उमड़ते हुए बादलों को देखकर नाचने लगा। मेघराज की गूंद से बन घाटियां मुखरित हुईं। मयूर ने सृष्टि का स्वागत अपनी कला और संगीत से किया। वह जंगल का नटराज बन गया।

सृष्टि पर चारों ओर ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, घृणा आदि की काली छाया थी, जो मानवता के विकास में बाधक थी।

यूनानी देव ने इस काली छाया को मयूर के शरीर पर स्थापित किया। इस प्रकार मयूर के पंख में काले, हरे, भूरे आदि रंग समाहित हुए। मयूर के हरे रंग ने हरियाली का अभियान चलाया ताकि पृथ्वी हरी-भरी बनी रहे। वर्षा के देवता जुपिटर ने हरितक्रांति का आव्हान किया। इस कार्य में उनकी रानी जूनो यानी हेरा ने मयूर को अपना वाहन बनाया। मयुर के केकिनाद से गूंज उठा।

मयूर का अभिनंदन वर्षा की दोनों रानियों मेघश्री और मधयन्तिका ने भी किया था। मयूर वर्षा के देव इंद्र का विकल्प बन गया। मयूर के गान से बादल उमड़ने लगे, जिससे चारों ओर वृष्टि होने लगी। वनों में मयूरों की सत्ता स्थापित हुई। मयूरों के अभयारण्य बने। राजकुमारियां अपना प्रेम पत्र मयूरों से भिजवाती थीं। मयूर दूत चर्चित हो गए। रामायण के अनुसार आकाश में रावण के विमान देखकर भयाक्रांत इंद्र मयूर बन गए थे, तब से मयूर इंद्र का विकल्प बना। इंद्र और मयूर दोनों का रंग नील है। नील अनंतता का प्रतीक है। ब्रह्म, आकाश और अथाह सागर की सीमा का कोई अंत नहीं। मयूर आतंकवाद का घोर शत्रु है। वह सर्वपक्षी है। सर्प आतंक का पर्याय है। आतंकी तारक को मार गिराने के लिए देव सेनापति स्कंद ने युद्ध में मयूर का प्रयोग किया था। प्राचीन काल में मयूराकृति युद्धक विमान बना करते थे। सर्वप्रथम कार्तिक देव ने युद्ध में मयूर वाहन का उपयोग किया था। कला और संस्कृति का परिचायक मानकर मौर्यकाल में मयूरों को संरक्षण प्राप्त था। उनके शिकार पर प्रतिबंध था। मौर्यवंशी स्वयं मयूर पालक थे। पाटिलपुत्र का राजमहल मयूरों से सुशोभित था। गांवों में किसान मयूर पालते थे, जो खेतों की रखवाली करते थे।

अनेक जानवरों के नामों की उत्पत्ति अलग-अलग प्रकार से हुई है। कुछ जानवरों के नाम उनकी बनावट के आधार पर पड़े, तो कुछ के उनकी आदतों के आधार पर।

बहुत से जानवरों के नाम विभिन्न भाषाओं से प्रचलित हुए हैं, अब दरियाई घोड़े को ही लें, इसे अंग्रेजी में हिप्पोपोटेमस कहते हैं। हिप्पोपोटेमस शब्द यूनानी भाषा से लिया गया है। हिपोस का अर्थ है- घोड़ा और पोटामोस का अर्थ है नदी। चूंकि यह जानवर पानी में रहना पसंद करता है, इसलिए इसका नाम दरियाई घोड़ा पड़ गया। इसी प्रकार गेण्डे को रिनोसेरस कहते हैं। यह भी यूनानी भाषा से लिया गया है। रिनोस का अर्थ है- नाक और सेरास का अर्थ है- सींग। चूंकि गेण्डे की नाक पर सींग होता है, इसीलिए इसका नाम रिनोसेरस पड़ गया। तेंदुए के शरीर पर धारियाँ होती हैं, इसलिए इसका नाम लैटिन भाषा के अनुसार लेपर्ड पड़ा। लेपर्ड का अर्थ है- धारियोंवाला शेर।

कुछ जानवरों के नाम स्थानों से जन्मे हैं। जैसे ऊंट को कैमल कहते हैं। कैमल शब्द अरबी भाषा के गौमल से बना है। जिराफ शब्द की उत्पत्ति भी अरबी भाषा से हुई है। जिराफ शब्द का अर्थ है- लंबी गर्दन। ऑक्स, काउ-बुल, डीयर आदि शब्दों की उत्पत्ति एंग्लो-सेक्सन भाषाओं से हुई। कैट यानी बिल्ली शब्द लैटिन भाषा के गाटा शब्द से बना है।

बतख या डक अंग्रेजी के शब्द से जन्मा है- जिसका अर्थ है पानी में गोता लगानेवाला। भेड़िया यानी वुल्फ शब्द की उत्पत्ति एंग्लो-सेक्सन के वुल्फ से हुई है, जिसका अर्थ है- एक प्रकार की लोमड़ी। चूंकि लोमड़ी से मिलती है इसलिए उसे वुल्फ नाम दे दिया गया।

यह ग्रंथ मैंने अपने बड़े भाई स्वर्गीय श्री किशोरीलाल जी पाटोदिया की पुण्यस्मृति में समर्पित किया है।

- महेन्द्रकुमार पाटोदिया

८४ लाख योनियों का वर्गीकरण

प्राणियों की उत्पत्ति

शून्य कला के जीव - जीवाणु (बैक्टेरिया) और विषाणु (वाइरस) प्रकार के होते है। यह किसी के संसर्ग से उत्पन्न हो जाते है। ये संक्रामक है, लाखों करोड़ों की संख्या में विस्तार से वातावरण में फैल जाते है। यह कीचड़, गन्दगी इत्यादि से वातावरण में फैल जाते है। ये बहुत जल्दी अपने आप नष्ट भी हो जाते है। ये जिसके संसर्ग में आ जाते है वो बीमारीग्रस्त या जहरीला बन जाता है। जीवाणु से शुक्राणु बनकर अलग-अलग कलाओं के जीवों की उत्पत्ति होती है।

विभिन्न प्रकार के जीवों की उत्पत्ति

१) जरायुज - जो जीव अथवा प्राणी योनि से उत्पन्न होते है वे जरायुज कहलाते है। जैसे- मनुष्य, सभी प्रकार के पशु इत्यादि।

२) अंडज - जो अंडों से निकलते उत्पन्न होते है वे सभी प्रकार के पक्षी, मुर्गी, मोर इत्यादि।

३) स्वेदज - जो जल से, पसीने से, तेल से उत्पन्न होते है वे सभी जीव स्वेदज कहलाते है जैसे- जूं, मच्छर, मक्खी इत्यादि।

४) उद्भीज - जो पृथ्वी फोड़कर बीज में से उत्पन्न होते है जैसे सभी वनस्पति, पेड़-पौधे, लता, बेल इत्यादि।

१७ कला के जीव

भागवत के अनुसार १ से ८ कला तक के जीवों की उत्पत्ति कश्यपमुनि और उनकी १६ पत्नियों से हुई।

ब्रह्मा के पुत्र मरीचि व पत्नि कला से उत्पन्न प्रजापति कश्यप से सृष्टि का विस्तार हुआ स्थावर व जंगम प्राणियों की उत्पत्ति हुई।

उनकी सोलह पत्नियां - १) अदिति- १२ आदित्य का जन्म हुआ, ८ वसु, ११ रुद्र, २ अश्विनीकुमार, २ दिति - दैत्यों का जन्म हुआ । ३) दनु - दानव, वैरन्नावर, हयग्रीव, शम्बर, पुलोमा वृषपर्वा, विप्रचित्ति दानवों का जन्म हुआ (अश्वग्री) नामक पुत्र। ४) कालका- नरक एवं कालक, निवात कवच, राक्षस, कालकेय, ५ अ) काकेशयनी- कौवे व पक्षी, ब) गृधिका, क) शुचि, ड) ग्रीवा। ६) ताम्रा - घोड़े और ऊंट इससे ५ कन्यायें उत्पन्न हुई। क्रौची- इसने उल्लुओं को जन्म दिया, श्येनी- बाज और गीध, धृतराष्ट्री - हंस, कल हंस चक्रवाक, भासी- भास नामक पक्षी, शुकी- नता नाम की कन्या हुई। नता से विनिता नाम की कन्या, विनिता के दो पुत्र हुये- गरुड़, अरूण- इसके दो पुत्र हुये- सम्पाती और जटायु ७) क्रोधवशा - इस पत्नि से दस कन्यायें उत्पन्न हुई- पुत्र सांप बिच्छु जन्तु। मृगी- इसकी संताने सारे मृग हुये, मृगनन्दा- इससे ऋक्ष (भालु), सृमर और चमर, हरी- केहरी (सिंह) वानर व लंगुर, भद्रमदा - इरावती नामक कन्या को जन्म दिया जिसका पुत्र ऐरावत हुआ जो समस्त लोकों को अमीष्ट है। शार्दुली - से व्याघ्र उत्पन्न हुये। श्वेता- दिग्गज उत्पन्न हुआ। मातंगी - मातंग हाथी उत्पन्न हुये। मातंगी - मातंग हाथी उत्पन्न हुये। सुरभी- दो कन्याओं का जन्म हुआ भैस व गाय, रोहिणी और गन्धर्वी। रोहिणी ने गोओं को जन्म दिया व गन्धर्वी ने घोड़ों को पुत्र रूप से प्रकट किया। सुरसा- समस्त नागों को उत्पन्न किया- वासुकि, तक्षक। कद्रु- सर्पों की जननी- कारकोट, पदम, महापदम। ८) धरा- जल मे रहनेवाले जीव, घड़ियाल, कुर्म, मीन। ९) अनला या इला, इरा- तृण व वनस्पति समस्त वृक्ष व वनस्पतियों को जन्म

दिया, लता गुल्म। १०) अरिष्टा- गन्धर्व। ११) खसा- यक्ष, १२) मुनि- अप्सराये, १३) मनु नाम की पत्नी ने - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शुद्र मनुष्यों को उत्पन्न किया। १४) काष्टा- घोड़े आदि एक खुर वाले पशु। १५) तिमि- जलचर जन्तु, १६) सरमा- वाघ आदि हिंसक पशु।

१ कला के जीव कीट-पतंग

२ कला के जीव जगत, अ) सरीसृप (रेप्टाइल्स) रेंगनेवाले जीव, ब) स्तनपायी (ममल्स) जीव, क) जलजीव जगत,

३ कला के जीव वनस्पति जगत,

४ कला के जीव पक्षी जीव जगत - पशु पक्षियों की सृष्टि तिर्यग्योनियों की सृष्टि गिनी जाती है। इन्हें काल का ज्ञान नहीं होता। इनमें तमोगुण की प्रधानता होती है। ये केवल खाना-पीना, मैथुन करना, सोना आदि जानते है। इन्हें सूंघनेमात्र से वस्तुओं का ज्ञान हो जाता है। इनके हृदय में विचारशक्ति या दूरदर्शिता नहीं होती। कंक, गृध्र आदि पक्षी भी इसी जीव जगत में गिने जाते है।

५ कला के जीव अ) वन्य जीव जगत, ५ कला के जीव ब) ग्राम, जीव जगत, ५ कला के जीव क) बर्फीले जीव जगत। पशुओं में कुछ दो खुरवाले द्विशफ और कुछ एक एक खुरवाले एकशफ होते है। गाय, बकरा, भैंस, हरिण, शूकर, गवय, रूरू, भेड़ और ऊंट ये दो-दो खुरके पशु है। इनके खुर फटे हुए होते है। गधा, घोड़ा, खच्चर, गौर, शरभ और चमरी इन पशुओंके खुर फटे हुए नहीं होते है ये एक-एक खुरके होते है। कुत्ता, सियार, भेड़िया इत्यादि पंचनख होते है।

६ कला का जीव मनुष्य - मनुष्य रजोगुण प्रदान, कर्मपरायण और दुखरूप विषयोंमें सुख माननेवाले होते हैं। मनुष्य विषय भोगोंसे ज्यादा प्रेम करते है और उसी में दिनरात रत रहते है। मनुष्य रिश्ते नाते बनाना जानता है। सुगंध के लिए तरह-तरह के इत्र बनाना मनुष्य के सिवाय किसी योनि को नहीं आता। जिव्हाकी तृप्ति के लिये तरह-तरह के प्रकार का भोजन की खोज का आविष्कार मनुष्य ही करता है। तस्वीर बनाकर आंखोंसे देखना मनुष्य के सिवाय ओर किसी को नहीं आता। भावना, राग-रागिनी, संगीत इत्यादि आंखों से देखना और कान को तृप्त करना मनुष्य के सिवा अन्य योनि कोई नहीं जानती। गंध, रूप, स्पर्श, शब्द ईश्वर ने जैसा नहीं बनाया होगा उससे भी बेहतर बनाने में मनुष्य का हाथ है। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो दु:ख को भी सुख मान लेता है। इनके आहार का प्रभाव मुंह से ऊपर से नीचे की ओर होता है। मनुष्य रजोगुणी स्वभाववाले कर्मपरायण तथा दु:ख-सुख का अनुभव करनेवाले होते है। इस योनि के जीव स्वार्थी होते है। उनमे अहमता और ममता सबसे अधिक होती है।

७ वें कला का जीव - अ) महामानव जो अपनी हुनर, प्रतिभा कला कौशल से सम्पन्न जाने जाते है। जैसे योगीपुरुष, सिद्ध पुरुष, परोपकार इनके गुण है। साधना से इनको कर्मजा सिद्धि प्राप्त होती है। वैज्ञानिक, गणितज्ञ, अभियांत्रिक, चिकित्सक, महापुरुष यह सभी इसी कला के जीव है। इस कला के जीव मुमुक्ष होते है। परहित के लिए कार्य करते है। इन जीवों में त्याग की भावना प्रबल होती है। इनमे अहमता और ममत्व नहीं होता।

ब) अति मानव - यह जादूगर, तांत्रिक इत्यादि व्यक्ति होते है जो वशीकरण मंत्र द्वारा दूसरी आत्माओं को वश में करते है। यह दुष्ट पिशाचों की साधना करते है और स्वभावज: सिद्धि को प्राप्त होते है। इनका अंत:काल बड़ा ही दु:खदायी होता है। यह अपनी तपस्या और साधना, श्मशानभूमि इत्यादि निकृष्ट स्थानों में करते है।

८ वें कला का जीव - जो अपनी साधना और तपस्या से कर्मजा सिद्धि और स्वभावजा सिद्धि को प्राप्त होते है जैसे

महायोगी, मुमुक्ष, सन्यासी, सिद्ध पुरुष इत्यादि। इस प्रकार के जीव कभी भी प्रकट हो सकते है, कभी भी अदृश्य हो सकते है। कभी भी आग और पानी में चल सकते है।

यह सब जीव पृथ्वी पर विचरण करनेवाले जीव है। जो विज्ञान व अध्यात्म से प्रमाणित है।

(९ वें से १६ वें कला तक के जीव सृष्टि में अध्यात्म की दृष्टि से शास्त्रसम्मत, वेदपुराण और भागवत पुराण से प्रतिपादित है।) और १० वीं कला से आगे के जीव सात्विक व आंशिक रूप से भगवान के जीव है। और उन जीवों की उन्नति होते होते वे १३ वें कला तक के जीवों तक पहुंच जाते है और आंशिक कलाओं में भगवान का रूप धारण करते है। पर यह सब जीव ९ से १६ कला तक के जीवों का दर्शनशास्त्र, तर्कशास्त्र, विज्ञान, न्यायशास्त्र निरूपण नहीं करता।

९ वें कला का जीव - भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, साकिनी, कुष्मान्ड, दैत्य राक्षसी। यह हवा के माध्यम से प्रकट होते है, छाया के रूप में आते है। यह भय उत्पन्न करनेवाले जीव है।

१० वें कला का जीव - जो आत्माएं पितर बन जाती है वे सब पितृ योनि के जीव है और किसी भी रूप में प्रकट होकर अपने परिवार का कल्याण करते है।

११ वें कला का जीव - किम्पुरुष, यक्ष, गंधर्व जैसे नारद, तुम्बरु, आहा, अप्सरा जैसे रम्भा, ऊर्वशी, ऋतुश्री, मेनका इत्यादि।

१२ वें कला का जीव - यह भगवान के अंशिक अवतार देवता के रूप में विभिन्न योनियों में प्रकट होते है। जैसे- परमहंस, परमगुरु, ऋषि-मुनि, महर्षि, राजर्षि, ब्रह्मर्षि जैसे- पराशर, शुकदेव, वशिष्ठ, महामुनि व्यास, परशुराम, जनक इत्यादि।

१३ वें कला का जीव - सभी विभिन्न प्रकार के देव योनि से उत्पन्न हुए जैसे देवताओं का राजा इंद्र, हनुमान, रानी सती, श्यामखाटु, रामदेव, बाबा गंगाराम, सनकादिक ऋषि, क्राइस्ट, पैगम्बर इत्यादि।

१४ वें कला का जीव - मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम।

१५ और १६ वें कला का जीव - पूर्ण कला के अवतार १६ कला से युक्त जिनमें षड़ऐश्वर्य ओज, बल, वैभव से परिपूर्ण कृष्ण। यह पूर्ण भगवान है। यह सभी विभूतियों से परिपूर्ण है। श्रीकृष्ण ने अपनी सभी विभूतियों के साथ ५००० वर्ष पहले इस सृष्टि में अवतार ग्रहण किया था।

१७) भूमा पुरुष - ईश्वर सत्य स्वरूप, निराकार, सर्व शक्तिसंपन्न, किसी धर्म, जाति, वर्ण, सम्प्रदाय, मजहब से अलग। सृष्टि की पूरी सत्ता इन्हीं से नियंत्रित होती है। यह शक्ति कभी अवतार धारण नहीं करती। विभिन्न धर्म और सम्प्रदायों में इसे खुदा, बाइबल में गॉड, भागवत में परम विष्णु इत्यादि नामों से जाना जाता है।

मयखाने में बड़े-बड़े मक्कारों और शैतानों को जाम हाथ में लेकर सच उगलते देखा।
अदालत में बड़े-बड़े सेठ, साहुकारों, जमींदारों को हाथों में गीता कुरान रखकर ईश्वर की शपथ लेकर झूठ बोलते देखा।

*** मंदिर में ज्योत, दरगाह में दिया, गुरुद्वारे में ज्योति, गिरिजाघर में मोमबत्ती जलाते हैं, मगर लौ सबकी एक जैसी होती है इससे पता चलता है कि सबका मालिक एक है।**

*** चार वेदों का अर्थ ना जानो तो कोई बात नहीं, परंतु समझदारी, जवाबदारी, वफादारी और ईमानदारी, ये चार शब्दों का मर्म जानों तो भी जीवन सार्थक हो जाये।**

दुनिया के अजूबे

भारत का राष्ट्र गान जन गण मन है। इसके रचयिता श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर हैं। भारत का राष्ट्रीय पुष्प कमल है। भारत का राष्ट्रीय पशु बाघ है। भारत का राष्ट्रीय खेल हॉकी है। भारत का राष्ट्रीय वृक्ष अशोक है। भारत का राष्ट्रीय फल आम है। भारत की राष्ट्रभाषा देवनागरी लिपि में लिखनेवाली हिन्दी है। भारत का राष्ट्रीय वाक्य सत्यमेव जयते है।

कौन से होंगे दुनिया के नए ७ अजूबे- दुनिया के ७ नए अजूबों की विधिवत घोषणा एक जनवरी २००७ को की गई। द न्यू सेवन वंडर्स फाउंडेशन द्वारा इसकी तैयारी की गई थी। उसने २१ स्मारकों को चयनित कर लिया है। इन्हीं में से ७ अजूबे घोषित हुए। दुनिया के सात अजूबों के नाम समय-समय पर अलग-अलग अजूबों को दिए गए। सबसे पहले जिन सात अजूबों को चुना गया। उनमें से वर्तमान के सात अजूबों में केवल ग्रीक के पिरामिड ही है। बाकी छह बदलते चले गए।

इन अजूबों में एक्रोपालिस (एथेंस), अलहंब्रा (स्पेन), अंकोर (कंबोडिया), चिचेन इटजा (मेक्सिको), क्रिस्ट रिडीमीर (रियो डे जेनेरियो), ईस्टर आइसलैंड स्टेच्यू (चिली)

क्योमिजु टेंपल (जापान), क्रेमलिन (रूस), माचू-पिचू (पेरू), न्यूस्चेवनस्टेन केस्टिल (जर्मनी), पेट्रिया (जार्डन), पिरेमिड आफ गिजा (इजिप्ट), स्टोन हेंग (ब्रिटेन), सिडनी ओपेरा हाउस (आस्ट्रेलिया), त्रिम्बुकटु (माली) शामिल हैं।

✻ संसार के सात आश्चर्यों को अब कई प्रकार से वर्गीकृत किया गया है। जैसे कि प्राचीन काल, मध्य काल तथा आधुनिक काल आदि। प्राचीन काल के सात आश्चर्य निम्नलिखित हैं-

✻ विश्व के अजूबे - १) ताजमहल (भारत), २) चीन की दीवार (चाइना) ३) ऐफिल टावर (पेरिस), ४) मिस्र के पिरामिड्स (इजिप्त), ५) स्टेचु ऑफ लिबर्टी (अमेरिका, न्यूयार्क), ६) नियाग्रा वाटर फाल (अमेरिका), ७) लिनिंग टॉवर ऑफ पीसा (इटली), ८) स्टोन हैज (इंग्लैंड), ९) कोलोसम स्टेडियम (रोम), १०) हैंगिंग गार्डन, (झुलता बाग) बेबिलोन, ११) अंकोरवाट टेम्पल (कम्बोडिया), १२) कियोमिज टेम्पल (जापान), १३) क्रेमिलन (रशिया), १४) हामिया सोफिया मस्जिद (तुर्की), १५) एक्रोपालिस (एथेंस), १६) अलहंब्रा (स्पेन), १७) चिचेन इटजा (मेक्सिको), १८) क्रिस्ट रिडीमर (रियो डे जेनेरियो)१९) ईस्टर आइसलैंड स्टेच्यू (चिली) २०) माचू-पिचू (पेरू) २१) न्यूस्चेवनस्टेन केस्टिल (जर्मनी) (न्यू फॉटंम दुर्ग)२२) पेत्रा (जार्डन) -२३) पिरेमिड आफ गिजा (इजिप्ट), २४) सिडनी ओपेरा हाउस (आस्ट्रेलिया), २५) टिम्बकटू (माली)

१) ताजमहल (भारत)- यह संगमरमर से बना मकबरा है, जिसे दुनिया की सबसे खूबसूरत इमारत माना जाता है। यह इमारत मुगल बादशाह शाहजहां ने अपनी बेगम मुमताज महल की याद में बनाया था। उन्होंने अपने सच्चे प्यार को अमर करने के लिए सफेद संगमरमर से ताजमहल का निर्माण करवाया। ताजमहल है घूमने के लिए बेस्ट- दुनियाभर में प्यार की निशानी माने जानेवाले ताजमहल की खूबसूरती आज भी बरकरार है। भारत की शान और प्रेम के प्रतीक इस स्मारक को देखने विदेश से लाखों पर्यटक आते हैं। ताजमहल आगरा की तीन विश्व सांस्कृतिक धरोहरों में से भी एक मानी जाती है।

दुनिया भर से लोग सफेद संगमरमर से बनी इस इमारत का दीदार करने के लिए आते हैं। कुछ ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार यह माना जाता है कि शाहजहां ने इस इमारत को बनवाने के बाद कारीगरों के हाथ काट दिए थे। इसके पीछे की

वजह यह थी कि भविष्य में दोबारा इतनी ज्यादा खूबसूरत इमारत का निर्माण न हो सके।

ताजमहल, उत्तर प्रदेश- दुनिया के सात अजूबों में शामिल ताजमहल उत्तर प्रदेश के आगरा में स्थित है। ताजमहल मूगल वास्तुकला का उत्कृष्ट नमुना है। इसकी वास्तु शैली फारसी, तुर्की, भारतीय और इस्लामी वास्तुकला के घटकों का अनोखा मेल है। ताजमहल का केंद्र बिंदु है एक वर्गकार नींव आधार पर बना सफेद संगमरमर का मकबरा।

ताजमहल के निर्माण में २२ साल लगे। इसका निर्माण १६३१ में शुरु हुआ था जो १६५३ में पूरा हुआ। इसे बनाने के लिए बीस हजार मजदूरों ने काम किया, जिनमें भारत के अलावा फारस और तुर्की के मजदूर भी थे। ताजमहल सबसे ऐतिहासिक स्थलों में तीसरे स्थान पर है। वही पहले स्थान पर पेरू के माचू पिचू और दूसरे स्थान पर कम्बोडिया के अंगकोर वाट ने अपनी जगह बनाई है।

ताजमहल को प्यार का प्रतीक माना जाता है। साल १९८३ में यूनेस्को विश्व विरासत में ताजमहल को जगह दी गई जिसके बाद इसे ७ अजूबों में भी शामिल किया गया। ताजमहल में प्रति वर्ष २० से ४० लाख पर्यटक आते हैं जिनमें से २ लाख से भी ज्यादा विदेशी पर्यटक होते हैं।

भारत की नायाब धरोहरों में शामिल है आगरा का ताजमहल। इसकी खूबसूरती को देखने दुनियाभर से लोग आते हैं। पत्थरों पर बारीकी से किया गया नक्काशी का काम इसकी खूबसूरती में चार चांद लगाता है। आगरा ताज महल के लिए ही पूरी दुनिया में मशहूर हैं।

ताजमहल की ऊंचाई १७१ मीटर (५६१ फीट) है। ताजमहल को बनाने में २२,०००, मजदूर, पेंटर, नक्काशीकार और कारीगर लगाए गए थे। कहा जाता है मुगल शासक शाहजहां ताजमहल के सामने ही काले संगमरमर का एक और ताजमहल बनवाना चाहता था। लेकिन बेटों के बीच चल रहे विवाद और आपसी मतभेदों की वजह से वह नहीं बन पाया।

२) चीन की दीवार- चीन की विशाल दीवार दुनिया की सबसे बड़ी दीवार है। यह पहाड़ों पर ६५०० किलोमीटर के क्षेत्र में फैली है। इसका मुख्य उद्देश्य बाहरी हमलावरों से देश की रक्षा करना था। चीन की दीवार ११७ कि.मी. लम्बी है और उसे रोमन सम्राट हैट्रियन ने सन १२२ ई. में बनवाया था। यह चीन की राजधानी पेइचिंग से ५० कि.मी. उत्तर-पश्चिम दिशा में स्थित है। इस दीवार के साथ-साथ तीन दुर्ग बने हुए हैं। कई बैरकें हैं और साथ ही अनेक घर और मंदिर भी। इस दीवार को कई हिस्सों में बांटा गया है, जिसके हर हिस्से की ऊंचाई ८.५ मीटर और उसके आधार की चौड़ाई ५.७ मीटर के लगभग है। दीवार पर दो मीटर ऊंचाई के बुर्ज हैं और शानहा एकवान, कुपेई खओ पातालिंग, येनमन क्वान आदि नाम के कई फाटक हैं। इसका निर्माण ईसा पूर्व ७ वीं शताब्दी में शुरु हुआ था। यह सदियों में तैयार हुई। १६८४ मील लंबी ३० फीट ऊंची तथा ३२ फीट चौड़ी विश्व विख्यात चीन की विशाल दीवान मानव द्वारा निर्मित एकमात्र ऐसी रचना है जो अन्तरिक्ष से भी नजर आती है और चांद से भी। चीन की दीवार दुनिया के सात अजूबों में से एक है। इस दीवार का नाम वान ली छांग छंग है। इस दीवार की तारीख ईसा से ३०० सौ साल पहले की है। इस दीवार की लम्बाई ६,००० किलो मीटर है। यह दीवार इतनी चौड़ी है कि पांच घुड़सवार इस पर एक साथ दौड़ सकते हैं। इस दीवार की तामीर लगभग डेढ़ हजार साल तक चलती रही। इस दीवार को बाहरी हमलों से बचने के लिए बनाया गया था। इस दीवार को बनाने का हुक्म चिन शिट हवांग ने दिया था। लगातार होनेवाले बाहरी हमलों से इस दीवार को काफी नुकसान पहुंचा है। इसलिए इस दीवार की हिफाजत के लिए १९८४ में ए गैर हुकूमती फाउंडेशन कायम की गई। चीन की २११९६ किलोमीटर लंबी

दीवार देखना सबकी ख्वाहिश होती है। यह कहां से शुरू होती है कहां खत्म होती है यह देखना आसान नहीं है। चीन के मिंग राजवंश ने बोहाई समुद्र में इसे ६६ फीट अंदर तक बनवाकर यह दिखाने की कोशिश की थी कि यह ड्रेगन के पीने का पानी (क्षेत्र के नाम के अनुरूप) है।

चीन शी हुआंग ने बनवाई थी चीन की मशहूर दीवार

चीन अत्यंत प्राचीन देश है। शुरु में यह कई भागों में बंटा हुआ था और इन भागों पर अलग-अलग सरदार राज्य करते थे। किन्तु करीब दो हजार वर्ष पूर्व चीन शी हुआंग नामक एक सरदार ने पूरे देश पर अपना कब्जा कर लिया और फिर उसी के नाम पर इस देश का नाम चीन रखा गया वह चीन का प्रथम सम्राट था। कहा जाता है कि चीन शी हुआंग की तेरह हजार एक सौ चालीस बीबियां थीं और दो हजार आठ सौ बच्चे थे।

उसने चीन की सीमा पर शत्रुओं से सुरक्षित रहने के लिए एक मजबूत दीवार बनवाई थी जो कि एक हजार पांच सौ मील लंबी थी। वही दीवार अब चीन की दीवार के नाम से जानी जाती है और हजारों वर्ष बीतने के बावजूद अभी तक कायम है। यदि कोई चांद पर जाकर धरती की ओर देखे तो उसे सिर्फ चीन की दीवार ही नजर आएगी। इतिहासकारों के अनुसार इस दीवार की नींव में सम्राट ने दस लाख मजदूर जिन्दा दफन करवा दिए थे ताकि उनकी हड्डियों और खून से दीवार खूब मजबूत हो जाए। मरते समय चीन शी हुआंग ने अपने बीबी बच्चों को भी यह आदेश दिया था कि वे भी उसके साथ कब्र में दफन हो जाएं।

यह विश्व की सर्वाधिक लम्बी दीवार है जिसकी लम्बाई ६२६९ किलोमीटर से भी अधिक है। इसकी ऊंचाई ४.५७ मीटर से लेकर ९.२ मीटर तक ही जबकि इसकी चौड़ाई ९.७५ मीटर है। इसका निर्माण पत्थरों तथा ईंटों से किया गया है। इस महान दीवार का निर्माण २२१ ई.पू. में शुरू हुआ था और इसे पूरा होने में १५ वर्ष का समय लगा था।

इस महान दीवार का निर्माण चीन को मंगोल आक्रमणकारियों से बचाने के लिए किया गया था। लगभग २४६ ई.पू. के आसपास चीन छोटे-छोटे प्रांतों में बंटा हुआ था। राजा शिह हुआंग ती ने चीन के विभिन्न प्रांतों को एक साम्राज्य में एकीकृत किया। इस साम्राज्य के उत्तर में बर्बर मंगोल लोग रहते थे और राजा को डर था कि वे किसी भी समय उसके साम्राज्य पर हमला कर सकते थे।

चीन को इस खतरे से सुरक्षित रखने के लिए उसने एक वृहदाकार दीवार के निर्माण का आदेश दिया। इस तरह पोहाई की खाड़ी में शाही कुआन से शुरू करके कांसू में चाईकुमान तक एक दीवार का निर्माण किया गया। इस दीवार पर एक सड़क भी बनाई गई। इस पर सिपाही तैनात रहते थे जो गश्त करके तेजी से संकेत एक-दूसरे तक पहुंचा देते थे।

दुर्भाग्यवश राजा का इस दीवार के निर्माण का उद्देश्य पूरा नहीं हो सका क्योंकि दीवार कई जगह से टूट गई थी और मंगोल लोगों को चीन पर आक्रमण करने का मौका मिल गया था। दीवार के निर्माण का उद्देश्य कभी भी पूरा नहीं हो सका।

३) एफिल टावर- पेरिस की पहचान है एफिल टॉवर। यह कई दृष्टियों से अद्वितीय है। दुनिया के आश्चर्यों में शामिल रही यह इमारत जब बनी तो इसमे उस जमाने के हिसाब से अनेक प्रयोग किये गये थे। इस अनोखे टॉवर का निर्माण १८८९ में हुआ था। तब शीशा, लोहा व स्टील का प्रयोग निर्माण क्षेत्र में नया-नया था। भवनों को हल्का व आधुनिक बनाने के लिए यह इन वस्तुओं को प्रयोग में लाने की शुरुआत का समय था।

एफिल टॉवर की ऊंचाई १०५० फीट है। यह देखने में भारी महसूस होता है लेकिन उसकी तुलना में बहुत हल्का है।

धातु के १५००० टुकड़ों को जोड़कर बनाए गए इस अजूबे का वजन ७००० टन है। यह चार खम्भों के नीचे बने सीमेंट के आधार पर टिका है।

गुस्ताव एफिल नामक इंजीनियर ने इसका सपना देखा था और उसी के नाम पर इस असाधारण इमारत को दुनिया जानती है। गुस्ताव ने इसे बनाने के लिए कागज पर कोई डिजाइन नहीं बनाया। आसमान में धातुओं पर टिकी सभी ऐतिहासिक इमारतों से बहुत ऊंची ये शहतीरे आज पेरिस का गौरव हैं। इसे विश्व के सात आश्चर्यों में एक माना गया है।

एफिल टॉवर के तीन तल है। पहला तल १८७ फीट ऊंचा है। पहले तल पर थियेटर, रेस्टोरेंट, दुकानें वगैरह है। कल्पना नहीं की जा सकती कि एक तल इतना विशाल हो सकता है। पहले तल से ही बहुमंजिली इमारतों भी छोटी सी लगने लगती है। इसके दूसरे तल की ऊंचाई ३७७ फीट है और तीसरे तल की ऊंचाई है ८९९ फीट। हर तल पर जाने के लिए अलग टिकट लेना होता है। यहां से मीलों दूर तक का दृश्य साफ दिखाई देता है।

पेरिस आनेवाला हर व्यक्ति अपने साथ खिलौने के रूप में एक नन्हा ऐफिल टॉवर जरूर साथ लेकर जाता है। प्रति दिन सूर्यास्त के बाद हर एक घंटे पर पांच मिनट के लिए टॉवर जगमगाता है। यही विशेषता इन्हें एक अलग पहचान देती है।

विश्व में कुछ इमारत ही होते हैं,ि जनकी महत्ता हमेशा के लिए बनी रहती है। इसे ही ऐतिहासिक इमारत की श्रेणी में रखते हैं। अगर कोई भी पर्यटक फ्रांस जाता है, तो सबसे पहले उसकी यही तमन्ना रहती है कि सबसे पहले एफिल टॉवर को देखा जाये और उसके सामने फोटो खींचा जाये।

एफिल टॉवर को १८८७ से १८८९ के बीच बनाया गया। पूरा होने पर इसे बनानेवाले गुस्ताव एफिल ने टॉवर के ऊपर फ्रांस का झंडा लगाया। लोहे से बने इस टॉवर को आयरन लेडी के नाम से भी जाना जाता है। इसके निर्माण के लिए ७३०० टन लोहे का इस्तेमाल हुआ। तीन सौ मीटर से अधिक ऊंचाईवाले एफिल टॉवर को तब सबसे ऊंची इमारत का खिताब मिला।

१९२१ में यही से फ्रांस में पहला रेडियो प्रसारण हुआ। हालांकि दूसरे विश्व युद्ध के दौरान इस पर काफी खतरा मंडराता रहा। फ्रांस की सेना को इस बात का डर था कि हिटलर की सेना एफिल टावर को सूचना निकलवाने के लिए इस्तेमाल कर सकती है। इसे नष्ट करने के आदेश भी दिये गये थे। लेकिन एफिल टॉवर इस बुरे वक्त से बिना किसी नुकसान के बाहर निकल आया। दुनिया भर में लाखों लोगों के घरों में एफिल टॉवर का नन्हा रूप देखा जा सकता है, जो सभी के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया है।

मात्र २० वर्षों के लिए बना था यह टॉवर- २६ जनवरी १८८७ को पैरिस के एफिल टॉवर की नींव रखी गयी थी। फ्रांसीसी क्रांति के सौ साल पूरे होने के अवसर पर इसे बनाया गया। समय की योजना के अनुसार इसे केवल बीस साल के लिए ही पैरिस में रहने की अनुमति दी गयी थी। १९०९ में समय-सीमा पूरी हो जाने के बाद इसे गिरा दिया जाना था। लेकिन बीस सालों में टॉवर की लोकप्रियता ऐसी बढ़ी कि इसे गिराने का विचार रद्द कर दिया गया।

हर साल लाखों लोग इसे देखने के लिए पैरिस पहुंचते हैं। इसमें बीस हजार बिजली के बल्ब लगाये गये हैं। १९२१ में यहीं से फ्रांस में पहला रेडियो प्रसारण हुआ।

किसी मशहूर लेखक ने अपनी प्रेमिका से कहा था, मेरी जिंदगी की सबसे रूमानी शाम के दो साथी होंगे- एक तुम और दूसरा एफिल टॉवर। १८८६ में बना ये टॉवर आज भी विश्व के मोस्ट रोमांटिक प्वॉइंट्स में नंबर वन माना जाता है। इसकी

२६५२ सीढ़ियों को पार करने के बाद तुम पूरे शहर को एकबार में निहार सकते हो। वैसे इसमें लिफ्ट भी लगी हुई है। देखनेवाले कहते हैं कि सुबह की सुनहरी किरणों से चमकता एफिल टॉवर किसी शांत और गहरी प्रहरी जैसा लगता है, जो मानो किसी भी आफत से पेरिस को बचा लेने के लिए तनकर खड़ा है।

अलेक्सांद्र गुस्ताव एफिल, जिनके नाम पर एफिल टावर का नाम रखा गया है, १९वीं शताब्दी की प्रसिद्ध फ्रांसीसी सरकार ने फ्रांसीसी क्रांति के संदर्भ में समारोह आयोजित करने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय व्यापार प्रदर्शनी का आयोजन किया था। इस प्रदर्शनी को सैन्टेनियल एक्सपोजीशन का नाम दिया गया था। गुस्ताव एफिल को लोहे तथा स्टील से एक प्रतीकात्मक टावर का डिजाइन तैयार करने तथा निर्माण करने के लिए कहा गया था। इसी का परिणाम था एफिल टावर। यह लगभग १०६० फुट ऊंचा है, जिसके शिखर पर टी.वी. ट्रांसमिशन एरियल लगे हैं। कई वर्षों तक यह विश्व का सबसे ऊंचा ढांचा बना रहा।

एफिल टावर उसी तरह पैरिस का प्रतीक है जिस तरह ताजमहल आगरा का। एफिल टावर की कई मंजिले हैं। अंतिम मंजिल से आसपास का बहुत ही शानदार दृश्य नजर आता है।

एफिल टावर (पेरिस) यूँ तो एफिल टॉवर की ऊंचाई प्राय: ९८४ फुट रहती है, लेकिन तापमान के हिसाब से यह ऊंचाई ६ इंच तक घटती बढ़ती रहती है। पेरिस के एफिल टॉवर का वजन १००० हाथियों से भी ज्यादा है। पेरिस का एफिल टावर ३ मंजिला है। यह ७० लाख टन लोहे से बना है। वर्ष २००६ में फ्रांस स्थित एफिल टॉवर को ६७ लाख पर्यटक देखने आये। जो एक रिकॉर्ड है।

जो दूसरों को बेवकूफ बनाकर उनसे पैसे ले लेते हैं। जिसके १,२ नहीं बल्कि ४५ अलग-अलग नाम थे और जिसने एफिल टावर तक को बेच डाला।

इस शख्स का नाम था विक्टर लसटिग। इसे अमेरिका का सबसे बड़ा ठग माना जाता है। १८९० में चैकोस्लोविया में इसका जन्म हुआ। शुरू से ही यह लोगों को अपने तेज दिमाग के बल पर बेवकूफ बनाया करता था। इसका नाम दुनिया भर के पुलिस स्टेशंस में १९२२ में दर्ज हुआ। जब यह अमेरिका के मिसौरी शहर आया। यहां इसकी नजर बैंक द्वारा जब्त किए गए फार्महाउस पर गई। लसटिग ने बैंक वालों के सामने एक अमीर आदमी का ढोंग करते हुए यह बताया कि वो इस शहर में बसना चाहता है और फार्म हाउस पर काम करना चाहता है। अपनी बात को और सच्चा दिखाने के लिए लसटिग ने बैंक को २२००० डॉलर के फर्जी बॉन्ड दिखाए, जिनमें से बैंक से उसने १०००० डॉलर के बॉन्ड कैश भी कराए। बैंक नले उस उस पर भरोसा करते हुए पैसे दे दिए। पैसे मिलते ही बड़ी चालाकी से लसटिग वहां से गायब हो गया।

बैंक ने एक प्राइवेट जासूस को लसटिग का पता लगाने की जिम्मेदारी दी, जिसकी मदद से बैंक ने लसटिग को न्यूयॉर्क से पकड़ लिया। लेकिन लसटिग ने बैंक वालों को बोला कि अगर प्रेस में यह खबर आई तो इससे बैंक की ही बदनामी होगी और वहां पैसा जमा करनेवालों के दिमाग पर गलत असर पड़ेगा। उसने बैंक को समझाया और उससे १००० डॉलर भी लिए। फिर लसटिग वहां से आराम से चला गया। इसके बाद लसटिग कनाडा गया, जहां उसने एक नामी रईस को ठगा। पर एक ऐसा घोटाला जिसने सबके होश उड़ा दिए, वो था पेरिस की मशहूर इमारत एफिल टावर को बेचना।

दरअसल १९२५ में लसटिग यूरोप आया, क्योंकि कनाडा और अमेरिका की पुलिस उसे ढूंढ रही थी। इसलिए वह पेरिस में ही बस गया। उस वक्त एफिल टावर की मरम्मत का काम चल रहा था। एक अखबार में हेडलाइन थी कि टावर की मरम्मत की

लागत उसको गिराने की लागत से ज्यादा है यह पढ़ते ही लसटिग के चालाक दिमाग में एक जबरदस्त घोटाले का ख्याल आया। उसने सोचा कि अगर किसी मालदार डीलर को एफिल टावर गिराने का ऑर्डर दे दिया जाए तो मजा आ जाएगा।

फिर वह तैयारी करने लगा। उसने कुछ नकली आधिकारिक चीजें प्रिंट करवाई। फिर अलग-अलग लोहा व्यापारियों को न्योता दिया, सरकारी कॉन्टेक्ट पर चर्चा करने के लिए।

चर्चा के दौरान लसटिंग ने तमाम उद्यमियों को बताया कि यह एक सरकारी मीटिंग है। हम चाहते हैं कि एफिल टावर के खराब स्टील को बेचा जाए। इसलिए हम ट्रेंडर मंगा रहे हैं। यह सब चोरीछिपे इसलिए किया जा रहे हैं, क्योंकि एफिल को गिराने के कॉन्ट्रेक्ट देने की खबर से जनता नाराज हो सकती है।

इसी चर्चा के दौरान लसटिंग ने फ्रांस के एक उद्यमी को अपना शिकार चुन लिया था। एक दिन लसटिग ने उस उद्यमी को फोन लगाया और कहा कि वह बिड में जीत गया। पर लसटिग बतौर सरकारी अधिकारी उसे तब यह कॉन्ट्रेक्ट देगा जब वह व्यापारी उसे घूस खिलाए। व्यापारी ने घूस के तौर पर काफी पैसा लसटिंग को दिया। बस फिर जैसा होता आया है वही हुआ। वह व्यापारी बुरी तरह से ठगी का शिकार हुआ और बेइज्जती के डर से पुलिस में रिपोर्ट नहीं लिखवाई। लसटिग ने एफिल टावर को दोबारा बेच दिया एक भोले व्यापारी को। पर इस बार पुलिस तक बात गई। पर वह फ्रैंच पुलिस से एक कदम आगे ही था। लसटिंग ने बहुत घोटाले किए जिनमें नकली अमेरिकी डॉलर्स की प्रिंटिंग भी शामिल थी।

दुनिया की सबसे प्रसिद्ध में से एक है एफिल टॉवर। यह पेरिस का प्रतीक है।

एफिल टॉवर १८८७ में बनना शुरू हुआ और १८८९ में पूरा हुआ। इसे बनाने में करीब ३०० मजदूर लगे। एफिल टॉवर को बनाने के लिए कास्ट आयरन का इस्तेमाल किया गया। फ्रेंच रेवेल्यूशन के शती समारोह (सेंटनेरी) पर १८८९ में एक इंटरनेशनल एग्जीबिशन में एफिल टॉवर को लोगों के सामने लाया गया। अपने बनने के समय यह दुनिया की सबसे बड़ी स्मारक थी उस समय इसकी ऊंचाई ३०० मीटर (९८४ फीट) थी। न्यूयॉर्क के क्रिस्लर ने १९३० में पूरा किया। बाद में टेलीविजन ट्रांसमीटर जोड़ा गया, जिससे एफिल टॉवर ३२०.७५ मीटर (१०५१ फीट) ऊंचा हो गया। एफिल टॉवर के डिजाइन कॉम्पीटीशन में ७०० प्रस्ताव आए थे, जिनमें से गुस्तवो एफिल को चुना गया। एफिल टॉवर को कवर करने के लिए १५ टन पेंट की जरूरत होती है। ऊपर से नीचे तक इसे पेंट करने के लिए २५ पेंटर्स की टीम चाहिए होती है।

४) मिस्र के पिरामिड- कहां गई मिस्र की रहस्यमयी ममी- फरओन या फराहो दरअसल मिस्र के प्राचीन काल के राजा-महाराजाओं की उपाधि थी। इनमें से अंतिम कई फराहो ने वह पिरामिड्स बनवाए, जो आज भी दुनिया के सात अजूबों में शामिल किए जाते हैं। अब तक यही समझा जाता रहा था कि सारे फराहो केवल पुरुष ही थे, पर नेफरतिती नामक महिला ने भी नेफेरमेफूआतेन के नाम से मिस्र पर अल्पावधि तक राज किया था। इसी खोज से यह बात भी सामने आई कि नेफरतिती से कई और महत्वपूर्ण बातें भी जुड़ी हुई हैं। इनमें से एक तथ्य यह है कि सभी फराहो और उनके परिवार के सब सदस्यों की ममियां तो मिल चुकी हैं, लेकिन नेफरतिती की ममी का दूर-दूर तक नामोनिशान नहीं मिलता। मकबरा क्रमांक ५६ से उसका जो शाही ताबूत मिला है, उसमें उसकी नहीं, बल्कि उसके बाद फराहो बने तूतनखामेन की ममी पाई गई है, जिससे अनुमान लगाया गया है कि नेफरतिती की हत्या कर उसकी लाश गायब कर दी गई। यह आशंका इसलिए संभव प्रतीत होती है कि नेफरतिती व उसके पति फराहो आखेनातेन (१३५३-१३३६ ईसापूर्व) ने पूरे मिस्र को अपने खिलाफ कर लिया था।

विरोध का सबसे बड़ा कारण यह था कि आखेनातेन ने अपने १७ वर्षीय राज में फराहो के पारंपरिक देवताओं की बजाए नए देवता आतेन, अर्थात सूर्य को अधिक महत्व दिया था और आतेन देवता के अनेक मंदिरों का निर्माण भी करवाया था। यह मंदिर वास्तुशिल्प के अद्‌भुत नमूने थे, क्योंकि इनके निर्माण में पहली बार अलंगों का इस्तेमाल किया गया था, जो न इससे पहले प्रयोग में लाए गए और न बाद के फराहों ने इस प्रकार के निर्माण किए। इन मंदिरों की विशेषता यह थी कि इसमें छत नहीं होती थी, ताकि सूर्य देवता की किरणें सीधी मंदिर के गर्भगृह तक पहुंच सकें।

लोगों की नाराजगी का एक और बड़ा कारण यह था कि आखेनातेन ने थीब्स के बजाए आखेनातेन स्थान को नई राजधानी घोषित किया था। यह स्थान नील नदी के पूर्वी किनारे से १८० मील दूर था। (अब इसे अमरना के नाम से जाना जाता है, क्योंकि इसी गांव के पास पुराने शहर के अवशेष मिले हैं) एक वर्ष के अंदर-अंदर इस स्थान पर २०००० से अधिक आबादी वाला एक भव्य शहर बन गया। लेकिन आखेनातेन और नेफरतिती के मरने के बाद उनके उत्तराधिकारी फराहों ने फिर एक बार थीब्स को राजधानी बना लिया और आखेनातेन शहर की ईंट से ईंट बजा दी। अवशेषों में केवल इसकी भव्यता और वास्तुशिल्प का अंदाजा होता है। आखेनातेन के शासन के १७ वर्ष तथा उसकी मृत्यु के बाद के कुछ वर्षों में भी नेफरतिती की तूती बोल रही थी। उसका दबदबा तब और भी बढ़ गया, जब उसने अपनी सौत और तूतनखामेन की मां कीया को ठिकाने लगा दिया। आखेनातेन की मृत्यु के ४ वर्ष बाद सत्ता की बागडोर तूतनखामेन के हाथ आई। इस अवधि में दो फराहों ने राज किया। इतिहासकारों का अनुमान है कि इनमें से एक स्मेंखकारे और दूसरी स्वयं नेफरतिती थी। इन सब तथ्यों से अनुमान लगाया जा रहा है कि एक महिला किसी तरह जोड़-तोड़ और षड्‌यंत्रों द्वारा सत्ता हथिया कर फराहो तो बन बैठी थी, लेकिन वह यह सुख एक दो वर्ष ही भोग सकी, क्योंकि उसकी हत्या कर दी गई, लेकिन पुख्ता सबूत मिलने तक इस बारे में यकीन से कुछ कहा नहीं जा सकता।

राजपरिवार के मकबरे जिसमें मिस्र के मृत फरोह के शव सुरक्षित रखे हैं। इनकी कुल संख्या ७० है। यह गीजा से शुरू होकर नील की पश्चिम दिशा में काहिरा के सामने होते हुए दक्षिण में लगभग १०० कि.मी. तक स्थित है। यह पिरामिड मिस्र के १२०० वर्षों के इतिहास के साक्ष्य हैं। पिरामिड मिस्त्री सम्राटों (फ्राउन) की समाधियां है इसलिए मिस्र के पिरामिड बनाए गए थे। मिस्र में १३८ पिरामिड हैं लेकिन इनमें से गीजा का सिर्फ एक विशालकाय पिरामिड ही विश्व के सात आश्चर्यों की सूची में है। मिस्र के पिरामिड में चुना पत्थर का इस्तेमाल सर्वाधिक मात्रा में किया गया है।

मिश्र के पिरामिडों की गिनती विश्व के सात आश्चर्यों में की जाती है। मिश्र दुनिया का बहुत प्राचीन देश है वहां की सभ्यता अति प्राचीन सभ्यताओं में मानी जाती है। यद्यपि मिश्र की सभ्यता और संस्कृति के अब जो अवशेष बचे हैं उनसे सिद्ध होता है कि अब से तीन-चार हजार साल तक वहां के लोग काफी उन्नत जीवन व्यतीत करते थे। उस समय वहां की कला कौशल भी काफी उन्नत थी।

काहिरा के पास बने इन पिरामिडों के संबंध में समझा जाता है कि ई. ५५०० वर्ष से लेकर ३००० ई. पूर्व तक की अवधि में बनाये गये। यहां पर बड़े-बड़े पत्थरों को चुनकर सीढ़ियों जैसा बनाया गया है। नीचे का भाग बहुत बड़ा है। वे ज्यों-ज्यों ऊपर को उठते गये हैं त्यों-त्यों पतले होते गये हैं। पिरामिडों के निर्माण को देखकर वास्तुशिल्प और भवन निर्माण कला के विशेषज्ञों को आज भी दंग रह जाना पड़ता है पत्थर की चट्टानों से बने इन स्मारकों का निर्माण किस प्रकार किया गया होगा, यह जानना तो दूर रहा इसकी कल्पना तक नहीं की जा सकती। पिरामिडों के निर्माण में जो पत्थर प्रयोग

किये जाते हैं उनमें से अधिकतर १२ फुट से अधिक ऊंचे हैं। उनकी सतह भी उतनी ही लंबी और चौड़ी है। पत्थरों के इन विशाल टुकड़ों को किस प्रकार इतनी ऊंचाई तक चढ़ाया गया होगा यह समझ पाना कठिन है।

आधुनिक तकनीक और विकसित भवन निर्माण के यंत्र उपकरणों का सहारा लेकर भी पिरामिडों में लगे पत्थरों के एक कोने वाले जितने डाट पत्थर के भी पिरामिडों को जितनी ऊंचाई तक ले जाना कठिन है फिर १२ फुटी पत्थर को तो इतनी ऊंचाई तक ले जाने की बात सोची भी नहीं जा सकती।

५) स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी (न्यूयार्क) - खुद में अजूबा है स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी

स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी अमेरिका के लिबर्टी आईलैंड में स्थित है। लिबर्टी आइलैंड का पुरातन नाम बिडोली आईलैंण्ड था। फ्रांस के एडवर्स डी. लेबूली ने इसे फ्रांस में बनाया स्टैच्यू का १५० फुट का आधार अमेरिकावासियों ने बनवाया। इस पर २४६३५ टन भारी विशाल स्वतंत्रता की देवी की प्रतिमा स्थापित की गई। इसका एक हाथ उठा हुआ है जिस पर मशाल जलती है। यह मशाल जहाजों को रास्ता दिखाया करती थी। यह पूरी मूर्ति तांबे की बनी हुई है। १८८६ को फ्रांस ने न्यूयार्क बंदरगाह पर इसे स्थापित किया। यह स्वतंत्रता की देवी-अमेरिकियों की स्वतंत्रता का प्रतिनिधित्व करती है। २८ अक्टूबर १८८६ को तत्कालीन राष्ट्रपति ने इसे अमेरिका को उपहारित किया। सन १९०१ को इस विशाल प्रतिमा का प्रतिनिधित्व अमेरिका के युद्ध विभाग ने किया। बाद में इसे राष्ट्रीय पुरातत्व भवन घोषित कर दिया।

इसके अंदर घुमावदार सीढ़ियां बनी है जो ऊपर-स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी के सिर तक जाती है। इसकी कुल लंबाई आधार से शिखर तक ३०५ फुट है। इसमें एक लिफ्ट लगी है जो पर्यटकों को शिखर तक पहुंचाती है। इसके एक विभाग में बड़ी लाइब्रेरी बनी है। इन स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी के अंदर एवं शिखर पर कई हॉलीवुड की फिल्मों की शूटिंग हो चुकी है। फ्रांस के तांबे की १५२ फुट की प्रतिमा बनाकर पानी के जहाज द्वारा न्यूयार्क द्वीप पर पहुंचा दी गई तब इसे वहां बने १५० फुट ऊंचे मंच पर प्रतिस्थापित कर दिया।

आज १२० वर्ष से यह प्रतिमा उसी तरह चमक रही है जैसे १८८६ में थी। इसके अन्दर ३५४ सीढ़ियां बनी है जो ऊपर मुकुट तक ले जाती है। वह स्टेच्यू मेनहट्टन द्वीप में बन्दरगाह पर आनेवाले जलपोतों को स्वतंत्रता का सन्देश देता है। कांस्य प्रतिमा का मुकुट सात कांटों का बना है। इसके दांए हाथ में मशाल है। बाएं हाथ में कानून की पुस्तिका पकड़ी हैं इस पुस्तक पर ४ जुलाई १७७६ अंकित है। फ्रांसिसियों ने अमेरिका की स्वतंत्रता की शताब्दी समारोह पर अमेरिका को भेट के फलस्वरूप यह कांस्य प्रतिमा दी थी।

इसके पास पहुंच कर इसे पूरा देखने के लिए सिर को पूरा आसमान की ओर उठाना पड़ता है। समुद्र तट से अथवा अधिक दूरी से तुम इसे देखो तो मूर्ति तो पूरी दिखाई देती हैं, परंतु इसके पास घूम रहे स्त्री-पुरुष चींटी जितने छोटे दिखाई पड़ते हैं। कारण यह है कि विश्व के सात आश्चर्यों में से एक यह मूर्ति बहुत ऊंची एवं भव्य है। यह विश्व की सबसे बड़ी पत्थर की मूर्ति है। इसकी ऊंचाई १५२ फीट है तथा यह १५० फीट ऊंचे पैडस्टल यानी चबूतरे पर टिकी है। इस भव्य मूर्ति के ऊपर सिर पर सीधे हाथ में बनी टार्च तक सीढ़ियों के सहारे पहुंचा जा सकता है। वहां बनी एक छोटी बालकनी में खड़े होकर दूर-दूर के दृश्यों का अवलोकन किया जा सकता है। स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी अमेरिका के न्यूयार्क शहर के समुद्री तट पर पानी के बीच लिबर्टी नामक द्वीप पर बनी है। यह मूर्ति अमेरिका को फ्रांस के द्वारा १८६६ में उपहार के रूप में दी गई थी। इसका पारंपारिक उद्घाटन १८८६ में किया इसके मूर्तिकार का नाम है ऑगस्ट बर्थो डी. यह मूर्ति विश्व में

स्वतंत्रता के प्रतीक के रूप में जानी जाती है। इस मूर्ति तक पहुंचने के लिए फैरी द्वारा पहुंचना होता है। बैटरी पार्क नामक समुद्रीतट से लिबर्टी द्वीप तक के लिए नियमित रूप से फैरी चलती हैं ये फैरी दो मंजिली बनी होती है, जिसमें एक बार में कम से कम १०० से १२० लोग तक आ सकते हैं। इन दोनों मंजिलों पर पर्यटकों के लिए कुर्सियां लगी रहती हैं। यह फैरी एक तरह से मोटर-चलित बड़ी नाव होती है।

मूर्ति देखने आनेवाले पर्यटकों का यहां हरदम तांता लगा रहता है। पहले पर्यटकों को मूर्ति के हाथ में बनी टार्च तक जाने की अनुमति थी, परंतु पिछले कुछ वर्षों में लोगों के यहां से आत्महत्या कर लेने के कारण टार्च तक जाना बंद कर दिया है। अब पर्यटक मूर्ति के मुकुट तक ही जा सकते हैं पिडस्टल यानी जिस चबूतरे पर मूर्ति खड़ी है कि निचली मंजिल पर दो संग्रहालय बने हैं। एक है इमीग्रेशन संग्रहालय तथा दूसरा है मूर्ति की कहानी बतानेवाला संग्रहालय। इस मूर्ति की शताब्दी १९८६ में मनाई गई थी।

अमेरिका स्थित लोकतंत्र एवं स्वतंत्रता की प्रतीक मानी जानेवाली स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी इस प्रतिमा के निर्माण की प्रेरणा एक अरब महिला से ली गई है। उनके अनुसार सुएज नहर के पास एक अरब महिला की प्रतिमा लगाने की परियोजना थी। उसे इस नहर की रक्षिका के तौर पर स्थापित की जानी थी। बाद में इसी परियोजना के रूप को थोड़ा परिवर्तित कर स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी का रूप दिया गया। सीरिया और अन्य मुस्लिम बहुल देशों से भारी संख्या में अमेरिका आनेवाले शरणार्थियों की घटनाओं के बीच इस खुलासे ने एक नयी बहस को जन्म दे दिया है। न्यूर्यार्क में स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी की सुरक्षा करनेवाले यूएस नेशनल पार्क सर्विस ने बताया कि फ्रांसीसी मूर्तिकार फ्रेदरिक ऑगस्त बारथोल्दी ने १८५५-१८५६ में मिस्र की यात्रा की थी और वही पर उन्हें बड़ी-बड़ी प्रतिमाओं, विरासत स्थलों को बनाने का जुनून जागा। मिस्र की सरकार ने जब १८६९ में सुएज नहर पर एक प्रकाश स्तंभ (लाइटहाउस) बनाने के लिए प्रस्ताव मांगा तो इस परियोजना के लिए बारथोल्दी ने लबादा ओढ़ी एक महिला की बहुत बड़ी प्रतिमा का डिजायन बनाया जो अपने हाथ में एक प्रकाशपुंज (टॉर्च) पकड़े हुई थी। बारथोल्दी ने इसे इजिप्ट ब्रिंग्स लाइट टू एशिया की उपमा दी थी। इस विषय के बारे में लिखनेवाले एडवर्ड बेरेनसन ने बताया कि इस परियोजना के लिए बारथोल्दी ने ढेर सारी डिजायन और ड्राइंग बनाई। इस परियोजना के लिए उन्होंने पहले एक महिला अरब कृषक के चेहरे को बनाया जो बाद में परिवर्तित होकर एक रोमन देवी बनी। जब फ्रांसीसी इतिहासकार इडोर्ड डि लाबोलाए ने स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी का खाका बनाया तो बारथोल्दी को दूसरा अवसर मिला और उन्होंने अपने पुराने डिजयन पर नए सिरे से काम शुरू कर दिया। १८७० में स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी पर काम शुरू हुआ और इसका उद्घाटन १८८६ में हुआ।

स्टेच्यू ऑफ लिबर्टी अर्थात् स्वतंत्रता की देवी की प्रतिमा संसार की विशालतम प्रतिमाओं में से एक है। इस प्रतिमा को न्यूयार्क के बैडलोए द्वीप पर स्थापित कर २८ अक्टूबर, १८८६ को इसका उद्घाटन किया गया था। इस द्वीप को अब लिबर्टी द्वीप के नाम से जाना जाता है। अमेरिका की १०० वीं वर्षगांठ पर फ्रांसवासियों ने इसे भेंट स्वरूप दिया था। इस प्रतिमा के बाएं हाथ में एक फलक है, जिस पर अमेरिकी स्वतंत्रता दिवस की तारीख ४ जुलाई १७७६ अंकित है।

९३ मीटर ऊंची तथा १५ मीटर परिधि में लोहे के ढांचे पर तांबे की चादरों से निर्मित इस प्रतिमा का कुल भार २०० टन है। स्वतंत्रता सुंदरी के ज्योतिपुंज अर्थात् मशाल में जस्ता मिश्रित शीशे के बने ६०० प्रकाश द्वार हैं। इनमें १९ लैंप्स जलते हैं, जिनसे लगभग १३००० वॉट प्रकाश निकलता है। प्रतिमा तल से घुमावदार सीढ़ियां मुकुट तक जाती हैं।

प्रत्येक जीने में १६८ सीढ़ियां हैं। दर्शक एक जीने से चढ़ते और दूसरे से उतरते हैं। मुकुट पर बनी २५ खिड़कियों से एक-एक बार में ३० दर्शक खड़े होकर दूर तक का नजारा लेते हैं।

पेरिस में रहनेवाले अमरीकियों ने इस भेंट की सराहना की ओर प्रतीकस्वरूप इसका ९ मीटर ऊंचा प्रतिरूप फ्रांस को भेंट किया। पेरिस में विश्वविद्यालय एफिल टॉवर के नजदीक यह प्रतिरूप अब भी स्थापित है जबकि मूल प्रतिमा न्यूयार्क बंदरगाह पर खड़ी प्रविष्ट होनेवाले जलयानों का स्वागत करती है।

जलवायु परिवर्तन और समंदर में पानी का स्तर बढ़ने के कारण अमेरिका में स्टेचू ऑफ लिबर्टी से लेकर नासा की रॉकेट लॉंच साइट तक कई इमारतें खतरे में हैं। वैज्ञानिकों ने सतर्क और तैयार रहने की चेतावनी दी है।

अमेरिकी वैज्ञानिकों के एक संघ ने दो दर्जन से ज्यादा ऐतिहासिक इमारतों को ऐसी सूची में रखा है तो तट पर जमीन कटने, बाढ़ और जंगल की आग से सीधे खतरे में हैं। इस सूची में स्टैचू ऑफ लिबर्टी और न्यूयॉर्क बंदरगाह का एलिस द्वीप भी है। इसी बंदरगाह से १८८६ से १९२४ के बीच एक करोड़ चार लाख प्रवासी अमेरिका आए थे। पिछली सदी में न्यूयॉर्क शहर के आसपास समंदर का स्तर १२ इंच यानि करीब ३० सेंटीमीटर बढ़ गया है।

२०१२ के सैंडी तूफान के कारण एलिस और लिबर्टी को बाढ़ से जूझना पड़ा। दोनों द्वीपों की मूलभूत संरचना ध्वस्त हो गई और उन्हें महीनों बंद रखना पड़ा। लिबर्टी द्वीप पर ही स्टैचू ऑफ लिबर्टी है। न्यूयॉर्क अब द्वीपों पर ऐसे इलेक्ट्रिकल सिस्टम बना रहा है जो समंदर के स्तर से करीब २० फीट ऊंचे हों और इस तरह के हीटिंग और एसी सिस्टम बनाए जा रहे हैं जो बाढ़ का सामना कर सकें और जगहें जो पानी का स्तर बढ़ने के कारण खतरे में हैं उनमें उत्तर अमेरिका के वर्जीनिया में पहली स्थायी ब्रिटिश कॉलोनी जेम्स टाउस द्वीप और दक्षिणी कैरोलाइना का चार्ल्सटन द्वीप शामिल है।

नासा परेशान- अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा के अरबों डॉलर वाले पांच तटीय कॉम्प्लेक्स भी खतरे में हैं। यहां अंतरिक्ष यात्रियों को ट्रेनिंग दी जाती है और यहां से कई सालों से रॉकेट लॉंच किए जाते रहे हैं। खतरा झेल रहे सेंटरों में फ्लोरिडा का केप कैनेवेरल और ह्यूस्टन का मिशन कंट्रोल शामिल है। अमेरिका में कुल सात ऐसे सेंटर हैं। अमेरिकी स्पेस एजेंसी, जहां संभव है, वहां समंदर के किनारे दीवार बना रही है और इमारतों को तटों से दूर ले जाने की कोशिश कर रही है। नासा के योजना और विकास कार्यालय के मुताबिक बढ़ता समुद्री जलस्तर कैनेडी स्पेस सेंटर में जारी ऑपरेशन के लिए सबसे बड़ा खतरा है।

नासा का एक और स्टेशन जो बढ़ते जल स्तर से जूझ रहा है, वह है वर्जीनिया का वैलॉप्स फ्लाइट फैसिलिटी। १९४५ में इसके शुरू होने से अभी तक समंदर के स्तर में नौ इंच यानि २३ सेंटीमीटर की बढ़ोत्तरी हो गई है। पीछे हटना ही एक रास्ता है क्योंकि आप अचानक उठकर यहां से नहीं जा सकते। इमारतें बहुत फैली हुई हैं। पानी से लगी हुई इमारतों को वो गिरा रहे हैं और नई इमारतें अपनी जमीन पर ही लेकिन पानी से दूर बना रहे हैं।

नए कॉम्प्लेक्स का नाम न्यूटाउन रखा गया है। २००९ में ही अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने सभी सरकारी एजेंसियों को जलवायु परिवर्तन से जूझने के लिए तैयार रहने को कह दिया था।

स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी - एक महिला की मूर्ति, जो हाथों में मशाल लिए हुए खड़ी है। ये रोमन लिबर्टी गॉडेस लिबर्टास की मूर्ति है, जिसे आप स्टैच्यू ऑफ लिबर्टी के नाम से जानते हो। अमेरिका के न्यूयॉर्क शहर के मैनहट्टन में लिबर्टी द्वीप पर स्थित इस मूर्ति की ऊंचाई ९३ मीटर है, जो तांबे की बनी हुई है। फ्रांस के कारिगरों के द्वारा अमेरिक को दिया गया उपहार है यह प्रतिमा, जिसका कुल वजन २५५ टन है। इस मूर्ति के मुकुट पर ७ किरणे हैं, जो दुनिया के ७ महाद्वीपों का

प्रतिनिधित्व करती हैं। प्रत्येक किरण की लंबाई ९ फीट है। मूर्ति के भीतार से उसके सीर तक पहुंचने का रास्ता बनाया गया है, जिससे होकर आप मूर्ति के सिर तक पहुंच सकते हो। इसे भी पूरी दुनिया के कुछ गिने-चुने अजूबों में गिना जाता है।

६) नियाग्रा वॉटर फॉल - यह अमेरिका का सबसे मशहूर वाटरफॉल है। यह अमेरिकन फॉल्स, ब्राइडल वेल फॉल्स तथा होरशॉ फॉल्स के मिलने से बना है। यहां का खूबसूरत नजारा हर किसी को अपनी ओर खींच लेता है।

यह वॉटरफॉल्स अमेरिका और कनाडा की सीमा पर स्थित है। इसे देखने के लिए एक विशेष सुरंग भी बनाई गई। नौका में बैठकर ऊपर से गिरते इस विशाल झरने को देखने का रोमांच भी कुछ अलग होता है। नियाग्रा नदी पर स्थित यह दुनिया का सबसे प्रसिद्ध वॉटरफॉल है, जो तीन जलप्रपातों का समूह है- अमेरिकन फॉल्स, ब्राइडल वेल फॉल्स और होरश फॉल्स। यहां हर साल लगभग एक करोड़ से भी ज्यादा पर्यटक घूमने आते हैं। इसकी खासियत वह विशाल इलाका है, जहां से यह झरना गिरता है। इसकी लहरें हवा के साथ मिलकर एक अलग ही ठंडक का एहसास देती है।

उत्तरी अमेरिका का सबसे प्रसिद्ध जलप्रपात न्याग्रा फॉल्स दरअसल दो जलप्रपात हैं, जिन्हें गोट नामक द्वीप अलग करता है। अमेरिकन फॉल्स तथा हॉर्स-शू फॉल्स ३५ मील लम्बी न्याग्रा नदी पर बिल्कुल पास-पास स्थित हैं। यह नदी न्यूयार्क राज्य तथा ओन्टारियो प्रोविन्स के बीच सीमा रेखा का कार्य करती है। दोनों फॉल्स एक जैसे ही आकार के दिखाई देते हैं। हॉर्स-शू फॉल्स ९४ प्रतिशत पानी वहन करते हैं या प्रति सेकेंड इस पर से ३६००० क्यूबिक फुट पानी नीचे गिरता है।

इनके बीच की चौड़ाई भाग है तथा ये १६७ फुट लम्बे है। हालांकि उत्तरी अमेरिका में ये सबसे लम्बे जलप्रपात नहीं हैं परन्तु इनकी विशालता, पानी का निरंतर प्रबल प्रवाह तथा जोरदार गर्जन इन्हें सबसे अधिक दर्शनीय जलप्रपातों में से एक बनाते हैं। ये चतुर्थी युगीन हिमकाल में बने थे, जब ग्लेशियर के मलबे के कारण मार्ग अवरुद्ध होने पर न्याग्रा नदी ने अपना मार्ग बदल लिया था। इस मामले में भौगोलिक तौर पर कहें तो ये जलप्रपात अभी नए ही हैं। इन्हें यूरोपियनों द्वारा सबसे पहले १६८३ में देखा गया था और तब से ये पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण बने हुए हैं। विशेषकर १९वीं शताब्दी के मध्यकाल से जब सड़क तथा रेल सम्पर्क ने आगंतुकों के मांट्रियल, फिलाडेल्फिया, टोरंटो तथा न्यूयार्क जैसे स्थानों से यहां पहुंचने को बहुत आसान बना दिया। जोखिम भरे कारनामे (स्टंट्स) जैसे कि लहरों के साथ ड्रम में नीचे गिरना आम रहे हैं तथा इनसे कई लोग मृत्यु का शिकार बने। रस्सी पर चलनेवाले महान चार्ल्स ब्लांडिन (जीन फ्रैंकॉयस ग्रेवलेट) ने रस्सी पर आंखें बांधकर, एक अन्य व्यक्ति को उठाकर तथा एक पहिए वाले छकड़े पर कई बार सफलतापूर्वक इन जलप्रपातों को पार किया। अमेरिका तथा कनाडा की सीमा पर स्थित इन फॉल्स का मूल अमेरिकी भाषा में अर्थ है, गरजनेवाला यानी पानी। यहां न्याग्रा नदी प्रति मिनट इतना पानी छोड़ती है कि १५० ओलम्पिक स्विमिंग पूल भर जाएं।

७) लिनिंग टॉवर ऑफ पीसा (इटली)- लीनिंग टॉवर ऑफ पीसा

इटली के शहर पीसा में बनी लीनिंग टॉवर ऑफ पीसा एक आकर्षक इमारत है। इस झुकी हुई इमारत का निर्माण ११७३ में शुरू हुआ। यह टॉवर एक ओर झुकी हुई है, जो सचमुच एक करिश्मा है और माना जा रहा है कि यह टॉवर लगातार झुक रही है। इसके झुके होने की वजह असमतल जमीन बताई जाती है। तीन मंजिलें बनाने के बाद इसके नीचे की धरती धीरे-धीरे धंसने लगी, जिससे यह एक ओर झुक गई, पर निर्माण जारी रहा। १३६०-७० के बीच इसका निर्माण पूरा हुआ। संसार के इस आश्चर्य को देखने असंख्य दर्शक रोज यहां जुटते हैं।

यह मीनार करारा नाम के चमकदार पत्थर से बनी है जो सूर्य की किरणों से ज्यादा चमकता है। यह करीगरों एवं

शिल्पकारों के कला-कौशल का अद्‌भुत नमूना है।

पुराने राजाओं-महाराजाओं को महल, किले, मकबरे, मीनारें बनवाने का बहुत शौक था। वे अपने अस्तित्व को चिरस्थायी बनाना चाहते थे ताकि लोग उन्हें याद कर सकें। प्राचीन बगीचे, मकबरे, महल आज तक अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। पुरातत्व विभाग इनकी देखरेख करता है। कुतुब मीनार, गेडस की मूर्ति, सिकन्दरिया के प्रकाश स्तम्भ, ओलिम्पिया में जियस की मूर्ति-सब विश्व के आश्चर्यों की श्रृंखला में अपना नाम दर्ज किए हुए हैं। इन्हीं में से एक है पीसा की मीनार। पीसा की मीनार का निर्माण १२वीं शताब्दी से शुरू होकर १४वीं शताब्दी तक चलता रहा था। जिस प्रकार भारत के कुतुब मीनार, चार मीनार, ताज महल अपने विशिष्ट गौरव के कारण प्रसिद्ध हैं, उसी प्रकार इटली में पीसा की मीनार आज भी अपनी गौरव गाथा की खुद गवाह है। इसकी नींव इतनी पक्की है कि यह एक तरफ झुकी हुई होने के कारण भी गिरती नहीं।

माना जाता है कि रोम में भी एक ऐसी ही मीनार खड़ी है जो झुकी हुई है और कई बार हिलने के बावजूद अडिग है। एक बार एक तेज भूकम्प आया था तब पीसा की मीनार में २२ मिनट तक कंपन होता रहा परन्तु इसने अपने आधार को छोड़ा नहीं। यह ज्यों की त्यों बनी रही। यह दुर्लभ मीनार मिट्टी में एक तरफ झुकी हुई है परन्तु यह आनेवाले युग में स्थिर रहेगी। तभी इसे पीसा की झुकी मीनार कहते हैं। यह दुनिया का आश्चर्य माना जाता है।

मीनार अपने आधार से ४ मीटर चौड़ी है। इसकी ८ मंजिलें हैं। इसकी कुल ऊंचाई ५५ मीटर तक है। अंदर कुतुब मीनार की तरह ३०० सीढ़ियां गोलाई में बनी हैं। इसे ११७४ में बनाना शुरू किया गया और १३५० तक पूर्ण किया गया था। मीनार का आधार रेत में हे। जब यह बन रही थी तो तीसरी मंजिल के बनने के बाद ही यह झुकनी शुरू हो गई। बाकी पांच मंजिलें बाद में बनीं लेकिन इसका सैंटर ऑफ ग्रैविटी आज भी आधार के बीच ही गिरता है। इसीलिए यह विचित्र मीनार झुकी रहती है पर गिरती नहीं। इसकी आठवीं मंजिल आधार से पांच मीटर झुकी हुई है।

८) स्टोन हेंज (इंग्लैंड) - ब्रिटेन की विल्टशायर काउंटी में स्थित एक प्रसिद्ध प्रागैतिहासिक स्थापत्य है। यह एक महापाषाण शिलावर्त (बड़ी शिलाओं को व्यवस्थित करके बनाया गया गोला) है। इसमें ७ मीटर (२३ फुट) से भी ऊंची शिलाओं को धरती में गाड़कर खड़ा करके एक चक्र बनाया गया था। इतिहासकार अनुमान लगाते हैं कि इसका निर्माण पाषाण युग और कांस्य युग में ३००० ईसापूर्व से २००० ईसापूर्व काल में संपन्न हुआ। स्टोनहॅन्ज के प्राचीन निर्माताओं के ध्येय के बारे में विद्वानों में मतभेद है लेकिन यहाँ ३००० ईसापूर्व काल से शुरू होकर मानव कब्रों के चिन्ह मिलते हैं जिनमें सबसे प्राचीन अस्तियाँ ३००० ईपू में अग्निदाह किये गये एक मृतक की हैं।

९) कोलोसम स्टेडियम (रोम)- पत्थर का बना एक विशाल स्टेडियम था जिसे प्राचीन रोम में बनाया गया था। यह १८९ मीटर लम्बा, १५६ मीटर चौड़ा तथा ५२ मीटर ऊंचा था। इसमें लगभग ५०००० दर्शक समा सकते थे जो ८० प्रदेशद्वारों से इसमें दाखिल होते थे। खेलों में ग्लैडिएटरों के बीच होनेवाली लड़ाई शामिल थी जो वे तलवारों, जाल तथा अन्य हथियारों के साथ लड़ते थे, जो किसी की मृत्यु तक जारी रहती थी। वे शेरों तथा अन्य जंगली जानवरों के साथ भी लड़ते थे। ऊपर की ओर उठाए जा सकनेवाले दरवाजों के एक साथ ६४ जंगली जानवर बाहर निकल सकते थे। मात्र ८ वर्षों में ईस्वी सन ७८ तक यह कोलोसियम पूरी तरह से बनकर तैयार हो गया। इसे बनाने के लिए रोमनों को लगभग अढ़ाई लाख टन पत्थर रोम के २० किलोमीटर बाहर से लाने पड़े थे। निर्माण के दौरान लगभग एक टन पत्थर से लदा छकड़ा प्रत्येक ७ मिनट में अंतराल के बाद नदी के किनारे ये अपने निर्माण स्थल तक डेढ़ किलोमीटर की यात्रा पर

निकलता था। इसका उद्घाटन दर्शनीय खेलों के साथ हुआ जो १०० दिनों तक जारी रहे। रोमन ग्लैडिएटरों की उनकी ताकत, बहादुरी तथा कौशल के लिए सभी प्रशंसा करते थे लेकिन उनका जीवन छोटा तथा मृत्यु भयावह होती थी।

रोमन कोलॉजिअब (७०-८२ ई.) रोम, इटली - रोम का कोलोसियम वास्तुकला का अनूठा उदाहरण है, जो एक विश्व विरासत भी है। इसका निर्माण सम्राट वेस्पेसियन ने ७२वीं ईस्वी में शुरू करवाया था और ८० वीं ईस्वी में इसका निर्माण पूरा हुआ था। इस अंडाकार स्टेडियम की क्षमता ८० हजार दर्शकों की थी, जो उस काल में एक अजूबा था। यहां योद्धाओं के बीच खूनी संघर्ष, शेर आदि जानवरों से उनका युद्ध और नाटकों का आयोजन होता था।

कोलोजियम नामक रोमन एम्पीथियेटर जिसे फ्लावियन एम्पीथियेटर भी कहा जाता है। इटली की राजधानी रोम शहर के मध्य में अवस्थित है। इसका निर्माणकार्य ईस्वीसन ७२ में सम्राट वेस्पेसियन ने प्रारम्भ करवाया था और ईस्वीसन् ८० में उनके उत्तराधिकारी टाइटस ने पूरा करवाया था।

कोलोजियम में ५०००० से लेकर ८०००० दर्शकों के बैठने की व्यवस्था है। यहां नृत्य संगीत समारोह, छद्म युद्ध मृत्यु दण्ड विश्व के प्रसिद्ध युद्धों का प्रस्तुतीकरण आदि कार्यक्रम आयोजित किये जाते है। यूरोप के पांच सेंट के यूरो सिक्कों पर इसका चित्रण किया गया है।

इटली देश के रोम नगर के मध्य निर्मित रोमन साम्राज्य का सबसे विशाल एलिप्टिकल एंफीथियेटर है। यह रोमन स्थापत्य और अभियांत्रिकी का सर्वोत्कृष्ट नमूना माना जाता है। इसकी निर्माण तत्कालीन शासक वेस्पियन ने ७० वीं - ७२ वीं ईस्वी के मध्य प्रारंभ किया और ८०वीं में इसको सम्राट टाइटस ने पूरा किया। ८१ और ९६ वर्षों के बीच इसमें डोमीशियन के राज में इसमें कुछ और परिवर्तन करवाए गए। इस भवन का नाम एम्फीथियेटरम् फ्लेवियम, वेस्पियन और टाइटस के पारिवारिक नाम फ्लेवियस के कारण है।

अंडाकार कोलोसियम की क्षमता ५०००० दर्शकों की थी, जो उस समय में साधारण बात नहीं थी। इस स्टेडियम में योद्धाओं के बीच मात्र मनोरंजन के लिए खूनी लड़ाईयाँ हुआ करती थीं। योद्धाओं को जानवरों से भी लड़ना पड़ता था। ग्लेडियेटर बाघों से लड़ते थे। अनुमान है कि इस स्टेडियम के ऐसे प्रदर्शनों में लगभग ५ लाख पशुओं और १० लाख मनुष्य मारे गए। इसके अतिरिक्त पौराणिक कथाओं पर आधारित नाटक भी यहाँ खेले जाते थे। साल में दो बार भव्य आयोजन होते थे और रोमनवासी इस खेल को बहुत पसंद करते थे। पूर्व मध्यकाल में इस इमारत को सार्वजनिक प्रयोग के लिए बंद कर दिया गया। बाद में इसे निवास, कार्यशालाओं, धार्मिक कार्यों, किले और तीर्थ स्थल के रूप में प्रयोग किया जाता रहा। आज इक्कीसवी सदी में यह भूकंप और पत्थर चोरी के कारण केवल खंडहर के रूप में ही बची है लेकिन इसके खंडहर को पर्यटकों के लिए सजा सँवारकर रखा गया है। यूनेस्को द्वारा इसका चयन विश्व विरासत के रूप में किया गया है। यह आज भी शक्तिशाली रोमन साम्राज्य के वैभव का प्रतीक है, पर्यटकों का सबसे लोकप्रिय गंतव्य है और रोमन चर्च से निकट संबंध रखता है क्योंकि आज भी हर गुड़ फ्राइडे को पोप यहां से एक मशाल जलूस निकालते हैं।

१०) हैंगिंग गार्डन, (झुलता बाग) - बेबीलोन का झूलता बगीचा- यह वर्तमान शहर बगदाद से १०० कि.मी. की दूरी पर नेबुजदनेज्जर के महल में स्थित है। बेबीलोन के हैंगिंग गार्डन प्राचीन दुनिया के सात आश्चर्यों में से एक थे जो कि हेलेनिक संस्कृति द्वारा सूचीबद्ध है और विभिन्न प्रकार के वृक्षों, झाड़ियों और दाखलताओं के साथ टियर वाले बगीचों की एक चढ़ाई श्रृंखला के साथ इंजीनियरिंग की एक उल्लेखनीय उपलब्धि के रूप में वर्णित है यह मिट्टी ईंटों के बने एक बड़े

हरे पहाड़ जैसा दिखता है, यह आज के इराकी नगर अल-हिल्लह के निकट स्थित था। इस उद्यान का निर्माण नबूचड्नेजार द्वितीय ने ईसा से ६०० वर्ष पूर्व करवाया था। ईसा से २ शताब्दी पूर्व एक भूकंप में यह उद्यान पूर्ण रूप से नष्ट हो गया था। इसका नाम ग्रीक शब्द क्रेमास्टोस से लिया गया है, जिसका आधुनिक अंग्रेजी शब्द है लटकाना। यह एक छत जैसे उठाए गए ढांचे पर लगाए जानेवाले वृक्षों को संदर्भित करता है।

एक पौराणिक कथा के अनुसार हैंगिंग गार्डन को उनकी महारानी रानी अमीटिस के लिए नियो बेबीलोनियन राजा नबूकदनेस्सर द्वितीय (जिसने ६०५ और ५६२ ईसा पूर्व के बीच शासन किया) द्वारा द मार्वल ऑफ मैनकाइंड नामक एक भव्य महल के साथ बनाया गया था, क्योंकि वह अपनी मातृभूमि की हरी पहाड़ियों और घाटियों को याद करती थीं।

जोसेफस (सी.७-१०० ईस्वी) ने मार्डुक के बेबीलोनियन पुजारी बेरॉसस के बारे में बगीचे का विवरण लिखा, जिसका लेखन लगभग २९० ईसा पूर्व बागों का सबसे पुराना उल्लेख है।

डायोडोरस सिकुलस (सक्रिय सी. ६०-३० ईसा पूर्व) ने क्लीटार्कस (अलेक्जेंडर द ग्रेट के इतिहासकार) और कनिडियास के कटेसियस दोनों के चौथी शताब्दी ईसा पूर्व ग्रंथों से परामर्श लिया है। डायोडोरस एक सीरियाई राजा के निर्माण को बताता है। उनके अनुसार बगीचे एक वर्ग के आकार में था, प्रत्येक पक्ष के साथ लगभग चार प्लेथोरा लंबा। बगीचे को टियर किया गया था, ऊपर की गैलरी ५० हाथ ऊंची थी। दीवारें २२ फीट मोटी, ईंट से बने थे।

क्विंटस क्यूरिस रूफस (फ्लो १ शताब्दी ईस्वी) शायद डायोडोरस के समान स्रोतों पर पहुंचा। उनके अनुसार बगीचे एक गढ़ के शीर्ष पर स्थित थे, जो परिधि में २० स्टेडियम था। वह बागानों के निर्माण को सीरियाई राजा के लिए जिम्मेदार ठहराता है, इस कारण से कि उसकी रानी अपनी मातृभूमि को याद कर रही थी।

स्ट्रैबो (सी. ६४ ईसा पूर्व - २१ ईस्वी) ने अपना बयान संभवत: ४वीं शताब्दी ईसा पूर्व से ओनेसिट्रिटस के खोए गए खाते पर अपना विवरण आधारित किया था। उनके अनुसार बगीचे को यूफ्रेट्स नदी के बागों की ओर अग्रसर आर्किमिडीज के पेंच के माध्यम से पानी से उगाया गया था।

फिलो के अनुसार, यह निर्माण गहरी मिट्टी के विशाल क्षेत्रों के निर्माण की इंजीनियरिंग और सरलता के कारण था।

ऐतिहासिक अस्तित्व - समकालीन बेबीलोनियन स्रोतों में दस्तावेजीकरण की कमी के कारण यह स्पष्ट नहीं है कि हैंगिंग गार्डन वास्तविक निर्माण या काव्य निर्माण थे। नबूकदनेस्सर की पत्नी अमाइटिस (या किसी अन्य पत्नियों) का भी कोई उल्लेख नहीं है कई रिकॉर्ड नबूकदनेस्सर के कामों में मौजूद हैं, फिर भी उनके लंबे और पूर्ण शिलालेखों में किसी भी बगीचे का उल्लेख नहीं है। हेरोदोटस, जिसने अपने इतिहास में बाबुल का वर्णन किया था, उसने भी हैंगिंग गार्डन का जिक्र नहीं किया हालांकि, बागानों को तब भी अस्तित्व में कहा गया था जब बाद में लेखकों ने उनके बारे में वर्णन किया था और इनमें से कुछ खातों को बाबुल का दौरा करनेवाले लोगों से प्राप्त माना जाता है। हालांकि यह हो सकता है कि बगीचे उनकी यात्रा के समय ग्रीक लोगों के लिए जाने-माने नहीं थे। आज तक, हैंगिंग गार्डन के लिए बाबुल में कोई पुरातात्विक साक्ष्य नहीं मिला है। यह संभव है कि सबूत यूफ्रेट्स के नीचे मौजूद हैं, जिन्हें वर्तमान में सुरक्षित रूप से खोला नहीं जा सकता है। नबूकदनेस्सर द्वितीय के समय नदी अपनी वर्तमान स्थिति के पूर्व में बहती थी और बाबुल के पश्चिमी हिस्से के बारे में बहुत कुछ पता नहीं था। रोलिंगर ने सुझाव दिया है कि बोरोसस ने गार्डन को राजनीतिक कारणों से नेबुचदनेस्सर को जिम्मेदार ठहराया था और उन्होंने अन्य जगहों से पौराणिक कथाओं को अपनाया था।

निनवे में हैंगिंग गार्डन- एक प्रस्ताव यह है कि बाबुल के हैंगिंग गार्डन वास्तव में अश्शूर राजा सन्हेरीब (७०४-६८१ ईसा पूर्व शासन) ने निनवे में अपने महल के लिए बनाया था। स्टेफनी डाली का मानना है कि मध्यवर्ती शताब्दियों के दौरान दोनों साइट उलझन में आईं और सन्हेरीब के महल के विस्तृत बगीचे को नबूकदनेस्सर द्वितीय के बाबुल के लिए जिम्मेदार ठहराया गया।

११) अंकोरवाट टेम्पल (कम्बोडिया) - कंबोडिया में एक मंदिर परिसर और दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक स्मारक है। यह मूल रूप से खमेर साम्राज्य के लिए भगवान विष्णु के एक हिंदू मंदिर के रूप में बनाया गया था, जो धीरे-धीरे १२ वीं शताब्दी के अंत में बौद्ध मंदिर में परिवर्तित हो गया था। यह कंबोडिया के अंकोर में है जिसका पुराना नाम यशोधरपुर था। इसका निर्माण सम्राट सूर्यवर्मन द्वितीय के शासनकाल में हुआ था। यह विष्णु मंदिर है जबकि इसके पूर्ववर्ती शासकों ने प्राय: शिव मंदिरों का निर्माण किया था। मीकांग नदी के किनारे सिमरिप शहर में बना यह मंदिर आज भी संसार का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर है जो सैकड़ों वर्ग मील में फैला हुआ है। राष्ट्र के लिए सम्मान के प्रतीक इस मंदिर को १९८३ से कंबोडिया के राष्ट्रध्वज में भी स्थान दिया गया है। यह मंदिर मेरु पर्वत का भी प्रतीक है। इसकी दीवारों पर भारतीय धर्म ग्रंथों के प्रसंगों का चित्रण है। इन प्रसंगों में अप्सराएं बहुत सुंदर चित्रित की गई हैं, असुरों और देवताओं के बीच समुद्र मंथन का दृश्य भी दिखाया गया है। विश्व के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थानों में से एक होने के साथ ही यह मंदिर यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थलों में से एक है। पर्यटक यहां केवल वास्तुशास्त्र का अनुपम सौंदर्य देखने ही नहीं आते बल्कि यहाँ का सूर्योदय और सूर्यास्त देखने भी आते हैं। सनातनी लोग इसे पवित्र तीर्थस्थान मानते हैं।

परिचय- अंग्कोरथोम और अंग्कोरवात प्राचीन कंबुज की राजधानी और उसके मंदिरों के भग्नावशेष का विस्तार। अंग्कोरथोम और अंग्कोरवात सुदूर पूर्व के हिंदचीन में प्राचीन भारतीय संस्कृति के अवशेष हैं। ईसवी सदियों के पहले से ही सुदूर पूर्व के देशों में प्रवासी भारतीयों के अनेक उपनिवेश बस चले थे। हिंदचीन, सुवर्ण द्वीप, वनद्वीप, मलाया आदि में भारतीयों ने कालांतर में अनेक राज्यों की स्थापना की। वर्तमान कंबोडिया के उत्तरी भाग में स्थित कंबुज शब्द से व्यक्त होता है, कुछ विद्वान भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर बसनेवाले कंबोजों का संबंध भी इस प्राचीन भारतीय उपनिवेश से बताते हैं। अनुश्रुति के अनुसार इस राज्य का संस्थापक कौंडिन्य ब्राह्मण था जिसका नाम वहाँ के एक संस्कृत अभिलेख में मिला है। नवीं शताब्दी ईसवी में जयवर्मा तृतीय कंबुज का राजा हुआ और उसी ने लगभग ८६० ईसवी में अंग्कोरथोम (थोम का अर्थ राजधानी है) नामक अपनी राजधानी की नींव डाली। राजधानी प्राय: ४० वर्षों तक बनती रही और ९०० ई. के लगभग तैयार हुई। उसके निर्माण के संबंध में कंबुज के साहित्य में अनेक किंवदंतियां प्रचलित है।

पश्चिम के सीमावर्ती थाई लोग पहले कंबुज के समेर साम्राज्य के अधीन थे परंतु १४ वीं सदी के मध्य उन्होंने कंबुज पर आक्रमण करना आरंभ किया और अंग्कोरथोम को बारबार जीता और लूटा। तब लाचार होकर ख्मेरों को अपनी वह राजधानी छोड़ देनी पड़ी। फिर धीरे-धीरे बाँस के वनों की बाढ़ ने नगर को सभ्य जगत् से सर्वथा पृथक् कर दिया और उसकी सत्ता अंधकार में विलीन हो गई। नगर भी अधिकतर टूटकर खंडहर हो गया। १९ वीं सदी के अंत में एक फ्रांसीसी वैज्ञानिक ने पाँच दिनों की नौका यात्रा के बाद उस नगर और उसके खंडहरों का पुनरुद्धार किया। नगर तोन्ले सांप नामक महान सरोवर के किनारे उत्तर की ओर सदियों से सोया पड़ा था जहाँ पास ही, दूसरे तट पर, विशाल मंदिरों के भग्नावशेष खड़े थे।

आज का अंग्कोरथोम एक विशाल नगर का खंडहर है। उसके चारों ओर ३३० फुट चौड़ी खाई है जो सदा जल से भरी

रहती थी। नगर और खाई के बीच एक विशाल वर्गाकार प्राचीर नगर की रक्षा करती है। प्राचीर में अनेक भव्य और विशाल महाद्वार बने हैं। महाद्वारों के ऊंचे शिखरों को त्रिशीर्ष दिग्गज अपने मस्तक पर उठाए खड़े हैं। विभिन्न द्वारों से पाँच विभिन्न राजपथ नगर के मध्य तक पहुंचते हैं। विभिन्न आकृतियों वाले सरोवरों के खंडहर आज अपनी जीर्णावस्था में भी निर्माणकर्ता की प्रशस्ति गाते हैं। नगर के ठीक बीचोबीच शिव का एक विशाल मंदिर है जिसके तीन भाग हैं। प्रत्येक भाग में एक ऊंचा शिखर है। मध्य शिखर की ऊंचाई लगभग १५० फुट है। इस ऊंचे शिखरों के चारों ओर अनेक छोटे-छोटे शिखर बने हैं जो संख्या में लगभग ५० हैं। इन शिखरों के चारों ओर समाधिस्थ शिव की मूर्तियाँ स्थापित हैं। मंदिर की विशालता और निर्माण कला आश्चर्यजनक है। उसकी दीवारों को पशु, पक्षी, पुष्प एवं नृत्यांगनाओं जैसी विभिन्न आकृतियों से अलंकृत किया गया है। यह मंदिर वास्तुकला की दृष्टि से विश्व की एक आश्चर्यजनक वस्तु है और भारत के प्राचीन पौराणिक मंदिर के अवशेषों में तो एकाकी है। अंग्कोरथोम के मंदिर के भवन, उसके प्राचीन राजपथ और सरोवर सभी उस नगर की समृद्धि के सूचक हैं।

१२ वीं शताब्दी के लगभग सूर्यवर्मा द्वितीय ने अंग्कोरथोम में विष्णु का एक विशाल मंदिर बनवाया। इस मंदिर की रक्षा भी एक चतुर्दिक खाई करती है जिसकी चौड़ाई लगभग ७०० फुट है। दूर से यह खाई झील के समान दृष्टिगोचर होती है। मंदिर के पश्चिम की ओर इस खाई को पार करने के लिए एक पुल बना हुआ है। पुल के पार मंदिर में प्रवेश के लिए एक विशाल द्वार निर्मित है जो लगभग १००० फुट चौड़ा है। मंदिर बहुत विशाल है। इसकी दीवारों पर समस्त रामायण मूर्तियों में अंकित है। इस मंदिर को देखने से ज्ञात होता है कि विदेशों में जाकर भी प्रवासी कलाकारों ने भारतीय कला को जीवित रखा था। इनसे प्रकट है कि अंग्कोरथोम जिस कंबुज देश की राजधानी था उसमें विष्णु, शिव, शक्ति, गणेश आदि देवताओं की पूजा प्रचलित थी। इन मंदिरों के निर्माण में जिस कला का अनुकरण हुआ है वह भारतीय गुप्त कला से प्रभावित जान पड़ती है। अंग्कोरवात के मंदिरों, तोरणद्वारों और शिखरों के अलंकरण में गुप्त कला प्रतिबिंबित है। इनमे भारतीय सांस्कृतिक परंपरा जीवित गई थी। एक अभिलेख से ज्ञात होता है कि यशोधरपुर अ(अंग्कोरथोम का पूर्वनाम) का संस्थापक नरेश यशोवर्मा अर्जुन और भीम जैसा वीर, सुश्रुत जैसा विद्वान तथा शिल्प, भाषा, लिपि एवं नृत्य कला में पारंगत था। उसने अंग्कोरथोम और अंग्कोरवात के हिंदू मंदिरों पर बाद में बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव पड़ा और कालांतर में उनमें बौद्ध भिक्षुओं ने निवास भी किया। अंगकोरथोम और अंग्कोरवात में २० वीं सदी के आरंभ में जो पुरातात्विक खुदाइयाँ हुई हैं उनसे ख्मेरो के धार्मिक विश्वासों, कलाकृतियों और भारतीय परंपराओं की प्रवासगत परिस्थितियों पर बहुत प्रकाश पड़ा है। कला की दृष्टि से अंग्कोरथोम और अंग्कोरवात अपने महलों और भवनों तथा मंदिरों और देवालयों के खंडहरों के कारण संसार के उस दिशा के शीर्षस्थ क्षेत्र बन गए हैं। जगत् के विविध भागों से हजारों पर्यटक उस प्राचीन हिंदू बौद्ध केंद्र के दर्शनों के लिए वहाँ प्रति वर्ष जाते हैं।

स्थापत्य- ख्मेर शास्त्रीय शैली से प्रभावित स्थापत्यवाले इस मंदिर का निर्माण कार्य सूर्यवर्मन द्वितीय ने प्रारंभ किया परंतु वे इसे पूर्ण नहीं कर सके। मंदिर का कार्य उनके भानजे एवं उत्तराधिकारी धरणीन्द्रवर्मन के शासनकाल में सम्पूर्ण हुआ। मिश्र एवं मेक्सिको के स्टेप पिरामिडों की तरह यह सीढ़ी पर उठता गया है। इसका मूल शिखर लगभग ६४ मीटर खुली भूमि और फिर बाहर १९० मीटर चौड़ी खाई है। विद्वानों के अनुसार यह चोल वंश के मंदिरों से मिलता जुलता है। दक्षिण पश्चिम में स्थित ग्रंथालय के साथ ही इस मंदिर में तीन वीथियां हैं जिसमें अन्दरवाली अधिक ऊंचाई पर हैं।

निर्माण के कुछ ही वर्ष पश्चात चम्पा राज्य ने इस नगर को लूटा। उसके उपरांत राजा जयवर्मन- ७ ने नगर को कुछ किलोमीटर उत्तर में पुनर्स्थापित किया। १४ वीं या १५ वीं शताब्दी में थेरवाद बौद्ध लोगों ने इसे अपने नियंत्रण में ले लिया।

मंदिर के गलियारों में तत्कालीन सम्राट, बलि-वामन, स्वर्ग-नरग, समुद्र मंथन, देव दानव युद्ध, महाभारत, हरिवंश पुराण तथा रामायण से संबद्ध अनेक शिलाचित्र हैं। यहाँ के शिलाचित्रों में रूपायित राम कथा बहुत संक्षिप्त है। इन शिलाचित्रों की शृंखला रावण वध हेतु देवताओं द्वारा की गयी आराधना से आरंभ होती है। उसके बाद सीता स्वयंवर का दृश्य है। बालकांड की इन दो प्रमुख घटनाओं की प्रस्तुति के बाद विराध एवं कबंध वध का चित्रण हुआ है। अगले शिलाचित्र में राम धनुष-बाण लिए स्वर्ण मृग के पीछे दौड़ते हुए दिखाई पड़ते हैं। इसके उपरांत सुग्रीव से राम की मैत्री का दृश्य है। फिर, बाली और सुग्रीव के दवंदव युद्ध का चित्रण हुआ है। परवर्ती शिलाचित्रों में अशोक वाटिका में हनुमान की उपस्थिति, राम-रावण युद्ध, सीता की अग्नि परीक्षा और राम की अयोध्या वापसी के दृश्य हैं। अंकोरवाट के शिलाचित्रों में रूपायित राम कथा यद्यपि अत्यधिक विरल और संक्षिप्त है, तथापि यह महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसकी प्रस्तुति आदिकाव्य की कथा के अनुरूप हुई है।

१२) कियोमिजू डेरा (जापान) - जापान के पूर्वी क्योरो नगर में स्थित यह बौद्ध मंदिर यूनेस्को द्वारा संरक्षित विश्व धरोहर में सम्मिलित है। ७७८ ईस्वी में ये मंदिर तमुरामारो द्वारा बनाये गए थे और इसका वर्तमान स्वरूप इएमित्सु द्वारा सन १६३३ में निर्मित किया गया। इस मंदिर के निर्माण में कहीं भी एक भी कील का उपयोग नहीं किया गया। इन मंदिरों का नाम इसी परिसर में विद्यमान जलप्रपात के नाम पर रखा गया है। कियोजिमू का अर्थ होता है शुद्ध जल। इस मंदिर में मुख्य हॉल में एक विशाल बरामदा है जिसमे कई ऊँचे स्तम्भ है जहाँ हजारों तीर्थयात्री बैठ सकते है। इस हॉल के नीचे ऑटोवा जलप्रपात है जहाँ तीन ओर से पानी गिरता है। यात्री यहां के पानी के पास पहुंचते है और इसे पीते है। कहा जाता है इस पानी को पीने से उनकी मनोकामना पूरी होती है।

१३) क्रेमिलन (रशिया) - रूस की राजधानी मास्को में मध्य भाग में स्थित ये भव्य राजमहल वर्तमान में रूस के राष्ट्रपति का निवास स्थान है। दक्षिण में मास्कोवा नदी के तटपर खड़े इस किलानुमा इमारत के पूर्व में प्रसिद्ध लाल चौक, संत बेसिल केथेड्रल तथा पश्चिम में एलेक्जेण्डर उद्यान है। इस भव्य परिसर में पांच विशाल महल, चार केथेड्रल तथा प्रसिद्ध क्रेमलिन वाल तथा क्रेमलिन टॉवर्स इसको भव्य दर्शनीय स्थल बनाते है जहां प्रतिवर्ष लगभग ३० लाख दर्शक आते है। क्रेमलिन का अर्थ है नगर में अंदर विशाल किल्ला और यह स्थान अमेरिका के व्हाइट हाउस के समकक्ष माना जाता है। यह माना जाता है कि ईसापूर्व दूसरी शताब्दी में इस महल को तत्कालीन रूसी शासक जार ने निर्माण प्रारम्भ किया था। मंगोल आक्रमणकारियों ने १२३७ में इन महलों को नष्ट किया जिन्हें १३३९ में ओक वृक्षों द्वारा पुन:र्निमित किया गया। १३६६-१३६८ के बीच डानस्कोई ने इन ऑक वृक्षों से निर्मित महलों को वर्तमान की चुने पत्थर से निर्मित कर आकर्षक बनाया। यह स्थित जारतोफ, जारघण्टा पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है।

किसी अजूबे से कम नहीं है क्रीमिया का ये शानदार महल - दुनिया में कई ऐसे शानदार महल हैं, जो लोगों को अपनी अद्भुत संरचना के कारण खूब आकर्षित करते हैं। रूस के क्रीमिया क्षेत्र के याल्टा में स्थित स्वैलो नेस्ट भी ऐसा ही एक महल है, जो काले सागर के तटीय क्षेत्र में औरोरा पहाड़ी पर बना है। इस महल से एक ओर जहां समुद्री तट दिखाई देता है, वही दूसरी ओर इसके आस-पास बादलों का बसेरा है। पहली नजर में इसे देखने पर ऐसा अहसास होता है मानो हम किसी और ही दुनिया में आ गए हों। ऐसा कहा जाता है कि काले सागर तट के निकट औरोरा पहाड़ी पर स्वैलो नेस्ट का

निर्माण १८९५ में रशियन जनरल सिरका ने कराया था।

यह पूरी तरह से लकड़ी से बना था। तकरीबन १७ साल बाद में जर्मनी के उपन्यासकार वोन स्टींगल ने लकड़ी के ढांचे को हटाकर १९११-१९१२ में स्वैलो नेस्ट का पुनर्निर्माण कराया। यह समुद्र तट से ४० मीटर की ऊंचाई पर बना है। अपने अद्भुत संरचना के कारण यह महल दुनिया भर के लोगों के खूब पसंद आता है। आर्किटेक्चर के मामले में स्वैलो नेस्ट महल क्रीमिया स्थित अलुप्का और कोरियाज से भी बेहतर दिखाई देता है। ऐसा लगता है, मानो इसका निर्माण जर्मनी की परी कथाओं में वर्णित महलों से प्रेरित होकर किया गया हो। १९२७ में आए भयानक भूकंप का भी इस महल ने सामना किया। हालांकि, इससे महल को ज्यादा नुकसान नहीं हुआ था, इसके बावजूद इसे बंद कर दिया गया। लगभग ४० सालों के बाद १९६८ में इस महल का दोबारा नवीनीकरण हुआ और तब इसे फिर से लोगों के लिए खोला गया। इसके बाद २०११ में ३ माह के लिए इसे फिर से बंद कर दिया गया, ताकि रिनोवेशन किया जा सके। २०११ में इसके रिनोवेशन पर ९१ लाख ६८ हजार रुपए खर्च हुआ था।

१४) हाजिया सोफिया मस्जिद (तुर्की) - हाजिया सोफिया या आयासोफिया पहले ऑर्थोडॉक्स चर्च था। जिसे १४५३ में मस्जिद में तब्दील कर दिया गया। बाद में १९३५ में कमाल अतातुर्क ने इसके चर्च व मस्जिद के स्वरूप को नष्ट करके इसे संग्रहालय बना दिया। इसकी विशेषता इसकी संरचना है, जो भूकंप में भी स्थिर रहता है।

तुर्की के प्रसिद्ध शहर इस्तंबूल में स्थित यह पूर्व ग्रीक ऑर्थोडॉक्स गिरजाघर बाद में ऑरोमान शाही मस्जिद तथा वर्तमान में एक म्यूजियम है। ५३७ ईस्वी में इस विशाल भवन में १४५३ ई. तक यह चर्च ऑफ होली विजडम के नाप से जाना जाता थज्ञ। लगभग १००० वर्ष तक यह विश्व का सबसे बड़ा चर्च था तथा इसकी बिल्डिंग ईंटों व चीनी भट्टी से बनी विशाल इमारत इंजीनियरिंग का कमाल मानी जाती है। २९ मई १४५३ से १९३१ तक इसे मस्जिद बना दिया गया और लगभग चार वर्ष तक इसे सार्वजनिक तौर पर बंद कर दिया गया। १ फरवरी १९३५ से यहाँ तक विशाल म्यूजियम है जहां लगीग ४० लाख पर्यटक प्रतिवर्ष आते है। हाजिया सोफिया तुर्की का सबसे अधिक पर्यटकों द्वारा देखा जानेवाला स्थान है।

१५) एक्रोपालिस (एथेंस) - महान ऐतिहासिक घटनाओं के साक्षी एवं प्राचीन सभ्यता केब दुर्गों के अवशेष यूनान की राजधानी एथेन्स के उच्चतम शिखर पर स्थित है। ईसा पूर्व चार हजार वर्षपूर्व पहले से यह पहाड़ी पर लोगों के बसे रहने की जानकारी मिली है। पार्थेनोन व अन्य भव्य मंदिर यहां ईसापूर्व ४९५-४२९ में निर्मित किये गए थे। ईसा पूर्व व ईस्वी सन १६८७ तक यहाँ कई आक्रमण हुए तथा मंदिर व अन्य इमारतें ध्वस्त होती गई व पुन: बनाई गई। अंतिम दुर्घटना के समय यहां गोला-बारुद का भण्डार था जो तूफान और आंखों में विस्फोअित हो गया और केवल अवशेष रह गए। अब आधुनिकतम एक्रोपोलिस का निर्माण जारी है व विगत के अवशेष पुरानी सभ्यता की याद दिला रहे हैं।

१६) अलहंब्रा (स्पेन) - स्पेन के ग्रानादा शहर में स्थित एक ऐतिहासिक महल और किला है। यह मूल रूप में ८८९ में एक छोटे किले के तौर पर बनाया गया था पर इसका कोई ख्याल न रखा गया। फिर ११वीं सदी के मध्य में ग्रानादा एमिरात के मूर मूल के आमिर महंमद बिन अल अहमार ने इसका मौजूदा महिल और दीवारें बनवाई। १३३३ में ग्रानादा के सुल्तान यूसफ पहिले ने इसको शाही महिल में तब्दील कर दिया। ९ वीं सदी में इसका निर्माण हुआ।

१७) चिचेन इटजा (मेक्सिको) - चिचेन इटजा कैनकन के पश्चिम में २०० किलोमीटर की दूरी पर युकाटन राज्य में स्थित है और यह मेक्सिको के सबसे संरक्षित्त पुरातात्विक स्थलों में से एक है। इट्जा जातीय-वंश समुदाय का नाम है

जिसने स्पेनिश विजय से पहले मैक्सिको के उत्तरी प्रायद्वीप पर शासन किया था। चिचेन इट्जा नाम का मतलब होता है कुएं के किनारे। हर साल लगभग १.२ मिलियन लोग चिचेन इट्जा पर्यटन स्थल की यात्रा करते हैं। चिचेन इट्जा का नाम दुनिया के ७ अजूबों की सूची में आता है।

यह एक पुरातत्व स्थल है जो इतिहास के साथ ही विभिन्न डिजाइनों और शैलियों से समृद्ध है। यह पिरामिड संरचना अपने डिजाइन के साथ-साथ कैलेंडर निर्माण के लिए भी असाधारण है। इसका सबसे बड़ा रहस्य साल में दो बार सांप की आकृति बनाते हुए पिरामिड पर एक छाया का गिरना हर किसी को हैरान कर देता है। चिचेन इट्जा में आकर्षण का केंद्र पिरामिड एक कैस्टिलो है।

इतिहास- पूर्व कोलंबियाई माया सभ्यता ने चिचेन इट्जा को नौवीं और बारहवीं शताब्दी के बीच बनाया था। उन्होंने खगोलीय घटना को प्रदर्शित इस स्थान का एक वेधशाला के रूप में उपयोग किया। यह एक सुपरिंपोज्ड डेवलपमेंट है जिसमें एक का निर्माण दूसरे पर किया जाता है। इस इमारत के उच्चतम बिंदु से बिना किसी संयम के वनस्पति के ऊपर से आकाश को देखा जा सकता था। चिचेन इट्जा की अधिकांश साइटों से अजीब प्रकार की आवाजें आती हैं। जब आप यहाँ बॉल कोर्ट के एक छोर पर एक बार ताली बजाते हैं, तो यह कोर्ट के केंद्र में नौ बार तालियों की गूंज होती हैं। इसके अलावा कुकुलन पिरामिड के सामने ताली बजाने से चिड़िया की चहचहाहट से मिलती हुई आवाज उत्पन्न होती है। चिचेन इट्जा मेक्सिको में युकाटन राज्य के पूर्वी भाग में स्थित है और युकाटन का आधार है। यह पवित्र स्थल युकाटन प्रायद्वीप के सबसे महान मायन केंद्रों में से एक था। चिचेन इट्जा लगभग १२०० साल पहले माया लोगों के द्वारा बनाया गया बड़ा शहर था जो ४ वर्ग मील के क्षेत्र में फैला हुआ है। चिचेन इट्जा अपने बड़े पिरामिड मंदिर के लिए काफी प्रसिद्ध है और इसको पत्थरों से बनाया गया था। चिचेन इट्जा की खोज ५१४ में पादरी लकिन चैन द्वारा की गई थी। यहाँ स्थित कुकुलन का पिरामिड माया संस्कृति का सबसे प्रसिद्ध प्रतीक है। इस पिरामिड की ऊंचाई ३० मीटर है। सबसे खास बात यह है कि चिचेन इट्जा १००० वर्षों से भी ज्यादा समय तक एक तीर्थ स्थान का केंद्र रहा है। चिचेन हट्जा को अलग-अलग क्षेत्रों में विभाजित किया गया है जिसको चिचेन वीजो और चिचेन नुवो कहते हैं। चिचेन वीजो का निर्माण लगभग ४०० में हुआ था। मेनाप के शासक हुनक छील ने १३ वीं शताब्दी के समय चिचेन इट्जा पर जीत हासिल की थी। साल २००६ तक पर्यटकों को एक कैस्टिलो पर चढ़ने की अनुमति दी गई थी। इसकी ऊंचाई २४ मीटर है और इसमें नौ स्तर है। चिचेन इट्जा की अब की सबसे विशाल बॉल कोर्ट मेसोअमेरिका खोजी गई थी। बॉल कोर्ट २६ फुट ऊंची दीवारों से घिरा हुआ है। चिचेन इट्जा की ज्यादातर अपनी अजीब आवाजों के लिए जानी जाती है। कासा कोलोराडो इसकी सबसे अच्छी इमारतों में से एक है। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एंथ्रोपोलॉजी एंड हिस्ट्री चिचेन इट्जा की मरम्मत करता है। इसके हर मंदिर में ३६५ सीढ़ियां है जो साल के हर एक दिन का प्रतिनिधित्व करती है।

साल १९२३ में पहली बार चिचेन इट्जा की परियोजना शुरु हुई थी और इसको मैक्सिकन सरकार द्वारा पूरा किए गए। बहाली के प्रयास निरंतर की वजह से चिचेन इट्जा इतना विशाल है। आज भी इसके मध्य और उत्तरी समूह के कुछ हिस्सों की मरम्मत चल रही है इसलिए यह पर्यटकों के लिए खुले नहीं हैं। चिचेन इट्जा दुनिया के नए सात अजूबों में शामिल है। महान बॉलकोर्ट का निर्माण १०५० और १२०० सीई के बीच किया गया था। चिचेन इट्जा में एक चर्च को ला इग्लेसिया के नाम से जाना जाता है और इसको पत्थरों से बनाया गया है। यह ज्यामितीय आकृतियों और रेन गॉड

चाक की छवियों से सुसज्जित है। हाल ही में यहां के खंडहर और पिरामिड सरकार द्वारा यहाँ के निजी मालिक से खरीदे गए हैं। यहाँ पर अवरोही भगवान का मंदिर तुलुम के केंद्र में स्थित है, इस मंदिर में पर्यटकों को जाने की अनुमति नहीं है। ट्यूलम के माया खंडहर के अंदर एक कास्टिलो सबसे लंबा निर्माण है। नोहच मुल का अनुवाद बड़ी पहाड़ी के रूप में किया गया था जो करीब ४२ मीटर ऊंची है और यह एक मात्र ऐसी माया पिरामिड है जहां पर पर्यटकों को चढ़ने की अनुमति है।

चिचेन इत्जा में पिरामिड (८००ई.पू.) युकातान प्रायद्वीप, मैक्सिको- अत्यंत प्रसिद्ध मायान मंदिर का शहर, चिचेन इत्जा, मायान सभ्यता का राजनीतिक और आर्थिक केंद्र था। इसकी विभिन्न संरचनाओं में कुकुल्कान का पिरामिड, चक मूल का मंदिर, हजार खंभों का हॉल और कैदियों के खेल का मैदान- आज भी देखे जा सकते हैं और वास्तुशिल्प के क्षेत्र तथा रचना करने की असाधारण प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं। खुद पिरामिड सभी मायान मन्दिरों में से अंतिम और यकीनन सबसे बड़ा था।

१८) क्रिस्ट रिडीमर (रियो डे जेनेरियो) - क्राइस्ट द रिडीमर (प्रतिमा), माउंट कोरकोवाडो, रियो डी जनेरियो, दक्षिण ब्राजील के शिखर पर ईसा मसीह की पुर्तगाली विशाल प्रतिमा स्थापित है। यह १९३१ में बनकर पूरा हुआ और यह प्रतिमा ९८ फीट (३० मीटर) लंबी खड़ी है। इसकी क्षैतिज रूप से फैली हुई भुजायें ९२ फुट (२८ मीटर) है। मूर्ति, हजारों त्रिकोणीय सोपस्टोन टाइलों के मोजेक में प्रबलित कंक्रीट की बनी हुई हैं।

यह एक चौकोर पत्थर के आसन आधार पर स्थापित है, जो २६ फीट (८ मीटर) ऊंची है, जो खुद एक पहाड़ शिखर के ऊपर एक चबूतरे पर स्थित है। यह प्रतिमा दुनिया में सबसे बड़ी आर्ट डेको-शैली की मूर्ति है और रियो डी जनेरियो के सबसे ज्यादा पहचाने जानेवाले स्थलों में से एक है। १८५० के दशक में विस्न्सेन्टियन पुजारी पेड्रो मारिया बॉस ने इसाबेल का सम्मान करने के लिए माउंट कोरकोवाडो में एक नईसाई स्मारक को रखने का सुझाव दिया। हालांकि ब्राजील की राजकुमारी रीजेंट और सम्राट पेड्रो की दूसरी बेटी द्वारा इस परियोजना को मंजूरी दी गई थी।

२१ में रियो डी जनेरियो के रोमन कैथोलिक समुदाय ने प्रस्ताव किया था कि २३१० फुट (७०४ मीटर) शिखर सम्मेलन पर ईसा मसीह की मूर्ति का निर्माण किया जाएगा, जिससे की ऊंचाई के कारण, रियो में कहीं से भी इसे देखा जा सकेगा। नागरिकों के द्वारा राष्ट्रपति से अनुरोध करने पर इपिटेसीओ पिसोआ ने पर्वत कोरकोवाडो पर मूर्ति के निर्माण करने की अनुमति दे दी। अनुमति मिलने के बाद, आधार का नीव औपचारिक रूप से ४ अप्रैल, १९२२ को रख दिया गया। हालांकि स्मारक के अंतिम डिजाइन को तब तक चुना नहीं गया था। उस वर्ष एक डिजाइनर को खोजने के लिए एक प्रतियोगिता आयोजित की गई थी और ब्राजील के इंजीनियर हेटर दा सिल्वा कोस्टा को उनके आंकड़े के आधार पर चुना गया था। स्थानीय इंजीनियर हेटर दा सिल्वा कोस्टा ने प्रतिमा को रूपांकित किया; प्रतिमा का ढांचा फ्रांसीसी मूर्तिकार पॉल लैंडोव्स्की द्वारा तैयार किया गया।

ब्राजील के कलाकार कार्लोस ओसवाल्ड के सहयोग से, सिल्वा कोस्टा के साथ काम किया और मूर्ति का सिर और हाथों के प्राथमिक डिजाइनर के रूप में स्वीकार किया गया। फंड निजी तौर पर मुख्य रूप से चर्च द्वारा उठाए गए थे। सिल्वा कोस्टा की देखरेख के तहत, निर्माण १९२६ में शुरू हुआ और पांच तक जारी रहा। उस समय के दौरान सामग्री को रेलवे के माध्यम से लाया गया और श्रमिकों को शिखर तक पहुंचाया गया था।

प्रतिमा १२ अक्टूबर, १९३१ को बनकर तैयार हो गई। वर्ष १९८० में समय-समय पर इसे मरम्मत और पुनर्निमित कराया गया। क्राइस्ट द रिडीमर स्मारक का जीर्णोद्धार कार्य १९८० में पोप जॉन पॉल द्वितीय के आगमन से पहले पूरा किया गया।

२०१० में एक बड़ी परियोजना में सतह को मरम्मत और नवीनीकृत किया गया था। प्रतिमा और इसके आसपास के अन्य कार्य २००३ में और २०१० की शुरुआत में पूरा किया गया। २००३ में प्रतिमा के आसपास प्लेटफार्म तक पहुंचने की सुविधा के लिये सीढ़ियों, पैदल रास्तों और ऊंचे चबूतरों (एलिवेटर्स) के एक सेट की स्थापना की गयी। अक्टूबर २००६ में प्रतिमा की ७५ वीं सालगिरह के अवसर पर रियो कार्डिनल यूसेबियो ऑस्कर शील्ड के आर्कबिशप ने प्रतिमा के नीचे एक चैपल (ब्राजील के संरक्षक संत-नोस्सा सेन्होरा एपारेसिडा या अवर लेडी ऑफ द एप्पारिशन के नाम पर) की स्थापना की।

१९) ईस्टर आइसलैंड स्टेच्यू (चिली) - दक्षिणपूर्व प्रशांत महासागर में पोलिनेशियाई त्रिकोण के सबसे दक्षिणपूर्व बिंदु पर स्थित एक पोलिनेशियाई द्वीप है। चिली के इस विशेष क्षेत्र का १८८८ में चिली में विलय किया गया। ईस्टर द्वीप अपनी ८८७ मोवाई बड़ी मूर्तियां के लिए प्रसिद्ध है, जिन्हें प्राचीन रापानुई लोगों ने बनाया था। यह एक विश्व धरोहर स्थल है और द्वीप का अधिकतर भाग रापा नुई राष्ट्रीय उद्यान के अंतर्गत आता है। आधुनिक समय में द्वीप को संसाधनों के आवश्यकता से अधिक दोहन से होनेवाली सांस्कृतिक और पर्यावरणीय हानि के एक जीवंत उदाहरण के तौर पर देखा जाता है, हालांकि अब इस सिद्धांत को नृवंशविज्ञानियों और पुरातत्वविदों से कड़ी चुनौती मिल रही है, उनके मतानुसार यूरोपीय उपनिवेशकों द्वारा लाई गयी बीमारियां और दासव्यापार द्वारा सन १८० के शतक दौरान मूलनिवासियों की संख्या में आई भयंकर कमी का, पर्यावरणीय गिरावट की तुलना में बहुत अधिक सामाजिक प्रभाव पड़ा और यूरोपीय उपनिवेशकों द्वारा अपने साथ लाये गये जानवरों, पहले चूहे और फिर भेड़ों की वजह से द्वीप की मूल वनस्पति को बहुत अधिक नुकसान हुआ और द्वीप १९३०-१९६० के बीच लगभग वनविहीन हो चला था। अंतर्निहित द्वीप का भूविज्ञान, विलुप्त ज्वालामुखियों में से एक है।

२०) माचू-पिचू (पेरू) - दक्षिणी अमेरिका स्थित कस्को से १२० किलोमीटर दूर स्थित एक पौराणिक शहर है माचु-पिचु। यह अद्‌भुत शहर एक पर्वत की तलहटी से लेकर दो हजार मीटर की ऊंचाई तक बनाया गया है। यह शहर अपने खूबसूरत बगीचों, सीढ़ीदार खेतों और वैभवपूर्ण इमारतों एवं महलों के लिए प्रसिद्ध है। किसी जमाने में यहां फव्वारों, पानी की नलियों तथा भव्य स्नान घरों के होने के प्रमाण यहां मिलते हैं। बगीचों को एक-दूसरे से सैकड़ों सीढ़ियों द्वारा जोड़ा गया था। इस शहर की सबसे बड़ी है यहां कि पत्थरों की कारीगरी उल्लेखनीय है कि जब इस शहर का निर्माण हुआ तब न तो छैनी-हथौड़े का ही आविष्कार हुआ था और न पहिए का। एक-एक पत्थर को इतनी अच्छी तरह नाप कर अन्य पत्थर से जोड़ा गया या यू कहें फंसाया गया कि वह कारीगरी देखते ही बनती है। वह नि:संदेह एक विलक्षण तथ्य है।

दक्षिण अमेरिकी देश पेरू में स्थित कोलम्बस-पूर्व युग, इंका सभ्यता से संबंधित ऐतिहासिक स्थल है। यह समुद्र तल से २४३० मीटर की ऊंचाई पर उरुबाम्बा घाटी, जिसमे से उरुबाम्बा नदी बहती है, के ऊपर एक पहाड़ पर स्थित है। यह कुज्को से ८० किलोमीटर (५० मील) उत्तर पश्चिम में स्थित है। इसे अक्सर इंकाओं का खोया शहर भी कहा जाता है। माचू पिच्चू इंका साम्राज्य के सबसे परिचित प्रतीकों में से एक है। ७ जुलाई २००७ को घोषित विश्व के सात नए आश्चर्यों में माचू पिच्चू भी एक है।

१४३० ई. के आसपास इंकाओं ने इसका निर्माण अपने शासकों के आधिकारिक स्थल के रूप में शुरू किया था, लेकिन इसके लगभग सौ साल बाद, जब इंकाओं पर स्पेनियों ने विजय प्राप्त कर ली तो इसे यूं ही छोड़ दिया गया। हालांकि स्थानीय लोग इसे शुरू से जानते थे पर सारे विश्व को इससे परिचित कराने का श्रेय हीरम बिंघम को जाता है जो एक अमेरिकी इतिहासकार थे और उन्होंने इसकी खोज १९११ में की थी, तब से माचू-पिच्चू एक महत्वपूर्ण पर्यटन

आकर्षण बन गया है। माचू पिच्चू को १९८१ में पेरू का एक ऐतिहासिक देवालय घोषित किया गया और १९८३ में इसे यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल की दर्जा दिया गया। क्योंकि इसे स्पेनियों ने इंकाओं पर विजय प्राप्त करने के बाद भी नहीं लूटा था, इसलिए इस स्थल का एक सांस्कृतिक स्थल के रूप में विशेष महत्व है और इसे एक पवित्र स्थान भी माना जाता है। माचू पिच्चू को इंकाओं की पुरातन शैली में बनाया जिसमें पॉलिश किये हुए पत्थरों का प्रयोग किया था। इसके प्राथमिक भवनों में इंतीहुआताना (सूर्य का मंदिर) और तीन खिड़कियों वाला कक्ष प्रमुख हैं। पुरातत्वविदों के अनुसार यह भवन माचू पिच्चू के पवित्र जिले में स्थित हैं। सितम्बर २००७ पेरू और येल विश्वविद्यालय के बीच एक सहमति बनी की वो सभी शिल्प जो हीरम बिंघम माचू पिच्चू की खोज के बाद अपने साथ ले गये थे वो पेरू को लौटा दिये जायेंगे।

२१) न्यूस्चेवनस्टेन केस्टिल (जर्मनी) (न्यू फॉटंम दुर्ग) - १९ वीं शताब्दी का यह राजप्रासाद दुर्ग जर्मनी के दक्षिणी बावरिया क्षेत्र के गांव हॉएनस्चवेंग में एक दुर्गम पहाड़ी पर स्थित है। यह महल बावरिया के लुडविग द्वितीय ने रिचार्ड बेगनर के सम्मान में एक विश्राम स्थल के रूप में विकसित किया था। लुडविग ने इस महल के लिये सार्वजनिक राशि की अपेक्षा स्वयं के पैसे से इसका निर्माण किया। इस महल के निर्माण के पूर्व यहाँ एक बड़ा हॉल तथा दुर्गनुमा टॉवर हाउस था जो समय के साथ क्षतिग्रस्त हो गया था। लुडविग के १८८६ में देहान्त के पश्चात यह दुर्ग सामान्य पर्यटकों के लिये खोल दिया गया और वर्तमान में लगभग १५ लाख पर्यटक यहाँ प्रतिवर्ष आते हैं।

२२) पेत्रा (जार्डन) - जॉर्डन के मआन प्रांत में स्थित एक ऐतिहासिक नगरी है जो अपने पत्थर से तराशी गई इमारतों और पानी वाहन प्रणाली के लिए प्रसिद्ध है। इसे छठी शताब्दी ईसापूर्व में नबातियों ने अपनी राजधानी के तौर पर स्थापित किया था। माना जाता है कि इसका निर्माण कार्य १२०० ईसापूर्व के आसपास शुरू हुआ। आधुनिक युग में यह एक मशहूर पर्यटक स्थल है। पेत्रा एक होर नामक पहाड़ की ढलान पर बनी हुई है और पहाड़ों से घिरी हुई एक द्रोणी में स्थित है। यह पहाड़ मृत सागर से अकाबा की खाड़ी तक चलनेवाली वादी अरबा नामक घाटी की पूर्वी सीमा है। पेत्रा को युनेस्को द्वारा एक विश्व धरोहर होने का दर्जा मिला हुआ है। बीबीसी ने अपने मरने से पहले ४० देखने योग्य स्थान में पेत्रा को भी शामिल किया हुआ है। ६ वीं शताब्दी ईसा पूर्व से पेट्रा नाबातियन साम्राज्य की प्रभावशाली राजधानी थी। जिसके बाद साम्राज्य १०६ ईस्वी में रोमन साम्राज्य में अवशोषित हो गया था और रोमनों ने शहर का विस्तार जारी रखा। व्यापार और वाणिज्य के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र, पेट्रा ने तब तक विकास जारी रखा जब तक कि एक विनाशकारी भूकंप ने इमारतों को नष्ट नहीं किया और छठी शताब्दी में मुसलमानों ने पेट्रा जीत लिया लेकिन मुसलमानों के अधीन ज्यादा समय तक नहीं रहा था। इसके बाद ११८९ ईस्वी में मध्य पूर्व के मुस्लिम सुलतान सलादिन की विजय के बाद पेट्रा को ईसाइयों ने त्याग दिया। ट्रांस जॉर्डन के गठन के बाद स्थल की पहली वास्तविक खुदाई १९२९ ईस्वी में गई थीं। उस समय से, पेट्रा १९८९ में स्टीवन स्पीलबर्ग फिल्म, इंडियाना जोन्स और लास्ट क्रूसेड द्वारा एक्सपोजर के कारण आंशिक रूप से जॉर्डन के सबसे पर्यटक आकर्षण बन गया हैं। पेट्रा के शानदार इंजीनियरिंग उपलब्धियों और अच्छी तरह से संरक्षित आयाम के कारण पेट्रा, को पुरातात्विक स्थल जुलाई २००७ में दुनिया के नए सात आश्चर्यों में से एक के रूप में चुना गया था।

❋ पेट्रा (९ ईसा पूर्व - ४० ई.) जॉर्डन- अरब रेगिस्तान के किनारे, पेट्रा राजा एरिटास चतुर्थ (९ ईसा पूर्व - ४० ई.) के नाबाटिअन साम्राज्य की शानदार राजधानी स्थित थी। जल प्रौद्योगिकों में माहिर, नाबाटिअन लोगों ने अपने शहर को बेहतरीन सुरंगों और जल के चैम्बरों का निर्माण प्रस्तुत किया। ग्रीक रोमन प्रोटोटाइप पर आधारित, इस थियेटर की

४००० दर्शकों के बैठने की क्षमता थी। आज पेट्रा के महलनुमा मकबरे, जिनमें अल दैर मठ पर ४२ मीटर ऊंचे यूनानी मंदिर के मुखौटे हैं, मध्य पूर्वी संस्कृति का शानदार उदाहरण है।

२३) पिरेमिड आफ गिजा (इजिप्ट) - ग्रेट गीजा पिरामिड दुनिया के सात अजूबों में से एक है। यह मिस्र के गीजा शहर में और जो भी इसके बारे में जानता है वह हैरान रह जाता है। दुनिया के ७ अजूबों में गीजा का महान पिरामिड सबसे पुराना है। यह पिरामिड २५६० ईसा पूर्व के करीब बनवाया गया था। यह ३८०० सालों से दुनिया की सबसे ऊंची बनावट है। प्राचीन मिस्र के कुफू पिरामिड को महान गीजा पिरामिड के नाम से जाना जाता है। इसकी लंबाई ४८१ फुट (१४६ मीटर) है। गीजा पिरामिड का बेस (आधार) ५९२००० स्क्वेअर फुट है। इसका एक-एक कोना २१८००० स्क्वेअर फुट क्षेत्र में बना है। महान पिरामिड में लगभग २३००००० पत्थर ब्लॉक्स का इस्तेमाल हुआ था जिनका वजन करीब ५० टन है। मिस्र के ये महान पिरामिड ऐसी जगह बने हैं कि इन्हें इजराइल के पहाड़ों से भी देखा जा सकता है और माना जाता है कि ये चांद से भी दिखते हैं।

२४) सिडनी ओपेरा हाउस (आस्ट्रेलिया) - ओपेरा हाउस सिडनी सबसे खूबसूरत पर्यटन स्थल हैं जिसकी जितनी तारीफ की जाए कम हैं। ऑस्ट्रेलिया के सिडनी शहर में स्थित ओपेरा हाउस चारों ओर से पानी से घिरा हुआ हैं। नि:संदेह ओपेरा हाउस सिडनी के पर्यटन में एक नायाम रत्न हैं जिसे देखने के लिए पर्यटक लम्बी-लम्बी यात्रा करके आते हैं। ओपेरा हाउस पोर्ट जैक्सन न्यू साउथ वेल्स ऑस्ट्रेलिया में स्थित हैं। ओपेरा हाउस को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची में भी शामिल किया जा चुका हैं। सिडनी का यह पर्यटक स्थल ऐतिहासिक विरासत के रूप में भी जाना जाता है। चारो ओर पानी से घिरी यह संरचना पर्यटकों को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करती है। ओपेरा हाउस की संरचना की कल्पना जॉर्न उत्जॉन ने की थी और उनकी इस अनूठी कल्पना के लिए उन्हें वर्ष २००३ में वास्तुकला का सर्वोच्च सम्मान पुलित्जर पुरस्कार से नवाजा गया था।

ओपेरा हाउस के इतिहास को देखने पर हम पाते हैं कि इस खूबसूरत अभिव्यंजनात्मक वास्तुशैली की संरचना का निर्माण वर्ष १९७३ में हुआ था। ओपरा हाउस की छत कंक्रीट की फ्रेम और प्रीकास्ट कंक्रीट की रिब्ड पर आधारित हैं। इसका निर्माण प्रसिद्ध वास्तुकार जॉर्न उत्जॉन ने किया था।

ओपेरा हाउस के निर्माण में चार साल लगने का अंदाजा था, लेकिन इसमें चौदह वर्ष लग गए। ओपेरा हाउस के निर्माण में १०००० श्रमिकों ने काम किया था। सिडनी के खूबसूरत पर्यटन स्थल ओपेरा हाउस को वर्ष २००७ में यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की सूची में शामिल किया गया था। क्वीन एलिजाबेथ द्वितीय द्वारा २० अक्टूबर १९७३ में ओपेरा हाउस को आम जनता के लिए खोला गया था।

२५) टिम्बकटू (माली) - टिम्बक्टू माली गणतंत्र का ऐतिहासिक एवं व्यापारिक नगर है। यह एक विश्व धरोहर स्थल है। इस स्थल को यह दर्जा सन १९९८ में मिला। टिंबक्टू सहारा मरुभूमि की दक्षिणी सीमा पर तथा नाइजर नदी पर स्थित काबरा बंदरगाह से ९ मील उत्तर दिशा में ८०० फुट की ऊंचाई पर स्थित है। पहले यह फ्रेंच सूडान प्रदेश में था। टिंबक्टू दलदली एवं रेतीले भूभाग के मध्य में है, जिसे उष्ट्र नाव संगमस्थल कहते हैं। इसकी परिधि तीन मील है। इस नगर के मध्य में तीन बड़ी मस्जिदें तथा उत्तरी छोर पर दो किले हैं। यहाँ का मुख्य व्यापार नमक, कपड़ा, लोहे, वस्तुएं, शुतुर्मुर्ग के पर, रबर, तंबाकू, रूई, चीनी तथा सोना है। तथा यहाँ इस्लामी शिक्षा का केंद्र है।

पाँचवी सदी में बना यह शहर १५वी-१६वी सदी में सांस्कृतिक और एक व्यापारिक नगरी के रूप में सामने आया।

पुराने समय में इसकी हैसियत महत्वपूर्ण व्यापार मार्गों के केंद्र के रूप में थी। ऊँटों के काफिले सहारा रेगिस्तान होकर सोना ढोया करते थे। टिंबकटू में प्राचीन इस्लामी पांडुलिपियों का एक समृद्ध संग्रह है। इसके बारे में कहा जाता है कि मुस्लिम व्यापारी इस शहर से होकर पश्चिमी अफ्रीका से सोना यूरोप और मध्य-पूर्व ले जाते थे, जबकि उनकी वापसी नमक और अन्य उपयोगी वस्तुओं के साथ होती थी।

विश्व के धरोहर

❊ दुनिया भर में कई अजूबे, ऐतिहासिक धरोहरे और शानदार स्थल हैं, जिसे देखने के लिए पर्यटक प्रत्येक साल वहां जाते हैं। चीन के शेनझेन में विंडो ऑफ वर्ल्ड का निर्माण किया गया है। इसमें दुनियाभर के अजूबों, ऐतिहासिक धरोहरों और मशहूर प्रतीकों के प्रतिरूप को जगह दिया गया है। इसमें कंबोडिया के अंकोरवाट मंदिर, फ्रांस के एफिल टावर, प्राचीन एथेंस, पीसा की मीनार और टॉवर ऑफ लंदन से लेकर तमाम महत्वपूर्ण स्मारकों के मॉडल मौजूद हैं। इसके अलावा, यहां सिडनी का ओपेरा हाउस, नियाग्रा फॉल और ग्रैंड कैन्योय की झलक भी देखने को मिलेगी।

विंडो ऑफ वर्ल्ड में सालाना चेरी फेस्टिवल और इंडियन कल्चर वीक का आयोजन किया जाता है। वहीं, गर्मियों के दिन में इंटरनेशनल बियर फेस्टिवल पर्यटकों को सबसे ज्यादा आकर्षित करता है। इसके अलावा, यहां होनेवाला पॉप म्यूजिक फेस्टिवल युवाओं का पसंदीदा फेस्टिवल है। इसके साथ ही यहां कई तरह की एडवेंचर ट्रिप की भी व्यवस्था है।

❊ पहला लाइट हाऊस ६६० ईसा पूर्व में बनाया गया था। यह एशिया माइनर में ट्रोए के तट पर स्थित था। सर्वाधिक प्रसिद्ध लाइट हाऊसेज में से एक था। अलैक्सांद्रिया में स्थित फारोस। इसे विश्व के सात आश्चर्यों में से एक माना जाता था। इसका निर्माण लगभग २८० ईसा पूर्व हुआ था। यह पूरे १५०० वर्ष एक काम करता रहा। १३वीं शताब्दी में एक भूकंप के कारण यह नष्ट हो गया। यह १३० मीटर ऊंचा था जिसके शिखर पर बहुत चमकदार रोशनी थी जिसके शिखर पर बहुत चमकदार रोशनी थी। सर्वाधिक ऊंचा लाइट हाऊस जापान के योकोहामा में यामाशिता पार्क के नजदीक स्थित है। इसकी ऊंचाई ३४८ फुट है। रोशनी के मामले में सर्वाधिक हाऊस वेल्स के निकट स्ट्रम्बल में चमकता है।

१) वियतनाम में हालोंग की खाड़ी- इस खाड़ी में समुद्र के बीच करीब २००० चट्टानें सिर उठाए खड़ी हैं। यह खाड़ी १९९४ से यूनैस्को के आश्चर्यों की सूची में मौजूद है। वैसे यूनैस्को न्यू ७ वंडर्स अभियान से खुद को दूर रखता है क्योंकि इसमें वे ही लोग अपने मत दे सकते हैं जिनके पास इंटरनेट की सुविधा हो।

२) दक्षिण कोरिया का येयुदो- कोरिया के दक्षिणी हिस्से में उपोष्ण कटिबंधीय ज्वालामुखी द्वीप येयुदो स्थित है। अनेक सालों से सुप्त पड़े इस ज्वालामुखी में एक झील बन गई है जो देश के राष्ट्रीय उद्यान का केंद्र है। हाल ही में इसे दुनिया के सात नए आश्चर्यों में शामिल किया गया है।

३) दक्षिण अमेरिका में अमेजन- दुनिया की सबसे बड़ी नदियों में से एक अमेजन दक्षिण अमेरिका में स्थित है। इस नदी में इतना पानी है कि इससे छोटी सात नदियों का पानी इसमें समा जाए।

४) ब्राजील का इगुआजु- ब्राजील के पराना में तीन किलोमीटर क्षेत्र में इगुआजु नदी से पानी नीचे गिरता है। इगुआजु जलप्रपात को दो राष्ट्रीय उद्यान अपने इलाके में शामिल करना चाहते हैं।

५) इंडोनेशिया का कोमोदो द्वीप- इंडोनेशिया का कोमोदो द्वीप विशालकाय छिपकलियों के लिए जाना जाता है। यह सरीसृप तीन मीटर लम्बा और ७० किलो का हो सकता है। कोमोदो द्वीप अपने खूबसूरत पेड़-पौधों के लिए भी प्रसिद्ध है।

६) पुएतों प्रिंसेसा में धरती के नीचे नदी- फिलीपीन्स में दुनिया की सबसे लम्बी ऐसी नदी है जो धरती के नीचे बहती है। इसके ऊपर एक बड़ा-सा पहाड़ है। धरती के नीचे की इस नदी में ऐसे अनोखे जीव हैं जो दुनिया में और कहीं नहीं पाए जाते हैं।

७) दक्षिण अफ्रीका का पठार- केप टाऊन के ऊपर दुनिया का सबसे लोकप्रिय पठार मौजूद है जो अनेक लोगों के लिए दक्षिण अफ्रीका का प्रतीक चिन्ह है।

✻ पीस मॉनूमेंट की महत्वपूर्ण जानकारियां

विश्वभर में अनेक तरह के स्मारक हैं जो कि अपनी किसी न किसी खासियत की वजह से लोकप्रिय हैं। पीस मॉनूमेंट अमेरिका में स्थापित वह स्मारक है जो दुख और पीड़ा को दर्शाता है। पीस मॉनूमेंट को नेवल मॉनूमेंट व सिविल वार सेलर्स मॉनूमेंट के नाम से भी जाना जाता है। यह स्मारक प्रमुख रूप से सफेद मार्बल से बनी ४४ फुट ऊंची एक प्रतिमा है। १८७७-७८ के बीच में हुए युद्ध में नौसेना के जवानों की मृत्यु हो गई थी। यह स्मारक उन्हीं की याद में बनाया गया है। यह के यूनाइटेड स्टेट के कैपिटल वाशिंगटन में बना हुआ है, जिसे पीस सर्कल कहा जाता है। इस स्मारक में दो महिलाएं हैं। पहली महिला अपने हाथ से चेहरे को छिपाए है और दूसरी महिला हाथ में एक इतिहास का ग्रंथ लिए खड़ी है। यह स्मारक शहीद जवानों को श्रद्धांजलि देता है और यह संदेश देता है कि उनका खून जाया नहीं गया। इस पूरे स्टेच्यू में तीन भाग हैं। पहले भाग में जवानों के शहीद होने का गम दर्शाया गया है, दूसरे भाग में जीत की खुशी दर्शाई गई है, जबकि तीसरे भाग में लोग ओक के पेड़ को लेकर खुशी जाहिर कर रहे हैं। यह स्मारक बेहद खूबसूरत है। इसके चारों ओर लगे फव्वारे इसकी सुंदरता में चार चांद लगा देते हैं।

विश्व के ७ नए आधिकारिक अजूबे

मसीह उद्धारक (१९३१) रियो डी जनेरियो, ब्राजील

✻ आर्टेमिस का मंदिर- एशिया माइनर में स्माइना के दक्षिण में प्राचीन नगर इफेसिस जो अब समाप्त हो गया है, में स्थित है। आटीमीसिया द्वारा बनाये गये प्रारूप पर इसका निर्माण ५ वीं सदी ई.पू. में लेनियन नगरवासियों द्वारा किया गया था।

✻ माउसोलस का मकबरा- एशिया माइनर मे इलिकार्नासस में बादशाह की स्मृति में ३५२ वर्ष ईसा पूर्व में महारानी आर्टोमसिया ने संगमरमर से इसका निर्माण कराया था।

✻ रोहडस् कोलोसस- यह यूनानी सुंगोड हेलियोज का तांबे का बुत है जो ३० मी. ऊंचा है। इसे भूमध्य सागर के पूर्वी भाग में शेह्उस द्वीप के पोर्ट ऑफ सिटी में लिंडस के चार्ल्स ने स्थापित किया था।

✻ जियू- (जुपीटर) का बुत- ओलंपिया की घाटी में मिस्र के दक्षिणी प्रायद्वीप से २० कि.मी. पश्चिम में इलस प्रांत में स्थापित किया गया था।

✻ अलेक्जेन्ड्रिया के फराउज- मिस्र में अलेक्जेन्ड्रिया के समुद्र तट के निकट फराउन के द्वीप में श्वेत संगमरमर के प्रकाश स्तंभ अथवा निगरानी हेतु निर्मित मिनार। सम्राट टॉलोमी फिलाडेल्फ्स द्वारा २६५ ई.पू. में निर्मित।

✻ विश्व में ८ स्थल हैं आश्चर्य जनक- दुनिया खूबसूरती और मनोरम दृश्यों से भरी है। विश्व की सबसे बड़ी पर्यटन मार्गदर्शन कंपनी मलोनली प्लानेटफ ने एक किताब जारी की है जिसमें दुनिया के ५० आश्चर्यजनक एकांत और मनोरम

दृश्योंवाले स्थलों के बारे में बताया गया है।

१) विक्टोरिया जलप्रपात, जिम्बाब्वे/जाम्बिया- जिम्बाब्वे और जाम्बिया की सीमा पर स्थित १.७ मीटर चौड़ा और १०८ मीटर ऊंचा यह झरना धुंध बनाता है, जिसे २० किलोमीटर दूर से देखा जा सकता है। यह झरना जांबिया के मोसी-ओआ-तुन्या राष्ट्रीय पार्क और जिंबाब्वो के विक्टोरिया जलप्रपात नेशनल पार्क का हिस्सा है। यहां आप झरने के साथ इंद्रधनुष के मनोरम दृश्य देख सकते हैं।

२) महान दरार घाटी, इथियोपिया- इथियोपिया की महान दरार घाटी दुनिया की सबसे बड़ी दरार घाटी है। यह लाल सागर से ६००० किलोमीटर नीचे से लेकर मालावी झील से ७४ किलोमीटर ऊपर तक फैली है। इसके ढलान सबसे ऊंचे हैं, जिनकी ऊंचाई १.६ किलोमीटर से ज्यादा है।

३) जाइंन्ट्स कॉजवे, उत्तरी आयरलैंड- यह विशालकाय सेतु (जाइंट्स कॉजवे) एक प्राचीन ज्वालामुखी विस्फोट के परिणाम स्वरूप बना ४०,००० घने असिताश्म (बसाल्ट) स्तंभों का इलाका है। इसकी विशेषता है कि यहां बसाल्ट अधिकतर षटकोण आकार में हैं। कहा जाता है कि यह विशाल प्रायद्वीप एक गुस्साए असुर ने बनाया था।

जायंट्स काजवे आयरलैंड की अंतरिम काउंटी के उत्तरी तट पर स्थित प्रकृति का एक अनपेक्षित सुमेल है। ये अनियमित आकार वाले षटकोणीय काले बासाल्ट के स्तम्भ हैं जो किसी शिल्पी की रचना लगते हैं। वास्तव में ये ४० हजार के लगभग ज्वालामुखी चट्टान बासाल्ट से बने स्तम्भ हैं जो किसी शिल्पी की रचना लगते हैं। ये समुद्र से बाहर की ओर १८३ मीटर के लगभग फैले हैं। इन स्तम्भों का व्यास १५ से २० इंच तथा इनकी ऊंचाई लगभग २० फुट तक है। कई स्थानों पर काजवे ४० फुट चौड़े तथा इनके संकरे बिंदु पर काफी ऊंचे हैं। इनमें सर्वाधिक प्रसिद्ध चोटी है प्लीसकिन जिसके ऊपरी स्तम्भ ४०० फुट ऊंचे हैं। प्रकृति की यह शानदार रचना अस्तित्व में कैसे आई? जायंटस काजवे की रचना के बारे में कई कथाएं प्रचलित हैं। एक स्थानीय लोककथा के अनुसार इसकी रचना दैत्यों की एक नस्ल ने की थी जिन्होंने इसे अपने एक अन्य स्थान स्टाफा तक जाने के लिए एक सड़क के तौर पर निर्मित किया था, जहां ऐसी ही एक रचना मौजूद थी।

एक अन्य गाथा के अनुसार जायंटस काजवे का निर्माण दो दैत्यों के मध्य हुई लड़ाई थी। वे दोनों एक पर्वत पर खड़े हो गए और एक दूसरे पर चट्टानों से वार करने लगे। एक दैत्य की चट्टानें कम पड़ गई और वह इस बात से दुखी होकर वहीं गिर पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई। उसी दौरान इन चट्टानों का निर्माण हुआ। वैसे जायंटस काजवे की रचना के बारे में वैज्ञानिकों की राय कुछ इस प्रकार है- ५० मिलियन वर्ष पहले अंटरिम एक विशालकाय ज्वालामुखी वाले क्षेत्र के केंद्र में था जो स्कॉटलैंड के पश्चिमी द्वीपों, आइसलैंड तथा ग्रीनलैंड के पूर्वी तट में पड़ता था।

ज्वालामुखी फूटने पर तरल लावा अंटरिम के क्षेत्र में फैल गया और सूखने पर ठोस बनने लगा। जब यह लावा सूख रहा था तो यह थोड़ा उसी तरह सिकुड़ गया जैसे किसी ग्रामीण बावड़ी में पानी के सूख जाने पर कीचड़ सूख कर फट जाता है। उसी तरह के ढांचे अंटरिम में बनने लगे। जैसे-जैसे लावा ठंडा होता गया। इसकी षटकोणीय सतहें नीचे की ओर बढ़ती गईं और लम्बे-लम्बे स्तम्भ दिखने लगे ये। ये स्तम्भ ५ किलोमीटर के दायरे में फैले हैं और पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। जायंटस काजवे को १९८६ में यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल का दर्जा दिया गया था।

४) टेराकोटा आर्मी, चीन- यह चीन के पहले शासक किन शी हुआंग की मूर्ति सेना है, जिसमें ८००० से ज्यादा

सैनिक, १३० रथ और ६७० घोड़े हैं। इसका निर्माण चीन के पहले सम्राट की मृत्यु के बाद उनकी रक्षा के विश्वास से किया गया था।

५) नगोरोनगोरो क्रेटर, तंजानिया- यह दुनिया का सबसे बड़ा ज्वालामुखीकुंड है। इसकी गहराई ६१० मीटर और २६० वर्ग- किलोमीटर है। यह लुप्तप्राय प्रजातियों और पशुओं के लिए स्वर्ग है।

६) किलाउए, हवाई- हवाई का किलाउए ज्वालामुखी तीन दशकों से भी ज्यादा समय से लगातार विस्फोटित हो रहा है।

७) हागिया सोफिया, तुर्की- हागिया सोफिया या आयासोफिया पहले ऑर्थोडॉक्स चर्च था, जिसे १४५३ में मस्जिद में तब्दील कर दिया गया। बाद में १९३५ में कमाल अतातुर्क ने इसके चर्च एवं मस्जिद के स्वरूप को नष्ट कर इसे संग्रहालय बना दिया। इसकी विशेषता इसकी संरचना है, जो भूकंप में भी स्थिर रहता है।

८) पोटाला पैलेस, तिब्बत- इस महल की वास्तुकला अद्भुत है। यह दलाईलामा का आध्यात्मिक घर है। समुद्र तल से इसकी ऊंचाई ३७०० मीटर से ज्यादा है। इसमें १३ मंजिले और १०० से ज्यादा कमरे हैं।

❋ पांच महातत्व - यदि यह संतुलन बिगड़ गया तो यह प्रलयकारी हो सकता है। जैसे यदि प्राकृतिक रूप से जलतत्व की मात्रा अधिक हो जाती है तो पृथ्वी पर चारों ओर जल ही जल हो सकता है अथवा बाढ़ आदि का प्रकोप अत्यधिक हो सकता है। आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी को पंचतत्व का नाम दिया गया है। माना जाता है कि मानव शरीर भी इन्हीं पंचतत्वों से मिलकर बना है। वास्तविकता में यह पंचतत्व मानव की पांच इन्द्रियों से संबंधित है। जीभ, नाक, कान, त्वचा और आंखें हमारी पांच इन्द्रियों का काम करती है। इन पंचतत्वों को पंचमहाभूत भी कहा गया है। इन पांचों तत्वों के स्वामी ग्रह, कारकत्व, अधिकार क्षेत्र आदि भी निर्धारित किए गये हैं।

आकाश- आकाश तत्व का स्वामी ग्रह गुरु है। आकाश एक ऐसा क्षेत्र है जिसकी कोई सीमा नहीं है। पृथ्वी के साथ-साथ समूचा ब्रह्मांड इस तत्व का कारकत्व शब्द है। इसके अधिकार क्षेत्र में आशा तथा उत्साह आदि आते हैं। वात तथा कफ इसकी धातु हैं। वास्तु शास्त्र में आकाश शब्द का अर्थ रिक्त स्थान माना गया है। आकाश का विशेष गुण शब्द है और इस शब्द का सम्बन्ध हमारे कानों से है। कानों से हम सुनते हैं और आकाश का स्वामी ग्रह गुरु है।

इसलिए ज्योतिष शास्त्र में भी श्रवण शक्ति का कारक गुरु को ही माना गया है। शब्द जब हमारे कानों तक पहुंचते है तभी उनका कुछ अर्थ निकलता है। वेद तथा पुराणों में शब्द, अक्षर तथा नाद को ब्रह्म रूप माना गया है। वास्तव में आकाश में होनेवाली गतिविधियों से गुरूत्वाकर्षण, प्रकाश, ऊष्मा, चुंबकीय क्षेत्र और प्रभाव तरंगों में परिवर्तन होता है। इस परिवर्तन का प्रभाव मानव जीवन पर भी पड़ता है। इसलिए आकाश कहें या अवकाश कहें या रिक्त स्थान कहें, हमें इसके महत्व को कभी नहीं भूलना चाहिए। आकाश का देवता भगवान शिवजी को माना गया है।

वायु- वायु तत्व के स्वामी ग्रह शनि हैं। इस तत्व का कारकत्व स्पर्श है। इसके अधिकार क्षेत्र में श्वांस क्रिया आती है। वात इस तत्व की धातु है। यह धरती चारों ओर से वायु से घिरी हुई है। संभव है कि वायु अथवा वात का आवरण ही बाद में वातावरण कहलाया हो। वायु में मानव को जीवित रखनेवाली ऑक्सीजन गैस मौजूद होती है। जीने और जलने के लिए ऑक्सीजन बहुत जरूरी है। इसके बिना मानव जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। यदि हमारे मस्तिष्क तक ऑक्सीजन पूरी तरह से नहीं पहुंच पाई तो हमारी बहुत सी कोशिकाएँ नष्ट हो सकती हैं। व्यक्ति अपंग अथवा बुद्धि से जड़ हो सकता है।

प्राचीन समय से ही विद्वानों ने वायु के दो गुण माने गए हैं। वह है शब्द तथा स्पर्श। स्पर्श का सम्बन्ध त्वचा से माना

गया है। संवेदनशील नाड़ी तंत्र और मनुष्य की चेतना श्वांस प्रक्रिया से जुड़ी है और इसका आधार वायु है। वायु के देवता भगवान विष्णु माने गये हैं।

अग्नि- सूर्य तथा मंगल अग्नि प्रधान ग्रह होने से अग्नि तत्व के स्वामी ग्रह माने गए हैं। अग्नि का कारतत्व रूप है। इसका अधिकार क्षेत्र जीवन शक्ति है। इस तत्व की धातु पित्त है। हम सभी जानते हैं कि सूर्य की अग्नि से ही धरती पर जीवन संभव है। यदि सूर्य नहीं होगा तो चारों ओर सिवाय अंधकार के कुछ नहीं होगा और मानव जीवन की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती है। सूर्य पर जलनेवाली अग्नि सभी ग्रहों को ऊर्जा तथा प्रकाश देती है। इसी अग्नि के प्रभाव से पृथ्वी पर रहनेवाले जीवों के जीवन के अनुकूल परिस्थितियाँ बनती हैं। शब्द तथा स्पर्श के साथ रूप को भी अग्नि का गुण माना जाता है। रूप का सम्बन्ध नेत्रों से माना गया है। ऊर्जा का मुख्य स्रोत अग्नि तत्व है। सभी प्रकार की ऊर्जा चाहे वह सौर ऊर्जा हो या आणविक ऊर्जा हो या ऊष्मा ऊर्जा हो सभी का आधार अग्नि ही है। अग्नि के देवता सूर्य अथवा अग्नि को ही माना गया है।

जल- चंद्र तथा शुक्र दोनों को ही जलतत्व ग्रह माना गया है। इसलिए जलतत्व के स्वामी ग्रह चंद्र तथा शुक्र दोनों ही हैं। इस तत्व का कारतत्व रस को माना गया है। इन दोनों का अधिकार रुधिर अथवा रक्त पर माना गया है क्योंकि जल तरल होता है और रक्त भी तरल होता है। कफ धातु इस तत्व के अंतर्गत आती है। विद्वानों ने जल के चार गुण शब्द, स्पर्श, रूप तथा रस माने हैं। यहां रस का अर्थ स्वाद से है। स्वाद या रस का संबंध हमारी जीभ से है। पृथ्वी पर मौजूद सभी प्रकार के जल स्रोत जल तत्व के अधीन आते हैं। जल के बिना जीवन सम्भव नहीं है। जल तथा जल की तरंगों का उपयोग विद्युत ऊर्जा के उत्पादन में किया जाता है। हम यह भी भली-भांति जानते हैं कि विश्व की सभी सभ्यताएं नदियों के किनारे ही विकसित हुई हैं। जल के देवता वरुण तथा इंद्र को माना गया है। मतांतर से ब्रह्मा जी को भी जल का देवता माना गया है।

पृथ्वी- पृथ्वी का स्वामी ग्रह बुध है। इस तत्व का कारतत्व गंध है। इस तत्व के अधिकार क्षेत्र में हड्डी तथा मांस आता है। इस तत्व के अन्तर्गत आनेवाली धातु वात, पित्त तथा कफ तीनों ही आती हैं। विद्वानों के मतानुसार पृथ्वी एक विशालकाय चुंबक है। इस चुंबक का दक्षिणी सिरा भौगोलिक उत्तरी ध्रुव में स्थित है। संभव है इसी कारण दिशा सूचक चुंबक का उत्तरी ध्रुव सदा उत्तर दिशा का ही संकेत देता है। पृथ्वी के इसी चुंबकीय गुण का उपयोग वास्तु शास्त्र में अधिक होता है। इस चुंबक का उपयोग वास्तु में भूमि पर दबाव के लिए किया जाता है। वास्तु शास्त्र में दक्षिण दिशा में भार बढ़ाने पर अधिक बल दिया जाता है। हो सकता है इसी कारण दक्षिण दिशा की ओर सिर करके सोना स्वास्थ्य के लिए अच्छा माना गया है। यदि इस बात को धर्म से जोड़ा जाए तो कहा जाता है कि दक्षिण दिशा की ओर पैर करके ना सोएं क्योंकि दक्षिण में यमराज का वास होता है। पृथ्वी अथवा भूमि के पांच गुण शब्द, स्पर्श, रूप, स्वाद तथा आकार माने गए हैं। आकार तथा भार के साथ गंध भी पृथ्वी का विशिष्ट गुण है क्योंकि इसका सम्बन्ध नासिका की घ्राण शक्ति से है। उपरोक्त विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकलता है कि पंचतत्व मानव जीवन को अत्यधिक प्रभावित करते हैं। उनके बिना मानव तो क्या धरती पर रहनेवाले किसी भी जीव के जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। इन पांच तत्वों का प्रभाव मानव के कर्म, प्रारब्ध, भाग्य तथा आचरण पर भी पूरा पड़ता है। जल यदि सुख प्रदान करता है तो संबंधों की ऊष्मा सुख को बढ़ाने का काम करती है और वायु शरीर में प्राण वायु बनकर घूमती है। आकाश महत्वाकांक्षा जगाता है तो पृथ्वी सहनशीलता व यथार्थ का पाठ सिखाती है। यदि देह में अग्नि तत्व बढ़ता है तो जल की मात्रा बढ़ाने से उसे संतुलित किया जा सकता है। यदि वायु दोष है तो आकाश तत्व को बढ़ाने से यह संतुलित रहेंगे।

कुदरत के करिश्मे

१ कला के जीव कीट-पतंग

१ कला के जीव वायु भक्षण करते है। इनकी आयु भी अल्प होती है, यह सिर्फ कुछ ही घंटे जीते है। इनकी उत्पत्ति स्वेदज और अंडज प्रकार की होती है। यह गंदगी में पनपते है और वहां से अपने पंजों में विषाणु लाते है, जो हर प्राणी के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। यह किसी भी भोज्य पदार्थ पर बैठने से उसे विषाक्त कर देते है।

धरती के कुदरती माहौल को ठीक रखने में छोटे-छोटे कीटों गुबरैलों, कनखजूरों, तितलियों, मधुमक्खियों आदि का बड़ा साथ है। फूलों में परागण की प्रक्रिया इन्ही कीटों द्वारा पूरी होती है जिससे बीज बनते हैं। अगर दुनिया के सभी कीट नष्ट हो जाएं तो शायद सभी बड़े जीव भूखों मर जाएंगे।

ये कीट मरे हुए जानवरों, पत्तियों, ठूंठ और अन्य कूड़े-कबाड़ को खा-पचाकर और सड़ाकर मिट्टी को अधिक उपजाऊ बनाते हैं। झीलों तलाबों में मिलनेवाले कूड़े-कचरे को भी साफ करने का काम यही कीट करते हैं। कई कीड़े खेतों में फसलों को नुकसान पहुंचानेवाले दूसरे कीड़े-मकोड़ों को खाकर इनकी संख्या नहीं बढ़ने देते।

४० प्रतिशत प्रजातियां पूरी दुनिया में नाटकीय ढंग से कम हो रही हैं। मधुमक्खियां, चीटियां और बीटल (गुबरैले) अन्य स्तनधारी जीवों, पक्षियों और सरीसृपों की तुलना में आठ गुना तेजी से लुप्त हो रहे हैं। मगर कुछ प्रजातियों, जैसे कि मक्खियों और कॉकरोच (तिलचट्टों) की संख्या बढ़ने की संभावना है। कीट-पतंगों की संख्या में आ रही इस कमी के लिए बड़े पैमाने पर हो रही खेतीबाड़ी, कीटनाशकों का इस्तेमाल और जलवायु परिवर्तन जिम्मेदार है।

विश्व भर में पाये जानेवाले कुल जीव-जन्तुओं में ८० प्रतिशत कीड़े-मकोड़े हैं।

धरती पर रहनेवाले जीवों में कीटों की संख्या प्रमुख है। वे इन्सानों और अन्य प्रजातियों के लिए कई तरह से फायदेमंद हैं। वे पक्षियों, चमगादड़ों और छोटे स्तनधारी जीवों को खाना मुहैया करवाते हैं। वे पूरी दुनिया में ७५ प्रतिशत फसलों के पॉलिनेशन (परागण) के लिए जिम्मेदार हैं यानी कृषि के लिए वे महत्वपूर्ण है। वे मुद्रा को समृद्ध करते हैं और नुकसान पहुंचानेवाले कीटों की संख्या को नियंत्रित रखते हैं।

पूरी दुनिया में खेती में उर्वरकों और कीटनाशकों का इस्तेमाल और कई तरह के जहरीले रसायनों के संपर्क में आना। जैविक कारण है जिसमें अवांछित प्रजातियां हैं जो अन्य जगहों पर जाकर वहां के तंत्र को नुकसान पहुंचाती हैं। जलवायु परिवर्तन। खासकर उष्ण कटिबंधीय इलाकों में, जहां इसका प्रभाव ज्यादा पड़ता है।

बात सिर्फ मधुमक्खियों की नहीं है। मामला परागण या हमारे खाने से भी जुड़ा नहीं है। ये गोबर के बीटल की भी बात है जो अपशिष्टों को रीसाइकल करते हैं। साथ ही ड्रैगनफ्लाइज से भी यह मामला जुड़ा है जो नदियों और तालाबों में पनपते हैं।

हमारे ग्रह का पर्यावरण खराब हो रहा है। इस दिशा में पूरी दुनिया को मिलकर गंभीर कदम उठाने की जरूरत है ताकि न सिर्फ इस नुकसान को रोका जाए, बल्कि इससे उबरा भी जाए।

पक्षियों, सरीसृपों और मछलियों की कई प्रजातियां खाने के लिए इन कीटों पर निर्भर हैं। कीटों के विलुप्त होने से इनकी

प्रजातियों के अस्तित्व पर भी संकट आ जाएगा। कुछ प्रजातियां ऐसी भी हैं जो परिवर्तन के साथ ढलने में कामयाब होती दिख रही हैं।

कीटों की कई प्रजातियों, जैसे मधुमक्खियों की संख्या में कमी आई है और खासकर विकसित अर्थव्यवस्था वाले देशों में।

गरम जलवायु के कारण तेजी से प्रजनन करनेवाले कीटों की संख्या बढ़ेगी क्योंकि उनके शत्रु कीट, जो धीमे प्रजनन करते हैं, विलुप्त हो जाएंगे। यह संभव है कि इससे हानिकारक कीट-पतंगों की संख्या बढ़ जाएगी मगर उपयोगी कीट-पतंगे खत्म हो जाएंगे। इनमें मधुमक्खियां, तितलियां और गुबरैले भी शामिल हैं। इससे मक्खियों, कॉकरोच जैसी प्रजातियां बढ़ जाएंगी क्योंकि वे बदलते हालात के हिसाब से खुद को ढाल लेती हैं और कीटनाशकों को लेकर उनमें प्रतिरोधक क्षमता भी है। अपने बगीचों को कीटों के अनुकूल बनाएं और कीटनाशकों का इस्तेमाल न करें।

ऑर्गेनिक फूड खरीदकर और इसे इस्तेमाल करके भी लोग फायदेमंद कीटों को विलुप्त होने से बचाने में योगदान दे सकते हैं।

आमतौर पर कीड़ों का वजन इतना कम होता है कि वे पानी के पृष्ठ में तनाव या सरफेस टेंशन को तोड़ नहीं पाते। पानी और दूसरे द्रवों का एक गुण है जिसे सरफेस टेंशन कहते हैं। इसी गुण के कारण किसी द्रव की सतह किसी दूरसी सतह की ओर आकर्षित होती है। पानी का पृष्ठ तनाव दूसरे द्रवों के मुकाबले बहुत ज्यादा होता कीड़े मकोड़े आसानी से इसके ऊपर टिक सकते हैं। जिससे इन कीड़ों का वजन पानी के पृष्ठ तनाव को भेद नहीं पाता। सरफेस टेंशन एक काम और करता है। पेन की रिफिल या कोई महीन नली लीजिए और उसे पानी में डुबोएं। पानी नली में काफी ऊपर तक चढ़ आता है। पेड़ पौधे जमीन से पानी इसी तरीके से हासिल करते हैं? उनकी जड़ों से बहुत पतली-पतली नलियां निकलकर तने से होती हुई पत्तियों तक पहुंच जाती हैं।

कॉकरोच, मक्खियां एवं कीटों आदि से घर की रक्षा करना वास्तव में कठिन है। हम यह भली-भांति जानते हैं कि इन कीटों में हमारे लिए कौन लाभकारी है व कौन नहीं। हमारे द्वारा छोड़े और फेंके गये बचे-खुचे भोजन पर निर्वाह करनेवाले इन बेजुबान, निरीह एवं शांतिप्रिय जीवों को दोष देना गलत है। फिर भी जब हम इन्हें अपने घर में अपने आसपास देखते हैं, तो चिंतित हो जाते हैं कि इनकी रोकथाम के लिए खतरनाक रासायनिक कीटकनाशकों का ही प्रयोग किया जाए। कुछ हानिरहित साधारण एवं प्राकृतिक उपाय भी हैं, जिनका प्रयोग किया जा सकता है।

सर्वोत्तम उपाय तो यह है कि इन कीटों को घर में घुसने ही न दिया जाए। इसके लिए जरूरी है कि समय-समय पर घर की जांच की जाए कि घर में कहीं सूराख या दरारें तो नहीं है। ऐसे खुले स्थान, जहां से बिजली के तार व पाइप आदि आते हों, उन्हें बंद कर देना चाहिए। चूंकि कीट नमीवाला स्थान ज्यादा पसंद करते हैं, अत: रिसते पाइप आदि की समय-समय पर जांच कराते रहें।

इन कीटों से घर की सुरक्षा के लिए फ्लाई-स्क्रीन एक कवच की तरह कार्य करती है। चूंकि चूहे व कॉकरोच सीवर वाले स्थानों से ही प्रवेश करते हैं, अत: नालियों पर जालीदार ढक्कन अवश्य होने चाहिए।

खाने की चीजों को डिब्बों में ढंक कर रखें। रसोईघर की शेल्फ एवं घर की नियमित सफाई करना इनको दूर भगाने के कारगर उपाय हैं।

छोटे कीट पृथ्वी के अन्य किसी प्राणी की तुलना में ज्यादा पौधे खा जाते हैं। वह पौधों व पशुओं के खत्म होने पर भी

महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यदि वह न हों तो यह दुनिया मृत पौधों व पशुओं से पट जाएगी।

कीट विज्ञानी कैली मिलर और क्वेंटिन व्हीलर ने स्लाइम मोल्ड कीड़ों को जार्ज ब्रुश और डिक चेनी नाम दिये हैं।

सामान्य मान्यता के विपरीत टकीला की बोतलों में कीड़े नहीं होते। टकीला जैसे पेय मेजकाल की बोतलों में अलबत्ता कीड़े होते हैं।

हर साल ७००० नई कीट प्रजातियों की खोज होती है।

कीट पतंगों का शोरगुल उनकी आवाज से संबंधित नहीं होता है। मधुमक्खी, मच्छर और मक्खियों की भिनभिनाहट दरअसल उनके पंखों की तेज रगड़ से पैदा होती है।

कीट और मानव-भक्षी वृक्ष भी हैं, इनकी संख्या बहुत अधिक है। ऐसी अनेक घटनाएं पढ़ने को मिलती हैं जिनमें वृक्ष, मानव का भक्षण करते हैं।

पत्तियां भी शिकार करती हैं। अनेक कीट-भक्षी वृक्ष हैं जिनकी पत्तियां कीटों को शिकार के रूप में खाती हैं।

कीड़ों की आंखों में एक-दो नहीं, बल्कि कई हजार छोटी आंखें होती हैं, जो मिलकर एक कंपाउंड आई कहलाती हैं।

अमेरिका में लगभग ५०० किस्मों के विषैले कीट-पतंगे पाए जाते हैं।

सबसे लंबा कीड़ा - दुनिया का सबसे लंबा कीड़ा स्टिक इंसेक्ट १५ इंच लंबा होता है। वह देखने में किसी पेड़ की टहनी जैसा दिखता है।

कीट पतंगे आमतौर पर अपने वजन से पचास गुना अधिक भार उठा लेते हैं।

एक कीट ऑर्किड के फूलों की तरह दिखता है, जिसका नाम है- ऑर्किड मैंटिस। यह कीट इंडोनेशिया व मलेशिया के आर्द्रता वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। यह वातावरण के अनुसार अपना रंग बदलने में माहिर होता है।

कीटों के वैज्ञानिक अध्ययन को एन्टोमोलाजी कहते हैं।

❋ लैंटर्नबग- उष्ण कटिबंधीय लैंटर्नबग नामक कीट अमेरिका में पाया जाता है। शरीर के अगले हिस्से में नाक की तरह दिखनेवाला इसका अंग वास्तव में इसका मुंह है। इसकी सहायता से यह फूल-पत्तियों का रस चूसता है। इसका यह मुंह इसके शरीर से भी बड़ा होता है। इसलिए इसे एंटी एयर मिसाइल या एलिफेंट बग भी कहा जाता है।

❋ रंग-बिरंगी पूंछवाला कीट- वर्षा वनों में रहनेवाले प्लांट हॉपर नामक इस कीट की पूंछ मोम की तरह मुलायम व फाइबर ऑप्टिक की तरह रंग-बिरंगी होती है। यह इसकी रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

❋ कैटिडिड- मेंढक की तरह दिखनेवाला यह कीट देखने में भले ही भयानक लगे, लेकिन यह एक शर्मीला व स्नेही कीट है। यह अपने शिकार पर हमला करने के बजाय छिपकर बैठना पसंद करता है। इसका पूरा शरीर कांटों से भरा होता है, जो इसकी रक्षा करते हैं।

❋ स्पिनी लीफ इंसेक्ट- इस कीट को देखकर ऐसा आभास होता है मानो किसी ने आलू या संतरे के छिलकों को कलात्मक ढंग से सजाकर रख दिया है। यह लीफ इंसेक्ट है। ऑस्ट्रेलिया के इस कीट की १०० से भी अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें से कुछ लकड़ियों की तरह और कुछ विकसित फूल-पत्तों की तरह दिखाई देते हैं।

❋ प्रेइंग मैंटिस- यह कीट वृक्षों की शाखाओं पर निश्चल बैठकर अपने शिकार की राह देखता रहता है। प्रार्थना करने

की स्थिति में बैठा हुआ दिखाई देने के कारण इसका नाम प्रेइंग मैंटिस पड़ गया है। यह जीवित चींटियों व कीटों को अपने अगले पैरों से पकड़कर उनका शिकार करता है। यह विश्व का एकमात्र ऐसा कीट है जो किसी भी दिशा में अपना सिर घुमा सकता है। दुनियाभर में इसकी १८०० प्रजातियां पाई जाती हैं।

✲ लुना मॉथ- फूलों की तरह आकर्षक दिखनेवाले इस कीट का नाम लुना मॉथ है। यह उत्तरी अमेरिका, जापान, बांग्लादेश तथा नेपाल में पाया जाता है। इसका जीवनकाल केवल २ सप्ताह का होता है।

✲ स्टिक इंसेक्ट- किसी पेड़ की पतली टहनियों की तरह दिखनेवाला यह कीट विएतनाम के वनों में पाया जाता है। यह विश्व का सबसे बड़ा कीट है जिसकी लंबाई ३२ सेमी होती है। यह अपने पैरों को खोलकर उन्हें ५४ सेमी तक फैला सकता है। यह गिरगिट की तरह रंग भी बदल सकता है। कई बार यह अपने शत्रु के दूर जाने तक मरे होने का नाटक कर निश्चल पड़ा रहता है।

✲ लीफ इंसेक्ट- दुबले-पतले शरीर व हल्के हरे रंग के कारण यह कीट बिलकुल पत्ते की तरह दिखाई देता है। यह स्टिक इंसेक्ट की ही जाति का कीट है। इसका नाम ऑस्ट्रेलियन लीफ इंसेक्ट है।

✲ **चींटी - चींटा -** चींटी अपने वजन का पचास गुना बोझ उठाती है और तीस गुना भार खींच सकती हैं।

टनों मिट्टी खोदकर हटा देती हैं चींटियां- आकार के अनुरूप चींटी की मांसपेशियां मनुष्य की अपेक्षा बहुत मोटी होती हैं। ये एक वर्ग मील एरिया में करीब ५० टन मिट्टी को इधर से उधर कर देती हैं।

✲ चींटियों की कुछ किस्में पानी में तैर सकती हैं और पानी के अंदर बने घोंसलों में रहती हैं।

✲ चीटियों की इतनी प्रजाति हैं कि एक ही पेड़ पर ४३ प्रकार की चीटिंया दिख सकती हैं।

✲ लाफ कटर नामक चीटीं की प्रजाति खेती तक करती है।

✲ चींटियां, केकड़े, मधुमक्खियां निश्चित समय पर अपना सभी काम करते हैं। बिना किसी घड़ी के उन्हें समय का सही अनुमान रहता है।

✲ चींटियां सोती नहीं हैं।

✲ चींटी की लंबाई एक इंच का १६ वां भाग इतनी भर होती है।

✲ बिलों में चीटियां अपने निकटवर्ती अंडों और लार्वा की रक्षा करने पर ज्यादा ध्यान देती हैं।

✲ जागने पर चींटियां इंसानों की तरह अंगड़ाई और जम्हाई लेती हैं।

✲ चींटी का दिमाग उसके शरीर के अनुपात की तुलना में ज्यादा होता है।

✲ चींटियां अपनी मूंछ जैसे एंटीना के जरिए अपने साथियों से बात करती हैं और भोजन की तलाश कर लेती हैं। भोजन मिल जाने पर शरीर से एक विशेष प्रकार का रसायन गिराते हुए वापस लौटती हैं, जिसे सूंघते हुए बाकी साथी चींटियां लाइन लगाकर भोजन के स्रोत तक पहुंचती हैं। फेरोमोन रसायन की वजह से चींटियां अपने सरदार का आदेश मानती हैं।

✲ मरी हुई चींटी में से एक रसायन निकलता है, जिससे अन्य चीटियों को उसके मृत होने का पता चलता है। अगर वह रसायन किसी जिंदा चींटी पर गिर जाए तो अन्य चीटियां उसे मृत मान लेती हैं और उसे भी मरा समझकर वहां से हटा देती हैं।

✻ वैसे तो चींटी की दो आंखें होती हैं, लेकिन होती खास हैं। उनकी आंखें एक साथ कई तरफ देख सकती है। चींटी के आंख को यौगिक आंख कहा जाता है, क्योंकि इनमें नन्हें-नन्हें ढेरों लेंस होते हैं। इससे लाभ ये होता है कि चींटी हल्की से हल्की हलचल को भी देख लेती है। इन दो आंखों के अलावा अधिकतर चींटियों की नन्हीं-नन्हीं तीन आंखें और भी होती हैं, जो उनके सिर के ऊपरी हिस्से में त्रिकोण के रूप में स्थित होती हैं। इनका काम रोशनी के स्तर को पहचानना होता है। इनका काम रोशनी के स्तर को पहचानना होता है। कुछ चीटियां ऐसी भी होती हैं, जो बिल्कुल नहीं देख सकती।

✻ लाल चींटियां- लाल चींटियां प्रकृति का अपना कीट नियंत्रण विभाग है। ये यूरोप तथा एशिया के विभिन्न भागों में व्यापक रूप से पाई जाती हैं। ये कीड़ों तथा अन्य छोटे कशेरूकी जीवों को अपना आहार बनाती हैं। लाल चींटियों के काटने से शरीर में बेहद जलन होती है तथा इनके दंश के कारण ही लोग इनसे भय खाते हैं लेकिन लाल चींटियों के शरीर में डंक नहीं होता, बल्कि इसके स्थान पर इनके पेट में एक विशेष ग्रंथि होती है,जोकि फोलिक एसिड पैदा करती है। इनको छेड़ने पर ये बलात इस एसिड को अपने शिकार के शरीर में प्रविष्ट करा देती हैं, जिससे शरीर के उस भाग पर जलन शुरू हो जाती है। इसी कारण इन्हें अग्नि चींटियां भी कहा जाता है। लाल चींटियों के नीड़ में लगभग एक लाख चींटियां रहती हैं। अन्य अनेक चींटियों के विपरीत, लाल चींटियों के नीड़ में एक बस्ती में अनेक रानी चींटिंयां होती हैं। कुल मिलाकर यह नीड़ एक अत्यधिक सुव्यवस्थित बस्ती होती है।

✻ सबसे बड़ा मस्तिष्क चींटी का होता है।

✻ एफिड्स को पालती हैं चींटियां- अंडे, दूध, मांस, ऊन, सवारी और शौक के लिए इंसान कई पशु-पक्षियों को पालतू बनाता है। दूसरे जीव भी ऐसा ही करते होंगे और वह भी नन्हीं सी चींटी? चींटियां भी भोजन सामग्री प्राप्त करने के लिए एक किस्म के कीड़े को पालतू बनाती हैं और इसका नाम है एफिड। लाखों वर्षों से चींटियां एफिड्स को पालतू बनाती आई हैं। एफिड हर तरह की कृषि भूमि में पाया जाते हैं। नाजुक शरीर और पतली लंबी टांगोंवाले एफिड पौधों द्वारा उत्सर्जित होनेवाले अपशिष्ट पदार्थों को भोजन के रूप में इस्तेमाल करते हैं। इस पदार्थ में नाइट्रोजन और कार्बोहाइड्रेट का मिश्रण होता है। कार्बोहाइड्रेट एफिड के लिए अभोज्य जबकि चींटियों के लिए फायदेमंद होता है। एफिड इस कार्बोहाइड्रेट को तरल चीनी के रूप में उगल देते हैं और चींटियां इसको खा जाती हैं। अगर इस तरह से एफिड चींटियों को भोजन उपलब्ध कराते हैं तो बदले में चींटियां उनकी सुरक्षा और देखभाल करती हैं। वे अपनी कालोनी में एफिड को उनके अंडे सुरक्षित रखने का स्थान उपलब्ध कराने के साथ ही शिशु एफिड के भोजन का बंदोबस्त भी करती हैं।

✻ चीटियों का भी राज्य होता है। चीटियां आपस में एक विशेष प्रकार का समूह बनाती हैं। जिस प्रकार मनुष्यों के समूह में राजा, रानी, सैनिक, दास आदि होते हैं, उसी प्रकार चीटियों के समूह में भी राजा, रानी, सैनिक नौकर-चाकर आदि होते हैं। इन राज्यों की सैनिक चीटियां अपने राजा का आक्रमण आदेश पाते ही दूसरे पड़ोसी राज्य पर हमला कर देती हैं। इस हमले के दौरान यदि पड़ोसी राज्य के सैनिक कमजोर होते हैं, तो हमला करनेवाली चीटियां उन्हें उनके महलों से निकाल देती हैं और महलों तथा अंडों पर कब्जा कर लेती है, जब इन अंडों से बच्चे निकलते हैं तो इन बच्चों को दास बना लिया जाता है और इनसे जीवन भर दास का काम करवाया जाता है। इन दासों में से जो दास लड़ाई में अच्छे तथा वफादार होते हैं, उन्हें रख लिया जाता है। नर चीटियों का मादा चीटियों से विवाह भी होता है। कुछ जासूसी चीटियां यह

पता लगाती हैं कि कौन सा राज्य उनके राज्य पर आक्रमण करेगा या किस राज्य पर आक्रमण करने पर लाभ होगा।

चीटियों का राजा राज्य की व्यवस्था ठीक करवाता है, तथा रानी दासों से काम करवाती है। चीटी ही एक ऐसा जीव है जो बिना रुके सदा कार्य करता रहता है।

✻ एक रानी चींटी २० वर्षों तक जी सकती है।

✻ नन्हीं चींटी- चींटियां होती तो बहुत छोटी-सी हैं। ये आसपास के वातावरण के साथ आसानी से घुल-मिल जाती हैं। इन्हें बेहद समझदार टीम प्लेयर भी माना जाता है। ये लंबी दूरी आसानी से तय कर सकती हैं और अपना रास्ता भी बिल्कुल नहीं भूलतीं। इनमें उन आपदाओं से लड़ने की क्षमता होती है, जिनसे दूसरे जानवर नहीं लड़ पाते।

✻ अगर एक चींटी का आकार एक आदमी के बराबर हो तो वो कार से दुगुनी तेजी से दौड़ेगी। चींटीयां कभी नहीं सोती।

✻ गुलाम चीटिंयां- कुछ चींटियां दूसरी बस्तियों में जाकर वहां की चिटियों को पकड़कर लाती है और उनसे गुलाम मजदूरों की तरह काम करवाती हैं।

✻ चीटियों के संसार में मौत के बाद साथियों को दफनाने के लिए कब्रिस्तान होते हैं। जब कोई चींटी मरती है, तो उसमें से अजीब-सी गंध आती है, जिसे सूंघने के बाद दूसरी चीटियां उसे दफनाने के लिए ले जाती हैं।

✻ चींटियों का भार मानव जितना- धरती पर जितना भार सारी चींटिंयों का है उतना ही सारे मनुष्यों का है।

✻ ट्रैप जॉ आंटस जो सेंट्रल और साउथ अमेरिका में पाए जाते हैं। इस चींटी के जबड़े प्रति सेकेंड ११५ से २०७ फीट (३५ से ६३) तक मूव्स करते हैं। इसके जबड़े करीब-करीब ७८ से १४५ मील प्रतिघंटे की रफ्तार से चलते हैं। यह किसी के पलक झपकाने से कई गुना ज्यादा तेज हैं। जब भी कोई चीज इनके जबड़ों में फंसती है तो वह बहुत तेजी से उसे चबा डालती हैं। इसके जबड़े बिल्कुल धनुष और बाण के समान होते हैं।

✻ चींटी तथा अनेक जीव-जंतुओं के शरीर से एक प्रकार का रासायनिक पदार्थ निकलता है, जिसे फीरोमोन कहते हैं। चींटियां जिस रास्ते से जाती हैं, उस रास्ते पर फीरोमोन को छोड़ती जाती हैं, ताकि भोजन आदि की तलाश के बाद लौटते समय यह फीरोमोन की गंध के सहारे बगैर भटके हुए अपने बिलों में पहुंच जाए। फीरोमतोन की गंध दिशा संबंधी सूचना प्रदान करती है। ऐसा करने से न केवल चींटी उसी रास्ते से वापस लौटती है, जिस रास्ते जाती है, बल्कि समूह की अन्य चींटियां भी इस दिशा संबंधी सूचना के सहारे उसी रास्ते से भोजन तक पहुंचती हैं और सब मिलकर भोजन को बिल में ले जाती हैं।

✻ नन्हीं चींटी- चीटियां आसपास के वातावरण के साथ आसानी से घुल-मिल जाती हैं। इन्हें बेहद समझदार टीम प्लेयर भी माना जाता है। ये लंबी दूरी आसानी से कवर कर सकती हैं और अपना रास्ता भी बिल्कुल नहीं भूलती। इनमें उन आपदाओं से लड़ने की क्षमता होती है, जिनसे दूसरे जानवर नहीं लड़ पाते।

✻ यदि नशे में हो तो चींटी हमेशा दाई और लुढ़कती है।

✻ सर्वश्रेष्ठ वेटलिफ्ट- चींटी अपने भार से पचास गुना ज्यादा वजन तक उठा लेती है यानी उसकी बराबरी के लिए एक ६० किलोग्राम वजन वाले व्यक्ति को ३००० किलोग्राम भार उठाना पड़ेगा।

✻ आकाश से आनेवाले प्रकाश की सहायता से चीटियों को दिशा ज्ञान होता है। इसी तरह जब वे कदम बढ़ाती हैं तो

उसे गिनती जाती हैं।

✻ सैकड़ों आंखों के बाद भी चीटीं दूसरे कीड़ों के मुकाबले में ठीक से देख नहीं पाती। सूंघ कर काम चलाती है।

एक चींटी अपने भोजन तक पहुंचने के लिए जटिल से जटिल रास्ता सफलतापूर्वक पार कर लेती हैं। चीटियों की इस संबंध में स्मरण शक्ति इतनी तेज होती है कि व २० या २५ बार के प्रयत्नों में मुड़े-तुड़े तथा कठिन रास्ते से भी गुजर कर अपने निश्चित स्थान पर पहुंच जाती है।

✻ कुछ जीव ऐसे होते हैं जिनकी जीभ आदमियों की जुबान से कई गुना लंबी होती है। - दक्षिण अफ्रीका का चींटा खाऊ नामक जीव अपनी लंबी जीभ से बिल से चीटियां निकाल कर खा सकता है। यहीं रहने वाली एक छिपकली और मेंढक अपने जीभ से, चेहरा साफ करने के अलावा हवा में उड़ते हुए कीड़े भी पकड़ कर खा लेते हैं। अफ्रीका के अकोपी नाम के जानवर की भी जीभ बड़ी लंबी होती है।

✻ दक्षिण अफ्रीका की रेनफारेस्ट चीटियां फसलों की पैदावार बढ़ाने में सहायक होती हैं।

✻ बहुत ऊंचे पहाड़ों की चोटियों पर चींटियां नहीं होती। इसका मतलब यह हुआ कि तकरीबन हर जगह होती हैं, तो ऐसी ही सूरत में वह खाती क्या होगी। हजारों किस्म की चीटियां हैं। हारवेस्ट एंट अपने क्षेत्र की घास के बीच एकत्र करती हैं और अपने घोंसले में ले जाती हैं। जहां बीजों को अलग करके फूड सप्लाई के तौर पर स्टोर किया जाता है। डेयरी फार्मर चींटियां पौधों की जुओं को रखती हैं। इन जुओं की समूह को साइड से उस वक्त तक दबाया जाता है जब तक उनसे मीठा तरल पदार्थ न निकल जाए। इस शहद या दूध को चींटियां बहुत पसंद करती हैं। इसलिए वह अपनी गायों यानी जुओं की बहुत अच्छी देखभाल करती हैं। कुछ चींटियां फंगस के अलावा कुछ और नहीं खाती है। इसलिए वह एक पेस्ट बनाकर उस पर फंगस उगाती हैं।

चींटियों की एक प्रजाति में एक बड़े सिरवाली विशेष किस्म की वर्कर होती हैं। उसके सिर में शक्तिशाली मांसपेशियां होती हैं। जबड़े के चलाने के लिए ताकि ग्राइंडिंग की जा सके। यह वर्कर वास्तव में कालोनी की मिल्लर होती हैं। साधारण वर्कर जो अनाज लाते हैं यह उसे पीसती हैं। जब फसल का मौसम खत्म हो जाता हैं और उनके सिर काट लिए जाते हैं। ऐसा इसलिए किया जाता है क्योंकि चींटियां अतिरिक्त फंगस को फीड़ नहीं करना चाहती।

नन्हीं चींटी- चींटियां होती तो बहुत छोटी-सी है, ये आसपास के वातावरण के साथ आसानी से घुल-मिल जाती हैं। इन्हें बेहद समझदार टीम प्लेयर भी माना जाता है। ये लंबी दूरी आसानी से तय कर सकती हैं और अपना रास्ता भी बिल्कुल नहीं भुलती। इनमें उन आपदाओं से लड़ने की क्षमता होती है, जिनसे दूसरे जानवर नहीं लड़ पाते।

✻ ऑस्ट्रेलिया में पाई जाती है सबसे खतरनाक चींटी- बुलडॉग आंट विश्व की सबसे खतरनाक चींटी मानी जाती है। यह सिर्फ ऑस्ट्रेलिया में पाई जाती है। दक्षिण-पूर्व ऑस्ट्रेलिया यानी विक्टोरिया, तस्मानिया व न्यू साउथवेल्स के जंगलों में इनका बसेरा है। ये भूरे, लाल व काले रंग की बड़े आकार की- एक से डेढ़ इंच लंबी होती हैं। इनके जहर से अक्सर इंसान की मौत हो जाती है। इनका सिर बड़ा और १२-१३ दांत होते हैं। ये फूल, पेड़-पौधों के साथ कीड़े-मकोड़े भी खाती हैं।

चींटियों से छुटकारा पाने का सरल एवं सस्ता उपाय है-एम चम्मच तरल साबुन के घोल को स्प्रे बोतल में डाल दें तथा

उन पर छिड़काव करें। ऐसा करने से न सिर्फ चींटियां नही मरेंगी, बल्कि जब आप उस जगह को पोछेंगी तो वह भी साफ हो जाएगी। इसके अतिरिक्त उनके बिल के पास या उनके प्रवेश द्वार पर चॉक से एक मोटी लकीर खींच दें। चींटियां लकीर को पार नहीं कर पाएंगी। हालांकि वे जल्दी ही एक नया रास्ता खोज लेंगी जिसे पुन: चॉक से बंद करना पड़ेगा। पर चींटियों से इतना परेशान होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि इनके अपने लाभ भी हैं। ये प्सिू एवं मक्खियों के अंडे व लारवा खाती हैं तथा कॉकरोचों पर भी आक्रमण करती हैं।

❊ **मक्खी-** घरेलू मादा मक्खी अपने परों को एक सैकन्ड में २३० बार हिलाती है। घर में उड़ने वाली मक्खी अपने पैरों से भी स्वाद ले सकती हैं। मक्खी की आंख की संरचना ४००० मुखिकाओं से हुई है। यही कारण है कि वह बिना हिले डुले किसी भी दिशा से शत्रु को देख सकती है। एक मक्खी अपने जीवनकाल में १०,८०,३२० अंडे देती है। मक्खी २० से.मी. तक उड़ सकती है। यह दूरी उसकी खुद की लंबाई से १५० गुना ज्यादा है। मक्खी एक बार में लगभग ९०० अंडे देती है। अण्डा १० दिन बाद दूसरी मक्खी बन जाती है।

❊ मक्खी गोबर में अंडे देती है।

❊ मक्खी की प्रत्येक आंख में ४००० से अधिक लेंस होते हैं।

❊ मक्खी, छोटी, काली सी एक ऐसी कीट है जो लगभग हर जगह मिल ही जाती है। यह मासूम सी दिखनेवाली मक्खी आदमी की सबसे बड़ी दुश्मन है। खोजबीन के आधार पर यह पता चला है कि मक्खियां बीमारी के कीटाणु यहां-वहां ले जाती हैं, जो कि हजारों लोगों की मृत्यु का कारण बनती है और वह भी हर साल। आप अगर मक्खी को देखेंगे तो यह अक्सर मक्खी अपने हाथ, पैर, सिर रगड़ती ही दिखाई देती है। असल में वो अपना शरीर झाड़ती है, वह शरीर से अपने साथ लाए विषैले कीटाणुओं को झाड़ती है, जो कि भयंकर बीमारियों का कारण बन सकते हैं। यानी हैजा, टाइफाइड, मलेरिया आदि। यह कीटाणु मक्खी कूड़े-कर्कट या आस-पास फैली गंदगी से लाती है और अगर यह हमारे भोजन पर बैठ जाए तो तुरंत अपना शरीर झाड़ कर कीटाणु वहीं छोड़ती है और अगर हम वह खाना खा लें तो परिणाम कुछ ही घण्टों में हमारे सामने होता है। असल में मक्खी का शरीर, एक सा नहीं होता। उसके सारे शरीर पर, पंजों पर असंख्य बाल होते हैं और उसकी जुबान पर भी एक किस्म का गोंद लगा होता हैं जहां भी जाती है, या जहां भी रुकती है, वहां की कुछ भी चीज इसका जुबान या शरीर में पैरों से चिपक जाती है।

मक्खियों के बारे में एक जानकारी यह भी बतलाती है कि इनके जीवाश्म लाखों साल से भी पुराने है। ये धरती पर आए सबसे पुराने कीटों में से एक है। मक्खियां बैठती ही गंदगी पर हैं। अगर हम अपना आसपास का वातावरण एकदम स्वच्छ, सुथरा रखेंगे तो काफी हद तक इन पर काबू पाया जा सकता है। यह छोटे-छोटे कीट ही हमारे सबसे बड़े दुश्मन हैं। अत: स्वच्छता से ही हम इन्हें सदा के लिए दूर भगा सकते हैं।

❊ मक्खी की नींद- सिर्फ मनुष्य ही झपकी नहीं लेता, मक्खियां भी झपकी लेती हैं। खासतौर पर फलों पर मंडराने वाली। मक्खियों में मनुष्यों जैसी ऊंघने की आदत होती है। वे उड़ते-उड़ते झपकियां लेने लगती हैं।

❊ मक्खी की लगभग ८००० जातियां पृथ्वी पर विद्यमान हैं। मादा मक्खी एक बार में १२५ से ५०० हजार तक अंडे देती हैं। मक्खी का बच्चा ६ दिन में विकसित हो पाता है और लगभग १० दिन में मर जाते हैं।

❋ घरेलू मक्खी से करीब ३० बीमारियां हो सकती हैं।

❋ स्कूबा डाइविंग सूट पहनकर पानी में गोते लगाती है मक्खी- इस अनोखी मक्खी का नाम अल्कली फ्लाइज है और इसको एफिड्रा हेन्स भी कहते हैं। यह अजीबोगरीब मक्खी कैलिफोर्निया की मोनो झील में मिली है। इसके शरीर पर पंखों की जगह भारी मात्रा में बाल मौजूद हैं, जो झील के पानी का सामना करने में भी सक्षम हैं। यह मक्खी समुद्र से भी तीन गुना खारे पानी के अंदर गोताखोरी करने में सक्षम है।

यह मक्खी अपने चारों ओर हवा का एक बुलबुला तैयार कर लेती है। इस बुलबुले के अंदर यह खुद भी समा लेती है। इसके बाद इसके शरीर पर मौजूद बाल इस बुलबुले को पकड़कर रखने का काम करते हैं। जैसे ही यह मक्खी पानी के अंदर गोता लगाती है वैसे ही उसके ये बाल बुलबुला तैयार कर देते हैं। इतना ही नहीं बल्कि हवा हो यह बुलबुला इसके लिए बाहरी फेफड़े का काम भी करता है। इस वजह से यह मक्खी पानी के अंदर भी सांस लेने में भी कामयाब रहती है। ये अनोखी मक्खी पानी के अंदर डाइविंग करने के अलावा पानी में ही अंडे भी दे सकती है।

मक्खियां - तेजपत्ता, लौंग, पुदीना, पेपरमिंट व यूकेलिप्टस की पत्तियों को एक साथ कूटकर गुलकंद सा बना लें। इसे थोड़ी-थोड़ी मात्रा में छोटे कटोरों में डालकर कमरों में रखें। इसे मक्खियां पास नहीं फटकेंगी।

दरवाजों के आस-पास तुलसी, पुदीना, ब्राह्मी या सहस्त्रपर्णी लगाएं। मक्खियों को दूर भगाने के लिए पुदीने की पत्तियों को पीसकर पालतू जानवरों पर लगाएं।

❋ एक मक्खी सामान्यत: चौदह दिनों तक जीवित रहती है।

❋ बालू मक्खी रोशनी की ओर आकर्षित नहीं होती? यह मक्खी प्रकाश के पीछे, जो अंधेरा होता है, उसके पीछे दीवानी रहती है।

❋ सिफेनेमिया जाति की मक्खी ८१६ मील प्रति घंटे की गति से उड़ने में सक्षम है।

❋ मक्खी की लगभग ८०००० जातियां पृथ्वी पर विद्यमान हैं। मादा मक्खी एक बार में १२५ से ५०० हजार तक अंडे देती है। मक्खी का बच्चा ६ दिन में विकसित हो पाता है और लगभग १० दिन में मर जाते हैं।

❋ उड़ते समय सामान्य मक्खी एक सेकैंड में अपने पंख ३३० बार हिलाती है।

❋ भूमध्यरेखीय वनों की टीसी-टीसी नामक जहरीले मक्खी के एक दंश से ही मानव की मृत्यु हो जाती है।

❋ **ड्रेगन फ्लाई -** ड्रेगन फ्लाई अपने से ३३ फीट दूर उड़ रहे कीड़े को भांप लेता है।

❋ ड्रेगन फ्लाय की उम्र केवल २४ मिनट होती है।

❋ ड्रैगन फ्लाई जिसे व्याध पतंग कहते हैं, इसकी एक आंख में २८००० से भी ज्यादा आंखें समाई रहती हैं। ड्रैगन फ्लाई की आंखें दो हिस्सों में बटी होती हैं। ऊपरवाले हिस्से की आंखें बड़ी होती हैं, पर उनकी संख्या कम होती है। ड्रैगन फ्लाई जब अपने शिकार के लिए उड़ती है, तब उसकी आंखों का ऊपरी हिस्सा रंगों को नहीं पहचान पाता। चमकते आसमान की पृष्ठभूमि में उसे सब कुछ काला दिखाई देता है। उसकी निचले हिस्से की आंखें रंगों को इतना साफ देखती हैं कि घास और पत्तों के बीच में छिपा शिकार भी तुरंत पकड़ में आता है। ये आंखें इतनी कमाल की हैं कि किसी मक्खी या मच्छर का इनकी पकड़ से बच निकलना बहुत मुश्किल होता है।

❊ भारत में पाए जानेवाले ड्रैगनफ्लाई नाम के पतंगे यहां से अफ्रीका तक जाते हैं और फिर वापस आते हैं। ये सफर १८ हजार किलोमीटर लंबा होता है।

❊ **मच्छर -** मच्छर का प्रिय रंग नीला होता है वो इस रंग पर ज्यादा आकर्षित होता है। मच्छर के बारे में यह जानकारी काफी लोगों को नहीं रहती है।

मच्छर के मुंह में २२ दांत होते हैं।

नर मच्छर कभी किसी को नहीं काटता सिर्फ मादा मच्छर ही काटने का शौक रखती है।

मच्छर तीन मील प्रति घंटे की गति से उड़ते हैं।

पानी में मिट्टी का तेल डालने से पानी का पृष्ठ तनाव कम हो जाता है, जिससे मच्छर पानी में डूब जाते है।

मच्छर का प्यूपा एबलर कहलाता है।

मनुष्य में मलेरिया मादा ऐनाफिलीज कीट द्वारा फैलता है।

नर मच्छर सिर्फ आवाजें करते हैं।

फ्रांस ऐसा देश है जहां मच्छर नहीं है।

मच्छर- मच्छर एक विनाशकारी कीट है। बरसात के मौसम में इनकी भरमार हो जाती है। मच्छर १७ करोड़ साल से दुनिया में है। हमें जो मच्छर काटता है, वह एक मादा होती है। मादा इन्सानों और अन्य जीवों का खून चूसती है, जबकि नर पेड़-पौधों का रस चूसते हैं। मच्छरों में सूंघने की शक्ति इतनी तेज होती है कि यह ५० मीटर की दूरी से भी अपने शिकार को सूंघ लेते हैं।

मच्छर के लावा को जैविक तौर पर नियंत्रित करने के लिए आमतौर पर मिन्नोस मछली पानी में छोड़ी जाती है।

खून सिर्फ मादा मच्छर ही चूसते हैं, नर मच्छर नहीं।

मच्छर का आहार मनुष्य का शरीर है। वो अपनी बारीक सूंड को मनुष्य शरीर में चुभाकर खून चूसता है। उसकी हिम्मत व साहस खामोशी के साथ बदन पर आकर चिपक जाता है और खून पीता है। जरा से भी खतरे की आहट हुई फुर्र करके उड़ जाता है। यह सारी सूझबूझ कुदरत का करिश्मा है।

मच्छर काटते नहीं बल्कि डंक मारते हैं। मच्छर का जबड़ा नहीं होता और जब वह डंक मारता है तब एक नली के माध्यम से खून चूसता है। एक बार में एक मच्छर अपने वजन से लगभग डेढ़ गुना खून चूस सकता है।

❊ ४.५ इंच का है सबसे बड़ा मच्छर- आज मच्छरों का खौफ इतना बढ़ चुका है कि यह छोटा सा कीट एक विशाल राक्षस नजर आने लगा है। विशाल राक्षस से याद आया चीन में एक भयंकर सा दिखनेवाला इतना बड़ा मच्छर पाया गया जिसे मच्छरों की प्रजाति का राक्षस मच्छर कहा जा सकता है। सामान्य तौर पर मच्छरों का आकार जहां ३ से ६ मिमी तक ही होता है इस विशाल मच्छर का आकार ११.१५ सेंटीमीटर यानि लगभग ४.५ इंच है। इस मच्छर की खोज चीन के सिचुआन प्रांत में हुई है। इसे दुनिया का सबसे बड़ा मच्छर कहा जा रहा है। इस मच्छर का संबंध दुनिया की सबसे लंबी मच्छर की प्रजाति होलोरूसिया मिकादो से है।

❊ **जुगनू -** जुगनू अपने शरीर में ग्रंथियों से लूसीफेरिन नामक द्रव निकालता है, जो ऑक्सीजन के संपर्क में आने पर जल

उठता है। जुगनू यूं तो हर जगह मिल जाते हैं, लेकिन प्राय: ऐसे स्थानों पर ही बहुतायत में मिलते हैं, जहां का भौगोलिक पर्यावरण नम होता है, जहां प्रचुर मात्रा में वर्षा होती है। दरअसल जुगनू पूर्णत: शाकाहारी जीव है, जिसका जीवन वनस्पति पर ही निर्भर है। आसमान के तारों की भांति हमारे आसपास टिमटिमाते जुगनुओं को प्रकृति का बल्ब भी कहा जा सकता है। कई देशों में पाया जाता है- भारत, भूटान, मलाया, दक्षिण अमेरिका, साइबेरिया, दक्षिण अफ्रीका, थाईलैंड इत्यादि देशों में अधिक प्रकाश देनेवाले कुछ विशिष्ट प्रजाति के जुगनू भी पाए जाते हैं। दक्षिण अमेरिका के हरे-भरे जंगलों में जब जुगनू किसी वृक्ष पर अपने विशाल समूह के साथ आराम करते हैं तो दूर से देखने पर ऐसा लगता है मानो किसी ने उस वृक्ष पर हजारों-लाखों बल्ब जलाकर लटका दिया हों।

३०० ग्राम तक वजन वाले भी- दक्षिण अफ्रीका के जंगलों में तो ऐसे विचित्र जुगनू भी मिलते हैं, जो ३०० ग्राम तक वजनी होते हैं। इन जुगनुओं से इतना अधिक प्रकाश निकलता है कि करीब १० फुट के गोल घेरदार क्षेत्र में इतनी तेज रोशनी हो जाती है, जिसमें कोई व्यक्ति बड़े आराम से किताब भी पढ़ सकता है।

हिंसक पशु नहीं आते पास- इस जंगलों में शिकार के लिए आनेवाले शिकारी पेड़ों की डाल पर ऊंचाई पर झूले डालकर बैठते हैं और ३-४ जुगनुओं को पकड़कर उन्हें एक पतली डोर से बांधकर पेड़ की किसी डाल पर लटका देते हैं, जिनकी तेज रोशनी के कारण कोई हिंसक पशु पेड़ के नजदीक नहीं आता।

लालटेन के रूप में प्रयोग - रात के समय उष्णकटिबंधीय जंगलों से गुजरनेवाले लोग तो प्राय: किसी कांच के जार अथवा पात्र में जुगनुओं को एकत्र कर लालटेन के रूप में उनका इस्तेमाल करते हैं। भारत में तो हिमालय की तलहटी और तराई में जुगनुओं की ऐसी अनेक किस्में भी पाई जाती हैं, जिनके शरीर से न केवल रंग-बिरंगी रोशनी निकलती है। बल्कि अपने मुंह से ये मधुर संगीतमय आवाज भी निकालते हैं।

श्रृंगार के साधन के रूप में - क्यूबा तथा उष्णकटिबंधीय देशों में तो युवतियां रात के समय अपनी पोशाकों में सुई-धागे से ही जुगनुओं को टांग लेती हैं या उन्हें गले में माला की तरह पिरोकर पहनती हैं पर वे यह काम इतने ध्यान से और बड़े आराम से करती हैं कि कोई भी जुगनू दबकर मरने न पाए। फिर ये युवतियां जहां भी जाती हैं, जुगनुओं के प्रकाश के कारण इनके चारों ओर उजाला रहता है।

*** टिड्डा -** टिड्डी एक कीड़ा होती है।

टिड्डे की टांगे, टिड्डे के सिर और शरीर से अलग हो जाने पर भी चलती रह सकती है।

टिड्डी कीट का रक्त सफेद होता है।

टिड्डे की टांगे शरीर से अलग हो जाने पर भी चलती रहती हैं।

टिड्डे को केवल एक कान होता है, वो भी उसकी टाँगों के बीच।

*** झिंगुर -** झींगुर के कान उसके पैरों में होते हैं।

झींगुर अपनी पीठ पर लगे भूरे और चौड़े पंखों से तेज आवाज निकालता है। यही पंख तेज आवाज के अलावा उड़ने का काम भी देते हैं।

* विशालकाय वेटा (झींगुर)- विशालकाय वेटा विश्व का सबसे अजेय झींगुर है। यह न्यूजीलैंड में पाया जाता है।

वेटा की कुछ प्रजातियां गुफाओं में तथा कुछ जमीन पर रहती हैं। यह पेड़ों के बीच रहते हैं जहां ये उन्हीं के साथ एक रूप हो जाते हैं तथा उन्हें पहचानना कठिन होता है। जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, वास्तव में यह एक विशाल कीड़ा है। मादा वेटा नर की तुलना में अधिक लम्बी होती है। इस जीव का जबड़ा बहुत शक्तिशाली होता है जिसकी सहायता से यह पत्तों तथा छोटे-छोटे कीड़े-मकौड़ों को पकड़कर अपने दांतों से चबा लेता है। जब यह एक दूसरे के पीछे भागते हैं तो ये कड़-कड़ की आवाज छोड़ते हैं।

जब कोई व्यक्ति इसे पकड़ता है तो यह अपने मजबूत जबड़े से उसे डंक मारकर उस पर प्रहार कर देता है और इसकी कांटेदार पिछली टांगें उसे घायल कर देती हैं। यह चुभन ज्यादा दर्दवाली नहीं होती है परन्तु यह खतरनाक होती है क्योंकि इसमें होनेवाले घाव में संक्रमण फैल जाने की आशंका रहती है। विशालकाय वेटा की लम्बाई लगभग ४ इंच होती है तथा इसकी कांटेदार पिछली टांगें इसके आकार से दो गुना ज्यादा लम्बी होती हैं। कोई भी व्यक्ति जो इसे पकड़ने की कोशिश करता है उस पर यह खतरनाक झींगुर प्रहार करके उसे संक्रमित कर सकता है।

❋ झिंगुर की आवाज तो आप रात को सुनते ही होंगे लेकिन ये छोटा सा दिखनेवाला झिंगुर बहुत ताकतवर होता है। अगर झिंगुर पेड़ की छाल के अंदर पहुंच जाए तो वो पूरा पेड़ खोखला कर उसे नष्ट कर सकता है।

❋ झींगर सर कटने के बाद भी कई हफ्तों तक जिन्दा रह सकता है। दरअसल वो सर कटने से नहीं भूख से मरता है।

❋ **मकड़ी -** मकड़ी- पेरू के अमेजन में एक ऐसी मकड़ी मिली है, जो अपने आकार से बड़ी नकली मकड़ी की प्रतिकृति बनाती है। इसे बनाने के लिए वह पत्तियों, कचरे और मरे हुए छोटे जीवों के अवशेष का प्रयोग करती है। यह मकड़ियों की एक नई प्रजाति साइक्लोसा फैमिली की है। वह अपनी सुरक्षा और शिकारियों को धोखा देने के लिए अपनी जैसी एक इंच बड़ी प्रतिकृति बनाती है। जाले में बनी नकली मकड़ी के आठ पैर मिले हैं। मकड़ियां अपने जाले से वास्तव में अद्‌भुत ज्योमेट्रिक डिजाइन बनाती है। ऐसे में इस बात पर कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि वे इससे आगे बढ़कर कचरे और अन्य चीजों की मदद से और भी प्रभावशाली डिजाइन बना सकती हैं। साइक्लोसा प्रजाति के कुछ जीवों की शिकारियों से बचकर जीवित रहने की दर अधिक है। क्योंकि शिकारी मकड़ी के जाले में बनी नकली मकड़ी की प्रतिकृति को देखकर हमला करते हैं और साइक्लोसा मकड़ी कहीं और सुरक्षित बैठी होती है।

❋ मकड़ी एक मिनट में लगभग छह मीटर लंबा जाल बुनती है।

❋ बागों में पाई जानेवाली सामान्य मकड़ी के ६०० रेशम की ग्रंथियां होती हैं और यह एक बार में ६०० तक अंडे दे सकती है।

❋ मकड़ी जिस धागे पर टंगी रहती है वह एक इंच के लगभग दस लाखवें भाग जितना महीन होता है, अत: वह हमारी आंखों को दिखाई नहीं देता है।

❋ मकड़ी द्वारा बनाये गये जाल का तार उतने ही पतले स्टील के तार से कहीं ज्यादा मजबूत होता है। मकड़ी अपनी लंबाई से चालीस गुना दूरी फांद सकती है और १५० गुना वजन उठा सकती है।

❋ जिस मकड़ी के जाले को हाल ही में पाया गया वह ११०० लाख साल पुराना है।

❋ एक मकड़ी के जाले का वजन इतना कम होता है कि अगर एक औंस मकड़ी के जाले को खींच कर लंबा किया

जाए तो वह अटलांटिक सागर के आर-पार चला जाएगा।

* मकड़ी का रक्त पारदर्शी होता है।
* मकड़ी हर घंटे २ किलोमीटर की दूरी तय करती है।
* मकड़ी की नाक नहीं होती। वह पेट पर बने सुराखों से सांस लेती है।
* मकड़ी का जाल केवल नर मकड़ी ही बुनती है।
* मकड़ी बिना कुछ खाए पिये लगभग दस साल तक जिन्दा रह सकती है।
* मकड़ियों की चार से आठ आंखें हो सकती हैं। लेकिन इनमें सबसे ज्यादा तेज आंखें होती हैं, शिकारी मकड़ियों की।
* मकड़ी के जाल के दस हजार धागों की मोटाई एक बाल के बराबर बन पाती है।
* एक सामान्य मकड़ी में ६०० रेशम की ग्रंथियां होती हैं और वह एक बार में एक साथ ६०० अंडे तत्काल दे सकती है।
* मकड़ी के जाल से पकड़ते हैं मछली -मकोड़े वर्ग के दो जन्तुओं की जीवन शैली विचित्र है। एक है- टार्डीग्राड। यह महोदय गांधीजी की तर्ज पर उपवास करते हैं। उपवास एक-दो दिन नहीं, वर्षों तक चलता है। दलदली स्थानों में पाये जानेवाले यह मकोड़ा आकार में मकड़ी के बराबर होते हैं। भोजन की उपलब्धता बनी रहे तो यह उपवास नहीं करता, लेकिन भोजन की कमी में यह उपवास करने लगता है।

गर्मी में यह प्रतिदिन सूखता जाता है। स्थिति ऐसी आती है कि यह सूखकर एक छोटी मटर के आकार में पपड़ी की तरह हो जाता है। इस स्थिति में यह वर्षों तक पड़ा रहता है, लेकिन जल की बूंदें पड़ते ही असाधारण तेजी से फूलने लगता है और सामान्य हो जाता है।

दूसरा अजूबा है- नेफिला मकड़ी। यह न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया के तटवर्ती क्षेत्रों, दक्षिणी-पश्चिमी एशिया के द्वीपों, प्रशान्त महासागर के जंगलों में पायी जाती है। इन द्वीपों के आदिवासी समुद्र से मछलियां पकड़ने के लिए सूत नहीं, बल्कि इसके जाल का उपयोग करते हैं।

इसके पैरों की लम्बाई ७-७ इंच तक होती है। जाल बुनने के लिए वहां के आदिवासी बांस की लम्बी खपच्ची को गोलाकार बांधकर उसी पर मकड़ी को छोड़ देते हैं। मकडी जाल पर बैठते ही तीव्रता पूर्वक कार्य करने लगती है और डेढ़-दो घंटे के अंदर जाल बुनकर तैयार कर देती है।

इसके जाल के धागे की लम्बाई ६०८० मीटर तथा जाल का व्यास २ मीटर तक होता है। इस जाल में तीन किलोग्राम तक की मछलियां आसानी से पकड़ी जा सकती हैं।

* पोरशिया मकड़ी की शिकार पद्धति- उष्णकटिबंधीय वनों में रहनेवाली पोरशिया नामक मकड़ी की शिकार करने की पद्धति के बारे में वैज्ञानिकों ने नयी खोज की है। यह मकड़ी अपने आकार से तीन गुनी बड़ी मकड़ियों को खाती है।

पोरशिया अपने शिकार पर तब धावा बोलती है जब बड़ी मकड़ी के जाल में कोई हलचल हो रही हो। इससे पोरशिया मकड़ी के कारण होनेवाली हलचलों को बड़ी मकड़ी भांप नहीं पाती। पोरशिया हवा के बहाव या टहनियों के गिरने के कारण जाल में होनेवाली हलचलों के साथ-साथ जाल में प्रवेश करती है। इससे बड़ी मकड़ी उस पर हमला नहीं करती। पोरशिया पकड़ने में अधिक सफल हुई और जिन जालों के शांत रहने दिया गया, उन पर बैठी मकड़ियों को पकड़ने में उसे

कम कामयाबी मिली। सिंह आदि कुछ परभक्षी अपने शिकार की ओर तब बढ़ते देखे जाते हैं जब चांद बादलों के पीछे छिप जाता है और क्षणभर के लिए अंधेरा छा जाता है।

❋ ईस्ट अफ्रीका में पाई जानेवाली मकड़ी स्मॉल जंपिंग स्पाइडर इंसान का खून पीकर बैठे मच्छर को खाकर सीधे डबल भोजन हासिल कर लेती है।

❋ मकड़ी का खून नीला होता है - मकड़ी आर्थ्रोपोडा संघ का एक जीव है। अब तक मकड़ी की लगभग ४ लाख प्रजातियों की पहचान हो चुकी है। इनमें से १५२१ प्रकार की मकड़ियां भारत में पाई जाती हैं। वैसे तो अधिकतर मकड़ियां मांसाहारी होती है लेकिन बघीरा किप्लिंगी नामक मकड़ी शाकाहारी होती है। मकड़ी हमारी दुश्मन नहीं बल्कि दोस्त है। यह हमारे लिए किसी भी दृष्टि से खतरनाक नहीं है। मकड़ी का जाला दुनिया की सबसे मजबूत चीजों में से एक है ये समान वजन की स्टील से लगभग ५ गुना मजबूत होता है।

मकड़ियों के खून का रंग नीला होता है। मकड़ियों के दाँत नहीं होते इसीलिए वह अपने खाने को चबा नहीं सकती। मकड़ियों की दो प्रजातियां २३००० फीट की ऊंचाई पर भी पाई गई हैं। मकड़ियों के पैरों पर छोटे-छोटे बाल होते हैं जिनकी मदद से ये खूशबू महसूस कर पाती हैं और ये बाल इन्हें दीवार पर चढ़ते समय पकड़ बनाने में भी मदद करते हैं। मकड़ी चीटियों से डरती है क्योंकि इनमें फोरमिक एसिड पाया जाता है। हमारी मांसपेशियां कंकाल से बाहर होती हैं लेकिन मकड़ियों की मांसपेशियाँ उनके कंकाल के अंदर होती हैं। आपके घर में जितनी मकड़ियाँ हैं उनमें से ९५ प्रतिशत ने तो बाहरी दुनिया नहीं देखी होगी। मकड़ियों को ज्यादा दूर का नहीं दिखाई देता है। मकड़ियाँ हाइड्रोलिक पॉवर की वजह से चल पाती हैं तथा इनके अंगों में मांसपेशियां और रीढ़ की हड्डी नहीं होती है।

❋ कलाबाजी वाली मकड़ी - खोज के दौरान इस मकड़ी का पता लगाया गया, जिसका नाम सेब्रीनस रेषेनबर्गाई है। इस मकड़ी की खास बात है कि यह हवा में कलाबाजी करते हुए अपने शिकारी से बच निकलती है।

❋ उष्ण कटिबंधीय प्रदेशों में पाई जानेवाली नेफीली वंश की मकड़ियां अपने घोंसले के रूप में सबसे बड़े जाले बुनती हैं। इनके जाले एरियलनुमा और गोलाई लिए हुए होते हैं, जिनकी परिधि ५३७ सेंटीमीटर तक होती है।

❋ ब्राजीलियन स्पाइडर- पृथ्वी पर पाए जानेवाले अन्य स्पाइडर की तुलना में ब्राजीलियन स्पाइडर सबसे ज्यादा खतरनाक है। इसके काटने पर किसी तरह कि औषधि भी काम नहीं करती है। यह टेस्को बनाने (केला का एक तरह का पेड़) के आसपास रहते हैं।

❋ थेमोसाइड परिवार से संबंधित मकड़ी का नाम तेलंगाना राज्य के नाम तेलंगाना क्रेब स्पाइडर पर रखा गया।

❋ टैरेनट्यूला एक बड़ी जाति की मकड़ी, जो बिना भोजन के करीब ढाई साल गुजार सकती हैं।

❋ हरी मकड़ी- एक मकड़ी छ: इंच लंबी छलांग लगा सकती है। यह मकड़ी पपुआ न्यू गिनी के जंगलों में मिली है। ऑर्थरस नाम का यह जीव छह इंच लंबी छलांग लगा सकता है। कुछ मेंढ़क टर्राने की बजाय चिड़ियों की तरह चहचहाने वाले होते हैं। इनकी आवाज सुनकर कोई भी भ्रमित हो जाता है कि यह चिड़िया ही बोल रही है।

❋ मकड़ियां अपने शरीर में ही निश्चेतक, गोंद, गोंद रोधक तेल तथा रेशम का निर्माण करने में सक्षम हैं।

❋ **दीमक, वाळवी, बांबी -** दीमकों की बांबी की ऊंचाई जमीन से २० फीट तक ऊंची होती देखी गई है।

दीमक लकड़ी कैसे पचा लेती है - पेड़-पौधों में पाया जानेवाला सेलुलोज ही दीमक का भोजन होता है। इसलिए वे तमाम चीजें दीमक का भोजन होती है। जिनमें सेलुलोज होता है। लकड़ियों के बने फर्नीचर, कॉपी-किताबों जैसी बहुत सी चीजों को दीमक चट कर जाती है और फिर वह सामान किसी काम का नहीं रह जाता। दीमक जो सेलुलोज भोजन के रूप में प्राप्त करती है। उसे पचा पाने की क्षमता उसमें नहीं होती है। इसे पचाने के लिए दीमक को दूसरे जीव की मदद लेनी पड़ती है।

ये दूसरे जीव प्रोटोजोआ कहलाते हैं, जो दीमक की आंतों में रहते हैं दोनों के बीच सहभागिता का रिश्ता होता है दीमक लकड़ी को चबाकर निगल जाती है और आंतों में रहनेवाले वो प्रोटॅजोअंस इस लकड़ी की लुगदी को भोजन में बदल देते हैं। इस भोजन से ही दोनों जीव अपना जीवन चलाते हैं। दीमक पर्यावरण में सफाईगार की भूमिका निभाती है पर कई बार यह कीमती सामान को खराब करके नुकसानदायक भी साबित होती है।

✻ कीटों में रानी दीमक का जीवनकाल सबसे लंबा होता है वह ५० वर्षों तक अंडे दे सकती है।

✻ यदि दीमक को तेज संगीत सुनाई पड़ता है तो वह लकड़ी को दुगुनी तेजी से खाने लगता है।

✻ दीमक अपने रहने के लिए मिट्टी से टीले जैसी अपनी बांबी बनाते हैं जो ३० फीट तक ऊंची हो सकती हैं।

✻ **तितली -** तितलियां उड़ते हुए अपना साथी चुनती है। नर तितली रंगीन पंखों से मादा को आकर्षित करता है। रंगों की बारीकियां समझने की कला मनुष्यों के मुकाबले तितलियों में ज्यादा होती हैं। मादा तितली कभी-कभी उड़ते समय अंडे देती हैं। लेकिन सामान्यत: यह पत्तियों की निचली सतह पर अंडे देती है। कुछ के पंखों पर तो जानवरों की आंखें बनी होती हैं, जिससे वे चिड़ियों को डरा सकती है। इसी तरह तितलियों के पंखों पर पत्तियां भी बनी हैं, जिनकी मदद से वे पेड़-पौधों में छिपती हैं।

✻ तितली की स्वादग्रंथि मुंह में न होकर पैर में होती है। वे पैरों से चखती है।

✻ उड़ती हुई तितली एक सेकेंड में ९ बार, बर्र ११० बार तथा गृह मक्खी ३३० बार अपने पंख हिलाती है।

✻ मोनार्क प्रजाति की तितली हर सर्दियों में मैक्सिको की खाड़ी में प्रवास करती है व बसंत में अन्यत्र चली जाती है। यह क्रम हर साल होता है। मोनार्क तितली तीन हजार किलोमीटर तक यात्रा करती है जो किसी कीट का सबसे बड़ा माइग्रेशन है। यह १००० किमी की यात्रा तो बिना रुके कर सकती है। मोनार्क नामक तितलियां निवास करने के लिए प्रतिवर्ष ३०० मील दूर तक चली जाती है।

✻ तितली के फेफड़े नहीं होते इसलिए वे पेट को फुलाकर सांस लेती हैं व अपने खून को पंप करती है।

✻ तितली के पंख बड़ी महीन झिल्ली से बने हैं जिनमें बारीक नसों का जाल सा होता है। ये महीन झिल्ली हजारों नन्ही-नन्हीं पपड़ियों से भरी होती है। हर पपड़ी एक कोशिका का विस्तार है। जब आप तितली को पंख से पकड़ते हैं तो आपके हाथ में जो पाउडर जैसा पदार्थ आता है वो ये पपड़ियां ही हैं।

✻ तितलियों के रंगीन, पंख - तितलियों के पंख बड़े नाजुक से होते हैं, पर इनकी अनोखी बनावट से इन्हें जीने का सहारा मिलता है। कुछ तितलियों के पंख पर आंखें भी होती हैं। इनके पंख पर स्केल होते हैं, जो बारीक धूल के कण की तरह मालूम पड़ते हैं। इनके स्केल में छोटे-छोटे छेद होते हैं। स्केल की वजह से इनके पंखों पर चमकीला पैटर्न रंग इन्हें

साथियों को ढूंढने में भी मदद करते हैं। ये स्केल ऐसा पैटर्न बना देते हैं, जिससे ये तितलियां पेड़-पौधों के झुरमुट व घास में छिप जाती हैं। इनके पंख महीन झिल्ली से बने होते हैं, जिनमें हजारों स्केल होते हैं। इनमें ढेर सारे छोटे-छोटे छेद होते हैं। छेदों की इन कतारों के बीच थोड़ा ऊपर उठी एक परत होती हैं, जिससे सूरज की रोशनी सोखने में मदद मिलती हैं। तितलियों की इस बेमिसाल बनावट की वजह से सूरज की किरणें बाहर नहीं निकल पातीं, जिससे पंखों का रंग गहरा काला बना रहता है।

❋ एक दिन की जिंदगीवाली तितली मे फ्लाय - मे फ्लाय तितली एक ऐसी तितली होती है, जो सिर्फ मई महीने में ही पायी जाती है। इसके अंडे फूटने में तीन वर्ष लगते हैं, पर जब इनमें से नयी तितलियां निकलती हैं, तो वे केवल छह घंटे ही जीवित रह पाती हैं।

पूरी दुनिया में फ्लाय की प्रजातियां २५०० पायी जाती हैं। सिर्फ उत्तरी अमेरिका में इसकी ६३० प्रजातियां पायी जाती हैं। मे फ्लाय को डे-फ्लाय, शैड-फ्लाय, फिश-फ्लाय और कैनेडियन शॉल्जर भी कहते हैं। हजारों की संख्या में फ्लाय एक साथ बड़ी होती हैं और साथ ही उड़ती हैं। जब ये एक साथ निकलती हैं, तो पूरा आकाश भरा हुआ प्रतीत होता है। सभी एक-दूसरे के साथ नाचते हुए फूल जैसे लगते हैं। मे फ्लाय मछलियों के खाने की खास चीज हैं। जब गर्मियों में खाना कम पड़ जाता है, तब मे फ्लाय ही खाने का सकसे अच्छा स्रोत साबित होती हैं। कम आयु के कारण इसे एक दिन की जिंदगीवाला प्राणी भी कहा जाता है।

❋ तितलियां अगले दिन के मौसम का भी अंदाजा लगा सकती हैं।

❋ नर तितली के पास सूंघने की अद्‌भुत शक्ति होती है। कोसों मील दूर मादा तितली की भनक भी उन्हें इसी सूंघने की शक्ति से लगती है। वे एक खास गंध को दूर से भी पहचान लेते हैं।

❋ ब्राजील में एक ऐसी तितली पाई जाती है जिसका रंग तथा खुशबू चॉकलेट जैसी होती है।

❋ आइसलैंड में एक भी तितली नहीं पाई जाती लेकिन अन्य स्थानों से कुछ तितलियां गर्मी के दिनों में वहां पहुंच जाती हैं।

❋ अमेरिका में पाई जानेवाली मोनार्क तितलियों को ही लीजिए। ये मेक्सिको से कनाडा तक उड़ते हुए जाती हैं। ये दूरी ढाई हजार मील या करीब चार हजार किलोमीटर बैठती है। इसी तरह अफ्रीका में पाई जानेवाली लेडी बटरफ्लाई, उत्तरी अफ्रीका के रेगिस्तान से आर्कटिक तक का सफर तय करती है। ये दूरी १५ हजार किलोमीटर होती है।

❋ दुनिया में तितली की १५-२० हजार प्रजातियां मिलती हैं। तितलियों के रंगों में ही नहीं, आकार में भी विविधता है।

क्वीन एलेक्जेंडर तितली- यह दुनिया की सबसे बड़ी तितली है। इसके पंख २५ से.मी. (१० इंच) लंबे होते हैं। इस प्रजाति की तितली में नर व मादा के पंखों का रंग अलग-अलग होता है। नर तितली के पंखों का रंग काला होता है, जिस पर पीला, हरा और नीला रंग होता है, जबकि मादा तितली हल्के धब्बों के साथ भूरे रंग की होती है। यह उत्तरी पापुआ गिनी में पाई जाती है।

ब्लू तितली - अमेरिका और दक्षिणी अफ्रीका के तटीय क्षेत्रों में मिलनेवाली बौना ब्लू तितली दुनिया की सबसे छोटी तितली है। इसके पंख ५.७ मि.मी. लंबे होते हैं। इसके पंखों का बेसिक रंग भूरा होता है, जिनके किनारे और शरीर के पास का अंदरूनी हिस्सा नीले रंग का होता है। पंखों पर छोटे-छोटे नीले धब्बे के पैटर्न बने होते हैं।

बिग आउल तितली- इसके भूरे पंखों के ऊपर उल्लू की तरह काले और पीले रंग के घेरेवाली आंखों की आकृति बनी होती है। इसके पंख करीब ८-९ इंच लंबे होते हैं। मेक्सिको, दक्षिण अमेरिका के वर्षावनों में इसकी २० प्रजातियां पाई जाती हैं।

ब्लू मोरफो तितली- यह दुनिया की बड़ी तितलियों में से एक है। लाल पीठ पर हरे रंग का पैच होता है। यह चमकदार नीले रंग के पंखों के लिए जानी जाती है। इनकी उम्र काफी कम होती है। ये केवल ११५ दिन ही जिंदा रह पाती हैं। इनकी करीब ८० प्रजातियां मेक्सिको, दक्षिण और मध्य अमेरिका के वर्षावनों में पाई जाती हैं।

गोलिएथ तितली- यह तितली न्यू गिनी और इंडोनेशिया के वर्षावनों में पाई जाती है। इसके पंख करीब १८ से.मी. (७ इंच) लंबाई तक फैल साकते हैं। यह तितली काले, पीले और हरे रंग के कारण पहचानी जाती है। गोलिएथ तितली के शरीर पर भी पीले और काले बिंदु होते हैं।

किंग तितली- उत्तरी अमेरिका में पाई जाती हैं। इसका असली नाम मोनार्क है। पंखों पर काले और ऑरेंज रंग का खूबसूरत पैटर्न होता है, जिसके लिए यह प्रसिद्ध है। इनके पंख करीब ३.५-४ इंच लंबे होते हैं।

ग्रीन जे तितली- फिलीपाइंस में पाई जाती है। इनके पंख ४ इंच लंबे होते हैं। ठोस काले पंखों पर हरे धब्बे होते हैं।

तितली का शरीर तीन भागों में बंटा होता है, सिर-वक्ष और पेट। तितली के चार बड़े व दो छोटे पैर होते हैं और छह पंख होते हैं जो कि छाती से जुड़े होते हैं। एंटीना होते हैं, इसकी एक जोड़ी आंखें होती हैं और मुंह में घड़ी के स्प्रिंग की तरह प्रोवोसिस नामक खोखली लंबी सूंडनुमा जीभ होती है जिससे यह फूलों का रस चूसती है। तितली के शरीर का तापमान ८६ डिग्री के ऊपर होता है। यह किसी भी माहौल में रह सकती है। यह खुद को माहौल के अनुकूल बना लेती है। तितली ३ घंटे प्रति मील या इससे तेजी से उड़ सकती है। तितली प्रमुख रूप से फूलों के पास ही पाई जाती है। दुनिया भर में तितली की करीब १३०० प्रजातियां पाई जाती हैं। दुनिया की सबसे बड़ी तितली सोलमन आइसलैंड पर पाई जाती है, इसे जायंट बर्डविंग के नाम से जाना जाता है। इसे मादा तितली के पंखों का फैलाव १२ इंच से भी ज्यादा होता है।

तितली का जीवन- इसका जीवन चक्र बहुत ही साधारण लेकिन अद्‌भुत होता है। इसका जीवनकाल चार चरणों में विभक्त होता है।

अंडा- तितली एक पत्ती पर परखे अंडे के रूप में अपने जीवन की शुरुआत करती है और धीरे-धीरे एक जीव के रूप में विकसित होती है।

लार्वा- यह कैटर पिलर बनता है जो कि पत्तियां और फूल खाता है। कुछ दिनों के बाद यह अपने आकार से कई गुना बड़ा हो जाता है।

प्यूपा- आकार से बड़ा हो जाने के बाद यह प्यूपा में बदल जाता है। जो कि विश्राम की अवस्था होती है। प्यूपा के बाद यह अपने वयस्क रूप में आ जाती है।

वयस्क- अब यह उड़ने के लिए तैयार है जो कि तितली का रूप ले चुका है। इसी तरह तितली का जीवन चक्र चलता रहता है।

दुनिया रंग बिरंगी चीजों से सजायी गयी है, इसमें एक छोटी सी और नाजुक जीव तितली है, तितली दिनभर बगीचों और फुलवारी के फूलों के आसपास मंडलाती रहती है और उसके रस चूसकर अपना पेट भरती है। ईश्वर ने उसके पैरों को

कितना खूबसूरत बनाया है। जैसे किसी माहिर चित्रकार ने उन पर रंगबिरंगी तस्वीरें बनाई हों और अजीब बात ये है कि इसके दोनों परों की डिजाइन एक जैसी होती है। अगर दोनों परों पर बनी डिजाइन को माइक्रोमीटर, या मिलीमीटर से नापें तो साइज में जरा भी फर्क नहीं होगा। ये ईश्वर की कारीगरी है जिसने एक छोटे से जीव तितली को इतने रंगों से सजाया, जो छोटे से मासूम बच्चों के दिलों को भी लुभाती है। बेशक दुनिया की ये छोटी सी प्राणी ईश्वर के कुदरत की निशानियों में से एक निशानी हैं।

✻ **रेशम का कीड़ा -** रेशम के कीड़े में गुणसूत्रों की संख्या १०५१० होती है।

✻ रेशम के कीड़े के ग्यारह मस्तिष्क होते हैं।

✻ रेशम के कीड़े के शरीर में साइड में छेद होते हैं, जिनसे वह सांस लेता है।

✻ रेशम के कीड़ों को कुछ खाने को नहीं मिलता तो उनमें से कुछ खुद को ही खा लेते हैं।

✻ मात्र ५६ दिन की अवधि में रेशम का कीडा अपने वजन से ८६००० गुना भोजन चटपट कर सकता है। रेशम का कीडा दरअसल कीडा है ही नहीं वह तो सूंडी (कैटरापिलर) है।

✻ **मधुमक्खी -** मधुमक्खी के चार पंख होते हैं।

✻ मधुमक्खियों को एक किग्रा, शहद एकत्रित करने के लिए ४० लाख फूलों का रस चूसना पड़ता है।

✻ मधुमक्खी के पालन को एपीकल्चर कहते हैं।

✻ किसी व्यक्ति को डंक मारते ही मधुमक्खी मर जाती है।

✻ रानी मधुमक्खी अपने डंक का प्रयोग तभी करती है जब दूसरी रानी मधुमक्खी को डंक मारना हो।

✻ मधुमक्खी को एक औंस मतलब २८ ग्राम शहद इकट्ठा करने के लिए १३० किलोमीटर की यात्रा करनी पड़ती है।

✻ विषैली मधुमक्खी के डंक में साधारण मधुमक्खी के डंक से कम विष होता है।

✻ मधुमक्खी का भोजन (शहद) मनुष्य खाता है।कीट ३१३५) ड्रेगन फलाइ नामक मक्खी ६० मीटर प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ती है।

✻ मधुमक्खी एक सेकंड में २५० बार पंख फड़फड़ाती है।

✻ मधुमक्खियां इन्सानों के चेहरे पहचान सकती हैं।

✻ रानी मधुमक्खी अपने डंक का प्रयोग केवल दूसरी रानी मधुमक्खी को डंक मारने के लिए करती है।

✻ जाड़े के दिनों में रानी मधुमक्खी अपनी अन्य सहायक मधुमक्खियों के साथ अपने छत्ते में छुप जाती है। छत्ते में छोटे-छोटे छेद होते है जिन्हें वो गोंद से बंद करती है। गोंद को वे पेड़ों से इकट्ठा करती है।

✻ नर मधुमक्खी के डंक नहीं होते।

✻ मधुमक्खी की आंखों के ऊपर बाल पाए जाते हैं।

✻ मधुमक्खियां नाचकर, भिनभिनाकर अपने साथियों को संदेश देती हैं। अलग-अलग आकार में घूम-घूमकर वे अपने साथियों को बताती हैं कि पराग के लिए फूल कहां मिल सकते हैं। छत्ता टूटने और नया छत्ता बनाने के लिए भी मधुमक्खियां विशेष तरीके से नृत्य कर अपने साथियों को संदेश देती हैं।

❋ मधुमक्खियों के पंख १ सेकेंड में २५० बार फड़फड़ाते हैं, जिससे गुंजन की आवाज पैदा होती है। मधुमक्खियां १५ मील प्रतिघंटे की रफ्तार से उड़ सकती हैं, ये उतनी ही रफ्तार है, जितनी आप साइकिल चला सकते हैं। अधिकांश मधुमक्खियां केवल अपना बचाव करने के लिए काटती हैं।

❋ मधुमखी एकमात्र ऐसा जीव है जिसका खून कभी भी नहीं जमता।

❋ मधुमक्खियां फूलों का रस चूसकर उसे अपने छत्ते में शहद के रूप में जमा करती है। वह इसके लिए कितनी मेहनत करती हैं। एक किलोग्राम शहद जमा करने के लिए मधुमक्खियों को ४० लाख फूलों का रस चूसना पड़ता है। इसके लिए सभी मधुमक्खियां मिलकर इतनी दूरी तय करती हैं कि इसमें पृथ्वी के चार चक्कर लग जाएं।

❋ एक चम्मच शहद बनाने के लिए मधुमक्खियों को २००० फूलों का रस चूसना पड़ता है।

❋ डंक मारने के बाद अपना डंक वापस खींचने पर मधुमक्खी मर जाती है।

❋ मधुमक्खियां पृथ्वी की चुंबकीय शक्ति के प्रति अत्यंत सुग्राही होती हैं और स्थान-स्थान पर होनेवाले पृथ्वी के चुंबकीय क्षेत्र के इतने सूक्ष्म अंतर को भी जान लेती हैं जिसे कि केवल अत्यंत सुग्राही वैज्ञानिक उपकरणों से ही मापा जा सकता है।

❋ मधुमक्खी ढूंढ लेती है अपना रास्ता- देखने में भले ही मधुमक्खियां छोटी लगती हों, पर दिमाग इनका काफी तेज होता है। ये कई दिनों तक छह मील तक के रास्ते को याद रख सकती हैं। यही नहीं, मधुमक्खी अंधेरे में भी अपना रास्ता ढूंढ सकती है। प्रतीक चिन्हों और कल्पनाओं का अपने जीवन में कैसे प्रयोग करना है, यह मधुमक्खी से सीखा जा सकता है। मधुमक्खियां उड़ान के दौरान तय की जानेवाली दूरी और फूलों का रस खोजने में खर्च होनेवाली ऊर्जा की अलग-अलग गणना कर सकती है। ये विभिन्न परिदृश्य, फूलों के प्रकार, आकार और पैटर्न के बीच अंतर कर सकती है।

❋ मधुमक्खी की आंख में ६३०० लेन्स पाए जाते हैं, जो इस प्रकार काम करते हैं जैसे एक साथ रखे, छह हजार से अधिक लेन्सदार माइक्रोस्कोप (सूक्ष्मदर्शी)।

मधुमक्खियां- शहद मधुमक्खियों का एक बड़ा समूह बहुत मुश्किल से बनाता है। मधुमक्खियां फूलों से उनका रस चूसकर अपने शरीर में अलग से बने हिस्से में रखती जाती हैं। फिर उड़कर अपने छत्ते पर आती हैं, अपने द्वार इकट्ठा किया गया रस, रस चबानेवाली मधुमक्खियों को देती हैं। वे इसे लगभग आधे घंटे तक चबाती रहती हैं। चबाते वक्त उनके एंजाइम रस को ऐसे पदार्थ में बदलते हैं, जिसमें शहद के साथ पानी होता है। चबाने के बाद वे इस पदार्थ को मधुकोषों में डाल देती हैं, ताकि पानी बाष्प बनकर उड़ जाए। मधुमक्खियां अपने पैरों से भोजन का स्वाद चखती हैं। शहद को पचाना आसान है, क्योंकि मधुमक्खियां इसे पहले ही पचा चुकी होती हैं।

❋ रानी मधुमक्खी एक दिन में १५०० अंडे देती है।

❋ **भौरा -** भौरे का समाज भी चींटी और मधुमक्खियों की तरह ही होता है। राजा-रानी और श्रमिकोंवाले इस परिवार में सदस्यों की कुल संख्या होती है ८०० के लगभग।

❋ **पिस्सू (खटमल) -** एक छोटा सा कीड़ा पिस्सू जब छलांग लगाता है तब उसकी गति एक अंतरिक्ष यान से २० गुनी होती है।

❋ पिस्सु (चारपाई में रहनेवाला कीट) अपने शरीर की लंबाई से ३५० गुना ज्यादा कूद सकता है।

पिस्सुओं को मारने के लिए एक चौड़े गहरे बर्तन को साबुन वाले पानी से आधा भरकर फर्श पर रख दें तथा उसके ऊपर कम पावर वाला बल्ब जला दें। पिस्सू बल्ब की रोशनी से आकर्षित होकर उस ओर आएंगे और बल्ब से फिसल कर नीचे रखे पानी वाले बर्तन में गिर जाएंगे। पानी में घुले साबुन की वजह से बने पृष्ठ तनाव के कारण वे बाहर नहीं आ पाएंगे और वहीं मर जाएंगे।

❊ **गीजू -** गीजू एक छोटा सा कीट है जो अपने लार्वा से पेड़ के पत्तों को नष्ट कर देता है। ये कीट बरसात से सर्दियों के बीच ज्यादा सक्रिय होते हैं।

❊ **एफिड -** अंडे, दूध, मांस, ऊन, सवारी और शौक के लिए इंसान कई पशु-पक्षियों को पालतू बनाता है। लाखों वर्षों से चींटिंया एफिड्स को पालतू बनाती आई हैं। एफिड हर तरह की कृषि भूमि में पाये जाते हैं। नाजुक शरीर और पतली लंबी टांगोंवाले एफिड पौधों द्वारा उत्सर्जित होनेवाले अपशिष्ट पदार्थों को भोजन के रूप में इस्तेमाल करते हैं। इस पदार्थ में नाइट्रोजन और कार्बोहाइड्रेट का मिश्रण होता है। कार्बोहाइड्रेट एफिड के लिए अभोज्य जबकि चींटियों के लिए फायदेमंद होता है। एफिड इस कार्बोहाइड्रेट को तरल चीनी के रूप में उगल देते हैं और चींटियां इसको खा जाती हैं। वे अपनी कालोनी में एफिड को उनके अंडे सुरक्षित रखने का स्थान उपलब्ध कराने के साथ ही शिशु एफिड के भोजन का बंदोबस्त भी करती हैं।

❊ **कॉकरोच (तिलचट्टा) -** यदि तिलचट्टों का सिर काट दिया जाए तो भी वह सात दिनों तक जीवित रह सकता है।

❊ तिलचट्टे २५०,०००,००० वर्ष पूर्व भी इसी रूप में थे जैसे आज हैं।

❊ दुनिया का सबसे पुराना कीड़ा तिलचट्टा (कॉकरोच) है। यह ३५ करोड़ साल से अस्तित्व में है।

❊ कॉकरोच छह पैर पर सबसे तेज चलनेवाला कीट है। यह एक सेकंड में एक मीटर चल सकता है।

❊ कॉकरोच के एक अंडे से १६ कॉकरोच पैदा होते हैं।

❊ चिलचिट्टा -यह धारणा काफी प्रचलित है कि कॉकरोच युद्ध के दौरान भी नहीं मरते। सिर कटने पर भी जीवित रहते हैं, वे अविनाशी होते हैं आदि। लेकिन यह सब सच नहीं है। विपरीत परिस्थितियों में भी इनके जीवित रहने के कुछ प्राकृतिक कारण हैं। कॉकरोच में फेफड़े नहीं होते और वह वातावरण से सीधे ऑक्सीजन ले लेते हैं। उनकी रेडिएशन प्रतिरोधक क्षमता भी मनुष्य से कई गुना अधिक होती है। मनुष्य जहां ८०० रेम्स (न्यूक्लियर रेडिएशन की मात्रा की एक यूनिट) सह सकता है, वहीं कॉकरोच १०,५०० रेम्स तक का रेडिएशन झेल सकता है।

विश्व युद्ध में जितने न्यूक्लियर रेडिएशन से मनुष्य मारे गए थे, उतना कॉकरोच झेल सकते हैं। यहीं से धारणा बनी कि ये युद्ध में भी नहीं मरते। इसका खून ठंडा होता है, इसलिए एक महीने तक बगैर खाए जीवित रहता है।

सिर काट दो तो भी कई दिनों तक जिंदा रह सकता है, क्योंकि इसके शरीर में अनेक छिद्र होते हैं, जिनसे वह सांस लेता है। इसका मस्तिष्क शरीर को नियंत्रित नहीं करता बल्कि पैरों की मांसपेशियां नियंत्रित करती हैं। लेकिन पानी के बगैर दो हफ्ते में मर जाएगा, क्योंकि बगैर सिर के पानी नहीं पी सकेगा। यह ४० मिनट सांस रोक सकता है, इसे डुबो दिया जाए तो ३० मिनट सांस रोके जिंदा रह सकता है। इसके शरीर में १००० ऐसे जींस होते हैं जिससे यह खुद को हर तरह के वातावरण में ढालकर जीवित रहता है। इसमें साइटोक्रोम पी४५०एस नामक जींस का एक ग्रुप होता है, जो इसे घातक रसायन से बचाकर जहर का असर खत्म करने में मदद करता है।

❋ दुनिया के सबसे बड़े कॉक्रोच दक्षिण अमेरिका में पाए जाते हैं जिनकी लंबाई छह इंच व पंखों का फैलाव एक फुट तक है।

❋ कॉकरोच को लगभग ३५०० प्रजातियों में से आम आदमी का पाला सिर्फ ३० प्रजातियों के साथ ही पड़ता है।

❋ कॉकरोच छह पैरोंवाला एक ऐसा कीट है जो एक सेकंड में एक मीटर की दूरी तय कर लेता है।

तिलचट्टा, कॉकरोच- कॉकरोचों को हमारे घरों के उष्ण नम व सुरक्षित दरारों एवं छिद्रों में रहना अच्छा लगता है। वास्तव में उन्हें अपने शरीर के ऊपरी व निचले हिस्से का किसी न किसी वस्तु से निरंतर स्पर्श में रहना पसंद है। इसीलिए इन्हें अखबारों के ढेर या खाने-पीने की वस्तुओं के खाली लिफाफे बेहद भाते हैं। कॉकरोच पानी के बिना ३० दिन तथा भोजन के बिना ६० दिन तक जीवित रह सकते हैं।

यदि आप स्वच्छता का ध्यान रखते हैं तो कॉकरोचों पर नियंत्रण रखना आसान है। आप कॉकरोचों की रोकथाम के लिए जो उपाय प्रयोग में ला सकती हैं- वे इस प्रकार हैं-

रिपलेन्ट्स (विकर्षक) - तेजपत्ता तथा खीरा-ककड़ी कॉकरोच को दूर भगाने में सहायक होते हैं। कटे व छिले हुए लहसुन कलियां भी, (करीब दो सप्ताह तक) जब तक उनमें गंध रहती है, इन्हें भगाने में काफी प्रभावशाली है।

कूट जाल- फर्श पर कोने में एक कपड़े को बीयर में डुबोकर रख दें। बीयर की गंध से आकर्षित होकर कॉकरोच इस कपड़े की ओर खिंचे आएंगे व कपड़े में इकट्ठे हो जाएंगे। सुबह इन्हें मार दें।

एक तरीका यह भी है कि थोड़ी सी बीयर एक कटोरे में रखकर किनारों पर लंबी पतली लकड़ी के सींखचे लगाए। बीयर की गंध से कॉकरोच सींखचों पर चढ़कर बीयर तक पहुंचने की कोशिश करेंगे। जैसे ही वे किनारे पहुंचेंगे अपने ही भार से बीयर में गिरकर डूब जायेंगे

भक्षक- बिच्छू, भिड़, मेंढक व छिपकली कॉकरोचों को खाते हैं। छिपकली तो कॉकरोचों से भरे घर को कुछ ही सप्ताह में साफ कर देती है।

घर का बनाया चारा -बोरिक अम्ल एक ऐसा कीटनाशक जहर है, जिसकी प्रतिरोधक क्षमता कॉकरोचों में नहीं पाई जाती। अन्य कृत्रिम कीटनाशकों की तुलना में बोरिक अम्ल कम महंगा व अधिक प्रभावशाली है।

❋ **ततैया -** ततैया की एक प्रजाति हार्नेट जापानी मधुमक्खियों का शिकार करती है। बीस-तीस हार्नेट मिलकर दो-तीन घंटे में तीस हजार मधुमक्खियों को मार डालते हैं।

❋ **कैटरपिलर (इल्ली) -** का अधिकतर समय पत्तियों को कुतरकर खाने में व्यतीत होता है। सारे दिन खाते रहनेवाले इस कीट के मुंह में एक भी दांत नहीं होता पर हां मजबूत जबड़ों का एक जोड़ा जरूर होता है।

❋ कैटरपीलर एक ऐसा कीड़ा है जिसकी बारह आंखें होती हैं, फिर भी वह दृष्टिहीन होता है।

❋ मदर ऑफ पर्ल मॉथ नाम कीड़े की इल्ली (कैटरपिलर) पहिए का आकार ले लेती है और एक सेकंड में १५ इंच तक चल सकती है।

❋ इल्ली (कैटरपिलर) के शरीर में मनुष्य की तुलना में पांच गुना अधिक मांसपेशियां होती हैं।

❋ कुछ कैटरपिलर्स जैसे ऑस्ट्रेलियन हरकुलस मोथ आदि से भी सिल्क ली जाती है, लेकिन इसकी सिल्क रेशम के

कीड़े से ली गई सिल्क जैसी लंबी, अच्छी और मजबूत नहीं होती है। रेशम का कीड़ा जब ज्यादा मोटा हो जाता है, तो वह खुद ही अपनी स्किन को गिरा देता है।

कैटरपिलर तितली के लार्वा को दिया गया नाम है। अपने जीवन के इस समय को खाने तथा विकसित होने में गुजारते हैं। अधिकतर कैटरपिलर पत्तियां खाकर निर्वाह करते हैं। उनके बहुत से शत्रु भी होते हैं जो उन्हें खाना पसंद करते हैं जैसे कि पक्षी। कुछ रात को भोजन खाकर अपना बचाव करते हैं तथा दिन के समय छद्मावरण करके आसपास के वातावरण के साथ इस तरह घुल-मिल जाते हैं कि दिखाई नहीं देते। इनमें से कुछ आमतौर पर चटख रंगों के होते हैं जो खाने में कसैले होते हैं तथा अन्य के शरीर पर मोटे डंक जैसे कांटों की परत चढ़ी होती है। लूपर कैटरपिलर्स को मापने के कीड़े या इंच वर्म्स के नाम से भी जाना जाता है।

कैटरपिलर परिवर्तन के जिस दौर से गुजरते हैं उसे रूपांतरण कहा जाता है। अधिकतर कैटरपिलर के लिए पहला चरण कोकून बनाना होता है। वे अपने इर्द-गिर्द एक चिपचिपे द्रव्य से बने धागे को लपेट लेते हैं जो उनके नीचे के होंठ के एक खुले भाग से निकलता है। यह द्रव्य हवा में कड़ा धागा बन जाता है, जिसे हम प्राकृतिक रेशम कहते हैं। सभी कैटरपिलर एक आराम की स्थिति से गुजरते हैं जब ये प्यूपा कहलाते हैं। यह चरण दो सप्ताह तक रह सकता है या फिर यह पूरी सर्दियों तक भी रह सकता है। इस समय के दौरान कैटरपिलर एक पूर्ण विकसित तितली के रूप में बदल जाता है।

✻ **किकाड़ा** छोटा कीट है पर इसकी जिंदगी १७ साल लम्बी होती है। इस लम्बी जिंदगी के अंतिम पांच सप्ताह ही यह उछल-कूद कर बिता पाता है। बाकी सारा जीवन तो जमीन के नीचे सोए-सोए ही बीत जाता है।

अन्य कीट पतंग- इस कोमल जीव के मुख में पचीसों हजार दाँत होते हैं, कहीं धीरे से भी यह काट खाए तो।

✻ जायंट ॲटलास मॉथ नामक पतंगा अपने कोष से बाहर आने के बाद केवल १२ से १५ दिन ही जीवित रहता है। इल्ली स्वरूप में होने तक वह जितना अन्न लेता है उतना ही उसे आगे के जीवन में काम आता है क्योंकि उसके पास पतंगा होने पर ऐसे कोई मुख्य अवयव नहीं होते जिनसे वह खा सके। पतंगा कुछ नहीं खा सकता, क्योंकि न ही इसका मुंह होता है, न ही पेट।

✻ लीच रक्तभक्षी प्रकार का जीव है।

✻ डिपर प्लाई नामक एक कीट की उड़ने की गति ८०० कि.मी. प्रतिघंटा है।

✻ कुछ कीड़े भोजन ना मिलने पर खुद को ही खा जाते हैं।

✻ १२ दिन की जिन्दगी- पी एपहाइ वैसे तो बहुत ही छोटा कीट है और इसका जीवनकाल भी सिर्फ १२ दिन का ही होता है लेकिन सिर्फ १२ दिनों में ये बहुत नुकसानदायक हो सकता है। इस कीट की मादा एक बार में करीब १०० कीटों को जन्म देती है और इसका पूरा परिवार एक पूरी फसल को तबाह कर सकता है।

✻ जमीन पर रेंगनेवाले कुछ कीड़े-मकोड़े ऐसे होते हैं जिन्हें अगर खाने को ना मिले तो वह धीरे-धीरे कर खुद को ही खा जाते हैं।

✻ डियर फ्लाई कीट ८०० मील प्रति घंटा की गति से सर्वाधिक तेज गति से उड़ता है।

✻ सरडयू पौधा कीड़े खाता है। जो कीड़े पौधे पर बैठते हैं वे उसके चिपचिपे बालों पर चिपक जाते हैं। बाल कीड़े को

२ कला के जीव जगत जीव जंतु

दूसरी कला के जीव दो तरह के होते है - एक रेंग रेंगकर जमीन पर चलते है जैसे- सर्प, नाग, कोबरा, नेवला, छिपकली यह सरीसृप (रेप्टाइल्स) जीव कहलाते हैं। दूसरे प्रकार के जीव - स्तनपायी (ममल्स) जीव होते है जैसे - खरगोश, बिल्ली, चूहा इत्यादि। इनकी उत्पत्ति सरीसृप जीव अंडों से पैदा होते है और स्तनपायी जीव जरायूज होते है। यह निद्रा, आहार, मैथुन इत्यादी सब प्रकार से इंद्रियों का उपभोग करते है। यह आवाज निकालते है वो इनकी अपनी भाषा होती है। इनमें विवेक नहीं होता।

जीव जंतु हमारी भाषा नहीं बोलते, मगर उनकी अक्ल को कम मत समझना। इंसान के अलावा धरती पर कुछ ऐसे जीव भी हैं, जो बुद्धिमान और चालाक होते हैं। इंसान दुनिया में सबसे ज्यादा बुद्धिमान प्राणी है, लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं कि धरती पर मौजूद अन्य जीवों के पास दिमाग बिल्कुल भी नहीं होता।

बिना बोले भी वे अपनी भावनाओं को व्यक्त कर देते हैं। एक डॉगी को जब हम आवाज देते हैं तो वह हमें प्रतिक्रिया देता है। पुलिस विभाग में भी उसका महत्व है। एक छोटी-सी चींटी कभी अपना रास्ता नहीं भूलती है। यह सभी बुद्धिमान है।

वैसे तो संसार के सभी प्राणियों में मनुष्य को सबसे ज्यादा बुद्धिमान समझा गया है लेकिन संसार में जीव-जंतुओं की भी अपनी अलग पहचान है। सभी जीव जंतु अपनी कुछ खास विशेषताओं के बलबूते पर प्रसिद्ध हो जाया करते हैं। संसार में पाए जानेवाले कुछ जीव-जंतु तो काफी रहस्यपूर्ण कारनामों से भरे होते हैं।

हमारे आसपास पाए जानेवाले जीव जंतुओं के बारे में बहुत से तथ्यों से हम अनभिज्ञ रहते हैं परन्तु यदि हम जीव जगत के बारे में अपनी जानकारी बढ़ाना चाहते हैं तो ऐसे अनजाने तथ्यों से अपने को परिचित कराना बहुत जरूरी है।

जीव-जन्तुओं के अनोखे स्मारक- आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस विचित्र संसार में कई स्थानों पर जीव-जंतुओं के स्मारक भी बने हुए हैं। ये स्मारक अपने आपमें बड़े अनोखे हैं, जैसे-

वेस्ट मोरलैंड के बीक नामक गांव में सन् १८४२ में ततैयों ने भयंकर आक्रमण कर दिया जिससे बहुत बर्बादी हुई। इस घटना की याद में वहीं एक स्मृति स्तंभ बनाया गया था। जहां आज भी प्रतिवर्ष मेला लगता है तथा हजारों पादरी वहां जाकर प्रार्थना करते हैं। मेला समाप्त हो जाने पर वहां ततैयों के सर्वनाश के लिए लोग सामूहिक अभियान चलाते हैं।

टोकियों में इम्पीरियल विश्वविद्यालय के स्वामीभक्त कुत्ते की मूर्ति भी वहां की जनता ने बनवाई।

सेंट बर्नाड ने अपने प्यारे कुत्ते की स्मृति में एक मीनार बनवाई थी। यह मीनार अमेरिका में स्थित है तथा टेंस टावर के नाम से मशहूर है। कुत्ते का नाम टेंस था। इस कुत्ते को संगमरमर के संदूक में रखकर दफनाया गया था।

१३वीं सदी में रोम की टाइवर नदी में भयंकर बाढ़ आई थी, तब एक मुर्गे ने बांग देकर सब लोगों को जगा दिया था जिससे वे लोग सुरक्षित स्थान पर पहुंच गये और वहां के लोगों की जानें बच गईं। उन लोगों ने उस मुर्गे की मृत्यु के पश्चात् उसकी स्मृति में एक पुल बनवाया, जो आज भी सुरक्षित है।

सरीसृप मुख्यत: भूमि पर रहनेवाले रेंगनेवाले जंतु होते हैं। ये सबसे प्राचीन रीढ़ की हड्डी वाले जानवर है। पहले-पहल धरती पर सरीसृपों का अस्तित्व लगभग ३० लाख वर्ष पहले माना गया है। ये उभयचर जीव थे जो पानी में भी और धरती

पर भी रह सकते थे। ये छिपकलियों जैसे दिखते थे। यही आगे जाकर सरीसृपों, पंछियों, डायनासोरों और मगरमच्छों के पूर्वज बने परंतु बाद में डायनासोरों की प्रजाति लुप्त हो गई थी।

सरीसृपों में शामिल हैं- कछुए, समुद्री कछुए, सांप, छिपकलियां, मगरमच्छ तथा घड़ियाल। इनकी वाटरप्रूफ त्वचा नमी बनाए रखने तथा गर्म और सर्व क्षेत्रों में जीवित रहने में इनकी सहायता करती है। ये अपनी त्वचा की ऊपरी परत या तो टुकड़ों में या फिर एक ही बड़े टुकड़े में उतार देते हैं। अधिकतर सरीसृप अपने अंडे भूमि पर ही देते हैं। सरीसृपों में से अधिकतर अपने आसपास के माहौल के अनुसार रंग बदल सकते हैं और इस तरह स्वयं को मृत्यु या हमले से बचा सकते हैं।

अपने आपको गर्म और क्रियाशील रखने के लिए ये बाहरी गर्मी पर निर्भर रहते हैं और अक्सर धूप सेंकते देखे जा सकते हैं, इसलिए उनमें से अधिकतर ऊष्णकटिबंधीय या उप ऊष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

सरीसृपों में लंबें, पतले और बिना अंगोंवाले कई जीव पाए जाते हैं। सरीसृपों में सांपों की लगभग २००० प्रजातियां पाई जाती हैं जिनमें कुछ तो बहुत बड़ी हैं और कुछ बहुत छोटी और पतली। इनमें रीगल पाइथोन नाम का सांप सबसे बड़ा सरीसृप है। यह २ मीटर से लेकर २० मीटर तक लंबा हो सकता है।

यह जहरीला नहीं होता और म्यांमपार, इंडो-चाइना, फिलीपींस इत्यादि में पाया जाता है। बोआ कंस्ट्रिक्टर दूसरा सबसे बड़ा सांप है जो साढ़े ५ मीटर से लेकर ११ मीटर तक लंबा हो सकता है। एनाकोंडा एक अन्य बड़ा सरीसृप है जो भारत, मलेशिया और दक्षिणी अमेरिका में पाया जाता है। यह भी जहरीला नहीं होता। इसके भोजनों में पंछी, हिरण और अन्य थलकर प्राणी शामिल होते हैं। अफ्रीकन रॉक पाइथोन भी लगभग इतनी ही लंबाई वाला एक अन्य सरीसृप है। सरीसृपों में सबसे खतरनाक किंग कोबरा होता है। यह दो से लेकर पांच मीटर तक लंबा हो सकता है। यह भारत और अफ्रीका में पाया जाता है।

जीव-जंतुओं में कुछ खास स्वाभाविक तरीके हैं, जो मौसम बदलते ही खुद-ब-खुद अपना लिए जाते हैं। अंटार्कटिका जैसी ठंडी जगहों पर सर्दी के मौसम में शून्य से भी नीचे तापमान चला जाता है। पाइप तक फट जाते हैं। पहाड़ों पर पाइप को फटने से बचाने का सबसे कारगार तरीका यह अपनाया जाता है कि इस पर या तो कंबल लपेट दिया जाये या कुछ गहरे बड़े पत्ते, ताकि पाइप उसकी गर्मी से फटने से बच सके। ठीक यही तरीका यहा के जीव-जंतु भी अपनाते हैं। वह अपने शरीर को चर्बी की मोटी परत में लपेट लेते हैं और भीतर के खून को गर्म बनाये रखते हैं। सर्दी के दिनों में जीव-जंतुओं के शरीर में बदलाव आते हैं। शरीर का तापमान गिर जाता है। शारीरिक ऊर्जा में कमी आती है। यही वजह है कि सर्दियां शुरू होने से पहले ये अतिरिक्त भोजन का भी जुगाड़ कर लेते हैं।

अ) सरीसृप (रेप्टाइल्स) रेंगनेवाले जीव जंतु

*** सांप -** विषैले सांप एडर्स - एडर्स सबसे आम पाए जानेवाले यूरोपियन वाइपरों में से एक है। यह एक अत्यंत विषैला सांप है। एडर्स सांपों के शरीर पर बड़े घुमावदार चकते बने हुए होते हैं जबकि उनके सिर के पीछे अंग्रेजी के वी अक्षर या एक्स अक्षर जैसे निशान बने होते हैं। छेड़ने पर ये सांप खतरनाक सिद्ध हो सकते हैं। मुख्यत: ये सांप छिपकलियों, छोटे-छोटे कीड़ों, चूहों तथा छछूंदरों आदि को अपना आहार बनाते हैं। इन सांपों के बारे में एक अजीब बात यह है कि ये अपनी जीभ से अपने शिकार का पता लगाते हैं। भूमि से गंध कणों को पकड़कर ये अपने शिकार तक पहुंच जाते हैं।

इनके शरीर की विष निस्सरण प्रणाली बहुत बढ़िया है। विष का निर्माण इनके मुंह में होता है तथा वहां से यह उनके खोखले दांतों में पहुंच जाता है। अपने इन्हीं दांतों को यह शिकार के शरीर में गड़ाकर उसके शरीर में विष पहुंचा देता है। मानवजाति में इसके विष से दिल डूबने लगता है तथा इससे पीड़ा, सूजन, डंसे गए स्थान का रंग बिगड़ जाने जैसे लक्षण उत्पन्न होते हैं परंतु इसका दंश बहुत कम ही जानलेवा होता है।

✻ सांप की आंखों पर पलकें नहीं होती है, सिर्फ एक पारदर्शी परत होती है।

✻ ऐनाकोन्डा विश्व का सबसे बड़ा और भारी सांप है। इसकी लम्बाई १० से १२ मीटर और वजन १२० से १४० किलोग्राम तक होता है।

✻ उड़ता सांप इसका नाम इसलिए पडा कि वो एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदता है।

✻ सबसे बड़ा सांप दक्षिण अमेरिका का एनाकोंडा है जो आठ मीटर लंबा है और उसका वजन २०० किलोग्राम होता है।

✻ नाग की प्रजाति एनाकोंडा अपनी ही जाति के सांपों को पूरा निगल लेता है। पर वह उन्हें मारता नहीं। वह किसी सांप को चारों ओर से घेर कर तब तक फुंफकारता है, जब तक उसे यह एहसास न हो जाए कि उसका दम घुटकर वह मर गया। वह रेंगते सांप को नहीं शांत हो गए सांप को निगलता है।

✻ **किंग कोबरा-** किंग कोबरा सांप दुनिया का सबसे लंबा और सबसे विषैला सांप है जो दक्षिण भारत के घने जंगलों और वर्षा वनों में रहता है। यह भारत में पाए जानेवाले ६ सबसे विषैले सांपों में से एक है। शेष पाँच इस प्रकार है नाग, करैत, डंबोइया, हरा सांप या पिट वाइपर और छोटा वाइपर।

✻ कोबरा का जहर इतना जहरीला है कि उसके जहर का १ ग्राम १५० आदमियों को मार सकता है।

✻ **अजगर -** अजगर भारत में पाए जानेवाला सबसे बड़ा और विष रहित प्रजाति का सर्प है। जो हमेशा घने जंगलों और पानी के आसपास पाया जाता है। अजगर विश्व का एक सबसे बड़ा सर्प है।

✻ एक सामान्य नर अजगर सांपों में सर्वाधिक ४० वर्ष ३ माह १४ दिन तक जीवित रहा था।

✻ सभी प्रकार के सांपों में अजगर सबसे विशाल होता है और वह हिरण जैसे बड़े जीव को भी खा जाता है। ये एक जगह पड़े रहते हैं तथा अपने शिकार को अपनी मजबूत पकड़ में लेकर रस्सी की तरह बांधकर इतनी ताकत से दबाता है कि शिकार दम तोड़ देता है और फिर यह हिरण को समूचा ही निगल जाता है।

✻ अजगर के बच्चे जन्म के समय एक इंच के होते हैं।

✻ **केंचुआ -** विश्व का सबसे बडा केंचुआ ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता है जिसकी लम्बाई १२ फीट तथा मोटाई १० इंच होती है। अपने वजन से दस गुना अधिक वजन खींच सकता है।

✻ केंचुए के चार हृदय होते हैं।

✻ **बिच्छू** का बच्चा पैदा होने के कई दिन बाद तक अपनी मां की पीठ पर सवार रहता है और उसी के मारे हुए कीटाणुओं को खाता है।

✻ बिच्छू की आठ आंखें होती हैं, परंतु दो शरीर के ऐसे भाग में होती हैं कि बिच्छू ठीक से देख नहीं पाता और इसीलिए वह धीरे-धीरे चलता है। उसका जहरीला डंक उसकी दुम पर स्थित रहता है। उसके काटने से आदमी तभी मरता है

जबकि उसका खून पहले से ही दूषित हो। कीड़े-मकोड़े बिच्छू का डंक लगने के थोड़ी देर बाद ही मर जाते हैं।

❋ **नेवला-** भारतीय भूरे रंग के नेवले मुख्य रूप से पश्चिम एशिया और भारतीय उपमहाद्वीप में पाए जाते है, यह भूरे रंग का मूँगोज सामान्यत: खुले जंगल, मैदान और खेतीवाले खेतों में पाए जाते हैं।

❋ यह धारणा कि नेवले के शरीर पर सांप के विष का प्रभाव नहीं होता, गलत है।

❋ **छिपकली -** घर की दीवार पर छिपकली बड़े आराम से चल लेती है। छिपकली की अंगुलियों में बेहद बारीक रोएं यानी नैनो हेयर होते हैं, जिनमें कई शाखाएं होती हैं। इन शाखाओं में कई स्पैचुला होते हैं, जो इन्हें दीवार से चिपकने में मदद करते हैं। किसी के भी शरीर में मॉलिक्यूलस नॉर्मल में न्यूट्रल होते हैं। अगर मॉलिक्यूल्स पॉजिटिव और निगेटिव होते हैं, जैसे छिपकली के पैर के नेगेटिव चार्ज दीवार के सकारात्मक चार्ज से मिलते हैं, तब वान डर वॉल्स फोर्स के कारण छिपकली चिकनी से चिकनी दीवार पर भी आसानी से चल पाती है, गिरती नहीं है।

छिपकली को नई पूंछ- छिपकली की पूंछ पर जब किसी प्रकार का दबाव पड़ता है तो वह टूटकर आसानी से उसके शरीर से अलग हो जाती है। यही कारण है कि जब कोई दुश्मन छिपकली को पकड़ने का प्रयास करता है, तो छिपकली अपनी पूंछ तोड़कर भाग निकलती है। वह अपनी पूंछ पिछले पैरों के ठीक बाद कहीं से भी तोड़ सकती है। पूंछ टूटने के स्थान पर उसे विशेष दर्द भी नहीं होता है। यह प्रक्रिया स्वत: अंग-विच्छेदन की प्रक्रिया कहलाती है, जिसे ऑटोटॉमी कहते हैं। शरीर से अलग होने के कुछ समय बाद तक यह पूंछ सक्रिय रहती है और फुदकती रहती हे। इससे इमलावर, जैसे बिल्ली आदि का ध्यान कुछ समय के लिए पूंछ की ओर लग जाता है और छिपकली को अपनेशत्रु से बच निकलने का मौका मिल जाता है। एक निश्चित समय के बाद छिपकली की पुरानी पूंछ के स्थान पर नई पूंछ उग जाती हैं। इसे पुररुद्धभवन कहते हैं।

❋ टेगू छिपकली - यह प्राय: दक्षिण अमेरिका में पाई जाती है। यह पक्षियों के अंडे व दूसरी छिपकलियों को अपना आहार बनाती है। अधिकतर छिपकलियों की तरह इसकी खाल भी सख्त होती है। इसकी जीभ आगे से दो हिस्सों में बंटी होती है, पैरों में पांच अंगुलियां व आंखें पलकीय, घूमनेवाली होती हैं।

❋ कोमोडो ड्रेगन छिपकली- यह सबसे विशालकाय छिपकली होती है। इसकी लंबाई ३ मीटर (१० फुट) तक होती है। ऊंचाई लगभग ३-४ फुट तक होती है। इसका प्रमुख भोजन प्राय: मरे हुए जानवरों के अवशेष व कभी-कभी हिरण, भालू, सूअर जैसे जानवर भी होते हैं। कोमोडो छिपकली, कोमोडो द्वीप और पूर्वी जावा के द्वीपों पर मिलती है।

❋ गिला मोन्स्टर छिपकली - केवल दो छिपकलियां ही जहरीली होती हैं। इनमें एक गिला मोन्स्टर व दूसरी मैक्सिको की छिपकली है। दोनों ही दक्षिणी उत्तरी अमेरिका में पाई जाती हैं। यह प्राय: सूखी जगह पर रहती हैं। यह दिनभर अपने स्थान पर छिपी रहती है व रात को खाने के लिए निकलती है। इसके खाने में चूहे, पक्षियों के अंडे व छोटे रेंगनेवाले जीव हैं।

❋ संसार की सबसे बड़ी छिपकली इंडोनेशिया में पाई जाती है। इसके मुंह में मौजूद बैक्टीरिया जहरीला होता है। इसलिए इसके काटने से मौत भी हो सकती है।

❋ थलीय सरीसृपों का एक वर्ग एमगिड नाम से जाना जाता है। इस वर्ग के प्राणियों में स्तनधारियों की तरह काटने,

फाड़ने एवं पीसनेवाले दांत पाए जाते हैं। इसी वर्ग की एक छिपकली, जिसके गले में पंखनुमा संरचना पाई जाती है, गल-पंख छिपकली के नाम से जानी जाती है। भारत के पश्चिमी थार रेगिस्तान तथा उत्तर-पूर्वी भारत के सघन वनों को छोड़कर यह छिपकली लगभग पूरे देश में पाई जाती है। राजस्थान के दक्षिणी हिस्से में यह काफी संख्या में पाई जाती है।

इस छिपकली के शरीर की बनावट गिरगिट जैसी होती है। मुख्य शरीर की लम्बाई ८ सेमी तक पहुंच जाती है। पूंछ मुख्य शरीर से ज्यादा लम्बी होबती है। पीठ पर चोकोर गहरे रंग के धब्बों की एक कतार होती है। यह एक दिनचारी छिपकली है, जो प्राय: भूमि पर निवास करती है। कभी-कभार इसे छोटी झाड़ियों पर चढ़े हुए देखा जा सकता है। इस छिपकली के पिछले पैरों में ४-४ अंगुलियां होती हैं, जिनसे इसे तुरन्त ही पहचाना जा सकता है। सामान्य परिस्थितियों में यह अन्य छिपकलियों की तरह अपने चारों पैरों पर दौड़ती है लेकिन पीछा किए जाने पर अगले पैरों को हवा में उठाकर पिछले दोनों पैरों के सहारे बहुत तेज दौड़ लगाती है। इस छिपकली के गले में खुलने एवं बंद होनेवाला एक विचित्र पंखा पाया जाता है। प्रजनन काल (गर्मियों) में नर के गल पंख का अलग हिस्सा नीला, मध्य भाग नीला-काला तथा पिछला भाग लाल रंग का हो जाता है।

मादा वर्षा की शुरुआत में ११ से १३ अण्डे भूमि में बिल बना कर देती है। अण्डे सफेद रंग के होते हैं। उदयपुर संभाग में मानसून समाप्ति पर इस छिपकली के नन्हें-नन्हें बच्चे वन-तल पर घूमते देखे जा सकते हैं। बच्चों में जन्म के समय से ही गल-पंख पैदा हो जाता है।

❊ सबसे बड़ी छिपकली वेरेनस (कोमोडॉस) है।

ब) स्तनपायी (ममल्स) जीव जंतु

चूहा- ❊ डेजर्ट माईस यानी मरुस्थलीय चूहे कभी भी पानी नहीं पीते। वे रसदार पौधों के माध्यम से पानी को खाते हैं।

❊ अमेरिका में एपीगौलस प्रजाति के चूहे - आज से लाखों वर्ष पहले उत्तरी अमेरिका में एपीगौलस प्रजाति के चूहे रहते थे। इन चूहों की नाक पर दो छोटे सींग होते थे जिनसे शायद वे अपना बिल खोदते हो।

❊ चूहा अगर ५ मंजिला इमारत से भी कूद जाए तो भी उसे चोट नहीं लगेगी।

❊ चूहा हर मिनट में २०० बार सांस लेता है।

❊ **साही -** एक चूहे की जाति का जीव है साही। यह अमेरिका व ऑस्ट्रेलिया में नहीं पाया जाता। यह कांटेदार जानवर खतरा भांपकर अपने शरीर को एक बॉल की तरह बना लेता है। इसे एक और जादू आता है। दुश्मन वार कर दे, तो अपने शरीर के कांटे उस पर फेंक सकता है।

❊ **सेह-** सेह अपने कांटों द्वारा शेर को भी मार सकने में सक्षम होती है।

❊ **खरगोश -** जानवर अजब-गजब तैरनेवाला भूरा खरगोश- आमतौर पर शांत रहनेवाला भूरा खरगोश बहुत शर्मीला होता है। प्यारा-सा दिखाई देनेवाला यह खरगोश बहुत तेज भागता है और जरूरत पड़ने पर पानी में तैरता भी है।

भूरे खरगोश को यूरोपीय खरगोश और पूर्वी जैक रैबिट भी कहा जाता है। वैसे तो यह आम खरगोशों की तरह ही होता है, लेकिन कुछ मामलों में यह दूसरी प्रजातियों से थोड़ा अनोखा होता है। इसके सिर और शरीर की लंबाई ४८ से ७५ से.मी. और पूंछ की लंबाई ७ से १३ से.मी. तक हो सकती है। शरीर का वजन २.५ से ७ किलोग्राम हो सकता है। इस

प्रजाति के खरगोश के कान बड़े-बड़े होते हैं, जो कम से कम १०२ मि.मी. तक लम्बे होते हैं। इन खरगोशों के कान भूरे रंग के होते हैं और इनके कान के अंदर का भाग सफेद रंग का होता है। इनके पीछे के पैर लम्बे होते हैं।

इस खरगोश का पूरा शरीर पीले-भूरे, धुंधले भूरे रंग के फर से ढका रहता है। सफेद-भूरे रंग का फर इसके शरीर के निचले हिस्से में मौजूद रहता है। इसका चेहरा भूरा होता है और आंखों के चारों ओर काले घेरे होते हैं। इन खरगोशों के शरीर पर पाए जानेवाले फर सर्दियों में सफेद नहीं होते हैं, बल्कि और धुंधले भूरे होते जाते हैं। खोपड़ी की नासिका हड्डी चौड़ी, भारी और छोटी होती है।

ये यूरोपीय खरगोश शाकाहारी खाना पसंद करते हैं। गर्मियों के मौसम में ये घास, जड़ी-बूटियां और फसलों को खाते हैं, जबकि सर्दियों में इन्हें अहनियां, कलियां, पेड़ों की छाल और फल पसंद आते हैं। वैसे तो यह खरगोश अकेले ही रहता है, लेकिन जब यह खाना ढूंढने निकलता है तो अपने दोस्तों को साथ लेकर जाता है। अपने दोस्तों के साथ भोजन करना इसे बहुत पसंद है। खाने को एक निश्चित जगह पर रख दिया जाता है और सब वहां से लेकर खाते हैं, लेकिन अगर खाना थोड़ा दूर रखा होता है तो सबसे ताकतवर खरगोश खाने को पहले खा लेता है। ये खरगोश यूरोप महाद्वीप, मध्य एशिया और मध्य पूर्व में पाए जाते हैं।

✻ खरगोश, लेपोरिडी परिवार का एक छोटा स्तनपायी है, जो विश्व के अनेक स्थानों में पाया जाता है। खरगोश जंगलों, घास के मैदानों, मरुस्थलों तथा पानी वाले इलाकों के समूह में रहते हैं। अंगोरा ऊन खरगोश से प्राप्त होता है। खरगोश जमीन के नीचे बिलों में रहते हैं जबकि खरहे जमीन पर घास का घोंसला बनाते हैं। खरगोश के बच्चों की जन्म के समय आंखें नहीं खुली होती हैं तथा शरीर पर बाल नहीं होते हैं, जबकि खरहे के बच्चे जन्म से ही देख सकते हैं और उनके शरीर में प्राय: बाल भी होते हैं। खरहे प्राय: खरगोश से आकार में बड़े होते हैं, उनके कान भी बड़े होते हैं तथा उनके खाल में काले निशान होते हैं। खरहे अमूमन झुंड में रहना पसन्द नहीं करते हैं।

✻ **लिंक्स-** लिंक्स ढाई फुट लंबा और डेढ़ फुट ऊँचा तथा क्रूर स्वभाव का। बहुधा अकेले रहनेवाला प्राणी है। यह खरगोश तथा अन्य छोटे छोटे पशुओं के शिकार पर जीवननिर्वाह करता है। पेड़ पर भी बड़ी सरलता से चढ़कर, उसपर के जीवों को चुपके से पकड़ लेता है। हमारे देश में लिंक्स गुजरात, कच्छ और खानदेश में निवास करते हैं।

✻ **मेंढ़क** जब सटकता है- मेंढ़क जब किसी कीड़े को सटकता है तो उसकी आंखें बंद हो जाती हैं।

✻ मेंढक प्राचीन इजिप्त का प्रतीक चिन्ह होता था। फिर रोमन्स ने भी इसे अपनाया। मेंढक कभी पानी नहीं पीता है। उसके शरीर की खाल स्याही सोखने वाले (ब्लाटिंग) पेपर की भांति होती है। वह पानी को सोखती रहती है। इस कारण से मेंढक को अपने मुंह से पानी पीने की आवश्यकता नहीं होती। भारतीय मेंढक ६ से ९ इंच लम्बा तथा ढाई से ४ इंच चौड़ा होता है। मेंढक एक ऐसा जीव है जो जल में रहकर मुंह से पानी नहीं पीता।

✻ रैको फोरस केनवर्टी मैला वारिथस मेंढक की एक प्रजाति है, जिसमें उड़नेवाले मेंढक होते हैं। ये एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ते हैं। इनका रंग हरा होता है।

✻ यदि कोई स्थिर हो तो वह मेंढक को नहीं दिखता। यदि मेंढक नहीं देख पाता तो वह उसे खाता भी नहीं है।

✻ **गिरगिट-** गिरगिट को आप आसानी से देख सकते हैं। जंगल में या घर के आसपास। दरअसल गिरगिट की चमड़ी सेल से बनी होती है। इन सेलों में रंग के तत्व होते हैं। और इन्हीं तत्वों की वजह से चमड़ी को रंग मिलता है।

गिरगिट में ये रंगीत सेल उसकी पारदर्शी चमड़ी के नीचे तीन परत में मौजूद होते हैं। बाहरी परत पीले और लाल सेलों की बनी होती है। इसके नीचे की परत में खास तरह के छेद होते हैं। इन्हीं छेदों में से नीली और सफेद रोशनी निकलती है। सबसे आखिरी परत मेलनोफोर (सेल) से बनी होती है। इसमें मेलनिन नामक काले तत्व मौजूद होते हैं। मेलनोफोर सेल में छोटी संकरी नलिकाएं होती हैं। इसे अंग्रेजी में मेलनिन कहते हैं। इसमें काले तत्व मौजूद होते हैं। ये नलिकाएं ऊपर की ओर होती हैं। इन्हीं के जरिए मेलनिन कण ऊपर आते हैं। ये वे सेल हैं, जिनकी वजह से गिरगिट चमड़ी के रंग पर नियंत्रण रखता है।

जब गिरगिट सो रहा होता है, तब मेलनिन कण निचली परत में जमा होते हैं सफेद रोशनी बीच की परत में आती रहती है और गिरगिट पीली या लाल रंग की छटा लिए रहता है। जब मेलनोफोर सेल उद्वेलित होते हैं, तब कण बीच की परत तक पहुंचते हैं और इस कारण गिरगिट नीले और पीले रंग के मिश्रण से हरा दिखाई देता है या नीले और लाल रंग का मिश्रण दिखाई देता है। जब गिरगिट गुस्से में होता है। तो ये काले कण नलिकाओं के जरिए पूरी तरह उभर आते हैं और इसी वजह से गिरगिट गहरा भूरा दिखाई देता है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार उसकी चमड़ी बदलने का रंग आसपास के वातावरण के तापमान पर निर्भर करता है। अधिक गर्मी में हमारे चेहरे का भी रंग बदल जाता है। उस समय यह भी कालापन लिए होता है। ऐसे ही हो सकता है कि गिरगिट दुश्मन से बचने के लिए अपना रंग बदलता हो। इस बारे में अभी तक स्पष्ट रूप से कुछ पता नहीं लग पाया है। कुछ अनुसंधानों के मुताबिक गिरगिट दुश्मन से बचने के लिए अपनी त्वचा का रंग बदलता है।

गिरगिट अक्सर घनी झाड़ियों, ईंट, पत्थरों, मिट्टी, खेतों आदि के बीच देखा होगा।

त्वचा का रंग बदलने से गिरगिट को कई लाभ होते हैं, या यह कह सकते हैं कि रंग बदलने से यह सांप या दूसरे पशु-पक्षियों को दिखाई नहीं देता और शत्रुओं से भी अपना बचाव कर लेता है। दरअसल रंग बदलने की यह प्रक्रिया उसके शरीर के ऊपरी पारदर्शी परत में मौजूद पिग्मेंट के कारण होती है। रंग का वातावरण से कोई संबंध नहीं होता। वातावरण में गर्मी बढ़ने के साथ ही गिरगिट का रंग बदलकर लाल होने लगता है। रात होने और ठंडक के समय उसका रंग हल्का पीला हो जाता है। यही नहीं जब उसे लगता है कि उसको खतरा होता है तो उसका रंग पीला पड़ जाता है। लड़ाई में हार या जीत तथा दूसरे गिरगिट से संपर्क के दौरान वह अमूमन काले रंग का दिखता है। गिरगिट के शरीर में पाए जानेवाले दानेदार पिग्मेंट्स ही सिकुड़ कर काले व फैलकर पीले व लाल रंग का निर्माण करते हैं। पिग्मेंट्स कोशिकाओं को संदेश भेजता है। गुस्से के कारण इसका रंग काला हो जाता है। उत्तेजना और भय से त्वचा पर पीले धब्बे दिखाई देने लगते हैं। सूर्य के प्रकाश से भी इसका रंग बदलता है। सूर्य की गरम रोशनी में इसकी कोशिकाओं का रंग काला हो जाता है, लेकिन अंधेरे में गर्मी के कारण इसका रंग हरा हो जाता है। कम तापमान और अंधेरे में इसकी त्वचा का रंग हल्का पीला हो जाता है। गिरगिट की जीभ उसके शरीर से दुगनी लंबी होती है।

पल में रंग बदलता गिरगिट- छिपकली से कुछ बड़ा जीव गिरगिट जीव रंग बदलने के लिए जाना जाता है। रंग बदलने की इस आदत पर एक कहावत भी है- गिरगिट की तरह रंग बदलना। वह हरी-हरी पत्तियों के बीच हरे रंग का हो जाता है तो गमले के पास आकर उसी रंग का हो जाता है। गिरगिट की ऊपरी त्वचा पारदर्शी होती है, जिसके नीचे क्रोमाटोफोरस कोशिकाएं होती है। इन कोशिकाओं की ऊपरी परत में पीले, लाल रंग होते हैं। निचली परत में रंगहीन तत्व होता है, जो

नीली रोशनी प्रतिबिंबित करता है।

गिरगिट अपना रंग दुश्मनों से बचाव के लिए बदलता है, ताकि उसके दुश्मनों को भ्रम हो जाए और वह छुप जाए। जब गिरगिट सो रहा होता है, तब मेलनिन कण निचली परत में जमा होते हैं। जब गिरगिट गुस्से में होता है तो ये काले कण नलिकाओं के जरिए पूरी तरह उभर आते हैं और इसी वजह से गिरगिट गहरा भूरा दिखाई देता है। वैज्ञानिक के अनुसार इसकी चमड़ी का रंग आसपास के वातावरण के तापमान पर निर्भर करता है। अधिक गर्मी में हमारे चेहरे का भी रंग बदल जाता है। उस समय वह भी कालापन लिए होता है।

गिरगिट अपना रंग यह देखकर बदलता है कि उसे जंतु से छिपना है। यह गिरगिट दक्षिण अफ्रीका में पाया गया है। यह एक मिली सेकंड की अवधि में अपना रंग बदल सकता है। इस गिरगिट के दो शिकारी हैं। पहला फिस्कल श्राइक नामक पक्षी और दूसरा है जहरीला सांप बूमस्लैंग।

गिरगिटों के रंग व त्वचा के चमकीलेपन को रिकॉर्ड कर लिया गया। जब गिरगिटों ने शिकारी के पुतले को देख लिया तो फिर से यही प्रक्रिया दोहराई गई। जब गिरगिट ने चिड़िया को देखकर रंग बदला था तो उसका रंग पृष्ठभूमि से कहीं ज्यादा मेल खाता था, जबकि जब उसने सांप देखा था तो ऐसा नहीं हुआ था। इसी के साथ दोनों शिकारियों की दृष्टि क्षमता पर भी गौर किया गया। जब दोनों शिकारियों के दृष्टि तंत्र के आधार पर देखा तो पाया कि सांप की नजर से देखें तो गिरगिट बेहतर छिपा दिखता है, जबकि वास्तव में गिरगिट ने अपना रंग पृष्ठभूमि के एकदम समान करने का प्रयास नहीं किया। इसका मतलब है कि गिरगिट जानता है कि रंग देखने की क्षमता उतनी पैनी नहीं है, इसलिए सांप के सामने पड़ने पर वह रंग बदलने की उतनी कोशिश भी नहीं करता।

गिरगिट की चमड़ी एक प्रकार के सेल से बनी होती है। इन सेलों में रंग के तत्व होते हैं और इन्हीं तत्वों की वजह से चमड़ी को रंग मिलता है। गिरगिट में ये रंगीन कोशिकाएं उसकी पारदर्शी चमड़ी के नीचे तीन परत में मौजूद होते हैं। बाहरी परत पीले और लाल सेलों की बनी होती है। इसके नीचे की परत में खास तरह के छेद होते हैं। इन्हीं छेदों में से नीली और सफेद रोशनी निकलती है। सबसे आखिरी परत मेलनोफोर (सेल) से बनी होती है। इससे मेलनिन नामक काले तत्व मौजूद होते हैं। मेलनोफोर सेल में छोटी संकरी नलिकाएं होती हैं। इसमें काले तत्व मौजूद होते हैं।

❋ गिरगिट अपनी जीभ से शिकार के लिए प्रसिद्ध है। उसकी जीभ फैलाने पर गिरगिट की अपनी लंबाई से दोगुनी हो सकती है।

❋ गिरगिट गुस्से में हो तब भी रंग बदलता है। ऐसे में उसका रंग काला हो जाता है।

❋ **विशाल गिलहरी-** विशाल भारतीय गिलहरी भारत में पाई जानेवाली एक बड़ी वृक्ष गिलहरी है जो सिर्फ भारत के नम सदाबहार, पर्णपाती, मिश्रित पर्णपाती और प्रायद्वीपीय वनों में रहती है।

❋ गिलहरी का निवास- गिलहरी पेड़ों पर काफी ऊंचाई पर घोसले बनाकर निवास करती है। इसके सबसे ज्यादा मिलने का समय सुबह-सुबह और शाम के कुछ घंटें हैं। गिलहरी बहुतयात पेड़ों में रहनेवाली और दिन-रात दोनों समय में विचरण करनेवाली सर्वाहारी प्रजाति की है।

❋ गिलहरी- गिलहरी एक छोटी आकृति की जानवर है जो एशिया, यूरोप और उत्तरी अमतेरिका में बहुत अधिकता में

पायी जाती है। गिलहरी के कान लंबे और नुकीले होते हैं और दुम घने और मुलायम रोयों से ढकी होती है। गिलहरी बहुत चंचल होती है और बड़ी सरलता से पाली जा सकती है। गिलहरी अपने पिछले पैरों के सहारे बैठकर अगले पैरों से हाथों की तरह काम ले सकती है। पेड़ों और झाड़ियों से दूर गिलहरियां शायद ही कभी देखी जाती हों। वृक्षों की छालों, कोमल प्रांकुरों, कलिकाओं तथा फलों का ये आहार करती हैं। फल में भी इन्हें अनार सबसे अधिक प्रिय है। सेमल के फूलों का रस पीकर उनके परागण में ये बड़ी सहायक बनती हैं।

❊ हमारा परिवेश- पेड़ों पर रहनेवाली गिलहरी - वृक्षों और जमीन पर रहनेवाली गिलहरियों की कुछ प्रजातियां उड़ भी सकती हैं। पांच से छह साल तक जिंदा रहनेवाली गिलहरियां फल, बीज और अनाज के दाने बड़े चाव से खाती हैं। इनकी कुछ प्रजातियां छोटे चूहे छछूंदर, चिड़ियां और छोटे सांप भी खा जाती हैं। भारत की कैलोसाइयूरस और डेम्नोमिस प्रजाति की गिलहरियां हिमालय के आसपास पाए जानेवाले जंगलों में रहती हैं। जन्म के समय गिलहरी के बच्चे बिना रोएं और दांत के होते हैं। ६ से १० सप्ताह तक मादा गिलहरी इनकी देखभाल करती है।

❊ **सहस्त्रपाद-** कुछ जीव-जंतुओं को देखते ही हमारे मस्तिष्क में करुणा और अपनत्व के विचार पैदा होते हैं और हम उन्हें पालने का प्रयास करने लगते हैं, किंतु कुछ ऐसे प्राणी भी होते हैं, जिन्हें देखते ही मन में घृणा और भय की स्थिति निर्मित होने लगती है।

सहस्त्रपाद भी एक ऐसा, नन्हा सा प्राणी है जिसे देखते ही मन में भय पैदा होने लगता है और इसके विषय में बगैर कुछ जाने समझे इसे मारने का प्रयास करने लगते हैं। किंतु वस्तु स्थिति कुछ और ही है, क्योंकि इस प्राणी में ऐसा कुछ नहीं जिससे इस प्राणी इसे देखते ही खत्म कर दिया जाए।

सहस्त्रपाद अर्थात जिसके कई पैर हों। संधिपाद प्राणी समूह का यह सदस्य अपने शरीर में अनेक पैरों को लिए होता है। विश्व में लगभग ८००० से अधिक इसकी प्रजातियां पाई जाती हैं। इसके साथियों में मकड़ी, कानखजूरा आदि भी शामिल हैं। भारत में पाए जानेवाले सहस्त्रपाद को स्पायरोबाउल्स कहते हैं। अधिकांश सहस्त्रपाद भूमि पर निवास करनेवाले होते हैं। इनकी कुछ जातियां समुद्री क्षेत्र में भी निवास करनेवाली होती हैं। सामान्यत: ये सूर्य के प्रकाश से स्वयं को छुपाए रखते हैं और अंधेरे में विचरण करना अधिक पसंद करते हैं। पत्तियों, पत्थरों, ईंटो, गिरी हुई टहनियों, सड़ी हुई लकड़ियों आदि में ये अपना गृहस्थान तलाशते हैं। कुछ सहस्त्रपाद अन्य जंतुओं के घरों में भी बसेरा करते हैं। जैसे केंचुए के घर में इनका भी घर हो सकता है।

इनका बाह्य शरीर अनेक खंडों में विभक्त होता है। ये खंड आपस में एक-दूसरे से मजबूती से जुड़े होते हैं खंडों की संख्या सहस्त्रपाद की प्रजाति पर निर्भर होती है। यह संख्या ८ से २४० तक हो सकती है। इन्हीं खंडों की सहायता से इसे तंग रास्तों व मादों में प्रवेश करने में सफलता मिलती है। प्रत्येक खंड के मध्य में एक जोड़ पैर होते हैं। केवल प्रथम और अंतिम हिस्से में इसका अभाव होता है। प्रथम खंड में शीर्ष के ऊपर उठे हुए दो रोम होते हैं, जिन्हें एन्टिना कहा जाता है। कुछ सहस्त्रपादों में आँखें या आँखों के चिन्ह पा जाते हैं, किंतु अधिकांशत: ये अंधे ही होते हैं।

सहस्त्रपाद शाकाहारी होते हैं और इन्हें सड़े-गले पदार्थ खाना अधिक पसंद है। ऐसा नहीं है कि सभी सहस्त्रपाद शाकाहारी होते हैं। इनमें कुछ माँसाहारी भी पाए जाते हैं। कुछ सहस्त्रपाद अपने शरीर में से दुर्गन्धयुक्त, तरल पदार्थ भी विसर्जित करते हैं, जो इन्हें क्षति पहुंचानेवाले कीटों के लिए काफी हानिकारक होता है, किंतु मनुष्य पर इसका कुछ असर

नहीं होता है। सहस्त्रपाद विषहीन होता है।

ये अपने घर उथली भूमि पर बनाते हैं। जहाँ मादा ४० से ८० तक अंडे देती है। अंडों से बच्चे तैयार होने में कुछ सप्ताह का समय लग जाता है। बच्चों का शरीर प्रारंभ में कुछ खंडों में विभक्त होता है, किंतु युवावस्था को प्राप्त करते-करते इनकी संख्या में काफी वृद्धि हो जाती है।

❊ **छछूंदर** को तो खुदाई करने के लिए जरूर कोई पुरस्कार या मेडल मिलना चाहिए। एक अकेली छछूंदर पूरी रात में दो सौ पच्चीस फीट सुरंग खोद सकती है। यदि प्राणियों को गिनीज बुक में नाम दर्ज कराने की सहूलियत मिले तो छछूंदर का नाम सबसे पहले दर्ज होगा।

❊ चूहे की तरह का एक प्राणी छुछुंदर एक रात में सौ गज लंबी सुरंग खोद लेता है।

❊ छुछंदर का दिल, सिर में होता है।

❊ **गौफर-** गौफर एक ऐसा विचित्र जीव है, जो जितनी तेजी से आगे की दिशा में दौड़ता है, उतनी ही तेजी से पीछे की दिशा में भी दौड़ सकता है।

❊ **मियरकैट -** मियरकैट की सबसे रोचक बात यह है कि वे कहीं भी किसी भी काम को एक साथ कंधे से कंधा मिलाकर करते हैं, इसलिए वे समूह में रहते हैं।

शरीर से बिल्ली की झलक। शक्ल देखो तो बिल्कुल नेवले जैसी। लेकिन ये न तो नेवला है, न ही बिल्ली। यह है अफ्रीकन जानवर मियरकैट।

अफ्रीका के कालाहारी मरुस्थल में पाया जानेवाला जानवर है मियरकैट, जो नेवले की प्रजाति का ही होता है, लेकिन इसकी हरकतें काफी अलग हैं। इस जानवर की खास बात यह है कि इंसानों की तरह ही यह अपने लोगों की आवाज की पहचान कर लेता है। इनकी प्रधान एक मादा मियरकैट होती है, जो सभी का नेतृत्व करती है। खड़े होने के लिए ये अपनी पूंछ का सहारा लेता है। ये अपना पेट भरने के लिए दल में रहकर शिकार करते हैं, क्योंकि ये अपने शिकार को दल के साथ घेरकर ही उसे डराते हैं, फिर उस पर वार करते हैं। मियरकैट खुदाई करने में काफी तेज होते हैं। ये अधिकतर रेतीली जगहों पर गुफा बनाकर उनमें रहते हैं, जिसकी गहराई ५ मीटर तक होती है। इनकी आंखें काफी पैनी होती हैं, जो ३०० मीटर की दूरी से ही अपने शिकार या किसी खतरे को भांपने के लिए काफी होती है। खतरे को भांपते ही ये अपने लोगों को छह अलग-अलग आवाजों से उन्हें सचेत करने में सक्षम होते हैं। जहां तक बात इनके जीवनकाल की है तो इनका जीवन ७ सें १४ साल का होता है। वयस्क मियरकैट की बात करें, तो जब ये खड़े होते हैं तो इनकी लंबाई २५ से ३५ सेंटीमीटर तक हो जाती है।

मियरकैट की सबसे रोचक बात यह है कि ये कहीं भी किसी भी काम को एक साथ कंधे से कंधा मिलाकर करते हैं। इनके आपसी जुड़वस को देखकर आश्चर्य होगा। इनके इस समूह को टोली या गिरोह भी कहते हैं। इस समूह का एक मार्गदर्शक होता है, जो पूरे समूह का नेतृत्व करता है। मार्गदर्शक ही शिकार का चुनाव करता है। ये नियमित तौर पर साथ चलने वाले सहयोगियों पर भरोसा करते हैं और जब शिकार करना रहता है।

मियरकैट अधिकतर समूह में ही खाने की तलाश करते हैं। जरूरी नहीं कि मियरकैट के बच्चे माता-पिता को शिकार पर जाना होता है, तो वे बच्चों को अपने समूह में से कुछ मादा और नर को उनकी देख-रेख के लिए छोड़कर आते हैं।

(क) जलजीव जगत

❋ समुद्र अभी भी सीने में कई राज छुपाए है। तथ्य यह है कि हम सुदूर अंतरिक्ष के बारे में जितना जानते हैं हमें उससे कहीं कम जानकारी गहरे समुद्र के बारे में है।

❋ समुद्र की गहराई तक बहुत ही कम रोशनी जा सकती है इसलिए समुद्र की गहराई में रहनेवाली मछलियों की आंखें बड़ी होती हैं ताकि समुद्र में पहुंचनेवाली कम रोशनी को उनकी आंखें ग्रहण कर सकें। इस प्रकार वे वहां उपलब्ध कम रोशनी का भी उपयुक्त इस्तेमाल कर सकती है। समुद्र में ६०० प्रकार के ऐसे प्राणी हैं जो खुद के शरीर से बाहर प्रकाश उत्सर्जित करते है। समुद्र तल पर अंधेरे में दीप की तरह जगमगानेवाली मछलियों की १५०० से ज्यादा प्रजातियां अस्तित्व में हैं।

❋ जल में रहनेवाला सबसे जहरीला साँप हाइड्रोफिस बेचलरी ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता है।

❋ अमेरिका के फ्लोरिडा में स्थित एवरग्लेड्स नेशनल पार्क विश्व का एकमात्र ऐसा स्थान है जहां घड़ियाल तथा मगरमच्छ एक साथ रहते हैं।

❋ जुगनू के अलावा भी हैं शरीर से प्रकाश पैदा करनेवाले जीव - जुगनू अपने शरीर से प्रकाश पैदा करता है, जुगनू के अलावा भी कई ऐसे जीव है जो अपने शरीर से प्रकाश पैदा करते हैं। साइप्रिडीना समुद्र में रहनेवाला एक ऐसा सूक्ष्म जीव है जो अपने शरीर से नीला प्रकाश पैदा करता है। झींगा मछली के वर्ग के इस जीव को यदि करोड़ों की संख्या में एकत्रित करके, सुखाकर पाउडर बना लिया जाये और सूखे पाउडर पर यदि एक बूंद पानी रखा जाए तो उससे अंधेरे में पढ़ने-लिखने लायक प्रकाश पैदा होने लगता है। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जापानी सैनिक अधिकारी साईप्रिडीना का पाउडर अपने पास रखते थे और गहन अंधकार में मानचित्र पढ़ते थे तथा गुप्त संदेश लिखकर भेजते थे। एकोला केंचुए वर्ग का अपने शरीर से प्रकाश छोड़नेवाला दूसरा समुद्री जीव है। जब कोई शत्रु इसे दो हिस्सों में काट देता है तो इसका पिछला हिस्सा जोर से चमकने लगता है। इससे शत्रु इस ओर उलझ जाता है तो इस अवसर का फायदा उठाते हुए अगला हिस्सा अंधेरे में लुप्त हो जाता है। बाद में इसी अगले हिस्से से पुन: पिछले हिस्से की उत्पत्ति हो जाती है। इसी प्रजाति का जीव ऑडोटोसिलिस अपने शरीर से तब प्रकाश फेंकता है, जब उसे अपने प्रेम-पात्र से मिलना होता है। पूर्णिमा के बाद मादा ऑडोटोसिलिस वृत्त के रूप में हरा प्रकाश छोड़ती है जिसे पहचान कर नर ऑडोटोसिलिस की शरीर से छूटा हुआ यह झींगा मछली के वर्ग का ही जीव श्रिप तब प्रकाश छोड़ता है जब शत्रु उसे अपने दबड़े में दबाने वाला होता है। अपने मुंह के पास स्थित एक खास ग्रंथि से यह एकाएक तेज प्रकाश छोड़कर शत्रु को घबरा देता है और मौके का फायदा उठाकर भाग जाता है।

❋ समुंदर में लगभग एक किलोमीटर की गहराई में ऐसे विचित्र जीव मौजूद होते हैं, जिनके शरीर से प्रकाश पैदा होता है। इनमें से एक एंगलर मछली भी होती है। इस मछली के मुख के साथ कुछ विशेष तंतु जुड़े रहते हैं, जिनके सिरों पर प्रकाश निकालनेवाले वाल्व होते हैं। इनको देखकर लगता है कि ये मछलियां बिजली का लैम्प लिए हों और शिकार की खोज कर रही हों, जो एंगलर मछली समुद्र में अधिक नीचे होती है, वहां अंधेरा होता है।

प्रकाश देखकर छोटी-छोटी मछलियां इसके पास आकर स्वयं एंगलर मछली का शिकार बन जाती हैं। एंगलर मछली

के पानी में तैरने की रफ्तार काफी तेज होती है और मुंह भी काफी बड़ा होता है। एंगलर मछलियों में गूजफिश सबसे बड़ी होती है, जिसकी लम्बाई सवा मीटर, वजन पचास किलो और आठ सौ ग्राम होता है।

* अंटार्कटिका और न्यूजीलैंड मे मिलनेवाली समुद्री जीवों की प्रजातियों में आधी संख्या ऐसी प्रजातियों की है जो दुनिया में और कहीं नहीं मिलती।

* लंबा सफर करने के मामले में व्हेलें काफी आगे हैं। पहले माना जाता था कि ग्रे व्हेल सबसे दूर तक जाती है। मगर २००७ में हम्पबैक व्हेल ने ये खिताब छीन लिया। इनका पीछा करने से पता चला कि कुछ हम्पबैक व्हेलें अंटार्कटिका से कोस्टारिका तक आती हैं। ये दूरी ५१६० मील या ८२९९ किलोमीटर है। मगर ग्रेट व्हाइट शार्क तो इनसे भी आगे हैं। निकोल नाम की एक शार्क दक्षिण अफ्रीका से ऑस्ट्रेलिया तक गई थी। ये दूरी ११ हजार किलोमीटर है। नौ महीनों के भीतर निकोल ने ये सफर दोबारा तय किया था, घर वापसी के लिए। अमेरिकी वैज्ञानिकों ने एक मादा लेदरबैक कछुए का पीछा किया था। इसने प्रशांत महासागर में इंडोनेशिया से अमरीका तक का सफर किया था, जो २० हजार पांच सौ किलोमीटर है।

* समुद्री जीवों के लिहाज से ऑस्ट्रेलिया, जापान और चीन के समुद्रों में सबसे ज्यादा विविधता पाई जाती है।

* मछलियां पानी में सूंघती भी हैं। हम हवा में सांस लेते हुए चीजों को सूंघते हैं। मछलियां भी चीजों को सूंघ लेती हैं।

आमतौर पर मछली के शरीर में दो जोड़े नथुने होते हैं। इन नथुनों में आगे-पीछे दो छेद होते हैं जिन्हें एक छोटी-सी झिल्ली अलग करती है। वैसे भिन्न प्रजाति की मछलियों में इन नथुनों कि स्थिति और बनावट भी भिन्न हो सकती है। मछलियों के ये नथुने ही सूंघने में मदद करते हैं। पानी का बहाव एक छेद से होता हुआ दूसरे छेद से निकलता है। इस बीच नथुनों के अंदर स्थित संवेदनशील कोशिकाएं सजग हो जाती हैं और पानी के छूने से मिली सारी सूचनाएं मस्तिष्क को भेज देती हैं। मस्तिष्क उसका विश्लेषण कर गंध की पहचान कर लेता है। इस तरह मछली पानी के अंदर रहते हुए ही चीजों को सूंघकर उसके बारे में पता लगा लेती हैं। हमारी और मछलियों की इस नाक के बीच एक मुख्य अंतर यह होता है कि हम अपनी नाक से सूंघने के अलावा सांस लेने का भी काम करते हैं, लेकिन मछलियां इसका इस्तेमाल केवल सूंघने के लिए ही कर पाती हैं।

असल में मछलियों की सूंघने की यह क्षमता उनके लिए बहुत उपयोगी होती है। इससे उन्हें भोजन की तलाश में बहुत मदद मिलती है। इसके अलावा, अलग-अलग तरह के वातावरण के पानी की गंध भी अलग-अलग होती है। इससे मछलियों को रास्ता पहचानने में भी सहायता मिलती है। अपने इस गुण के कारण मछल्लियां खतरों को भी भांपकर सावधान हो जाती हैं। कई मछलियों में तो सूंघने की क्षमता इतनी तेज होती है कि वह दूर-दूर तक की चीजों, वातावरण, जीव-जंतुओं, रक्त-मांस आदि के बारे में पता लगा लेती हैं। मछलियों की खतरा सूंघने की क्षमता खत्म हो रही है, क्योंकि समुद्र ज्यादा अम्लीय होते जा रहे हैं। समुद्री जीवविज्ञानियों ने अपने शोध में पता लगाया है कि समुद्र के ज्यादा अम्लीय होने से मछलियों की सूंघने की क्षमता पर बुरा असर पड़ता है। अम्लीकरण तब होता है जब कार्बन डाईऑक्साइड समुद्र मे पानी में घुलती है। वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा बढ़ने के हिसाब से समुद्र में भी उसकी मात्रा घुल जाती है।

छोटे जीवों को बड़े जीव एवं बड़े जीवों को उनसे भी बड़े जीव खा जाते हैं। साधारणतया यह देखा गया है कि प्रत्येक

जीव के पास अपने आपको बचाने के लिए जन्मजात साधन होते हैं। जैसे कि केट मछली के पंख में जहर होता है या कुछ मछलियों की त्वचा पर कांटे होते हैं, जिनसे वह अपनी रक्षा कर पाती हैं। परन्तु सरडाइन और मिनो नाम की नन्ही मछलियों के पास दुश्मन से बचने के लिए कोई साधन नहीं होता। यह काफी समझदार होती हैं ये। हमेशा एक समूह में तैरती हैं, जिससे कोई भी दुश्मन उन पर आक्रमण करने का साहस नहीं करता। अगर कोई उन पर धावा बोल भी देता है, तो कुछ भले ही पकड़ में आ जाएं पर बाकी की मछलियां तुरंत अलग-अलग दिशाओं में बिखर कर स्वयं को बचा लेती हैं।

* मछलियां चूंकि पानी में रहती हैं, इसलिए उनकी आंखों में नमी बनी रहती है और सबसे खास बात यह कि उनकी आंखों में आईलिड्स भी नहीं होती।

विश्व में मछली पकड़ने के खेल को सबसे ज्यादा खेला जाता है। किसी भी मछली के शरीर की परत पर पड़ी गोल धारियों को गिन कर ठीक उसी प्रकार उसकी आयु बताई जा सकती है, जिस प्रकार पेड़ के तने पर पड़ी गोल धारियों को देखकर पेड़ की उम्र बताई जा सकती है। मछलियों की कुछ प्रजातियों में आवाज होती है।

पानी की धारा में रहने-बहनेवाली मछली किनारे पर मछुओं के चलने की आहट ले लेती है। वैज्ञानिकों ने इंडोनेशिया में केवल ७.९ मिलीमीटर (०.३१ इंच लंबी) मछली देखी है।

मछलियां कई प्रकार की होती हैं। दुनिया में ९०० प्रकार की मछलियां होती हैं। लिमिया बिट्टा नामक मछली अंडों की बजाय बच्चे देती है। इसने एक बार शिकागो के शेड नामक मछली गृह में एक बार में २४२ बच्चों को जन्म दिया था। साफिश (आरीदार मछली) एक ऐसी विचित्र मछली है जिसके मुंह के आगे आरी जैसी दांतोंवाली तलवार सरीखी लंबी नाक रहती है। साधारणत: यह ८-१० फीट लंबी होती है। यह फ्लोरिडा प्रदेश के आस-पास पायी जाती है। शार्क मछली सबसे खतरनाक होती है। जाइर्जेटेक्स नामक मछली टार्च जैसी रोशनी लेकर चलती है। झींगा मछली के खून का रंग काला होता है। सरनाई नामक विचित्र मछली अमेरिका के समुद्र में पायी जाती है जो उड़ती भी है। यह कभी थल में तो कभी पानी में अपना जीवन यापन करती है। सोलोमन जाति की मछली सीढ़ियों पर भी चल सकती है। हार्नशार्क मछली अनोखी तरह के अंडे देती है जिसे दूसरी मछली खा नहीं सकती।

अमेजन नदी में एक ऐसी मछली पाई जाती है जो सिर्फ एक मिनट में छोटी-छोटी १२५० मछलियां खा सकती है।

* स्टोन फिश बहुत जहरीली मछली होती है, जिसके छूने से मृत्यु तक हो सकती है। कटालू फिश मछली जो सिर्फ ब्रिटेन के आस-पास समुद्र में मिलती है, इसके तीन दिल होते हैं। सबसे तेज रफ्तार की मछली सेल फिश (९० कि.मी.) होती है। तीन इंच की गम्बुशिया मछली जो अक्सर भारत में पायी जाती हैं मलेरिया के मच्छरों का नाश करती है। चाऊपिन नामक एक विचित्र मछली अमेरिका में पायी जाती है, जो साढ़े तीन इंच की होती है। विचित्र बात यह भी है कि वह तैरते समय बिल्कुल घंटी जैसी आवाज करती है। हेल शार्क सबसे बड़ी मछली है जो अटलांटिक, प्रशांत और हिंद महासागर के गर्म क्षेत्रों में पायी जाती है।

* मछली की त्वचा का लिसलिसापन उसे छोटी-मोटी चोटों व घाव को ठीक करने के काम आता है।

* अब तक लगभग २०,००० प्रकार की मछलियां ज्ञात हैं ?

* मछली तथा सर्प की अनेक जातियां सोते समय भी आंखें बंद नहीं करतीं।

समुद्र की तलहटी में रहने वाली मछली मल्पसकर्स के जबड़े में एक सक्शन कप लगा होता है जिसके सहारे ये सागर

की तली में चट्टानों से चिपक जाती है।

अप्रैल २००५ में एक बेलूगा ह्वेल स्पॉनिंग मछलियों का पीछा करते हुए समुद्र से ८० मील दूर तक छेलवेपर नदी में घुस आई। कोलंबिया के एरिक बुनेल ने फिश टैंक की मछलियों को रिमोट कंट्रोल मशीन के जरिए खाद्यान्न देने का रिकॉर्ड ९ वर्ष की उम्र में बनाया।

* मछलियां व सरीसृप आवर्ति रूप से पुराने दांत त्यागकर नए दांत धारण करते हैं।

* मछली की जीभ नहीं होती।

* बिजली सर्पमीन (सांप जैसी मछली) और बिजली मछलियों में एक घोड़े को मारने जितनी बिजली होती है शार्क इकलौती ऐसी मछली है जिनकी पलकें होती हैं। कुछ मछलियों के जबड़े में दांतों की कमी होती है। पर चीज को टुकड़ों में करने के लिए उनके गले में चक्की जैसे दांत होते हैं जो कि खाई गई चीज को घिस कर छोटे टुकड़ों में बांट देते हैं। ऐसे दांतों को गिल्टी दांत कहते हैं। ज्यादातर मछलियों के पूरे शरीर पर स्वाद तंत्रिकाएँ होती हैं जो कि उन्हें स्वाद का अनुभव कराती हैं। एक अनुमान के अनुसार इंग्लैंड की एक तिहाई नर मछलियों का लिंग गंदे पानी के प्रदुषण के कारण बदल रहा है। सेलफिश सबसे तेज मछली है जो कि १०० किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से तैर सकती है। सोलेमन मछलियां पानी के बहाव की विपरीत दिशा में भी आसानी से तैर सकती हैं। इसके अलावा यह नदियों और ठंडे समुद्रों में भी आसानी से रह सकती हैं। समुद्री घोड़ा मछली अपनी दोनों आँखों को अलग-अलग घुमा सकती है। वह एक ही समय में एक आंख से दाईं ओर और दूसरी से बाईं और देख सकती हैं। इसके अलावा यह आसपास के वातावरण के अनुसार अपना रंग भी बदल सकती है। ज्यादातर समुद्री घोड़ा मछलियां जोड़े (नर और मादा) के रूप में इकट्ठी रहती हैं। मादा समुद्री घोड़ा अपने अंडे नर के पेट के अंदर बनी एक थैली में देती है। जब अंडों से बच्चे निकलने वाले होते हैं तो नर अपनी पूंछ की सहायता से उन्हें समुद्री काई के ऊपर रख देते हैं। कुछ चक्रवात पानी के ऊपर तैर रही मछलियों को उड़ाने जाते है और जमीन पर वर्षा के साथ फेक देते हैं। ऐसा हजारों सालों से होता आ रहा है। रोमल लेखक पलिनी पहली सदी में एक ऐसी ही घटना का एक लेख में वर्णन करते हैं। लैमप्रीस और हैग मछलियां करोड़ो सालों से अब तक जीवित है। यह अब तक भी पूरी तरह से विकसित नहीं हुई है। नर ऐंगलमछली आकार में मादा से बहुत छोटी होती है। मादाओं की लम्बाई जहां २४ इंच तक बढ़ जाती है तो दूसरी तरफ नरों की केवल १.६ इंच ही होती है। नर, मादाओं के ऊपर परजीवी की तरह निर्भर है। जिन मछलियों के पंख पतले और पूंछ कटी-फटी हो तो वह बहुत तेज गति से बड़ी से बड़ी दूरी को भी कम समय में तय कर सकती है। एक उड़नेवाली मछली ज्यादा से ज्यादा ६ मीटर समुंदर से ऊंची होकर ५० से २०० मीटर दूरी तक उड़ सकती है। शाही मछली एक प्रकार की फूलनेवाली मछली होती है जो कि ३५ इंच से ऊपर लम्बी हो जाती है। यह ऐसे पानी द्वारा फूल जाती है जो कि निगला जा सकता है। यह इस पानी को अपने मुंह के अंदर स्टोर कर लेती है जिससे यह फूल जाती है। मछलियां भी पानी में डूबने से मर सकती है। जिस तरह से मनुष्यों को ऑक्सीजन की जरूरत होती है वैसे इन्हें भी ऑक्सीजन की जरूरत होती है। मतलब कि अगर मछलियों को पानी में ऑक्सीजन नहीं मिलेगी तो वह दम घुटने की वजह से पानी में डूबकर मर जाएगी। पत्थर मछली दुनिया में सबसे जहरीली मछली होती है। इसके काटने से व्यक्ति को पैरालाइज हो सकता है। अगर कुछ ही घंटों में पीडित का उपचार नहीं होता तो उसकी मृत्यु हो जाती। पैरिनहस एक प्रकार की मछली होती है जो कि दक्षिणी अमरीका में पाई जाती है। इसके दांत बहुत ही तीखे होते हैं। यह मछलियों,

कीड़ों, बीजों, फलों के साथ-साथ घोड़ों को भी खा सकती है। समुद्रीघोड़ा मछली सबसे धीमे चलनेवाली मछली है। इसमें से क्षुद्र (लघु) समुद्रीघोड़ा मछली पाँच फुट तक चलने में एक घंटा लगाती है। इतना धीमे चलने के कारण यह आपको चलते हुए भी रुकी नजर आएगी। भारत का सबसे बड़ा मछली- घर मुंबई में है।

❋ एक फेफड़ा मछली पानी से कुछ साल तक बाहर जीवित रह सकती है। एक फेफड़ा मछली के फेफड़े और गलफड़े दोनों होते हैं। समुद्री घोड़ा मछली इकलौती मछली है जो कि बिलकुल सीधे तैरती है।

मछलियां एक दूसरे तक संदेश पहुंचाने के लिए कम गुणवत्ता वाले संदेशों के उपयोग करती है। जैसे कि कर्कश, बूम, फुफवार, सीटी, चरमराना, चीख और विलाप आदि। मछलियों का जबड़ा उनकी खोपड़ी से जुड़ा नहीं होता इसलिए कई मछलियां अपने शिकार को जबड़े द्वारा झपट लेती हैं। खारे पानी की मछली को स्वच्छ पानी में रहनेवाली मछली से अधिक पानी की आवश्यकता होती है। जब समुद्र का पानी मछली के अंदरूनी द्रव से ज्यादा खारा होता है तब मछली का अंदरूनी पानी तुरंत ही बाहर निकलने लगता है। अगर खारे पानी की मछलियां इस निकले पानी की पूर्ति नही करती तो वह एक आलूबुखारे की तरह हो जाएगी। ज्यादातर मछलियों में नमक की थोड़ी सी मात्रा ही होती है पर शार्क जब तक समुद्र में जीवित रहती है उनका मांस समुंदर के जितने ही खारा होता है। मछलियां अपने रंगों का उपयोग अपने क्षेत्र में अपने को बचाने के लिए करती हैं। जब आप उनका शिकार करने के लिए जाते हैं तब वह अच्छी तरह से पहचान जाती है कि कोई उन्हें ताक रहा है। कुछ मछलियां लहरों की तरंगों और पराबैगनी किरणों को देखकर भी किसी चीज का अंदाजा लगा लेती हैं।

❋ एक्वेरियम में शार्क और व्हेल - एक्वेरियम में छोटी-छोटी मछलियां व अन्य छोटे समुद्री जीव रखे जाते हैं, पर यदि हम कहें कि एक्वेरियम में शार्क और व्हेल भी हैं। विश्व में ऐसे एक्वेरियम हैं, जहां व्हेल जैसी मछलिया रखी जाती है। अमेरिका में रिवर जर्सी और ओशियन जर्सी दो ऐसे एक्वेरियम हैं, जहां पर १२ हजार से अधिक जीव एक साथ देखे जा सकते हैं। ये दोनों टेनेसी एक्वेरियम कॉम्प्लेक्स में स्थित हैं। ये टेनेसी स्टेट के चट्टानुग्गा कस्बें में पड़ते हैं। रिवर जर्सी एक्वेरियम वाली इमारत १२ मंजिल ऊंची है और इसका क्षेत्रफल एक लाख ३० हजार वर्ग फीट है। इसमें चार लाख गैलन पानी का भंडार है। यहां पर नदियों, तालाबों और झील में पाए जानेवाले जलचर रखे गये हैं। इसकी स्थापना १९९२ में हुई थी। वहीं ओशियन जर्सी एक्वेरियम की इमारत १० मंजिला है। इसका क्षेत्रफल करीब एक लाख ६० हजार वर्ग फीट है।

❋ फ्लोरिडा के मेरिन स्टूडियो में पोरपोइज नामक ऐसा प्राणी है जो आदमी की तरह आवाज पैदा कर सकता है।

❋ मछलियों की याददाश्त सिर्फ कुछ सेकेंड की होती है।

❋ वैज्ञानिकों का कहना है कि दुनिया की सबसे नन्हीं मछली का पता लगा लिया गया है और इसकी पूरी लंबाई मात्र १/३ इंच है। पीडोसाइप्रिस प्रोजेनेटिका नामक इस मछली का शरीर पारदर्शी है, सिर में कोई हड्डी नहीं है और यह सुमात्रा के ऐसे दलदली द्वीपों में पाई जाती है जहां पानी वर्षा जल की तुलना में १०० गुना तेजाबी है।

❋ मछलियों को भी इंसान की तरह ऑक्सीजन की आवश्यकता होती है और बिना ऑक्सीजन से वो मर जाती है। मछलियों को सांस लेने के लिए पानी से बाहर आना पड़ता है।

❋ रीढ़ की हड्डीवाले जानवरों में सबसे पहले मछलियां आयीं? मछली जब पहली बार समुद्र में तैरी, तो उस समय कोई मनुष्य पृथ्वी पर नहीं था और न ही डायनासोर या हाथी या जीवन का विकसित आकार था। अन्य प्राचीन प्राणियों की

तरह मछली ने भी अपने विकास में बहुत बदलावों का अनुभव किया है। आज की दुनिया में जितनी प्रजातियां मछलियों की है, उतनी किसी और रीढ़ की हड्डीवाले जानवर की नहीं मछलियां छोटे-छोटे तालाबों से लेकर समुद्र की गहराई तक, हर उस पानी में रहती हैं, जिसकी कल्पना की जा सकती है।

मोटे तौर पर मछलियों को तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है। सेक्ट्स, शार्क और रे कार्टिलिजिन्स (कोमलस्थि) मछली होती है। इनका कंकाल सख्त हड्डी की बजाय कड़ी लचीली हड्डी का होता है। अक्सर इनकी खाल सख्त और सींगदार होती हैं। उसमें स्केल्स (परत) नहीं होते। दूसरी हड्डीदार मछलियां हैं, उनमें से, सबसे ज्यादा हड्डीदार ही हैं। इस श्रेणी की मछलियों का कंकाल पूरी तरह से सख्त स्केल्स से ढंकी होती हैं। तीसरी किस्म की मछलियों को लंगफिश कहते हैं। इन मछलियों के गिल (गलफाड) और लंग्स (फेफड़े) दोनों होते हैं। सभी लंगफिश ताजे या सादे पानी में रहती हैं। उनके फिन ऐसे प्रतीत होते हैं, जैसे कभी उनकी टांगें रही हों और कभी कभी वे जमीन पर भी आ जाती हैं। मछलिया पानी में सांस कैसे लेती हैं?

ज्यादातर मछलियां गिल (गलफाड) के जरिये सांस लेती हैं। होता यह है कि मुंह के जरिये पानी जाता है, जो गिल से होकर बाहर निकलता है और इसी प्रक्रिया में ऑक्सीजन अंदर ले लिया जाता है। मछली का खून ठंडा होता है, लेकिन अन्य जानवरों की तरह उसके पास नर्वस सिस्टम होता है, यानी वह दर्द, बेचैनी को महसूस करती हैं? मछलियों के कान भी होते हैं, जो उसके जिस्म के अंदर होते हैं। कुछ मछलियां बहुत बड़ी घुमक्कड होती हैं, इसलिए उनका कोई खास घर नहीं होता। लेकिन ज्यादातर छोटे-छोटे समुदायों में रहती हैं। अधिकतर मछलियां अन्य मछलियों या पानी के जानवरों और कीड़ों को खाती हैं।

❊ समुद्र में मछली की उत्पत्ति लगभग ५५ करोड़ वर्ष पूर्व मानी जाती है।

क्यूगू मछली विश्व की बसेस अधिक जहरीली मछली है, जिसका विष सांप के विष से भी कई गुना तेज रहता है। स्टिक बैक तथा ट्यूब नोज नामक मछलियां घोंसले बनाती हैं। रेमोरा जाति की मछलियां अपना शिकार फंसाने के लिए अपने शरीर से विद्युत तरंगे प्रवाहित करती हैं। गरनार्ड मछली पानी में तैरती है, जमीन पर चलती है तथा हवा में उड़ सकती है। स्टार फिश मछली की पांचों भुजाएं काटने पर उन भुजाओं से पुन: अलग-अलग स्टार फिश बन जाती है। ब्राजील और पेरु की नदियों में पाई जानेवाली इलेक्ट्रिक ईल मछली ४०० से ६५० वोल्ट तक का विद्युत झटका मारती है। स्टोनफिश मछली को छू लेने से मृत्यु हो जाती है।

❊ **अन्य मछलियां -** न्यूजीलैंड की कौआरा मछली गर्मी में गरम स्रोतों में तैरती है और सर्दियां शुरू होते ही भूमिगत सूखी गुफाओं में शीत निद्रा में डूब जाती है। ईगल मछली जब आवाज निकालती है तब लगता है मानो कोई चौपाया रंभा रहा हो। इस मछली का वजन ४४० पौण्ड तक होता है व ७ फुट लम्बी होती है। फोटोस्टोयास ग्यूरनी नामक मछली के शरीर में प्रकाश देनेवाले बिन्दुओं की दो कतारें होती हैं। इसमें प्राप्त रोशनी की सहायता से समुद्र की गहराई में भी ये मार्ग देख लेती हैं।

बाओफिन जाति की मछलियों के अण्डे देने के बाद नर बाओफिन को इनकी सुरक्षा स्वयं करनी पड़ती है क्योंकि मादा आबोफिन स्वयं अपने अण्डों को कभी भी खा सकती है। मैक्रोपोडस ओपर क्युलैरिस मछली की पानी के भीतर मृत्यु हो जाती है अत: इसे जीवित रहने के लिए पानी की सतह पर खुली हवा में सांस लेने के लिए आना पड़ता

है तभी यह जीवित रह पाती है। अफ्रीका में फेफड़ा मछली पाई जाती है जो अपने पंखों के सहारे चल लेती है। इस मछली में फेफड़े तथा गलफड़े दोनों होते हैं।

❋ जीवित कंकाल सीपी मछली के शरीर का कंकालनुमा आवरण जिससे वह शत्रुओं को धोखा देकर रक्षा करती है।

❋ अदृश्य होनेवाली मछली- यह एक ऐसे जीव का नाम है जो गायब होने और दोबारा प्रकट होनेवाली एक अद्‌भुत मछली है जिसका नाम है ट्रेटा। इसकी सबसे पहले खोज की महान वैज्ञानिक डॉ. गैस्टन मोरो ने। लाखों मछलियों के बीच आसानी से पहचानी जा सकती है ट्रेटा। इसका रंग काला होता है। लेकिन अजूबा यह है कि शत्रु को देखकर यह गिरगिट की तरह रंग बदलकर पारदर्शी हो जाती है यही नहीं खतरा महसूस होते ही यह अदृश्य हो जाती है और एक घंटे तक गायब ही रहती है। खतरे से घबराने पर इसके शरीर से एक विशेष प्रकार का रासायनिक पदार्थ निकलने लगता है जो इसके अदृश्य होने में मददगार बनता है।

ट्रेटा मछली की खोज का किस्सा बड़ा ही दिलचस्प है। डॉ. गेस्टन अफ्रीका के तटीय क्षेत्रों में सेशेल्स द्वीपों की यात्रा पर गये हुए थे। यात्रा के दौरान उन्हें काली मछलियों के कुछ समूह मिले। जब उन्होंने देखा ताकि ऑक्सीजन ट्यूब के स्पर्श मात्र से ये समूह गायब हो गए।

❋ मछली जो अंधेरे में चमकती है - २०१४ में समुद्री विज्ञानी और नेशनल जियोग्राफिक के उभरते खोजकर्ता डेविड ग्रुबेर ने रात के समय गोताखोरी के दौरान एक हरे रंग की चमकती हुई फल को पास को गुजरते देखा। यह किसी हड्डीदार प्राणी के रोशनीदार होने का पहला प्रमाण था। ग्रुबेर और उसकी टीम ने उस मूंगे के द्वीप के पास और खोज की, तो पाया वहां १८० अन्य प्राणी थे, जो रोशनी से जगमगा रहे थे। इनमें बोनी फिश, रेपटाइल, हॉक्सबिल सी टर्टल और स्वेल शार्क आदि भी थे।

❋ मिसिसिपी नदी की घाटी में कुत्ते के समान भौंकनेवाली विचित्र मछली पाई जाती है।

तारपीडो नामक मछली करंट पैदा करती है।

शाफिश (आरीदार मछली) एक ऐसी विचित्र मछली है जिसके मुंह में आगे आरी जैसे दांतों वाली तलवार सरीखी लंबी नाक रहती है। साधारणत: यह ८-१० फीट लंबी होती है। यह फ्लोरिडा प्रदेश के आसपास पाई जाती है।

जाइर्जेटेकस नामक मछली टॉर्च जैसी रोशनी लेकर चलती है।

झिंगा मछली के खून का रंग काला होता है।

सरनाई नामक विचित्र मछली अमेरिका के समुद्र में पाई जाती है जो उड़ती भी है। यह कभी थल में तो कभी पानी में अपना जीवन यापन करती है।

स्केट मछली का आकार बिल्कुल पतंग जैसा होता है, इसका मुंह नोकदार थूथन जैसा और खाल काफी मुलायम होती है। यह प्रशांत महासागर और अटलांटिक महासागर में पाई जाती है।

वे १८ वर्ष की उम्र से तातेयामा खाड़ी क्षेत्र स्थित शिन्तो धर्म के मंदिर से जुड़े हैं, जो समुद्र के पास है। मंदिर का कुछ हिस्सा समुद्र तल में है, उसकी देख रेख वही करते हैं। हर बार उन्होंने वहां सफेद रंग की एक मछली को देखा, वह मंदिर के हिस्से के आसपास ही होती है। बाद में उनकी दोस्ती हो गई। हिरोयुक्ती ने उसका नाम योरिका रखा है। वे तल में पहुंचने के बाद वहां का पिलर बजाते हैं। कुछ ही मिनटों में सफेद मछली उनके पास आ जाती है। वे कहते हैं- जब वह करीब आती है, तो लगता है जैसे कोई आपको जानता है।

हिरोयुकी से मिलकर वह भी आवाज निकालती है। योरिका से उनके मिलने का वीडियो यूट्यूब पर है, जिसे १०.२५ लाख से अधिक व्यू मिल चुके हैं। हिरोयुकी और येरिको की दोस्ती पर डॉक्यूमेंट्री भी बनी है। यह मछली एशियन शिपशेप ब्रास प्रजाति की है, जो मूल रूप से जापान, चीन और कोरिया प्रायद्वीप में पाई जाती है। उसका वजन १४.७ किलोग्राम तक होता है और औसत लंबाई ४० इंच, ब्रास प्रजाति की मछलियों की उम्र आमतौर पर लंबी होती है।

❋ वर्ष २०१३ में ऑस्ट्रेलिया में एक मछली पाई गई थी जो सबसे ज्यादा उम्रवाली मछली थी जिसकी उम्र ६५ वर्ष थी।

❋ सबसे बड़ी मछली- रिनोडान टाइपस। यहां बरसती है मछलियां- दुनिया की कई जगहों से मछलियों और मेंढ़कों की बारिश होने की खबरें आती हैं, पर मेक्सिको के पास होंडुरस में पिछले सौ सालों से मछलियों की बारिश लगातार होती है। जब आसमान से मछलियां बरसती हैं, तो यहां का नजारा बड़ा अद्‌भुत होता है। सड़क पर बिछी इन लाखों मछलियों को हटाकर सड़क को साफ करना पड़ता है।

❋ कैटपिया नामक समुद्री मछली अपने अंडे अपने मुंह में रखकर सेती है।

❋ मछलियां भी श्रवण यंत्र अर्थात हियरिंग एड का इस्तेमाल करती है। मछलियों की एक प्रजाति सुनने के लिये हियरिंग एड का ही इस्तेमाल करती है। लेकिन ये हियरिंग एड मानव द्वारा निर्मित नहीं होते। बल्कि इन्हें ये खुद तैयार करती हैं। ये मछलियां हवा के बुलबुलों से ही ये हियरिंग एड बनाती हैं। हवा के ये बुलबुले फूटते नहीं और मछली के साथ रहकर उसके चलित कान के रूप में कार्य करते हैं। पश्चिमी अफ्रीका की नदियों में मिलनेवाली इस मछली को मौरमोयड इलेक्ट्रिक फिश के नाम से जाना जाता है। इसे आवाज तभी सुनाई देती है जब यह बुलबुला उसके कान के अंदर सुननेवाले संवेदी बालों से टकराता है। सन १९३० से ही वैज्ञानिकों का यह मानना था कि बुलबुले इस प्रजाति की मछलियों की सुनने की प्रक्रिया का ही एक अंग है। लेकिन यह तथ्य पूर्ण रूप से अभी सिद्ध किया जा सकता है। इन मछलियों में दो विशेषताएं होती हैं। एक ये अपना रास्ता ढूंढने के लिये कम आवृत्ति के हल्के विद्युत संदेश भेजती हैं और दूसरा ये आपस में बात करने के लिए क्लिक क्लिक की आवाज निकालती है। जब इन मछलियों के पास आवाजों का टेप बजाया गया तो ये निष्कर्ष सामने आया कि जिन मछलियों के बुलबुले फोड़ दिए गए उन पर आवाजों का कोई प्रभाव ही नहीं हुआ। जबकि जिन मछलियों का एक भी बुलबुला शेष था। उनमें आवाज सुनने की प्रतिक्रिया देखी गई। जिस समय ये मछलियां अपना जोड़ा तलाश करती हैं, उस समय ये बुलबुले उनकी सुनने की क्षमता ३० प्रतिशत तक बढ़ा देते हैं।

❋ व्हेल मछली - मानव सभ्यता के साथ जुड़ा है व्हेल मछली का इतिहास - समुद्र में रहनेवाले प्राणियों में व्हेल एक विशालकाय मछली है। स्पर्म व्हेल, किलर व्हेल, पायलट व्हेल, बेलुगा व्हेल। इसकी लंबाई ११५ फुट और वजन १५० से १७० टन तक होता है, जबकि कुछ व्हेल ११ फुट की भी होती हैं। व्हेल मछली सदियों से मानव सभ्यता के साथ भी जुड़ी है। अनेक देशों में व्हेल मछली के किस्से कहानियां प्रचलित हैं। बताया जाता है कि समुद्र में ५ करोड़ वर्ष पूर्व व्हेल अस्तित्व में आयी। अन्य स्तनधारी प्राणियों की तरह व्हेल हवा में सांस लेती है, उसका खून गर्म होता है और वह बच्चों को दूध पिलाती है। व्हेल मछली की चमड़ी मोटी होती है, जो उसके शरीर को रक्षा प्रदान करती है।

इसकी एक रीढ़ होती है, कुछ हड्डियां और चार चेम्बरवाला हृदय होता है। इसकी गर्दन बहुत लचीली होती है, जो तैरते वक्त गोल घूम सकती है। यह ब्लो होल्स से सांस लेती है। बैलीन व्हेल के दो ब्लो होल्स होते हैं, जबकि दांत वाली व्हेल

को एक ब्लो होल होता है। यह उनके सिर के ऊपरी हिस्से में होते हैं। जब ब्लो होल्स से व्हेल सांस लेती है तो उसके साथ काफी मात्रा में पानी भी उसके फेफड़ों में जमा हो जाता है जिसे बाद में फव्वारे के रूप में वह वापस बाहर कर देती है।

व्हेल की पूंछ के अंत में दो सिरे उसे तैरते समय मुड़ने में सहायक होते हैं। व्हेल अपने गले से बाहरी आवाज को ग्रहण करती है और वहां से वह आवाज अंदरूनी कान तक पहुंचती है। मादा व्हेल एक बार में एक बच्चे को जन्म देती है। वह अपने बच्चे को अपना दूध पिलाती है। उसका दूध टूथपेस्ट की तरह गाढ़ा होता है। बच्चे अपनी मां के साथ एक साल तक रहते हैं।

अधिकतर प्राणियों की तरह व्हेल भी आराम करती है। बाकी सभी जानवर तो सो सकते हैं। लेकिन व्हेल कभी भी लंबे समय तक नहीं सोती। इसके शरीर का आकार इस तरह गोल होता है कि यदि यह सो जाये तो डूबकर मर जाती है। केवल इसका मस्तिष्क कुछ समय के लिए सोता है। पानी के ऊपर यह एक हमलावर की तरह उछलकर आती है और अपनी पूंछ को जोर से पानी पर पटकती है।

अंटार्कटिका की ब्ल्यू व्हेल को विश्व का सबसे बड़ा प्राणी माना जाता है। सबसे बड़ा जानवर अफ्रीकन हाथी भी उसकी जीभ पर खड़ा हो सकता है। अंटार्कटिका के ऊपर ओजोन लेयर की परत में हुए छेद के कारण सूर्य से निकलती खतरनाक यूवी रेंज इन ब्ल्यू व्हेल के खाने के स्रोतों को खत्म करती जा रही है। ब्ल्यू व्हेल दुनिया की सबसे तेज बोलनेवाला जीव भी है। यह फ्रीक्वेंसी का इस्तेमाल कर समुद्र के नीचे कई सौ मील तक अपने संदेश भेज सकती है। मगर पता नहीं आनेवाली पीढ़ी इस अद्‌भुत प्राणी को देख पाएगी या नहीं। व्हेल के समूह को पॉड कहा जाता है।

नर व्हाल व्हेल परिवार की ही एक सदस्य है, जो उत्तर ध्रुवीय महासागर के तटीय पानी में पाई जाती है। नर व्हाल ज्यादातर अक्वैटिक यूनिकोर्न ऑफ द सी के नाम से जानी जाती है। यह नाम उसे इसलिए दिया गया है क्योंकि इसके ऊपरी होंठ के ऊपर एक लम्बा-सा दांत होता है। यह दांत केवल नर मछलियों में ही पाया जाता है। यह उसका दाईं ओर एक दांत होता है, जो ऊपरी होंठ को भेदकर बाहर आ जाता है। यह ९ फुट तक लम्बा हो सकता है। मादा मछली में यह दांत अन्दर ही रहता है।

इस लम्बे दांत का वास्तविक उपयोग अभी तय नहीं किया जा सका है। कभी-कभी नर व्हालों को आपस में अपने इस लम्बे नुकीले दांत से तलवारबाजी सा खेल खेलते देखा जा सकता है। एक समय यह समझा जाता था कि नरव्हाल अपने इस दांत का उपयोग नौकाओं के तले में छेद करने हेतु करता है परन्तु बाद में इस अवधारणा को बदलना पड़ा क्योंकि यह दांत काफी नाजुक और अन्दर से खोखला होता है। जिस कारण यह आसानी से टूट भी जाता है। ये लम्बे दांत, आज भी रहस्यपूर्ण तथ्य हैं।

व्हेल मछली का दिमाग भी इंसानों की तरह दौड़ता है। किसी ग्रुप को कैसे मैनेज करना है और टीम को काम कैसे करना है, यह व्हेल बेहतरी से सिखाती है। व्हेल अपने ग्रुप में किसी काम के सही तरीके से न होने पर गुस्सा तक जाहिर करती है। अपने साथियों को बुलाने के लिए मधुर आवाज निकालती है। व्हेल मछली उल्टी दिशा में नहीं तैर सकती।

❋ ब्लू व्हेल की जीभ काफी वजनी- सबसे बड़े समुद्री जीव ब्लू व्हेल की जीभ का वजन हाथी के वजन के बराबर होता है। इससे यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि ब्लू व्हेल का वजन कितना अधिक होगा।

❋ संसार का सबसे बडा जीव व्हेल मछली होती है। लगभग २५ टन।

✻ व्हेल एक ऐसा जीव है जो मछली की भांति पानी में रहता है परंतु फेफड़ों से सांस लेता है। उसे सांस लेने के लिए पानी की सतह तक आना पड़ता है। व्हेल को अपने बच्चे को सांस दिलाने के लिए दूसरी व्हेल की मदद से पानी की सतह तक लाना पड़ता है।

✻ शील व्हेल नामक मछली बच्चों को जन्म देती है और उन्हें दूध पिलाती है।

✻ जन्म के समय बेबी ब्ल्यू व्हेल ६ मी. (२२ फीट) लंबी होती है और इसका वजन १० टन होता है। यह वयस्क अफ्रीकन हाथी से दुगुना वजन है।

✻ पानी में रहनेवाली नीली व्हेल हर दिन चार टन खाना खाती है। उसका खाना छोटे जीव जैसे क्रील होते हैं।

✻ काली व्हेल जन्मते समय सफेद होती है।

✻ नीली व्हेल की जुबान का वजन ही हाथी के वजन से ज्यादा होता है। एक बड़ी नीली व्हेल की चर्बी में से १२० बैरल तेल निकाला जा सकता है।

✻ पानी में रहनेवाले एवं सबसे बड़े भीमकाय स्तनधारी जीवन व्हेल एक लाख से, सवा लाख हर्टज तक की पराश्रव्य ध्वनि तरंगों को सुनने में सक्षम होती है।

✻ व्हेल मछली की हृदय गति सबसे धीमी होती है व इसके मुंह में २४ हजार दांत होते हैं।

✻ एक लंबी सांस के बाद ब्लू व्हेल ५० मीटर तक डुबकी लगाकर रह सकती है। सांस लेने व छोड़ने में उसे मुश्किल से दो सेकेंड लगते हैं।

✻ ब्लू व्हेल एक साँस में २००० गुब्बारों जितनी हवा खींचती और बाहर निकालती है।

✻ नीली व्हेल की अधिकतम लंबाई १०० फुट होती है।

✻ समुद्र में पाए जानेवाले व्हेल्स (स्तनपाइयों) में ब्ल्यू व्हेल सर्वाधिक लम्बी व्हेल है। हिप्पोकेम्पस या सी हार्स नामक समुद्री मछली पानी में खड़ी तैरती है। स्टोन फिश दुनिया की सर्वाधिक विषैली मछली है।

✻ व्हेल मछली के तेल का उपयोग १९७३ तक ऑटोमोबाइल ट्रांसमिशन में होता था।

✻ व्हेल मछली नहीं बल्कि स्तनपायी प्राणी है। यह गर्म रक्तवाली होती है। इसका एक हृदय भी होता है जो कि चार भागों में बंटा होता है।

✻ व्हेल अकेला स्तनधारी जीव है जिसके दांत नहीं होते।

✻ व्हेल मछली, मछली न होकर संसार का सबसे बड़ा स्तनपायी प्राणी है। इसका वजन १५० टन तक होता है।

✻ ब्लू व्हेल धरती की सबसे बड़ी प्राणी है, इसका दिल एक कार जितना बड़ा है और जीभ हाथी के जैसी।

✻ व्हेल के शरीर में ७० टन मांस होता है। व्हेल के फेफड़े एक बार में १४००० लीटर वायु खींचते हैं। नवजात व्हेल मछली का वजन एक टन प्रतिदिन बढ़ता है।

✻ व्हेल को सांस लेने के लिए हवा की जरूरत होती है। यह अधिक लंबे समय तक नहीं सोती। इसका आधा मस्तिष्क सोता है तो आधा जागता रहता है। व्हेल ३० मील प्रति घंटे की रफ्तार से तैर सकती है। व्हेल के शरीर पर बहुत बारीक बाल भी होते हैं। इसका खून गर्म होता है। व्हेल का सबसे बड़ा दुश्मन मनुष्य है।

✻ जायंट ब्ल्यू व्हेल्स की सर्वाधिक नजदीकी रिश्तेदार फिन व्हेल्स विश्व के सर्वाधिक शोर मचानेवाले जानवर हैं।

उनकी आवाज जैट जहाज के उड़ने से पैदा होनेवाली आवाज से भी अधिक होती है।

❋ नीली व्हेल की सीटी की आवाज सभी जानवरों में सबसे तेज होती है।

❋ सबसे बड़ा स्तनपायी जीव व्हेल।

❋ नीली व्हेल के दिल का वजन १७० टन होता है।

❋ विश्व की सबसे बड़ी मछली व्हेल शार्क ४० फुट तक लम्बी हो सकती है। इसके हजारों दांत होते हैं पर यह किसी भी चीज को काटती नहीं है।

❋ समुद्र में रहनेवाली व्हेल मछली को मछली वर्ग में शामिल नहीं किया जाता बल्कि यह एक स्तनधारी प्राणी है जिसकी मादा अंडे न देकर सीधे बच्चे पैदा करती है और उन्हें अपना दूध पिलाती है। व्हेल में मछलियों की भांति गिल्स नहीं होते। यह हमारी ही तरह फेफड़ों से सांस लेती है। सास लेने के लिए इसे हर पांच-दस मिनट में पानी के ऊपर आना होता है लेकिन यह ४५ मिनट तक बिना सांस लिए पानी के भीतर रह सकती है। जब इसे सांस लेना होता है तो पहले अपने शरीर की हवा बाहर निकालती है और उसके बाद अंदर ले जाती है।

जब यह अपने शरीर की हवा बाहर निकालती है तो बहुत तेज आवाज होती है जिसे काफी दूर तक सुना जा सकता है। यह सभी जंतुओं से अधिक विशाल है। दुनिया में सबसे लंबा और वजनदार प्राणी नीली व्हेल है। १९०९ में दक्षिण अटलांटिक महासागर के दक्षिण जार्जिया के समुद्रतट पर पायी जानेवाली ११० फुट लंबी नीली व्हेल आज तक की सबसे विशालकार व्हेल मानी जाती है। मादा नीली व्हेल का वजन ७ महीनों के दूध पिलाने के काल में १२० टन होता है और यह अपने स्तनपान कराने की अवधि में शरीर के वजन को २५ प्रतिशत तक घटा लेती है, यानी वह अपने शरीर का वजन ३० टन तक कम कर सकती है। यह सबसे ज्यादा गहरा गोता लगाती है। सन १९५५ में ४७ फुट लंबी एक नीली व्हेल समुद्र के नीचे ३७२० फुट गहरे तल में पायी गई थी। यह ८२०० फुट की गहराई तक भी नीचे जा सकती है। व्हेल मछली में अपने परिवार के साथ करीब रहने की प्रवृत्ति होती है। समूहों के सदस्यों में एक समान जीन पाए जाते हैं। व्हेल अपने पर्यावरण के कारण जमीन पर रहनेवाली प्रजातियों की तुलना में अपनी संस्कृति का बेहतर ढंग से विकास कर सकती है। महासागरों की विशालता में वह स्थाई समूहों में रहकर आसानी से यात्रा कर सकती है और अपने शिशुओं को सीख देने के लिए महासागरों का गहरा जल उसे ध्वनि प्रसारण में मददगार साबित होता है।

❋ समुद्र में रहनेवाली ब्लू व्हेल के आगे तो यह नन्हा-मुन्ना सा बच्चा है। पूरी पृथ्वी में सबसे विशालकाय जीवधारी का रिकार्ड अपने नाम करवानेवाली ब्लू व्हेल का भार २४० टन से भी ज्यादा होता है, और यह एक बार में ढाई टन से अधिक भोजन करती है। व्हेल तीन महीने तक बिना खाए तैर सकती है।

❋ व्हेल संगीतप्रिय ही नहीं होती स्वयं गाती भी हैं और वह भी ऊंटपटांग सा नहीं बाकायदा उनकी अपनी सरगम के साथ। यदि आप बीच समुद्र में जाएं तो आपको व्हेलों के गीत सुनने को मिल सकते हैं। वैज्ञानिकों ने व्हेल के गीतों को रिकॉर्ड करके उनका बारीकी से अध्ययन किया और संगीतज्ञों को भी सुनवा कर उनकी राय ली। हमारे गीतों की ही तरह उनके गीतों में भी पद, पंक्तियां, फिर उनसे गीत। यही व्हेलों के संगीत में भी होता है। समुद्र के अलग-अलग हिस्सों में व्हेलों के गीतों में विविधता भी मिलती है। बरमूडा की व्हेलें पांच पंक्ति का गीत गाती हैं, जबकि हवाई के पास रहनेवाली व्हेलें आठ पंक्तियों के गीत गाती हैं। कुछ गीत पांच मिनट में खत्म हो जाते हैं, तो कुछ पूरे आधे घंटे तक चलते हैं। एक

बार कैरेबियन के पास एक व्हेल २२ घंटों तक लगातार गाती रही। उसके गीत को रिकॉर्ड करनेवाले शोधकर्ता भी थककर चले गए, पर वह उनके जाने के बाद भी गाती रही।

व्हेलों के संसार में सबसे अच्छी गायिकाओं में हंपबैक व्हेल्स मानी गई हैं। उनके पास सरल और जटिल गीतों की कमी नहीं। अब आप जोश से गा रही व्हेल के आस-पास जाकर उसका गीत सुनेंगे, तो आप इसके बुलंद स्वरों से प्रभावित हुए बिना नहीं रहेंगे। उसकी आवाज के स्पंदन आपके मस्तिष्क तक पहुंचते हैं। ध्वनि तरंगें आपके अंगों में प्रवाहित हो जाएंगी, आपको गीत सुनकर ध्वनि तरंगे आपके अंगों में प्रवाहित हो जाएंगी, आपको गीत सुनकर ध्वनि तरंगों के शरीर में बहने से ज्यादा महसूस होगा। व्हेल अक्सर अकेले ही गाती है और साथ में धीमी गति में तैरती भी रहती है। व्हेल हमेशा एक ही गीत नहीं गाती, जब वे समुद्र के दूसरे हिस्सों में जाती हैं, तो वे आपस में सीखती-सिखाती भी हैं। इस तरह हिंद महासागर की व्हेलों को गीत सिखाती हैं। इस तरह कुछ सालों में इनके गीत पूरे बदल जाते हैं। इस तरह का परिवर्तन इस तरह सीखने-सिखाने से ही होता है। जैसा कि हमारे साथ होता है, हमारे संगीतकार पाश्चात्य संगीतकारों से प्रेरणा ले नई धुन बनाते हैं और पाश्चात्य हमारे संगीत को पसंद कर हमारे संगीत से कुछ सीख लेते हैं।

*** ओरांगुटान-** यह पांच साल का सुमात्रन ओरांगुटान है, जो अपने हर तोहफे ज्यादा संभालकर रखता है। पाम तेल के पौधों का प्लांटेशन बढ़ने के कारण उष्णकटिबंधीय वन घट रहे हैं, जिससे ये लुप्तप्राय प्रजाति में आ गए हैं।

*** वाइपर फिश -** वाइपर फिश आकार में तो छोटी होती है, लेकिन यह समुद्र की गहराई में खतरनाक शिकारी बनकर घूमती है। समुद्र की गहराई के अंधेरे क्षेत्र में रहनेवाली यह मछली खाना ढूंढने, अपनों को पुकारने और दुश्मनों का सामना करने के लिए अपने शरीर से रोशनी निकालती है।

वाइपर फिश समुद्र की गहराई में रहनेवाला ऐसा जीव है, जिसे पहचानना काफी आसान होता है। मुंह बंद होने पर भी इसके खतरनाक दांत मुंह से बाहर निकले रहते हैं, जो बड़े ही डरावने लगते हैं। जब ऐसी मछली दिख जाती है तो समझ लिया जाता है कि यही वाइपर फिश है। यह समुद्र में लगभग १५०० मीटर की गहराई में दिखती है। वैसे इसे ४००० मीटर की गहराई में भी देखा जा चुका है। लगभग दो फुट लंबी इस मछली की दुनिया १००० मीटर से लेकर ४४०० मीटर की गहराई तक फैली है। इसकी आयु ३० से ४० साल होती है, लेकिन बहुत कम वाइपर फिश इतनी उम्र तक जी पाती हैं, क्योंकि उससे पहले ही ड्रैगन फिश, शार्क और डॉल्फिन की कुछ प्रजातियां इनका शिकार कर लेती हैं। हरे, सुनहरे और काले रंगवाली वाइपर फिश को देखा गया है। इनका मुंह काफी बड़ा होता है। इनके दांत काफी लंबे और नुकीले होते हैं। इसका पेट भी बड़ा होता है, जिसे यह दोगुना बढ़ा भी सकती है। इसे प्रशांत और अटलांटिक महासागर में अधिक देखा जाता है। गहरे समुद्र के अंधेरे क्षेत्र में रहनेवाली वाइपर फिश जरूरी रोशनी खुद ही पैदा करती है। जिस ऑर्गन (अंग) से यह रोशनी पैदा करती है, उसे फोटोफोर कहते हैं। इस रोशनी का इस्तेमाल कर वह अपनों से तो बातचीत करती ही हैं, दुश्मनों से भी सावधान हो जाती हैं। वाइपर फिश को भोजन पाने के लिए काफी मेहनत करनी पड़ती है।

*** क्लीनर फिश-** समुद्री जीवों में भी एक ब्यूटी एक्सपर्ट मछली पाई जाती है, जो समुद्र की दूसरी मछलियों के शरीर की खराब हो चुकी त्वचा को साफ करती है। यह ब्यूटी एक्सपर्ट मछली क्लीनर फिश कहलाती है। समुद्री की मछलियां अपनी सेहत और खूबसूरती की खूब ख्याल रखती हैं और इसके लिए वे समुद्र में रहनेवाली तरह-तरह की ब्यूटीशियन

मछलियों की सेवा लेती हैं। इन ब्यूटीशियन मछलियों को वैज्ञानिकों ने क्लीनर फिश या क्लीनिंग फिश का नाम दिया है।

इनकी लंबाई १० सेंटीमीटर यानी लगभग ४ इंच तक होती है और ये कई रंगों की होती हैं। इस श्रेणी की सभी मछलियां काफी खूबसूरत दिखती हैं। ये प्राय: लंबी और पतली होती हैं। इनके शरीर पर लंबी रंगीन धारियां होती हैं, जो इन्हें खूबसूरत बना देती हैं।

ये मछलियां बड़ी-बड़ी मछलियों को क्लीनिंग कराने के लिए आकर्षित करती हैं और इसके बाद ये सब आराम से क्लीनिंग का काम करती हैं।

ये मछलियां अपनी सफाई कराने आई मछलियों के मुंह में भी घुस जाती हैं और उनके मुंह के अंदर मौजूद कीटाणुओं और बीमार ऊतकों की सफाई कर देती हैं। इसके बदले इन्हें कुछ भोजन भी मिलता है। दरअसल क्लीनर फिश उन्हीं ऊतकों और मृत त्वचा को खाती हैं, जो उनके लिए पौष्टिक भोजन साबित हों।

इनका मुंह काफी छोटा होता है, आगे की ओर काफी उभरे हुए होंठ होते हैं और साथ ही तेज दांत होते हैं, जिनकी मदद से ये सफाई का काम करती हैं। इन मछलियों को इस्तेमाल सालमन जैसी कई महंगी मछलियों की सफाई के लिए भी किया जाता है। इसके लिए जिस एक्वेरियम में सामान व ऐसी अन्य मछलियां रह रही होती हैं,वहां कुछ क्लीनर मछलियों को भी छोड़ दिया जाता है। ये मछलियां अपनी सेहत का भी पूरा ध्यान रखती हैं, पूरी नींद लेती हैं और रात में ही सोती हैं। क्लीनिंग फिश की श्रेणी में अनेक मछलियां आती हैं। इस श्रेणी में पाइप फिश, चिचलिड्स, कैटफिश और कुछ झींगा मछलियां आदि शामिल हैं।

❊ वाइपर फिश नाम की मछली के दांत इसके मुंह से बहुत परे तक उभरे हुए होते हैं। ये आकार में एक फुट तक लंबे हो सकते हैं। किसी जानवर में अपने सिर के समानुपात में ये सबसे बड़े दांत हैं। इस मछली में एक और विशेषता भी होती है। इसके शरीर पर ३५० प्रकाश छोड़नेवाले अंग होते हैं। इन अंगों की सहायता से यह अपने शिकार को गहरे अंधेरे पर आकर्षित करती है।

❊ **स्पेनिश डांसर मछली-** समुद्र की गहराई में सतह पर हजारों जीव रेंगते हैं जिनमें से कुछ तैरते भी हैं। इन्हीं जीवों में से एक है स्पेनिश डांसर। स्पेन की डांसरों के परिधानों की तरह खूबसूरत होने के कारण इस जीव को स्पेनिश डांसर कहा जाता है। यह तैरता है तो लगता है कि कोई डांसर डांस कर रहा हो।

स्पेनिश डांसर एक छोटा-सा समुद्री जीव है। जिसकी औसत लंबाई १६ इंच है। इसे फिश की श्रेणी में रखा गया है। अपने चटख लाल रंग और मखमली खूबसूरती के कारण लोग इसे काफी पसंद करते हैं। उस चटख लाल रंग में कुछ दूसरे रंगों का भी प्रकृति ने इस्तेमाल किया है, जो इसकी खूबसूरती को और बढ़ा देते हैं।

यह नूदीब्रांच परिवार के समुद्र की गहराई में सतह पर रेंगनेवाले जीवों की श्रेणी में शामिल है। इस परिवार में तीन हजार से भी अधिक जीव शामिल हैं, लेकिन स्पेनिश डांसर कुछ उंचाई तक तैर भी सकती है। यह एक दिन में अधिकतम १० मीटर की दूरी तक तैर सकती है।

इस परिवार के लगभग सभी जीव खूबसूरत होते हैं, लेकिन यह जीव कुछ ज्यादा ही खूबसूरत दिखता है। खासकर जब यह तैरता है तो लगता है जैसे स्पेनिश डांसर के परिधान लहरा रहे हों।

इसे स्पेनिश डांसर इसलिए कहा जाता है, क्योंकि यह स्पेनिश डांस करनेवाले कलाकारों द्वारा पहने जानेवाले कास्ट्यूम

की तरह लाल रंग का और बहुत ही खूबसूरत दिखता है। नूदीब्रांच परिवार के होने के कारण इसे स्पेनिश डांसर नूदी भी कहा जाता है।

जेली जैसे शरीरवाला यह मनमोहक जीव यूं तो सभी सागरों में पाया जाता है, लेकिन हिंद महासागर और प्रशांत महासागर की गहराई में यह अधिक पाया जाता है। इस परिवार के खूबसूरत जीवों की आयु बेहद कम होती है। इसकी अधिकतम आयु एक साल तक मानी जाती है। वैसे इस परिवार के कुछ जीव तो कुछ हफ्ते में ही इस दुनिया को अलविदा कह देते हैं। इस परिवार के जीवों के चटख रंगों के होने का कारण यह माना जाता है कि इनका भोजन रंगीन जीव ही होते हैं। ये अपने रेडुला का इस्तेमाल कर छोटी मछलियों के अंडे, बार्नकल्ज, एनिमोन, समुद्र के अन्य रेंगनेवाले छोटे जीवों को अपना आहार बनाते हैं। ये खासकर जेलीफिश को अपना आहार बनाना खूब पसंद करते हैं। जब यह जीव तैरता है तो मखमल की गोल चादर की तरह लहराता हुआ दिखता है।

*** ट्रीगर मछली -** ट्रीगर नामक मछली की पीठ के अन्दर नुकीला काँटा होता है। जब उसे खतरा दिखाई देता है, वह उस काँटे को ऊपर कर लेती है और खतरा टलते ही उसे भीतर कर लेती है।

*** फ्लैट फिश -** गिरगिट की ही तरह पानी में रहनेवाली कुछ मछलियां जैसे फ्लैट फिश भी पानी की सतह के अनुसार रंग बदलती है।

***सर्जन मछली** - सर्जन मछली गर्म समुद्र में प्रशान्त महासागर में स्थित हवाई द्वीप के आसपास पायी जाती है। यह मूंगे की चट्टानों के आसपास उथले पानी में रहती है। इसकी पूंछ पर तेज धारवाले नश्तर पाये जाते हैं। अपने नश्तर जैसे दांतों के समान इस पूंछ का प्रयोग यह मछली आत्मरक्षा के लिए करती है। समुद्र में सर्जन मछली अपनी पूंछ को इधर-उधर पटकते हुए आराम से तैरती है। इस मछली की एक विशेषता यह भी है कि यह शुद्ध शाकाहारी है। कभी-कभी इसकी पीठ पर शैवाल इत्यादि जमा हो जाते हैं, जिन्हें साफ करनेवाने के लिए यह मछली एक अन्य मछली क्लीनर केपास जाती है। उसके पास पहुंचने से पूर्व यह अपने शरीर को भूरे रंग में बदल लेती है। त्वचा की सफाई के बाद यह पुन: रंग परिवर्तित कर लेती है और फिर से अपनी पूंछ को इधर-उधर पटकना शुरू कर देती है।

*** जेलीफिश -** समुद्र की सबसे खूबसूरत जीव २४ आंखों वाली जेलीफिश, जिनमें दिमाग नहीं होता

हम जानते हैं कि करोड़ों साल पहले हमारी धरती पर डायनासोर रहते थे। लेकिन इस धरती पर डायनासोर से भी पुराना जीव है खूबसूरत जेलीफिश। माना जाता है कि जेलीफिश का जीवन समुद्र में ६५ करोड़ साल पहले शुरू हो चुका था। ये तमाम समुद्र में हैं, समुद्र की गहराई में भी हैं और ऊपरी सतह पर भी दिख जाती हैं। समुद्र की गहराई में कुछ जेलीफिश तो इतनी रोशनी करती हैं कि उस रोशनी में काफी दूर तक के समुद्री जीव दिखाई देते हैं। ये डायनासोर की तुलना में तो काफी छोटी होती हैं, लेकिन इंसानों के लिए ये भी काफी खतरनाक होती हैं। ये समुद्र में रहती हैं, इस कारण हमारा ज्यादा नुकसान नहीं कर पातीं।

समुद्र में अगर बिना स्पेशल जैकेट पहने किसी व्यक्ति का इस मछली से सामना हो जाए, तो यह उस व्यक्ति की हालत बिगाड़ देती है। समुद्र में एक-दो नहीं, बल्कि हजारों तरह की जेलीफिश हैं और सब एक से बढ़कर एक खूबसूरत। ये आपको किसी रंग-बिरंगी छतरी या पैराशूट की तरह दिखेंगी। जेलीफिश के सबसे बड़े ग्रुप में एक लाख तक सदस्य होते हैं। जेलीफिश का जीवन समुद्री जीवन चक्र के लिए काफी उपयोगी है। वैसे तो जेलीफिश के पास दिमाग नहीं होता,

लेकिन होशियार और छोटी-छोटी रंगीन मछलियां इसके आसपास खुद को सुरक्षित महसूस करती हैं। यहां तक कि छोटे समुद्री केकड़े इसके ऊपर सवारी कर एक जगह से दूसरी जगह पहुंच जाते हैं। जेलीफिश का मुंह अंदर की तरफ बीच में होता है। जब यह तैरती है तो इसकी लंबाई औसतन ६ फीट तक होती है और इसका वजन भी २०० किलोग्राम तक होता है। अब तक सबसे बड़ी जेलीफिश अमेरिकी समुद्र क्षेत्र में मिली थी, जो ७.६ फीट की थी।

❋ सी-वास्प नामक जैलीफिश घराने की एक मछली अपने जहर से किसी भी आदमी को २० मिनट में मौत की नींद सुला सकती है। इसके जहर का असर सीधे दिल पर होता है।

❋ बाक्स जेलिफिश नामक समुद्री जीव १२ से १५ फीट लंबा होता है। वह अपनी धागेनुमा असंख्य पेशियों से सुई चुभाने की अनुभूति दे चुभाता है व उसका विष केवल १०-१५ मिनट में दूसरे प्राणी मनुष्य की जान ले लेता है।

❋ जैलीफिश- दिखने में जितनी खूबसूरत होती है इसका जहर उतना ही जहरीला होता है। इसके काटने से व्यक्ति के दिल की धड़कन तीन मिनट के अंदर रुक सकती है। समुद्री जीवों में जैली फिश सबसे खतरनाक जीवों में एक है।

❋ जेली फिश- यह आसानी से नजर नहीं आती। ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड में १०० साल बाद गुलाबी जेलीफिश देखी गई है। यह जेलीफिश तकरीबन दो फुट लंबी है और इसके डंक बहुत शक्तिशाली है। यह जेलीफिश तकरीबन दो फुट लंबी है और इसके डंक बहुत शक्तिशाली हैं।

जैलीफिश ऐसा एक प्राणी है जिसके शरीर का ९५ प्रतिशत पानी से बना होता है। इनके शरीर में न तो हड्डियां होती हैं, न दिल, न दिमाग न ही आंखें।

❋ जेलीफिश का शरीर दो स्तरीय कोशिकाओं से बनता है। इन दो स्तरों को अलग करनेवाला पदार्थ जेली (लबाबदार सांद्र द्रव) की तरह होता है। इसलिए उसे जेलीफिश कहा जाता है। जेलीफिश का शरीर छाते अथवा घंटी की तरह दिखाई देता है। उसके शरीर के किनारों से तंतुमय संस्पर्शक लटकते रहते हैं।

उन संस्पर्शकों में डंक मारनेवाली कोशिकाएं होती हैं जो कि शिकार को शिथिल बना देनेवाला विष छोड़ती हैं। उसके बाद शिकार को शरीर के नीचे की तरफ स्थित मुंह में पहुंचा दिया जाता है। जेलीफिश की कई प्रजातियां पाई जाती हैं।

❋ **कार्डिनल मछली -** नर कार्डिनल मछली अपने बच्चों से बेहद प्यार करती है। मादा मछली द्वारा अंडे देते ही वह उन्हें अपने मुंह में रखकर सुरक्षित करती है।

माता-पिता अपनी संतान के लिए जान जोखिम में डालने से भी नहीं घबराते। संतान की सुरक्षा का दायित्व जितना इंसानों में है उससे कम कार्डिनल मछलियों में नहीं। कार्डिनल किस्म की नर मछली अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए उन्हें अपने मुंह में रखती है और अपने भोजन को उनके मुंह में ही बांटती है। कई बार अपने बच्चों की रक्षा की कीमत वह अपनी जान देकर भी चुकाती है।

खरबों साल पहले अस्तित्व में आई इस मछली का शुरू से ही अपने बच्चों की सुरक्षा उन्हें अपने मुंह में रखकर करती आई है। इसके जबड़ों के आकार में अब तक कोई विशेष परिवर्तन नहीं आया। वहीं दूसरी मछलियों के आकार व उनके जबड़ों की बनावट में पहले से अब बहुत अंतर आ चुका है।

आम मछलियों की तरह कार्डिनल मादा मछली एक साथ सैकड़ों अंडे देती है जो सामान्य मछलियों के अंडों से आकार में थोड़े बड़े होते हैं और जैसे ही मादा मछली अंडे देती है वैसे ही नर मछली उन्हें एकत्रित कर अपने मुंह मे

सुरक्षित रख लेती है।

❊ **बाम मछली** - एक बिजली बाम मछली (इलेक्ट्रिक ईल) ६५० वोल्ट तक की बिजली पैदा कर सकती है। इसे छूइए और अपने जीवन का सबसे बड़ा झटका पाइए।

❊ **मॅकरेल्स** नाम की मछली एक समय पर ३ लाख से १५ लाख तक अंडे से सकती है।

❊ **कैटफिश** की सर्वाधिक आयु ६० साल दर्ज की गई है। कैटत फिश को तीन हृदय होते हैं।

❊ समुद्री कैटफिश अपने शरीर के किसी भी भाग से स्वाद चख सकती है।

❊ कॅट-फिश नामक मछली ऐसे पानी में रहती है, जिसका तापमान २०० डिग्री फारेनहाइट होता है।

❊ मछली एक ऐसी प्राणी है जो पानी के भीतर रहती है और सांस लेती है। एक अनुमान के अनुसार ध्रुवीय भालू की वैश्विक आबादी २०००० से २५००० के बीच होने का अनुमान है। मछलियों की एक प्रजाति ऐसी भी है, जो मादा मछली द्वारा दिये गये अंडों को अपने मुंह के अंदर रखती है? यह मछली अमेरिका के पूर्वी किनारे पर अटलांटिक महासागर में पाई जाती है और इस मछली को कैटफिश के नाम से जाना जाता है। कैटफिश की कुल सात प्रजातियां पूर्वी और मध्य-उत्तरी अमेरिका में पाई जाती है। कैटफिश धीमी बहनेवाली नदियों में अथवा झीलों की तलहटी में रहती है। नर कैटफिश मछली मादा कैटफिश द्वारा दिये गये अंडों को निषेचन के बाद अपने मुंह में भर लेती है। इन अंडों का आकार संगमरमर के छोटे-छोटे टुकड़ों जैसा होता है।

❊ कैटफिश, जॉफिश तथा कार्डिपलफिश किस्म की मछलियां अण्डे सेने की क्रिया और बच्चों की जिम्मेदारी मादा पर होती है परंतु अण्डे सेने का काम नर मछली को ही करना पड़ता है।

मादा मछली के अण्डे देते ही नर मछली मुंह में रख लेती है। अण्डों से मुंह पूरी तरह भर जाने के कारण नर मछली कुछ खा भी नहीं सकती। अण्डों से बच्चों के निकलने तक यह बिना कुछ खाए रहती है। लगभग एक महीने के बाद अण्डों से बच चों का निकलना शुरू हो जाता है जिसके बाद मादा की जिम्मेदारी शुरू होती है।

पन्द्रह दिन मादा इनको अपने मुंह में रखती है। बच्चे मुंह से निकलकर बाहर पानी में तैरते भी हैं, परंतु जैसे इन्हें कोई खतरा होता है, मादा इनको तुरंत मुंह में भर करती है।

❊ कैटफिश नामक मछली का नर अपनी मादा द्वारा दिए गए अंडों को तब तक मुंह से संभाले रखता है जब तक कि इनमें से बच्चे नहीं निकल आते और इसलिए एक महीने का लंबा समय उसे उपवास में बिताना पड़ता है।

❊ **कैटल फिश-** कैटलफिश एक ऐसी विचित्र मछली है, जिसके तीन हृदय होते हैं। इसके दो हृदय गिल्स के पास होते हैं, जो अशुद्ध खून को गिल्स में भेजते हैं। यह खून तीसरे हृदय में जाता है और वहां से शरीर के विभिन्न हिस्सों में पहुंचता है। कैटलफिश का रक्त भी विचित्र प्रकार का होता है। सभी जानवरों के रक्त का रंग हीमोग्लोबिन के कारण लाल रंग का होता है, लेकिन इस मछली के शरीर का रंग नीला होता है। इसके रक्त में हेमोसाइनिन नामक पदार्थ होता है, जो रक्त को नीला बना देता है। हेमोग्लोबिन में लोहा होता है, जबकि हेमोसाइनिन में तांबा होता है। इस वर्ग की दूसरी मछलियों के खून का रंग भी नीला होता है। कैटलफिश एक मुलायम मछली है, जो सिफेलोपोडा वर्ग में आती है। ओक्टोपस और स्क्विड नाम की मछलियां भी इसी वर्ग में आती हैं। यह मछली लगभगे फिश समुद्री किनारें के उथले पानी में रहती हैं। इसमें शरीर का रंग कत्थई होता है। शरीर पर कुछ धारियां और धब्बे होते हैं।

सूरज की रोशनी में इसका रंग चमकदार दिखाई देता है। इसमें रंग बदलने की अपूर्व क्षमता होती है। इसकी लंबाई ८ सेमी से लेकर १.८ मीटर तक होती है। इसकी अब तक सौ किस्मों का पता चल चुका है। कैटलफिश का शरीर एक प्रकार के थैले से घिरा हुआ होता है। इस थैले को मेंटल कहते हैं। सिर के एक सिरे से पतले-पतले टेंटेकल निकले होते हैं। इनमें से आठ टेंटेकल भुजाओं का काम करते हैं और दो स्पर्श अंगों का काम करते हैं। इन्हीं से यह शिकार पकड़ती हैं। मेंटल के दूसरी ओर फिन होते हैं, जो इसे तैरने में मदद कर देते हैं। दुश्मनों से अपनी रक्षा करने का इसका बड़ा ही विचित्र तरीका है। जब इस पर कोई शत्रु हमला करता है, तो यह अपने थैले से स्याही जैसा काले रंग का पदार्थ शत्रु की ओर छोड़ती है। यह पदार्थ एक धुएं जैसे बादल के रूप में बाहर आता है। इस धुएं जैसे बादल में यह दुश्मन की आंखों से ओझल हो जाती है और अपनी रक्षा कर लेती है। इस पदार्थ से स्याही भी बनाई जाती है। यह मछली वसंत ऋतु और गर्मियों में अंडे देती है। एक मछली १०० से ३०० तक अंडे देती है। इसे खाने के काम में लाया जाता है।

कैटलफिश सिफ़ेलोपोडा वर्ग में आती है। ओक्टोपस और स्क्विड नाम की मछलियां भी इसी वर्ग में आती हैं। यह मछली लगभग सभी समुद्रों में पायी जाती है। अधिकतर कैटलफिश समुद्री किनारें के उथले पानी में रहती हैं। इसकी लंबाई आठ सेमी से लेकर १.८ मीटर तक होती है।

❊ **गरनाई** नामक मछली हवा में उडती है, जमीन पर चलती है एवं जल में तैरती है।

❊ **शेलफिश -** पानी में सबसे तेज तैरनेवाली शेलफिश एक मिनट में दो किलोमीटर का सफर तय करती है।

❊ **चाकलेट मछली -** ब्राजील में एक ऐसी मछली पाई जाती है जिसका रंग व खुशबू चाकलेट जैसी होती है।

❊ **ट्यूना मछली -** अमेरिका में पायी जाने वाली ट्यूना मछली जीवनभर तैरती रहती है। वह कभी नहीं रुकती। न खाने के लिए और न सोने के लिए।

❊ **लंगफिश -** भले ही मछली का जीवन पानी हो लेकिन लंगफिश पानी के बाहर तीन सालों तक जिंदा रह सकती है। हालांकि वो कोई हलचल नहीं कर पाती।

❊ अधिकांश मछलियां पानी से निकालने पर मर जाती हैं लेकिन अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया व दक्षिण अमेरिका में पाई जानेवाली लंग फिश पानी से निकालने पर भी लंबे समय तक जीवित रहती हैं।

❊ **गोल्फ /गोल्ड फिश** की याददाश्त ठंडे पानी में ज्यादा अच्छी रहती है बजाए गरम पानी के। गोल्डफिश केवल ३ सेकंड में भूल जाती है। गोल्डफिश की स्मृति ठंडे पानी में ज्यादा अच्छी होती है न कि गरम पानी में।

❊ किसी अंधेरे कमरे में रखने पर गोल्डफिश का रंग सफेद पड़ जाता है।

❊ सुनहरे रंग वाली खूबसूरत गोल्ड फिश को हमारी तरह अंधेरे में आराम करना पसंद है। एक्वेरियम में पाली जाली जानेवाली इस मछली की दुनिया भर में ५०० से भी ज्यादा प्रजातियां हैं।

गोल्फ फिश को यह नाम इसके सुनहरे रंग की वजह से मिला है। ये बहुत ही खूबसूरत लगती हैं और काफी सक्रिय होती हैं। ये एक्वेरियम के अंदर दिनभर चक्कर लगाती रहती हैं। शांत बैठना इन्हें पसंद नहीं है। ऐसे एक्वेरियम के लिए इन्हें तैयार करनेवाले लोग इन्हें तालाब में पालते हैं। इस मछली की सबसे अधिक प्रजातियां चीन में पाई जाती हैं। वहां अब तक इस मछली की ३०० से ज्यादा प्रजातियां देखी जा चुकी हैं। इसके अलावा ब्लैक टेलीस्कोप, बबल आई, सेलीस्टियल आई, लायन हेड, ओरंडा आदि भी काफी लोकप्रिय हैं और एक्वेरियम में रखी जाती हैं।

सही वातावरण और साफ पानी मिले तो गोल्ड फिश दो फुट तक लंबी और साढ़े चार किलोग्राम वजन की हो सकती हैं, लेकिन एक्वेरियम में इसका उतना विकास नहीं हो पाता। यह मछली काफी ठंडे पानी में भी रह सकती है। नदी, तालाब, झील आदि में पाई जानेवाली यह मछली पानी के अनुसार अपना मूड बदलती है। अनेक आकार और रंगों में पाई जानेवाली गोल्फ फिश को जैसे ही अंधेरे में रखा जाता है, वह धीरे-धीरे अपना रंग बदलकर सफेद कर लेती है।

गोल्ड फिश की उम्र काफी लंबी है और यह ४० साल से भी ज्यादा उम्र तक जिंदा रह सकती है, लेकिन एक्वेरियम में यह छह से आठ साल तक ही जिंदा रह पाती है।

वह रंग और आकार तो पहचानती ही है, आवाज को भी पहचान लेती है। वह १५ फुट की दूरी से भी चीजों को पहचान लेती है और अगले तीन साल महीने तक उसे याद रखती है।

गोल्ड फिश अपनी आंखें बंद नहीं करती। वह हमारी तरह सोती भी नहीं। जिस समय वह सुस्त या शांत लगती है, दरअसल वह उस समय आराम कर रही होती है और उसी आराम से उसका काम चल जाता है। लेकिन उसे हमारी तरह अंधेरे में आराम करना पसंद है। जो लोग इसे एक्वेरियम में पालते हैं, वे रात में एक्वेरियम की रोशनी बंद कर देते हैं।

❊ **स्टार फिश मछली** की चार छोटी टांगे होती हैं। इसका कांटा सुई जैसा तीखा होता है। सबसे दिलचस्प बात यह है कि उसकी पूंछ उसके शरीर की कुल आकार की चौगुनी होती है।

❊ सितारा मछली (स्टार फिश) के हर हाथ पर आंखें होती हैं।

❊ पेट बाहर निकाल खाना खाती है स्टारफिश - स्टार फिश को हिन्दी में तारा मछली कहते हैं। इसकी आकृति सितारे के समान होती है। तारा मछली की पांच भुजाएं होती हैं, इन पर असंख्य छोटी-छोटी ट्यूब्स पाई जाती हैं, जो स्टार फिश में पैरों का कार्य करती हैं अर्थात् चलने में सहायक होती हैं। इनका मुंह शरीर की निचली सतह पर बीचोंबीच स्थित होता है। तारा मछली का भोजन ग्रहण करने का ढंग भी विचित्र होता है। जब भी भोजन की आवश्यकता होती है, वे अपना स्टमक (आमाशय) मुंह के मार्ग से बाहर निकालती है और उससे अपने शिकार को ढंक लेती है। वे शरीर के बाहर ही उसे पूरी तरह पचा लेती हैं और आमाशय को पुन: शरीर के अन्दर कर लेती हैं।

स्टार फिश छोटे-छोटे समुद्री जीवों, शैलफिश, कोरल आदि को अपना भोजन बनाती है। शैलफिश के कवच को खोलने के लिए वे अपने सक्शन फीट प्रयोग में लाती हैं। स्पाइडर स्टार फिश मिट्टी और चट्टानों में पाए जानेवाले छोटे-छोटे जीवों को खाती है, जबकि क्रॉउन ऑफ थार्नस् तारा मछली कोरल तक खा लेती है। इनमें जहरीले दंश भी पाए जाते हैं।

तारों जैसा सी स्टार- सी स्टार्स को अक्सर स्टार फिश कहा जाता है। खास बात यह है कि स्टार फिश असल में फिश है ही नहीं, इसीलिए समुद्री वैज्ञानिकों ने इसके बहु प्रचलित नाम स्टार फिश को बदलकर सी स्टार रख दिया।

❊ पुनरुत्पादन नामक तारा मछली की अगर एक भुजा कट जाती है, तो शीघ्र ही उसी स्थान पर दूसरी भुजा निकल आती है।

❊ **स्केट मछली** का आकार बिल्कुल पतंग जैसा होता है। इसका मुंह नोकदार थूथन जैसा और खालें काफी मुलायम होती हैं। यह प्रशांत महासागर और अटलांटिक महासागर में पायी जाती है।

❊ **डॉग फिश** नामक एक समुद्री मादा बच्चे देती है।

❊ **सालमोन** जाति की एक मछली सीढ़ियों पर चढ़ सकती है।

❋ **पेस्यूडोसकरस -** लाल सागर में पाई जानेवाली पेस्यूडोसकरस नाम की मछली की खुराक चट्टाने हैं। यह मछली तटवर्ती चट्टानों को कुतर-कुतर कर खा जाती है।

❋ **टैरपॉन मछली -** अमेरिका के पेंसाकोला तट के पास पॉल रेडमैन नाम के मछुए को २५० पौंड वजन की टैरपॉन मछली मिली जिसका बड़ा हिस्सा मैको शार्क मछली खा चुकी थी।

❋ **सोन मछली -** यदि सोन मछली को लंबी अवधि के लिए अंधेरे कमरे में छोड़ दिया जाये तो प्राय: उसका रंग सफेद हो जाता है।

❋ **पाकू मछली** भी मछलियों की खास प्रजाति है जिसके दांत ठीक मनुष्यों की तरह होते हैं। यह दक्षिण अमेरिका में ही पाई जाती है।

❋ **वैक्सो जिग -** समुद्र के सबसे नीचे तल पर तैरनेवाली मछली वैक्सो जिगस है जो लगभग २३,४०० फीट नीचे तैरती है।

❋ **किलीफिश** एक ऐसी विचित्र मछली है, जिसका जीवनकाल केवल आठ महीने का होता है।

❋ **इलेक्ट्रिक ईल** एक ऐसी विचित्र मछली है, जिसकी त्वचा (चमड़ी) का रंग जाड़ों में सफेद हो जाता है।

ईल नाम की मछली ३०० वोल्ट का झटका मारती है।

❋ इलेक्ट्रिक ईल नामक मछली अपने दुश्मनों से बचने के लिए ४०० वोल्ट का झटका मारती है। इतने पावर से एक दूरदर्शन और फ्रिज मजे से चल सकता है। इससे भी झटकेदार बात यह है कि उसके आधे से ज्यादा शरीर में बिजली पैदा करने की प्रक्रिया चलती रहती है।

❋ करंट मारनेवाली अनोखी मछली - इस मछली की सबसे बड़ी विशेषता ६०० तथा उससे अधिक वोल्ट की बिजली उत्पन्न करना तथा उसका वितरण करना है। सांप जैसी आकृतिवाली यह मछली शत्रुओं से स्वयं को बचाने के लिए उन्हें तेज करंट का झटका मारती है। तेज करंट का शिकार होनेवाले पशु या मनुष्य की मृत्यु तक हो जाती है।

यह मछली अपने शरीर के अन्दर ही बिजली का निर्माण करती है। इसके शरीर में बिजली बनानेवाले तीन इलेक्ट्रिकल अंग होते हैं, जो इसके शरीर के दो तिहाई हिस्से में फैले होते हैं। जब यह किसी बड़े प्राणी या छोटे शिकार को अपने पास देखती है तो उसे जोर का करंट मारती है। दुश्मन पशु या तो मर जाता है या फिर डरकर भाग जाता है।

छोटी मछलियां और मेंढ़क भी बेहोश या मर जाते हैं, जिनको यह अपना भोजन बना लेती है। एक सम्पूर्ण विकसित मछली की लम्बाई २४ मीटर तक होती है। यह नदी के निचले भाग में पाई जाती है। इस प्रकार यह बहुत ही प्रभावी ढंग से खुद की शत्रुओं से सुरक्षा कर लेती है।

❋ **लड़ाकू मछली-** यूं तो आमतौर पर अधिकतर मछलियां खाने के लिए पकड़ी जाती हैं, लेकिन कुछ क्रीड़ा मछली सिर्फ इसलिए पकड़ी जाती हैं क्योंकि लोगों को उनके शिकार से आनंद आता है। क्रीड़ा मछली उन मछलियों को कहते हैं जो बंसी के कांटे में फंसने के बाद बंसी को अपनी ओर खींचने लगती हैं और मछुए से लड़ती हैं। कुछ प्रसिद्ध लड़ाकू मछलियों के नाम है- टूना, सोर्डफिश, टार्पन, सेलफिश और मार्लिन। मीठे पानी की मछलियों में साल्मन का नाम चोटी पर है। शिकारी सुंदर ट्राउट मछलियों को भी बहुत पसंद करते हैं।

❋ **स्टोनफिश -** सबसे जहरीली मछली स्टोन फिश है और अगर इंसान इसको खा जाए तो उसकी मौत भी हो सकती है।

❊ **शॉट्रेकर मछली -** २०० साल उम्र है इस शॉट्रेकर मछली की- आलास्का में ४१ इंच लंबी इस मछली की उम्र २०० साल मानी जा रही है। इसे सिएटल के मछुआरे हेनरी लिबमैंन ने पकड़ा है। रॉकफिश जैसी इस मछली का नाम शॉट्रेकर है। इसका वजन करीब १८ किलो है। यह अलास्का, पूर्वी रूस और उत्तरी कैलिफोर्निया में ९०० से १६५० फीट की गहराई में पाई जाती है। यह सबसे ज्यादा दिन जीवित रहनेवाली मछलियों की प्रजाति में से एक है, जिसकी औसत उम्र १२० साल होती है।

❊ **बाओफिन** नामक मादा मछली अंडे देने के बाद स्वयं उन्हें खा लेती हैं, इसलिये नर बाओफिन को मादा से इन अंडों की रक्षा करनी पड़ती है।

❊ **बटरफ्लाई ब्लेनी** नामक मछली अण्डे एक खाली समुद्री शेल में देती थी।

❊ **बराकुडा-** बराकुडा लगभग ६ फीट लंबी इस मछली की संख्या में भारी कमी होती जा रही है। यह मछली तेजी से तैरने और अपने शिकारी से लड़ने के लिए जानी जाती है।

❊ **ओटफिश -** इस मछली के बारे में सबसे पहले वर्ष १७२२ में पता चला। यह अठारह से तेइस फीट की हो सकती है। वर्ष १८५० एक चित्रकार ने इसकी काल्पनिक तस्वीर बनाई थी। वर्ष १९९६ में कैलिफोर्निया के पास तेईस फीट की ओट फिश मिली जबकि पिछले वर्ष कैलिफोर्निया के तट पर अठारह फीट की मरी हुई ओट फीश मिली।

❊ **ब्लैक स्वेलोवर** एक ऐसी खतरनाक मछली है, जो अपने से बड़ी मछली को भी आसानी से निगल लेती है।

❊ **पिरान्हा** नामक मछली में पानी में पंद्रह मील दूर तक खून की गंध सूंघ लेने की क्षमता होती है।

❊ **पाइप फिश -** बच्चों को पालनेवाली नर मछली पाइप फिश - मछलियों की अनेक प्रजातियों में से एक है पाइप फिश। इन मछलियों की शरीर एक पाइप जैसी होती है, इसीलिए इनका नाम पाइप फिश पड़ा। इस प्रजाति की मछलियों की खासियत यह है कि नर मछली ही अंडों की देखभाल का काम करती है। हालांकि अंडे मादा ही देती है। लेकिन देखभाल का काम नर का ही होता है। नर पाइप फिश के पेट में एक थैला होता है और मादा अंडे देने के बाद अंडों को उसक थैले में रख देती है। उसके बाद नर अंडों की १७-२१ दिन तक देखभाल करता है। करीब २१ दिन बाद शिशु पाइप फिश इस थैली में बने एक चीरे में से बाहर निकलते हैं, जो बिल्कुल वयस्क पाइप फिश जैसे ही होते हैं। बस अंतर होता है तो सिर्फ उनके आकार का क्योंकि ये आकार में छोटे होते हैं।

❊ एक मादा सूर्यमछली एक साल में ३० करोड़ अंडे तक दे देती है और ये अंडे छोटे बिंदु जितने आकार के होते हैं।

❊ विश्व की सबसे बड़ी मछली है डेमन व्हेल शार्क जो दो बसों जितनी लम्बी होती है और करीब २५००० किलो वजनी होती है।

❊ **रे फिश-** यह मछली दिखने में किसी पतंग की तरह होती है। पतंग की तरह ही इसका शरीर लगभग चौकोर होता है और एक कोना आगे की ओर होता है, तो दूसरे कोने पर इसकी पतंग की पूंछ के जैसी लंबी पूंछ होती है।

मछलियों की दुनिया निराली है। कोई विशालकाय है तो कोई बेहद छोटी और खूबसूरत। कोई पानी की गहराई में रहती है तो कोई समुद्र की ऊपरी सतह में, कोई समुद्र में लंबी दूरी तक लगातार तैर सकती है तो कोई हवा में भी उड़ान भर सकती है। विविधताओं से भरी इन्हीं मछलियों में शामिल है रे फिश, जो चिड़िया और पतंग की तरह दिखती भी है और उन्हीं की तरह हवा में उड़ान भी भर सकती है।

समुद्री जीव रे को बटॉयड भी कहा जाता है। इसे मछली की श्रेणी में रखा गया है। यह पानी के ऊपर भी आ सकती है और कुछ दूरी के लिए उड़ान भर सकती है। इस दौरान यह अपने पंखों को किसी बड़े पक्षी की तरह चलाती है।

इसकी लगभग ५६० प्रजातियां होती हैं, जिनमें सबसे लोकप्रिय हैं स्टिंग रे, इलेक्ट्रिक रे, ईगल रे, मान्टा रे, कैडुला रे, बटरप्लाई रे, मोबुला रे आदि। इलेक्ट्रिक रे की ६९ प्रजातियां होती हैं, जिनमें ६ से लेकर २२० वोल्ट तक करेंट होता है। इसी कारण इसका नाम इलेक्ट्रिक रे पड़ा। यह समुद्र में झुंड में रहती है और इसके ग्रुप को स्कूल कहते हैं। इसके ग्रुप में ५० तक रे मछलियां हो सकती हैं। यह मछली समुद्र की ऊपरी परत से लेकर एक हजार मीटर की गहराई तक पाई जाती है। समुद्र की ऊपरी सतह पर रहनेवाली रे मछली को इंसानों के साथ लिखने में भी मजा आता है। इस मछली की लंबाई लगभग ३० फीट तक होती है। वैसे नन्हीं रे मछली १.६ फीट लम्बी होती है। इसकी आयु काफी कम होती है। यह ६ साल तक ही जीवित रह पाती है। चार साल तो इसे बड़ी होने में ही लग जाते हैं। यह न्यूजीलैंड से लेकर अमेरिका और मालद्वीप के समुद्रों में पायी जाती है। मालद्वीप समेत कई जगहों पर तो यह पर्यटकों से साथ खेलती भी है।

❊ **जायंट स्क्विड** नामक समुद्री जीव ६६ फुट तक विकसित हो सकता है। यानि इसका आकार एक टेनिस कोर्ट जितना लंबा हो सकता है। इसकी आंखें विश्व के किसी भी अन्य जीव से बड़ी होती हैं। आकार में एक फुटबाट जितनी बड़ी। ये अपनी आंखों की मदद से अपने शिकार यानि छोटी स्क्विड तथा अन्य मछलियों द्वारा छोड़ी जानेवाली रोशनी की कौंध को देख लेते हैं।

❊ **दैत्यनुमा स्किवड्ज (समुद्रफेनी) -** दैत्यनुमा स्किवड्ज समुद्र में रहनेवाले बहुत बड़े जीव होते हैं, जिनकी लम्बाई लगभग १६ मीटर तक हो सकती है। उनके चूषण अंग के साथ आठ स्पर्शक होते हैं तथा इसके अतिरिक्त दो और स्पर्शक होते हैं, जो उन्हें उनका शिकार पकड़ने में सहायता देते हैं। इन स्पर्शकों का साइज लगभग १० मीटर तक होता है जोकि एक बस से भी बड़ा है। दैत्यनुमा समुद्रफेनी समुद्र में बहुत गहराई में रहते हैं। समुद्र की गहराई में रहने में दूसरे समुद्री जीवों की भांति ये जीव प्रकाशमान होते हैं तथा रोशनी फैलाते हैं, परन्तु स्किवड्ज अंधेरे में सबसे अधिक सुन्दर दिखाई देते हैं क्योंकि वे चारों तरफ भिन्न रंगों की रोशनी फैलाते हैं। जीव-जन्तुओं के संसार में स्किवड्ज की सबसे बड़ी आंखें होती हैं जोकि लगभग ५० सेंटीमीटर बड़ी होती हैं। निश्चय ही उनके लिए बड़ी आंखें जरूरी हैं क्योंकि ये जीव समुद्र में बहुत गहराई में रहते हैं जहां बिल्कुल अंधेरा होता है।

❊ **घोंसले वाली मछली -** खोज के दौरान टार्किजेनर एल्बोमैक्यूलोसस नामक मछली की प्रजाति समुद्र में ही अपना घोंसला बन लेती है। इनके घोंसले की लंबाई २ मीटर होती है।

❊ **उड़नेवाली मछलियां-** मछली जल की रानी है। लेकिन कुछ मछलियां पक्षियों के समान हवा में उड़ती हैं। इन मछलियों को फ्लाइंग फिश कहते हैं। इनकी लम्बाई ५ से.मी. से ५० से मी. तक होती है। फ्लाइंग फिश का उड़ने का ढंग भी अनोखा होता है। पहले ये पानी की सतह पर तेज गति से दौड़ती हैं और फिर हवा में उड़ना शुरू कर देती हैं। उड़ते समय इनके आगे के फिन्स फैल जाते हैं। जब ये जल में उतरती हैं तब वे फिन्स स्वत: सिकुड़ जाते हैं। ये मछलियां हवा में ३५०-४०० मीटर लम्बी उड़ान भर लेती हैं। कभी ये जल की सतह से टकराते-टकराते यानी कि बहुत कम ऊंचाई पर उड़ती और कभी ये उड़कर जलयानों के डेक के ऊपर भी पहुंच जाती हैं।

❊ **डॉल्फिन** एक-दूसरे को सीटी की आवाज से पहचानती हैं। हर डॉल्फिन की सीटी की आवाज अनोखी होती है।

२० साल पहले दूसरी डॉल्फिन की सुनी गई सीटी की आवाज के जरिये बिछड़े साथी को पहचान लेती हैं।

❋ डॉल्फिन नामक मछली सोते समय अपनी एक आंख खुली रखती है।

❋ यदि कोई डॉल्फिन गर्भवती हो तो उसके प्रसूत होने तक अन्य वयोवृद्ध डॉल्फिन उसे अपनी पीठ पर लेकर विचरण करती है।

❋ मैरिनेलैंड में रहनेवाली ५२ वर्षीय डॉल्फिन नैली मनुष्य के साथ रहनेवाली सबसे उम्रदराज डॉल्फिन है। उसे जैक्सनविले विश्वविद्यालय से डॉक्टरेट भी हासिल है।

❋ डॉल्फीन मछली भी एक-दूसरे को मनुष्य की तरह ही उनके काम से आवाज देती हैं।

❋ मादा डॉल्फिन, नर डॉल्फिन की तुलना में ज्यादा समझदार होती है।

❋ डॉल्फीन को सांस लेने के लिए भी अपनी याददाश्त का सहारा लेना पडता है।

❋ गंगा नदी में मिलनेवाली डॉल्फिन अपने आप में अनुठी है। यह देख नहीं सकती। पर पिछले कुछ सालों में इस डॉल्फिन की संख्या में काफी तेजी से कमी आई है।

बनारस शहर डॉल्फिंस के मामले में अनोखा कहा जा सकता है। यहां जिस तरह की डॉल्फिन मिलती है, वह अपने आप में काफी दुर्लभ मानी जाती है।

डॉल्फिन पानी में रहती है। कई बार ये पानी पर तैरते बैलूनवाले खिलौने की तरह भी दिखती हैं। डॉल्फिन भारत और पाकिस्तान में खूब मिलती हैं। ये अंधी होती हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि इनकी आंखें नहीं होतीं। आंखें तो होती हैं, लेकिन इसमें लेंस नहीं होते हैं।

१० साल पहले हमारे यहां करीब ६००० डॉल्फिन पाई जाती थीं। ये गंगा में अपनी उछल-कूद, कलाबाजियों और अठखेलियों की वजह से बनारस के लोगों के लिए एक तरह से मनोरंजन का साधन होती थीं। आज मुश्किल से गंगा नदी में ३००० डॉल्फिन ही रह गई हैं।

हाल में गंगा में बढ़ रहे प्रदूषण भी इसका कारण है। गंगा में टॉक्सिन कीटनाशक के स्तर में बढ़ोतरी के पीछे एक बड़ी वजह है इसका खेतों में ज्यादा इस्तेमाल होना। कृषि क्षेत्रों से आनेवाला पानी कई बिंदुओं से होकर गंगा में मिल जाता है। किसान इस कीटनाशक का प्रयोग वर्षों से करते आ रहे हैं। यह पानी में रह रहीं डॉल्फिन के शरीर में वसा के रूप में जमा हो जाता है, जो धीरे-धीरे इनकी मृत्यु का कारण बनता है। एक और बड़ी वजह मछुआरों के द्वारा इस्तेमाल हो रहे नायलॉन के जाल हैं। इसमें अधिकांश डॉल्फिन फंस जाती हैं और इन्हें मार दिया जाता है। डॉल्फिन का तेल मछुआरों द्वारा कैट फिश के चारे के रूप में इस्तेमाल किया जाता है।

❋ डॉल्फिन मछली ५ से ८ मिनट तक अपनी साँस रोक सकती हैं।

❋ डॉल्फिन के शिकार का तरीका - जब डॉल्फिन शिकार का पीछा करती है तो वह धीमी सी आवाज निकालती है, जिससे शिकार का ध्यान बंट जाता है और वह बेसुध हो जाता है और इस तरह डॉल्फिन आसानी से अपने शिकार को पकड़ लेती है। जीवों के विशेषज्ञों ने डॉल्फिन की ध्वनि भी रिकॉर्ड की, जिससे पता चलता है कि डॉल्फिन जब अपने शिकार के बहुत करीब होती है तो बहुत कम आवृत्ति की ध्वनियां उत्पन्न करती है, जिसके कारण शिकार की आवाज सुनने की क्षमता खत्म हो जाती है और वह बदहवास सा हो जाता है। यही नहीं यह डॉल्फिन किसी समुद्र तट की रेत में

छुपे जीवों का शिकार करने के लिए जब ध्वनि उत्पन्न करती है तो ये जीव रेत में से चौंककर बाहर आ जाते हैं और अक्सर घबरा कर समुद्र में कूद जाते हैं और इस तरह डॉल्फिन का उद्देश्य पूरा हो जाता है। विशेषज्ञों ने ध्वनि की जांच करने के लिए टेप रिकॉर्ड से समुद्र में किसी मछली के पास ध्वनि की। उन्होंने पाया कि ध्वनि सुनकर मछली घबरा जाती है और एक ही जगह तैरने लगती है। यह भी देखा गया कि कई बार सदमे से वह हिल भी नहीं पाती है।

❋ सुसू एक डाल्फिन है, जोकि अंधी होती है। यह प्राय: उत्तरी भारत की बड़ी-बड़ी नदियों में पाई जाती है। यह गंगा के शुद्ध पानी में रहना पसंद करती है और इसीलिए इन्हें गंगा की डॉल्फिन भी कहा जाता है। इनकी आंखें बिना पुतली के छोटी-छोटी होती हैं। सुसू केवल अंधकार और प्रकाश में ही अंतर कर सकती है। यह अपना भोजन नदी की कीचड़वाली सतह से अनुभव करनेवाली थुथनी से प्राप्त करती है तो यह अपने नाक से बहुत शोर करती है। सुसू सोने के अलावा हर समय शोर करती रहती है। सुसू पानी के तेज बहाव में रहना पसंद करती है और अपने आपको बहने से बचाने के लिए यह लगातार तैरती रहती है। सुसू की गर्दन डॉल्फिन से भिन्न होती है जो भोजन की तलाश करने में उसकी सहायता करती है।

❋ डॉल्फिन तैरते हुए सो भी सकती है।

❋ डॉल्फिन - डॉल्फिन बहुत ही समझदार होती है। यह अपने आसपास की समस्याओं को बड़ी ही आसानी से सुलझा लेती हैं। कई बार डॉल्फिन विपरीत हालातों में इंसान से भी ज्यादा समझदारी दिखाती है।

❋ डॉल्फिन स्पंज से अपने भोजन को करती है साफ सुथरा - केवल इंसान ही नहीं अनेक जानवर अपने अनुभवों और जरूरतों के आधार पर विभिन्न किस्म के साजो-सामान का इस्तेमाल कर लेते हैं। चिंपांजी लकड़ी की टहनियों के सहारे चींटियों के बिलों में से ढेर सारी चींटियों को उस पर चढ़वाकर फिर उनको आराम से खाते हैं। बंदरों की ही जापान में पाई जानेवाली एक अन्य प्रजाति के बंदर अपने खाने के सामान पर लगी रेत को निकालने के लिए पहले उसे समुद्र के पानी में धो लेते हैं।

जरूरत के काम के लिए साजो सामान का इस्तेमाल समुद्र के भीतर भी किया जाता है। वेस्टर्न ऑस्ट्रेलिया के पास स्थित शार्क बे में की गई रिसर्च में यह बात सामने आई कि वहां रहनेवाली बॉटलनोज डॉल्फिन्स स्पंज से अपने खाने को साफ करने का गुर बचपन में ही मां के फ्लिपर्स पर सवार होकर सीख लेती हैं। ये डॉल्फिन्स पहले समुद्र की तहलटी से कुछ स्पंज अपनी नाक पर रख लेती हैं। बाद में यह शिकार की तलाश करती हैं।

स्पंज का इस्तेमाल करनेवाली सारी डॉल्फिन्स एक-दूसरे की रिश्तेदार हैं। इन सबमें एक ही किस्म का माइटोकोंड्रियाल डीएनए होता है जो कि केवल मां की ओर से ही बच्चे को मिलता है। यह परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। साथ ही तकरीबन सभी मादाओं में से कोई न कोई तो स्पंज का इस्तेमाल करते हुए मिल जाती है।

❋ **सी काउ -** डॉल्फिन की तरह बुद्धिमान है सी काउ।❋ सी काउ यानी समद्री गाय सिरेनिया समूह का एक शाकाहारी जीव है, जो एक तरह का मैमल यानी स्तनपायी जीव है। यानी यह अपने बच्चों को दूध पिलाती है। इस समूह में ड्यूगॉन्ग, मनाती और स्टेलर प्रमुख हैं।

इसका चेहरा काफी हद तक जमीन पर रहनेवाली गाय की तरह दिखता है। इसके दो हाथ होते हैं और एक पूंछ।

इसकी प्रजातियों में मनाती प्रजाति सबसे लोकप्रिय है, जिनके बारे में काफी जानकारियां भी मिलती हैं। इस जीव का जीवन ६ करोड़ साल पहले शुरू हो चुका था। इसकी उम्र औसतन ६० साल होती है।

इस जीव की लंबाई औसतन ४ मीटर यानी लगभग १३ फीट होती है और इसका वजन लगभग ६०० किलोग्राम तक होता है। बेबी मनाती का वजन जन्म के समय लगभग ३० किलोग्राम होता है।

इसका पेट तो एक सामान्य घोड़े के आकार का होता है, लेकिन इसकी आंत की लंबाई बहुत अधिक होती है। एक घोड़े की आंत की लंबाई औसतन ७-८ मीटर होती है, जबकि समुद्री गाय की आंत की लंबाई औसतन ४५ मीटर होती है।

समुद्र में रहनेवाला यह जीव आधा दिन सोता ही रहता है। यह २० मिनट तक बिना सांस लिए पानी में रह सकता है। लेकिन उसके बाद इसे सांस लेने की जरूरत पड़ती ही है।

वैसे इसके तैरने की रफ्तार ५ से ७ किलोमीटर प्रति घंटे की होती है, लेकिन थोड़ी दूर तैरना हो तो यह ३० किलोमीटर की रफ्तार से भी तैर सकता है। इसकी बुद्धि समझने और सीखने की क्षमता डॉल्फिन मछली की तरह होती है। इस वजह से यह इंसानों के साथ दोस्त की तरह व्यवहार करता है। मनाती दो साल के अंतराल पर बच्चे को जन्म देती है और एक बार में एक ही बच्चे को जन्म देती है।

यह जीव शाकाहारी होता है और गाय की तरह ही तमाम तरह की (समुद्र में पाई जानेवाली) घास, पौधों को अपना भोजन बनाता है। यह प्रतिदिन आमतौर पर अपने वजन के १० से १५ प्रतिशत के बराबर भोजन करता है। यानी अगर किसी मनाती का वजन ४०० किलोग्राम है तो उसका भोजन प्रतिदिन ४० से ६० किलोग्राम के बीच हो सकता है।

यूएसएफडब्ल्यूएस यानी यूनाइटेड स्टेट फिश एंड वाइल्ड लाइफ सर्विस के अनुसार जनवरी २०१६ तक मनाती की जनसंख्या १३ हजार थी, जिनमें से ६३०० आबादी अकेले फ्लोरिडा के समुद्र में थी। वैसे यह इंडियन ओशियन, अरेबियन सी आदि में भी पाया जाता है।

मानव की तरह ही जीव जंतुओं में भी सहयोग की भावना होती है। समय-समय पर विभिन्न जीवों ने इसे सिद्ध किया है। कुत्ते, बिल्लियों, नेवलों आदि के सहयोग की कई कहानियां सुनने-पढ़ने में आती हैं। इन्हीं जीवों में डॉल्फिन मछलियां भी काफी सहयोगात्मक प्रवृत्ति की होती हैं। कई डाल्फिन अपनी सूझ-बूझ संवेदनाओं एवं परोपकारी प्रवृत्ति के कारण विश्व प्रसिद्ध हो गई हैं।

घटना न्यूजीलैंड के होकीआंगा बंदरगाह की है। सन १९५० के दशक में एक मानव प्रेमी डॉल्फिन ओमो बहुत ही प्रसिद्ध हुई थी। उसका प्रेम जील नाम की एक तेरह वर्षीया बालिका से था, जील से ओमो इतनी घुल-मिल गई थी कि रोज शाम को वह उसका इंतजार करती। जील शाम के समय नियमित उससे मिलने जाती। ओमो उसे अपनी पीठ पर बिठाकर निकटवर्ती ओमोपियर ग्राम तट तक ले जाती। अपनी इस प्रवृत्ति के कारण स्थानीक लोगों में ओमो बहुत ही लोकप्रिय थी। शाम के समय सैकड़ों लोग उसे देखने के लिए बंदरगाह पर इकट्ठा हुआ करते थे। इस घटना से वह इतनी प्रसिद्ध हो गई कि न्यूजीलैण्ड में ओमो के संरक्षण के लिए कानून बनाया गया। कानून के तहत ओमो को परेशान करना, शिकार करना, उसे यों ही पकड़ना अपराध था।

इस घटना के बाद लोग ओमो से कौतुक तो करते, परन्तु छेड़छाड़ नहीं करते। ओमो भी बंदरगाह पर स्नान करनेवाले लोगों को करतब करके दिखाती। परन्तु इतनी भीड़ में जब उसे जील दिखाई देती तो वह तुरन्त उसके पास आ जाती तथा उसे जल विहार पर ले जाती।

एक दिन ऐसे ही ओमो जील को पीठ पर बैठाए जल विहार पर निकली। कुछ असावधानीवश जील फिसलकर पानी में

गिर गई। ओमो को जैसे ही पता चला कि जील उसकी पीठ से गिर गई वह तुरंत पानी में डुबकी लगाकर उसे वापस पीठ पर बिठाकर ऊपर ले आई। इस घटना के बाद वह आगे न बढ़कर तुरंत वापस बंदरगाह तट पर आई। जील को बंदरगाह तट पर छोड़कर वह गहरे जल में समा गई। उस दिन के बाद वह फिर कभी बंदरगाह पर दिखाई नहीं दी।

जील कई दिनों तक नियमित बंदरगाह पर आती। ओमो की प्रतीक्षा करके निराश लौट जाती। शायद घटना की गंभीरता को ओमो ने भांप लिया था। किसी प्रकार का दोष वह अपने ऊपर लेना नहीं चाहती थी।

❋ समुद्र में एक ऐसा जीव पाया जाता है जिसे समुद्री गाय कहते हैं। हालांकि धरती पर पाई जानेवाली गायों से इसका कोई संबंध नहीं होता। ये काफी बड़े आकार में स्तनपायी जंतु हैं। इनका चेहरा मानव से मिलता है और पूंछ मछलियों से। ये समुद्री घास खाती हैं।

❋ समुद्री घोड़े का सिर घोड़े से मिलता है। वास्तव में यह एक प्रकार की मछली ही है किंतु इसका व्यवहार सामान्य मछलियों से भिन्न होता है।

❋ **कछुआ-** कछुआ अपने कवच के साथ ही जन्म लेता है। कछुए का कवच उसके शरीर का ही एक भाग होता है, जो कि आधा शरीर के ऊपरी भाग में होता है और शेष आधा शरीर के निचले भाग में। कवच में दो परतें होती हैं बाहरी परत, त्वचा के कठोर उत्तकों से बनी होती है और आंतरिक परत, अस्थि प्लेटों के एक समूह से। यह कछुए के कंकाल का एक भाग होती हैं। ऊपर के साथ आधे भाग और नीचे के आधे भाग के बीच में थोड़ा-सा खुला भाग होता है, जिसमें से कछुआ अपना सिर, टाँगे व पूँछ बाहर निकाल सकता है या भीतर खींच सकता है। कछुआ इन दोनों भागों का उपयोग शत्रुओं से रक्षा करने में करता है।

मादा कछुआ, पानी और जमीन दोनों ही स्थानों पर अपने अण्डे देती है। अपने पिछले पैरों की सहायता से वह जमीन में एक गड्ढा खोदती है। उसी गड्ढे में वह अण्डे देती है और मिट्टी या सड़े हुए पौधों से उसे ढँक देती है। अण्डे देने के बाद वह दूर चली जाती है और कभी अपने अण्डों के पास वापस नहीं लौटती है। अण्डे सूर्य की गर्मी से ही ऊष्मा पाते रहते हैं। लगभग दस दिन के पश्चात शिशु कछुए अण्डों के कवच को तोड़कर बाहर निकल आते हैं और भोजन की तलाश में समुद्र या जमीन की ओर प्रस्थान कर जाते हैं।

❋ कछुओं की उम्र मनुष्यों से भी अधिक होती है, समस्त प्राणियों में सर्वाधिक दीर्घायु कछुआ है, एक मोरियन नर कछुआ १५२ वर्ष तक जीया था, १९१८ में एक दुर्घटना में उसकी मृत्यु हुई थी, वैसे कछुआ की उम्र ४०० वर्ष तक बताई गई है। सबसे अधिक दिन तक जीने वाला प्राणी कछुआ (३०० वर्ष) है। कछुओं के दांत नहीं होते।

❋ कछुए का जीवन काल सबसे लंबा होता है।

❋ एक मिनट में कछुआ १३ मीटर तो मछली ६० मीटर दूर जा सकती है।

❋ कछुओं की कई प्रजातियां पीठ से सांस लेती हैं।

❋ पानी व जमीन दोनों पर रहनेवाले जीवों में कछुआ सबसे ज्यादा १५२ वर्षों तक जी सकता है।

❋ कछुआ एक ऐसा प्राणी है जो स्थल पर भी रह सकता है और जल में भी। इसके मुंह में दांतों के स्थान पर हड्डी की एक प्लेट-सी रहती है जिसके द्वारा कछुआ आसानी से मांस तक काट सकता है।

❋ कछुए चार इंच के भी होते हैं और इतने विशाल कि इन पर बैठा भी जा सकता हैं। विश्व में इनकी सैकड़ों प्रजातियां हैं।

चित्रा इंडिका- यह छोटे सिरवाला व कोमल कवचवाला कछुआ है, जो ज्यादातर भारत और पाकिस्तान की नदियों में पाया जाता है। यह काई व गहरे रंग का होता है। इसके कवच पर टेढ़ी-मेढ़ी आकृतियां कुछ इस प्रकार बनी हुई होती हैं, जैसी नदियों में पायी जानेवाली वनस्पतियों की होती हैं। यह शारीरिक संरचना इसे सुरक्षा प्रदान करती हैं, जैसी नदियों में पायी जानेवाली वनस्पतियों की होती हैं। उत्तर भारत में इसे सोम या स्येतर के नाम से जाना जाता है। इसका निवास स्थान तराई की नदियों में होता है। ये शारदा, घाघरा, गंगा, गोदावरी, सिंध, कावेरी कृष्णा और महानदी आदि में पाया जाता है। इसमें सूंघने की अपूर्व क्षमता होती है। ज्यादातर अपना भोजन रात में मछलियों को झटके से मारकर करता है, जिस कारण इसे फाइटर भी कहा जाता है। यह पूरे दिन नदी के तलहट्टी में विश्राम करता है, सिर्फ सांस लेने के लिए बार-बार बाहर आना पड़ता है। मानव से खतरों के कारण इसे अंतर्राष्ट्रीय संस्था आइयूसीएन द्वारा संकटग्रस्त प्रजाति घोषित कर दिया गया है। भारतीय वन्य जीव संरक्षण अधिनियम के तहत् श्रेणी १ में रखा गया है।

१९९० में कछुओं की प्रजाति को बचाने और उसकी रक्षा के लिए अमेरिकन टोरटॉइज रेस्क्यू संगठन की स्थापना की गयी।

❋ कछुए समुद्र का खारा पानी पी तो लेते हैं इसमें मौजूद नमक को ये अपने आंसुओं के साथ मिलाकर आंखों के पास स्थित एक ग्रंथि की सहायता से शरीर से बाहर बहाते रहते हैं।

❋ ग्रीन टरटल के अंडे न केवल देखने में बिल्कुल पिंगपांग की गेंद के जैसे होते हैं बल्कि ये गेंद की ही तरह उछलते भी हैं।

❋ कछुए अस्थियों के खोल से पहचाने जाते हैं। जिसके दो भाग होते हैं- ऊपर की ओर केरापेस और नीचे की ओर प्लासट्रोन।

खोल में शल्की ढालों की एक बाहरी परत होती है तथा अंदर की परत अस्थियों की पट्टियों से बनी होती है। शरीर खोल के अंदर रहता है तथा गर्दन, पैर और पूंछ खोल के बाहर स्वतंत्र रूप से गतिशील होते हैं। इसलिए कीलोनिया गण का यह प्राणी डिब्बे में सुरक्षित प्राणी के समान है।

कछुओं की खाने की आदतें भिन्न हैं, कुछ शाकाहारी हैं व कुछ सर्व भक्षी हैं। नर-मादा कछुए रूप को देखकर आसानी से नहीं पहचाने जा सकते। नर में सामान्यतया पूंछ लंबी और प्लासट्रोन दबा हुआ अर्थात अवतल होता है। मादा मिट्टी में अंडे देती है और उन्हें सेने के लिए दबा देती है। अधिकतर समुद्र कछुओं में अंडे सेने की अवधि ४० से ७० दिनों तक की होती है। कछुओं की आयु लंबी होती है। एक विशाल कछुए (जियोकीलोन जाइगेन्टिया) का हिन्द महासागर के सिसली द्वीप समूह में १५२ साल तक जीवित रहने का प्रमाण मिला है।

चीमड़ कछुआ- हिन्द महासागर में पाये जानेवाले चीमड़ कछुए का वजन ४०० से ७०० कि.ग्रा. तक होता है। यह संसार के जीवित कछुओं में सबसे बड़ा कछुआ है। कड़ी और चिम्मड़ खाल के कारण इसे आज के कछुओं में सबसे प्राचीन माना जाता है। इसकी खाल में हड्डियों के टुकड़ों से लगता है कि यह पूर्वज कछुओं की हड्डियों के खोल के समान है। शरीर का ऊपरी भाग केरापेस, चिकना और रबर जैसा होता है, जिसमें कुछ लंबाई में उभरी हुई रेखाएं होती हैं। त्रिकोणाकार शरीर, बड़ा सिर और भारी गर्दन इस कछुए के विशेष लक्षण है।

हरा समुद्री कछुआ- हरा समुद्री कछुआ संसार के उष्ण-कटिबंधीय और उप-उष्ण-कटिबंधी महासागरों में पाया जाता है। इसका शरीर चपटा, चिकना और हृदय के आकार का होता हे। इसके केरापेस में अस्थिविकास पूर्ण रूप से नहीं हुआ है।

❋ सुंदर वन के कछुए - स्वाद और औषधि की चाह में मारे जा रहे हैं सुंदर वन के आसपास पाए जानेवाले कछुए। भारत, बांग्लादेश, म्यांमार, थाईलैंड, वियतना, मलेशिया आदि देशों में पाए जाते हैं नदियों वाले कछुए। भारत में यह खासतौर पर सुंदर वन के आसपास के इलाकों में पाए जाते हैं। भारत में दवा बनाने में इनका प्रयोग करने की वजह से इन्हें मार दिया जाता है। कंबोडिया में इनके अंडों से एक लजीज व्यंजन तैयार किया जाता है। यही वजह है कि इनकी संख्या इन देशों में नाममात्र रह गई है। कंबोडिया सरकार ने वर्ष २००५ में इसे राष्ट्रीय जलजीव घोषित कर दिया ताकि इनका संरक्षण हो सके। नदी वाले कछुए छोटे-छोटे जलीय पौधों के अलावा मछलियों के अंडे, घोंघे आदि भी चाव से खाते हैं। नर को दूर से ही पहचाना जा सकता है, क्योंकि आकार में ये छोटे होते हैं, लेकिन इनकी पूंछ लंबी होती है।

❋ कछुए के मुंह में दांत नहीं होते।

❋ ऑस्ट्रेलिया में सबसे बड़ा कछुआ जिसकी लंबाई १२ फुट व मोटाई १० इंच होती है, पाया जाता है।

❋ सबसे तेज भागनेवाला टर्टल - कछुआ भले ही सबसे सुस्त माना जाता हो, लेकिन एक कछुए ने तो कमाल कर दिखाया है। उसने सबसे तेज भागने का विश्व रिकॉर्ड बनाया है। ब्रिटेन के बर्टी नामक इस कछुए ने यह रिकॉर्ड ब्रिटेन स्थित एडवेंचर वैली में बनाया है। ट्रैक पर दौड़ने के दौरान वह ०.२८ मीटर प्रति सेकेंड की गति पर भी पहुंचा।

❋ प्रशांत महासागर में कछुए की एक प्रजाति पायी जाती है। लेदरी टर्टल। इसकी लंबाई लगभग ढाई मीटर तथा वजन ८०० किलोग्राम से भी अधिक होता है।

❋ **जाइंट स्क्विड -** सबसे बड़ी आंखें जाएंट स्क्विड की मानी जाती हैं। इसकी आंखें लगभग २५ सेंटीमीटर की होती हैं और इनका आकार किसी फुटबॉल के जितना होता है। यहां तक कि दुनिया के सबसे बड़े जीव ब्लू व्हेल की आंखें भी ११ सेंटीमीटर की ही होती हैं। माना जाता है कि जाइंट स्क्विड इन आंखों की बदौलत ही खुद को स्पर्म व्हेल के आक्रमण से बचा पाती है। असल में, जाइंट स्क्विड हल्की लाइट को भी काफी दूरी से देख सकती है। हालांकि स्पर्म व्हेल अंधेरे में चमकती नहीं है, लेकिन वह रोशनी छोड़नेवाली दूसरी चीजों को परेशान करती है। इससे जाइंट स्क्विड सतर्क हो जाती है और अपना बचाव कर लेती है।

❋ **एम्फीबियन** जो कभी बढ़ता नहीं - एक्सोलोटी सालामांडर जाति का एक नया जीव है जोकि अमेरीका और मैक्सिको की झीलों तथा तालाबों में पाया जाता है। यह विचित्र सैलामांडार कभी भी एक पूर्ण विकसित सैलामांडर का रूप नहीं प्राप्त करता। यह हमेशा अपने लारवा वाले रूप में ही बना रहता है। बहरहाल यौनिक दृष्टि से यह परिपक्व होता है तथा प्रजनन कर सकता है। इस जीव की कुछ किस्में काले रंग की चित्तियों वाली होती हैं, जबकि अन्य गहरे धूसर रंग के होते हैं। पानी के नीचे सांस लेने के लिए इसके शरीर पर पंखयुक्त गलफड़े होते हैं।

❋ **शिकारी प्लैटीपस-** प्लैटीपस पानी में रहने के साथ ही जमीन में भी आसानी से रह लेता है। जमीन और पानी दोनों ही जगह यह बहुत फुर्ती से अपने शिकार को पकड़ता है। यह जीव पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में व तस्मानिया के जलीय इलाकों में पाया जाता है। इनका शरीर काफी बड़ा व लंबाकार होता है। इनके बाल भूरे रंग के होते हैं व इनकी पूंछ छोटी व झबरीली होती है।

इनके बाल चमकीले, वॉटरप्रूफ होते हैं। इनके पैर छोटे, गद्दीदार व झिल्ली नुमा होते हैं। इनका जबड़ा रबड़ की तरह मोटा होता है। नाक चपटी व चोंच के आकार की होती हैं। आंखें छोटी होती हैं। परंतु इनमें देखने की क्षमता तेज होती

है। जीव विज्ञानियों के अनुसार इनके शरीर का वजन १० किलोग्राम या इससे ज्यादा भी हो सकता है, जबकि शारीरिक लंबाई ३ फीट होती है। इनका प्रजनन काल जून से अक्टूबर माह मे बीच होता है। यह मांसाहारी जीव है। इसके भोजन में छोटी मछलियां व छोटे जलीय जीवों के साथ केकड़े भी प्रमुखता से शामिल हैं।

यह ज्यादातर पानी की ऊपरी सतह पर तैरते हैं। यह अनोखा जलीय जीव अपेन आंख, कान व नाक एक साथ बंद कर सकता है। इनमें शिकार करते समय करंट पैदा करने की अद्‌भुत क्षमता होती है। यह शिकार करते समय अपने शरीर को ऊर्जा से भर लेते हैं, जिससे इनके शरीर का तापमान बढ़ जाता है और शिकार को छूते ही शिकार मर जाता है।

❊ **ओलम** (एक समुद्री जीव) जो पानी की अंधेरी गुफाओं में रहता है, की आंखें प्रत्यावर्तित होती हैं और ये इसकी चमड़ी के नीचे होती है।

❊ **घड़ियाल -** घड़ियाल द्वारा अपने मुंह को खोलनेवाली मांस पेशियां इतनी कमजोर होती हैं कि एक व्यक्ति अपने हाथों से उसके मुंह बंद रख सकता है।

घड़ियाल (एलीगेटर्स एवं गेविएलिस) भी दिखने में मगरमच्छ जैसे दिखाई देते हैं परंतु एलीगेटर्स या घड़ियाल का सिर चौड़ा एवं गोल होता है, दांत असमान होते हैं, एवं पूंछ लंबी व भारी होती है। ३-४ मीटर लंबे ये घड़ियाल उथले जल में पाये जाते हैं।

इसी प्रकार घड़ियाल जैसा दिखाई देनेवाला गेविएलिस भारत की गंगा, ब्रह्मपुत्र आदि नदियों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। यह घड़ियाल ६.५ मीटर की लंबाई तक होते हैं। इनका रंग तेजूनी होता है। मगरमच्छ एवं एलीगेटर्स घड़ियाल की तुलना में इसका जबड़ा अत्यंत ही लंबा चोंच के समान दिखाई देता है। क्रोकोडाइल्स समूह के इन प्राणियों की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता यह होती है कि इनके हृदय में चार कक्ष होते हैं जबकि रेप्टीलिया संघ के सभी प्राणी तीन कक्ष के ही होते हैं। चार कक्षोंवाले हृदय पक्षी वर्ग के एवं स्तनधारी प्राणियों में ही पाये जाते हैं। मगरमच्छ एवं घड़ियाल का अस्तित्व इन दिनों खतरे में हैं क्योंकि मानव अपने फायदे के लिए इन्हें मारकर इनकी त्वचा को बेचकर रूपये कमाते हैं।

❊ घड़ियाल भी रहने के लिए मिट्टी में घर बनाते हैं। ये अक्सर नदी किनारे पेड़ पौधों के सड़े पत्तों को एकत्रित करते हैं और उन्हें कीचड़ में लपेटकर ऊंचे टीलेनुमा बना देते हैं। इन्हीं टीलेनुमा घोंसले में मादा घड़ियाल अंडे देती है, और बाद में इन्हीं में घड़ियाल धीरे-धीरे चलना फिरना सीखते हैं।

❊ घड़ियाल जब शिकार को उदरस्थ कर लेता है तो उसके शरीर में लवणों की मात्रा बढ़ जाती है जिसे बाहर निकालने के लिए द्रव्य रूप में वह उन्हें आंख से निकालता है। यही घड़ियाली आंसू होते हैं।

❊ घड़ियाल- अपने आंसुओं के कारण प्रसिद्ध है।

❊ रेंगनेवाला सबसे बड़ा जंतु घड़ियाल है।

अक्सर लोग इस बात को सोचकर चक्कर में पड़ जाते हैं, कि घड़ियाल अपना शिकार गपकने के बाद रोने क्यों लगता है। उसकी आंखों से आंसू टपकने लगते हैं। जिन्हें सही जानकारी नहीं होती, वे तो यही समझते हैं कि अभी-अभी किए गए शिकार की मौत पर दु:खी होकर घड़ियाल आंसू बहा रहा है। यदि घड़ियाल इतना ही संवेदनशील और दयालु होता, तो ऐसा काम करता ही क्यों। इसीलिए तो मक्कार व झूठी सहानुभूति दर्शानेवालों के लिए घड़ियाली आंसू बहाना जैसी कहावत का प्रयोग किया जाता है। सिर्फ घड़ियाल ही नहीं कुछ खास मादा कछुए भी ऐसे आंसू बहाते हैं।

वस्तुत: घड़ियाल की आंखों से आंसू निकलना एक ऐसी जैविक प्रक्रिया के फलस्वरूप होता है, जिसे टाला नहीं जा सकता। शिकार को गपकने के बाद घड़ियाल के शरीर में ऐसे लवणों की मात्रा बढ़ जाती है, जिनका शरीर में रहना हानिप्रद होता है। इन्हें शरीर के बाहर निकालने का कार्य कुदरत ने कुछ लवण-ग्रंथियों को बख्शा है, इनकी नलिकाएं आंखों के किनारों तक आकर खुलती हैं। ये ग्रंथियां लवणों को अपने में जज्ब कर, जब नलिका द्वारा आंखों के किनारों पर लाती हैं, तो घड़ियाल की आंखों से आंसुओं की लड़ी बह निकलती है। भूल से अगर कोई जीव घड़ियाल के करीब सांत्वना देने पहुंच गया तो उसे भी गपकते घड़ियाल को देर नहीं लगती।

एलिगेटर- क्रोकोडाइल की अपेक्षा इसका सिर अधिक चौड़ा होता है। ये प्राय: उथले पानी में पड़े रहते हैं। इनकी आंखें और नासाछिद्र पानी के बाहर दिखाई पड़ते हैं। इन्हें यदि छेड़ा जाये तो ये पानी के नीचे मिट्टी में घुस जाते हैं। इनकी लंबाई १० से १२ फुट तक होती है। इनकी मादा २० से ३० अंडे देती है।

गोविएलिस- यह भारतीय घड़ियाल है। भारत में तो यह पाया ही जाता है, इसके साथ वह मलेशिया में भी पाया जाता है। इसका आकार सबसे अधिक विशाल होता है। यह २० फुट लंबा होता है।

❊ सरीसृप वर्ग के मकर गण के गेविएलिस वंश का सबसे लंबा जीव है, जो केवल भारतवर्ष के उत्तरी भाग की बड़ी ओर उनकी सहायक नदियों में पाया जाता है। मगरमच्छ का निकट संबधी होकर भी इसका थूथन उसकी तरह छोटा न होकर काफी पतला और लंबा रहता है और नरों के प्रौढ़ हो जाने पर सिरे पर एक गोल लोटे जैसा कुब्बा सा निकल आता है, जो इसकी तूंबी कहलाता है।

घड़ियाल के लंबे थूथन में ऊपर और नीचे की ओर बहुत लंबे, तेज, नुकीले दाँत होते हैं, जो मुंह बंद करने पर इस प्रकार बैठ जाते हैं कि उसकी पकड़ से किसी भी शिकार का छूट निकलना आसान नहीं होता। इसके ऊपरी थूथन में ऊपर की ओर हर तरफ २७-२९ दाँतों की पंक्ति रहती है। घड़ियाल जलचर प्राणी है, जो पानी के भीतर काफी देर तक रह लेता है, लेकिन वह मछलियों की तरह पानी में घुली हुई हवा के द्वारा सांस नहीं ले सकता और इसीलिये उसे थोड़ी थोड़ी देर के बाद पानी की सतह पर सांस लेने के लिये आना पड़ता है। पानी भीतर यह अपनी दुम को इधर-उधर चलाकर बहुत तेजी से आगे बढ़ता है और खुश्की पर भी अपने चारों पैरों के सहारे अपने भारी शरीर को उठाकर काफी तेज भाग लेता है। इसे हम दिन में अक्सर नदियों के किनारे धूप सेंकते देख सकते हैं, लेकिन इसका शाम का समय मछलियों के शिकार में ही बीतता है। घड़ियालों का जनन अंडों द्वारा होता है। नर एक प्रकार की आवाज करके मादा को अपने पास आने के लिये आमंत्रित करता है। इसके नर और मादा दोनों के शरीर में दो दो जोड़े ग्रंथग्रंथियों के रहते हैं, जिनमें से एक जोड़ा तो गले की बगल और दूसरा अवस्कर या क्लोएका के भीतर रहता है। इनकी सूंघने और सुनने की शक्ति बहुत तेज होती है, जिसके सहारे, नर और मादा एक दूसरे के पास शीघ्र पहुंच जाते हैं। समय आने पर मादा अपने अंडे रेत में गाड़ आती है, जो दूध से सफेद और संख्या में २० से लेकर ९० तक रहते हैं। कुछ दिनों बाद धूप की गरमी से जब अंडों के फूटने का समय निकट आ जाता है तो भीतर से बच्चे अपने थूथन पर के अंडदंत से अंडों का छिलका तोड़कर बाहर निकल आते हैं। उनका यह अंडदंत थोड़े दिनों में गिर जाता है क्योंकि उसकी फिर कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। बच्चे एक दो साल तक तो बहुत तेजी से बढ़ते हैं, लेकिन उसके बाद फिर उनकी बाढ़ बहुत मंद हो जाती है।

❊ **उदबिलाओ-** उदबिलाओ भारतीय उपमहाद्वीप के अधिकांश नदियों और तालाबों में पाया जानेवाला ओटर है,

यह सामाजिक और समूहों में मछलियों का शिकार करते हैं।

❊ **मगरमच्छ -** समुद्र में गहरा गोता लगाने के लिए मगरमच्छ कभी-कभी भारी पत्थर भी निगल लेता है।

जब मगरमच्छ या घड़ियाल किसी जीव-जन्तु को खाता है तो कुछ ही देर बाद उनकी आंखों से आंसू बहने लगते हैं। जब मगरमच्छ अपने शिकार को खाते हैं तो उनके पेट में जाने के बाद ही मगरमच्छों के अमाशय से पाचक द्रव्यों का निकलना शुरू हो जाता है। यह पाचक द्रव्य भोजन के साथ मिलकर रासायनिक क्रियाएं करने लगते हैं। इस प्रक्रिया के दौरान भोजन के पाचन के साथ-साथ मगरमच्छ के शरीर में लवणों के स्तर में भी बढ़ोतरी होने लगती है, लेकिन इस अतिरिक्त लवणों का उनके शरीर से निकलना जरूरी होता है। नहीं तो ये नुकसानदायक हो सकते हैं। मगरमच्छों के शरीर में उत्पन्न होनेवाले ऐसे अतिरिक्त लवणों को ग्रंथियों के द्वारा अवशोषित कर लिया जाता है। फिर इन्हें शरीर से बाहर निकाला जाता है, लेकिन ये ग्रंथियां मूत्राशय में नहीं बल्कि आंखों के कानों में खुलती हैं। जब मगरमच्छ के शरीर में अतिरिक्त लवणों का स्तर बढ़ जाता है तब लवण नलिकाओं की मदद से उसका निष्कासन या रिसाव उनकी आंखों से होने लगता है। मगरमच्छ के अलावा सांप, छिपकली जैसे रेंगनेवाले सरीसूप और हरे रंगवाली मादा कछुआ भी अंडे देने के उपरांत ऐसे कृत्रिम आंसू बहाती है। घड़ियाल एक मछली खानेवाला मगरमच्छ है जो सिर्फ भारत की कुछ नदियों में पाया जाता है, यह भारत के तीन मगरमच्छों में से एक है, अन्य दो मगरमच्छ और खाने पानीवाला मगरमच्छ है।

❊ भारत के उड़ीसा राज्य के भितार कनिका राष्ट्रीय उद्यान में दुनिया का सबसे बड़ा मगरमच्छ हैं जिसकी लंबाई ६ मीटर (२० फीट) से ज्यादा है।

❊ मगरमच्छ - क्रोकोडाइल्स, एलीगेटर एवं गेविएलिस रेप्टीलिया संघ के प्रसिद्ध वन्य जीव होते हैं। सामान्य भाषा में ये मगरमच्छ एवं घड़ियाल कहे जाते हैं। रेप्टीलिया संघ में ये सबसे बड़े जंतुओं में माने जाते हैं। क्रोकोडाइल्स या मगरमच्छ ४ से ६ मीटर लंबा होकर नदी एवं झीलों में रहता है। इसकी विशेषता होती है कि इसके शरीर पर अस्थिमय स्कूट्स (एक प्रकार की अस्थि प्लेट्स) का आवरण पाया जाता है, जो अनुप्रस्थ कतारों में विन्यस्त होता है। मगरमच्छ का ऊपरी हिस्सा गहरे भूरे हरे रंग का होता है इसका सिर बड़ा एवं जबड़े लंबे होते हैं। इन्हीं जबड़ों में बहुत सारे दांत पाये जाते हैं। इनके दांतों की विशेषता होती है कि जब मगरमच्छ अपना जबड़ा बंद करता है, तो ऊपर नीचे के दांत आपस मे टकराते नहीं साथ ही निचले जबड़े का चौथा दांत जबड़े बंद होने पर भी दिखाई देता है। यह मनुष्य को खा जाता है।

❊ यदि मगरमच्छ की गिरफ्त में फंस जाएं तो अंगूठे से उसकी आंखों की पुतली में मारे वह जबड़ा ढीला कर देगा और आप आसानी से निकल पाएंगे।

❊ मगरमच्छ को एक खतरनाक जीव माना जाता है। इसे प्रकृति का सफाई कर्मचारी कहते हैं। दरअसल सरीसृप (रेप्टाइल) वर्ग का यह प्राणी अपने भोजन के लिए मुख्य रूप से मृत जीवों के शरीर पर ही आश्रित रहता है और इस प्रकार उनकी सड़ांध और संक्रमण से जल स्त्रोतों को बचाता है।

पूरी दुनिया में मिलते हैं मगरमच्छ- पूरी दुनिया में मगरमच्छ की २२ प्रजातियां पाई जाती हैं। इनके परिवार को संयुक्त रूप से क्रोकोडिलियन कहा जाता है जो दो मुख्य समूहों क्रोकोडाइल्स और एलीगेटर्स में विभाजित हैं। पूरे विश्व में क्रोकोडाइल्स की १४ और एलीगेटर्स की ७ प्रजातियां पाई जाती हैं। मगरमच्छ मीठे पानी में पाया जानेवाला सरीसृप है

लेकिन इसकी एक प्रजाति एस्टयुराइन क्रोकोडाइल खारे पानी में पाई जाती है। इसकी प्रमुख प्रजातियों में काइमन मध्य और दक्षिण अमेरिका में और घड़ियाल भारतीय उप महाद्वीप के उत्तरी भाग में पाये जाते हैं।

दातों से पहचान लो- अपने लंबे थूथन के कारण घड़ियाल तो दूर से ही पहचान में आ जाता है लेकिन शेष क्रोकोडाइल्स और एलीगेटर्स की अलग-अलग पहचान करने के लिए तुम्हें इनके मुंह में झांकना होगा (मतलब दूर से) क्रोकोडाइल्स के दांत जबड़ों पर पंक्तिबद्ध नहीं होते और इनके निचले जबड़े के दोनों तरफ चौथे दांत शेष दांतों से भी बड़े होते हैं। दूसरी तरफ एलीगेटर्स के ऊपर के सभी दांत नीचे के दांतों से बड़े होते हैं।

धोखा मत खाना- तुमने चिड़ियाघर में मगरमच्छों को लकड़ी के लट्ठे की तरह बिना हिले-डुले धूप सेंकते देखा होगा, लेकिन इससे इन्हें आलसी मत समझ लेना। ठीक इसी तरह शिकार की तलाश में वे पानी में घंटों निश्चेष्ट पड़े रहते हैं और जैसे ही कोई प्राणी इन्हें मरा समझ कर पास से निकलता है, यह उसका काम तमाम कर देते हैं। हकीकत में मगरमच्छ बहुत फुर्ती से तैरता है और इसमें इसकी मोटी पूंछ बहुत काम की साबित होती है। एक बार शिकार इसके जबड़े में फंस जाये तो यह उसे गहरे पानी में डुबो कर मार डालने के बाद ही दम लेता है।

खूब शोर करता है मगरमच्छ- सरीसृप होने के कारण मगरमच्छ छिपकली (...और डायनासोर भी) का रिश्तेदार है और इसके शिशु भी इनकी तरह ही अंडों से निकलते हैं। यह सबसे ज्यादा शोर मचानेवाला सरीसृप है, प्रजनन से पूर्व मादा को रिझाने के लिए नर मगरमच्छ इतना शोर मचाते हैं कि वह दूर तक बिल्कुल साफ सुनाई देता है।

मगरमच्छ का घोंसला- प्रजनन में मादा मगरमच्छ मिट्टी, पौधों और खरपतवार की सहायता से एक टीला-सा बना देती है। इसके बाद यह इसे बीच से खोखला कर इसमें २० से ७० तक अंडे दे देती है। यही टीला मगरमच्छ का घोंसला कहलाता है। अंडे देने के बाद मादा खोखले स्थान को मिट्टी से भर देती है और कहीं आस-पास ही अपना डेरा जमा लेती है। सूरज की धूप और सड़ती हुई वनस्पति की गर्मी से अंडों को पर्याप्त तापमान मिलता रहता है। अंडों से बाहर निकलने का समय होने पर उनके अंदर मौजूद शिशु मगरमच्छ हिचकियों जैसी आवाज निकालते हैं जिसे सुन कर मां घोंसले पर पहुंच जाती है। शिशु अपनी थूथनी पर खास इसीलिए उगे छोटे से दांत की सहायता से अंडे फोड़ कर निकलने लगते हैं। यह विशेष दांत उनके जन्म के बाद नष्ट हो जाता है।

✻ मगरमच्छ भोजन करता है, तभी वह आंसू बहाता है।

✻ मगरमच्छ बिना खाना खाए सालभर से ज्यादा समय तक जीवित रह सकते हैं, क्योंकि उनका खून ठंडा होता है और वे शरीर के बहुत कम तापमान पर भी कार्य कर सकते हैं।

✻ मगरमच्छ की दो जोड़ी पलकें होती हैं। दूसरी जोड़ी को निक्टेटिंग मेम्बरेन कहते हैं। ये पलकें काफी पतली और साफ होती हैं, तथा पानी के भीतर आँखों की सुरक्षा करती है। जब मगरमच्छ पानी में डुबकी लगाता है तब ये पलकें आँखों पर आ जाती है। लेकिन मगरमच्छ इन पलकों के आरपार भी आसनी से देख सकता है।

✻ किसी मगरमच्छ की सबसे अधिक प्रमाणित आयु ६६ वर्ष है जो एक मादा अमेरिकी एलिगेटर की है। इसका जन्म १९१२ तथा मृत्यु १९७८ में हुई।

✻ मगरमच्छ के दांत और जबड़े मजबूत और पैने होते हैं। दोनों जबड़ों में दांत की दो पंक्तियां होती हैं। मगर मुंह बंद करने पर भी दो दांत सदा बाहर निकले रहते है।

✻ मगरमच्छ का एक दांत टूटने पर जल्दी ही उसके स्थान पर दूसरा आ जाता है।

✻ खारे पानी का मगरमच्छ - खारे पानी का मगरमच्छ या एस्टूएराइन क्रोकोडाइल (क्रोकोडिलस पोरोसस) सबसे बड़े आकार का जीवित सरीसृप है। यह उत्तरी ऑस्ट्रेलिया, भारत के पूर्वी तट और दक्षिण-पूर्वी एशिया के उपयुक्त आवास स्थानों में पाया जाता है। खारे पानी के मगरमच्छ की थूथन, मगर कहलाने वाले मगरमच्छ से अधिक लम्बी होती है। आधार पर इसकी लम्बाई चौड़ाई से दोगुनी होती है। अन्य प्रकार के मगरमच्छों की तुलना में, खारे पानी के मगरमच्छ की गर्दन पर कवच प्लेटों की संख्या कम होती है और अधिकांश अन्य पतले शरीर के मगरमच्छों की तुलना में इसके शरीर का चौड़ा होना, इस असत्यापित मान्यता को जन्म देता है की सरीसृप एक एलीगेटर (घड़ियाल) था। खारे पानी का मगरमच्छ भारत में पाई जानेवाली मगरमच्छ की तीन प्रजातियों में से एक है, इसके अलावा मगर कहे जाने मगरमच्छ और घड़ियाल पाए जाते हैं।

✻ दुनिया के सबसे बड़े मगरमच्छ ऑस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं। इनकी लंबाई २० फीट तक होती है।

✻ मगरमच्छ जब अपना जबड़ा खोलता है तो स्पर विंग प्लोवर नामक पक्षी उसके मुंह में आराम से बैठकर दांतों में फंसे कीड़ों को निकालकर खा जाता है।

✻ मगरमच्छ न तो अपनी जुबान हिला सकते हैं और न ही कुछ चबा सकते है। इसका पाचक रस बहुत ही ताकतवर होता है और यह एक लोहे की कील भी हजम कर सकता है।

✻ एक मगरमच्छ अपनी जीभ बाहर नहीं निकाल सकता।

✻ मगरमच्छ के होंठ नहीं होते और ये एक घंटे तक सांस रोक सकते हैं।

✻ ऐस्चुराइन मगरमच्छ - ऐस्चुराइन मगरमच्छ दक्षिणी भारत, फिलीपीन्स, न्यू गिनी और पूर्वी ऑस्ट्रेलिया के खारे पानी में रहते हैं। इस समय यह दुनिया का सबसे बड़ा सरीसृप है। तथा मगरमच्छ परिवार में सबसे खतरनाक है।

इसकी लम्बाई ८ मीटर तक हो सकती है और युवा ऐस्चुराइन मगरमच्छ का भार ६०० किलोग्राम तक हो सकता है। इसकी आक्रामक आदतों के कारण लोग इससे काफी डरते हैं। यह प्राय: मनुष्यों पर आक्रमण करके उन्हें मार डालता है। दलदल और नदी के किनारों पर रहनेवाले ऐस्चुराइन मगरमच्छ अपने शिकार के इंतजार में लेटे रहते हैं। तब केवल इनकी आंखें और नथुने ही पानी के ऊपर नजर आते हैं। जब भी कोई शिकार इसकी पहुंच में आता है तो यह उस पर झपट पड़ता है और उसे पानी में खींच लेता है।

छोटे ऐस्चुराइन मगरमच्छ छोटे जानवरों, छोटे स्तनधारियों और मछलियों का भोजन करते हैं। भय के कारण इन मगरमच्छों का काफी मात्रा में शिकार किया जाता है। आजकल बड़े मगरमच्छ कम ही मिलते हैं। इनकी आयु के बारे में कोई पक्की जानकारी उपलब्ध नहीं हैं। ऐसा अनुमान कि इनकी आयु ५० से १०० वर्ष तक होती है।

✻ मगरमच्छ जमीन एवं पानी दोनों में रहता है। इनकी त्वचा कड़े श्रृंगीय शल्क एवं अस्थिल प्लेटों से युक्त होती है। इनके लंबे थूथन पर बाह्य नासाछिद्र नोंक पर बने होते हैं। ये बाह्य नासाछिद्र वाल्वों द्वारा बंद किये जा सकते हैं। इन नासाछिद्रों की मदद से वे सारे शरीर को पानी में डुबोए रखकर सांस ले सकते हैं।

जब ये प्राणी अपने शिकार को निगलते हैं तो भीतरी प्लास्टिक खिसक कर नासाछिद्रों के समीप आ जाती है और निगलने एवं श्वसन का काम साथ-साथ चलता रहता है।

इसकी पूंछ शक्तिशाली एवं चपटी होती है। तैरने में पूंछ का विशेष सहयोग है। नर में एक शिश्न पाया जाता है। हृदय में चार कक्ष होते हैं। मूत्राशय नहीं पाया जाता। यह एक अंडप्रज प्राणी है। यह भयानक मांसभक्षी जानवर है एवं अधिकतर अलवण जल में रहता है। सारी दुनिया में विभिन्न प्रकार के मगरमच्छ पाये जाते हैं।

क्रोकोडाइल- इस प्रजाति के मगरमच्छ एशिया, अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया तथा अमेरिका में पाये जाते हैं। इसकी त्वचा काफी मोटी एवं कड़ी होती है। यह मगरमच्छ ३० से ४० फुट लंबी एक सुरंग जमीन में बनाता है। इसका दूसरा मुंह पानी के स्तर के नीचे खुलता है एवं एक मुंह जमीन पर होता है। इसमें मादा रहती है एवं अंडे रखे जाते हैं। सुरंग के पानी वाले सिरे से मगरमच्छ इस सुरंग में प्रवेश करता है। ये मगरमच्छ १८ फुट लंबे होते हैं। क्रोकोडाइल भारत की अनेक नदियों में पाये जाते हैं। नदियों से होते हुए यह समुद्र में भी पहुंच जाते हैं। यह एक मानव भक्षी मगरमच्छ है।

❊ मगरमच्छ - भारत में मगरमच्छ की तीन प्रजातियां पाई जाती हैं। इसकी एक प्रजाति सबसे पतले जबड़े होते हैं। मगर नामक प्रजाति के जबड़े सबसे ज्यादा चौड़े होते हैं। तीसरी प्रजाति यानी खारे पानी का मगरमच्छ है। इसका मुंह मगर की अपेक्षा अधिक लम्बा होता है। इसके सिर के पीछे छोटे-छोटे शल्क होते हैं। इसके सूंघने, देखने और सुनने की क्षमता अधिक होती है। घड़ियालों की प्रजाति विलुप्ति की कगार पर है। मगरमच्छ भारत में नदियों, झीलों तथा तालाबों में पाए जाते हैं। यह खुरदरी खाल वाला सरीसृप है जिसकी लम्बाई साढ़े चार मीटर (१४ फुट) तथा वजन ३०० किलोग्राम तक होता है। ये पानी की सतह से ऊपर उछल कर हवा में उड़ती भंभीरी को पकड़ लेते हैं। ये छोटे केकड़ों, मछलियों और मेंढ़कों को भी खाते हैं। शिशु मगरमच्छ भी थोड़ा-थोड़ा इनका भोजन करते हैं।

हड्डियों तक को पचा लेते हैं- मगरमच्छों के शरीर को बहुत ज्यादा ऊर्जा की जरूरत नहीं होती। वैसे ये धूप में रहना पसंद करते हैं। कभी-कभी पानी की सतह पर भी आराम से तैरते रहते हैं। इनका पाचन तंत्र इतना मजबूत होता है कि हड्डियों तक को ये चबा लेते हैं। घोंसला बनाने के लिए मगरमच्छ तालाब के किनारे कहीं नजदीक ही कोई सुरक्षित ओर एकांत, रेतीला अथवा मिट्टी वाला स्थान ढूंढ लेते हैं। मादा मगरमच्छ बीस से तीस तक की संख्या में अंडे देती है। इसके अंडे बिल्कुल सफेद तथा कठोर होते हैं मगर ये अंडों को मिट्टी से ढक देते हैं। मगरमच्छ का अंडा मुर्गी के अंडे से तीन-चार गुना बड़ा होता है। कभी-कभी गीदड़, जंगली सूअर मौका पाते ही इनके अंडों को खा भी जाते हैं।

विशाल आकार के मगरमच्छ - खारे पानी के मगरमच्छों का राजा माना जाता है। यह पृथ्वी पर पाया जानेवाला सबसे बड़ा सरीसृप है। यह २० फुट से भी ज्यादा लम्बा होता है जिनका वजन १२०० किलोग्राम से भी अधिक हो सकता है। यह बहुत फुर्तीला होता है।

खारे पानी का मगरमच्छ भारत से लेकर ऑस्ट्रेलिया तक पाया जाता है। यह मगरमच्छ आदमी से भी नहीं डरता। यह दलदल में रहना पसंद करता है। हमारे यहां खारे पानी का मगरमच्छ अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल में पाया जाता है। इसकी मादा लगभग ५०-७० अंडे देती है।

❊ **आक्टोपस -** दुनिया में अजीबोगरीब और सबसे बुद्धिमान जीव ऑक्टोपस के बारे में बहुत सी बातें प्रचलित हैं। वह अपने शरीर से छोटे छेद से भी खुद को निकाल सकता है। इतना ही नहीं यह अपने शरीर का रंग और बनावट मिलीसेकंडस में बदल सकता है।

ब्लैंकेट ऑक्टोपस- समुद्र के नीचे बसी दुनिया में ब्लैंकेट ऑक्टोपस को फैशन क्वीन नाम से जाना जाता है। इसके

भुजाओं को जोड़ते हुए एक पारदर्शी झिल्ली जुड़ी होती है। जो उसे तैरने और शिकार को पकड़ने में मदद करती है। इससे ब्लैंकेट की मदद से ऑक्टोपस खुद का शरीर बड़ा कर हमलावर को डराने का काम भी करता है।

घोस्ट ऑक्टोपस- ऑक्टोपस की प्रजाति है घोस्ट ऑक्टोपस। इस ऑक्टोपस की स्किन पारदर्शी होती है। इसकी विशेष बनावट और रंग इसकी पहचान है। अभी तक इसे वैज्ञानिक नाम मिला लिहाजा इसे घोस्ट ऑक्टोपस के नाम से जानते हैं।

मिमिक ऑक्टोपस- ऑक्टोपस की बहुत सी प्रजातियां खुद को गायब करने और चकमा देने में सक्षम रहती हैं लेकिन मिमिक आक्टोपस दूसरे जीव को देकर उसके जैसा रूप भी धारण कर सकता है। यह इतना ज्यादा चालाक होता है कि सांप दिखने पर खुद को सांप जैसा ही बना लेता है। कई बार तो यह जेलीफिश का भी रूप धारण कर लेता है।

✻ जन्म के समय ऑक्टोपस का आकार एक पिस्सू जितना होता है।

✻ अष्टावक्र (ऑक्टोपस) का मस्तिष्क बड़ा होता है और उसका नर्वस सिस्टम भी खासा विकसित होता है। वे रंगों को भी आसानी से पहचान लेते हैं और गिरगिट की तरह रंग बदलते हैं।

✻ ऑक्टोपस- ऑक्टोपस बहुत ही बुद्धिमान समुद्री जीव है। इनमें पालतू बिल्ली जितनी बुद्धि होती है। ये दूसरों की नकल उतारने, रंगों व पैटर्न और चमकने वाली चीजों के सहारे बातचीत करने में माहिर होते हैं। ये अपने शिकार का इंतजार करते हैं और अचानक हमला करके उन्हें दबोच लेते हैं।

✻ ऑक्टोपस के तीन हृदय होते हैं, जबकि कोई हड्डी नहीं होती। उसका रक्त नीले रंग का होता है। सिर और मुंह से लगी उसकी आठ भुजाएं चूपकों से ढकी होती हैं। ऑक्टोपस की आंखें बहुत तेज और मस्तिष्क काफी विकसित होता है।

✻ ऑक्टोपस- ऑक्टोपस का शरीर काफी लचीला और नरम होता है। यहीं से शुरू होता है इसका जादू। ऑक्टोपस शरीर का आकार बदलने में माहिर होता है। जब भी जरूरत पड़ती है, अपने शरीर को वातावरण के हिसाब से बदल लेता है। ऑक्टोपस अपने आठ पैरों के कारण मशहूर है, जिसे ज्यादातर लोग उसकी आठ बांहें भी कह देते हैं। यह जब तैरता है तो आठों अंगों को पीछे की ओर मोड़ लेता है।

✻ समुद्री ऑक्टोपस दुश्मन को देखकर शरीर से काली स्याही जैसा एक द्रव छोड़ता है ताकि दुश्मन उसे देख न सके।

✻ अति तनाव में अष्टावक्र (ऑक्टोपस) खुद की भुजाओं को खा जाते हैं।

✻ **शार्क -** व्हाइट शार्क की लंबाई २० फीट और वजन ४००० पाउंड तक होता है।

✻ माको शार्क सबसे तेज गति की मछली है, जिसकी स्पीट ९६ किमी प्रति घंटा है।

✻ मांसाहारी शार्क मछली के जबड़े में ३००० दांत होते हैं।

✻ शार्क बड़ी दूर से मतलब आधा किलोमीटर दूर से भी खून की गंध पहचान लेती है। वे जाल में अटकी या किसी में भी अटकी मछली के मुक्त होने की तड़प को भी सूंघ कर वहां पहुंच जाती है।

✻ शार्क ९० प्रतिशत जिंदा शिकार पर ही झपट्टा मारती हैं। वे मरे को नहीं खातीं।

✻ छोटे आकार के व्हेल शार्क खूब खानेवाले होते हैं। उनके दोनों जबड़ों को मिलाकर लगभग चार हजार दांत होते हैं।

✻ विशालकाय सफेद शार्क मछलियों का कद हर वर्ष १० इंच बढ़ जाता है, जो कि १२ से १४ फीट तक बढ़ता है। शार्क मछली के जबड़े में निरंतर नए दांत निकलते रहते हैं, जो आनेवाले ८ दिनों में गिर भी जाते हैं। व्हेल शार्क मछलियों

के ३०० के करीब दंत पंक्तियां होती हैं और प्रत्येक दंत पंक्ति में १०० के करीब दांत होते हैं। शार्क मछली की औसत जीवनआयु २५ वर्ष होती है, जो कुछ प्रजातियों में आश्चर्यजनक रूप से कभी-कभी बढ़कर १०० वर्ष भी हो जाती है। विशालकाय सफेद शार्क मछलियां तीन महीनों के लम्बे अंतराल तक बिना भोजन के रह सकती हैं। गजब की फुर्तीली शार्क मछलियों के शरीर में हड्डियां नहीं होतीं। उनकी त्वचा उपास्थि (कार्टिलेज) से बनी होती है। शार्क की ३४० से भी अधिक प्रजातियों की अब तक खोज की जा चुकी है। शार्क की मौजूदगी का ज्ञान ४०० वर्ष पुराने जीवाश्म से प्राप्त होता है। शार्क की आधुनिक प्रजाति और प्राचीन प्रजाति के बीच एक महत्वपूर्ण अंतर यह है कि आधुनिक शार्क के जबड़े प्रोट्रूसाइल प्रकार के होते हैं जिसकी वजह से शार्क के काटने की क्षमता और भी दमदार हो गई है।

❋ बॉक्सिंग शार्क प्रति घंटे १८ लाख गैलन पानी छान सकती है यानी ओलंपिक आकार के दो स्विमिंग पुल में मौजूद पानी के बराबर।

❋ साफ पानी में शार्क नहीं रहती, लेकिन नाइगुरा जल प्रपात ही ऐसा है जहां साफ पानी में शार्क पाई जाती है।

❋ शार्क मछली अपने सम्पूर्ण जीवनकाल में कभी भी नहीं सोती है।

❋ कोमल व लचीली हड्डियोंवाली शार्क मछली को समुद्री हाथी भी कहते हैं। इसकी २५० प्रजातियां हैं जिसमें बुलशार्क सबसे खतरनाक है।

❋ दिशा में हाथ घूमाने पर शार्क की त्वचा चिकनी लगती है पर विपरीत दिशा में हाथ घुमाएं तो वह धारदार हो जाती हैं।

महान सफेद शार्क जैसी मछलियां अपने शरीर का तापमान बढ़ा सकती है। यह उन्हें ठंडे पानी में शिकार करने में सहायता करता है। अब तक की सबसे बुजुर्ग मछली ऑस्ट्रेलीयन फेफड़ा मछली है जो कि २००३ तक ६५ साल की आयु तक जीवित थी।

❋ बड़ी शार्क के दांत छोटे होते हैं। १२ मीटर लंबी हेल शार्क में ४००० दांत होते हैं, जिनमें प्रत्येक ३ मिलीमीटर लंबा होता है। प्रतिवर्ष १०-१२ दुर्घटनाओं का कारण शार्क होती हैं। हर साल १०० मिलियन शार्क मारी जाती हैं। व्हेल शार्क सबसे बड़ी मछली है जो अटलांटिक, प्रशांत और हिंद महासागर के गर्म क्षेत्रों में पाई जाती है। शार्क मछली सबसे खतरनाक होती है।

❋ शार्क मछली की त्वचा अपने आसपास के पानी में विद्युत क्षेत्र में एक वोल्ट के पांच करोड़वें हिस्से जितने सूक्ष्म परिवर्तन के प्रति सुग्राही होती है। विद्युत क्षेत्र में सूक्ष्म से सूक्ष्म परिवर्तन का ज्ञान हो जाने से शार्क को अपने आसपास दूसरे जीवों की सारी गतिविधियों का पता लग जाता है।

❋ हैमरहैड शार्क ५०० तक के बड़े समूह में चलती हैं। सबसे शक्तिशाली मादा मध्य में चलती है और जब वह सहवास के लिए तैयार होती है तो दूसरी किसी मादा के साथ दोनों तरफ सिर मिलाने के बाद वह अपना स्थान उसे दे देती है।

हैमर हैड शार्क - हैमर हैड एक जबरदस्त शार्क मछली है, जो कि सभी उष्ण कटिबंधीय समुद्रों में पाई जाती है। इसे यह नाम इसके भयावह दिखाई देनेवाले हथौड़े जैसे सिर के कारण मिला है। इसका सिर कुछ इस तरह फैला हुआ होता है कि एक दोहरे सिर वाले हथौड़े के समान दिखाई देता है। इसकी आंखें, नथुने फैले हुए हथौड़ा सिर के सुदूर वर्ती छोरों पर स्थित होते हैं। यह तैरते हुए शार्क को स्थिरता प्रदान करता है, जबकि कुछ अन्यों का विचार है कि इसकी अलग-अलग आंखें आहार की तलाश करने के लिए इसे व्यापक दृष्टि प्रदान करती है। यह जीव छोटी शार्कों, अन्य मछलियों आदि को

अपना आहार बनाती है। ये जीव गंध के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। ये विशालकाय शार्क हैं तथा इनका कद बढ़कर ११ फुट तक पहुंच जाता है तथा वजन ८०० किलो तक हो सकता है। ये एक स्थान से दूसरे स्थान को पलायन करनेवाले जीव है। कभी-कभी हजारों की संख्या में हैमर एक स्थान से दूसरे स्थान को इकट्ठे पलायन करते हैं।

❋ **घोंघा -** गार्डन स्नेल- गार्डन स्नेल यानी घोंघा की प्रजाति का जीव। इन्हें लोग आलसी मानते हैं, पर वे आलसी होते नहीं। उनकी पीठ के मोटे खोल की वजह से शायद वे धीरे-धीरे चलते हैं। घोंघे की कुछ जातियां अति जहरीली होती हैं। घोंघे अपने पैरों से सास लेते हैं। घोंघा तीन साल तक सो सकता है।

❋ घोंघा बिना घायल हुए ब्लेड की धार पर भी चल सकता है।

❋ घोंघे की १०० आँखे होती हैं। इसकी प्रत्येक आंख में १ लैंस, १ दृष्टिपटल व १ दृष्टि तंत्रिका होती है।

❋ घोंघे की आंख काट देने पर पुन: उसकी दूसरी आंख आ जाती है।

❋ नहाते समय काम आने वाला स्पंज वास्तव में एक समुद्री जीव का कंकाल हैं।

❋ घोंघे की जीभ में दांत होते हैं। दांतों की संख्या लगभग १२०० से १४००० तक होती है।

❋ जल घोंघा- जल घोंघा मीठे जल में पाया जाता है। इसका शरीर बाहरी खोल से ढँका रहता है। बाह्य कंकाल का मुख एक ढक्कन से बन्द रहता है। जिसे अपर कुलम कहते हैं। इसका आकार सेव जैसा होता है अत: इसे एपेल स्नेल कहते हैं। दक्षिणी ध्रुव पर रहनेवाले इन घोंघों में फिलहाल इस तरह का स्वभाव होना थोड़ा अस्वाभाविक है लेकिन शायद अगले १० सालों में ये बिल्कुल सामान्य बात होगी। दक्षिणी ध्रुव की कई प्रजातियों पर शोध होना बाकी है जिससे इन घोंघों में उभयलिंगी होने के बारे में भी ज्यादा जानकारी मिल सकती है। फिलहाल इन घोंघों की इस रहस्यमयी दुनिया के बारे में विस्तार से जानकारी नही है क्योंकि वैज्ञानिकों को अत्यंत ठंडे दक्षिणी ध्रुव पर ज्यादा समय तक रहने की अनुमति नहीं है। इन घोंघों में लिंग बदलने की वजह ये हो सकती है कि वो एक ही समय में नर के रूप में प्रजनन और फिर मादा के रूप में १८ महीने तक के छोटे बच्चों का पालन-पोषण एक साथ कर सकें। इससे आगे पता चलता है कि दक्षिणी ध्रुव पर रहनेवाले कुछ जीवों के बारे में हम कितना कम जानते हैं।

❋ घोंघा वैसे तो दिखने में बहुत छोटा और सुस्त होता है लेकिन ये फसल के लिए बहुत नुकसानदायक होता है। घोंघा फलों, सब्जियों और छोटे पौधों में छेदकर उन्हें कुतर देता है।

❋ अनोखा घोंघा - घोंघा काफी बदसूरत होता है लेकिन यह फाइलोडेस्मियम एकैंथोरियम नामक प्रजाति का घोंघा काफी खूबसूरत दिखाई लगता है। यह अक्सर समुद्रों में दिखता है, इसकी लंबाई १८ मि.मी. है।

❋ घोंघा - घोंघे को अलग से कोई पैर नहीं होते। शरीर का नीचे का हिस्सा जो जमीन को छूता है, वही उसका पैर होता है। यह एकदम चपटा और चिकना होता है। पैर में मौजूद मांसपेशियां फैलने और सिकुड़ने से जमीन से चिपकी सतह में छोटी लहरें उठती हैं। इन लहरों के लगातार पीछे की ओर चलने से घोंघे का शरीर आगे की ओर खिसकने लगता है। घोंघे के इस पैरनुमा पेंदे में ऐसी ग्रंथियाँ होती हैं, जो एक चिपचिपा पदार्थ छोड़ती हैं। इससे घोंघे को फिसलने में सहायता मिलती है। घोंघे द्वारा चलकर आए रास्ते पर अक्सर इस पदार्थ की चमकीली पगडंडी देखने को मिल जाती है। यदि हम भी घोंघे की तकनीक की नकल करते हुए, बगैर पैर उठाए, अंगूठे की मदद से आगे चलने की कोशिश करें तो मिनट भर में कितने दूर जा सकते हैं। कोस्टारिका में पाय जानेवाला तेजतर्रार पहाड़ी घोंघा एक मिनट में लगभग आधे मीटर की दूरी तय कर लेता है (याने करीब ०.०३ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार), जबकि उसके पैर का आकार हमारे पैर की तुलना

में कितना जरा-सा होता है। इसके अलावा एक घोंघा अपने पीछे जितना अधिक वजन खींच सकता है।

❋ **लोबस्टर्स** का रक्त नीला होता है।

❋ **ड्यूगांग-** यह साइरनिया वर्ग के मैनेटिडी परिवार का जानवर है। हिंद महासागर के उष्ण भाग में तथा लाल सागर से लेकर ऑस्ट्रेलिया तक पाया जाता है। यह भारी, भद्दा, आलसी और मंदगामी जानवर है तथा दो तीन मीटर लंबा और स्लेटी रंग का होता है। इसका शरीर मछली के समान आगे से पीछे की ओर पतला होता गया है। थूथन गोलाकार और ठूँठ की तरह होता है। नासाछिद्र आँख और थूथन के बीच स्थित होते हैं। इसकी पिछली टाँगे नहीं होती। मादा अगले पैरों से अपनी संतान को गोद में दबाकर स्तनपान कराती है। यह शाकाहारी जंतु है। नर मादा के एक दूसरे को खूब चाहते हैं और माँ बाप बच्चों को बहुत प्यार करते हैं। कुछ लोग ड्यूगांग को समुद्री गाय कहते हैं। इसकी तीन उपजातियाँ हैं- लाल सागर के ड्यूगांग, ऑस्ट्रेलिया के ड्यूगांग और हिंद महासागर के ड्यूगांग।

❋ **टुआटेरा** नामक जीव ऐसा है, जिसकी तीन आंखें होती हैं।

❋ **दरियाई घोड़े** की अधिकतम आयु का रिकार्ड ४१ वर्ष है।

❋ दरियाई घोड़े के दोनों नेत्रों में एक ही वस्तु के दो प्रतिबिंब बनते हैं।

❋ नवजात दरियाई घोड़े (हिप्पो) का जन्म जल के भीतर होता है।

सी हॉर्स या समुद्री घोड़ा- समुद्री घोड़ा असल में घोड़ा नहीं, बल्कि एक विचित्र प्रकार की मछली है। इसका सिर घोड़े के सिर से मिलता-जुलता है, इसलिए इसका नाम समुद्री घोड़ा पड़ गया। इसका शरीर कड़ा और चिकना होता है तथा पूंछ सांप जैसी होती है। यह अक्सर गर्म समुद्रों के पास समुद्री घास और छोटे-छोटे पौधों के साथ पूंछ की कुंडली बनाकर चिपका रहता है। इसकी अधिकतर आदतें मछलियों से अलग होती है।

४० किस्मों में पाए जानेवाले समुद्री घोड़े की जानकारी- समुद्र में पाए जाने की वजह से हम इसे समुद्री घोड़ा या वैज्ञानिक भाषा में सी हॉर्स के नाम से जानते हैं। इसकी ४० किस्में होती हैं। इनमें से सबसे छोटी किस्म का घोड़ा एक इंच लंबा और सबसे बड़ी किस्म का एक फुट लंबा होता है। दुनियाभर के सभी गर्म समुद्रों में इसकी कई किस्में पाई जाती हैं। समुद्री घोड़े के शरीर पर हड्डी की कड़ी और मजबूत प्लेटों का कवच चढ़ा रहता है। इस कवच के कारण ही समुद्री घोड़ा समुद्र के पानी में खड़ा-खड़ा तैरता रहता है। पानी में खड़ा होने पर उसका सिर ऊपर और दुम नीचे रहती है। आगे-पीछे या ऊपर नीचे तैरने के लिए यह अपनी पीठ पर लगे एक बड़े पंख को हिलाता है।

तैरते समय यह पंख इतनी तेजी से हिलता है कि उसे देख पाना बहुत मुश्किल होता है। इसके सिर के पिछले भाग में कान की जगह पर दो छोटे-छोटे पंख और होते हैं और ये पंख भी बराबर आगे-पीछे चलते रहते हैं। समुद्री घोड़े के शरीर में एक विशेष थैली होती है, जिसमें हवा भरी होती है। पानी में तैरने या इतराते रहने के लिए इस थैली का सुरक्षित हो जाना, समुद्री घोड़े के लिए सबसे कठिन काम है। जैसे मोटर के ट्यूब में हवा भरकर उसके सहारे किसी नौसीखिए आदमी को पानी से ऊपर रहते हुए तैरना सिखाते हैं, उसी तरह समुद्री घोड़े के शरीर में मौजूद इस थैली या ब्लैडर की हवा उसको पानी में तैरते रहने के लिए सहायक है। अगर इस थैली में से हवा का एक बुलबुला भी बाहर निकल जाए तो समुद्री घोड़े का संतुलन बिगड़ जाता है। वह लाचार होकर समुद्र की तली में जा बैठता है। अधिकतर समुद्री घोड़े राख या काले व नीले रंग के होते हैं, किंतु हिंद महासागर और भूमध्य सागर में पाए जानेवाले सी हॉर्स के शरीर पर एक विशेष प्रकार की जैकेट चढ़ी होती हैं, जिस पर गुलाबी, पीले, सफेद या गहरे नीले धब्बे पड़े होते हैं।

दरियाई घोड़ा - उष्णकटिबंधीय अफ्रीका की अधिकतम नदियों में पाया जानेवाला सामान्य दरियाई घोड़ा का जंतु वैज्ञानिक नाम हिपोपोटैमस ऐमफिबियस है। दरियाई घोड़ा एक बड़ा, भारी और छोटी टोंगोंवाला रात्रिचर, शाकाहारी, खुरदार स्तनी है जो ४ मीटर लम्बा और ४ टन तक भार का होता है। दरियाई घोड़ा छोटे समूहों में रहता है तथा दिन के समय जल में रहकर रात्रि को खाने के लिए बाहर आता है। दरियाई घोड़ा की थूथन बहुत चौड़ी होती है। नासारंध्र, नेत्र और सिर की पृष्ठ ओर स्थित छोटा कर्ण जलममग्न जीवन के अनुकूल होता हैं। तनिक से जालयुक्त प्रयोक्त पैर में ४ खुरदार अँगूठे होते हैं। थोड़े बालों और नीचे वसा के एक मोटे स्तर सहित त्वचा ५ सेमी मोटी होती है। दरियाई घोड़े के पसीने का रंग लाल होता है। दरियाई घोड़ा अच्छे तैराक और गोताखोर होते हैं। वामन दरियाई घोड़ा कीरोपसिस लाइबरिएन्सिस कंधों पर केवल ६० सेमी ऊँचा होता है।

✲ **ग्रिब्बल-** ग्रिब्बल ये जीव सैकड़ों वर्षों से जहाजों को बर्बाद कर रहा है। इसका नाम ग्रिब्बल है। वैज्ञानिक का कहना है, इस जीव में अनूठी पाचन प्रणाली है जो लकड़ी को शर्करा में बदल देती है।

✲ **पारा पाइज** एक बहुत ही चतुर समुद्र प्राणी है। यह मनुष्य के अनेक कार्यकलापों की नकल कर सकता है। यह मनुष्य की आवाज की नकल कर सकता है। यहां तक की यह आदमी की भांति हंस भी सकता है।

✲ **सी लॉयन/सील -** मिलिए सी लॉयन से, जो कहलाता है समुद्र का राजा

जैसे जंगल का राजा शेर होता है, वैसे ही समुद्र का राजा भी शेर होता है।

सी लॉयन के कान बाहर की तरफ होते हैं। अपने पंजों से यह चलता है। अपने शरीर को यह किसी भी तरह मोड़ लेता है, चाहे धरती हो या समुद्र धरती पर यह अपने फर का इस्तेमाल चलने के लिये और पानी में तैरने के लिये करता है। ये देखने में छोटे और सिल्की मोटे बाल वाले होते हैं। देखने में ये चिकने होते हैं। चलने के लिये ये फ्लेप्स और पैरों का उपयोग करते हैं। सील, सी लॉयन्स और वॉल्रस ये सभी एक ही प्रजाति के होते हैं। ये अटलांटिक महासागर के उत्तरी इलाके में पाये जाते हैं। इनकी उम्र २० से ३० साल की होती है।

स्टीलर सी लॉयन, जो इस प्रजाति के सबसे बड़े जीव हैं, इनका वजन लगभग १००० किलो और लंबाई १० फीट की होती है, जबकि कैलिफोर्नियाई मेल सी लॉयन्स का वजन ३०० किलो और लंबाई ८ फीट के आसपास होती है। इनकी खास बात यह है कि यह खाने के शौकीन होते हैं, इसलिए ये अपने वजन से भी ज्यादा खाना एक बार में ही खा जाते हैं।

स्टीलर सी लॉयन्स बड़े-बड़े पत्थरों पर पड़े। सील और सी लॉयन को देखकर कहा नहीं जा सकता कि दोनों अलग हैं। ये लगभग एक जैसे ही लगते हैं। सामान्यतया सी लॉयन प्रजाति के ज्यादातर स्तनधारी देखने में एक जैसे ही होते हैं। पेरू के पुरानी पीढ़ी के लोग इनकी ओर समुद्र के जानवरों की पूजा करते हैं। सी लॉयन्स ठंडे पानी में ही रहना पसंद करते हैं। अपना ज्यादा समय ये पानी के भीतर खाना ढूंढने में बिताते हैं।

सील और सी लॉयन में क्या अंतर है, तो तुरंत दोनों के कानों को देखना। सी लॉयन्स के सिर के पास छोटे से कान होते हैं, जिन्हें वे पानी में अपनी आवश्यकता के अनुसार इस्तेमाल करते हैं, जिससे कानों में पानी न जा सके।

✲ **ऐलीफैंट सील्स** नामक सील मछलियां वास्तव में एक हाथी जितनी बड़ी होती हैं। नर सील का वजन ५ टन तक हो सकता है। अपने प्रजनन काल में ये बहुत जोर से चिंघाड़ती हैं और अपने प्रतिस्पर्धियों को काटकर उनके गहरे जख्म कर देती हैं। ये इतनी वजनी होती हैं कि कई बार ये अपने साथी का कचूमर निकाल देती हैं।

✲ **प्यूरा चिलेन्सिस -** प्यूरा चिलेन्सिस को जीवित चट्टान माना जाता है। हालांकि यह एक प्रकार का समुद्रीजीव है,

जो चिली और पेरु के चट्टानी तट पर पाया जाता है। प्यूरा के नजदीक से गुजरने पर हर किसी को लगता है कि यह कोई चट्टान होगी। मगर, जब इसे काटा जाता है, तो यह एक जीव की तरह दिखती है, जिसके अंदर खून पाया जाता है।

❋ **सी स्क्वर्ट -** सी स्क्वर्ट जिसे समुद्री पिचकारी भी कहा जाता है वास्तव में बोतल की शक्ल का एक समुद्री जीव है। इसे समुद्री पिचकारी इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह समुद्री जीव अपने शरीर में से पानी की पिचकारी छोड़ सकता है।

❋ **केकड़ा -** अटलांटिक महासागर के तटीय भागों में केकड़े की एक अनोखी प्रजाति पाई जाती है। जिसे छछूंदर केकड़े के नाम से जाना जाता है। यह संसार का सबसे छोटा केकड़ा है। इसके शरीर की रचना भी कुछ अनोखी होती है। इसका शरीर अंडाकार सिलेंडर जैसा होता है। शरीर के आगे का भाग पीछे वाले भाग की तुलना में कुछ चौड़ा होता है और शरीर पर छोटे-छोटे बाल होते हैं। इसकी आंखों की बनावट कुछ इस तरह होती है कि यह खतरा महसूस होने पर अपने दाहिने बाएं के साथ ही अपने पीछे की ओर भी ३०-४० फुट तक अच्छी तरह से देख लेता है। इस केकड़े की औसतन लंबाई एक सेंटीमीटर होती है, जबकि मादा केकड़े की लंबाई २.६६ सेंटीमीटर तक होती है।

कुदरत के इस केकड़े की अजब विशेषता ही है, वह न तो सीधे आगे की ओर चलता है और न ही दाहिने बाएं तिरछा होकर चलता है, बल्कि पीछे की ओर तेजी से दौड़ता-भागता है। यूं यह एक तरह से हमेशा उल्टा ही चलता है। इस केकड़े की एक अन्य विशेषता है- अपनी मांद (बिल) इस प्रकार बनाता है कि इसकी मांद के भीतर पानी भरा रहे और इसकी मांद के मुंह पर सागर की लहरों का पानी निरंतर आता रहे। यह केकड़ा रेत के भीतर रहते समय एन्टीना अपने सिर के ऊपर रखता है। इससे इसके ऊपर से गुजरनेवाले पानी के खाद्य कण इसके पंखनुमा एन्टीना में फंस जाते है। कुछ देर बाद यह इस एन्टीना को अपने मुंह के पास ले जाता है और दूसरा अपने सिर के ऊपर कर लेता है। अब यह अपने मुंह के पास वाले एन्टीने से खाद्य कण निकालता है और खा जाता है और इसे पुन: सिर के ऊपर खड़ा कर लेता है। इस समय तक दूसरेवाले एन्टीना में खाद्य कण फंस जाते हैं। यह क्रम निरंतर उस समय तक चलता रहता है, जब तक इसे उचित भोजन नहीं मिल जाता। इसके बाद यह मांद के भीतर अपनी मादा के संग आराम करता है।

मादा केकड़ा जुलाई अगस्त में ४-५ अंडे देती है। इसका वर्ण गुलाबी नीला होता है, ये अंडे चने के बराबर होते हैं। चार हफ्ते उपरांत ये अंडे परिपक्त होकर छछूंदर केकड़े के रूप में दिखाई देने लगते हैं। इसके कई शत्रु होते हैं। चिड़िया, बाज, कौए तो इसे बड़े चाव से अपना भोजन बनाते हैं। इसके अतिरिक्त कई जलीय जीव भी इसे गटक जाते हैं। यह बड़ा भयभीत चौकन्ना होकर रहता है और डरते-डरते अपना जीवन व्यतीत करता है।

❋ केकड़े का नीलम जैसा खून धरती पर इकलौता ऐसा पदार्थ है जिसका प्रयोग ड्रग्स में पाए जानेवाले दूषित पदार्थों का परीक्षण करने के लिए किया जाता है।

❋ समुद्र में पाए जानेवाले केकड़ों का दिल उसके सिर में होता है।

❋ **समुद्री खरगोश** जो चार माह में ४७ करोड़ ८० लाख अंडे देता है।

❋ समुद्री गाय है डुगोंग - डुगोंग एक प्रकार की समुद्री गाय है। यह स्तनधारी प्राणी पूरी तरह शाकाहारी होता है और समुद्र में केवल पत्ते और समुद्री घास जैसी शाकाहारी चीजें ही खाता है। यह प्राणी हिंद-प्रशांत महासागर के लगभग ४० देशों में पाया जाता है। इसका शरीर बेलनाकार होता है। आगे के फिन पैडल की तरह आर पूंछ डॉल्फिन की तरह होती है। इसकी आयु ७० वर्ष तक होती है।

३ कला के जीव वनस्पति जगत

यूं तो कुदरत के करिश्मों की कोई गिनती नहीं है, लेकिन कुछ करिश्मे ऐसे हैं जो लोगों को खासा रोमांचित करते हैं। दुनिया में कुछ ऐसे अजीबो-गरीब वृक्ष हैं जो अपनी विचित्रता के कारण दुनिया भर में पहचाने जाते हैं। इनमें से कुछ पेड़ डरावने होते हैं तो कुछ पानी बरसाते हैं। इन पेड़ों की विचित्रता अपने आप में किसी चमत्कार से कम नहीं है कुछ वृक्ष तो बिल्कुल जीवित प्राणियों के समान व्यवहार करते हैं।

पर्यावरण और जीवन के लिए पेड़ जरूरी है। इसके बिना जीवन की कल्पना बेमानी है। यह न सिर्फ जीने के लिए प्राणवायु देते हैं, बल्कि रहने व खाने के लिए जरूरी खाद्य सामग्री भी देते हैं। यह स्थावर प्राणी है जिनमें गमनागमन नहीं हे। ये खाद का आहार करते है और जल संचार के द्वारा पानी पीते है। दिन में ऑक्सीजन उत्सर्जित करते हैं और कार्बन डाइऑक्साईड ग्रहण करते है। ये उदभिज प्रकार के जीव है। ये मूक प्राणी है। इनमें ३ कला का प्राधान्य है। वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु ने प्रमाणित कर दिया इनमें भी जीव है, प्राण है। इन्होंने साबित कर दिया कि इन्हें भी सुख दुख का अहसास होता है। पृथ्वी पर यह दस लाख से अधिक प्रकार के प्राणी है। यह उर्ध्वगामि होते है तथा जल और तना से विस्तार पाते है। ये बीज से पनपते है और जड़ों से अपना आहार, खानपान, खाद ग्रहण करते है और पौधे-पेड़ के रूप में शरीर को विकसित करते है। इनका जीवन दीर्घायु है। पूरे शरीर का विकास जड़ को सींचने से ही होता है। बीज के अंकुरण में महत्वपूर्ण कारणों में प्रमुखत: हवा नमी एवं उपयुक्त ताप होते है। सूर्य का प्रकाश नहीं होता है।

❊ पेड़-पौधे भी करते हैं बातें - मनुष्यों की तरह पेड़-पौधे भी आपस में बातें करते हैं। एक वैज्ञानिक ने पौधों के बीच संचार के एक नये रूप की खोज की है, जिसमें वे एक दूसरे के साथ असाधारण अनुवांशिक जानकारियों को साझा करते हैं। इस खोज से विश्व के निर्धन देशों में फसलों पर कहर बरपा रहे परजीवी घासों से भी लड़ने में मदद मिलेगी। वेस्टवुड ने एक परजीवी पौधा दोदर और उसके दो पोषक पौधों अरबिडॉप्सिस और टमाटर के बीच के संबंधों की पड़ताल की। दोनों प्रजातियों के बीच आरएनए के परिवहन की जानकारी उन्हें पहले ही हो चुकी थी।

❊ पेड़ पौधे जड़ व अपनी जगह पर स्थिर माने जाते हैं। लेकिन विश्व में कुछ ऐसे पौधे भी होते हैं जो मनुष्य की ही तरह घुमक्कड़ प्रकृति के होते हैं। अमेरिका में मैनग्रोव नामक विशाल पेड़, जो सैकड़ों फुट तक ऊंचे होते हैं, अपनी मंद-मंद गति से चलकर हजारों किलोमीटर की दूरी तय कर लेते हैं।

❊ धरती पर दो ऐसे चश्मदीद गवाह मौजूद हैं जिनके सामने मिस्र के फरहा युग से भारत की सिंधु घाटी की सभ्यता और आधुनिक काल तक का मनुष्य का इतिहास घटा है। इनके सामने ही धरती के मौसमों के न जाने कितने रंग बदले। इनके देखते-देखते धरती पर न जाने कितने जीव जन्में और लुप्त हो गए।

चीड़ दुनिया का सबसे पुराना पेड़ माना जाता है, चीड़ की एक जाति पाइनस ऐरिस्टटा का एक पेड़ जो उत्तरी अमेरिका के मेसवार्डे पार्क में खड़ा है। वनस्पति विज्ञानियों के अनुसार, इसकी आयु लगभग ४५०० वर्ष है। इसके बाद नंबर आता है अमेरिका के ही एक सिकोया जाइगैण्टिया का, जिसकी उम्र ३२०० वर्ष बताई गई है। सिकोया जाइगैण्टिया दुनिया का सबसे भीमकाय वृक्ष है। इस तरह ये दो वृक्ष ही जीव-जगत के एकमात्र प्रतिनिधि हैं।

❊ दुनिया भर में लगभग ३० खरब ४० अरब पेड़ है। यानि मिल्की वे सितारों और मानव दिमाग में मौजूद कोशिकाओं

से भी ज्यादा। देशों की बात करें तो दुनिया में सबसे ज्यादा पेड़ रूस में है ६४१ अरब। उसके बाद कनाडा में ३१८ अरब, ब्राजील में ३०१ अरब, अमेरिका में २२८ अरब और भारत में केवल ३५ अरब पेड़ बचे हैं। दुनिया की बात करें, तो एक इन्सान के ल्लिए ४२२ पेड़ बचे हैं, लेकिन अगर भारत की बात करें, तो एक हिन्दुस्तानी के लिए सिर्फ २८ पेड़ बचे हैं।

इस आदान प्रदान द्वारा परजीवी पोषक पौधे की गतिविधियों पर नियंत्रण कर लेता है। इस तरह वह परजीवी से लड़ने की पौधे की सुरक्षा शक्ति को खत्म कर देता है। वेस्डवुड ने कहा कि अंतरजीवी संपर्क की खोज से पता चलता है कि हम जितना सोच रहे थे, उससे ज्यादा ही गतिविधियां होती हैं। खोज की सबसे बड़ी बात यह है कि इससे फसल को नुकसान पहुंचानेवाले परजीवियों के खात्में में मदद मिल सकती है।

जीवन के लिए बहुपयोगी तत्व देनेवाले पेड़ को इंग्लिश में ट्री कहते हैं। इस शब्द की उत्पत्ति की कहानी बड़ी ही रोचक है। यह शब्द ट्री या ट्रीव्ह से बना है। इसे वेल्स भाषा में ड्रेऊ से सूचित किया जाता था। उस समय वेल्स में इसे ओक नामक पेड़ के लिए इस्तेमाल किया जाता था। समय के साथ सभ्यताएं बदलीं। ट्री के लिए कई शब्दों का प्रयोग हुआ। कभी इसे संस्कृत में दारू के पेड़ के लिए ड्ब्रू कहा गया तो कभी आईसलैंड की भाषा में इसे ट्रे कहा गया। दुनियाभर के देशों में इसे अलग अलग नामों से जाना जाता रहा। स्वीडन में इसे ट्रॅड के नाम से जाना गया, जबकि रूस में इसे ड्रेवो और ग्रीक में पेड़ को बरसों तक ड्यूप्स के नाम से जानते रहे। इसके कई नाम होने से लोगों को परेशानी होने लगी। इसे दूर करने के लिए तब तक लोग लैटिक में फॉरेस्ट के नाम से इसे जानने लगे। फिर बाद में इसे ट्री नाम दे दिया गया।

सूरज के प्रकाश से पत्तियां गरम क्यों नहीं होतीं?

सुबह-शाम सूर्य की धूप में अधिक गर्मी नहीं होती, लेकिन दिन चढ़ने के साथ ही सूर्य की गर्मी का प्रकोप बढ़ने लगता है और शाम होते होते धीरे-धीरे उनकी तपन का तीखापन कम होने लगता है, दोपहर की तेज धूप में हर वस्तु गरम हो जाती है, लेकिन यह एक आश्चर्य और कौतूहल का विषय है कि दिनभर की कड़ी धूप में भी पेड़-पौधों की पत्तियां गरम नहीं होतीं। वे हमेशा हरी-भरी तरोताजा और ठंडी रहती हैं। पेड़ों की पत्तियां कोशिकाओं की कई परतों से मिलकर बनी होती हैं।

प्रत्येक पत्ती की कोशिकाएं ऊपर और नीचे की ओर बाह्य त्वचाओं से ढंकी रहती हैं। नीचे की त्वचाओं में अनेक छोटे-छोटे सूक्ष्म छिद्र स्टोमेटा होते हैं। ये छेद वाल्व की तरह काम करते हैं। ये वाल्व पत्ती और वायुमंडल के बीच गैसों के विनिमय पर नियंत्रण रखते हैं। जब ये छेद खुलते हैं, तो वायुमंडल से कार्बन डाईऑक्साइड गैस पत्ती में अंदर प्रवेश करती है। इन्हीं छेदों से पत्ती के अंदर की ऑक्सीजन और जलवाष्प बाहर आती है। जब ये छिद्र बंद होते हैं, तो कोई भी गैस न अंदर जा सकती है और न पत्ती से बाहर आ सकती है।

सामान्य रूप से स्टोमेटा दिन के समय खुले रहते हैं और रात के समय बंद रहते हैं। इन स्टोमेटाओं से जलवाष्प बाहर आनेवाले जल की पूर्ति जड़ों द्वारा होती रहती है। इस प्रक्रिया को वाष्पोत्सर्जन क्रिया कहते हैं। इसी वाष्पोत्सर्जन प्रक्रिया के द्वारा पेड़ों की पत्तियां धूप में भी ठंडी रहती हैं।

* एक पेड़ हर वर्ष २००० लीटर पानी धरती से सोख लेता है।
* चीन के लगभग २० प्रतिशत पेड़ दवाइयां बनाने के लिए प्रयोग किए जाते हैं।
* ऐसा नहीं कि केवल मनुष्य और जंगली जीव-जन्तु ही दु:ख के समय रोते हैं। कुछ पेड़ भी रोते हैं। पेकनरी द्वीप में पाया जानेवाला लाउरेल नामक वृक्ष रोता है। मेंड्रक वृक्ष की शक्ल बहुत कुछ आदमी की तरह होती है और उसे काटने

पर या उखाड़े जाने पर वह एक बच्चे की तरह रोने लगता है। विश्व में कुछ ऐसे पौधे भी होते हैं, जो अपने शत्रु की उपस्थिति में भय और मित्र की उपस्थिति में प्रसन्नता महसूस करते हैं।

❋ मनुष्य के लजाने की बात तो सभी जानते हैं लेकिन कुछ पेड़ पौधे भी लज्जालु और भावुक होते हैं। लाजवन्ती या जिसे छुई-मुई भी कहते हैं, मनुष्य के स्पर्श मात्र से शरमा जाते हैं और अपनी पत्तियों को सिकोड़ लेते हैं।

❋ कुछ वृक्ष ऐसे भी पाये जाते हैं, जिनकी छाया के तले पड़नेवाली सभी घास जल जाया करती है। छोटा नागपुर स्थान पर पाया जानेवाला ये पेड़ काला कोरैया कहलाता है जिसकी छाया जहां तक जाती है, उतनी दूर तक की सारी घास जल जाती है और यहां की मिट्टी का रंग काला हो जाता है।

❋ पृथ्वी पर ८०,००० तरह की पौधों की खाद्य प्रजातियां हैं, जिनमें से हम केवल ३० ही खाते हैं।

❋ मनुष्यों की तरह पेड़-पौधे भी अपने भाई-बहनों को पहचानते हैं और उनका ध्यान रखते हैं।

❋ पेड़ पौधों का महत्व- भारतीय संस्कृति में बहुत से पेड़-पौधों को देवता का दर्जा दिया गया है।

दूर्वा- दूर्वा विष्णु का रूप मानी जाती है तथा उससे धार्मिक रीतियां पूरी की जाती है। जल आदि छिड़कने के लिए दूर्वा का उपयोग किया जाता है। बंगाल में आदान-प्रदान विधान में दूर्वा घास का देना शुभ माना जाता है। वह उपहार में अवश्य संलग्न की जाती है।

❋ वनस्पति विविधता के मामले में भारत विश्व में १० वां और एशिया में चौथा स्थान रखता है।

❋ एक पेड़ की लकड़ी की लुगदी से ४०० समाचार पत्र बन सकते हैं।

❋ बॉटनिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अनुसार भारत में ४५००० प्रजाति के पौधे पाए जाते हैं।

❋ भारत फल, फूल, सब्जी व मसाले का सबसे अधिक उत्पादन करता है लेकिन प्रोसेसिंग के अभाव में करीब एक तिहाई उत्पाद सड़ जाता है।

❋ पेड़ के पत्तों का रंग हरा होता है जो क्लोरोफिल से होता है। जिन की पत्तियां एंथासाएनिन बनाती हैं वह लाल रंग की हो जाती हैं। त्रिंकगो की कैरोटिन ज्यादा होने से पत्तियां पीली होती हैं।

❋ अमेजन के एक भूप्रदेश में ३०० से ज्यादा प्रजाति के वृक्ष हैं।

❋ सबसे लंबा पेड़ विश्व में जाइ जोंटिया है।

❋ देश में वनस्पतियों की पैदावार सालाना १,८२,९३२ हजार टन होती है।

❋ पेड़ और हरियाली देखकर सभी को खुशी होती है, फिर भी दुनिया भर में हर रोज हजारों पेड़ काट दिए जाते हैं। पेड़ काटने से हम सब का जीवन प्रभावित होता है, क्योंकि पेड सभी के लिए जरूरी हैं। पेड वातावरण की कार्बन डाइऑक्साइड को सोखकर ऑक्सीजन छोड़ते हैं, जो हमारे जीवन के लिए बहुत जरूरी है। एक पेड़ एक वर्ष में १३ पौंड ऑक्सीजन छोड़ता है, जो चार लोगों के एक परिवार के लिए काफी है। पेडों से हमें हरियाली और छाया मिलती और हमारी दुनिया ज्यादा सुंदर दिखाई देती है। पेड हवा और धूल से होनेवाले प्रदूषण के अलावा शोर से होनेवाले प्रदूषण को भी रोकते हैं। पेडों से ऐसी बहुत सी दवाइयां बनाई जाती हैं। जिनसे पीलिया से लेकर कैंसर तक का इलाज होता है। पेड़ों की जड़ें अपने आस-पास की मिट्टी को मजबूती से पकड़े रखती हैं, जिससे भूक्षरण नहीं होता। पेडों में बहुत सारी चिड़ियाओं, कीड़े-मकौड़ों और जानवरों के घर होते हैं। बरसात के पानी को जमीन के अंदर रोके रहने में पेड़ हमारी मदद करते हैं, ताकि हमें

गरमी में भी पानी मिलता रहे।

❊ **विश्व में विविध प्रकार के पेड़-** प्राचीन समय में मान्यता थी कि वृक्ष और लताएं भी बोलती हैं, ये संदेश वाहक थीं। सीता के चोरी जाने पर राम कहते हैं- हे वृक्ष और लताओं बताओ मेरी सीता कहां है?- जब महर्षि व्यास पुत्र के वियोग से व्याकुल हुए तो, वृक्ष और लताओं ने उन्हें सांत्वना दी। शकुंतला ने गृहस्थी में प्रवेश किया तब वृक्ष रूपी देवता ही उन्हें पहले आशीर्वाद देने खड़े थे।

❊ वृक्ष दिशा भी बताते हैं, दक्षिण अमेरिका में एक वृक्ष है जिसकी पत्तियां सदा उत्तर दिशा की ओर होती हैं ठीक दिशा-सूचक सुई के समान। पानी के संग्राहक वृक्ष-नागफनी आदि पानी के संग्राहक हैं। जलनेवाले वृक्ष-अमेजन नदी (दक्षिण अफ्रीका) के किनारे ऐसे वृक्ष मिलते हैं जो दूर से जलते हुए दिखाई देते हैं। क्रोध प्रकट करनेवाले वृक्ष-कैलिफोर्निया में पाए जाते हैं। इनकी खड़खड़ाहट से क्रोध प्रकट-सा होता सुनाई पड़ता है। हंसनेवाला वृक्ष-अफ्रीका में हंसने की आवाज प्रकट करता है। समय की पाबंदी वाले वृक्ष- कमल सूर्योदय के पश्चात् खिलते हैं। सूर्यास्त के पश्चात बंद हो जाते हैं।

❊ पौधे व पेड़ों को अपना खाना तैयार करने की प्रक्रिया फोटोसिंथेसिस कहलाती है।

❊ कैलिफोर्निया में स्थित विश्व के सबसे पुराने पेड़ की उम्र- ४००० वर्ष।

❊ उत्तरी अमेरिका का काउ ट्री इस मामले में मशहूर है। इसके तने से दूध जैसा द्रव निकलता है। इस द्रव का न्यूट्रिशियस वैल्यू गाय के दूध के समान होती है। अगर इस वृक्ष की डाल को काटकर आग में पकाया जाए तो यह रोटी की तरह फूलती है। मजेदार बात है कि यह रोटी गेहूं की रोटी की तरह ही होती है।

❊ अफ्रीका के मेडागास्कर में करीब आठ फीट की ऊंचाईवाला एक ऐसा वृक्ष पाया जाता है जिसका इस्तेमाल स्थानीय लोग पानी की टंकी की तरह करते हैं। इस वृक्ष की एक डाल में इतना पानी होता है जिससे पांच आदमियों की प्यास बुझ सकती है। इसका पानी मिनरल वॉटर से ज्यादा साफ होता है।

❊ इंडोनेशिया के जावा प्रायद्वीप के जंगलों में मौजूद एक वृक्ष का द्रव बेहद खतरनाक विष माना जाता है। स्थानीय आदिवासी शिकार के वक्त अपने तीरों में इसी विष का इस्तेमाल करते हैं।

❊ रेडवुड नाम के वृक्ष के बीज इतने छोटे होते हैं कि एक किलोग्राम में इनकी संख्या २,४६,००० तक पहुंच जाती है। लेकिन इतने छोटे बीज से पैदा होनेवाला वृक्ष पृथ्वी का सबसे बड़ा वृक्ष होता है। यह वृक्ष ११० मीटर की ऊंचाई तक पहुंच जाता है। इसकी १५ से २० मीटर मोटी छाल इसके लिए कवच का काम करती है। इससे यह कीड़ों-मकोड़ों और आग से बचा रहता है। यह प्राकृतिक कवच उसे कई रोगों से भी बचा कर रखता है। जिससे इसकी आयु में भी वृद्धि होती है। इनमें से कई वृक्ष २००० वर्ष की आयु भी पा लेते हैं। रेडवुड कोनिफर (शंकुधारी) वर्ग का एक वृक्ष है। अन्य शंकुधारी वृक्षों की तरह इसकी पत्तियां भी पतली और नुकीली होती हैं। और वृक्ष पर वर्ष भर रहती है।

आमतौर पर लोगों को पेड़ों के बारे में इतना ही पता है कि यह लोगों को वायु, लकड़ी, फल आदि देते हैं, लेकिन इस विशाल दुनिया में कुछ पेड़ ऐसे भी हैं जो अपनी विचित्रता के कारण दुनिया भर में पहचाने जाते हैं और इनकी विचित्रता खासा रोमांच पैदा करती है।

❊ पीपल- पीपल में भगवान विष्णु का वास माना जाता है। पीपल की जड़ में विष्णु, तने में केशव, शाखाओं में

नारायण और पत्तों में हरि का वास है। पीपल की पूजा करने से सैकड़ों यज्ञों का फल मिलता है। पीपल २४ घंटे ऑक्सीजन देता है। सोमवती अमावस्या को स्त्रियां पीपल की जड़ में दूध और पानी चढ़ाकर सुहाग की लंबी आयु के लिए १०८ बार परिक्रमा करती हैं, श्राद्ध में पितरों की पूजा पीपल के माध्यमों से ही की जाती है।

आम- आम का वृक्ष धार्मिक अनुष्ठानों में विशेष महत्व रखता है। इसे हमारी संस्कृति में भी बहुत शुभ माना जाता हैं। यह वृक्ष सदा हरा-भरा रहता है। भक्त आम के पत्तों को स्पर्श कर अम्ब, अम्बालिके उच्चारण करता है, ताकि जैसे सभी ऋतुओं में आम की पत्तियां हरी-भरी रहती हैं, वैसे ही मनुष्य आनंदमय और प्रसन्न रहें। इसका प्रत्येक भाग लकड़ी, टहनी, पत्तें विभिन्न रूप में प्रयोग में लाये जाते हैं। आम के पत्तों की वंदनवार व तोरण मांगलिक कार्यों में घर के द्वार पर टांगी जाती है। हवन में आम की लकड़ी का उपयोग किया जाता है।

बरगद- इस वृक्ष का नाम ही वरदान का द्योतक है, लंबी आयु व निरोग काया के लिए वट के वृक्ष की पूजा की जाती है। यह वृक्ष भी पीपल के समान सर्वाधिक पूज्य है। वट वृक्ष से असाधारण एवं दिव्य तरंगे प्रवाहित होती हैं, अत: इसे अधिकतर जल के समीप ही लगाया जाता है। वट वृक्ष के पास कुआं बनाने का उद्देश्य ही संभवत: यह है कि पानी में दिव्य तरंगे समाहित होकर उसे स्वच्छ और साफ रखें। इसकी छाया शीतलता देती हुई वायु को स्वच्छ रखते हैं।

❋ सबसे बड़ा बरगद का पेड़ है कहां- इंडियन बोटेनिकल गार्डन, कोलकाता में - यह गार्डन कोलकाता के हावड़ा जिले के शिबपुरे में है। यह आर्चिड पाम, बैम्बूज एंड प्लांटस् ऑफ द पाइन जीनस के लिए फेमस है। यह गार्डन हुगली नदी के किनारे २७० एकड़ में बना हुआ है, जहां १७०० अलग-अलग तरह के पेड़-पौधे लगाए गए हैं। बोटेनिकल गार्डन ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा १७८७ में बढ़ती कमर्शियल एक्टिविटीज और बाजार को देखते हुए बनाया गया था। इसके अलावा, यहां का बर्ड हाउस आकर्षण का केंद्र है। इस गार्डन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यहाँ पर विश्व का सबसे चौड़ा बरगद का पेड़ है यह १४४४०० वर्ग मीटर में फैला हुआ है।

चुंबक वृक्ष- क्या कभी कोई वृक्ष किसी को अपनी ओर खींच सकता है। ऑस्ट्रेलिया में एक ऐसा वृक्ष पाया जाता है, जो नजदीक से गुजर रहे व्यक्ति को अपनी ओर खींच लेता है और उससे अपनी प्यास शांत करता है। पेड़ के इस चुंबकत्व शक्ति के कारण लोग इसे चुंबक वृक्ष के नाम से जानते हैं।

जहरीला वृक्ष- जावा के जंगलों में बेरी के झाड़ जैसे पाए जानेवाले वृक्ष से निकला द्रव खतरनाक विष माना जाता है। स्थानीय निवासी शिकार करते वक्त तीरों में इसी विष का प्रयोग करते हैं।

शिकारी वृक्ष- मालाया में अंजीर की भांति पाए जानेवाले विशाल वृक्ष, जिसे फिनरसबी जिकोसा नाम से जाना जाता है, अपने पास लगे छोटे-छोटे वृक्षों को खींचकर उनका रस चूसने के बाद फेंक देता है।

प्रकाश फेंकनेवाला- हिमालय की तलहटी पर प्रकाश फेंकनेवाला वृक्ष पाया जाता है। रात में इन वृक्षों से इतना अधिक प्रकाश उत्पन्न होता है कि दूर से ऐसा प्रतीत होता है कि मानो वृक्षों पर बल्ब लगा दिए गए हों।

हंसनेवाला वृक्ष- अफ्रीका के जंगलों में व्यक्ति की हंसने जैसी आवाज करनेवाला एक वृक्ष पाया जाता है। इन वृक्षों के फूलों में आटा या अन्य कोई पिन जैसी चीज लगा देने से हंसने जैसी ध्वनि उत्पन्न होती है।

ड्रेगन वृक्ष- डेरफिन पहाड़ पर ड्रेगन नामक इतना विशाल वृक्ष पाया जाता है कि स्थानीय लोग उसे खोखला कर मंदिर या स्थान बना देते हैं। इसको विशालता का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस मंदिर में एक साथ बैठकर

सैकड़ों लोग प्रार्थना आदि कर सकते हैं।

प्राकृतिक सुई धागा देनेवाला वृक्ष- क्या कभी कोई वृक्ष प्राकृतिक सुई-धागा दे सकता है। मैक्सिको में ऐसा वृक्ष पाया जाता है, जिसमें सुई धागा एक साथ पाया जाता है। पौधे की पत्ती में सुई जैसा कांटा होता है, जिसे तोड़ने पर दो फिट लंबा धागा निकलता है। स्थानीय लोग प्राकृतिक सुई-धागा से सिलने का छोटा-मोटा काम करते हैं।

❋ अमेरिका के उत्तरी भाग में एक ऐसा वृक्ष पाया जाता है, जिससे दूध निकलता है। यह पेड़ एक बार में कई लीटर दूध दे सकता है। इन पेड़ों की लंबाई १०० फीट से लेकर १४० फीट तक होती है।

❋ संसार का सबसे पुराना पेड़ श्रीलंका में है, कहते हैं इसे महाराजा अशोक ने लगवाया था।

❋ कदम्ब का पेड़ - कदम्ब का तनाव १०० से १६० सेंटीमीटर व्यास का, चिकना, सफेदी लिए हुए हल्के भूरे रंग का होता है। फूल गेंद की तरह गोल लगभग ५५ सेमी व्यास के होते हैं जिसमें अनेक उभयलिंगी पुंकेसर कोमल शर की भाँति बाहर की ओर निकले होते हैं। कदम्ब एक प्रसिद्ध फूलदार वृक्ष है। कदम्ब का पेड़ काफी बड़ा होता है। कदम्ब के पेड़ ग्रामीण क्षेत्रों में ज्यादा होते हैं। इसके पत्ते बड़े और मोटे होते हैं जिनसे गोंद भी निकलता है। कदम्ब के पेड़ के पत्ते महुए के पत्तों जैसे और फल नींबू की तरह गोल होते हैं और फूल फलों के ऊपर ही होते हैं। फूल छोटे और खुशबुदार होते हैं। वर्षा ऋतु में जब यह फूलता है, तब पूरा वृक्ष अपने हल्के पीले रंग के छोटे-छोटे फूलों से भर जाता है। उस समय इसके फूलों की मादक सुगंध से ब्रज के समस्त वन और उपवन महकने लगते हैं। कदम्ब के वृक्ष में एल्केलायड कदम्बाई नं. ३, अल्फाडीहाइड्रो कदम्बीन, ग्लैकोसीड्स एल्केलायड, आइसो-डीहाइड्रो कदम्बीन, बीटासिटोस्तीरा, क्लीनोविक एसिड, पेंतासायक्लीक ट्रायटार्पेनिक एसिड, कदम्बाजेनिक एसिड, सेपोनिन, उत्पत्त तेल, क्वीनारिक एसिड आदि रासायनिक तत्वों की भरमार होती है, जिनकी वजह से कदम्ब देव वृक्ष की श्रेणी में आता है।

❋ जंगल में ट्री वॉक का रोमांच - न्यूजीलैंड के रेडवुड के जंगल में पेड़ों के तनों पर जमीन से १२ मीटर (करीब ४० फुट) की ऊंचाई पर एक पैदल मार्ग बनाया गया है, जो पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। यह जंगल ५३ हजार वर्ग हेक्टेयर में फैला है और यह पैदल मार्ग करीब आधा किलोमीटर लंबा है, जो २३ लटकनों वाले पुलों से बना है। पर्यटक जंगल में इतनी ऊंचाई पर पेड़ों के बीचोंबीच रहकर बर्ड वॉच का आनंद लेते हैं।

❋ बोतल वृक्ष नामीबिया में पाया जानेवाला ये वृक्ष धरती के सबसे खतरनाक वृक्षों में से एक है। इस वृक्ष से दूधिया रस निकलता है जो एक तीव्र जहर होता है जिसे प्राचीन काल में शिकारी अपने तीरों पर लगाया करते थे। इस वृक्ष का आकार बोतल जैसा होता है इसलिए इसे बोतल वृक्ष कहते हैं।

❋ मलयगिरी वृक्ष- मलयगिरी एक बहुविकल्पी शब्द है। मलयगिरी वृक्ष दारचीनी जाति का एक प्रकार का बड़ा और बहुत ऊँचा वृक्ष है। यह वृक्ष कामरूप, आसाम और दार्जिलिंग में विशेष रूप से उत्पन्न होता है। मलयगिरी वृक्ष को उगाने के लिए वसंत ऋतु में इसके बीज बोये जाते हैं। मलयगिरी वृक्ष में कई प्रकार की विशेषताएँ पाई जाती हैं। इसकी छाल दो अंगुल से चार-पाँच अंगुल तक मोटी होती है। वृक्ष की लकड़ी भारी, पीलापन लिए हुए और सफेद रंग की होती है। इसकी छाल और लकड़ी दोनों अपनी खास प्रकार की सुगंध के लिए जानी जाती है। मलयगिरी वृक्ष की लकड़ी बहुत मजबूत होती है और साफ करने पर चमकदार निकलती है। इसकी लकड़ी कि एक और विशेषता यह है कि इसमें दीमक आदि कीड़े नहीं लगते। इससे मेज, कुर्सी और संदुक आदि बनते हैं और साथ ही इमारत आदि

में भी इसका प्रयोग किया जाता है।

❋ अक्षयवट- अक्षयवट इलाहाबाद में गंगा-यमुना संगम के पास किले के भीतर स्थित एक वृक्ष है। यह सनातन विश्ववृक्ष माना जाता है। असंख्य यात्री इसकी पूजा करने के लिए आते हैं। काशी और गया में भी अक्षयवट है, जिनकी पूजा-परिक्रमा की जाती है। अक्षयवट को जैन भी पवित्र मानते हैं। उनकी परम्परा के अनुसार इसके नीचे ऋषभदेव जी ने तप किया था।

❋ अशोक वृक्ष- अशोक का वृक्ष हरित वृक्ष आम के समान २५ से ३० फुट तक ऊँचा, बहुत-सी शाखाओं से युक्त घनरा व छायादार होता है। देखने में यह मौलश्री के पेड़ जैसा लगता है, परन्तु ऊँचाई में उससे छोटा ही होता है। इसका तना कुछ लालिमा लिए हुए भूरे रंग का होता है। यह वृक्ष सारे भारत में पाया जाता है। इसके पल्लव ९ इंच लंबे, गोल व नोंकदार होते हैं। ये साधारण डण्ठल के व दोनों ओर ५-६ जोड़ों में लगते हैं। कोमल अवस्था में इनका वर्ण श्वेताभ लाल फिर गहरा हरा हो जाता है। पत्ते सूखने पर लाल हो जाते हैं। फल वसंत ऋतु में आते हैं। पहले कुछ नारंगी, फिर क्रमश: लाल हो जाते हैं। ये वर्षा काल तक ही रहते हैं। अशोक वृक्ष की फलियाँ आठ से दस इंच लंबी चपटी, एक से दो इंच चौड़ी दोनों सिरों पर कुछ टेढ़ी होती है।

❋ संसार का सबसे पुराना वृक्ष चीड़ का है, वह पूर्वी नेवादा में है।

❋ विश्व के अजीबोगरीब पेड़

❋ दूध वृक्ष- दक्षिणी अमेरिका में एक ऐसा वृक्ष है जो गाय के समान दूध देता है। इस वृक्ष के तने में अंगुली करने से जरा-सा छेद करते ही दूध जैसा सफेद, चिकना, तरल पदार्थ निकलता है, जो स्वाद में भी दूध के समान ही मीठा होता है। इस वृक्ष की इसी खूबी की वजह से इसे दूध वृक्ष के नाम से पुकारा जाता है।

❋ रोटी वृक्ष- दक्षिणी अमेरिकी में ही अनोखापन लिए एक वृक्ष और देखने को मिलता है। इस वृक्ष का फल फुटबॉल जैसा बड़ा होता है और यदि इस फल को काटकर सेंका जाए तो इसका स्वाद बिल्कुल रोटी के समान लगता है। इस वृक्ष की इसी खूबी के कारण कुछ लोग इसे रोटी वृक्ष के नाम से पुकारते हैं।

❋ मोमबत्ती वृक्ष- दक्षिण अफ्रीका और मध्य अमेरिका में ऐसा वृक्ष पाया जाता है, जिसमें मोमबत्तियां लटकती हैं। इस वृक्ष की शाखाओं में तीन-तीन, चार-चार फुट लंबी सलाइयां भी निकलती रहती हैं, जो देखने में बिल्कुल मोमबत्ती-सी लगती हैं और यदि इनके सिरे को जलाया जाए तो बिना किसी देरी के जल भी जाती हैं।

❋ बोतल वृक्ष- ऑस्ट्रेलिया में यह वृक्ष पाया जाता है जिसका तना १०-१२ फुट तो अन्य सामान्य वृक्षों की तरह ही बढ़ता है, किन्तु इसके बाद की इसकी ऊंचाई बोतल की गर्दन की शकल में ऊपर की ओर बढ़ती है, जो दूर से देखने में बिल्कुल बोतल की गर्दन की भांगत ही लगती है। इसलिए इसको बोतल वृक्ष के नाम से जाना जाता है।

ब्लैडरवर्ट - ब्लैडरवर्ट एक सामान्य पेड़ है जो साफ पानी के अंदर पाया जाता है। इसकी पत्तियां अलग-अलग भागों में बंटी रहती हैं। कीड़े के नजदीक आते ही यह उसे पकड़ लेती हैं। पत्तियों का बंद होना और खुलना एक वाल्व की सहायता से होता है। पाचन क्रिया पूरी होने के बाद यह दोबारा तैयार हो जाता है।

डायोनिया- यूएसए में पाए जानेवाले डायोनिया पेड़ के दो सिरे होते हैं। दोनों में अदृश्य दांत होते हैं। जो हिंज का काम करते हैं। इनके ऊपरी हिस्से में तीन खोखले हिस्से होते हैं जिनमें से एक को अगर छू लिया जाए तो बाकी अपने आप ही

बंद हो जाते हैं जिससे कीड़े शिकार बनते हैं और पाचन क्रिया शुरू होती है।

❋ ट्री ऑफ तुले - यह पेड़ अपनी विशाल परिधि के कारण दुनियाभर में प्रसिद्ध है, जो १३८ फुट के करीब है। इसकी ऊंचाई करीब १४१ फुट है। यह मैक्सिको में सांता मारिया देल तुले नामक स्थान पर स्थित है। इतने मोटे तनेवाला ऐसा पेड़ दुनिया में दूसरा नहीं है।

❋ कैलीफोर्निया के सिक्यूओइया पेड़ों को उगाने के लिए आग बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

❋ दुनिया के अनोखे पेड़ - अमेरिका में दूध देनेवाला पौधा पाया जाता है। इसे गऊ वृक्ष कहते हैं। यह वृक्ष एक सी फुट या इससे अधिक ऊंचा होता है। दूध प्राप्त करने के लिए इसके तने में सुराख करके बर्तन नीचे रख दिया जाता है।

न्यू साउथ वैल्स तथा स्विस लैंड स्थिति जंगलों में जीनस लोपोरियो नाम का ८०-१०० फुट ऊंचा एक वृक्ष पाया जाता है। इसके पत्ते हृदयाकार होते हैं। पत्तों में रेशेदार भूरे कांटे होते हैं। यदि कोई इनको रगड़कर निकल जाये तो चार दिन तक उसे भयंकर जलन होती है।

एक ज्वलनशील वृक्ष का नाम फाल्ससिटेनो है। इसके आसपास यदि कोई माचिस की तीली जलाए तो यह वृक्ष स्वयं जल उठता है।

क्रोध वृक्ष कैलीफोर्निया में पाया जाता है। यह १० से २० फुट ऊंचा होता है। यह वृक्ष अपना क्रोध खड़खड़ाहट व विचित्र तरह की सनसनाहट द्वारा प्रकट करता है।

ब्राजील के घने जंगलों में मोरन प्लांट या मोरन ट्री नामक एक विचित्र झाड़ीनुमा पौधा पाया जाता है जिससे सारे दिन संगीत निकलता है और शाम होते ही यह संगीत, रोने व कराहने की आवाज में बदल जाता है।

❋ मलेशिया के विषुवृतीय जंगलों में पाया जानेवाला एक वृक्ष है फिनरबी जिकोसा। इस वृक्ष की खासियत यह है कि यह अपने आसपास लगे छोटे-छोटे पौधों को आत्मसात कर उसका रस चूस लेता है। रस चूसने के बाद इन पौधों के हिस्से को फेंक देता है।

❋ अफ्रीका के जंगलों में एक ऐसा वृक्ष पाया जाता है जो आदमी के हंसने जैसी ध्वनि निकालता है। ध्वनि तब निकलती है जब इन वृक्षों के फूलों में आटा या अन्य कोई पिसी चीज लगा दी जाय।

❋ दक्षिण अमेरिका में मैरी नाम का ऐसा वृक्ष पाया जाता है जो सूखे के दिनों में हवा में मौजूद नमी को सोख, उसे अपने भीतर बाष्प के रूप में इकट्ठा रखता है और फिर बारिश कराता है। पौधे के आसपास के हिस्से में जमीन पर नमी महसूस की जाती है। इन वृक्षों द्वारा की गई बारिश के कारण होती है।

❋ हिमालय की तलहटी पर एक ऐसा वृक्ष पाया जाता है जो प्रकाश देता है। रात को इन वृक्षों से इतना ज्यादा प्रकाश निकलता है कि दूर से देखने पर ऐसा महसूस होता है कि वृक्ष पर ६० वाट के सैकड़ों बल्ब जल रहे हों।

❋ अमेरिका में कैलीफोर्निया नामक स्थान पर एक ऐसा पेड़ है जो गुस्सा आने पर सनसनाहट करते हुए बड़बड़ाता है। जापान के घने जंगलों में चोटी से धुआं छोड़नेवाला वृक्ष पाया जाता है। शाम होते ही यह धुआं छोड़ने लगता है। दूर से देखने पर लगता है जैसे कि वृक्ष के चोटी वाले हिस्से में आग लग गयी हो।

❋ अफ्रीका के जंगलों में एक ऐसा वृक्ष है जिसके तने में छेद कर देने से ठंडा पानी निकलने लगता है। यहीं पर रेगिस्तान में केपकरीन नामक जगह पर एक ऐसा पेड़ है जो रातभर पानी बरसाता है। यह पानी इतनी अधिक मात्रा में होता

है कि किसान उसी पानी से अपने खेतों की सिंचाई करते हैं। हिमालय पर एक किस्म का ऐसा भी पेड़ है जो रात में प्रकाश देता है। उसकी रोशनी दूर तक देखी जा सकती है।

* दक्षिणी अफ्रीका में एक ऐसा पेड़ पाया जाता है जिससे यात्री दिशा का ज्ञान प्राप्त करते हैं। इस पेड़ की खासियत यह है कि यह सदैव उत्तर दिशा की ओर झुकता है। ऑस्ट्रेलिया और अफ्रीका के घने जंगलों में मूपन्स और होरजिंकल नामक वृक्ष अपने पास से गुजर रहे मनुष्य या पशु को अपनी लंबी शाखाओं में पकड़कर उनका खून चूस जाते हैं।

* विचित्र पत्तियां सुमात्रा द्वीप के ब्रेडफ्रुट वृक्ष की पत्तियां शुरू में कटावदार होती है किन्तु बड़ी होने पर उनमें कटाव नहीं रहते।

* कैलीफोर्निया के व्हीलर पार्क में एक ऐसा वृक्ष है, जिसकी अनुमानित उम्र ५००० वर्ष है।

* नारियल का वृक्ष ६ से ३० मीटर तक ऊंचा होता है।

* इंग्लैंड में इडन हॉल के ग्रेट बालरूम का १०९ फुट लंबा और १८ फुट चौड़ा पूरा फर्श मेनसन पार्क के एक विशाल ओक वृक्ष को काटकर बनाया गया है।

* जनरल शरमन- कैलिफोर्निया का देवदार प्रजाति का यह वृक्ष सेकोइया नेशनल पार्क में स्थित है। घनत्व (वोल्यूम) के हिसाब से यह संसार का सबसे घना वृक्ष है। इसकी ऊंचाई २७५ फुट, डायमीटर २५ फुट और घनत्व ५२,५१३ घन फुट है और आयु २७०० वर्ष है।

* दक्षिण अफ्रीका में पाया जानेवाला कोबरा नामक वृक्ष इतना खतरनाक होता है कि अगर कोई व्यक्ति उस पेड़ के पास भी चला जाता है तो पेड़ की डालियाँ उसे जकड़ लेती हैं और तब तक नहीं छोड़तीं जब तक उस व्यक्ति के मृत्यु ना हो जाए।

* विलक्षण पेड़ों की जानकारियां - हिन्द महासागर के रियूनियन द्वीप में एक कैक्टस का पौधा पाया जाता है, जिसकी उम्र लगभग ५० वर्ष होती है। इसमें जीवन के अन्तिम वर्ष में ही मात्र एक बार फूल लगते हैं। उसके बाद वह हमेशा के लिए नष्ट हो जाता है।

गर्म प्रदेशों में पाया जानेवाला वृक्ष सामानी सनम वनस्पति जगत में अपने ढंग का अनोखा वृक्ष है। उस क्षेत्र के निवासी उसी से अपने जल की आवश्यकता पूरी करते हैं। इस वृक्ष की विशेषता यह है कि यह वृक्ष रात्रि में बादलों की तरह पानी बरसाता है। यह पेड़ दिन भर अपने डंठलों से हवा की नमी सोखता है और अपना भण्डार भर लेता है। जैसे ही मौसम की गर्मी शांत होती है, वह अपने अंदर समाहित जल भण्डार को खाली करके उस क्षेत्र के प्राणियों की प्यास बुझाता है। वृक्ष प्रायवायु तो देते ही हैं। हमारा उगला विष भी अपने अंदर सोखते हैं, पर बादलों को माध्यम बनाकर पानी देने के अतिरिक्त भी बरस सकते हैं। यह पेड़ इसका अपने में अनूठा उदाहरण है। महाराष्ट्र के जलगांव में अंजिष्ठा मार्ग पर पहुर नामक एक छोटा-सा गांव है। वहां से दुर्णी जानेवाली कच्ची सड़क पर ३ मील दूर एक गांव है सोप। इस गांव में वाणी सिद्धि का एक अद्भुत चमत्कारी नीम का पेड़ है। जिसकी प्रत्येक डाल के पत्ते कड़वे हैं किन्तु इसी पेड़ में सिर्फ एक डाल ऐसी है जिसके पत्तों का स्वाद एकदम मीठा है।

यहां इस पेड़ के बारे में कहावत है कि कड़ोवा महाराज नाम के एक साधु ने ईश्वर के अस्तित्व और उसकी शक्ति का परिचय देने के लिए अपनी सिद्धि से यह अचरज किया था। हो चाहे कुछ भी, मगर यह पेड़ आज भी वैज्ञानिकों के लिए

अनबूझ पहेली बना है।

❋ बांस बहुत तेजी बढ़ता है- बांस का पेड़ २४ घंटे में तीन फीट बढ़ सकता है। इतनी ज्यादा वृद्धि हर अन्य पेड़-पौधों में देखने को नहीं मिलती है।

बेल- बेल का संबंध शनि ग्रह से है। बेल का फल व पत्ते दोनों ही पूजा में उपयोगी है। बेल भगवान शिव का पृथ्वी पर अवतार माना जाता है। साथ ही शिव-पार्वती और सूर्य का भी प्रतिनिधि माना जाता है।

❋ पोलैंड का क्रुक्ड फॉरेस्ट ऐसा है जहाँ एक भी पेड़ सीधा नहीं है। इस अजग-गजब की दुनिया में कई ऐसे रहस्य हैं जो अभी तक कोई सुलझा नहीं पया है। पोलैंड के क्रुक्ड फॉरेस्ट में करीब ४०० पेड़ ९० डिग्री पर मुड़े हुए हैं। यह जंगल नोवे सजारनोवे गांव के पास स्थित है। द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत से पहले इन पेड़ों को लगाया गया था। सभी पेड़ एक खास तरीके से मुड़े हुए हैं। ये आधार से ९० डिग्री पर मुड़ जाते हैं और ३ से ९ फुट तक ऐसे ही रहने के बाद फिर ऊपर की तरफ बढ़ते हैं। पेड़ों के ऐसे रूप के पीछे कई कारण बताए जाते हैं।

❋ पर्यावरण का दुश्मन यूकेलिप्टस वृक्ष को कहा जाता है।

❋ जापान में एक प्रकार का वृक्ष पाया जाता है, जो सूर्यास्त के समय धुँवा देता है।

❋ ओक ट्री की उम्र २०० साल से भी ज्यादा होती है।

❋ सबसे पुराना पेड- पश्चिम अमेरिका के कैलिफोर्निया प्रदेश में पाया जानेवाला सिकोया जाइगेन्टिया संसार का प्राचीनतम वृक्ष है। इसकी आयु दस हजार वर्ष है। इसकी ऊंचाई ४८७ फुट है, जो दिल्ली की कुतुब मीनार से डेढ़ गुनी अधिक है।

❋ दुनिया का सबसे बड़ा बीज दुहरे नारियल का होता है जो केवल हिंद महासागर में पाया जाता है- १८ क्रि.ग्रा. वजन।

❋ पेटीकोट पाम वृक्ष अपने तने को अपनी ही पत्तियों के आवरण में लपेट कर सूर्य की किरणों से उसकी रक्षा करता है।

❋ ऑस्ट्रेलिया के फायर व्हील नामक वृक्ष के फूल लाल रंग के चटकदार होते हैं। ये खूटियों के पहिये के समान होते हैं।

❋ दूधदायक पेड़- ब्राजील और पेरू के गहन जंगलों में एक विशेष प्रकार का वृक्ष पाया जाता है, जिसके तने में छेद कर देने से दूध के समान सफेद तरल पदार्थ निकलने लगता है। पौष्टिक होने के साथ-साथ यह मीठा भी होता है। ब्राजील के आदिवासी इसे बड़े चाव से पीते हैं।

❋ ओक पेड़ की उम्र २५० साल होती है।

❋ न्यूजीलैंड में मिंका नामक एक वृक्ष पाया जाता है। उस वृक्ष के तने से मक्खन जैसा द्रव निकलता है, जो गाढ़ा भी होता है और बेहद मीठा भी। वहां के लोग मक्खन के बजाय उस द्रव का ही उपयोग प्रतिदिन भोजन में करते हैं।

❋ वेस्टइंडीज के सूडानइलेह वन में एक वृक्ष पाया जाता है। इस वृक्ष को मोर्निंग ट्री (शोकाकुल वृक्ष) कहते हैं। इस वृक्ष से दिनभर संगीत की स्वर लहरियां निकलती हैं, मगर शाम होते ही वृक्ष से रोने की आवाज आती है।

❋ ऑस्ट्रेलिया में टिनास नामक एक वृक्ष पाया जाता है, जो साल में दो बार अपनी छाल बदल लेता है।

❋ जावा (सुमात्रा) के समुद्र तट पर एक नरभक्षक वृक्ष पाया जाता है। इस वृक्ष के नीचे जो कोई भी प्राणी खड़ा हो जाता है, उसे यह अपनी खतरनाक टहनियों से ढंक लेता है। प्राणी मर जाता है, तो टहनियां अपने आप ऊपर उठ जाती हैं।

❋ कोलकाता के बोटेनिकल गार्डन में एक विशाल वटवृक्ष है, जो दस एकड़ जमीन पर फैला हुआ है। यह २७ मीटर

ऊंचा है तथा २४१ वर्ष पुराना।

❋ अमेरिका के कैलिफोर्निया शहर में हैंबेलेट स्टेट नामक एक पार्क है। इस पार्क में जैट सेकुजा वृक्ष की ऊंचाई लगभग १२२ मीटर है।

❋ ओक वृक्ष पर तब तक फल नहीं लगते जब तक वह ५० साल का नहीं हो जाता।

❋ सिक्यूआ नामक एक पेड़ पिछले ४००० वर्ष से लगातार उत्तरी-पश्चिमी अमेरिका में फल-फूल रहा है। इसकी ऊंचाई ३०० फीट है।

❋ ४५ फीट ऊंचा लौंग का वृक्ष पहली बार इंडोनेशिया के मोलुकास तट पर मिला।

❋ जैतून का वृक्ष १,५०० साल से भी ज्यादा जीवित रह सकता है।

❋ बाँस के वृक्ष की कुछ प्रजातियां ऐसी भी होती हैं जिनमें वृक्ष ३ फुट प्रतिदिन के हिसाब से बढ़ते हैं।

❋ ऑलिव वृक्ष १५०० साल तक जीवित रहता है।

❋ वर्तमान के जीवित पेड़ पौधों में सिकोया जाईगौण्टिया सबसे ऊंचा पेड़ है। यह १२० मीटर अर्थात ३६० फुट तक की ऊंचाई वाला होता है। इसकी आयु १००० वर्षों तक आंकी गई है। इस आधार पर पाए जानेवाले समस्त पेड़-पौधों में सबसे दीर्घायु भी है। संसार में सबसे ऊंचा बांस १२१ फुट और सबसे ऊंची घास, जिसे फैली घास कहते हैं १८ फुट की होती है।

❋ अमलतास को आयुर्वेद में स्वर्ण वृक्ष कहते हैं। इसके फूल मार्च, अप्रैल और मई माह में खिलते हैं, जो पीले होते हैं। लंबे-पतले डंठलों पर लटकने वाले पीले फूल और गोल कलिकाएं कानों में लटकने वाले बूंदों के समान दिखाई देती हैं। पीले सुनहरी फूलों से लदा हुआ यह वृक्ष घर-आंगन को सुकून से भर देता है। ग्रीष्म की तेज धूप में उजले-पीले फूलों के लंबे झुमकों को अपने सिर पर मुकुट की तरह धारण करनेवाला वृक्ष अमलतास अपने अद्भुत सौन्दर्य से सबका मन मोह लेता है। यह वृक्ष भारत और बर्मा (म्यांमार) के जंगलों में बहुतायत से पाया जाता है। बारिश के मौसम में अमलतास का गूदा पथरी, मधुमेह तथा दमे के लिए दवा के रूप में माना जाता है।

❋ अर्जुन सदा हरित वृक्ष है। इसके फूल प्याले के आकार के हल्के पीले होते हैं। फूल मार्च से जून तक खिलते हैं।

❋ नीम की पत्तियों के रस और शहद को २:१ के अनुपात में पीने से पीलिया में फायदा होता है और इसके कान में डालने कान के विकारों में भी फायदा होता है। नीम के तेल की ५-१० बूंदों को सोते समय दूध में डालकर पीने से ज्यादा पसीना आने और जलन होने सम्बन्धी विकारों में बहुत फायदा होता है। नीम के बीजों के चूर्ण को खाली पेट गुनगुने पानी के साथ लेने से बवासीर में काफी फायदा होता है। नीम की निम्बोली का चूर्ण बनाकर एक-दो ग्राम रात को गुनगुने पानी से लें कुछ दिनों तक नियमित प्रयोग करने से कब्ज रोग नहीं होता है एवं आंतें मजबूत बनती है। गर्मियों में लू लग जाने पर नीम के बारीक पंचांग (फूल, फल, पत्तियां, छाल एवं जड़) चूर्ण को पानी में मिलाकर पीने से लू का प्रभाव शांत हो जाता है। बिच्छू के काटने पर नीम के पत्ते मसल कर काटे गये स्थान पर लगाने से जलन नहीं होती है और जहर का असर कम हो जाता है। नीम के २५ ग्राम तेल में थोड़ा सा कपूर मिलाकर रखें यह तेल फोड़ा-फुंसी, घाव आदि में उपयोग रहता है।

गठिया की सूजन पर नीम के तेल की मालिश करें। नीम के पत्ते कीड़े मारते हैं। इसलिये पत्तों को अनाज, कपड़ों में रखते हैं। नीम की २० पत्तियां पीसकर एक कप पानी में मिलकर पिलाने से हैजा ठीक हो जाता है। निबोरी नीम का फल

होता है, इससे तेल निकाला जाता है। आग से जले घाव में इसका तेल लगाने से घाव बहुत जल्दी भर जाता है। नीम का फुल तथा निबोरियाँ खाने से पेट के रोग नहीं होते। नीम की जड़ को पानी में उबालकर पीने से बुखार दूर हो जाता है। छाल को जलाकर उसकी राख में तुलसी के पत्तों का रस मिलाकर लगाने से दाग तथा अन्य चर्म रोग ठीक होते हैं। विदेशों में नीम को एक ऐसे पेड़ के रूप में पेश किया जा रहा है, जो मधुमेह से लेकर एड्स, कैंसर और न जाने किस-किस तरह की बीमारियों का इलाज कर सकता है। नीम के तेल से मालिश करने से विभिन्न प्रकार के चर्म रोग ठीक हो जाते हैं। नीम के लेप सभी प्रकार के चर्मरोगों के निवारण में सहायक है। नीम की दातुन करने से दांत व मसूढ़े मजबूत होते है और दांतों में कीडा नहीं लगता है, तथा मुंह से दुर्गंध आना बंद हो जाता है। इसमें दोगुना पिसा सेंधा नमक मिलाकर मंजन करने से पायरिया, दांत-दाढ़ का दर्द आदि दूर हो जाता है। नीम की कोपलों को पानी में उबालकर कुल्ले करने से दाँतों का दर्द जाता रहता है। नीम की पत्तियां चबाने से रक्त शोधन होता है और त्वचा विकार रहित और चमकदार होती है। नीम की पत्तियों को पानी में उबालकर और पानी ठंडा करके उस पानी से नहाने से चर्म विकार दूर होते हैं और ये खासतौर से चेचक के उपचार में सहायक है और उसके विषाणु को फैलने न देने में सहायक है। चेचक होने पर रोगी को नीम की पत्तियां बिछाकर उस पर लिटाएं। नीम की छाल के काढ़े में धनिया और सौंठ का चूर्ण मिलाकर पीने से मलेरिया रोग में जल्दी लाभ होता है। नीम मलेरिया फैलानेवाले मच्छरों को दूर रखने में अत्यन्त सहायक है। जिस वातावरण में नीम के पेड़ रहते हैं, वहाँ मलेरिया नहीं फैलता है। नीम के पत्ते जलाकर रात को धुआं करने से मच्छर नष्ट हो जाते हैं और विषम ज्वर (मलेरिया) से बचाव होता है। नीम के फल (छोटा सा) और उसकी पत्तियों से निकाले गये तेल से मालिश की जाये तो शरीर के लिये अच्छा रहता है। नीम के द्वारा बनाया गया लेप बालों में लगाने से बाल स्वस्थ रहते हैं और कम झड़ते हैं। नीम और बेर के पत्तों को पानी में उबाले, ठण्डा होने पर इससे बाल धोयें, स्नान करें कुछ दिनों तक प्रयोग करने से बाल झड़ने बन्द हो जायेंगे व बाल काले व मजबूत रहेंगे। नीम की पत्तियों के रस को आंखों में डालने से आंख आने की बीमारी (कंजेक्टिवाइटिस) समाप्त हो जाती है।

❋ यूकेलिप्टस (जिसे हम सफेदे का पेड़ भी कहते हैं) की पत्तियों में भी सोने के कण मौजूद होते हैं।

❋ ड्रैगन ब्लड ट्री- यह अद्‌भुत पेड़ हिंद महासागर में सोकोट्रा द्वीप में पाया जाता है। इस पेड़ से लाल रंग का रस टपकता है। इसलिए इसका यह नाम पड़ा है। इसका आकार छतरी की तरह होता है। इस पर बेरी जैसा फल लगता है, जिसे चिड़ियां खा जाती हैं।

❋ ट्रैवलर्स ट्री- इस पेड़ को रावनला भी कहते हैं और यह मैडागास्कर में पाया जाता है। यह विशुद्ध पॉम ट्री नहीं है, बल्कि बर्ड ऑफ पैराडाइज फैमिली स्ट्रेलिटजिएसी का सदस्य है। यह एक सदाबहार पेड़ है और इसके पत्ते पंखे की तरह फैले होते हैं, जो देखने में बहुत आकर्षक लगते हैं। इसकी ऊंचाई लगभग २० से ३० मीटर तक हो जाती है।

❋ वाटर लिली के पत्ते आमतौर पर बड़े होते हैं जिनके नीचे हवा के लिए स्थान बने होते हैं। इसके पत्ते के नीचे फंसी हवा इसे तैराए रखती है। इसके साथ ही पत्ते के तने भी मजबूत होते हैं जो इसे सीधा रखते हैं। इस तरह से वाटर लिली अपने पत्तों को रोशनी के सामने रखती है जिसकी आवश्यकता उसे जीवित रहने के लिए होती है।

❋ पृथ्वी पर सबसे बड़ी जीवित वस्तु जनरल शरमन है। यह एक विशालकाय सिकोया का पेड़ है जो कैलिफोर्निया में है। जनरल शरमन २७५ फीट ऊंचा है और उसका भार करीब २००० टन है।

❋ दुनिया का सबसे बूढ़ा पेड़ है मेथुसिला कैनिफोर्निया में है। मेथुसिला लगभग ४६०० साल पुराना है।

❋ न्यूजीलैंड में मिन्का नामक एक वृक्ष पाया जाता है, उस वृक्ष के तने से मक्खन जैसा द्रव निकलता है, जो कि गाढ़ा होता है और मीठा भी। वहां के लोग मक्खन के बजाय उस द्रव का ही उपयोग खाने में करते हैं।

ऑस्ट्रेलिया में यूकेलिप्टस का एक वृक्ष पाया जाता है, जो साल में एक बार अपनी छाल बदल लेता है।

अमेरिका के कैलिफोर्निया शहर में हैबेल्ट स्टेट नामक एक पार्क है, इसमें जैट सेकुजा वृक्ष की ऊंचाई लगभग १२२ मीटर है।

कलकत्ता के बोटेनिकल गार्डन में एक विशाल वटवृक्ष है, जो दस एकड़ जमीन में फैला हुआ है, यह २७ मीटर ऊंचा तथा २२० वर्ष पुराना है। वेस्टइंडिज के सूडान इलोह वन में एक वृक्ष पाया जाता है, इस वृक्ष को मॉर्निंग ट्री कहते है।

❋ कोस्ट रेडवुड का हाईपेरियान वृक्ष दुनिया का सबसे ऊंचा पेड़ है। इसकी ऊंचाई ३७९.७ फुट है। यह कैलीफोर्निया के रेडवुड नेशनल पार्क में स्थित है।

❋ प्रकृति का अद्‌भुत विशाल बीज वाला वृक्ष - प्रकृति की गोद भी कई रहस्यों से भी पड़ी है। इसके अद्भुत नमूने वनस्पति जगत में भी अति सूक्ष्म वनस्पति व विशालकाय वटवृक्ष के रूप में मिलते हैं। प्रकृति ने ही वनस्पति जगत को अद्भुत विशालकाय वृक्ष उपहार के रूप में दिया है, यह संसार का सबसे ज्यादा उम्रवाला, सबसे बड़े आकार, वजन व बीज वाला विशालकाय पत्तियों का वृक्ष है। इस अनूठे बीज वाले वृक्ष का नाम है डबल कोकोनेट।

ये वृक्ष हिंद महासागर में मेडागास्कर से लगभग ९०० किलोमीटर पूर्व में है। जहां पर वे वृक्ष बहुतायत में पाए जाते हैं।

प्राचीन समय में इस वृक्ष के बीजों के बारे में मन को अचंभित कर देनेवाली विचारधाराएं प्रचलित थीं जैसे इसका बीज जिसके भी पास होगा वह बड़ा ही सौभाग्यशाली होगा। इसी कारण कई राजा-महाराजा बीज देनेवाले को रत्नों से लाद देते थे। परंतु इस राज का पर्दा उस समय खुला जब सन १७४२ में एक व्यापारी उन तीन द्वीपों से इस पेड़ के बीजों का जहाज ही भरकर भारत ले आया। तब से इन बीजों के बारे में जो भ्रामक प्रचार था वो खत्म होता चला गया व आज यह स्थिति है कि ये बीज संसार के कई बंदरगाहें पर खरीदे जा सकते हैं, जिनमें मुंबई, कराची, सिंगापुर मुख्य हैं। बीजों को वनस्पति विज्ञान में नट श्रेणी में रखा गया है।

पाम कुल के इस वृक्ष में नर एवं मादा अलग-अलग होते हैं। इसके बीज को पामनट एवं कोकोनट के नाम से भी पुकारा जाता है। यह बीज दो जुड़वा नारियलों के समान दिखाई देता है। इस किस्म का एक विशालकाय वृक्ष भारतीय वनस्पति उद्यान हावड़ा, कलकत्ता में लगा हुआ है। इस वृक्ष की एक पत्ती जो ९० वर्ष की हो गई है, उसकी पूर्ण वृद्धि अभी तक नहीं हो पाई है। इस वृक्ष के फल १०० वर्ष की आयु के पश्चात ही आते हैं। इसके फल का वजन लगभग २० किलोग्राम तक होता है। जिसका आकार भी देखते ही बनता है व उसको रखनेवाला वास्तव में भाग्यशाली ही है। पंखों के आकार के इस वृक्ष की पत्तियों की लंबाई चौड़ाई क्रमश: १५ से १६ फीट व ६ से ८ फीट होती है।

❋ अनोखा क्रिसमस ट्री - टिलांडसिया रेलिगिओसा नाम का यह पौधा बेशक आपको क्रिसमस ट्री न लग रहा हो लेकिन मेक्सिको में क्रिसमस डैकोरेशन के दौरान इसी पौधे का इस्तेमाल किया जाता है। यह ट्री करीब १.५ मीटर तक बढ़ता है। इसमें फूल दिसंबर से मार्च के महीने में लगते हैं।

पौधा - पौधों की अद्‌भुत दुनिया हमारे चारों ओर बिखरी पड़ी है। इसमें हरे किस्म के पेड़-पौधें हैं। कोई नन्हा है, तो

कोई बड़ा। कोई लंबा है तो कोई मोटा। जिस तरह हर कोने में बसनेवाला मनुष्य अलग है, उसी तरह पौधे भी अलग-अलग हैं। बहुत से पौधे उन स्थितियों में भी जीवित रहते हैं, जिन स्थितियों में मनुष्य नहीं रह पाते।

वनस्पति जगत में एक प्रजाति है नेटिल्स। इसके अधिकांश पौधे छोटे-छोटे पत्तोंवाले झाड़ियों के रूप में होते हैं। जिन पर नीले, पीले, बैंगनी रंग के सुंदर-सुंदर मनमोहक फूल खिलते हैं। ये पौधे डंक भी मारते हैं, जो जहरीली चीटियों के डंक से कम नहीं होता। ऐसा भी हो सकता है कि उसका डंक किसी लंबी बीमारी का कारण ही बन जाये। सभी जीवधारियों की यह स्वाभाविक विशेषता है। किसी बाहरी स्पर्श के प्रतिक्रिया स्वरूप उसके शरीर में कोई न कोई उत्तेजना या सिहरन पैदा होती है। कुछ पौधों की पत्तियां स्पर्श से संकुचित हो जाती हैं। पर नेटिल्स पौधे आक्रमण कर अपनी सुरक्षा करते हैं। जिस अंग पर वे पौधे डंक मारते हैं वहां खरोच पड़ जाती है। फिर खुजलाहट होने लगती है। इस वर्ग में पौधों के विकास के बारे में तो ठीक से नहीं कहा जा सकता, किंतु यह संभव है कि उनके आसपास के वातावरण में उनके अनेक शत्रु रहे होंगे, जिससे सुरक्षा हेतु इन पौधों ने अपने शरीर को सुइयों जैसे कांटों तथा जहरीले रासायनिक तत्वों से पूर्ण बना लिया हो। इन कांटों में विषैलातत्व भरा रहता है। जिसे आक्रमण करनेवाले जंतु के शरीर में प्रविष्ठ कर देते हैं।

पौधे उच्च हिम शिखरों में भी विकसित होते हैं और रेतीले रेगिस्तानों में भी। जैसे आल्पस पर्वतमाला में उगनेवाला ग्लेशियर बटरकप ठंडे परिवेश को आसानी से सह लेता है और एरिजोना रेगिस्तान में उगनेवाला युक्का पानी के अभाव में भी खिला रहता है। कुछ पौधे तो दूसरे पौधों की शाखाओं पर भी उग जाते हैं। कुछ पौधों पर सड़कों के प्रदूषण का असर भी साफ नजर आयेगा। जबकि जो पौधे अपेक्षाकृत शांत जगहों पर उगे होंगे उनकी रंगत भी अलग होगी। अलग-अलग जगहों पर उगनेवाले पौधों में क्या अंतर होता है। सबसे पहला अंतर तो उस इलाके के पर्यावरण के कारण होता है।

किसी भी स्थान के अनुसार अपने आपको ढाल लेना भी पौधों की काबलियत कही जानी चाहिए। अब जैसे सेगौरी कैक्टस अपनी मोटी टहनियों में पानी स्टोर कर लेता है जो उसके बेहद काम आता है। मिमोसा ठंडी रातों या गर्म दिनों से अपने आपको सुरक्षित रखने के लिए अपनी पत्तियां मोड़ लेता है। कुछेक पौधे तो किसी के हल्के से स्पर्श से भी झुक जाते है जैसे छुईमुई। किसी बड़े पेड़ के सहारे उगना भी कुछ पौधों की फितरत होती है। इन पौधों को क्लाइम्बर्स कहा जाता है। उन्हीं के सहारे चढ़कर से सूर्य की उष्मा प्राप्त करते हैं। इसके अलावा ऐसे बहुत से पौधे हैं जो समुद्र के नीचे उगते हैं। इन्हें सीबीड्स कहते हैं। इनमें से बहुतों को खाद्य पदार्थ के रूप में इस्तेमाल भी किया जाता है। एक पौधे की सारी जड़ों को एक सीध में रख दिया जाए तो ये कई हजार किलोमीटर तक फैल सकती है।

❊ दुनिया में कुछ ऐसे पौधे भी होते हैं जिन्हें हम नंगी आंखों से नहीं देख सकते। क्लेमाइडोमोनास स्पाइरोगाइंरा और बालवाक्स कुछ ऐसे ही जलीय पौधों के नाम हैं, जिन्हें देखने के लिए हमें आवर्धित संयुक्त सूक्ष्मदर्शी की सहायता लेनी पड़ती है।

❊ कुछ ऐसे पेड़-पौधे भी हैं जो अपना भोजन खुद तैयार नहीं करते क्योंकि उनमें क्लोरोफिल मौजूद नहीं होता, ऐसे में ये पौधे भोजन के लिए दूसरे पौधों या मृत जानवरों पर निर्भर रहते हैं। जो पेड़-पौधे मृत जैव पदार्थों (डैड आर्गेनिक मैटर) से अपना भोजन प्राप्त करते हैं उन्हें सैप्रोफाइट्स कहा जाता है और जो पौधे अन्य पेड़-पौधों को खाते हैं उन्हें पैरासाइट्स (परभक्षी) कहा जाता है। सैप्रोफाइट्स क्षरण की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे मृत जीवों से पोषक तत्व जज्ब कर भूमि को मृत जीवों से मुक्ति दिलाते हैं। उदाहरण के लिए जिस फंगी और बैक्टीरिया में क्लोरोफिल

नहीं होता वे सब इसी श्रेणी में आते हैं।

परभक्षी पौधे दूसरे पौधों को अपना भोजन बनाते हैं, वे दूसरे पेड़-पौधों से भोजन तथा पानी खींच लेते हैं। यह काम वे हाऊस्टेरया नामक विशेष तौर पर विकसित अंगों द्वारा करते हैं। हाऊस्टेरिया दूसरे पौधे से परभक्षी को बचाता है और उसके टिशूज में विकसित होता है। परभक्षी पेड़-पौधे जिस अन्य पेड़-पौधों से पोषक तत्व लेते हैं वे उसे कोई लाभ नहीं पहुंचाते, इसकी बजाय अधिकतर मामलों में वे अपने मेजबान को नुकसान ही पहुंचाते हैं। डोडर्स, कसक्यूटा तथा कैसीथा जैसे परभक्षी पौधों में क्लोरोफिल बिल्कुल भी नहीं होता इसलिए वे भोजन के लिए पूरी तरह दूसरे पेड़-पौधों पर निर्भर रहते हैं।

डोडस, जो एक प्रसिद्ध परभक्षी पौधा है, एक छोटे स्लैंडर सांप जैसा दिखता है, इसका रंग चमकदार पीले से लेकर लाल तक हो सकता है। जब डोडर का बीज उगना शुरू होता है तो नन्हा पौधा एक चक्राकार स्थिति में विकसित होता है जो अपने मेजबान की खोज करता है। जैसे ही इसे मेजबान मिलता है तो इस पौधे का पतला तना मेजबान के आसपास फैलने लगता है और उससे भोजन प्राप्त करना शुरू कर देता है।

❋ लिलि- लिलि या लिलिएसी कुल का जीनस है, जिसके १०० स्पेसीज हैं। इसे पौधे कठोर, अर्धकठोर तथा कंदीय शाक होते हैं। लिलि के कीपाकार फूल अपनी सुंदरता सुगंध एवं आकृति के कारण विख्यात हैं। फूलों की पंखुड़ियों में बाहर की और भूरी, या गुलाबी वर्णरेखाएँ रहती हैं और अंदर की ओर पीली अथवा श्वेत आभा रहती है। इसका तना कई फुट ऊँचा होता है और इसमें अंतस्थ फूल, या अंतस्थ फूलगुच्छ लगता है। यह वंश उत्तरी शीतोष्ण क्षेत्र का देशज है और इसका प्रवर्धन, बीज, शाल्कीकंद, पत्र प्रकलिकाओं तथा भूस्तरी द्वारा होता है।

❋ चमेली- हिमालय का दक्षिणावर्ती प्रदेश चमेली का मूल स्थान है। इस पौधे के लिये गरम तथा समशीतोष्ण दोनों प्रकार की जलवायु उपयुक्त है। सूखे स्थानों पर भी ये पौधे जीवित रह सकते हैं। भारत में इसकी खेती तीन हजार मीटर की ऊंचाई तक ही होती है। यूरोप के शीतल देशों में भी यह उगाई जा सकती है। इसके लिये भुरभुरी दुमट मिट्टी सर्वोत्तम है, किंतु इसे काली चिकनी मिट्टी में भी लगा सकते हैं। इसके लिए गोबर पत्ती की कंपोस्ट खाद सर्वोत्तम पाई गई है। पौधों को क्यारियों में १.२५ मीटरसे २.५ मीटर के अंतर पर लगाना चाहिए। पुरानी जड़ों की रोपाई के बाद से एक महीने तक पौधों की देखभाल करते रहना चाहिए। सिंचाई के समय मरे पौधों के स्थान पर नए पौधों को लगा देना चाहिए।

❋ मांसाहारी पौधों का अनोखा संसार - पौधे भी मांसाहारी होते हैं। ये मांसाहारी पौधे पानी, दलदल, व अनुपजाऊ भूमि पर उगते हैं। छोटे-छोटे जीव ही इनका भोजन होते हैं।

सनड्यू - अफ्रीका के ही जंगलों में दलदल वाले स्थान पर पाया जानेवाला एक पौधा है सनड्यू यह पौधा विश्वविख्यात है। इसके पत्ते छोटे-छोटे होते हैं, जिन पर ओस की बूंदों के समान चमकीले कण चमकते रहते हैं। जिन्हें टैंटेक्ल्स (नलियां) कहा जाता है। यह सूर्य की रोशनी में बूंदों की तरह चमकती हैं। कीड़े इन चमचमाती बूंदों से आकर्षित होकर पास आते हैं और अचानक पेड़ के मुंहनुमा टैंटेकल्स बंद हो जाते हैं। यह एक तरह का पाचक तत्व भी छोड़ते हैं जिससे कीड़े अपने शिकार को दबोच अपनी पहले वाली स्थिति में आ जाते हैं।

पिचर प्लांट- एक अन्य मांसाहारी पौधा है पिचर प्लांट, जो तटीय देशों में पाया जाता है। इसके सामान्य पत्तों के साथ-साथ बड़े-बड़े लंबे लाल पत्ते होते हैं। इनका चमकीला रंग एवं भीनी सुगंध कीड़े-मकोड़े को अपनी तरफ आकर्षित करती

है। इसके सुराहीनुमा पत्तों पर जैसे ही कीड़ा चढ़ता है, वह अंदर फिसल जाता है। अंदर वह एक विशेष प्रकार के तरल पदार्थ में गिर जाता है। पिचर के निचली तरफ खाना पचाने के लिए बैक्टीरिया व पाचक तत्व रहते हैं जिससे पोषक तत्व निकाले जा सकें। यह तत्व पानी में मिल जाते हैं और पत्तियां इसे ग्रहण करती हैं।

❋ चंदन- सैंटेलम वंश (कुल सैंटेलसी) का एक अर्द्ध परजीवी पौधा, विशेष रूप से असली या सफेद चंदन सैंटेलम एल्मब की खुशबूदार लकड़ी है। सैंटेलम की करीब दस प्रजातियां दक्षिण-पूर्वी एशिया और दक्षिणी प्रशांत के द्वीपों में फैली हुई हैं। यहाँ कई अन्य लकड़ियों का असली चंदन के विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। लाल चंदन मटर कुल (फेबेसी) के दक्षिण-पूर्वी एशियाई पेड़ टेरोकार्पस सैंटेलिनस की लाल रंग की लकड़ी से निकाला जाता है। यह प्रजाति किंग सॉलोमन के मंदिर में इस्तेमाल किए गए चंदन का स्रोत रही होगी। एक असली चंदन का पेड़ लगभग १० मीटर की ऊंचाई तक बढ़ता है; इसकी चर्मिल पत्तियां जड़ में व शाखा पर एक-दूसरे की विपरीत दिशा में होती है। यह अन्य पेड़ों की प्रजातियों की जड़ों पर आंशिक रूप से परजीवी होता है। पेड़ और जड़ में पीले रंग का सुगंधित तेल होता है।

❋ ग्रीनलैंड की पहाड़ियों पर पाए जानेवाले एक मैप लिचेन (जंगली पौधा) की आयु ४५०० साल हो चुकी है।

❋ नृत्य करनेवाला पौधा- इस पौधे का नाम है डेसमोडियम गाइरेंस। वैसे आजकल इसे नृत्य करनेवाला पौधा भी कहा जाता है। टेलिग्राफ प्लांट नाम से भी ख्याति है। यह पौधा सूर्य की रोशनी मिलते ही नाच उठता है।

पान- पान यानी तांबुल के पत्ते लगभग सभी पूजा विधियों में प्रयोग में आते हैं। इसे खाना शुभ माना जाता है।

तुलसी- तुलसी का पौधा हिंदू धर्म में अत्यधिक पवित्र माना जाता है। इसको आंगन में लगाना शुभ माना जाता है। इसकी प्रात:काल और शाम को पूजा की जाती है। भगवान का भोग तुलसी की पत्ती के बिना अधूरा माना जाता है।

कुश- कुश पास का भी वैवाहिक कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण स्थान है। कुछ जगह विवाह में कुशघास की अंगूठी बनाकर पहनायी जाती है। कुश को सीता के बाल के रूप में मान्यता प्राप्त हे। जब सीताजी पृथ्वी के गर्भ में समा रही थी, तब कुश ने उन्हें बालों से पकड़ने की कोशिश की इसलिए ये कुश कहलाये। कुश हवन में जल आदि छिड़कने के काम आती है। कई धार्मिक रीतियां बिना कुश के पूरी नहीं होती।

❋ दुनिया में पाए जानेवाले ज्ञात ३,७५,००० प्रजाति के पौधों में से २,५०,००० से ज्यादा फूलों के पौधे हैं।

❋ आरचिड पौधे के बीज वजन में इतने हलके होते हैं कि दस लाख बीजों का वजन केवल एक ग्राम होता है।

❋ पिचर पौधा मांस भक्षी पौधा है। वह कीड़ों को खाता है। इस पौधे के पत्ते एक पिचर (गुलदान) जैसा आकार बनाते हैं। इससे मीठा रस बहता है जिससे कीड़े आकर्षित होते हैं जो भीतर मौजूद बालों में उलझकर गिरते हैं।

❋ बुचर्स ब्रम के पौधे में पत्तियां नहीं लगतीं। इसकी शाखएं ही पत्तियों जैसी होती हैं इसके फूल भी उन्हीं शाखाओं से निकलते हैं।

❋ चॉकलेट आर्किड पौधे का रंग एवं खुशबू दोनों चॉकलेट जैसे होते हैं।

❋ रासबेरी जैम नामक एक ऑस्ट्रेलियाई पौधे से रासबेरी जैसी सुगंध निकलती है।

❋ शिकारी पौधा-ओसपर्णी- नेपाल की तलहटी में पाया जानेवाला पौधा ओसपर्णी जो एक फुट लंबा होता है, अक्सर कीड़े-मकोड़ों का शिकार करता है। इसके पत्तों पर पौ फटते ही लाल द्रव जमा हो जाता है, जिस पर कीड़े-मकौड़े एक

बार चिपक जाएं, तो फिर वे मरकर ही छूटते हैं।

✻ पौधे तब ज्यादा बढ़ते हैं जब उन्हें हिलाया जाता है या जब वह हवा से हिलते हैं।

✻ छुई-मुई का पौधा हाथ लगाते ही संकुचित हो जाता है। इसलिए इसे शर्मीली भी कहते हैं।

✻ साठ के दशक में अमेरिका से आयातित गेंहू के साथ गाजरघास के बीज भारत पहुंच गए थे। १९५६ में पहली बार पूना में गाजरघास देखी गई।

✻ बांस के पौधे प्रति घंटे में ५ सेमी की रफ्तार से बढ़ते हैं।

✻ दक्षिण अफ्रीका का पैचीपोडियम नामाक्वेनम पौधा यात्रियों को रास्ता दिखाता है। यह पौधा हमेशा उत्तर की ओर झुकता है जिससे यात्रियों को दिशा का अंदाजा हो जाता है।

✻ पुनर्जारण काल में शिक्षाविद जेलीफिश को पौधों की प्रजाति में रखते थे।

✻ बोन्साई का उद्‌गम लगभग ई.पू. २०० में चीन में हुआ।

✻ सूर्यमुखी (सन-फ्लावर) के पौधे का बीज का भाग आप खाते है।

✻ दक्षिण अमेरिका का पौधा टैबिबुइया नोजेसा हमेशा जोरदार बारिश होने के ठीक एक दिन पहले कुछ कलियां पैदा करता है।

✻ सोयाबीन में कैल्शियम, आयरन, थायमिन रिबोप्लेविन व लेसिथिन होता है। लेसिथिन फैट्स कम ही करता है। दिमाग की क्रियाशीलता बढ़ाता है।

✻ समुद्री पौधा सी-अनीमोनी सदियों तक एक सा बना रहता है। स्पंज पौध-जीवों के प्रयोगशाला में रखे नमूने सौ साल से भी अधिक समय तक सुरक्षित और जिंदा बना रहते हैं क्योंकि इनके अंग मरने के बाद फिर से उग आते हैं। पृथ्वी में अन्य सभी प्राणियों की तुलना में झींगर सर्वाधिक हैं। इनकी लगभग दो लाख पचास हजार किस्सों में कीड़ों की सभी किस्में भी शामिल कर लें तो इनकी कुल संख्या होगी १,०००,०००,०००,०००,०००,००० (एक के बाद अट्ठारह शून्य।

✻ पोलिया बेरी का चमकीला नीला रंग - पोलिया कॉनडेनसाटा नाम का पौधा पूरे अफ्रीका में पाया जाता है। इसका छोटा-सा फल, जिसे पोलिया बेरी कहते हैं, चमकीले नीले रंग का होता है। इतना गहरा रंग किसी और पौधे में देखने को नहीं मिलता। इस फल में ऐसा कोई पदार्थ नहीं जिससे इसका रंग नीला हो।

पोलिया बेरी के छिलके में जो कोशिकाएँ होती हैं, उनकी दीवारों में छोटे-छोटे धागे होते हैं। ये धागे कुछ इस तरह व्यवस्थित होते हैं मानो माचिस की कई तीलियाँ एक के बगल में एक रखी गयी हों। इस तरीके से व्यवस्थित धागों की कई परतें होती हैं। ये परतें एक-के-ऊपर-एक तो होती हैं, लेकिन हर परत की दिशा नीचेवाली परत से थोड़ी अलग होती है। इस वजह से ये परतें घुमावदार सीढ़ी की तरह दिखती हैं। कोशिका के धागे नीले रंग के नहीं होते, लेकिन इन धागों की परतें जिस तरह एक-दूसरे के ऊपर लगी होती हैं, उस बनावट की वजह से बेरी का रंग गहरा नीला और चमकदार दिखता है। ज्यादातर कोशिकाएं नीली नजर आती हैं, लेकिन कुछ कोशिकाओं की दीवारों की परतों में थोड़ा फर्क होता है, इसलिए उन्हें अलग-अलग दिशा से देखने पर वे हरी, गुलाबी या पीली दिखती हैं। बहुत नजदीक से देखने पर इस बेरी के रंग हर जगह एक जैसे नहीं दिखते, बल्कि ऐसा लगता है जैसे हल्के-गहरे रंग के बहुत-से बिंदु आपस में जुड़े हों, ठीक जैसे कंप्यूटर में कोई तसवीर नजदीक से देखने पर नजर आती है।

पोलिया बेरी का अपना कोई रंग नहीं होता, इसलिए पौधे से टूट जाने पर भी इनका रंग फीका नहीं पड़ता। करीब १०० साल पहले इकट्ठा की गई कुछ बेरियों का रंग आज भी उतना ही चमकीला है, जितना ताजा बेरियों का होता है। वैज्ञानिकों का कहना है कि इन बेरियों में कोई गूदा नहीं होता, सिर्फ बीज होते हैं, फिर भी ये आसपास उड़नेवाली चिड़ियों को आकर्षित करती हैं। पोलिया बेरी की बनावट की वजह से उसमें जो रंग आता है, उसकी नकल करके कई चीजें तैयार की जा सकती हैं। जैसे, ऐसे रंग जो फीके न पड़ें या ऐसे रंगीन कागज जिनकी नकल न की जा सके।

❋ पौधों को बढ़ने के लिए प्रकाश की जरूरत होती है। बिना प्रकाश के पौधे अपने भोजन बनाने की प्रक्रिया पूरी नहीं कर पाते हैं जिसके कारण वह पौधा मुरझाकर सूख जाता है। लेकिन वैज्ञानिकों ने अब एक ऐसे पौधे का निर्माण किया है जो अंधेरे में भोजन तो बनाएगा ही, साथ ही उसमें चमक भी होगी। यह एक तम्बाकू का पौधा है, जो बिना किसी स्रोत के खुद ही अपना प्रकाश पैदा करता है और किसी बल्ब की तरह जगमगा उठता है।

❋ वनीला एसैंस की जानकारी - वनीला एसैंस खाद्य में इस्तेमाल के लिए यह संभवत: विश्व में सबसे लोकप्रिय सुगंध है। यह वनीला ऑडि नामक एक लता के बीजों से निकाला जाता है। इस लता में बारीक जड़ें होती हैं जो इसे किसी भी पेड़ से चिपका देती हैं। इसका पेड़ पहली फसल तीन साल में ही दे देता है और यह दस साल तक जीवित रहता है। जब इसका बेलनाकार फल हरे-पीले रंग का हो जाता है तो तोड़ लिया जाता है। फिर इसे सुखाते हैं। सुखाने से इसके बीज सिकुड़ जाते हैं और इनका रंग चॉकलेटी-सा हो जाता है। इसके साथ ही इनमें सुगंध भर जाती है। इन बीजों को छोटे टुकड़ों में काटने व अल्कोहल तथा पानी में टपकाने के बाद जो निकलता है उसे हम वनीला एसैंस कहते हैं।

वनीला एसैंस मुख्यत: मिठाई, आइसक्रीम, पुडिंग, चॉकलेट, केक आदि में इस्तेमाल होता है। प्राकृतिक वनीला एसैंस काफी महंगा पड़ता है इसलिए यह कृत्रिम रूप से भी बनाया जाता है।

मैक्सिको में यह सदियों से पैदा होता आया है। अन्य उष्ण कटिबंधीय देशों मैडागास्कर, इंडोनेशिया, कोमारोस ने वनीला ऑर्किड उगाना शुरू कर दिया है।

❋ चप्पलों जैसा पौधा हेटी का बल्बों स्टायलिस पौधा दूर से चप्पलों की तरह दिखता है।

❋ अफ्रीका के देशों में पाया जानेवाला एंड्रसोनिया डिजीटोटा नामक पौधा विश्व का एक अद्‌भुत पौधा है। इसकी जड़े जमीन के अन्दर लगभग १०० मीटर की गहराई तक चली जाती हैं। इसके विशालकाय खोखले उदर में पानी भरकर रखा जाता है, जिसे रेगिस्तानी यात्रियों को बेचा जाता है। इस पौधे के एक वृद्ध पेड़ के खोखले तने में ६ हजार लीटर तक पानी समा सकता है। इस पेड़ के सम्बन्ध में एक आश्चर्य यह है कि इसके मोटे तने को खोदकर उसमें शव दफनाए जाते हैं और बिना दवा लगाए इसके तने में रखा गया शव सैकड़ों वर्षों तक खराब नहीं होता है। ऑस्ट्रेलिया के एक शहर में इस वृक्ष के तने को जेलखाने के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। पानी का हौज बनाने, शव दफनाने और बन्दीगृह के रूप में उपयोग में लाने के बावजूद भी यह पेड़ सूखता नहीं है, बल्कि लगातार बढ़ता रहता है।

❋ संजीवनी बूटी के नाम से ज्ञात एक पौधा होता है, जो पूरी तरह सूखने के बाद भी पानी में डाल देने पर हरा-भरा दिखाई देता है।

❋ पौधे का पत्ती वाला भाग सांस लेता है।

❋ सिनकोना पौधे के तने की छाल से कुनैन प्राप्त की जाती है।

❋ एक जलीय पौधे को हाइड्रोफाइट कहते हैं।

❋ प्याज की खेती पौधे का प्रतिरोपण करके की जाती है।

❋ अजूबा है ये पौधा- यह एक ऐसा पौधा है, जिसकी मांसल पत्तियों के किनारे के खांचों में एक कली पाई जाती है जिसे मिट्टी में दबा देने पर अनुकूल परिस्थितियों में एक स्वतंत्र पौधा पनप जाता है। इस अजूबे के कारण ही इस पौधे को अजूबा के नाम से पुकारते हैं।

फूल- ❋ कई पौधों के फूलों पर यू.वी. मार्क्स होते हैं। ये फूलों पर छोटे-छोटे बिंदू जैसे होते हैं। जिन्हें हम नंगी आंखों से नहीं देख सकते। मधुमक्खियां तथा अन्य कीट परागकण के दौरान उन्हें देख सकते हैं और दिशा निर्धारण में उनका प्रयोग करते हैं।

❋ देश के १४४००० हेक्टेयर क्षेत्र पर फूलों की खेती होती है। इसमें सबसे ज्यादा कर्नाटक फिर उत्तरप्रदेश, गुजरात, पं. बंगाल, हरियाणा व हिमाचल प्रदेश हैं।

❋ ट्यूलिप फूल - फूलों को उनकी खुशबू से हमेशा पहचाना जाता है लेकिन ट्यूलिप एक ऐसा फूल है जो कि खुशबू नहीं देता लेकिन अपनी सुंदरता के लिए जाना जाता है। ट्यूलिप वसंत ऋतु में लिखनेवाला फूल है। ट्यूलिप एशिया माइनर, अफगानिस्तान, कश्मीर से कुमाऊं तक के हिमालयी क्षेत्र, उत्तरी ईरान, टर्की, चीन, जापान, साइबेरिया तथा भूमध्य सागर में सबसे ज्यादा पाया जाता है। वनस्पति विज्ञान के ट्यूलिया वंश का है। ईरानी भाषा के शब्द टोलिबन (पगड़ी) से इसे लिया गया है। माना जाता है कि ट्यूलिप के फूलों को उलट देने से यह पगड़ी नामक शिरोवेश जैसे दिखाई देते हैं। ट्यूलिया वंश के सहनशील पौधों का वानस्पतिक कुल लिलिएसिई है।

ट्यूलिप देखने में इतना सुंदर लगता है कि कुछ समय में ही यह पूरे यूरोप भर में सर्वप्रिय होकर फैल गया। माना जाता है कि इसकी १०० जातियां हैं। फूलों में गंध का हमेशा अभाव रहता है। कई रंगों में पाए जानेवाला यह फूल देखने में बेहद खूबसूरत लगता है। फूलों की पंखुड़ियां एकदली और बहुदली दोनों प्रकार की होती हैं। पौधे छोटे ही होते हैं। परंतु उनके भूमिगत कंदों के बीच में से निकले हुए फूलदार डंठल की ऊंचाई ७६० मिमी. तक होती है। माना जाता है कि यह फूल ठंडे इलाकों में सबसे ज्यादा पाए जाते हैं।

❋ ट्यूलिया कौफमैनियाना रिगेल - यह जल्दी फूलना शुरू कर देता है। फूलों को रंग लाली लिए पीला रहता है।

ट्यूलिया क्लुसियाना वेंट - यह फूल सबसे अधिक सुंदर और आकर्षक होते हैं। फूलों का रंग मोती की तरह सफेद और पंखुड़ियों के बाहरी ओर गुलाबी बैंगनी रंग की धारियां बनी रहती हैं।

❋ गुलमोहर - गर्मी के दिनों में अधिकांश पेड़-पौधे सूखने लगते हैं और गुलमोहर फूलने-फलने लगता है। पतझड़ में इस पेड़ की सारी पत्तियां झड़ जाती हैं और फिर शुरू होता है हरे रंग की कलियों का आना। गुलमोहर का वैज्ञानिक नाम डेलोनिक्स रिजिया, अंग्रेजी नाम फ्लैम बायोंट रायल गोल्डमोहर है। गुलमोहर मेडागास्कर द्वीप समूह में पाया जाता है जो मारीशस होते हुए भारत आया। इस पेड़ को भारत आये कोई डेढ़ सौ साल से ज्यादा नहीं हुए हैं।

पतझड़ के बाद गुलमोहर में जो नयी पत्तियां आती हैं, वे एकदम कोमल और किसी पक्षी के लुबे पर जैसी होती हैं। पूर्ण विकसित पत्तियां आधा मीटर तक की होती हैं। गुलमोहर की पत्तियों को बकरियां बड़े चाव से खाती हैं। इसके फूल चटकीले रंग के होते हैं। इन फूलों में कोई खुशबू तो नहीं होती, मगर यह कमी उसके रंग और बनावट पूरी कर देते हैं।

इसके फूल में पांच चटकीले रंग की पखुड़ियां होती हैं। इनमें एक चितकबरी होती है। इसके फूल की पंखुड़ियां लिटमस की तरह व्यवहार करती हैं। एक कागज के टुकड़े पर पंखुड़ी को रगड़ने के बाद यदि उस पर क्षार की एक-दो बूंदें डालें तो कागज का रंग मूंगियां या पीला हो जाता है और इस पर अम्ल की एक-दो बूंद डालने पर लाल रंग हो जाता है।

गुलमोहर के फूलों के साथ एक-दो फुट की लंबी काली और कड़क फलियां भी देखने को मिलती हैं। ये फलियां पिछले साल के फलों से बनती हैं। नये फल बनने पर पुरानी फलियां जमीन पर गिर जाती हैं। फलियों के अंदर छोटे-छोटे बीज हिलाने पर झुनझुने जैसी आवाज करते हैं।

गुलमोहर की खासियत यह है कि वह समुद्र के किनारे या कम पानीवाली जगह पर भी पनप जाता है। इसकी जड़ें जमीन पर काफी उथली होती हैं, इसलिए तेज आंधी में पेड़ के पेड़ उखड़ जाते हैं। इसके बीज काफी कड़े होते हैं। उगाने के लिए थोड़ी देर उन्हें गुनगुने पानी में रखना पड़ता है। यों गुलमोहर की कलम भी लगायी जा सकती है।

कनेर- कनेर का फूल दुर्गा एवं शिव की पूजा में विशेष महत्व रखता है।

गुड़हल- गुड़हल का फूल दुर्गा की पूजा में विशेष महत्व रखता है। यह सूर्य का प्रतीक है।

आंक- सफेद आंक में शिव परिवार का वास है। श्वेत आक द्वार पर लगाना शुभ माना जाता है। सफेद आक की जड़ में गणपति विद्यमान माने जाते हैं।

✻ रेफैलेशिया फूल- रेफैलेशिया दुनिया का सबसे विशाल और बदबूदार फुल है। इसका वजन करीबन १० किलोग्राम और चौड़ाई लगभग १ मीटर होता है। इसकी पंखुड़ी लाल, भूरे रंग की होती है और उन पर सफेद धारिया होती हैं। यह एक परजीवी पौधा है जो अपने सहारा बने टेटरा स्टिग्मा नाम झाड़ी पर जरूरी खनिज और पानी के लिए निर्भर रहता है। इस कार्य में उसके बारीक रेशे जैसे धागे मदद करते हैं। इस फूल का नाम सर स्टेमाफोर्ड रैफल्स के नाम पर रखा गया है। वे आधुनिक सिंगापुर के जनक माने जाते हैं। रैफेलशिया फूल खिलने में ९ से २१ महीने का समय लगता है लेकिन इसका जीवनकाल पांच से सात दिनों का ही होता है। इसका उपयोग पारम्परिक औषधि में किया जाता है और दक्षिणी पूर्वी एशिया के जीव विषमता को बढ़ावा देने के लिए इसका उपयोग पोस्टेज स्टैम्प में भी किया जाता है। यह मलेशिया के सबाह राज्य का राजकीय फूल है।

✻ संसार का सबसे विशाल आकृति वाला फूल रेफ्लोशिया है। इसका व्यास एक मीटर तक होता है। इसकी कोई वास्तविक जड़ नहीं होती। यह एक परजीवी पौधा है, जो किसी अन्य पौधे की जड़ों से चिपककर भोज्य पदार्थ ग्रहण करता है।

✻ दक्षिणी अफ्रिका के जंगलों में एक ऐसा फूल पाया जाता है, जो एक मिनट में सात बार रंग बदलता है। वहां के निवासी इस फूल को इंद्रधनुष के नाम से जानते हैं।

✻ आर्चिड वनस्पति की २५००० प्रजातियां उपलब्ध हैं।

✻ थाईलैंड में पाए जानेवाले पैरट फ्लॉवर का वैज्ञानिक नाम है इम्पेशंस स्टैकिना। इसे थाई भाषा में डार्क नोक खेवू कहते हैं। इस फूल को देखकर ऐसा लगता है, मानो किसी नन्हे से तोते को एक पतली डोर से किसी पौधे की शाखा पर टांग दिया गया हो। यह फूल खुशबूदार नहीं, बल्कि बेहद बदबू भरा होता है। यही वजह है कि बहुत कम कीट इसकी तरफ आकर्षित होते हैं। कीटों के न आने के कारण परागण की प्रक्रिया पर बुरा असर पड़ता है। यही वजह है कि इस पौधे के

बीज कम उत्पन्न होते हैं और इस तरह यह पौधा होता है दुर्लभ प्रजाति का पौधा। वैसे, इसके दुर्लभ होने का दूसरा कारण भी है। तोते जैसे फूल खिलानेवाला यह पौधा केवल नमी वाले वनों में ही उगता है। यह पौधा एक मीटर से कम ऊंचा होता है। इसकी मुख्य शाखा करीब आधा इंच मोटी तथा पत्ते दो से ढ़ाई इंच लंबे हो सकते हैं और इस फूल यानी पैरट फ्लॉवर के आकार का प्रश्न है, तो इसका आकार होता है तकरीबन दो इंच।

फूलों को देखकर मन मचलने लगता है। इसका मनमोहक रूप दिल को खूब रिझाता है। फूलों के चटख रंग इंद्रधनुषी रंग बिखेरते हैं। कुछ फूलों में खुशबू होती है, तो कुछ फूलों में नहीं। विश्व के सबसे बड़े फूल का नाम है रेफलिसिया। इसका व्यास साढ़े तीन फुट और वजन बारह किलो होता है। यह जावा के उत्तरी जंगलों में पाया जाता है। रेफलिसिया पौधा परजीवी है, जो अपना भोजन दूसरे पौधों से प्राप्त करता है। इसका तना सफेद रंग का होता है, जो भूमि की ऊपरी सतह पर कुछ दूर जाकर फूल का रूप धारण करता है। यह पत्तियों से विहीन फूल होता है।

यह फूल अक्टूबर में खिलना शुरू होता है और मार्च तक इसमें फूल आता हैं। फूल का रंग केसरिया, आसमानी और सफेद होता है। रेफलिसिया लगभग एक हफ्ते तक तरोताजा रहता है। इसकी खुशबू बहुत ही तेज होती है, जिससे पूरा जंगल महक उठता है। अपनी खूशबू की वजह से ही यह रंग-बिरंगी तितलियों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

✻ ब्लैक़ बैट फ्लावर- यह फूल काले रंग का होता है और इसकी बनावट चमगादड़ की तरह होती है। इस फूल की पंखुड़ी मूंछों की तरह लगती है और यह २८ इंच तक लंबी होती है। इसके विचित्र रंग-रूप को देखकर कई जगहों पर इसे शैतान फूल भी कहते हैं। यह फूल हरे, बैगनी, भूरे, लाल रंग में भी खिलते हुए पाये जाते हैं। इसे पनपने के लिए अच्छी मिट्टी और काफी पानी की जरूरत होती है। यह मुख्यत: अफ्रीका, दक्षिणी अमेरिका, थाईलैंड, मलेशिया व चीन में पाया जाता है।

✻ साइकोट्रिया एलटा एक ऐसा फूल है, जो सुर्ख लाल होंठों की तरह दिखाई देता है। इसे हूकर्स लिप्स प्लांट या हॉट लिप्स प्लांट भी कहते हैं। यह सेंट्रल और साउथ अमेरिकन देशों के वर्षावनों में पाया जाता है। इनमें कोलंबिया, कोस्टा रिका, पनामा और इक्वेडॉर आदि देश आते हैं। इस प्लांट के हर पत्तों के बीच दो लाल होंठों के आकार के विशेष पत्ते (ब्रैक्ट) निकलते हैं। फिर इनके बीच से फूल निकलता है।

✻ श्रीलंका में पाए जानेवाले इस अनोखे फूल का नाम है एपिफाईलम ऑक्सीपेटालम। ये फूल वहां के जंगलों में उगते हैं। इस फूल को नहीं तोड़ पाने का कारण यह है कि एक तो ये बहुत कम मिलते हैं और दूसरा कारण यह है कि दुर्लभ प्रजाति के ये फूल जहां मिलते हैं, वहां केवल आधी रात में ही खिलते हैं। फिर सवेरा होने से पहले ही मुरझाने लगते हैं। इससे भी ज्यादा मजेदार बात यह है कि जैसे ही इस फूल को तोड़ा जाता है, यह मुरझाने लगता है। यानी इसे बेचने के लिए तोड़ना बहुत मुश्किल है। इसलिए बहुत कम लोग इस फूल को देख पाते हैं।

✻ आर्किड के फूल- भारत में पाई जानेवाली १००० से अधिक आर्किड फूल की प्रजातियों में से ६०० से भी अधिक केवल अरुणाचल प्रदेश में पाई जाती हैं।

✻ ओर्किस इटैलिका को इटालियन आर्किड के रूप में भी जाना जाता है और यह समूह में खिलते हैं। इस फूल को आम तौर पर नेकेड मैन आर्किड के नाम से भी जाना जाता है क्योंकि इसकी पंखुड़ियां एक नग्न आदमी की तरह हैं। यह फूल चमकीले गुलाबी और सफेद रंग का होता है।

✻ पेरिस्तेरिया एक आर्किड है जो आम तौर पर साउथ अमेरिका, पनामा, ट्रिनीडाड और कोस्टा रिका में पाया जाता है। इस फूल को अन्दर से देखकर यह लगता है जैसे इसके अन्दर कुछ है जो एक डव जैसा दिखता है। यदि ध्यान से देखा जाए तो डव के पंख ऊपर की तरफ खुले होते हैं और पंखों पर हल्के लाल रंग के निशान भी होते हैं, इसी कारण इस फूल का नाम डव आर्किड है।

✻ पैरट फ्लॉवर- यह फूल बाल्साम फैमिली का है। यह फूल बैंगनी और लाल रंग का होता है। यदि इस फूल को दूर से देखा जाए तो यह उड़ते हुए पैरेट की तरह लगता है। यह पौधा थाईलैंड, बर्मा और भारत के कुछ हिस्सों में पाया जाता है।

✻ जलजमनी या जिसे वॉटर प्रजर प्लांट भी कहते हैं। एक विशेष प्रकार का अरोही पौधा होता है जिसकी पत्तियों और तने का रस (सैप) पानी में मिला देने से पूरा पानी बर्फ के समान जम जाता है।

✻ यह फूल, विशेष रूप से कली रूप में, पॉपी फैमिली का एक पौधा है, जो दो दिलों के पारंपरिक आकार जैसा होता है, इसके नीचे की तरफ एक छोटी सी बूंद का आकार भी होता है। इसीलिए इस फूल का नाम ब्लीडिंग हार्ट रखा है। बाहर की पंखुड़ियों का रंग चमकीला फुश्चिया है। जब भी यह फूल खिलता है और बाहर की पंखुड़ियां खुलती हैं, तब अन्दर का सफेद हिस्सा दिखने लग जाता है, जिसे लेडी इन बाथ कहते हैं। यह पौधा सर्बिआ, नार्थ चाइना, कोरिया और जापान में पाया जाता है।

✻ पुष्प विज्ञान के अध्ययन को फ्लोरीकल्चर कहते हैं।

✻ सदाफूली को सदाफूली इसलिए कहते हैं, क्योंकि इसके फूल बारहों महीने खिलते रहते हैं। इसे नयनतारा भी कहते हैं। कहते हैं कि इसकी ८ जातियां पाई जाती हैं जिनमें से मात्र एक ही भारत में है और बाकी सभी मेडागास्कर में पाई जाती हैं। ५ पंखुड़ियों वाला यह फूल सफेद, गुलाबी, फालसाई, जामुनी आदि रंगों में खिलता है। अंग्रेजी में इसे विंका या विंकारोजा कहते हैं। इसका वैज्ञानिक नाम केथारेन्थस है। भारत में पाई जानेवाली प्रजाति का वैज्ञानिक नाम केथारेन्थस रोजस है। इसे पश्चिमी भारत के लोग सदाफूली के नाम से बुलाते हैं। मधुमेह रोग में इसके फूल काम आते हैं।

✻ गेंदा को अंग्रेजी में मेरीगोल्ड कहते हैं। गेंदे की कई किस्में हैं और ये गहरे पीले, वासंती, नारंगी, कत्थई रंग के मखमली फूल होते हैं। यह इकहरी पंखुड़ियों वाला भी होता है और सैकड़ों पंखुड़ियों वाला यानी हजारा भी। इन फूलों से माला बनाई जाती है। आप इसकी सुगंध से भी परिचित होंगे लेकिन सजावट के लिए दरवाजों और खिड़कियों पर इसको वंदनवार की तरह लगाया जाता है।

✻ कैलीना (फ्लावर) डक आर्किड के रूप में जाना जाता है। यह फूल देखने में एक उड़ती हुई बत्तख की तरह है जिसके पंख ऊपर की तरफ खुले है। होंठ बत्तख की चोंच की तरह है। यह फूल रेडिश ब्राउन रंग का होता है। यह पौधा ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता है। क्वीन्सलैंड से साउथ ऑस्ट्रेलिया तक और तस्मानिया में भी पाया जाता है।

✻ स्नेपड्रैगन खोपड़ी जैसा फूल- यह फूल यूरोप के चट्टानीय क्षेत्रों, अमेरिका और नार्थ अफ्रीका में पाया जाता है। इस फूल की पंखुड़ियां ड्रैगन के मुंह की तरह लगती हैं और जब इस फूल को दबाया जाए तो यह एक मुंह की तरह खुलता और बंद होता है। जब इस फूल की पंखुड़ियां सूखकर गिरती हैं तब सिर्फ इसके बीज रह जाते हैं जो सूखकर खोपड़ी जैसे लगते हैं।

✻ रातरानी के फूल इसे चांदनी के फूल भी कहते हैं। रातरानी के फूल मदमस्त खुशबू बिखेरते हैं। इसकी खुखबू बहुत

दूर तक जाती है। इसके छोटे-छोटे फूल गुच्छे में आते हैं तथा रात में खिलते हैं और सवेरे सिकुड़ जाते हैं। रातरानी के फूल साल में ५ या ६ बार आते हैं। हर बार ७ से १० दिन तक अपनी खुशबू बिखेरकर बहुत ही शांतिमय और खुशबूदार वातावरण निर्मित कर देते हैं। जिसकी भी नाक में इसकी सुगंध जाती है, वह वहीं ठहर जाता है। रातरानी और चमेली के फूलों से महिलाएं गजरा बनाती हैं, जो बालों में लगाया जाता है। रातरानी का पौधा एक सदाबहार झाड़ीवाला १३ फुट तक हो सकता है। इसकी पत्तियां सरल, संकीर्ण चाकू जैसी लंबी चिकनी और चमकदार होती हैं। फूल एक दुबला ट्यूबलर जैसा साथ ही हरा और सफेद होता है।

✻ मोगरा को संस्कृत में मालती तथा मल्लिका कहते हैं। मोगरे के फूल गर्मियों में खिलते हैं। इसकी भीनी-भीनी महक से तन और मन को ठंडक का एहसास होता है। इसका फूल सफेद रंग का होता है। जैसे-जैसे गर्मी बढ़ती है, इसकी सुगंध आपको गर्मी के एहसास से दूर रखती है। मोगरे कोढ़, मुंह और आंख के रोगों में लाभ देता है।

✻ हूकरस लिप्स नाम का फूल अफ्रीका के ट्रॉपिकल रेन फॉरेस्टस् में पाया जाता है। यह फूल लाल रंग का होता है। जो देखने में महिला के होठों की तरह लगता है।

✻ चमेली के फूल - चमेली को संस्कृत में सौमनस्यायनी और अंग्रेजी में जेस्मीन कहते हैं। चमेली तो आम तौर पर सभी जगह पाई जाती है लेकिन जब इसके फूल आंगन में सुबह-सुबह बिछ जाते हैं तो घर और परिवार भी खुशियों से भर जाता है। इसके घर-आंगन में होने से आपके विचारों और भावों में धीरे-धीरे बदलाव होने लगेगा। आपकी सोच सकारात्मक होने लगेगी। चमेली भी दो प्रकार की होती है। चमेली फूल के कई औषधीय गुण होते हैं। इसका तेल भी बनता है। यह चेहरे की चमक बढ़ाने के लिए बहुत ही उपयोगी होता है। चमेली की बेल होती है और पौधा भी। इसकी कली लंबी डंडी की होती है और फूल सफेद रंग के होते हैं। चमेली के फूलों की खुशबू से दिमाग की गर्मी दूर होती है।

✻ गुलाब के फूलों से गर्मी में ताजगी - गुलाब को फूलों का राजा कहा गया है। यह सफेद गुलाबी और लाल रंग में अधिकतर पाया जाता है। हालांकि आजकल नीले और काले रंग के गुलाब भी पाए जाने लगे हैं। गुलाब को गुलाब इसलिए कहते हैं क्योंकि यह अधिकतर गुलाबी रंग में बहुतायत में मिलता है। इससे त्वचा के सौन्दर्य को निखारा जा सकता है। गुलाब के फूलों की पत्तियां त्वचा को पोषण देती हैं, त्वचा के रोम-रोम को सुगंधित बनाती हैं, ठंडक प्रदान करती हैं। गर्मियों में गुलाब के फूलों का रस चेहरे पर मलने से चेहरे पर ठंडी-ठंडी ताजगी बनी रहती है।

आंखों की जलन और खुजली दर करने के लिए गुलाब जल का प्रयोग किया जाता है। गुलाब के घर में महकते रहने से किसी भी प्रकार की परेशानी नहीं होती। मन पवित्र और शान्त बना रहता है। इससे जीवन में उत्साह बना रहता है।

✻ गुड़हल का फूल देखने में ही सुंदर नहीं होता बल्कि यह सेहत का खजाना लिए हुए होता है। इसे हिबिसकस या जवाकुसुम भी कहते हैं। इसके सभी हिस्सों का इस्तेमाल खाने, पीने या दवाओं के काम के लिए किया जा सकता है। गुड़हल का फूल विटामिन सी का अच्छा स्रोत है और इससे कफ, गले की खराश, जुकाम और सीने की जकड़न में फायदा मिलता है। गुड़हल की पत्तियां प्राकृतिक हेयर कंडिशनर का काम देती हैं और इससे बालों की मोटाई बढ़ती है। बाल समय से पहले सफेद नहीं होते। बालों का झड़ना भी बंद होता है। सिर की त्वचा की अनेक कमियां इससे दूर होती हैं।

✻ रजनीगंधा का पौधा पूरे भारत में पाया जाता है। मैदानी क्षेत्रों में अप्रैल से सितम्बर तथा पहाड़ी क्षेत्रों में जून से

सितम्बर माह में फूल निकलते हैं। रजनीगंधा के फूलों का उपयोग माला और गुलदस्ते बनाने में किया जाता है। इसकी लम्बी डंडियों को सजावट के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। इसका सुगंधित तेल और इत्र भी बनता है। इसके कई औषधीय गुण भी हैं।

❋ जूही की झाड़ी अपने सुगंध वाले फूलों के कारण बगीचों में लगाई जाती हैं। जूही के फूल छोटे तथा सफेद रंग के होते हैं और चमेली से मिलते-जुलते हैं। फूल वर्षा ऋतु में खिलते हैं। इसकी सुगंध से मन और मस्तिष्क के तनाव हट जाते हैं और यह वातावरण को शुद्ध बना देता है।

❋ केवड़ा यूं तो यह एक बेहतरीन खुशबू का फूल है तथा इसके इत्र की तासीर गर्मी में तन को शीतलता प्रदान करती है। केवड़े के पानी से स्नान करने से शरीर की जलन व पसीने की दुर्गंध से भी छुटकारा मिलता है। गर्मियों में नित्य केवड़ायुक्त पानी से स्नान करने से शरीर में शीतलता बनी रहती है। केवड़ा का उपयोग इत्र, पान मसाला, गुलदस्ते, लोशन तम्बाकू, केश तेल, अगरबत्ती, साबुन में सुगंध के रूप में किया जाता है। केवड़ा तेल का उपयोग औषधि के रूप में सरदर्द और गठियावत में किया जाता है।

❋ पारिजात का फूल- पारिजात के फूलों को हरसिंगार और शेफालिका भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे नाइट जेस्मिन और उर्दू में गुलजाफरी कहते हैं। पारिजात के फूल आपके जीवन से तनाव हटाकर खुशियां ही खुशियां भर सकने की ताकत रखते हैं। पारिजात के ये अद्भुत फूल सिर्फ रात में ही खिलते हैं और सुबह होते-होते वे सब मुरझा जाते हैं। यह माना जाता है कि पारिजात के वृक्ष को छूने मात्र से ही व्यक्ति की थकान मिट जाती है। हरिवंशपुराण में इस वृक्ष और फूलों का विस्तार से वर्णन मिलता है। इन फूलों को खास तौर पर लक्ष्मी पूजन के लिए इस्तेमाल किया जाता है लेकिन केवल उन्हीं फूलों को इस्तेमाल किया जाता है, जो अपने आप पेड़ से टूटकर नीचे गिर जाते हैं।

❋ क्लोरिन गैस से फूलों का रंग उड़ जाता है।

फल - फलों में विभिन्न प्रकार के पदार्थ पाए जाते हैं, जिन्हें यौगिक भी कहा जाता है। यौगिक वह पदार्थ हैं जो दो या दो से अधिक तत्वों के निश्चित अनुपात के परस्पर संयोग से बनते हैं और साधारण विधि से पुन: तत्वों में परिवर्तन किए जा सकते हैं। चीनी, नमक, पानी, अल्कोहल, क्लोरोफार्म आदि विभिन्न यौगिकों के उदाहरण हैं। फलों में सामान्यत: चीनी, लवण, विटामिन, स्टार्च, प्रोटीन तथा सेल्यूलोज आदि यौगिक मिश्रित अवस्था में पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त अम्ल भी पर्याप्त मात्रा में होते हैं।

जिन फलों में अम्ल की मात्रा अधिक होती है उनका स्वाद खट्टा होता है जैसे नींबू आदि। जिन फलों में स्टार्च या सुक्रोज (चीनी) अधिक होता है, उनका स्वाद मीठा होता है। ज्यादातर फलों में स्टार्च (चीनी) अधिक होता है, उनका स्वाद मीठा होता है। ज्यादातर फलों में स्टार्च तथा सुक्रोज अधिक होते हैं। यही कारण है वह मीठे होते हैं। उनके मिठास में फर्क अवश्य होता है, जो उनमें उपस्थित सुक्रोज आदि पदार्थों की अलग-अलग मात्रा के कारण होता है। सिर्फ मिठास ही नहीं फलों के स्वाद तथा आकार में भी अंतर होता है। एक ही प्रकार के फल अगर दो पेड़ों के हो तो उनके स्वाद में अंतर हो जाता है।

❋ आम- मैंगो तमिल शब्द मैंगक्या या मैन-क्या से बना है। जब पुर्तगाली व्यापारी पश्चिमी भारत आए थे तो इन्होंने इसका नाम बदलकर मंगा कर दिया था। इतना ही नहीं ४००० ईसा पूर्व में भी हिंदू शिलालेखों में इसका जिक्र

मैनगीफेरिया इंडिका के नाम से मिलता है, जिसका अर्थ होता है आम का पेड़। दुनियाभर में आम को फलों का राजा माना जाता है। रोजमर्रा खाए जानेवाले अन्य फलों की अपेक्षा आम ज्यादा खाया जाता है। आम में प्रोटेक्टिव विटामिन्स प्रचुर मात्रा में होते है। कच्चे यानी कि हरे आम में विटामिन सी और पके हुए आम में विटामिन ए पर्याप्त मात्रा में होता है। एक औसत साइज के आम में ४० प्रतिशत तक रेशे मौजूद होते है। एक आम में लगभग १०७ कैलोरी होती है। सूखे आम का प्रयोग मसालों में अमचूर के तौर पर किया जाता है। आम ५५ डिग्री फॉरेनहाइट पर दो हफ्तों तक भंडार किया जा सकता है।

✻ फलों का रसीला राजा आम बीटा कैरोटीन से भरा होता है। बीटा कैरोटीन शरीर में दाखिल होने के बाद विटामिन ए में बदल जाता है और हड्डियों और प्रतिरोधी क्षमता को बेहतर बनाता है। आम से संतरे में ज्यादा विटामिन सी होता है।

✻ भारत केले के सबसे बड़े उत्पादक हैं। देश में सालाना करीब पौने दो करोड़ टन केले का उत्पादन होता है। ६५ लाख टन के साथ ब्राजील दूसरे नंबर पर है। केले खाने के मामले में अमेरिकी नंबर वन हैं। एक आम अमेरिकी साल में औसत २८ पौंड केले खा जाता है। ९६ प्रतिशत से ज्यादा परिवार वहां महीने में कम से कम एक बार तो केला खरीदते ही हैं। अंग्रेजी के बनाना का मूल अरबी के बनन में है, जिसका अर्थ है, उंगली। शायद इसीलिए अंग्रेजी में केले का गुच्छा हैड कहलाता है और गुच्छे में शामिल केले फिंगर्स कहलाते हैं। केले में टिप्टोफेन प्रोटीन होता है, जिसे हमारा शरीर सेरोटोनिन में बदल देबता है। सेरोटोनिन रिलैक्स करता है, मूड बेहतर करता है।

केला- केले का वृक्ष बृहस्पति ग्रह का वृक्ष माना जाता है, इसलिए बृहस्पति पूजा में केले को अपना महत्व है। इसका जड़ तना, पत्ते, फल-फूल सभी किसी-न-किसी रूप में पूजा के लिए प्रयुक्त किये जाते हैं। धन-धान्य विपत्ति पर बृहस्पति की पूजा की जाती है। जो धन और सुहाग का प्रतिरूप है। श्रावण मास में इसका विशेष महत्व है। सत्यनारायण की पूजा में केले के तने और पत्तों का अपना महत्व है। विवाह में केले के तने का मंडप सर्वाधिक महत्व का माना जाता है।

वनस्पति- केले की खेती चावल से भी पहले से की जाती रही है। १५वीं सदी में पुर्तगाली नाविक ही सबसे पहले केले को अफ्रीका से यूरोप लेकर आए। तब अफ्रीका की स्थानीय भाषा में केला को बैनेमा कहा जाता था, जो बाद में यानी १७वीं सदी में अंग्रेजी में बनाना के नाम से मशहूर हुआ। वहीं कुछ लोगों का मानना है कि केले की उत्पत्ति लगभग ४००० साल पहले मलेशिया में हुई थी। इसकी उत्पत्ति कहीं भी हुई हो, मगर प्रति व्यक्ति ज्यादा केला खाने के मामले में अफ्रीका का युगांडा पहले नंबर पर आता है। युगांडा में हर व्यक्ति के द्वारा साल में औसतन २२५ किलो केला खाया जाता है। प्रति वर्ष लगभग एक लाख करोड़ केले खाए जाते हैं, जो कि इसे गेहूं, चावल और मक्के के बाद चौथा सबसे बड़ा खेती का उत्पाद बनाता है।

✻ केला फलों की श्रेणी में नहीं आता। यह एक जड़ी बूटी है।

✻ केले के उत्पादन में भारत सबसे अग्रणी है।

धतूरा- धतूरा शिव का प्रिय फल है। श्रावण मास में उन्हें समर्पित किया जाता है।

आंवला- आंवला नारायण को विशेष प्रिय है। आंवला, बेल और तुलसी तीनों एक साथ जिस स्थान पर लगाये जाते हैं, यह स्नान परम पवित्र और पूज्य हो जाता है।

✻ सीताफल मूलत: वेस्ट इंडीज का फल है।

❋ अल्फेड सी कॉब ने अपने खेत में १२ किलो वजन की ककड़ी उगाई।

❋ स्ट्रॉबेरी की पैदावार प्राचीन रोम में होती थी। यह १६ वीं १७ वीं सदी की बात है।

❋ स्ट्रॉबेरी का बकायदा संग्रालय बेल्जियम में स्थित है।

❋ स्ट्रॉबेरी फल नहीं बल्कि गुलाब प्रजाति का सदस्य है। स्ट्राबेरी फल नहीं है। वह तो स्ट्राबेरी फूल है।

❋ स्ट्रॉबेरी में विटामिन सी व पौटेशियम की प्रचुरता होती है।

फल तो अलग होता है जो बीज वाला होता है।

❋ तरबूज को फल माना जाता है पर वानस्पतिक विभाजन की दृष्टि से देखे तो तरबूज फल नहीं सब्जी है। इसे आप ककड़ी के कुल का मान सकते हैं। तरबूज के छिलके में भारी मात्रा में सिलिकॉन पाया जाता है। जिसका उपयोग डायबिटीज् व हाइपरटेंशन दूर करने में होता है। तरबूज के छिल्कों के छोटे-छोटे टुकड़ें कर या उसका रस बनाकर पिया या खाया जाए कई लाभ होंगे। तरबूज पौटेशियम, विटामिन सी व विटामिन ए व बी का अच्छा स्रोत है। पीलिया व टायफाइड में तरबूज खाना लाभप्रद है। हममें से १४ प्रतिशत लोग तरबूज के साथ उसके बीज भी खा लेते हैं।

❋ ३५ किलो वजन का कटहल रेकॉर्ड हवाई द्वीप के किसान ने उगाया।

❋ नाशपाती खाने से शरीर को पोटेशियम व फायबर्स के साथ विटामिन सी की उपलब्धता होती है।

❋ अमरूद विटामिन सी का अच्छा स्रोत है। यदि रोज एक अमरूद खाया जाए तो इसमें मौजूद एंटीऑक्सीडेंट आपकी रोज की विटामिन सी की जरूरत को पूरा करेंगे व आपके शरीर को भी हमेशा जवां रखेंगे।

❋ पूसा रसराज खरबूजा उन्नत किस्म है।

❋ जापान में युबरी नाम के खरबूजे पाए जाते हैं जो बहुत ज्यादा मीठे होते हैं। इसके एक खरबूजे की कीमत १५ लाख ३३ हजार रुपये है और यह भी जापान में मिलते हैं।

❋ यह अनानास दुनिया में मिलनेवाले महंगे फलों की सूची में शामिल है। इस एक अनानास की कीमत ९६ हजार रुपये है। इसकी खेती इंग्लैंड में होती है। इसे बड़ी ही सावधानी से ग्रीन हाउस में घोड़े की खाद और भूसे के जरिये ५० से ज्यादा किसान उगाते हैं।

❋ रूबी रोमन अंगूर यह क्रेजी बॉल के आकार के होते हैं। इसके एक गुच्छे की कीमत २ लाख ६६ हजार रुपए है। यह अंगूर जापान में उगाए जाते हैं। इसके एक गुच्छे में ३० अंगूर होते हैं और एक अंगूर का वजन २० ग्राम होता है।

❋ केला और नारियल एक बीजपत्री फल है।

❋ फल विज्ञान के अध्ययन को पोमोलाजी कहते हैं।

❋ हरे फलों को कृत्रिम रूप से पकाने हेतु एसीटिलीन गैस का प्रयोग करते हैं।

❋ आडू में ज्यादातर जरूरी पोषक तत्व होते हैं। आडू तंत्रिकाओं और मांसपेशियों को फायदा पहुंचाता है। आडू के छिलके में एंटीऑक्सीडेंट और रेशे भरे होते हैं।

❋ खुबानी और आलूबुखारे जैसे फल जिनके अंदर गुठली होती है को ड्रूप (अष्ठिफल) कहते हैं।

❋ फलों के रस को सुरक्षित रखने के लिए फर्मिक अम्ल का उपयोग किया जाता है।

जमीकन्द -

✻ अदरक खाने से कैंसर का खतरा कम होता है। अदरक कैंसर कोशिकाओं को खत्म करता है।

✻ आलू का तना भाग खाने के काम आता है।

✻ आलू की पैदावार का मूल स्थान - दक्षिण अमेरिका का पेरू क्षेत्र। यूरोप में १६वीं सदी में स्पेन वासियों द्वारा आलू का प्रचलन हुआ। यूरोप में आलू को आसानी से नहीं अपनाया गया। शुरु में इसे बड़े संदेह की नजर से देखा गया। लेकिन धीरे-धीरे इसे लोग अपनाने लगे, यहां तक कि यूरोप के गरीब लोगों का यह प्रिय खाद्य बन गया।

आलू का भयंकर अकाल - १५वीं सदी में आलू आयरलैण्ड वासियों का प्रमुख भोजन था। १८९५ में फैली बीमारी ने आलू के पौधों को नष्ट कर दिया जिससे अकाल की स्थिति पैदा हो गयी। फलस्वरूप दस लाख लोग मर गए और हजारों लोग स्वदेश छोड़कर अमेरिका चले गये।

✻ एक कैंडीरोस्टर- एक प्रकार का कद्दू जिसका व्यास ६८ इंच और वजन १५० पाउंड था, आयरनडफ एनसी की श्रीमती जार्विस चैम्पर्स द्वारा उगाया गया था।

✻ खीरा अम्लीय धरती पर सफलता से उगाया जा सकता है।

✻ बैंगन को हम सभी सब्जी के तौर पर जानते हैं, लेकिन असल में ये एक फल है।

✻ खीरा, कद्दू और टमाटर सब्जी नहीं फल है।

✻ **वनस्पति -** चीन में १५०० से भी अधिक किस्मों के कैक्टस की प्रजातियां पाई जाती हैं।

✻ दक्षिण-पूर्वी एशिया में हर साल दस टन तक एल्गी यानी काई खाई जाती है।

✻ नमकीन क्षेत्र में होनेवाली वनस्पतियों को हैलोफाइट कहते हैं।

✻ यीस्ट और मशरूम दोनों फफूंद होते हैं।

✻ सब्जी विज्ञान के अध्ययन को ओलेरीकल्चर कहते है।

✻ दुनिया की सबसे ऊंची घास कंटीले बाँस होते हैं। भारत में पाए जानेवाले ये बाँस १२० फीट ऊंचाई तक जाते हैं।

✻ ७०% ऑक्सीजन देते हैं समुद्री शैवाल- शैवाल को पौधों की श्रेणी में नहीं आते। लेकिन पौधों की तरह इनमें फोटो सिंथेसिस की प्रक्रिया होती है। यानी ये सूरज से रोशनी, मिट्टी से पानी और वातावरण से कार्बन डाईऑक्साइड लेकर अपने लिए भोजन बनाते हैं।

भूरे, हरे और लाल रंग के शैवाल समुद्र में मुख्य रूप से पाए जाते हैं। सभी को सूर्य की रोशनी की जरूरत होती है। समुद्री शैवाल दो तरह के होते हैं। पहली श्रेणी के शैवाल की उम्र १० साल होती है, जिन्हें सदाबहार शैवाल कहते हैं। दूसरे शैवाल वसंत में जन्म लेते हैं और बरसात के बाद खत्म हो जाते हैं।

समुद्र में २० हजार तरह के शैवाल मिलते हैं। हरे रंग का शैवाल समुद्र में सबसे ऊपरी सतह पर रहता है, भूरे रंग का उससे नीचे और लाल रंग का शैवाल गहराई में ठंडे पानी वाले क्षेत्र में।

हमारे जिंदा रहने के लिए ऑक्सीजन जरूरी है और धरती पर मिलनेवाली कुल ऑक्सीजन का ७० प्रतिशत हिस्सा अकेले समुद्री शैवाल से मिलता है। धरती पर मिलनेवाले पौधों से ९ गुना अधिक शैवाल समुद्र में मिलता है।

✻ ऑस्ट्रेलिया में पाये जानेवाले युकेलिप्टस के पेड़ साल में एक बार अपनी छाल बदलते हैं। रंग बिरंगे तने वाला यह

पेड़ नॉदर्न हेमीस्फियर के देशों न्यू ब्रिटेन, न्यू गिनी, सेराम, सुलावेसी आदि में पाया जाता है। इसके तने के रंग बदलते रहते हैं। यह पेड़ २०० फुट तक ऊंचा होता है और छह फुट तक चौड़ा होता है। आजकल इस पेड़ का प्लांटेशन पूरी दुनिया में कागज बनाने के लिए किया जा रहा है।

❊ केना मनोहारी - रंग और खूबसूरती में केना का कोई जवाब नहीं है। आकार में बड़े इस फूल को लगाना काफी आसान है। केना, जिसे भारत में साधारण बोलचाल की भाषा में केली भी कहते हैं, अपने सदाबहार हरे पत्तों के लिए दूर से ही पहचाना जाता है। यूरोपीय देशों में केना की महत्ता सदाबहार हरे पत्तों के लिए थी और बाद में इसके सुन्दर विशाल पुष्पगुच्छ के कारण इसे लगाया जाने लगा। कोस्टारिका एवं वेस्टइंडीज मूल का यह पौधा पहले अपने फूलों के बजाय पत्तों के लिए जाना जाता था। संकरण के बाद इसमें फूल अधिक भव्य, विविध रंगवाले आकर्षक पाए जाने लगे तो एक पुष्पित पौधे के रूप में इसका महत्व बढ़ गया। केना केननसिआई परिवार से संबंधित है। इसके कन्द अदरक की भांति राइजोम होते हैं। एक बार लगा देने पर विशेषकर, क्यारी में समूह में लगाए जाने पर केना बहुत रौनक देता है। यह पौधा स्वभाव से भोजन प्रेमी है। इसकी क्यारी बनाते समय तीन फीट गहरी खोदनी पड़ती है और उसमें भरपूर गोबर की पुरानी खाद, हड्डी का चूरा व लकड़ी के कोयले की राख मिलानी पड़ती है। इसकी क्यारी में नमी बनी रहनी चाहिए। परन्तु पौधा तेज खुली धूप मांगता है। छाया में फूल या तो नहीं निकलते, यदि निकल भी जाते हैं तो उतने भव्य नहीं होते हैं। अत: खुली धूप व पोषक तत्वों से भरपूर मिट्टी इसकी पहली मांग है।

गमलों में इसकी रौनक कम आती है। यदि लगाना चाहें तो हर वर्ष जून में पौधे को निकाल कर उसकी खाद, मिट्टी बदलनी चाहिए। इसके कंद के टुकड़े करके बोया जाता है। यूं तो इसके गोल काले-काले सख्त बीज भी होते हैं, परन्तु वे काफी सख्त होते हैं। इसलिए अंकुरण के लिए उन्हें गुनगुने पानी में २४ घंटे भिगो देना पड़ता है।

इसके पत्ते केले के पत्तों की तरह चिकने व मोटे होते हैं। पत्ते काफी बड़े, पौधे के तने के साथ ही नीचे से डंडी से जुड़े होते हैं। फूल टहनी के अग्र भाग में एक लम्बी टहनी से जुड़े होते हैं। पंखुड़ियां एकदम नरम व चिकनी होती हैं। ऐसा लगता है मानो किसी नरम रेशमी कपड़े से गूंथ कर फूल बनाए गए हों। इसके फूल सुर्ख लाल, सिंदूरी लाल, तरबूजी, पीले, तांबई, पीले पर लाल छीटे वे धारीवाले, हल्के पीले, नारंगी, गहरे गुलाबी आदि अनेक रंगों में निकलते हैं इसकी एक किस्म में पौधे खूब बड़े व लम्बे होते हैं। उनके पुष्पगुच्छ भी काफी बड़े होते हैं। दूसरी किस्म बौनी होती है। यदि केना की क्यारी में पौधे उनकी ऊंचाई को ध्यान में रखकर आगे-पीछे लगाए जायें तो अत्यन्त मनोहारी लगते हैं। पर्सी लंकास्टर, ब्लैकनाइट, किंग हम्बर्ट, एम्बेसडर, प्रेसीडेंट, गोल्डन वेडिंग, लेडीबर्ड कई किस्में अपने विभिन्न रंग व आकार के फूलों के लिए लोकप्रिय हैं।

❊ घाटी में फूलों की ५२१ प्रजातियां - फूलों की घाटी प्रकृति प्रेमियों के लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं है। हिमालय श्रृंखला की यह घाटी फूलों की विभिन्न प्रजातियें से मौसम के अनुकूल गुलजार रहती है। लक्ष्मण की रक्षा के लिए हनुमान यहां संजीवनी लेने आए थे। इस घाटी में फूलों की ५२१ प्रजातियां हैं। यह एक राष्ट्रीय उद्यान है जो कि गढ़वाल क्षेत्र के चमेली जिले में स्थित है। इसे विश्व की धरोहर घोषित किया गया है। फूलों की घाटी ८७.५० किमी वर्ग क्षेत्र में फैली है। इसे यूनेस्को ने १९८२ में राष्ट्रीय उद्यान घोषित किया गया। हिमाच्छादित पर्वतों में घिरी हुई यह घाटी बेहद खूबसूरत है। यह क्षत्र बागवानी विशेषज्ञों और फूल प्रेमियों के लिए बेहद प्रसिद्ध है।

४ कला के जीव पक्षी जीव जगत

करीब २० करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी पर सरीसृप वर्ग के कई भीमकाय जंतु जैसे डायनासोर और कई छोटे जंतु निवास करते थे। इनमें से कुछ जंतुओं को पक्षियों के वर्ग का पूर्वज माना जाता है। १८६१ में बावेरिया में एक अद्‌भुत जीवाश्म की खोज की गयी, जिसका नाम आर्किओप्लेरिक्स रखा गया। यह कौवे जितना बड़ा था और इसमें कुछ लक्षण सरीसृप वर्ग के और कुछ पक्षी वर्ग के थे। सरीसृप वर्ग के कुछ ऐसे लक्षण जैसे दांतोंवाला जबड़ा और हड्डियोंवाली पूंछ विद्यमान थे, जिन्हें झुठलाया नहीं जा सकता था। इसका शरीर एक विशेष प्रकार के पंखों से ढका हुआ था जो कि आजकल के पक्षियों से काफी भिन्न थे। यह प्राणी निश्चित रूप से उड़ने के काबिल न था। ऐसा विश्वास किया जाता है कि यह पेड़ की कैनोपी में रहता था, जहां से यह डगमगाता, ग्लाइड करता हुआ नीचे की शाखाओं तक व धरती तक कीड़े-मकोड़ों को अपने जबड़े द्वारा झपटने के लिए उतरता होगा।

पृथ्वी पर मनुष्य तथा अन्य जीव जंतुओं की तरह पक्षियों का भी अपना एक अनोखा संसार है। प्रारंभ से ही मनुष्य के साथ पक्षियों का व्यवहार अलग-अलग रूपों से जुड़ा हुआ है। यह सभी छोटे-बड़े पक्षी अपने विभिन्न क्रियाकलापों तथा आकाश में दूर तक स्वतंत्र उड़ान भर कर हमें अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

पक्षियों को प्रकृति ने जहां एक ओर सुंदर पोशाक दी है, वहीं दूसरी ओर मधुर, मोहक व सुरीले कंठ की सौगात भी। पक्षियों के कलरव या कोलाहल को सुनकर पक्षियों की जाति विशेष को सहजता से अनुमान लगाया जा सकता है कि अमुक चहचहाट किस पक्षी की है।

पक्षी आमतौर पर अपने घोंसलों में नहीं सोते। वह उनमें बैठकर कुछ देर के लिए सुस्ताते हैं, लेकिन सोते किसी और स्थान पर हैं।

ये चौथी कला के जीव है। इनमें चार सेन्स जागृत होते है। ये अण्डज जीव है और स्वभावजा सिद्धि को प्राप्त है। ये अपने स्वभाव के कारण उड़ सकते है। इनकी अपनी भाषा में ये आवाजें निकालते हैं, बोलते हैं, चहचहाते है। ये जंगम किस्म के प्राणी है, जो गमना-गमन करते है। ये वायु, जल व अन्न के कणों, फल इत्यादि का आहार करते है। ये निद्रा, प्रजनन, उत्पत्ति भी करते है। इनमें विवेक होता है पर इनमें मन और भावना नहीं होती है। किसी प्रकार का दु:खदर्द का अहसास नहीं होता।

दस पैसे के सिक्के से भी कम भारवाली नाजुक हमिंग चिड़िया से लेकर १३५ कि.ग्रा. से भी अधिक भार वाले विशाल शुतुरमुर्ग तक, सब पक्षियों के संसार से संबंधित हैं।

पक्षियों के शरीर का विकास एक कुशल उड़नेवाली मशीन के रूप में हुआ है। यह शक्तिशाली मांसपेशियों, पंख तथा हल्के भार अस्थिपंजर के कारण संभव हुआ है।

सारस, बगुला और टिटहरी को वर्षा आने की सूचना महीनों पहले से मिल जाती है। ये पक्षी वर्षा की आशंका से अपने अंडे सुरक्षित स्थान पर ले जाते हैं। किसान इनके अंडों को देखकर अनुमान लगाते हैं कि बरसात कब आयेगी। ऐसा लगता है कि वर्षा के आने का ज्ञान इन पक्षियों को विरासत के रूप में प्रकृति से ही मिला है। तभी तो इन्हें वर्षा के आने का पूर्वाभास हो जाता है।

पक्षियों की पहचान है उनके पंख। यही पंख कभी कलम बनते हैं, तो कभी सिर के ताज भी। पक्षियों के रंग-बिरंगे पंख एक विशेष पदार्थ किरेटिन से बने होते हैं। यही वह पदार्थ है, जिससे हमारे बाल और नाखून बने हैं। पक्षियों के पंखों के बारे में कई अद्‌भुत बातें हैं। भारत के राष्ट्रीय पक्षी मोर के पंख सभी पक्षियों में सबसे आकर्षक माने जाते हैं। भगवान कृष्ण का इनके प्रति मोह इन्हें पूजनीय भी बना देता है। पक्षियों के पंख झड़कर उनके स्थान पर नए पंख उग आते हैं। नए पंख आने की इस प्रक्रिया को मोलटिंग कहा जाता है। पक्षियों के पंख एक नियमित पैटर्न में झड़ते हैं, ताकि उनके शरीर का संतुलन न बिगड़े। यानी यदि एक पंख दायीं ओर से गिरता है, तो दूसरा बायीं ओर से ही गिरेगा। कुछ पक्षी ऐसे भी हैं, जिनके शरीर के पंख एक ही समय में झड़ जाते हैं। ये पक्षी उड़ते नहीं। ऐसे पक्षियों का सबसे बढ़िया उदाहरण माना जाता है पेंगुइन।

एक पक्षी के वजन और उसके पंखों के आकार में एक अनुपात होता है। प्राकृतिक विकास इसी रूप में हुआ है, इसलिए पक्षी एक सीमा से बड़े या भारी नहीं मिलते। अतीत में लगभग सात करोड़ साल पहले जब डायनोसौर धरती पर विचरण करते थे, उड़नेवाले क्वेजाकोटलस होते थे। वे विशाल प्राणी थे, पर उनके वजन और पंखों का अनुपात देखें, तो पता लगेगा कि वे सामान्य डानोसौरों के मुकाबले काफी हल्के थे। इनके पंखों का विस्तार १० सें १६ मीटर यानी ३३ से ५२ फुट तक था, जबकि वजन ७० से २०० किलोग्राम तक था। आज भी पक्षियों की कई श्रेणियां, वगैरह बत्तख, मुर्गी, मोर और शतुरमुर्ग वगैरह पंख और वजन के असंतुलन और हड्डियों तथा मांसपेशियों की संरचना के कारण उड़ने में असमर्थ हैं।

आमतौर पर नर पक्षी मादा पक्षियों से दोस्ती करने के लिए उन्हें धुनों से प्रभावित करने की कोशिश करते हैं। इसके लिए पक्षी अन्य पक्षियों से अलग-अलग प्रकार से गुनगुनाना सीखते हैं। धुनें सीखने के बाद पक्षी उनका रियाज भी करते हैं। उनकी यह मेहनत काफी काम आती है। खतरे का संकेत देने और तनाव कम करने के लिए पक्षी सुरीली आवाज का सहारा लेते हैं।

सोंग बर्ड के गर्मियों में तीन हजार पंख होते हैं, लेकिन सर्दियों में अधिक गर्माइश की जरूरत के अनुसार इसके पंख बढ़कर ३५०० तक हो जाते हैं। सबसे कम पंख रूबी थ्रोटिड हमिंगबर्ड के होते हैं, मात्र ९४० पंख।

आपने कुछ पारंपरिक वेशभूषाओं में पंखों का इस्तेमाल देखा होगा। रेड इंडियंस भी अपने सिर के ताज में बाज या अन्य पक्षियों के पंख लगाया करते थे। इसके पीछे मान्यता थी कि ऐसा करने से उनमें पक्षियों के समान देखने की शक्ति आ जाएगी।

बसंत और प्रजनन काल के आगमन का आभास हो जाता है पक्षियों को। मस्तिष्क में मौजूद संग्रहक महसूस कर लेते हैं बदलाव।

पक्षी बसंत के लंबे दिनवाले मौसम और अपने प्रजनन के समय का अनुभव कर लेते हैं। पक्षियों के मस्तिष्क में हल्के संग्राहक होते हैं, जो बदलते दिनों को महसूस करते हैं और उत्पादकता के लिहाज से मौसम के घटनाक्रम को समझ लेते हैं। यदि सबकुछ ठीकठाक रहता है तो छह से आठ सप्ताह में अंडों से चूजे निकल जाते हैं। मुर्गियों और जापानी बटेर के मस्तिष्क में अंदर मौजूद हल्के संग्राहकों को हाइपोथैलेमस कहा जाता है। उनके मस्तिष्क में एक संवेदी हिस्सा होता है

जो इसके लिए उन्हें प्रेरित करता है। पक्षियों में प्रजनन के लिए प्रेरित करनेवाले संक्रमण का उत्पादन होता है, लेकिन मस्तिष्क के हल्के संग्राहकों की पहचान रहस्य ही बनी रही।

बदली रुत का एजेंडा- बदलते मौसम में पक्षियों को यह लगता है कि इन दिनों में उनके चूजों के लिए पर्याप्त भोजन मिलेगा। मसलन कौआ कीड़ों को खोता है और बसंत के मौसम में वह अपनी पीढ़ी को आगे बढ़ाता है, जिस समय मिट्टी नम होती है और कीड़े सतह से ऊपर होते हैं।

मस्तिष्क की भूमिका- आंखों की बजाय पक्षियों के मस्तिष्क का आंतरिक हिस्सा दिन की लंबाई को महसूस करता है। यह इसलिए संभव है क्योंकि पक्षियों के दिमाग और मस्तिष्क के ऊतकों में काफी प्रकाश जाता है इसलिए दिमाग के गहरे हिस्सों तक भी प्रकाश पहुंचता है।

आंखें एक सेकेंड के छोटे से हिस्से में प्रकाश पर भलीभांति प्रतिक्रिया दे सकती हैं, जो दृष्टि के लिए महत्वपूर्ण है। लेकिन रोशनी और अंधेरे की पहचान के लिए प्रकाश के बदलते स्तर को समझने की जरूरत होती है, जो एक अलग चीज है। पक्षियों के मस्तिष्क में हाइपोथैलेमस यही काम करते हैं। पक्षी स्वाद का अनुभव नहीं कर सकते, क्योंकि उनमें स्वाद ग्रंथियां होती ही नहीं है।

❋ सत्तर प्रतिशत पक्षियों की मौत पानी उपलब्ध न होने के कारण हो जाती है। साल-दर-साल हम, खासतौर पर शहरों में प्राकृतिक वनों और जलाशयों को खत्म करते चले जा रहे हैं। कई लोग कबूतरों और दूसरे पक्षियों को दाना डालते हैं लेकिन उनके लिए पानी की व्यवस्था करना भूल जाते हैं। दाना व पानी रखने के साथ बर्ड बाथ की व्यवस्था करना इन सुंदर पक्षियों को अपने बगीचे में आकर्षित करने का एक अच्छा साधन है।

किसी पेड़ की छाया में थोड़े साफ पानी की व्यवस्था करके आप इन पक्षियों को आनंद लेते हुए देखकर स्वयं भी आनंदित हो जाएंगे। जीवित रहने के लिए सभी पक्षियों को पानी की आवश्यकता होती है। पानी पीने के अलावा उन्हें स्नान करने की भी आवश्यकता होती है। साफ, धुले पंखों का प्रयोग ये पक्षी भोजन की तलाश में उड़ने, अपने दुश्मनों से बच निकलने और यूं ही उड़ान का आनंद लेने के लिए भी करते हैं। भोजन से कहीं अधिक पानी की व्यवस्था अधिक करनी चाहिए।

बर्ड-फीडर्स आमतौर पर कार्डिनल, ब्लू जे और गौरैया जैसे बीज खानेवाले पक्षियों को जी अपनी ओर आकर्षित करते हैं। रैन, कैटबर्ड और वेक्सविंग्स जैसे कीड़े-मकोड़े और फल खानेवाले पक्षियों को आमतौर पर बर्ड फीडर्स में कोई दिलचस्पी नहीं होती लेकिन बर्ड बाथ हमिंग बर्ड से लेकर स्क्रीच आउल तक हर प्रकार के पक्षियों को लुभाते हैं।

बर्ड बाथ पर अपना भोजन धोने के लिए आए कौए दिखाई देंगे। स्क्रब जे पक्षी पानी अपनी चोंच में भरकर उसे निगलने के लिए अपना सिर पीछे की तरफ झुकाता है जबकि फाख्ता अपनी चोंच पानी में गहराई तक डुबोकर पानी गटकता है। पक्षियों का असली सौंदर्य तो बर्ड बाथ पर उनके स्नान के समय प्रकट होता है। पक्षी आमतौर पर नहाते समय अपना सिर पहले पानी में डुबाते हैं। इसके बाद वे शरीर के निचले हिस्से को पानी में डुबोते हैं। इसके बाद वे शरीर के निचले हिस्से को पानी में उतारकर जोर-जोर से हिलाना शुरू करते हैं। पानी के छींटे हर तरफ उड़ते हैं, लेकिन पक्षी अपनी मस्ती में इस सबसे बेखबर और बेपरवाह होते हैं।

इसके बाद पक्षी अपने शरीर को समेट लेते हैं और फिर अपने पंखों को फुलाकर उन्हें सुखाने का यत्न करते हैं। इसके बाद वे नजदीक के किसी पेड़ की शाख पर बैठकर पंखों को संवारते हैं।

मिट्टी के घरौंदे ऐसे स्थान पर रखें, जहां पक्षी आकर नियमित बैठते हों। दाना पानी भी वहीं आसपास प्लास्टिक के बर्तन में रख दें। वह स्थान जमीन से ऊंचा व सुरक्षित हो ताकि बिल्ली वहां न पहुंच सके।

बर्ड बाथ के लिए असमतल मिट्टी (जिसका प्रयोग घड़े बनाने के लिए किया जाता है), सीमेंट, लकड़ी या पत्थर जैसी सामग्रियां उपयुक्त हैं। यदि बर्ड बाथ बहुत चिकना है तो आप पक्षियों को पंजा जमाने की सुविधा देने के लिए नॉन स्किड स्टिकर्स या छोटे-छोटे कंकड़-पत्थरों का प्रयोग कर सकते हैं। बर्ड-बाथ के किनारे नुकीले भी नहीं होने चाहिए।

❋ विश्व में पक्षियों की लगभग ८६०० प्रजातियां पाई जाती हैं। हमारे देश में १२०० के लगभग पक्षियों की प्रजातियां निवास करती हैं। पक्षियों के शरीर पर पंखों का वाह्य कंकाल होता है। पक्षियों के अग्रपाद पंखों में परिवर्तित हो जाते हैं, जो इन्हें उड़ने में सहायता प्रदान करते हैं। पक्षियों की हड्डियां खोखली होती हैं। पक्षियों के शरीर में केन्द्रक युक्त लाल रुधिर कणिकाएं पाई जाती हैं। पक्षियों का शरीर धारा-रेखित होता है। इनका सिर छोटा तथा गर्दन लचीली होती है। इनकी पूंछ उड़ान के समय दिशा नियंत्रित करती है। पक्षियों के फेफड़े बड़े-बड़े वायुकोषों से जुड़े रहते है। वायुकोष श्वसन क्रिया में सहायता प्रदान करते हैं तथा इनके शरीर को हल्का करते हैं जिससे इनको उडने में आसानी होती है।

❋ पेंगुइन, सील और व्हेल जैसे जीवों में इस मौसम में चर्बी की एक मोटी परत बन जाती है, जो उनके लिए कंबल का काम करती है। कुछ में तो यह परत ५-६ इंच तक मोटी हो जाती है। पक्षियों के शरीर में प्राकृतिक रूप से चर्बी की एक हल्की परत बनती है। उसके ऊपर पंखों का आवरण स्लीपिंग बैग की तरह काम करता है। ठंड से बचने के लिए काई के पौधे अधिक ठंड पड़ने पर अपने भीतर का पानी निकाल देते हैं और खुद को सुखा लेते हैं। अलग मौसम में पानी का स्पर्श पाते ही ये फिर हरे हो जाते हैं। यहां रहनेवाली मछलियों ने खून में कुछ इस तरह के रसायन विकसित कर लिए हैं, जो जीरो से नीचे तापमान होने पर भी अपने खून को जमने नहीं देती हैं।

कुछ ऐसे पशु-पक्षी हैं, जो सर्दियों में माइग्रेशन, हाइबरनेशन जैसे खास तरीके अपनाकर ठंड में खुद का बचाव करते हैं। अप्रवासी पक्षी यानी दूसरे देशों के पक्षी झील और नदियों के किनारे अपना घर बना लेते हैं और सर्दी खत्म होते ही अपने-अपने गृह स्थान लौटने लगते हैं। मैमल्स जैसे, चमगादड़, व्हेल आदि सर्दियां शुरू होते ही उन स्थानों पर चले जाते हैं, जहां का मौसम गर्म होता है। कुछ जानवर ठंड से बचने के लिए जमीन के अंदर या गुफाओं आदि में महीनों तक निष्क्रिय रूप से पड़े रहते हैं। वे जाड़े में मौसम में महीनों तक गहरी नींद में सो सकते हैं। इस खास प्रक्रिया को ही हाइबरनेशन कहा जाता है। भालू बिना खाये-पीए छह महीनों तक आराम से रह सकता है।

❋ किसी भी पक्षी का दसवां अंडा पहले नौ अंडों से आकार में बड़ा होता है।

❋ विश्व में लगभग १००,०००० लाख पक्षी हैं।

❋ पक्षियों के ऋतु देशांतर गमन का वैज्ञानिक कारण क्या है ? - पृथ्वी के चुंबकीय रेखाओं के नियत पथ पर ही ये पक्षी हजारों मील की उड़ाने भरते हैं। अधिकांश मौसमी उड़ानें ग्रीष्म ऋतु के अंत में उत्तर दक्षिण और बसंत में दक्षिण से उत्तर की ओर होती हैं।

❋ पक्षियों की आंतें ही चबाने का काम करती हैं। दांत नहीं।

❋ प्रतिवर्ष १० हजार से भी अधिक पक्षी खिड़कियों से टकराने के कारण मर जाते है।

❋ कई पक्षी शरीर में खनिज-क्षार का प्रमाण कम होने पर धूल-मिट्टी खाकर अपनी प्रतिकार शक्ति बढ़ाते हैं।

❋ समुद्र के तटवर्ती क्षेत्रों में चहलकदमी करने वाले पंछी-सामुद्रिक (सीगल) लंबी दूरी तक उडान भरते हैं और ५० मील प्रति घंटा की रफ्तार से एक दिन में ७०० मील की दूरी तय कर लेते हैं।

❋ कुछ ऐसे भी पक्षी संसार में है, जो उड़ नहीं सकते। हालांकि इनके पंख होते हैं। असल में उड़नेवाले पक्षी की तुलना में इनकी हड्डियां हल्की नहीं होती, साथ ही इनके पंख भी उड़ने के अनुकूल नहीं बने होते हैं, इसलिए ये पक्षी उड़ नहीं सकते।

❋ पक्षियों की हवाई विशेषताएँ- रंग- हर पक्षी की पहचान उसके बाह्य रंगों से होती है यानी उनके पंखों का रंग। भिन्न-भिन्न पक्षियों का रंग भिन्न-भिन्न होता है, जैसे कोयल का रंग काला तो गौरैया का रंग भूरा।

सिर- पक्षियों का सिर नौकाकार होता है ताकि उड़ान भरते समय ये हवा के बहाव को आसानी से काट सकें और हवा के प्रतिरोध का कोई खास असर इन पर न पड़े।

पंख- पंख उड़ाने भरने के काम आते हैं जब पक्षी उड़ान भरने के लिए अपने पंख फड़फड़ाते हैं, तब पंख के ऊपर उठने के दौरान खाली जगह में, पंखों के बीच हवा का दबाव बढ़ जाता है और ज्यों ही वे पंख नीचे की ओर होते हैं, दबाव के कारण शरीर ऊपर की ओर उठता है। इस तरह पंखों की गति बहुत अधिक होती है। वायु दाब के सिद्धांत पर ही ये ऊपर की ओर हवा में उठकर उड़ने लगते हैं।

कंकाल तंत्र- पक्षियों के शरीर में हड्डियों की संख्या कम होती है और जो हड्डियां होती हैं, वे खोखली होती हैं, जिनमें वायु भरी होती है ताकि शरीर हल्का रहे और उड़ान भरने में किसी प्रकार की कठिनाई उत्पन्न न हो।

पाचन तंत्र- पक्षियों का पाचन तंत्र अविकसित होता है अर्थात इनमें अन्य जंतुओं की तरह आमाशय नहीं पाया जाता क्योंकि आमाशय होने की स्थिति में वह भोजन इकट्ठा होता, जिससे शरीर का भार बढ़ जाता। आमाशय के स्थान पर सीधे तौर पर आंतें पाई जाती हैं, जिससे भूख से आंतों में आया भोजन पचनोपरांत रेक्टम से होते हुए शरीर के बाहर हो जाता है, देर तक इनकी आंतों में नहीं रहता और इस तरह शरीर हल्का बना रहता है।

पैर- पक्षियों के पैर धड़ की ऊंचाई की तुलना में छोटे होते हैं। पकड़ने के लिए इनमें उंगलियां पाई जाती हैं। जब ये उड़ान भर चुके होते हैं, तब अपने पैरों को पीछे की ओर मोड़ लेते हैं ताकि उड़ान भरते समय हवा के प्रतिरोध का सामना न करना पड़े। पूंछ- पक्षियों की उड़ान में पूंछ का अपना महत्व है। अपनी पूंछ के सहारे ही पक्षी ऊपर-नीचे या दाएं-बाएं मुड़ना यानी दिशा निर्धारण करते हैं। यह मुलायम पंखों से बनी त्रिकोणीय रचना होती है।

❋ पक्षी अपने पंखों में चोंच मारते रहते हैं। पक्षी ऐसा इसलिए करते हैं, ताकि उनके पंख अपना काम ठीक तरह से करते रहें। बहुत से पक्षियों की पूँछ जहाँ से निकलती है वहाँ प्रीन ग्लैण्ड होती है। इस ग्लैण्ड से तैलीय पदार्थ स्रावित होता है। पक्षी चोंच की मदद से इस तेल को अपने पंखों पर फैला देते हैं। ऐसा करने पर उनके पंख पानी में गीले नहीं होते हैं और पानी उनसे हट जाता है। वरना पक्षियों के पंख पानी से भारी हो जाने पर उन्हें उड़ने में कठिनाई का सामना करना

पड़ता है। अलग-अलग पक्षियों में अपने वातावरण के अनुसार प्रीन ग्लैण्डस् होती है, जिन्हें इस तरह की सुरक्षा की ज्यादा जरूरत होती है, अपने पंखों की सफाई के पीछे बैक्टीरिया और परजीवियों से छुटकारा पाना भी शामिल है।

❋ कोटरों में बने घोसले पक्षी अपने बच्चों की सुरक्षा के लिए बनाते हैं

इस प्रकार के नीड पेड़ के तने या मोटी शाखा में खोद कर बनाए जाते है। जिन पक्षियों की चोंच खुदाई के अनुकूल नहीं होती है वे प्राकृतिक कोटरों या अन्य पक्षियों द्वारा बनाए कोटरों का इस्तेमाल करते हैं। कोटर में स्थित होने के कारण इन पक्षियों के अंडे लुढ़क कर टूटने से तो बचते ही हैं साथ ही उन्हें अतिरिक्त सुरक्षा भी मिलती है। कोटर के तल में घास, पत्तियों, टहनियों, चिथड़ों, कागज या कभी-कभी धागा, ऊन, रूई इत्यादि सामग्री का लगाया जाता है। कुछ पक्षी अस्तर विहीन घोंसला भी बनाते हैं। सामान्यता कोटर बनाने के लिए पुराने पेड़ों का ही चुनाव किया जाता है। जिनकी लकड़ी मृत हो गई हो या जो खोखले हों। कोटरों में कठफोड़ा (गोल्डन बैक्ड वुड पैंकर) छोटा बसंता (कॉपर स्मिथ), तोता (रोज रिंग्ड पैराकीट), कोचर (स्पॉटेड आउटलेट्) नकटा (कॉम्ब डक) और धनेश (ग्रे हॉर्नविल) है।

कठफोड़ा पक्षी की चोंच लकड़ी तराशने के लिए सर्वाधिक उपयुक्त होती है जो इसके नाम को भी चरितार्थ करती है। आम्रकुंजों अन्य पुराने कुंजों अथवा जंगली पेड़ों में लगभग २ से ४ मीटर किसी शाखा में खोदकर कठफोडा अपना सुरंगनुमा घोंसला बनाता है जो एक कक्ष जाकर खुलता है वही यह अंडे देता है। इस सुरंगनुमा रास्ते के कई गोल प्रवेश द्वार हो सकते हैं। अकसर एक ही नीड़ प्रतिवर्ष पुनर: इस्तेमाल कर लिया जाता है। धनेश पक्षी का नीड़ भी कोटर में ही बनाया जाता है। अंडे देने से पहले मादा इस कोटर में घुस जाती है व जब तक उसके बच्चे १०-१५ दिन के नहीं हो जाते कोटर में ही बंद रहती है।

प्रवेश द्वार को यह अपनी विष्ठा से लगभग बंद कर देती है। इस कार्य के लिए वह अपनी अनोखी चोंच का इस्तेमाल करनी की तरह करती है। बाहर से विष्ठा-मिट्टी के लेप से नर धनेश प्रवेश द्वार को बंद करता है। सिर्फ एक छोटा छिद्र ही छोड़ा जाता है जिसके जरिए नर भोजन लाकर मादा को खिलाता है।

बच्चों के लगभग १५ दिन के हो जाने पर मादा नर के सहयोग से बाहर आ जाती है छिद्र पुन: यथास्थिति कर दिया जाता है। अब बच्चों के सयाने होने तक दोनों मिलकर उनका पालन-पोषण करते हैं।

❋ एक साधारण चिड़िया अपने शरीर के भार का भोजन एक ही दिन में खा जाती है।

❋ पक्षियों के कंकाल का भार उनके पंखों से कम होता है।

❋ पक्षियों की लगभग ८७१८ जातियां होती हैं।

❋ डालियों पर सोते वक्त नहीं गिरते पक्षी

पक्षी लटक कर नींद ले सकते हैं। पक्षी जब पेड़ की डाल पर बैठते हैं तो उनके पंजों की विशेष संरचना उन्हें डाल से बांध देती है। जैसे ही पक्षी डाल पर बैठता है उसके शरीर के बोझ की वजह से पंजे के स्नायु डाल के ऊपर मजबूती से जुड़ जाते हैं और फिर जब उसे उड़ना होता है तो उसे ठीक उसी तरह से प्रयास करना पड़ता है जिस तरह से हमें लटकने के लिए प्रयास करना पड़ता है। यानी कि पक्षी डाल पर बैठकर आराम से सो सकता है क्योंकि उसे पंजों की ग्रिप इस तरह की होती है कि उसे गिरने नहीं देती परंतु ऐसी सरंचना हर पक्षी को नहीं मिली। पक्षियों में सबसे बड़े पक्षी का दर्जा प्राप्त

शुतुरमुर्ग कभी डाल पर नहीं क्योंकि शुतुरमुर्ग पक्षी होते हुए भी बहुत उड़ नहीं सकता। बत्तक भी इसी श्रेणी का पक्षी है वह भी पेड़ों पर सो नहीं सकता। क्योंकि इनके पंजों की संरचना अलग है। इसलिए ये जमीन पर ही सोते हैं।

❊ पक्षियों एवं उनके स्वभाव का अध्ययन करनेवाले विज्ञान को आरनिथोलॉजी कहते हैं।

❊ सबसे पहली चिड़िया - सबसे पहली चिड़िया आर्कियोप्टेरिक्स का उद्गम एक छोटे मांसाहारी डायनासोर से हुआ था। कुछ वैज्ञानिक आज के पक्षियों को जीवित डाइनासोर भी कहते हैं।

❊ यहां दम तोड़ देते हैं पक्षी- जतिंगा वैली में पक्षी आकर दम तोड़ते हैं, इसका कारण अब तक समझ में नहीं आया है। यह गांव हमारे देश के पूर्वों में उत्तर में असम के कछार की पहाड़ियों ने बसा है। वहां अगस्त से नवंबर तक अंधेरी, कोहरे से भरी रातों में, जब हल्की वर्षा होती है, तो गांव में हजारों पक्षी आ-आकर अपनी जान दे देते हैं। वे घने कोहरे में जली रोशनी के पास आकर, बदहवास होकर इधर-उधर टकराते हैं। न जाने उन्हें क्या हो जाता है। गांव की पहाड़ी के उत्तर की ओर से आते हैं।

आत्महत्या तो लेमिंग भी करते हैं। चूहों जैसे कुतरनेवाले लेमिंग नार्वे, स्वीड़न और लैपलैंड के कई भागों में पाए जाते हैं। इनकी आबादी चूहों की तरह ही तेजी से बढ़ती है। तीन-चार साल में जब आबादी बहुत बढ़ जाती है, तो हजारों लेमिंग सड़कें, मैदान, पहाड़, नदी व नाले सब कुछ पार करते हुए समुद्र की ओर कूच कर जाते हैं। राह में सैकड़ों लेमिंग मारे जाते हैं, लेकिन उनका सफर नहीं रुकता। वे समुद्र में पहुंचकर तैरते जाते हैं और अंत में डूब जाते हैं।

❊ अधिकांश पक्षी बैंगनी रंग को नहीं देख पाते हैं इसी कारण शिकारी बैंगनी वस्त्र पहनकर शिकार करते हैं।

❊ हम सामान्यत: पक्षियों के झुंड को वी अक्षर के आकार में उड़ते हुए देखते हैं। ऐसा करने से उन्हें ऊर्जा बचाने में सहायता मिलती है।

❊ पृथ्वी का पहला पक्षी - पृथ्वी का सबसे पहला ज्ञात पक्षी आर्कियोप्टेरिक्स है। इसकी उत्पत्ति जुरासिक काल में १४० करोड़ वर्ष पहले हुई थी। यह सरीसृप एवं पक्षी वर्ग के बीच के कड़ी है। १.५ फीट लम्बे इस जीवाश्म पक्षी में पक्षियों एवं डायनासोर दोनों के लक्षण थे जो यह प्रमाणित करता है कि पक्षियों का विकास सरीसृपों से हुआ है और मध्य में आर्कियोप्टेरिक्स जैसे जन्तु हुए। आर्कियोप्टेरिक्स आज पृथ्वी पर जीवित नहीं है इसलिए इसे लुप्त कड़ी भी कहते हैं।

❊ **चिड़िया -** आकाश में उड़ती चिड़िया रोमन लिपि के व्ही आकार में उड़ती हैं। ऐसा करने से उन्हें उड़ने में आसानी होती होगी या कम ताकत लगती होगी या ऊर्जा की बचत होती होगी। ये सारे ही कारण सही हैं लेकिन पक्षियों का इस आकार में उड़ने के पीछे का विज्ञान इतना सरल नहीं है।

जब कोई चिड़िया अपने पंख फड़फड़ाती है तो उसके पंखों के सिरे से भंवर या बवंडर जैसी लहरें उठती हैं। इन लहरों के ठीक पीछे की हवा नीचे की ओर जाती है और इनके किनारों की हवा हमेशा ऊपर उठती रहती है। जब कोई दूसरी चिड़िया ऊपर उठती हुई हवा के क्षेत्र में उड़ती है तो उसे उड़ने के लिए कम ताकत लगानी पड़ती है। इस प्रकार झुंड में उड़ती सारी चिड़ियां एक-दूसरे से तालमेल बिठाकर इस आकार में उड़ती हैं और अपनी ऊर्जा का संरक्षण करती हैं। इस प्रकार पीछे उड़नेवाली चिड़ियों के लिए उड़ना आसान हो जाता है।

इस आकार में पीछे उड़नेवाली चिड़ियों की हृदयगति सामने उड़नेवाली चिड़ियों की अपेक्षा कम होती है। इससे यह भी

जाहिर होता है कि चिड़ियां अपने झुंड के कमजोर सदस्य को पीछे कर देती हैं ताकि कमजोर चिड़ियों को उड़ने में आसानी हो। इस प्रकार उड़नेवाले प्रवासी पक्षियों को हजारों किलोमीटर उड़ने में आसानी होती है। आगे वाले पक्षी थक जाने पर पीछे चले जाते हैं और पीछे वाले पक्षी उनका स्थान ले लेते हैं। पक्षी अपने आगे उड़नेवाले पक्षी को उड़ता देखते हैं और उसके पंखों की फड़फड़ाने की आवृत्ति के अनुसार अपने पंख फड़फड़ाते हैं। हो सकता है कि वे अपने पंखों में होनेवाले किसी प्रकार के संवेदन से हवा के प्रवाह में होनेवाले सूक्ष्म परिवर्तनों को भी भांप लेते हों। पक्षियों के पास इसे व्यक्त करने का कोई और तरीका भी हो जिससे हम अभी भी अनजान हैं।

चिड़िया अपना घोंसला ठीक उसी प्रकार बनाती हैं, जिस प्रकार जन्म लेते ही मछली तैरने लगती है। घोंसला कैसे बनाया जाता है यह पक्षियों को अपने माता-पिता से सीखना नहीं पड़ता। वरन वे प्राकृतिक रूप से घोंसला बनाना जानते हैं और यह भी कम आश्चर्यकारक नहीं होता कि उनका घोंसला परंपरागत होता है।

कौवे का घोंसला निहायत ही कामचलाऊ होता है तो दूसरी ओर उल्लू अपना घोंसला नहीं बनाया करते, वे आवश्यकता पड़ने पर किसी भी खाली घोंसले को अपना घर बना लिया करते हैं। एक बात और आम तौर पर घोंसले बनाने का काम मादाएं ही करती हैं। जबकि नर सामान जुटाने का काम करते हैं। जिस अर्थ में मादा पक्षी अपना घोंसला बनाने में हाथ बंटाती हैं। नर बया घोंसला बनाते हैं, मादा बया निरीक्षण करते हैं।

जो पक्षी ऊंचा उड़ते हैं और पहाड़ों आदि तक उड़ान भरते हैं, उनके घोंसले बहुधा पहाड़ों और वृक्षों की चोटियों पर होते हैं। जैसे बाज, उकाब, गिद्ध आदि के घोंसले बहुत ऊंचाई पर मिलते हैं। उसी प्रकार जो पक्षी मध्यम उड़ान भरकर लगभग जमीन के आसपास रहते हैं, उनके घोंसले वृक्षों के निचले हिस्सों में तथा कम ऊंचाईवाले वृक्षों पर बने होते हैं।

तोते और मैना तथा गौरेया जैसे पक्षी अपने घोंसले बहुत कम ऊंचाईवाले वृक्षों पर ही बनाते हैं। जल पक्षी अपने घोंसले जली क्षेत्रों के आसपास ही बनाते हैं।

चिड़िया एव्स वर्ग का उष्ण रक्तजीव है। अन्य सभी स्तनपायी जंतुओं की तरह ये भी रीढ़दार जंतु है। स्तनपायी जंतुओं से चिड़िया केवल एक बात में भिन्न होती है, कि वे अंडा देती हैं। बच्चा नहीं जन्मतीं। चिड़ियों के पंख और चोंच होती है। जिससे ये और जंतुओं से भिन्न लगती है। चिड़ियों की लगभग ९००० किस्में पायी जाती हैं। इनका आकार ५ से.मी. से लेकर २.५ मीटर तक होता है। गानेवाली चिड़िया का आकार बहुत छोटा होता है। जबकि शुतुरमुर्ग का आकार सबसे बड़ा होता है। शुतुरमुर्ग का भार १३६ कि.ग्रा. तक होता है।

चिड़ियों के दांत नहीं होते, इनकी चोंच होती है। जिससे ये भोजन इकट्ठा करती हैं। इनका मुख्य भोजन कीड़े-मकोड़े, अनाज के दाने और पशु-मांस होता है इनकी दृष्टि पूर्ण विकसित और तेज होती है। लेकिन इनकी श्रवण शक्ति कुछ कमजोर होती है। इनकी सुनने की क्षमता लगभग मनुष्यों के समान होती है।

सुनने के लिए पक्षियों के पास भी कान होते हैं। ये कान कई बातों में रेंगनेवाले जंतुओं के समान होते हैं। कान के बाहरी हिस्से में एक पतली नाली होती है। जो कनपटी के पंखों में छुपी रहती है। अधिकांश पक्षियों की इस नाली के चारों तरफ की खाल में एक मांसपेशी ऐसी होती है जो इस नाली के मुंह को पूरी तरह या आंशिक रूप से बन्द कर सकती है। कान के पर्दे की झिल्ली बाहर की ओर निकली रहती है। इस झिल्ली की अंदर की सतह पर एक स्पर्शी तंत्रिका होती है। जो

कर्णावर्त तक ध्वनियों को स्थानांतरित करती है। इस तंत्रिका में कुछ अस्थिमय पदार्थ, कर्ण दंडिका और एक कार्टीलेज की बनी कर्ण दंडिका होती है। जो कर्ण दंडिका को विस्तृत करके कान के पर्दे की झिल्ली से जोड़ देती है।

अधिकतर पक्षियों की श्रवण क्षमता १०० से १२८०० हट्र्स तक की आवृत्ति लिए होती है, जो आवाजें आदमी के कान को निरंतरता में सुनाई देती हैं, पक्षी अलग-अलग करके सुन सकते हैं। पक्षी अपनी इस क्षमता का उपयोग शत्रुओं और अन्य प्रकार के खतरों से आत्मरक्षा के लिए करते हैं। कुछ पक्षी अपने साथी या टोली के सदस्य को पुकारने के लिए कुछ आवाजें पैदा करते हैं।

सबसे धीमी गति से उड़नेवाली चिड़िया- सबसे धीमा उड़नेवाला पक्षी नर वुडकॉक है। अपने प्रणय निवेदन की प्रकट करने के दौरान यह किसी अन्य पक्षी की तुलना में काफी धीमे उड़ता है उस समय इसे आठ किलोमीटर प्रति घंटा की धीमी रफ्तार से उड़ते हुए देखा जा सकता है। अपनी धीमी उड़ान की वजह से यह जमीन से ताकती मादा वुडकॉक की दृष्टि में लम्बे समय तक बना रहता है।

✻ नर चिड़िया मादा से चमकदार क्यों है ?- सुना है कि नर चिड़िया के रंग मादा चिड़िया से अधिक चमकदार होते हैं। देखने से भी ऐसा ही मालूम होता है। पहले हमें यह मालूम होना चाहिए कि पक्षियों के रंग होते ही क्यों है ? चिड़ियाओं के रंगों के बारे में बहुत से कारण दिये गये हैं। लेकिन यह विषय अभी तक पूरी तरह समझा नहीं जा सकता है। इसलिए यह बताना मुश्किल है कि कुछ चिड़िया अधिक चमकदार क्यों होती है। कुछ तो चमकदार झंडे की तरह दूर से ही दिखाई दे जाती हैं और कुछ नजर ही नहीं आ पाती हैं।

कुछ नियम हैं जो ज्यादातर चिड़ियाओं पर सही बैठते हैं। एक नियम यह है कि चमकदार रंग की चिड़िया अपना अधिकतर समय पेड़ों के ऊपर, हवा में या पानी पर गुजारती है। मटमैले रंग की चिड़िया जमीन पर या उसके आस-पास रहती हैं। बहुत सारे अपवादों के साथ दूसरा नियम यह है कि निचले हिस्से की तुलना में चिड़ियाओं का ऊपरी हिस्सा गहरे रंग का होता है।

चिड़ियाओं में रंग सुरक्षा की वजह से होते हैं ताकि वे अपने दुश्मनों को आसानी से नजर न आ सकें। इसे सुरक्षा रंग करते हैं। मसलन, वुडकोक के रंग गिरे हुए पत्तों की तरह आते हैं। स्नाइप जिस घास में रहती है उसी जैसे उसके रंग होते हैं।

अब अगर रंगों का ताल्लुक सुरक्षा से है तो इसकी जरूरत दोनों नर-मादा को होती है, फिर नर के रंग ही चमकदार क्यों होते हैं ?- मादा को अंडे सेने के लिए घोंसले में बैठना पड़ता है। इसलिए उसे अधिक सुरक्षा की जरूरत होती है, जिस कारण प्रकृति ने उसे कम चमकदार रंग दे रखे हैं ताकि वह अपने दुश्मनों से छिपी रहे। अब चिड़ियाओं में भी पहली नजर में प्यार होता है। इसलिए ब्रीडिंग सीजन में जब नर का रंग बहुत चमकदार होता है, तो वह इस रंग को मादा को आकर्षित करने के लिए इस्तेमाल करता है।

✻ सामान्य जनता के लिए विश्व का प्रथम चिड़ियाघर १७९३ में पेरिस में बना था।

✻ चिड़ियां कीड़े-मकोड़ों के अपने से कुछ दूरी पर रेंगने या उड़ने की आवाज सुन लेती हैं।

✻ **सूटीटर्न -** एक ऐसी आश्चर्यजनक चिड़िया है जो लगातार तीन-चार साल तक उड़ती रह सकती है।

✻ **टिटरी** चिड़िया सोते समय अपने पैर ऊपर करके सोती है।

❊ **इंडियन स्विफ्ट** सबसे तेज यानी २०० मील प्रति घंटे की रफ्तार से उड़ता है।

❊ **शुगर बर्ड** की पूंछ उसके शरीर के अनुपात में चार गुना अधिक लंबी होती है।

❊ पश्चिमी घाट पर एक छोटी सनबर्ड पायी जाती है, जो अपने आप में खास है।

❊ **शकरखोरा** भी कहते हैं सनबर्ड को। भारतीय सुंदर चिड़ियों में सबसे छोटी सुंदर चिड़िया नेक्टैरिनाइडी परिवार की सनबर्ड (सूर्यपक्षी) है। इसका आकार घरेलू गौरेया से भी लगभग आधा होता है। जब यह धूप में फलों पर मंडराती है तो इसकी जगमगाती पक्षी किसी रत्न की भांति दिखाई देती है। सभी सनबर्डस को आमतौर पर शकरखोरा कहा जाता है। इनमें पर्पलरन्पर्ड सनबर्ड, यैलोबैक्ड सनबर्ड तथा पर्पल सनबर्ड मुख्य हैं।

प्रजननकाल से पूर्व की पक्षी में नर और मादा में कोई विशेष अंतर नहीं होता। दोनों के रंग ऊपर से भूरा और नीचे हल्का पीला होता है। नर का उसके गहरे रंग और वक्ष के बीच चौड़ी काली पट्टी से पहचाना जा सकता है। दोनों की चोंच लंबी और दुम छोटी होती है, जबकि यैलोबैक्ड सनबर्ड में नर की दुम लंबी होती है। यह चिड़िया भारत में हर जगह बागों, खेतों और हल्के पर्णपाती जंगलों में पाई जाती है। इसकी पतली और लंबी चोंच देखने में विचित्र लेकिन इसके लिए बड़ी उपयोगी होती है। अपनी पतली मुड़ी हुई चोंच से यह फूलों की नली से मधुरस पी जाती है और इस प्रकार पौधों का पर-परागण भी हो जाता है। यह बिच-बिज जैसी बोली बोलती है। प्रजनन में नर अपने पंख ऊपर-नीचे करके बगल के पीले तथा सिंदूरी रंग के चमकीले पंख दिखाकर मादा को अपनी ओर आकर्षित करता है और चीविट-चीविट की आवाज भी निकालता रहता है। इसका घोंसला बया की तरह लटकनेवाला होता है।

❊ **ककापो -** गंध के कारण शिकारी आकर्षित- ककापो चिड़िया की बहुत ही तेज बासी गंध होती है। गंध के कारण शिकारी इसकी ओर आकर्षित होते हैं। यह गंभीर रूप से लुप्तप्राय (एंडेन्जर्ड) है।

❊ **मैना, सारिका -** मैना पक्षी मिट्टी से अपना घोंसला बनाती है।

तोता तो चालाक और होशियार होता ही है लेकिन मैना को उससे भी ज्यादा समझदार माना जाता है। मैना को पेड़ों पर बैठना ज्यादातर पसंद है। मैना की मुख्य विशेषता है कि यह विभिन्न पक्षियों की आवाज निकाल लेती है। पहाड़ी मैना गाना गाने में होशियार होती है। इसलिए लोग-बाग पहाड़ी मैना ही ज्यादातर पालते हैं।

इसे अनाज के दाने, फल-फूल पसंद है लेकिन कभी-कभी मरे हुए पक्षी और कीट पतंगे भी चट कर जाती है। मैना को आदमियों से डर नहीं लगता यह उनके एकदम नजदीक घूमती फिरती है। लेकिन जैसे ही इसे सांप दिखलायी पड़ता है यह जोर-जोर की आवाज निकालती है। ताकि सभी लोग सतर्क हो जायें। मैना कई रंगों की होती है। कत्थई रंग, गुलाबी रंग और काला। कभी-कभी विशेष जाति की सफेद रंगवाली। अपना सिर हिला-हिलाकर तरह-तरह की मधुर आवाज निकालती है। प्राचीन साहित्य में तोते और मैना को पात्र बनाकर कहानियां तक लिखी गयीं। मैना एक ऐसी लोकप्रिय चिड़िया है, जो पूरे भारत में हर जगह पायी जाती है। अधिकतर इसकी चोंच और टांगे पीले रंग की होती है। पंखों का रंग चॉकलेटी होता है। आंखों के पास बाल नहीं होते। मैना को भी एक लाभकारी पक्षी माना जाता है। कीड़े-मकोड़ों की तलाश में मैना पालतू जानवरों के पीछे-पीछे घूमती रहती है।

❊ मैना स्टनीडी परिवार की पक्षी है, जो कत्थई, भूरी, स्लेटी रंग की और ढेर सारे छोटे-छोटे धब्बेदार होती है। यह

पहाड़ी मैनाओं से भिन्न होती है, जो जंगलों की अपेक्षा बागों और जलाशयों के किनारे रहना अधिक पसंद करती है।

यह सर्वभक्षी पक्षी है, जो कद में फाख्ता के बराबर होती है। कुछ मैना पक्षी अपनी मीठी बोली के लिये प्रसिद्ध हैं। मैना की ये पांच प्रजातियां इंसानों के बीच बेहद लोकप्रिय हैं।

तैलियर या स्टालिंग- इसे अपनी मीठी बोली के कारण अंग्रेजी साहित्य में वही स्थान प्राप्त है, जो हमारे यहां पहाड़ी मैना को है।

किलहंटा या देशी मैना- बस्ती के आसपास या बागों में रहनेवाली मैना पक्षी अपने मीठे स्वभाव के कारण बहुत लोकप्रिय है।

हरिया मैना- यह जलाशयों और गाय बैलों के आसपास रहनेवाली पक्षी है।

अबलखा मैना- काली और सफेद रंगवाली पक्षी है। यह अपनी मीठी बोली के कारण लोगों के बीच एक अलग छाप छोड़ती है।

पहाड़ी मैना- पहाड़ी मैना या सारिका ग्रेकुलिडी परिवार की प्रसिद्ध पक्षी है, जो अपनी मीठी बोली के कारण शौकीनों द्वारा पिंजरों में पाली जाती है। पहाड़ी मैना को भारतीय साहित्य में भी स्थान मिला है।

यह झुंड में रहनेवाली पक्षी है, जो एक देश छोड़कर कहीं बाहर नहीं जाती। इसकी कई जातियां भारत में पाई जाती हैं, जिनमें मामूली अंतर होता है। मैना का सारा शरीर चमकीला काले रंग का होता है, जिसमें बैंगनी और हरे रंग के धब्बे भी होते हैं। मैना के पंखों पर एक सफेद और काफी बड़ा धब्बा बना होता है और आंखों के पीछे से सिर के नीचे तक फीते की तरह पीली खाल बढ़ती रहती है। इसका मुख्य भोजन फल-फूल और कीड़े-मकोड़े ही हैं, लेकिन इसे फूलों का रस भी खूब पसंद है। मादा फरवरी से मई के बीच में दो-तीन नीले व हरे रंग का दागदार अंडे देती है।

✲ **हंस-** प्राचीन ग्रीक लोग हंस को संगीत के देवता अपोलो की संतान मानते थे। प्लेटो ने फेडो में लिखा है कि सुकरात का कहना था कि हंस दुख या विपत्ति में नहीं बल्कि अपोलो के आदेश पर गाता है। शेक्सपियर ने भी अपने नाटकों और कविताओं में हंस के गीत का उल्लेख किया है। लार्ड बायरन ने डान जुआन में और टेनिसन ने द पासिंग ऑफ आर्थर में हंस के गीत का वर्णन किया है। आइसलैंड के हंस सीटी जैसी आवाज करते हैं मगर यह पता नहीं चल सका है कि वे ऐसा मरते वक्त ही करते हैं। उत्तरी गोलार्द्ध में पायी जानेवाली हंस की जातियां गुस्सा या अपने बच्चों की रक्षा करते वक्त हिस्स जैसी आवाज निकालती हैं।

✲ जोड़े में रहते हैं हंस- हंस हमेशा जोड़े में रहते हैं। इनमें से अगर एक की भी मौत हो जाए तो दूसरे के मरने की संभावना ९९ प्रतिशत बढ़ जाती है। हंस सच्चे प्यार की मिसाल होते हैं।

✲ हंस का आकार घरेलू बतख की तरह होता है। इसकी लंबाई ७५ सेंटीमीटर के आस-पास होती है। इसका रंग भूरा और सफेद होता है। यह पक्षी जल में विचरण करता है। नर और मादा देखने में समान लगते हैं। लोग इस पक्षी को बड़े-बड़े जलाशयों और झीलों में पालतू की तरह रखते हैं। ये अपने झुंडों में रहकर सुरीली आवाज निकालते रहते हैं। जो इसकी सुरीली आवाज को एक बार सुन लेता है, वे उस आवाज को जल्दी भूल नहीं पाते।

ये दिन में बालू वाले मैदानों में विश्राम करते हैं और हमेशा सावधान रहते हैं, इसलिए इन्हें पकड़ना मुश्किल होता है।

हंस अपने घोंसले अप्रैल से जून के बीच झीलों के किनारे ऊंचाई पर स्थित वनस्पतियों के बीच बनाते हैं। इनके अंडे हाथी के दांतों की तरह दिखाई देते हैं। मादा हंस एक बार में तीन से चार अंडें दे सकती है।

हंस सर्दी के मौसम में उत्तरी पूर्वी भारत में अधिक देखने को मिलते हैं। मध्य भारत में यह बहुत कम देखने को मिलता है। भारत के अलावा यह पक्षी पाकिस्तान, बांग्लादेश और म्यांमार में भी पाया जाता है। पानी के ऊपर तैरने में इसे बहुत आनंद आता है। हंस मुख्यत: शाकाहारी पक्षी है। यह अपने आहार की खोज पानी के अलावा खेतों में जाकर भी करता है। हंस गेहूं, चावल, चना और जल-वनस्पतियों को बड़े चाव से खाता है। यह रातभर अपनी पेट-पूजा में लगा रहता है और सुबह झीलों में पहुंच जाता है।

❊ सरस्वती का वाहन हंस - सरस्वती विद्या की देवी मानी जाती है। हंस को उनका वाहन माना जाता है। हंस स्वयं में सौंदर्य की खान है। इसकी मुख्यत: सात-आठ प्रजातियां पाई जाती हैं। जैसे ट्रैम्पटर, हूपर, म्यूट, ब्लैक, बिलिक्स, ब्लैक नैकड आदि।

❊ ट्रैम्पटर हंस केवल अमरीका में पाया जाता है। जब ये पूरी सांस भरकर आवाज निकालते हैं तो बड़ा तीक्ष्ण नाद होता है। ओलर बुकेनिटर जाति का हंस तो प्राय: लुप्त ही हो गया है। आज इनकी संख्या दो-चार ही है। इस प्रजाति का बहुत ज्यादा शिकार होता है। उत्तरी अमरीका में रेड रॉक लेक ऐसी सुरम्य घाटी है जहां हंसों का लालन-पालन किया जाता है। इसकी कुछ प्रजातियां भारत, पाकिस्तान और बांग्लादेश में भी पाई जाती हैं। नर और मादा एक जैसे होते हैं। इसके नख सफेद और चोंच गुलाबी होती है। यह नदियों की अपेक्षा झीलों में रहना अधिक पसंद करते हैं। हंस की गर्दन लम्बी व टांगें छोटी होती है। गर्दन ही हंस की शान है। यह पानी की तली में पहुंच कर जलीय वनस्पतियों को ही अपना आहर बनाता है। वैसे हंस कच्चे चने खाने का भी शौकीन है। कच्चे चने के खेतों में इनके झुण्ड के झुण्ड देखा जा सकते हैं। यह उड़ने में भी माहिर है। ठीक वायुमान की तरह उड़ान भरता है। उड़ते समय म्यूट हंस के जोड़ों की फड़फड़ाहट दूर तक सुनाई देती है। हंस ज्यादातर जोड़ा बनाकर रहते हैं। चार-पांच वर्ष में ही ये सहजीवन शुरू कर देते हैं।

❊ **कौवा -** कौवों को बड़ा ही भाग्यशाली भविष्यवक्ता कहते हैं। इसलिए इसे भविष्यवक्ता व शकुनशास्त्री की तरह मानते हैं। इसकी महत्ता को कवियों और ज्योतिषियों ने भी सराहा है। विरह-व्यथित युवतियों एवं प्रेमियों को उनके प्रियतम के आगमन की सूचना देने में उसकी चोंच को सोने से मढ़ने की बात मशहूर है। कौवा कब कहां आकर बैठता है या बोलता है। इस बारे में तरह-तरह के अनुमान प्रचलित हैं। श्राद्ध पक्ष में तो उसको विशेष सम्मान दिया जाता है।

❊ सभी पक्षियों में कौवा सबसे चालाक पक्षी है।

चतुर कौवे दिमाग से तेज होते हैं। कौवा का दिमाग लगभग उसी तरीके से काम करता है, जैसे चिम्पैन्जी और इंसान का। वे चेहरा देखकर ही जान लेते हैं कि कौन उनका दुश्मन है और कौन दोस्त। वे खुद के लिए खतरा पैदा करनेवाले चेहरे को पांच साल तक याद रख सकते हैं। ये अपने आसपास मौजूद वातावरण की सही गणना करना जानते हैं।

❊ कौए को हरा रंग सर्वाधिक पसंद आता है।

❊ कौवा- छिपकर चलना, अभीष्ट वस्तुओं का समय-समय पर संग्रह करना, सभी कार्यों में सावधान रहना, किसी का भी विश्वास न करना, ये गुण कौए में हैं।

❊ कौवा किसी समय यत्र-तत्र सर्वत्र पाया जाता था। आज इसकी गिनती दुर्लभ पक्षियों की श्रेणी में होती है। कौवे की आधी से अधिक नस्लें लुप्त हो चुकी हैं। शेष बची नस्लों के १० से २० प्रतिशत कौवे घने जंगलों में जा बसे हैं। कौवे के धीरे-धीरे लुप्त होते जाने का प्रमुख कारण है हमारी उपेक्षा। कौवा वस्तुत: एक घरेलू पक्षी है और हम इसे घर में घुसने देने के लिए राजी नहीं हैं। अन्यथा घनिष्ठता बढ़ाने में कौवा चिड़िया की उपेक्षा चार कदम आगे रहता है। वह बार-बार हमारे घर आंगन या मुंडेर पर बैठकर कांव-कांव करके अपना परिचय देता है, पर हम उसे देखते ही भंगाने या उड़ा देने का प्रयास करते हैं। उधर कौवे का धैर्य देखिए। वह बार-बार दुत्कारा जाता है फिर भी वापस आकर मानव की ओर मित्रता का हाथ बढ़ाता है। पर मानव है कि उसे भगाकर ही दम लेता है। संभवत: मानव को कौवे का काला रंग, कुरूप चेहरा, कर्कश स्वर और काइयांपन अच्छा नहीं लगता। मान्यता है कि कौवे को तत्काल आभास हो जाता है कि संसार में अथवा परलोक में क्या हो रहा है। कौवों की अपनी भाषा भी होती है। खग ही जाने खग की भाषा। काक विज्ञान के प्राचीन लेखकों ने काक-भाषा की ३२ पद्धतियों का वर्णन किया है।

❊ यदि कौआ ऊंची डाल पर घोंसला बनाए तो समझ लें बारिश कम होगी पर यदि पंखवाली चींटी नजर आए तो जान ले दूसरे दिन तेज बारिश होगी।

❊ कौआ शाखाशायी पक्षियों के कार्विडी कुल का कॉर्वस जाति का प्रसिद्ध पक्षी है। वैसे तो इसकी कई जातियाँ हैं, किंतु उनकी आदतों में परस्पर अधिक भेद नहीं होता। कौए संसार के प्राय: सभी भागों में पाए जाते हैं। कौआ लगभग २० इंच लंबा, गहरे काले रंग का पक्षी है, जिसके नर और मादा एक ही जैसे होते हैं। ये सर्वभक्षी पक्षी हैं, जिनसे खाने की कोई भी चीज नहीं बचने पाती। चालाकी और मक्कारी में कौआ सब पक्षियों मे श्रेष्ठ है और चोरी में तो कोई भी चिड़िया इससे स्पर्धा नहीं कर सकता। इसकी बोली बहुत कर्कश होती है, किंतु सिखाए जाने पर आदमी की बोली की नकल भी कर लेता है।

हमारे देश में छोटा घरेलू कौआ, जंगली और काला कौआ ये तीन कौए अधिकतर दिखाई पड़ते हैं, किंतु विदेशों में इनकी और अनेक जातियाँ पाई जाती है। यूरोप में कैरियन क्रो तथा हुडेड क्रो और अमरीका में अमरीकन क्रो, तथा फिश क्रो उसी तरह प्रसिद्ध है, हमारे यहाँ के काले और जंगली कौए। काक कुल में कौओं के अतिरिक्त सब तरह की मुटरियाँ और बनसरे भी आते हैं, जो रंगरूप में कौओं से भिन्न होकर भी उसी परिवार के पक्षी हैं। ये सब बड़े ढीठ और चोर पक्षी हैं, जो सूखी और पतली टहनियों का भद्दा सा घोंसला किसी ऊंची डाल पर बनाते हैं। समय आने पर मादा उसमें चार छह अंडे देती है, जिन्हें नर और मादा पारी पारी से सेते रहते हैं।

❊ कौए काले रंग के होते हैं, पर कुछ प्रजातियों के कौए की गर्दन भूरे, सफेद और ग्रे रंग के होते हैं।

❊ **कोयल -** भारत में यही कहा जाता है कि कोयल बहुत मीठी तान छेड़ती है। लता मंगेशकर की आवाज की तुलना कोयल से करते हुए उन्हें स्वर कोकिला कहा जाता है। कोयल की आवाज पर सैकड़ों कविताएं लिखी गई हैं। लेकिन यह सच नहीं है कि कोयल गाती है।

कोयल में सिर्फ नर पक्षी ही गाता है, मादा नहीं गाती। इसके पीछे यह तथ्य बताया जाता है कि मादा को आकर्षित करने के लिए यह मधुर तान छेड़ता है। कोयल बेहद शर्मिला पक्षी है, हमेशा पत्तों की आड़ में छिपकर बैठता है।

यह अपने घोंसले नहीं बनाते। नर कोयल कौवे जैसा काला तो मादा भूरी होती है और उसके शरीर पर दाग होते हैं। आंखें लाल व पंख पीछे की ओर लंबे होते हैं।

दूसरे के घोंसले में देती है अंडे- कोयल एक परजीवी प्रजाति का शर्मिला पक्षी है। यह अपने अंडे दूसरे पक्षियों के घोंसले में देते हैं। वह पक्षी उन्हें अपने अंडे समझकर सेता है और इस तरह कोयल के बच्चे निकलते हैं।

१२० तरह की प्रजाति- कोयल की ज्यादातर प्रजातियां एशिया-अफ्रीका में पाई जाती हैं। यह १२० तरह की होती हैं। इसकी आयु ६ साल मानी गई है। इस प्रजाति ने खुद को इस तरह विकसित किया कि वे स्पैरो हॉक की तरह दिखें। ताकि दूसरे पक्षियों को डराने में आसानी हो। राजकीय पक्षी भी- झारखंड में इसे राजकीय पक्षी का दर्जा दिया गया है।

❋ कोयल की आवाज इतनी मोठी होती है कि उसे एक विशेषण के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। स्त्रियों के संदर्भ में अगर बात की जाए तो प्राय: यही देखा जाता है कि जिस महिला की आवाज बहुत सुरीली होती है उसकी तुलना कोकिला या कोयल से की जाती है। मीठी आवाजवाली कोयल का व्यवहार बहुत कटु और हिंसक होता है। कोयल के पंख बहुत अद्‌भुत होते हैं जिनकी सहायता से वह दूसरे पक्षियों के घोंसले पर कब्जा करने में कामयाब हो जाती है।

कोयल एक बहुत आलसी परजीवी है जो घोंसला बनाए बिना अपने अंडे दूसरे पक्षियों के घोसले में देती है और फिर उन्हें वहीं छोड़ देती है। इसे कोयल की चालाकी कहें या फिर उसका रूक्ष व्यवहार वह अपने भयभीत कर देनेवाले व्यवहार से अन्य पक्षियों को डराती हैं और संबंधित पक्षी जिसके घोंसले में कोयल अंडे देती है वह उसके अंडों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता। उल्लेखनीय है कि कोयल और स्पैरो हॉक दोनों की पेट की सतह पर जो पंख होते हैं वह देखने में एक समान लगते हैं। इसीलिए अन्य पक्षी उन्हें देखकर डर जाते हैं।

❋ कोयल कभी अपना घोंसला नहीं बनाती है और न ही अंडे देने के बाद उन्हें सेती है। मादा कौआ और उसके प्रजनन का समय और अंडे समान होने के कारण वह कौए के घोंसले में चुपचाप अंडे देकर वहां से चली जाती है। मादा कौआ उसके अंडों को अपने अंडे समझकर उनकी देखभाल करती है। बच्चे बड़े होकर उडने लायक हो जाते है, तो अपने बच्चों को लेकर वहां से चली जाती है।

बुलबुल - गानेवाली बुलबुल बड़ी चतुराई से पैंतरे बदलकर लड़ती है।

❋ **मोर -** हमेशा अपने पंखों को समेटे रहनेवाला मोर बरसात के मौसम में काली घटा छाने पर खुश होता है और खुशी से पंख फैलाकर नाचने लगता है।

❋ मयूर को ३१ जनवरी १९६३ को भारत का राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया।

❋ मोर को राष्ट्रीय पक्षी की उपाधि उसके पंखों की अद्‌भुत सुंदरता और सिर पर किसी राजा की तरह हमेशा सजी-धजी रहनेवाली कलगी के कारण दी गई है। मोर को देखकर कोई आकर्षित न हो, ऐसा संभव नहीं है। हमेशा अपने पंखों को समेटे रहनेवाला मोर बरसात के मौसम में काली घटा छाने पर खुश होता है और खुशी से पंख फैलाकर नाचने लगता है। अगर मोर मस्ती से नाचे, तब उसे देखो। एक छोटा-सा मोर सुंदर, विशाल और रंग-बिरंगे पंखों को दूर तक फैलाकर ऐसी सुंदर छटा बिखेरता है।

❋ मोर भारत का प्रिय व राष्ट्रीय पक्षी घोषित किया गया है। भारतीय वन्य प्राणी सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत इसे पूर्ण

संरक्षणता प्राप्त है।

❋ मयूर यानी मोर लगभग एक मीटर लंबी बहुरंगी पूंछ, मनमोहक कलगी, चमकदार हरी गर्दन और सुंदर पंखों के कारण यह हमारा सबसे सुंदर और राष्ट्रीय पक्षी मोर माना गया है। पंखों की लंबी पूंछें केवल नर मोर में होती हैं। मोरनी की इस प्रकार की पूंछ नहीं होती है। नर की टांगों में एक नुकीला खार भी होता है। मुख्यत: वर्षाकाल में मोर मोरनियों को रिझाने के लिए पंख फैलाकर नाचता है। मोर देशभर में पाया जाता है। यह घने जंगलों से लेकर खेत-खलिहान और घरों के आसपास भी देखा जा सकता है। यूं तो यह शर्मीला लेकिन चालाक पक्षी है। एक-एक मोर के साथ ५-६ मोरनियां घूमती रहती हैं। इसकी मियाव मियाव की आवाज से सभी परिचित हैं। यह आवाज काफी दूर-दूर तक सुनाई देती है। मोर का मुख्य भोजन अनाज फसलों के नये अंकुर और कल्ले, कीड़े छिपकलियां और सांप है। मोरनी जुलाई से सितंबर तक अंडे देती है।

❋ जंगल का नटराज मयूर पर्यावरणप्रेमी होता है

मयूर पर्यावरण प्रिय है। वह हरियाली में जीना चाहता है। उसे उमंग और उल्लास चाहिए। उसे नदी के तीर चाहिए। उसे चाहिए तनावमुक्त जीवन और प्रकृति का सान्निध्य। वह कला और संस्कृति का अनुरागी है।

❋ अपनी ही तरह की आशिकाना हरकतें करके अपनी प्रेयसी मोरनी को रिझाना राष्ट्रीय पक्षी मोर की सर्वप्रिय प्रवृत्ति होती है। आकाश में घने बादलों के छा जाने पर मोर मस्ती में झूम उठता है, नाचता है और फिर यह नाच लगातार उस समय तक चला रहता है, जब तक मोर का जी नहीं भर जाता हैं। ऐसा लुभावना दृश्य देखकर ४-५ मोरनियां मोर को घेर कर खड़ी हो जाती हैं व मोर अपने आकर्षक नाच से मोरनियों को प्रभावित करने का प्रयास करता है। फिर नाच समाप्ति पर मोरनियां, मोर के संग विचरण को चली जाती है।

मोर हमारा राष्ट्रीय पक्षी है व सबसे सुंदर पक्षी है। एक लम्बी पूंछ जिस पर रंग-बिरंगी चितियां बनी रहती है। नाचते समय यही पंखनुमा पूंछ अपने इन्द्रधनुषी आकर्षण से देखते ही बनती है। यही पूंछ वर्ष में एक बार, गिर जाती है व सृजन की नयी प्रक्रिया पुन: शुरू हो जाती है। मोर की गिरी हुई पूंछ को कुछ लोग उठाकर नगरों या कस्बों में नयी प्रक्रिया में निर्मित करके १५ से २० रुपये में बेच देते हैं।

मोर के पंख सुंदर होने के कारण पहले प्रत्येक घर में की मुरट्ठी का होना शुभ माना जाता था। आज भी इस पंख को हिमाचली टोपी के एक ओर या विवाह शादियों में इस पंख को दूल्हे के सेहरे पर सजाया जाता है। मोर सघन झाड़ियों के अंदर जमीन पर रहकर विश्राम करता है व रात्रि में विशाल वृक्षों पर रहता है। यह स्थान अपेक्षाकृत नदी, नालों, तालाबों के समीप होता है और उस स्थान पर सांपों का निवास नहीं होता है। मोर को सांपों का दुश्मन माना जाता है। जब भी सर्पदंश होता है तो दंश वाले स्थान पर मोर का पंख बांधने से रोगी को आराम मिलता है।

भारत वर्ष के पश्चिम क्षेत्रों में पाया जानेवाला मोर सबसे अधिक आकर्षक व बहुरंगी होता है, जबकि अफ्रीकी देशों के मोर सफेद रंग के होते हैं।

❋ **मोनाल-** मोनाल पक्षी हिमाचलप्रदेश का राज्य पक्षी है। स्थानीय भाषा में नर मोनाल को बनाल कहते हैं और मादा को कारड़ी कहते हैं। इसका वैज्ञानिक नाम लोफोफोरस इपेयानस है।

मोनाल पक्षी भारत, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, नेपाल, चीन और तिब्बत में पाये जाते हैं। भारत में यह लगभग सभी पहाड़ी राज्यों जैसे जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश में पाये जाते हैं।

नर मोनाल मादा को आकर्षित करने के लिए अपने मुंह से बांसुरी जैसी आवाज निकालते हैं। यह खुश होने पर पंखों को फैलाता है और मुंह से सीटी की आवाज निकालता है।

ये मोर होने का आभास देते हैं। नर मोनाल की लंबाई लगभग ७२ सेंटीमीटर होती है। यह घरों में पाले जानेवाले मुर्गे से कुछ बड़े होते हैं। इसके सिर पर एक कलगी होती है। इसकी आंखों के चारों ओर काले घेरे होते हैं। इसके पंख जामुनी-नीले रंग के होते हैं। इसके पेट की तरफ का भाग काला, लेकिन मुलायम होता है। इसकी पूंछ लाल रंग की छोटी-सी होती है। मादा मोनाल हल्के भूरे रंग की होती है। इसके गर्दन के आस-पास का भाग सफेद होता है और पंखों पर भी सफेद बिंदु होते हैं। पूंछ का रंग गहरा भूरा और कालापन लिए होता है।

मई से जून माह में मादा अंडे देती है। यह एक साथ ४ से ६ अंडे दे सकती है। इन्हें सुरक्षित रखने के लिए मोनाल घोंसले बनाते हैं या फिर अंडों को चिकने पत्थरों के नीचे रख देते हैं। अंडों से २८ दिनों में बच्चे निकल आते हैं।

*** कबूतर -** कबूतर की विश्व में २८९ प्रजातियां पाई जाती हैं

कबूतर से तो सभी परिचित हैं। भोले स्वभाव व सीधेपन के कारण कबूतर का पक्षियों में विशेष स्थान है। कोलम्बीफार्मिस गण का यह पक्षभ कोलम्बिडी कुल के अंतर्गत आता है। कबूतर की विश्वभर में २८९ प्रजातियां पाई जाती हैं। कबूतर को कपोत के नाम से भी जाना जाता है। आरंभ में कबूतर पेड़ों के बजाय जमीन पर रहते थे। धीरे-धीरे उन्होंने पेडों पर रहने की आदत डाली, जिससे उनके पैरों की अंगुलियां डाल पकड़ने लायक हो गई। कीड़ों-मकोड़ों को खाना छोड़कर इन्होंने अनाज से अपना पेट भरना शुरू किया, इससे इनके गले के भीतर एक थैली का विकास हुआ, जिसमें वे पहले दाना चुनकर भर लेते हैं और जहां से कुछ देर बाद दाना पिसकर उनके पेट में हजम होने चला जाता है। इस थैली में कबूतर कुछ कंकड़ के टुकड़े भी निगल लेते हैं, जो आपस में रगड़कर निगले दानों को पीस डालते हैं। कबूतर इसी थैली के पिसे हुए दाने के रस को, जो दूध जैसा होता है, बच्चे के मुंह में उगल देता है, जिससे उनका पेट भी भर जाता है।

कपोत उपवर्ग में दो ही परिवार हैं। कपोत परिवार, जिसमें सभी प्रकार के कबूतर, फाख्ताएं तथा हारिल रखे गए हैं और डोडो परिवार। डोडो नाम का पक्षी, जो मॉरिशस में पाया जाता था; आज से लगभग तीन सौ वर्ष पूर्व अंतिम बार देखा गया था, अब संसार से विलुप्त हो चुका है। अत: अब केवल एक कपोत परिवार ही बचा है।

कबूतर हमारे देश का बाराहमासी पक्षी हैं। ये पेड़ों पर रहनेवाले पक्षी हैं, जो अनाज तथा फल खाकर गुजारा करते हैं। कबूतर (ब्लू रॉक पिजन) के शरीर का रंग वैसे तो स्लेटी होता है, लेकिन इसकी गर्दन पर चमकीले हरे पंखों का एक कंठा सा रहता है, जिसके नीचे एक बैंगनी पट्टी होती है जो सूर्य की रोशनी पड़ने पर चमक उठती हैं। इसकी पीठ और डैनों का रंग कुछ गहरा होता है, जिन पर दो-तीन आड़ी पट्टियां पड़ी रहती हैं। दुम का सिरा काला होता है जिसके अगल-बगल में सफेद धारी होती है। इसकी आंख की पुतली नारंगी, चोंच सिरे पर काली व जड़ पर सफेद और पैर गहरे गुलाबी रंग के होते हैं।

आकार में यह लगभग १३ इंच होता है। नर-मादा समान रंग रूप के होते हैं। यह पूर्ण जंगली अवस्था में टीलों तथा चट्टानों वाले खुदे प्रदेशों में पाया जाता है। परन्तु अधिकांशत: अर्द्धपालतू अवस्था में मनुष्य के सहभोजी के रूप में देखा

जाता है। अनाज के गोदाम, रेलवे स्टेशन, पुरानी वीरान इमारतें इसके प्रिय स्थान हैं। उड़ने में कबूतरों की बराबरी कोई नहीं कर सकता। इनका नीड़न मौसम निश्चित नहीं है। वैसे यह कार्य लगभग साल भर चलता रहता है। इन्हें घोंसला बनाना नहीं आता, इसलिए मकान की कोनों, छज्जों, मिट्टी के टीलों, किसी चट्टान के घुमावों, कुओं की दरारों में लापरवाही से थोड़ा-सा घास-फूस डालकर मादा अंडे दे देती है। अंडों की संख्या दो होती है, जो सफेद रंग के दिर्घवृत्ताकार होते हैं। इनकी बोली गहरी गूटर-गूं जैसी होती है।

इस जंगली कबूतर (ब्लू रॉक पिजन) से ही विकास करके मनुष्य ने इसकी अनेक जातियां बनाई हैं, जो अपने सुन्दर रंग-रूप के कारण सारे संसार में शौकीनों द्वारा पाली जाती हैं। इन पालतू कबूतरों में कुछ तो उड़ान के गिरहबाज कबूतर होते हैं और कुछ ऐसे होते हैं, जिन्हें सुंदरता के लिए पाला जाता है। इन सुन्दर कबूतरों में चीना, गोला, मुक्खी और अंबरसरे आदि मामूली किस्म के सफेद या चित्तीदार कबूतर हैं, जिन्हें अक्सर पालनेवालों के यहां देखा जा सकता है।

परन्तु लक्का अपनी टेढ़ी गर्दन और उठी हुई पूंछ के कारण अन्य से अलग दिखाई पड़ता है। शीराजी कबूतर का कद बड़ा होता है तथा यह देखने में भी सुन्दर होता है। लोटन कबूतर हाथ में लेकर जमीन पर उलट कर छोड़ देने से लोटता ही रहता है।

इन सबसे आश्चर्यजनक होते हैं उड़ान के कबूतर। जिनके द्वारा आज भी संदेश भेजे जाते हैं। ये कबूतर सफेद भी होते हैं और जंगली कबूतरों जैसे स्लेटी भी। इनमें यह विशेषता होती है कि ये जहां पाले जाते हैं, उस जगह को बहुत दूर जाकर छोड़े जाने पर भी ये अपनी पुरानी जगह लौट आते हैं। इनको सवेरे उड़ा दिया जाता है। जहां से ये बहुत ऊपर जाकर आसमान में ऐसे डूब जाते हैं कि दिखाई नहीं पड़ते और सारे दिन उड़ते रहकर शाम को नीचे उतरते हैं। सफेद कबूतर को शान्ति का प्रतीक माना जाता है। हिमालयवर्ती क्षेत्रों में कबूतर १३००० फीट की ऊंचाई तक पाया जाता है।

कबूतर प्रति घंटा ६४ कि.मी. उड़ता है।

❋ कबूतर की याददाश्त बहुत तेज होती है। उसे आप दुनिया के किसी भी कोने में ले जाकर छोड़ दें, तो भी वह वापस अपने पूर्व स्थान पर आ जायेगा।

❋ कबूतर की नजरें बड़ी तेज होती हैं। मॉस्को की एक फैक्ट्री में तो इनकी इस खूबी के कारण बाकायदा इनसे काम भी लिया जाता था। वहां ये खराब बॉल-बेयरिंग को छांटने का काम करते थे। इस काम को शुरू करते थे। इस काम को शुरू करने से पहले इन्हें चार-पांच हफ्तों की ट्रेनिंग दी जाती थी। अगर किसी बेयरिंग में इन्हें कोई नुक्स नजर आता, तो खास तौर से बनी एक प्लेट पर ये अपनी चोंच मारते थे। यह सूचना होती थी कि बेयरिंग खराब है, उसे हटा लिया जाए। बदले में कबूतरों को खाने के लिए बाजरा ईनाम में मिलता था। कबूतर पुराने समय से ही संदेशवाहक के रूप में काम करते रहे हैं, लेकिन आमतौर पर ये लंबे सफर नहीं करते। मगर एक कबूतर ऐसा भी था, जो २४०० किलोमीटर दूर से अनजाने रास्तों पर सफर करता हुआ वापस अपने घर आ पहुंचा था।

❋ कबूतर की वंश-वृद्धि औसत दर से चले तो एक जोड़ी से तीन वर्ष में ८००० कबूतरों का भरा-पूरा परिवार बन जाता है।

❋ कबूतर पूरे विश्व में पाये जानेवाला पक्षी है। यह एक नियततापी, उड़नेवाला पक्षी है जिसका शरीर परों से ढंका रहता है। मुंह के स्थान पर इसकी छोटी नुकीली चोंच होती है। मुख दो चंचुओं से घिरा एवं जबड़ा दंतहीन होता है। अगले

पैर डैनों में परिवर्तित हो गए हैं। पिछले पैर शल्कों से ढँके एवं उंगलियां नखरयुक्त होती हैं। इसमें तीन उँगलियाँ सामने की ओर तथा चौथी उंगली पीछे की ओर रहती है। यह जन्तु मनुष्य के सम्पर्क में रहना अधिक पसन्द करता है। अनाज, मेवे और दालें इनका मुख्य भोजन है। भारत में यह सफेद और सलेटी रंग के होते हैं पुराने जमाने में इसका प्रयोग पत्र और चिट्ठीयां भेजने के लिये किया जाता था।

❋ कबूतर किस प्रकार खोजते हैं अपना रास्ता - पुराने जमाने में एक जगह से दूसरी जगह तक चिट्ठियां पहुंचाने का काम कबूतरों से लिया जाता था।

लंबी-लंबी उड़ानें भरकर अपने घोसलों या जगह तक पहुंचने की कुछ चिड़ियों की योग्यता प्रकृति की विचित्र कहानी है। करीब २००० साल पहले रोम के निवासी संदेश भेजने के लिए कबूतरों का इस्तेमाल करते थे। इसका खास कारण यह था कि एक तो कबूतर यात्रा बड़ी जल्दी पूरी कर लेते थे और दूसरे, मनुष्यों की बजाय पक्षियों के जरिए संदेश भेजना अधिक सुरक्षित माना जाता था। और तो और, विज्ञान के इस आधुनिक युग में भी जहां संचार के नए उपकरणों से काम नहीं चलता, वहां सेना के महत्वपूर्ण संदेश कबूतरों द्वारा ही भेजे जाते हैं। इसके लिए सेना में कबूतरों को विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। वे सूरज की मदद से अपनी दिशा का पता लगाते हैं। जैसे-जैसे दिन ढलता है, वैसे-वैसे सूरज की किरणों का कोण भी बदला जाता है। सुबह ये किरणें तिरछा कोण बनाती हैं, दोपहर को सीधा और फिर शाम को तिरछा कोण। इन्हीं कोणों के इशारे पर कबूतर अपनी यात्रा जारी रखते हैं।

कबूतर सूरज की दिशा को ही अपनाते हैं। आकाश में जिस दिशा में सूरज जाता है, कबूतर भी उसी दिशा में उड़ने लगते हैं। लेकिन सूरज की मदद से दिशा खोजने का कार्य सभी कबूतर नहीं कर सकते। दुनिया में कबूतरों की २८९ जातियां हैं। इनमें से कुछ जातियों के कबूतर दिशा खोजने का यह अद्‌भुत काम कर सकते हैं। कुछ कबूतर अकेले ही उड़ना पसंद करते हैं तो कुछ झुंड में। कभी-कभी आपने आकाश में कबूतरों के झुंड को एक पंक्ति में उड़ते हुए देखा होगा। ये कबूतर इसी विशेष जाति के हैं। ये नन्हे संदेशवाहक शांति के प्रतीक माने जाते हैं।

❋ तीक्ष्ण होती हैं जीवों की इन्द्रियां- लंबी दूरियां तय करके अपने घर पहुंचने के लिए विख्यात होमर कबूतर अपने उड़ान मार्ग में मात्र चार मिलीमीटर जितना नीचे अथवा ऊपर होना भांप जाते हैं। कबूतर पराबैगनी प्रकाश किरणों को देखने में भी सक्षम होते हैं और अत्यंत निम्न आवृत्ति की ध्वनि तरंगों को सुनने की भी क्षमता रखते हैं। अत: ऊंचे उड़ते हुए कबूतर समुद्र अथवा पर्वतों से हजारों मील दूर होते हुए भी यह जान लेते हैं कि अमुक दिशा में पर्वत है अथवा समुद्र।

❋ कभी डाकिए के रूप में काम करनेवाले कबूतर को सिर्फ पक्षियों के दिमाग वाला प्राणी मत समझें। यह गणित में भी बड़े माहिर होते हैं।

संख्याओं को समझने में वे बंदरों जितने ही समझदार होते हैं। कबूतरों में शानदार गणितीय क्षमता होती है और वे नंबर जैसी चीजों तथा क्रम व्यवस्था को बेहतर ढंग से समझ सकते हैं। यह खासियत केवल बंदरों में होती है। पशु-पक्षी (मधुमक्खी से लेकर चिंपांजी तक) खाद्य वस्तुओं के जरिए प्रोत्साहित किए जाने के साथ प्रशिक्षण पाने पर गिनती सीख सकते हैं। कबूतरों को गणित के बारे में संक्षिप्त नियम समझाने में भी सफल हो गए हैं। कबूतर दृष्टि के लिहाज बेहद

महत्वपूर्ण टास्क को भी पूरा कर लेता है क्योंकि इनकी दृष्टि क्षमता बेहद मजबूत होती है लेकिन अगर इसे प्रशिक्षित किया जाए तो यह कपि जानवरों जैसे ही हर चीज को समझ सकता है।

❊ टिटहरी (क्वालियम) - स्वभाव से निडर होता है टिटिहरी- भारत के लगभग सभी भागों में पाया जानेवाला यह हमारे लिये एक चिरपरिचित पक्षी है। इसे गर्मियों के मौसम में चांदनी रात में आवाज करते इधर-उधर उड़ते और दौड़ लगाते देखा जा सकता है। खेतों में, नदी-तालाब के किनारे, खुले क्षेत्रों में और समुद्र के किनारे वाले क्षेत्रों में पाया जानेवाला यह पक्षी स्वभाव से निडर होता हे। खेतों में किसानों के बाड़े तक आने में इसे कोई भय नहीं होता है।

वैसे आमतौर पर पक्षी सूरज के उगते ही अपनी दिनचर्या का प्रारंभ करते हैं। किंतु कुछ पक्षी ऐसे भी होते हैं जिनकी गतिविधियां रात और दिन दोनों समय चालू रहती हैं। इनमें टिटिहरी भी एक है। ये समूह में रहनेवाला पक्षी है और इनका काफी संख्या में एक ही स्थान पर चुगते दिखायी देना सामान्य बात है। आमतौर पर नर-मादा जमीन पर साथ-साथ घूमते दिखायी देते हैं। इनके पंजें की उंगलियों की बनावट अन्य पक्षियों से भिन्न होने के कारण ये किसी पेड़ की शाखा या तार अथवा अन्य स्थानों पर ऊपर को की और बैठे हुए बहुत कम दिखायी देते हैं।

यह आकार में तीतर से कुछ बड़ा होता है। पूंछ से चोंच तक इसकी लंबाई अधिकतम ३२ सें.मी. आंकी गयी है। इसके सिर और सिर के पिछले भाग का रंग काला होता है। गले और छाती पर भी काला रंग पाया जाता है। आंख के चारों ओर लाल चमड़ी के घेरे से गर्दन की ओर नीचे की तरफ सफेद रंग होता है। पेट का भाग सफेद रंग लिये होता है। पंख और वहां से ऊपर का भाग कत्थई रंग के होते हैं। जिसमें हल्के हरे और लाल रंग की आभा दिखायी देती है। पंखों के बड़े पिच्छों का रंग काला होता है। पीठ के नीचे का भाग तथा पूंछ के मूल स्थान और किनारे के भाग का रंग सफेद होता है। आंख को घेरती लाल रंग की चमड़ी इसे आकर्षक स्वरूप प्रदान करती है। चोंच का रंग भी लाल होता है। पैर लंबे और पीले-लाल रंग के होते हैं। इनके पैर लंबे होने के कारण नम और जलीय क्षेत्रों से आहार जुटाने में इन्हें आसानी होती है। नर और मादा एक समान दिखायी देते हैं। इनके आहार में खास हैं छोटे-मोटे कीट और उनका लार्वा। समय आने पर ये मनुष्य के खाद्य पदार्थों में से बचे पदार्थों को खाने से नहीं चूकती है। इस तरह यह शाकाहारी और मांसाहारी दोनों हैं। चार-पांच कदम तेजी से चलना और अपना भोजन चोंच में दबाना फिर तेजी से चार-पांच कदम चलना और अपना भोजन इकट्ठा करना इसकी खास विशेषता है। इस काम में जरा-सा भी विघ्न होता है तो यह तेजी से शोर मचाने लगती है। वैसे बगैर किसी कारण के भी चिल्लाते रहना इसकी आदत है। सामान्यत: यह जमीन पर ही अंडे देती है। अंडे देने का खास समय अप्रैल से अगस्त माह के बीच होता है।

❊ भारतीय टिटहरी (वैनलेस इंडिकस) हिमालयवर्ती तथा प्रायद्वीपीय पहाड़ियों में करीब ६००० फिट तक, भारतीय संघ में सभी जगह, पाकिस्तान, बांग्लादेश एवं बर्मा में भी कम-अधिक मात्रा में पाई जाती है।

टिटहरी यूं तो जाड़ों में ही दिखाई देती है, परंतु इसे छोटे-छोटे गिरोह में भी देखा जा सकता है। भारतीय प्रजाति इडिकस अन्य प्रजातियों की भांति खुश्क जमीन पर इधर-उधर तेजी से दौड़ा करती है और थोड़ी दूर चलने के बाद रुक जाती है। इसकी बोली डिड-यू-डू-इट या पिटी-टू-डू-इट (शर्म की बात है ऐसा करना) से काफी मिलती-जुलती है। इसलिए इस पक्षी को डिड-यू-डू-इट के नाम से भी पक्षी जगत में जाना जाता है। इस सुंदर पक्षी का आकार तीतर के समान १० से

१२ इंच, ऊपरी हिस्सा कांस्य भरा, नीचे का भाग सफेद, छाती, सिर और गर्दन काली तथा आंखों के सामने लाल गढ़े रंग की मांस की तह-सी लटकी रहती है। मुख्यत: इसका भोजन कीड़े-मकोड़े तथा घोंघे आदि हैं, किंतु इसे यदा-कदा अनाज के दाने तथा अन्य सड़ी-गली वस्तुएं खाते हुए भी देखा गया है। टिटहरी के अंडे देने का समय मार्च से अगस्त के मध्य है। इसका घोंसला जमीन पर, पत्थरों के बीच, तालाबों की सूखी खम में अथवा तालाब के किनारों की झाड़ियों के इर्द-गिर्द होता है।

टिटहरी इस घोंसले में प्रजनन काल में ३ से ४ अंडे देती है। इस पक्षी के अंडे पत्थरी या सलेटी रंग के होते हैं, जिन पर काली-कत्थई चित्तियां होती हैं। नर-मादा मिलकर घरेलू कर्त्तव्य निभाते हैं।

❋ **मुर्गी -** रंगों की पहचान में मुर्गी माहिर होती हैं। मुर्गियां इन्द्रधनुष के सभी रंगों को पहचान सकती हैं।

❋ दुनिया में मुर्गी बहुतायत में मिलती है।

❋ **मुर्गा -** भारत के प्रायद्वीपीय हिस्से में एक ऐसा भी मुर्गा पाया जाता है, जो भूरे रंग का होता है। इसकी गर्दन लम्बी होती है और यह अपने मांस के लिए जाना जाता है। एक मुर्गे के शरीर में ७५ प्रतिशत पानी होता है।

❋ **पतरिंगा -** इसका आकार गौरेया के बराबर होता है। यह चटक हरे रंग का दुर्बलकाय पक्षी है। इसका मुख्य आहार कीट है। यह आकाश में मँडराते रहकर, या किसी वृक्ष की छाल से तीव्र गति से सीधे उड़कर, कीटों को पकड़ता है। इसकी बोली मीठी हाती है, जो उड़ान के समय सतत उच्चारित होती है। यह वनों, बागों, बस्तियों तथा ऊजड़ मैदानों में भी पाया जाता है।

❋ **बसंता-** इसका आकार, गौरेया से थोड़ा बड़ा होता है। इसका रंग घास सा हरा होता है। यह सारे भारत के मैदानी भागों तथा हिमालय में २५०० फुट की ऊंचाई तक पाया जाता है। यह पक्षी ठठेरे की तरह ठुक ठुक का शब्द दिनभर करता रहता है।

❋ **गोरैया -** गौरैया की अधिकतम उम्र का रिकार्ड २३ वर्ष का है। नन्ही चिड़िया को तेज गर्मी में भी पसीना नहीं आता है। खाने में गौरेया को घास के बीज काफी पसंद होते हैं, जो शहरों की अपेक्षा गांवों में अधिक मिलते हैं।

❋ **मुनिया -** मुनिया का आकार गौरेया से कुछ छोटा होता है। यह छोटे छोटे झुंडों में घास के बीच खाने निकलती है। खेतों में भूमि पर गिरे बीजों को खाती है। मंद मंद कलरव करती है। यह छोटी झाड़ियों या वृक्षों में ५-१० फुंट की ऊंचाई पर घोसला बनाती है। इसकी चार पाँच उपजातियाँ हैं: श्वेतपृष्ठ मुनिया, श्वेतकंठ मुनिया, कृष्णसिर मुनिया, बिंदुकित मुनिया तथा लाल मुनिया।

❋ **तोता (हरियल) -** पक्षियों में केवल तोता ही जम्हाई लेता है। इसकी उड़ने की गति ५० कि.मी. प्रति घंटा है।

❋ पालतू तोते वह सब खाते हैं जो मनुष्य खाता है, केवल चॉकलेट छोड़कर। चॉकलेट में पाया जानेवाला तत्व तोते में टॉक्सिन बढ़ा देता है और वह बेहोश तक हो सकता है।

❋ उत्तर-प्रदेश का हरियल तोता धरती पर नहीं बैठता। प्रूडल नामक अमेरिकन तोता विश्व का सर्वाधिक बातूनी पक्षी माना गया है।

❋ तोतों तथा बोलनेवाले अन्य पक्षियों को उनके द्वारा बोले शब्दों का अर्थ नहीं मालूम होता। कुछ जीव विज्ञानी मानते

हैं कि तोते इसलिए बोलते हैं क्योंकि उनकी आवाज का रचना तंत्र तथा श्रवण अन्य पक्षियों के मुकाबले धीमा कार्य करता है और चूंकि मनुष्य की आवाज तोते से मिलती है, इसलिए उन्हें उसकी नकल करना काफी आसान हो जाता है। तोते खुद को रहने की किसी भी परिस्थितियों के अनुसार ढाल लेते हैं। हालांकि यह एक उष्ण कटिबंधीय पक्षी है, लेकिन यह ठंडी जलवायु में भी रह सकता है। खाते समय तोते अपने पांवों का इस्तेमाल लगभग हाथों की ही तरह करते हैं।

* विश्वभर में तोते की ३२८ प्रजातियां पायी जाती हैं। चॉकलेट तोते के लिए जहर समान होती है।

* कुछ लोगों का मानना है कि तोते जो बोलते हैं वे उसे समझते भी हैं परन्तु जंतु वैज्ञानिकों के अनुसार तोते का दिमाग इतना विकसित नहीं है कि वह अपनरे विचारों को प्रकट कर सके। वे सिर्फ उस आवाज की नकल करते हैं जो वे सुनते हैं।

* हरे रंग का यह पक्षी देखने में जितना सुंदर है, दिमाग से भी उतना ही तेज है। पक्षियों में सबसे बुद्धिमानों में इसकी गिनती होती है। इसका नाम है तोता। यह एक ऐसा जीव है, जो झट से इंसानी बातों को नकल कर लेता है यानी यह किसी की भी नकल हू-ब-हू निकाल सकता है। यह झुंड में रहना पसंद करता है। तोता हमेशा नई चीजों को सीखने के लिए उत्सुक रहता है।

* **हरियल-** इसका आकार कबूतर के बराबर होता है। इसका शरीर पुष्ट, पीले, हलके भूरे, भस्मीय धूसर रंग का होता है तथा स्कंध पर दूधिया धब्बा होता है। इसके कलछौंह पंख पर पीले रंग की खड़े रूप की प्रमुख पट्टियाँ होती हैं। यह बाग बगीचों में झुंड में रहता है और विशेषतया पीपल तथा बरगद के गोदे (फल) खाता है।

* हरियल पक्षी (भारत) ऐसा है, जो जमीन पर पैर नहीं रखता।

* **फुदकी चिड़िया (दर्जिंग) - फुदकी** पक्षियों में फुदकी चिड़िया का दिल सबसे विशाल होता है। दर्जिन चिड़िया या फुदकी यह निरंतर फुदकती रहनेवाली छोटी चिड़िया है, जो झाड़ियों में निवास करती है। यह छोटे-छोटे कीड़े मकोड़े उनके अंडों या लावों पर जीवनयापन करती है। फुदकी अप्रैल से सितंबर के बीच तीन फुट से कम की ऊंचाई पर छोटा प्यालानुमा घोंसला बनाती है। यह तीन या चार अंडे देती है, जो ललछौंह या नीले-सफेद और भूरे-लाल धब्बेदार होते हैं।

* **महोखा या कुक्कुम -** इसका आकार काले कौए (वनकाक) के बराबर होता है और रंग चमकीला काला होता है। यह पक्षी सारे भारत में पाया जाता है। हिमालय में भी यह ६००० फुट की ऊचाई पर पाया जाता है। यह खुले भाग के मैदान तथा पहाड़ी भागों का पक्षी है और ऊक शब्द थोड़े थोड़े समय पर उच्चारित करता है। यह एक दूसरा शब्द कूप कूप आदि जल्दी जल्दी उच्चारित करता है, जो प्रति सेकंड दो या तीन कूप के हिसाब से ६ से २० बार तक सुनाई पड़ता है। इसका आहार टिड्डे, भुजंगे, लावां, जंगली चूहे, बिच्छू, गिरगिट, सांप आदि हैं।

* **नीलकंठ -** शकुनकारी पक्षी नीलकंठ - यह पक्षी सिर पर आकर्षक पीली-नीली और निम्न भाग भूरे रंग की चकाचौंध कर देनेवाली आभा लिए केवल दशहरे के आस-पास ही दिखायी देता है। यह जाति अपनी अन्य कुछ जातियों के समान बलूचिस्तान और अफगानिस्तान की घाटियों और कश्मीर के प्रजनन स्थलों से लेकर पूर्वी अफ्रीका तक स्थानांतरण करती है। कश्मीरी नीलकंठ मध्य-पूर्व यूरोप से लेकर तुर्की और ईरान से मध्य एशिया तक गरमी में प्रजनन भ्रमणार्थी है। उधर से हर वसंत ऋतु में नीलकंठ दक्षिणी पंजाब, हरियाणा, राजस्थान से गुजरात और अरब सागर को पार करता हुआ पूर्वी अफ्रीका पहुंचता है वह जहां ठंड का मौसम गुजारता है। गरमी में बसेरे के लिए वापसी यात्रा मार्च

और अप्रैल के बीच होती है जो नील नदी को पार कर लाल सागर से होते हुए सम्पन्न होती है। भारत में इस पक्षी को दशहरा नीलकंठ के नाम से भी जानते है।

कबूतर के आकार का किंतु काफी छरहरा, नीलकंठ शहर के बाहर टेलीग्राफ या इलेक्ट्रिक के खंभों पर तारों का मचान के रूप में उपयोग करता है। खासकर ज्वार और बाजरे के खेतों में और संरक्षित घास स्थलों पर और साथ ही नदी किनारे के कंटीली झाड़ियों वाले क्षेत्र में छोटे वृक्षों की पतली शाखाओं पर ये काफी संख्या में एक साथ बैठे देखे जा सकते है। कच्छ इस पक्षी को देखने का एक आदर्शस्थल है। इस पक्षी को पसंद आए ऐसी वनस्पति को संरक्षित करनेवाले हिंगोलगढ़ शिक्षा अभयारण्य का जब भ्रमण करते हैं तो यह देखने में आता है। इलैक्ट्रिक लाइन भी इस क्षेत्र से होकर गुजरती है जो इस पक्षी को उपयोग करने लायक सुविधाजनक मचान प्रदान करती है। नीलकंठ की उड़ान उल्लसित और लम्बी दूरी तक थकान न पैदा करनेवाली होती है। इनमें से अधिकांश उड़ते हुए कीटों को पकड़ते और खाते हुए दिखाई देते हैं। ये टिड्डे और उसकी जाति के अन्य कीटों, छोटी छिपकली आदि को बड़े चाव से खाते हैं। जहां कहीं भी उड़ने लायक स्थिति होती है ये अपनी यात्रा जारी रखते हैं।

कश्मीर घाटी में नीलकंठ अपना घोंसला प्राचीन वृक्षों की खोह में और साथ-साथ बड़ी और पुरानी इमारतों के खांचों में और चट्टानों की दरारों में बनाते हैं। इस समय इसके प्रचलित नाम और वैज्ञानिक नाम में काफी समय देखने को मिलता है। इस पक्षी का प्रदर्शन आस-पास उड़कर, एक ओर से दूसरी ओर लुढ़क कर, करतब करते हुए, हवा में आकर्षक कलाबाजी दिखाते हुए, डाई मारते हुए और अपने नीले पंखों और पूंछ को फड़फते हुए होता है। इस दौरान ये बहुत कर्कश शोर मचाते हैं। इस अवस्था में इन्हें देखकर ऐसा प्रतीत होता है जैसे ये बिल्कुल पागल हो गये हैं। ऐसे में इन्हें यदि वाचाल नीलकंठ कहा जाये तो कोई आश्चर्य नहीं। भारतीय नीलकंठ देखने में अवर्णित और अतुलनीय होता है और शानदार नीले पंख और पूंछ लिए होता है जो उड़ने पर चकाचौंध पैदा कर देनेवाली होती है। मार्च से लेकर वर्षा के शुरू होने तक यह अपने शोरयुक्त प्रदर्शन के कारण आकर्षक बन जाता है।

भारत के हिमालयी क्षेत्र में नीलकंठ की एक ओर जाति पायी जाती है जिसे हिमालयी या लेपचा भाषा में टाक रेल वॉग कहा जाता है। जो इसके वंश नाम की ओर इंगित करता है। यह अन्य दो जातियों से अधिक संबंधित नहीं है और जैसा कि इसके विशेष नाम से ही दिखाई देता है यह पूर्वी देशों का पक्षी है। यह जंगली नीलकंठ हिमालय के निम्न पर्वतीय जंगलों से लेकर ब्रह्मपुत्र के दक्षिण में और म्यांमार के सीमावर्ती व गोवा के पश्चिमी घाट के भारी वर्षा वाले वनों में देखा जा सकता है। दुर्भाग्य से सारे कच्छ, सौराष्ट्र, बनासकांठा और साबरकांठा तथा समान रूप से भाल के बड़े जंगली क्षेत्रों में बिना सोचे-समझे विदेशी बबूल को रोपे जाने से इस दशहरा पक्षी के प्राकृतिक आवासों को भारी खतरा पैदा हो गया है। आनेवाले वर्षों में ऐसे भाग्यशाली पक्षी देखनेवाले बहुत कम होंगे।

❋ इसका आकार मैना के बराबर होता है। इसकी चोंच भारी होती है, वक्षस्थल लाल भूरा, उदर तथा पुच्छक अधोतल नीला होता है। पंख पर गहरे और धूमिल नीले रंग के भाग उड़ानके समय चमकीली पट्टियों के रूप में दिखाई पड़ते हैं। त्रावणकोर के दक्षिण भाग को छोड़कर शेष भारत में यह पक्षी पाया जाता है। इसकी दूसरी जाति कश्मीरी चाष है। यह पवित्र पक्षी माना जाता है। दशहरा पर लोग इसका दर्शन करने के लिये बहुत लालायित रहते हैं।

❊ **फ्लाय केचर** -मध्य भारत, नीलगिरी और पालनी की पहाडियों में काले-नारंगी रंग का फ्लाई कैचर पाया जाता है।

❊ पैराडाइज फ्लाईकैचर छोटे पक्षियों की श्रेणी में आनेवाली खूबसूरत प्राणी है। इसे देश के कई अलग-अलग हिस्सों में दूधराज और शाह बुलबुल के नाम से भी जाना जाता है।

फ्लाईकैचर का शारीरिक हिस्सा हूबहू बुलबुल जैसा होता है। जहां नर पैराडाइज फ्लाईकैचर का रंग चांदी सा बेहद उजला होता है। इसके सिर पर काले रंग की कलगी होती है और दो लंबे रिबन जैसे पूंछ के पंख होते हैं। इसकी पूंछ उड़ान के समय इनके शरीर का संतुलन बनाने में मददगार साबित होती है। तो वहीं मादा पैराडाइज फ्लाईकैचर के शरीर का रंग हलके लाल-भूरे रंग का होता है, इसके नीचे का धड़ मटमैला-सफेद होता है।

पूरे भारत में पाया जानेवाला यह पक्षी आबादी के आसपास छायादार घने पेड़ोंवाले बागों, जंगलों में दिखाई देता है। ज्यादातर यह पक्षी जोड़े से रहता है। इसका घोंसला पूरी तरह घास और रेशों से बुना हुआ कपनुमा होता है। जिसमें यह बाहर से जालों जैसा प्लास्टर सा लगा देती है, जो दो से चार मीटर ऊंची मजबूत टहनी पर टंगा रहता है।

फ्लाईकैचर मच्छर, मक्खियां, कीट-पतंगे और कीड़े मकोड़े आदि को खाना पसंद करती है। इसकी आवाज कर्कश होती है। जीव विज्ञानियों के अनुसार इसका प्रजननकाल फरवरी से जुलाई माह में होता है।

यह चिड़िया एक बार में तीन से चार अंडे तक देती है जो कि पीलापन लिए गुलाबी रंग के होते हैं जिस पर लाल-भूरे धब्बे भी होते हैं। नर और मादा दोनों मिलकर अंडे सेने से लेकर बच्चे निकलने तक साथ-साथ रहते हैं।

❊ **अबाबील** - अबाबील नामक छोटी चिड़िया के घोंसलों में अंडों से बारिश का अनुमान लगाया जा सकता है। यदि उसके घोंसले में सात अंडे हो तो मतलब बारिश औसत से अधिक होगी, यदि घोंसले में पांच अंडे हो तो सामान्य बारिश व तीन हो तो सामान्य से कम। अगर घोसले में तीन से कम अंडे हो तो समझ लीजिए कि सूखे का खतरा मंडरा रहा है।

❊ इसका आकार घरेलू गौरेया के बराबर होता है। यह जल के निकटवाले स्थानों में झुंडों में रहती है। यूरोप तथा भारत में समान रूप से ही यह मिट्टी के लोंदों से अपना घोंसला बनाती है तथा उसमें परों का नरम स्तर भली भाँति देती है। यह किसी सुविधाजनक, आगे निकले हुए चट्टानी खंड, बरामदों के बाहर निकले भाग, या मकानों के अंदर ही अपने घोंसले बना लेती है। इसका घोंसला छिछले प्याले की तरह ऊपर से खुले मुख का होता है। यह शीत ऋतु में मैदानी भागों में श्रीलंका तक फैल जाती है। इसका रंग काला तथा गरदन के नीचे सफेद रहता है। यह प्राय: गोलाई में, तेजी से मँडराया करती है। सामान्य मांडीक (अबाबील), भारतीय रज्जपुच्छ मांडीक, चीनी रेखित मांडीक तथा भारतीय रेखित मांडीक, इसकी उपजातियां हैं।

❊ **उड़न गिलहरी** - उप्र के जंगलों में उड़ जानेवाला जीव दिखा। वह है उड़नेवाली गिलहरी। यह गिलहरी भारत के उत्तरी-पूर्वी इलाके में पायी जाती है और इसकी प्रजाति संकटग्रस्त होने के कगार पर है। यह दक्षिण भारत के पश्चिमी घाट पर नीलगिरी पहाड़ियों में भी पायी जाती है।

❊ **गुलिन्दा** - कई पक्षियों के नाम से उनकी मुख्य आदतों का पता लगता है। कुछ पक्षियों के नाम उनके रंग-रूप के आधार पर रखे जाते हैं। जिन पक्षियों की बोली प्रसिद्ध है, उनके नाम का आधार उनकी बोली है। इसी श्रेणी का उदाहरण गुलिन्दा है। गुलिन्दा हर समय और हर मूड के लिए अलग स्वर निकाल सकता है।

गुलिन्दा सामान्यत: दलदली क्षेत्र और सूखे टीलों वाले इलाकों में मिलता है। इसका ऊपरी रंग भूरा धारीदार, सफेद, पुट्ठे और दुम पर गाढ़े रंग की धारियां होती हैं। टांगें लंबी और हरे-सलेटी रंग की होती हैं। इसकी चोंच पांच-छ: इंच लंबी और नीचे की तरफ मुड़ी रहती है। यह पक्षी नदी के मुहाने या नदी में पाए जानेवाले सूखे टीलों पर रहता है और अपनी चोंच की सहायता से खाने के लिए घोंघे आदि की खोज करता है। शरद ऋतु में जाकर केंचुए और कीड़े-मकौड़े खाता है। गुलिन्दा को दलदली चरागाह और खेत अधिक अच्छे लगते हैं, क्योंकि यहां रहने से इसे खाने-पीने की अधिक सुविधा रहती है। यह पक्षी बहुत चंचल होता है, क्योंकि अपना घोंसला कभी एक स्थान पर दो बार नहीं बनाता।

❊ **भुजंगा -** भुजंगा- यह पतली, फुर्ल्ली और चमकीली काली चिड़िया हैं। इसकी दुम लंबी और अंतिम सिरे पर दो भागों में बंटी होती है। यह नगर के समीप खुले मैदानों में रहती है। यह सारे भारत में पाई जाती है। इसकी चार उपजातियाँ हैं। यह कीड़े मकोड़े पर जीवन निर्वाह करती है। प्राय: टेलीग्राफ के तारों पर बैठी दिखाई भी पड़ती है या मवेशियों की पीठ पर बैठकर कीड़े आदि का शिकार करती है।

❊ **बत्तख-** ठंडे पानी में तैरते समय भी बत्तख ठंड का अनुभव नहीं करती, क्योंकि उसके पैरों में रक्त और तंत्र वाहिकाएं होती ही नहीं हैं। कुछ बत्तखें एक दिन में ५३२ किलोमीटर तक लगातार उड़ सकती हैं।

❊ कोई भी बत्तख बिना सिर हिलाए नहीं चल सकती।

❊ **सारस -** सारस पक्षी अपने साथी के वियोग में प्राण त्याग देता है।

❊ सारस आंखें बंद किये घंटों एक पैर पर खड़ा रह सकता है। यही नहीं, खड़े-खड़े ही वह सो भी लेता है। दरअसल, सारस के पूरे शरीर पर पंख होते हैं, लेकिन पैरों पर एक भी बाल या पंख नहीं होता, जबकि बाल या पंख पक्षियों के शरीर को गर्मी को बचाये रखने का काम करते हैं। वे गर्मी को शरीर के भीतर ही रोके रखते हैं, बाहर नहीं आने देते। चूंकि पैरों पर पंख नहीं होते, इसलिए उनके माध्यम से इसके शरीर की गर्मी बाहर निकलती रहती है। इस गर्मी को बचाये रखने के लिए ही सारस एक पैर के सहारे खड़ा होता है।

अगर वह दोनों पैर जमीन पर टिकायेगा, तो शरीर की ज्यादा गर्मी बाहर निकलेगी और ऐसे में उसे ठंड भी लग सकती है। इसलिए वह एक पैर के सहारे पूरी-पूरी रात खड़ा रहता है। इस दौरान उसे एक क्षण के लिए भी परेशानी नहीं होती।

❊ **फ्लेमिंगो -** समय के साथ रंग बदलते हैं फ्लेमिंगो - आप अगर समुद्र के किसी अन्य पक्षी को देखें तो पाएंगे ज्यादातर सफेद या फिर भूरे रंग का मिलेगा लेकिन फ्लेमिंगों का रंग उसे सबसे अलग बनाता है। अन्य समुद्री पक्षी जैसे कि गल्स के पास ऐसे भव्य रंगीन पंख नहीं हैं। लेकिन एक समानता इनमें जरूर पाई जाती है। अन्य पक्षी भी फ्लेमिंगो की तरह ही समान वातावरण में पले-बढ़े होते हैं। इसके बावजूद उनके पंख हमेशा ग्रे और सफेद होते हैं। उनके पंख का रंग उनके आहार से जुड़ा है, फ्लेमिंगो जन्मजात गुलाबी नहीं होते। फ्लेमिंगो पक्षी के पंखों के बारे में सबसे आश्चर्यजनक चीजों में से एक यह है कि वे समय के साथ गुलाबी होते हैं। ये पक्षी बड़े होते हैं। वास्तव में, ये ग्रे पंखों के साथ पैदा होते हैं। शुरुआत में अन्य समुद्री पक्षी के साथ इनकी तुलना करना मुश्किल होता है लेकिन जब ये बड़े होते हैं तो इनके पंखों का रंग बदलने लगता है और ये बेहद आकर्षक और विशिष्ट दिखने लगते हैं।

फ्लेमिंगो सी-गल की ही तरह आहार में मछली, कीड़े, कचरा, फ्राइज, बीज आदि खाते हैं लेकिन वास्तव में फ्लेमिंगो

बहुत अधिक चयनात्मक ढंग से अपना आहार लेते हैं। फ्लेमिंगो जल जीवों, ज्यादातर शैवाल और झींगा खाना पसंद करते हैं। लेकिन यह उनके पंख के रंग को प्रभावित क्यों करेगा? यह ऐसा होता है कि झींगा और शैवाल सभी रंगों में उच्च होते हैं जिन्हें कैरोटीनॉयल कहा जाता है। ये कोई संयोग नहीं है कि जब हम झींगा को उबाल दें तो वे गुलाबी रंग के हो जाते हैं। इसलिए ये कह सकते हैं कि फ्लेमिंगो आहार में मुख्य रूप से कैरोटीनॉइड पदार्थों को सबसे ज्यादा लेते हैं, इसलिए वे गुलाबी हो जाते हैं।

अगर आपको अपनी त्वचा फ्लेमिंगो की तरह गुलाबी चाहिए तो आप ये खाद्य पदार्थ खा सकते हैं क्योंकि इनमें कैरोटीनोइड पाया जाता है। गाजर, खुबानी, स्क्वाश, मीठे आलू, आम।

✻ **बगुला -** बगुले की भांति अपनी इंद्रियों को संयम कर देश, काल और बल को समझ कर सभी कार्य करें।

✻ रात्रि बगुला (नाइट हीरॉन) अपना अधिकांश भोजन रात ही में करता है।

✻ बगुला देखने में अत्यंत सुंदर दूधिया रंग का पक्षी है। बगुला अपनी लंबी टांगों पर खड़ा होकर नुकीली चोंच व पैनी आंखों से शिकार करता है। यह अधिकांशत: दलदल में ही मछली पकड़ता है और झट निगल जाता है। बगुला खेतों के लिए उपयोगी प्राणी है। यह खेतों के आसपास प्रतिदिन हजारों टन कीड़े-मकोड़े खाकर फसलों को सुरक्षित रखते हैं। इस प्रकार ये किसान के सच्चे मित्र हैं।

जब कभी बगुला को सैर-सपाटा करने की इच्छा होती है तो ये पशुओं की पीठ पर बैठ जाते हैं। पशु भी कोई आपत्ति नहीं करते हैं क्योंकि बगुले पशुओं के शरीर पर चिपके परजीवी कीड़ों को चुन-चुनकर खा जाते हैं। इससे पशुओं को राहत पहुंचती है। बगुलों की तीन जातियां पायी जाती हैं। सबसे बड़ा गाय बगुला या सुरखिया कहलाता है। दूसरी जाति मलंग व तीसरी जाति करदिया नाम से पुकारी जाती है। इन तीनों जातियों के बगुले लगभग समान लगते हैं। सुरखिया जाति के बगुले पीली चोंच के होते हैं। शेष जातियों के बगुलों की चोच काले रंग की होती है।

बगुले अपना घोसला प्राय: इमली के पेड़ पर बनाते हैं। ये घोसले के निर्माण में अन्य पेड़ों की पत्तियों व टहनियों का प्रयोग करते हैं। बगुले के सुंदर पंख बेहद आकर्षक होते हैं। एक बार इनके पंखों की टोपियां यूरोप में इतनी प्रसिद्ध हुईं की बगुलों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया था। बगुले भोजन की तलाश में दूर तक उड़ते हैं लेकिन शाम को पुन: अपने घोसले में लौट जाते हैं। आसमान में उड़ते समय बगुले मनमोहक लगते हैं।

✻ **पेंग्विन -** पेंग्विन पक्षी अपने पंखों का प्रयोग उड़ने के लिए नहीं, तैरने के लिए करता है।

✻ पेंग्विन पिता अपने अंडों की रक्षा के लिए अंटाकर्टिका की भरी ठंड में ६० दिनों तक भूखा खड़ा रहता है। अंडे उसके पैर पर होते हैं और ऊपर से ढंके होते हैं।

✻ पेंग्विन एकमात्र पक्षी है जो तैर सकता है पर उड़ नहीं सकता।

✻ समुद्री जीव एम्परर पेंग्विन ८७० फीट तक गहरा गोता लगा सकता है और लगभग १८ मिनट तक पानी के अंदर रह लेता है।

✻ मैक्यूरी द्वीप। हरे-भरे पेड़ पौधों से घिरा ऑस्ट्रेलिया का मैक्यूरी द्वीप इन दिनों पेंग्विनों के लिए जन्नत बना हुआ है। इस द्वीप पर करीब ४० लाख से अधिक पेंग्विन मौजूद हैं। पेंग्विनों की इतनी बड़ी संख्या के कारण ये द्वीप पेंग्विनों से

लगभग ढंक चुका है। २० वीं शताब्दी से ही पेंग्विन तेजी से विलुप्त होते पक्षियों की श्रेणी में है। ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड में यह संरक्षित प्रजातियों में शामिल है। वन्य जीवन संरक्षण के प्रयासों के तहत पेंग्विनों की संख्या में बढ़ोत्तरी होने की उम्मीद भी बनी हुई है।

पेंगुइन- नहीं उड़ पाने वाला एक और पक्षी है पेंगुइन। पेंगुइन अंटार्कटिका महाद्वीप में पाया जाता है। पेंगुइन बहुत कुशल तैराक होते हैं। २५ मील प्रति घंटे की रफ्तार से ये दौड़ भी सकते हैं। आमतौर पर इनकी ऊंचाई लगभग १२५ सेंटीमीटर होती है, वजन ४० किलो तक। अपने मनपसंद भोजन की तलाश में यह समुंदर के अंदर २६० मीटर तक गहरी डुबकी लगा लेता है। गेंतू पेंग्विन- गेंतू पेंग्विन दक्षिणी गोलार्द्ध में अंटार्कटिक क्षेत्रों पर पाये जाते हैं। ये हिमाच्छादित द्वीप में बड़ी-बड़ी कालोनियों में रहते हैं जहां तापमान सदैव शून्य से नीचे रहता है। बच्चे को जन्म देने के मौसम में मादा पेंग्विन दो अंडे देती है जिन्हें नर व मादा ७२ दिनों तक बारी बारी से सेती है और इसके बाद बच्चे निकलते हैं। जब नर अंडों को सेता है तो मादा समुद्र में भोजन की तलाश में जाती है और जब मादा अंडों को सेती है तो नर भोजन की तलाश में जाता है। समुद्र तट पर इनकी चाल बड़ी बेतुकी होती है। पक्षी होने के बावजूद ये उड़ नहीं सकते लेकिन ये माहिर तैराक होते हैं। पानी के ऊपर संक्षिप्त छलांग लगाते हुए ये चालीस किलोमीटर प्रति घंटा की गति से तैर सकते हैं। यह रफ्तार वे अपने मजबूत पंखों की सहायता से प्राप्त करते हैं। ये चप्पू की तरह इस्तेमाल करते हैं। ये मछलियां तथा अन्य छोटे-मोटे जल जंतुओं को अपना आहार बनाते हैं।

❋ **चमगादड़ -** यह स्तनपायी जीव है। अंधेरों में उड़नेवाले चमगादड़ों को चांदनी रात रास नहीं आती। अगर बाहर चांदनी हो तो चमगादड़ डरते हैं। अंधकार में रहनेवाले चमगादड़ों की तुलना में चांदनी वाले इलाकों में रहनेवाले चमगादड़ों की गतिविधियां कम हो जाती हैं। इसका कारण शायद यह हो सकता है कि जहां चांदनी होती है, वहां रोशनी ज्यादा रहती है और ऐसे में चमगादड़ आसानी से दूसरे पशु-पक्षियों का शिकार बन सकते हैं। इसे लूनर फोबिया भी कहा जाता है। प्रजातियां जो पानी के आस-पास रहती हैं और जंगलों की छाया में रहती हैं, उनमें लूनर फोबिया कहीं ज्यादा होता है।

❋ चमगादड़ एकमात्र ऐसा स्तनधारी जीव है जिसे प्रकृति ने खुद उड़ने लायक बनाया है।

❋ चमगादड़ अंधेरे में भी देख लेते हैं। इसमें वे राडार प्रणाली से काम चलाते हैं। चमगादड़ ऐसी नन्हीं चीखें निकालता है, जिसे हम-तुम नहीं सुन सकते, जो किसी अवरोध या रास्ते की वस्तु से टकराकर तुरंत उसके पास लौटती है और उसकी तेजी से ही चमगादड़ अंधेरे में ही अंदाज लगा लेता है कि रास्ते की रुकावट क्या, कहां और कैसी है और उससे बचकर उड़ता जाता है।

❋ चमगादड़ रोजाना करीब १९.९ घंटे की नींद लेते हैं।

❋ चमगादड़ अल्ट्रा साऊंड की मदद से शिकार को ढूंढते व आक्रमण करते हैं। कुछ पतंगे इसलिए रात के वक्त शिकारी चमगादड़ों से बचने के लिए उच्च आवृत्ति वाले अल्ट्रासाऊंड निकालकर उन्हें धोखा देते हैं।

❋ चमगादड़ आसमान में उड़ सकते हैं, यही कारण है कि अक्सर लोग उन्हें पक्षी समझने की गलती कर बैठते हैं। वस्तव में चमगादड़ के शरीर पर पाए जानेवाले फर उनके पंख नहीं होते हैं। न ही इनमें पक्षियों के समान चोंच होती है और

न ही वे अंडे देते हैं। चमगादड़ के दांत होते हैं। यह बच्चों को जन्म देते हैं अत: स्तनधारी वर्ग के सदस्य कहलाते हैं।

पंखों के समान दिखाई देनेवाली संरचनाएं वास्तव में चमगादड़ की अंगुलियों के बीच की त्वचा होती है, जो फैल जाती है। मनुष्य और चमगादड़ में समान संख्या में अंगुलियां पाई जाती हैं। जिस प्रकार मनुष्य की अंगुलियों पर त्वचा का आवरण होता है ठीक उसी प्रकार चमगादड़ की अंगुलियों की हड्डियों के ऊपर त्वचा का आवरण होता है, यही त्वचा फैलकर पंखों के समान प्रतीत होती है। चमगादड़ की त्वचा में स्तनधारियों के समान स्वेद ग्रंथियां भी पाई जाती हैं।

चमगादड़ के कान उसके लिए बड़े उपयोगी होते हैं। अगर उन्हें बंद कर दिया जाए तो चमगादड़ किसी काम का नहीं रह जाता। यह परेशानी उसे तब नहीं होती, जब उसकी आंखें काम करना बंद कर देती हैं। चमगादड़ अल्ट्रासॉनिक ध्वनियां छोड़ता है और यही ध्वनियां रास्ते में आनेवाली बाधा से टकराकर दोबारा वापस आ जाती है। इससे चमगादड़ अपना रास्ता तय करता है। समुद्र की कुछ मछलियां भी इसी तरह के संकेतों के आधार पर रास्ता तय करती हैं। इसके अलावा जन्म से नेत्रहीन कुछ लोग भी अपने भीतर की प्रतिध्वनियों द्वारा रास्ता निर्धारित करते हैं। चमगादड़ अपने गले से लगातार ध्वनि उत्पन्न करते हुए आगे बढ़ता है। इसी दौरान वह अपने शिकार का पता लगा लेता हैं फिर पलक झपकते ही अपनी छिल्लीदार पूंछ को गोलाकार बनाकर शिकार को लपेट लेता है और मुंह में डाल लेता है।

चमगादड़ अपने गले की नन्हीं नली द्वारा लगभग २०० संकेत प्रति सेकेण्ड की गति से ध्वनि उत्पन्न करता है। ये संकेत मार्ग में आयी बाधाओं से टकराकर तैरते रहते हैं। इन्हें वह अपने बड़े-बड़े कानों द्वारा लौटती हुई प्रतिध्वनि के रूप में ग्रहण करता है और तुरंत उसका दिमाग रास्ता तलाशता है। चमगादड़ का यह संकेत रेडियो प्रसारण की तरह होता है। आरंभिक अवस्था में संकेत प्रसारण की गति एक लाख चक्र प्रति सेकेण्ड तक होती है जिन्हें वह बहुत ही जल्दी ४० हजार चक्र प्रति सेकण्ड तक ले आता है। जैसे-जैसे वह लक्ष्य के करीब आता है, संकेत की गति ३० हजार और २० हजार प्रति सेकेण्ड तक आ जाती है।

इस ध्वनि से उत्पन्न बेहद सूक्ष्म आवाज मनुष्य के कानों को भी सुनायी देती है। दिशा निश्चित करने के लिए चमगादड़ लौटी हुई प्रतिध्वनि को अपने दोनों कानों से ग्रहण करता है। अगर उसका एक कान बंद कर दिया जाये तो वह रास्ते में आनेवाले बड़े खतरों का तो पता लगा लेगा, लेकिन अपने शिकार को पकड़ने में असमर्थ होगा।

❊ अधिकतर चमगादड़ कीट-पतंगों का भोजन करती हैं। ऊष्ण कटिबंधीय क्षेत्रों में चमगादड़ें फलों और फूलों पर निर्भर रहती हैं। कुछ अन्य किस्म की चमगादड़ें दूसरे जानवरों तथा पक्षियों का रक्त पीती हैं। उन्हें वैम्पायर वैट कहा जाता है।

चमगादड़ें पृथ्वी पर ६ करोड़ वर्ष से अस्तित्व में है। वे ध्रुवों को छोड़कर विश्व के प्रत्येक हिस्से में पाई जाती हैं। चमगादड़ों की कई प्रजातियां हैं। वैज्ञानिक अब तक २ हजार से अधिक किस्मों की चमगादड़ों का अध्यनन कर चुके हैं। यह एक विशिष्ट जीव है जो उड़ता तो है परन्तु उसे पक्षी नहीं माना जाता। चमगादड़ स्तनप्राणियों की श्रेणी में आते हैं। चमगादड़ एकमात्र स्तनपायी है जिसमें उड़ने के लिए पर (विंग्स) होते हैं और इनका फैलाव १५ सैंटीमीटर से २ मीटर तक हो सकता है।

चमगादड़ों से पराश्रव्य तरंगे निकलती हैं, जोकि बाधा से टकराकर पुन: उसके पास पहुंच जाती है और उन्हें आनेवाली

बाधा का पता चल जाता है और वह बाधा से बचकर उड़ पाता है।

चमगादड़ों की इस विशेषता के कारण ही आमतौर पर लोग चमगादड़ों से डरते हैं। वैम्पायर चमगादड़ों के दांत सुइयों जितने नुकीलें होते हैं। चमगादड़ की एक अन्य विशेषता भी है।

जब यह आराम की हालत में होती है तो यह अपनी टांगों से वृक्ष की शाखा को कसकर पकड़ कर अपना सिर नीचे की ओर लटकाकर झुलती है। इसके अंगों की बनावट कुछ ऐसी है कि यह सीधी खड़ी नहीं हो सकती। चमगादड़ की एक अन्य विशेषता है कि यह रात्रि के समय भी उड़ सकती है। रात को यह नजदीकी चीजों पर एक हाई पिच्ड साऊंड छोड़ती है। जिसकी गूंज को इसके बड़े-बड़े कान पकड़ लेते हैं जिससे इनको रास्ते में आनेवाली रुकावटों का पता चल जाता है। सबसे बड़ी चमगादड़ का नाम फ्लाइंग फॉक्स है जिसके शरीर की लम्बाई ४० सेंटीमीटर होती है। चमगादड़ों की उम्र लगभग २० वर्ष होती है। आमतौर पर सभी चमगादड़ें रात के समय ही सक्रिय होती हैं।

❋ चमगादड़ गुफा से निकलकर हमेशा बांई तरफ मुड़ती है।

❋ ऐसी छोटी नाकवाले चमगादड़ होते हैं, जिनका नाम मशहूर पक्षी-विज्ञानी सलीम अली के नाम पर रखा गया है। यह छोटी नाकवाली चमगादड़ दक्षिणी भारत के पश्चिमी घाट और तमिलनाडु में पायी जाती है। गांवों में बच्चे इनको चामचिर्र कहते हैं, जो घरों-पेड़ों पर भी चिपके मिल जाते हैं।

❋ चमगादड़ की नौ सौ प्रजातियां होती हैं और ये सभी उड़नेवाली होती हैं। वेम्पायर चमगादड़ के कम दांत होते हैं, इसलिए यह अपना भोजन चबा नहीं पाते। यह स्तनधारियों का खून पीकर रहते हैं। उड़ने के लिए इनको देखने की जरूरत नहीं पड़ती। ये आवाज के सहारे उड़ते हैं। अपनी मांद से निकलते ही ये बायीं तरफ घूमते हैं।

❋ बंबल बी चमगादड़ कितना छोटा - चमगादड यूं तो रात के प्राणी होते हैं और हमें दिन में दिखाई देते हैं। इसलिए हमें उनके रंग-रूप के बारे में सिर्फ पढ़कर ही पता चलता है। बंबल बी नाम का चमगादड़ सबसे छोटा जीव होता है और उसका वजन एक रुपए के सिक्के से भी कम होता है।

❋ चमगादड़ पक्षी नहीं अपितु पशु है। यह अपने बच्चों को दूध पिलाता है। खून पीनेवाला चमगादड़ वैम्पायर कहलाता है। यह मैक्सिको और दक्षिण अमेरिका में पाया जाता है। मात्र सात सेंटीमीटर लंबाईवाला यह चमगादड़ पहले तो जानवरों के शरीर में नुकीले दांतों से घाव बनाता है, फिर बहनेवाले खून को चाट-चाट कर पीता है।

हॉरर फिल्मों की पटकथा इसके बिना अधूरी होती है और यह गुमनाम अभिनेता इसके लिए एक भी नया पैसा नहीं लेता। ड्रैकुला से लेकर हिंदुस्तानी भूतिया कहानियों तक चमगादड़ के इर्द-गिर्द खूब किस्से बढ़े गये हैं, लेकिन इसकी एक प्रजाति को छोड़ कर कोई भी चमगादड़ खून नहीं पीता है और कई चमगादड़ तो फल-फूल खाकर पेड़ पर उल्टा लटके हुए जिंदगी गुजार देते हैं।

चमगादड़ इकलौता स्तनधारी प्राणी है, जो उड़ सकता है। इसके शरीर और भुजाओं के बीच फैली पतली इलास्टिक झिल्ली दरअसल त्वचा का ही एक स्वरूप है।

चमगादड़ की निगाहें कमजोर होती हैं, लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि यह रात्रिचर प्राणी तुमसे टकरा जायेगा। घोर अंधकार में भी चमगादड़ के किसी चीज से टक्कर खाने की संभावना होती है मात्र जीरो प्रतिशत।

उड़ते समय चमगादड़ के कान राडार की तरह काम करते हैं। उड़ान भरते समय यह लगातार आवाज निकालता रहता है। धीमी आवृत्तिवाली यह आवाज रास्ते में पड़नेवाली चीजों से टकराती है और ध्वनि तरंगों के विचलन से चमगादड़ समझ जाता है कि रास्ता साफ है अथवा नहीं।

मुख्यत: चमगादड़ दो प्रकार के होते हैं- फल खानेवाले (मेगाकाइरोप्टेरा)। और कीड़े-मकोड़े खानेवाले (माइक्रोकाइरोप्टेरा)। दुनिया का सबसे बड़ा चमगादड़ कैलांग पूरी तरह से फलाहारी है। फ्लाइंग फॉक्स की संज्ञावाले इस स्तनधारी की लंबाई ४० सेंटीमीटर तथा पंखों का फैलाव १५० सेंटीमीटर होता है।

अमेरिका के देहाती इलाकों में चमगादड़ को फ्लिटरमाउस भी कहा जाता है। दरअसल पहले ग्रामीणों का मानना था कि चमगादड़ और कुछ नहीं, चूहों की उड़नेवाली नस्ल होती है।

*** उड़न लोमड़ी -** उड़न लोमड़ी यह एक प्रकार का दुम विहीन बहुत बड़ा चमगादड़ है, जिसका सिर लोमड़ी जैसा प्रतीत होता है। डैनों का फैलाव लगभग एक या सवा मीटर होता है और शरीर की लंबाई २०-२५ सेंमी है तथा बाल काले होते हैं। यह लगभग सारे भारत में पाया जाता है।

*** बयां -** बया जिसे अंग्रेजी में प्लोसिअस फिलीपाइनन्स (लिनीअस) कहते हैं, घरेलू गौरेया के नर के आकार की चिड़िया है। इसकी पीठ के ऊपर भूरे-गेंहूए रंग की गहरी धारियां होती हैं तथा यह नीचे से सफेद गेंहूए रंग की होती है। यह बहुत ही चालाक तथा बहुसंगमनी चिड़िया है। इसके शंखरूपी छोटी तथा चौड़े सिरे वाली मजबूत दुम होती है।

बया को इंजीनियर बर्ड तथा वीवर बर्ड के नाम से भी जाना जाता है। खुले खेत-खलिहानों में फसलों के आसपास यह झुंड के रूप में रहती है। भारतीय संघ में यह सभी जगह पाई जाती है। इसके अतिरिक्त यह पाकिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका आदि देशों में भी पाई जाती है। आकार तथा रंगभेद के आधार पर इसकी तीन प्रजातियां हैं। पकी हुई धान की खड़ी फसल जैसे बाजरा, मक्का, ज्वार तथा अन्य प्रकार के अनाज खाने के लिए इनके झुंड के झुंड खेतों में पहुंच जाते हैं तथा फसलों को नुकसान भी पहुंचाते हैं। फसलों के साथ साथ यह कीट पतंगे भी खाती हैं।

खेतों तथा तालाब के किनारे सरकण्डों के आसपास काफी संख्या में यह पेड़ों पर बसेरा लेती हैं। मौसम के अनुरूप स्थानीय प्रवास भी करती हैं। बया धान तथा अन्य प्रकार के अनाज की खेती पर निर्भर करती हैं क्योंकि इन्हें वहां भोजन तथा घोंसले बनाने के लिए सामग्री आसानी से मिल जाती हैं।

बया हरे पेड़ जैसे बबूल, नीम, खेजड़े तथा बॉटल पाम ट्री के साथ-साथ सरकण्डों में भी अपना घोंसला डालती हैं। घोंसला डालने के लिए यह लम्बे रेशों वाली पत्तियों को चुनती है जैसे सरकण्डे, बाजरे आदि। हवा में फरफराकर उड़ते हुए पत्ती के ऊपरी किनारे को यह अपनी चोंच में पकड़कर काटते हुए इस प्रकार उड़ती है कि वह चिरती चली जाए तथा चिर कर एक लम्बे धागे का रूप ले लें। इन्हीं प्राकृतिक धागों को पेड़ की एक मजबूत टहनी पर लपेट कर यह घोंसला बनाती हैं। घोंसला बनाने के लिए यह सबसे पहले किसी टहनी के चारों तरफ प्राकृतिक धागे लपेटकर, एक आधार बनाते हुए तथा उससे लटकते हुए धागों को आड़ा जोड़ कर फंदे डालती हैं।

भारत में लगभग सभी जगह पाया जानेवाला पक्षी बया एक छोटा सा पक्षी है, जिसे तरह-तरह की आकृति के घोंसले बनाने में निपुणता हासिल है। बया छोटे, बड़े, बोल, लम्बे इत्यादि विभिन्न प्रकार के घोंसले बनाता है। इसका घोंसला

सबसे सुंदर और मजबूत होता है। यही कारण है कि इसे कलाकार पक्षी भी कहा जाता है। घोंसला बनाने का कार्य भी सिर्फ नर बया ही करता है, मादा नहीं। भूरे गेहुंए रेग का फ्लोसाइनी प्रजाति का यह पक्षी बरसात का मौसम शुरू होते ही अपना घोंसला बनाने की तैयारियों में जुट जाता है।

यह बया का प्रजनन काल होता है और इस दौरान बया की पूरी की पूरी टोली अपने-अपने घोंसले बनाने में जुट जाती है। बया का रंग भूरा गेहुंआ होता है, जिसके ऊपर गहरी धारियां होती हैं जबकि नीचे का हिस्सा सफेद गेहुंआ होता है। चौड़े सिरेवाली इसकी दुम बहुत मजबूत होती है। फिर उससे लटकते धागों या टहनियों को तिरछा जोड़कर फंदा सा बनाते हैं। इस प्रकार घोंसले का ढांचा तैयार होने के बाद फंदों के ऊपर एक दीवार बनाकर ये उसे चारों ओर से बंद कर देते हैं। घोंसला बुनने के लिए ये घास व ताड़ के पत्तों का इस्तेमाल करते हैं। घोंसले में नीचे की ओर दो कमरे भी बनाए जाते हैं। नीचे वाला कमरा अंड कक्ष होता है, जिसे ये बंद रखते हैं, जबकि इसके थोड़ा ऊपर एक और कमरा बनाया जाता है, जिसमें बाहर आने-जाने के लिए द्वार भी बनाया जाता है।

घोंसले के अंदर की बनावट ऐसी होती है कि इसके अंदर कोई अन्य पक्षी घुस ही नहीं सकता और अगर घुस भी जाएं तो वह आसानी से बाहर नहीं निकल सकता। घोंसले के निर्माण के दौरान जो मादाएं इससे दूर रहती थीं, वे घोंसला अंतिम चरण में होने पर इनमें आनी शुरू हो जाती है। मादाएं एक-एक कर इनके घोंसले में तो जाती हैं पर इन नरों की और कोई ध्यान नहीं देतीं। पहले ये इन घोंसलों का अच्छी तरह निरीक्षण कर कोई घोंसला पसंद करती हैं और फिर मादा को जो घोंसला पसंद आ जाता है।

❊ बया की नीड़-निर्माण कला को देखकर हम आश्चर्य करने लगते हैं, इसमें इतना कला निपुण। बया अपने घोंसले को जुलाहे की भांति ताना-बाना देकर, बुन-बुनकर बनाती है। इसलिए इसे जुलाहा पक्षी कहते हैं। देखने में यह ८० प्रतिशत गौरया की तरह होती है। इसके घोंसलों को हम शीघ्र ही पहचान लेते हैं। जब गांव के बाहर, खेतों में खड़े हुए ताड़ के लंबे पेड़ों या किसी जलायश के समीप बबूल के वृक्षों पर इसके दर्जनों तुम्बों की शक्ल-सूरत वाले घोंसलों पर नजर पड़ती है। यह इन्हें बड़ी मेहनत के साथ अप्रैल-मई के समाप्त होते ही बनाने में जुट जाती है।

सबसे पहले बया अपनी चोंच से सरपत, कला, बांस आदि की सीकों को चीरती है, फिर इनके कई टुकड़े करती है। तदुपरान्त इन टुकड़ों को रेशों में ताड़ के पत्ते या बबूल की टहनी के सिरे को जोड़ देती है। डोर की लंबाई पांच से बारह इंच तक की होती है। इसी डोर से नीचे की ओर लटकता हुआ इसका घोंसला होता है। यह नीचे की ओर गोल और ऊपर पतला होता है। इसका प्रवेश द्वार नीचे की तरफ होता है। घोंसले के दो भाग होते हैं। एक वह, जिसमें होकर बया बाहर से प्रवेश करती है। दूसरा वह जिसमें जरा ऊपर जाकर, वह फिर नीचे की ओर उतरती है। इस घोंसले में भी एक कोठरी होती है जिसमें मादा अण्डे देती है व सेती है। दूसरी बनावट की वजह से ही कोई भी पक्षी इसमें आसानी से प्रवेश नहीं कर पाता।

❊ घोंसला निर्माण में इस पक्षी की अनोखी प्रतिभा देखते ही बनती है। जुलाहे की भांति यह अपने घोंसले को बड़ी बारीकी से बुनता है। केले, बांस, ताड़ के पत्तों से रेशे तैयार करके फिर उन रेशों से घोंसले को बारीकी से बुनने में इस पक्षी का जवाब नहीं।

❊ पक्षी जगत के ऐसे ही विभिन्न पक्षियों में से एक है बया नामक पक्षी। यह पक्षी अपने आकार और शारीरिक बनावट में काफी छोटा होता है।

भारत में यह पक्षी उत्तर तथा पश्चिमी देशों में होते हैं। हिमालय के पूर्वी तथा बंगाल में भी इस पक्षी को देखा गया है। भारत के अलावा श्रीलंका, बर्मा आदि देशों में भी यह पक्षी पाया जाता है।

इस पक्षी की लंबाई ६-७ इंच तक होती है और यह देखने में गौरैया पक्षी की तरह लगता है। इसकी चोंच छोटी मगर मजबूत होती है। चोंच के ऊपरी ओर निचले जबड़े एक समान होते हैं। आहार के अनुकूल इसकी चोंच दाना चुगने में मदद करती है। इस पक्षी का रंग पीला तथा भूरा होता है।

बया स्वभाव से बहुत बुद्धिमान होता है। ज्यादातर पानी के आसपास रहना इसे बेहद पसंद है। अनाज के दाने व कीड़े मकोड़े खाकर अपना पेट भरता है। नर पक्षी अपना मादा व अण्डों की सुरक्षा के लिए घोंसले का निर्माण करता है। विशेषत: बया पक्षी अपना घोंसला बेर तथा बबूल के पेड़ पर बनाता है।

दूसरे पक्षियों की अपेक्षा घोंसला निर्माण में अधिक सजग व सचेत रहते हैं।

कई बार यह पक्षी अपने घोंसले को और अधिक सुंदर बनाने के लिए उस पर जुगनुओं को चिपका देते हैं, जो कि रात के समय देखने में आकर्षक रहते हैं। घोंसले का प्रवेश द्वार इस तरह से बनाता है कि कोई भी अन्य पक्षी आसानी से अंदर नहीं जा पाता और न ही अण्डे गिरने का डर रहता है।

बया चिड़िया जैसा कुशल बुनकर कोई पक्षी नहीं

बया लगभग १५ सें. मी. लंबे इस पक्षी का रंग पीलापन लिये भूरा होता है। इसके ऊपरी भाग में गहरी काली धारियां होती हैं। चोंच छोटी लेकिन तीखी होती है।

वह घने जंगलों के बजाय खुले मैदानों में, झील, तालाब या नदी के आसपास रहना पसंद करती है। खेतों में बिखरे बीज या नदी किनारे के सफेद बारीक कंकड़, घास के फूल आदि इसका भोजन होते हैं।

तबीयत से यह रईस है। अपने रहने के लिए यह हर मौसम में मौसम के अनुसार नया घोसला बनाती है।

गर्मी के मौसम का घोंसला मंदिर के गुंबद की शक्ल का होता है। इसमें प्रवेश द्वार नीचे की ओर होता है और दो भागों में बंटा होता है।

वर्षा के मौसम के लिए यह घोंसले के प्रवेश द्वार पर छज्जा बनाती है। इसके कारण न तो शत्रु चिड़िया अंदर आ सकती है न पानी की बौछारें।

बया के घोंसले में एक भीतरी कमरा भी होता है। जाड़े के बाद वह इस घर के ऊपरी भाग में एक खिड़की बना लेता है इससे भीतरी कमरे की गर्मी कम हो जाती है।

यह अपना घोंसला खजूर या ताड़ की पत्तियों से बनाती है। पहले इन पत्तियों को चीर कर पतले रेशे तैयार करती हैं फिर आडी-तिरछी बुनाई करती है।

घर की मजबूती के लिए पहले यह रेशों को पेड़ की बहुत पतली सी डाल पर मजबूती से बांधती है। एक तरह से रेशों की गुंथाई करके अपने घर को उस पर लटका देती है। आंधी व तेज हवा में भी बया का घर सुरक्षित रहता है। पेड़ की

पतली डाल पर इसलिए बनाती है ताकि वहां तक कोई दुश्मन न पहुंच सके। बया घर बनाने का काम प्राय:, अगस्त-सितंबर में करती है।

नर बया घास लाता है और मादा बुनती है। घोंसला बनाकर उसके बाहरी भाग पर मिट्टी लीप देते हैं इससे पानी अंदर नहीं जाता।

बया सफाई पसंद होती है। इसके घोंसले में बीट या गंदगी नहीं होती। इसके घोंसले की बनावट ही ऐसी होती है कि बीट सीधे नीचे धरती पर आती है। इसकी चतुराई कहें या रईसी कि यह अपने घोंसलें में जुगनू लाकर छोड़ देती है, जिससे इसके घर में रोशनी रहती है।

❋ वजन का ३५ प्रतिशत ज्यादा खाती है ये चिड़िया - खाने के मामले में हर चिड़िया का अपना अलग अंदाज होता है। कोई अपने वजन का १० प्रतिशत ही रोज खा पाती है तो किसी के पास अपने वजन का ३५ प्रतिशत तक खा जाने की क्षमता भी होती है। जैसे ब्लू जेमे अपने वजन का १० प्रतिशत ही खा पाती है। तो प्यारी-सी चिकड़ी ३५ प्रतिशत गप्प कर जाती है। वहीं हमिंगबर्ड तो इतना कुछ खाने के बाद भी २००० के करीब छोटे कीड़े भी खा लेती है। इस चिड़िया का चयापचय इतना तेज होता है कि उसे खुद से दोगुना खाना ही पड़ता है। उड़ने के दौरान इसकी धड़कन १२०० प्रति मिनट तक होती है।

❋ जहां बया के घोंसले के समान कारीगरी वाला अन्य घोंसला नहीं होता वहीं धनेश पक्षी का घोंसला वृक्ष की कोटर में इस प्रकार बनाया जाता है कि उनको छोड़कर अन्य कोई पक्षी उसमें पहुंच ही नहीं पाता।

❋ **भटतीतर -** यह पीलापन युक्त बालू के रंग का कबूतर समान पक्षी है। इसके छोटे पैर पत्र (पर) युक्त होते हैं। अर्द्ध मरूभूमि तथा पूर्ण मरूभूमि में रहता है। यह प्राय: सूर्योदय के दो घंटे पश्चात तथा संध्या को सूर्यास्त के पहले जल पीता है। इसका आहार दाने, बीज, अंकुर आदि हैं।

❋ **बटेर -** हिमालयी बटेर मध्यम आकार का होता है। यह बटेर हिमालय, उत्तराखंड और उत्तरी पश्चिमी भारत में पाया जाता है। अंदमान के नारकोंडम द्वीप पर एक अनोखा हार्नबिल पाया जाता है, जिसे नारकोंडम हार्नबिल कहते हैं। यह छोटे किस्म का हार्नबिल है।

❋ यह पंडुक के बराबर होता है और स्थुलकाय, धूमिल भूरे रंग का पक्षी है। तीतर के समान इसका रूप होता है। खेतों या घास के मैदान में जोड़े या झुंड के रूप में तथा भारत में पश्चिमी सीमा से मनीपुर तक उत्तरी तथा मध्यवर्ती प्रदेश में मिलता है।

❋ पर्वतीय बटेर फीजेंट की औसत लंबाई २६ से २८ से.मी. होती है। इनके भोजन में अनाज के दाने व छोटे-छोटे कीड़े प्रमुख होते हैं। यह खूबसूरत पक्षी देश के पर्वतीय इलाकों में पाया जाता है। पर्वतीय बटेर फीजेंट कुल का एक पक्षी है। जो उत्तराखंड समेत देश के पर्वतीय इलाकों में पाया जाता है। हिमालय की पर्वतीय श्रृंखला के आसपास रहनेवाले बटेर पक्षी दिखने में बेहद आकर्षक होते हैं। इनकी संख्या अब नाममात्र ही रह गई है। इस खूबसूरत पक्षी को विलुप्तप्राय जीवों की श्रेणी में शामिल किया जा चुका है।

अपनी सुंदर चोंच और पैर की वजह से बटेर दूर से ही पहचाने जा सकते हैं, जिनका रंग लाल या पीला होता है। इनकी

आंखों के आसपास सफेद धब्बे होते हैं। इनकी पूंछ लंबी और घनी होती है। अन्य बटेर की तुलना में हिमालय की पर्वतीय श्रृंखला के आसपास रहनेवाले बटेर की पूंछ अधिक लंबी होती है। नर बटेर की खाल का रंग गहरा भूरा होता है, जिस पर हल्की धारियां होती हैं। मादा बटेर की खाल का रंग भी भूरा, लेकिन इसके पंखों के ऊपर धारियां गहरी होती हैं। हिमालय की पर्वतीय श्रृंखला के आसपास रहनेवाले बटेर हमेशा ५-१० की झुंड में रहते हैं। जब तक इनके नजदीक जाकर इन्हें छेड़ा नहीं जाता है, ये उड़ते नहीं हैं। किसी कारणवश जब ये बिछड़ जाते हैं, तो मुंह से सीटी बजाकर अपने साथियों को बुलाते हैं। उत्तरांचल के कुमाऊ गढ़वाल इलाके में, जहां लंबी घास पाई जाती है, ये पाए जाते हैं। हालांकि वर्ष १९८४ के बाद से यहां इन्हें देखा नहीं गया है। जीव विज्ञानियों द्वारा इस प्राणी के अस्तित्व को बचाने के प्रयास किए जा रहे हैं।

❊ **बाज -** बाज प्रति घंटा २०० कि.मी. उड़ता है। मीलों दूर से ही अपना शिकार देख लेता है।

❊ पक्षियों में बाज की नजर सबसे तेज होती है। वह ऊंचाई से उड़ता हुआ भी जमीन पर रेंग रहे कीड़ों को देख सकता है। उसके उड़ने की गति १७० कि.मी. प्रति घंटा है।

❊ एक बाज इतनी तेजी से अपने शिकार पर झपटता है कि उसकी गति राइफल से निकली गोली की तीव्रता से दोगुनी होती है। अमेरिका में बाज को राष्ट्रीय पशु का दर्जा प्राप्त है।

❊ बाज के पंख एक हवाई जहाज के पंख से ज्यादा शक्तिशाली होते हैं।

बाज की नजर बहुत पैनी होती है, वह १ मील की ऊंचाई से चूहे की स्थिति को सही-सही देख सकता है।

❊ ४० साल की उम्र में नया जन्म लेता है बाज पक्षी - बाज एक ऐसा पक्षी है जो अपनी नजर व हौसले के लिए जगत प्रसिद्ध है, लेकिन अगर उसकी जिन्दगी को देखा जाए तो उसके जीवन में भी एक ऐसा पड़ाव आता है जब उसे अपने जीवन को जीने के लिए कई कठोर फैसले लेने पड़ते हैं। बाज की उम्र ७० साल की होती है, लेकिन जिन्दगी के इस मुकाम को तय करने के लिए उसे एक मुश्किल फैसला लेना पड़ता है। इसके पंजे ४० वर्ष तक सही ढंग से काम करते हैं। ४० साल के बाद ये पंजे मुड़ने के कारण कमजोर हो जाते हैं और शिकार नहीं पकड़ पाते। इसकी लंबी और तीखी चोंच भी आगे से मुड़ जाती है। पंख मोटे हो जाने से भारी हो जाते हैं और उसकी छाती से चिपक जाते हैं। इससे उसे उड़ने में बहुत दिक्कत होती है। ऐसे समय में बाज के पास दो ही रास्ते रह जाते हैं - या तो जीवन त्याग दे या फिर बदलाव के लिए एक दर्दनाक प्रक्रिया से गुजरे जिसका समय ५ महीने होता है।

फिर नया जीवन प्राप्त करने के लिए बाज उड़कर एक ऊंची चट्टान पर जाता है और वहां घोंसला बना कर वहां रहना शुरू कर देता है। बदलाव की प्रक्रिया के अंतर्गत बाज चट्टान में अपनी चोंच मार-मार कर दर्द की परवाह ना करते हुए तोड़ देता है। उसके बाद अपने पंजों को तोड़ता है। अंत में अपने भारी हो चुके पंखों को भी नोच कर फेंक देता है। अब इस दर्द भरी विधि को पूरा करने के बाद बाज को पुरानी अवस्था में आने के लिए ५ महीने का इंतजार करना पड़ता है। इसके बाद बाज का नया जन्म होता है, जिसके बाद वो एक बार फिर से शिकार कर सकता है। उड़ सकता है और मनचाहा आनंद ले सकता है। आगे के ३० साल उसे इन कष्टों के बाद ही मिलता है। इसी तरह एक सफल इंसान भी एक बदलाव से ही आगे बढ़ता है। उस बदलाव के कारण उसकी आलोचना होती है, उसे गलत कहा जाता है, लेकिन वो इंसान अपनी मंजिल की ओर बढ़ जाता है। जिस तरह बाज एकांत में खुद को बदलता है, उसे कोई फर्क नहीं पड़ता।

❊ **चील -** चील की रूपेल प्रजाति, जमीन से ३७,००० फीट ऊंचाई तक आकाश में उड़ती है।

❊ चील लगभग एक मील या १७६० यार्ड की दूर से ही चूहे को देख लेती है जबकि औसत व्यक्ति को वही चूहा ज्यादा से ज्यादा ५५० यार्ड दूर से ही दिख पाएगा।

❊ चील उड़ती तो आकाश में है, पर उसकी नजर धरती पर रहती है। जहां उसने कोई शिकार देखा कि उस पर झपट्टा मारा।

❊ चील एक ऐसा पक्षी है जो आकार में काफी बड़ा होता है। गरुड़ के बाद चील का ही नम्बर आता है। यह आकाश में सैकड़ों मीली का लम्बा सफर तय कर सकती है।

आमतौर पर तीन प्रकार की चीलें पाई जाती हैं। काली, भूरी और खेमकरी, चील की चोंच काले रंग की कुछ मुड़ी होती है। इसलिए मांस भक्षण में बहुत ज्यादा काम आती है। यह मजबूत भी काफी होती है इसलिए मांस भक्षण में बहुत ज्यादा उपयोगी सिद्ध होती है। पैरों का रंग कुछ-कुछ पीला सा होता है। पीले की दो बड़े पंख और पीछे की तरफ पूंछ सी नजर आती है। चील की लम्बाई लगभग ४० सेंटीमीटर से ६० सेंटीमीटर तक मिलती है। चील के पंजे भी काफी मजबूत होते हैं जिनकी सहायता से यह अपना शिकार कसकर दबोच सकती है। एक बार कोई शिकार पकड़ में आ गया तो उसका छूटना मुश्किल होता है।

चील अपने घोंसले बहुत ऊंचे पेड़ों पर बड़े-बड़े तिनकों पतली टहनियों को इकट्ठा करके बनाती है। चील का घोंसला दूसरे पक्षियों की तुलना में काफी बड़ा और मजबूत होता है। वाल्ड ईगल नाम की चील अपना घोंसला बहुत बड़ा बनाती है। चील को बाज की श्रेणी में ही रखा गया है। बाज की तो अनेक प्रजातियां पाई जाती है। चाहे छोटा-सा गांव हो या बहुत बड़ा शहर। टेलीफोन और बिजली के तारों के बीच से अपना रास्ता बनाते हुए चील झपट्टा मारकर अपना शिकार करती है। चील का भोजन कई प्रकार की चीजें हैं जो इसे कहीं ना कहीं जरूर ही मिल जाती हैं। इसलिए चील के भूखे रहने की नौबत कभी नहीं आती। कभी-कभी तो यह घरों से तथा बाजारों के बीच से झपट्टा मारकर चीजें उठा ले जाती है। रोटी से लेकर छोटे-मोटे कीड़े-मकोड़ों सांप मेंढ़क, केंचुआ सभी चील को प्रिय हैं। कभी-कभी चील दूसरे पक्षियों के घोंसलों से उनके बच्चे तक उड़ा ले जाती है। इसी वजह से कौआ चील से बहुत नाराज रहता है। जैसे ही कोई कौआ किसी चील को देख लेता है वैसे ही वह उसके पीछे लगकर उसे खदेड़ डालता है। चील आकार में बड़ी होते हुए भी कौए को कोई हानि नहीं पहुंचा पाती। चील चुपचाप मुर्गियों के चूजों को उठा ले जाती है। सड़ी, गली चीजें खाकर यह प्रकृति को साफ-सफाई में अपना बड़ा योगदान देती है।

❊ **महाश्येन -** महाश्येन (ईगल) शिकार करनेवाले बड़े आकार के पक्षी हैं। इस पक्षी को ऊंचाई से ही प्रेम है, धरातल से नहीं। यह धरातल की ओर तभी दृष्टिपात करता है, जब इसे कोई शिकार करना होता है। इसकी दृष्टि बड़ी तीव्र होती है और यह धरातल पर विचरण करते हुए अपने शिकार को ऊंचाई से ही देख लेता है। यूरेशिया और अफ्रीका में इसकी साठ से अधिक प्रजातियाँ स्पेसीज पायी जाती हैं। महाश्येन, फैल्कोनिफॉर्मीज गण, ऐक्सिपिटर उपगण, फैल्कानिडी कुल तथा ऐक्विलिनी उपकुल के अंतर्गत हैं। यह उपकुल दो वर्गों में विभाजित है। ये दो वर्ग ऐक्विला स्थल महाश्येन और हैलिई-एटस, जल महाश्येन हैं। इस श्येन परिवार में लगभग तीन सौ जातियाँ पाई जाती हैं। ये अनेक जातियाँ स्वभाव तथा

आकार प्रकार में एक दूसरे से भिन्न होती हैं तथा विश्वभर में पाई जाती हैं। प्राचीन काल से ही यह विज्ञान एवं शक्ति का प्रतीक माना गया है। संभवत: इन्हीं कारणों से सभी राष्ट्रों के कवियों ने इसका वर्णन किया है और इसे रूस, जर्मनी, संयुक्त राज्य आदि देशों में राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में माना गया है। भारत में इसे गरुड़ की संज्ञा दी गई है।

✻ **गरुड -** पुराने जमाने में रूस में पाया जानेवाला उकाव (शहदूल) पक्षी इतना विशालकाय होता था कि हाथी तक को अपने पंजों में दबाकर उड़ जाता था।

✻ गरुड़ काफी शक्तिशाली होता है और इसी कारण ये सबसे ज्यादा वजन उठाकर उड़नेवाला पक्षी है, ये करीब ४-५ किलोग्राम तक का वजन उठाकर उड़ सकता है।

✻ सुनहरा पक्षीराज गरुड़- गरुड़ पक्षी का अपना अलग ही महत्व है। इसे भगवान विष्णु का वाहन माना जाता है। इस वजह से गरुड़ का अलग स्थान है। दुनियाभर में गरुड़ की कई जातियां-प्रजातियां पाई जाती हैं। इनमें सुनहरे व हार्पी गरुड़ शक्ति व दृष्टि क्षमता की वजह से विशेष स्थान रखते हैं।

सुनहरा गरुड़ जिसे अंग्रेजी में गोल्डन ईगल कहते हैं, आकार में लगभग पचासी सेंटीमीटर लंबा होता है। इसके पंखों के खुलने पर इसका पूरा फैलाव करीब दो सौ सैंटीमीटर होता है। हालांकि कभी-कभी यह ज्यादा भी होता है। यह चित्तीदार कत्थई रंग का होता है और इसके शरीर पर सुनहरी आभा होती है।

सुनहरा गरुड़ निडर होता है और हर स्थिति में मुकाबले के लिए खुद को तैयार रखता है। पक्षियों व दूसरे छोटे जीव-जंतुओं में इसका खौफ बना रहता है। यह पक्षी इतना तेज शिकारी होता है कि कई बार तो अपने शिकार को यह उड़ते-उड़ते ही दबोच लेता है। पक्षियों के अलावा सुनहरा गरुड़ खरगोश, हिरण व भेड़ के बच्चे और बत्तखों को भी अपना शिकार बना लेता है। सुनहरे गरुड़ की नजर बहुत तेज होती है। यह पक्षी दो से ढाई किलोमीटर यानी दो से ढाई हजार मीटर की दूरी या ऊंचाई से सब कुछ साफ देख सकता है। इतनी ऊंचाई से यह चूहे के आकार के शिकार को भी देखकर निशाना बनाता है। अगर रोशनी ठीक रहे तो यह तीन हजार मीटर की ऊंचाई से भी चालीस से पैंतालीस सेंटीमीटर आकार के शिकार को साफ देख सकता है। अपने शिकार पर यह तेजी से झपट्टा मारता है और फुर्ती से अपने पंजों में उठा ले जाता है। सुनहरे गरुड़ को पक्षियों का राजा भी कहा जाता है। सुनहरा गरुड़ सर्वाधिक दीर्घजीवी पक्षी भी माना जाता है। इसकी उम्र नब्बे से पचानबे साल तक होती है। सुनहरा गरुड़ मुख्यत: स्कॉटलैंड के पहाड़ी क्षेत्रों में पाया जाता है। इसके अलावा यह पक्षी स्पेन, आलप्स, कारपैथियन व दूसरे यूरोपीय देशों में पाया जाता है। मादा दो अंडे देती है और करीब पैंतालीस दिनों तक उन्हें सेती है। अंडे सेने में नर मादा की मदद नहीं करता। पैंतालीस दिनों के बाद अंडे चमकते हैं और बच्चे बाहर आते हैं।

✻ **कठफोड़वा (वुडपिकर) -** गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स् के अनुसार लाल सिर वाला कठफोड़वा २१ किलोमीटर प्रति घंटे के वेग से पेड़ की छाल पर चोंच मारता है।

✻ कठफोड़वा की २४ प्रजातियां हैं।

✻ एक कठफोड़वा अपनी चोंच से मनुष्य को घायल करके उसे मार सकता है।

✻ कठफोड़वा अपने परिवार के साथ छिपा-छिपी का खेल खेलता है।

❋ कठफोड़वा एक सेकेंड में २० बार लकड़ी पर घात करता है

❋ लकड़ी फोड़नेवाला पक्षी कठफोड़वा यानी वुडपैकर

❋ पेड़ में छेद करनेवाला कठफोड़वा गुरुत्वाकर्षण के मुकाबले १००० गुना ज्यादा तेजी से अपने सिर को आगे पीछे करता है।

कठफोड़वा यह जंगलों के अलावा ये पक्षी गांवों और कस्बों में पेड़ों पर बैठे दिख जाते हैं। भारत के जंगलों में यूं तो कई प्रकार के वुडपैकर मिलते हैं, कोई छोटा तो कोई बड़ा, कोई पीला तो कोई काला, सबके अलग-अलग नाम और विशेषताएं भी अलग हैं।

कुछ सम्पूर्ण भारत में मिलते हैं, तो कुछ नम और घने जंगलों वाले इलाकों में, कुछ तराई में तो कुछ पहाड़ी इलाकों में।

इसका आकार मैना जितना होता है। इसके पीठ वाले हिस्से पर सुनहरा, पीला और काले रंग का बड़ा सुन्दर संयोजन होता है। निचले पंख सफेद और काले रंग की शेडिंग से सजे होते हैं। गर्दन पर भी काली, सफेद रेखाएं होती हैं, सिर पर बेहद खूबसूरत सुर्ख लाल क्रेस्ट होता है। मादा लैसर गोल्डन बैक्ड वुडपैकर भी लगभग नर जैसी ही होती है।

कठफोड़वा का भोजन- यह ज्यादातर जोड़े में और कभी-कभी अकेला भी दिख जाता है। यह फलों के बागों, शहर के बाहरी इलाकों में दिखाई देता है। खुले पेड़ों के ऊंचे तनों पर ठक-ठक कर तनों की छाल फोड़कर कीड़े, काले चींटे, बीटल्स खाना इसे बहुत पसंद है। यह तने पर पंजों की गहरी पकड़ के साथ बैठ जाता है और सूखी छाल छील कर छिपे हुए कीड़े बाहर निकालता है। इस काम के लिए वह पंजों के बल उलटा भी उतर आता है। कभी-कभी यह पके फलों का गूदा भी खा लेती है।

इसकी आवाज तेज और कर्कश होती है, वह भी जब यह उड़ता है, तभी यह तीखी आवाज करता है। इसका नीडन काल यानी घोंसला बनाकर अंडे देने का समय मार्च से अगस्त तक होता है। यह घोंसला बनाने में कोई खास मेहनत नहीं करता, पेड़ की कोटर या तने पर किसी अन्य पक्षी के खाली घोंसलों का इस्तेमाल कर लिया करता है। मादा लैसर गोल्डन बैक्ड वुडपैकर ३ या ४ अण्डे देती है और दोनों मिलकर अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी निभाते हैं।

❋ कठफोड़वा पक्षी जगत का एक ऐसा अजीब पक्षी है जिसे बढ़ई पक्षी के रूप में जाना जाता है। प्रकृति ने इसकी चोंच लंबी बनाई है, जिससे यह औजार का कार्य लेता है। अपनी चोंच से कठफोड़वा सूखे पेड़ों में बड़ी कुशलता से सुराख कर लेता है तथा चोंच से ही यह लकड़ी को चिकना तथा सुन्दर बना लेता है जो ऐसे लगती है मानों किसी बढ़ई ने रंदा मारकर उसे सुन्दर व चिकना बनाया हो। कठफोड़वा अपने घोंसले को आरामदायक बनाने के लिए उसमें रुई और कपड़े के चिन्दे लाकर एक गद्दी सी बना लेता है। इसके घोंसले की एक और विशेषता यह होती है कि वह बाहर से संकरा तथा अन्दर से चौड़ा होता है जिससे शत्रु घोंसले में प्रवेश ही नहीं कर पाते हैं। कठफोड़वा काला व कत्थई रंग का होता है। तथा इसके सिर पर भी मोर की तरह एक छोटी सी सुंदर कलगी होती है। कठफोड़वे को अंग्रेजी में वुडपेकर अर्थात लकड़ी में छेद करनेवाला कहते हैं। संकट के समय ठक-ठक की कर्कश आवाज करता है। अपने इसी गुण के कारण ही इसे बढ़ई पक्षी कहा जाता है। यह ठक-ठक की आवाज कर ही अपने साथी को लुभाता है। इसकी पूंछ छोटी कुछ कटी हुई सी होती है, मगर चोंच तेज व मजबूत होती है। अपनी चोंच की मदद से यह वृक्षों की छाल में से कीड़े निकाल कर खाता

है। इसकी चार अंगुलियां होती हैं, जिनमें से दो आगे और दो पीछे की ओर निकली हुई होती हैं, जिनसे इन्हें वृक्षों पर बैठने व पकड़ने में बड़ी सहायता मिलती है। कुछ कठफोड़वों की पीठ का हिस्सा पीला होता है, कुछ का भूरे रंग का। इन्हें पहचानना बहुत ही आसान है क्योंकि किसी भी पेड़ से ठक-ठक की आवाज सुनकर ही पता लग जाता है कि वहां कठफोड़वा अपनी कारीगरी उकेर रहा है।

❊ **गिद्ध -** सबसे अधिक ऊंचाई पर उड़नेवाला पक्षी गिद्ध है। इसकी रफ्तार १५० कि.मी. प्रतिघंटा है।

❊ गिद्ध की चोंच मृत प्राणी का माँस आसानी से फाड़ सके इतनी मजबूत होती है।

❊ वल्चर बिना अपने पंखों को फड़फड़ाए उड़ता है।

❊ **धनेश -** धनेश (ग्रेट पाइड होर्नबिल) लगभग गिद्ध के आकार के धनेश की विशेषता है उसकी विशाल चोंच जो सींग के आकार की होती है। उसके ऊपर यू के आकार की टोपी होती है जो ऊपर से उभरी रहती है। इस पक्षी का रंग काला और सफेद होता है। मुंह, पीठ और नीचे के हिस्से काले, गर्दन और उदार का निचला भाग सफेद होता है। पूंछ में सफेद घेरे होते हैं। धनेश केरल तक फैले हुए पश्चिमी घाट, अरूणाचल प्रदेश के निचले हिमालयी क्षेत्र और अन्य उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में पाया जाता है। यह विशेषतया फल, अंजीर आदि और छोटे प्राणी खाता है जिनमें छिपकली, सांप, चूहे और चिड़ियों के बच्चे सम्मिलित हैं।

❊ उसकी चोंच पर होती है टोपी - धनेश, अनोखी और काफी बड़ी चोंचवाला, चील जितना बड़ा पक्षी है। धनेश की चोंच इसके अपने शरीर की अपेक्षा काफी बड़ी होती है। यह काले और सफेद रंग की होती है। इसकी पूंछ काली, लंबी और चौड़ी होती है। शरीर के ऊपरी पंख पूरी तरह सफेद होते हैं। धनेश की मूल पहचान उसकी चोंच से ही होती है, जो कि पीले और काले रंग की सींगनुमा होती है और उसके ऊपर चपटे किनारेवाली एक टोपी-सी रहती है।

यह पेड़ों में रहनेवाली और फल खानेवाली चिड़िया है। जहां भी बरगद, पीपल और इस तरह के जंगली फलों के पेड़ हों, वहां यह रहती है। इसकी आवाज बहुत ही कर्कश होती है। के के के इस तरह यह चिल्लाती है। धनेश झुंड में रहनेवाली चिड़िया है और उत्तरी क्षेत्र कुमायूं में असम तक होती है। जिस तरह इस चिड़िया की चोंच अनोखी, आवाज कर्कश है, वैसे ही इसका घोंसला बनाने का तरीका भी अनोखा है। प्रजनन काल में मादा एक खोखले तने में अंदर बैठ जाती है अपनी बीट से खोखल के चारों ओर एक दीवार सी बना देती है। इस काम में वह अपनी चोंच का कन्नी की तरह इस्तेमाल करती है। एक छोटा-सा छेद छोड़कर मादा पूरी तरह अपने आपको घोंसले में बंद कर देती है। मादा अंडे सेती है और नर उसको खाना पहुंचाता रहता है। धनेश मादा मार्च और जून के बीच में अंडे देती है। अंडे सफेद रंग के ४ से ५ सेमी तक होते हैं। जब अडों में से बच्चे निकल आते हैं तब मादा दीवार तोड़कर बाहर निकल आती है।

❊ **हुदहुद -** हुदहुद (या भारत पुत्र प्रिय)- इसका आकार मैना के बराबर होता है। यह अकेले या जोड़े में, घिरे वृक्षों के मैदान में प्राय: भूमि पर दिखाई पड़ता है। हुदहुद की पाँच उपजातियाँ होती हैं।

❊ हुदहुद नाम का एक पक्षी जिसके सर पर ताज होता है, पर में बेल बूटे की नक्शी होती है। इसकी चोंच इतनी मजबूत होती है कि पेड़ को खोदकर अपना घोंसला बना देता है। इसमें अभियांत्रिक कलाकौशल है कि कहां किस जमीन के अंदर व कितनी गहराई में पानी है वह अपने हिसाबों से बता देता है।

❋ **मालढोक -** मालढोक नामक पक्षी मुख्यत: महाराष्ट्र व आंध्रप्रदेश में पाया जाता है।

❋ **शुतुरमुर्ग -** शुतुरमुर्ग के ६८ वर्ष तक जीवित रहने के प्रमाण हैं। शुतुरमुर्ग अपने भोजन के साथ कंकड़-पत्थर भी सटक जाते हैं ताकि पेट में भोजन की ढंग से पिसाई हो सके। शुतुरमुर्ग के एक अंडे का भार दो किलोग्राम होता है। विश्व का सबसे बड़ा पक्षी शुतुरमुर्ग है। यह तेज दौड़ता है पर उड़ता नहीं। यह २.७ मीटर ऊंचा होता है। शुतुरमुर्ग की टांगे इतनी ताकतवर होती हैं कि वह केवल एक ठोकर से आदमी के प्राण ले सकता है। जीवित पक्षियों में शुतुरमुर्ग सबसे बड़ी चिड़िया है, उसकी ऊंचाई आठ फुट तथा वजन ३०० पौंड होता है।

❋ शुतुरमुर्ग पक्षी का अंडा इतना बड़ा होता है कि आप उससे १२ व्यक्तियों के लिए आमलेट बना सकते हैं।

❋ लगभग ६८००० प्रकार के पक्षियों में से शतुरमुर्ग सबसे बड़ा पक्षी है। आकार और भार के अनुसार विश्व का सबसे बड़ा पक्षी शतुरमुर्ग प्राय: उत्तरी अफ्रीका में एटलस पर्वत के दक्षिण में सेनेग और नाइजल तथा सूडान में मध्य इथियोपिया तक पाया जाता है। लंबी टांगों और लंबी गर्दनवाले इस पक्षी की ऊंचाई २७५ सेंटीमीटर तक होती है। इसका भार (वजन) १५० किलोग्राम तक पाया जाता है। शतुरमुर्ग ७० वर्ष तक जीवित रह सकते हैं। यह लंबे-लंबे डग (कदम) भरता है। इसका एक डग साढ़े सात मीटर से भी अधिक लंबा होता है और यह घोड़े से भी तीव्र गति से दौड़ता है। यह एकमात्र पक्षी है, जिसके प्रत्येक पैर में दो पंजे/अंगुलियां (टोज) होते/होती हैं। सामान्यत: झाड़ी के पत्ते, बीज और फल खानेवाला शतुरमुर्ग पत्थर आदि भी खाता है। इसका अण्डा पक्षियों में सर्वाधिक भारी है। इसके अण्डे की लंबाई १५ से २० सेंटीमीटर, व्यास १० से १५ सेंटीमीटर और भार (वजन) १.६५ से १.७० किलोग्राम तक होता है। ये रेत में बने छिद्रों में अण्डे देते हैं तथा एक बार में १० तक अण्डे देते हैं।

❋ विश्व का सबसे विशाल पक्षी शतुरमुर्ग है।

❋ शुतुरमुर्ग की आंखें उसके दिमाग से ज्यादा बड़ी होती है।

❋ शुतुरमुर्ग का अंडा सबसे बड़ा अंडा होता है जबकि इसका कुल भार शुतुरमुर्ग के भार का मात्र एक प्रतिशत ही होता है। प्राचीन मिश्र, चीन, यूनान व असीरिया में शुतुरमुर्ग के अंडे के कवच से खूबसूरत बर्तन बनाये जाते थे।

❋ शुतुरमुर्ग के हर पैर में दो तलवे होते हैं जिससे वह तेज दौड़ पाता है।

❋ अपनी आठ फुट ऊंचाई के कारण शुतुरमुर्ग न केवल बच्चों की उत्सुकता पर सवार है बल्कि इसका संसार का सबसे बड़ा पक्षी होने का दावा भी अब तक बरकरार है। इसका वजन लगभग ३०० पौंड होता है। इस तरह के वजनी पक्षी अफ्रीका एवं मेसोपोटामिया के रेगिस्तान में पाए जाते हैं।

शुतुरमुर्ग की गर्दन जितनी लम्बी होती है और सिर का अनुपात उतना ही छोटा होता है। इसके नर और मादा अपने पंखों के रंगों के कारण पहचाने जाते हैं। नर शुतुरमुर्ग का शरीर काले पर से ढंका होता है। तो मादा का शरीर भूरे रंगों के पर से पटा रहता है। इसकी खाल इतनी मोटी होती है कि इसका चमड़ा बनाया जा सकता है। यह पक्षी अपने केवल ऊंचे कद के लिए नहीं बल्कि अपनी तेज निगाहों के कारण भी जाना जाता है। यह अपने शत्रु से बचाव के लिए घने जंगलों की अपेक्षा खुले वातावरण में रहना ज्यादा पसंद करता है। खुले वातावरण में यह पक्षी अपने शत्रु को दूर से देख लेता है। बुरे वक्त में यह पक्षी ४० मील प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ सकता है।

❋ जीवित पक्षियों में शुतुरमुर्ग सबसे बड़ी चिड़िया है। इसकी ऊंचाई आठ फुट तथा इसका वजन ३०० पौंड होता है।

शुतुरमुर्ग अफ्रीका और अमेरिका के मैदानी इलाकों में पाये जाते हैं सामान्यत: इनकी ऊंचाई २०५ सेंटीमीटर और वजन १५० किलो तक होता है। शुतुरमुर्ग ८० किलोमीटर प्रति घंटे की गति से दौड़ सकता है। कीवी- कीवी नामक पक्षी भी उड़ने में असमर्थ होता है। यह न्यूजीलैंड में पाया जाता है। इनके पंख काफी छोटे होते हैं। इन पक्षियों के पंख शरीर के घने बालों में छुपे रहते हैं। कीवी अपना भोजन रात में ही तलाशता है। केंचुए को यह पक्षी बड़े चाव से खाता है।

❋ विश्व का सबसे बड़ा पक्षी उड़ नहीं सकता। शुतुरमुर्ग जो कि १००-१२५ किलोग्राम भारी होता है, अपने भारी भरकम शरीर की वजह से उड़ने में असमर्थ है।

❋ शुतुरमुर्ग की आंख उसके दिमाग से बड़ी होती है।

शुतुरमुर्ग का अंडा भी सभी पक्षियों के अंडों से बडा होता है। इसके एक अंडे का औसत वजन एक किलोग्राम का होता है और उसका आकार लगभग छह इंच होता है। यह मुर्गी के अंडे से कई गुना बड़ा होता है। इसका सबसे बड़ा अंड़ा स्वीडन के फार्म में देखा गया था, जो पाच पाउंड यानी लगभग २.२५० किलोग्राम का था।

शुतुरमुर्ग की आंखें दुनिया के तमाम पक्षियों की आंखों से बड़ी होती है। दुनिया के सभी जीवों की आंखों को देखें तो शुतुरमुर्ग की आंखों का आकार दूसरे नम्बर पर है। शुतुरमुर्ग की औसत आयु ४० साल होती है। वैसे ७० साल के शुतुरमुर्ग के भी प्रमाण मिले है। वैसे तो यह पक्षी मूल रूप से अफ्रीका का है, लेकिन यह अफ्रिका के बाहर भी वातावरण के साथ अपना तालमेल बना लेता है। इस कारण एशिया के कई देशों में इसे पाला जाता है और इसकी फार्मिंग की जाती है। नर शुतुरमुर्ग का औसत वजन ११५ किलोग्राम होता है। वैसे लगभग १५६ किलोग्राम तक का शुतुरमुर्ग देखा गया है। यह पक्षी यूं तो कई दिनों तक ऊंट की तरह बिना पानी पिए रह सकता है, लेकिन इसे पानी से काफी प्यार है। यह खूब पानी पीना पसंद तो करता ही है पानी में खूब नहाना और खेलना भी पसंद करता है।

❋ एटलस पर्वत के दक्षिण से लेकर सूडान और मध्य इथोपिया तक यह पक्षी पाया जाता है। अपनी बहुत अधिक उपयोगिता के कारण यह धीरे-धीरे कम होता जा रहा है।

नर शुतुरमुर्ग की ऊंचाई लगभग २.७४ मीटर यानी नौ फुट होती है। इसका वजन लगभग १५६ कि.ग्रा. होता है। यह दक्षिण अफ्रीका के जंगलों में जेब्रा के साथ घूमते देखने को मिलते हैं। शरीर के अनुपात में इसके पंख छोटे होते हैं इसलिए यह उड़ नहीं सकता। इसके दो बड़े-बड़े मजबूत पैर होते हैं जिनसे यह २४ मील प्रतिघंटा की रफ्तार से दौड़ सकता है। यह इतना बलवान होता है कि अपनी पीठ पर दो आदमियों को बैठाकर आराम से चल सकता है। इसके पैरों में केवल दो उंगलियां होती हैं। यह वनस्पति का सेवन अधिक करता है।

यह अनाज, फल, फूल व घास भी खाता है। भूख में तो छिपकली भी खा लेता है। समय पड़ने पर पत्थर, कंकड़ आदि भी हजम कर लेता है। नर शुतुरमुर्ग का अगला भाग काला होता है। इसके पंख बड़े कीमती होते हैं। बहुत महंगे होते हैं। मादा का रंग मटमैला-सा होता है। नरपक्षी मादा को आकर्षित करने के लिए अपने पैरों को फैलाकर उंगलियों के बल नृत्य करता है। एक नर के साथ अक्सर ३ या ४ मादाएं होती हैं। ये सभी मादाएं एक ही घोंसले में अण्डे देती हैं। इनका एक ही घोसला रेत में गड्ढा खोदकर बनाया जाता है। इनके अण्डे का भार सवा किलो के लगभग होता है और अण्डे की

खोल में मुर्गी के १८ अंडे रखे जा सकते हैं। ये अपने अण्डे बड़े विचित्र ढंग से सेते हैं। दिन में अण्डों को मादा सेती है और रात में नर। युवा शुतुरमुर्ग में विचित्र बात यह भी होता है कि यह अक्सर नाचते-नाचते बेहोश हो जाते हैं। इस पक्षी की निगाह बहुत तेज होती है। दूर से ही खतरे की शंका होने पर यह दौड़ने लगते हैं। यह एक कदम से लगभग २५ फीट जगह नाप लेता है। शुतुरमुर्ग ऐसा पक्षी है जिसके अण्डे, मांस, पर एवं खाल सब कुछ बहुत उपयोगी होते हैं। इसीलिए इस पक्षी का शिकार किया जाता है। शिकार भी आसानी से नहीं होता। इनके शिकार के लिए घोड़े पर बैठकर कुत्तों के साथ इनका सामना करना पड़ता है। दौड़ते वक्त यह अपनी एक ठोकर से घोड़े व घुड़सवार दोनों को गिरा सकता है। संभवत: प्राणियों के विकास के क्रम में लगातार दौड़ने के कारण ही इसकी पांच की जगह दो उंगलियां रह गई हों। इसकी तीसरी व चौथी उंगलियां रूह हैं। हो सकता है, कुछ समय पश्चात इसकी एक उंगली रह जाय।

❋ शुतरमुर्गों पर ८० साल के सर्वे के दौरान कोई भी ऐसा केस नहीं पाया गया जब एक शुतरमुर्ग ने अपना सिर रेत में न दफनाया हो।

❋ सबसे बड़ा स्थलीय पक्षी- शुतुरमुर्ग। सबसे बड़ा अंडा- शुतुरमुर्ग।

❋ शुतुरमुर्ग का एक अंडा हाथ में पकड़ने के लिए इंसान को दोनों हाथों का इस्तेमाल करना पड़ता है।

❋ दुनिया का सबसे बड़ा पक्षी है शुतुरमुर्ग। इसका वजन डेढ़ क्विंटल तक हो सकता है। इसकी ऊंचाई करीब पौने तीन मीटर तक हो सकती है। इसके पंखों का फैलाव करीब दो मीटर तक हो सकता है। फिर चाहे दक्षिण अमरीका में मिलनेवाले परिंदे एमू हों या रिया। या फिर, न्यू गिनी के जंजीरों पर पाया जानेवाला इनका नातेदार, कैसोवरी। इसी तरह एंपेरर पेंग्विन हों या किंग पेंग्विन। इनका कद अच्छा खासा होता है, मगर ये भी आसमान में नहीं, पानी के भीतर उड़ते हैं। पैंग्विन, पानी के भीतर उड़ते नहीं, तैरते हैं। आज, आसमान में उड़नेवाला दुनिया का सबसे भारी-भरकर परिंदा है कोरी नाम का पक्षी। दक्षिण अफ्रीका में मिलनेवाले ये पक्षी १९ किलो तक वजन के हो सकते हैं। फैलने पर इनके पंख करीब ढाई फुट तक हो सकते हैं।

❋ खतरे की वजह से रेत में सिर नहीं छुपाते शुतुरमुर्ग

ऑस्ट्रिच या शुतुरमुर्ग खतरा भांपकर या शिकारी से डरकर रेत में या जमीन में अपना सिर छिपा लेता है। सच तो यह है कि शुतुरमुर्ग के ऐसा करने के पीछे की वजह कुछ और है। शुतुरमुर्ग का जीवन भी ऑक्सीजन पर निर्भर है। अगर वो रेत में सिर छिपा लेगा तो सांस नहीं ले पाएगा और मर जाएगा।

शुतुरमुर्ग रेत या मिट्टी में गड्ढे खोदकर उनमें अपने अंडे छिपा देते हैं। कुछ घंटों के अंतराल पर वो अपने अंडों को देखने आते रहते हैं। ऐसा करने से उनके अंडों को निषेचन के लिए जरूरी सूरज की गर्माहट मिलती है। तेज हवा या आंधी से बचने शुतुरमुर्ग रेत में गर्दन छिपा लेता है। ये अंडों को देखने के लिए गर्दन झुकाए रखता है कि अंडे सुरक्षित हैं या नहीं। इन्हें अधिक भोजन की जरूरत होती है, जिसे ढूंढने के लिए इसे लगातार गर्दन झुकाए रखनी पड़ती है।

डरपोक नहीं है शुतुरमुर्ग- आत्मरक्षा के लिए यह अपनी मजबूत टांगों से किक मारता है। इससे शेर तक की मौत हो सकती है। अपने बचाव में यह ७० किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से दौड़ सकता है। यह मुख्य रूप से अफ्रीका के जंगलों में रहते हैं।

❋ एक महीने की आयु का शुतुरमुर्ग भी उतनी ही तेजी से दौड़ सकता है जितना कोई प्रौढ़ शुतुरमुर्ग। क्योंकि शुतुरमुर्ग एक घंटे में ४० मील की दूरी तय कर सकता है।

❋ आस्ट्रिच पक्षी की एक आदत बड़ी ही निराली है। अगर झुंड में एक ऑस्ट्रिच उबासी लेता है तो बाकी भी जमकर उबासी लेते हैं।

❋ विश्व का सबसे विशाल पक्षी आस्ट्रिच है। पक्षियों में शुतुरमुर्ग का अंडा सबसे वजनी होता है। इसके एक अंडे का वजन डेढ़ किलो के लगभग होता है।

❋ एक समय था जब शुतुरमुर्ग पक्षी की पीठ पर बैठकर दौड़ लगाने की परंपरा काफी चर्चित थी। शुतुरमुर्ग यानी ऑस्ट्रिच दुनिया का सबसे बड़ा पक्षी है। दुनिया में कोई भी दो पैरोंवाला जीव इसके जितना बड़ा नहीं होता। इसकी अधिकतम ऊंचाई ९.५ फीट होती हैं। जब यह पंख फैलता है तो इसकी चौड़ाई ७ फीट तक हो जाती है।

दो पैरोंवाले जीवों में सबसे तेज रफ्तार से दौड़ानेवाला जीव भी शुतुरमुर्ग ही हैं। यह ७० किलोमीटर प्रति घंटे के रफ्तार से दौड़ सकता है। इस रफ्तार से यह लगातार आधे घंटे तक दौड़ सकता है, लेकिन इसकी औसत रफ्तार ५० किलोमीटर प्रति घंटे है। जब यह दौड़ रहा होता है तो एक कदम के बाद दूसरा कदम १०-१२ फुट की दूरी पर रखता है।

❋ **उल्लू -** भारत के तंत्र शास्त्र में उल्लू का बड़ा ही महत्व है। मालवा व कश्मीर में ज्योतिषी उल्लू को अपने पास रखकर विलक्षण भविष्यवाणियां करते हैं। उल्लू के किसी के घर के ऊपर बैठकर बोलने पर जहां इस बात का अंदाजा लगाया जाता है कि इस घर में कोई न कोई अपशकुन होनेवाला है, वहीं धन प्राप्ति के लिए उल्लू की पूजा भी की जाती है। इसको अनेक प्रकार की तंत्र विद्याओं की सिद्धि का परिचायक भी माना जाता है।

उल्लू देश में यह संरक्षित पक्षी नहीं है। इसकी ध्वनि पर पकड़ अकल्पनीय है। यह तोते से भी तेज सुन सकता है। तंत्र-मंत्र में इसके अंगों का तो इस्तेमाल होता ही है, शक्ति प्राप्ति और सिद्धि साधने के लिए भी तांत्रिक उसकी खोज में लगे रहते हैं।

उल्लू ३२ किस्म के होते हैं। स्थान के अनुसार उनके नाम भी अलग-अलग पाए जाते हैं। राजस्थान में आठ तरह के उल्लू पाए जाते हैं और वे लुप्त होने की कगार पर हैं। इसी प्रकार बीकानेर में एक ही प्रजाति बंदरिया उल्लू पाई जाती है, जो अब सिर्फ तीन रह गए हैं। जयपुर में छ: तरह के उल्लू पाए जाते हैं, जिनमके नाम हैं- कोचर उल्लू, मछली मार, बंदरिया उल्लू, गोल सिरवाला, बड़े कानवाला, छोटे कानवाला। यह मुख्यत: मांस खाता है। यह कबूतर, मछली, मेंढक, छिपकली तथा अन्य पशु-पक्षियों का भी शिकार करता है। इसके लुप्त होने का बड़ा कारण इस पर आया खतरा है क्योंकि मृत पशु-पक्षियों, कीड़ों को खाने से उसमें जहर तेजी से फैलता जा रहा है।

चूहे अक्सर खेतों में जाकर भोजन प्राप्त करते हैं, जहां कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग होता है। जब उल्लू इन चूहों को खाते हैं तो वे भी कीटनाशक से प्रभावित हो जाते हैं। अंधविश्वास और रूढ़िगत मान्यताओं के कारण इनका पालन नहीं होता। उल्लू अब लुप्त हो रहा है। जिस कारण विदेशी सरकारें और भारत सरकार चिंतामग्न हैं। इसके लिए विदेशों में इंटरनेशनल बार्न आउल रेस्टोरेशन प्रोजेक्ट भी चलाया जा रहा है।

❋ यह जितना डरावना होता है, उतना ही बुद्धिमान भी। यह किसी भी वस्तु की थ्री डी इमेज देख सकता है। यह इंसानों

से दस गुना धीमी आवाज भी सुन सकता है और किसी भी दिशा में अपने कानों को सुनने के लिए घुमा सकता है। ये रात में अंधेरे में अपने शिकार को देखकर नहीं, बल्कि उसकी आवाज सुनकर पकड़ते हैं।

❋ उल्लू एकमात्र पक्षी है जो नीला रंग देख सकता है।

❋ उल्लू रात्रिचारी पक्षी है, जो अपनी आंख और गोल चेहरे के कारण बहुत प्रसिद्ध हैं। इनकी सबसे बड़ी विशेषता है कि यह कम रोशनी में भी देख लेता है। उल्लुओं की अधिकतर प्रजाति रात्रिकालीन यानी में देखनेवाली हैं। इन प्रजातियों ने अपने विकास के समय से ही रात में देखने की क्षमता विकसित कर ली। नाइट विजन होने के कारण अंधेरे में शिकार करना उनके लिए आसान है, क्योंकि जीवों की कुछ प्रजातियां रात में बाहर निकलती हैं। रात में देखने के लिए उल्लुओं की आंखें कई प्रकार की अनुकूलन क्षमता से लैस होती हैं। उदाहरण के तौर पर, उनकी आंखों का आकार बड़ा होता है। उनकी आंखों के रेटिना में प्रकाश संवेदनशील कोशिकाओं का होना, इसके अलावा कार्निया भी बड़ी होती है। इन सभी कारणों से उल्लू रात में अच्छी तरह से देख पाता है। सभी उल्लूओं की रात्रिकालीन दृश्य क्षमता अच्छी नहीं होती, यानी अधिक अंधेरे में उन्हें साफ नजर नहीं आता है।

❋ आंख के पर्दे पर किसी भी वस्तु से आनेवाला प्रकाश आंख की पुतली से होकर जाता है। इन वस्तुओं से आनेवाले प्रकाश से हमारी आंख के पर्दे पर उनका उल्टा चित्र बनता है, जो मस्तिष्क में पहुंचकर सीधा हो जाता है। पुतली का आकार प्रकाश के अनुसार फैल और सिकुड़ सकता है। अंधेरा होने से प्रकाश न आने से हमें दिखाई नहीं देता है। उल्लू की आंखों की पुतलियां हमारी आंखों की पुतलियों की तुलना में बड़ी होती हैं। इसके अलावा इनके फैलने की क्षमता भी अधिक होती है। इसलिए रात्रि के समय हल्के से हल्का प्रकाश भी इनसे होकर आंख के पर्दे तक पहुंच जाता है। उल्लू की आंख को संवेदनशील बनानेवाली कोशिकाएं भी हमारे आंख की तुलना में लगभग पांच गुनी अधिक होती है। साथ ही उसमें प्रोटीन से बना लाल रंग का एक पदार्थ भी होता है, जिससे उल्लू की आंखें रात्रि के प्रकाश के लिए अधिक संवेदनशील हो जाती हैं।

❋ उल्लू एक शिकारी पक्षी है। सांप का तो यह जानी दुश्मन है। जैसे ही रात के अंधेरे में इसे शिकार की आहट आई कि वह धीरे से उड़ता हुआ उसके पास जा पहुंचता है और झपट्टा मारकर उसे दबोच लेता है।

❋ अधिकतर उल्लू रात के समय शिकार करते हैं।

❋ उल्लुओं के दांत नहीं होते हैं। मादा उल्लू नर उल्लू से आकार व भार में बड़ी होती है।

❋ उल्लू की गर्दन का रहस्य - अंधेरे में देख सकने की विलक्षण क्षमता वाला उल्लू अपनी लचीली गर्दन के लिए मशहूर है और अब वैज्ञानिकों ने इसके कारण का भी पता लगा लिया है।

उल्लू किसी भी दिशा में अपनी गर्दन को लगभग पूरा (२७० डिग्री तक) घुमा सकता है। ऐसा करने में उसकी गर्दन के रास्ते मस्तिष्क तक जानेवाली एक भी रक्त वाहिका को कोई नुकसान नहीं पहुंचता। उल्लू की शारीरिक संरचना के अध्ययन के लिए दर्जनों उल्लुओं के एक्स-रे और सीटी स्कैंस किए गए। उल्लुओं का गर्दन घुमाना हमेशा से एक रहस्य रहा लेकिन अब यह सुलझ गया है। इस अध्ययन के लिए उल्लु की नसों में रंगीन तरल प्रवाहित कर कृत्रिम रक्त प्रवाह बढ़ाया गया। उल्लू के जबड़े की हड्डी से ठीक नीचे सिर के आधार में स्थित रक्त वाहिकाएं रंगीन तरल के पहुंचने के

साथ-साथ लंबी होती गई। यह प्रक्रिया तब तक चली जब तक कि यह रंगीन तरल भंडार में जमा नहीं हो गया।

उल्लू में पाया जानेवाला यह गुण बिल्कुल अनोखा है। जबकि मनुष्य में ऐसा नहीं होता है। मनुष्य में ठीक इसके विपरीत क्रिया होती है। उनमें गर्दन घुमाने से ये वाहिकाएं छोटी होती जाती हैं।

❊ मादा उल्लू नर उल्लू से आकार में बड़ी और वजन में भी ज्यादा होती है।

❊ उल्लू को एक मूर्ख प्राणी के रूप में जाना जाता है, लेकिन उसमें गजब की क्षमताएं होती हैं। उल्लू अपनी गरदन घुमाकर भी पीछे देख सकता है। यही नहीं, वह एक ऐसा पक्षी है, जो पीछे की तरफ भी उड़ सकता है। उसकी नजर मनुष्य की नजर से १०० गुना तेज होती है।

❊ **उलूक** -श्वेत उलूक अपने क्षेत्र में स्थायी निवास करनेवाला पक्षी है। यह केवल क्षेत्र में ही घूमता है। इसकी निवास भूमि सारी पृथ्वी है। दीवार या वृक्षों के कोटर में अंडे देता है, किंतु निर्जन भवनों को यह अधिक पसंद करता है। यह निशाजीवी पक्षी है और रात को उड़कर शिकार ढूंढता है। चूहे, चुहियों, मछलियों, मेंढ़कों तथा कीड़े मकोड़ों या कुछ स्तनधारी जंतुओं का भी शिकार कर लेता है। उलूक की अन्य किस्में भी हैं, जैसे शशलूक, लघूकर्ण उलूक, हिम उलूक।

❊ **चकोर** - चकोर एक साहित्यिक पक्षी है जिसके बारे में भारत के कवियों ने यह कल्पना कर रखी है कि यह सारी रात चंद्रमा की ओर ताका करता है और आग की चिंगारी को चंद्रमा के टुकड़े समझकर चुनता रहता है। इसमें वास्तविकता केवल इतनी है कि कीटभक्षी पक्षी होने के कारण, चकोर जुगनू खाता है। इसलिए यह केवल भ्रांति भर है कि यह आग के टुकड़े खानेवाला पक्षी है और न ही एकटक सारी रात चंद्रमा को ताकता ही रहता है। चकोर पाकिस्तान का राष्ट्रीय पक्षी है। चकोर पक्षी फेसीनाइड वर्ग के यूर कुल का प्राणी है। आज विश्व में इस खूबसूरत पक्षी की प्रजाति विलुप्त हो रही है। इसका प्रमुख कारण इनका शिकार कर इनके मांस को बेचना व खा जाना है। चकोर मैदान में न रहकर पहाड़ों पर रहना पसंद करता है। यह तीतर से स्वभाव और रहन सहन में बहुत मिलता-जुलता है। पालतू हो जाने पर तीतर क़ी भांति ही अपने मालिक के पीछे-पीछे चलता है। इसके बच्चे अंडे से बाहर आते ही भागने लगते हैं। लोकप्रसिद्धि के अनुसार और काल्पनिक मान्यताओं का तहत चकोर चंद्रकिरणों को पीकर जीवित रहता है। इसलिए इसे चंद्रिकाजीवन भी कहते हैं। माना जाता है कि यह पक्षी चंद्रमा का एकांत प्रेमी है और रातभर उसी को एकटक देखा करता है। अंधेरी रातों में चंद्रमा और उसकी किरणों के अभाव में वह अंगारे चंद्रकिरण समझकर चुगता है। चंद्रमा के प्रति उसकी इस प्रसिद्ध मान्यता के आधार पर कवियों द्वारा प्राचीन काल से ही इस खूबसूरत पक्षी को समर्पित कई गीत और कविताएं लिखी जा चुकी हैं। इसका एक नाम विषदर्शनमृत्युक है जिसका आधार यह विश्वास है कि विषयुक्त खाद्य सामग्री देखते ही उसकी आंखें लाल हो जाती हैं और वह मर जाता है। कहते हैं, भोजन की परीक्षा के लिए राजा लोग इसे पालते थे।

❊ **पपीहा** - पपीहा एक ऐसा पक्षी है जो बरसात और चांदनी रातों का बड़ा दीवाना है। भीगे-भीगे मौसम और मधुर चांदनी रातों में यह खुशी से पगला जाता है इधर-उधर मंडराने लगता है और एक रट लगाए रहता है।

पी कहां... पी कहां?

वैसे इस परिन्दे को बरसात का संकेत देनेवाला पक्षी भी माना जाता है। तपती गर्मियों के बाद जब बरसात दस्तक देने

लगती है, तब यह आसमान में छाये काले-काले बादलों को देखकर जोर-जोर से चिल्लाता है- पी कहां.. पी कहां?

यह पक्षी कबूतर से मिलता-जुलता होता है। इसके शरीर का वर्ण स्लेटी या भूरे रंग का होता है। पंख कुछ लम्बे व चटखदार होते हैं। आंखों का रंग गहरा पीला या हल्का पीला होता है। चोंच पीली, काली, तीखी और सुन्दर होती है।

यह अपना घोंसला हरे-भरे और ऊंचे-ऊंचे पेड़ों पर बनाता हैं। पहाड़ों की गोद में खड़े लम्बे-लम्बे पेड़ों पर जंगली पपीहे रहना पसंद करते हैं। इसकी मादा कद में कुछ छोटी होती है। चोंच के आगे का भाग गहरा हरा होता है, जो दूर से काले वर्ण में दिखाई देता है। शरीर का ऊपरी भाग डार्क स्लेटी, श्याम-कत्थई होता है। जंगली मादा का रंग भूरा काला होता है तथा पंख सफेद होते हैं, जिन पर भूरे काले चकत्ते बने रहते हैं।

गर्मियों की विदाई से पूर्व माता २-३ अंडे देती है जिनका रंग नीला होता है। इन्हें यह बड़ी चतुराई से चरख पक्षी के घोंसले में छोड़ आती है। वह इन्हें अपना समझकर पूर्ण हिफाजत से रखता है तथा सेता है। कुछ दिनों उपरांत अंडों में से बच्चे निकलकर घोंसले में ही रहते हैं। चरख इनके दाना-पानी की व्यवस्था करता है। वे जब उड़ने लायक हो जाते हैं, तो सुनहरा अवसर पाते ही फुर्र से नीलगगन में उड़कर, उड़ते-उड़ते अपनी मां के घोंसले की तलाश में निकल जाते हैं। पपीहा का मुख्य भोजन जंगली-फल-फूल, शहद और कीड़े-मकोड़े हैं, जंगली फलों का रस तो यह बड़े चाव से चूसता है। फिर बड़ी तरकीब से मधुमक्खियों के छत्ते से शहद चुराकर खाता है। यह पक्षी अपने गले से मधुर रट पी कहां पी कहां निकालता है। इसका भी एक कारण है। जैसे ही यह पानी पीता है तो पानी इसकी चोंच से छलक जाता है। पानी छलकते ही यह गुस्से में जोर-जोर से चिल्लाने लगता है, जिसकी ध्वनी पी कहां... पी कहां जैसी सुनाई देती है।

❊ गोडावण - गोडावण पक्षी को राजस्थान का गौरव कहा जाता है।

❊ कुररी- कुररी पक्षियों के वीचीकाक वंश (लैरिडी) के प्रसिद्ध पक्षी हैं। ये पक्षी सामुद्रिक गंगाचिल्ली से कद में छोटे होकर भी उसी के निकट संबंधी है। ये पानी के निकट रहनेवाले स्लेटी रंग के पक्षी है। कुररी के पैर छोटे और जालपाद युक्त होते हैं। चोंच बड़ी और तीक्ष्ण तथा डैनेउ नुकीले होते हैं। इन पक्षियों का माथा और सिर गर्मियों में काले रंग के हो जाते हैं। मानो इन्होंने काले मखमल की टोपी पहन रखी हो। इस पक्षी की कई जातियाँ विश्व में पाई जाती है। किंतु उनके स्वभाव में अधिक भेद नहीं होता। कुररी लगभग एक फुट की लम्बाई वाली चिड़िया है, जो पानी के किनारे झुंड में रहती है। इस पक्षी का मुख्य भोजन मछली है, जिसकी तलाश में यह पानी की सतह से चोंच मिलाकर उड़ती रहती है। सैकड़ों कुररियाँ एक साथ रेत में अंडे देती हैं। यदि कोई इनके निकट चला जाए तो ये बहुत जोर-जोर से शोर मचाती हैं।

❊ पीलक- पीलक बहुत ही सुंदर मनोहारी एवं आकर्षक पक्षी है, जो घने जंगल में पेड़ों पर जोड़े के साथ रहता है। इसका आकार मैना के बराबर होता है। नर और मादा पीलक की शरीर संरचना एक-दूसरे से भिन्न होती है।

नर पीलक का रंग बहुत ही सुंदर पीला सुनहरा एवं लुभावना होता है और चोंच सोने की तरह पीली तथा चमकीली होती है। पीलक की पूंछ तथा पंखों पर काले निशान भी होते हैं। मादा पीलक का रंग कुछ हरापन लिए हुए होता है। यह नर पीलक के समान गहरा आकर्षक तथा चमकीला नहीं होता है।

पीलक का घोंसला भी बड़ा खूबसूरत होता है, जो घास से बना होता है और मकड़ी के जालों के रेशे से बंधा रहता है। इसका आकार प्याले जैसा होता है। यह घोंसला पेड़ की ऊंची शाखाओं से लटका रहता है। मादा पीलक का प्रजननकाल

अप्रैल से जुलाई के मध्य होता है। उस समय यह दो या तीन अंडे देती है, जिसका रंग सफेद होता है और उन पर काली या भूरी चित्तियां होती हैं। पीलक का मुख्य भोजन छोटे-छोटे कीड़े-मकोड़े, अंजीर व मधु रस है।

ऊंची उड़ान के दौरान तेज गति से आसमान से नीचे आना इनकी आदत है। इस समय इसका हवा में गोता लगाना बहुत ही आकर्षक एवं मनमोहन लगता है। पीलक असम को छोड़कर समस्त भारत में पाया जाता है। यह हिमालय पर्वत की पांच हजार फुट की बुलंदी पर भी उड़ता हुआ दिखाई पड़ता है। भारत के अलावा यह पाकिस्तान, बांग्लादेश तथा श्रीलंका में भी पाया जाता है।

विदेशी, प्रवासी पक्षी

❋ पक्षी बर्ड ऑफ पैराडाइज - न्यूगिनी में संसार के सबसे खूबसूरत पक्षी पाए जाते हैं, जिन्हें बर्ड ऑफ पैराडाइज या स्वर्ग के पक्षी कहते हैं।

सन १५२२ में इन्हें सर्वप्रथम यूरोप के वैज्ञानिकों ने देखा तो उन्हें विश्वास नहीं हुआ कि ये इसी संसार के पक्षी हैं, इसीलिए उन्होंने इनका नाम बर्ड ऑफ पैराडाइज रख दिया। इनकी २० जातियां व ४३ प्रजातियां पाई जाती हैं जिनमें से १६ जातियों व ३४ प्रजातियों के पक्षी तो सिर्फ न्यू गिनी व उसके आसपास के द्वीपों पर ही पाए जाते हैं। इनकी कुछ जातियां पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में भी रहती हैं। ये गर्म दलदली नीची भूमि पर रहना पसंद करते हैं। न्यू गिनी में ओक व बीच के जंगलों में ४००० मीटर की ऊंचाई तक ये देखे जा सकते हैं। इनका आकार यूं तो गौरेया से लेकर कौए तक का रहता है परंतु अपने पंखों के कारण ये ज्यादा बड़े दिखाई देते हैं।

बर्ड ऑफ पैराडाइज में नर के परों का रंग इद्रधनुषी, चमकीला, चटकीला सजावटी रहता है, जो हर प्रजाति में अलग होता है। पर ये मुख्यत: सिंदूरी, पीले, लाल, हरे नीले भूरे, काले तथा कई रंगों की आभा लिए हुए रहते हैं। ये सजावटी पर इनके सिर, सीने, पूंछ के नीचे से या पंखों के नीचे से बाहर निकले हुए रहते हैं। दुम के पर मुलायम बालों के समान रहते हैं, जो बिल्कुल किसी फव्वारे की तरह दिखाई देते हैं। इनकी दुम की लंबाई करीब २५ सेंटीमीटर रहती है।

ये पक्षी नतर्क होते हैं। जमीन या टहनी पर बैठकर, अपने पैरों को फैलाकर, शोर करके बेसुरा गाते हैं। इनकी मादा व बच्चे आकर्षक रंगों के न रहकर साधारण ही होते हैं। मादा शोरगुल भी नहीं करती तथा घोंसले का सारा कार्य वही करती है। इनकी सारी प्रजातियों में नर घोंसला बनाने में सहयोग नहीं करता। घोंसले में मादा नारंगी धारीवाले व धब्बोंवाले काले अंडे देती है।

किसी जमाने में पक्षियों के पंख कलम के रूप में इस्तेमाल किए जाते थे। ग्रीस, टर्की तथा अन्य कुछ देशों में पक्षियों के पंख इस काम में लाए जाते थे। पेन शब्द जिसका अर्थ है फेदर यानी पंख।

❋ चिली देश की मुर्गी नीले रंग का अंडा देती है।

❋ न्यूजीलैंड में अंधे पक्षियों की प्रजातियां पायी जाती है।

❋ न्यू गिनी में स्वर्ग के पक्षी के नाम से मशहूर पक्षी अपनी नृत्य प्रतिभा और रंग बदलने की क्षमता के कारण मशहूर हैं, लेकिन ये पक्षी अपने रंग में परिवर्तन और नृत्य के लिए कदमताल वास्तव में अपने जोड़े को लुभाने के लिए करते हैं। उनके पंखों से निकलनेवाली प्रकाश की अद्‌भुत किरणों से चमकदार सुनहरी इंद्रधनुषी छटा का निर्माण अपने भावी साथी को लुभाने के लिए करते हैं। पेरोटिया के पंखों की बनावट बहुस्तरीय दर्पण के समान होने के कारण इससे जादुई रंग

निकलता है। इन पंखों पर प्रकाश पड़ने से विभिन्न दिशाओं में पीले और नीले रंग के निकलने के कारण जंगल में पक्षियों के रंग बदलने का अनुभव होता है।

❋ अमेरिका का राष्ट्रीय पक्षी गंजे सिर का गरुड़ पक्षी है।

❋ अफ्रीका के ग्रे रंग के तोते लगभग २०० शब्दों को याद रख सकते हैं। एक अफ्रीकी ग्रे तोते ने तो १००० शब्दों को सुनाकर गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में स्थान बनाया।

❋ कीनिया की राजधानी नैरोबी में पक्षियों की सर्वाधिक प्रजातियाँ पाई जाती हैं, दिल्ली ४५० प्रजातियों के साथ दूसरे स्थान पर है।

❋ प्रवासी पक्षी अपने घोंसले से सीधे कई सौ मील दूर तक उड़ सकते हैं, चाहे आकाश में बादल हों या रात का अंधेरा। पक्षियों में एक प्रकार की भावात्मक शक्ति पाई जाती है जिसके माध्यम से उन्हें रास्ते का अनुमान होता रहता है।

दुनिया में सिर्फ परिंदे ही ऐसे जीव नहीं जिनके पंख होते हैं। कई बड़े चमगादड़, जो कि स्तनपायी जीव हैं, वो भी उड़ लेते हैं। उनके भी लंबे-चौड़े पंख होते हैं। चमगादड़ों की एक नस्ल, एसेरोडॉन जुबैटस वजन के लिहाज से सबसे भारी होती है। इनका वजन एक किलो तक हो सकता है। इसी तरह टेरोपस परिवार के चमगादड़, अपने पंखों के लिहाज से सबसे बड़े माने जाते हैं। इनके पंख दो मीटर तक फैल सकते हैं। ज्यादातर चमगादड़ फलों का रस पीकर अपना वजन बरकरार रखते हैं। कुछ चमगादड़, पत्तियां भी खाते हैं। उनके परों का फैलाव ज्यादा होता है, इसलिए उलझने से बचने के लिए वो पेड़ों के इर्द-गिर्द नहीं, उनके ऊपर उड़ते हैं। अपने बड़े परों की मदद से ये चमगादड़ हर रात खाने की तलाश में करीब पचास किलोमीटर तक उड़ान भरते हैं। उड़ने की खूबी उन जानवरों के लिए काफी मददगार होती है जिन्हें खाने या साथी की तलाश में लंबी दूरी तय करनी होती है।

धरती पर मिले जीवाश्मों के आधार पर कहा जाता है कि धरती पर सबसे बड़े परिंदे, आज से करीब ढाई करोड़ साल पहले रहते थे। पंखों के फैलाव को अगर बुनियाद मानें तो धरती पर रहनेवाला सबसे बड़ा परिंदा था, पैलियोगॉर्निस सैंडेरसी। इस समुद्री चिड़िया के पंख चौबीस फुट से भी ज्यादा लंबे होते थे। इसका वजन २० से ४० किलो के करीब रहा होगा। इनमें पहला नंबर, अर्जेंटाविस का आता है। अमरीका के लॉस एंजेल्स में इनके जो जीवाश्म मिले हैं उनसे पता चलता है कि ये आज से साठ लाख साल पहले धरती पर रहा करते थे। धरती पर उड़नेवाले डायनासोर भी रहते थे। इन्हें वैज्ञानिकों ने टेरोसारस नाम दिया है। डायनासोर, पक्षियों के परिवार के नहीं, रेंगनेवाले जानवरों, यानी सांप-छिपकली के खानदान से ताल्लुक रखते थे। उड़नेवाले डायनासोर की एक नस्ल, केजालकोटलस नॉरथ्रोपी आज के करीब सात करोड़ साल पहले धरती पर रहा करती थी। इनके पंख करीब ३४ फुट लंबे होते थे। इसी नस्ल के कुछ और डायनासोर भी उड़नेवाले सबसे बड़े जानवरों की रेस में शामिल किए जा सकते हैं। इसकी बुनियाद उनके पंखों के फैलाव को मानना बेहतर है। क्योंकि अक्सर हमें पुराने जीवों के पूरे जीवाश्म नहीं मिलते। इससे उनके जीवन का सही-सही अंदाजा लगाना मुश्किल है।

टेरोसारस डायनासोर्स का वजन दो सौ से ढाई सौ किलो के रहा होगा। यानी वो कियी पियानो के बराबर भारी होते होंगे और उनके पंखों का फैलाव किसी बस की लंबाई के बराबर रहा होगा।

❋ चिड़िया (ऑस्ट्रेलिया) के पंख नौ रंग के होते है।

❊ **हमिंग बर्ड -** हमिंग बर्ड ट्रोचिलाइडे परिवार के अंतर्गत आती है। यह खूबसूरत चिड़िया सबसे छोटी प्रजाति के पक्षियों में आंती है। ज्यादातर हमिंग बर्ड ७.५ से १३ सेमी. लंबाई की होती है। जबकि इन्हीं की प्रजाति की बी-हमिंग बर्ड ५ सेमी. की होती है। इसे प्रमुख तौर से अमेरिकी चिड़िया के रूप में जाना जाता है। इसका निवास उत्तरी अमेरिका ही है। जीव विज्ञानियों के अनुसार ये उड़ते समय अपने पंख को १२ से ८० बार लगातार फड़फड़ाती हैं।

इनका नाम हमिंग इसलिए पड़ा कि इनके पंखों से गुनगुनाने की आवाज निकलती है, जिसे इंग्लिश में हमिंग कहते हैं। यह अपने शरीर की ऊर्जा को काफी बचाकर रखती है। इनका शरीर मौसम के अनुसार अपना तापमान बदलता रहता है, जैसे ही रात में ठंड पड़ने लगती है तो इनका हृदय धीरे-धीरे धड़कने लगता है, जैसे ही दिन के समय तापमान बदलता है ये अपने शरीर को साधारण तापमान में ले आती है। इनके उड़ने की गति ५४ किलोमीटर प्रति घंटा होती है। ये एकमात्र ऐसे पक्षी होते हैं जिनमें उलटा उड़ने की भी क्षमता होती है।

इनका प्रमुख भोजन फूलों का रस होता है। यह सारा दिन फूलों के पराग और उनके गुलकंद का रस पीती रहती हैं। इनकी चोंच सीधी व लंबी होती है। यह रंग-बिरंगी होती है, ये नीले, काले, स्लेटी, हरे, पीले, लाल इन सभी रंगों में पाई जाती है। इनकी आंखें काले रंग की व छोटी होती हैं, इनके देखने की क्षमता अधिक होती है। इनका जीवन काल १० साल का होता है।

❊ विश्व की सूक्ष्म चिड़िया हमिंग बर्ड है, जिसे प्राकृतिक हेलीकाप्टर भी कहा जाता है। यह क्यूबा में पाई जाती है।

❊ हमिंग बर्ड उल्टी दिशा में भी उड़ सकती है।

❊ हमिंग बर्ड्स चल नहीं पाती।

❊ हमिंग बर्ड एक सेकंड में १२० बार पंख फड़फड़ाती है।

❊ सिर्फ हमिंग बर्ड ही ऐसा पक्षी है, जो पीछे उड़ सकता हैं।

❊ हमिंगबर्ड की अनोखी उड़ान- परों को फड़फड़ाना है

❊ हमिंग बर्ड का दिल १ मिनट में ६१५ बार धड़कता है।

जब आप इतने सूक्ष्म स्तर और धीमी गति पर कार्य करते हैं तो उड़ान के पारम्पारिक नियम इन पर लागू नहीं होते। जैट विमानों के परों पर से तेज गति से होकर गुजरने वाली हवा के विपरीत हमिंगबर्ड के परी को प्रकृति ने ऐसा रूप दिया है जिनसे इनके नीचे भंवर के रूप में हवा विभिन्न गोलों के रूप में घूमने लगती है।

परों के आकार, फड़फड़ाने के ढंग और आकृति में अंतर का इन भंवरों के निर्माण और विकास पर किस तरह प्रभाव पड़ता है, ताकि माइक्रोएयर व्हीकल्स के परों के जरूरत के अनुसार आकार देकर अधिकतम कुशलता हासिल की जा सके। हमिंगबर्ड की उड़ान इस प्रकार के भंवर का निर्माण करती है।

❊ २ इंच लंबी और १.८ ग्राम वजन वाली क्यूबा की बी हमिंगबर्ड दुनिया की सबसे छोटी चिड़िया है।

❊ **धानी-** चपटी, काली नाकवाला जंतु ऑस्ट्रेलिया का दूसरा धानी प्राणी है। यह खिलौने के भालू जैसा दिखता है। यह वृक्षों पर रहकर यूकेलिप्टस की पत्तियां खाता है। यह रात को जागनेवाला जंतु है।

❊ **एमू -** ढोल जैसी आवाज निकालता है शुतुरमुर्ग से भी विशाल पक्षी एमु

शुतुरमुर्ग के बाद दूसरा सबसे बड़ा पक्षी एमु है, जो ऑस्ट्रेलिया के मैदानी इलाकों में पाया जाता है, यह उड़ नहीं पाता है, क्योंकि इसके पंख बहुत छोटे होते हैं, जो शरीर के दसवें हिस्से के बराबर होते हैं। यह भूरे रंग का होता है और इसके पर सफेद होते हैं। नर की अपेक्षा मादा ज्यादा भारी होती है। इसका वजन अधिक होता है। मादा का वजन ४१ किलोग्राम और नर का वजन ३६ किलोग्राम होता है। यह ९ फुट लंबा और ८ फुट ऊंचा होता है। एमु के गले के पास थैली जैसी बनावट होती है, जिसमें हवा भर कर वह ढोल जैसी आवाज निकालता है। उसकी आवाज सुनकर लोग चौंक जाते हैं।

मादा एक बार में ९ से १२ अंडे देती है। अंडों का वजन आधा किलो के करीब होता है और नवजात बच्चे २ से ३ दिन में घोंसला छोड़ देते हैं। यह ३० किलोमीटर प्रति घंटे कि रफ्तार से दौड़ता है और अपनी तीन उंगली वाले पंजों की मदद से दुश्मनों से लड़ता है।

एमु फल, फूल, हरे पत्ते, कीड़े आदि खाता है। बीटल्स, ग्रासहूपर आदि को भी खा जाता है। ये हमेशा झुंड में रहते हैं। यह घास और पत्ति:यों से किसी पेड़ के नीचे या झाड़ियों में जमीन में गड्ढा खोदकर घोसला बनाता है। एमु जब अंडों को सेता है तब न तो कुछ खाता है और न कुछ पीता है।

✻ काका बर्रा पक्षी लाफिंग जैकाल कहलाता है क्योंकि इसकी बोली विचित्र हंसी-सी लगती है। मोर जैसा सुंदर पक्षी ऑस्ट्रेलिया का लायर बर्ड नकल करने में माहिर है। यह पक्षियों के गाने, कुत्तों के भौंकने, कारों के हॉर्न आदि की नकल कर सकता है।

✻ पक्षियों में शुतुरमुर्ग को सबसे बड़ा पक्षी माना जाता है। शुतुरमुर्ग, रिआ, कैसोवरी और एमू एक ही प्रजाति के पक्षी हैं। इन सब पक्षियों में एमू सबसे तेज दौड़ता है। इसकी दौड़ने की रफ्तार ५० से ६० किलोमीटर प्रति घंटा होती है। यह दो व्यक्तियों को लेकर दौड़ सकता है। इसका रंग मटमैला और पैर मजबूत होते हैं। इसके पैर की ठोकर बड़ी खतरनाक होती है।

एमू मादा नर की अपेक्षा बड़ी होती है। नर का अगला भाग काला होता है लेकिन पंख सफेद होते हैं। मादा का रंग कुछ गहरा मिट्टी जैसा होता है। घास-फूस, फल-फूल और अनाज बड़े शौक से खाता है परंतु कुछ न मिलने पर छिपकलियां और कंकड़ को निगल जाता है। नर और मादा दोनों के गले के पास एक थैली होती है जिसमें हवा भरकर यह ढोल जैसी आवाज निकलता है। एमू दस से बीस के झुंडों में रहता है।

इसकी ऊंचाई लगभग दो मीटर तक होती है। इसका शरीर खोखला, गर्दन छोटी और पंखों से घिरी होती हैं। नर व मादा दोनों एक रंग के होते हैं। इसकी त्वचा और पंखों का उपयोग चटाई उद्योग में होता है। इसके अंडे मनुष्य द्वारा बड़े चाव से खाये जाते हैं। अंडे सेने का काम नर करता है। इमू शाकाहारी होता है। यह रात्रिचर पक्षी आस्ट्रेलिया के रेगिस्तानी भागों में या आस-पास के घने जंगलों में पाया जाता है। ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप में इमू की ही भांति एक अन्य उड़ानरहित पक्षी पाया जाता है- कैसोवैरी जिसकी गर्दन पर अलग से कलगीनुमा, खाल की पर्त होती है और यह भी झाड़ियों में छिपा रहता है। शुतुरमुर्ग के बाद विशालकाय, न उड सकने वाला पक्षी इमू है।

✻ **अफ्रीकन शुतुरमुर्ग -** अफ्रीकन शुतुरमुर्ग यानी ऑस्ट्रिच को विश्व का सबसे बड़ा पक्षी माना जाता है। अरेबियाई शुतुरमुर्ग की तेजी से विलुप्त हो चुकी प्रजातियों में फिलहाल यही बचे हुए हैं। इनका औसतन वजन १०५ किलोग्राम और

कद ७ फीट तक हो सकता है। अफ्रीकन शुतुरमुर्ग करीब एक घंटे में ५०-७० किलोमीटर प्रति घंटे की गति से भाग सकते हैं। इनके पैर बड़े मजबूत होते हैं और नाखून नुकीले। कोई इन्हें जरा सा उकसाए तो ये हमला करने लगते हैं।

*** कीवी -** सूंघकर भोजन का पता- किवी ही अकेली ऐसी चिड़िया है जो सूंघकर जमीन के भीतर छिपे अपने भोजन का पता लगा लेती है। केंचुआ इसका प्रिय भोजन है जो जमीन में रहता है। अमेरिका के गिद्ध काफी दूरी से सूंघकर मरे हुए प्राणियों के मांस का पता मालूम कर लेता है। एशिया और अफ्रीका की हनी गाइड अपनी सूंघने की क्षमता से मोम सूंघकर मधुमक्खियों के छत्तों का पता लगा लेती है। हनी गाइड की १२ किस्में कीड़े खाती है।

* न्यूजीलैंड का राष्ट्रीय पक्षी किवी उड़ नहीं सकता है। यह मैदानी बिलों में रहता है और अंधा होता है। यह पक्षी एक वर्ष में एक ही अंडा देता है।

* पक्षी जगत में ऐसा एक अजूबा पक्षी है कीवी। कीवी पक्षी में उड़ने की क्षमता नहीं होती है पर कीवी तेज दौड़ने में प्रबल सक्षम होती है इसीलिए प्रकृति ने इसकी टांगें काफी मजबूत बनाई हैं।

कीवी केवल न्यूजीलैंड में ही पाया जाता है, चूंकि न्यूजीलैंड देश के अलावा अन्य देशों में कीवी नहीं मिलता इसीलिए कीवी को न्यूजीलैंड की पहचान भी कहा जाता है। न्यूजीलैंड की क्रिकेट टीम को इसीलिए कीवी टीम भी कहते हैं।

कीवी की लंबी चोंच, कुत्ते-बिल्ली की तरह निकली हुई मूंछें, अल्प विकसित आँखें और पूंछ का नहीं पाया जाना, ऐसी बनावट के कारण कीवी पक्षी जगत के अन्य पक्षियों से सर्वथा भिन्न और अजूबा होता है। कीवी चमगादड़ की तरह रात्रिचर पक्षी होता है तथा रात्रि के समय सूंघ सूंघकर ही भोजन तलाशता है। कीवी की सूंघने में सहायक नासिका छिद्र अन्य पक्षियों में चोंच की जड़ पर होता है किंतु कीवी में यह नासिका छिद्र चोंच के काफी आगे निर्मित होता है। कीड़ों का भोजन करने के उपरांत कीवी किविक-किविक की आवाज निकालता है इसी आवाज के कारण ही लोगों ने इस पक्षी का नाम कीवी रख दिया। कीवी की आंखें रात्रि के समय अधिक दूरी तक देख सकती हैं।

कीवी अन्य पक्षियों की तरह पेड़ पर घोसला नहीं बनाता है बल्कि कीवी जमीन के अंदर घोंसला बनाता है। मादा कीवी अंडे देती है। (एक वर्ष में केवल दो) और अंडे को सेवित करने का कार्य नर कीवी करता है। अंडे से दो माह बाद शिशु कीवी बाहर आता है। कीवी पर जब कोई शत्रु जीव हमला करता है तो वह डरता नहीं बल्कि बिल्ली की तरह गुर्राते हुए लड़ने के लिए अपने डैने फैलाकर तैयार हो जाता है। कीवी का जीवनकाल पच्चीस वर्ष होता है। शरीर के अनुपात के अनुसार कीवी का अंडा सबसे बड़ा होता हे। कीवी विश्व का अकेला ऐसा पक्षी है जिसके पंख नहीं होते।

*** कोंडोर -** दक्षिणी अमेरिका के पर्वतीय वनों में कोंडोर नामक विशालकाय गिद्ध पाया जाता है। जो मानव के बच्चों को भी झपट्टा मारकर उठा ले जाता है तथा किसी ऊंचे पत्थर पर चढ़ा देते थे। यह ऊपर जाकर दीवाल पर अपने पैर गड़ा देता था और चोर रस्सी पकड़कर ऊपर चढ़ जाते थे।

*** कुआगा -** दक्षिण अफ्रीकी कुआगा जैबरे की तरह दिखाई देता था। भोजन के लिए इसका इतना शिकार किया गया कि ये समाप्त हो गए।

*** ग्रेट औक -** उत्तरी अटलांटिक में ग्रेट औक नामक पक्षी का इतना अधिक शिकार किया गया कि वह विलुप्त हो गया। यह १५०० ईस्वी में पृथ्वी से गायब हो गया था।

❊ **डोडो -** डोडो नामक पक्षी किसी समय मॉरिशस में रहता था। इसे १७वीं शताब्दी में उस समय मार दिया गया जब मनुष्य इस द्वीप पर पहुंचा। घोंसलों में से कभी भी पक्षियों के अंडे न चुराएं।

❊ **ग्रेट बस्टर्ड -** विश्व का उड़नेवाला सबसे वजनदार पक्षी ग्रेट बस्टर्ड है। नर पक्षी का वजन लगभग २० किलोग्राम तक होता है।

❊ **किंगफिशर -** किंगफिशर की एक किस्म को जंगली चिल्लाने जैसी हँसी के लिए लाफिंग जेक नाम से भी जाना जाता है हालाँकि यह पुरी तरह ऑस्ट्रेलियन चिड़िया है लेकिन यह विश्वभर में मिलनेवाली किंगफिशर परिवार का ही सदस्य है। यह सभी किंगफिशर से बड़ा होता है। इसकी ऑस्ट्रेलिया में दो किस्में मिलती है। इसका सीना और उपरी भाग हरा और शेष भाग चमकीला लाल होता है। मादा फीके रंग की होती है। सबसे बड़ा ऑस्ट्रेलियन किंगफिशर ४३ सेमी लम्बा होता है और यह भूरे रंग का होता है। इसकी छोटी प्रजाति नीले पंखोंवाली होती है जो पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में मिलती है।

❊ किंगफिशर नदियों के ऊपर हैलीकॉप्टर की तरह उड़नेवाला पक्षी है।

❊ **वैम्पायर वेट -** दक्षिण अमेरिका में वेम्पायर वेट नामक किस्म का एक चमगादड़ पाया जाता है जो मानव रक्त पीकर ही जिंदा रहता है। मानव रक्त न मिलने पर वह गाय, गधे, घोड़े आदि पशुओं का रक्त पी लेता है।

❊ वैम्पायर चमगादड़ जमीन पर भी दौड सकती है। इस प्रकार वह उड़कर और जमीन पर दौड कर दोनों तरीकों से शिकार कर सकती है।

❊ **डकडक -** विश्व की सबसे तेज गति से उड़नेवाली चिड़िया डकडक है। यह १८० मील प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ती है।

❊ **जेब -** जेब नाम की पानी की चिड़िया अपने ही पंख नोंचकर खा जाती है व इसकी पीठ पर लदे चूजे भी अपनी मां के पंख नोंचकर खाते हैं। यह चिड़ियां पंख पचा नहीं सकती।

❊ **ब्यूबन -** ब्यूबन बी हमर पक्षी का भार दो ग्राम होता है।

❊ **टर्की -** उत्तेजित होने पर टर्की अपने सिर का रंग बदलता है।

❊ **तुराको -** तुराको पक्षी के परों पर मिलनेवाला लाल रंग पानी में घुल जाता है।

❊ **नाइप -** नाइप नामक चिड़िया की बोली अत्यंत मधुर होती है पर यह आवाज उसके कंठ से नहीं पंखों से निकलती है।

❊ **वर्नवेन्ह -** वर्नवेन्ह मिंग बर्ड के अंडे सबसे कम (०.३७ ग्राम) वजन के होते हैं।

❊ **टर्न -** टर्न नामक चिड़ियां प्रतिवर्ष लगभग २०,००० मील का सफर तय करती है।

❊ **क्वेला -** दुनिया में १५० करोड़ की सबसे अधिक आबादी वाली चिड़िया अफ्रीका की लाल चोंच वाली क्वेला है। यह चिड़िया दाने चुगकर खेती को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाती है। हर साल यह चिड़िया लगभग ७० करोड़ रुपए का अनाज चुग जाती है।

❊ **कुंज्या -** एशियाई कंडोर, जिसका नाम कुज्या था, यह पक्षी ७२ वर्ष से अधिक उम्र तक जिंदा रहा, १९६४ में मास्को में उसकी मृत्यु हुई।

❊ **कोकातू -** पक्षियों में सर्वाधिक उम्र का रिकार्ड पीली कलगी वाले कोकातू का है, कावी नाम से विख्यात इस नर

पक्षी ने ८० वर्ष की उम्र पाई थी।

❊ **स्वीफ्ट -** दुनिया की सबसे तेज उड़ने वाली चिड़िया स्विफ्ट है। यह एक घंटे में ३२० किलोमीटर की गति से उड़ती है यानी एक मिनट में ५.५ किलोमीटर। पक्षियों में सबसे तेज स्विफ्ट है वह प्रतिघंटा १७१ किमी रफ्तार से उड़ती है।

❊ **इस्टर एग बर्ड -** ईस्टर एग बर्ड के नाम से प्रसिद्ध साउथ अमरीकन टिनामऊ अलग-अलग रंगों के अण्डे देती है कोई नीला, कोई हरा, कोई गुलाबी या फिर पीला या जामुनी।

❊ **कैसावरी -**कैसावरी नामक पक्षी के पैर की अंगुली में खंजरनुमा नाखून होता है। अपने पैर के अंगूठों के पीछे तेज धारी वाले नाखूनों से यह उसे फाड़ देती है। यह चिड़िया उड़ने में असमर्थ है। कैसावरी संसार की सबसे खतरनाक चिड़िया है। यह शिकार पर जोर से लात मारती है।

❊ **पेलिकन -** कॉरमोरंट व पेलिकन पक्षी को आवाज नहीं होती। ऑस्ट्रेलियाई पेलिकन की चोंच सारे पक्षियों में सबसे बड़ी है। पेलिकन पक्षी की चोंच सबसे लंबी १९ इंच की होती है।

❊ सफेद पेल्किन (कुरेर) की चोंच की थैली में उसके पेट से तीन गुना ज्यादा भोजन समा जाता है।

❊ पेलिकन एक भद्दी शक्ल का लंबी चोंचवाला विचित्र पक्षी है। भारत में इस पक्षी को हवासिल या कूरेड कहते हैं। यह आकार में गिद्ध से भी बड़ा होता है। छोटी मजबूत टांगें, बड़े जलायुक्त पैर तथा काफी भारी चपटी चोंच जिसके नीचे पूरी लंबाई तक त्वचा की एक बड़ी थैली होती है, रंग प्राय: सफेद होता है। पेलिकन की एक अजीब विशेषता यह है कि इसकी लंबी चोंच के निचले भाग में एक दीर्घाकार लचीली थैली होती है, जिसका इस्तेमाल यह अपने तथा अपने बच्चों के लिए भोजन पूर्ति के लिए करता है। इस पक्षी का मुख्य भोजन मछलियां हैं। इसकी चोंच के नीचे की थैली मछली पकड़ने के जाल जैसे होती है जिसका भराव काफी होता है। एक साधारण पेलिकन की इस विचित्र थैली में १६-१७ किलो मछलियां भरी जा सकती हैं। यह पक्षी इस थैली के अंदर मछलियों को मार-मार कर जमा करता रहता है। पानी में तैरते समय यह थैली भी जाल की तरह तैरती रहती है। कुछ मछलियां इस जालनुमा थैली में फंस जाती हैं। यह थैली मछलियों तथा पानी से पूरी तरह भर जाती है तब पेलिकन अपना मुंह बंद करके इससे पानी बाहर निकाल देता है। ये आमतौर पर पानी से दूर ऊँचे पेड़ों पर बड़ी-बड़ी टहनियों से एक मंच-सा बना लेते हैं। यहीं इनका घोंसला होता है। एक पेड़ पर कई घोंसले होते हैं। ये बस्ती बना कर रहते हैं। पेलिकन बलगारिया, रुमानिया, ग्रीस तथा युगोस्लाविया में पाया जाता है। घूसर पेलिकन भारत, बांग्लादेश बर्मा व पाकिस्तान से अधिक जलवाले भागों में पाया जाता है।

❊ **बिटर्न -** बिटर्न पक्षी बाघ की तरह बोलता है और यह दक्षिण अमरीका में पाया जाता है।

❊ **रिया -** रिया- न उड़ सकनेवाले विशाल पक्षियों में अकेले शुतुरमुर्ग ही नहीं, रिया का भी नाम आता है जो दक्षिण अमेरिका के पैम्पास क्षेत्र में आमतौर पर पाया जाता था। यह पक्षी भी दौड़ने में बहुत तेज है। परन्तु विशेषज्ञों का मानना है कि अब इनकी प्रजाति लुप्तप्राय है।

❊ **टूकन -** दक्षिणी तथा मध्य अमेरिका में एक अजीबोगरीब पक्षी पाया जाता है जिसे टूकन कहते हैं। टूकन का शरीर भारी व पंख छोटे-छोटे होते हैं और नारंगी रंग की चोंच बहुत ही बड़ी होती है। यह पेड़ों के खोखलों में अपना घोंसला बनता है। इसकी ३७ जातियों में कुछ की चोंच तो उनके शरीरा से भी लंबी होती है, जो पक्षी के ऊपर एक भारी बोझ सा दिखाई

देता है। यह विचित्र चोंच वास्तव में इतनी भारी नहीं होती है तथा पक्षी को उड़ने में कोई कठिनाई नहीं देती। इतनी लंबी चोंच टूकन पक्षी के लिए एक वरदान है। यह भारी-भरकम पक्षी अपनी इस लंबी-चौड़ी चोंचों से किसी एक डाली पर बैठे-बैठे ही चारों ओर की छोटी-छोटी शाखाओं के फल आसानी से खाता रहता है। अन्य पक्षियों की तरह उसे एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर फुदकना नहीं पड़ता।

❊ **पिट्टा -** पिट्टा नामक ऑस्ट्रेलियन चिड़िया के पंख नौ रंग के होते हैं।

❊ **काकतुआ -** ग्रेट पाम काकातुआ (तोता) की पीठ पर एक ग्रंथि होती है, जिससे एक पावडर झड़ता है जो इसके पंखों को वॉटरप्रूफ बनाए रखता है।

❊ बड़ी प्रजाति का तोता है। यह तोता अपनी बुद्धिमत्ता और जिज्ञासु स्वभाव के लिए जाना जाता है। इसकी लंबाई ४८ सेमी तक होती है और वजन ८०० ग्राम से १ किलो तक होता है। इस तोते के पंख हरे-जैतूनी रंग के होते हैं। साथ ही इसमें एक खास बात यह है कि इसकी चोंच भूरे रंग की होती है और इसके ऊपर एक नुकीला घुमाव होता है। वयस्क तोते की आंख की पुतली गहरे भूरे रंग की और पैर धुंधले भूरे रंग के होते हैं। इसके अंदर की ओर के पंख नारंगी रंग के होते हैं। इसके ऊपर की ओर दिखाई पड़नेवाले कुछ पंख धुंधले नीले के होते हैं। इसकी पूंछ छोटी, चौड़ी और नीले हरे रंग की होती है। इसकी पूंछ का छोर काले रंग का होता है। नर की मादा की तुलना में ५% लंबा होता है। साथ ही नर की चोंच मादा की चोंच से थोड़ी ज्यादा बड़ी होती है। की न्यूजीलैंड में पायी जानेवाली तोते की दस प्रजातिया में से एक है यह तोता पहाड़ों के अलावा नदी-घाटियों के निचले भागों और तट के पास जंगलों में पाया जाता है। यह पहाड़ों पर रहनेवाला दुनिया का अकेला तोता है। एक तोता आमतौर पर ५ साल जीवित रहता है। इसे अकेले रहना पसंद नहीं है। झुंड में रहना पसंद करता है। काकातुआ और मकाऊ सबसे बड़े तोते हैं। ये ७५ साल तक जीते हैं। विश्वभर में तोते की ३२८ प्रजातियां पायी जाती हैं। चॉकलेट तोते के लिए जहर समान होती है।

❊ **हार्पी -** हार्पी गरुड़ का रहन-सहन, आकार-स्वभाव काफी कुछ सुनहरे गरुड़ से मिलता है। इसका नाम हार्पी इसके किसी शारीरिक रंग-रूप के आधार पर नहीं रखा गया बल्कि यह हार्पिज नाम के दैत्य के नाम पर रखा गया है। हार्पी गरुड़ की मादा प्राय: तीन अंडे देती हैं। इसके बच्चे निकलने व लालन-पालन का ढंग सुनहरे गरुड़ जैसा ही होता है। यह मध्य व दक्षिणी अमेरिका, न्यूग्याना और फिलीपींस में पाया जाता है।

❊ **फ्रिगेट** नाम चिड़िया विश्व की सबसे तेज गति से उड़ने वाली पक्षियों में से एक है, जिसकी रफ्तार ४८ किमी. प्रति घंटा है।

❊ **रेन -** नन्हीं फुदकिया (रेन) प्रकृति की सबसे चुनिंदा गृहस्थिन है। नर फुदकिया दर्जनों घोंसले तैयार करता है, जिनमें से किसी एक को मादा अपना आशियाना चुनती है।

❊ **परसन -** न्यूजीलैंड का परसन पक्षी आसमान में उड़ते हुए कई करबत दिखाता है।

❊ **लिख-फ्लोरिकन -** लिख फ्लोरिकन- लिख फ्लोरिकन या लेसर फ्लोरिकन प्राय: संपूर्ण भारत के बड़े घास स्थलों तथा झाड़ियों में रहते हैं। परन्तु प्राकृतिक आवास के नष्ट होने तथा मांस के लिए शिकार किये जाने के कारण अब दुर्लभ हो गये हैं। पंख मटियाले पीले काले रंग से चित्रित होते हैं जिनके किनारे सफेद होते हैं। मुकुट के पंख काले होते हैं। मादा

थोड़ी बड़ी होती है जो काले रंग से चित्रित मटियाले पीले रंग की होती है।

✻ **मिचरा -** साइबेरिया की मिचरा चिड़िया तो अपना घोंसला तीन फुट लम्बा बनाती है। ऑस्ट्रेलिया के जंगली तोते तो गुफाओं में मिट्टी के घोंसले बनाकर रहना पसंद करते हैं।

✻ **डार्टर पक्षी -** हमेशा सिर उठाकर तैरता रहता है।

✻ **ग्रेब्स -** ग्रेब्स नामक पक्षी अपना पंख खुद खा जाता है।

✻ **फीनिक्स -** जापान में फीनिक्स फाउल नामक पक्षी को घरों में पाला जाता है। इसकी पूंछ के पंख करीब १०.६ मीटर तक लंबे हो सकते हैं, जो कि किसी भी अन्य पक्षी के पंखों से ज्यादा लंबे होते हैं।

✻ **ब्लैक विंग्ड काइट -** यह पक्षी मूल रूप से यूरोप और अफ्रीका में पाए जाते हैं। लेकिन इस पक्षी का दूसरा घर भारत ही है। यह मांसाहारी शिकारी पक्षी भारत के ऊंचाई वाले क्षेत्रों में बहुतायत में पाया जाता है। बड़ी सी काया वाला यह पक्षी दिखने में तो बहुत मासूम है, लेकिन इसका नाम लेते ही कई सारे छोटे पक्षियों को नानी याद आ जाती है। ब्लैक विंग्ड काइट नाम का यह एक शिकारी पक्षी है।

यह अपनी अनोखी शिकार शैली के लिए प्रमुख रूप से जाना जाता है। यह पक्षी जिद्दी और हठी पक्षियों की श्रेणी में माना जाता है। यह पक्षी अन्य शिकारी पक्षियों की ही तरह विशाल होता है। इसके बहुत बड़े-बड़े ग्रे और सफेद रंग के पंख, कंधों पर काले धब्बे, उल्लू की तरह आंखें और काली और घुमावदार नुकीली चोंच इसे खास बनाती है। इसके पंजों का रंग हल्का पीला होता है। जबकि इसके काले और नुकीले नाखून इसकी चोंच की तरह ही इसको शिकार करने में मदद करते हैं।

इसके भोजन में छोटे-छोटे कीट-पतंगे, चूहे, छिपकली, गिरगिट समेत छोटे पक्षी व जीव भी शामिल होते हैं। यह शिकारी पक्षी खुले क्षेत्र में रहना पसंद करता है। भारत में ये सिक्किम, नीलगिरि, नगालैंड के ऊंचे क्षेत्रों में देखे जाते हैं। इनका घोंसला होता है पेड़ों की कई छोटी-छोटी टहनियों का जुड़ाव बिंदु। घोंसला बनाने में नर की अपेक्षा मादा अधिक मेहनत करती है। मादा पक्षी मटमैले क्रीमी रंग के लाल धब्बों वाले ३-४ अंडे देती है। जिनसे निकले चूजों का करीब ८० दिन तक पालन-पोषण करना होता है और यह कार्य नर ब्लैक विंग्ड काइट के जिम्मे होता है।

✻ **डोंमोरनिस स्टिरटोनी -** आधे टन की चिड़िया- अब तक की सबसे भारी चिड़िया का नाम था डोंमोरनिस स्टिरटोनी मै। उसका भार आधे टन से ज्यादा था।

✻ **क्वेलिया -** सबसे अधिक संख्या वाला पक्षी है क्वेलिया- लाल चोंच वाली क्वेलिया अफ्रीका में पाई जाती है। दिखने में यह चिड़िया की तरह नजर आती है किन्तु अपनी लाल शंखरुपी चोंच की वजह से यह आम चिड़ियाओं से अलग नजर आती है। यह पक्षी बड़ी बस्ती बनाकर रहते हैं और प्रत्येक बस्ती में कई लाख पक्षी होते हैं। इस प्रजाति की चिड़ियाओं की अनुमानित संख्या लगभग १०००० मिलियन है।

चूंकि यह अनाज खाती है इसलिए यह अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है कि इस तरह ही बहुसंख्यक चिड़ियायें खेती को कितना नुकसान पहुंचा सकती हैं इसलिए उन्हें विश्व की सबसे बुरी पक्षी, महामारी तथा अफ्रीका में किसानों की निराशा का कारण समझा जाता है।

✻ अफ्रीका में लाल चोंच वाली क्वेलिया पक्षी की संख्या लगभग १००० करोड है। यह धरती पर सबसे अधिक संख्या

में पाया जानेवाला पक्षी है।

❋ लाल चोंचवाले क्वीलिया छोटे कद के पक्षी होते हैं। इसका आकार केवल १२ सैंटीमीटर होता है। यह पक्षी घास के मैदानों में पाया जाता है। ये विशाल झुंडों में रहते हैं। चरनेवाले क्लीलिया पक्षियों की संख्या लाखों में होती है। इन्हें पंखों वाली टिड्डियां भी कहा जाता है। इन पक्षियों का केवल एक झुंड अनाज के सारे क्षेत्र को नष्ट कर देता है। फसल के लिए यह टिड्डियों के समान नुकसान पहुंचा सकते हैं। लाल चोंचवाला क्लीलिया दुनिया का सबसे बहुसंख्यांक पक्षी है। इस प्रजाति के पक्षियों की संख्या अनुमानत: एक खरब है। अत्यधिक संख्या होने के कारण क्वीलिया पक्षी जंगली घास को छोड़कर बीजी हुई खेती जैसे ज्वार, गेहूं और चावल को खाना शुरू कर देते हैं। इस प्रजाति की संख्या घटाने के लिए इनके घोंसलों को जलाना और जहरीली दवाइयों का छिड़काव इत्यादि तरीके अपनाए गए हैं परंतु इन सभी तरीकों का इन पक्षियों की संख्या पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा है।

❋ **टेरोसोर -** सबसे बड़ा उड़नेवाला जीव टेरोसोर - वैज्ञानिकों के अनुसार सबसे बड़ा उड़नेवाला जीव एक टेरोसोर था जिसका नाम क्वेटझालकोटलस था। उसके पंखों के बीच की दूरी ४० फीट थी और उनका भार था करीब ६४ किलो।

❋ **हंस -** हंस काले भी होते हैं। और ये काले हंस मानसरोवर पर नहीं बल्कि आस्ट्रेलिया में पाए जाते हैं।

पक्षी- हंस एनाटीडी परिवार से संबंध रखनेवाले पक्षियों की श्रेणी में आते हैं। यह कलहंस प्रजाति और बत्तख के काफी करीबी माने जाते हैं। जीनस और सिग्नस हंस की कुल मिलाकर सात प्रजातियां होती हैं।

हंस एक जलपक्षी परिवार एनाटिडी का सबसे बड़ा सदस्य है। मूक हंस, बिगुल हंस और वूपर हंस होते है। हंसों की सबसे बड़ी प्रजाति की लंबाई १.५ मीटर (लगभग ६० इंच) और वजन १५ किलोग्राम होता है। इनके पंख लगभग ३० मीटर तक हो सकते है। साधारण हंस के पैर काले और गहरे स्लेटी रंग के होते हैं। दक्षिणी गोलार्द्ध के हंस काले और सफेद रंग के होते हैं। ऑस्ट्रेलियन हंस पूरी तरह से काले होते हैं। वहीं दक्षिणी अमेरिका के हंस काली गर्दन व गुलाबी पैरवाले होते हैं। कुछ हंस पीले व सफेद रंगों के भी पाए जाते हैं। उत्तरी गोलार्द्ध के हंसों की प्रजाति सफेद रंग की पाई जाती है। मादा की तुलना में नर हंस ज्यादा बड़े होते हैं। यह पक्षी जलीय वातावरण में आसानी से जीवनयापन कर लेते हैं। हंसों के समूह को बेवी नाम से जाना जाता है। हंस पानी और जमीन दोनों तरह के वातावरण में खुद को ढाल लेते हैं। यह जलीय पौधों के तने, पत्तियों के साथ-साथ मछली व पानी में पाए जानेवाले कीड़ों को अपना भोजन बनाते हैं। चार साल की उम्र में यह प्रजनन करने के लायक हो जाते हैं। यह तीन से चार बच्चें एक बार में देते हैं, जिन्हें मादा पालती है।

❋ **रपेल ग्रिफन -** दुनिया का सबसे ऊंचा उड़नेवाला पक्षी अफ्रीका का रपेल ग्रिफन गिद्ध है। यह समुद्र की सतह से ३७,००० फुट की ऊंचाई (एवरेस्ट की चोटी २९०२८ फुट ऊंची है) तक उड़ सकता है। १९७३ में ११२७४ मीटर की ऊंचाई पर उड़ता एक गिद्ध हवाई जहाज से टकरा गया। जहाज को अपना एक पंख खो देना पड़ा।

❋ एक गिफिन गिद्ध जो ऑस्ट्रिया वियना की जीवशाला में था, ११८ वर्ष तक जिया था।

❋ **रीड वैर्बलर -** उत्तरी अमरीका में सरकंडों के बीच रहनेवाला पपीहा-रीड वैर्बलर और ब्राउन श्रेसर एक ही समय में दो धुनें गाने में माहिर है। कोई नहीं जानता कि अपने गाने में एक ही जगह ब्राउन श्रेसर किस तरह एक साथ चार तरह की आवाजें मिला देती है।

❊ **प्लोकर** नामक छोटी चिड़िया घड़ियाल के शरीर पर रहती है। वह उसके मुँह में घुसकर उसके मसूड़े तथा दाँतों से खून पीनेवाली जौंकें चुनकर सफाई तक कर डालती है। घड़ियाल इस सेवा से इतना कृतज्ञ प्रतीत होता है कि वह नन्ही-सी चिड़िया को नुकसान नहीं पहुँचाता।

❊ **वंडरिंग एलबेट्रो -** सबसे लंबी उड़ान भरनेवाला पक्षी वंडरिंग एलबेट्रोस है।

❊ **बार-हेडेड-गूस** सबसे ऊंची उड़ान बार-हेडेड-गूस की है, जो २९ हजार फीट ऊंचा उड़ता है।

❊ **सेवास्टोपोल हंस -** उड़ान रहित हंस- जर्मनी में डैन्यूब नदी क्षेत्र का सेवास्टोपोल हंस उड़ नहीं सकता। इसके डैनों पर उगे पंख घुंघराले और इतने बारीक होते हैं कि ठंडी हवा की हल्की-सी लहर से भी छितरा जाते हैं।

❊ **डोनाल्ड डक** गुदगुदाने वाला, लोगों के बीच प्यार फैलानेवाला बड़ा ही सुंदर बतख है जो कि इतना प्रसिद्ध हुआ कि अमेरिकी तटरक्षक बल ने इसे अपना शुभंकर बना लिया।

❊ **बार्न आउल -** प्रजाति का उल्लू मनुष्य से सौ गुना बेहतर देख सकता है।

❊ बार्न आउल पूरे विश्व में मिलता है। यह ज्यादातर बहुत पुराने मकानों के खंडहर, प्राचीन किले अथवा कब्र आदि में निवास करता है। यह प्रकाश को बिल्कुल सहन नहीं कर सकता, इसलिए दिनभर मकान के किसी अंधेरे कोने में जाकर बैठा रहता है। शाम होते ही आवाज करता हुआ बाहर निकल आता है और मकानों की छत पर इधर-उधर उड़ता रहता है।

आधी रात को बार्न आउल द्वारा विचित्र और मनहूस-सी आवाज निकालने के कारण हमारे देश में यह अंधविश्वास है कि किसी मकान में इसका आना-जाना बहुत अशुभ होता है। भले ही दूसरे उल्लुओं की तरह बार्न आउल की आवाज भी कर्णप्रिय नहीं हो, लेकिन यह बहुत ही उपयोगी पक्षी है। ऐसे मकान जहां अन्न का भंडार होता है, वहां बार्न आउल अत्यंत काम का है। क्योंकि बार्न आउल चूहे आदि जंतुओं को खाकर अन्न की उनसे रक्षा करता है। इसलिए कई देशों में अन्न भंडार गृहों की रक्षा के लिए विशेष रूप से बार्न आउल को पाला जाता है।

बार्न आउल की यह विशेषता है कि यह घर के जिस कोने में बैठता है, हर साल वहीं बैठता है। अगर वहां बैठनेवाला उल्लू मर जाता है, तो कोई न कोई दूसरा उल्लू वहां अपना आसन जमा लेता है। यह अपने शिकार को सीधे निगल जाता है। इसके पैर परों से ढके रहते हैं। इसका सिर बिल्ली के सिर की तरह गोल होता है। इसका कद जंगली कौए जितना होता है। रंग ऊपर से सुनहरा बादामी एवं नीचे सफेद होता है।

❊ **कैसोवेटी -** न्यूगिनी और ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में पाई जानेवाली चिड़िया कैसोवेटी विश्व की सबसे खतरनाक चिड़िया है जो इंसान का शिकार करती है। इसके पैरों में छुरे की भांति एक पंजा होता है, जिससे वह इंसान की हत्या कर देती है।

❊ **प्लेटीपस -** पूर्वी ऑस्ट्रेलिया तथा तस्मानिया में नदियों तथा झीलों के किनारे प्लेटीपस नामक बत्तख जैसी चोंचवाला जीव पाया जाता है। इसके मल-मूत्र त्याग करने का स्थान एक ही होता है।

❊ **यूरोशियन स्पूनबिल-** यूरोप और पूर्वी एशिया के क्षेत्रों में पाया जानेवाला यह पक्षी दिखने में एक बगुले की तरह लगता है, लेकिन इसकी चोंच बत्तख जैसी होती है। यह पक्षी पश्चिम में ब्रिटेन और स्पेन से लेकर पूर्व में जापान में पाया जाता है। यह पक्षी यूरोप में केवल ब्रिटेन, नीदरलैंड्स, स्पेन, ऑस्ट्रिया, हंगरी और यूनान आदि देशों में पाया जाता है। यह

पक्षी सर्दियों में अफ्रीका की ओर माइग्रेट करता है।

❊ ब्लैकपोल वार्बलर - ८० घंटे की उड़ान पर निकलती है चिड़िया - एक खास चिड़िया है, जो करीब ८० घंटे की यात्रा पर निकलती है और इसके लिए खाने की तैयारी भी करती है। पर वो अपना खाना बांधती नहीं है, बल्कि एक बार में अपने वजन से दोगुने वजन का खाना खा लेती है, ताकि जब वो ८० घंटे लगातार उड़ रही हो तो उसे भूख बिल्कुल भी न लगे। इस चिड़िया का नाम है ब्लैकपोल वार्बलर, जो मौसम बदलते ही दुनिया के सबसे लंबे प्रवास की ओर चल पड़ती है। ये चिड़िया ज्यादातर उत्तर की ओर अलास्का की दिशा में पाई जाती हैं। हर साल ये न्यूजीलैंड की ओर उड़ान भरती हैं। इसी दौरान वो अपने वजन को दोगुना कर लेती हैं और फिर अटलांटिक महासागर के ऊपर से ८० घंटे की नॉन स्टॉप उड़ान शुरू करती हैं और वे वेनेजुएला तक की यात्रा करती है।

❊ सेंट-विंसेट - तोता जो पंखों में इंद्रधनुष समाए है

सिर से लेकर पूंछ तक तरह-तरह के रंगों से सराबोर होता है सेंट विसेंट तोता। मध्य अमेरिका के नजदीक पूर्वी कैरेबियन द्वीप सेंट विसेंट में पाया जानेवाला सेंट विसेंट तोता अपने रंगों के कारण इतना खूबसूरत दिखता है कि पश्चिमी देशों के चिड़ियाघरों में स्थित बर्ड़ सेक्शन इसके बिना अधूरे लगते हैं। यह लंबा और आकर्षक तोता हरे व तांबई रंगों में पाया जाता है। दोनों ही रंगों के तोतों में नीले, नारंगी व पीले रंग के धब्बे पाए जाते हैं। ऊपरी परों के नीचे बने यह रंग-बिरंगे धब्बे उड़ते समय आसानी से देखे जा सकते हैं।

वयस्क सेंट विसेंट तोते की सिर से लेकर पूंछ तक लंबाई ४० सेंटीमीटर तक होती है। नर व मादा दोनों में कोई अंतर नहीं होता। पर्वतीय ढलानों के वर्षा वनों में पाये जानेवाले यह तोते अपने पसंदीदा भोजन (फल, बीज और कलियां) के लिए पेड़ों की डालियों पर झूलते दिख जाते हैं। यह पेड़ों के तनों या शाखाओं में कोटर बनाकर रहते हैं।

अक्सर जोड़े या झुण्ड में पाए जानेवाले यह तोते तेज, अप्रिय व कर्कश आवाज में चीखते तथा पंखों को झटकेदार अंदाज में हिलाते हुए सधे अंदाज में उड़ते हैं। कभी बहुतायत में पाये जानेवाले यह तोते आज तेजी से लुप्त होनेवाले पक्षियों में शरीक हो गए हैं। दरअसल बिगड़ते इकोसिस्टम ने इनके अस्तित्व पर खतरा पैदा कर दिया है।

❊ बोया - फिलिपिन्स में पाया जानेवाला बोया पक्षी प्रकाश में रहने का इतना शौकीन होता है कि अपने घोंसले के चारों ओर जुगनू भरकर लटका देता है।

❊ काली बत्तख - काली बत्तखें ऑस्ट्रेलिया के पश्चिमी तट पर पाई जाती है। इस स्थान के अलावा विश्व में किसी भी अन्य स्थान पर बत्तखों की यह किस्म देखने को नहीं मिलती। सन १६३६ में जब डच खोजी ऑस्ट्रेलिया में पहुंचे तो वे यह काले रंग की बत्तखों को देखकर हैरान रह गए। वे इनमें से कुछ बत्तखों को अपने साथ यूरोप ले गए ताकि पक्षी विज्ञानियों को इस बात का विश्वास दिला सके कि इस प्रकार के पक्षियों का भी अस्तित्व है। ये काली बत्तखें बड़े आकार के पक्षी जैसी होती हैं जो कि मछलियां तथा अन्य समुद्री भोजन खाकर अपना पेट भरती हैं। ये काली बत्तखें छोटे द्वीपों पर या पानी के निकट वनस्पतियों में अपना घोंसला बनाती हैं। इनका घोंसला पेड़ पौधों की टहनियों व घासफूस से बना होता है। अंडे देने के मौसम में ये बत्तखें ५-६ अंडे देती हैं। मादा नन्हें बच्चों की देखभाल करती हैं। जन्म के समय ये बच्चे सफेद रंग के होते हैं लेकिन परिपक्व होने पर इनका रंग बदलता जाता है।

ये पक्षी पार्कों तथा वन्य इलाकों में समान रूप से रह सकते हैं।

*** सैपसक्कर पक्षी -** सैपसक्कर नामक पक्षी वुडपैकर (कठफोडुए) के समान ही होता है। इसका यह नाम इसकी भोजन संबंधी विशेषज्ञताओं के कारण पड़ा है। सैपसक्कर प्राय: पेड़ों की भीतरी छाल (कठोर छाल के अंदरवाली परत) तथा उससे भी अंदर मौजूद पेड़ के दूध यानी सैप को अपना भोजन बनाता है। यह पेड़ में पंक्ति दर पंक्ति छेद बनाता जाता है और नरम छाल व सैप चट करता जाता है। इसके अतिरिक्त चींटियां, बीटल, जंगली फल और बीज आदि भी इसे पसंद हैं। पीले पेट वाला यह पक्षी अमेरिका में पाया जाता है और आमतौर पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पलायन करता रहता है। इस पक्षी के पंख काले और सफेद रंग के होते हैं और पेट काले धब्बे लिए हुए पीले रंग का होता है। नर सैपसक्कर मादा सैपसक्कर की अपेक्षा बड़ा होता है और उसके सिर पर लाल रंग की कलगी होती है और गर्दन भी लाल होती है। यह पक्षी हरे-भरे या सूख चुके पेड़ों के छेदों में अपना घोंसला बनाता है, जिसमें यह छोटे-छोटे कंकड़ और पत्तियां आदि बिछाता है। एक समय में मादा सैपसक्कर पांच से सात अंडे देती है।

*** मैग्पा -** कौवे की तरह दिखनेवाला यह पक्षी, कौवे की तरह चालाक भी होता है। मैग्पी चोर पक्षी के रूप में जाने-जानेवाले इस पक्षी की पूंछ अपेक्षाकृत लंबी होती है। मनुष्यों से नजरें बचाकर सिक्के, गहने और अन्य चमकीली वस्तुएं चुरानेवाला मैग्पी एशिया, यूरोप, उत्तरी अमेरिका और उत्तरी अफ्रीका में पाया जाता है। इसका रंग काला होता है, परन्तु पेट का निचला हिस्सा तथा पंखों का कुछ भाग सफेद होता है। इसकी पूंछ आसमानी रंग की होती है जिसके ऊपर का हिस्सा धानी रंग का होता है। इसकी लंबाई लगभग ४५ सेंटीमीटर तक होती है। आमतौर पर यह समूह में रहनेवाला यह पक्षी अपना घोंसला पेड़ की शाखाओं अथवा झाड़ियों पर बनाता है। आबादी के आसपास ही इनका निवास होता है अण्डे की देखभाल का काम मादा के ही जिम्मे होता है, इस दौरान भोजन का इंतजाम नर के जिम्मे होता है। कीड़े-मकोड़ों और छोटे पक्षियों के अण्डों के अलावा यह मृत जानवरों को भी खाते हैं।

*** एडियन कोन्डर** एक ऐसा पक्षी है जिसके पंख दुनिया की सब प्रजातियों के पंखों से लंबे होते हैं। इनकी लंबाई लगभग ३.२ मीटर होती है।

*** डक हक -** विश्व की सबसे तेज गति से उड़नेवाली चिड़िया डक हक है। यह १८० मील प्रति घंटा की रफ्तार से उड़ती है।

*** केंजरे -** विश्व का सबसे बड़ा शिकारी पक्षी केंजरे है।

*** सैंडपाइपर -** सर्दियों में रूस से भारत आनेवाली सैंडपाइपर का अस्तित्व खतरे में है। नदियों, झीलों के किनारे रहती है सैंडपाइपर। इस चिड़िया की चोंच चम्मच जैसी होती है। जाड़े के दिनों में यह भारत में रहती है। अब इनकी संख्या हजार से भी कम रह गई है। इनकी चोंच चम्मच के आकार की इसलिए होती है, ताकि ये बालू या कीचड़ में शिकार को आसानी से पकड़ सके और अपने बच्चों को मछलियों के अंडे और कीट खिला सके। प्रजनन के समय ये रूस और जाड़े के दिनों में दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों में रहती है। भारत में चिलका झील (उड़ीसा) के किनारे यह चिड़िया देखी जा सकती है। लंबी उड़ान के समय नर पक्षी विशेष प्रकार की मधुर आवाज निकालता है। इनका सिर हल्का भूरा होता है, जबकि शरीर गहरा भूरा। इनकी लंबाई लगभग १४-१६ सेमी होती है। इंसानों द्वारा शिकार के

कारण इनकी संख्या में लगातार कमी आ रही है।

❊ **एंडीज -** दक्षिण अमरीका में एंडीज के पहाड़ों पर रहनेवाला एंडियन गिद्ध भी उड़नेवाले भारी-भरकर जीवों में गिना जाता है। इस प्रजाति के नरों का वजन पंद्रह किलो तक हो सकता है और इनके पंख दस फुट तक फैल जाते हैं। वहीं, समंदर के ऊपर उड़नेवाले पक्षियों में वांडरिंग अल्बाट्रॉस को सबसे बड़ा उड़नेवाला पक्षी कहा जाता है। इनका वजन साढ़े आठ किलो तक हो सकता है और इनके पंख, सभी परिंदों में सबसे ज्यादा लंबे यानी करीब बारह फुट तक फैल सकते हैं। वांडरिंग अल्बाट्रॉस हजारों किलोमीटर तक उड़ लेते हैं, वो भी बिना अपने पंख फड़फड़ाए।

❊ **आर्कियोप्टेरिक्स** सबसे पुराना पक्षी था।

❊ **रीफ हेरॉन -** रीफ हेरॉन नामक चिड़िया, जो ग्रेट बारियर रीफ पर सीपियों आदि का आहार करती है, प्रतिदिन ऑस्ट्रेलिया की मुख्य भूमि से ३० मील की उड़ान भरकर रीफ (समुद्री चट्टान) पर ठीक प्रकार उसी समय पहुंचती है, जब पानी घट रहा होता है। यद्यपि ज्वार-भाटे का समय प्रतिदिन ४५ मिनट आगे-पीछे हो जाता है।

❊ **वॉइट बेलबर्ड्स -** कार के हॉर्नस से ज्यादा तेज चहचहाता है यह पक्षी - ब्राजील और पेरू के बीच अमेजॉन के जंगलों में यह पक्षी पाया जाता है। इसका नाम है वॉइट बेलबर्ड्स, जो १२५ डेसिबल की आवाज निकाल सकता है। यह पक्षियों में सबसे तेज आवाज का रेकॉर्ड माना जाता है। सिर्फ आवाज ही नहीं, बल्कि इस पक्षी का शरीर भी थोड़ा अलग है।

इस पक्षी का वजन केवल २५० ग्राम है, लेकिन इसकी पसलियां और छाती की मांसपेशियां बहुत ही मजबूत होती है। इस वजह से ही यह इतनी तेज आवाज निकाल पाता है। वैज्ञानिकों को यह अमेजन वर्षावन के उत्तर में पहाड़ों में मिला। वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि इसकी पुकार इतनी तेज है कि एक मानव के कानों को नुकसान पहुंचाने के लिए पर्याप्त है। इतना ही नहीं, खुद इसकी प्रजाति के पक्षियों के लिए भी यह हानिकारक सिद्ध हो सकती है।

इस पक्षी को अब तक का सबसे ऊंची आवाज देनेवाला जीव माना गया है। सफेद बेलबर्ड की आवाज एक रॉक कॉन्सर्ट में मचनेवाले शोर की तरह है। यह पक्षी एक काली चोंच वाला, छोटा सफेद रंग का दिखनेवाला जीव है। इसका वजन सिर्फ २५० ग्राम है, लेकिन जब उसे अपने साथी की तलाश करती होती है तो यह नन्हा सा पक्षी राक्षसी आवाज निकालते हुए १२५ डेबल का शोर पैदा कर देता है। मानव कान तब क्षतिग्रस्त होने लगता है जब वह ८५ डीबी से आवाज सुनता है जो कि बेलबर्ड के रोने की तुलना में लगभग ४० डीबी कम है। कार के हॉर्न से तीन फीट दूर खड़े होने पर लगभग ११० डीबी आवाज होती है, जबकि एक ड्रिल मशीन या हथौड़ा चलने की आवाज १०० डीबी होती है। लाइव रॉक संगीत लगभग ११० डीबी का होता है।

❊ **वुली फ्लाइंग गिलहरी -** उड़नेवाली गिलहरी वास्तव में खुद के प्रयास से हवा में नहीं उड़ती। ऊंचाई पर रखने के बाद वे अपने पैराशूट जैसे चमड़ों की मदद से उड़ सकती है। छोटे प्राणियों के लिए हवा में उड़ना आसान होता है, जबकि उड़नेवाली इस गिलहरी का आकार ५ से १२ इंच लंबा होता है। बुली फ्लाइंग गिलहरी अपने समूह में कुछ विशेष मानी जाती है। यह दो पैरों पर खड़ी होती है, जिसमें इसकी लंबी पूंछ भी खड़े होने में मदद करती है। करीब ७० वर्षों तक विलुप्त रहने के बाद दो अमेरिकी खोजकर्ताओं ने १९९५ में उत्तरी पाकिस्तान में वुली फ्लाइंग गिलहरी को खोजा। पाकिस्तान में इसके मूत्र से कामोत्तेजक दवाएं बनायी जाती हैं और इसके चिल्लाने को किसी अपने की मौत का संकेत माना जाता है।

५ कला के जीव (अ) वन्य जीव जगत

भावना अंत:करण की भाषा है वह प्रकट हुए बिना नहीं रहना चाहती है। कोई प्राणी घुटन में आबद्ध नहीं रहना चाहता। अपने व्यक्तित्व का परिचय देने और मनोभावों को प्रकट करने की इच्छा उन सभी प्राणियों में होती है, जिन्हें जिव्हा मिली हुई है। भले ही वह मनुष्य की तरह क्रमबद्ध रूप से वार्तालाप न कर सके, किंतु अपने भावों को तो किसी न किसी रूप में प्रकट कर ही देते हैं। ईश्वर ने अपनी कुदरत से कैसी अजीब व गरीब प्राणी पैदा की है।

पशु-पक्षियों को जीभ मिली है। वे उसके माध्यम से अपने भाव प्रकट करते रहते हैं। उनके साथी सहयोगी उस शब्दावली के माध्यम से यह अनुमान लगा लेते हैं कि उस पर क्या बीत रही है। यद्यपि अभी तक ऐसा कोई शब्दकोष नहीं बना जिससे जाना जा सके कि किस प्राणी को अपने मनोभाव दूसरों पर प्रकट करने के लिए किस शब्दावली का प्रयोग करना पड़ता है।

सिंह अपनी दहाड़ से वन्य पशुओं को भयभीत करके उनके मनोबल को गिराता है, साथ ही सूचना देता है कि इस क्षेत्र में उसका कोई प्रतिद्वंद्वी हो तो चला जाए अन्यथा परस्पर भिड़ने का खतरा है। प्राणियों में वाणी की अपेक्षा गंध कारगर है। हिरणों का तो यह स्वभाव ही होता है कि वन के जिस भाग में वे निवास करते हैं, उसके वृक्ष वनस्पतियों में एक विशेष प्रकार की गंध छोड़ देते हैं ताकि दूसरे हिरण उस क्षेत्र में घुसपैठ न कर सके और यदि अनधिकार प्रवेश जरूरी ही हुआ तो वे नए सिरे से उस वन्य प्रदेश की वनस्पतियों को काट-छांट कर उसकी गंध मिटा देते हैं और अपनी नई गंध डालकर उस क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम कर लेते हैं। बाज, बिल्ली, सांप, गोह आदि किसी भी आक्रामक जानवर की विकटता अनुभव करते ही छोटे पक्षी इकट्ठे होकर चहचहाने लगते हैं।

इतिहासकारों का विश्वास है कि आज से लगभग १२ हजार वर्ष पूर्व मनुष्य ने पहली बार पशुओं को पालना शुरू किया था। मानव ने सबसे पहले कुत्ते को पालतू बनाया। इसके बाद मानव ने क्रमश: घोड़े और फिर बाद में बकरियों, सुअर तथा गाय-भैंसों को पालना शुरू किया। किसानों द्वारा मांस, दूध, चमड़े और अन्य पशु उत्पादों को प्राप्त करने के लिए पाले जानेवाले पशुओं को मवेशी कहते हैं विश्व के प्रत्येक देश में मवेशी पालन होता है। भारत में सर्वाधिक मवेशी पाले जाते हैं जिनमें गायों की संख्या सर्वाधिक है। मनुष्य के अतिरिक्त केवल बंदर ही ऐसा जानवर है जो अलग-अलग रंगों की पहचान कर सकता हे।

❋ धरती पर पांच में से चार सबसे तेज दौड़ने वाले जानवर अफ्रीका में रहते हैं। यह हैं शेर, चीता, गजेल और वाइल्डबीस्ट।

भारत में जंगली जानवरों की अनेक प्रजातियां पाई जाती हैं जिनमें से २५% से अधिक जमीन, घने जंगल और पानी में मिलते हैं भारत में लगभग ४०० राष्ट्रीय उद्यान हैं जो कई वन्य प्रजातियों और कुछ विशाल जंगली जानवरों के आदर्श निवास हैं।

❋ संकटग्रस्त जानवरों की खालें या हाथीदांत वाली वस्तुएं कभी न खरीदें।

❋ अपने स्थानीय संरक्षणवादी ग्रुप में शामिल हो जाएं तथा पास ही रह रहे वन जीवन को संरक्षित करने में सहायता दें।

❋ जानवरों की रफ्तार - ऊंट- १० किलोमीटर प्रति घंटा, हाथी- १० किलोमीटर प्रति घंटा, घोड़ा- ४० किलोमीटर

प्रति घंटा, कुत्ता- ४० किलोमीटर प्रति घंटा, सियार- ५० किलोमीटर प्रति घंटा, शेर- ६० किलोमीटर प्रति घंटा, चीता- ७५ किलोमीटर प्रति घंटा।

❋ वन्य जानवरों की लुप्त प्रजातियां - इयोहिप्पस- यह शुरुआती घोड़ा केवल ३० सेमी. ऊँचा था। इसके आजकल पाये जानेवाले घोड़ों की तरह अफरा नहीं था, बल्कि पंजे थे।

यूनीटेथरियम- यह स्तनपायी हाथी जितना बड़ा था। यह आक्रमणकारी लगता था किन्तु यह दूसरे जानवरों को नहीं खाता था।

❋ ऊनी विशाल हाथी- लगभग २० लाख वर्ष पूर्व साइबेरिया मं यह विशालकाय हाथी मनुष्य द्वारा खाने के लिए मार दिये गये। वैज्ञानिकों ने जमीन की खुदाई करके इनके शवों को शीत गृहों में सुरक्षित रख रखा है।

डोडो- यह न उड़ पानेवाला बड़ा कबूतर था जो मारिशस के बर्फीले टापू में पाया जाता था। यह १७ वीं शताब्दी में बाहर से आनेवाले नाविकों द्वारा अंधाधुंध शिकार करके मिटा दिया गया।

कुआग्गा- यह धारीदार घोड़े की तरह का जानवर है। अंधाधुंध शिकार के कारण १८८३ में यह समाप्त हो गया।

बालु चिथेरियम- यह शुरूआती स्तनपायी मनुष्य के मुकाबले में तीन गुना लम्बा था। इसका भोजन पत्तियां व टहनियां थीं।

ऊनी गेंडा- यह शुरूआती स्तनपायी जीव ढाई मीटर लम्बा था। यह बर्फ युग में पाया जाता था। इसके शरीर के ऊपर लम्बे-लम्बे बाल होते थे जो इसे गर्म रखते थे।

महान आक- महान आक पेइंग्विन से मिलती जुलती थी। यह भी मनुष्यों की तरह अपने पैरों पर सीधी खड़ी होकर चलती थी।

❋ भारत में ५०० से अधिक वन्य प्राणी अभयारण्य हैं, जिसमें से २८ बाघ संरक्षण के लिए आरक्षित हैं।

सासन गिर राष्ट्रीय उद्यान, गुजरात- गिर राष्ट्रीय उद्यान दुनिया का एकमात्र स्थान है जहां एशियाई शेर पाए जाते है जिन्हे भारतीय शेर भी कहते हैं। गुजरात का यह पार्क भारतीय शेरों की सबसे बड़ी आबादी को आश्रय देता है और आज के समय में भारत में एशियाई शेरों की कुल आबादी ५२३ है।

रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान, राजस्थान- रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान अपने बाघों की आबादी के लिए विश्व प्रसिद्ध है, विशेष रूप से रणथंभौर उद्यान के रानी कही जानेवाली मछली नामक बाघिन, जिसकी दुनिया मे सबसे ज्यादा फोटो खीची गई है, इस उद्यान में जंगली बंगाल बाघों को अपने प्राकृतिक जंगल आवास देखना अपने आप में एक बहुत ही आनन्दमय अनुभव है।

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, असम- असम का काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान भारतीय गैंडों की एक अच्छी खासी एवं स्वस्थ आबादी का घर है और यह पार्क बाघों, जंगली पानी भैंस और हाथियों के साथ साथ बारहसिंगा के भी आबादी के लिए जाना जाता है।

सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान, पश्चिम बंगाल- सुंदरबन राष्ट्रीय उद्यान गंगा डेल्टा का हिस्सा है और जलीय वन द्वारा घिरा हुआ है। सुंदरबन के दलदल में बाघों की अच्छी तादाद है जो कभी कभी मनुष्य पर हमलों के जिम्मेदार माने जाते हैं, आज के समय मे यह प्राकृतिक वन ४०० से अधिक बाघों का घर है।

❋ वन्यजीव दर्शन के लिए भारत के कुछ शीर्ष राष्ट्रीय उद्यान

भारतीय पर्यावरण और वन मंत्रालय के अनुसार, भारत में कुल १०३ राष्ट्रीय उद्यान हैं। जिम कार्बेट नेशनल पार्क भारत का पहला राष्ट्रीय उद्यान था और परियोजना टाइगर पहल के तहत आनेवाला पहला भी था।

पेरियार राष्ट्रीय उद्यान, केरल - पेरियार राष्ट्रीय उद्यान भारत का एक उल्लेखनीय हाथी रिजर्व है और कई खतरनाक प्रजातियों का घर है यह पार्क इडुक्की जिले में स्थित है और केरल राज्य के बेहद प्रभावशाली पर्यटन स्थलों में से एक है।

नामधाफा राष्ट्रीय उद्यान, अरुणाचल प्रदेश- नामधाफा राष्ट्रीय उद्यान भारत का तीसरा सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान है और देश में सबसे अमीर जैव विविधता प्रदान करता है। यह क्षेत्र स्तनधारी प्रजातियों की महान विविधता का घर है जिसमें ३ बड़ी बिल्ली प्रजातियों और बादलों के जैसे चित्तीदार तेंदुए शामिल हैं।

दुधवा राष्ट्रीय उद्यान, उत्तर प्रदेश- दुधवा राष्ट्रीय उद्यान भारत में सबसे अच्छे और कम ज्ञात तराई पारिस्थितिकी तंत्र में से एक है। तराई के लंबे गीले घास के मैदान बड़ी संख्या में लुप्तप्राय बारहसिंगा, जंगल के छोटी बिल्ली और बड़ी तेंदुए बिल्ली का घर है।

भितरकणिका राष्ट्रीय उद्यान, उड़ीसा- उड़ीसा के केंद्रापाड़ा जिले में स्थित भितरकणिका राष्ट्रीय उद्यान ज्यादातर बड़े आकार के खारे पानी के मगरमच्छ, राजा कोबरा सर्प और भारतीय अजगर के लिए प्रसिद्ध है। राष्ट्रीय उद्यान और यह वन्यजीव अभ्यारण्य जलीय वन और दलदल क्षेत्र का समर्थन करता है।

महान हिमालयी राष्ट्रीय उद्यान, हिमाचल प्रदेश- महान हिमालयी राष्ट्रीय उद्यान उच्च ऊंचाई हिमालयी वन्यजीवन की एक महान विविधता का समर्थन करता है। जीएनएनपी पार्क हिम या बर्फ तेंदुए, हिमालयी तहर हिरण, नीली भेड़ और कस्तूरी हिरण जैसे जीवित प्रजातियों का घर है।

✲ वन्यजीव दर्शन के लिए भारत के कुछ शीर्ष राष्ट्रीय उद्यान- मध्यप्रदेश का बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, कान्हा राष्ट्रीय उद्यान, महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले में स्थिल ताडोबा टाइगर रिजर्व भारतीय बाघों की आबादी का घर।

बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान, मध्य प्रदेश- मध्यप्रदेश का बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान भारतीय बाघ तथा भारतीय तेंदुए की एक बड़ी आबादी का घर है, यह पार्क मध्य भारत में सर्वश्रेष्ठ जीप, हाथी और वन्यजीव सफारी अनुभव प्रदान करता है।

कान्हा राष्ट्रीय उद्यान, मध्य प्रदेश- कान्हा राष्ट्रीय उद्यान मध्य प्रदेश का सबसे बड़ा राष्ट्रीय उद्यान है और भारत मे आनेवाले पर्यटक के लिए शीर्ष १० प्रसिद्ध स्थानों में से एक है। इस पार्क में बंगाल के बाघों के साथ साथ बारहसिंगा या दलदली हिरण, भारतीय जंगली कुत्ते और चीतल हिरनो की अच्छी आबादी है।

ताडोबा राष्ट्रीय उद्यान, महाराष्ट्र - महाराष्ट्र के चंद्रपुर जिले में स्थित ताडोबा टाइगर रिजर्व, भारत में बंगाल के बाघों के लिए सबसे अच्छे स्थानों में से एक है। ताडोबा राष्ट्रीय उद्यान भारतीय तेंदुए और बहुत ही दुर्लभ बिज्जु नामक जानवर का भी घर है।

✲ **माउस डियर -** प्यारा और अनूठा माउस डियर - शेवट्रेन ऐसा जीव है, जिसका शरीर हिरन की तरह और मुंह चूहे जैसा होता है। अलग-अलग नामों से बुलाते हैं। यह दक्षिण भारत के अलावा एशिया और अफ्रीका के विभिन्न जंगलों में पाया जाता है। इसे आर्द्र जलवायु ज्यादा भाती है। यही कारण है कि यह वर्षा वनों में ज्यादा पाया जाता है।

शेवट्रेन या पिसूरी चूहे की शक्ल का जीव है, पर इसका शरीर हिरन जैसा होता है। इसलिए लोग इसे माउस डियर कहते हैं। एशिया में पाए जानेवाले माउस डियर अफ्रीकी माउस डियर से हल्के और छोटे होते हैं। एशियाई माउस डियर आठ

किलोग्राम तक के होते हैं। वहीं, इसकी अफ्रीकी प्रजाति का वजन १६ किलोग्राम तक होता है। यह पूरी तरह शाकाहारी होता है और पौधों के मुलायम पत्ते व पेड़ से गिरे फलों को खाता है।

इसके शरीर के निचले हिस्से पर हिरन के जैसी ही धारियां भी बनी होती हैं। इसके कान छोटे-छोटे होते हैं। यह बहुत ही डरपोक होता है, पर विरोधी कमजोर हो, तो हमला भी कर देता है।

शेवट्रेन नाम फ्रेंच से लिया गया है, जिसका मतलब छोटी बकरी होता है। तेलुगु में इसे जारिनी पंडी, मलयालम में खूरान और कोंकणी में इसे बरिंका कहा जाता है। एक अनुमान के अनुसार इस जीव की खोज पाषाण काल में हुई। इसके पेट की संरचना बाकी जीवों से थोड़ी अलग होती है। इसकी पाचन प्रक्रिया के लिए चार अलग-अलग चेंबर होते हैं। भोजन बारी-बारी से हर चेंबर से होकर गुजरता है, जहां पौष्टिक तत्वों का अवशोषण होता है।

मादा एक बार में एक ही बच्चा देती है। इस कारण इनकी संख्या बहुत ही कम है। इनके पैर पतले होते हैं और खुर गाय जैसे, पर काफी छोटे होते हैं। इन्हें सींग नहीं होते, पर नर का जबड़ा काफी मजबूत होता है और जरूरत पड़ने पर इससे वह दुश्मनों पर हमला भी करता है। ये समूह में रहने के बजाय जोड़ी में रहना पसंद करते।

*** कस्तुरी मृग -** अपनी ही खुशबू को ढूंढता है कस्तूरी मृग

कस्तूरी मृग की नाभि से निकलनेवाली खुशबू ही उसे परेशान करती है। जिसे ढूंढने के लिए वह जंगलों में भटकता रहता है। माना जाता है कि, कस्तूरी मृग की विलुप्त होती प्रजाति का सबसे बड़ा कारण इनका शिकार होना है। वन्य जीव संपदा की तरफ से भी इस जीव को बचाने के लिए कई तरह की योजनाएं चल रही हैं। तथा इस जीव को बचाने की भरसक कोशिश की जा रही हैं।

मृग का नाम कस्तूरी मृग इसलिए पड़ा क्योंकि इसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है। कस्तूरी अपनी सुगंध के लिए प्रसिद्ध है तथा दवाइयों में प्रयुक्त होती है। शिकारियों ने कस्तूरी प्राप्त करने के लिए कई मृगों का वध भी किया। कस्तूरी मृग की खास बात यह है कि अन्य मृगों की तरह इनके सिर पर सींग नहीं होते हैं, कुदरत ने उन्हें अपने बचाव के लिए सींग की जगह दो लंबे दांत दिए हैं। नर के ऊपरी जबड़े से दो दांत बाहर निकले होते हैं, लेकिन देखने में मृग वंशज नहीं मानते थे।

कस्तूरी मृग का रंग भूरा और पेट तथा निचला भाग सफेद होता है। कस्तूरी मृग हिमालय में पच्चीस सौ से छत्तीस सौ मीटर की ऊंचाई पर पाए जाते हैं, दिन के समय वह झाड़ियों तथा चट्टानों की आड़ में रहना पसंद करते हैं, लेकिन अंधेरा होते ही भोजन की खोज में निकल पड़ते हैं। सर्दियों के मौसम में भी यह अपने स्थान पर रहना पसंद करते हैं, कस्तूरी मृग की प्रजाति कम होने का सबसे बड़ा कारण इनका शिकार होना माना जाता है।

कस्तूरी मृग का जब शिकार किया जाता है तो वह लंबी छलांगें मारता है और पीछे पलटकर देखता है। इस स्वभाव के कारण वह सरलता से शिकारी का निशाना बन जाता है। कभी-कभी उसकी छलांगें पंद्रह मीटर से लेकर अट्ठारह मीटर तक ऊंची होती हैं। मादा कस्तूरी मृग की उम्र मात्र तीन वर्ष होती है। मादा मृग एक वर्ष की उम्र से ही बच्चे देने लगती है। प्रतिवर्ष मादा मृग के एक या दो बच्चे होते हैं। यदि माता मृग के दो बच्चे हों, तो वह उन्हें एक ही स्थान पर नहीं वरन अलग-अलग स्थानों पर रखती है।

मृग के बच्चों के शरीर पर हिरन की तरह धब्बे होते हैं। यह प्राय: पहाड़ी दरारों या झाड़ियों के नीचे खड्डों में रहते हैं। मृग

ज्यादा से ज्यादा झुंड में रहना पसंद करते हैं। यह पूरी तरह से शाकाहारी होते हैं। मगर यह मृग अपनी नाभि से निकलने वाली खुशबू को ढूंढने की वजह से जंगल में भटकते रहते हैं।

❋ कस्तूरी एक विशेष प्रकार के हिरण की ग्रन्थियों से प्राप्त की जाती है।

❋ कस्तूरी मृग प्रकृति के सुन्दरतम जीवों में से एक है इसका वैज्ञानिक नाम मास्कम क्राइसोगौस्टर है। भारत में कस्तूरी मृग, जो कि एक लुप्तप्राय जीव है, कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तरांचल के केदारनाथ, फूलों की घाटी, हरसिल घाटी तथा गोविन्द वन्य जीव विहार एवं सिक्किम के कुछ क्षेत्रों तक ही सीमित रह गया है। कस्तूरी मृग का नाम इसलिए पड़ा कि इसकी नाभि से कस्तूरी निकलती है। कस्तूरी अपनी सुगंध के लिए प्रसिद्ध है तथा दवाइयों में प्रयुक्त होती है। इस मृग की नाभि में अप्रतिम सुगंधि वाली कस्तूरी होती है, जिसमें भरा हुआ गाढ़ा तरल पदार्थ अत्यन्त सुगन्धित होता है। कस्तूरी ही इस मृग की विशिष्टता प्रदान करती है। हिमालय क्षेत्र में यह देवदार, फर, भोजपत्र एवं बुरांस के वनों में लगभग ३६०० मी. से ४४०० मीटर की ऊंचाई पर पाया जाता है।

❋ कस्तूरी मृग- कस्तूरी मृग विश्व के सर्वाधिक महंगे जंतुओं में से एक है। हिमालय पर्वतमाला में पाए जानेवाले इन मृगों के पेट में एक विशेष ग्रंथि होती है, जिसकी बदौलत ये सबसे विशिष्ट तथा मूल्यवान जंतु बन गए हैं। इनके शरीर के छोटे से पाउचनुमा हिस्से में एक भूरे रंग का स्रावण पैदा होता है जिसे कस्तूरी कहते हैं। कस्तूरी का मात्र एक कण अपने वजन की कोई खास मात्रा गंवाए बगैर ही ५०००० घनफुट से अधिक हवा को महका सकता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि कस्तूरी मृग सदा इस तीव्र सुगंध से यहां-वहां भागता रहता है।

❋ कस्तुरी मृग नेपाल, भूटान, तिब्बत आदि देशों में पाया जाता है। इनमें सबसे छोटा लेसर मलय कस्तूरी मृग है। इसकी ऊंचाई मात्र २६ सेमी है।

❋ **सांभर -** सांभर- सांभर हिरण भारतीय उपमहाद्वीप के जंगलों के मूल निवासी है जो पर्णपाती वन और घास के मैदान में विचरण करते हुए आसानी से देखे जा सकते हैं, सांभर हिरण शेरों और बाघों के मुख्य शिकार हैं।

भारतीय हिरणों की प्रजाति में सांभर सबसे बड़ा है। युवा नर सांभर का वजन २२५ से ३२० किलोग्राम तक हो सकता है। इनकी पूंछ तीस सेंटीमीटर लंबी होती है। पूंछ सहित इसके पूरे शरीर की लंबाई १८० से २१० सेंटीमीटर तक होती है। गर्दन और गले के ऊपर लंबे बाल उगे होते हैं। गर्मी के मौसम में इनके अधिकांश बाल झड़ जाते हैं। सांभर का रंग सामान्यत: गहरा भूरा होता है। मादा का रंग नर की अपेक्षा हल्का होता है। इनके बच्चे लाल रंग के होते हैं। हिरणों में सांभर के सींग सबसे बड़े होते हैं। सांभर का सिर और गर्दन बहुत खूबसूरत होती है। इनके बेशकीमती सींगों के कारण शिकारियों की इन पर बड़ी बुरी नजर होती है। सर्दी के मौसम में भी इन्हें गर्मी का एहसास होता है और राहत पाने के लिए ये जलाशयों या तालाबों में घुस जाते हैं। सांभर को समूह में रहना पसंद नहीं है। मध्य और दक्षिण भारत में पाए जानेवाले सांभर अप्रैल के महीने में अपने पुराने सींगों को गिरा देते हैं। मई में पुराने सींगों के स्थान पर नए सींग उगने शुरू हो जाते हैं।

सांभर की नस्लें भारत में सभी जगह पाई जाती हैं। भारत के अलावा ये श्रीलंका, म्यामांर और फिलीपींस के पूर्वी जंगलों में पाए जाते हैं। ये पशु जंगली फल, घास और पत्ते आदि खाकर अपना निर्वाह करते हैं। चरने के लिए ये मुख्यत: रात में निकलते हैं। दिन में जंगलों के अंदर विश्राम करना इनकी आदत होती है। इनकी देखने की शक्ति मध्यम दर्जे की होती है,

जबकि सुनने की शक्ति बहुत तीव्र होती है।

❊ **शहामृग** की आवाज सिंह के समान होती है।

❊ **संगाई-** संगाई हिरण गंभीर रूप से लुप्तप्राय होनेवाली प्रजाति है। आज केवल मणिपुर के कबुल लांजाओ नॅशनल पार्क में मिलती है, यह एक मात्र भारत की नृत्य करनेवाली हिरण है।

❊ **चिंकारा -** छींक जैसी आवाज करने के कारण ही इसका नाम चिंकारा पड़ गया है। इसका आवास बिखरी झाड़ियां, विरल जंगल ही हैं। यह साधारणत: वनों के अंदर सात-आठ तक छोटी-छोटी टोलियों में रहते हैं। यह इतना तेज दौड़ता है कि शिकारी कुत्ते भी इसे दौड़कर पकड़ नहीं पाते हैं।

❊ **काला हिरन-** जैसा कि नाम से ही ज्ञात होता है कि काले रंग का हिरन है। इसका काला रंग इसकी खूबसूरती में चार-चांद लगा देता है। यह केवल भारत में पाया जाता है। इसका आवास लंबी घास से ढकी नदी-घाटियों में है। इसके शरीर पर घनी काली खाल होती है। इसके सींग सुंदर, सीधे और रीढ़ की तरह छल्लेदार होते हैं।

काला हिरण हमारे देश के दुर्लभ और सुन्दर जानवरों में से एक है। खुले घास के मैदानों में इसे सरपट भागते हुए और चौकड़ी भरते हुए देखना अपने आप में एक सुखद अनुभव है। काले हिरणों की संख्या आज हमारे देश में काफी कम हो गई है लेकिन आज से लगभग चालीस वर्ष पूर्व तक यह भारत के सम्पूर्ण मैदानी ग्रामीण क्षेत्रों में पाया जाता था। ज्यों-ज्यों आबादी बढ़ती गई काले हिरणों के रहने के लिए सुरक्षित स्थान घटते चले गए। शिकारियों ने बड़ी संख्या में निर्दयता पूर्वक इन सुंदर प्राणियों का शिकार किया। इसी कारण अधिकांश भागों में काले हिरण कम होते चले गए। काले हिरण घने जंगलों में नहीं बल्कि खुले और झाड़ीदार घास के मैदानों में रहना पसन्द करते हैं। जवान नर काले हिरन की पूरी पीठ, गर्दन का ऊपरी भाग, चेहरा और पैरों का बाहरी भाग काले रंग का होता है। शरीर के नीचे का भाग सफेद होता है। आंखें बड़ी और सुन्दर होती हैं। आंखों मे आसपास सफेद रंग का खूबसूरत घेरा होता है और इसके आगे के भाग में लम्बी ग्रंथि जैसी निकली दिखाई देती है। मादाओं और बच्चों की पीठ का रंग हल्का पीला तथा नीचे का भाग सफेद होता है सींग केवल नर काले हिरणों के होते हैं मादाओं के नहीं। काले हिरण के सींग कड़े काले छल्लेदार और लहरदार होते हैं। मादा किसी भी मौसम में एक बार में एक या दो बच्चों को जन्म देती है। इस जाति के हिरण (एंटी लोप) अफ्रीका महाद्वीप में पाए जाते हैं। भारत में काले हिरण के संरक्षण पर काफी बल दिया जा रहा है।

❊ खाल और मांस के लिए इसका खूब शिकार किया गया। उत्तर-पूर्वी को छोड़कर देशभर में पाए जानेवाले इस जानवर का इतना शिकार हुआ कि इसके अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा। इस कारण भारत सरकार ने इसे संरक्षित करने की योजना बनाई और वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत इसका बचाव हुआ। आज भारत में इसकी संख्या लगभग ५० हजार है। अपने पड़ोसी देश पाकिस्तान और नेपाल के नेशनल पार्क में भी काला हिरण पाया जाता है। यह हमेशा १५-२० के झुंड में रहता है। यह घास के मैदान में पाया जाता है और इसका आहार घास, फली, फूल और फल हैं, यानी यह शाकाहारी जानवर है। इसकी उम्र १६ वर्ष होती है। अपने देश में तो काला हिरण धार्मिक आस्था से भी जुड़ा हुआ है। धर्म ग्रंथों में इसे चंद्रमा की सवारी भी कहा गया है।

बांधवगढ़ नेशनल पार्क, भरतपुर बर्ड सैंक्चुरी, कॉरबेट नेशनल पार्क, गिर फॉरेस्ट नेशनल पार्क, कान्हा नेशनल पार्क,

रणथंभोर नेशनल पार्क समेत तमाम प्रमुख नेशनल पार्क और चिड़ियाघरों में काले हिरण के संरक्षण के लिए विशेष व्यवस्था की गई है।

✻ **पेरे डेविड -** इस स्तनधारी जीव का इतिहास काफी रोचक है। वास्तव में मृग की यह प्रजाति सबसे पहले चीन के दलदली मैदानी इलाकों में पाई जाती थी। एक सदी से पहले जब चीन के चावल उत्पादक क्षेत्रों में इस हिरण की प्रजाति ने बसना शुरू कर दिया तो फसल को होनेवाले नुकसान के कारण बड़ी संख्या में इन हिरणों को मार दिया गया। इतने अधिक मृग मार दिये गये कि यह प्रजाति लगभग विलुप्त ही हो गई थी। परंतु चीनी राजा की निजी शिकारगाह में कुछ हिरण शेष थे। राजा ने उपहार स्वरूप कुछ हिरणों के जोड़े इंग्लैंड में ड्यूक ऑफ ब्रैडफोर्ड को भेज दिये। कुछ वर्षों पश्चात सन १९०० में हुए गृह युद्ध के दौरान चीन के बचे-खुचे मृगों को भी मार डाला गया। दूसरी ओर इंग्लैंड पहुंचे मृगों का खूब लालन-पालन किया गया और उनकी संख्या में व्यापक वृद्धि हो गई। सन १९६० में पेरे डेविड मृगों के एक छोटे से समूह को पुन: चीन भेज दिया गया ताकि उनकी मूल जन्म भूमि पर भी उनकी प्रजाति की संख्या में और वृद्धि हो सके। आमतौर पर इस प्रजाति के मृग की ऊंचाई १.१५ मीटर तथा वजन २४० किलोग्राम होता है।

✻ **यामीन -** हिरन प्रजाति का यह प्राणी अपने देश में मणिपुर में पाया जाता है। अब यह दुर्लभ है। इसका आवास झाड़ियोंवाले जंगल, नदियों और पहाड़ों की ऊंची-नीची जमीन है। इसके सींगों की शाखाएं एक-दूसरे से अलग होती हैं। भौहों से लेकर अंतिम छोर तक उन पर लगातार छल्ले से बने होते हैं। यह तेज दौड़ाक प्राणी छोटे-छोटे झुंडों में रहता है।

✻ **हिरण-** मौका मिले तो हिरण गोंद व गांजा खाना पसंद करेगा।

✻ हिरण अपनी नाक एवं कान दोनों से सांस लेता है।

✻ हिरन के परिवार के प्राणियों के सींग हड्डियों से बने होते हैं अमूमन साल में एक बार झड़कर फिर उगते हैं। इनमें केवल नर हिरन के ही सींग होते हैं। मादा के नहीं। कॅरिबाऊ व रेनडियर अपवाद हैं।

✻ हिरण ४८ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से लगातार ३२ घंटे दौड़ सकता है।

✻ हिरणों में सर्वाधिक उम्र प्राप्त की है एक रेड डीयर ने।

✻ **जंगली गधा-** भारतीय जंगली गधे केवल गुजरात के कच्छ के लिटिल रन में ही पाए जाते हैं, भारतीय जंगली गधा अभयारण्य के नमकीन रेगिस्तान, शुष्क घास के मैदान में मिलते हैं लेकिन कुछ हिस्सों से गायब होकर जंगली जानवरों की लुप्तप्राय श्रेणी में आ गये हैं।

✻ **बारहसिंगा -** बारहसिंगा को दलदल हिरण भी कहा जाता है, यह भारतीय उपमहाद्वीप में पाए जानेवाले बड़े हिरण की प्रजातियों में से एक है। दलदल हिरण मध्य प्रदेश के कान्हा राष्ट्रीय उद्यान, असम के २ इलाकों में और उत्तर प्रदेश में केवल ६ इलाकों में ही पाया जाता है।

✻ बारहसिंगा भी हिरन ही होता है। इसके बड़े-बड़े सींग होते हैं। बारहसिंगा की एक खासियत यह होती है कि इसमें नर हिरन की सींग एक मीटर तक लम्बी होती है। मनुष्य ने शिकार करके इन्हें विलुप्त करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

✻ **जंगली कुत्ता (लाल कुत्ता) -** सीटी बजाकर शिकार करते है जंगली कुत्ते।

जंगली कुत्ते अफ्रीका और एशिया के घने जंगलों में पाये जाते हैं। भारत में जंगली कुत्तों की घोल नामक जाति पायी

जाती है। घोल कुत्ते के समान ही मध्यम केंद्र का होता है। यह सियार से बड़ा और भेड़िये से छोटा होता है। देखने में यह घरेलू कुत्तों जैसा ही होता है। लेकिन इसकी पूंछ सियार की तरह लम्बी और उठी हुई होती है। इसका रंग प्राय: बादामी होता है और पूंछ में काली छींट होती है। कुछ जंगली कुत्ते लाल रंग के भी होते हैं। इसलिए इसे लाल कुत्ता भी कह दिया जाता है। भारत में जंगली कुत्ते हिमालय से जुड़े निचले जंगलों में पाये जाते हैं। जंगली कुत्ते समूह में रहते हैं। इनका सामाजिक जीवन भेड़िये के जीवन से काफी मिलता-जुलता है। भारत में घोल समूह के एक दल में जंगली कुत्तों के माता-पिता और उनके बच्चे होते है। इस तरह उनमें कई परिवार शामिल रहते हैं। जंगली कुत्तों के एक दल में एक निश्चित प्रकार का वंशक्रम होता है। नर मादा का जो समूह दल की रचना करता है, उसे प्रमुख का पद मिला रहता है। सम्पूर्ण दल उन्हीं के पीछे-पीछे विचरण करता है अथवा शिकार पर निकलता है। प्रधान जोड़ी के नर को नेता का पद प्राप्त रहता है। जंगली कुत्ते समूह में जाकर शिकार करते हैं। वे जंगलों में रहनेवाले चीतल, सांभर, जंगली सुअर, नीलगाय से लेकर जंगली भैसों का भी शिकार करते हैं। जंगली कुत्तों के शिकार का ढंग बहुत रोचक और बहादुराना होता है। जंगली कुत्ते अपने आकार प्रकार में तो बहुत छोटे होते हैं लेकिन होते बहुत साहसी हैं। इस जानवर में सूंघने की प्राकृतिक शक्ति होती है। जंगली कुत्ते प्राय: दिन में शिकार करते है। शिकार को सुगन्ध के द्वारा ज्ञात कर दल द्वारा उसे घेरने कीयोजना बनाई जाती है। सबसे पहले शिकार को देखकर उसका धीरे-धीरे पीछा किया जाता है।

जिस समय शिकार का घेराव किया जाता है, दल के सदस्य एक विशेष तरह की सीटी बजाकर मुंह से कर्कश आवाज निकालने हैं। इसी आवाज के आधार पर शिकार को चारों तरफ से घेर लिया जाता है। शिकार जब पूरी तरह से घिर जाता है तो उस पर बहुत फुर्ती से आक्रमण कर दिया जाता है। आक्रमण के दौरान पूरे दल की यह कोशिश होती है कि शिकार जमीन पर गिर जाय। शिकार के जमीन पर गिर जाने के बाद पूरा समूह उस पर टूट पड़ता है और उसे एक दिशा की ओर खींचना शुरू कर दिया जाता है। यह खिंचाव तब तक जारी रहता है जब तक कि शिकार पूरी तरह मृत या बलहीन न हो जाए।

❊ जंगली कुत्ता- भारतीय जंगली कुत्ता को ढोल और लाल कुत्ता के नाम से भी जाना जाता है, यह जंगली कुत्ता अत्यधिक सामाजिक पशु है तथा कठोर प्रभुत्व और पदानुक्रम के साथ बड़े परिवारों में रहता है।

❊ **लकड़बग्घा-** एक धूर्त शिकारी- लकड़बग्घा एक खतरनाक जानवर ही नहीं है उसकी चोरी और धूर्तता जगत प्रसिद्ध हैं। कहा जाता है कि यह बनावटी बोली बोलकर लोगों को धोखे में डाल देता है। यह प्राणी अत्यंत भद्दा और बदसूरत होता है। इसके पांव कुत्ते की तरह होते हैं। शरीर पर भूरे या मटमैले रंग के बाल होते हैं जिन पर तिरछी काली पट्टियां होती हैं। कान ऊपर की ओर उठे होते हैं। लकड़बग्घे सड़े-गले पशुओं को खाकर अपना पेट भरते हैं जिससे जंगलों की आसानी से सफाई हो जाती है। लकड़बग्घा रात को ही शिकार में निकलता है। यह बेहद शंकालु स्वभाव का होता है। मरे हुए पशु के पास भी अत्यन्त सावधानी से जाता है।

❊ **भेड़िया -** भेड़िया- यह कुत्ता वंश का सबसे बड़ा जंतु है। यह बड़े बड़े घास के मैदानों में माँद खोदकर या झाड़ियों में, रहता है। यह स्वभाव का बड़ा नीच, भीरु और कायर, किंतु चालाक होता है। बहुधा रात में ही निकलता है। निर्बल जंतु के सामने यह भयानक बन जाता है, पर बलवान के सामने दुम दबाकर भागता है। मनुष्यभक्षी हो जाने पर, यह रात में सोते हुए बच्चों को उठाकर ले जाता है।

भारतीय भेड़िया कुत्तों की प्रजाति का सबसे बड़ा प्राणी है और द जंगल बुक श्रृंखला में भारतीय भेड़िया एक केंद्रीय भूमिका निभाता है। भेड़िया झुंड में रहकर शिकार करते हैं और हर बार लगभग कामयाब होते हैं।

❊ जंगली बिल्ली - भारतीय जंगली बिल्ली थार रेगिस्तान के सूखे और साफ-साफ रेगिस्तान के साथ जुड़े हुए इलाकों में रहती है, यह बिल्ली अक्सर दिन में दिख जाती है और भारत में पाई जानेवाली आठ और जंगली बिल्लियों में से एक है। अन्य बिल्लिया हैं मार्बल बिल्ली, कारकॅल, सुनहरी बिल्ली और मछली खाने वाली बिल्ली।

❊ जैगुआर - जैगुआर अमेरिका की सबसे बड़ी और ताकतवर जंगली बिल्ली है। एक समय यह उत्तर में यूनाइटेड स्टेट्स तक में पाई जाती थी लेकिन अब यह मैक्सिको तथा मध्य व दक्षिण अमेरिका तक सीमित रह गई है। इसकी ताकत और हिम्मत के कारण प्राचीन माया इंडियन इसका बड़ा रौब मानते थे और इसे देवता की तरह पूजते थे। जैगुआर तंदुए से भारी होता है। हालांकि दोनों जानवरों का रंग लगभग एक जैसा होता है। जैगुआर के धब्बे बड़े होते हैं।

जैगुआर को मछली बहुत पसंद है। वह अपनी पूंछ पानी में लटका कर हिलाता है। जब मछली पूंछ को काटती है तो वह उसे पानी से बाहर खींच लेता है। मछली के अलावा जैगुआर हिरण, जंगली सूअर और कछुए जैसे छोटे-बड़े जानवर भी खाता है। शिकार मारने के बाद जैगुआर उसका शव खींचकर सुरक्षित जगह पर ले जाकर गाड़ देता है। फिर वह उसे खाने के लिए वहां कई बार आता है।

❊ उदबिलाव - चालाक ऊदबिलाव- संसार में ऊदबिलाव की सिर्फ तीन प्रजातियां पाई जाती हैं। पहली प्रजाति यूरेशियन ऊदबिलाव की है। यह प्रजाति भारत के साथ पूरे सूरो एशिया के शुष्क-जंगली इलाकों में पाए जाते हैं भारत में यूरेशियन ऊदबिलाव जम्मू-कश्मीर व दक्षिण भारत के राज्यों में भी पाए जाते हैं दूसरी प्रजाति के ऊदबिलाव उत्तर भारत के मैदानी भागों के अलावा दक्षिण भारत में भी देखे जा सकते हैं। तीसरी प्रजाति के ऊदबिलाव हिमाचल प्रदेश व असम की जंगली पहाड़ियों में विचरण करते हैं। ऊदबिलाव मनुष्य आबादी से दूर नदी, झीलों और समुद्र के पास मांद बनाकर रहते हैं। ऊदबिलाव के शरीर का आकार तीन से पांच फुट तक होता है। इसका वजन दस से तीस किलोग्राम तक हो सकता है। फिर भी ये बहुत फुर्तीले होते हैं। इन्हें मछलियां बेहद पसंद होती हैं।

❊ लजार बंदा - शर्मीली बिल्ली या लजार बंदा - बिल्ली के आधे आकार का एक छोटा जानवर है। इसके कान और दुम छोटे होते हैं तथा आँखों के चारों ओर एक भूरा वलय जैसा होता है। यह निशाचर तथा सर्वभक्षी है और घने जंगलों में निवास करता है। इसकी चाल मंद होती है, किंतु पेड़ों पर बड़ी तेजी से चढ़ जाता है। यह बंगाल से बोर्नियो तक पाया जाता है। लोरिस की दूसरी जाति छोटी होती है। वह दक्षिणी भारत और लंका के जंगलों में पाई जाती है। इसकी आँखे बड़ी सुंदर होती है।

❊ प्युमा - माउंटेन लायन- एक अन्य बड़ी अमेरिकन बिल्ली है प्यूमा जिसे कई बार मादा सिंह समझ लिया जाता है। इसके कंधे ताकतवर और बड़े पंजों में लम्बे नाखून होते हैं, जिनमें फाड़ डालने की जबरदस्त शक्ति होती है। प्यूमा पीले-भूरे से लाल तक रंगों के होते हैं। सर्दियों में इनका रंग और गहरा हो जाता है। जैगुआर के विपरीत प्यूमा के शरीर पर धब्बे नहीं होते। प्यूमा अकेले जिंदगी बिताता है और नजरों से दूर रहता है। वह अपने दम-खम के लिए मशहूर है और एक छलांग में ६ मीटर तक कूद सकता है। अगर जरूरी हो तो वह १८ मीटर की ऊंचाई से भी कूद सकता है। जैगुआर की

तरह प्यूमा भी किस्म-किस्म के जानवर खाता है। वह मुख्यत: रात को शिकार करता है और अपने शिकार का बड़ी दूर तक पीछा करता है। इसकी दिल दहला देनेवाली दहाड़ इस बात की पुष्टि करती है कि यह बड़ा खूंखार जानवर है पर यह बिलाव विरले ही मनुष्य पर हमला करता है।

❊ **जंगली सुअर** -भारतीय जंगली सूअर भारत, नेपाल और श्रीलंका के जंगलों में विचरण करते हैं और बाघों के प्रिय शिकार हैं। यह प्रजाति दुनिया में सबसे ज्यादा पाए जानेवाले स्तनधारियों में से एक हैं।

❊ **फैनक लोमड़ी** - लंबे कानवाली फैनेक लोमड़ी - यद्यपि लम्बे कानवाली इस लोमड़ी का आकार बहुत छोटा होता है पर इसके सुनने की शक्ति बहुत विकसित होती है। यह दूसरे जानवरों की आहट १.५ कि.मी. की दूरी से सुन सकती है। बड़ी होने पर इसकी लम्बाई ३६-४० से.मी. और भार केवल १.५ कि.ग्रा. होता है। यह उत्तरी अफ्रीका और अरेबिया के मरुस्थलों में पाई जाती है। यह मांसाहारी होती है और छोटे-जन्तु, पक्षी, अण्डे, कीड़े-मकौड़े खाती है। यह रेत में बने बिलों में रहती है और बिना पानी पीए काफी समय तक रह सकती है।

यह जानवर काफी फुर्तीला होता है और लम्बी दूरी से छलांग लगा सकता है। सामान्यत: ये आठ या दस के झुण्ड में रहते हैं। ये जीव निशाचर होते हैं।

❊ **लोमड़ी** - भारतीय लोमड़ी हिमालय की तलहटी और नेपाल के तेराई के इलाकों से लेकर बंगाल के मुहाने तक मिलती है, यह चूहे, सरीसृप, केकड़ों, दीमक, कीड़े, छोटे पक्षियों और फलों को खाती है।

❊ **सियार** - भेड़ियों की तरह समान होने के बावजूद कुछ पशु विज्ञानी सियार का वर्गीकरण एक अलग वर्ग थोस के रूप में करते हैं। सुनहरा सियार अक्सर अकेले शिकार करता है लेकिन जब उस पर पूरे परिवार की जिम्मेदारी होती है तब वह अपने शिकार करने के कौशल का मिलकर इस्तेमाल करते हैं। सियार महक, स्पर्श तथा हावभाव से प्रेम जताते हैं। उनका एक दूसरे पर लड़ाई के अंदाज में झपट्टा मारना या पटकना प्रेम जताने का ही एक ढंग होता है और फिर वे मनुष्यों की तरह जीवन भर के लिए साथी बनाते हैं।

❊ **पांडा** - बृहद पंडा - यह मांसाहारी वर्ग का प्राणी है। बड़ा पंडा काले भालू के आकार का और भालू सदृश होता है, किंतु मुंह चौड़ा होता है। सिर का रंग सिर धूसर और शेष काला होता है। दाँत बिलकुल सूअर की तरह और पैर बिल्ली जैसे होते हैं। शरीर के रंग के कारण इसे चितकबरा भालू कहा जा सकता है। बृहद पंडा का वजन ६७ किलो से अधिक लंबाई ४ फुट और ऊंचाई २८ इंच होती है। समूर लंबे और घने होते हैं, जिनसे इसका रंग सुंदर और आकर्षक होता है। पैर, कंधे तथा कान काले होते हैं और आँखों के पास काले छल्ले होते हैं। शेष शरीर सित धूसर और पूंछ छोटी होती है। यह शाकाहारी है और बाँस की जड़ और पत्तियों पर अपना निर्वाह करता है।

❊ विशाल पांडा- पांडा दिन में १० घंटे सोता है। उसके पास सिर्फ दो ही काम होते हैं, सोना और भोजन की तलाश करना। वह खूब सारा बांस खाते हैं और १४ घंटों तक चबाते रहते हैं। ये दक्षिण-केंद्रिय चीन के मूल निवासी हैं।

❊ **रेड पांडा** - सिक्किम और अरुणाचल में मिलनेवाला रेड पांडा, सोता है पेड़ की डालियों पर

रेड पांडा यह हमारे देश में सिक्किम एवं अरुणाचल प्रदेश के अलावा भूटान, नेपाल, म्यांमार और चीन के कुछ भागों में रहता है। इसके शरीर पर गहरे लाल रंग के बाल होते हैं, शायद इसीलिए इसे रेड पांडा कहा गया।

रेड पांडा और जायंट पांडा में बहुत अंतर होता है। सबसे बड़ा अंतर यह है कि रेड पांडा खूबसूरत बिल्ली के समान दिखाई देता है। तो जायंट पांडा भालू जैसा लगता है। वैसे रेड पांडा भी दुर्गम पर्वतों के बीच बांस जैसे वृक्ष वाले घने शीतोष्ण जंगलों में रहता है। पर्वतों में इसका आवासीय क्षेत्र समुद्रतल से १५०० मीटर से लेकर ४८०० मीटर की ऊंचाई के मध्य होता है। बीसवीं शताब्दी के आरंभ तक यह जीव हिमालय में कश्मीर से लद्दाख के भूभाग में पाया जाता था। इसका सिर बहुत मजबूत होता है। उस पर बड़े-बड़े सफेद कान प्राय: सतर्क नजर आते हैं। इसकी छोटी सी थूथनी देखने में छोटे भालू जैसी लगती है।

❊ **पोलर बीयर -** लेफ्ट हैंडेड होते हैं।

❊ **भालू -** भारतीय काला भालू को आलसी भालू के रूप में भी जाना जाता है। काला भालू भारत में बहुत ही ज्यादा खतरनाक जंगली पशु के रूप में सूचीबद्ध हैं। यह मुख्यत: शाम के समय अधिक सक्रिय होते हैं और दीमकों को अपना भोजन बनाते हैं। भालू के ४२ दांत होते हैं, जबकि आदमी के ३२ दांत होते हैं।

❊ भालू घायल होकर आदमी की तरह रोता है।

❊ भालू चोट लगने पर बच्चे की तरह रोता है और पैदा होने के दो महीने बाद तक सोता रहता है।

❊ भारतीय भालू को मीठे फल बहुत प्रिय हैं। शहद को भी वह बड़े चाव से खाता है। मधुमक्खी के छत्तों की खोज में वह प्राय: गांवों में घुस जाता है। क्रोधित मधुमक्खियां उस पर आक्रमण करती हैं, किंतु उसके शरीर के लंबे झबरे और रूखे बालों पर मधुमक्खी के डंकों का कोई असर नहीं होता। हमारे देश में जब महुआ फूलता है तो भालू प्रात:काल के समय गिरे हुए फूलों को खाने के लिए आते हैं। कभी-कभी भालू स्वयं महुए के वृक्ष पर चढ़ जाते हैं और डालियों को हिला कर फूल गिराते हैं। आडू, सेब, खुबानी आदि पर्वतीय फलों के बागानों में भी भालू रात को प्राय: धावा बोलते हैं। उनकी रातभर चौकसी करनी आवश्यक हो जाती है। पकी हुई फसल को भी वे काफी हानि पहुंचाते हैं। मीठे फलों की खोज में भालू जंगलों में जगह-जगह फिरता है और मौसम के अनुसार रसीले फलों को पकने पर वहां पहुंच जाता है।

भालू अड़तालीस किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ लेता है। भालू के पिछले पांव अगले पांव से अधिक लंबे होते हैं, इस कारण वह ढलान पर तेजी से नहीं दौड़ सकता, पर कभी-कभी गोलमटोल बनकर हल्के ढाल में लुढ़क जाता है। भालू के पंजे में बोथरे नाखून होते हैं, जो खुदाई के लिए उपयुक्त हैं। वह प्राय: कंद खोदता है। उसका भोजन कंदमूल और फल हैं। वैसे वह फल खाकर ही संतुष्ट हो जाता है। जब फल नहीं मिलता है, तो वह कंद खोद कर खाता है। नदियों के किनारे मछली पकड़कर भी वह अपना पेट भर लेता है। कीड़े-मकोड़े भी उसके भोजन में सम्मिलित हैं। चींटियों तथा दीमकों को भी वह नहीं छोड़ता है।

❊ बसंत में मादा भालू को जंगल में किसी ऐसी जगह जाकर छिपना पड़ता है, जहां परिवार के प्रमुख से उसकी मुलाकात न हो और पतझड़ में अपने बच्चों के साथ। सर्दियों में मादा भालू बच्चों को जन्म देती है। नर भालू हमेशा बच्चों को तिरछी नजर से देखता है। अक्सर उन्हें अपने भारी पंजों के नीचे लाने की कोशिश भी करता है, परंतु सतर्क मां बच्चों को अपने बाप के पास कभी भी फटकने नहीं देती। जब कभी भी पिता पास आता तब मां उसके और अपने अंधे बच्चों के बीच आ जाती है। नर भालू डील-डौल में मादा भालू से अधिक ताकतवर होता है, परंतु चेत जाने पर मादा

भालू साक्षात चंडी का रूप धारण कर लेती है। यह ऐसा जमकर मुकाबला करती है, ऐसे जबर्दस्त घूंसे मारती है कि भालू हार जाता है। अपनी घरवाली के मुक्कों से बचने के लिए नर भालू अपने पंजों से पहले सिर को छिपाता है और पिछले पैरों के बल पीछे हट जाता है।

भालुओं के पारिवारिक झगड़े तब तक चलते रहते हैं, जब तक कि नर भालू हार नहीं मान लेता। नर भालू मादा भालू से हमेशा आतंकित रहता है और अगर बच्चे अपनी मांद से बाहर निकल आते हैं और अपने पिता की तरफ आने लगते हैं तो मादा भालू के डर से उन बच्चों से दूर भागता है और सिर को पंजों से ढंके हुए डरता-डरता पीछे मादा भालू की तरफ देखता रहता है। नर भालू का सदैव ही प्रयास रहता है कि वह अपने बच्चों को मार डाले।

✻ स्लॉथ भालू का पसंदीदा भोजन शहर और दीमक है।

✻ पेड़ पर सोते काले भालू किसी वक्त पेड़ पर जाकर सोने लगते हैं।

✻ घोड़े की ही गति से भालू भी दौड़ सकता है।

✻ **भूरा भालू-** भूरा भालू लद्दाख में पाए जानेवाला एक बहुत दुर्लभ जंगली जानवर है, जो ज्यादातर इस क्षेत्र में सुरू, जांस्कर, द्रास और कारगिल के चार प्रमुख क्षेत्रों में घूमता है। हिमालयी भूरे भालू गंभीर रूप से लुप्तप्राय: हो गए हैं और इस क्षेत्र में सबसे बड़ा स्तनपायी है।

✻ **शेरपूछ बंदर -** शेर जैसी पूंछ वाला बंदर एक बहुत ही आकर्षक बंदर है। यह दक्षिण भारत के पश्चिमी घाटों में ही पाया जाता है। शेर-पूंछ का बंदर भारत के वर्षा वन क्षेत्रों में निवास करता है।

✻ शेरपूंछ बंदर- इस बंदर की पूंछ शेर जैसी, तैराकी में अव्वल

भारत में कई पशु-पक्षी विलुप्त होने की कगार पर हैं।

गर्दन पर चांदी की तरह चमकीले घने बाल, पूंछ लंबी और गुच्छेदार, बिलकुल शेर की तरह। गालों में भोजन संग्रह करने के लिए थैली जैसी विशेष संरचना। मनुष्यों के साथ दोस्ती इन्हें जरा भी पसंद नहीं। अजीबोगरीब होते हैं शेर जैसी पूंछ वाले बंदर। लेकिन इनकी संख्या भारत में तेजी से घटती जा रही है।

ये बंदर भारत के कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु आदि राज्यों के सदाबहार जंगलों में पाए जाते हैं। ये १०-२० की झुंड में रहते हैं, जिसका नेतृत्व नर बंदर करता है। हालांकि युवा मादा बंदर झुंड के सभी सदस्यों को एकजुट रखती हैं। मध्यम आकारवाले इन बंदरों के शरीर पर चमकदार काले रोएं होते हैं। ये अपना ज्यादातर समय ऊंची डालियों पर बिताते हैं। ये कुशल तैराक भी होते हैं।

ये न केवल फल, बीज, फूलों की कलियां, पत्तियां चाव से खाते हैं, बल्कि कीड़े-मकोड़ों, छोटी चिड़िया और छोटे-मोटे जानवर भी चट कर जाते हैं। जब ये जंगल में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हैं तो झुंड को एकजुट रखने से लिए नर बंदर तेज आवाज लगाता है। माना जाता है कि इनके आवास को खेती की जमीन में तब्दील कर वहां चाय, कॉफी, सागौन आदि उगाया जा रहा है।

✻ **गौरील्ला -** गुरिल्ला- बन्दर का यह रिश्तेदार अपने भारी भरकम शरीर के बावजूद केवल झरबेरियां, पेड़ों की नरम छाल और पत्तियां खाकर गुजारा करता है। इसके बड़े-बड़े दांत देखने में चाहे जितने खतरनाक लगें लेकिन यह इनका

इस्तेमाल मनुष्य के विरुद्ध कभी नहीं करता है। गुरिल्ला अपने दांतों को पीसकर और छाती पर मुक्के मारकर झुण्ड के सदस्यों से बात करते हैं और झगड़े भी सुलझाते हैं। गुरिल्ला एक बहुत ही शर्मीला और मासूम सा जानवर है जो जंगल में घुसे मनुष्यों को बड़ी उत्सुकता से देखता है और अन्य आम बंदरों की तरह ही उनकी नकल उतारने की कोशिश करता है।

❋ मध्य अफ्रीका में पश्चिमी लोवलैंड का यह गुरिल्ला उपहार में मिली खाने की हर चीज प्रेम से खाता है। शिकार, जंगलों की कटाई और बीमारी के चलते इस प्रजाति को गंभीर खतरे की श्रेणी दी गई है।

❋ मानव के प्रयोग में लाई जानेवाली गर्भनिरोधक गोलियों का असर गोरिल्ला पर भी होता है। गोरिल्ला को वानर की प्रजाति कहा जाता है बंदर की प्रजाति का नहीं। गोरिल्ला के फिंगर प्रिंट्स मानव की तरह यूनिक होते हैं।

❋ गोरिल्ला एक दिन में ज्यादा से ज्यादा १४ घंटे सोते हैं।

❋ **चिम्पाजी -** चिम्पाजी को अपने बच्चे को तब तक अपना पीठ पर लादे रहना पड़ता है जब तक वह बच्चा ठीक से चलना नहीं सीख जाता।

❋ चिंपाजी- चिंपाजी दूसरे जानवरों की अपेक्षा ज्यादा अच्छी तरह से औजारों का प्रयोग करता है। चिंपाजी अपने चेहरे को आइने में देखकर खुद को पहचान सकते हैं।

❋ **लंगूर -** हनुमान लंगूर- हनुमान लंगूर भारतीय उपमहाद्वीप में पाए जानेवाले सबसे बड़े वानर हैं, यह वानर जंगल के साथ-साथ हल्के जंगली वनवास और शहरी क्षेत्रों में भी आते रहते हैं।

❋ लंगूर- पश्चिमी घाट के जंगलों में रहनेवाले नीलगिरी लंगूरों की आंत में परजीवी बैक्टीरिया की तेरह किस्मों का पता लगा है जो मनुष्य और मवेशियों को संक्रमित करने के लिए जाने जाते हैं। ट्रिच्यूरिस ट्रिच्यूरा के बाद स्ट्रॉंगलॉयड् स एसपी नामक परजीवी की मौजूदगी इन लंगूरों की आंतों में सबसे अधिक पायी गई है। ट्रिच्यूरिस ट्रिच्यूरा एवं स्ट्रॉन्गलॉयड्स एसपी. के अलावा बैक़्टीरिया की इन किस्मों में एंटेरेबियस एसपी., ब्यूनोस्टोमम एसपी., गॉग्निलोनेमा एसपी., ट्राइकोस्ट्रोंगाइलस एसपी., ओएसफगोस्टोमम एसपी., ऐस्क़ेरिस एसपी., हाइमेनालेपिस नाना, स्कीस्टोसोमा एसपी., साइक्लोस्पोरा एसपी., निओबैलेंटिडियम एसपी. और कॉकसीडिया एसपी. शामिल थे। लंगूरों की आंत में मौजूद परजीवियों का पता लगाने के लिए फीकल फ्लोटेशन एवं सेडिमेंटेशन तकनीक से नमूनों का विश्लेषण किया गया है। परजीवी बैक्टीरिया का प्रभाव मानवीय दखल से ग्रस्त वन्य क्षेत्रों में अधिक पाया गया है। इसी तरह मनुष्य एव मवेशियों की मौजूदगीवाले जंगल के बाहरी हिस्सों में भी इन परजीवियों की मौजूदगी अधिक दर्ज की गयी है। हालांकि लॉयन टेल मकाक की अपेक्षा नीलगिरी लंगूरों पर वन क्षेत्रों के विखंडन का असर नहीं पड़ा है। वैज्ञानिक इसके लिए मानव संशोधित वातावरण में नीलगिरी लंगूरों की जीवित रहने की क्षमता को जिम्मेदार मान रहे हैं।

❋ लाल मुंह का बन्दर एक मिनट में लगातार तीन तीन मीटर की ८ छलांगे लगा सकता है।

❋ भारत में पवित्रता प्रतीक- लंगूर-प्रेस्बाइटिस वंश के लंगूर अथवा पत्तियां खानेवाले लंगूर (जिसे कभी पायगाथ्रिक्स जाति में भी रखा जाता है) की लगभग १४ प्रजातियां हैं, जिसमें भारत का पूज्य वानर हनुमान लंगूर (पी.एंटेलस) भी शामिल है। इस वंश के सदस्य समूह में रहनेवाले, दिनचर और मूलत: वृक्षवासी होते हैं। इन वानरों की पूंछ लंबी, शरीर सुतवां और हाथ-पैर लंबे व पतले होते हैं। अलग-अलग प्रजातियों के अनुसार इन लंगूरों का सिर और शरीर ४० से ८०

सेमी लंबा और पूंछ लगभग ५० से ११० सेमी लंबी होती हैं। इन बंदरों के लंबे रोये होते हैं और इनकी कई प्रजातियों में तो सिर पर लंबे बालों की टोपी या कलगीनुमा संरचना होती है। वयस्कों के चेहरे का रंग सामान्यत: काला होता है।

✻ **सुनहरा लंगूर-** सुनहरा लंगूर पश्चिमी असम के एक छोटे से क्षेत्र में पाया जानेवाला पुराने विश्व की बंदर प्रजाति है, यह केवल दक्षिण में ब्रह्मपुत्र नदी के समीप और पूर्व में मानस नदी के पास के जंगलों में ही रहता है।

✻ **मकड़ी बंदर -** मकड़ीबंदर को अंगूठा नहीं होता किंतु यह अपनी पूंछ के लचकदार सिरेसे भोजन को अपने मुंह तक पहुंचाता है।

✻ **वनमानुष -** जैसे पुरुषों के बाल झड़ते हैं ठीक उसी तरह नर वानर के भी सिर के बाल झड़ते हैं, वे भी गंजे होते हैं।

✻ दक्षिण अफ्रीका के पहाड़ी स्थलों पर उल्लू की आकृति के अनोखे बंदर रहते हैं। वे ऊंचे-ऊंचे वृक्षों पर अनोखे तथा मजबूत घोंसले बनाकर रहते हैं। एक घोंसले में चार या पांच बंदर रहते हैं। वैसे यह घोंसला सूखी लकड़ियों और मिट्टी से बना होता है।

अल्बर्ट द्वितीय अंतरिक्ष की सैर करनेवाला पहला बंदर था, जिसे अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा द्वारा १४ जून, १९४९ को छोड़ गए वी-२ रॉकेट में बैठकर ऊपर आकाश में जाने का मौका मिला था।

✻ **मैन्ड्रिल (कोलंबस बंदर) -** वर्षा वनों में पाए जानेवाले तीन फुट लंबाई के मैंड्रिल विश्व के सबसे लंबे-चौड़े बंदर हैं, जिन्हें गलती से वनमानुष समझ लिया जाता है। इनमें नर का वजन औसत इंसान के बराबर, ५० किलो तक देखा गया है।

✻ मंद्रिल बंदर का नाक लाल, गाल नीला और दाढ़ी नारंगी रंग का होता है। कोलंबस बंदर के शरीर में काले रंग का फर और उसके चारों तरफ सफेद धारीदार रंग होता है। जंजीबार ही ऐसा क्षेत्र है जहां किर्क रेड कोलंबस बंदर पाया जाता है। स्नो बंदर वैसे क्षेत्र में पाए जाते हैं जहां की तापमान शून्य से १० डिग्री तक कम होता है। स्पाइर बंदर ज्यादातर ३० के समूह में रहते हैं और इन्हें पेड़ों के कुशल उछलकूद के लिए जाना जाता है।

✻ इन्द्रधनुष रंगोंवाला बंदर मैंड्रिल - पश्चिमी अफ्रीका के जंगलों में बहुरंगी रंगों का एक विलक्षण बंदर मैंड्रिल पाया जाता है। मैंड्रिल का चेहरा ऊपर से लेकर नाक तक गहरा नीला है। चेहरे के बीचों बीच माथे के बीच से लेकर नाक की कोर तक गहरे लाल रंग की धारी होती है। इसके जबड़े का रंग गुलाबी होती है। इसकी दाढ़ी पीली तथा चोटी काली होती है। नितंब तथा जांघों की भीतरी त्वचा का रंग सिंदूरी होती है। ऊपरी हिस्से के बाल कुछ हल्के रंग के होते हैं और हाथ-पांव भी रंग-बिरंगे होते हैं।

मैंड्रिल का मुंह कुत्ते जैसा होता है। आंखें मनुष्य की आंखों की तरह सामने की तरफ देखनेवाली और आसपास होती हैं, जो गड्ढों में धंसी हुई-सी लगती है। इसकी भौहें ऊंची होती हैं।

भारी चेहरेवाले इस बंदर के चेहरे तथा हाथ-पैर पर बाल नहीं होते। इसके कंधों, भुजाओं और स्तनों की स्थिति भी मनुष्य जैसी ही रहती है। इसलिए सूडान के लोग इसे छोटा आदमी भी कहते हैं। मैंड्रिल की लंबाई पूंछ सहित १५० सेंटीमीटर तथा वजन करीब ५० किलोग्राम होता है। इसकी पूंछ छोटी तथा ऊपर की तरफ सीधी खड़ी रहती है, अन्य बन्दरों की तरह नीचे लटकनेवाली नहीं होती।

मादा का रंग नर जितना चटकीला नहीं होता तथा इनका आकार भी नर से अपेक्षाकृत छोटा होता है। मैंड्रिल फल, जड़ें,

कीड़े, रेंगनेवाले छोटे जंतु आदि खाते हैं। ये जमीन, चट्टानों अथवा टीलों आदि पर रहते हैं, पर कभी-कभी ये भोजन की तलाश में पेड़ों पर भी चढ़ जाते हैं।

ये समूह में रहना पसंद करते हैं। इनका एक मुखिया भी होता है, जो इनकी सुरक्षा के लिए रात में अथवा इनके द्वारा किसी खेत पर धावा बोलते वक्त पहरा देता है। खतरे का आभास होते ही मुखिया की आवाज सुनते ही सभी बंदर वहां से भाग खड़े होते हैं।

✲ सबसे बड़ा बंदर मैंड्रल (पश्चिमी अफ्रीका) में पाया जाता है।

✲ **मर्मोसेट बंदर -** दुनिया में सबसे छोटे, पिग्मी मर्मोसेट प्रजाति के बंदर सिर्फ ५.५ इंच लंबे और १२० ग्राम वजनी होते हैं। इनकी पूंछ ६ इंच लंबी होती है। ये वर्षावनों में पाए जाते हैं।

✲ विश्व का सबसे नन्हा बंदर मार्मोसेट- अधिकतम लंबाई ४.५ इंच

बंदर का नाम जेहन में आते ही हमारे सामने भूरे रंग का खिलदड़ा रोटी व अन्य भोज्य पदार्थ चुराकर भागनेवाला या फिर मदारी की डुगडुगी पर तरह-तरह के करतब दिखानेवाला प्राणी याद आ जाता है। अगर कहा जाए कि बंदरों की ही कुछ प्रजातियां इतनी छोटी होती हैं कि उन्हें आसानी से जेब में रखा जा सकता है। जेब में आसानी से आ जानेवाला यह बंदर है मार्मोसेट। इन बंदरों के नवजात शिशु इतने छोटे होते हैं कि इन्हें माचिस की डिब्बी में भी बंद किया जा सकता है।

विश्व के सबसे नन्हें बंदरों (अधिकतम लंबाई ४-५ इंच) के परिवार का यह सदस्य मार्मोसेट मध्य एवं दक्षिण अमरीका के अलावा मैक्सिको के जंगलों में भी मिलता है। कैलीथराईसाइदड़ी परिवार के इन सदस्यों में तीसरा (चर्वक) मोलर में दंत नहीं पाया जाता। शाकाहारी भोजन लेने के कारण इनके दांत भी शाकाहारी भोजन चबाने के अनुकूल ही ढले होते हैं। इनके चर्वक दंत पर मिलनेवाला दंत खिशर (क्राउन) चपटा होता है जिस पर दरारें भी मिलती हैं। ताकि पत्तियों आदि को चबाने में सुविधा हो। मार्मोसेट में अन्य बंदरों की तरह गाल में थैली नहीं मिलती जिसके कारण यह अपने गालों में भोजन नहीं भर सकते। इसी कारण यह भोजन को जल्दी-जल्दी चबाकर निगल जाते हैं। मार्मोसेट के परिवार को दो भागों में बांटा गया है। कैलीथरिक्स या सच्चे मार्मोसेट व लियोन्टोसीबस या टेमोरिन जिनके छेदक (कैनाइन) दंत खासे लंबे होते हैं। टैमोरिन मार्मोसेट की कुछ प्रजातियां पनामा व कोस्टारिका में भी मिलती हैं। घने जंगलों में अपना पूरा जीवन बितानेवाला जीव फल, कीड़े, मकड़ियां व चिड़ियों के अंडे ही खाता है। बंदरों की लगभग सभी प्रजातियों के हाथ जिस प्रकार किसी डाल को पकड़कर झूलने व चढ़ने-उतरने के अनुरूप बने होते हैं उस तरह की अनुकूलता मार्मोसेट के हाथों में नहीं पाई जाती।

✲ **बंदर-** अधिक समय तक ये पेड़ों की ऊंची शाखाओं पर बैठे रहते हैं, जहां इनकी लंबी पूंछ संतुलन बनाए रखने में मदद करती है। इनकी कुछ प्रजातियां हिमालय पर्वत श्रेणी में १८०० मीटर तक की ऊंचाई तक भी पाई जाती हैं। इनके मुंह, हाथ और पांव काले रंग के होते हैं जबकि शेष शरीर चांदी के रंग जैसा होता है। भारत, श्रीलंका और इंडोनेशिया में पाये जानेवालो ऐसे बंदरों को हनुमान कहते हैं। ये हमेशा समूहों में ही रहते हैं। दल का सबसे अच्छा योद्धा दल का सरदार होता है। सरदार ही सबसे पहले भोजन करता है। ये पेड़ की पत्तियां, फल और अनाज खाते हैं। खाने के मामले में ये बहुत स्वार्थी होते हैं। भोजन की कमी की हालत में दल के कमजोर एवं बूढ़े सदस्यों से मजबूत सदस्य खाना छीन लेते हैं।

मादा हनुमान आमतौर पर एक बार में एक ही बच्चा देती है। एक महीने तक बच्चा सिर्फ मां का दूध ही पीता है। ४-६ साल में बच्चा जवान हो जाता है। इनकी आयु लगभग २९ वर्ष होती है। मनुष्यों के बाद संवाद स्थापित करने में दूसरा स्थान इन्हीं का आता है। तरह-तरह की आवाज एवं विभिन्न भाव-भंगिमाओं से ये खुशी, क्रोध, खतरा एवं भूख इत्यादि को प्रदर्शित करते हैं। क्रोध में ये अक्सर अपने दांतों को दिखाते हैं। बंदरों की दीर्घायु का रिकार्ड ५२ वर्ष, यह रिकार्ड बोबो नामक केपुचिन बंदर का है।

❋ **मुरा सैजलबैक टैमरिन -** सर्वभक्षी है यह नया बंदर मुरा सैजलबैक टैमरिन - ब्राजील में अमेजन वर्षा वनों में लंबी पूछवाले बंदर की एक नयी प्रजाति पायी गयी है। इस नये बंदर को सबसे पहले ब्राजील के उत्तर पश्चिमी राज्य अमेजनस में देखा गया। इस वानर प्रजाति का संबंध सैजलबैक टैमरिन बंदरों से जोड़कर देखा जा रहा है। जिनकी पीठ पर विशिष्ठि निशान पाये जाते हैं।

मध्य औक दक्षिण अमेरिका में पाये जानेवाले यह बंदर सर्वभक्षी होते हैं। यह नन्हा मुन्ना बंदर स्लेटी और भूरे रंग का होता है। इसका औसत वजन २१३ ग्राम है। इस बंदर की खासियत है इसकी पूंछ, जिसकी लंबाई ३२० मिलीमीटर तक हो सकती है। २००४ में भारत में ढूंढी गयी अरुणाचल मैकेक्यू, २००५ में बोलीविया में ढूंढ़ी गयी मैडिडी और तंजानिया में पायी गयी किंपुजी शामिल है।

२००८ में अमेजन में उकारी बंदर की एक नयी उपप्रजाति खोज निकाली है। इस नये बंदर के मिलने के बाद कई और प्रजाति के बंदर है जो घने जंगलों में पाये जाते हैं और जिसके बारे में किसी को जानकारी नहीं है।

❋ **शेर/सिंह -** शेर को भले ही जंगल का राजा कहा जाता है, लेकिन वह गैंडे और हाथी से कभी भी लड़ना नहीं चाहता।

शेर भारत में पाए जानेवाली बड़ी बिल्लियों में से एक है जो अब सिर्फ गुजरात के गिर वन में ही जीवित है। गुजरात में आज भारतीय शेरों की ५११ आबादी रहती है।

❋ ९० प्रतिशत शिकार शेरनी ही करती है। शेर तभी आगे आता है जब शेरनी को उसकी मदद की आवश्यकता हो।

❋ एक वयस्क सिंह की दहाड़ को ५ मील दूर से भी सुना जा सकता है।

❋ सिंह- किये जाने वाला कार्य छोटा हो या बड़ा, उसको शक्ति लगा कर करना उचित है ये एक गुण सिंह से सीखियेगा।

❋ जंगल का राजा सिंह ६ से ३० सिंहों के समूह में रहता है।

❋ शेर तीन-चार दिनों में एक बार खाना खाता है।

❋ सबसे पहला सफेद शेर मोहन १९५१ में रींवा के जंगल में मिला। पूरी दुनिया में ५० ही सफेद शेर हैं।

❋ मांसाहारी जीवों में अन्य जानवरों की तुलना में शेर का दिल आकार में सबसे छोटा होता है।

❋ सिंह एक दिन में अर्थात् २४ घंटों में लगभग २० घंटे आराम करता है। सिंह बिना भोजन किये तीन सप्ताह तक जीवित रह सकता है।

❋ शेर जंगल का निवासी है और जंगल का राजा भी है। असल में जंगल में ताकत का कानून चलता है। हर ताकतवर

जानवर अपने से कमजोर जानवर को मारकर खा जाता है। ताकत वाले ऐसे तो बहुत से जानवर हैं, लेकिन शेर सभी से ज्यादा शक्तिशाली होता है। शेर सिर्फ बलशाली ही नहीं, बल्कि बुद्धिमान भी होता है। इन्हीं गुणों के कारण वह जंगल का राजा खुद ही बन बैठता है।

शेर यों तो कई जानवरों पर हाथ साफ करता है, लेकिन वह हिरणों का शिकार अधिक करता है। शेर अगर थोड़ा डरता है तो सींगों वाले हिरणों से। जिर्राफ और जेबरा का शिकार पीछे से नहीं करता है क्योंकि ये जानकर अपनी दुलत्तियों से उसका जबड़ा तोड़ सकते हैं। शेर को घने जंगलों में रहनेवाला जानवर समझा जाता है। शेर ऊंची घास के मैदानों में रहते है लेकिन ऐसी बात नहीं है। शेर खुले स्थानों पर रहना पसन्द करता है। ऊंची-ऊंची घास उसे कतई अच्छी नहीं लगती। घने जंगलों में तो वह केवल शिकार के लिए ही जाता है।

शेर जंगल का ही नहीं, अपने परिवार का भी राजा होता है। यों तो शेर समूह बनाकर रहते हैं और दिनभर जानवरों का शिकार करते हैं, लगभग ऐसा सभी जानवरों का शिकार करते हैं, लेकिन वस्तुत: शेर खुद शिकार नहीं करके इस काम के लिए शेरनी को भेजता है वह आराम से सोता रहता है। शेरनी जब शिकार करके लाती है तो वह शिकार को शेर के सामने रखती है। शेर के खाने के बाद शेरनी खुद खाती है, फिर बच्चों को दिया जाता है। यदि शिकार में मांस कम होता है, तो शेरनी पहले बच्चों को खिलाती है। यदि शेर ज्यादा भूखा हो तो स्वयं ही शिकार करने चल देता है। शेर मांस खाने में भी अव्वल है। अधिक भूख लगने पर वह ८० किलो तक मांस खा जाता है, जबकि शेरनी ४० से ४५ किलों मांस खा सकती है। वैसे शेर को हिरण का मांस बहुत पसन्द है, लेकिन भूख लगने पर वह लोमड़ी, सूअर, जंगली भैंस, जेबरा, जिर्राफ, भेड़िया, सांभर व शुतुरमुर्ग को भी मारकर खा जाता है, भूखा होने पर दरियाई घोड़े को भी नहीं छोड़ता। कुछ शेर, शेरनी के साथ मिलकर शिकार करते हैं। अपने शिकार को खूब दौड़ाते हैं। जब शिकार दौड़ते-दौड़ते खूब थक जाता है तो लम्बी छलांग लगाकर उसकी गर्दन तोड़कर गिरा देते हैं। दरियाई घोड़ा और जंगली भैंसे को भी ऐसे ही मारता है शेर।

❋ कुछ शेर दिन में ५० बार सहवास करते हैं।

❋ ज्यादातर नरों के ४० दांत होते है और मादा के ३६ दांत होते है।

❋ **बाघ -** बाघ या रॉयल बंगाल टाइगर भारत का राष्ट्रीय पशु है जो साइबेरियाई बाघ के बाद दूसरी सबसे बड़ी बिल्ली की प्रजाति है, भारत में आज दुनिया की सबसे बड़ी बाघों की आबादी है।

❋ राष्ट्रीय पशु बाघ- बाघ पैंथरा टाइग्रिस-लिन्नायस, पीले रंगों और धारीदार लोमचर्म वाला एक पशु है। राजसी बाघ, तेंदुआ, टाइग्रिस धारीदार जानवर है। अपनी शालीनता, दृढ़ता, फुर्ती और अपार शक्ति के लिए बाघ को राष्ट्रीय पशु कहलाने का गौरव प्राप्त है। बाघ की आठ प्रजातियों में से भारत में पाई जानेवाली प्रजाति को रॉयल बंगाल टाइगर के नाम से जाना जाता है। उत्तर-पश्चिम भारत को छोड़कर बाकी सारे देशों में यह प्रजाति पायी जाती है। भारत के अतिरिक्त यह नेपाल, भूटान और बांग्लादेश जैसे पड़ोसी देशों में भी पाया जाता है। बाघ की उत्पत्ति उत्तरी यूरेशिया में हुई और यह दक्षिण की ओर चला आया था। वर्तमान में यह रूस के सुदूर पूर्वी इलाके से चीन, भारत और दक्षिण पूर्वीएशिया तक पाया जाता है। इसकी सामान्य रूप से मान्य आठ प्रजातियां होती हैं। इनमें से जावा बाघ, बाली बाघ

और कैरिबयाई बाघ विलुप्त हो गए है।

चीनी बाघ विलुप्त होने के करीब हैं और सुमात्राई, साइबेरियाई एवं भारतीय उपप्रजातियां रेड डेटा बुक में निश्चित तौर पर संकटापन्न बताई गई हैं।

बाघ पर मोटी पीली लोमचर्म का कोट होता है जिस पर गहरी धारीदार पट्टियां होती है। लावण्यता, ताकत, फुर्तीलापन और अपार शक्ति के कारण बाघ को भारत के राष्ट्रीय जानवर के रूप में गौरवान्वित किया है। बाघ की अयाल नहीं होती, लेकिन बूढ़े नर के गाल के बाल अपेक्षाकृत लंबे और फैले हुए होते हैं।

नर बाघ मादा से बड़ा होता है और इसकी कंधे तक की ऊंचाई करीब १ मीटर लंबाई लगभग २.२ मीटर, पूंछ करीब १ मीटर लंबी और वजन लगभग १६० से २३० किलोग्राम या ज्यादा से ज्यादा लगभग २९० किलोग्राम होता है।

सफेद बाघों में सभी पूर्णत: सफेद नहीं होते, इनमें से लगभग सभी भारत में विंध्य और कैमूर पर्वत श्रृंखलाओं में पाए जाते हैं।

शिकार करने और भर पेट खाने के बाद बची हुई लाश को गिद्ध और अन्य अपमार्जकों से छुपाने का जान-बूझकर प्रयास करता है, जिससे भविष्य में भी खाना मिल सके। वह अन्य बाघों या तेंदुओं द्वारा मारे गए शिकार को ले जाने में भी नहीं झिझकता और कभी-कभी वह सड़ा मांस भी खा लेता है। बाघ रात को शिकार करता है। चीतल, हिरन, जंगली सूअर एवं मोर सहित विभिन्न प्रकार के जानवरों को अपना शिकार बनाता है।

विश्व की बाघों की कुल आबादी का ६० फीसदी हिस्सा भारत में ही रहता है। गति और शक्ति का प्रतीक बाघ हमारा राष्ट्रीय पशु भी है। ऐसे में इसको देखने का शौक तो होना स्वाभाविक ही है। देश में सरकार ने ३८ टाइगर रिजर्व घोषित किए हुए है। मध्य प्रदेश में स्थित बांधवगढ़ अपने राष्ट्रीय उद्यान के लिए प्रसिद्ध है और यहां की खासियत बाघ हैं। यहां पर्यटक रॉयल बंगाल टाइगर, तेंदुए, चीतल, सांभर और भी कई प्रजातियों को देख सकते हैं।

❋ एक बार बाघ इंसान पर हमला कर दे तो फिर उसके चंगुल से बचना मुश्किल होता है। वैसे जब कभी बाघ से आमना-सामना हो ही जाए तो सबसे पहले आसपास के सभी लोगों को इकट्ठा होकर शोर-गुल मचाते हुए उसकी ओर बढ़ना चाहिए। उससे बाघ डर जाएगा यह अच्छा तैराक भी होता है, इसलिए पानी में भी इससे बचकर रहना चाहिए। इसकी दहाड़ दो किलोमीटर दूर से ही सुनाई दे जाती है, तभी सतर्क हो जाना चाहिए।

पंद्रह दिनों तक बिना खाए रह सकता है बाघ - बाघ को रोज-रोज शिकार करने की जरूरत नहीं पड़ती। वह पंद्रह-पंद्रह दिन तक बिना खाए रह सकता है। बाघ कभी पांच दिन, कभी दस दिन, तो कभी पंद्रह-पंद्रह दिनों तक बिना खाए रहते हैं। और जिस वक्त खाते हैं तो एक ही वक्त में पैंतीस किलोग्राम तक मीट खा लेते हैं। बाघ का मूल वजन लगभग ३०० किलोग्राम तक होता है और इसके दिमाग का वजन भी ३०० ग्राम तक होता है। इसके दो ऊपरी जबड़े के दांत और दो निचले जबड़े के दांत काफी नुकीले और बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। अगर ये दांत ही न रहें तो बाघ की खुद की जान को ही खतरा हो जाता है।

बाघ जीते हैं १९ वर्षों तक - हम मनुष्यों के फिंगर प्रिंट अलग अलग होते हैं, कुछ वैसे ही बाघ के शरीर पर पड़ी धारियां भी अलग-अलग होती हैं। ये धारियां पेड़-पौधों में शिकार के छिपने में मदद करती हैं। इसकी छाती का हिस्सा व पांव

का रंग सफेद होता है। यह १३ फुट लंबा होता है। बाघिन एक बार में २-३ बच्चों को जन्म देती है। बच्चे शिकार करना अपनी मां से सीखते हैं। ढाई वर्ष की उम्र के बाद वे स्वतंत्र रहने लगते हैं। इसका वैज्ञानिक नाम पैंथेरा टाइग्रिस है। यह वन, दलदलों क्षेत्र तथा घास के मैदान के पास रहना पसंद करता है। इसकी सुनने, सूंघने और देखने की क्षमता तेज होती है। यह अकसर पीछे से हमला करता है। यह काफी तेज दौड़ सकता है, पर भारी शरीर के कारण जल्दी ही थक जाता है। बहुत दूरी तक दौड़कर पीछा नहीं कर सकता। इसलिए अकसर वह छिपकर शिकार के पास पहुंचता है।

✲ **चीता -** चीता भागना शुरू करने के दो सैकेंड के भीतर ही ४५ मील प्रतिघंटा की रफ्तार प्राप्त कर लेता है। चीता एक घंटे में ११२ किमी की रफ्तार से दौड़ सकता है।

✲ छोटी दूरी को पार करने में चीता सबसे तेज जानवर है। ६०० मीटर की दूरी वह ११३ कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से भाग सकता है।

✲ चीता लगभग ६० मील प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ सकता है और सबसे तेज दौड़ने वाला जानवर है।

✲ चीते का बच्चा जब पांच हफ्ते का होता है तो मां उसे शिकार करना सिखाती है। १५ महीने में तो वह अच्छा शिकारी हो जाता है।

✲ चार पैरों के जानवरों में सबसे तेज चीता दौड़ता है जिसकी रफ्तार १०० किमी प्रति घंटा होती है।

✲ चीता चिड़ियों की तरह चहचहाता या कुत्ते की तरह चिचियाता है। यह इतनी तीखी आवाज में होता है कि एक मील दूर से भी सुना जा सकता है।

✲ चीता सबसे तेज यानी ७० मील प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ सकता है, वहीं घोंघे की रफ्तार एक घंटे में ०.०३ मील होती है यानी एक मील भर चल पाने में उसे ३० घंटे लग जाते हैं।

✲ चीता- अंधेरे में भी देख सकता है।

✲ चीता एक घंटे में ७६ और मनुष्य ३६ किलोमीटर दौड़ सकता है।

✲ चीते की दौड़ने की अधिकतम गति ११२ कि.मी. प्रतिघंटा। फर्राटा में श्रेष्ठतम धरती पर सबसे तेज भागनेवाला जीव है चीता जो ११३ किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से भाग सकता है।

✲ चीता शेर की तरह नहीं गुर्राता है बल्कि यह बिल्ली की तरह म्याऊं-म्याऊं करता है।

✲ चीता काफी तेज दौड़ता है। लेकिन इसके दौड़ने के तरीके में एक राज छिपा है। दौड़ते समय चीता अपना गियर बदलता है। चीता की रफ्तार की रिकॉर्डिंग की गई तो मालूम हुआ कि वह १०५ किमी/घंटे की रफ्तार से दौड़ता है। हालांकि जंगली चीतों और चिड़ियाघर के चीतों की रफ्तार में फर्क पाया गया।

✲ टाइगर बहुत कम सोता है, लेकिन वह भी रोजाना करीब १६ घंटे की नींद लेता है।

✲ चीते की दहाड़ ३ किलोमीटर दूर से भी सुनी जा सकती है।

✲ अफ्रीका तथा एशिया के कम घने जंगलों में पाया जानेवाला चीता धरती की सबसे तेज भागनेवाली जीवित मशीन कहा जा सकता है। चीता जब अपने शिकार को दबोचने के लिए उसके पीछे दौड़ता है तो उसकी भागने की गति ९० किलोमीटर प्रति घंटा से भी ज्यादा होती है। चीता इससे बहुत ज्यादा गति अर्थात करीब १४९ किलोमीटर प्रति घंटा की

गति से दौड़ने में भी सक्षम होता है। यही कारण है कि चीता धरती पर सबसे तेज गति से दौड़नेवाला प्राणी है। चीते को एक खूंखार और निष्ठुर प्राणी के रूप में जाना जाता है। इसे प्रकृति की सर्वश्रेष्ठ रचना भी माना जाता है लेकिन प्रकृति की यह सर्वश्रेष्ठ रचना निष्ठुर शिकारियों के कारण विलुप्त के कगार पर खड़ी है। चीते की अधिकांश प्रजातियां या तो पूर्ण रूप से विलुप्त हो चुकी है या उन पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं।

❊ **अमेरिकी चीता-** अमेरिका चीता आमतौर पर दक्षिणी तथा मध्य अमरीका में पाए जाते हैं। इनकी फल पीले या भूरे रंग की होती है, जिस पर काले रंग के धब्बे तथा धारियां होती हैं। इन्हें बिल्ली परिवार की सुन्दर प्रजातियों में से एक माना जाता है। सिर से लेकर पूंछ तक इनकी लम्बाई लगभग १२० सें.मी. होती है तथा इनका वजन लगभग १५ कि.ग्रा. होता है। यह वृक्षों पर चढ़ने में बहुत निपुण होते हैं तथा अपना अधिकतर समय वृक्षों पर ही व्यतीत करे हैं। यह निशाचर जानवर अपने अंगों को फैलाकर वृक्षों की शाखाओं पर सोता है। चीता पक्षियों, छोटे स्तनधारियों तथा रेंगनेवाले जन्तुओं का शिकार करता है। कई बार इसे पालतू जानवरों की तरह रखा जाता है तब इसे शाकाहारी भोजन खिलाया जाता है। मादा चीता ९० दिन की गर्भावस्था के बाद दो शावकों को जन्म देती है।०

❊ **तेंदुआ -** तेंदुआ भारत में लगभग हर जगह पर पाया जाता है यह एक बहुत ही माहिर और शातिर शिकारी है जो अपने शिकार तो अचानक सामने आकर भयभीत करके पकड़ लेता है। तेंदुए वर्षा वनों और शुष्क पर्णपाती वन में रहते हैं और अपनी पेड़ों पर चढ़ाई करने की क्षमता के कारण जाने जाते हैं। भारत में तेंदुए की कुल तीन प्रजाति हैं और वो हैं ध्रुवीय तेंदुआ और चित्तीदार या धूमिल तेंदुआ।

धूमिल तेंदुआ- ढंका या धूमिल तेंदुआ एक छोटे आकार का काले धब्बेवाला जानवर है जो पेड़ों पर रहता है और हिमालय की तलहटी से मुख्य भूमि दक्षिण पूर्व एशिया तक के जंगलों में पाया जाता है।

ध्रुवीय तेंदुआ- ध्रुवीय तेंदुआ मध्य और दक्षिण एशिया की पर्वत श्रृंखलाओं में रहनेवाली एक बड़ी बिल्ली की प्रजाति है जो एल्पाइन और हिमालय की ऊंचाई वाले पर्वत पर रहता है और पर्वतीय हिरनों तथा भेड़ की प्रजाति को अपना शिकार बनता है।

❊ तेंदुए के शरीर पर लगभग तीन हजार चकत्ते होते हैं।

❊ तेंदुआ- लोहे की मोटी-मोटी सलाखें भी तोड़ देता है।

❊ तेंदुए की औसत लंबाई २२० सेमी. होती है। यह पेड़ पर आसानी से चढ़ जाता है।

❊ **जेबरा -** नेचर कम्यूनिकेशंस नाम के जनरल में प्रकाशित अध्ययन में बताया गया है कि परजीवी मक्खियों को खुद से दूर रखने के लिए ही जेबरा के शरीर पर धारियां या क्रास विकसित हुए होंगे। २०१२ में हुए कुछ वैज्ञानिक परीक्षणों में पाया गया कि खून चूसनेवाली ताबानुस और ग्लोसिना मक्खियां इक्विड प्रजाति के जानवरों का खून पीती हैं। जेबरा इसी प्रजाति का जीव है। मक्खी से होनेवाली स्लीपिंग सिकनेस नामक बीमारी इक्विड प्रजाति के लगभग सभी अफ्रीकी जानवरों में पायी जाती है, लेकिन जेबरा में इस बीमारी के मामले काफी कम हैं। ये मक्खियां एक रंग के जानवरों को ज्यादा निशाना बनाती हैं। साथ ही शेर, हाइना और दूसरे शिकारी जानवरों से बचने में भी ये धारियां काम आती हैं। इससे यह शिकारियों की आंखों में धूल झोंक पाता है।

❊ जैंबरे की खाल पर बनी धारियां पूरी जाति में एक भी जैबरे की एक सी नहीं होती। हर जेबरा पर एक अलग प्रकार की धारियां होती हैं।

❊ जेब्रा अफ्रीका में घोड़े की कुल की कई जातियाँ हैं जो अपने शरीर में सफेद और काली धारियों से पहचाने जाते हैं। इसकी धारियाँ अलग-अलग प्रकार की होती हैं और मनुष्य के अंगुलियों के निशान की तरह दो जानवरों की धारियाँ एक जैसी नहीं होती हैं। यह सामाजिक प्राणी होते हैं जो छोटे से लेकर बड़े झुण्डों में रहते हैं। अपने करीबी रिश्तेदारों घोड़े और गधे के विपरीत जेब्रा को कभी पालतू नहीं बनाया जा सका। जेब्रा की तीन जातियाँ जीवित हैं- मैदानी जेब्रा, ग्रॅवी का जेब्रा और पहाड़ी जेब्रा। मैदानी और पहाड़ी जेब्रा हिप्पोटिग्रिस उपवंश के हैं लेकिन ग्रॅवी का जेब्रा डॉलिकोहिप्पस उपवंश का है। ग्रॅवी का जेब्रा गधे की तरह ज्यादा दीखता है और उससे करीबी रूप से सम्बन्धित भी है।

❊ शेर, जंगली लोमड़ी और शिकारी कुत्ते, जेब्रा के सबसे बड़े दुश्मन होते हैं।

❊ जैब्रा इसके शरीर पर बनी धारियों के लिए अत्यंत प्रसिद्ध है। ये अफ्रीका के घास मैदानों में रहता है। जैब्रा के झुंडों को रात के समय चरते देखा जा सकता है। जैब्रा के शरीर पर धारियां होती हैं जो रंगों के एक विशिष्ट शैली को दर्शाती है। जैब्रा झुंड में घूमते हैं और जब ये इकट्ठा होते हैं तो इनके संरक्षकों के लिए अपने जानवर को पहचानने में बेहद कठिनाई आती है क्योंकि किसी को जैब्रा के बीच भिन्नता करना बहुत मुश्किल होता है अत: परभक्षी जानवर अपने खाने के लिए किसी जैब्रे का चुनाव करना काफी मुश्किल होता है। पक्षी जानवरों को केवल काले और सफेद रंग में प्रतिरूप ही दिखाई देते हैं। जैब्रा के बारे में विशेष बात यह है कि सभी जैब्रा की धारियां एक जैसी नहीं होतीं। यद्यपि सरसरी नजर से देखने पर वे एक जैसे दिखाई देते हैं परंतु वैज्ञानिक उनकी धारियों की चौड़ाई के आधार पर उनमें अंतर कर सकते हैं जैब्रा की विभिन्न प्रजातियां जैसे बुरशेल और इनकी उप प्रजाति चैपमेन की धारियों का ढांचा अलग अलग तरह का होता है।

❊ दुर्लभ पोल्का डॉटवाला जेब्रा - केन्या के राष्ट्रीय वन्यजीव अभयारण्य में एक नवजात जेब्रा के शरीर पर धारियों की जगह पोल्का डॉट्स देखे गए। पहली बार इसे देखने के लिए अभयारण्य में भगदड़ मच गई थी। जेब्रा का रंग काला है और शरीर पर सफेद पोल्का डॉट्स हैं। जेब्रा एक दुर्लभ बीमारी से जूझ रहा है, जिसके कारण शरीर पर सफेद चकत्ते जैसे दिखाई दे रहे हैं। जब उन्होंने जेब्रा को पहली बार देखा तो विश्वास नहीं हुआ। उन्हें लगा जेब्रा को पेंट किया गया है। तस्वीरें वायरल होने के बाद अभयारण्य में दुर्लभ जेब्रा को देखने के लिए भीड़ लग रही है। जेब्रा मेलानिज्म नाम की बीमारी से दुर्लभ बीमारी जूझ रहा है। जिसमें शरीर पर धारियां विकसित नहीं हो पाती और छोटे-छोटे सॉप्ट नजर आते हैं। जेब्रा के गले और पेटवाले हिस्से में स्पॉट की संख्या नजर आते हैं। जेब्रा के गले और पेट वाले हिस्से में स्पॉट की संख्या अधिक है। यह बीमारी आमतौर पर स्तनधारियों, उभयचर और रेंगनेवाले जीवों में पाई जाती है। इसे (बीमारी को) अफ्रीका के पार्कों में मौजूद कुछ ही जानवरों को देखा गया है, लेकिन वे ६ महीने से अधिक नहीं जी पाते। सोशल मीडिया पर इसकी तस्वीरें लोगों को चौंका रही हैं और साझा की जा रही हैं।

❊ **हाथी -** हाथी ही ऐसा जानवर है जो कूद नहीं सकता।

❊ हाथी कभी नहीं भूलता- हाथियों का दिमाग दूसरे जानवरों के मुकाबले बड़ा होता है। इनकी याददाश्त कमाल की

होती है। पर यह सच है कि इन्हें अपने दोस्तों और दुश्मनों के नाम आधी सदी से भी ज्यादा समय तक याद रहते हैं। हाथी तब तक इंसानों को नुकसान नहीं पहुंचाते, जब तक कि उन्हें कोई तंग न करे। ये कई तरह की आवाजें निकालने में भी माहिर होते हैं।

✻ हाथी का बच्चा सबसे लंबे समय तक मां हथिनी के पेट में रहता है। यह गर्भावस्था २२ महीने की होती है।

✻ जानवरों में सिर्फ हाथी ही एक ऐसा जानवर है, जो सिर के बल उल्टा खड़ा हो जाता है।

✻ एक औसत हाथी को एक दिन के लिए लगभग ३२० किलो पत्ते, टहनियां, घास, फल लगता है। पानी वह ७० से ९० लीटर पीता है।

✻ हाथी की सूंढ़ में कोई हड्डी नहीं होती है। हाथी की सूंढ़ लगभग ४०,००० मांस पेशियों की बनी होती है।

✻ हाथी दिन के २१ घंटे खाना ढूंढने व उसे खाने में ही बिताते हैं।

✻ नर हाथी के ही दांत होते हैं।

✻ विशालकाय हाथी को यदि किंग कोब्रा सांप डंस ले तो केवल ४ घंटे में हाथी मर सकता है।

✻ हाथी अपनी सूंड से ९० लीटर पानी पी सकता है।

✻ अफ्रीकी हाथी दुनिया का सबसे बड़ा प्राणी है जिसकी ऊंचाई ४ मीटर व वजन ६००० किलो से ज्यादा होता है।

✻ देश में हाथियों की संख्या २६४१३ है।

✻ हाथी के दांत का वजन १२ पाउंड होता है।

✻ प्राचीन काल में हाथी, दांत, हड्डी, लकड़ी और कांटे आदि की सुइयां बनाई जाती थीं।

✻ हाथी जैसा महाकाय प्राणी अत्यंत सूक्ष्म आवृत्ति की इन्फासोनिक ध्वनि तरंगे भी सुन सकता है।

✻ अफ्रीका में पाया जानेवाला हाथी भूमि पर मिलने वाला सबसे भारी प्राणी है। नर अफ्रीकी हाथी का वजन १२ टन से भी अधिक होता है।

✻ जिम्बाबवे में इतने ज्यादा जंगली हाथी हैं कि वहां की सरकार ने हजारों हाथी किसानों को बेच दिए।

✻ हाथी का दिमाग, मनुष्य की तुलना में ४ गुना बड़ा होता है।

✻ हाथियों को गर्मी इसलिए ज्यादा महसूस होती है क्योंकि उनके शरीर में गर्मी निकालने के लिए स्वेद ग्रंथियां मौजूद नहीं होती।

✻ हाथी के दांत उसके जीवन भर बढ़ते रहते हैं। हाथियों में केवल नर एशियाई हाथियों के ही दांत होते हैं। अफ्रीकी हाथियों में नर और मादा दोनों के दांत उगते हैं। अफ्रीकी हाथियों के दांतों की लंबाई तीन मीटर और वजन ९० किमो तक ही सकता है। हाथी दांत मुख्यत: कैल्शियम फास्फेट से बना होता है।

✻ हाथी की सूंड इतनी मजबूत और लचीली होती है। हाथी अपनी इस सूंड से एक नाजुक फूल, घास के तिनके के साथ-साथ लकड़ी के विशाल लट्ठे को भी उठा सकता है। हाथी अपनी सूंड का इस्तेमाल सूंघने, छूने, पकड़ने, पानी पीने, चूसने, छिड़कने और अपनी आंखों को पोंछने में करता है। हाथी की सूंड में इतनी ताकत होता है कि वह पेड़ को हिलाकर फलों को गिरा सकती है या फिर पूरे पेड़ को उखाड़ सकती है। दरअसल हाथी की सूंड़ सामाजिक अंतक्रिया में महत्वपूर्ण

भूमिका निभाती है। हाथ मिलाने की तरह आपस में परिचित हाथी एक दूसरे की सूंड गुंथा कर अभि-वादन करते हैं, खेल-कुश्ती लड़ते हैं और प्रणय के दौरान एक दूसरे को सहलाते भी हैं।

हाथी की उठी सूंड जहां चेतानवी या खतरे का संकेत हो सकती है वहीं झुकी हुई सूंड समर्पण का प्रतीक भी। सूंड से हाथी अपना बचाव करता है और विरोधी पर इससे प्रहार भी। सूंघने की अति विकसित क्षमता के लिए हाथी अपनी सूंड पर निर्भर रहते हैं। अपनी सूंड उठाकर और एक तरफ से दूसरी तरफ घुमाकर हाथी अपने दोस्तों, दुश्मनों और भोजन स्रोतों का भी पता लगाता है।

* वन्यजीवों में हाथी ही एक ऐसा प्राणी है जिसे सर के बल खड़े होने का प्रशिक्षण दिया जा सकता है।
* स्तनधारी पशुओं में हाथी सबसे लंबी उम्र का होता है जो ६९ साल जीता है।
* वे सूंड में दो गैलन तक पानी भर कर ले जा सकते हैं।
* हाथी- हर वस्तु दुगनी बड़ी दिखायी पड़ती है।
* नर हाथी १३ फुट तक लंबा हो सकता है।
* अफ्रीकन हाथी हमेशा खड़े-खड़े ही सोते हैं।
* कुछ दशकों पूर्व तक देश में हाथियों की संख्या ४० हजार थी जो अब केवल १४ हजार रह गई है।
* सूंड़ से होती है बातचीत- हाथी के लिए बात करने में सबसे ज्यादा मददगार है सूंड़। इससे ये चिंघाड़ने के अलावा अलग-अलग तरह की आवाजें भी निकालते हैं और मीलों दूर चले गए अपने साथियों को संदेश पहुंचा देते हैं। हाथी सूंड से सूंड़ मिलाकर प्यार, अपनेपन और दोस्ती का प्रदर्शन करते हैं। साथ ही इसके जरिए वे खतरे को भांपकर अपने साथियों को आगाह भी कर देते हैं।
* हाथी भी बात करते हैं- हाथियों की स्मरण शक्ति बड़ी तेज होती है। हाथी आपस में ऐसी आवाज में बातें करते हैं, जिन्हें आम आदमी समझना तो दूर, सुन भी नहीं सकता। कहा जाता है कि लो फ्रीक्वेंसी अर्थात निम्न तरंगवाली ध्वनि बारह मील तक यात्रा कर सकती है। यह ध्वनि हमें समर्थ होने के कारण दूर-दूर तक फैले रहने तथा एक दूसरों को न दिखायी देने की स्थिति में भी हाथी परस्पर वार्तालाप किया करते हैं। ऐसी सामर्थ्य व्हलों में भी होती है।
* हाथी ३ मील दूर से ही पानी की गंध सूंघ सकता है।
* हाथी अन्य स्थलीय जीवों में काफी बड़ा एवं भारी भरकम जानवर होता है। संपूर्ण विश्व में हाथी की सिर्फ दो प्रजातियां होती हैं। उनमें से एक भारतीय तथा दूसरे को अफ्रीकी कहते हैं। अफ्रीकी हाथी की ऊंचाई ग्यारह फुट तथा वजन ६ टन होता है। भारतीय हाथी उस अनुपात में छोटे होते हैं। हाथी का केवल शरीर ही भारी-भरकम नहीं होता बल्कि इसके पैर भी दरख्तों की शक्ल में गोल व मोटे होते हैं। कान सूप की तरह होते हैं परन्तु उस अनुपात में हाथी नहीं सुनता। हाथी के सिर के साथ लम्बा मोटा लटकता सूंड होता है जो हाथी के लिए हाथ, बांह और होंठ का काम करता है। यह सूंड हाथी के लिए पत्तियां, टहनियां आदि तोड़ने से लेकर शत्रुओं को पटकने तक में सहायक होता है। सूंड के दोनों किनारों पर कुतरने वाले दांत का बड़ा रूप होता है, जिसे दिखानेवाला दांत कहते हैं। चबाने के लिए अलग से दांत मुंह के अंदर होते हैं जिन्हें मोलर कहते हैं।

❋ गजराज हैं थाईलैंड के जहाज

हाथी चार पैरोंवाला सबसे बड़ा शाकाहारी व विशालकाय जीव है। पुराने जमाने के राजाओं की सेना में सैकड़ों की तादाद में हाथी होते थे, जो लड़ने में काम आते थे।

थाइलैंड में हाथियों का महत्व- हाथियों की सबसे ज्यादा संख्या थाइलैंड में है। वहां वे ताकत और शांति का प्रतीक माने जाते हैं। हालांकि अब वहां के हाथियों की संख्या काफी मात्रा में घट चुकी है। फिलहाल, वहां पर सिर्फ २६०० हाथी ही बचे हैं, जिन्हें जंगलों और पहाड़ों पर काम करने की ट्रेनिंग के साथ दूसरे और भी बहुत से काम सिखाए जाते हैं। हाथी बहुत ही समझदार और वफादार जानवर होता है।

थाइलैंड के हाथी ट्रेनिंग सेंटर्स को कराल पानियाड़ कहते हैं। रेलवे लाइन शुरू होने से पहले हाथी यातायात का सबसे महत्वपूर्ण साधन थे। इनके ऊपर बैठकर लोग और सामान एक जगह से दूसरी जगह जाता था।

हाथियों की खूबियां- हाथी प्रतिस्पर्धा करने के शौकीन होते हैं। नृत्य करना एक अलग ही विधा है लेकिन हाथी अपनी प्राकृतिक चाल में ही झूम-झूमकर चलता है। थाइलैंड के हाथी रॉक, जैज और कई अलग-अलग प्रकार के नृत्य करने में सक्षम होते हैं। २० वर्ष की उम्र तक आते-आते हाथी पूरी तरह आत्मीय होकर काम करना सीख जाते हैं और फिर आनेवाले ३०-३५ वष तक यानी ५५-६० की आयु तक पूरी लगन से काम करते हैं और फिर रिटायर हो जाते हैं।

इसे सबसे भावुक जानवर भी कहा जाता है। ये कई तरह की आवाजें निकालने में भी माहिर होते हैं, जैसे गम और खुशी होने पर दो अलग तरह की आवाज निकालते हैं।

❋ अफ्रीका के हाथियों में सूंघकर पहचानने की अद्‌भुत क्षमता होती है।

❋ संसार में अनेक प्रकार के जीव-जंतु पाए जाते हैं, लेकिन सबसे भारी और बड़ा जानवर हाथी है। हाथी ज्यादातर जंगलों में पाए जाते हैं और यह अक्सर झुंड में रहना पसंद करते हैं। यदि किसी समय हाथी से आपका सामना हो जाए और वह आपके पीछे लग जाए तो कभी भी सीधा नहीं भागना चाहिए क्योंकि विशाल शरीर होने के कारण हाथी को टेढ़ा-मेढ़ा भागने में कठिनाई महसूस होती है। ज्यादा से ज्यादा ढलानदार रास्तों की ओर भागना चाहिए क्योंकि इससे आप ज्यादा तेज दौड़ सकते हैं, परंतु हाथी के भागने में कोई ज्यादा अंतर नहीं आएगा।

❋ हाथी का बच्चा अक्सर आराम करने के लिए अपनी सूंड चूसता रहता है। हाथी के बाहरी दांत बढ़ते रहते हैं।

❋ हाथी की उम्र लगभग १०० साल तक की होती है। हाथी पानी में अच्छी तरह तैर सकते हैं। दिन में १६ घंटे हाथी केवल खाते रहते हैं।

❋ हाथी के नवजात शिशु का वजन १०० से १२० किलोग्राम होता है।

❋ पेरियार (केरल) अभयारण्य जंगली हाथियों के लिए प्रसिद्ध है।

❋ कूद नहीं सकता हाथी- हाथी ही एक ऐसा जानवर है जो कूद नहीं सकता।

❋ हाथी छलांग नहीं लगा सकता पर सिखलाने पर सिर के बल खड़ा हो सकता है।

❋ हाथी अपनी सूंढ़ में ५ लीटर तक पानी रख सकता है।

❋ हाथी एक दिन में २०० लीटर पानी पीता है।

❋ हाथी सबसे बुद्धिमान प्रजातियों में से एक

हाथी कई प्रकार के व्यवहार प्रदर्शित करते हैं, इनमें दु:ख, सीखना, मातृत्व, अनुकरण, कला, खेल, हास्य, परोपकारिता, उपकरणों का उपयोग, करुणा और सहयोग इत्यादि भावनाएं शामिल हैं। इन व्यवहारों में आत्म जागरूकता, स्मृति और संभवतया भाषा भी शामिल हो सकती है। इनमें अत्यधिक बुद्धिमान प्रजातियों के वे सभी गुण पाए जाते हैं जिन्हें केटाशियन और प्राइमेट्स के समतुल्य माना जाता है। हाथियों की उच्च बुद्धिमत्ता और प्रबल पारिवारिक संबंधों के कारण, मनुष्यों के लिए उन्हें चुनना नैतिक रूप से गलत है। दार्शनिक अरस्तू ने एक बार कहा था कि हाथी वे जानकर है जो मन और बुद्धि की दृष्टि से सभी अन्य जानवरों को पीछे छोड़ देते हैं। भारतीय हाथी झाड़ीदार जंगलों के पास रहते हैं, पर इनकी रिहायिश अन्य जगहों पर भी हो सकती है।

ये स्वभाव से खानाबदोशी होते हैं और एक स्थान पर कुछ दिनों से ज्यादा नहीं रहते हैं। ये जंगलों में रह सकते हैं पर खुले स्थान व घासवाली जगहों पर जाना पसंद करते हैं।

❋ अफ्रीकी बुश हाथी - अफ्रीकन हाथी दुनिया का जमीन पर रहनेवाला सबसे बड़ा जानवर है। इसका वजन ९००० किलोग्राम और लम्बाई १३ फीट तक हो सकती है। इसके कान बड़े बड़े होते हैं। अफ्रीकन हाथियों पर कोई भी जानवर हमला करने से डरता है, क्योंकि अगर इसको गुस्सा आ गया तो यह भारी तबाही मचा सकते हैं और बड़े से बड़े गैंडों को भी पटक सकते हैं।

❋ **मेमथ -** मैमथ एक स्तनपायी जानवर था जो आजकल के हाथियों की तरह दिखता था। इनके पूर्वज ३.५ मिलियन वर्ष पहले अफ्रीका सहित नार्थ यूरेशिया और नार्थ अमेरिका में पाए जाते थे। वैज्ञानिकों का मानना है कि वुली मैमथ सबसे पहली बार ४ लाख वर्ष पहले मिलते थे। वैज्ञानिकों का कहना है कि मैमथ ४ मीटर लम्बे और ६ टन वजनी हुआ करते थे। इनका पूरा शरीर फर से ढका होता था और इनकी खासियत थी इनके विशालकाई दांत हुआ करते थे।

❋ **जंगली भैसा -** जंगली जल भैंस- जंगली जल भैंस घरेलू जल भैंस के पूर्वज हैं और भारत में पाए जानेवाली दूसरी सबसे बड़ी जंगली गौ की प्रजाति है, भारतीय जंगली भैंस असम के राष्ट्रीय उद्यान में पाए जाते हैं। यह छत्तीसगढ़ का राजकीय पशु है। जंगली भैंसा एक घंटे में ५० मील दौड़ सकता है।

❋ पूर्वी अफ्रीका में पाए जानेवाले जंगली भैंसे सूखे और बारिश के मौसम के हिसाब से करीब तीन हजार किलोमीटर की दूरी तय करते हैं। हर साल हजारों की तादाद में ये भैंसे चारे-पानी की तलाश में ये दूरी तय करते हैं। इसी तरह उत्तरी अमेरिका में पाए जानेवाले हिरण, कैरिबू का सफर तो और भी लंबा है। ये जानवर दाना-पानी खोजते हुए करीब ४८०० किलोमीटर दूर तक का सफर कर डालते हैं। शायद ये और भी लंबी दूरी तक जाएं। मगर जहां जमीन खत्म हो जाती है और समंदर शुरू हो जाता है, वहां से इनका सफर भी खत्म हो जाता है।

❋ **गेंडा (हिप्पोपोटेमस) -** हिप्पोपोटेमस अपना मुंह १८० डिग्री तक खोल सकता है।

❋ लाल पसीना - गैंडे को जब गुस्सा आता है और वह उत्तेजना की अवस्था में होता है, तो उसके पसीने का रंग लाल हो जाता है।

❋ गैंडा देखने में सुस्त तथा शांत प्रिय जीवन है, परंतु छेडे जाने पर यह ३० मील प्रति घंटे की रफ्तार से हमला करता है।

❋ गेंडे की आयु १०० वर्ष तक होती है।

❋ गैंडे की सींग में हड्डी नहीं होती बल्कि वास्तव में बालों का एक बेहद सख्त गुच्छा होता है।

❋ यूरोप में हिप्पोपोटेमस का सर्वाधिक निर्यात हंगरी से होता है।

❋ बड़े आकार का होने के बावजूद गैंडा काफी तेज दौड़ सकता है। इसकी दृष्टि कमजोर होती है लेकिन सूंघने व सुनने की शक्ति काफी तेज होती है।

❋ गैण्डा ऐसा जानवर है जो नित्य एक ही स्थान पर मल त्याग करता है।

❋ गेंडे हजारों साल से एक ही तरह के हैं। उनके शरीर में किसी तरह का परिवर्तन नहीं हुआ है। यह दो तरह के होते हैं, सफेद और काले। इन दोनों ही तरह के गेंडों के दो सींग होते हैं, पर काले के पैर में तीन अंगुलियां होती हैं।

❋ **जंगली घोड़े-** उज्वल रंगीतन जंगली घोड़े जिन्हें फेरल हॉर्स भी कहा जाता है, वे असम के जंगली जीवन की विविधता का प्रतीक है जहां वन्य प्रजातियों की भरमार है, भारत में जंगली घोड़े सिर्फ असम के डिब्रू-साखोवा नेशनल पार्क में ही पाए जाते हैं।

❋ **विशाल जापानी सालामैंडर -** जापानी सालामैंडर विश्व का सबसे विशाल उभयचर जीव है जो १६० सेंटीमीटर तक लंबा हो सकता है तथा इसका भार लगभग २५ किलोग्राम होता है। वे मध्य होंशु के पहाड़ी क्षेत्रों में पाए जाते हैं और यह नदियों के कीचड़ युक्त किनारों पर स्थित छेदों में अंडे देते है। इनका प्रजननकाल अगस्त-सितंबर महीनों के दौरान होता है। इसकी त्वचा के नीचे रक्त धमनियों का एक जाल फैला होता है। वयस्कों के गलफड़ों की दरारें बंद होती है तथा यह सांस लेने के लिए त्वचा का प्रयोग के मुताबिक वे ५० से भी अधिक वर्षों तक जीवित रहते हैं। वे एक उच्च दर्जे के जीव भक्षी होती हैं तथा मछली और अंडे खाते हैं।

❋ **तहर (पहाड़ी बकरा) -** नीलगिरि तहर- नीलगिरि तहर नीलगिरि पहाड़ियों की स्थानिक प्राणी है। यह तमिलनाडु की राज्य पशु भी है। यह दक्षिण पश्चिमी घाटों के माउंटेन चरागाह के निवास स्थान पर स्थित वनों के जंगली वनों में निवास करती है।

❋ तहर (पहाड़ी बकरा)- तहर या ताहर एक प्रकार का पहाड़ी बकरा है। यह वास्तव में भेड़ और बकरे दोनों का ही बहुत करीबी रिश्तेदार है। ताहर में भेड़ और बकरे दोनों से अलग कुछ ऐसी विलक्षण विशेषताएं पाई जाती हैं, जो न भेड़ों में और न ही बकरों में होती हैं। इसीलिए इसे सामान्य भेड़ों और बकरों से अलग समझा जाता है।

वैज्ञानिक वर्गीकरण के आधार पर ताहर वंश हेमीट्रेगस, कुल बोवाइडी और गण आर्टिओडैक्टाइला के अंतर्गत आता है। प्रजाति के अनुसार कंधे तक इनकी ऊंचाई ६० से १०० सेमी होती है। नर और मादा, दोनों के सींग छोटे होते हैं, जो पार्श्व से समतल होते हुए पीछे की ओर मुड़े होते हैं। यह चौकन्ने और संधे पांववाले जंगली बकरों में से एक है। विश्व में ताहर की तीन जातियां पाई जाती हैं- अरबी ताहर, हिमालयी ताहर, नीलगिरि ताहर।

इनमें से अंतिम दो जातियाँ भारत में पाई जाती है। भारत में ताहर की स्थिति बड़ी ही चिंताजनक है और यह विलुप्त प्राय प्रजातियों में शामिल है। एक समय भारत में इनकी संख्या एक लाख से भी अधिक हुआ करती थी, लेकिन अब इनकी संख्या चार सौ के आस-पास ही रह गई है।

❋ **मार खोर -** पहाड़ी बकरा है मारखोर- मारखोर एक पहाड़ी बकरा है, जो ६०० से ३६०० मीटर की ऊंचाई पर भारत व पाकिस्तान में कश्मीर, उत्तरी अफगानिस्तान, दक्षिणी ताजिकिस्तान और उज्बेकिस्तान में पाया जाता है। इसकी

कंधे तक ऊंचाई ११५ सेंटीमीटर, लंबाई १८६ सेंटीमीटर और वजन ११० किलोग्राम तक होता है। यह अपने सींगों में सांप को लपेटकर मार देता है।

❋ मारखोर एक विशाल शरीर वाली जंगली बकरी है, जिसके शरीर पर घने मुलायम बाल होते हैं, नर की एक विशेष सलेटी अयाल होती है, जो घुटनों तक पहुंचती है। मादा में अयाल केवल ठोड़ी तक होती है। नर के दो शानदार सींग होते हैं, जो लंबे, चपटे और टेढ़े मुड़े होते हैं, जबकि मादा के सींग इससे छोटे होते हैं। मारखोर की खाल गेरुए सलेटी रंग की होती है, परंतु गर्मियों में लाल भूरी हो जाती है।

मारखोर प्राय: १२ से ५० तक के झुंडों में पाये जाते हैं। कश्मीर सहित हिमालय के पश्चिमी क्षेत्र में रहते हैं।

❋ **बुलफ्रॉग -** ही एकमात्र ऐसा जानवर है जो कभी नहीं सोता।

❋ **पेंगोलिन-** भारतीय पेंगोलिन डायनासोर प्रजाति परिवार का सदस्य माना जाता है, इस दुर्लभ जीव का बहुत ही बड़े पैमाने पर मानव द्वारा शिकार हुआ है और अभी भी तस्करी हो रही है। इसलिए इनकी जनसंख्या बहुत ही कम होती जा रही है।

❋ **सिविट-** मालाबार का बड़े धब्बेदार वाला सिविट भारत के पश्चिमी घाट में पाए जानेवाला एक बड़ा बिल्ली और गिलहरी के आकार का जानवर है जो कि निशाचर है और पेड़ों पर भी चढ़ने में सक्षम है।

❋ **हूलॉक गिब्बन-** हूलॉक गिब्बन दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा गिब्सन है और भारत के एक मात्र एप है जो असम में ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिण और दिबंग नदियों के पूर्व के जंगलों में रहता है।

❋ **बिज्जू-** हनी बॅडजर को रटेल के रूप में भी जाना जाता है, यह दुनिया का सबसे निडर और आक्रामक प्राणी है। हनी बैजर मुख्य रूप से एक मांसाहारी जानवर है और प्राकृतिक शिकारी भी है।

❋ **गौर-** गौर या भारतीय बायसन गोजातीय की सबसे बड़ा तथा सबसे मजबूत प्रजातियों में से एक है। भारतीय बाइसन को सामान्यत: गौर के रूप में जाना जाता है और यह भारत में प्रमुख रूप से देखा जानेवाला एक जंगली पशु है।

❋ **जिराफ -** जिराफ जब अपनी गर्दन को तानता है तो वह थोड़ी लंबी हो जाती है और यह बढ़ी हुई लंबाई उसके बच्चों को विरासत में मिलती है। जिराफ की टांगों की चमड़ी तनी हुई होती है। इस तनाव की वजह से खून पर दबाव पड़ता है और वह वापस ऊपर की ओर चला जाता है।

जिराफ के रक्त संचार तंत्र में सायफननुमा व्यवस्था होती है। सिर से खून को वापस दिल में लानेवाली शिरा में से जब खून बहता है, तो वह एक सायफन की तरह काम करता है और खून को खींचकर सिर तक पहुंचा देता है।

❋ सबसे बड़ा स्तनपायी जीव जिराफ गैंडा- पृथ्वी पर रहनेवाला सबसे बड़ा स्तनपायी जीव था जिराफ गैंडा। वह एशिया में पाया जाता था। उसका भार १५ टन था। वह २७ फीट लंबा और १८ फीट ऊंचा था।

❋ जिराफ आवाज नहीं करते, ऐसा नहीं है कि ये कर नहीं सकते बल्कि ये ऐसा करना पसंद नहीं करते।

❋ जिराफ की लम्बी व शानदार गर्दन कभी-कभी मुसीबत भी बन जाती है। जिराफ खाँस नहीं सकते, अत: उन्हें अक्सर गले की बीमारी हो जाती है।

❋ जब जिराफ का बच्चा पैदा होता है तो वह लगभग छह फीट की ऊंचाई से गिरता है और उसे चोट भी नहीं लगती।

❋ जिराफ को सर्दी नहीं होती।

❋ किसी भी प्राणी से जिराफ ज्यादा ऊंचा होता है। बावजूद उसकी गर्दन में उतनी ही हड्डियां हैं जितनी हमारी यानी केवल सात।

❋ जिराफ अपनी ५३ सेंटीमीटर लंबी (१७ इंच लगभग) जीभ से अपने कान साफ कर सकता है।

❋ जिराफ गूंगा होता है।

❋ लंबी गर्दनवाले जिराफ को खांसना नहीं आता। खकार न जाने से सबसे ज्यादा गले का इन्फेक्शन जिराफ को ही होता है।

❋ चौपाये जानवरों में जिराफ सबसे लंबे कद का जानवर माना जाता है।

❋ नर जिराफों की चमड़ी का रंग पहली बार सात से आठ साल की उम्र में बदलता है और दो साल के भीतर भूरे रंग की चित्तियां कोयले जैसी काली होने लगती हैं। रंग का युवावस्था में शरीर में आनेवाले बदलावों से भी संबंध है।

जिराफ संसार का सबसे ऊंचा और लंबी गर्दन वाला प्राणी है। ऊंचा होने के साथ-साथ यह बहुत आकर्षक भी होता है। देखने में ये लंबा जीव ५.५ मीटर ऊंचा होता है। इसके शरीर की लम्बाई के आधे भाग से ज्यादा लंबी इसकी गर्दन होती है, जबकि इस लंबी गर्दन में भी आम स्तनधारियों की तरह ही सात हड्डियां होती हैं। इनकी छोटी सी पूंछ होती है, जिस पर गाय की पूंछ की तरह नीचे की ओर बालों का गुच्छा होता है। इनके बच्चे भी बड़े प्यारे होते हैं। रहने के लिए जिराफ को सूखे और खुले वन अच्छे लगते हैं। वैसे इनके खाने-पीने की कोई समय सीमा नहीं होती। ये कभी भी दिन हो या रात खा सकते हैं। इनके आगे के दो पैर भी बहुत लंबे होते हैं। इनके पैरों के सिरे पर भी गाय, भैंस की तरह खुर होते हैं। जिराफ के सिर पर दो सींग भी होते हैं, जो छोटे-छोटे बालों से ढके रहते हैं, लेकिन इन सींगों में हड्डी नहीं होती। खाने में इन्हें पेड़ों की ऊंची डालियों पर लगी पत्तियां बेहद पसंद होती है। ये अक्सर इन्हीं को खाते हुए देखे जाते हैं। ताजा पत्तियां ये अधिक खाना पसंद करते हैं, जिन्हें खाने में इनकी लंबी गर्दन इनकी बहुत मदद करती है। लंबी गर्दन के कारण ही ये भोजन ज्यादा मात्रा में खा जाते हैं, बल्कि बाकी सारे जीवों की तुलना में सबसे ज्यादा भोजन ये ही खा पाते हैं, क्योंकि जिन पत्तियों तक बाकी सारे जीव नहीं पहुंच पाते, वहां ये लंबी गर्दन वाला प्राणी आसानी से पहुंच जाता है।

❋ जिराफ अफ्रीका और सहारा रेगिस्तान के दक्षिणी भाग में पाए जाते हैं। ये हिरण परिवार के ही वंशज हैं। ये साढ़े चार से पांच मीटर तक लंबे होते हैं। कहीं-कहीं छ: मीटर लंबे जिराफ भी पाए जाते हैं। जिराफ की लंबी गर्दन और लंबे पैर ही उसे दुनिया का सबसे लंबा जानवर बनाते हैं और दो मीटर तो इसकी लंबी पूंछ ही होती है। जिराफ शाकाहारी जानवर है।

इसे पानी पीने के लिये बहुत मेहनत करनी पड़ती है। इसे अपने आगे के दोनों पैर विपरीत दिशा में खोलने पड़ते हैं, तब यह झुक पाता है और पानी पी पाता है। खाने-पीने और घूमने के लिए जिराफ कभी अकेले नहीं निकलता। यह हमेशा जेब्रा और बारहसिंहों के साथ समूह में निकलता है। जिराफ की चमड़ी का रंग लाल भूरा होता है, जिसमें अलग-अलग आकार के चकत्ते बने होते हैं और चकत्तों के बीच हल्के फर होते हैं। मादा जिराफ एक बार में एक बच्चे को जन्म देती है। इसकी औसत आयु २० वर्ष है।

❋ जिस प्रकार एक व्यक्ति की अंगुली की छाप दूसरे व्यक्ति की अंगुली से नहीं मिलती, ठीक उसी तरह से दो जेब्रा की

धारियां एक दूसरे से नहीं मिलती हैं। जेबरे की खाल पर बनी धारियां इसकी पूरी जाति में किन्हीं दो सदस्यों में एक जैसी नहीं होती ठीक हमारे हाथ के फिंगर प्रिंट्स की तरह। सभी जन्तुओं में जिराफ की सर्वाधिक लंबी गर्दन होती है परन्तु इसकी इतनी लंबी गर्दन का कोई कारण या औचित्य दिखाई नहीं देता। जिराफ केवल पेड़ की कोमल पत्तियां ही खाता है और इसका निवास अफ्रीका के ऊंचे पेड़वाले जंगलों में है, इसलिए पेड़ की कोमल पत्तियों तक पहुंचने के प्रयास में कालान्तर में उसकी गर्दन लंबी होती गई परन्तु लेमार्क की यह धारणा सर्वमान्य नहीं है। इसकी गर्दन में मनुष्य की भांति सात कशेरूकाएं होती हैं परन्तु जिराफ की कशेरूकाएं बहुत लंबी होती हैं, इसीलिए इसकी गर्दन झुक नहीं सकती। इसकी लंबी टांगों और गर्दन के कारण इसे इसका मनपसंद भोजन मिल जाता है।

❊ जिराफ को पानी पीने के लिए अपनी दोनों अगली टांगों को खोलना पड़ता है तब जाकर उसका मुंह पानी तक पहुंच पाता है। जिराफ एक दिन में ३८ लीटर पानी पी जाते हैं वो ज्यादातर पानी पेड़-पौधों से ही प्राप्त करते हैं। अब तक का सबसे ज्यादा वजन बाला जिराफ १९३० किलोग्राम का था और मादा जिराफ का वजन ११८० किलोग्राम था।

❊ जिराफ के झुंड को टॉवर कहा जाता है। जिराफ पूरे दिन में १० से ३० मिनट तक ही सोते हैं। जिराफ अपना ज्यादातर समय खड़े रहकर ही बिता देते हैं बल्कि वो तो खड़े खड़े ही सो जाते हैं।

❊ जिराफ एक जानवर है, जिसका वजन तकरीबन आठ सौ किलो होता है, ऊंचाई सत्रह फीट और जबान पंद्रह इंच लंबी होती है, तेज रफ्तारी का हाल ये है कि प्रति घंटा ५६ किलोमीटर तय कर लेता है, कनाअत (खाने-पीने को जो मिल जाये पर उस संतुष्टता) ऐसी कि पानी उपलब्ध न हो तो महीनों तक सब्र से काम लेता है। अजीब बात ये है कि कभी बैठता नहीं है। जब उसे नींद आती है तो खड़े-खड़े सो लेता है। जब कि दुनिया का सबसे उत्कृष्ट प्राणी इंसान है जो नींद की हालत में ऐसा हरगिज नहीं कर सकता।

❊ **जिराफ हिरन- गेरेनक-** हॉर्न ऑफ अफ्रीका के देशों व अफ्रीकन ग्रेट लेक्स में पाय जानेवाला गेरेनक एक ऐसा हिरन है, जो अपनी पतली व लंबी गरदन और छरहरे शरीर के कारण जिराफ हिरन के नाम से जाना जाता है। जब यह किसी पेड़ से सटकर पिछले दो पैरों पर खड़ा होकर उसकी पत्तियां खाता है तो जिराफ की याद आ जाती है। इसकी लंबाई १०५ सेंटीमीटर और वजन ५२ किलोग्राम तक होता है।

❊ **खरगोश -** बास्केट बॉल खेलनेवाला खरगोश- बिनी द बनी खरगोश काफी अच्छे से बास्केट बॉल खेलता है। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड के अनुसार खरगोश बहुत टैलेंटेड है। यह एक मिनट में करीब ७ बार खेलता है। इसका वीडियो भी है। जिसे देखकर लोग हैरान हो रहे हैं।

पेंटिंग भी अच्छे से करता है- खरगोश बिनी द बनी अपने इस हुनर की वजह से पूरी दुनिया में चर्चा में छाया है। क्यूट बिनी द बनी सिर्फ बास्क़ेट बॉल ही नहीं पेंटिंग आदि भी काफी अच्छे से करता है। इसके अलावा उसने यह भी साबित कर दिया कि जानवरों को भी स्पोर्ट में रूचि होती है। यह काफी क्रिएटिव है। यह बिल्कुल बास्केट बॉल के वर्ल्ड फेमस प्लेयर माइकल जॉर्डन की तरह खेलता है। ऐसे में वह उसके इस हुनर को देखते हुए उसे बास्केट बॉल प्रतियोगिताओं के लिए भी तैयार करेंगे। जंगली खरगोश दिन में जमीन के नीचे दुबके रहते हैं, अंधेरा होने पर बाहर निकलते हैं। उनमें सूंघने की क्षमता तेज होती है।

५ कला के जीव (ब) ग्राम जीव जगत

भविष्य बताने वाले, दिव्य दृष्टि रखनेवाले पशु-पक्षी मानव को आनेवाली विपदाओं के प्रति सचेत करते रहते हैं। मानव को इन बातों पर गंभीरतापूर्वक खोज कर ऐसी दिव्य स्थितियों का पता लगता है।

मौसम का प्रभाव हर प्राणी पर पड़ता है, चाहे वह मनुष्य हो या जानवर। मौसम के प्रभाव से मनुष्य खुद को बचाए रख सकता है, लेकिन मासूम जानवरों के पास ऐसा कोई साधन नहीं, जिससे वे अपना बचाव कर सकें। प्रकृति ने इन जीवों को प्रतिकूल परिस्थितियों में अपनी रक्षा कर सकने की क्षमता प्रदान की है। जानवरों की शारीरिक बनावट ही कुछ ऐसी होती है कि वे मौसमी प्रभावों को बर्दाश्त कर लेते हैं। चौपाए स्तनधारियों को प्रकृति ने शरीर पर बाल की परत तथा पक्षियों को पंख दिये हैं। ये गरम कपड़ों की तरह इनका सर्दी से बचाव करते हैं। चौपायों के बाल दो प्रकार के होते हैं, जो जमीन व पहाड़ों पर रहते हैं। उनके बाल घने तथा लंबे होते हैं और जो जानवर पानी के अंदर रहते हैं, उनके बाल छोटे व मुलायम होते हैं। कुत्ते, बिल्ली और घोड़े आदि के बाल ठंड के मौसम में इनकी रक्षा करने के लिए पर्याप्त होते हैं। जिन जानवरों के शरीर पर बाल व पंख नहीं होते, उनकी त्वचा में वसा की परत होती है, जो उन्हें गरम रखती है। व्हेल तथा डॉल्फिन के शारीरिक ताप को बरकरार रखने के लिए प्रकृति ने उनकी चमड़ी के नीचे तेल से भरी ऊतक की परत प्रदान की है।

रंगों का खेल- मौसम के अनुसार कुछ चीजों के रंग में भी परिवर्तन हो जाता है, जिससे वे सर्दी और गर्मी आसानी से सहन कर लेते हैं। रेडियर के बाल सर्दियों से बचाते हैं। एर्मिन के बालों का रंग गर्मियों में भूरा रहता है, जबकि सर्दियों में सफेद हो जाता है। लंगूर और बंदरों के बालों की परत सर्दियों में घनी और गहरी हो जाती है, जो उन्हें ठंड से बचाती है। शेर, बाघ, तेंदुआ, भेड़िया आदि जानवरों के शरीर पर भी सर्दी शुरू होते ही गहरे, घने बालों की यह परत आनी शुरू हो जाती है तथा गर्मी आते-आते बालों की यह परत झड़ने लगती है। उत्तरी साइबेरिया व टुंडा प्रदेश के जानवरों की चमड़ी मोटी होती है। उनके शरीर पर बालों की दो तहें होती हैं। ऊपर के बाल लंबे तथा मोटे होते हैं और अंदर के ऊनी। इस कारण वे ज्यादा ठंड बर्दाश्त कर लेते हैं। तिब्बत के पहाड़ों में ऊंचाई पर रहनेवाले याक के शरीर व कंधों पर इतने लंबे बाल होते हैं कि भयंकर सर्दी में भी ये उनकी रक्षा करते हैं। साम्भर और हिरण सर्दियों में कोहरे के समय किसी तलाब या झरने के पानी में बैठ जाते हैं।

दरअसल पानी का ताप कोहरे से अधिक होता है, इसलिए वे पानी में अपेक्षाकृत ज्यादा गर्मी महसूस करते हैं। साइबेरियाई बाघ के शरीर पर बालों की मोटी तह होती है। जो सर्दी से उनका बचाव करती है, जबकि हाथी व गेंडे की मोटी खाल उनके शरीर के तापमान को स्थिर बनाए रखती है। जानवर सर्दियों के मौसम को सोकर गुजार देते हैं जिनमें भालू, चमगादड़ और गिलहरी प्रमुख हैं। छिपकली, तितली, मेंढ़क एवं कीड़े-मकोड़े एकांत जगहों या बिलों में छिप जाते हैं। वास्तव में प्रकृति ने हर प्राणी को सर्दी से बचने के लिए शक्ति प्रदान की है।

अरब में या रेगिस्तान में लोग गधे को अपने पास रखकर पानी होने के स्थान का पता लगाते हैं। अरब में जब पथिक प्यासे होते हैं, तो गधे को छुट्टा छोड़ देते हैं और उसके पीछे-पीछे जाते हैं। निश्चिंत हो इधर-उधर घूमता हुआ गधा किसी न किसी जलाशय के पास पहुंच जाता है।

कुत्ता अपने मालिक के प्रति बड़ा ही वफादार प्राणी है। वह अपने मालिक के ऊपर आनेवाली विपदाओं के प्रति

सदैव सजग रहता है भविष्य में आनेवाली आपदाओं जैसे मृत्यु जैसी दुखद घटनाओं की सूचना मुंह उठाकर जोर-जोर से रूदन करके देता है। अब तो कुत्तों की घ्राण शक्ति के द्वारा बड़े-बड़े अपराधों का पता लगाया जाता है। इसके लिए उन्हें बकायदा प्रशिक्षण दिया जाता है। किसी दुर्घटना स्थल पर डाग स्क्वॉड की मांग सबसे पहले होती है। इसी प्रकार बिल्ली को भी भविष्य के प्रति प्रेरक बताते हैं। बिल्ली भी रात में रूदन करके आनेवाली दुखद घटनाओं व विपत्ति के प्रति आगाह करती है। ज्यादातर लोग चूहों से ज्यादा मेंढक से डरते हैं। मनुष्य के साथ चिम्पाजी, डॉल्फिन व हाथी ही आईने में अपनी छवि के प्रति जागरूक होते हैं।

❋ बिना पानी पीए सबसे ज्यादा दिनों तक जीवित रहनेवाला प्राणी ऊंट नहीं चूहा है।

❋ कुत्ते और बिल्लीयाँ भी मनुष्य की तरह लेफ्ट या राइट हॅंडेड होते हैं।

❋ **बिल्ली-** लोग घरों में कुत्ते पालना तो पसंद करते ही हैं मगर बिल्ली के शौकीनों की भी कमी नहीं है। एक अच्छी ब्रीड की बिल्ली पाने के लिए लोगों को हजारों रुपए चुकाने पड़ते हैं। एशेरा। यह है दुनिया की सबसे दुर्लभ बिल्ली। यह दुनिया की सबसे महंगी हाउस कैट भी है। इसकी कीमत १५ लाख रुपए से ६० लाख रुपए तक होती है। इस बिल्ली को ब्रीडर ने नहीं बल्कि लाइफस्टाइल पेट्स नामक एक कंपनी ने सार्वजनिक किया था। इसके डीएनए में पाया गया था कि यह सवाना फैमिली की ही बिल्ली है, जिसे एशेरा नाम दिया गया था। सवाना को दुनिया की दूसरी सबसे महंगी बिल्ली माना जाता है। फिर भी दुनिया में कुछ ऐसे लोग हैं जो भारी कीमत चुकाकर भी एशेरा को खरीद रहे हैं। इसका वजन १४ किलोग्राम तक है।

❋ बिल्ली २० किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से भाग सकती है।

बिल्लियां रात के अंधेरे में इनसान से छह गुना अधिक बेहतर देख सकती है।

❋ बिल्ली अपने शरीर की ऊंचाई से ६ गुना से ज्यादा ऊंचाई तक छलांग लगा सकती है।

❋ प्राचीन काल में इजिप्ट के लोग घर की बिल्ली की पूजा करते थे।

❋ रात को बिल्ली की आंखों के चमकने का कारण उसकी आंखे अंदरूनी हिस्से में स्थित कोशिकाओं की एक परत है, जिससे प्रकाश का परावर्तन होता है।

❋ बिल्लियां अलग-अलग तरह की १०० आवाजें निकाल सकती हैं तो कुत्ते केवल १० तरह से।

❋ बिल्लियां स्वभाव में गुस्सैल होती हैं, जबकि कुत्ते स्वभाव से शांत होते हैं।

❋ पालतू बिल्ली को नींबू या अन्य साइटिक एसिड के गंध से घृणा होती है।

❋ बिल्ली दिन भर में लगभग १६ घंटे सोती है इस तरह जिन्दगी को दो तिहाई भाग वह सोकर बिताती है। बिल्लियों की आंखें तीन तरह की होती हैं, गोल, बारीक और बादामी।

❋ फ्लोरिडा के टम्पा में जुड़वा बिल्ली के बच्चों के शरीर पर तितली और दिल के आकार के निशान पाए गए।

❋ बिल्ली अपने बच्चों को शिकार करना और उसे मारना सिखाती है। यदि बिल्ली का बच्चा मां से यह नहीं सीखता तो ऐसा भी अवसर आता है कि वह शिकार फांस लेता है पर जान नहीं पाता कि उसका क्या करे।

❋ बिल्लियां चलते-दौड़ते समय आगे-पीछे के बाएं पैर को पहले आगे बढ़ाती हैं। जिराफ और ऊंट भी इसी तरह बाएं पैर आगे बढ़ाते हैं न कि दाएं।

❋ ऑस्ट्रेलिया की शाकाहारी बिल्ली- संसार के बाघों में घरेलू बिल्ली की १३० से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं।

इनमें से १५ प्रतिशत बिल्लियां अपने स्वभाव में खूंखारपना रखती हैं। अधिक गुस्सा करने पर ये आदमी को भी अपने पैने पंजों से घायल कर सकती हैं। यह बात कम लोगों को विदित होंगी, बिल्ली अपनी दिनचर्या के १८ घंटे सोकर व्यतीत करती है। ये नींद छोटे-छोटे हिस्सों में बंटी होती है। बिल्ली को आनेवाले खतरे का आभास नींद में ही हो जाता है।

बिल्ली का पसंदीदा शिकार चूहा है। इसकी नाक बहुत जल्दी चूहे की गंध को सूंघ लेती है, फिर यह घात लगाकर चुपके से अपने तीखे पंजों से उन पर हमला कर देती है। बिल्ली के संदर्भ में एक तथ्य यह है कि वह २४ घंटे में १०० से भी अधिक चूहों का शिकार कर सकती है।

ऑस्ट्रेलिया के जंगलों में चिकल प्रजाति की नीली बिल्ली दिखाई देती है। यह ऊंचे पेड़ों पर बड़े-बड़े घोंसले बनाकर रहती है और पूर्णतया शाकाहारी होती है। साइबेरिया में ऐसी बिल्लियां भी पाई जाती हैं जिनकी आंखें साधारण बिल्लियों से चार गुना अधिक मोटी रहती हैं। ये अपनी आंखों से अपने शिकार को मंत्रमुग्ध कर अपने वश में कर लेती हैं। अमेरिका के रेड वन में गंजी बिल्ली की एक दुर्लभ प्रजाति भी मौजूद है। इसके शरीर पर एक भी बाल नहीं रहता है।

❋ बिल्लियां अपने चेहरे को अगर किसी चीज से घिसती हैं तो उसका मतलब है कि वो उसे अपनी चीज समझती है।

❋ बिल्ली अगर चॉकलेट खा ले तो वह बीमार या फिर उसकी मृत्यु तक हो सकती है। बिल्ली बिना किसी चीज को चबाए अपने भोजन को पचा सकती है। बिल्ली ३० मील प्रति घंटे की स्पीड से दौड़ सकती है।

❋ बिल्लियों का ९० प्रतिशत दिमाग मनुष्यों की तरह होता है। एक बिल्ली अपने कानों को १८० डिग्री तक घुमा सकती है। बिल्ली की तीन पलकें होती हैं।

❋ बिल्ली की मूंछ के एक तरफ १२ बाल होते हैं। दोनों तरफ लगभग २४ बाल।

❋ दुनिया की बिल्लियों की पहली प्रदर्शनी न्यूयॉर्क के मेडिसन स्कवेयर गार्डन में १८९५ में आयोजित की गई थी।

❋ बिल्लियां कम से कम १२ से १५ साल जीती हैं। बिल्लियां दिन में १३ से १४ घंटे सोती है। इससे उनमें ऊर्जा बनी रहती हैं। हर साल सिर्फ एशिया में ही ४ मिलियन बिल्लियां खाई जाती हैं। बिल्लियों और इंसानों का ब्रेन बायोलॉजिकली काफी समान होता है। इसी वजह से दोनों की भावना में कुछ समानता भी पाई जाती है।

दुनिया में सबसे ज्यादा बिल्लियां उत्तरी अमेरिका में पाली जाती है। यहां ६३ मिलियन कुत्तों के मुकाबले ७३ मिलियन बिल्लियां हैं। ज्यादातर बिल्लियां एक बार में १ से ९ बच्चों को जन्म दे सकती हैं। वहीं, अब तक का यह रिकॉर्ड है कि एक बिल्ली ने सबसे ज्यादा १९ बच्चों को जन्म दिया, जिनमें १५ जीवित रहे। बिल्लियों की सबसे पुरानी ब्रीड इजिप्शन माउ है। ग्रीक में कैट लवर को एलिरोफीलिया कहा जाता है।

❋ बिल्ली के एक कान में ३२ मांसपेशियां होती हैं।

❋ चितकबरी बिल्ली - यूरोप, एशिया के बहुत से देशों और बलूचिस्तान में पाई जानेवाली सुन्दर सी चितकबरी बिल्ली अपने विशेष गुणों के कारण घरेलू साधारण बिल्लियों में अलग से पहचानी जाती है। जैसे-इसके शरीर से निकलनेवाली विशेष गंध जो कि इसके लिए अभिशाप बनी हुई है। इसके शरीर पर काले सफेद चितकबरे धब्बे होते हैं। ये धब्बे मद्धिम प्रकाश में दिखाई नहीं पड़ते हैं और इसे शिकार करने में आसानी हो जाती है। अपनी इसी विशेषता के कारण ही यह अधिकतर शाम या रात को ही शिकार करने के लिए निकलती है।

छोटे-छोटे जीव जैसे कीड़े-मकोड़े और चिड़ियों के अंडे इसका भोजन है। मुर्गी का मांस तो इसे बेहद पसन्द है। इसलिए यह कभी-कभी बस्तियों में घुस जाती है और दड़बे में घुसकर सभी मुर्गियों को मार डालती है चाहे खाए एक ही को।

एक बार जो शिकार इसके पंजे में आ गया तो उसका बचना बहुत ही मुश्किल है। इसकी सुन्दरखाल ही इसकी शत्रु बन गई। बाजार में बिकने से इसका शिकार तेजी से होने लगा। शिकारी कुत्तों को शिकार के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाता है। इन कुत्तों को लोमड़ी की अपेक्षा इस बिल्ली का शिकार करने में बड़ी आसानी होती है क्योंकि गुस्से में इसके शरीर से विशेष दुर्गंध निकलती है जिसे ये कुत्ते आसानी से पहचान लेते हैं। अब धीरे-धीरे ऐसी स्थिति आ गई है कि चितकबरी बिल्ली की प्रजाति समाप्ति पर है।

✻ म्याऊं का मतलब- बिल्ली की म्याऊं आवाज हमेशा खुशी का इजहार नहीं करती, बल्कि ये तनाव या परेशानी में भी ऐसी आवाजें निकालती हैं। ९० प्रतिशत म्याऊं की आवाज खुशी का इजहार ही होती है। ये अपने बच्चों को शांत करने व उन्हें समझाने के लिए ऐसी आवाज निकालती है और उनके बच्चे अपनी मां के लिए म्याऊं की आवाज निकालते हैं। हमारी उपस्थिति में वे खुशी महसूस कर रही हैं, इसे बताने के लिए भी ये म्याऊं करती हैं। म्याऊं की आवाज दो तरह की होती है। कई बार शिकायती तरीके का लहजा लिए म्याऊं की आवाज होती है, जो छोटे बच्चे के रोने की आवाज से मिलती है। यह हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने के लिए होती है। ये जब छोटी होती हैं, तब तक म्याऊं की आवाज ज्यादा निकालती हैं, पर बड़े होने के बाद बस हम तक अपनी बातें पहुंचाने के लिए म्याऊं करती है और ये तभी ऐसा करती हैं, जब इन्हें किसी तरह की डिमांड करनी होती है, जैसे खाना चाहिए या फिर खेलना है।

✻ **कुत्ता -** पालतू पशु कुत्ते की श्रवणशक्ति यानी सुनने की क्षमता मनुष्य से ९ गुना अधिक तेज होती है।

कुत्ते लगभग हर जगह होते हैं। उसे मनुष्य का सबसे वफादार मित्र माना जाता है। बहुत से लोग उन्हें पालते भी हैं, लेकिन अगर कहीं कुत्ता पागल हो जाए तो बहुत खतरनाक हो जाता है। पागल कुत्ते द्वारा काटे जाने पर सही व समय पर इलाज जरूरी हो जाता है। ऐसा न होने पर व्यक्ति की मौत भी हो सकती है। कुत्ता पागल होता कैसे है? वास्तव में जिस कुत्ते को रेबीज नामक रोग हो जाए उसे ही पागल कुत्ता कहते है। रेबीज का रोग एक प्रकार के वायरस के कारण होता है। यह वायरस हवा में से या किसी जंगली जानवर से कुत्ते तक पहुंचाता है। कुत्ते की चमड़ी पर हुए किसी घाव द्वारा यह उसके शरीर में प्रवेश कर स्नायु तंत्र तक पहुंच जाता है।

यहां इस वायरस की संख्या तेजी से बढ़ती है। इससे मस्तिष्क की कोशिकाएं बुरी तरह प्रभावित होती हैं। रेबीज से प्रभावित कुत्ते को बुखार रहता है तथा वह सुस्त रहता है। भोजन में भी उसकी रुचि नहीं रहती। चार से छ: सप्ताह में यह वायरस कुत्ते के मस्तिष्क को अपनी चपेट में ले लेता है। तब कुत्ता उत्तेजित हो जाता है। उसके मुख से झाग निकलने लगते हैं। वह जोर-जोर से भौंकता भी है। इस समय वह बिना कारण किसी को भी काट सकता है। यही उसकी पागलपन की स्थिति है। इन लक्षणों के दिखाई देने के बाद कुत्ता एक सप्ताह के भीतर मर जाता है। पागल कुत्ते से बचाव बहुत जरूरी है। अगर कहीं पागल कुत्ता काट ले तो तीन दिन के भीतर डॉक्टर की सलाह से एंटी रेबीज टीके लगवा लेने चाहिए।

✻ सबसे बड़ी कुत्ते की जाति सेंडबरनाई (१३० किलो) है।

✻ समझदार डॉगी- यह जिसे अपना मालिक मानता है, उसके लिए कुछ भी कर सकता है। अपनी समझदारी की

वजह से ही कुत्तों को ट्रेनिंग देकर आर्मी में भर्ती किया जाता है। ये किसी का चेहरा देखकर उसकी तकलीफ या फिर खुशी का अंदाजा लगा लेते हैं। ये किसी भी चीज को सीखने के लिए एक हजार तरीकों का प्रयोग करते हैं।

✻ काफी खाने की शक्ति हो पर थोड़े से संतुष्ट हो, गहरी नींद में सोये पर खटका होने पर जगना, अपने स्वामी से प्रेम व शूरवीरता, ये गुण आपको वफादार जानवर कुत्ते से सीखने चाहिए।

✻ कुत्ते की आंख हर एक वस्तु को सफेद तथा काले में ही देख पाती है।

✻ शिकारी कुत्ता प्रति घंटा ५८ कि.मी. दौड़ता है।

✻ कुत्ते के शरीर के केवल एक भाग पर पसीना आता है और वह भाग है उसकी जीभ।

✻ दुनिया में दो कुत्ते चाऊ व चीनेस शार पाई ऐसे हैं जिनकी काली जबान है।

✻ एल्सेशियम कुत्ते की सूंघने की क्षमता मनुष्य से दस लाख गुना अधिक होती है।

✻ ड्रेक विश्वविद्यालय के २००५ के सबसे सुन्दर बुलडॉग कुत्ते की प्रतियोगिता हिबेरियस नाम के कुत्ते ने जीती।

✻ मनुष्य की बोली जैसे बदलती है वैसे कुत्तों की भाषा भी बदलती है। स्कॉटिश कुत्ता ज्यादा जोरदार भौंकता है।

✻ न्यूफाउंड में पाए जानेवाले कुत्ते अपने जालीनुमा पंजों की वजह से कुशल तैराक होते हैं।

✻ ग्रेहाउंड जाति का कुत्ता प्रति घंटा ४१.७ मील की गति से दौड़ सकता है। यह जाति ६००० साल पहले प्राचीन इजिप्त में पायी जाती थी।

✻ कुतिया अपने गर्भ में ६२ दिनों तक बच्चे को रखती है। कुत्ते इसलिए वफादार नहीं होते कि आप उन्हें खाना देते हैं बल्कि वह इसलिए वफादार होते है क्योंकि आप उन्हें कम्पैनियनशिप देते हैं। एक साल की उम्र का कुत्ता उतना ही वयस्क होता है जितना १५ साल का इंसान। १६ कुत्ते से सावधान यह चेतावनी प्राचीन रोम के एक शहर के घर के दरवाजे पर लिखी पायी गयी है। बासेंजी कुत्ते को बिना भौंकने वाला कुत्ता भी कहा जाता है क्योंकि यह भौंकने की बजाय अलाप भरता है।आदमियों की तरह कुत्ते भी मोटापे की समस्या से जूझते हैं, विशेषकर पश्चिमी देशों के कुत्ते। आज तक कुत्ते की सबसे लंबी उम्र का रिकॉर्ड है २९ साल ५ महीने। इससे ज्यादा किसी कुत्ते को जीवित रहते नहीं देखा गया। दुनिया का सबसे भारी भरकम और लंबा कुत्ता एक इंग्लिश मैस्टिफ है जिसका नाम जेबरा है। इसका वजन ३४२३ पौंड और नाक से पूंछ तक इसकी लंबाई करीब ८ फीट ३ इंच होती है। दुनिया की पहली अंतरिक्ष यात्री लाइका नाम की कुतिया थी जिसे तत्कालीन सोवियत संघ की सरकार ने ३ नवम्बर १९५७ में अंतरिक्ष यात्रा पर रवाना किया था। ग्रीनहाउंड्स नस्ल का कुत्ता कुछ ही मिनटों में ४५ मील प्रतिघंटे की गति से दौड़ने लगता है। कुत्ता ३५ हजार कंपन प्रति सेकेंड वाली आवाजें भी सुन सकता है जबकि आदमी सिर्फ २० हजार कंपन प्रति सेकेंडवाली ध्वनियों को ही सुन सकता है। जर्मन शेफर्ड नस्ल के कुत्ते में सूंघने संबंधी कोशिकाएं २२ करोड़ होती हैं जबकि इंसान में महज ५० लाख कोशिकाएं होती हैं। चॉकलेट में पाया जानेवाला एक तत्व थियोब्रोमाइन जो कि कैफीन जैसा होता है, उससे कुत्ता मर सकता है या बहुत गंभीर रूप से बीमार पड़ सकता है। दुनिया में सबसे लंबे कुत्तों की नस्ल में ग्रेट डेन और आइरिश वुल्फहाउंड शामिल हैं जबकि दुनिया के सबसे छोटे कुत्तों में चिहुआहुआ, यॉर्कशायर टेराइर और ट्राय पूडले हैं। कुत्तों के बारे में एक गलत आम धारणा है कि वह कलर ब्लाइंड होते हैं यानी वह रंग नहीं देख पाते। कुत्ते बहुत ज्यादा रंग नहीं समझ पाते और न ही

उनमें रंगों की समझ उतनी स्पष्ट होती है जैसे इंसान में। कुत्ते रंगों को कुछ वैसे ही देख पाते हैं जैसे हम धुंधलके की स्थिति में रंग देख और समझ पाते हैं। शहरों के कुत्ते गांवों में रहनेवाले कुत्तों के मुकाबले औसतन तीन साल ज्यादा जीते हैं। मध्य युग में मैस्टिफ प्रजाति के कुत्तों को हल्का कवच पहनाया जाता था। इसके बाद उनकी पीठ पर जलते हुए सल्फर का बर्तन बांध दिया जाता था। फिर उन्हें घुड़सवारों के पीछे दौड़ा दिया जाता था। कुत्तों का औसत तापमान १००.२-१०२.८ डिग्री फारेनहाइट होता है। एक कुत्ते का दिल एक मिनट में ७० से १२० बार धड़कता है, जबकि आदमी का इतनी ही देर में महज ७० से ८० बार ही धड़कता है।

❋ कुत्ता चेतावनी देने के लिए नहीं भौंकता बल्कि वह अन्य कुत्तों या अपने मालिक को यह बताने के लिए भौंकता है कि कोई आ रहा है।

❋ ऑस्ट्रेलिया में एक छोटा सा जानवर पाया जाता है, जिसका नाम है कस कस। गोल सिर, छिपे कान, थूथनी व थोड़ी मोटी पूंछ वाला कस कस वास्तव में कुत्ते-बिल्ली को मिला-जुला सा रूप लगता है। इसका आकार घरेलू बिल्ली (१३ से २६ इंच) के बराबर होता है।

❋ गर्मी के दिनों में कुत्ता जीभ बाहर निकाले रहता है- कुत्ते के शरीर में छोटे-छोटे छिद्र नहीं होते, अत: अंदर का पसीना बाहर नहीं आ पाता है। जीभ बाहर निकालने से उस पर बाष्प भाव बनकर उड़ती है तो उसके लिए आवश्यक ताप कुत्ते के शरीर में जीभ से ही जाता है, जिससे कुत्ते को ठंडक अनुभव होती है।

❋ कुत्ते की किसी भी अन्य नस्ल से अधिक आदमी को जर्मन शैफर्ड काटता है।

❋ ७ जून,२००९ जर्मनी के अर्करैथ में एक कुत्ते को एक जलधारा में द्वितीय विश्व युद्ध के समय की एक हैंड ग्रेनेड मिली थी और उसने यह उसके मालिक को वापिस दे दी थी।

❋ हरक्यूलिस नामक विश्व के सबसे विशाल कुत्ते का वजन २८२ पौंड है। उसकी गर्दन २८ इंच की व कान ११.५ इंच लंबे हैं।

❋ सर्वप्रथम कुत्ते को, १२,००० साल पहले पालतू बनाया था।

❋ शरीर के आकार के हिसाब से कुत्ते का दिल सबसे बड़ा होता है।

❋ १९९६ में, प्रशिक्षित कुत्तों ने अमरीका में २ अरब अमरीकी डॉलर से ज्यादा के मूल्य की अवैध ड्रग्स को पकड़वाया। कुत्तों को प्रशिक्षण देकर मरीजों में मौजूद त्वचा कर्करोग की कोशिकाओं को पहचाना जा सकता है और ये काम वे चिकित्सा तकनीक से भी पहले कर सकते हैं। बुलडॉग कुत्तों के सिर बहुत बड़े होते हैं इसलिए इस प्रजाति के अधिकांश पिल्लों का जन्म शल्यचिकित्सा से होता है। एक किलोग्राम वजन के चिहुआहुआ कुत्ते और ६८ किलोग्राम वजनी भेड़िए के बीच जितना अंतर होता है उससे कहीं अधिक आनुवांशिक अंतर मनुष्य की नस्लों के बीच होता है।

❋ न्यूफाउंड लैंड के कुत्ते तीव्र तैराक होते हैं, क्योंकि उनके पैरों में जाल होते हैं।

❋ डल्मेशिन कुत्ता जिंजर एक चक्रवात में फंसकर खो गया। बाद में वह एक कार से टकराया, पीठ में गोली खाई, एक और परिवार में रहा, एक सांड के हमले का शिकार हुआ और अंत में पांच साल बाद अपने खोए परिवार से जा मिला।

❋ कुत्ते के कान उच्च आवृत्ति (फ्रीक्वेंसी)वाली ध्वनि को भी सुन सकते हैं, जिन्हें सुनने में मनुष्य के कान पूर्णतया

अक्षम होते हैं।

❋ औसतन एक कुत्ते की आंखों की रोशनी मनुष्य से अच्छी होती है पर उतनी रंगदार नहीं।

❋ कुत्ते के सूंघने की क्षमता अधिक क्यों है - कुत्ता एक ऐसा प्राणी है, जिसकी नजर काफी कमजोर होती है। वह थोड़ी दूर की ही चीजें साफ देख पाता है और उसे भूरा रंग तथा इसका शेड यानि छाया ही स्पष्ट दिखाई देती है। अपनी इस कमी को वह अपनी तेज सूंघने की शक्ति से पूरा करता है। कुत्ते को एक बार कोई चीज सूंघने को दे दी जाए, तो उस गंध को वह आसानी से पहचान लेता है। यही कारण है कि कुत्तों को विशेष प्रशिक्षण देकर उनका उपयोग विस्फोटक और नशीले पदार्थ पकड़ने, अपराधियों की तलाश के लिए किया जाता है।

कुत्तों की नाक के दोनों छेदों में एक क्षेत्र ऐसा होता है जहां लाखों की संख्या में विशेष तरह की गंध संवेदनशील कोशिकाएं होती हैं। इन कोशिकाओं को कीमो रिसेप्टर कहते हैं। इनकी संरचना बालों जैसी होती है और ये बाल हमेशा म्यूकस नामक तरल पदार्थ से जीते रहते हैं। ये नाड़ियों के जरिये मस्तिष्क से जुड़ी होती हैं। मस्तिक के इस भाग को आल्फैक्टरी बल्ब कहते है। यह भाग जिनता बड़ा होता है घ्राण शक्ति भी उतनी ही अधिक होती है। मनुष्य की अपेक्षा कुत्ते का आल्फैक्टरी बल्ब कई गुना बड़ा होता है और इस कारण उसकी सूंघने की क्षमता भी काफी अधिक होती है।

❋ **गाय -** एक एकड़ जमीन की घास चरने वाली गाय, एक वर्ष में एक टन दूध देती है।

❋ कनाडा के ओंटरियो शहर में गाय की एक मूर्ति बनी हुई है। यह मूर्ति उसके मालिक ने बनवाई थी, क्योंकि उसी के कारण उसने ज्यादा दूध देनेवाली गाय का मालिक होने की प्रतियोगिता जीती थी। आमतौर पर एक गाय साल भर में ५३० गैलन दूध देती है, लेकिन यह गाय ३४०० गैलन दूध देती थी।

❋ गाय को ऊपर चढ़ने के बारे में बता सकते हैं पर नीचे उतरने के बारे में वह नहीं समझ पाती।

❋ एक गाय एक वर्ष में ३५०० किलोग्राम गोबर देती है।

❋ गाय अपने औसत जीवनकाल में २००,००० गिलास दूध देती है।

❋ डेयरी की एक गाय को एक गैलन दूध देने के लिए चार गैलन पानी की जरूरत होती है।

❋ गाय काफी कम समय के लिए सोती है वह प्रतिदिन करीब ३.९ घंटे की नींद निकालती है।

❋ गाय का दूध शारीरिक और मानसिक विकास के लिए बहुत जरूरी समझा जाता है। दुनिया में अधिकांश लोगों को गाय के दूध से ही एलर्जी होती है।

❋ **घोड़ा -** घोड़े के दांत - एक नर घोड़े के जबड़े में ४० दांत होते है। घोड़ा खड़े-खड़े भी सो सकता है।

❋ गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड के अनुसार विश्व का सबसे छोटा घोड़ा कुल साढ़े १८ इंच ऊंचा है। १९९६ में किटरैल, नार्थ कैरोलिना में जन्मे इस घोड़े का नाम ब्लैक ब्यूटी रखा गया है।

❋ घोड़ा एक मिनट में ३७ बार सांस लेता है।

❋ घोड़े, चूहे और जीवों की तरह उल्टी नहीं करते।

❋ घोड़े रंगों की पहचान कर सकते हैं। मगरमच्छ एक रंग के विभिन्न प्रकारों तक को पहचान लेता है।

❋ घोड़ा- जन्म लेने के एक घंटे बाद दौड़ने लगता है।

❊ घोड़े बहुत कम नींद निकालते हैं वह रोजाना सिर्फ २.९ घंटे के लिए ही सोते हैं।

❊ अफ्रीका के जंगलों में आज भी बहुत सारे घोड़े झुंडों में पाए जाते हैं। एक आंकड़े के मुताबिक संसार में कुल ६ करोड़ घोड़े हैं। घोड़ा लगभग ५००० साल से पालतू जानवर हैं।

❊ कैस्पियन घोड़ा - वर्ष १९६५ में अमेरिकी महिला लूईज फिरॉज ईरान में बच्चों को घुड़सवारी के गुण सीखा रही थीं। यहां रहते हुए उन्होंने कैस्पियन के छोटे घोड़े के बारे में फैली अफवाह का सच जानने की कोशिश की। उस घोड़े की खोजने के मिशन में वे कामयाब तो हुईं, लेकिन उन्हें उस घोड़े के बारे में जो जानकारी थी, वह नहीं था, बल्कि उस जैसा था। फिर से उन्होंने कोशिश की और दूसरी बार अपनी कोशिश से फिराज ने इस कैस्पियन घोड़े को पुन: अस्तित्व में ला दिया। इसका आकार बहुत छोटा है, लेकिन यह घोड़े जैसा ही दिखता है। प्राचीन पर्शियन सम्राटों के दौरान इस घोड़े के पाये जाने के प्रमाण मिलते हैं। हालांकि उसके बाद के एक हजार से ज्यादा वर्षों से इतिहास में इसकी मौजूदगी स्पष्ट नहीं थी। इसका डीएनए परिक्षण करने के बाद इसकी प्रचीनता की भी पुष्टि हो गयी। फिरॉज ने अब इनकी संख्या में इजाफा करने की योजना बनायी है। हालांकि ईरान में राजनीतिक उथल-पुथल के कारण उनकी योजना को आगे बढ़ाना मुश्किल लग रहा था, लेकिन बाद में वे अपनी कोशिशों में सफल रहीं कभी कैस्पियन घोड़े दुर्लभ थे, लेकिन आज यूएसए, यूरोप, न्यूजीलैंड, और ऑस्ट्रेलिया में इनकी मौजूदगी देखी जा सकती है।

❊ संसार में घोड़ों की १६० नस्लें पाई जाती हैं। इनमें से अरबी घोड़ा एक खास घोड़ा माना गया है। जमीन पर रहनेवाले जानवरों से घोड़े की आंखें सबसे बड़ी होती है। घोड़े छोटी उम्र से ही दौड़ना शुरू कर देते हैं।

घोड़ा बहुत कम बैठता है? वह हमेशा खड़ा रहता है। घोड़े का लेटना या बैठना उसकी नींद की अवस्था पर निर्भर है। घोड़ा केवल गहरी नींद की अवस्था में ही लेटता है। गहरी नींद की यह अवस्था बहुत कम समय के लिए आती है। इसलिए कभी कभार ही ऐसा होता है कि घोड़ा लगातार आधे घंटे तक सोता रहता हो। वैसे भी घोड़ा कुल मिलाकर तीन-चार घंटे से अधिक नहीं सोता, वह भी एक बार में नहीं हल्की नींद की झपकियां वह छोटे-छोटे टुकड़ों में ले सकता है। इसी तरह गहरी नींद भी वह एक बार में नहीं लेता बल्कि दिनभर में कुछ मिनटों के लिए गहरी नींद के आठ-नौ झोंके उसे आते हैं। इसलिए गहरी नींद की अवस्था में भी घोड़ा कुछ मिनटों के लिए ही लेटता है। वयस्क घोड़ा भले ही बहुत कम समय के लिए बैठ पाता हो लेकिन घोड़े के बच्चे घंटों बैठे या लेटे रह सकते हैं। यदि घोड़ा तांगे में जुता हो या किसी काम में लगा हो तो आप कभी भी उसे गहरी नींद में नहीं पाएंगे। गहरी नींद तो वह रात में अपने काम से अलग हो जाने के बाद ही लेता है। आपने घोड़े की इस खासियत पर भी गौर किया होगा कि वह खड़े खड़े सो जाने पर भी गिरता नहीं है। इस विशेषता के लिए उसके पिछले पैरों की विशेष रचना जिम्मेदार है, जिनमें एक प्रकार का लॉक सिस्टम होता है।

❊ घोड़ा उठते समय सामने के दोनों पैरों पर उठता है और बैल पिछले दोनों पैरों से उठता है।

❊ दरियाई घोड़े के शरीर से गुलाबी पसीना निकलता है।

❊ घोड़ा अपने वजन से पांच गुना अधिक बोझ खींच सकता है।

❊ **ऊंट -** ऊंट के पैर बहुत ही मोटे, नर्म और गद्देदार होते हैं। चलते समय यह पैरों के तलवों को फैला लेता है ताकि

ये रेत में गहराई में न धंसें।

ऊंट कैसे बिना पानी के भी कुछ दिन रह लेता है। चालीस के पचास साल तक जिंदा रहनेवाला ऊंट दूर-दूर तक चलता रहता है, फिर भी वह छह महीने तक बिना पानी पिए जिंदा रह सकता है। असल में उसकी पीठ पर कुबड़ (पीठ का उभरा हुआ हिस्सा) होता है। अलग-अलग नस्लों के ऊंटों में किसी की पीठ पर एक कुबड़ होता है, तो किसी की पीठ पर दो कुबड़ होते हैं। ऐसा माना जाता है कि ऊंट अपने कूबड़ में पानी जमा करके रखते हैं, जबकि ऐसा नहीं है। उसके कूबड़ में वसा जमा होती है, जो धीरे-धीरे जरूरत पड़ने पर पानी या ऊर्जा में बदलती रहती है। इसलिए वह छह महीने तक बिना पानी पीए जीवित रह सकता है। वैसे ऊंट एक बार में ११३ लीटर पानी केवल १३ मिनट में पी सकता है।

❋ कैलिफोर्निया एकेडमी ऑफ साइंस के अनुसार, ऊंट छह माह तक बिना पानी के भी रह सकता है।

❋ ऊंट- ऊंट के ऊटपटांग शरीर पर छींटाकी तो प्रसिद्ध है, पर प्रकृति ने ही जानबूझकर उसके शरीर की बनावट ऐसी की है ताकि वह अपने इलाके की कठिन परिस्थितियों को झेल सके। इसके करीब १८ भाग टेढ़े-मेढ़े होते हैं।

अभी दुनिया में करीब १०५० लाख ऊंट हैं। भारत में १७५ से २०० लाख तक ऊंट हैं। ये राजस्थान, गुजरात, हरियाणा और पंजाब के शुष्क क्षेत्रों में पाये जाते हैं। गरम मरूस्थलों के ऊंट का सिर्फ एक कूबड होता है और शीत मरुस्थलों अमेरिका में पाये जानेवाले पशु लामा और विमूना भी ऊंट प्रजाति के ही हैं पर उनका कूबड़ नहीं होता।

गरम मरुस्थल में रहते लाखों वर्ष की विज्ञान प्रक्रिया के दौरान ऊंट के शरीर पर कूबड़ का निर्माण हुआ और उसमें पानी संग्रह करने की क्षमता भी आ गयी तभी वह गरम और शुष्क परिस्थितियों में टिक सका।

दुनिंदरी एक कूबड़वाले ऊंट को कहते हैं। यह शब्द ग्रीक भाषा से उत्पन्न हैं। भारत में एक कूबड़वाले ऊंट ही पाये जाते हैं।

लंबे बाल और दो कूबड़ वाले अफगानिस्तान, ईरान, मध्य एशिया तथा मंगोलिया में पाये जाते हैं। इन्हें बैक्ट्रियन ऊंट कहा जाता है। इन दो कूबड़ों में वह अधिक चर्बी जमा कर सकता है ताकि इस प्रदेश के लम्बे सूखे जाड़े में भी वह जिंदा रह सके।

इसके शरीर की आंतरिक संरचना ऐसी है कि जल की अत्याधिक बचत करती है। ऊंट के गुर्दे इस तरह काम करते हैं कि ऊंट मूत्र मार्ग से कम जल बाहर निकालता है। ऊंट के शरीर का तापमान भी मरुस्थल के दिन और रात के बदलते तापमान के साथ बदल जाते है। मनुष्यों के शरीर में तापमान बढ़ना या बुखार आना खतरनाक है पर ऊंट ६ डिग्री सेंटीग्रेड तक अपने शरीर के तापमान में वृद्धि को आसानी से झेल लेता है। रात के समय उसका तापमान नीचे उतरकर सामान्य हो जाता है। उच्च तापमान में ऊंट पसीना नहीं छोड़ता। इस तरह उसके शरीर में जल संरक्षित रहता है। ऊंट मरुस्थल का जहाज है। यदि ऊंट न होते तो मरुस्थलों में मानवों का प्रवेश और बसना संभव ही नहीं था। मरुस्थलों में ऊंट मानव की अनिवार्यता है। वे मनुष्यों और सामान को ढोते हैं। कृषि कार्यों में भी वे उपयोगी हैं। वे हल खींचते हैं, कुओं से पानी निकालते हैं और खेतों से बाजार तक या किसान के घर तक अनाज ले जाते हैं। सारी तैयारी की जाती है। सभी ऊंटों में राजस्थानी ऊंट ही सबसे तेज दौड़ते हैं। ऊंट मरुस्थल की संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। राजस्थानी लोक गाथाओं में ऊंटों का उल्लेख जरूर होता है।

दीखने में भले ही ऊंट आक्रमक एवं शत्रुतापूर्ण दिखें पर आम तौर से वे सहनशील और दब्बू ही होते हैं। ये समूह में रहना पसंद करते हें और अकसर अपने झुंड के नेता के पीछे चलते हैं। अन्य पालतू जानवरों की अपेक्षा इनकी रोग प्रतिरोध

शक्ति अधिक होती है। ये सूंघकर दूर से ही जलाशय या हिंसक पशु की जानकारी ले लेते हैं। लद्दाख के ठंडे, उठे पठारों में लोग अब वे कूबड़ वाले बैक्ट्रियन ऊंट पाल रहे हैं।

ऊंट- चालीस के पचास साल तक जिंदा रहनेवाला ऊंट दूर दूर तक चलता रहता है, फिर भी वह छह महीने तक बिना पानी पिए जिंदा रह सकता है। असल में उसकी पीठ पर कुबड़ (पीठ का उभरा हुआ हिस्सा) होता है। अलग-अलग नस्लों के ऊंटों में किसी की पीठ पर एक कुबड़ होता है, तो किसी की पीठ पर दो कुबड़ होते है।

❋ ऊंट की तीन पलकें होती हैं, जिससे वो रेगिस्तान में रेत से अपनी रक्षा करता है। रेगिस्तान में रेत बहुत ज्यादा उड़ती है।

❋ रेगिस्तान में रहने वाले ऊंट को ४६ डिग्री सेल्सियस (११५ डिग्री फारेनहाइट) तापक्रम होने तक भी पसीना नहीं आता। ऊंट की रीढ़ की हड्डी एकदम सीधी होती है।

❋ रेगिस्तानी ऊंट एक बार में एक सौ पचास लीटर पानी पी सकता है।

❋ कुबड़ के बावजूद ऊंट की रीढ़ की हड्डी सीधी होती है।

❋ ऊंट के शरीर में पित्ताशय ही नहीं होता।

❋ ऊंट की आंख में तीन पलकें होती हैं जो उसे रेगिस्तान में उड़नेवाली रेत से महफूज रखती हैं।

❋ संयुक्त अरब अमीरात में ऊंटों की दौड़ में जब छोटे बच्चों के इस्तेमाल पर पाबंदी लगाई गई तो ऊंटों की पीठ पर रिमोट कंट्रोल रोबो बांधे जाने लगे।

❋ ऊंट को रेगिस्तान का जहाज कहा जाता है। इसका कारण है कि यह रेगिस्तान में बिना कुछ खाये-पिये कई दिनों तक भूखा रह सकता है। इसकी नाक, कान और आंखों की बनावट ऐसी होती है जिस पर रेगिस्तानी धूल का विशेष प्रभाव नहीं पड़ता।

ऊंट पानी और खाना के बिना लंबे समय तक भूखा रह सकता है। लेकिन वास्तविकता यह नहीं है। दूसरे जानवरों की तरह इसे भी नियमित रूप से भोजन तथा पानी की आवश्यकता होती है लेकिन इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ऊंट कई दिनों के लिए राशन-पानी एक ही बार में अपने शरीर में जमा कर लेता है।

ऊंट की पीठ पर एक बड़ा सा कूबड़ होता है। वास्तव में यह कूबड़ चर्बी का भंडार होता है। कूबड़ का वजन पैंतालीस किलो तक होता है। इससे जमा चर्बी को ऊंट ऊर्जा के रूप में अपनी यात्रा के दौरान प्रयोग में लाता हे। ऊंट के पेट में फ्लास्क के आकार के दो थैले होते हैं, जिनमें यह पानी भर लेता है। पानी न मिलने पर यह इसी जमा पानी को इस्तेमाल करता है। कूबड़ में जमा चर्बी तथा थैलों में एकत्र पानी के सहारे ही ऊंट रेगिस्तान में बिना भोजन तथा पानी के कई दिनों तक लगातार यात्रा करता रहता है।

यात्रा करने के बाद ऊंट का कूबड़ ढीला पड़ जाता है क्योंकि इसमें जमा चर्बी लगभग समाप्त हो चुकी होती है। इसका पानी का भंडार भी समाप्त हो जाता है। यात्रा के बाद ऊंट निढाल सा होकर जमीन पर पड़ जाता है। इसे सामान्य स्थिति में आने के लिए काफी लम्बे समय तक आराम की आवश्यकता होती है। जैसे-जैसे भोजन और पानी की आवश्यकता पूरी होती जाती है वैसे-वैसे ऊंट सामान्य अवस्था में आता जाता है। ऊंट प्राचीन काल से ही मनुष्य का सहयोगी रहा है। कहा जाता है कि इसका उपयोग आज से चार हजार साल पहले मिस्र के लोग किया करते थे।

✻ ऊंटनी का दूध अरब देशों में खूब मिलता है। गाय के दूध की अपेक्षा इसमें १० गुना ज्यादा आयरन होता है।

✻ मादा ऊंट को काउ, नर ऊंट को बुल और ऊंट के बच्चे को काल्फ कहा जाता है। ऊंट भोजन चबाकर नहीं खाते न ही जुगाली करते हैं। ऊंट के पेट में तीन चैंबर होते हैं। ऊंट एक दिन में २०० लीटर तक पानी पी सकते हैं।

✻ ऊंट झाड़ीदार पत्तियों को बिना अपनी मुंह को क्षति पहुंचाए ही खा सकते हैं। ऊंट पथरीले मरुस्थल में चलना पसंद नहीं करते हैं क्योंकि इससे उनके पांवों के घायल होने का खतरा बना रहता है। सोमाली लोगों को ऊंटनी का दूध सबसे प्रिय है और उनके बच्चों के नाम भी इनकी प्रजातियों के नाम पर रखा जाता है।

✻ ऊंट के दूध की दही नहीं बन सकता।

✻ ऊंट सर्दियों में दो महीनों तक बिना पानी के रह सकते हैं। ऊंट रोजाना पानी नहीं पीता। ऊंट एक बार में १०० से १५० लीटर तक पानी पी सकता है। ऊंट का प्रमुख्य आहार पेड़ों की हरी पत्तियां हैं।

✻ रेगिस्तान में एक ऊंट ६५ किमी प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ सकता है।

✻ ऊंट को कभी भी पसीना नहीं आता क्योंकि इसकी मोटी चमड़ी सूर्य की किरणों को रिफ्लेक्ट करती है।

दुनिया का इकलौता ऐसा अस्पताल जहां सिर्फ ऊंटों का होता है इलाज

अस्पताल को बनाने में ७१ करोड़ रुपए खर्च हुए। इस वीआईपी अस्पताल को बनाने में करीब ७१ करोड़ रुपये खर्च हुए हैं। इसकी शुरुआत साल २०१७ में हुई थी, जो अब पूरी दुनिया में लोकप्रिय हो चुका है। इस अस्पताल में ओमान से लेकर पूरे संयुक्त अरब अमीरात के ऊंटों का इलाज होता है। इस अस्पताल में कुद ६५ मेडिकल स्टाफ हैं, जिसमें विदेशी विशेषज्ञों की टीम भी है। यहां एक बार में कुल २२ ऊंटों का इलाज किया जा सकता है। खास बात ये है कि इस अस्पताल में ऊंटों का इलाज काफी महंगा है। जहां ऑपरेशन की न्यूनतम कीमत ७१ हजार रुपये है, तो वहीं सिर्फ अल्ट्रासाउंड के आठ हजार रुपये लगते हैं।

अस्पताल में एक पांच मीटर ऊंची एंडोस्कोपी मशीन लगाई गई है, जो पूरी दुनिया में सिर्फ तीन ही हैं। दो मशीनें अमेरिका में हैं, जिनमें से एक का इस्तेमाल व्हेल के इलाज में किया जाता है, तो वहीं दूसरी मशीन से जिराफ की एंडोस्कोपी की जाती है। यहां ज्यादातर वैसे ऊंटों का इलाज किया जाता है, जो मैराथन की दौड़ में गिरकर घायल हो जाते हैं और उनकी हड्डियों में फ्रैक्चर हो जाता है। कई बार तो ऑपरेशन थिएटर में ऊंटों को उल्टा लटकाकर उनका इलाज किया जाता है।

दरअसल, दुबई में होनेवाली ऊंटों की दौड़ दुनियाभर में लोकप्रिय है। यहां रेस जीतनेवाले विजेता को अरबों का इनाम दिया जाता है। इसी साल प्रतिष्ठित अल मरमूम हेरिटेज फेस्टिवल में ऊंटों की रेस आयोजित की गई थी, जिसमें जीतनेवाले ऊंटों के मालिकों को करीब २.८६ अरब रुपये की राशि पुरस्कार के तौर पर दिए गए थे।

✻ ऊँट एकदम अनूठा जानवर है, अपने रूप-स्वरूप और प्रकृति दोनों से। रेगिस्तानी इलाकों में निवास करनेवालों के लिए ऊँट एक बहुत बड़े सहयोगी व सहारे का काम करता है। खतरा देखकर वह सरपट दौड़ता है तथा क्रोध आने पर मालिक पर भी आक्रमण करने में संकोच नहीं करता। ऊँट में खामियाँ जरूर हैं, लेकिन वह एक उपयोगी जानवर है। रेगिस्तानी इलाके के खुश्क वातावरण और तेज धूप में बिना पानी पिए कई दिनों तक वह लगातार श्रम कर सकता है। ग्रामीण इलाकों में माल ढोने, खेती का हल चलाने तथा धान को मंडी ले जाने के सारे काम ऊँट सहजता से संपन्न करता है। ऊँट रेगिस्तान का जहाज

भी कहलाता है। भारत में ऊँट का प्रवेश अधिनायकवादी यूनानी सम्राट सिकंदर के साथ हुआ। सिकंदर की सेना में घोड़ों के साथ-साथ ऊँट भी थे, जिन्हें वह अपनी युद्धोन्माद की पूर्ति के लिए भारत की धरती पर लाया था।

ऊँट एक तेज गतिवाला सहनशील जानवर माना जाता है, पर कभी कभी अचानक वह अपना धैर्य खो देता है। हालाँकि सभी ऊँट ऐसा नहीं करते। जब रेलों का आविष्कार नहीं हुआ था, उन दिनों ऊँट ही अपनी पीठ पर लोगों को बिठाकर लंबी-लंबी यात्राएं तय करता था। रेगिस्तानी क्षेत्र होने के कारण राजस्थान ऊँटों का गढ़ माना जाता है। कोई दस लाख ऊँट यहां पर हैं, जो भारत में ऊँटों की आबादी का ७० प्रतिशत है। सऊदी अरब की भाँति यहाँ ऊँटों के मेले, ऊँटों की दौड़ और ऊँट उत्सव होते हैं।

राजस्थान की यह विशेषता है कि यहाँ के ग्रामीण क्षेत्रों में ऊँट की पीठ पर बैंक, डाकघर और पुस्तकालय भी चलाए जाते हैं। रेगिस्तानी क्षेत्रों के सीमा सुरक्षा बल के जवान ऊँटों की पीठ पर गश्त लगाकर तस्करों एवं डाकुओं को पकड़ लेते हैं। ऊँट की उपयोगिता दिनोंदिन जितनी बढ़ती जा रही हैं, ऊँट की देखभाल और नस्ल सुरक्षा के प्रति हमारी रुचि उतनी ही कम होती जा रही है।

*** गधा -** गधा भी आपको शिक्षा देता है कि अत्यंत थकने पर भी बोझ ढोना, गरम, ठंडे का विचार न करना, सदा संतोष से रहना चाहिए।

* कुदरत ने गधे की आखों की पुतलियों की बनावट कुछ इस तरह की है कि वो अपने चारों पैरों को एक साथ देख सकता है।

* अगर एक गधे की आंख उसके सिर पर लगा दी जाए तो वह हमेशा के लिए अपने चारों पैर नहीं देख सकेगा।

* भारत में एक ऐसी सैंक्चुरी है, जो जंगली गधों के लिए संरक्षित है। यह सैंक्चुरी बनाई गई है गुजरात के कच्छ में। गुजरात के कच्छ में स्थित यह इंडियन वाइल्ड लाइफ सैंचुरी करीब पांच हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैली हुई है और इसलिए यह भारत की सबसे बड़ी सैंचुरी है।

आम गधों से अलग हैं ये गधे - गुजरात में इन जंगली गधों को घुड़खर कहा जाता है। ये कद में आम गधों से ऊंचे होते हैं। ये कच्छ में मिलनेवाली घास और पेड़ों के पत्ते आदि खाकर गुजारा करते हैं। ये जंगली गधे ७० से ८० किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ सकते हैं। पहली बार १९४० में जब इन गधों की गिनती कराई गई, तब उनकी संख्या घटकर केवल साढ़े तीन सौ रह गई। इसके बाद इन्हें बचाने के लिए सैंचुरी बनाने का फैसला किया गया। फिर १९७२ में यह बनकर तैयार हुई। आज इन घुड़खर की संख्या अच्छी खासी हो गई है।

*** सूअर -** बाबीरूसा - यह एक भिन्न तरह का सूअर होता है। इसके विशाल गजदंत ऊपर की ओर उठे हुए होते हैं। नर बाबीरूसा के ऊपरी जबड़े पर गजदंतों का जोड़ा होता है। इसका श्वदंत ऊपर की ओर उठता रहता है तथा चमड़ी को फाड़कर मुड़कर तब तक ऊपर की ओर उठता जाता है जब तक कि माथे को न छू ले। ये सेलेबेस तथा उसके निकटवर्ती इंडियन द्वीपों के दलदली जंगलों में पाए जाते हैं।

ये पौधों की जड़ें तथा फल खाकर अपना पेट पालते हैं। ये झुंडों में रहते हैं तथा धरती पर अपने भोजन की तलाश करते हैं। नर बाबीरूसा मिट्टी खोदते हैं तथा मादा और छोटे बाबीरूसा उसमें से कूड़ा-करकट निकाल कर खाते हैं। बाबीरूसा

हालांकि एक सूअर है लेकिन इसमें अनेक विचित्रताएं भी हैं। इसके मजबूत शरीर पर बाल न के बराबर होते हैं। इसकी मोटी चमड़ी धूसर रंग की होती है। सूअर परिवार के अन्य सदस्यों की तुलना में इसकी टांगें लम्बी होती हैं।

❋ सूअर- सूअर अपना सारा दिन या तो सोने में बिताते हैं या फिर खाने में। वे दिन में १२ से १४ घंटे सोए रहते हैं। वे अपनी पीठ किसी चीज पर टिकाकर रखते हैं और एक तरफ झुके रहते हैं। कारण यह है कि उन्हें ज्यादा घूमना-फिरना पसंद नहीं है।

❋ शारीरिक तौर पर सुअरों के लिए आकाश की तरफ देखना असंभव है।

❋ **नील गाय (सांड़) -** नीलगाय- नीलगाय या नीला सांड सबसे बड़ा एशियाई मृग है जो भारत के घास के मैदानों और खेतों के आसपास विचरण करता हुआ देखा जा सकता है। नीलगाय दिन में घूमनेवाला प्राणी है और भारत मे सबसे आसानी से भी दिख जाता है।

❋ साँड- साँड अपने गजदंत समान निचले रदनकों को शस्त्रों की भाँति प्रयोग करके लड़ते हैं।

❋ लाल रंग सांड को क्यों नहीं भाता - सांड लाल रंग देखकर पागल हो जाता है और लाल रंग पहने व्यक्ति को मारने के लिए दौड़ पड़ता है। कई देशों में ऐसे खेल भी खेले जाते हैं, जिसमें लाल रंग दिखाकर सांडों को भड़काया जाता है, वास्तव में सारे मवेशियों की तरह सांड भी कलर ब्लाइंड होते हैं, वे किसी रंग को देख ही नहीं सकते। लाल रंग के प्रति उसके भड़कने का कारण सिर्फ लाल रंग के कपड़े को हिलाए जाने का तरीका है। जिस तरह से उसे सांड के सामने लगातार हिलाया जाता है उससे वह भड़क उठता है और हिलाने वाले व्यक्ति की और दौड़ पड़ता है।

❋ **बकरी -** बकरी को आप लाख कोशिश करिये कि वह कुएं पर चढ़ जाये, लेकिन नहीं चढ़ेगी। बकरी के विषय में कहा जाता है कि किसी स्थान पर पहले कुआं रहा होगा और बाद में उसे मिट्टी डालकर पाट दिया गया हो तो भी वह उस स्थान पर नहीं चढ़ेगी। यह उसकी पारदर्शी दृष्टि का ही कारण है। वैसे बकरी का दूध भी बड़ा हितकारी है, विशेषकर क्षय रोगियों के लिए बकरी के दूध को बहुत उपयोगी बताया गया है। गांधीजी तो अपनी बकरी के लिए विख्यात थे।

❋ बकरी के ऊपर के आगे के दांत नहीं होते।

❋ साकिन (आइबैक्स)- साकिन एक सुगठित तथा शानदार बकरी है, जो हिमालयी क्षेत्र में पायी जाती है। नर की लंबी दाढ़ी और लंबे, चपटे तथा मुड़े हुए सींग होते हैं। मादा के सींग छोटे होते हैं। साकिन के शरीर का रंग ऋतु के साथ बदलता रहता है, सर्दियों में थोड़ा स्लेटी मिला हुआ पीला तथा गर्मियों में नर में अनियमित सफेद धब्बों से भरा हुआ गहरा भूरा और मादा में पीला भूरा होता है। साकिन २५०० से ७००० मी. की ऊंचाई पर पाया जाता है। इस बकरी से प्राप्त ऊन उच्च कोटि का होता है और प्रसिद्ध पश्मीना शाल, मोजे, बनाने के काम आता है।

❋ प्रति दिन बकरी को ५.३ घंटे की नींद जरूरी होती है।

❋ बकरी- गाय के दूध की अपेक्षा बकरी का दूध अधिक सुपाच्य होता है और इसके सेवन से एलर्जी भी कम होती है। बकरी के दूध में गाय के दूध की अपेक्षा कैल्शियम, विटामिन-ए और नियासिन की मात्रा अधिक पायी जाती है। महात्मा गांधी बकरी के दूध का सेवन करते थे और उन्होंने ३० वर्षों तक सेवन किया। विश्व में सबसे ज्यादा बकरियां चीन में पायी जाती हैं। वहां लगभग १७० मिलियन बकरियां है।

❊ **खच्चर** - खच्चर का जन्म गधा और घोड़ी की संभोग क्रिया के फलस्वरूप होता है।

❊ **भेड़** - न्यूजीलैंड में मनुष्य से ज्यादा भेड़ें हैं वहां हर १५ भेड़ों पर एक मनुष्य है।

❊ **लोमड़ी** - मेडगास्कर में पाए जाने वाले लोमड़ी की शक्ल वाले अत्यधिक बौने बंदर लेमर की मादा एक बार में कम से कम तीन बच्चों को जन्म देती है।

❊ लोमड़ी की बहुत सी प्रजातियां हैं, जिनमें से १२ प्रजातियां प्रमुख हैं। इनमें सबसे ज्यादा रेड फॉक्स पायी जाती है। इसके अलावा ग्रे फॉक्स, आर्कटिक फॉक्स, सिलवर फॉक्स, आइलैंड फॉक्स और फैनेक फॉक्स भी काफी कॉमन हैं। लोमड़ी अंटार्कटिका को छोड़कर हर महाद्वीप पर पायी जाती है अब जैसे आर्कटिक फॉक्स बर्फीले इलाकों में रहती हैं तो फैनेक फॉक्स में मरु प्रदेशों में रहने की क्षमता होती है। इसी तरह जंगलों में रहनेवाली ग्रे फॉक्स पेड़ों पर चढ़ने की अभ्यस्त हो जाती हैं।

❊ लोमड़ी- श्वान वंश में लोमड़ी सबसे छोटी होती है। लोमड़ी माँद में रहती है, पर यह माँद खोदने का कष्ट कभी नहीं उठाती। यह प्राय: बिज्जू या खरगोश की माँद छीनकर रहने लगती है। छल, कपट, चतुराई, धूर्तता, जितने भी दूसरों को उल्लू बनाने के गुण है, सब लोमड़ी में यथेष्ट मात्रा में पाए जाते हैं। फरवरी मार्च में लोमड़ी प्रसव करती है। बच्चों की संख्या पाँच से आठ तक होती है। विभिन्न देशों की लोमड़ियों में वहाँ की जलवायु के अनुसार रंग, आकृति और स्वभाव में अंतर होता है। संसार में लोमड़ी की चौबीस उपजातियाँ पाई जाती हैं। ऑस्ट्रेलिया को छोड़कर पृथ्वी पर यह सर्वत्र पाई जाती है। मांसभक्षी श्रेणी के अन्य जीवों की तरह लोमड़ी के बच्चे भी अंधे उत्पन्न होते हैं। बाद में आँखें खुलती हैं। लोमड़ी छोटे मोटे पक्षियों पर निर्वाह करती है। कीड़े मकोड़े और गिरगिट भी चट कर जाती है। बस्तियों में घुसकर मुर्गा, मुर्गी पकड़ने की चेष्टा करती है। हमारे देश में कई जगह लोमड़ी को खिखिर भी कहते हैं।

❊ **काला हिरण** - काला हिरण हमारे देश के दुर्लभ और सुन्दर जानवरों में से एक है। खुले घास के मैदानों में इसे सरपट भागते हुए और चौकड़ी भरते हुए देखना अपने आप में एक सुखद अनुभव है। काले हिरणों की संख्या आज हमारे देश में काफी कम हो गई है लेकिन आज से लगभग चालीस वर्ष पूर्व तक यह भारत के सम्पूर्ण मैदानी ग्रामीण क्षेत्रों में पाया जाता था। ज्यों-ज्यों आबादी बढ़ती गई काले हिरणों के रहने के लिए सुरक्षित स्थान घटते चले गए। शिकारियों ने बड़ी संख्या में निर्दयता पूर्वक इन सुंदर प्राणियों का शिकार किया। इसी कारण अधिकांश भागों में काले हिरण कम होते चले गए। काले हिरण घने जंगलों में नहीं बल्कि खुले और झाड़ीदार घास के मैदानों में रहना पसन्द करते हैं। जवान नर काले हिरन की पूरी पीठ, गर्दन का ऊपरी भाग, चेहरा और पैरों का बाहरी भाग काले रंग का होता है। शरीर के नीचे का भाग सफेद होता है। आंखें बड़ी और सुन्दर होती हैं। आंखों के आसपास सफेद रंग का खूबसूरत घेरा होता है और इसके आगे के भाग में लम्बी ग्रंथि जैसी निकली दिखाई देती है।

इसकी खूबियां इसकी दुश्मन भी बनती रही हैं। इसके खाल और मांस के लिए इसका शिकार किया जाता है। जो कानूनन जुर्म है। उत्तर-पूर्व को छोड़कर देशभर में पाये जानेवाला इस प्यारे से जानवर का इतना शिकार किया गया कि आज इसके अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा है। भारत में इनकी संख्या लगभग ५० हजार है। ये हमेशा १५-२० के झुंड में रहते हैं। इनकी औसत उम्र १६ वर्ष होती है। अपने देश में तो काला हिरण धार्मिक आस्था से भी जुड़ा हुआ है।

५ कला के जीव (क) बर्फीले जीव जगत

❋ **ध्रुविय भालू (पोलर बियर) -** बर्फीले इलाकों का सफेद भालू पोलर बियर

भालुओं की ही एक प्रजाति पोलर बियर अत्यधिक ठंडे इलाकों में रहती है जहां वर्ष भर बर्फ जमी रहती है। इनका रंग भी बर्फ की तरह ही सफेद होता है।

पोलर बियर आर्कटिक समुद्र के नजदीक और आसपास के इलाकों में पाए जाते हैं। यहां के अत्यधिक ठंडे वातावरण में रहने के लिए इनका शरीर पूरी तरह अनुकूल होता है। ये सील एवं अन्य मछलियों का शिकार करने के लिए बर्फ पर आसानी से घूम सकते हैं। धरती पर हुए परिवर्तनों की बदौलत पोलर बियर सामान्य भालुओं से करीब ५० लाख वर्ष पूर्व बिछड़ गए थे। अब तक मिला सबसे प्राचीन पोलर बियर जीवाश्म १ लाख १० हजार वर्ष पहले का है। पोलर बियर को साइबेरिया में नानूक नाम से तथा नॉर्वे में इस्बजोर्न के नाम से जाना जाता है। पोलर बियर अपने भोजन हेतु शिकार के लिए बर्फ के पानी पर तैरते टुकड़ों पर ही आश्रित रहता है। बर्फ पिघलने पर जब सील मछलियां अन्य स्थानों की ओर जाने लगती हैं तो पोलर बियर भी उनके पीछे जाते हैं। कई बार उन्हें बर्फीले इलाकों से भी बाहर आना पड़ता है जब तक कि शीत ऋतु फिर न आ जाए।

बर्फ में चलने के लिए पोलर बियर के पैरों के तलवे गद्देदार और फर युक्त होते हैं जिससे उन्हें बर्फ पर अच्छी पकड़ मिलती है। इनके अगले पंजे छोटे और तीखे होते हैं जिससे वे तेजी से बर्फ खोद सकते हैं। इनके पैरों का आकार काफी बड़ा होता है। जिससे बर्फ पर चलते हुए इनके भारी शरीर का भार समान रूप से बंट जाता है। अत्यधिक ठंड से बचाने के लिए इनकी त्वचा में १० सेंटीमीटर मोटी चर्बी के अलावा त्वचा पर फर की एक मोटी परत भी होती है। फर के भी दो हिस्से होते हैं- एक मोटी निचली परत और उसके ऊपर बालोंवाली परत होती है।

❋ ध्रुवीय भालू का सबसे ज्यादा शिकार मनुष्यों के द्वारा होता है। ध्रुवीय भालू का सबसे प्रिय भोजन सील मछली होता है।

❋ ध्रुवीय भालू जमीन पर लगभग ४० किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ लेता है।

❋ ध्रुवीय भालू- क्लोन्दिक ३३ साल की मादा ध्रुवीय भालू है। इसे कद्दू के साथ खेलना अच्छा लगता है। जलवायु परिवर्तन के कारण इन पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है। वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फंड फॉर नेचर (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) ने इसे कमजोर होती प्रजाति की श्रेणी में रखा है।

❋ भालू भरपूर रोंएं वाले इस जंगली प्राणी को गर्मी भी खूब लगती है। जंगली होते हुए भी यह मनुष्य के करीब है। भालू बच्चों जैसा रोता है। जब सर्कस और घूम-घूम कर मदारी का काम करनेवाले इसके करतबों को दिखाते हैं तो यह मनुष्यों की बखूबी नकल करता है। इन भालूओं के अलावा एक प्रकार का भालू और होता है, जो बिल्कुल बर्फ की तरह सफेद होता है। इसे ध्रुवीय भालू कहते हैं।

ध्रुवों पर छह महीने का दिन और छह महीनों की रात होती है। इतने लंबे समय तक प्रकाश न होने पर भी ये अपने शिकार के पीछे पड़े रहते हैं। जैसे ही अंधेरे के छह महीना बीतता है वे अपने शिकार की तलाश और तेजी से करने लगते हैं। इनका भोजन आइस पैक में मिलता है। उत्तरी ध्रुव के ऊपर एक तैरता हुआ बर्फ का बड़ा टोपा या कैप है, जो धरती की गति के साथ घूमता रहता है। इस विशाल बर्फ कैप के किनारों पर चिटकी बर्फ के नीचे ध्रुवी भालू को अपना भोजन

मिलता है। सील मछलियां और व्हेल, वालरस जैसे दूसरे जंतु। ठंड में रहने की वजह से ही इनको अधिक से अधिक वसावाले भोजन की जरूरत होती है। इनका भोजन सील मछलियां आइस कैप के किनारों पर तैर रही है और उसे बर्फीले पानी में तैरकर अपने बच्चों के साथ जाना है।

भालू के बच्चे- पोलर बीयर के बच्चे जैसे कुछ बड़े होते हैं, वे भी अपने मां के साथ भोजन की तलाश में निकल जाते हैं। मां भालू जमीन पर दौड़ती समुद्र तट पर पहुंचकर पानी में छलांग लगा देती है। कई मील तैरकर वह आइस पैक तक पहुंचती है। चिटकी, तैरती बर्फ की चट्टानों के बीच वह सूंघती रहती है। अचानक उसे पानी में एक हलचल महसूस होती है। बिजली की तेजी से उसका विशाल पंजा झपटता है और अगले ही क्षण तड़पती हुई सील उसके मुंह में होती है। वह उसे घसीट कर दूर ले जाती है और जल्दी-जल्दी खाती है, क्योंकि बर्फीली ठंड से जिन्दा रहने के लिए उसे बहुत चर्बी चाहिए। इनके लिए बसंत का मौसम सबसे अच्छा है, क्योंकि सील मछलियां इस समय बड़ी संख्या में बच्चे देती हैं।

ग्लोबल वार्मिंग की मार- पोलर भालू बर्फ ही में सो भी जाते हैं। इनको किसी से डर नहीं लगता है, क्योंकि वे इस क्षेत्र के राजा होते हैं। कभी-कभी आदमी खाल के लिए इनका शिकार करता है। ये भालू केवल बच्चे देने मैदान पर आते हैं। मादा भालू हर दो-तीन साल में बच्चे जन्मती हैं। ग्लोबल वार्मिंग ने इनके जीवन पर बुरा प्रभाव डाला है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण ध्रुवीय आइस कैप पिघल कर बहुत सिकुड़ गई है। अब भालुओं को द्वीप से आइस कैप तक सैकड़ों मील तैर कर जाना पड़ रहा है, ताकि उन्हें तैरती बर्फ मिले और वे भोजन तलाश सकें। सैकड़ों मील तैरना, जब वो कमजोर हों और पीछे भूखे बच्चे हों, बहुत कठिन होता है, इसलिए बहुत से भालू बीच में ही डूबकर या भूख से मर जाते हैं।

❋ ध्रुवीय भालू (उर्सूस मारीटिमस) एक ऐसा भालू है जो आर्कटिक महासागर, उसके आसपास के समुद्र और आसपास के भू क्षेत्रों को आवृत किये, मुख्यत: आर्कटिक मंडल के भीतर का मूल वासी है। यह दुनिया का सबसे बड़ा मांसभक्षी है और सर्वाहारी कोडिअक भालू के लगभग समान आकार के साथ, यह सबसे बड़ा भालू भी है। एक वयस्क नर का वजन लगभग ३५०-६८० किग्रा (७७०-१५०० पाउन्ड) होता है। हालांकि यह भूरे भालू से नजदीकी रूप से संबंधित है, लेकिन इसने विकास करते हुए संकीर्ण परिस्थितिकाय स्थान हासिल किया है, जिसके तहत ठंडे तापमान के लिए, बर्फ, हिम और खुले पानी पर चलने के लिए और सील के शिकार के लिए, जो उसके आहार का मुख्य स्रोत है, अनुकूलित कई शारीरिक विशेषताएं हैं यद्यपि अधिकांश ध्रुवीय भालू भूमि पर जन्म लेते हैं, वे अपना अधिकांश समय समुद्र पर बिताते है (अत: उनके वैज्ञानिक नाम का अर्थ है समुद्री भालु) और केवल समुद्री बर्फ से लगातार शिकार कर सकते हैं, जिसके लिए वे वर्ष का अधिकांश समय जमे हुए समुद्र पर बिताते हैं। ध्रुवीय भालू को एक नाजुक प्रजाति के रूप में वर्गीकृत किया गया है, जिसकी १९ में से ८ उप-जनसंख्या में गिरावट देखी गई है। हजारों वर्षों तक ध्रुवीय भालू, आर्कटिक के स्वदेशी लोगों के भौतिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक जीवन का एक प्रमुख केंद्र रहा है और ध्रुवीय भालू का शिकार उनकी संस्कृति में महत्वपूर्ण बना हुआ है।

❋ उत्तर ध्रुवीय प्रदेशों में पाया जानेवाला सफेद भालू एक खतरनाक हिंसक जीव है, इसकी लंबाई लगभग तीन मीटर और वजन १००० किलोग्राम से भी अधिक होता है।

❋ सबसे अधिक मांसाहारी जीवन कोडियक भालू (एलास्का) है।

❋ गजब की समानता - ऐडमायरेलटी द्वीप पर पाया जानेवाला भूरे रंग का भालू, पोलर बीयर यानी सफेद भालू से

काफी हद तक समानता रखता है। भूरे रंग का यह भालू अपने ही रंग के अन्य भालुओं से सर्वथा भिन्न होता है।

❊ याक (चंवरी गाय) - तिब्बत के ठंडे तथा वीरान पठार, नेपाल और भारत के कुछ उत्तरी इलाकों में याक आठ-दस हजार फीट की ऊंचाई पर पाया जाता है। यह काला, भूरा, सफेद, या धब्बेदार होता है। याक का शरीर घने लंबे और खुरदरे बालों से ढका रहता है। जाड़े के मौसम में ये बाल और अधिक घने तथा लंबे हो जाते हैं। इस कारण वह तिब्बत के भीषण जाड़े में शून्य से ४० डिग्री से भी कम तापमान में आराम के साथ बाहर रह जाता है। वयस्क याक ६ फुट तक ऊंचा होता है और उसका वजन एक टन हो सकता है। जब पहाड़ी ढाल पर घनी बर्फ जमी होती है, तो वह नुकीले सींगों से दबी घास के ऊपर की बर्फ को हटाकर घास खोज लेता है। जाड़े के मौसम में जब पानी जम जाता है तो वह बर्फ खाकर अपनी प्यास बुझा लेता है। इस प्रकार कठिन परिस्थितियों में भी वह मजे से जीवन निर्वाह करता है।

याक तिब्बत निवासियों का मुख्य धन है। उसकी खाल से वे अपने लिए ऊनी वस्त्र बनाते हैं। याक के बाल से स्त्रियां तंबुओं के लिए कपड़े तैयार करती हैं। उसके बाल की रस्सियां मजबूत होती हैं। बोझा ढोने के अतिरिक्त याक तिब्बत वासियों को दूध, मक्खन, पनीर, शिकार, चमड़ा, ऊन तथा गोबर देता है। प्रकृति ने याक को यह जानने की शक्ति दी है कि किसी बर्फ की जमी हुई सतह उसके भार को सहन कर सकेगी या नहीं। शंकित यात्री ऐसे स्थल के विषय में निश्चित होने के लिए याक को अपने आगे ही रखते हैं। याक कभी रास्ता नहीं भूलता, उसे दिशा का बढ़िया ज्ञान होता है। देवस्थलों में पूजा के समय मूर्तियों के सम्मुख हिलाया जानेवाला चवर याक की ही दुम के बालों से बनाये जाते हैं। सफेद चंवर को सर्वोत्तम माना जाता है। उत्तराखंड में इसे चवरी गाय भी कहते हैं।

❊ जंगली याक इस क्षेत्र का सबसे बड़ा बोविडे है, जो पूरे हिमालय क्षेत्र में पाया जाता है। लम्बे बालोंवाली लुप्तप्राय: याक का इस्तेमाल लद्दाख के अतीत में हुआ था।

❊ बर्फ खाकर प्यास बुझाये- याक - लंबे-लंबे बालों से ढका हुआ काले रंग का विशालकाय जानवर है- याक। विश्व में सर्वाधिक याक तिब्बत में पाये जाते हैं। रूस एवं चीन के कई क्षेत्रों में भी यह मिलता है। मवेशियों में याक सबसे भारी होता है। नर का वजन ८००-१००० किलोग्राम तक हो सकताहै और मादा का ३००-४०० किलोग्राम। गौ वंश के सभी पशुओं में पसलियों के १३ जोड़े होते हैं पर याक में १४ जोड़े होते हैं।

याक दो प्रकार के होते हैं- सींगवाले तथा बिना सींग के। ये ८ हजार से १४-१५ हजार फुट ऊंचे पर्वतीय इलाकों में रहते हैं। इनका शरीर बेहद ठंड एवं बर्फ के अनुकूल है। याक पानी जम जाने पर बर्फ खाकर अपनी प्यास बुझाते हैं। यह सुस्त जानवर हैं और घास के मैदानों में कई-कई दिन गुजार देता है।

ठंडी-ठंडी घास पर बैठे घंटों जुगाली करना इसका शौक है। याक अधिक से अधिक ४ से ५ के समूह में रहते हैं। वैसे यह एकांतप्रिय हैं। सितंबर महीना याक का मिलन काल होता है। मादा याक २७० दिन बाद बच्चे को जन्म देती है। याक दूधारू जाति का पशु है। यह वर्ष में ४०० लीटर दूध दे सकता है। इसके दूध में १२ प्रतिशत वसा (फैट) होती है जो अन्य किसी पशु के दूध में नहीं होती। याक ४० सेल्सियस के प्रतिकूल ठंडे वातावरण में भी बिना किसी कठिनाई के रह सकते हैं और १५० किलोग्राम तक वजन उठा सकते हैं। याक का मांस, खाल, बाल भी पर्वती क्षेत्रों के लोगों के लिए बेहद उपयोगी हैं।

❊ हिमालयी याक के दूध का रंग गुलाबी होता है।

❊ ऊंचे, पर्वतीय स्थलों में पाया जाता है याक - याक मध्य एशिया के ऊंचे, बर्फीले पर्वतीय स्थलों में पाया जानेवाला एक शर्मीला पशु है। इसका आकार भैंस से कुछ बड़ा होता है। तथा इसके कंधों, पार्श्व, जांघों, पूंछ पर लंबे घने बाल होते हैं। याक के सिर पर विशेष प्रकार से मुड़े लंबे सींग होते हैं। इसके बाल और सींग इसकी विशेष पहचान हैं। याक रूस, चीन, मंगोलिया, तिब्बत और भारत में बहुतायत से पाया जाता है। भारत में यह उत्तर प्रदेश के गढ़वाल की पहाड़ियों, जम्मू-कश्मीर की लद्दाख घाटी तथा हिमाचल प्रदेश की पांगी, लाहुल एवं स्पीति घाटियों में देखने को मिलता है।

याक एक पर्वतीय प्राणी है। यह मैदानी भागों में नहीं रह सकता। सामान्यत: याक की दो प्रजातियां देखने को मिलती हैं- जंगली याक और पालतू याक। जंगली याक अपेक्षाकृत शक्तिशाली, भारी भरकम और बड़े आकार का होता है। नर याक के शरीर का भार १०० से लेकर ५५० किलोग्राम तक तथा मादा याक का शरीर का भार १५० से लेकर ३५० किलोग्राम तक होता है। इसका सर झुका हुआ, कंधे ऊंचे, कमर सीधी तथा पैर छोटे और मजबूत होते हैं। जंगली याक के दोनों सींगों के मध्य बालों का एक गुच्छा होता है और गर्दन पर लंबे अयाल होते हैं। इसकी कंधों तक की ऊंचाई २ मीटर तक होती है तथा शरीर का रंग काला होता है। यह ६००० फुट से अधिक ऊंचाईवाले भागों में पाया जाता है। रूस और मंगोलिया के जंगली याक १५००० फुट की ऊंचाई तक भी देखे गए है।

याक के लंबे खुरदुरे बाल उसके पूरे शरीर को ढंके रहते हैं, जिससे उसे बर्फीली हवाओं से सुरक्षा मिलती है। यह जानवर तिब्बत के जीव का आधार है।

जंगली याक एक भीमकाय जानवर है, जो ४.५ मीटर ऊंचा होता है। भारत के लद्दाख क्षेत्र में याक पाए जाते हैं। जिन पहाड़ी प्रदेशों में याक रहता है, वहां बेहद ठंड पड़ती है। याक के लंबे खुरदुरे बाल उसके पूरे शरीर को ढंके रहते हैं, जिससे उसे बर्फीली हवाओं से सुरक्षा मिलती है। भारी-भरकम शरीर के बावजूद याक ऊंची पहाड़ियों पर आसानी से चढ़ सकता है। इसमें उसके पैरों के सख्त खुर सहायता करते हैं। मादा और नर दोनों के सींग लंबे, फैले हुए और ऊपर की ओर मुड़े हुए होते हैं।

याक के परिवेश को देखेंगे तो आपको चारों तरफ बर्फ ही बर्फ मिलेगी। याक बेहद सहनशील होने के कारण वह गर्मी के मौसम में घास खाकर जीवित रहता है। भोजन की तलाश में सर्दियों में याक पहाड़ियों से उतरकर निचली घाटियों में चले आते हैं। इतना सब होनेपर भी सर्दी में बहुत से याक भूख और ठंड के कारण मरते भी हैं।

दूसरे मवेशियों की तरह याक भी झुंड में रहते हैं। इनके झुंड २० से २०० तक के हो सकते हैं। आमतौर पर बछड़ों की देखभाल और झुंड के नेतृत्व का दायित्व मादा ही संभालती है। बर्फ में याक एक कतार में अपने आगे चलनेवाले याक के खुरों से बने गड्ढों में अपने पांव रखकर चलते हैं। हमले के वक्त याक बछड़ों को बीच में रखकर घेरा बना लेते हैं।

पतझड़ का वक्त याक का प्रजननकाल होता है। अप्रैल में मादा बछड़े को जन्म देती है। इस महीने में नई उगी घास पर्याप्त मात्रा में भोजन प्रदान करती है। नवजात बछड़ा पैदा होते ही नित्य क्रियाओं में सक्रिय हो जाता है।

याक पालतू जानवर के तौर पर काम में लाया जाता है। इसके शरीर का हर अंग किसी न किसी उपयोग में आ सकता है। ऊंचाई चढ़ने की याक की अद्‌भुत क्षमता के कारण उससे पहाड़ों की कठिन ढलानों में सामान ढोने का काम लिया जाता है।

❊ सबसे अधिक ऊंचाई पर स्थित स्तनधारी- तिब्बत और सिचोनेस पर्वत शिखर सीमा का याक सबसे अधिक

ऊंचाई पर पाया जानेवाला विश्व का एकमात्र स्तनधारी है। यह याक भोजन की खोज में कभी-कभी ६१०० मीटर तक ऊंचाई पर भ्रमण करता है।

✻ यॉक गाय-बैल के परिवार बोवाइडी का सदस्य समुद्रतल से २०००० फुट की ऊंचाई पर रहनेवाला सबसे विशाल व भारी जानवर है। (वयस्क का कुल वजन ५०० किलो तक होता है)

मध्य एशिया के तिब्बत, कान्सू (उत्तर पश्चिमी चीन) व लद्दाख की चांग घाटी में पाए जानेवाले इस जानवर का प्रमुख भोजन पहाड़ी इलाके में उगनेवाली सख्त घास है। हिमाचल प्रदेश के किन्नौर व लाहौल स्फीति जिलों में पाए जानेवाले यॉक को तिब्बत के व्यापारी सबसे पहले यहां लाए थे, क्योंकि ये दोनों जिले तिब्बत से जुड़े हैं व भारत-चीन युद्ध से पहले इन क्षेत्रों का तिब्बत के साथ व्यापार था, तिब्बती लोग इसे याकबा कहते हैं।

जंगली यॉक मुख्यत: काले या गहरे भूरे रंग के होते हैं व इनके कंधे की ऊंचाई ५ फीट २ इंच तक मापी गई है। सिर, पेट, टांगों और पूंछ पर काफी घने व लंबे बालों के कारण दूर से देखने पर यॉक एक बड़ी झाड़ी सरीखा दिखता है। यॉक के सींग भी हो सकते हैं और नहीं भी। लम्बे व नुकीले सींग दोनों तरफ थोड़ा आगे की ओर बढ़कर अर्द्धचंद्राकार आकार लेते हुए ऊपर की ओर मुड़ जाते हैं। इन सींगों की अधिकतम लंबाई ४० इंच तक हो सकती है। कई बार लोग पालतू यॉक के सींग बचपन में ही काट डालते हैं ताकि वह वयस्क होने पर किसी को चोट न पहुंचा सके।

पालतू यॉक का रंग काले-भूरे के अलावा मटमैला सफेद तक हो सकता है। पालतू यॉक की ऊंचाई (कंधे से) करीब चार फीट तीन इंच होती है।

अपनी मजबूत कद-काठी व ठंड सहने की अद्‌भुत क्षमता की वजह से यॉक को सवारी करने व सामान ढोने के लिए सर्वश्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि यह जानवर अपने भारी शरीर के बावजूद पांच-छह फीट गहरी बर्फ में आसानी से चल लेता है। भारी हिमपात के दिनों में लोग इसी पर बैठकर एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाते हैं।

✻ **बैक्टीरियन ऊंट -** बैक्टीरियन ऊंट केवल नुब्रा घाटी और लद्दाख के क्षेत्रों की ऊंचाई पर पाए जाते हैं। इस ऊंट पर दो कूबड़ होते जो देखने में बहुत ही अनोखा लगता है लद्दाख में जंगली बैक्टीरियन ऊंट की बहुत छोटी आबादी मौजूद है।

✻ **कंगारू -** कंगारू का बच्चा मधुमक्खी के बराबर- जब कंगारू का बच्चा जन्म लेता है तो वह एक मधुमक्खी के बराबर होता है। कंगारू का बच्चा अपनी मां की थैली में ३३ हफ्तों तक रहता है जहां वह दूध पीकर बड़ा होता है।

✻ कंगारू की अधिकतम आयु का रिकार्ड २६ वर्ष २२ दिन का है, यह सामान्य कंगारू २० अप्रैल, १९०६ को लंदन के चिड़ियाघर में मृत्यु को प्राप्त हुआ। अमेरीका का कंगारू रैट समस्त जीवन बिना पानी पीये बिताता है।

✻ कंगारू के मांस में रत्ती भर भी कोल स्ट्रोल नहीं होता।

✻ कंगारू अपने दो सौ पौण्ड वजनी शरीर के बावजूद २५-३० फीट लम्बी छलांग लगा सकता है।

✻ कंगारू चूहा जीवनभर पानी नहीं पीता।

✻ कंगारू का आकार दरियाई घोड़े के बराबर होता था।

✻ कंगारू की पूंछ जमीन पर टिकी न हो तो वह कूद नहीं सकता।

✻ कंगारू का बच्चा जन्म के समय मात्र एक या दो इंच लम्बा होता है तथा उसका वजन एक औंस के लगभग बाइसवें भाग के बराबर होता है।

✻ जन्म के समय कंगारू का बच्चा सिर्फ २.५ सेंटीमीटर होता है जो छोटे चम्मच में भी रखा जा सकता है।

✻ कंगारू को मनुष्य की सुगंध ४० मील दूर से आ जाती है।

✻ कंगारू- तीन फीट छलांग मारता है।

✻ दुश्मन की भनक लगने पर लाल कंगारू ६५ किलोमीटर प्रतिघंटे की रफ्तार से उछल सकते हैं।

✻ कंगारू अपनी पूंछ को बिना जमीन से छुए नहीं कूद सकता।

✻ कंगारू ४१ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से फुदक सकता है।

✻ कंगारू तीस फीट ऊंची छलांग मारता है।

✻ कंगारूओं की लगभग ५० प्रजातियां आस्ट्रेलिया समेत पूरे संसार में पाई जाती है।

✻ ऑस्ट्रेलिया का प्रसिद्ध कंगारू- कंगारू ऑस्ट्रेलिया के प्रसिद्ध शाकाहारी, शिशुधानीय जीव हैं, जो स्तनप्राणियों में अपने ढंग के निराले प्राणी हैं। इन्हें सन १७७३ ई. में कैप्टन कुक ने देखा था और तभी से ये सभ्य जगत के सामने आए। इनकी पिछली टाँगें लंबी और अगली छोटी होती हैं, जिससे ये उछल-उछलकर चलते हैं। पूंछ लंबी और मोटी होती है, जो सिरे की ओर पतली होती जाती हैं। कंगारू केवल ऑस्ट्रेलिया में ही पाए जाते हैं। वहां इनकी २१ प्रजातियों का अब तक पता चल सका है। जिनमें १५८ जातियां तथा उपजातियां सम्मिलित हैं।

✻ कंगारू को मिली जादू की थैली - ऑस्ट्रेलिया के राष्ट्रीय पशु कंगारु अपने कान को १८० डिग्री के कोण पर घूमा सकते हैं। हिरन की तरह ये भी शिकारी की आहट दूर से पा लेते हैं। कुदरत का करिश्मा है कि इस प्राणी के पेट के सामने लगी होती है, छोटी-सी थैली। इस थैली में मादा कंगारू अपने बच्चे को रखकर चलती हैं। किसी भी तरह का खतरा महसूस होने पर झट से बच्चा थैली में छिप जाता है। इस छोटी थैली में वह कैसे रह लेता है? कंगारू का बच्चा जन्म के समय दो से चार इंच तक का ही होता है, इसलिए इतना नन्हा बच्चा काफी समय तक मां के पेट की थैली में ही रहता है। कुछ बड़ा होने पर भी वह मां को देखते ही तुरंत थैली में घूस जाता है। लेकिन जैसे ही यह थोड़ा बड़ा होता है तो अलग रहने लगता हे। इसके पैरों में एक अलग चीज होती है, सामने की दो उंगलियां एक पतलीसी झिल्ली से जुड़ी होती हैं। अंगूठे नहीं होते। इसकी पूंछ काफी भारी होती है, जो उसके उछल-उछलकर चलने पर संतुलन बनाने में काफी मददगार होती है।

✻ ऑस्ट्रेलिया में पाया जानेवाला विलक्षण जीव कंगारू ३० फुट तक की छलांग लगा सकता है, जबकि उसका वजन २०० पौंड से भी अधिक होता है।

✻ सबसे बड़ा अंड स्तनी पशु कंगारू है।

✻ कंगारू, खरगोश की हम शक्ल का एक बड़ा जानवर है। जो इन्सानी कद के बराबर होता है। उसके अगले पैर बहुत छोटे और पिछले पैर बहुत बड़े और मजबूत होते हैं, उसकी दुम भी काफी लंबी और मोटी होती है, ये अपनी दुमपर बैठ जाता है। अजीब बात ये है इसके पेट पर एक थैली होती है, कंगारू का बच्चा पैदाइश के वक्त सिर्फ दो इंच का होता है जिसकी आंख भी बंद रहती है, इसके बावजूद वो अपनी मां के जिस्म के बालों को पकड़ कर सीधा उस थैली में पहुंच जाता है और वहां दूध पीकर बड़ा होता है। ज्यादा वक्त इसी थैले में गुजारता है और कंगारू उसको हर जगह लिये फिरता है, खिलाता है, पिलाता है।

✻ यहां कंगारूओं की २० प्रजातियां पायी जाती हैं। नेलटेल वल्लवबी की तीन प्रजातियों में से दो का ही अस्तित्व था।

उसके सिर पर सफेद रंग के ब्राइडल रेखाएं होती हैं। इसके कंधे मजबूत और सीधी पूंछ होती है। यह जानवर जो कभी पूर्वी ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता था, लोमड़ियों के शिकार के कारण और बाद में स्थानीय लोगों के शिकार के कारण से इनकी संख्या कम हो गयी थी। आखिरी बार १९३७ में इसे देखा गया था, इसके बाद इसे विलुप्त मान लिया गया था। लेकिन १९७३ में ऑस्ट्रेलिया के क्वींसलैंड में इसकी फिर से खोज कर ली गयी। इतने दिनों बाद भी कंगारू की संख्या नहीं बढायी जा सकती है।

❊ **पेंग्विन -** पेग्विन अंटार्कटिक सागर में ८७० फुट की गहराई तक पहुंचकर १८ मिनट पूर्व तक डूबी रह सकती है। पेंग्विन पक्षी ने कभी पृथ्वी पर कदम (पैर) नहीं रखा। पेंग्विन यों तो अन्टार्टिका के बर्फीले मैदान में रहते हैं, परंतु जब माता पेंग्विन बच्चे को जन्म देती है तो नर पेंग्विन मादा पेंग्विन को बर्फ से बचाने के लिए अपने पंजों पर उठाए रखता है। पेंग्विन के बच्चे भी बड़े होने तक अपनी मां और पिता के पैरों पर खड़े रहते हैं ताकि वे बर्फ से बचे रहें और उन्हें अपने माता-पिता की गर्मी मिलती रहे। ध्रुवीय पेग्विन महीनों तक कुछ खाए पीए बिना जीवित रह सकता है। नर पेंग्विन अंडे से बच्चा निकलने तक यानी पूरे दो महीने भूखा प्यासा रहता है। पेंगविन अकेला एक ऐसा पक्षी है जो उड़ तो बिल्कुल भी नहीं सकता पर यह एक बहुत कुशल तैराक अवश्य होता है। कुछ जानवरों की जीभ पर कांटे होते हैं। - प्रकृति ने पेंगुइन की जीभ पर कांटे दिए हैं। जिससे बर्फीली प्रदेश की मछलिया जीभ से फिसल न जाएं। वनस्पति खाने वाले घोंघे की भी जुबान पर हजारों कांटे होते हैं। इसकी सहायता से वह पौधों को काट कर खाता है।

❊ पेंग्विन की तैराकी- पेंग्विन २४ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तैर सकते हैं।

❊ झुंड में पेंग्विन अपने ही बच्चे को नहीं पहचान पाते इसलिए वे एक खास तरह की आवाज करते हैं जिसे सुन बच्चे ही उसके पास आ जाते हैं।

❊ पेंग्विन खारे पानी को ताजे पानी में बदल सकते हैं। दक्षिण एशिया के इस प्राणी की खाल में ऐसे फ्लैप बने होते हैं कि यह एक पेड़ से दूसरे पेड़ तक उड़ते हुए जा सकते है।

❊ वकीलों के भेष में अंटार्कटिका का पंछी- पेंग्विन

यह एक न उड़नेवाला पक्षी है और जलचर न होते हुए भी कुशल तैराक। केवल अंटार्कटिका महाद्वीप पर जाये जाने के कारण इन्हें अंटार्कटिका का आदिवासी कहा जाता हे। इस पक्षी का पिछला हिस्सा काला और अगला सफेद होता है, जब ये पक्षी बर्फ पर घूमता है तो लगता है जैसे सफेद कमीज पर लंबा कोट पहने कोई वकील साहब घूम रहे हैं।

इस पक्षी के जीवन का एक दिलचस्प पहलू यह भी है कि इनमें कई मानवीय गुण होते हैं। इंसानों की तरह ही ये बस्तियां बसाते हैं। किसी-किसी बस्ती में तो इनकी संख्या लाखों में होती है। इनमें से एक है शहंशाह। यह पक्षी अपने अन्य जातियों से काफी भव्य होते हैं। इनका आकार भी अन्य जातियों से बड़ा होता है। इनकी ऊंचाई लगभग १२५ से.मी. और वजन लगभग ४० कि.ग्रा. के आसपास होता है शहंशाह मादा एक साल में एक ही बार अंडा देती है। इस पक्षी की दूसरी प्रजाति है राजा इनकी मादा दो साल में तीन अंडे देती है। तीसरी प्रजाति है प्रजा जिनकी संख्या काफी होती है।

इन पक्षियों का शरीर छोटे-छोटे शल्कों से ढंका होता है। इनके आगे के पैर पैडल जैसे होते हैं। इनकी त्वचा के नीचे वसा की मोटी परत होती है। इनके लिए तैरना आसान होता है पर चलना मुश्किल। पानी में इनकी रफ्तार २५ मील प्रति घंटा

होती है। इनके दुश्मनों में लैपर्ड सील तथा किलर व्हील प्रमुख है। परंतु इनके अंडों एवं बच्चों का शत्रु होता है स्कूआ।

अंडों के प्रति ये पक्षी काफी सावधान रहते हैं। ये अंडे को जमीन के संपर्क में आने ही नहीं देते। नर पक्षी अंडे को अपने पैरों पर रखते हैं और सर्दी से बचाने के लिए पेट की मोटी खाल से ढक लेते हैं। अंडे सेते हुए हजारों नर पक्षी सर्दी से बचने के लिए आपस मेंसटकर खड़े होते हैं। तब तक ये नर कुछ नहीं खाते। कठिनाई की इस घड़ी में खाल के नीचे छिपी वसा काम आती है। दो माह बगैर खाए वकीलों के भेष में अंटार्कटिका पर पेंग्विन पंछी ही हो सकता है।

पेंग्विन्स समुद्री पक्षियों की एक विशेष श्रेणी है जो सीधा खड़ा रहता है और हमारे मनुष्यों जैसे चपटे पैरोंवाला प्राणी है। पेंग्विन्स दक्षिणी अर्द्धगोल में पाए जाते हैं। ये अंटार्कटिक महाद्वीप के साथ-साथ अफ्रीका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड तथा दक्षिण अमेरिका के दक्षिणी अर्द्धगोल के ठंडे तटों पर भी पाए जाते हैं।

पेंग्विन्स के पंख निरंतर विकास के चलते फ्लिपर्स बन चुके हैं। इसके परिणामस्वरूप ये उड़ नहीं सकते परन्तु ये तैराकी बहुत बढ़िया ढंग से कर सकते हैं। ये बड़े अजीब ढंग से चलते हैं। अपने विकास के पहले दौर में ये उड़नेवाले पक्षी थे परन्तु लम्बा समय बीतने के बाद इनके पंख काफी छोटे हो गए। इसका कारण यह था कि ये पक्षी अंटार्कटिका के दूरस्थ क्षेत्रों में रहते थे जहां इन पर आक्रमण करनेवाला कोई नहीं था। युद्ध भूमि पर तथा पानी में समानरूप से बिना अपने पंखों का प्रयोग किए रह सकते थे। इसी के चलते इनके पंख बहुत छोटे हो गए। परत ही इन्हें इतनी ठंड सहने में सक्षम बनाती हैं। इनके पंख वाटरप्रूफ होते हैं और इनमें छोटे-छोटे हवा के लिए छिद्र होते हैं जो इन्हें गर्म रखते हैं। पंखों की इस मोटी परत के नीचे चर्बी की एक परत होती है। यह परत इनके शरीर को गर्म रखने तथा भोजन को जमा करने में सहायक होती है।

मादा पेंग्विन्स एक या दो अंडे देती है जिन्हें नर तथा मादा दोनों सेते हैं। अंडे को सेने के दौरान ये भोजन नहीं करते।

पेंग्विन्स की १७ प्रजातियां हैं। इनमें सिर के पैटर्न तथा उनके आकार के कारण अंतर पाया जाता है। फेयरी पेंग्विन्स का आकार ४० सेंटीमीटर जबकि एम्परर पेंग्विन्स का आकार १२० सेंटीमीटर तक हो सकता है। नर तथा मादा दोनों का आकार एक समान होता है। सिर्फ एम्परर तथा एडेली पेंग्विन्स ही अंटार्कटिक के तट पर प्रजनन करते हैं। किंग, मैकारोनी, चिनस्ट्रैप तथा जैन्टू पेंग्विन्स उप अंटार्कटिक द्वीपों में प्रजनन करते हैं। अन्य ११ प्रजातियां सुदूर उत्तरी क्षेत्रों में प्रजनन करती हैं।

* ध्रुवीय पेंग्विन महीनों तक बिना कुछ खाए-पिये रह लेता है।

* एम्परर पैंग्विस १.२० मीटर की ऊंचाई तक बढ़ सकती हैं परंतु फेयरी पैंग्विस मात्र ३० सेंटीमीटर तक ही बढ़ पाती हैं।

* पेंग्विन- बर्फ की सफेद चादर से ढके समुद्र वही नदियां और शून्य से भी कई डिग्री नीचे जमा देनेवाले तापमान में जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है। अंटार्कटिका की ऐसी ही विषम परिस्थिति में एक प्राणी मजे से रहता है। यह प्राणी है पेंग्विन।

पेंग्विन पक्षी की १७ प्रजातियों में एम्परर पेंग्विन का आकार बड़ा होता है। अंटार्कटिका की जमा देनेवाली बर्फीली ठंड और पानी में ये ना केवल जीवित रह पाते हैं बल्कि अपने विशेष अनुकूलन की सहायता से बच्चों को जन्म देने से लेकर उन्हें पालने-पोसने और उनके लिए भोजन जुटाने जैसे कार्य सहज रूप से करते हैं। बर्फीली ठंड और हवाओं से बचने के

लिए ये पेंग्विन्स बड़े बड़े झुंडों में एक-दूसरे से सटकर रहते हैं। सभी को समान रूप से गर्माहट मिले, इसके लिए बहुत ही सुचारू व्यवस्था का पालन करते हुए झुंड में हर कोई घेरे के अंदर तथा बाहर रहने की अपनी बारी की प्रतीक्षा करता है।

अंटार्कटिका में मार्च का महीना सर्दियों का होता है। यहां की भीषण सर्दी लगभग सभी जीवों को अपना स्थान छोड़ने पर मजबूर कर देती है। लेकिन एम्परर पेंग्विन्स यहां की खुली बर्फ पर ही अपनी सर्दियां बिता देते हैं। वसंत में अंडे देनेवाली पक्षियों के विपरीत ये उड़ने में अक्षम पक्षी सर्दियों में अंडे देते हैं। ये एक बार में एक ही अंडा देते हैं। अंडे देने के बाद मादा पेंग्विन अंडे को नर की देख-रेख में छोड़ भोजन की तलाश में लगभग ५० मील का सफर तय करके खुले समुद्र में चली जाती है। नर पेंग्विन पूरे समर्पण के साथ लगभग ६५ दिनों तक बिना कुछ खाए-पिए, सर्द मौसम की मार झेलते हुए अपने अंडे को सेता है। वह अपने अंडे को अपने पैरों पर संतुलित कर उसे अंडे सेनेवाली थैली से ढक देता है। अंडे को गर्म रखने और सेने के लिए विशेष रूप से बनी यह थैली गर्म पैरों से ढकी खाल की मोटी तह होती है। अंतत: दो महीने के बाद मादा पेंग्विन लौट आती है और अपने नवजात बच्चों के लिए एकत्रित भोजन उलट देती है। यह समय नर पेंग्विन के लिए अपना भोजन जुटाने का होता है और वह उन्हें छोड़ खुले समुद्र में चला जाता है, माता पेंग्विन बच्चों की सुरक्षा की जिम्मेदारी संभालते हुए उन्हें अपनी थैली में सुरक्षित रखती है। यदि नवजात इस गर्म थैली से बाहर गिर जाए तो महज दो मिनट के भीतर ही बाहर का बेहद निम्न तापमान उन्हें जमा कर मार देगा।

❊ पेंग्विन पूरी जिंदगी एक ही पार्टनर के साथ रहते हैं। वह पत्थर तोहफे में देकर साथी को प्रपोज करते हैं।

❊ पेंग्विन अंडे से बच्चा निकलने तक यानी पूरे दो माह भूखा-प्यासा रहता है।

❊ ध्रुवीय पेंग्विन महीनों तक बिना कुछ खाए-पिए रह लेता है।

❊ **कैरिबाऊ -** कैरिबाऊ के खुर खोखले होते हैं, जो उसे चिकनी बर्फ पर चलते समय सहायता पहुंचाते हैं।

❊ **पांडा, रेड पांडा -** पांडा दो किस्म के पाए जाते हैं। पहले वो, जो हिमालय में रहते हैं। इनकी पूंछ लंबी होती है और ये मांस खाते हैं। दूसरे वो, जो विशाल आकार के होते हैं और पश्चिमी चीन में पाए जाते हैं।

❊ सबका प्यारा दुर्लभ पाण्डा - स्वभाव होता है शर्मीला

गर्दन के आस-पास कंधे तक काली पट्टियां बनी रहती हैं। चीन के श्वान और कांसू के घने जंगलों में यह ज्यादातर ६०००-१४००० फीट की ऊंचाई पर पाए जाते हैं।

शर्मीला स्वभाव होने के साथ-साथ पाण्डा की एक खास विशेषता- एकछत्र राज्य बना लेने की भी होती है। आमतौर पर एक मादा पाण्डा करीब ७० एकड़ तक अपने राज्य का फैलाव करती है। इस क्षेत्र में कोई दूसरी मादा पाण्डा प्रवेश नहीं करती। नर पाण्डा भी उस क्षेत्र में केवल प्रजनन काल के दौरान ही जा पाते हैं। सामान्यत: मादा पाण्डा दो बच्चों को जन्म देती है। परंतु उसका स्नेह और लगाव केवल एक ही बच्चे से अधिक रहता है। शायद इसी पालन-पोषण के अभाव की वजह से इनका दूसरा बच्चा अधिकतर जीवित नहीं रह पाता है। जन्म के समय शिशु पाण्डा का वजन ३-४ औंस होता है और यह लगभग ७ सेमी. लंबा होता है, बिल्कुल एक नन्हें से खरगोश के बच्चे की तरह, करीब एक माह तक नवजन्मा शिशु पाण्डा इस दुनिया से बेखबर ही रहता है, क्योंकि इस दौरान उसकी आंखें बंद ही रहती हैं।

पांडा एक मांसाहारी जानवर है। इसके जबड़े और मांसपेशियां इतनी मजबूत होती हैं कि चाहे तो वह धातुएं भी बड़ी

आसानी से चबा सकता है। अपने कठोर कैनाइल दांतों की सहायता से यह मांस को बड़ी सरलता से फाड़ लेता है। बेहद ठंडे प्रदेशों में रहने के कारण इन्हें शिकार आसानी से नहीं मिल पाता है। इसलिए इन्हें अपना काम बांस की पत्तियां और डंठल खाकर चलाना पड़ता है। परंतु मौका मिलने पर यह मांसाहारी जंतुओं को अपना भोजन बनाने से जरा भी नहीं चूकता। दिन भर कुछ न कुछ खाते रहना इसकी आदत है, एक बार में करीब ८५ पौंड पत्तियां तक खा डालते हैं ये जनाब। पाण्डा इतना अद्‌भुत और दुर्लभ होता है कि इसके विषय में होनेवाली छोटी-से-छोटी खबर भी अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियों में रहती है। अपनी सुंदर और आकर्षक काया के चलते इस दुर्लभ जंतु का जीना दूभर हो गया है। वर्ल्ड वाइल्ड लाइफ फण्ड के प्रतीक चिन्ह के रूप के पहचाने जानेवाले पाण्डा के प्रति पिछले कुछ वर्षों से न केवल चीन बल्कि पूरे विश्व में हो रहे अत्याचार के प्रति गंभीर रूख अपनाते हुए विश्व समुदाय ने इनके संरक्षण हेतु कई नियम और योजनाएं बनाई हैं। ताकि ये दुर्लभ जाति बेखौफ जी सके।

❊ बर्फीला जीव - रैकन और भालू जैसा रेड पांडा - भारत के अलावा चीन, तिब्बत, बर्मा, नेपाल, भूटान तथा यूनान की कुछ जगहों पर पाया जानेवाला रेड पांडा प्राय: बर्फ से ढकी जगहों पर रहता है। यह दो हजार से चार हजार मीटर तक की ऊंचाईवाले बर्फ व कोहरे से ढके पहाड़ों पर निवास करता है। इसके आगे के पैरों की बनावट परिस्थितियों के अनुकूल होती है। रेड पांडा के अगले पैरों की बनावट ऐसी होती है, जिससे इसे पेड़ों के साथ-साथ बर्फीली चट्टानों पर चढ़ने में भी कोई कठिनाई नहीं होती। रैकून तथा भालू से मिलता-जुलता यह अनोखा जानवर जहां भालू की तरह गुर्राता है, वह रैकून की तरह फुफकारता है।

लाल रंग के कोमल फरों वाला यह जानवर हल्का सा पीलापन लिए होता है। जिस तरह रैकून को एक सफाई पसंद जानवर माना जाता है, उसी तरह रेड पांडा भी बहुत सफाई पसंद है, जो अपने शरीर की सफाई पर भी ध्यान देता है। यह न केवल अपने सिर्फ को अपनी जीभ से चाटकर साफ करता है बल्कि अपने पैर को पानी में भिगो-भिगोकर अपने तलवे से अपने शरीर के फरों को भी साफ करता है। रेड पांडा की शारीरिक लंबाई ५० सेंटीमीटर से १२० सेंटीमीटर तक होती है और इसका वजन ३५ किलो तक होता है। इसकी शारीरिक लंबाई का आधा भाग इसकी पूंछ का होता है। आमतौर पर रेड पांडा को दौड़ते हुए नहीं देखा जा सकता किन्तु यह कुत्ते से इतना डरता है कि कोई कुत्ता नजर आते ही यह दुम दबाकर दौड़ पड़ता है और झट से नजदीक के किसी पेड़ पर चढ़ जाता है। रेड पांडा हालांकि थोड़ा थोड़ा सा भोजन करता है किन्तु अपना छोटा सा पेट भरने के लिए इसे कम से कम १२ घंटे तक भोजन करना पड़ता है। यह एक निशाचर जानवर है, जो दिन में बर्फ की कंदराओं में अथवा पेड़ों की डालियों पर या कोटरों में आराम फरमाता है और रात होते ही भोजन की तलाश में निकल पड़ता है। बांस की कोंपलें, कंदमूल, मुलायम पत्तियां, घास, मशरूम, पेड़ की छाल इत्यादि रेड पांडा का पसंदीदा भोजन है।

❊ **रेंडियर -** बर्फीला जानवर रेंडियर कहलाता है। क्रिसमस की बहुत-सी पोयम्स यानी कविताओं में इनके नाम आते हैं। रेंडियर मुख्यत: ध्रुवीय और टुंड्रा प्रदेशों में पाये जाते हैं। २०वीं शताब्दी से पूर्व यह एक बहुत बड़े क्षेत्र में पाये जाते थे लेकिन आज यह बहुत कम हिस्सों में नजर आते हैं। वाइल्ड रेंडियर अब केवल नार्वे, साइबेरिया, ग्रीनलैंड, अलास्का और कनाडा में देखे जाते हैं। पालतू रेंडियर अधिकतर रूस, आइसलैंड और उत्तरी स्केन्डिनेलिया देशों में होते हैं। यहां

इन्हें १८ वी शताब्दी में विशेष रूप से लाया गया था। दरअसल आज दुनिया में रेंडियर की तादाद काफी कम हो गई है। नर रेंडियर की तरह मादा रेंडियर के भी सींग होते हैं। एक नर रेंडियर साढ़े पांच से सात फुट तक लम्बा तथा साढ़े तीन से पांच फुट तक ऊंचा होता है। इसका वजन १०० कि.ग्रा. से ३२० कि.ग्रा. के मध्य हो सकता है। मादा रेंडियर का आकार एवं वजन इनसे कम होता है, लेकिन इसकी पूंछ बहुत छोटी होती है। यह ठंडे प्रदेशों में रहते हैं तो प्रकृति ने इनके शरीर की संरचना उसी के अनुरूप बनाई है। इनकी खाल पर दोहरी परत होती है। एक परत पर घने फर होते हैं तो दूसरी परत लम्बे बालों के रूप में होती है। यह बाल ऐसे होते हैं कि इनमें हवा भरी होती है, जिससे इनकी ठंड से रक्षा होती है। इनकी नाक ऐसी होती है कि जब यह सांस लेते हैं तो अंदर जानेवाली वायु शरीर की गर्मी से गर्म होकर फेफड़ों तक पहुंचती है। इसी प्रकार इनके पैर भी गर्म होकर फेफड़ों तक पहुंचती है।

इसी प्रकार इनके पैर भी कुछ अनोखे होते हैं। गर्मी में इनके खुरों के नीचे का भाग गुदा गुदा हो जाता है तो सर्दियों में इनके खुर सिकड़ कर सख्त हो जाते हैं। इससे यह बर्फ में फिसलने से बचते हैं, बल्कि इन खुरों की मदद से बर्फ में कई फुट गहरे तक खोद लेते हैं, क्योंकि उस मौसम में आसपास भोजन की कमी हो जाती है। यह वनस्पति, घास, कोई जंगली वृक्षों की पत्तियां और छाल इत्यादि खाने के आदि होते हैं।

❊ स्नो लेपर्ड - रेनी नाम का छोटा स्नो लेपर्ड अपने दांतों को कद्दू के डंठल से कसरत करा रहा है। मध्य एशिया के पहाड़ों में पाई जानेवाली इस प्रजाति को डब्ल्यूडब्ल्यूएफ ने लुप्तप्राय श्रेणी में रखा है। स्नो लेपर्ड ट्रस्ट दान के जरिये राशि एकत्र करके इनके भारत, किर्गिस्तान, मंगोलिया और पाकिस्तान में संरक्षण के लिए काम कर रहा है।

❊ हिमालयी टहर - हिमालयी टाहर एक पहाड़ी बकरी है, जिसके बाल विशेष रूप से गर्दन और कंधों तक लंबे होते हैं और घुटनों तक पहुंचती अयाल की भांति प्रतीत होते हैं। यह एक मजबूत शरीरवाला प्राणी है, जिसके पैर शक्तिशाली, कान पतले और सीधे तथा सींग पीछे की ओर मुड़े हुए होते हैं। इसके शरीर का रंग लाल भूरा होता है। हिमालयी टाहर, जैसा कि नाम से प्रतीत होता है, हिमालय क्षेत्र में कश्मीर से भूटान तक ३००० से ४००० मी. तक की ऊंचाई पर बांज व अन्य वृक्षों से ढके चट्टानी ढलानों में रहते हैं। सर्दियों में ये प्राणी कम ऊंचाइयों पर आ जाते हैं।

❊ चीरू - दुनिया के सबसे साहसी जीव माने जाने वाले चीरू की संख्या अब करीब ७५ हजार ही रह गई है।

यह चीरू या तिब्बती चिंकारा की नर्म खाल से बनती है। लेकिन इसी के कारण इसकी जान के लाले पड़े हुए हैं और वर्ल्ड कंजर्वेशन यूनियन ने इसे विलुप्तप्राय जीव की सूची में शामिल किया है।

हालांकि ये दुनिया के सबसे साहसी जीव हैं। ये न्यूनतम तापमान में भी जिंदा रहते हैं। लगभग सौ के झुंड में रहनेवाले चीरू दिखने में बड़े आकर्षक होते हैं। चीरू, चिंकारा या तिब्बती हिरन लद्दाख, जम्मू-कश्मीर, तिब्बत और पाकिस्तान में पाए जाते हैं। चीरू ऊंचे पहाड़ों या तिब्बत के अर्द्ध-रेगिस्तान में रहना पसंद करते हैं। ये घास, हरी पत्तियां और एक खास प्रकार के पौधे फोर्ब को बड़े चाव से खाते हैं। ये स्वभाव से काफी मिलनसार होते हैं। इनकी खाल भूरी और सफेद धारियों वाली होती है। जाड़े के दिनों में नर चीरू के सिर और पैरों पर काले धब्बे दिखाई देते हैं। नर चीरू के सिर पर सींग भी पाए जाते हैं। इनकी आयु लगभग ८ वर्ष होती है। त्वचा की मोटी परत के कारण चीरू अत्यधिक ठंड भी बर्दाश्त कर लेते हैं। इस परत को शहतूश कहते हैं। इससे काफी नर्म और मुलायम ऊन तैयार की जाती है, जिसके लिए इनका शिकार किया जाता है।

६ कला का जीव मनुष्य

६ कला इसमें पूर्णरूप से विकसित है। यह आहार, निद्रा, मैथुन, उत्पत्ति इत्यादि सभी प्रकार की क्रियाओं से वरदहस्त है। यह जल और वायु ग्रहण करते है। इनमें करुणा, भय, भावना, इच्छा, मन और विवेक होते है। यह सब प्राणी बुद्धि और दुर्बुद्धि से युक्त होते है। यह अपने कर्त्तव्य का दायित्व निभाते है। यह अपने विवेक और बुद्धि से यह भी जानते है कि अब आगे और क्या करना है, किस प्रकार से अपना जीवन बिताना है। यह अपनी प्रखर बुद्धि से आगे का मार्ग निश्चित करते है। पूरे संसार को विकसित रूप देने व समस्त वस्तुओं को जोड़-तोड़कर अपनी सुविधानुसार अपने आरामदायक जीवन के लिये उन वस्तुओं का उपभोग यही करना जानते है। ये सभी वर्णों, जाति व सभी प्रकार के ६ कला के सृष्टि के जीवोंका भरण-पोषण करने का जिम्मा इनका है। गोरिल्ला, चिंपाजी, बन्दर, लंगूर सभी इसी श्रेणी में मनुष्य के अपभ्रंश रूप है। इनमे भी वही समानता पाई जाती है पर उनमे बुद्धि का अभाव है। मनुष्य भी स्तनपायी जीवों के श्रेणी में आता है। यही एक ऐसा प्राणी है जो हंस सकता है। अपनी संवेदना प्रकट कर सकता है। इसलिये यह सब प्राणियों से अलग है।

यह विधाता की सर्वोत्कृष्ट रचना है। ब्रह्माने मनुष्यों की सृष्टि करके उन्हें अपना पौरुष प्रदान किया। मनुष्योंकी सृष्टि देखकर देवताओं ने ब्रह्माकी बहुत प्रशंसा की। इस मनुष्य शरीर में ही यज्ञ-यागादि क्रियाएँ तथा नाना प्रकार निर्माण और आविष्कारकी शक्ति प्रतिष्ठित है। मनुष्य को छोड़कर किसीको निर्माण करना नहीं आता, चित्र बनाना नहीं आता, भोजन बनाना नहीं आता, योजना बनानी नहीं आती इत्यादि। ब्रह्मा ने प्रकृतिमें जो चेतन है वह मनुष्य बनाये। दूसरे प्राणी भी इसे नहीं बना सकते। इसप्रकार मनुष्य का जीवन लोक-परलोक दोनोंके लिए हितकारी है। इसके बाद ब्रह्माजीने अपनी तपस्या, विद्या और योग-समाधिसे ऋषियोंकी सृष्टि की और उन सबको अपने देहका अंश दिया है। यह जीव इसके ६ कलाओं के अंग आहार, निद्रा, मैथुन, प्रजनन, विवेक, बुद्धि भय, शोक, चिंता इत्यादि पूर्ण कलाओं से सम्पूर्ण है। लोभ, ईष्या, क्रोध, काम, मद-मोह इत्यादि सभी प्रकार के विकार भी इसी में पनपते है। यह सभी प्रकार की भावनाओं से ओतप्रोत है। यह जीवन में सुखी और दु:खी भी होता है। यही योनि का जीव कर्म कर सकता है। इसी योनि में सोच विचार पनपते है। यानि निश्चयात्मक व निर्णायात्मक बुद्धि से ही यह जीव कर्म करने में सक्षम होता है। इसी योनि का जीव हंसी, गम व मुस्कुराना जानता है। यह अपने कर्मों द्वारा सृजनात्मक और विध्वंसक भी है। इस पृथ्वी पर जितना भी वस्तु जगत जो प्रकृति के प्रदत्त ११९ तत्वोंद्वारा निर्मित दृष्टिगोचर होता है वह इसी के बलबूते, बुद्धि, कौशल द्वारा निर्मित है। इसका प्राकृतिक आपदाओं पर किसी प्रकार का नियंत्रण नहीं है जैसे-आग, बाढ़, अतिवृष्टि, तूफान, भूकंप, ज्वालामुखी, ज्वारभाटा, महामारी इत्यादि। लेकिन वह इनसे किस तरह निपटाना अपने बलबुद्धि से यह भी जानता है। इस योनि के प्राणी को सौ वर्ष की आयु प्रदत्त है। यही जीव समाज बनाकर इसे सुचारू रूप से सभ्यता, संस्कृति, तहजीब, मजहब को सुरक्षित रखता है। इसलिये यह विधाता की सर्वोत्कृष्ट रचनाओं में से एक है।

विधाता का यह जीव सम्पूर्ण प्रकृति और सम्पूर्ण विश्व को जानने से पहले अपने आपको जान ले तो उसके सारे प्रश्न और समस्याएं हल हो सकती है। मनुष्य समूची प्रकृति के रसों और तत्वों का निचोड़ है। जो मनुष्य को समझ लेगा वह असंख्य जीव जंतुओं और अनंत प्रकृति के छिपे हुए रहस्यों को जान जायेगा। यह संसार भी परमात्मा का चिरविलास क्रीड़ास्थल है। वह जीवों से खेलता है और जीवन उससे खेलते है। जब कोई काम खेल की भावना से किया जाता है तो उसमें आनंद मिलता है, थकान नहीं आती। उसमे गति और उत्तेजना से एक लय का निर्माण होता है। मनुष्य के शरीर में आत्मा भी एक रहस्य की तरह अंतरनिहित है। अर्थात एक छोटे से बीज में एक विशाल वृक्ष सांस ले रहा है। हमारे

रक्तबिंदुओं में जीवशैवालों की रचना बनती और मिटती है। प्रकृति में भी धूप और छांव का निर्माण होता है। आदमी के शरीर की त्वचा के भीतर उसके हृदयलोक में एक अलग ही ब्रह्मांड एक अलग ही लोक छिपा हुआ है। रक्त, अस्थि, मांस, मज्जा और स्नायुओं के जाल के भीतर अनुभव छिपे हुए है। यह सब कुछ रहस्यभरा और चुनौतीपूर्ण है।

हम भूले हुए होते हैं कि हम क्या हैं। यह भी सत्य है कि हममें जिस गुण की मौजूदगी होती है, वह या तो सुषुप्त होता है या अविकसित। इसे जगाकर ही आगे की यात्रा सफलतापूर्वक की जा सकती है। भीतर कई गुण, जैसे संयम, अनुशासन, ईमानदारी, विनम्रता आदि अविकसित रूप में हैं।

किसी भी अविकसित गुण को विकसित करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि हर दृष्टि से इस तरह का व्यवहार करना जैसे आपमें पहले से वो सब गुण मौजूद है। आप वो सब कुछ बन सकते हैं जैसे आप सचमुच हैं।

वास्तव में जितने भी मनुष्येतर प्राणी हैं वे खास प्राकृतिक परिवेश में उत्पन्न होते हैं, उसी में परवरिश पाते हैं और उसी में खुश रहते हैं। कोई भी प्राणी जब तक उसका जीवन संकट में न हो, अपना परिवेश बदलने की नहीं सोचता। लेकिन मनुष्य? मनुष्य हमेशा अपने परिवेश को बेहतर बनाने के लिए तत्पर रहता है क्योंकि इसके बिना उसका विकास संभव ही नहीं। कई लोग अत्यंत दयनीय परिस्थितियों में पैदा होते हैं। घोर अभाव, निर्धनता व बीमारी की परिस्थितियों में आंखें खोलते हैं और उसी को स्वीकार कर निश्चिंत बैठे रहते हैं। कई बार उनमें और गंदी नाली के कीड़ों की जिंदगी में कोई अंतर नहीं होता। बेशक नाली के कीड़े के लिए वह स्थिति असामान्य नहीं, लेकिन मनुष्य के लिए इसे किसी भी सूरत में सामान्य नहीं कहा जा सकता। वजह यह है कि कीड़े के सामने मात्र उसकी उदरपूर्ति का प्रश्न होता है। उसके समक्ष सामाजिक व आर्थिक विकास अथवा नैतिकता व चरित्र निर्माण की समस्या नहीं होती। इसके विपरीत मनुष्य सिर्फ उदरपूर्ति से संतुष्ट नहीं हो सकता। यह उसकी प्रकृति में नहीं है। उसके सामने उसके सर्वांगीण विकास का प्रश्न होता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों पुरुषार्थ उसके लिए अनिवार्य बताए गए हैं।

सभी जीवों का अपना परिवेश होता है, पर सभी जीवों की संस्कृति नहीं होती। मनुष्य इस मामले में सबसे अलग है। उसकी एक संस्कृति है जिसको अपनाकर वह सभ्य बनता है। संस्कृति के दायरे में रहकर वह धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चारों पुरुषार्थ हासिल करता है। देश काल के अनुसार धर्म का पालन अनिवार्य है। धर्म जीवन को संबल प्रदान करता है, हमारी संस्कृति को बनाए रखने में सहायक होता है। वास्तव में वे सभी तत्व जो जीवन को सकारात्मकता प्रदान करते हैं, धर्म के अंतर्गत आते हैं। धर्म के साथ-साथ अर्थोपार्जन भी अनिवार्य है, लेकिन वह पूर्ण रूप से धर्मसम्मत होना चाहिए। अर्थोपार्जन में चारित्रिक या नैतिक पतन नही होना चाहिए। काम की उपेक्षा भी संभव नहीं। काम के अभाव में धर्म, अर्थ अथवा मोक्ष ये तीनों पुरुषार्थ न तो अपेक्षित हैं और न ही संभव।

काम में संतुलन और मर्यादा अनिवार्य हैं। काम और लोभ ही अमर्यादित अथवा अनैतिक अर्थोपार्जन के लिए उत्तरदायी हैं। इसी से धर्म का क्षय होता है। मोक्ष भी वास्तव में इन विकारों से मुक्ति ही है और यही मुक्ति मनुष्य में उदात्त व परिष्कृत जीवन शैली का विकास करती है। इसी से संस्कृति का विकास होता है और संस्कृति से ही मनुष्य का विकास संभव है। उदरपूर्ति के लिए अथवा चारों पुरूषार्थों में से किसी को भी पाने के लिए जब मनुष्य का चारित्रिक अथवा नैतिक पतन हो जाता है तो वह गंदी नाली के कीड़ों की श्रेणी में आ जाता है। ऐसी स्थिति में बड़ी-बड़ी पेशेवर उपाधियां भी उसे इंसान नहीं बना सकती। बचपन में मां-बाप से मिले धार्मिक संस्कारों के कारण करीब करीब सबकी धर्म के प्रति गहरी आस्था रहती है। फिर उम्र के साथ-साथ धर्म के प्रति लगन और जिज्ञासा लगातार बढ़ने लगती है। फिर तो अपने धर्म के साथ दूसरे धर्म को जानने और समझने की जिज्ञासा मन में पैदा हो जाती है।

७ कला के जीव महामानव (अ) वैज्ञानिक व गणितज्ञ

७ वीं कला के जीवों में ६वीं कला तक के जीवों के सर्व गुणधर्म विद्यमान रहते है। इसके अलावा इनकी विशेषता होती है। इनमें कला-कौशल, हुनर, प्रतिभा छिपे रहते है जो समय आनेपर आयु के साथ विकसित हो जाते है। वस्तु जगत के निर्माण में इनका बड़ा ही योगदान होता है। यह सब जीव सात्विक प्रवृत्ति के होते है। आर्किमिडिज, रमण, वराह मिहीर इत्यादि महान वैज्ञानिक हुए। पायथागोरस, बुद्धयान, रामानुज, शकुंतलादेवी, लीलावती, अपोलोनियस इत्यादी महान गणितज्ञ हुए है।

❋ जॉन लॉगी बेयर्ड - स्कॉटिश इंजीनियर जॉन लॉगी बेयर्ड को दूरदर्शन की खोज के लिए जाना जाता है। उनका जन्म १४ अगस्त १८८८ में ग्लासगो के निकट हैलेसबर्ग में हुआ था। उनके पिता पादरी थे। बचपन से गरीबी के शिकार बेयर्ड की प्राथमिक शिक्षा स्थानीय विद्यालय में हुई। उन दिनों वहां विद्यालय में फोटोग्राफी पर विशेष बल दिया जाता था। उनकी रुचि भी पढ़ाई से ज्यादा फोटोग्राफी में रहती थी। इस कारण उन्हें विद्यालय में फोटोग्राफी का अध्यक्ष बना दिया गया। १२ वर्ष की आयु में उन्होंने दोस्तों के साथ मिलकर एक टेलीविजन लाइन का निर्माण कर दिया था। विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने ग्लासगो में स्थित रॉयल टेक्नीकल कॉलेज में साइंस में नामांकन लिया। २६ वर्ष की उम्र में उन्हें एक इलेक्ट्रिकल कंपनी में ३० शिलिंग (लगभग २० रुपये) प्रति सप्ताह के वेतन पर सहायक अभियंता की नौकरी मिली। वे इस नौकरी में ज्यादा दिनों तक नहीं रह पाये। इसके बाद बेयर्ड कई अन्य कामों में हाथ आजमाते रहे लेकिन आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण उन्हें मित्र के पास त्रिनिदाद जाना पड़ा। इस दौरान वहां उनके कुछ दिन अच्छे गुजरे। १९२२ में वे फिर से इंग्लैंड लौट आये। तभी फिर से उनके मन में दूरदर्शन बनाने का विचार आया। यह सपना उस समय के साइंटिस्ट में आम बात थी, लेकिन बेयर्ड ने उपकरण की रूपरेखा पर काम करना शुरू कर दिया। १९२४ बें बिस्कुट के डब्बे की मदद से उन्होंने ऐसा उपकरण तैयार किया, जिससे तस्वीर को बिना तार की मदद से एक जगह से दूसरे जगह ट्रांसमिट या रीसीव किया जा सकता था। १९२६ में उन्होंने चलते-फिरते तस्वीर को भेजने में सफलता हासिल कर ली। इसका प्रदर्शन उन्होंने रॉयल इंस्टीट्यूट ऑफ लंदन में किया। इसके बाद दूरदर्शन के विकास के लिए उन्होंने कई जगहों पर अपनी सेवाएं दी। लगातार अस्वस्थ रहने की वजह से १४ जून, १९४६ में उनका निधन हो गया।

❋ प्रो. सतीश धवन - देश के अंतरिक्ष कार्यक्रम को नयी ऊंचाई पर पहुंचाने में अहम भूमिका निभानेवाले महान वैज्ञानिक प्रो सतीश धवन एक कुशल शिक्षक भी थे। श्रीनगर में २५ सितंबर, १९२० को जन्मे सतीश धवन की शिक्षा अमेरिका में पूरी हुई। उन्होंने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस में कई सकारात्मक बदलाव किये। उन्होंने संस्थान में अपने देश के अलावा विदेशों से भी युवा प्रतिभाशाली फैकल्टी सदस्यों को शामिल किया। उन्होंने कई नये विभाग भी शुरू किये और छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में शोध के लिए प्रेरित किया। उन्हें विक्रम साराभाई के बाद देश के अंतरिक्ष कार्यक्रम की जिम्मेदारी सौंपी गयी थी और वह इसरो के अध्यक्ष नियुक्त किये गये। विक्रम साराभाई ने ऐसे भारत की परिकल्पना की थी, जो उपग्रहों के निर्माण एवं प्रक्षेपण में सक्षम हो और नयी प्रौद्योगिकी सहित अंतरिक्ष कार्यक्रम का पूरा फायदा उठा सके। सतीश धवन ने न सिर्फ उनकी परिकल्पना को साकार किया, बल्कि भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम को नयी ऊंचाई देते हुए भारत को दुनिया के गिने-चुने देशों की सूची में शामिल कर दिया।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यक्रम (इसरो) की वेबसाइट के अनुसार रॉकेट वैज्ञानिक सतीश धवन ने संस्था के अध्यक्ष के रूप में अपूर्व योगदान दिया। उनके प्रयासों से भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम को कई बेहतरीन उपलब्धियां हासिल हुई। बेवसाइट के अनुसार अंतरिक्ष कार्यक्रम के प्रमुख रहने के दौरान ही उन्होंने बाउंड्री लेयर रिसर्च की दिशा में अहम योगदान किया। वे इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस, बेंगलुरु के लोकप्रिय प्राध्यापक थे और उन्हें इस संस्थान में पहल सुपरसोनिक विंड टनेल स्थापित करने का श्रेय है। ३ जनवरी, २००२ को उनके निधन के बाद श्रीहरिकोटा स्थित उपग्रह प्रक्षेपण केंद्र का नाम बदल कर प्रो सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र कर दिया गया। उनके प्रयासों से ही संचार उपग्रह इनसेट, दूरसंवेदी उपग्रह आइआरएस और ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण केंद्र का नाम बदल कर प्रो सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र कर दिया गया। उनके प्रयासों से ही संचार उपग्रह इनसेट, दूरसंवेदी उपग्रह आइआरएस और ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान पीएसएलवी का देश का सपना साकार हो सका।

❋ न्यूटन- सर आइजैक न्यूटन इंग्लैंड के एक वैज्ञानिक थे। जिन्होंने गुरुत्वाकर्षण का नियम और गति के सिद्धांत की खोज की। वे एक महान गणितज्ञ, भौतिक वैज्ञानिक, ज्योतिष एवं दार्शनिक थे। न्यूटन ने सार्वत्रिक गुरुत्व और गति के तीन नियमों का वर्णन किया जिसने अगली तीन शताब्दियों के लिए भौतिक ब्रह्मांड के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया। न्यूटन ने दर्शाया कि पृथ्वी पर वस्तुओं की गति और आकाशीय पिंडों की गति का नियंत्रण प्राकृतिक नियमों के समान समुच्चय के द्वारा होता है, इसे दर्शाने के लिए उन्होंने ग्रहीय गति के केपलर के नियमों तथा अपने गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत के बीच निरंतरता स्थापित की।

इस प्रकार से सूर्य केन्द्रीयता और वैज्ञानिक क्रांति के आधुनिकीकरण के बारे में पिछले संदेह को दूर किया। यांत्रिकी में, न्यूटन ने संवेग तथा कोणीय संवेग दोनों के संरक्षण के सिद्धांतों को स्थापित किया। प्रकाशिकी में, उन्होंने पहला व्यावहारिक परावर्ती दूरदर्शी बनाया और इस आधार पर रंग का सिद्धांत विकसित किया कि एक प्रिज्म श्वेत प्रकाश को कई रंगों में अपघटित कर देता है जो दृश्य स्पेक्ट्रम बनाते हैं। उन्होंने शीतलन का नियम दिया और ध्वनि की गति का अध्ययन किया। गणित में, अवकलन और समाकलन कलन के विकास का श्रेय गोटफ्राइड लीबनीज के साथ न्यूटन को जाता है। उन्होंने सामान्यीकृत द्विपद प्रमेय का भी प्रदर्शन किया और एक फलन के शून्यों के सन्निकटन के लिए तथाकथित न्यूटन की विधि का विकास किया और घात श्रृंखला के अध्ययन में योगदान दिया।

सर आइजैक न्यूटन इंग्लैंड के एक महान वैज्ञानिक, गणितज्ञ, ज्योतिष व दार्शनिक थे। उन्होंने गुरुत्वाकर्षण के नियम और गति के सिद्धांतों की खोज की थी, जो अपनी पुस्तक प्रिंसिपिया में ५ जुलाई १६८७ में प्रकाशित किया। न्यूटन गिरते हुए सेब को देखकर गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत खोजने के लिए प्रेरित हुए।

यह घटना १६६० के दशक के मध्य की है। न्यूटन ने इस घटना के बारे में सबसे पहले अपने वैज्ञानिक विलियम स्ट्यूक्ली को बताया था। स्ट्यूक्ली ने न्यूटन की जीवनी में लिखा कि १७२६ की बसंत में एक दिन न्यूटन एक सेब के पेड़ के नीचे बैठे कुछ सोच रहे थे, इतने में एक सेब नीचे आ गिरा। यह देखकर उन्होंने सोचा कि यह सेब सीधा ही क्यों गिरा, अगल-बगल या ऊपर क्यों नहीं गिरा। इसका मतलब धरती उसे खींच रही है, यानी उसमें गुरुत्वाकर्षण है। तब वे कैंब्रिज विश्वविद्यालय में पढ़ते थे। स्ट्यूक्ली की वह पांडुलिपि ब्रिटेन की रॉयल सोसायटी के पास आज भी सुरक्षित है।

बचपन में न्यूटन को सिर्फ गणित पढ़ना ही अच्छा लगता था। वे अपने माता-पिता के साथ खेतों में अधिक समय बिताते थे। वे स्कूल में कभी अच्छे ग्रेड नहीं ला पाए। इसे देखते हुए उन्हें स्कूल से हटा दिया गया था। आगे वह इलेक्ट्रिसिटी और गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत देनेवाले महान वैज्ञानिक बने। न्यूटन से भी पहले गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत भारत में भास्कराचार्य ने प्रतिपादित किया। केवल २३ साल की उम्र में वैज्ञानिक सर आइजेक न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का सार्वभौमिक सिद्धांत खोज लिया था।

न्यूटन के तीन चश्मे - गुरुत्वाकर्षण शक्ति का पता लगानेवाले मशहूर भौतिक सर आईजक न्यूटन तीन चश्मे रखते थे। एक व्यक्ति ने जब इसका कारण पूछा तो बोले-एक चश्मा पास की वस्तुएं देखने के लिए, दूसरा दूर की चीजें देखने के लिए और तीसरा इसलिए कि ये दोनों कभी खो जाएं तो उन्हें खोजने के लिए।

❋ सबको थामे रहता कौन-कभी सोचा है कि उछलने के बाद हमारे पैर वापस जमीन पर क्यों आ जाते हैं। यही नहीं किसी ऊंची से ऊंची इमारत से गिरी रुमाल जैसी हल्की चीज या कागज की पतंग तक आखिरकार नीचे ही क्यों आती हैं।

सभी वस्तुओं में है मौजूद- अधिकांश लोग मानते है कि केवल पृथ्वी ही गुरुत्वाकर्षण बल प्रदर्शित करती है। हकीकत यह है कि यह बल सभी वस्तुओं में होता है और वे दूसरी वस्तुओं पर हल्का सा खिंचाव पैदा करती है। छोटी वस्तुओं के साथ यह खिंचाव इतना हल्का होता है कि उसका असर नहीं पड़ता, लेकिन ग्रहों जैसी विशाल संरचनाओं में इतना गुरुत्वाकर्षण बल होता है कि वे दूसरी चीजों को अपनी ओर खींच सके।

न्यूटन ने दिया नियम- जब आप हवा से उछलते हो तो वापस धरती पर नीचे आ जाते हो। ऐसा इसलिए होता है, क्योंकि एक अदृश्य बल आपको नीचे की तरफ खींच रहा होता है। इस बल को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं, जिसका सिद्धांत महान वैज्ञानिक न्यूटन ने दिया था। इस सिद्धांत की कहानी भी बड़ी मजेदार है। एक दिन वे सेब के पेड़ के नीचे बैठे कुछ सोच रहे थे कि उनके ऊपर एक सेब गिरा। वे सोचने लगे कि पेड़ से टूट कर यह फल नीचे क्यों आया, ऊपर क्यों नहीं गया? इस विचार को वैज्ञानिक रूप से जांचने-परखने के बाद उन्होंने विश्व के सामने गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत प्रस्तुत किया।

परिक्रमा पथ का रहस्य- अंतरिक्ष में छोटे पिंड बड़े पिंडों की परिक्रमा करते हैं। इसका मतलब यह कि यह सूर्य की परिक्रमा करते हैं और उपग्रह ग्रहों की। ऐसा गुरुत्वाकर्षण किसी चीज को अपनी ओर खींचता है तो ग्रह सूर्य से और उपग्रह ग्रहों से टकरा क्यों नहीं जाते? रफ्तार अंतरिक्ष में बहुत तेजी से घूमने की वजह से वे आपस में टकराने से बचे रहते हैं। यह वैसी ही है, जैसे आप धागे में बंधी कोई गेंद तेजी से घुमाओ तो वह चक्कर तो काटेगी पर तुमसे टकराएगी नहीं।

अन्य ग्रहों पर गुरुत्वाकर्षण- वस्तु जितनी बड़ी होती है, गुरुत्वाकर्षण भी उतना ही शक्तिशाली होता है। बृहस्पती जैसे बहुत बड़े ग्रहों का गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी की तुलना में बहुत शक्तिशाली होता है। छोटे ग्रहों और चांद का गुरुत्वाकर्षण कम शक्तिशाली होता है।

❋ अल्बर्ट आइंस्टीन - हर कोई जीनियस है, लेकिन अगर एक मछली को पेड़ पर चढ़ने की काबिलियत के हिसाब से आप आंकेंगे, तो मछली खुद को जिंदगी भर मूर्ख समझेगी। मछली पानी में तैरने में जीनियस है। जीनियस शब्द का सही अर्थ बतानेवाले, बुद्धिमत्ता के पर्याय और सार्वकालिक महानतम वैज्ञानिक, अल्बर्ट आइंस्टीन को प्रकाश-विद्युत उत्सर्जन की खोज के लिए १९२१ में नोबेल पुरस्कार दिया गया। एल्बर्ट आइंस्टाइन विश्व प्रसिद्ध वैज्ञानिक तीन वर्ष की आयु तक

एक भी शब्द बोलना नहीं जानता था। हालांकि, उनके सापेक्षता का सिद्धांत (थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी) और द्रव्यमान-ऊर्जा समीकरण (E=mc2) के लिए उन्हें ज्यादा जाना जाता है। ब्रह्मांड के नियमों को समझानेवाले भौतिकविद आइंस्टीन का जन्म १४ मार्च, १८७९ को जर्मनी के वुटेमबर्ग में हुआ था। इनके पिता का नाम हर्मन आइंस्टीन और माता का नाम पॉलीन आइंस्टीन था। अल्बर्ट बचपन में बहुत शांत स्वभाव के थे। बच्चों के साथ खेलने के बजाय वह अकेले ही खेलते थे। चार साल की उम्र तक आइंस्टीन कुछ भी नहीं बोल सके थे।

जब वे पांच वर्ष के हुए, इनके पिता ने इन्हें जन्मदिन पर मैग्नेटिक कंपास गिफ्ट किया, जिसकी सुई हमेशा उत्तर दिशा में रहती थी। आइंस्टीन सोचने लगे कि सुई हमेशा उत्तर दिशा में क्यों रहती है। यह जानने के लिए उनमें जिज्ञासा का जन्म हुआ और धीरे-धीरे विज्ञान में रुचि बढ़ने लगी। स्कूल के दिनों में वे अपने टीचर्स से अजीब-अजीब सवाल पूछते थे। इस कारण उन्हें मंदबुद्धि तक कहा गया और ऐसी शरारतों की वजह से उन्हें स्कूल से बाहर भी निकाल दिया गया। बचपन से ही उनके दिमाग में चीजों को लेकर गहरी जिज्ञासा थी। वह आसमान और सूरज के बारे में सोचते थे। तारों के बारे में सोचते थे कि वे रात में ही क्यों चमकते हैं। अपनी तमाम उपलब्धियों के पीछे वह अपनी जिज्ञासा को ही मानते हैं। वे लिखते भी हैं, मेरे पास कोई विशेष गुण नहीं है, मैं तो बस जिज्ञासु हूं।

अलबर्ट आइंस्टीन की साहित्य, कला, संगीत और अध्यात्म में भी गहरी दिलचस्पी थी। दिखने में वे बेहद ही साधारण व्यक्ति थे, पर असाधारण दिमागवाले वैज्ञानिक और चिंतक थे। यही वजह है कि उनके विचार भी असाधारण हैं। साल १९९९ में टाइम पत्रिका ने आइंस्टीन को शताब्दी पुरुष घोषित्त किया था। उन्होंने तीन सौ से ज्यादा वैज्ञानिक शोधपत्रों का प्रकाशन किया। एक से बढ़कर एक वैज्ञानिक सिद्धांतों का प्रतिपादन करनेवाले, अनेक किताबों लिखनेवाले और ब्रह्मांड के रहस्यों को सुलझानेवाले आइंस्टीन १८ अप्रैल, १९५५ को हमेशा के लिए ब्रह्मांड में कहीं विलीन हो गये।

आज हमें आइंस्टीन के वैज्ञानिक योगदानों को न सिर्फ याद करना चाहिए, बल्कि ऐसी कोशिशें करनी चाहिए, जिससे आज की पीढ़ी में वैज्ञानिक चेतना से भरी जिज्ञासा पैदा हो सके। स्कूलों और कॉलेजों में ऐसी चेतना का विस्तार किया जाना चाहिए, ताकि आगे चलकर लोगों में विज्ञान के प्रति रुचि बढ़ सके और अच्छे-अच्छे शोध सामने आ सकें। यह न सिर्फ हमारे देश के लिए जरूरी है, बल्कि पूरी दुनिया के लिए जरूरी है।

फिजिक्स वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने फोटोइलेक्ट्रॉनिक इफेक्ट और क्वांटम सिद्धांत दुनिया के सामने पेश किया। आइंस्टीन खुद ४ साल की उम्र तक बोल नहीं पाते थे और ७ साल तक वे पढ़ भी नहीं पाते थे। इस वजह से वे कई विषयों में पिछड़ गए थे, जिससे उन्हें स्कूल से निकाल भी दिया गया था। उनके टीचर्स ने तो यहां तक कह दिया था, तुम कुछ नहीं सीख पाओगे। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और थ्यौरेटिकल फिजिक्स में पीएचडी की। उन्हें नोबेल पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया। अलबर्ट आइंस्टाईन ने कभी मोजे नहीं पहने। अल्बर्ट आइंस्टीन तथा ऑटोहॉन दोनों का जन्म १४ मार्च १८७९ को हुआ तथा दोनों नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किये गये। महान वैज्ञानिक एलबर्ट आइंस्टीन को १९५२ में इजरायल के राष्ट्रपति पद की पेशकश की गई थी, लेकिन उन्होंने इसे ठुकरा दिया।

एक बार सापेक्षवाद सिद्धांत के जन्मदाता वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन की पत्नी की घड़ी गुम हो गई, तो वह बहुत दुखी हुई। आइंस्टीन को पता लगा तो पूछ बैठे- घड़ी कितने की थी? पत्नी ने बताया- पचास डालर की। खरीदते ही वस्तु

आधे मूल्य की रह जाती है, इसलिए तुम आधा ही दुख मनाओ और लगभग इतना तो तुम मना ही चुकी होगी। मुस्कुराते हुए वैज्ञानिक ने कहा तो उदासीन पत्नी को भी यह सुनकर हंसी आ गई।

आइंस्टीन जन्मजात ब्राह्मण से ज्यादा ब्राह्मण हैं

ब्राह्मण तो वही है जो स्वयं के भीतर के ब्रह्म को जान ले। ब्राह्मण तो वही है जो स्वयं के भीतर के ब्रह्म को और बाहर के ब्रह्मांड को एक जान ले। ब्राह्मण तो वही है, जो भीतर और बाहर एक का ही विस्तार है, ऐसा जान ले।

जन्मजात ब्राह्मण से तो ज्यादा ही ब्राह्मण आइंस्टीन को कहना होगा। जो केवल पैदा हुआ है ब्राह्मण के घर में, इसलिए ब्राह्मण, उससे तो आइंस्टीन ज्यादा ही ब्राह्मण हैं। यज्ञोपवीत धारण करके जो ब्राह्मण हो गया है उससे तो आइंस्टीन ज्यादा ही ब्राह्मण है।

मरने के दो दिन पहले आइंस्टीन से किसी ने पूछा- दुबारा अगर पैदा हों तो क्या होना चाहेंगे? फिर वैज्ञानिक बनना चाहेंगे? आइंस्टीन ने आंख खोली और कहा, नहीं- नहीं, भूलकर भी नहीं। जो भूल एक बार हो गई, हो गई; दुबारा मैं कुछ भी विशिष्ट न बनना चाहूंगा। प्लंबर बन जाऊंगा, कोई छोटा-मोटा काम, विशिष्ट होना अब नहीं। देख लिया, कुछ पाया नहीं। अब तो साधारण होना चाहूंगा।

यही तो ब्राह्मण का भाव है- यह विनम्रता। फिर भी उनको मैं पूरा ब्राह्मण नहीं कह सकता, क्योंकि ब्रह्मांड तो उन्होंने जाना, वह जो बाहर था वह तो जाना; लेकिन जो भीतर था उसको नहीं जाना। फिर भी ब्राह्मणों से बेहतर, क्योंकि यह कहा कि जो भीतर है उसका मुझे कुछ पता नहीं।

जिन्होंने शास्त्र पढ़ लिया है और शास्त्र से रट लिया है, उस रटन को जो अपना शान दावा करते हैं उनसे तो ज्यादा ब्राह्मणत्व आइंस्टीन में है कम से कम कहा तो कि मुझे भीतर का कुछ भी पता नहीं। भीतर मैं कोरा का कोरा, खाली का खाली हूं। इस जगत की बहुतसी पहेलियां मैंने सुलझा लीं, लेकिन मेरे अपने अंतस की पहेलियां उलझी रह गई हैं।

उपनिषद कहते हैं- जो कहे मैं जानता हूं जानना कि नहीं जानता। और जो कहे कि मैं नहीं जानता, रुक जाना, शायद जानता हो।

आइंस्टीन कहता है- मुझे कुछ पता नहीं भीतर का। बाहर के ज्ञान ने यह भ्रांति कभी पैदा न होने दी कि भीतर का जान लिया है। बाहर की प्रतिष्ठा ने किसी तरह का भ्रम न पैदा होने दिया। बाहर की प्रतिष्ठा बड़ी थी। मनुष्यजाति के इतिहास में दो-चार लोग मुश्किल से इतने प्रतिष्ठित हुए हैं जैसा आइंस्टीन प्रतिष्ठित था। लेकिन फिर भी इससे कोई अस्मिता, अहंकार खड़ा न हुआ। इससे मैं भाव पैदा न हुआ। तो ब्राह्मण से तो ज्यादा ब्राह्मण है। लेकिन जो जाना वह बाहर का था। ब्रह्मांड का विस्तार जाना। पदार्थ का विस्तार जाना। दूर-दूर चांद तारों की खोज की। लेकिन स्वयं के संबंध में कोई गहरा अनुभव न हुआ। स्वयं के संबंध में कोई यात्रा ही न हुई।

तो ब्राह्मण तो वही है जो स्वयं के भीतर के ब्रह्म को जान ले। ब्राह्मण तो वही है जो स्वयं के भीतर के ब्रह्म को और बाहर के ब्रह्मांड को एक जान ले। ब्राह्मण तो वही है, जो भीतर और बाहर एक का ही विस्तार है, ऐसा जान ले।

सुनकर न जान ले, पढ़कर न जान ले। पढ़कर सुना हुआ तो खतरनाक है। उससे भ्रांति पैदा होती है। लगता है जान लिया और जाना कुछ भी नहीं। अज्ञान छिप जाता है, बस ऊपर ज्ञान की पर्त हो जाती है।

भौतिक शास्त्र व गणित के इस महान वैज्ञानिक का जन्म हुआ था १४ मार्च १८७९ को। शुरु से ही उनकी रूचि गणित में थी। मैकेनिकल डिवाइसेज को भी वह काफी पसंद करते थे। दरअसल इनके साथ खेलना, इनके बारे में जानना, बचपन से ही उनकी पसंदीदा हॉबी थी। एक बार उनके पिता ने उन्हें पॉकेट कंपास गिफ्ट में दी। इस समय उनकी उम्र महज पांच वर्ष थी लेकिन इससे खेलने की बजाय उन्होंने इसके साथ एक्सपैरिमेंट करना शुरू कर दिया।

महान स्कॉलर- वह जर्मनी के थे लेकिन उनकी प्रतिभा का विकास हुआ स्विट्जरलैंड आकर। दरअसल वह पढ़ते थे और यहीं वह फिजिक्स और मैथ्स के एक महान स्कॉलर बनकर उभरे। यानी यहां आकर उन्होंने कुछ ऐसे ऐतिहासिक कार्य किए जिनकी वजह से पूरी दुनिया आज भी उन्हें याद करती है।

ग्रेट अचीवर- इस महान वैज्ञानिक के सिद्धांतों पर आज भी तरह-तरह से प्रयोग हो रहे हैं। उनकी कुछ महान थ्योरियों में स्पैशल थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी को साइंटिफिक वर्ल्ड में लोग खासतौर पर जानते हैं। एक बार और आइंस्टीन की थ्योरी जितनी उपयोगी होती थी उतना ही कठिन होता था उन्हें समझ पाना। यही वजह है कि जब उनकी थ्योरी थ्योरी ऑफ रिलेटिविटी आई तो इसे पूरी तरह समझ पाना हर किसी के वश की बात नहीं थी लेकिन सच तो यही है कि इस थ्योरी ने उन्हें दुनिया का सबसे महान वैज्ञानिक का दर्जा दिलाया और इसी थ्योरी के कारण उन्हें वर्ष १९२१ में नोबेल प्राइज भी मिला।

अगर बीसवीं सदी के सबसे प्रसिद्ध वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन कभी जन्मे ना होते तो हमारे पास परमाणु हथियार नहीं रहते। आइंस्टीन को अगर हम किसी भी तरीके से इतिहास से गायब कर दें तो बहुत कम नाभिकीय हथियार प्रभावित होंगे क्योंकि वे नाभिकीय हथियारों के कोई मुख्य कर्ता-धर्ता नहीं थे। ये मिथ इसलिए पैदा हुआ, क्योंकि उस समय आइंस्टीन की इक्वेशन ज्यादा प्रसिद्ध थी और ज्यादातर लोग इसी सूत्र को नाभिकीय हथियारों को बनाने में मुख्य मानने लगे थे। उन्होंने ऊर्जा के बारे में जरूर लिखा परन्तु निर्मित करने का सिद्धांत नहीं दी जिससे स्पष्ट है कि नाभिकीय हथियारों के उत्पादन से उनका कोई भी सीधा रिश्ता था ही नहीं।

दुनिया के बड़े वैज्ञानिकों में से एक आइंस्टीन का दिमाग औसतन आकार का था। लेकिन वह बहुत ज्यादा कॉम्प्लेक्स था। उनके दिमाग में जरूरत से ज्यादा फोल्डस् थे। वैज्ञानिकों का कहना है कि हो सकता है कि इससे आइंस्टीन को असाधारण तरीके से सोचने की क्षमता मिली हो। नोबेल पुरस्कार विजेता साइंटिस्ट का ब्रेन २४० ब्लॉक्स में बंटा था। १९५५ में उनकी मौत के बाद इसे रिसर्चर्स को डिस्ट्रिब्यूट कर दिया गया था। दिमाग का ज्यादातर हिस्सा अब खो गया है। इसकी बनावट के बारे में बहुत कम लिखा गया है। वैज्ञानिक ने अब अलग-अलग हिस्सों में होने से पहले की दिमाग की फोटो का इस्तेमाल किया है। फोटो के इस्तेमाल से २४० सेक्शंस और २००० थिन सिल्वर्स को जोड़कर रोडमैप तैयार किया गया है, जिसमें उन्हें बाद में बांटा गया था।

❋ यूरी गागरिन - अगर एक मामूली बढ़ई के बेटे ने आसमान के पार उड़ने की हिम्मत नहीं दिखाई होती, तो शायद अंतरिक्ष हमारे लिए रहस्य ही होता। पहली बार १२ अप्रैल, १९६१ को पूर्व सोवियत संघ के अंतरिक्ष यात्री यूरी गागरिन ने वोस्ताक-१ में बैठकर अंतरिक्ष की उड़ान भरी थी। इसी दिन की याद में हर साल १२ अप्रैल को इंटरनेशनल डे ऑफ ह्यूमन स्पेस फ्लाइट मनाया जाता है। गागरिन से पहले ३ नवंबर, १९५७ को अंतरिक्ष में फीमेल डॉग लाइका को भेजा गया था। हालांकि वह अंतरिक्ष में केवल छह घंटे ही जीवित रह सकी।

आज इंसान चांद पर पहुंच चुका है और मंगल ग्रह पर बस्तियां बनाने की सोच रहा है। लेकिन वह कौन था, जिसने सबसे पहले स्पेस में कदम रखा? सात बार फ्लाइट टेस्ट के बाद वोस्ताक-१, स्पेस में इंसान को ले जाने के लिए तैयार था। १२ अप्रैल, १९६१ को २७ वर्षीय सोवियत एयर फोर्स के पायलट ने अंतरिक्ष में कदम रखकर इतिहास रच दिया। वह पायलट कोई और नहीं रूस के यूरी गागरिन थे। २७ मार्च १९६८ जब यूरी गागरिन मिग १५ नामक प्रशिक्षण विमान का संचालन कर रहे थे तो, विमान के दुर्घटनाग्रस्त होने के कारण उनकी मृत्यु हो गई थी।

यूरी अलेक्सेयेविच गागरिन का जन्म ९ मार्च, १९३४ को हुआ था। वे बेहद साधारण परिवार से थे। पिता बढ़ई थे और मां एग्रीकल्चर फार्म में काम करती थीं। अपने माता-पिता की चार संतानों में यूरी तीसरे थे। उनका परिवार पश्चिमी रूस में क्लूशीनो नाम के जिस गांव में रहता था, वह बेलारूस की सीमा के पास है। १९५५ में सारातोव शहर में उन्होंने कास्टिंग तकनीक में डिप्लोमा प्राप्त किया। साथ ही, वहां के फ्लाइंग क्लब में भर्ती हो कर विमान चलाना भी सीखने लगे। बाद में सोवियत सेना में भर्ती हो गए।

गागरिन ने अंतरिक्ष में १०८ मिनट की उड़ान भरी थी। जैसे ही रॉकेट छोड़ा गया गागरिन ने कहा, पोयेखाली, इसका मतलब होता है अब हम चले। एक मजेदार तथ्य यह भी है कि यूरी को इस अभियान के लिए उनकी कम ऊंचाई के कारण ही चुना गया था। उनकी ऊंचाई मात्र पांच फुट दो इंच थी। इसके कारण वे अंतरिक्ष यान की कैप्सूल में आसानी से फिट हो सकते थे।

भूतपूर्व सोवियत यूनियन के यूरी गागारिन पहले ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने पहली बार अंतरिक्ष की यात्रा की थी। १२ अप्रैल १९६१ को यूरी गागारिन ने वोस्तोक-१ नामक अंतरिक्ष यान में सवार होकर अंतरिक्षीय कक्षा का भ्रमण किया था। उस वक्त विज्ञानिक इस बारे में बिल्कुल अनिश्चित थे कि मारहीनता का गागारिन के शरीर पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इसी कारण उनकी उड़ान का नियंत्रण पृथ्वी पर से किया गया था।

अपने एकमात्र कक्षा भ्रमण को समाप्त करने के बाद यूरी गागारिन अपने अंतरिक्ष यान के साथ सकुशल पृथ्वी पर लौट आए थे। इस भ्रमण के दौरान उन्होंने ४०,२०० किलोमीटर का अंतरिक्षीय सफर मात्र १०८ मिनटों में पूरा किया था।

❋ वराहमिहिर- इन्होंने जल विज्ञान, भूविज्ञान, गणित और पारिस्थितिके क्षेत्र में महान योगदान दिए।

ये पहले वैज्ञानिक थे जिन्होंने दावा किया था कि दीमक और पौधे भूमिगत जल की उपस्थिति के संकेतक हो सकते हैं। दरअसल इन्होंने दीमकों (ऐसे कीड़े जो लकड़ी को बर्बाद कर देते हैं) के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी दी थी कि अपने घर की नमी बनाए रखने के लिए पानी लाने हेतु ये काफी गहराई में पानी के स्तर की सतह तक चले जाते हैं।

अपने बृहत्संहिता में इन्होंने भूकंप बादल सिद्धांत दिया जिसने विज्ञान जगत को अपनी ओर आकर्षित किया था। आर्यभट्ट और वराहमिहिर द्वारा ज्योतिष को विज्ञान के प्रकाश तौर पर बेहद व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत किया गया था। विक्रमादित्य के दरबार के नौ रत्नों में से एक वराहमिहिर भी थे। वराहमिहिर द्वारा की जानेवाली भविष्यवाणियां इतनी सटीक होती थीं कि राजा विक्रमादित्य ने उन्हें वराह की उपाधि से सम्मानित किया था। विज्ञान के इतिहास में सबसे पहली बार इन्होंने ही दावा किया था कि कोई बल है जो गोलाकार पृथ्वी के वस्तुओं को आपस में बांधे रखता है और जब इसे गुरुत्वाकर्षण कहते हैं। इन्होंने यह भी कहा था कि चंद्रमा और ग्रह अपनी खुद की रौशनी से नहीं बल्कि सूर्य की रौशनी

की नजर से चमकते हैं। इनके गणितीय कार्य में त्रिकोणमितीय सूत्रों की खोज भी शामिल थी। इसके अलावा, ये पहले गणितज्ञ थे जिन्होंने एक ऐसे संस्करण की खोज की थी जिसे आज की तारीख में पास्कल का त्रिकोण कहा जाता है। ये द्विपद गुणांक की गणना किया करते थे।

❋ वराहमिहिर (सन ५०५-५८७) वराहमिहिर सम्राट चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे। हालांकि उनके जीवन के बारे में ज्यादा कुछ मालूम नहीं है, पर माना जाता है कि वह दक्षिण बंगाल से आए थे। आधुनिक शाकद्वीपी ब्राह्मण वराहमिहिर को अपना पूर्वज मानते हैं। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक पंचसिद्धांतिका है।

चरक- इन्हें प्राचीन भारतीय चिकित्सा विज्ञान का पिता भी कहा जाता है। राजा कनिष्क के दरबार में ये राज वैद्य (शाही डॉक्टर) थे। चिकित्सा पर इनकी उल्लेखनीय किताब है चरक संहिता। इसमे इन्होंने रोगों के विभिन्न विववरण के साथ उनके कारणों की पहचान एवं उपचार के तरीके बताए हैं। पाचन, चयापचय और प्रतिरक्षा के बारे में बतानेवाले ये पहले व्यक्ति थे। इन्हें आनुवंशिकी की मूल बातें भी पता थीं।

महर्षि पतंजलि- इन्हें योग के पिता के तौर पर जाना जाता है। इन्होंने योग के १९५ सूत्रों का संकलन किया था।

योग को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करनेवाले ये पहले व्यक्ति थे। पतंजलि के योग सूत्र में, ओम को भगवान के प्रतीक के तौर पर बोला जाता है। इन्होंने ओम को लौकिक ध्वनि बताया था। इन्होंने चिकित्सा पर किए काम को एक पुस्तक में संकलित किया और पाणिनी के व्याकरण पर इनके काम को महाभाष्य के नाम से जाना जाता है। माना जाता है कि ये एक निबंधकार थे जिन्होंने प्राचीन भारतीय चिकित्सा प्रणाली यानि आयुर्वेद पर लिखा था। वहाँ तक की भारत के शास्त्रीय नर्तक उन्हें बुलावा भेजते और उनका सम्मान करते थे। ऐसा माना जाता है कि पतंजलि की जाँच समाधि तिरुपट्टूर ब्रह्मपुरेश्वर मंदिर में है।

योग- योग शब्द संस्कृत शब्द योक्त से बना है। योग आयुर्वेद से संबंधित विज्ञान है। प्राचीन भारत में बिना दवाओं के शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर चिकित्सा करने हेतु इसे विकसित किया गया था। अन्य विज्ञानों के जैसे इसका उल्लेख वेदों में भी मिलता है। यह चित्त को भी परिभाषित करता है यानि किसी व्यक्ति की चेतना के विचारों, भावनाओं और इच्छाओं को मिलाना एवं संतुलन की स्थिति को प्राप्त करना।

❋ थॉमस अल्वा एडीसन- आप घर में लाइट के लिए जो बल्ब लगाते हो, उसकी खोज थॉमस अल्वा एडीसन ने की थी। लेकिन उन्हें बचपन में बुद्धू माना जाता था। उनके अजीबो-गरीब प्रश्नों और हरकतों के कारण लोग उन्हें बुद्धि से कमजोर मानते थे। बीमार होने की वजह से वे समय पर स्कूल भी नहीं जा पाए। पढ़ाई पर ठीक से केंद्रित न कर पाने की वजह से उनके टीचर्स ने उन्हें बेवकूफ तक कहा। इससे आहत होकर घर पर ही पढ़ने लगे। उन्होंने अनेक आविष्कार किए, जिनमें लाइट बल्ब और मोशन कैमरे प्रमुख हैं।

पूरी दुनिया को रोशन किया - थॉमस अल्वा एडिसन एक महान वैज्ञानिक थे। उन्होंने बिजली का बल्ब जैसा आविष्कार करके दुनिया को रोशन कर दिया। एडिसन बहुत ही मेहनती और जुझारू व्यक्ति थे। उन्हें बचपन में यह कहकर शिक्षक ने निकाल दिया था कि बच्चा मंदबुद्धि है, जिंदगी में कुछ नहीं कर पाएगा। कहते हैं कि उन्होंने बल्ब का आविष्कार करने के लिए हजारों बार प्रयोग किए थे। इसी दरम्यान उनसे किसी ने पूछा- आपने करीब एक हजार प्रयोग किए लेकिन आपके सारे प्रयोग असफल रहे और आपकी मेहनत बेकार हो गई। क्या आपको दुख नहीं होता?

एडिसन बोले- मैं नहीं समझता कि मेरे हजार प्रयोग असफल हुए हैं। मेरी मेहनत बेकार नहीं गई, क्योंकि मैंने एक हजार प्रयोग करके पता लगाया है कि इन एक हजार तरीकों से बल्ब नहीं बनाया जा सकता। मेरा हर प्रयोग, बल्ब बनाने की प्रक्रिया का हिस्सा है और मैं अपने प्रत्येक प्रयास के साथ एक कदम आगे बढ़ता हूं। आखिरकर वह दिन आया, जब एडिसन की मेहनत रंग लाई और उन्होंने बल्ब का आविष्कार करके पूरी दुनिया को रोशन कर दिया।

महान वैज्ञानिक : थॉमस एडीसन- थॉमस एल्वा एडीसन, जैसा वैज्ञानिक मानव विकास के इतिहास में अब तक कोई नहीं हुआ है, जिसने एडीसन के बराबर आविष्कार किये हों। इस एक व्यक्ति ने हजार से अधिक नये आविष्कार किये। थॉमस का जन्म मिलान में हुआ था। वे बचपन में बहुत कमजोर थे। परन्तु इनका मस्तिष्क सदा प्रश्नों से भरा रहता घथा। वह किसी भी चीज को तब तक नहीं मानते थे, जब तक कि स्वयं उसका परीक्षण न कर लें। इसी दृष्टिकोण के कारण उन्हें स्कूल से निकाल दिया गया। अत: इनकी आगे की पढ़ाई घर पर हुई, अपनी मां के द्वारा १० वर्ष की उम्र में ही एडीसन ने अपने घर के तहखाने में एक प्रयोगशाला बना ली थी। जब अपने प्रयोगों के लिए इन्हें अधिक धन की आवश्यकता हुई तो इन्होंने रेलगाड़ियों में टॉफी बेचना शुरू किया। १८६१ ई. में उन्होंने रेलगाड़ी में ही एक समाचार पत्र छापने की योजना बनायी, जिसका नाम था ग्रांड ट्रंक हैरल्ड। यह विश्व का पहला ऐसा अखबार था जो रेलगाडी में ही छपता था। उन्होंने रेलगाडी में ही एक अपनी प्रयोगशाला बना ली। इसी प्रयोगशाला में टेलीग्राफ को विकसित किया। बाद में इसमें आग लग गयी और एडीसन पर रेलगाड़ी में चढ़ने पर प्रतिबंध लग गया। १८६६ ई. में में न्यू जर्सी में इन्होंने अपनी नयी प्रयोगशाला स्थापित की। वहां इतने अनुसंधान, आविष्कार किये कि लोग इन्हें न्यू जर्सी का जादूगर कहने लगे। सन् १८६६ में एडीसन ने ग्रामोफोन का आविष्कार किया। इसी प्रयोगशाला में सन् १८६९ में विद्युत बल्ब का भी आविष्कार किया। विद्युत बल्ब के आविष्कार के दौरान ही उन्होंने तापमिक उत्सर्जन का महत्वपूर्ण सिद्धांत प्रतिपादन किया। आगे के वर्षों में थॉमस एडीसन ने एक मशीन का आविष्कार किया, जिसके आधार पर रेमिंगटन टाइपरायटर विकसित किया गया। इन्होंने विद्युत से चलनेवाला पेन भी खोजा, जो बाद में मियोग्राफ के रूप में विकसित हुआ। सन् १८८९ में उन्होंने चलचित्र कैमरा भी विकसित किया।

१९१२ ई. में एडीसन को नोबल पुरस्कार मिला, परन्तु इनके सहयोगी टेस्ला ने इसमें व्यवधान खड़ा कर दिया। वे अपने जीवन के अंतिम वर्षों में भी नयी चीजों के आविष्कार में लगे रहे। वे स्वभावत: बिल्कुल साधारण किस्म के एवं विनम्र थे। एक बार उन्होंने खुद की उपलब्धि पर टिप्पणी की कि मेरे अंदर एक प्रतिशत विद्वता का उत्साह रहा, लेकिन ९९ प्रतिशत कठिन परिश्रम का। वे अमरीका के अब तक के सबसे प्रसिद्ध व्यक्तियों में से एक हैं।

बिजली संबंधी अनेक अविष्कारों के जन्मदाता टामस एडिसन को एक बार किसी पार्टी में जबरदस्ती बुला लिया। उनकी इच्छा हुई कि सबकी दृष्टि बचाकर चुपके से निकल जाऊं और अपनी प्रयोगशाला में जाकर काम करूं। वे दरवाजे के पास टहलते हुए बाहर निकलने का अवसर खोज ही रहे थे। कि उनका एक अभिन्न मित्र वहां आ गया और बोला- इस भीड़-भाड़ में मैं आपसे कोई बात नहीं कर पाया। आजकल आप किस विषय के बारे में सोच रहे हैं? फिलहाल यहां से खिसकने के बारे में एडिसन ने हंसते हुए कहा।

१३ आविष्कार १००० पेटेंट - एडिसन का सबसे मशहूर आविष्कार ग्रामोफोन था। लेकिन उन्हें सबसे ज्यादा मेहनत करनी पड़ी थी बिजली के बल्ब का आविष्कार करने में। इसके लिए उन्होंने १६०० खनिजों के साथ प्रयोग किये थे तब कहीं जाकर

कार्बन का धागा यानी फिलामेंट खोज पाये थे। इसी धागे ने दुनिया को रोशनी बख्शी। एडिसन ने अनगिनत आविष्कार किये उनसे खूब धन भी कमाया। लेकिन उनकी यह फितरत थी कि वह हमेशा किसी उपकरण को बेहतर बनाने के लिए प्रयत्नशील रहते थे। एडिसन इतने बहुआयामी प्रतिभा पुंज थे कि उनको ज्ञान की किसी एक सीमा में बांधा ही नहीं जा सकता। शायद इसी वजह से आज भी दुनिया को दिक्कत होती है कि उन्हें रसायनज्ञ मानें या भौतिकविद अथवा इलेक्ट्रिशियन।

सुनने में यह काल्पनिक सा लगेगा १३०० आविष्कार, १००० पेटेंट और एक साथ भौतिकविद, रसायनज्ञ व इलेक्ट्रीशियन, यह सब खासियतें सिर्फ एक और एक ही व्यक्ति में थीं, वह थे बिजली के बल्ब के आविष्कारक, दुनिया को पहला मूवी कैमरा और ग्रामोफोन देनेवाले थामस अल्वा एडिसन।

महान अमेरिकी वैज्ञानिक एडिसन को संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति ने देश का अमूल्य रत्न घोषित किया था। मगर वह अकेले अमेरिका के ही नहीं १९वीं सदी की समूची दुनिया के सबसे मूल्यवान विज्ञान के सितारे थे। ११ फरवरी १८४७ को अमेरिका के मिलैन (ओहियो) में जन्में एडिसन की औपचारिक शिक्षा बिल्कुल भी नहीं हुई थी। वह स्कूल तो गए थे लेकिन पढ़ने-लिखने में इतने फिसड्डी थे कि अध्यापक उन्हें एडिसन की जगह एडेल्ड यानी सड़ा हुआ कहकर बुलाते थे। एडिसन के पिता सैमुअल गोगडेन एडिसन हॉलैंड वासी थे जबकि माँ नैंसी इलियट् स्काटिश थीं। एडिसन जब सात वर्ष के थे तभी उनका परिवार मिशिगन से पोर्ट हुरौन चला गया था जहां उन्हें स्कूल में भर्ती कराया गया लेकिन स्कूल उन्हें कभी रास नहीं आया और यह महान आविष्कारक वैज्ञानिक औपचारिक शिक्षा से हमेशा-हमेशा के लिए वंचित हो गया। एडिसन ने एडिसन इलेक्ट्रीक बल्ब कंपनी की नींव रखी जो आज जनरल इलेक्ट्रिक कंपनी के नाम से विश्वविख्यात है। एडिसन ने जीवन में दो बार शादी की। पहली बार १८७१ में मैरी स्टिलवैल के साथ जिनसे उनके तीन बच्चे हुए और दूसरी १८८६ में मिना मिलर के साथ। एडिसन के आविष्कारों ने आम जनता से लेकर बड़े उद्योगपतियों तक सबको फायदा पहुंचाया है।

एडिसन ने अपनी जिन्दगी में बहुत किस्म के छोटे-छोटे काम किये। जिनमें रेलवे स्टेशन पर अखबार बेचने से लेकर सब्जी बेचना और फिर अखबार छापना तक शामिल था। लेकिन बाद में जब उन्होंने एक से बढ़कर एक विज्ञान के आविष्कार करने शुरू किये तो चमत्कार कर दिया। उनके आविष्कारों ने दुनिया बदलकर रख दी। खासकर दो आविष्कारों ने जिनमें पहला बिजली का बल्ब और दूसरा ग्रामोफोन है। २१ अक्टूबर १८७९ उन्होंने बिजली के बल्ब का आविष्कार किया और पूरी दुनिया को एक नया उजाला मिला। एडिसन के अन्य प्रमुख आविष्कारों में हैं- इलेक्ट्रिक वोट रिकार्डर, फोनोग्राफ, टेलीग्राफ प्रणाली, इलेक्ट्रिक पेन, वैक्स पेपर, एक्युमलेटर, ऑडियो फोन, मोशन कैमरा, मैगाफोन, टेसीमीटर, केनेटोस्कोप तथा इलेक्ट्रिक रेलवे कुछ प्रमुख हैं।

❋ वॉल्ट डिज्नी- डिज्नीलैंड के मिकी माउस और डोनाल्ड डक जैसे कार्टून कैरेक्टर्स को बनानेवाले वॉल्ट डिज्नी हाईस्कूल की पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाए थे। बाद में उन्होंने फाइन आर्ट्स का कोर्स किया और एक समाचारपत्र में कार्टूनिस्ट के तौर पर काम करने लगे। लेकिन उन्हें वहां से यह कहकर निकाल दिया गया कि वह कोई नया कार्टून नहीं बना सकते। पर आगे चलकर उन्होंने वॉल्ट डिज्नी कंपनी बनाई, मिकी माउस जैसा कार्टून बनाकर विख्यात कार्टूनिस्ट बनें।

❋ प्रसिद्ध वैज्ञानिक आर्क़मिडीज की हत्या एक रोमन सैनिक ने की थी।

❋ सबसे पहले सफल दूरबीन इटली के वैज्ञानिक गैलिलियों ने सन् १७० ई.में. बनाई।

❋ वैज्ञानिक आविष्कार- परमाणु बम- रदरफोड, विद्युत बल्ब- एडीसन आक्सीजन- जे.बी. प्रीस्टले, फोटोग्राफी (रील फिल्म)- जार्ज ईस्टमैन, क्वांटम थ्योरी- मेक्स फ्लैंक

❋ टेलीफोन का आविष्कार ग्राहमबेल है।

❋ विश्वविख्यात पाइथागोरस प्रमेय (पाइथागोरस थ्योरम) को तीन सौ सत्तर तरीकों से सिद्ध किया जा सकता है।

❋ थॉमस एडम्स ने १८६९ में च्युइंगम की खोज की। कुछ ही समय बाद उन्होंने दुनिया का पहला च्युइंगम कारखाना डाला।

❋ भारत के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन (१८८७ से १९२०) का बचपन गरीबी में बीता था और केवल ३३ वर्ष की आयु में उनकी मृत्यु हो गई थी।

❋ इलेक्ट्रॉन की खोज थॉमसन वैज्ञानिक ने की थी।

❋ मध्य काल में मुसलमान वैज्ञानिक- मध्य काल में बगदाद (इराक) ज्ञान का केंद्र था। जहां बड़े-बड़े विद्वानों, गणितज्ञों, साहित्यकारों, वैज्ञानिकों का जमावड़ा था। इन विद्वानों में बसरा (इराक) में जन्मे इब्न अल हैथम (९६५) एक प्रमुख नाम है। वे महान गणितज्ञ और वैज्ञानिक थे। वे खगोलशास्त्र के साथ नेत्र विज्ञान के भी ज्ञाता थे। उन्होंने सात खंडों में दर्शन पर किताब अल मनाजिर १०११-१०२१ के बीच लिखी। जिसका लैटिन भाषा में अनुवाद १२ वीं शताब्दी में हुआ। पुस्तक के १५ एवं १६ वें अध्याय में खगोलशास्त्र की चर्चा की गई है। आकाश पर उन्होंने कई नये तथ्य विश्व के सामने रखे। सूदानी मनोवैज्ञानिक उमर खलीफा ने हैथम को प्रयोगात्मक मनोविज्ञान का संस्थापक करार दिया है। उन्हें मनोविज्ञान के अतिरिक्त कई अन्य विद्याओं में भी विशेषज्ञता प्राप्त थी। उनकी उपलब्धियों और योगदान को स्वीकार करते हुए कुवैत ने हैथम पर १९७१ में और पाकिस्तान ने १९६९ में पोस्ट स्टांप जारी किये।

अल बिरूनी (९७३-१०५०) कई विद्याओं में निपुण थे। आधुनिक त्रिकोणमिति की बुनियाद में उन्होंने अहम भूमिका निभाई। वे दार्शनिक, भूगोलशास्त्री, खगोलशास्त्री और भौतिकज्ञ भी थे। उन्होंने पृथ्वी की अपनी धुरी में परिक्रमा की चर्चा की।

❋ जब टेलीफोन के आविष्कारिक अलेक्झांडर ग्राहम बेल की मृत्यु के पश्चात उन्हें दफनाया गया तो अमरीका के पूरे टेलीफोन नेटवर्क को एक मिनट तक मौन के रूप में बंद किया गया था।

❋ प्रा. जयराम चेंगलर- भौतिकशास्त्र के वैज्ञानिक हैं। पुणे के नेशनल रेडिओ एस्टार फिजिक्स में कार्यरत हैं। अंतरिक्ष विज्ञान शास्त्र में संशोधन दिया है। छोटी आकाशगंगा का अध्ययन करने के लिए विश्व की सबसे विशाल दूरबीन की विशेषताएं विकसित करने विशेष कोशिशें की हैं। विक्रम साराभाई संशोधन पुरस्कार से सम्मानित हैं।

❋ आर्कमिडीज ने विस्थापन का सिद्धांत (प्रिंसिपल ऑफ डिस्प्लेसमेंट) दिया था। उन्हें यह तब सूझा जब वे टब में नहा रहे थे। वह इतने खुश हुए कि यूरेका यूरेका चिल्लाते हुए दौड़ने लगे, बिना ये सोचे कि उन्होंने कुछ नहीं पहना है।

❋ राष्ट्रपति बनने से पहले अब्राहम लिंकन अपनी काउंटी के कुश्ती चैंपियन थे। उन्होंने लगभग ३०० मैचों में फाइट की और केवल एक मैच हारे थे।

❋ महान आविष्कारक एवान्जिलिस्ट टॉरिंसेल्लि

टॉरिंसेल्लि का नाम वायुदाबमापी (बैरोमीटर) के आविष्कारक के साथ जोड़ा जाता है। उसने अपने आविष्कार के लिए पानी से १३.५ गुना भारी पारे (मरक्यूरी) को चुना। उसने एक गज लंबी कांच की नली लेकर उसका एक सिरा बंद कर

दिया और उसे पारे से भर दिया। खुले सिरे को अपने अंगूठे से दबाकर उसने एक पारा भरे पात्र में डुबोया।

इससे नली का पारा धीरे-धीरे नीचे उतरने लगा और लगभग ३० इंच की ऊंचाई पर आकर ठहर गया। नली का ऊपरी हिस्सा खाली हो गया। खाली कॉलम का नाम टॉरिंसेल्लि कॉलम पड़ा। टॉरिंसेल्लि ने अपने प्रयोग में जिस उपकरण का प्रयोग किया वही आगे चलकर आधुनिक बैरोमीटर का आधार बना।

टॉरिंसेल्लि के बैरोमीटर के आधार पर ही यह पता चला कि जैसे-जैसे हम पृथ्वी की सतह से ऊपर जाते हैं, वायुमंडलीय दबाव घटता जाता है। इटली के इस महान वैज्ञानिक ने टेलिस्कोप/माइक्रोस्कोप के अनेक प्रकार की डिजाइनें तैयार की। टॉरिंसेल्लि न केवल एक महान वैज्ञानिक था, बल्कि एक महान गणितज्ञ भी था।

मारकोनी- बेतार के तार अविष्कारक मारकोनी को छोटे बच्चों से बड़ा प्यार था। एक बार एक बालक ने मारकोनी को पत्र में लिखा- क्या आप स्वर्ग से मेरे पिता से बात करा देंगे? वे मुझे बहुत प्यार करते थे। आजकल मेरे पास पुस्तकें खरीदने को भी पैसे नहीं हैं। मारकोनी उसे कैसे समझाते कि बेतार के माध्यम से स्वर्ग से बातचीत नहीं होती, उन्होंने उस बालक को पैसे भेजकर उसकी आवश्यकता पूरी कर दी।

❋ निकोलस कोपरनिकस का जन्म १९ फरवरी सन १४७३ को प्रशा के एक छोटे से शहर, तैरून नगर में हुआ था। वह मात्र १२ वर्ष के थे, जब उनके पिता का साया उनके सिर से उठ गया। उसके बाद उन्होंने मामी की देखरेख में आगे की पढ़ाई की। अपनी विश्वविद्यालय की शिक्षा के बाद निकोलस ने इटली में दस वर्ष रहकर पढ़ा और पढ़ाया। किंतु उनकी जिज्ञासा हमेशा सौरमंडल की जानकारी प्राप्त करने में थी। इसीलिए जब भी उन्हें समय मिलता देर रात तक वह मकान की ऊपरी मंजिल पर जा बैठते और आकाश की ओर देखा करते। निकोलस ने अपने अध्ययन से यह परिणाम निकाला कि सौरमंडल का केंद्र बिंदु पृथ्वी न होकर सूर्य है और पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमते हुए सूर्य की परिक्रमा करती है। जब अपना यह विचार उसने दूसरे लोगों को बताया था तो सब हंसते थे। लोग कहते थे कि कैसी बेवकूफी की बात है। यदि पृथ्वी चारों ओर घूमती होती तो निश्चय ही हम लोगों को मालूम होता हम लोगों के नीचे यह धरती हिलती और यदि हम उछलते कूदते तो पृथ्वी आगे बढ़ जाती, जिससे हम किसी दूसरे स्थान पर जा गिरते। किंतु कोपरनिकस इस प्रकार के उपहास से विचलित नहीं हुआ। उस समय यह शिक्षा दी जाती थी कि सारे ग्रह पृथ्वी के गिर्द घूमते हैं। उस समय चर्च के विरुद्ध बोलनेवाले को गद्दार समझा जाता था। इसलिए कोपरनिकस ने भी अपनी खोज के प्रकाशन को रोककर लोगों को अनभिज्ञ रखा। चूंकि उस समय तक दूरबीन का अविष्कार नहीं हुआ था। इसलिए सौरमंडल का अध्ययन कठिन था। किंतु गणित का सहारा लेकर युवावस्था से अधेड़ होने तक वह इस महान विचार पर कार्य करते रहे। जब वे एक बार बीमार पड़े तो रोटिकान नामक एक जर्मन मित्र के आग्रह पर उन्होंने अपने विचार पुस्तकों में प्रकाशित करवाए। जब वह पुस्तक उनके हाथ में पड़ी तब वह मृत्यु शय्या पर पड़े हुए थे। निकोलस की मृत्यु १५४३ ई. में हो गयी।

❋ निकोलस कोपरनिकस (सन १४७३-१५४३) हम जिस आधुनिक सौर मंडल के सिद्धांत को मानते हैं, उसे व्यापक रूप से पोलैंड के वैज्ञानिक निकोलस कोपरनिकस ने स्थापित किया। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक द रिवोल्यूशनिबस ओर्बियम कोलेस्तियम १५४३ में प्रकाशित हुई थी।

❋ डॉ. होमी भाभा- होमी भाभा भारत के सबसे महान वैज्ञानिकों में से थे और उन्हें बहुधा भारत में नाभिकीय भौतिकी का पिता कहा जाता था। उन्होंने भारत में नाभिकीय भौतिकी में बुनियादी शोधकार्य की शुरुआत की ओर भारत का

नाभिकीय ऊर्जा कार्यक्रम उनके प्रयत्नों से आरंभ हुआ।

स्वदेश में उनकी पहली सफलता क्या थी? - सन १९४५ में टाटा परिवार की मदद से उन्होंने मुंबई में टाटा इंस्टिट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च की स्थापना की और वे मृत्यु-पर्यंत उसके निदेशक रहे। वे भारत के परमाणु ऊर्जा आयोग के प्रथम अध्यक्ष थे और संयुक्त राष्ट्र की ओर से परमाणु ऊर्जा के शांतिमय उपयोगों के संबंध में आयोजित प्रथम अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन की अध्यक्षता भी उन्होंने की थी।

२४ जनवरी १९६६ को डॉ. भाभा जेनेवा जाते हुए आल्पस पर्वतों पर एक हवाई दुर्घटना में मारे गये। उनकी स्मृति में मुंबई के ट्राम्बे में स्थित परमाणु ऊर्जा केन्द्र को भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र नाम दिया गया।

❋ न्यूट्रॉन की खोज करनेवाले जेम्स चैडविक

नोबेल प्राइज विनर सर जेम्स चैडविक से पहले लोग न्यूट्रॉन को नहीं जानते थे। उनकी खोज के कारण ही आज हम परमाणु बिजली का उत्पादन कर रहे हैं। वे बचपन से ही मेधावी रहे। इनका लगाव गणित से था। १६ वर्ष की उम्र में मैनचेस्टर यूनिवर्सिटी से उन्हें दो स्कॉलरशिप भी मिली। सीनियर सेकेंड्री पास करने के बाद मैनचेस्टर में उन्होंने एप्लाइड मैथ्य के लिए एप्लाई किया, लेकिन संयोगवश उन्हें पोटेंशियल फिजिक्स के लिए इंटरव्यू देना पड़ा। शर्मीला स्वभाव होने के कारण उन्होंने विरोध नहीं किया और इंटरव्यू देने पहुंच गए। उनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर मैनचेस्टर में फिजिक्स डिपार्टमेंट में पढ़ने के लिए उनका सेलेक्शन हो गया। उसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा।

इनकी प्रारंभिक शिक्षा इंग्लैंड में हुई। मैनचेस्टर से हाई स्कूल करने के बाद ग्रेजुएट और मास्टर डिग्री ली। दो वर्ष प्रज्ञे. रदरफ़ोर्ड के अधीन फिजिकल लेबोरेट्री में काम किया। इससे उन्हें फिजिक्स को नजदीक से समझने को अवसर मिला। १९३२ में उन्होंने न्यूट्रॉन की खोज की और १९३५ में उन्हें इस उपलब्धि के लिए नोबेल प्राइज से नवाजा गया। पढ़ाई में बेहतर होने के कारण उन्हें सरकार की तरफ से कई तरह की स्कॉलरशिप भी मिली। स्कॉलरशिप से मिले पैसे का उपयोग उन्होंने बर्लिन में फर्स्ट फिजिक्स रिसर्च सेंटर खोल कर किया।

जब अस्तित्व में आया एटम- बीसवीं सदी की शुरुआत में वैज्ञानिक रदरफोर्ड ने एक प्रयोग किया, जिससे पहली बार मालूम हुआ कि एटम का एक सेंटर होता है, जो पूरी तरह ठोस होता है। इलेक्ट्रॉन इसके चारों तरफ चक्कर लगाते रहते हैं। उस वक्त तक प्रोटॉन की खोज हो चुकी थी। जेम्स चैडविक ने इसी न्यूक्लियस में एक और कण न्यूट्रॉन की खोज की और तब यह साफ हुआ कि न्यूक्लियस दरअसल प्रोटॉन और न्यूट्रॉन का कलेक्शन होता है। इस तरह तब तक इंसान एटम के जिस केंद्र को ठोस और अकेला समझता था, मालूम हुआ कि यह भी बहुत छोटे-छोटे कणों से मिलकर बना है। इन्हीं कणों को फंडामेंटल पार्टिकल यानी मूल कण कहा गया।

❋ २०० आविष्कार करनेवाला भारतीय वैज्ञानिक - शंकर आबाजी भिसे एक ऐसा वैज्ञानिक, जिसने २० साल की उम्र में कुछ मशीनें और गैजेट बनाए जिनमें टैंपर प्रूफ बोतल, इलेक्ट्रिक बाइसिकल और बॉम्बे के रेलवे सिस्टम के लिए स्टेशन इंडिकेटर वगैरह। इसके बाद उनके जीवन में बड़ा मौका तब आया जब १८९० के दशक के आखिर में ब्रिटिश आविष्कारकों की एक पत्रिका ने मशीनें डिजाइन करने की एक प्रतियोगिता का ऐलान किया। भिसे ने इसी प्रेरणा के चलते एक रात में चार घंटे के समय में एक मशीन का ब्लूप्रिंट स्केच किया और इसे प्रतियोगिता में भेजा। ब्रिटेन के तमाम प्रतियोगियों को पीछे छोड़कर भिसे विजेता बने।

नौरोजी ने की मदद- भारतीय राष्ट्रवाद के नेता दादाभाई नौरोजी लंदन में पहले ही प्रतिष्ठित थे। उस समय इंग्लैंड में भिसे को तकनीकी कम्पनियों में काम दिलाने और एग्रीमेंट तय करने में नौरोजी ने मदद की थी, क्योंकि भिसे के खाते में कई इंटरनेशनल पेटेंट आ चुके थे और नौरोजी इस काबिलियत से प्रभावित थे। इसके बाद भिसे के आविष्कारों का सिलसिला शुरू हुआ, जो २०० आविष्कारों और ४० पेटेंट तक पहुंचा।

दर्ज हुई एक आविष्कार और पेटेंट- भिसे ने एक अनोखा इलेक्ट्रॉनिक साइनबोर्ड इजाद किया, जिसे बाद में लंदन के क्रिस्टल पैलेस में प्रदर्शनी में रखा गया। फिर इसे लंदन, वेल्स और संभवत: पेरिस के स्टोर्स में उपयोग में लाया गया। किचन गैजेट्स, टेलीफोनर, सिरदर्द के इलाज के लिए एक डिवाइस और टॉयलेट सफाई के लिए एक आटोमेटिक सिस्टम भिसे तैयार कर चुके थे। भिसे ने १९०५ के जमाने में सीने के उभार में सहायक पुशअप ब्रा का आविष्कार था भिसोटाइप। ये एक ऐसा टाइपराइटर था, जिसने प्रिंटिंग उद्योग में क्रांति ला दी थी। दुनियाभर के निवेशकों ने इस आविष्कार को क्रांतिकारी माना था और उनका अंदाजा था कि इससे प्रिंटिंग उद्योग बहुत आगे तक चला जाएगा।

आयोडीन घोलवाले आविष्कार- न्यूयार्क में भिसे को अपने आयोडीन घोल वाले आविष्कार के लिए काफी दौलत व शोहरत मिली। इसके बाद उन्होंने आगे का आविष्कार करते हुए स्पिरिट टाइपराइटर भी बनाया। भिसे के अंतिम समय तक उन्हें भारत का एडिसन तो कहा जाता रहा लेकिन न तो उनके आविष्कारों की कद्र हुई और न ही उन्हें लंबे समय तक याद रखा गया।

❋ सैम पित्रोदा- भारत में दूरसंचार क्रांति के जनक। सैम पित्रोदा भारत के एक प्रसिद्ध अनुसंधानकर्ता, उद्यमी और नीति निर्माता के तौर पर पहचाने जाते हैं। उन्हें भारत में दूरसंचार क्रांति का जनक माना जाता है। उन्होंने सी-डॉट नामक संस्था की स्थापना की। डिजिटल एक्सचेंजेस के विकास में उनका अहम योगदान रहा है। उनके मार्गदर्शन में भारत ने कई प्रगत तकनीक से संबंधित मुहिमों को सफल रूप से अंजाम दिया है। भारत की राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार नीति में भी उनका अहम योगदान रहा है। उन्होंने अब तक लगभग ५० पेटंट्स प्राप्त किए हैं। सैम पित्रोदा राष्ट्रीय ज्ञान आयोग के अध्यक्ष भी हैं। उन्हें मिले पुरस्कारों में २००९ का पद्मविभूषण प्रमुख हैं।

❋ के.एस. कृष्णन - भारत की अब तक की विकास यात्रा में कई महानुभावों ने अहम योगदान दिया है। के.एस.कृष्णन को भी ऐसी ही विभूति के रूप में याद किया जाता है। सर सी.वी.रमन के साथ मिलकर रमन इफेक्ट के शोध कार्य में के.एस.कृष्णन का अहम योगदान रहा है। वे नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला के प्रथम संचालक थे।

पुरस्कार- रॉयल सोसायटी, लंदन- १९४०, नाइटहुड- १९४६, पद्मभूषण- १९५४, भटनागर स्मृति पुरस्कार से सम्मानित प्रथम विभूति- १९६१।

❋ टॉल्मी (सन १००-१७०) टॉल्मी के मूल को लेकर कुछ विवाद है, पर ऐसा माना जाता है कि प्राचीन मिस्र के ये वैज्ञानिक रोमन मूल के थे। रोमन साम्राज्य के दौरान वह ज्ञान-विज्ञान के केंद्र मिस्र के सिकंदरिया शहर में रहते थे। टॉल्मी ने अंतरिक्ष, भूगोल और गणित समेत विज्ञान की तमाम शाखाओं का गहन अध्ययन किया।

❋ कुछ अलग थे गणितज्ञ पॉल एरडोस - प्रसिद्ध मैथमेटीशियन यानी गणितज्ञ पॉल एरडोस की कुछ आदतें हैरान करनेवाली थीं। एक बार टेलीफोन का नंबर सुनकर वह उसे कभी नहीं भूलते थे, परंतु उन्हें अपने जाननेवालों के चेहरे कभी याद नहीं रहते थे। एक बार मैथमेटीशियनों के सेमीनार में पॉल ने एक व्यक्ति से पूछा कि वह कहां से आया है? उत्तर

मिला, वैंकूवर से सुनकर पॉल बोले, वैंकूवर से तब तो तुम मेरे दोस्त इलियट मंडेल्सन को जरूरी जानते होंगे इस मैथमेटीशियन ने कहा, अवश्य। मैं ही इलियट मंडेल्सन हूं।

❋ जगदीश चंद्र बोस ने बताया, सांस लेते हैं पौधे - पौधों में भी जान होती है, यह तो अब सभी जानते हैं, लेकिन इससे पहले कोई नहीं जानता था। पौधे भी हमारी तरह सांस लेते हैं, इसके बारे में दुनिया को जगदीश चंद्र बोस ने बताया था। ३० नवंबर १९५८ को बंगाल (वर्तमान बांग्लादेश) के मेमन सिंह गांव में जन्मे जगदीश चंद्र बोस भारत के प्रसिद्ध भौतिकविद् तथा पादपक्रिया वैज्ञानिक थे। जगदीश चंद्र बोस ने कई महान ग्रंथ भी लिखे हैं, जिनमें से कुछ निम्नलिखित विषयों पर आधारित हैं, जैसे-सजीव तथा निर्जीव की अभिक्रियाएं (१९०२), पौधों की प्रेरक यांत्रिकी (१९२६) इत्यादि।

❋ पेड़-पौधों में भी जीवन- भारतीय वैज्ञानिक प्रोफेसर जगदीश चंद्र बोस बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे उन्हें रेडियो और माइक्रोवेव ऑप्टिक्स के आविष्कार के जनक के तौर पर जाना जाता है। उन्होंने ही साबित कर दिखाया था कि पेड़-पौधों में भी जीवन होता है।

जगदीश चंद्र बोस ने ग्यारह वर्ष की आयु तक गांव के ही एक विद्यालय में शिक्षा ग्रहण की। उसके बाद ये कलकत्ता आ गए और सेंट जेवियर स्कूल में प्रवेश लिया। जगदीश चंद्र बोस की जीव विज्ञान में बहुत रुचि थी, फिर भी फिजिक्स के प्रसिद्ध प्रो. फादर लाफोण्ट ने बोस को फिजिक्स के अध्ययन के लिए प्रेरित किया।

बोस ने २२ साल की उम्र में फिजिक्स में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उसके बाद वे चिकित्सा विज्ञान की शिक्षा के लिए लंदन चले गए, मगर स्वास्थ्य खराब रहने की वजह से उन्होंने डॉक्टर बनने का विचार छोड़ दिया और कैम्ब्रिज के क्राइस्ट महाविद्यालय से बी.ए. की उपाधि ले ली।

जगदीश चंद्र बोस १८८५ में देश लौटकर आए और भौतिक विषय के सहायक प्राध्यापक के रूप में प्रेसिडेंसी कॉलेज में पढ़ाने लगे। यहां वह १९१५ तक कार्यरत रहे।

उस समय भारतीय शिक्षकों को अंग्रेज शिक्षकों की तुलना में एक तिहाई वेतन दिया जाता था। इसका जगदीश चंद्र बोस ने बहुत विरोध किया और तीन वर्षों तक बिना वेतन लिए काम करते रहे, जिसके कारण उनकी आर्थिक स्थिति खराब हो गई और उन पर काफी कर्ज भी हो गया था। इस कर्ज को चुकाने के लिए उन्होंने अपनी पुश्तैनी जमीन भी बेच दी। चौथे वर्ष जगदीश चंद्र बोस की जीत हुई और उन्हें पूरा वेतन दे दिया गया।

बोस एक बहुत अच्छे शिक्षक थे। वह कक्षा में पढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर वैज्ञानिक प्रदर्शनों का प्रयोग करते थे। बोस के ही छात्र सत्येंद्रनाथ बोस आगे चलकर प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री बने। प्रेसिडेंसी कॉलेज से सेवानिवृत्त होने पर १९१७ में उन्होंने बोस रिसर्च इंस्टीट्यूट, कलकत्ता की स्थापना की और १९३७ तक इसके निदेशक रहे।

मारकोनी के प्रदर्शन से २ वर्ष पहले ही १८८५ में बोस ने रेडियो तरंगों द्वारा बेतार संचार का प्रदर्शन किया था। इस प्रदर्शन में जगदीश चंद्र बोस ने दूर से एक घंटी बजाई और बारूद में विस्फोट कराया था।

आजकल प्रचलित बहुत सारे माइक्रोवेव उपकरण जैसे वेव गाइड, परावैद्युत लैंस, विद्युत चुंबकीय विकिरण के लिए अर्धचालक संसूचक, इन सभी उपकरणों का उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक में बोस ने आविष्कार किया और उपयोग किया था।

बोस ने सूर्य से आनेवाले विद्युत चुंबकीय विकिरण के अस्तित्व का सुझाव दिया था, जिसकी पुष्टि १९४४ में हुई।

इसके बाद बोस ने किसी घटना पर पौधों की प्रतिक्रिया पर अपना ध्यान केंद्रित कर दिया। बोस ने दिखाया कि यांत्रिक, ताप, विद्युत तथा रासायनिक जैसी विभिन्न प्रकार की उत्तेजनाओं में सब्जियों के ऊतक भी प्राणियों के समान विद्युतीय संकेत उत्पन्न करते हैं।

❋ सर मोक्षगुंडिम विश्वेश्वरैया - विश्वविख्यात अभियंता और भारतरत्न सर मोक्षगुंडम विश्वेश्वरैया की स्मृति में हर वर्ष १५ सितंबर को भारत में अभियंता दिन अर्थात इंजीनियर्स डे मनाया जाता है। सर विश्वेश्वरैया ने हर भारतीय को देशभक्ति से प्रेरित होकर नि:स्वार्थ रूप से कड़ी मेहनत करने की प्रेरणा दी है। उन्होंने अपनी आयु के २३ वें वर्ष इंजीनियरिंग की डिग्री हासिल कर ली थी। इसके बाद वे मुंबई राज्य में सरकारी सेवा में कार्यरत हो गए। इस दौरान उन्होंने महाराष्ट्र के धुले स्थित पांजरा-नदी से मिलनेवाली सहनदियों पर साइफन बनाने का काम सफलता से पूर्ण किया। सर विश्वेश्वरैया ने पूरे देश में जगह-जगह कई डैम बनवाए। कर्नाटक के मैसूर में प्रसिद्ध वृंदावन गार्डन के नजदीक बना कृष्णराजसागर डैम विश्वेश्वरैया की संकल्पना और इंजीनियरिंग कुशलता का उत्तम नमूना है। हैदराबाद स्थित बाढ़ संरक्षण व्यवस्था के वे निर्माता माने जाते हैं। सर विश्वेश्वरैया ने १९१२ से १९१८ के बीच तत्कालीन मैसूर संस्थान के दीवान के रूप में भी कामकाज देखा था। देश के विकास में अहम योगदान देनेवाले इस महान इंजीनियर के कार्यों का सम्मान करते हुए भारत सरकार ने उन्हें सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से नवाजा है।

❋ आधुनिक गणित के जन्मदाता बर्नहार्ड रीमान (जीवनकाल- १८२६ से १८६६)

अल्बर्ट आइंस्टाइन अपनी जिस थ्योरी के लिए पूरे विश्व में प्रसिद्ध हुए वह है- सापेक्षकता का सिद्धांत। बहुत कम लोगों को यह मालूम है कि जिस गणितीय मॉडल यानी डिफेंशियल ज्योमेट्री की सहायता से आइंस्टाइन ने अपनी थ्योरी विकसित की, उसके जन्मदाता, जर्मन गणितज्ञ बर्नहार्ड रीमान थे। बर्नहार्ड रीमान का जन्म १७ सितंबर, १८२६ को ब्रेसलेंज गांव में हुआ। रीमान से पहले गणितज्ञ थ्री डायमेंशन से परिचित थे, जो क्रमश: लंबाई, चौड़ाई व गहराई की विमाएं (डायमेंशन) कहलाती हैं। रीमान ने पहली बार डायमेंशन का एक व्यापक कॉन्सेप्ट प्रस्तुत किया और कहा कि डायमेंशन तीन से ज्यादा भी हो सकते हैं। बाद में आइंस्टाइन ने भौतिक रूप से चार विमाओं की बात कही और समय को चौथा डायमेंशन बताया। तीन से ज्यादा विमाओं को शामिल करते हुए रीमान ने डिफ्रेंशियल ज्योमेट्री की शुरूआत की। वर्तमान में गणितीय क्षेत्र में अधिकतर शोध इसी विषय में हो रही है। ब्रह्मांड के रहस्यों को उजागर करने में यह त्रिकोणमिती अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही है। संख्या सिद्धांत पर कार्य करते हुए रीमान ने फलन ज्ञात किया, जिसे रीमान जेटा फलन कहा जाता है। इस फलन द्वारा उन्होंने नेचुरल संख्याओं १,२,३,... व अभाज्य संख्याओं के बीच संबंध ज्ञात किया। हालांकि, इस फलन पर यूलर ने काम किया था, किंतु रीमान ने इसे व्यापक रूप दिया। रीमान ने कैलकुलस की शाखा इंटीग्रल कैलकुलस में कार्य करते हुए इंटीग्रेशन को नये तरीके से परिभाषित किया, जिसे रीमान इंटीग्रेशन कहा जाता है। रीमान ने अधिकल्पित राशियों पर कार्य करते हुए अत्यंत महत्वपूर्ण सूत्र ज्ञात किये। वह राशिया, जिनका एक भाग वास्तविक होता है तथा दूसरा काल्पनिक, अधिकल्पित रशिया कहलाती हैं। कॉम्प्लेक्स नंबर्स में रीमान गोले की खोज उल्लेखनीय है, जिसका आज क्वांटम भौतिकी तथा भौतिकी की दूसरी शाखाओं के भीतर गणना में उपयोग हो रहा है।

❋ माइकल फैराडे- बिजली का आविष्कार कोई ऐसा आविष्कार नहीं है, जो किसी घटना, दुर्घटना की वजह से अकस्मात हो गया हो, वरन यह मानव बुद्धि और विज्ञान के विकास के साथ जुड़ा है। इस संबंध में प्रारंभिक प्रयास सन

१८०० में एलेस्सान्डो वोल्ट्रा ने किया था और उन्होंने ऐसी पहली विद्युत सेल बनाई, जिससे विद्युत धारा प्रवाह की जा सकती है। हालांकि इस सेल में बाद में काफी सुधार एवं विकास हुए और फिर अनेक तरह की विद्युत सेल बनने लगी।

लेकिन बिजली पैदा करने की दिशा में सर्वाधिक क्रांतिकारी एवं कारगर प्रयास सन् १८३१ में माइकल फैराडे ने किया। इसलिए आज उन्हें ही विद्युत का जन्मदाता या आविष्कारक माना जाता है। सर्वप्रथम उन्होंने ही यह सिद्ध किया कि तांबे के तार से बनी कुंडली में एक चुंबक को आगे पीछे करने से बिजली उत्पन्न हो सकती है। जनरेटरों का विकास भी फैराडे के इसी सिद्धांत के आधार पर हुआ। १८६७ में पहला विद्युत जनरेटर जर्मनी में बनाया गया और फिर विद्युत की दुनिया में विद्युत मोटरें और ट्रांसफार्मर आदि बनने लगे। अपनी खोज के माध्यम से दुनिया को रोशन करने वाले महान आविष्कारक माइकल फैराडे की दूसरी जन्म शताब्दी ब्रिटेन में धूमधाम से मनाई गई। लोहार परिवार में जन्मे एवं घर में रहकर खुद शिक्षा दीक्षा प्राप्त करनेवाले फैराडे के आविष्कार के बारे में लंदन के विज्ञान संग्रहालय में एक प्रदर्शनी छह महीने तक चली। फैराडे की खोजों से ही आगे चलकर विद्युत ट्रांसफार्मर, जनरेटर, मोटर, रेडिया और माइक्रोवेव ओवन्स का निर्माण हुआ। दूसरी जन्म शताब्दी के मौके पर ब्रिटिश सरकार ने फैराडे पर एक डाक टिकट जारी किया है। वहीं बैंक ऑफ इंग्लैंड ने पौंड का नया नोट जारी किया है, जिसमें शेक्सपीयर के स्थान पर फैराडे का चित्र है।

❋ रामानुजम- रामानुजम तमिलनाडु के इरोड शहर के निवासी थे। अपनी प्रारंभिक शिक्षा के दौरान रामानुजन अपने मित्रों की गणित की उलझनों को चुटकी में समझा देते थे। सातवीं कक्षा में आते-आते रामानुजन स्नातक के छात्रों को गणित पढ़ाने लग गये थे।

श्रीनिवास रामानुजम एक महान भारतीय गणितज्ञ थे। इन्हें आधुनिक काल के महानतम गणित विचारकों में गिना जाता है। इन्हें गणित में कोई विशेष प्रशिक्षण नहीं मिला, फिर भी इन्होंने विश्लेषण एवं संख्या सिद्धांत के क्षेत्रों में महान योगदान दिए। इन्होंने अपने प्रतिभा और लगन से न केवल गणित के क्षेत्र में अद्भुत अविष्कार किए तथा भारत को अतुलनीय गौरव भी प्रदान किया।

क्षयरोग जैसी बीमारी का इलाज उन दिनों सही से नहीं हो पाता था, जिसके चलते रामानुजम का स्वास्थ्य दिन ब दिन गिरता जा रहा था। १९१९ में उन्हें भारत वापस लौटना पड़ा। अब रामानुजम वापस कुंभकोणम में थे। उनका अंतिम समय चारपाई पर ही बीता। इस दौरान भी वे पेट के बल लेटे-लेटे कागज पर तेजी से लिखते रहते थे। काफी उपचार के बावजूद उनके स्वास्थ्य में तेजी से गिरावट आती गई। २६ अप्रैल १९२० को महज ३३ साल की उम्र में गणित की कुछ ६०० परिणाम वाली नोटबुक के साथ रामानुजन ने संसार में आखिरी सांस ली। ये सच है कि आज वो हमारे बीच नहीं है लेकिन दुनिया के किसी भी कोने में जब गणितीय प्रमेयों का जिक्र होता है तो रामानुजन बरबस याद आते हैं।

१८९८ में रामानुजम ने जब हाईस्कूल में दाखिला लिया तब उन्हें गणितज्ञ जीएस कार की लिखी किताब ए सिनोप्सिस आफ एलीमेंट्री रिजल्टस् इन प्योर एंड एप्लाइड मैथमेटिक्स पढ़ने का मौका मिला, जिसमें पांच हजार सूत्र दिए गये थे। रामानुजम को मिली ये किताब उनके लिए ऐसी थी जैसे हफ्तों से भूखे किसी इंसान को रोटी मिल गयी हो। उन्होंने जल्द से जल्द किताब में दिए हुए सारे सूत्रों को हल कर दिया।

गणित में खोज करना, ईश्वर की खोज करना रामानुजम की रुचि गणित में इतनी गहरी थी कि वे रात-दिन सुबह

शाम संख्याओं के गुणधर्मों के बारे में सोचते रहते थे। अपनी इस सोच में आये नये सूत्रों को वो कागज में लिख लेते थे। उनका मानना था कि गणित से ही ईश्वर का सही स्वरूप स्पष्ट हो सकता है। गणित में खोज करना उनके लिए ईश्वर की खोज करना है।

रामानुजम के दिमाग में गणित की ऐसी लत लग गयी थी कि उनकी छात्रवृत्ति बंद हो गयी जिसका कारण उनके बाकी विषयों में अच्छे अंक न आना रहा। १९०५ में रामानुजम मद्रास विश्वविद्यालय की प्रवेश परीक्षा में शामिल हुए लेकिन गणित को छोड़कर बाकी विषयों में फेल हो गए। १९०६ और १९०७ की प्रवेश परीक्षा का भी यही परिणाम रहा। लेकिन इसके बाद भी गणित के प्रति प्रेम में कमी नहीं आई।

१९०९ में रामानुजम की शादी हो गयी जिसकी वजह से घर चलाने का पूरा जिम्मा रामानुजम के ऊपर आ पड़ा और वे नौकरी ढूंढने लगे। इसी दौरान रामानुजम कई प्रभावशालरी व्यक्तियों के सम्पर्क में आए। नेल्लोर के कलेक्टर और इंडियन मैथमैटिकल सोसायटी के संस्थापकों में से एक रामचंद्र राव भी उनमे से एक थे। राव के साथ उन्होंने एक साल तक काम किया। इसके लिए उन्हें २५ रुपये महीना मिलता था। इस दौरान रामानुजम आयंगार ने इंडियन मैथमैटिकल सोसायटी के जर्नल के लिए प्रश्न और उनके हल तैयार करने का काम किया। १९११ में बर्नोली संख्याओं पर प्रस्तुत शोधपत्र से उन्हें शोहरत मिली। १९१२ में उन्हें मद्रास पोर्ट ट्रस्ट के लेखा विभाग में क्लर्क की नौकरी मिल गई।

❋ मेरी क्यूरी - फ्रेंच-पोलिश फिजिसिस्ट (भौतिकशास्त्री) और केमिस्ट (रसायनविज्ञानी) मैरी क्यूरी को दुनिया आज भी उनके आविष्कार की वजह से जानती है। ७ नवंबर १८६७ में जन्मीं मैरी ने रेडियम और पोलोनियम तत्वों की खोज की थी। इसके साथ ही उन्होंने रेडियोधर्मिता का सिद्धांत (रेडियोएक्टिविटी की थ्योरी) भी दिया था। वो नोबल पुरस्कार जीतनेवाली पहली महिला थी। इसके साथ ही वो पहली ऐसी शख्स थीं, जिन्होंने दो नोबल पुरस्कार जीते थे। पहला नोबल उन्हें फिजिक्स में संयुक्त रूप से अपने पति और हेरनी बेक्वेरेल के साथ मिला था। वहीं, दूसरा नोबल उन्हें केमेस्ट्री में मिला था। जिस रेडियम और पोलोनियम की खोज के लिए उन्हें जाना जाता है, वहीं उनकी मौत का कारण भी बना था। रेडिएशन के संपर्क में आने के चलते मैरी अपलास्टिक एनीमिया की शिकार हो गई थी, जिसके चलते ४ जुलाई १९३४ में उनकी मौत हो गई थी।

❋ शकुंतला देवी- शकुंतला देवी को आंकड़ों का बाजीगर कहा जाता है। जब ये ६ साल की थी तभी इनके टैलेंट की चर्चा देश विदेश में होने लगी थी। वो चंद सेकेंड में बड़े-बड़े आंकड़ों को जोड़ने और घटाने का हुनर रखती हैं। शकुंतला देवी ने १९७१ में ५० सेकेंड के अंदर २०१ अंकों की संख्या के २३ रुट की कैलकुलेशन कर दी थी। इतनी देर में तो २०१ अंकों को लिखना भी मुश्किल होता है। इसलिए तो उन्हें इंसानी कंप्यूटर के खिताब से नवाजा गया था।

❋ जी. माधवन नायर - इसरो के पूर्व अध्यक्ष और भारत के मिशन चंद्रयान के प्रमुख

जी माधवन नायर भारत के प्रसिद्ध वैज्ञानिक है। रॉकेट सिस्टम के क्षेत्र की वह एक जानी-मानी हस्ती है। मल्टीस्टेज सैटेलाइट लांच व्हीकल के विकास में पूरी तरह भारतीय तकनीक इस्तेमाल कर भारत की अंतरिक्ष मिशन के मामले मेंग आत्मनिर्भर बनाने में उन्होंने अहम योगदान दिया है। वे ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान के प्रकल्प संचालक है। वे ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपन के प्रकल्प संचालक है। उन्हें मिले कई पुरस्कारों में २००९ का पद्मविभूषण प्रमुख है।

(ब) महापुरुष, महायोगी, सिद्धपुरुष, बुद्धिजीवी

❋ आचार्य कृपलानी (सिन्ध) - जन्म- १८८८ मृत्यु- १९८२ - जीवटराम भगवानदास कृपलानी स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी, गांधीवादी समाजवादी, पर्यावरणवादी तथा राजनेता थे। उन्हें सम्मान से आचार्य कृपलानी कहा जाता था। वे सन १९४७ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष रहे जब भावी प्रधानमंत्री के लिए कांग्रेस में मतदान हुआ तो सरदार पटेल के बाद सबसे अधिक मत उनको ही मिले थ। किन्तु गांधीजी के कहने पर सरदार पटेल और आचार्य कृपलानी ने अपना नाम वापस ले लिया और जवाहर लाल नेहरू को प्रधानमंत्री बनाया गया। कृपलानी ने १९३४ से १९४५ तक कांग्रेस के महासचिव के रूप में सेवा की।

❋ डॉ. बिधान चंद्र रॉय एक प्रसिद्ध चिकित्सक, शिक्षाशास्त्री, स्वतंत्रता सेनानी और राजनेता थे। सन १९४८ से लेकर सन १९६२ तक वे पश्चिम बंगाल के मुख्यमंत्री रहे। पश्चिम बंगाल के विकास के लिए किये गए कार्यों के आधार पर उन्हें बंगाल का निर्माता माना जाता है। उन्होंने पश्चिम बंगाल में पांच नए शहरों दुर्गापुर, कल्याणी, बिधाननगर, अशोकनगर और हाब्रा की स्थापना की। उनका नाम उन चंद लोगों में शुमार है जिन्होंने एम.आर.सी.पी. और एफ.आर.सी.एस. साथ-साथ और दो साल और ३ महीने में पूरा किया।

❋ रामवृक्ष बेनीपुरी भारत के एक महान विचारक, चिन्तक, मनन करनेवाले क्रांतिकारी साहित्यकार, पत्रकार, संपादक थे। वे हिन्दी साहित्य के शुक्लोत्तर युग के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। इनका जन्म मुजफ्फरपुर जिले के बेनीपुर गांव के एक भूमिहर ब्राह्मण परिवार में हुआ था। उसी के आधार पर उन्होंने अपना उपनाम बेनीपुरी रखा था। उनकी प्राथमिक शिक्षा ननिहाल में हुई थी। मैट्रिक पास करने के बाद वे असहयोग आंदोलन में शामिल हो गये। उनकी भाषा-वाणी प्रभावशाली थी। उनका व्यक्तित्व आकर्षक एवं शौर्य की आभा से दीप्त था।

❋ कमलादेवी चट्टोपाध्याय एक समाज सुधारक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, नारी आन्दोलन की पथ प्रदर्शक तथा भारतीय हस्तकला के क्षेत्र में नव-जागरण लानेवाली गांधीवादी महिला थीं। ये एक सामाजिक कार्यकर्ता, कला और साहित्य की समर्थक भी थीं। जिंदगी की तन्हाई और महात्मा गांधी के आह्वान के चलते वे राष्ट्र सेवा से जुड़ गई थीं। ये एक ऐसी राजनेता थीं, जिन्हें कुर्सी की दरकार नहीं थी।

❋ तीर्थंकर महावीर स्वामी - भगवान महावीर पचीस सौ वर्ष पहले वैशाली गणतंत्र में पैदा हुए। वैशाली उस समय लिच्छवी जाति के क्षत्रियों का एक गौरवशाली जनतंत्र था, जिसने सम्राट बिम्बिसार और अजातशत्रु जैसे महान शासकों से अनेक बार टक्कर ली थी। भगवान बुद्ध ने एक बार सम्राट बिम्बिसार के अमात्य वर्षकार से कहा था- जब तक लिच्छवियों में जनतंत्र व्यवस्था सुचारू रूप से चलती रहेगी, वे पराजित नहीं होंगे। कहा जाता है कि वर्षकार ने इनमें फूट डालकर जनतंत्र को दूषित कर दिया। फलत: बिम्बिसार के हाथों वे पराजित हो गए।

लिच्छवी गणतंत्र में प्रत्यक्ष मतदान व्यवस्था (डायरेक्ट डेमोक्रेसी) थी। बहुमत का निर्णय स्वीकार किया जाता था। उसे फिर क्रियान्वित भी किया जाता था। इस वातावरण में पले महावीर के मन पर जनतांत्रिक व्यवस्था का गहरा प्रभाव था। सर्वप्रथम उन्होंने ईश्वर का ही जनतंत्रीकरण किया। उसकी एकाधिकारवादी सत्ता को समाप्त किया। उनकी अवधारणा का ईश्वर, सृष्टि का कर्ता-धर्ता और नियामक नहीं, मात्र वह आत्मा है, जो कर्मरज से मुक्त हो चुकी है।

हर आत्मा साधना द्वारा मुक्त होकर यह स्थिति प्राप्त कर सकती है। सिद्धांत का द्वार सबके लिए खुला है। जाति, वर्ण, रंग, लिंग, धन, सत्ता आदि की दृष्टि से कोई भेद ही नहीं। महावीर ने जनतंत्र का प्रथम सूत्र स्वतंत्रता को माना और कहा था किसी प्राणी का हनन, शोषण, उत्पीड़न और दासत्व न हो। उनकी दृष्टि में स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छंदता और तंत्रहीनता नहीं था क्योंकि स्वच्छंदता दूसरों के हितों का अतिक्रमण कर चलती है। वे स्वतंत्र का अर्थ आत्मसंयम बताते थे।

संयम नैतिक स्वतंत्रता है जिसके अभाव में राजनीतिक और सामाजिक-आर्थिक स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं है। आज यह एक स्वयं प्रमाणित तथ्य है। उन्होंने गणतंत्र के लिए समता और सह-अस्तित्व को भी अनिवार्य बताया। समता को धर्म माना, जो सुख-दुख के प्रति समभाव तथा प्राणी मात्र के प्रति समत्व दृष्टि का प्रतीक है। यह समता स्थानीय अधिकारों, सामाजिक तथा आर्थिक विषमता को स्वयं समाप्त कर देती है। अपरिग्रह और विसर्जन आदि सिद्धांतों में इसके बीज प्रकट रूप में मिलते हैं।

वे जाति में नहीं, कर्म में विश्वास करते थे। उन्होंने धन और सत्ता को मानव पर प्रतिष्ठा नहीं दी। उनके लिए सह-अस्तित्व का अर्थ था, हर व्यक्ति दूसरे के जीवन तथा अधिकार का आदर करे। उसका अतिक्रमण नहीं करे। वे किसी पर कोई आग्रह थोपना गलत मानते थे। अपनी अपेक्षा से हम सही हो सकते हैं तो हमारा प्रतिपक्षी उसकी अपनी अपेक्षा से सही हो सकता है। विचारों और जीवन पद्धतियों को लेकर किसी के प्रति असहिष्णुता या विरोध नहीं होना चाहिए।

❋ बाबा रामचंद्र (मध्यप्रदेश) जन्म- १८७५, मृत्यु- १९५० - बाबा रामचंद्र प्रसिद्ध किसान नेता तथा स्वतंत्रता सेनानी थे। बाबा रामचंद्र का जन्म १८७५ में ग्वालियर, मध्यप्रदेश के एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनका जीवन बड़ा घटना प्रधान रहा था। इन्हें औपचारिक शिक्षा का अवसर नहीं मिला, किंतु रामचरित मानस का इन्होंने अध्ययन किया। बाबा रामचंद्र अपने यौवनकाल में शर्तबंद कुली बनकर फिजी पहुंचे। ये अपने रामायण ज्ञान और भाषण देने की क्षमता के कारण वहां बसे हुए भारतीयों में शीघ्र ही लोकप्रिय हो गए। अंग्रेज जो भारतीयों को कुली बनाकर ले गए थे, उन पर बड़े अत्याचार करते थे।

❋ राजगुरु (महाराष्ट्र) जन्म- १९०८, मृत्यु- १९३१ - राजगुरु बचपन से ही बड़े वीर, साहसी और मस्तमौला थे। भारत माँ से प्रेम तो बचपन से ही था। इस कारण अंग्रेजों से घृणा तो स्वाभाविक ही था। ये बचपन से ही वीर शिवाजी और लोकमान्य तिलक के बहुत बड़े भक्त थे। आये दिन अत्याचार की खबरों से गुजरते राजगुरु जब तक किशोरावस्था तक पहुंचे, तब तक उनके अंदर आजादी की लड़ाई की ज्वाला फूट चुकी थी। मात्र १६ साल की उम्र में वे हिंदुस्तान रिपब्लिकन आर्मी में शामिल हो गये। वे घूम-घूम कर लोगों को जागरूक करते थे और जंग-ए-आजादी के लिए जागृत करते थे।

❋ भूलाभाई देसाई (गुजरात) जन्म-१८७७, मृत्यु- १९४६- भूलाभाई देसाई एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, अपने समय के जाने-माने अधिवक्ता और गाँधी जी के महत्वपूर्ण सहयोगी थे। उन्होंने आजाद हिंद फौज के सैनिकों शहनवाज खान, गुरबक्श सिंह ढिल्लन तथाप्रेम कुमार सहगल पर लगे राजद्रोह के मुकदमे में उनका पक्षसमर्थन बहुत कुशलता से किया, जिससे उनकी कीर्ति सम्पूर्ण देश में फैल गई। उन्हें देसाई-लिआकत संधि के लिए भी जाना जाता है, जो मुस्लिम लीग के नेता लियाकत अली खान और भूलाभाई देसाई के मध्य गुप्त रूप से हुई थी।

❋ मीरा बेन (इंग्लैंड) जन्म- १८९२, मृत्यु- १९८२ - मीरा बेन मूल नाम मैडलिन स्लेरड एक ब्रिटिश सैन्य अधिकारी

की बेटी थीं। इन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में महात्मा गांधी के सिद्धांतों से प्रभावित होकर खादी का प्रचार किया था। नि:स्वार्थ उनके आदर्शों पर चलकर खादी अपनाना, पहनना और उसका प्रचार-प्रसार करना किसी विदेशी द्वारा हो तो निश्चित ही सराहनीय है। गांधीजी को मीरा बेन एक बहन, एक बेटी, एक मित्र से भी बढ़कर मिलीं, उनका हर कदम पर साथ दिया और सहारा बनीं। मीरा बेन ने मानव विकास, गांधीजी के सिद्धांतों की उन्नति और स्वतंत्रता संग्राम के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया था।

✻ रामकृष्ण खत्री (महाराष्ट्र) जन्म- १९०२, मृत्यु- १९९६- रामकृष्ण खत्री प्रमुख क्रांतिकारियों में से एक थे। उन्हें काकोरी काण्ड के अंतर्गत दस वर्ष के कारावास की सजा मिली थी। रामकृष्ण खत्री ने हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघ का विस्तार मध्य भारत और महाराष्ट्र में किया था। खत्री हिंदी, मराठी, गुरुमुखी तथा अंग्रेजी के अच्छे जानकार थे। भारत की आजादी के बाद रामकृष्ण खत्री ने भारत सरकार से मिलकर स्वतन्त्रता संग्राम के सेनानियों की सहायता के लिए कई योजनायें चलवायी थीं। क्रांतिकारियों के सम्पर्क में आकर उन्होंने स्वेच्छा से हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के संगठन का दायित्व स्वीकार किया था।

✻ मुकुन्द रामाराव जयकर (महाराष्ट्र)- जन्म- १८७३, मृत्यु- १९५९ - मुकुन्द रामाराव जयकर प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्री, स्वतंत्रता सेनानी, समाजसेवक, न्यायाधीश, विधि विशारद तथा संविधानशास्त्रज्ञ थे। उनका व्यक्तित्व बहुत ही व्यापक था। मुकुन्द रामाराव जयकर के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तथा शिक्षा संबंधी कार्यों का मूल्यांकन किए बिना भारत का आधुनिक इतिहास अधूरा रहेगा। इस दृष्टि से उनके भाषणों, पत्रों तथा लेखों का अध्ययन आवश्यक है। सन १९१७ के बाद से भारत का ऐसा कोई आंदोलन नहीं था, जिससे मुकुन्द रामाराव जयकर का सम्बन्ध किसी न किसी रूप में न रहा हो। १९०५ में उन्होंने हाईकोर्ट में वकालत शुरू की थी।

✻ राम प्रसाद बिस्मिल (उत्तर प्रदेश) (जन्म- १८९७, मृत्यु- १९२७) - जब-जब भारत के स्वाधीनता इतिहास में महान क्रांतिकारियों की बात होगी तब-तब भारत मां के इस वीर सपूत का जिक्र होगा। राम प्रसाद बिस्मिल एक महान क्रांतिकारी ही नहीं, बल्कि उच्च कोटि के कवि, शायर, अनुवादक, बहुभाषाविद् व साहित्यकार भी थे। इन्होंने अपनी बहादुरी और सूझ-बूझ से अंग्रेजी हुकूमत की नींद उड़ा दी और भारत की आजादी के लिए मात्र ३० साल की उम्र में अपने प्राणों की आहुति दे दी। बिस्मिल उपनाम के अतिरिक्त वे राम और अज्ञात के नाम से भी लेख व कवितायें लिखते थे।

✻ सरदार बलदेव सिंह (पंजाब) जन्म- १९०२, मृत्यु- १९६१ - सरदार बलदेव सिंह का जन्म ११ जुलाई, १९०२ को जाट-सिख परिवार में हुआ था। जमशेदपूर और पूर्वी बंगाल में बलदेव सिंह भारत की राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेते रहे और लंदन सम्मेलन सहित अंग्रेजों के साथ सभी महत्वपूर्ण वार्ता में उन्होंने सिखों का प्रतिनिधित्व किया। वह जून १९४२ से सितंबर १९४६ तक आजादी से पहले संयुक्त पंजाब सरकार में विकास मंत्री थे। रक्षामंत्री के रूप में उन्होंने देश के विभाजन के समय महत्वपूर्ण भूमिका निभाई साथ ही अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं भारत और पाक के बीच सशस्त्र बलों के विभाजन व कश्मीरी घुसपैठ को रोकने में भी भूमिका निभाई थी।

✻ गोकुलभाई भट्ट (राजस्थान) जन्म- १८९८, मृत्यु- १९८६ - गोकुलभाई भट्ट प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों में से एक थे। इन्हें एक सच्चे समाज सेवक के रूप में भी जाना जाता था। इसके साथ ही वे एक कुशल वक्ता, कवि, पत्रकार,

बहुभाषाविद और लेखक भी थे। इनका पूरा नाम गोकुलभाई दौलतराम भट्ट था। वर्ष १९३९ में गोकुलभाई की प्रेरणा से ही लोग झण्डेवाली टोपियां पहनने लगे थे। गोकुलभाई भट्ट १९४८ में जयपुर कांग्रेस की स्वागत समिति के अध्यक्ष रहे थे। राजस्थान की देशी रियासतों में राष्ट्रीय चेतना फैलानेवाले गोकुलभाई भट्ट का जन्म १९ फरवरी, १८९८ ई. में राजस्थान के सिरोही जिले में हुआ था।

❋ भाई संतोख, सिंह (पंजाब) जन्म- १७८८ मृत्यु १८४३ - भाई संतोष सिंह का जन्म अमृतसर में हुआ था। आप रूढ़िवाद के कट्टर विरोधी थे। अपनी पारिवारिक परंपराओं की अवमानना करके आपने रोहिल्ला परिवार में विवाह किया। भाई संतोख सिंह ने ज्ञानी संतसिंह से काव्याध्ययन किया। तदनंतर संस्कृत की शिक्षा काशी में प्राप्त की। सन १८२३ में आप पटियाला नरेश महाराज कर्मसिंह के दरबारी कवि के रूप में पधारे। दो वर्ष बाद कैथल के रईस उदयसिंह आपको अपने यहां लिवा ले आए। पटियाला की भांति कैलि में भी आपका बड़ा सम्मान हुआ और वहां पर अनेक विद्वानों का सहयोग भी प्राप्त हुआ।

❋ लाफिंग बुद्धा- विश्व हास्य सप्ताह के अवसर पर लाफिंग बुद्धा की चर्चा न हो तो विश्व हास्य दिवस के आयोजन में एक रीतापन-सा महसूस होता है। असल में, घर-घर में सुख-समृद्धि और आनंद लाने वाले देवदूत के प्रति लोगों के जेहन में यह सवाल उठना स्वाभाविक है कि आखिर लाफिंग बुद्ध थे कौन? जापान के एक झेन भिक्षु थे- होतेई। झेन बौद्ध धर्म की महायान शाखा का ही एक संप्रदाय है, झेन का शाब्दिक अर्थ होता है- ध्यान। जापान में भगवान बुद्ध के शिष्य थे होतेई। वह बड़े अलमस्त स्वभाव के भिक्षुक थे। वह बेहद निर्लिप्त और निरपेक्ष भाव से जीवन जीने में विश्वास रखते थे। वह जिस कार्य को करते, उसमें पूरी तरह डूब जाते थे। जापान में ऐसी मान्यता है कि एक बार होतेई ध्यान करते-करते इतने रोमांचित हो गए कि ध्यानावस्था में जोर-जोर से हंसने लगे। इस अद्भुत घटना के उपरांत ही लोग उन्हें लाफिंग बुद्धा के नाम से संबोधित करने लगे। घूमना-फिरना, देशाटन करना, लोगों को हंसाना व खुशी प्रदान करना लाफिंग बुद्धा का ध्येय बन गया।

चीन में लाफिंग बुद्धा को पुताई के नाम से भी जाना जाता है। चीनी लोग उन्हें एक ऐसे भिक्षुक के नजरिए से देखते हैं, जो एक हाथ में धन-धान्य का थैला लिए, चेहरे पर खिलखिलाहट बिखेरे अपना बड़ा पेट और थुलथुल बदन दिखाकर सभी को हंसाते हुए सकारात्मक ऊर्जा देते हैं। वह समृद्धि व खुशहाली का संदेशवाहक और घरों के वास्तुदोष निवारण का प्रतीक भी माने जाते हैं।

❋ मौलवी बरकतउल्ला - प्रसिद्ध क्रांतिकारी मौलवी बरकतउल्ला भोपाल के निवासी थे। उनका जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। भारत में शिक्षा प्राप्त करने के बाद वे उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड जाकर उनके जीवन की दिशा बदल गयी। वे इंग्लैंड में काम कर रहे भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के सम्पर्क में आ गये और इस दृढ़ निश्चय के साथ स्वदेश वापस आ गये कि भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्ति दिलानी है। यहां आकर उनका राजा महेंद्र प्रताप आदि देशभक्तों से सम्पर्क हुआ। जब देश में उनकी गतिविधियों से पुलिस सतर्क रहने लगी तो बरकतउल्ला जापान चले गये।

❋ सूर्य सेन- सूर्य सेन स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करनेवाले प्रसिद्ध क्रांतिकारियों और अमर शहीदों में गिने जाते हैं। भारत भूमि पर अनेकों शहीदों ने क्रांति की वेदी पर अपने प्राणों की आहुति देकर आजादी की राहों को रोशन किया है। इन्हीं में

से एक सूर्य सेन नेशनल हाईस्कूल में उच्च स्नातक शिक्षक के रूप में कार्यरत थे, जिस कारण लोग उन्हेंप्यार से मास्टर दा कहते थे। चटगाँव आर्मरी रेड के नायक मास्टर सूर्य सेन ने अंग्रेज सरकार को सीधे चुनौती दी थी। सरकार उनकी वीरता और साहस से इस प्रकार हिल गयी थी कि जब उन्हें पकड़ा गया, तो उन्हें हृदय विदारक व अमानवीय यातनाएं दी गईं।

महापुरुष- एन.जी.रंगा- एन.जी. रंगा स्वतंत्रता सेनानी, सांसद तथा प्रसिद्ध किसान नेता थे। ये आरम्भ से ही किसानों की समस्याओं से जुड़े रहे। इन्होंने किसानों के शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई तथा उन्हें संगठित किया। एन.जी. रंगा उन चंद नेताओं में से एक थे, जिन्हें कृषि की समस्याओं का गहन ज्ञान था। साथ ही उन्होंने किसानों के भूमि अधिकार के लिए दो दशकों तक कार्य किया। उन्होंने कांग्रेस में कई महत्वपूर्ण पद प्राप्त किए, लेकिन सहकारी कृषि पर जवाहर लाल नेहरू के साथ विवाद होने के कारण उन्होंने त्यागपत्र दे दिया था। एन.जी.रंगा ने कृषिकर लोक पार्टी के नाम से किसानों की एक पार्टी की स्थापना की थी।

❋ भाई परमानन्द- भाई परमानन्द स्वतंत्रता संग्राम के महान क्रांतिकारी थे। वे जहां आर्यसमाज और वैदिक धर्म के अनन्य प्रचारक थे, वहीं इतिहासकार, साहित्यमनीषी और शिक्षाविद के रूप में भी उन्होंने ख्याति अर्जित की थी। सरदार भगत सिंह, सुखदेव, पं. राम प्रसाद बिस्मिल, करतार सिंह सराबा जैसे असंख्य राष्ट्रभक्त युवक उनसे प्रेरणा प्राप्त कर बलि-पंथ के राही बने थे। देशभक्ति, राजनीतिक दृढ़ता तथा स्वतंत्र विचारक के रूप में भाई जी का नाम सदैव स्मरणीय रहेगा। आपने कठिन तथा संकटपूर्ण स्थितियों का डटकर सामना किया और कभी विचलित नहीं हुए।

❋ श्यामलाल गुप्त पार्षद- इनका जन्म कानपुर जिले के नरवल गाँव में एक वैश्य परिवार में हुआ था। मिडिल पास करने के बाद वे कानपुर नगरपालिका के एक स्कूल में पढ़ाने लगे। लेकिन जल्दी ही वे स्वतंत्रता-संग्राम में भाग लेने लगे और आजादी की घोषणा करते हुए इन्होंने सचिव नामक एक मासिक पत्र का सम्पादन-प्रकाशन करना आरम्भ कर दिया। बाद में पार्षद फतेहपुर जिला कांग्रेस के अध्यक्ष बने। पार्षद कुल छह बार जेल गए। एक बार जब भूमिगत हुए तो अंग्रेजों की सरकार ने यह घोषणा की थी कि जो पार्षद को पकड़वा देगा, उसे एक हजार रुपए का पुरस्कार दिया जाएगा।

❋ हनुमान प्रसाद पोद्दार- हनुमान प्रसाद पोद्दार एक लेखक एवं स्वतंत्रता सेनानी थे। आप धार्मिक पत्रिका कल्याण के आदि-सम्पादक के रूप में एवं विश्वभर में हिंदू धर्म के प्रचार के अपने अथक परिश्रम के लिए विख्यात थे। भारत सरकार ने आपकी स्मृति में सन १९९२ में डाक टिकट जारी किया था। हनुमान प्रसाद पोद्दार का जन्म राजस्थान के रतनगढ़ में हुआ था। आपने अपना जीवन लोगों को कम मूल्य में रामायण, महाभारत, पुराणों एवं उपनिषदों जैसे महान ग्रंथों के हिंदी अनुवादों को उपलब्ध कराने में समर्पित्त कर दिया था। आपने गोरखपुर की गीताप्रेस संस्था में सम्पादक के रूप में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

❋ एम.ए.अय्यंगार- एम.ए.अय्यंगार भारत के दूसरे लोकसभा अध्यक्ष थे। लोकसभा के प्रथम अध्यक्ष जी.वी. मावलंकर के आकस्मिक निधन से पैदा हुई रिक्तता को भरने के लिए अध्यक्ष पद का दायित्व ग्रहण करके एम.ए.अय्यंगार ने स्वतंत्रता की उपलब्धियों तथा नव गणतंत्र में स्वस्थ संसदीय संस्कृति को विकसित करने के अधूरे कार्य को आगे बढ़ाने के लिए अपने आपको सर्वोपयुक्त सिद्ध किया। अय्यंगार ने छह दशक के अपने जीवन में जिस भी कार्यक्षेत्र को चुना उसमें अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप छोड़ी। ये बिहार के राज्यपाल भी रहे। अय्यंगार छोटी उम्र में ही स्वतंत्रता

आंदोलन में कूद पड़े थे।

❋ कृष्णदत्त पालीवाल- कृष्णदत्त पालीवाल एक पत्रकार और स्वतंत्रता सेनानी थे। संविधान सभा और प्रदेश की विधानसभा की सदस्यता के साथ-साथ उन्होंने उत्तर प्रदेश सरकार में मंत्री पद भी संभाला था। पालीवाल का जन्म १८९५ ई. में आगरा जिले के एक गांव में हुआ था। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा पास की। वे कानून की पढ़ाई कर रहे थे कि उसी समय असहयोग आंदोलन आरंभ हो गया और पालीवाल उसमें सम्मिलित हो गए। अर्थशास्त्र के अध्ययन के साथ-साथ उन्होंने भारतीय धार्मिक ग्रंथों का भी गहन अध्ययन किया था। वे लोकमान्य तिलक को अपना गुरु मानते थे।

❋ मशहूर चित्रकार पाबलो पिकासो ने १३५०० पेंटिंग्स बनाई थीं

स्पेन के पाबलो पिकासो को सभी प्रोफैशनल पेंटर्स में से सर्वाधिक पेंटिंग्स बनानेवाले माना जाता है। ७५ साल के अपने करियर में पिकासो ने १३५०० पेंटिंग्स तथा डिजाइन, एक लाख प्रिंट तथा एनग्रेविंग, ३४००० बुक इलुस्ट्रेशन तथा ३०० स्कल्प्चर तथा सेरामिक तैयार किए। इन सभी का कुल मूल्य ७८८ मिलियन डॉलर आंका जाता है।

❋ एन.आर.नारायण मूर्ति-संपत्ति- ७००० करोड़ रु., जन्म- २० अगस्त, १९४६, पत्नी- सुधा मूर्ति, संतान- २

आईटी क्षेत्र की मशहूर कंपनी इंफोसिस के सह संस्थापक नागावारा रामाराव नारायण मूर्ति ने १९८१ में अपनी पत्नी के बचत के १०,००० रुपयों से इंफोसिस कंपनी की स्थापना की थी। वे १९८१ से २००२ तक इस कंपनी के सीईओ तथा २००२ से २०११ तक चेयरमैन रहे। श्री मूर्ति ने १९६९ में कानपुर की आईआईटी से इंजीनियरिंग में मास्टर डिग्री हासिल की थी। १९७६ में साफ्ट्रोनिक्स नाम से एक कंपनी शुरू की, लेकिन वह कंपनी विफल हो गई। उन्हें देश-विदेश के २५ विश्वविद्यालयों द्वारा मानद उपाधि से सम्मानित किया जा चुका है।

❋ जीते-जागते मसीहा - पं. ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने न केवल तन-मन से समाज की सेवा की, अपनी विद्वता के आधार पर सती प्रथा उन्मूलन, विधवा-विवाह कानून बनवाए बल्कि धन द्वारा भी बहुत से लोगों की मदद की। बंगाल के महाकवि श्री मधुसूदन दत्त को लगभग ५००० रुपए भेजकर उन्होंने कई बार सहायता की। एक गरीब ब्राह्मण का मकान नीलाम होने से बचाने के लिए स्वयं जाकर अदालत में पैसे जमा करवा दिए और अपना नाम भी प्रकट नहीं होने दिया। अनगिनत निर्धन विद्यार्थी उनसे सहायता प्राप्त कर उच्च शिक्षा प्राप्त कर सके अनेक अनाथ विधवाओं को उन्होंने स्वावलंबी बनाकर उनकी सहायता की। किसी वृद्ध को सिर पर बोझ लेकर जाते देख वह स्वयं भार सिर पर रखकर गंतव्य तक उसे पहुंचा देते। उनके औषधालय से कई गरीब रोगी रोग मुक्त हुए। वह जीते-जागते मसीहा थे।

❋ महान कवि बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा लिखित गीत वंदे मातरम् बना राष्ट्रगीत

बंकिमचंद्र चटर्जी को बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय के नाम से भी जाता है। वे भारत के महान कवि और प्रसिद्ध उपन्यासकार थे। उन्होंने वंदे मातरम् लिखा था। (७ नवंबर, १८७५ में), जो भारतीय राष्ट्रीय संग्राम में क्रांतिकारियों का प्रेरणास्रोत बना। आगे चलकर गीत को अधिकारिक तौर पर भारत के राष्ट्रगीत के लिए लिखा गया।

बंकिमचंद्र का जन्म कांतलपाड़ा ग्राम में २७ जून, १८३८ को हुआ, जो प. बंगाल के चौबीस परगना जिले में है। पिता यादवचंद्र मिनापुर के डिप्टी कलेक्टर थे। बांग्ला भाषा में बंकिमचंद्र का अर्थ होता है दूज का चांद। बंकिमचंद्र का यश

भी दूज के चांद-सा दिन प्रति दिन बढ़ता ही गया। बचपन से ही वे बड़े मेधावी छात्र थे। उनकी होशियारी देखकर सबको बड़ा आश्चर्य होता था। कलकत्ता के प्रेसीडेंसी कॉलेज से बीए पास होते ही वहां के लेफ्टिनंट गवर्नर ने इन्हें डिप्टी कलेक्टर नियुक्त कर दिया। पिता यादवचंद्र के कहने पर उन्होंने इस पद को स्वीकार किया। तब वे केवल २० वर्ष के थे। मगर वे नौकरी के दौरान कभी भी अंगरेजों के आगे झुके नहीं। घटना उस समय की है जब वे डिप्टी मजिस्ट्रेट थे तब मनरो नामक अंगरेज कलकत्ता का कमिश्नर था।

एक बार अचानक ईडन गार्डन में बंकिमचंद्र की मनरो से भेंट हो गयी। बंकिम सलाम किये बगैर आगे बढ़ गये। इस रूखे व्यवहार से मनरो इतना बौखला गया कि उसने इनकी कलकत्ता से बदली कर दी। नौकरी के दौरान वे कभी एक जगह टिक न सके। उनका स्वाभिमान अंग्रेजों को खलता था। एक और भी बात है, जिसने इनके जीवन पर काफी प्रभाव डाला। बचपन से ही ये रामायण-महाभारत के संपर्क में आये। फिर जीवन के कड़वे-मीठे प्रसंगों ने भी इन पर अमिट छाप डाली। सारी घटनाएं, प्रसंग उनके मन में अंकित हो गये। जिस समय बंकिमचंद्र ने लिखना शुरू किया, उन्हीं दिनों जागृति की लहर बंगाल में आयी हुई थी। अपनी हालत में सुधार कैसे हो, इसका उपाय ढूंढ़ने में बड़े-बड़े महापुरुष व्यस्त थे। इनमे से ही थे राजा राममोहन राय तथा ईश्वरचंद्र विद्यासागर। बंकिमचन्द्र ने पहले कुछ कविताएँ फिर अंगरेजी में एक उपन्यास लिखा। फिर मातृभाषा, बंगाली में लिखना आरंभ किया। नौकरी के कारण लेखन में बड़ी बाधा आती थी। अंगरेज अफसरों ने वहां भी टांग अड़ाने की कोशिश की। उनके आत्मसम्मान को ठेस पहुंचाने की कोशिश की।

अत: उन्होंने निवृत्त होने की अनुमति चाही। उस समय वे ५३ वर्ष के थे, पर चूंकि अंग्रेज उनसे असंतुष्ट थे, वे उन्हें निवृत्त भी नहीं होने दे रहे थे। जब एक नया लेफ्टी गवर्नर चार्ल्स इलियट नियुक्त हुआ, तो उन्होंने अनुमति दे दी। बंकिमचंद्र सेवानिवृत्त हुए तो उन्हें चार सौ रुपये प्रति माह पेंशन मिलने लगी। सेवानिवृत्त होने पर उनकी इच्छा अनेक पुस्तकें लिखने की थी, परंतु वे लेखन कार्य को अधिक समय नहीं दे सके। उनका स्वास्थ्य खराब होता गया और आयु के ५६ वें वर्ष (१८९४) में उनका देहांत हो गया। उन्होंने कुल १५ उपन्यास लिखे। इनमें से दुर्गेशनंदिनी, कपालकुंडला, मृणालिनी, चंद्रशेखर तथा राजसिंह बहुत ही लोकप्रिय हैं। आनंदमठ, देवी चौधरानी तथा सीताराम पुस्तकों में उस समय की परिस्थिति का चित्रण है।

❋ वेलु नाचियार- अंग्रेजी औपनिवेशिक शक्ति के खिलाफ लड़नेवाली पहली वीरांगना थीं। १७८० में मैसूर के सुल्तान, हैदर अली की सहायता से बनाई गयी सेना के साथ उन्होंने अंग्रेजों से लोहा लिया। नचियार ने अंग्रेजी ईस्ट इंडिया कंपनी के शिकंजे से अपने राज्य को बहुत ही पराक्रम से निकला था। रानी वेलु नचियार वह पहली महिला क्रांतिकारी रानी थीं जिन्होने अंग्रेजों के खिलाफ स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी थी। उसके बाद उन्होंने अंग्रेजी शक्तियों से लड़ने के लिए व अपनी पुत्री की याद में एक सशक्त महिला सेना तैयार की थी जिसका निधन अंग्रेजों से लड़ाई के दौरान हो गया था।

❋ फ्रांस के सम्राट नेपोलियन बोनापार्ट की जानकारी

फ्रांस का सम्राट नेपोलियन बोनापार्ट इतिहास के महानतम सेनानायकों में से एक था। नेपोलियन का जन्म १७६९ में कोर्सिका में हुआ था। बाद में उसने फ्रांस में सैनिक शिक्षा ग्रहण की और सेना में शामिल हो गया। फ्रांस की क्रांति के बाद वहां जो अस्थिरता का माहौल उत्पन्न हुआ, उसका नेपोलियन ने भरपूर लाभ उठाया और प्रभावशाली व्यक्ति बन गया।

फ्रांस में नेपोलियन की बढ़ती लोकप्रियता और शक्ति से डरकर डायरेक्टरी (तब की फ्रांसीसी सरकार) ने उसे भारत के साथ ब्रिटिश व्यापार को तोड़ने के लिए मिस्र भेज दिया। नेपोलियन को यहां नेल्सन के हाथों नील की लड़ाई में पराजित होना पड़ा।

१७९९ में वह पेरिस वापस आया और उसे शासन चलाने के लिए तीन लोगों की कौंसल में शामिल किया गया। उसने दस साल के लिए स्वयं को प्रथम कौंसल घोषित किया और बाद में सम्राट की उपाधि धारण कर ली। नेपोलियन अनुशासनप्रिय था और उसने अनुशासन के बल पर फ्रांस में व्याप्त अराजकता और अस्थिरता को दूर किया। उसने फ्रांस की अर्थव्यवस्था को भी बहुत सुदृढ़ किया।

१८०५ तक उसने उन दिनों की तीन महाशक्तियों-ब्रिटेन, ऑस्ट्रिया और रूस से लड़ाइयां लड़ीं। १८०५ में ऑस्ट्रिया और रूस को हराने में उसे सफलता मिली। १८०६ में उसने प्रशा को हराया। रूस ने नेपोलियन के महाद्वीपीय व्यवस्था की अवज्ञा की जिसके फलस्वरूप नेपोलियन ने १८१२ में रूस पर चढ़ाई कर दी। रूसी सेना को पराजित कर मास्को तक पहुंच गया। लेकिन मास्को तक पहुंचते-पहुंचते उसके सैनिक थक गये, उनका अनाज खत्म हो गया और मास्को की ठंड को वे बर्दाश्त नहीं कर पाये। परिणामस्वरूप नेपोलियन को पांव खींचने पड़े। यूरोप के देश नेपोलियन की इस हार से उत्साहित हुए और वे धीरे-धीरे फ्रांस के विरुद्ध सैनिक तैयारियों में जुट गये। १८१३ में यूरोपीय देशों की संयुक्त सेना लिपजिग की लड़ाई में नेपोलियन को हराया और नेपोलियन को गद्दी छोड़ने को मजबूर किया। अगले वर्ष नेपोलियन एल्बा में कैद से भागकर वापस आया और तुरंत उसे लोगों का समर्थन मिल गयां पर बीमार नेपोलियन आखिरकार १८१५ में वाटरलू की लड़ाई में पराजित हो गया। १८२१ में सेंट हेलेना में कैद के दौरान उसकी मृत्यु हो गई।

❋ रूसी उपन्यासकार लियो टॉल्सटॉय - काउंट लेव निकोलेयोविच टॉल्सटॉय यह था रूसी उपन्यासकार लियो टॉलस्टॉय का पूरा नाम। रूसी साम्राज्य के यासाना पोलयाना के एक अभिजात्य परिवार में उनका जन्म हुआ था। वे बहुत छोटे थे, तभी उनके माता-पिता की मौत हो गई थी। अनाथ टॉलस्टॉय की परवरिश उनके रिश्तेदारों के यहां हुई थी।

वे पढ़ाई में बहुत अच्छे नहीं थे। इतिहास, भूगोल की बात तो दूर, साहित्य के एग्जाम में भी वे फेल हो जाते थे। स्कूल के दिनों में टीचर उन्हें बेहद अयोग्य स्टूडेंट मानते थे। लेकिन टॉल्सटॉय ने कभी हार नहीं मानी, हर परिस्थिति से खुद लड़ना सीखा।

विद्वता औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने की मोहताज नहीं होती। यह हमारे विचारों और प्रतिभा की देन होती है।

टॉल्सटॉय ने इस बात को बखूबी साबित किया। इसकी पहली बानगी दिखी उनकी पहली रचना चाइल्डहुड में। इसके बाद ब्वॉयहुड, यूथ नामक रचनाएं प्रकाशित हुई। ये सभी उनकी आत्मकथा और शुरुआती रचनाएं ही थीं। लेकिन इन सभी रचनाओं ने खूब प्रशंसा बटोरी। वैसे, टॉल्सटॉय के उपन्यास उनके डायरी लेखन का ही हिस्सा हुआ करते थे। यानी डायरी में जिन विचारों और गतिविधियों का जिक्र करते, वही उने उपन्यास का आधार होते थे।

❋ श्रीधर महादेव जोशी - श्रीधर महादेव जोशी महाराष्ट्र के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे। वे महाराष्ट्र विधानसभा और लोकसभा के सदस्य रहे। वे १९४३ में गिरफ्तार हुए तो १९४६ तक नजर बंद रहे। जोशी का जन्म १२ नवंबर, १९०४ को पुणे जिले के जुन्नर नामक स्थान में हुआ था। उनकी शिक्षा फर्ग्यूसन कॉलेज, पुणे में हुई थी। विद्यार्थी

जीवन से ही वे राजनीतिक कार्यों में रुचि लेने लगे थे। उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ १९२८ में पुणे में युवक सम्मेलन आयोजित किया था जिसकी अध्यक्षता जवाहरलाल नेहरू ने की थी। इन्हीं गतिविधियों के कारण विद्यालय ने उन्हें एम.ए. में प्रवेश नहीं दिया।

❋ खान अब्दुल गफ्फार खान- जिन्हें सीमान्त गांधी, बच्चा खाँ तथा बादशाह खान के नाम से भी पुकारा जाता है, ब्रिटिश सरकार से आजादी के लिए संघर्षरत स्वतंत्र पख्तूनिस्तान आंदोलन के प्रणेता थे। खान एक राजनैतिक और आध्यात्मिक नेता थे जिन्हें गांधीजी की तरह उनके अहिंसात्मक आन्दोलन के लिए जाना जाता है। वो महात्मा गांधी के परम मित्र थे और ब्रिटिश इंडिया में उन्हें फ्रंटियर गांधी के नाम से भी संबोधित किया जाता था। उन्होंने खुदाई खिदमतगार नामक सामाजिक संगठन प्रारंभ किया जिसकी सफलता ने अंग्रेजी हुकूमत को बेचैन कर दिया।

❋ कमला नेहरू- भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू की पत्नी और पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की मां थीं। स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान उन्होंने नेहरू का साथ बखूबी निभाया और कई मौकों पर आन्दोलन में भाग भी लिया। कमला नेहरू को सौम्यता और विनम्रता की प्रतिमूर्ति के रूप में याद किया जाता है। कमला दिल्ली के एक परंपरागत परिवार में पैदा और बड़ी हुई थीं पर उन्होंने नेहरू परिवार में अपनी जिम्मेदारियों को बखूबी निभाया। सन १९२१ के असहयोग आंदोलन के साथ उन्होने स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया। इस आन्दोलन के दौरान उन्होंने इलाहाबाद में महिलाओं का एक समूह गठित किया और विदेशी वस्त्र तथा शराब की बिक्री करनेवाली दुकानों का घेराव किया।

❋ **लियोनार्दो दा विंची-** लियोनार्दो दा विंची की गणना विश्व के सर्वश्रेष्ठ चित्रकारों में होती है। उनका चित्र द लास्ट सपर शायद विश्व का सबसे प्रसिद्ध चित्र है। लेकिन अगर वे हाथ में तूलिका न भी उठाते तो भी उनका नाम प्रसिद्ध हुआ होता क्योंकि वे एक महान आविष्कर्ता भी थे। उन्होंने सैनिक टैंक तथा बाल बेयरिंग का अविष्कार किया। उन्होंने हवाई जहाज तथा पनडुब्बी के नमूनों पर भी प्रयोग किए। उन्होंने दर्जनों शस्त्रों और मशीनों के नक्शे तैयार किए। वे एक महान वैज्ञानिक तथा इंजीनियर होने के साथ एक कवि, संगीतज्ञ और मूर्तिकार भी थे। लियोनार्दो का जन्म सन १४५२ में इटली के विंची नामक गांव में हुआ। उन्होंने २५ वर्ष की अवस्था तक वेरोचियो नामक एक प्रसिद्ध चित्रकार से चित्रकला सीखी।

इसके बाद वे स्वयं चित्र बनाने लगे। पहले कुछ दिनों वे फ्लोरेंस में रहे, फिर मिलान और वेनिस में। अंत में वे पेरिस चले गये दरबारी चित्रकार के रूप में बिताए। उनकी मृत्यु सन १५१९ में हुई। उनका प्रसिद्ध चित्र द लास्ट सपर मिलान के एक गिरजाघर की दीवार पर बना हुआ है। पूरी होने के पहले ही यह चित्र अत्यंत प्रसिद्ध हो गया था। लियोनार्दो के चित्रों का सौंदर्य मधुर संगीत के समान अवर्णनातीत है। उन्होंने छाया और प्रकार का प्रयोग एक नए ढंग से किया, जिसने उनकी आकृतियों को जीवंत बना दिया। लियोनार्दो का एक अन्य प्रसिद्ध चित्र है। मोनालिसा यह एक महिला का है, जिसके होठों पर मंद मुस्कान है।

लियोनार्दो द विंची की पेंटिंग में मिली थी साइकिल की पहली डिजाइन। यह पेंटिंग उन्होंने बनाई थी सन १४९२ में यानी तकरीबन ५२० साल पहले। लियोनार्दो की पेंटिंग के तकरीबन डेढ़ सौ साल बाद फ्रांस में चार पहियोंवाली मशीन का अविष्कार हुआ। यह कुछ-कुछ साइकिल की तरह दिखती थी।

❋ इतिहास पर नजर- १६ नवंबर- अपने उपन्यासों क्राइम एंड पनिशमेंट, द इडियट, द् ब्रदर्स करमाजोव के साथ

ही अनेक कहानियों और लेखों के लिए विश्व प्रसिद्ध रूसी लेखक फ्योदोर दोस्तोवस्की को एक भूमिगत संगठन का सदस्य होने के आरोप में १८४९ में आज ही के दिन मौत की सजा सुनाई गई थी। यूरोप में हुई क्रांति से घबराए जार निकोलस (प्रथम) हर उस संगठन को शक की निगाह से देखते थे जिससे सीधे तौर पर या उसकी विचारधारा के कारण शाही परिवार को खतरा पैदा हो सकता था।

बाद में दोस्तोवस्की की सजा को कैद में बदल दिया गया और उन्हें साइबेरिया भेज दिया गया। बाद में उन्होंने अपने कष्ट और पीड़ा को बयान करते हुए अपने भाई को लिखा ये ताबूत में बंद होने जैसा था। उन्होंने लिखा कि जगह की तंगी की वजह से गर्मियों में पास-पास रहने से बेहद तकलीफ होती थी, जाड़ों की सर्दियां बर्दाश्त की हदों से बाहर होती थी, फर्श पर इस कदर गंदगी थी कि लोग फिसल कर गिर जाते थे। उनके अनुसार हालात ऐसे थे जैसे किसी मछली को बंदूक की नली में ठूंस दिया जाए। कमरे में इतनी जगह भी नहीं होती थी कि लोग घूम पाएं। सुबह से लेकर शाम तक लोग बिल्कुल सुअरों की तरह वक्त गुजारते थे। चारों ओर मक्खियां और कीड़े नजर आते थे। अपने अनुभवों पर बाद में दोस्तोवस्की ने द हाउस ऑफ द डेड नाम की एक पुस्तक भी लिखी।

❋ जाकिर हुसैन - जो तबला सुनने का शौकीन नहीं भी होगा, वह भी जाकिर हुसैन के हुनर से वाकिफ होगा। जाकिर हुसैन का ५० साल का लंबा करियर हो चुका है, जोकि बदस्तूर जारी है। उन्होंने बहुत छोटी उम्र से तबला बजाना शुरू कर दिया था। १२ साल की उम्र तक तो वो प्रोफेशनल तबला बजाने लगे थे। जाकिर साहब आज भी साल के औसत १५० कन्सर्ट करते हैं। इनके घर में इतने अवार्ड हो गए हैं कि अब रखने की जगह कम पड़ रही है। इन्हें पद्मश्री से लेकर ग्रैमी अवार्ड तक से सम्मानित किया जा चुका है।

❋ अजीम हाशिम प्रेमजी - संपत्ति- ६०००० करोड़ रु. जन्मतिथि - १४ जुलाई १९४५ (कराची), पत्नी- यासमीन, संतान- रिशद और तारिक। विप्रो के चेयरमैन अजीम हाशिम प्रेमजी को भारत का बिल गेट्स कहा जाता है। प्रेमजी ने अमेरिका स्टैन फोर्ड यूनिवर्सिटी की पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी थी, फिर भी उन्होंने विप्रो को नए मुकाम पर पहुंचाया, उन्होंने २५ लाख डॉलर की कंपनी को ७ अरब डॉलर की कंपनी में बदल दिया। अजीम प्रेमजी ने सिर्फ २१ वर्ष की उम्र में ही पढ़ाई छोड़कर व्यापार जगत में कदम रखा था और अपनी मेहनत और लगन से साबुन-तेल बेचनेवाली कंपनी विप्रो को दुनिया की सबसे बड़ी सॉफ्टवेयर कंपनियों की सूची में शामिल करवा दिया।

❋ ए नेशन इन द मेकिंग - सुरेंद्रनाथ बनर्जी

सुरेंद्रनाथ बनर्जी देश के उन राष्ट्रीय नेताओं में से एक थे, जिन्होंने अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना में महत्वपूर्ण योगदान दिया। लोकमान्य तिलक के कांग्रेस में उदय होने से पूर्व उग्रवादी विचारधारा का व्यक्ति समझा जाता था। परंतु तिलक उनसे भी आगे निकल गए।

प्रारंभ में जब कांग्रेस के अधिवेशन होते थे तो उसका कार्य केवल अपनी समस्याएं ब्रिटिश सरकार तक पहुंचाना भर था। परंतु सुरेंद्रनाथ बनर्जी उससे कुछ अधिक चाहते थे हालांकि ब्रिटिश सरकार ने उन्हें सर की उपाधि से सम्मानित किया था। बनर्जी का जन्म बंगाल में हुआ और उन्होंने २१ वर्ष की आयु में ही आई.सी.एस. की परीक्षा पास कर ली थी। कुछ वर्ष तक वह अंग्रेजी के प्राध्यापक रहे। अखिल भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के १८९५ के ११ वें तथा १९०२ में अहमदाबाद के १८ वें कांग्रेस अधिवेशन के वे सभापति चुने गए। सुरेन्द्रनाथ ने राष्ट्रीय आंदोलन के साथ-साथ लेखन का कार्य भी

किया। ए नेशन इन द मेकिंग नामक उनकी आत्मकथा काफी प्रसिद्ध है। वह उस समय के बंगाल के सर्वाधिक प्रभावशाली राजनीतिज्ञों में माने जाते थे। बंगाल के नवयुवकों में उनका बहुत सम्मान था। उन्होंने विशेष रूप से शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया, जिसका उदाहरण उनके द्वारा स्थापित रिपन कॉलेज है।

❊ **बिपिन चन्द्र पाल -** बिपिन चंद्र पाल एक भारतीय क्रांतिकारी, शिक्षक, पत्रकार व लेखक थे। पाल उन महान विभूतियों में शामिल हैं जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की बुनियाद तैयार करने में प्रमुख भूमिका निभाई। वे मशहूर लाल-बाल-पाल (लाला लाजपत राय, बालगंगाधर तिलक एवं बिपिनचन्द्र पाल) तिकड़ी का हिस्सा थे। इस तिकड़ी ने अपने तीखे प्रहार से अंग्रेजी हुकूमत की चूलें हिला दी थीं। लाल-बाल-पाल की इस तिकड़ी ने महसूस किया कि विदेशी उत्पादों से देश की अर्थव्यवस्था बिगड़ रही है और लोगों का काम भी छिन रहा है। अपने गरम विचारों के लिए मशहूर पाल ने स्वदेशी आन्दोलन को बढ़ावा दिया।

❊ **मिनजुर भक्तवत्सलम -** मिनजुर भक्तवत्सलम प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और मद्रास प्रांत (अब तमिलनाडु) के पूर्व मुख्यमंत्री थे। मिनजुर भक्तवत्सलम का जन्म ९ अक्टूबर, १८९७ ई. को चिंगलपट में हुआ था। मद्रास से उन्होंने कानून की शिक्षा ली। एनी बीसेंट के होमरूल लीग आंदोलन में और रौलट बिल के विरोध में उन्होंने भाग लिया। उसी समय वे राजगोपालाचारी के संपर्क में आए और गांधीजी के प्रभाव से आन्दोलन में सक्रिय हो गए। १९३२ के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रह में और भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने जेल की यातनाएं सही थीं।

❊ स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती (पंजाब)- (जन्म- १८५६, मृत्यु- १९२६) - स्वामी श्रद्धानंद सरस्वती शिक्षाविद, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी तथा आर्यसमाज के सन्यासी थे जिन्होंने स्वामी दयानन्द सरस्वती की शिक्षाओं का प्रसार किया। वे भारत के उन महान राष्ट्रभक्त सन्यासियों में अग्रणी थे, जिन्होंने अपना जीवन स्वाधीनता, स्वराज, शिक्षा तथा वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए समर्पित कर दिया था। उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय आदि शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना की और हिन्दू समाज को संगठित करने तथा १९२० के दशक में शुद्धि आन्दोलन चलाने में महती भूमिका अदा की।

❊ इंदुलाल याज्ञिक (गुजरात) जन्म- १८९२ मृत्यु- १९७२ - महागुजरात आंदोलन के नेता और गुजरात के निर्माताओं में प्रमुख इंदुलाल याज्ञिक ने अपनी पूरी संपत्ति महागुजरात सेवा ट्रस्ट को दान कर दी थीं। १७ जुलाई १९७२ को उनके निधन के बाद सहकारिता बैंक के सेफ डिपॉजिट में मिले वसीयतनामे के अनुसार उनके पास तब बैंक में कुल जमा १७ हजार ६१४ रुपए थे। याज्ञिक ने अपनी पुस्तकों की रायल्टी, दफ्तर का फर्नीचर तथा समस्त चल और अचल संपत्ति ट्रस्ट को दे देने का फैसला कर लिया था। उनके निधन के बाद वसीयतनामे के अनुसार उनकी सारी संपत्ति ट्रस्ट को चली गई। आज कई कारणों से गुजरात चर्चा में रहता है।

❊ महापुरुष पट्टाभि सीतारामैया- पट्टाभि सीतारामैया का जन्म १४ दिसंबर १८८० को आंध्रप्रदेश में नेल्लौर तालुका में एक निर्धन परिवार में हुआ था। इन्होंने दक्षिण भारत में स्वतंत्रता की अलख जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्होंने राष्ट्रीय हितों को दूसरे हितों के मुकाबले हमेशा प्राथमिकता दी। सन १९३९ में कांग्रेस अध्यक्ष के निर्वाचन में पट्टाभि सीतारामैया सुभाषचंद्र बोस से पराजित हो गए, तब महात्मा गांधी ने उनकी हार को अपनी हार कहा।

❊ मौनाला अबुल कलाम आजाद - उन्हें घर पर ही पहले उनके पिता द्वारा तथा बाद में अपने-अपने क्षेत्रों में विशेषज्ञ

अध्यापकों द्वारा पढ़ाया गया। मौलाना आजाद ने पहले अरबी और फारसी तथा फिर दर्शन शास्त्र, गणित, अंग्रेजी, विश्व इतिहास तथा राजनीति का अध्ययन किया।

मौलाना अबुल कलाम आजाद, जिन्हें सम्मानपूर्वक मौलाना आजाद कहा जाता है, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता थे। साथ ही वह एक प्रसिद्ध विद्वान तथा कवि भी थे। उन्हें अरबी, अंग्रेजी, उर्दू, हिंदी, फारसी तथा बंगाली इत्यादि भाषाओं का अच्छा ज्ञान था।

मौलाना आजाद का जन्म ११ नवंबर १८८८ को मक्का में हुआ था। उनके पूर्वज हेरात (अफगानिस्तान का एक शहर) से संबंधित थे। उनकी पारिवारिक पृष्ठ भूमि कट्टर धार्मिक विचारोंवाली थी इसलिए उन्हें परम्परागत इस्लामिक शिक्षा ही मिली। उन्हें घर पर ही पहले उनके पिता द्वारा तथा बाद में अपने-अपने क्षेत्रों में विशेषज्ञ अध्यापकों द्वारा पढ़ाया गया। मौलाना आजाद ने पहले अरबी और फारसी तथा फिर दर्शन शास्त्र, गणित, अंग्रेजी, विश्व इतिहास तथा राजनीति का अध्ययन किया। उन पर सर सैयद अहमद खान का काफी प्रभाव रहा। उन्होंने अफगानिस्तान, ईराक, मिस्र, सीरिया तथा तुर्की की यात्राएं भी कीं जहां वह कई क्रांतिकारियों तथा राष्ट्रवादियों से मिले। विदेश से वापस लौटने के बाद मौलाना आजाद की मुलाकात बंगाल के दो प्रमुख क्रांतिकारियों अरबिंद घोष तथा श्याम सुंदर चक्रवर्ती से हुई और वह ब्रिटिश राज के विरुद्ध क्रांतिकारी आंदोलन में शामिल हो गए। मौलाना आजाद ने देखा कि क्रांतिकारी गतिविधियां सिर्फ बंगाल तथा बिहार तक ही सीमित थीं। दो वर्ष के भीतर ही मौलाना आजाद ने पूरे उत्तरी भारत तथा बाम्बे में कई क्रांतिकारी केंद्रों की स्थापना में सहायता की। सन १९१२ में मौलाना आजाद ने उर्दू में एक पत्रिका की शुरुआत की। इस पत्रिका ने हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देने में काफी योगदान दिया। सरकार ने सन १९१४ में इस पर प्रतिबंध लगा दिया।

मौलाना आजाद ने एक अन्य साप्ताहिक पत्रिका शुरू की जो भारतीय राष्ट्रवाद तथा क्रांतिकारी विचारों का प्रचार करती थी। यह भी हिंदू-मुस्लिम एकता पर जोर देती थी। १९१६ में सरकार ने इस पत्रिका को भी प्रतिबंधित कर दिया और मौलाना आजाद को रांची में नजरबंद कर दिया। वहां से उन्हें सन १९२० में प्रथम विश्व युद्ध के बाद रिहा किया गया।

रिहा होने के बाद मौलाना आजाद ने खिलाफत आंदोलन के माध्यम से मुस्लिम समुदाय को जागृत करने का बीड़ा उठाया। खिलाफत आंदोलन का उद्देश्य खलीफा को पुन: पहचान दिलाना था जिन्हें ब्रिटिश लोगों ने सत्ता से हटाकर तुर्की को अपने अधीन कर लिया था। मौलाना आजाद ने महात्मा गांधी द्वारा शुरू किए गए असहयोग आंदोलन का समर्थन किया और १९२० में वह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में शामिल हो गए। उन्हें सन १९२३ में कांग्रेस के दिल्ली विशेष सत्र का अध्यक्ष चुना गया। गांधी जी के नमक सत्याग्रह में भी उन्हें गिरफ्तार किया गया। उन्हें मेरठ जेल में डेढ़ वर्ष तक कैद रखा गया। सन १९४० में मौलाना आजाद कांग्रेस के अध्यक्ष बने और १९४६ तक इस पद पर रहे। वह भारत विभाजन के अत्यधिक विरोधी थे लेकिन उनके तथा अन्य राष्ट्रवादी नेताओं के प्रयासों के बावजूद भी विभाजन हुआ। इससे उन्हें बहुत गहरा सदमा लगा।

मौलाना आजाद ने पंडित जवाहर लाल नेहरू के मंत्रिमंडल में १९४७ से १९५८ तक बतौर शिक्षा मंत्री अपनी सेवाएं दी थीं। २२ फरवरी १९५८ को उनका निधन हो गया लेकिन भारतीय इतिहास में उनका नाम हिंदू-मुस्लिम एकता को

बढ़ावा देनेवाले एक नेता तथा दार्शनिक के तौर पर हमेशा-हमेशा के लिए दर्ज हो गया।

❋ क्लियोपैटा- मिस्र की राजकुमारी क्लियोपैट्रा को सुंदरता की देवी भी कहा जाता था। क्लियोपैट्रा को न सिर्फ उनकी सुंदरता के लिए जाना जाता है बल्कि उनका जीवन भी काफी रहस्यमयी काफी रहस्यमयी रहा था। जो आज भी खोजकर्ताओं को उनकी तरफ आकर्षित करता है। क्लियोपैट्रा जितनी सुंदर थी, उससे कहीं ज्यादा चतुर और षडयंत्रकारी भी थी।

पिता की मृत्यु के बाद मात्र १४ वर्ष की आयु में क्लियोपैट्रा और उसके भाई टोलेमी दियोनिसस को संयुक्त रूप से राज्य प्राप्त हुआ। भाई को राज्य पर क्लियोपेट्रा की सत्ता सहन नहीं हुई और बगावत हो गई। क्लियोपैट्रा को अपनी सत्ता से हाथ धोना पड़ा और सीरिया में शरण लेनी पड़ी मगर इस राजकुमारी ने साहस नहीं छोड़ा।

जूलियस सीजर को फंसाकर मिस्र पर हमला करवाया - रोम के शासक जूलियस सीजर को अपने मोह में फंसाकर क्लियोपेट्रा ने मिस्र पर हमला करवाया और सीजर ने टोलेमी को मारकर क्लियोपैट्रा को मिस्र के राजसिंहासन पर बैठाया। क्लियोपैट्रा की मौत से भी एक खास रहस्य जुड़ा हुआ है। रोमन राज्य के पहले सम्राट ऑगस्टस ने क्लियोपैट्रा की हार पर अपना शासन स्थापित किया था। जब ऑगस्टस के पास अपने सम्ममान में साल के एक महीने का नाम अपने नाम पर रखने का मौका था, तो क्लियोपैट्रा की हार का एक वार्षिक अनुस्मारक बनाने के लिए उन्होंने आठवें महीने को चुना, जिसमें क्लियोपेट्रा की मृत्यु हुई थी।

❋ दादाभाई पालनजी नौरोजी - दादाभाई नौरोजी ने देश में स्वराज्य की नींव डाली थी। वे पहले भारतीय थे, जिन्होंने कहा था कि भारत भारतवासियों का है। उनका जन्म ४ सितंबर, १८२५ को मुंबई के एक गरीब पारसी परिवार में हुआ। जब दादाभाई ४ वर्ष के थे, तभी पिता का देहांत हो गया। मां ने निर्धनता में भी उच्च शिक्षा दिलाई। आगे वे लंदन के यूनिवर्सिटी कॉलेज में पढ़ाने लगे। लंदन में उनके घर पर पढ़नेवाले भारतीय छात्र आते-जाते रहते थे। उनमें गांधी जी भी एक थे।

मात्र २५ बरस की उम्र में एलिफनस्टोन इंस्टीट्यूट में लीडिंग प्रोफेसर के तौर पर नियुक्त होनेवाले पहले भारतीय बने। दादाभाई ने ही यह मांग उठाई कि इंग्लैंड की पार्लियामेंट में कम-से-कम एक भारतीय के लिए भी सीट सुनिश्चित होनी चाहिए। उनके तर्कों से पराजित होकर अंगरेजों ने उनकी यह मांग मान ली। द ग्रैंड ओल्डमैन ऑफ इंडिया के नाम से मशहूर दादाभाई नौरोजी ब्रिटिश संसद में चुने जानेवाले पहले एशियाई बने। संसद सदस्य रहते हुए उन्होंने ब्रिटेन में भारत के विरोध को प्रस्तुत किया। भारत की लूट के संबंध में ब्रिटिश संसद में एक सिद्धांत पेश की। इस ड्रेन थ्योरी में भारत से लूटे हुए धन को ब्रिटेन ले जाने का उल्लेख था। देश और समाज की सेवा के लिए समर्पित दादाभाई नरमपंथी नेताओं के तो आदर्श थे ही, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक जैसे गरमपंथी नेता भी उन्हें प्रेरणा स्रोत मानते थे। तिलक ने दादाभाई के साथ रहकर वकालत का व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त किया। एक बार दादाभाई को किसी मुकदमे के संबंध में इंग्लैंड जाना पड़ा। उनके साथ सहायक के रूप में तिलक जी भी गये। दादाभाई को सवेरे जल्दी उठने की आदत थी। घर का सारा काम वे स्वयं करते थे। एक दिन जब वे घर का काम कर रहे थे तभी तिलक जी की आंख खुल गयी। उन्होंने कहा- क्या आज नौकर नहीं आया? इस पर उन्होंने तिलक जी को कहा- मैं अपना काम स्वयं करता हूं। अपने कार्य के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं रहता। यह सुनकर तिलक जी अभिभूत हो गये। स्वदेश प्रेम उन्हें भारत ले आया। स्वास्थ्य ठीक न रहने के कारण वे प्राय: स्वदेश में रहे

और ९२ वर्ष की उम्र में ३० जून, १९१७ को मुंबई में ही उनका देहांत हुआ। देश उन्हें कभी नहीं भूलेगा।

❋ जवाहरलाल नेहरू - पुस्तक तो ज्ञान का सागर है। इसे हम जितनी सफाई-हिफाजत से रखेंगे, उतना ही पढ़ने में हमारा मन लगेगा और ज्ञान मिलेगा।

एक बार नेहरूजी लखनऊ में अपने एक मित्र के यहां ठहरे। स्वभाववश उनकी नजर, दोस्त की पुस्तकों की अलमारी पर गई अलमारी में पुस्तकें बहुत ही बेतरतीब और उल्टी-सीधी पड़ी हुई थीं। उन पर धूल भी जम रही थी। वे उठे और अलमारी की सारी पुस्तकें निकाली और झाड़-पोंछकर उन्हें तरीके से जमाते हुए अपने दोस्त से नाराजगी के साथ कहने लगे, क्यों मोहनलाल, क्या तुम यह नहीं मानते कि पुस्तकें जीवित वस्तु हैं। इनका सदा ही आदर-सम्मान करना चाहिए। पुस्तकों के साथ इस प्रकार से दुर्व्यवहार करना शोभनीय बात नहीं। नेहरूजी की बात से उनका दोस्त बड़ा प्रभावित हुआ। फिर वह भी हिफाजत के साथ रखने लगा तथा अपने मित्रों को भी पुस्तकों की हिफाजत के संदर्भ में नसीहत देने लगा।

नेहरूजी को बाल साहित्य से तो अथाह प्रेम था। वे हर बरस अपने जन्मदिवस पर बच्चों को देश विदेश तरह-तरह की पुस्तकें भेंट किया करते थे। वे बच्चों से कहते, फुर्सत के क्षणों में खेलने की बजाय पुस्तकें पढ़नी चाहिए, इससे दिमाग की अच्छी कसरत हो जाती है। रात्रि में नेहरूजी बाल साहित्य पढ़ा करते या बच्चों के लिए कहानियां, कविताएं या एकांकी लिखा करते। उनकी कई रचनाएं आजादी से पूर्व की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई। वैसे नेहरूजी ने बच्चों की पत्र पत्रिकाओं को सम्पादन भी किया था। एक बार नेहरूजी फ्रांस के नीस शहर में गए। वहां उन्होंने बच्चों के स्कूल के समक्ष बहुत-सी फटी पुस्तकें देखी, तुरन्त उन्हें समेटा और स्कूल के अन्दर मैडम से जाकर बोले, आपके देश में पुस्तकों की कोई कद्र नहीं। कोई पुस्तक फट जाए तो इसका मतलब उन्हें फेंक देना। यह सरासर अन्याय है। पुस्तक फट जाए तब भी उन्हें संभाल कर रखनी चाहिए। यही पुस्तकें बाद में गरीब बच्चों के भीं तो काम में आ सकती हैं।

मैडम ने नेहरू जी से कहा, आज से मैं पुस्तकें संभाल कर रखूंगी। फिर मैडम ने बच्चों से कहा, अब से कोई बच्चा पुस्तकें फाड़कर स्कूल के बाहर नहीं फेंकेगा। बाद में उन मैडम को पुस्तकों से इतना लगाव हो गया कि उन्होंने बाल साहित्य की एक विशेष लाइब्रेरी बनाई, जिसका उद्घाटन नेहरूजी ने ही किया था। पुस्तकों की तरह नेहरूजी को पत्र-पत्रिकाओं से भी बड़ा प्रेम था।

❋ कार्ल मार्क्स की ५०० प्रतिमाएं - महान बुद्धिजीवी तथा साम्यवाद व समाजवाद के प्रवर्तक कार्ल मार्क्स की जन्मस्थली के रूप में मशहूर जर्मनी के शहर ट्रायर में एक कलाकार ओट्टमर होएर्ल १ मीटर ऊंची मार्क्स की ५०० प्रतिमाएं स्थापित करने की योजना बना रहे हैं। इससे पहले भी वह कई तरह की प्रतिमाओं को बड़े पैमाने पर स्थापित करने के रिकॉर्ड बन चुका हे।

इस वर्ष कार्ल मार्क्स के १८८३ में लंदन में हुए निधन को १३० वर्ष पूरे हो रहे हैं। उनके इस प्रोजेक्ट पर करीब ८० हजार यूरो खर्च होने की सम्भावना है जिसे ट्रायर कल्चरल फाऊंडेशन तथा कुछ अन्य संस्थाएं स्पांसर करने जा रही हैं। विनाइल से बनी ये ५०० प्रतिमाएं शहर में स्थित पोर्ता नाइग्रा नामक प्राचीन रोमन सिटी गेट पर ५ मई को कार्ल मार्क्स के जन्मदिन से ३ सप्ताह के लिए प्रदर्शित की जाएंगी। ट्रायर में ही १८१८ में कार्ल मार्क्स का जन्म हुआ था।

७ कला के जीव २) अति मानव

तांत्रिक, जादूगर, सम्मोहन

तंत्र साधना एक तरह की कठोर यातना की साधना है और तांत्रिक, जादूगर, सम्मोहन जो आत्माओं पर अपनी विद्या से नियंत्रण करते है। ऐसे लोगों की गति उत्तम नहीं होती है। वे मृत्यु के पहले व मृत्यु के उपरांत बहुत अधिक कष्ट पाते है। उनके जीवन में कभी सुख-समृद्धि नहीं होती है। ये अपनी तंत्र साधना सम्मोहन विद्या किसी श्मशान घाट में या अशुभ पौधों के नीचे बैठकर करते है। तंत्र विद्या के गुरु शिव है और उनकी शक्ति की देवी बगलामुखी है। अति मानव सब तामसी प्रवृत्ति के होते है।

तंत्र साधना के केंद्र बगलामुखी मंदिर

प्राचीन ग्रंथों में १० महाविद्याएं बताई गई हैं, जो कि काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातंगी और कमला देवी दुर्गा के ही १० रूप हैं। शास्त्रों के अनुसार जीवन में आनेवाली समस्याओं जैसें कि गृहक्लेश, बीमारी, भूत-प्रेत, कोई बड़ा संकट आदि से बचने के लिए हमें रोजाना १० महाविद्याओं में से किसी एक की पूजा करनी चाहिए। इनमें से आठवीं माता बगलामुखी सबसे प्रसिद्ध है। इन्हें पीताम्बरा और ब्रह्मास्त्र भी कहा जाता है। तंत्र विद्या में माता बगलामुखी की पूजा प्रमुख मानी जाती है। देश में बगलामुखी के ३ मंदिर हैं जो कि अलग-अलग जगहों में विख्यात हैं। जिनमें से एक हिमाचल के कांगड़ा जिले में, दूसरा मध्यप्रदेश के दतिया में और तीसरा नलखेड़ा में स्थित है।

कांगड़ा- बगलामुखी मंदिर कांगड़ा लाखों लोगों की आस्था का केंद्र बना हुआ है। इस मंदिर का निर्माण महाभारतकाल में हुआ था। यहां देवी ने पीले वस्त्र, आभूषण और पीले रंग के पुष्पों की ही माला धारण की है। बंगलामुखी जयंती के दिन यहां बहुत बड़ा मेला लगता है। इस दिन पूरे भारत के अलग-अलग शहरों से लोग यहां आकर हवन करवाते हैं और मां की कृपा प्राप्त करते हैं। लोगों का मानना है कि इस दिन यहां हवन करने से कष्टों से मुक्ति और ऋद्धि-सिद्धि की प्राप्ति होती है। माना जाता है कि द्रोणाचार्य, रावण, मेघनाद आदि योद्धाओं ने भी मां की आराधना कर कई युद्ध लड़े थे। मान्यता के अनुसार इस मंदिर की स्थापना द्वापर युग में पांडवों द्वारा एक ही रात में की गई थी। अर्जुन और भीम ने युद्ध में शक्ति प्राप्त करने के लिए इस स्थान पर माता बगलामुखी की कृपा पाने के लिए विशेष पूजा की थी। पुराने समय से ही यह मंदिर लोगों की आस्था का केंद्र बना हुआ है।

नलखेड़ा - माता बगलामुखी का दूसरा मंदिर मध्यप्रदेश के नलखेड़ा में स्थित है। यहां विराजित तीन मुखों वाली त्रिशक्ति देवी को महारूद्र की महाशक्ति के रूप में पूजा जाता है। कहा जाता है कि इस मंदिर में स्थापित मां की मूर्ति स्वयं प्रकट हुई थी। इस मंदिर में बगुलामुखी के साथ हनुमान, कृष्ण, मां लक्ष्मी, मां सरस्वती और भैरव भी विराजमान हैं। देशभर से लोग यहां तंत्र साधना के लिए आते हैं। मान्यता के अनुसार करीब १० पीढ़ियों से पुजारी यहां तंत्र साधना करवाते आ रहे हैं। माता बगलामुखी को तंत्र की देवी माना जाता है। देश में यही एक ऐसा मंदिर है यहां बिल्वपत्र, आंवला, चंपा, नीम के पेड़ एक साथ है। इस मंदिर के आसपास श्मशान घाट स्थित हैं। जिसके कारण यहां कम ही लोग आते-जाते हैं। लेकिन तंत्र साधना के लिए ज्यादातर लोग इसी जगह आते हैं।

आविष्कार व खोज

✻ लगभग ४५०० ईसा पूर्व तेल लैंप अस्तित्व में आया।

✻ ३००० ईसा पूर्व मोमबत्ती का आविष्कार हुआ।

✻ वर्ष ९०० में मुहम्मद इब्न जकारिया राजी ने केरोसीन लैंप का आविष्कार किया।

✻ १८३५ में जेम्स लिंडसे ने बिजली से जलनेवाले बल्ब पर पहली बार प्रयोग किया।

✻ वर्ष १८४० में पहले फ्लूरेसेंट लैंप का आविष्कार हुआ।

✻ वर्ष १८८० में थॉमस अल्वा एडीसन ने १६ वाट के बल्ब का आविष्कार किया, जो १५०० घंटे तक चल सकता है।

✻ वर्ष १९०१ में पीटर कूपर हेविट ने मरकरी वैपर लैंप का प्रदर्शित किया।

✻ वर्ष १९९१ में फिलिप्स ने फ्लूरेसेंट लाइटबल्ब का आविष्कार किया।

✻ नौकायन की कला का आविष्कार विश्व में सबसे पहले ६००० वर्ष पूर्व भारत की सिंधु घाटी में हुआ था।

✻ टेलीफोन का आविष्कार सन् १८७५ में अमेरिका के ग्राह्य बेल नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ मैक्रोफोन का आविष्कार सन् १८७३ में अमेरिका के डेविड हग्स नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ ग्रामोफोन का आविष्कार सन् १८७८ में अमेरिका के थामस एल्का एडीसन नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ विद्युत प्रेस का आविष्कार सन् १८८२ में अमेरिका के एच. डब्ल्यू. सीले नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ फाउन्टेन पेन का आविष्कार सन् १८८४ में अमेरिका के वाटरमेन नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ मोटर साइकिल का आविष्कार १८८४ में ब्रिटेन के एडवर्ड बटलर नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ आधुनिक बाइसेकिल का आविष्कार सन् १८८४ में ब्रिटेन के स्टार ले नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ जेनरेटर का आविष्कार माइकल फाराडे ने किया।

✻ रेफ्रिजरेटर का आविष्कार फरडीनैन्ड कैरे ने किया।

✻ पनडुब्बी के आविष्कारक सी.वी. डरेबल हैं।

✻ तारपीडो के आविष्कारक राबर्ट हाइटहेड हैं।

✻ सीमेन्ट के आविष्कारक ऐस्पडीन हैं।

✻ लीवर का सिद्धांत आर्किमिडीज ने खोजा।

✻ नियान गैस का आविष्कारक डब्ल्यू. रेमजे ने किया है।

✻ परमाणु बम का आविष्कार सन् १९४१ में जर्मनी के आटो घन नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ इलैक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप का आविष्कार सन् १९३९ में रूस के ब्लादीमोर जोवेरेकिंग नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ जींस का आविष्कार लेवी स्ट्रॉस ने किया था। उन्हें सोने की खान में काम करनेवाले मजदूरों के लिए एक मजबूत और खूब तनाव झेल सकनेवाली पतलून बनानी थी। इसी मांग को देखते हुए जो चीज बनी उसे जींस कहा गया और इस शुरुआती जींस में डेनिम की जगह टेंट कैनवॉस का प्रयोग होता था।

✻ यांत्रिकीय घड़ी का आविष्कार सन् १७२५ में चीन के सिंग एवं लिंग सान नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ भाप के इंजन का आविष्कार सन् १७६५ में स्काटलैंड के जेम्स वाट नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ बाष्प चालित जहाज का आविष्कार सन् १७७५ में फ्रांस के पेरियर नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ पनडुब्बी का आविष्कार सन् १७७६ में अमरीका के बुशवेल नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ गुब्बारे का आविष्कार सन् १७८३ में फ्रांस के मोंटगोल्फीयर नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ गैस लाइटिंग का आविष्कार सन् १७९४ में स्कॉटलैंड के विलियम मर्डोक नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ पैराशूट का आविष्कार सन् १९७९ में फ्रांस के ए.जे.नेरिन नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ स्टीम वोट का आविष्कार सन् १८०७ में अमरीका के फुल्टन नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ रेलवे इंजन का आविष्कार सन् १८१४ में ब्रिटेन के स्टीफेंसन नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ बारूद का चीन में सन् ९५० में आविष्कार हुआ था।

❋ दूरदर्शन की खोज जॉन लोगी बेअर्ड ने की।

❋ अणु की खोज सदरफोर्ड ने की।

❋ चाय का आविष्कार चीन में २७३७ ई.पू. में हुआ था।

❋ रसायन शास्त्र के जिन प्रतीकों (नोटेशन पद्धति) का आज हम इस्तेमाल करते हैं, उनका आविष्कार स्वीडन के वैज्ञानिक जॉन्स जेकब बर्जेलियस ने किया था।

❋ सीमेंट की खोज २५० ई.पू. रोमन लोगों ने की।

❋ च्यूंगम १८४८ में ईजाद हुई। इसे बनाया जान बी. कर्टिस ने बबलगम १९२८ में बाजार में आई।

❋ पंखे का आविष्कार ५०० साल पहले चीन में हुआ।

❋ पहला सेलफोन १९२४ में बना।

❋ फ्रांस के अनॉवे नामक स्थान पर १७८३ में मॉन्टगोल्फर भाइयों ने पहली बार बलून का निर्माण किया व उड़ान भरी।

❋ पहला डिजिटल संगणक पेनीसिलवेनिया विश्वविद्यालाय में इनाइक नाम से १९४६ में बनाया गया।

❋ बहुचर्चित दवा वियाग्रा का आविष्कार डॉ. रोनाल्ड शिराग ने किया है।

❋ विलहेम ने एक्स-रे की खोज की और भौतिकी में नोबेल पुरस्कार प्राप्त किया।

❋ पैराशूट की खोज हवाईजहाज से १ सदी पहले हुई थी।

❋ लॉगेरिथ्म (लघुगुणक) की खोज स्कॉटलैंड के गणितज्ञ जॉन नेपियर ने की थी।

❋ भारत में पहली पाषाणकालीन खोज १८३६ में राबर्ट ब्रूस ने की।

❋ सबसे पहले सफल दूरबीन इटली के वैज्ञानिक गैलिलियो ने बनाई।

❋ विलक्षण तथ्य १०३३ आविष्कार- थामस एल्वा एडिसन, विश्व के सर्वोत्तम आविष्कारकों में से एक थे, जिन्होंने १०३३ आविष्कार करने का श्रेय प्राप्त किया। कई महत्वपूर्ण आविष्कारों जैसे- विद्युत बल्ब, फोनोग्राफ, सिने कैमरा, कार्बन टेलीफोन,

❋ अलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने १९७६ में फोन को ईजाद कर पहला फोन किया।

❋ दुनिया का पहला वैक्यूम क्लीनर हबर्ट बूथ ने १९०१ में तैयार किया।

❋ पोलियो के टीके का आविष्कार सन् १९५५ में इंग्लैंड के डब्ल्यू शोकली नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ कारबुरेटर का आविष्कार सन् १९७६ में जर्मनी के डैमलर नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ टेलीविजन का आविष्कार सन् १८४४ में अमेरिका के जे. एल. बेयर्ड नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ पेन्सीलिन का आविष्कार फ्लोरे ने किया था।

❋ कम्प्यूटर का आविष्कार चार्ल्सी बावेज ने किया था।

❋ इन्सुलीन का आविष्कार रफबैटिन ने किया था।

❋ सल्फा ड्रग्स का आविष्कार जी. डोमाग ने किया था।

❋ क्लोरोफार्म का आविष्कार सर जेम्स हेरिसन ने किया था।

❋ सेफ्टी रेजर का आविष्कार सन् १८९५ में अमरीका के जिलोट नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ एक्स-रे का आविष्कार सन् १८९५ में रोटांजन नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ वायुमान का आविष्कार सन् १९०३ में अमरीका के राइट ब्रदर्स ने किया था।

❋ हेलीकॉप्टर का आविष्कार सन् १९१३ में ब्रिटेन के ब्रियरले नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ नियान बल्ब का आविष्कार सन् १९१५ में फ्रांस के जी. क्लाड नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ रडार का आविष्कार सन् १९२२ में अमरीका के टेलर एवं यंग नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ विद्युत रेजर का आविष्कार सन् १९३१ में अमरीका के के. सिक व्यक्ति ने किया था।

❋ जेट विमान का आविष्कार सन् १९३७ में फ्रैंक व्हाइटले नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ आइसक्रीम का आविष्कार फ्रांसीसी वैज्ञानिक गोराल्ट तिस्सेन ने १६२० में किया था।

❋ ओहायो (अमेरिका) के सिनसिनाती निवासी फ्रैडरिक जे. बौर (१९१८-२००८) ट्यूबूलर प्रिंगल्स पोटैटो चिप कैन के आविष्कारक थे और उनकी इच्छा थी कि देहांत के बाद उनकी थोड़ी-सी राख को एक प्रिंगल्स कैन में दफन किया जाए।

❋ चैस्टर ग्रीनवुड- अमेरिका के रहनेवाले ग्रीनवुड सन १८७३ में मात्र पंद्रह वर्ष के थे जब उन्होंने ईयरमफ्स का आविष्कार किया था। उन्होंने ग्रीनवुड्स ईयर प्रोटेक्टर फैक्ट्री स्थापित करके प्रथम विश्व युद्ध में अमेरिकी सैनिकों को ईयरमफ्स की सप्लाई की थी। ईयरमफ्स ध्वनिरोधक होता है।

आविष्कार ❋ साइकिल का आविष्कार- दुनिया का सबसे अहम आविष्कार पहिए को माना जाता है। पहिए ने ही आज मानव जीवन को इतना आसान बनाया है। मनुष्य की बहुत समय से इच्छा रही कि एक ऐसी मशीन बनाई जाए जिसे चलाने के लिए किसी बाहरी शक्ति की जरूरत न पड़े। पहिये के आविष्कार के काफी सालों बाद १८१७ ई. में एक जर्मन व्यक्ति बैरन वान ड्रायस ने छकड़े के दो पहियों को लकड़ी के एक फ्रेम से जोड़कर साइकिल को जन्म दिया। तब इस साइकिल में पैडल नहीं होते थे। सवार को पांव जमीन पर रखकर इस पहिए को आगे धकेलना पड़ता था। जिसमें काफी बल लगता था। फिर वर्ष १८४० में किक फैडरिक मैक्मिलन ने अगले पहिये के साथ दो पैडल लगा दिए। पैडल लगने के साथ ही इसे चलाना आसान हो गया। लेकिन इसे ढलान पर रोकना तब मुश्किल हो गया।

सन १८४५ में फ्रांस के निकोलस ने इसके अगले पहिये में ब्रेक फिट किया। जिससे ढलान पर इसके गति को कम करने में सहायता मिली। ब्रेक लगने की वजह से इसको चलाने पर अधिक जोर लगाना पड़ता था और यह शोर भी काफी करता

था। इसलिए अमेरिका के लोग इसे बोन-शेकर कहते थे। १८६५ में इसके पहियों पर ठोस रबड़ के टायर लगा दिए गए। फिर भी साइकिल को और बेहतर बनाने के लिए लगातार प्रयास होते रहे। १८७० में सबसे बड़ा बदलाव हुआ। छकड़ों के पहियों के स्थान पर धातु की पतली तीलियों से बंधे रहते थे जो कि आज भी हैं। अगले पहिये को बड़ा कर दिया गया ताकि थोड़े चक्करों से अधिक दूरी तय की जा सके। आगे के पहिए के ऊपर एक सीट लगी रहती थी जिसके ऊपर बैठकर लोग इसे चलाया करते थे, लेकिन आगे कि ओर गिरने का खतरा बना रहता था। इस समय तक बाल-बेयरिंग की खोज नहीं हुई थी। इसलिए यह खूब खड़खड़ करता था। १८७९ में इसमें बाल-बेयरिंग लग जाने से इसकी खड़खड़ाहट समाप्त हुई। १८८४ में साइकिल में चेन लगी तब जाकर इसके दोनों पहिये आपस में जुड़ सके और पहियों का आकार भी बराबर हो सका। १८९० में जॉन बाइड डनलप ने साइकिल के पहिये में बदलाव कर हवा भरे टायर लगाए १८९७ में पहियों को अपने आप घूमने की आजादी मिली। तब से लेकर आज तक इसमें छोटे-मोटे बदलाव होते रहते हैं।

आविष्कार ✻ चाकलेट का आविष्कार - दुनिया में सर्वप्रथम चॉकलेट का जन्म ११वीं सदी में मिस्र के एक ग्वाले के हाथों हुआ था। एक दिन वह बहुत-सा दूध चूल्हे पर चढ़ाकर भूल गया। सांझ ढले जब दूध की बात याद आयी, चूल्हे पर चढ़े दूध के बर्तन में देखा तो दूध की जगह वहां दूध ओटकर मावा बन चुका था। ग्वाले ने बुद्धि से काम लिया। उसने मावे में शहद और इलायची मिलाकर पांच-सात दिन छांव में सूखने दिया। जब वह मिश्रण सूख गया तो उसने उसकी एक डली चखी। उसे बड़ी स्वादिष्ट लगी बस इसके बाद से वह दूध की चाकलेट बनाकर बेचने लगा जो बच्चों के अतिरिक्त युवा व बूढ़े लोगों में भी लोकप्रिय हुई। १३ वीं शताब्दी में रोम में खरबूजे, नारंगी और आम की चाकलेट बनने लगी। इन सभी में शहद का प्रयोग किया जाता था। धीरे-धीरे रोम में चाकलेट बनानेवालों की संख्या बढ़ी, कई लोगों ने अखरोटों को चीनी की चासनी तथा अनन्नास फल के रस के साथ मिलाकर चाकलेटें बनायीं, जो स्वाद में लाजवाब थी। बस इसके बाद से ही यहां बनने वाली इन चाकलेटों में शहद की जगह चीनी का प्रयोग किया जाने लगा। १५ वीं सदी में रूस में चॉकलेट बनाने का एक बड़ा कारखाना लगा, जिसमें बच्चे ही चाकलेटें बनाया करते थे। १६वीं तथा १७वीं शताब्दी में तो भारत में भी चाकलेटें बनने लगीं। यहां चाकलेट बनाने के लिए कंदमूल तथा गन्ने का रस प्रयोग में लाया जाता था।

फिर चुकंदर, नारंगी, सेब, खरबूजे, अनन्नास एवं मक्का के आटे द्वारा भी चाकलेट टाफिया बनाने का सिलसिला शुरू हुआ। १८वीं सदी में प्रथम चरण में तो इन चाकलेटों के रंग, रूप एवं स्वाद में भी परिवर्तन हो चुका था।

टॉफी एवं चॉकलेट के आधार पर ही अमेरिका के एक वैज्ञानिक ने बच्चों के लिए आइसक्रीम बनाने की खोज की, जो बाद में संसार भर में है हर वर्ग में लोकप्रियता की ओर बढ़ती गई। आज अमेरिका में पांच सौ किस्मों की आइसक्रीम बनती है। भोजन के बाद आइसक्रीम खाना वहां स्वास्थ्य के लिए बेहतर माना जाता है, यह परंपरा भी वहीं से शुरू हुई। अब तो हमारे देश में भी कई स्वादों में चॉकलेट टॉफियां बनने लगी हैं, जो विदेशों में भी लोकप्रिय है।

✻ जॉन जे. स्टोन पार्कर- सन १९८९ में जॉन जब चार वर्ष के थे तो उन्होंने अपनी बहन के साथ मिलकर तारे के आकार जैसे एक उपकरण का आविष्कार किया था जो बर्फ को गिलास से बाहर गिरने से रोकता था। वह सबसे छोटी आयु वाला पेटेंट धारक था।

✻ टाइपराइटर का आविष्कार सन १८६८ में अमेरिका के शोल्ज गेटलिंग नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ माइक्रोफोन का आविष्कार सन १८७३ में अमेरिका के डेविड हग्स नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ टेलीफोन का आविष्कार सन १८७५ में अमेरिका के ग्राहम बैल नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ आन्तरिक दहन इंजन का आविष्कार सन् १८७६ में जर्मनी के निकोलस आटो नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ ग्रामोफोन का आविष्कार सन १८७८ में अमेरिका के थॉमस एडीसन नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ विद्युत प्रेस का आविष्कार सन १८८२ में अमेरिका के एच. डब्ल्यू. सीले नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ फाउन्टेन पेन का आविष्कार सन १८८४ में अमेरिका के वाटरमैन नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ मोटारसाइकिल का आविष्कार १८८४ में ब्रिटेन के एडवर्ड बटलर नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ आधुनिक बाइसिकल का आविष्कार सन १८८४ में ब्रिटेन के स्टार ले नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ जेम्स वाट ने हॉर्सपावर का आविष्कार अपने स्टीम इंजन की दूसरी मशीनों के साथ तुलना के लिए किया था।

❋ फेसबुक संस्थापक मार्क जुकरबर्ग ने यूनिवर्सिटी में पढ़ाई के दौरान फेसमॅश नाम से वेबसाइट बनाई थी बाद में इसी का नाम फेसबुक कर दिया गया।

❋ एक्सरे मशीन का आविष्कार कब और कैसे हुआ - एक्सरे का चिकित्सा के क्षेत्र में एक अहम योगदान है जहां पहले शरीर के अंदर की बिमारी का पता लगाने के लिए शरीर के उस हिस्से में चीरा लगाकर ही पता लग पाता था वहीं एक्सरे मशीन आने के बाद बिना चीरे ही बिमारी का पता लगाया जा सकता है। एक्सरे मशीन एक्सरे जनरेटर और एक्सरे डिटेक्टर से मिलकर बनी है। एक्सरे मशीन के द्वारा शरीर के आंतरिक भागों की एक्सरे फोटो निकाली जाती है। अगर किसी दुर्घटना में शरीर के किसी अंग की हड्डी में तकलीफ हो तो एक्सरे फोटो के जरिये आसानी से पता लगाया जा सकता है कि उस अंग की हड्डी टूटी है या नहीं। एक्सरे मशीन के आविष्कार के बाद इलाज काफी सरल हो गया है। एक्सरे के आविष्कार के पीछे कई लोगों का हाथ है लेकिन इसका मुख्य श्रेय जाता है विल्हेम रोन्टजेन को जिन्होंने सबसे पहले १८९५ में क्रूक्स ट्यूबों से निकलनेवाले एक्सरे की खोज की और इसके कई महत्वपूर्ण उपयोग समझाए। इसके बाद १८ जनवरी १८९६ को एच एल स्मिथ ने औपचारिक रूप से एक एक्सरे मशीन को पेश किया। इसके बाद १९०४ में मेले क्लैरेंस ने सार्वजनिक इस्तेमाल के लिए एक पूर्ण रूप से कामकाजी एक्सरे मशीन पेश की। पहली बार एक्सरे मशीन का इस्तेमाल जूते बेचने के स्टोर्स में किया गया था। एक्सरे मशीन की आविष्कार की कहानी बड़ी रोमांचक है क्योंकि एक्सरे मशीन का आविष्कार सोची समझी प्लानिंग नहीं थी बल्कि इसका आविष्कार गलती से हुआ था। दरअसल विल्हेम रोन्टजेन कैथोडिक रेज ट्यूब का आविष्कार करने में लगे थे लेकिन एक दिन उन्होंने देखा की लाइट जब चमक रही थी तो अपारदर्शी कवर होने के बावजूद भी इसके नीचे रखा पेपर साफ दिखाई दे रहा था। ये देखकर विल्हेम चौंक गए और वहां से उन्हें एक्सरे के आविष्कार का आइडिया मिला। हालांकि एक्सरे शरीर पर बुरे प्रभाव भी डालता है अगर लम्बे समय तक किसी अंग पर एक्सरे किया जाये तो उस अंग के आसपास की जीवित कोशिकाएं मृत हो जाती हैं। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि अगर एक ही अंग पर बार बार और अलग अलग समय पर ज्यादा एक्सरे लेने की क्रिया की जाये तो कैंसर होने का भी खतरा हो सकता है। इन्हीं कारणों से सिर्फ जरूरत महसूस होने पर ही एक्सरे लिया जाता है, साधारणत: एक्सरे का इस्तेमाल मेडिसिन और सर्जरी में किया जाता है।

❋ जो भी आविष्कार होते हैं उनके पीछे वैज्ञानिकों के कई सालों के शोध और मेहनत होती है। कोई भी आविष्कार आसानी से और तुरंत नहीं होता लेकिन कई ऐसे बड़े आविष्कार भी हुए हैं जो अनजाने में हो गए।

वेल्क्रो- एक बार जॉर्ज्स डे मेस्ट्रल नाम के एक स्विस इंजीनियर के पेंट से कुछ बीज चिपक गए जिसके बाद इन्हें वेल्क्रो बनाने के आईडिया सूझा और फिर इन्होंने वेल्वेट और क्रोचेट के कॉम्बिनेशन से वेल्क्रो का आविष्कार किया।

पोटैटो चिप्स- १८५३ में जॉर्ज क्रम नाम के शेफ को एक कस्टमर ने फ्रेंच फ्राई का ऑर्डर किया और साथ में कहा की फ्रेंच फ्राई थोड़ी पतली और कुरकुरी होनी चाहिए और फिर इससे पोटैटो चिप्स का आविष्कार हुआ।

पेसमेकर- जॉन होप्स नाम के प्रसिद्ध इलेक्ट्रिक इंजीनियर एक बार रेडियो फ्रिक्कवेंसी से बॉडी टेम्परेचर को रिस्टोर करने के लिए काम कर रहे थे, लेकिन तभी उनके दिमाग में आया की अगर ठण्ड के कारण दिल धड़कन बन्द कर कर दे तो कृत्रिम उत्तेजना के जरिये रि से दिल धड़काया जा सकता है और यहीं से पेसमेकर का आविष्कार हुआ।

पेनिसिलिन- वैज्ञानिक अलेक्जेंडर फ्लेमिंग घाव भरने की दवाई बनाने के लिए शोध कर रहे थे लेकिन इसमें वो कामयाब नहीं हो पाए ऐसे में इन्होंने अपनी सभी दवाइयों को बाहर फेंक दिया लेकिन कुछ दिन बाद देखा तो पता लगा की आसपास के सभी बेक़्टेरिया नष्ट हो गए हैं और यहां से पेनिसिलिन इजात हुई।

इंक जेट प्रिंटर्स - एक बार एक केनन इंजीनियर ने अनजाने में अपने पेन पर आयरन रख दिया और देखा की इनके पेन से इंक निकलने लगी और इसके बाद ही इंक जेट प्रिंटर्स का आविष्कार हुआ।

एक्सरे- प्रख्यात वैज्ञानिक विलहम रोएंटगन एक समय में कैथोडिक रेज ट्यूब बनाने के आविष्कार में व्यस्त थे लेकिन तभी ८ नवंबर, १८९५ को इनके शोध के दौरान काम आ रहे अपारदर्शी कवर में से पीछे रखा पेपर दिखाई दे रहा था और इसी से आगे एक्सरे का आविष्कार हुआ।

आविष्कार - अविष्कारों से काफी समय पहले ही कैमरे का आविष्कार हो चुका था। अनेक शताब्दियों पूर्व लोग अंधेरे कमरे की एक दीवार में छोटा सा छेद करके उस छेद के माध्यम से कमरे के बारह की दृश्यावली से आनेवाली प्रकाश किरणों को अंधेरे कमरे के छेद के सामने वाली दीवार पर प्रेषित करते थे, जिससे वहां कमरे के बाहर के दृश्य की प्रतिमा दिखाई देती थी। इसे कैमरा ऑब्सक्यूरा का नाम दिया गया।

सत्रहवीं शताब्दी में जर्मनी के जोहान जेहन ने दो फीट लम्बा तथा एक फीट ऊंचा लकड़ी का बॉक्स बनाया जिसके आगे ट्यूब में लेंस लगाया गया। इसे आगे पीछे कर दृश्य को केंद्रित किया जाता। यही नहीं प्रकाश की मात्रा को नियंत्रित करने के लिए अपरचर की व्यवस्था भी थी। बाहरी दृश्य से प्रकाश की किरणें लेंस द्वारा बॉक्स के अन्दर लगे दर्पण से परावर्तित होकर बॉक्स के ऊपरी हिस्से में लगे पारदर्शी पर्दे पर प्रतिमा को अंकित कर देती जिस पर कलाकार ट्रेसिंग कागज रखकर उस प्रतिमा को उस कागज पर पेंसिल से अंकित कर लेता था। यही कैमरा ऑब्सक्यूरा बिना फिल्म का पहला कैमरा था। १८२६ में फ्रांस के जोसेफ नाइसेफोरे नीएप्से ने जेहन के इस कैमरे के महत्व और अभाव के कारण फिल्म की पूर्ति की। उन्होंने पियुटर की शीट पर एस्फाल्ट के घोल का लेप कर उसे कैमरा ऑक्ब्स्यूरा में फिल्म रूप में किया। यह विश्व का पहला कैमरा कहा जा सकता है जिसमें लेंस भी था और फिल्म भी। इस फिल्म पर विश्व का जो प्रथम चित्र लिया गया उसके एक्सपोजर में लगभग आठ घंटे लगे थे। अत्यधिक संवेदनशील प्लेट का निर्माण सन् १८७० में प्रारंभ हो गया। इसके साथ ही तीव्र शटर का निर्माण हुआ जो प्रकाश का नियंत्रण समय के संदर्भ में करने लगा। एडवर्ड मेब्रिज द्वारा बना हुआ जिलोटीन के ऐसे ही शटर की गति थी। ५०० सेकेंड अर्थात एक सेकेंड का ५०० वां अंश। १८८० में विविध प्रकार के कैमरों का निर्माण हुआ जिसमें एक ही प्लेट का एक साथ कई पोट्रेट के चित्र ले सकनेवाले बड़े कैमरे स्टीरियो कैमरे,

पेनोरेमिक कैमरे आदि थे। किन्तु इन सब कैमरों में सबसे बड़ा दोष यह था कि एक समय में एक ही प्लेट का प्रयोग हो सकता था तथा प्लेटें भारी व बड़ी होने का कारण कैमरे भी बड़े व भारी होते थे। इन्हें आसानी से लाया ले जाया भी नहीं जा सकता था।

इन दिनों जापान में बना निकांम एम.एम २ अपनी १/४००० के तीव्र शटर के कारण काफी चर्चित कैमरा है। वैसे आजकल व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के युग में विभिन्न कैमरा कंपनियां नित नये संशोधन कर उन्हें आकर्षक बना रही हे। अब तो शअर अपरचर फोकस सभी कुछ स्वचालित इलेक्ट्रोनिक तकनीक से नियंत्रित होता है आपको केवल शटर बटन दबाना होता है। आज के चर्चित कैमरों में है निकॉन एफ-३ पेंटेक्स सुपर प्रोग्रेस केनन-ए-१ आदि हैं।

आविष्कार ❋ आसमान में पक्षियों को उड़ते देखकर मनुष्य की भी चाह बनी रहती थी कि काश, वह भी इन पक्षियों की तरह ही उड़कर एक जगह से दूसरी जगह तक जा सकता। उड़ने की विधि पर कई वैज्ञानिकों ने काम किया, लेकिन सफलता मिली राइट बंधुओं को। अपनी चार साल की कठिन मेहनत के बाद आखिरकार इन्होंने हवाई जहाज बनाकर मनुष्य के उड़ने के सपने को साकार कर दिया।

मिला इंजन बनाने का ऑर्डर- १९०८ में बिल्बर राइट मशीन को फ्रांस ले गए। लेकिन फ्रांस की मीडिया ने इनका खूब मजाक उड़ाया। समाचार-पत्रों नेब बिल्बर राइट को लंबी गर्दनवाले एक पक्षी के रूप में चित्रित किया और उनकी भद्दी सी दिखनेवाली मशीन का भी मजाक उड़ाया। उसी दिन विल्बर ने हवा में ९१ मिनट उड़कर ५२ मील की दूरी तक उड़ने का कीर्तिमान बनाया। कुछ दिनों बाद उन्हें दो लाख फ्रेंक का पुरस्कार दिया गया और ३० इंजन बनाने का आर्डर भी दिया गया।

राइट बंधुओं का कमाल- राइट बंधुओं ने केवल हाईस्कूल तक शिक्षा पाई थी। इनमें कोई विशेष तकनीकी योग्यता नहीं थी। इनके पास अपने काम के लिए आवश्यक पैसे भी नहीं थे। ये साइकिल की दुकान चलाते थे। इनकी रुचि हमेशा यंत्रों में थी। किताबों में उड़ने के विषय में चल रहे प्रयोगों के बारे में पढ़कर राइट बंधुओं ने भी इस पर विचार करना शुरू किया और जहाज बनाने का निश्चय कर लिया।

उड़ने की विधि पर कई वैज्ञानिकों ने काम किया, लेकिन सफलता मिली राइट बंधुओं को। मनुष्य हमेशा से ही पक्षियों की भांति उड़ने की चाह रखता था और इसी चाह को पूरा करने के लिए बहुत से लोगों ने प्रयास किया। थॉमस अल्वा एडिसन ने जब चिड़ियों को कीड़े-मकोड़े खाकर उड़ते देखा तो उसने यह प्रयोग अपनी नौकरानी की बेटी पर किया उसे कुछ कीड़े-मकोड़े खिलाये, लेकिन वह उड़ने के बजाय बीमार पड़ गई।

पहला प्रयास- वैसे उड़ने के बारे में सबसे पहला प्रयास जर्मन के लीलि एंथल ने किया था। उन्होंने पंख के आकार की एक मशीन बनाई। उसने स्वयं को मशीन से कसकर बांधकर पहाड़ी और ऊंची इमारतों की चोटी से कूदता रहा, लेकिन उसे कोई अप्रत्याशित सफलता नहीं मिली। वह कुछ सेकंड ही उड़ पाता था। उसने अपना यह प्रयास पांच साल तक जारी रखा। इतना जरूर है कि इस बीच उसने वायु की धाराओं और उड़ने की समस्याओं पर अच्छा रिसर्च कर लिया। एक दिन जब वह जमीन से लगभग ५० फीट ऊपर उड़ रहा था, तब उसकी मशीन हवा के तेज झोंके की चपेट में आने से मर गया।

अमेरिका के एक प्रोफेसर लैंग्ली ने उड़ने से संबंधित बहुत काम किया, लेकिन वह भी सफल नहीं हो सकते। प्रोफेसर लैंग्ली के प्रयोगों ने लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचा। इसके बाद दुनिया के अनेक देशों में इसके लिए प्रयास किए जाने लगे। फ्रांस, जर्मनी, इंग्लैंड आदि देशों में हवाई जहाज बनाने के लिए रिसर्च होते रहे, लेकिन सफलता दो अमेरिकी बंधुओं ऑरविल और विल्बर राइट को मिली।

जारी रहा प्रयास- राइट बंधुओं के पास प्रयोग करने के लिए पैसों की कमी थी, फिर भी इन्होंने अपना प्रयास जारी रखा। सबसे पहले पक्षियों की उड़ान का अध्ययन किया और साथ ही तब तक बन चुकी सारी उड़ान मशीनों का भी अध्ययन किया। राइट बंधुओं ने हमेशा अपनी मशीनें स्वयं बनाई। उन्होंने सबसे पहले एक ग्लाइडर बनाया, जिसे वे पतंग की तरह उड़ाते थे। इसे लीवरों की सहायता से रस्सियां बांधकर नियंत्रित किया जाता था।

मानवयुक्त ग्लाइडर- राइट बंधुओं ने १९०३ में एक मानवयुक्त ग्लाइडर बनाया। इसे उन्होंने लीलि एंथल की ही भांति पहाड़ी से कूदकर उड़ाया। इस ग्लाइडर को हवा में उड़ाना तो आसान था, लेकिन उसका संतुलन बनाए रखना मुश्किल था। सुरक्षा की दृष्टि से प्रयोग जारी रखने के लिए वे नॉर्थ कैरोलाइना में एक एकांत स्थल में चले आए, जहां ऊंची रेतीली पहाड़ियां थीं। अगले दो सालों में उन्होंने लगभग दो हजार बार अपने ग्लाइडर में उड़ान भरी, जिनमें से सबसे लम्बी उड़ान ६०० फीट की दूरी तक गई। १९०३ में ही इन्होंने तरल ईंधन से चलनेवाली एक मोटर बनाई और उसका परीक्षण किया।

पहली उड़ान- इनकी पहली उड़ान केवल १२ सेकंड के लिए थी, लेकिन यह अब तक के इतिहास में पहली उड़ान थी, जिसमें एक मशीन की सहायता से मानव ने उड़ान भरी। इनकी चौथी उड़ान ५९ सेकंड की थी और उसने बारह मील की रफ्तार से चल रही हवा की दिशा में ८३५ फीट की दूरी तय की। १९०५ तक वे अपने प्रयोगों में इतने पारंगत हो चुके थे कि उन्होंने ३५ मील प्रति घंटे की रफ्तार से २४ मील की उड़ान भरी। १९०५ तक इनकी उपलब्धियों के बारे में किसी को भी नहीं पता था। जब लोगों ने उनकी २४ मील लंबी उड़ान के बारे में सुना तो लोगों को विश्वास नहीं हुआ।

राइट बंधुओं ने अपने योगदान से मनुष्य के उड़ने का सपना तो पूरा कर ही दिया, लेकिन इसमें क्रांति १९०९ में आई। ब्लेरिओट नामक एक फ्रांसीसी ने अपने विमान से इंग्लिश चैनल को पार किया। इसके बाद इंजनयुक्त एक बड़े गुब्बारे जेपेलिन ने २२० मील की दूरी तय की और ऑरविल राइट वर्जीनिया से नॉर्थ कैरोलाइना तक अपने विमान को उड़ा ले गए।

❋ राइट बंधुओं ने किया था हवाईजहाज का आविष्कार - हवाई जहाज का आविष्कार करनेवाले राइट बंधु बचपन से ही कल्पनाशील थे और अपनी कल्पनाओं की उड़ान में उन्होंने हवाई जहाज बनाने का सपना देखना शुरू कर दिया था।

अमेरिका के हटिंगटन स्थित यूनाइटेड ब्रेदेन चर्च में विशप के पद पर कार्यरत उनके पिता ने बचपन में उन्हें एक खिलौना हेलीकाप्टर दिया था जिससे दोनों भाइयों को असली उड़न यंत्र बनाने के लिए प्रेरित किया।

१७ दिसंबर १९०३ को पहली बार पूर्ण नियंत्रित मानव हवाई जहाज उड़ान को सफलतापूर्वक अंजाम देनेवाले ओरविल और विल्बुर राइट साइकिल की संरचना को ध्यान में रखकर अलग-अलग कल पूर्जों को जोड़कर हवाई जहाज का विकास करते रहे। उन्होंने कई बार हवा में उड़नेवाले ग्लाइडर बनाये और अंत में जाकर हवाई जहाज बनाने का उनका सपना सच हुआ।

दोनों को मशीनी तकनीकी की काफी अच्छी समझ थी जिससे उन्हें हेलीकाप्टर के निर्माण में मदद मिली। यह कौशल उन्होंने प्रिंटिंग प्रेसों, साइकिलों, मोटरों और दूसरी मशीनों पर लगातार काम करते हुए पाया था। दोनों ने १९०० से १९०३ तक लगातार ग्लाइडरों के साथ परीक्षण किया था। राइट बंधुओं को अपने सपने को साकार करने में उनके परिवार से भी पूरी मदद मिली। लेखिका पामला डंकन एडवर्ड्स ने अपनी किताब द राइट ब्रदर्स में लिखा है कि बिल्वुर ने कहा, हम खुशकिस्मत थे कि हमारा पालन पोषण ऐसे वातावरण में हुआ जहां बच्चों को उनकी बौद्धिक रुचियों और उत्सुकताओं की दिशा में काम करने की आजादी मिली हुई थी।

राइट बंधुओं की बात करते हुए दिल्ली विश्वविद्यालय के किरोड़ीमल कॉलेज में भौतिकशास्त्र के प्रोफेसर अगर कुमार झा ने कहा कि राइट बंधुओं ने हवाई जहाज के निर्माण में वर्षों की मेहनत की थी। वर्तमान में यातायात के सुगम बनानेवाला हवाई जहाज जैसा यंत्र उनकी वर्षों की कड़ी मेहनत का परिणाम है। हवाई जहाज के निर्माण में फ्लूड डायनामिक्स के सिद्धांतों का प्रयोग किया गया था।

झा ने काह, राइट बंधुओं की कोशिश थी कि किस तरह इस यंत्र को गुरुत्वाकर्षण बल द्वारा नीचे खींचे जाने से बचाया जाये। इसके लिए उन्होंने बार-बार प्रयोग किया। हवाई जहाज का वजन बार-बार कम किया ताकि हवा इसे खींच न ले जाए। उन्होंने इसके उड़ने की दिशा सही और संतुलित करने के लिए थ्री एक्सिस कंट्रोल थ्योरी का प्रयोग किया और अंत में सफल रहे।

उन्होंने कहा कि राइट बंधुओं के आविष्कार को लेकर विवाद भी हुए थे। फ्रांस की एक कंपनी ने भी इस तरह का आविष्कार करने का दावा किया, लेकिन १९०८ में पूरी दुनिया ने राइट बंधुओं के आविष्कार को मान्यता दे दी।

आविष्कार- वायुयान- अमेरिका के राइट बन्धु। आज से १०६ वर्ष पूर्व १७ दिसम्बर १९०३ को राइट भाइयों (ऑर्विल और विल्बर) ने इतिहास रचा और हवाई सफर की नींव डाली। उन्होंने स्वयं द्वारा बनायी गयी फ्लाइंग मशीन से पहली सफल उड़ान भरी। आर्विल ने सफलतापूर्वक १२० फीट तक उड़ान भरी और वापस जमीन पर लौटे। यह पहली उड़ान १२ सेकेंड की थी। यह उड़ान कोई ट्रिक या इत्तेफाक नहीं थी, इसे साबित करने के लिए उसी समय विल्बर ने १७५ फीट की उड़ान भरी। उत्साहित होकर ऑर्विल ने पुन: अपनी फ्लाइंग मशीन की कमान संभाली और लगभग २०० फीट की उड़ान पूरी कर रिकार्ड बनाया। बिल्बर का आत्मविश्वास बढ़ता गया और उन्होंने लगभग तीन सौ फीट की ऊंचाई तय की। तब भी सारी मशीनरी व एयरक्राफ्ट की कमांड पूरी तरह उनके नियंत्रण में रही। उसके बाद उन्होंने इसकी ऊंचाई चार-पांच सौ फीट की तब उन्हें थोड़ी असुविधा महसूस हुई।

राइट बन्धुओं को सफलता मिल चुकी थी। उन्होंने पहली इंजन चलित, लंबी और नियंत्रित हवाई उड़ान भर ली थी। इसके बाद उन्होंने अपनी खोज को और परिष्कृत किया। राइट बंधुओं ने वर्ष १८९९ में पहली मशीन बनाई। यह एक बाईप्लेन काइट थी। जिसमें विंग्स लगे हुए थे, जिन्हें यांत्रिक रूप से घुमाया जा सकता था। इसके बाद उन्होंने इंजन चलित पहली फ्लाइंग मशीन किटी हॉक बनायी, जिससे १७ दिसम्बर १९०३ की सुबह उड़ान भरकर इतिहास रचा।

❊ वाइपर का आविष्कार - बात सन १९०३ की है। उन दिनों कड़ाके की ठंड थी, मेरी एंडरसन न्यूयॉर्क घूमने गई थी। उस दिन बर्फबारी तो हो रही थी पर हल्की-फुल्की। मेरी ने अपनी छोटी सी कार में न्यूयॉर्क घूमने का मन बनाया। लेकिन बर्फबारी के चलते मेरी को अपनी कार हर बीस मिनट बाद रोकनी पड़ती थी। ड्राइवर कार को सड़क के किनारे लगाता और विंडशील्ड स्क्रीन (कार के सामनेवाले शीशे) को साफ करता फिर गाड़ी आगे बढ़ती और ऐसा करनेवाला सिर्फ मेरी का ड्राइवर ही नहीं था बल्कि दूसरे लोगों को भी ऐसा करना पड़ रहा था। आसमान से गिरती बर्फ की पर्त शीशे पर जम जाती इसलिए रास्ता देखने में काफी मुश्किल हो जाती थी। शायद यही वजह थी कि सड़क पर आज कारों की संख्या बहुत कम थी।

मेरी एंडरसन ने सोचा कि कोई ऐसी तरकीब होनी चाहिए जिससे गाड़ी का शीशा अंदर बैठे ही साफ किया जा सके और यात्रा में बार-बार रुकना न पड़े। मेरी ने कागज में एक अपनी तरकीब को उकेरना शुरू किया, जिसके अनुसार ड्राइवर चाहे तो एक हैंडिल घुमाकर गाड़ी के अगले शीशे बाहर से साफ कर सकता था। ड्राइवरों को यह तरकीब पसंद आई

उन्होंने हैंडिल को तार के जरिए जोड़कर बाहर एक चौड़ी फी सरीखी व्यवस्था कर दी। जाड़ों की समस्या हल हो जाने के बाद वे उस पूरी तरकीब को गर्मियों में निकालकर अलग कर देते थे। १९०४ में मेरी ने कार के शीशे पर दाएं-बाएं घुमानेवाले फी के किनारों पर रबर चढ़ाया और युक्ति को पेटेंट करवा लिया ताकि कोई उस जुगत की नकल न कर सके। हालांकि एंडरसन ने अपनी तरकीब किसी को नहीं बेची लेकिन १९१३ में जब मशहूर कार कंपनी फोर्ड की टी मांडल कार बाजार में आई तो उसमें मशीन से चलने वाले वाइपर लगे हुए थे। अब इन्हें हेंडिल घुमाकर हाथ से चलाने की जरूरत नहीं रही। विगत सौ सालों से करोड़ों कार चालक विकट बर्फबारी और मूसलाधार बारिश के दौरान आसानी से कार चला पाते हैं तो इसी वाइपर के चलते। कार के सफर को खराब मौसम में भी सुखद और निर्बाध बनाने का श्रेय मेरी एंडरसन को जाता है।

❋ मोबाइल का आविष्कार - दुनिया के पहले मोबाइल फोन का प्रदर्शन मोटरोला के डॉ. मार्टिन कूपर ने सन १९७३ में किया था। इन मोबाइल फोनों के पहले भी रेडियो फोन थे, पर उनमें और इस सेल्युलर फोन में अंतर है। वस्तुत: वायरलेस फोन काफी पहले से फौजी इस्तेमाल में आ रहे थे। उनका पहला नागरिक इस्तेमाल १७ जून १९४६ को अमेरिका के सेंट लुईंज, मिजूरी में बेल सिस्टम्स मोबाइल टेलीफोन सर्विस के नाम से एक कार से किया गया। इसे कार फोन का नाम दिया गया। इसका वजन था करीब ३६ किलोग्राम। दुनिया की पहली आटोमेटेड कार फोन सेवा १९६० में स्वीडन में शुरू की गई। इसके उपकरणों का वजन करीब ४० किलो था।

इसके बाद १९६२ में वैक्यूम ट्यूब्स की जगह ट्रांजिस्टर लगाकर कुछ और आधुनिक फोन सेवा शुरू की गई। १९७१ में एमटीडी फोन सेवा शुरू की गई जो १९८७ तक चली। पर यह कार फोन था। उस तरीके का हैंडसेट नहीं था, जैसा आजकल है। मार्टिन कूपर ने ३ अप्रैल १९७३ को सबसे पहले अपने प्रतिद्वंदी बैल लैब्स के डॉ. जोएल एस एंजेल को फोन करके पहले मोबाइल हैंडसेट का प्रदर्शन किया। दुनिया की पहली कॉमर्शियल सेल्युलर फोन सेवा १९७९ में जापान में एनटीटी ने तोक्यो में शुरू की। इसके बाद १९८१ में जापान में डेनमार्क, फिनलैंड, नॉर्वे और स्वीडन में मोबाइल फोन सेवाएं शुरू हो गईं। इसका नाम था नोर्दिक मोबाइल टेलीफोन (एनएमटी)। १९८३ में अमेरिका ने १- जी टेलीफोन नेटवर्क अमेरिटेक नाम से शिकागो में शुरू किया। भारत में पहली मोबाइल फोन सेवा १५ अगस्त १९९५ में दिल्ली में गैर व्यावसायिक तौर पर शुरू की गई।

❋ पेन्सिल का आविष्कार- पेन्सिल हमारे लिखने-पढ़ने में जितनी उपयोगी सिद्ध हुई है, उसके आविष्कार का इतिहास भी उतना ही दिलचस्प है।

सोलहवीं सदी में इंग्लैण्ड के बोरोडिल नामक स्थान पर तूफान आया, जिससे एक विशालकाय पेड़ गिर गया। इस वृक्ष की जड़ से बढ़िया किस्त का ग्रेफाइट प्राप्त हुआ। ग्रेफाइट ग्रीक शब्द ग्रेफिन से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है लिखना। ग्रेफाइट का प्रयोग लिखने के लिए किया जाता है। बाद में वृक्षों की जड़ों में पाए जानेवाले ग्रेफाइट को काटकर निकाल लिया गया तथा इसकी छड़ों से लिखने का कार्य लिया जाने लगा। हाथ काले न हों, इसलिए ग्रेफाइट की छड़ों को धागे से लपेट दिया जाता था। अठारहवीं शती में फ्रान्स के एक रसायन शास्त्री जॉनकॉल ने ग्रेफाइट को बारीक पीस कर उसमें सफेद खड़िया मिलाई, पानी डालकर आटे जैसे गूंथ लिया और आग पर पकाया इस प्रकार बने पदार्थ को लेड़ की संज्ञा दी गई। अमरीका के विलियम मनरो ने सन १८१२ ई में सबसे पहले मशीन द्वारा पेन्सिल का कवर बनाया। विलियम मनरो ने लकड़ी को दो खांचेदार हिस्सों के बीच में से बराबर काटा। अब इन कटी हुई पट्टियों के बीच में लेड को रख कर

उसे गोंद से चिपका दिया। इस प्रकार लकड़ी की पेन्सिल तैयार की जाने लगी। आजकल ग्रेफाइट लगभग चालीस अन्य विभिन्न प्रकार के पदार्थों से तैयार किया जाता है। फिर इस मिश्रण को मशीन में डालकर तार के रूप में निकाला जाता है। इस तार को जरूरत के मुताबिक छोटे-बड़े टुकड़ों में काट लिया जाता है। बाद में लकड़ी की नलीनुमा पट्टियों में रखकर चिपका दिया जाता है। आवश्यकतानुसार लम्बाई में इन्हें काटकर सुन्दर रंगों से सुसज्जित कर विभिन्न नाम छापकर पेन्सिल विब्री के लिए तैयार होती है।

❋ कलम का आविष्कार - अर्थात पेन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के पेन्ना शब्द से हुई है, जिसका अर्थ होता है पंखा। प्राचीन समय में मनुष्य जंगली गुफाओं में दीवारों पर नुकीली चीजों से सिर्फ लकीरें बनाता था। वैसे आज के इस पेन के रूप में आने में हजारों वर्ष लग चुके हैं। सर्व प्रथम इसका निर्माण मिस्र के लोगों ने किया। वह पेन लकड़ी की बनी हुई थी, जिसपर तांबे से बनी निब थी। उसके पश्चात लगभग चार हजार वर्ष पहले यूनान में पेन का प्रयोग हुआ। कागज के आविष्कार हो जाने के उपरांत मनुष्य ने पक्षियों के पंख से लिखना शुरू किया। १७८० में इंग्लैंड में पहली बार स्टील के पेन बने। १८८४ में अमेरिका के एल.ई.वाटरमैन ने फाउंटेनपेन बनाया, जिसकी निब चौदह कैरेट सोने की बनी थी और इसका ऊपरी सिरा इरीडियन धातु से बनाया गया था। इसके बाद प्वाइंटपेन का आविष्कार हुआ, फिर इसमें दिनों-दिन सुधार होता गया।

❋ ट्रांजिस्टर की खोज - ट्रांजिस्टर की खोज के कारण ही इलेक्ट्रॉनिक युग की शुरुआत हुई है। ट्रांजिस्टर और धातु की अति संवाहकता के सिद्धांत ने इलेक्ट्रॉनिक की दुनिया ही बदल दी। अमेरिकी वैज्ञानिक डॉ. जॉन बारदिन को इन खोजों का जनक कहा जाता है। ट्रांजिस्टर एक छोटा सा उपकरण है, जिसका इस्तेमाल कम्पयूटर, कैलकुलेटर, रेडियो, टीवी आदि में किया जाता है। ट्रांजिस्टर की खोज से पहले एक नलीनुमा उपकरण का इस्तेमाल किया जाता था। लेकिन इससे रेडियो, टीवी जैसे उपकरण काफी भारी और बेहूदा नजर आते थे। ट्रांजिस्टर की खोज से इन उपकरणों के निर्माणक्षेत्र में नई क्रांति आ गई। इससे पॉकेट कैलकुलेटर्स, तेजी से चलनेवाले कम्प्यूटर, बैटरी वाले रेडियो और टीवी आदि उपकरण बनाए जाने लगे। ट्रांजिस्टर का आकार काफी छोटा होता है। सुरक्षा आवरण समेत उसका आकार लगभग पेंसिल के साथ इस्तेमाल किए जानेवाले रबर जितना होता है।

❋ साइकिल के आविष्कार की कहानी - साइकिल आज हम सबके जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुकी है। सात साल के बच्चे से लेकर सत्तर साल के बूढ़े साइकिल का इस्तेमाल करते हैं। इसका आविष्कार रेलगाड़ी और पानी के जहाज के बाद हुआ। १८०८ ई. साइकिल हाथ तथा पैर से जमीन पर धक्के मारकर चलायी जाती थी किन्तु १८१८ में जर्मनी में बैरनबोध ने इसमें थोड़ा परिवर्तन किया एवं डंडे मारकर साइकिल चलाई जाने लगी। जिसके कारण उकसा नाम डंडे का घोड़ा रखा गया। इस समय साइकिल का पहिया एवं अन्य औजार लकड़ी के बने होते थे। फिर स्काटलैण्ड निवासी किर्क पैट्रिक मैकमिलन ने, जो पेशे से लोहार था, १८४० में इसमें परिवर्तन करके दोनों पहियों में संशोधन किया और साइकिल को नियंत्रित करने हेतु ब्रेक का भी निर्माण किया। आधुनिक साइकिल बनी १८८५ में उस समय दोनों पहिये बराबर हो गये। इसमें चेन भी जोड़ दी गयी इससे साइकिल की रफ्तार बढ़ गयी।

तथा एक ब्रेक होने के कारण दुर्घटना का डर भी बहुत कम रहा फिर भी उस समय तक साइकिल लकड़ी की होती थी। टायर की खोज १८८५ में हो गई थी। किन्तु इस पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। वास्तव में साइकिल में टायर का उपयोग १८८६ में हुआ। वह भी स्काटलैंड के निवासी डनलप के प्रयास से। वह चाहता था कि उसके बेटे को साइकिल के कारण

चोट न लगे। तब डनलप ने साइकिल को सुगम एवं आरामदेह बनाने के उद्देश्य से सर्वप्रथम हवा वाले साइकिल टायर का निर्माण किया। तभी से साइकिल की दुनिया में क्रांति आ गई।

❋ साइकिल- विश्व में सबसे ज्यादा इस्तेमाल होनेवाला वाहन साइकिल है। पैडल से चलाई जानेवाली साइकिल को सबसे पहले किर्क पैट्रिक मैकमिलन ने १८३९ में बनाया था। उसके बाद से कई बड़ी कंपनियों ने भी अपनी साइकिल बनाई।

❋ दो पहियोंवाली पहली साइकिल जर्मनी में बनी थी। अविष्कारक थे बेरोन कार्ल वॉन ड्रेस डी साउवून। वर्ष १८१७ में उन्होंने १४ किमी. तक इसकी सवारी की थी। १८१८ में इस अनोखी मशीन को लोगों ने पहली बार पेरिस में लगाई गई एक प्रदर्शनी में देखा। वॉन अपनी सवारी को रनिंग मशीन कहते थे। दरअसल, यह जमी पर दौड़ लगानेवाली सवारी थी, जो काठ यानी लकड़ी की बनी थी इसमें पैंडल नहीं था। इसे चलाने के लिए साइकिल की सीट पर बैठकर चालक को जमीन पर दौड़ लगाना पड़ता था। रनिंग मशीन की सवारी भले ही थकाऊ थी, लेकिन उस समय यह काफी महंगी मिलती थी। इसे समाज के सभ्रांत और संपन्न लोग ही खरीद सकते थे। इसे एक नाम भी दिया गया- हॉबी हॉर्सेस।

बाइसिकल एक फ्रांसिसी शब्द है। वर्ष १८६० में पहली बार फ्रांस में ही दो पहियों वाली सवारी को बाइसिकल या साइकिल कहा गया। अबाउट डॉट कॉम के अनुसार, फ्रांसीसी पिता-पुत्र की जोड़ी पियरे ऐंड अर्नेस्ट को आधुनिक साइकिल का अविष्कारक माना जाता है। यह दो नहीं, तीन पहियों वाली साइकिल थी। उसे उन्होंने १८६७ में बनाया था।

वर्ष १८७० में काठ की साइकिल की जगह धातु की साइकिलें बनने लगी। इनका अगला पहिया पिछले पहिए से बड़ा होता था। धारणा थी कि अगला पहिया जितना बड़ा होगा, साइकिल की गति उतनी ज्यादा होगी।

बड़े पहिये वाली इस साइकिल की सवारी सुरक्षित नहीं थी। यह अक्सर दुर्घटनाग्रस्त हो जाया करती थी। यही वजह थी कि इसे डेंजर टॉय यानी खतरनाक खिलौना कहा जाता था। कुछ इतिहासकार पैडल के अविष्कार का श्रेय स्कॉटलैंड के लुहार किर्कपैट्रिक मैकमिलन को देते है। इसका अविष्कार १८१२ से १८७८ के बीच किया गया था।

वर्ष १८८० के आसपास जब चैन का अविष्कार किया गया, तो साइकिल के पहिये एक जैसे बनाये जाने लगे। इंग्लैंड के निवासी हैंस रोनाल्ड ने चेन का अविष्कार किया था। १८९० के मध्य से बीसवीं सदी तक की अवधि को गोल्डन एज ऑफ बाइसिकल कहा जाता है। इसी समय साइकिल को नई शक्ल मिली। बराबर आकार के पहिए, आगे स्टीयरिंग और पहियों में चेन इसी दौरान लगाया गया। अब साइकिल चलाना सुरक्षित था। सेंट हेलेन स्कूल से ग्रेजुएशन करने वाले छात्रों को यूनिसाइक्लिंग यानी एक पहिए वाली साइकिल चलाना सीखना होता है।

❋ मोटरसाइकिल- अरनेस्ट और पियरे मिशॉक्स ने साइकिल में एक छोटा भाप का इंजन लगाकर १८६८ में मोटर साइकिल की शुरुआत की। बाद में १८८५ में गोट्टिब डायमलर ने पेट्रोल के इंजन से चलनेवाली मोटरसाइकिल बनाई।

❋ छाता- सर्दी, गर्मी और बरसात यानी हर मौसम में अपनी छटा बिखेरनेवाले छाते का अविष्कार आज से चार हजार साल पहले हुआ था और आधुनिक समय में भी यह विभिन्न रंग-रूपों और आकार में अपनी लोकप्रियता बरकरार रखे हुए है। इतिहासकारों का कहना है कि छाते की प्राचीनता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि मिस्र आसरिया, यूनान तथा चीन की प्राचीन कलाकृतियों में छाते की छवि स्पष्ट तौर पर दिखाई देती है। इसका मतलब यह है कि छाता प्राचीन समय में भी बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया जाता था। भारत में छाते का प्रचलन कब से है इसके बारे में कोई ऐतिहासिक दस्तावेज उपलब्ध नहीं है लेकिन भगवान श्रीराम की जमीन से छाते का इस्तेमाल किए जाने के प्रमाण मिलते

हैं। प्राचीन भारत में राजा-महाराजा या शाही परिवार के सदस्य जब भी महल से बाहर निकलते थे तो दास उनके सिर पर छाते की छांव करके चलते थे। इसलिए किसी जमाने में छाता शाही सम्मान का भी प्रतीक होता था। चांदनी चौक की मशहूर क्लासिक अम्ब्रेला कंपनी के राधेश्यामजी ने बताया कि उनके यहां २२ रुपये से लेकर पांच सौ रुपये तक का छाता मिलता है और वह हर प्रकार के छाते बनाते हैं जिनमें बच्चों, बुजुर्गों और महिलाओं द्वारा इस्तेमाल किए जानेवाले छाते विशेष हैं। इन छातों का इस्तेमाल शुरू में धूप से बचने के लिए किया गया था और चीनियों ने सबसे पहले अपने छातों को बारिश से सुरक्षा प्रदान करने का उपकरण बनाने के लिए उन्हें जलरोधी बनाया था। इसके लिए उन्होंने छाते पर मोम की परत चढ़ाई। अंग्रेजी के अम्ब्रेला शब्द की उत्पत्ति लैटिन शब्द अम्बरा से हुई जिसका अर्थ होता है छाया। १६ वीं सदी से शुरू होकर छाता पश्चिमी देशों में लोकप्रियता के नए सोपानों पर चढ़ता चला गया। उत्तरी यूरोप के अधिकतर देशों में बारिश के दिनों में छातों का बहुतायत इस्तेमाल किया जाता है। शुरुआत में छाते को महिलाओं के एक सौंदर्य उपकरण के रूप में देखा जाता था। हिंदी फिल्मों में भी छाते का काफी इस्तेमाल किया गया है लेकिन वह जरूरत कम और सजावटी सामान के तौर पर ज्यादा दिखाई देता है। फारसी यात्री और लेखक जोनास हानवे (१७१२-८६) ने पहली बार इंग्लैंड में सार्वजनिक रूप से ३० साल तक छाते का इस्तेमाल किया और उन्होंने छाते को पुरुषों के बीच लोकप्रिय बनाया।

❋ ब्लैकबोर्ड- ब्लैकबोर्ड का आविष्कार आज से लगभग दो सौ साल पहले हुआ था। इसका आविष्कार स्कॉटलैंड के भूगोल के शिक्षक़ जेम्स विलेन ने किया था। असल में उन्हें चित्रों के बिना अपने स्टूडेंट्स को भूगोल समझाने में परेशानी होती थी। सन १८१४ की बात है। दोपहर में वे मैदान में बैठे थे। तभी अचानक उनकी नजर सामने लगे पेड़ पर गई। उस पेड़ के तने पर किसी नुकीली चीज से कोई आकृति बनी हुई थी। यह देखकर जेम्स के मन में अनोखा विचार आया। उन्होंने तुरंत ओक और फर्न से कुछ लकड़ियों को चीरा और छीलकर एक चौकोर बोर्ड बना दिया। यह बोर्ड काले रंग का था। शायद, इसलिए इसका नाम ब्लैकबोर्ड पड़ गया। जेम्स ने खड़िए से इस पर कुछ आकृतियां बनाईं, जो साफ नजर आ रही थी। इस तरह उनका प्रयोग सफल हो गया। अब जेम्स इस ब्लैकबोर्ड को अपने स्कूल में लगाकर इस पर चित्र बनाकर बच्चों को पढ़ाने लगे। शुरू में लोगों ने उनकी हंसी उड़ाई पर बाद में सभी इसका उपयोग करने लगे।

आज ब्लैकबोर्ड एक जरूरी चीज बन गया है। आपको जितनी जरूरत कॉपी-किताब, पेन और टीचर की होती है, उतनी ही ब्लैकबोर्ड की भी।

❋ सुश्रुत को सर्जरी के पिता के तौर पर देखा जाता है। २६०० वर्ष पूर्व उन्होंने फ्रैक्चर, सर्जरी के बारे में जानकारी दे दी थी। यही नहीं, चरक जिन्होंने २५०० वर्ष पूर्व आयुर्वेद की खोज की थी, उसे मानव द्वारा खोजी गई पहली चिकित्सा पद्धति के तौर पर माना जाता है।

❋ भारत ने संख्या पद्धति का आविष्कार किया था।

❋ लिफ्ट के आविष्कार ओटिस है।

❋ माचिस की खोज १८२७ में ब्रिटिश वैज्ञानिक जॉन वाकर ने की।

❋ पेन्सिलिन की खोज एलेक्जेण्डर फ्लेमिंग ने की थी।

✻ माइक्रोफेन का अविष्कार सन् १८७३ में अमेरिका के डेविड हग्स नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ टेलीफोन का अविष्कार सन् १८७५ में अमेरिका के ग्राहम बैल नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ आंतरिक दहन इंजन का अविष्कार सन् १८७६ में जर्मनी के निकोलस आटो नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ ग्रामोफोन का अविष्कार सन् १८७८ में अमेरिका के टामस अल्वा एडीसन नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ विद्युत प्रेस का अविष्कार सन् १८८२ में अमेरिका के एच.डब्ल्यू सीले नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ फाउन्टेन पेन का आविष्कार सन् १८८४ में अमेरिका के वाटरमैन नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ मोटर साइकिल का आविष्कार १८८४ में ब्रिटेन के एडवर्ड बटलर नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ आधुनिक बाइसिकल का आविष्कार सन् १८८४ में ब्रिटेन के स्टार ले नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ पेट्रोल चलित मोटरकार का आविष्कार सन् १८८४ में जर्मनी के कार्लबेन्ज नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ साइकिल टायर का आविष्कार सन् १८८८ में स्कॉटलैंड के डनलप नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ हेलीकाप्टर का आविष्कार सन् १९३९ में इगोर सिकीस्की ने किया था।

✻ रोल फिल्म फोटोग्राफी का आविष्कार सन् १८८८ में अमेरिका के जार्ज ईस्टमैन नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ कैमरे का अविष्कार सन् १८८९ में ब्रिटेन के विलियम एफ. ग्रीन नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ वायरलेस का आविष्कार सन् १८९० में इटली के मारकोनी नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ ट्रैक्टर का अविष्कार सन् १८९२ में अमेरिका के फोरमिच नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ अमेरिका का पहला तेल कुआं १८५९ में इडविन ड्रेक ने खोदा।

✻ बारूद का आविष्कार चीन में ९५० में हुआ।

✻ एक्स रे का आविष्कार डब्ल्यू के रौंटजन ने किया और आविष्कार के तुरंत बाद प्रथम चित्रण अपनी पत्नी के हाथ का किया।

✻ शॉर्टहैंड का आविष्कार सन् १९१७ में इटली के पिट्समैन नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ लॉलीपॉप का आविष्कार ब्रैडली स्मिथ कैंडी इस कंपनी ने किया था।

✻ आइस्क्रीम का आविष्कार एक फ्रांसीसी नागरिक गेराल्ड टिसैन ने १६२० में किया था।

✻ न्युयार्क के निवासी वाल्टर हंट ने १८४९ में सेफ्टिपिन का आविष्कार किया था।

✻ वाटर प्रूफ रबड़ का आविष्कार सन् १८१९ में स्कॉटलैंड के चार्ल्स मैकिन्टोश नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ रेफ्रीजरेटर का आविष्कार सन् १८३४ में ब्रिटेन के जे. पाकिन्स नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ रिवाल्वर का आविष्कार सन् १८३५ में अमेरिका के सैम्यूल कोल्ट नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ फोटोग्राफी का आविष्कार सन् १८३७ में फ्रांस के एल. टैक्यूरे नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ साइकिल का आविष्कार सन् १८३९ में स्कॉटलैंड के मैकमिलन नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ टाइपराइटर का आविष्कार सन् १८६८ में अमेरिका के शोल्ज गेटलिंग नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ आन्तरिक दहन इंजन का आविष्कार सन् १८७६ में जर्मनी के निकोलस आटो नामक व्यक्ति ने किया था।

❋ स्टीम बोट का आविष्कार रॉबर्ट फुल्टॉन को जाता है, लेकिन इसके दस साल पहले जेम्स रमसे और जॉन फिच ने भाप की मदद से नाव को दौडाया था। १७८५ में जॉन फिच ने स्टीमबोट का सफल परीक्षण किया। १७९० में उसने अपनी स्टीम शिप लाइन कम्पनी खोली और लोगों को उसमें यात्रा करने के लिए प्रोत्साहित किया। मगर अपने वक्त से आगे फिच की खोज को किसी ने नहीं अपनाया और वह दिवालिया होकर १७८९ में इस दुनिया से चला गया। १८०७ में रॉबर्ट फुल्टॉन ने नार्थ रिवट स्टीमबोट के नाम से इसका पेटेंट करवाकर अपनी नैया पार लगा ली।

❋ जर्मनी के इंजीनियर गोटलीब डायमलर ने १८८५ में विश्व की सबसे पहली मोटरसाइकिल का आविष्कार किया था।

❋ आग का अविष्कार पुरा-पाषाण काल में एवं पहिए का नव-पाषाणकाल में हुआ।

❋ कृषि का अविष्कार नव-पाषाणकाल में हुआ। प्रागैतिहासिक अन्न उत्पादक स्थल मेहरगढ़ पश्चिमी ब्लुचिस्तान में अवस्थित है। कृषि के लिए अपनाई गई सबसे प्राचीन फसल गेहूं एवं जौ थी।

❋ इलैक्ट्रिक चेयर की खोज डेंटिस्ट ने की थी।

❋ मोबाइल फोन हो या पानी की बाल्टी, एरोप्लेन हो या पेन, आज प्लास्टिक हमारी जिंदगी का अहम हिस्सा है। इसकी वजह भी खास है। लकड़ी तथा कागज की तरह प्लास्टिक सड़ता-गलता नहीं है तथा लोहे की तरह इसमें जंग नहीं लगती। इससे निर्मित वस्तुएं यदि गिर भी जाएं तो जल्दी टूटती नहीं हे। यहां तक कि बिजली के खतरों से बचने के लिए उपकरण प्लास्टिक से ही बनाए जाते हैं।

सेलुलॉयड- प्लास्टिक का निर्माण सर्वप्रथम वर्ष १८६८ में अमेरिका के प्रसिद्ध वैज्ञानिक जॉन वेसली हयात द्वारा किया गया था। उसने हाथी दांत के विकल्प के रूप में जो पदार्थ बनाया, उसे नाम दिया सेलुलॉयड। सेलुलॉयड से शुरू-शुरू में नकली दांत, कमीज के कॉलर इत्यादि का निर्माण किया जाने लगा। कुछ समय बाद इससे फोटोग्राफिक फिल्म स्वचालित वाहनों हेतु खिड़कियों के पर्दे तथा विंडस्क्रीन इत्यादि वस्तुएं बनाई जाने लगीं।

उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में विल्हेलम फ्रिस्क तथा एडोल्फ स्पिटलर नामक दो जर्मन रसायन शास्त्रियों ने ब्लैक बोर्ड के निर्माण हेतु स्लेट का विकल्प ढूंढने का प्रयास शुरू किया। कई प्रयोगों के बाद उन्होंने गैलालीथ का निर्माण करने में सफलता प्राप्त की। वर्ष १९०० में जर्मनी तथा फ्रांस में इस प्लास्टिक का व्यावसायिक उत्पादन प्रारंभ हो गया। गैलालीथ काफी उपयोगी साबित हुआ तथा इससे कई वस्तुएं बनाई जाने लगीं।

प्लास्टिक के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले एक अन्य प्रमुख वैज्ञानिक थे बेल्जियम मूल के अमेरिकी नागरिक डॉ. लियो बेकलैंड। वर्ष १९०९ में बेकलैंड एक ऐसा प्लास्टिक निर्मित करने में सफल हुए जिसका उपयोग कई उद्योगों में किया जा सकता था। बेकलैंड के नाम पर ही इस नए प्लास्टिक का नामकरण बेकेलाइट किया गया। इसे ताप एवं दाब के प्रभाव से ढालकर विभिन्न आकृतियां प्रदान की जा सकती थीं। घोल के रूप में इस पदार्थ का उपयोग लकड़ी के तख्तों, कपड़ों तथा कागज इत्यादि को चिपकाने के लिए एडहेसिव के तौर पर किया जा सकता है।

❋ कैसे हुआ आविष्कार- लीनेक ने स्टेथोस्कोप का आविष्कार १८१६ में किया था। पहले डॉक्टर किसी मरीज की जांच के लिए उसके सीने के पास कान लगाकर धड़कनें सुनते थे। लेकिन जब हार्ट की किसी समस्या से जूझ रही महिला की जांच कर रहे थे तो उन्हें थोड़ी झिझक महसूस हुई और दिमाग में यह यंत्र विकसित करने का विचार आया।

१७ वीं कला का जीव भूमापुरुष

परम पुरुष सबका नियंता, निराकार, निर्गुण, अलेप, कभी भी किसी प्रकार का अवतार ग्रहण करके किसी भी लोक में नहीं आता। जिसका कोई धर्म, जाति, वर्ण, सम्प्रदाय, पंथ इत्यादि नहीं है। वह सर्वेश्वर, सर्वोच्चज्ञानी, विकार रहित, सभी कलाओं के जीवों का गुणधर्म अपने में आरोपित करनेवाला, सदैव दिव्य, ज्योतिर्मय, सर्वशक्तिमान, असीमित ऊर्जाओं का भंडार ऐसा परमशक्ति। असल में परम शक्ति को मानने में कहीं मतभेद या विरोध नहीं है बल्कि परम शक्ति की व्याख्याएं अलग-अलग हैं। परम सत्ता को मानते सभी हैं, बस उसको जानने या उस तक पहुंचने की पद्धति अलग-अलग है। यह उसी तरह है जैसे बहुत सारे मुसाफिरों की मंजिल तो एक है, पर उस तक पहुंचने के मार्ग अलग-अलग हैं। सारे ब्रह्माण्ड का रचयिता तो एक ही है, वह तो एक ही नूर है, एक ही प्रकाश है, एक ही चेतना है, एक ही शक्ति है और एक ही सत्ता है। उसकी निराकार रूप में वंदना करें या साकार स्वरूप की आराधना करें, उसे शून्य के रूप में मानें या उसका ध्यान करें, उसे नाम से स्मरण करें या किसी पूजा घर में जाकर प्रणाम करें। सच्चे मन से जैसी जिसकी मान्यता हो, उसे पुकारें अर्चना करें या शीश नवायें, हमारी यह भक्ति उसी एक नूर के लिये हैं।

जैसे विभिन्न देशों में या विभिन्न समाजों में पिता को पुकारने के तरीके अलग-अलग हैं कहीं बापू, कही पापा, कही डैडी तो कहीं अब्बा लेकिन यह सारे शब्द तो जन्मदाता पिता के लिये ही हैं। उसी तरह अलग-अलग पद्धति से पूजा होने पर परमात्मा अनेक नहीं हो जाते। जैसे सारी नदियां अन्त में समुद्र में जाकर मिल जाती हैं उसी तरह सारे धर्म या पंथ भी हमें ईश्वर तक ही ले जाते हैं। कभी-कभी हर आदमी यह सोचता है कि जब परम सत्ता एक है, फिर धर्म क्यों अलग-अलग हैं। उनमें भेद क्यों है? आपस में विरोध क्यों है? अगर हम धर्म की दृष्टि से देखें तो दुनिया में मनुष्य या समाज के दो ही अलग-अलग वर्ग बनते हैं। एक तो वे जो परमात्मा में आस्था रखते हैं दूसरे वे जो परमात्मा को नहीं मानते, यानी नास्तिक हैं। सारी दुनिया में कुछ देश या कुछ समाज ऐसे भी हैं जो ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं रखते। ऐसे नास्तिक मनुष्यों या समाजों में धार्मिक चेतना जगाने के लिए अगर धर्म प्रचार के माध्यम से कार्य किया जाये तो वह एक सराहनीय कदम होगा। अंधकार में ज्योति, जगाने का कार्य होगा। ऐसे देशों, समाजों या मनुष्यों के बीच अगर कोई भी धर्मावलंबी अपने धर्म का प्रचार करे, या नास्तिक लोगों को किसी भी धर्म की राह बताई जाये या जो उन्हें परमात्मा को समझने के लिए प्रेरित करे, जो उनमें परमसत्ता के लिए आस्था जगाए तो वह मानवता की ही सेवा होगी, इसे ही महान धार्मिक कार्य कहा जाता है। दुनिया के अधिकांश समाज तथा व्यक्ति किसी ना किसी धर्म के अनुयायी हैं। अलग-अलग मतों के माध्यम से परम शक्ति या परमात्मा को मानते हैं। दुनिया के अधिकतर लोग इस परम शक्ति ईश्वर की अपने-अपने तरीके से पूजा पाठ करते हैं। हमारे धर्म बेशक अलग-अलग हैं, पर हमारा लक्ष्य एक ही है। सभी धर्म या पंथ हमें परमपिता परमात्मा की ओर ले जाते हैं। जब सभी धर्म का लक्ष्य एक ही है तो फिर कोई अच्छा या बुरा कैसे हो सकता है? एक ही दिशा में जानेवाली सभी राहें महान है। असल में धर्म आदमी को आदमी के नजदीक लाने का सबसे प्रेम पूर्ण माध्यम है। यही सम्पूर्ण मानवता के कल्याण का माध्यम भी है। जो भी व्यक्ति, समाज या देश ईश्वर में विश्वास रखते हैं, वे सदैव सही मार्ग पर चलते हुए पूरे समाधान के साथ अपना जीवन बिताते हैं। वे खुद भी सम्पन्न होते हैं तथा औरों को भी सम्पन्नता का मार्ग दिखाते हैं। वहीं जो व्यक्ति समाज या ईश्वर में आस्था नहीं रखते, वे अपनी संपन्नता अधिक समय तक कायम नहीं रख सकते। ईश्वर में आस्था रखना ही विश्वशांति, सुख एवम समृद्धि के लिए बहुत अच्छा मार्ग है।

भौगोलिक ज्ञान

❊ महासागर, सागर, समुद्र - ❊ समुद्र - करोड़ों सालों से है समुद्र का पानी एक-सा खारा - समुद्र में जो नमक है, उसका अधिकांश भाग करोड़ों सालों के दौरान नदियों द्वारा वहां पहुंचाया गया है। जब समुद्र का पानी बाष्पीकृत होता है, तो वह हवा में उठ कर बादल बन जाता है और यही बादल जमीनी इलाकों में पहुंच कर वर्षा के रूप में बरसता है। बरसते समय उसका संपर्क हवा में मौजूद कार्बन डाइऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड आदि गैसों से होता है। ये गैसें पानी में घुल जाती हैं। जिससे वर्षा जल हल्का-सा अम्लीय हो जाता है। जब यह अम्लीय जल चट्टानों और जमीन पर गिरता है, वह उनमें मौजूद लवणों को घुला देता है। जब सतह से यह पानी बहकर नदियों में पहुंचता है, तो नदी के पानी में भी यह लवणांश आ जाता है, पर लवणांश बहुत कम होने से हमें नदी का पानी मीठा ही लगता है। नदियों का यह लवणयुक्त पानी समुद्र में पहुंचता है। इस तरह धीरे-धीरे करोड़ों सालों से नदियों द्वारा लाया गया नमक समुद्र में इकट्ठा होता आ रहा है। समुद्र के तल में भी चट्टानें मौजूद हैं, जिनके लवण भी समुद्र जल में घुलते रहते हैं। इसी तरह समुद्रों के नीचे ज्वालामुखी भी हैं जो समय-समय पर फटकर लावा और क्लोरीन, सल्फर डाइऑक्साइड आदि गैसें छोड़ती रहते हैं। समुद्र में सोडियम आदि पदार्थ भी हैं। इनके साथ क्लोरीन आदि की अभिक्रिया से लवण बन जाते हैं। खाने का नमक सोडियम और क्लोरीन का यौगिक ही होता है। तो इस तरह भी समुद्र में नमक बनता रहता है। समुद्र जल में विद्यमान नमक तो उसी में रहता है, पर सूर्य की गर्मी से समुद्र का जल वाष्पीकृत होकर समुद्र से बाहर आता रहता है और आकाश में घनीभूत होकर बादल बन जाता है। यह वाष्प शुद्ध जल होता है, यानी उसमें लवणांश नहीं रहता। इस तरह समुद्र का पानी तो निरंतर पुनश्चक्रित होता रहता है, पर लवणांश समुद्र में बस जमा ही होता जाता है। इन्हीं प्रक्रियाओं के कारण करोड़ों वर्षों में समुद्र जल खारा हो गया है।

समुद्र के अंदर ऐसी कई प्रक्रियाएं होती रहती हैं, जिनके कारण समुद्र जल का लवणांश समुद्र तल में निक्षेपित भी होता रहता है। इसमें कुछ शल्कधारी जीव-जंतु भी योगदान करते हैं। ये जीवधारी अपना खोल बनाने के लिए समुद्र जल से लवणांश लेते रहते हैं। जब ये मरते हैं, तो इनका खोल समुद्र के तल में इकट्ठा होने लगता है और बहुत समय बीतने पर चूना पत्थर में बदल जाता है। भू-सतह के हलचल के दौरान चूना पत्थर की परतें कहीं से कहीं पहुंच जाती हैं, यानी समुद्र से बाहर निकल जाती हैं। इनका खनन करके ही हम घर की दीवारों में लगानेवाला चूना प्राप्त करते हैं।

जब भी समुद्र में तूफान आने की घटना घटने का अंदेशा होता है उस समय मौसम विभाग वाले मछुआरों को समुद्र के पास न जाने की हिदायत दे देते हैं। इन्हीं तूफानों में से एक है, समुद्री ज्वार भाटा। समुद्र में उठनेवाली विशाल लहरें जिस समय एक साथ ऊपर उठकर एकदम से नीचे चली जाती हैं, वही लहरें समुद्री ज्वार भाटा कहलाती हैं। समुद्र में आनेवाले ज्वार-भाटे का मुख्य कारण पृथ्वी और चंद्रमा के बीच गुरुत्वाकर्षण शक्ति होती है, जिसके कारण चंद्रमा पृथ्वी को और पृथ्वी चंद्रमा को अपनी ओर खींचती है। समुद्र में जिस जगह पर ज्वार-भाटा आता है वहां पर पानी का स्तर ६ घंटे में बढ़ता है और अगले ६ घंटे में नीचे आ जाता है। इसका अर्थ यह हुआ कि समुद्र में ज्वार-भाटा दो बार आता है। समुद्र में आनेवाला ज्वार भाटा दो प्रकार का होता है। स्प्रिंग टाइड- समुद्री ज्वार के इस रूप को सबसे तेज ज्वार कहा जाता है। इस समय पृथ्वी, सूर्य और चंद्रमा एक सीध में आते हैं, जिसके कारण इनके बीच की गुरुत्वाकर्षण शक्ति बढ़ जाती है। समुद्र

में ऐसा ज्वार अमावश्या या पूर्णिमा के दिन आता है। नीप टाइड- यह समुद्री ज्वार का दूसरा रूप होता है जिस समय सूर्य और चंद्रमा ९० डिग्री का कोण पर होते हैं, उस समय पृथ्वी पर गुरुत्वाकर्षण का प्रभाव सबसे कम होता है। इसे समुद्री ज्वार का सबसे छोटा रूप कहा जाता है। इस तरह का ज्वार भाटा अमावस और पूर्णिमा के बीच के दिनों में आता है। इस ज्वार में समुद्री लहरें १५ मीटर ऊंची उठ जाती है। हमारी धरती के बहुत बड़े भाग में समुद्र है। धरती पर चार समुद्र पेसीफिक, अटलांटिक, इंडियन और आर्कटिक है। पेसीफिक ओशन (प्रशांत महासागर) दुनिया का सबसे बड़ा समुद्र है, जो दूसरे सभी समुद्रों से बड़ा और गहरा है। समुद्र का पानी हम पी नहीं सकते, क्योंकि पानी में नमक के घुले होने के कारण खारा होता है। समुद्र के पानी में नमक सॉल्टी राक से आता है। हम जो नमक इस्तेमाल करते हैं, वो ज्यादातर भारत जैसी गर्म जगहों से आता है। समुद्र के पानी को रोककर धूप में सुखाया जाता है, जिससे पानी के सूखने के बाद नमक बच जाता है। आपने समुद्र किनारे रेत तो देखी ही होगी। हाथ मे लेकर इस रेत को देखोगे, तो पाओगे कि यह चट्टानों और सी शेल के छोटे-छोटे टुकड़ों से बनती है। चट्टानें बारिश और लहरों के कारण टूट जाती है जिससे रेत बनती है। रेत हमेशा पीली ही नहीं होती। कुछ बीचेस में ब्लैक, पिंक, व्हाइट यहां तक कि ग्रीन रेत भी होती है। ब्लैक-सी (काला सागर) एक ऐसा समुद्र है जिसमें कोई डूब नहीं सकता। इसमें नमक की मात्रा बहुत अधिक है इस कारण इसका कीचड़वाला पानी स्किन के लिए लाभदायक माना जाता है। वनस्पति का समुद्र (सीवीड) को बाहर लटकाकर आप मौसम का अनुमान लगा सकते हैं। अगर यह फूल जाती है, तो बारिश होगी और अगर यह सूख जाती है, तो सूरज निकलेगा। रेड सी लाल दिखाई देता है। गर्मियों में पानी में कई लाल पौधे उग जाते हैं, जिनसे यह लाल दिखता है। इसमें तैरकर आपका रंग नहीं बदलेगा। आंर्टटिक ओशन का अधिकांश भाग बर्फ के रूप में जमा होता है इसमें कोई तैर नहीं सकता। यह समुद्र बहुत ठंडा है और साल-भर बर्फ से ढका रहता है इसलिए इसमें बहुत कम जहाज चलते हैं। इसमें जीव-जंतु वनस्पति भी कम पाई जाती है।

❊ **समुद्र-** दस करोड़ वर्ष का इतिहास - समुद्र तल पर पाये गये विशेष प्रकार के फेरोमैगजीन पिंड अपने अंदर पिछले दस करोड़ वर्ष का इतिहास छिपाये हुए हैं। इन पिंडों पर पृथ्वी और ब्रह्मांड में समय-समय पर होनेवाले विभिन्न परिवर्तन अंकित होते रहते हैं, जो कभी मिटते या समाप्त नहीं होते हैं। इन पिंडों में कई बहुमूल्य और आवश्यक तत्व भी प्रचुरता से पाये जाते हैं। पिंडों के रासायनिक गुण, समय और स्थान के साथ-साथ बदलते रहते हैं।

यह पिंड पूरे समुद्रतल के दस प्रतिशत भाग में पाये जाते हैं और इनका आकार राई के दाने से लेकर फुटबॉल से दोगुना बड़ा तक होते हैं। इन पिंडों में मैगनीज, लोहा, निकल, तांबा, कोबाल्ट, शीशा आदि वस्तुएं भारी मात्रा में पायी जाती हैं, पृथ्वी पर इन वस्तुओं का सीमित भंडार है और यह अधिक से अधिक दो सौ साल तक चल पायेगा। इसके बाद से समुद्र पिंड ही हमारे काम आएंगे। क्योंकि इनमें पायी जानेवाली धातुएं कभी समाप्त नहीं होती।

❊ **श्रीलंका -** हिंद महासागर में सबसे बड़ा द्वीप श्रीलंका है।

❊ लाल सागर में पाया जाने वाला फायर कोरल नामक मूंगा इतना ज्यादा गर्म होता है कि इसे छूने पर कष्टप्रद जलन, छाले और स्थायी दाग पड़ जाते हैं। इसीलिए इसे दहकता मूंगा भी कहा जाता है।

❊ दुनिया का सबसे बड़ा महासागर प्रशांत (पैसेफिक) महासागर है। इसका क्षेत्रफल ६४,१८६,३०० वर्गमील है।

इसकी सर्वाधिक गहराई मारियाना ट्रेंच स्थान पर है जो ३५,८४० फुट (१०,९२४ मीटर) हैं। यदि दुनिया का सर्वोच्च शिखर माउंट एवरेस्ट भी इसमें खड़ा किया तो भी उसके ऊपर १.५ किमी पानी रहेगा।

* ९९ फीसदी जीवित प्राणी पृथ्वी पर महासागरों में से हैं। १० लाख से अधिक जीवों की प्रजातियां विश्व के महासागरों में हैं। इनमें से २/३ प्राणियों का वर्णन अभी तक किया जा चुका है।

* **मृत सागर (डेड सी) -** मृत सागर में कोई भी जीव-जन्तु जीवित नहीं रहता। जार्डन व इजराइल के बीच स्थित इस सागर के जल में प्रवेश करते ही सब मर जाते हैं।

* इस तरह का सागर उस देश में है, जिसे मानव जाति प्राचीन काल से जानती है। यह पालेस्तीन का सागर है। इसका पानी इतना खारा है कि इसमें कोई जीवित प्राणी नहीं रह सकता। पालेस्तीन में वर्षा बहुत कम होती है। वहां की जलवायु अत्यंत गर्म है, अत: वहां पानी का वाष्पीकरण बहुत तेजी से होता रहता है। वाष्पीकरण से सिर्फ पानी ही उड़ता है, लवण सागर में रह जाते हैं। यही कारण है कि मृत सागर का खारापन बढ़ता जा रहा है।

मृत सागर के पानी में अन्य सागरों की भांति लवणों की मात्रा भारानुसार २ या ३ प्रतिशत नहीं बल्कि २७ प्रतिशत है। गहराई में लवण की मात्रा बढ़ती जाती है। इस प्रकार मृत सागर के पानी में चौथाई अंश लवणों का है। लवणों की पूरी मात्रा इस सागर में कोई ४० मिलियन टन आंकी गयी है। अत्यधिक खारेपन के कारण मृत सागर में एक विशेषता आ गयी है। इसका पानी अन्य सागरों के जल से अधिक भारी है। इतना भारी कि इसमें आदमी डूबता नहीं है। आदमी का शरीर इसके पानी से हल्का है। हमारे शरीर का भार तुल्य आयतन के घोर नमकीन पानी के भार से काफी हल्का है, इसलिए प्लवन नियम के अनुसार आदमी मृत सागर में नहीं डूबता। उसके पानी में वह वैसे ही तैरकर ऊपर आ जाता है जैसे नमकीन पानी में मुर्गी का अण्डा (जो मीठे पानी में डूब जाता है)। मृत सागर में डुबकी लगाना मुश्किल है। इसमें आप हाथ वक्ष पर रखकर पानी पर पीठ के बल लम्बे लेट सकते हैं, आपके शरीर का अधिकतर भाग पानी के ऊपर रहेगा। इस स्थिति में आप सिर ऊपर भी उठा सकते हैं।

आप घुटनों को ठुड्डी तक मोड़कर उन्हें हाथों से पकड़े हुए भी लेट सकते हैं, पर जल्द ही आप उलट जायेंगे, क्योंकि सिर अधिक भारी होता है। आप पीठ के बल लेटे हुए तैरकर दूर नहीं जा सकते, क्योंकि आपका पैर पानी से ऊपर रहता है। ऐसा भी असाधारण गुण का कास्पियन सागर की खाड़ी कारा-बोगाज-कोला और एल्तन झील के नमकीन पानी में है। एल्तन के पानी में लवणों की मात्रा २७ प्रतिशत है। भिन्न समुद्रों में पानी का खारापन भी भिन्न होता है।

मृत सागर (डेड सी) एक आश्चर्यजनक पानी का भंवर है जिसमें विशाल से विशाल और सूक्ष्म से सूक्ष्म कोई भी जीव-जंतु जीवित नहीं रह सकता। यह सागर जार्डन तथा इसराइल के मध्य स्थित है। इसका धरातल समुद्र के धरातल से ३९६ मीटर नीचे है जो संसार का सबसे नीचा स्थान है। ऐसा समझा जाता है कि आज से लाखों वर्ष पहले यह धरातल ४२७ मीटर ऊंचा था और इसमें समुद्री जीव जंतु भी रहा करते थे, लेकिन अचानक सूखा पड़ने से इसका पानी सूख गया और अब इसमें कोई भी जीव-जंतु नहीं रहते।

इस सागर में कोई भी बड़ी नदी नहीं मिलती है। जार्डन नदी और कुछ छोटे-छोटे नाले आकर मिलते हैं, इस कारण इसमें घुलनशील खनिज की मात्रा बढ़ती ही जाती है। यही कारण है कि मृत सागर में नमक की मात्रा २५ प्रतिशत तक

है, जबकि आमतौर से समुद्र में नमक की मात्रा लगभग ५ प्रतिशत होती है। मृत सागर में पानी में जहरीला पदार्थ मैग्नीशियम क्लोराइड भी काफी मात्रा में पाया जाता है।

जिसके चखने मात्र से ही व्यक्ति की मृत्यु हो सकती है। इसके पानी में पोटेशियम कार्बोनेट, मैग्नीशियम क्लोराइड, कैल्शियम क्लोराइड, ब्रोमीन, पोटाश आदि उपयोगी पदार्थ भी विद्यमान हैं।

✻ **लाल सागर -** नील नदी और समुद्र के बीच का रेगिस्तान लाल है और रेत के रंग से होनेवाले परिवर्तन के कारण ही इस समुद्र का नाम लाल सागर है।

✻ **प्रशांत महासागर -** पैसफिक (प्रशांत) महासागर धरती पर सबसे बड़ा जलाशय है, जिसने धरती का एक तिहाई पृष्ठ भाग व्याप्त किया है। इसका क्षैत्रफळ १७.९७ करोड़ किमी और इसमें २५००० आइलैंड्स हैं।

✻ प्रशांत महासागर अमेरिका को ऑस्ट्रेलिया और एशिया से अलग करता है।

✻ समुद्र कितना गहरा और विशाल है इसके अंदर ऐसे १० प्रतिशत जीव रहते हैं जो अपने आप से प्रकाश को पैदा कर सकते हैं।

✻ सभी महासागरों में प्रशांत महासागर सबसे विशाल और प्राचीनतम है। यह उत्तर में आर्कटिक से लेकर दक्षिण में दक्षिणी महासागर, पश्चिम में ऑस्ट्रेलिया और पूर्व में अमेरिकी महाद्वीपों तक फैला हुआ है। इसका क्षेत्रफल १६५.२ मिलियन वर्ग किलोमीटर है और यह धरती पर फैली जलराशि का ४६ प्रतिशत भाग है। भूमध्य रेखा प्रशांत महासागर को उत्तरी प्रशांत महासागर में विभाजित करती है। प्रशांत महासागर की औसत गहराई ४००० मीटर है। इसमें धरती की बहुत ही गहरी खाइयाँ। मरियाना ट्रेन्च (खाई) उत्तरी महासागर क्षेत्र में है। यह समुद्र के नीचे सबसे गहरा स्थान है। प्रशांत महासागर का आकार तिकोना है, जो कार्टिक उत्तर में संकरा और आर्कटिक-दक्षिण में चौड़ा है।

प्रशांत महासागर को सर्वप्रथम स्पेन के अन्वेषक वास्तो मूगेज दी बालेबोआ ने १५१३ में देखा, जब उसने इंथूमस ऑफ पनामा को पार किया और इस समुद्री क्षेत्र को साऊथ सी का नाम दिया। प्रशांत महासागर नामकरण १५२१ में पुर्तगाली अन्वेषक फेरदिनान्द मागेलान का किया हुआ है, जब उसने इस समुद्री क्षेत्र की शांत हवाओं का लुत्फ उठाया और तभी पुर्तगाली भाषा में पार पैसिफिकों (शांतिपूर्ण समुद्र) कहा। प्रशांत महासागर वर्तमान में प्लेट टेक्टोनिक्स की वजह से सिकुड़ रहा है, जबकि अटलांटिक महासागर तीन तरफ से प्रतिवर्ष एक इंच की दर से आकार में बढ़ रहा है। प्रशांत महासागर के समानांतर पश्चिमी सीमा पर कई समुद्र स्थित हैं। इनमें विशाल समुद्र सेलेबिस, कोरल, ईस्ट चाइना, पिलिप्पिन, दक्षिणी चीन समुद्र आदि शामिल हैं।

मलक्का जलडमरूमध्य प्रशांत को पश्चिम में हिन्द महासागर से जोड़ता है और ड्रेक मार्ग एवं मागेल्लान जलडमरूमध्य प्रशांत महासागर को पूर्व में अटलांटिक महासागर से जोड़ते हैं। उत्तर बेरिंग जलडमरू मध्य प्रशांत सागर को आर्कटिक महासागर से जोड़ते हैं। प्रशांत महासागर हर जगह शांत नहीं रहता। कई उष्णकटिबंधीय तूफान प्रशांत महासागर के द्वीपों को प्रभावित करते हैं। प्रशांत महासागर बेसिक के किनारों की धरती ज्वालामुखियों से भरी है और भूकंपों व सूनामियों से प्रभावित होती है। इस घेरो को आग का घेरा (रिम ऑफ फायर) भी कहा जाता है। इसमें विश्व के करीब पचहत्तर प्रतिशत ज्वालामुखी स्थित है। ज्वालामुखी और भूकंप तीव्र भूगर्भीय गतिविधि के क्षेत्रों में होते हैं, जहां द्रवित क्रोड

पर अवस्थित पृथ्वी का भू-पटल बनाने वाली प्लेटें एक-दूसरे की ओर खिसकती हैं। प्रशांत महासागर में करीब २५ हजार द्वीप हैं। इनमें से अधिकतर भूमध्य रेखा के दक्षिण में हैं और कई जलमग्नावस्था में हैं। यहां स्थित न्यू ग्युनिया द्वीप दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा द्वीप है। बड़े द्वीपों में जापान, ताइवान, बोर्नियो भी शामिल हैं। इनमें छोटे द्वीपसमूह (पोलिनेसिया) और छितरे हुए एकल द्वीप भी हैं।

प्रशांत महासागर का जल नियमित अन्तरालों पर गर्म हो जाता है। गर्म जल जब शीतल जल के ऊपर आ जाता है तो उसका प्रभाव समुद्र के ऊपरी हवाओं के तापक्रम पर पड़ता है। जिससे हवाओं के पैटर्न प्रभावित होते हैं। विस्तार में व्यापक होने के कारण प्रशांत महासागर वाष्प चालित और आधुनिक जहाजों के आविष्कार से पहले आवागमन के लिए सुगम एवं सुरक्षित नहीं था। इसके मुख्य व्यापारिक मार्ग अमेरिका से जापान, एशिया और ऑस्ट्रेलिया हैं। प्रशांत महासागर दुनिया का एक तैल उत्पादक क्षेत्र है। अलास्का, कैलिफोर्निया और चीन के तटीय क्षेत्रों में तेल क्षेत्र प्रशांत महासागर के द्वीपों में बहनेवाली समुद्री हवाएं बिजली के उत्पादन में बहुत सहायक सिद्ध हो रही हैं। प्रशांत महासागर का मत्स्य क्षेत्र दुनिया का सर्वाधिक समृद्ध क्षेत्र है। विशेष रूप से दक्षिण अमेरिका के आसपास का वह तटीय क्षेत्र जहां शीतल जल की धाराएं बहती है। यहां की मछलियों पर पलनेवाले पक्षियों की लीद गुआनो दुनिया के सर्वाधिक समृद्ध ऊर्वरकों में से एक है। प्रशांत महासागर मोतियों का एक मुख्य स्रोत भी है।

✻ सबसे बड़ा सागर- प्रशांत महासागर विश्व का सबसे बड़ा महासागर है, जो विश्व के महासागरों के ४५५.९ प्रतिशत भाग का प्रतिनिधित्व करता है। यह १६,६२,४१,००० किमी क्षेत्र घेरे हुए है तथा इसकी औसत गहराई ४१८८ मीटर है।

✻ सबसे गहरा सागरीय गर्त- मेरियाना (प्रशांत महासागर ११७७६ मी गहरा)

✻ समुद्री किनारा, बीच - ✻ कोवालम बीच- ये बीच केरल का सबसे लोकप्रिय बीच है। कोवालम बीच को विश्व के सबसे दर्शनीय बीचों में गिना जाता है। सुनहरी रेत को चूमती नीली सागर की लहरें देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक खिंचे चले आते हैं। यहां की खूबसूरत प्राकृतिक दृश्यावली और वॉटर गतिविधियां भी बड़ी संख्या में सैलानियों को लुभाती हैं।

✻ जुहू बीच- मुंबई का यह बीच घूमने और मौज मस्ती करने के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है। अगर आपको पानी वाली जगह पर घूमना पसंद है तो यह आपके लिए किसी जन्नत से कम नहीं है।

✻ कलंगुट बीच- गोवा में बहुत से बीच हैं मगर कलंगुट बीच सबसे ज्यादा मशहूर है। इस बीच में लाखों लोग घूमने के लिए आते हैं। यहां पर आप वॉटर स्पोर्ट और पैराग्लाइडिंग का भी मजा उठा सकते हैं।

✻ राधा नगर बीच- अंडमान के हैवलॉक आइलैंड बीच को राधा नगर बीच के नाम से भी जाना जाता है। जिन लोगों को शांति वाली जगह पर घूमने का शौक है उनके लिए राधानगर बीच सबसे अच्छा विकल्प है।

✻ नदी - ✻ कुछ नदियां ऐसी भी हैं, जो अपने अनोखे व अलग गुणों के कारण चर्चित हैं। अल्जीरिया में एक नदी है स्याही वाली। इस नदी के पानी का रंग हमेशा गहरा नीला रहता है। इसके पानी से स्याही (इंक) की तरह लिखा जा सकता है। दरअसल आयरन, लेड ऑक्साइड व नमक की मौजूदगी से इस नदी के पानी का रंग नीला रहता है। एक और नदी है- एंगारी स्पार्की, जिसके पानी का स्वाद बीयर जैसा होता है। पूर्वी अफ्रीका में मौजूद नदी के पानी में एल्कोहल बिल्कुल नहीं होता।

✻ हड़सन नदी के तट पर स्थित है।

✻ नील नदी विक्टोरिया झील से निकली है।

✻ चिंदविन नदी बर्मा देश में बहती है।

✻ चंबा घाटी रावी नदी ने बनायी है।

✻ एमेजान नदी की लंबाई ५६३२ से ६४३७ कि.मी. है।

✻ रूस की मुख्य नदी वोल्गा है।

✻ संसार का रोम प्रसिद्ध नगर टाइबर नदी के तट पर बसा है।

✻ भारत की नर्मदा नदी संसार की सबसे सीधी बहने वाली नदी है और यह १३७५ कि.मी. लंबी है।

✻ यूरोप की डेन्यूब नदी तीन राजधानियों में से निकल कर काले सागर में गिरती है।

✻ सामान्यत: बड़ी नदियों के बहाव की गति ४० किलोमीटर प्रतिदिन होती है। नदियों के मध्य भाग का पानी दोनों किनारों की अपेक्षा तीव्र गति से चलता है।

✻ यमुना नदी उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, हिमाचल प्रदेश व दिल्ली राज्यों से बहती है।

✻ दिल्ली की ७०% जलापूर्ति यमुना नदी के पानी पर निर्भर है।

✻ भारतीय उपमहाद्वीप की सबसे लंबी नदी ब्रह्मपुत्र है।

✻ घाघरा- इस नदी का उद्गम मापचाचुंग ग्लेशियर से हुआ है जो तिब्बत के पठार में स्थित हैं। यह नेपाल के मध्य से बहती है। हिमालय तथा शिवालिक श्रेणियों को पार करते समय यह राशिपानी नामक स्थान पर गहरी संकीर्ण घाटी का निर्माण करती है। घाघरा नदी बिहार में छपरा के पास गंगा नदी में मिल जाती है। इस नदी की लंबाई लगभग १२०० किमी है।

✻ गण्डक- इस नदी का उद्गम नेपाल, तिब्बत की सीमावर्ती पर्वत श्रृंखलाओं से हुआ है। नेपाल में इस नदी को शालीग्रमी तथा नारायणी नाम से जाना जाता है। उत्तर प्रदेश तथा बिहार की सीमा मे बहते हुए यह नदी पटना के पास गंगा नदी में मिल जाती है। गण्डक नदी की लंबाई लगभग ४२५ किमी है।

✻ यमुना- यमुना नदी गंगा नदी की प्रमुख सहायक नदी है। इस नदी का उद्गम उत्तराखण्ड के यमुनोत्री नामक ग्लेशियर से हुआ है जो बंदरपूछ पहाड़ी पर स्थित है। यमुना नदी के किनारे दिल्ली, मथुरा तथा आगरा जैसे बड़े शहर बसे हुए हैं। यह लगभग १३७५ किमी का सफर तय करके इलाहाबाद के निकट प्रयाग में गंगा नदी में मिल जाती है। यमुना नदी की प्रमुख सहायक नदियों में टोंस, चम्बल, बेतवा, केन, तथा काली सिंध आदि शामिल हैं। यमुना नदी को भारत की सबसे अधिक प्रदूषित नदी माना जाता है।

✻ सफेद मार्बल चट्टानों के बीच से नर्मदा नदी इनमें से जबलपुर से गुजरती है।

✻ सतलज नदी- सतलज नदी का उद्गम तिब्बत स्थित मानसरोवर झील के निकट राक्षसताल से हुआ है। यह नदी अपने उद्गम स्थल से १५०० किमी दूरी तय करके पाकिस्तान में चेनाब नदी में मिल जाती है। भारत में सतलज नदी की लंबाई १०५० किमी है। प्रसिद्ध भाखड़ा-नागल बांध सतलज नदी पर ही बना है।

✻ चम्बल- चम्बल नदी मध्यप्रदेश के इन्दौर जिले में स्थित महू के निकट जानापाओ पहाड़ी से निकलती है। यह नदी

मध्यप्रदेश राजस्थान होते हुए उत्तर प्रदेश के इटावा जिले में यमुना नदी में मिल जाती है। चम्बल नदी की लंबाई लगभग ९५० किमी है। यह नदी बीहड़ों (गड्ढे) का निर्माण करती है।

❋ गोमती- गोमती नदी का उद्गम उत्तर प्रदेश के पीलीभीत जिले से हुआ है। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ इसी नदी कि किनारे बसा हुआ है। यह गाजीपुर के निकट गंगा नदी में मिल जाती है।

❋ कोसी नदी- कोसी नदी का उद्गम प्रारंभिक रूप में सात धाराओं से हुआ जो नेपाल, हिमालय तथा कंचनजंगा पर्वत से निकलती है। इन धाराओं में सबसे बड़ी धारा का नाम अरुण है जो माउंट एवरेस्ट के पास से निकलती है। बिहार के मैदानी भागों में बहते हुए यह नदी भागलपुर जिले में गंगा नदी में मिल जाती है। कोसी नदी की लंबाई लगभग ७५० किमी है। कोसी नदी अपने मार्ग परिवर्तन एवं भयंकर बाढ़ के लिए कुख्यात है। यह प्रतिवर्ष बिहार में जन-धन की अपार क्षति पहुंचाती है इसलिए इसे बिहार का शोक कहा जाता है।

❋ गंगा नदी- गंगा नदी का उद्गम उत्तराखंड के गोमुख हिमनद के निकट गंगोत्री ग्लेशियर से हुआ है। वास्तव में अलखनन्दा तथा भागीरथी नदी के देवप्रयाग मिलने पर यह गंगा नदी कहलाती है। इलाहाबाद के निकट गंगा से यमुना मिलती है जिसे संगम या प्रयाग कहा जाता है। गंगा नदी दक्षिण-पूर्व की ओर बहते हुए बांग्लादेश में प्रवेश करती है जहां इसे पद्मा कहा जाता है। बांग्लादेश में समुद्र में मिलने से पहले ब्रह्मपुत्र नदी से मिलती है तो इसका नाम मेघना हो जाता है। गंगा नदी की कुल लंबाई २५२५ किमी है तथा भारत में इसकी लंबाई २५१० किमी है। गंगा नदी पश्चिम बंगाल में विश्व प्रसिद्ध सुंदरवन का डेल्टा का निर्माण करती है। गंगा नदी की प्रमुख सहायक नदी यमुना, सोन, रामगंगा, घाघरा, कोसी, गंडक इत्यादि है।

गंगा नदी- गंगा हमारे देश की सबसे पवित्र नदी मानी जाती है। पुराणों में इस नदी को देवी का स्थान दिया गया है, भारत में इसकी पूजा की जाती है। गंगा का उद्गम स्थल पश्चिमी हिमालय माना जाता है। गंगा नदी २५१० किलोमीटर लंबी है। यह नदी पश्चिम बंगाल के सुंदरवन डेल्टा में गिरती है। इसको हुगली नदी के नाम से भी जाना जाता है। गंगा का प्राचीन काल से ही धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व रहा है। गंगा के महत्व को देखते ही इसे राष्ट्रीय नदी घोषित किया गया है।

❋ रावी नदी - रावी नदी हिमाचल प्रदेश के रोहतांग दर्रे से निकलती है एवं पाकिस्तान के मुल्तान के समीप चेनाब नदी में मिल जाती है। इस नदी की लंबाई ७२० किमी है।

❋ चेनाब नदी- चेनाब नदी हिमाचल प्रदेश के लाहौर के बारालाचा दर्रे से निकलती हैं। यह पीर पंजाल के समांतर बहते हुए किशतबार के निकट पीर पंजार में गहरा गार्ज बनाती है। भारत में चेनाब नदी की लंबाई ११८० किमी है।

❋ व्यास नदी- इस नदी का उद्गम हिमालय के रोहतांग दर्रे के समीप व्यास कुंड से हुआ है। यह कुल लंबाई ४७० किमी तय करते हुए पंजाब में सतलज नदी में मिल जाती है।

❋ झेलम नदी- झेलम नदी का उद्गम कश्मीर घाटी की शेषनाग झील के निकट बेरनाग नामक स्थान से हुआ है। वूलर झील में मिलने के बाद यह पाकिस्तान में प्रवेश करती हैं तथा चेनाब नदी में मिल जाती है। झेलम नदी की कुल लंबाई ७२४ किमी है एवं भारत में इसकी लंबाई ४०० किमी है।

❋ सिंधु नदी- सिंधु नदी को इंडस नदी भी कहा जाता है। इस नदी का उद्गम तिब्बत स्थित मानसरोवर झील से हुआ है।

सिंधु नदी तिब्बत, भारत तथा पाकिस्तान में बहते हुए अरब सागर में मिल जाती है। सिंधु नदी की कुल लंबाई लगभग २८८० किमी है तथा यह भारत में ९९२ किमी लम्बी है। सिंधु नदी की प्रमुख सहायक नदियों झेलम, चेनाब, रावी, व्यास एवं सतलज है।

❋ अमेजन नदी - क्षेत्रफल में यह दुनिया की सबसे बड़ी और लंबाई में दूसरी सबसे बड़ी नदी है। यह नदी दुनिया के सबसे खतरनाक इलाकों में से एक ब्राजील के वर्षा वनों से होकर बहती है। इस नदी के भीतर पिरान्हा नाम की खतरनाक मछली और घड़ियाल भरे पड़े हैं। इस कारण इस नदी में तैरना खतरे से खाली नहीं माना जाता। लेकिन स्लोवेनिया के मार्टिन स्ट्रेल असली खतरों के खिलाड़ी हैं। ५० साल से अधिक उम्र के मार्टिन इस नदी को पूरी लंबाई में तैरकर, ऐसा करनेवाले दुनिया के पहले व्यक्ति बन गए। मार्टिन ने नदी में ५२६५ किलोमीटर की मैराथन तैराकी की।

ऐसा करने में उन्हें पूरे ६६ दिन लगे। उन्होंने अपनी यात्रा ब्राजील के सबसे बड़े शहरों में एक रियो डि जिनेरो के करीब बेलम के नजदीक पूरी की। यहां यह नदी दक्षिणी अटलांटिक महासागर में गिरती है। मार्टिन ने अपनी इस ऐतिहासिक यात्रा को पूरा करने में पूर्व निर्धारित समय से ४ दिन कम समय ही लगाया। उन्होंने ५२ मील प्रतिदिन की रफ्तार से तैर कर अपनी यात्रा पूरी की। मार्टिन इस नदी की यात्रा करने से पहले चीन की यांग्टीसिक्यांग की ४००३ किमी., अमेरिका की मिसीसीपी का ३७९७ किमी और यूरोप की डेन्यूब की ३००४ किमी तक तैर चुके हैं। मार्टिन के हुनर को देख उन्हें फिश मैन कहा जाता है। मार्टिन कहते भी हैं- मैं जलचरों के साथ लंबे समय से तैर रहा हूं। शायद उन्हें लगने लगा है कि मैं उन्हीं जैसा और उनमें से ही एक हूं। हालांकि इस यात्रा के अंत में उन्हें उल्टी और दस्त की समस्या हो गई थी।

तैराकी को अपना जीवन माननेवाले मार्टिन का कहना है कि पानी में उतरते ही उनमें जोश भर जाता है। हालांकि वर्षा वनों के बीच तैरने में केवल जोश की जरूरत नहीं होती। इसके लिए बला की हिम्मत भी होनी चाहिए, क्योंकि यह नदी नर शार्कों और एनाकोंडा का कुदरती निवास है। नदी में भंवर और तूफानी लहरें भी उठती हैं। इस नदी का पानी बहुत मटमैला है। फिर यह नदी ब्राजील के काफी दूरदराज के हिस्से में हैं, जहां डाकुओं और लुटेरों का भी बोलबाला है।

❋ सबसे बड़ी नदी अमेजन- नील नदी के बारे में कहा जाता है कि वह विश्व की सबसे बड़ी नदी है। यह मिस्र में है तथा इसका इतिहास बहुत पुराना है। लेकिन वास्तव में अमेजन नदी को विश्व की सबसे बड़ी नदी के रूप में स्थान दिया गया है। यह उत्तरी ब्राजील से अटलांटिक महासागर तक जाती है। यह दूरी लगभग ६४४८ किलोमीटर है। यह दो मुख्य धाराओं से बनी है।

अमेजन- करीब ६४०० किलोमीटर लंबी अमेजन, नील नदी के बाद दुनिया की दूसरी सबसे लंबी नदी है। यह नील से थोड़ी-सी ही छोटी हैं। हालांकि विशेषज्ञ दोनों नदियों की ठीक-ठीक लंबाई से सहमत नहीं। पानी की अधिकता से यह दुनिया की सबसे लंबी नदी है। अटलांटिक महासागर में गिरने से पहले अमेजन और इसकी सहायक नदियां पेरू, बोल्विया, वेनेजुएला, कोलंबिया, इक्वाडोर और ब्राजील से गुजरती हैं। अमेजन नदी में मछलियों की ३००० से ज्यादा प्रजातियां पाई जाती हैं।

अमेजन नदी को सबसे पहले १४९९ में खोजा गया था। इसके विषय में यह तथ्य रोचक है कि इसकी सभी सहायक नदियों के पानी का रंग अलग-अलग है। अमेजन का सबसे अधिक विस्तार लगभग ३० लाख वर्गमील है। यह दक्षिणी

अमेरिका के कुल क्षेत्रफल का २/५ वां हिस्सा है। इस नदी में साल में एक बार बाढ़ आती है।

❋ सबसे चौड़ी नदी - दक्षिण अमेरिका में अमेजन विश्व में सबसे चौड़ी नदी है। यह नदी पेरू में एंडेस पर्वत से निकल कर समूचे ब्राजील में से होती हुई गुजरती है। नील, मिसीसिपी तथा यांगसी नदियों को मिलाकर जितना पानी बहता है अकेली अमेजन नदी में बहनेवाले पानी की मात्रा इससे अधिक है। इसका कारण यह है कि २०० से अधिक सहायक नदियां आकर अमेजन नदी में मिलती हैं। यह इतनी अधिक चौड़ी नदी है कि अनेक स्थानों पर इसका दूसरा किनारा नजर नहीं आता। इस नदी की अधिकतम चौड़ाई १४० किलोमीटर है। नील के बाद यह विश्व की सबसे लम्बी नदी है।

❋ मीठे पानी की नदी- अमेरिका में नेबरास्का नामक एक नदी है। इस नदी की विशेषता यह है कि इसका पानी बहुत मीठा है। इसका पानी इतना मीठा होता है कि एक गिलास से अधिक पीना कठिन होता है। नदी तथा उसके पानी की कई बार जांच की गई मगर ज्ञात नहीं हो सका है कि नदी का पानी इतना मीठा और स्वादिष्ट क्यों हैं? पहले की अपेक्षा अब नदी का क्षेत्रफल काफी बढ़ गया है।

खट्टे पानी की नदी- चिली तथा अर्जेंटीना देशों के बीच सीमा रेखा के रूप में बहनेवाली एक ऐसी नदी है जिसका पानी चखने पर ताजे नींबू के पानी का स्वाद देता है। इस नदी का नाम है राय ओदविनारी। इस नदी के नींबू-पानी वाले स्वाद के कारण लोग इसके पानी में चीनी या नमक डालकर पीते हैं। इस प्रकार यह पानी शर्बत का काम देता है।

❋ गंगा-ब्रह्मपुत्र नदियां सुंदरवन का डेल्टा बनाती है।

❋ गंगा और ब्रह्मपुत्र का उद्‌गम स्थान क्रमश: उत्तराखंड तथा तिब्बत में स्थित है।

❋ नर्मदा और सोन नदियां अमरकंटक पठार से निकलती हैं किन्तु वे अलग-अलग दिशाओं में बहती हैं।

❋ विश्व की सबसे लंबी नदी नील नदी (६६७० कि.मी.) है।

❋ पराना नदी दक्षिण मध्य अमेरिका में बहनेवाली एक नदी है। यह ब्राजील, पैराग्वे और अर्जेंटीना में बहते हुए ४८८० किलोमीटर (३०३० मील) का सफर तय करती है। दक्षिण अमेरिका में बहनेवाली नदियों में अमेजन नदी के बाद यह दूसरी सबसे बड़ी नदी है। पराना नदी के नाम का अर्थ है समुद्र जैसी विशाल। पहले यह पैराग्वे नदी में मिलती है और फिर और नीचे गिरते हुए उरूग्वे नदी में मिल जाती है और रिओ दे पा प्लाता नदी के मुहाने का निर्माण करते हुए अटलांटिक महासागर में मिल जाती है।

❋ यांग्त्जी नदी एशिया की सबसे बड़ी तथा दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी नदी है, जो चीन में बहती है। इसकी लंबाई ६३०० किलोमीटर यानी ३९१७ मील है। चीन में सबसे घनी आबादी वाले शहर वुहान के दो हिस्सों को आपस में जोड़ने के लिए यांग्त्जी नदी के आर-पार मेट्रो रेल लाइन का निर्माण भी कर दिया है। इस रेल लाइन की शुरुआत दो साल पहले हुई थी। यांग्त्जी नदी को चीन में चेन जियांग के नाम से भी जाना जाता है। यह नदी किंघाई तिब्बत पठार से निकलकर दक्षिण-पश्चिम चीन, मध्य चीन तथा पूर्वी चीन से होते हुए शंघाई में पूर्वी चीन के समुद्री हिस्से में समाहित हो जाती है।

यांग्त्सीक्यांग- यह चीन की सबसे विशाल और दुनिया की तीसरी सबसे लंबी नदी है। यह करीब ६३०० किलोमीटर लंबी है। इसका उद्‌गम तिब्बती पठार के पूर्वी हिस्से में स्थित ग्लेशियर हैं। इसे यांग्तजी के नाम से भी जाना जाता है। इस नदी पर बनाया गया बांध थ्री ग्रोजेज डैम दुनिया का सबसे बड़ा हाइड्रो-इलेक्ट्रिक पावर स्टेशन है। यह नदी दुनिया का

सबसे व्यस्त जलमार्ग भी मानी जाती है।

❊ संसार की सबसे बड़ी नदियों की जानकारी

हमेशा से ही कहा और माना जाता रहा है कि जल ही जीवन है और जल के बिना जीवन जीना नामुमकिन है। दुनियाभर में जल का प्रमुख स्रोत या तो समुद्र हैं या फिर नदियां। नदियां मानव जीवन और पर्यावरण को संरक्षित करने में सहायक साबित होती हैं।

नील नदी- दुनिया की सबसे लंबी नदी का खिताब इसी को मिला हुआ है। यह पूर्वी अफ्रीका से उत्तर और फिर मेडिटेरियन तक ६६५० किलोमीटर के दायरे में फैली हुई है। नील की दो बड़ी सहायक नदियों हैं- व्हाइट नील और ब्लू नील। मिस्र की प्राचीन सभ्यता के विकास में नील नदी की बहुत बड़ी भूमिका मानी जाती है। नील नदी को मिस्र का वरदान भी कहा जाता है।

❊ पंचरंगी नदी - दक्षिण अमेरिका महाद्वीप अलग-अलग तरह के प्राकृतिक चमत्कारों से भरा है। दक्षिण अमेरिका में एक नदी बेहद खास है। इस महाद्वीप के कोलंबिया के निकट स्थित मैकारिना शहर से बहनेवाली द रियो कैनो क्रिस्टल्स नाम की नदी का पानी एक, दो नहीं बल्कि पूरे पांच रंगों में रंगा नजर आता है। यह दुनिया की इकलौती पंचरंगी नदी है। इसे दुनिया की सबसे सुंदर और स्वर्ग से धरती पर अवतरित नदी भी कहा जाता है। बरसात का मौसम खत्म होने के बाद नदी का जलस्तर घट जाता है। ऐसे में इसके तल में मौजूद शैवाल के कारण इस नदी में रंग नजर आने लगते हैं हालांकि इस नदी में जहां पंचरंगी छटा उभरती है, वह क्षेत्र काफी दुर्गम है। इस कारण आम लोग वहां तक पहुंचने की हिम्मत नहीं करते, लेकिन साहसी तैराक वहां तक पहुंच कर इस नदी में मौजूद रंगों का आनंद उठाकर स्वर्गसुख का अहसास करते हैं। अब तक दुनिया के लगभग १०० देशों के हजारों लोगों ने इस पंचरंगी नदी को देखने का मजा उठाया। इस नदी को देखकर अहसास होता है कि प्रकृति खुद एक महान सृजनकार है।

❊ **झील -** संसार में खारे पानी की झीलें- दुनिया के प्राय: सभी महाद्वीपों में खारे पानी की झीलें पाई जाती हैं। ये झीलें प्राय: ऊष्ण कटिबंध वाले गर्म व शुष्क भागों में होती हैं। ऐसी झीलें तसले की बनावट जैसी निचली भूमि में बनती हैं, क्योंकि यहां नमक मिश्रित जल नदियां बहाकर लाती हैं। आस-पास की भूमि ऊंची होने के कारण वे जल को लेकर बाहर नहीं निकल पाती हैं। ऐसी रचनावाली भूमि को अंत:प्रवाह का क्षेत्र कहते हैं। सूर्य की गर्मी से झीलों का पानी भाप बनकर उड़ जाता है और नमक जमा होता रहता है। सैकड़ों, हजारों वर्ष तक इस क्रिया के चलते रहने से झीलों का पानी बहुत अधिक खारा हो जाता है। इस पानी से लवण प्राप्त किये जा सकते हैं।

संसार की सबसे खारी झील का नाम मृतसागर है। इसे अंग्रेजी में डेड सी कहते हैं। इसके जल का खारापन २३७.५% (प्रति हजार) है जबकि सागरों व महासागरों के जल का औसत खारापन ३५% है। मृतसागर में जार्डन नदी जल लाकर डालती है। इस सागर का जल इतना खारा है कि यदि कोई इसमें डूबना चाहे तो भी नहीं डूबेगा। आप इस जल में लेटकर आराम से अखबार पढ़ सकते हैं।

यहां पर नीचे खारे पानी की कुछ झीलों व उनके देशों या प्रांतों के नाम दिये जा रहे हैं। ये झीलें अपने खारेपन के लिए संसार में प्रसिद्ध हैं।

महाद्वीप/देश- झील का नाम- १) भारत- सांभर (राजस्था), २) एशिया- मृतसागर (जार्डन), ३) उ.अमेरिका- साल्ट लेक (ऊटाह राज्य), ४) अफ्रीका- चाड (चाड देश), ५) ऑस्ट्रेलिया- आयर, ६) ऑस्ट्रेलिया- टारेंस, ७) ऑस्ट्रेलिया- गार्डनर।

धरती पर इतने रहस्य मौजूद हैं जिनका आज तक कोई पता नहीं लगा पाया। दुनिया में तमाम ऐसी चीजें हैं जो किसी रहस्य से कम नहीं हैं। ऐसे ही बहुत से रहस्य दुनियाभर की नदियों और झीलों में छिपे हुए हैं। दुनियाभर में कुछ झीलें ऐसी है जिनका पानी एकदम खारा है तो किसी कुछ का एकदम मीठा। वहीं कुछ झीलों से गर्म पानी निकलता है तो कुछ से हमेशा धुआं निकलता रहता है। अलग-अलग जगहों से देखने पर इसका आकार बदल जाता है।

❋ सबसे बडी झील- रूस के दक्षिणी भाग और ईरान के मध्य में विश्व की सबसे बडी झील या अन्तस्थलीय समुद्र स्थित है। इसका नाम है कैस्पियन सागर। इस झील की लम्बाई १२२५ किलोमीटर तथा कुल क्षेत्रफल ३७१८०० वर्ग किलोमीटर है। इसकी गहराई १०२५ मीटर है।

सोवियत संघ के दक्षिणी भाग और ईरान के बीच स्थित केस्पियन सागर दुनिया की सबसे बड़ी झील के रूप में गिनीज बुक में दर्ज है, उसकी लंबाई १२२५ किमी और क्षेत्रफल ३ लाख ६० हजार ७ सौ वर्ग किमी. है। उसकी अधिकतम गहराई १०२५ मीटर है, समुद्र तल से उसका तल साढ़े अट्ठाइस मीटर नीचे है।

❋ सबसे गहरी झील- मध्य साइबेरिया की ओजेरों बैकाल झील दुनिया की सबसे गहरी झील आंकी गयी है। इसकी ६२० किलोमीटर लम्बाई, ७४ किलोमीटर चौड़ाई तथा १९४० मीटर गहराई नापी गयी है। यह समुद्र सतह से १४८५ मीटर नीचे है।

❋ समुद्र तटीय झील- जिस झील के जल मार्ग मे समुद्र में पहुंचा जा सके उसे लैगून कहते है। विश्व का सबसे बडा लैगून सुदूर दक्षिणी ब्राजील का लोगोआ डांस पैटोस है। इसकी लम्बाई २५४ किलोमीटर और क्षेत्रफल १०६४५ वर्ग मील से अधिक है।

❋ झील के भीतर झील- किसी झील के भीतर स्थित संसार की एकमात्र झील मेनीटू झील है। यह हुरौल झील के कनाडा के हिस्से में विश्व के सबसे बडे झील टापू मेनोटूलिन में स्थित है। मेनीटू झील का क्षेत्रफल १०६.४२ वर्ग किलोमीटर है और मनी टूबिन टापू का क्षेत्रफल २७६६ वर्ग किलोमीटर है। इस झील में भी अनेक टापू है।

ऐसी अनोखी झील, जिसके अन्दर भी एक और झील बनी हुई है। यह झील कनाडा के मेनीटूलियन टापू में स्थित है। इसका क्षेत्रफल १०८.४६ वर्ग किलोमीटर है।

एक झील में दो झील होने के कारण पानी भी दुरंगा है। इसके दाएं किनारे का पानी नीला तथा बाएं किनारे का पानी हरा है। दरअसल बाएं किनारे के हिस्से में एक प्राकृतिक खड्डा है जिसकी लंबाई ८२ फीट व चौड़ाई २३ फीट है, लेकिन इसकी गहराई तो आज भी एक रहस्य बनी हुई है।

❋ मीठे पानी की झील - मीठे पानी की झीलों में सुपीरियर झील (उत्तरी अमरीका) का क्षेत्रफल ८२३५० वर्ग किलोमीटर है।

❋ सर्वाधिक ऊंची झील- दक्षिणी अमरीका की टिटिकाका झील विश्व की सर्वाधिक ऊंची व बडी झील है। इसमें भाप

से चलनेवाला जहाज चलाया जा सकता है। इसका क्षेत्रफल ८२८५ वर्ग किलोमीटर और गहराई ३७० मीटर है। एवरेस्ट पर्वत के पास एक अनाम झील ४८८० मीटर ऊंचाई पर हिमनद से बनी है। तिब्बत की सबसे बड़ी झील नामत्सो ४५७८ मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।

❋ भारत की मीठे पानी की सबसे बड़ी झील कश्मीर में (वुलर झील) और खारे पानी की सबसे बड़ी झील चिल्का, उड़ीसा में है।

❋ न्यू साउथ वेल्स (ऑस्ट्रेलिया) में जॉर्ज लेक नामक एक ऐसी विचित्र झील है, जिसका संपूर्ण जल आश्चर्यकारक ढंग से बह जाता है और अपने आप वापस भी आ जाता है।

❋ १९०५ में एक ऐसी विचित्र झील खोजी गई जो जमीन के १५ मीटर नीचे थी। इसे लॉस्ट सी अथवा अज्ञात सागर कहा जाता है। जो दुनिया की सबसे बड़ी भूमिगत झील है।

वैज्ञानिकों ने दक्षिण ध्रुव में करोड़ों वर्ष से ३३५० मीटर की गहराई में सुरक्षित वोस्तोक झील का पता लगाया है। लगभग ५०० मीटर गहरी इस झील का क्षेत्रफल १४००० वर्ग किलोमीटर है।

दुनिया की सबसे गहरी झील बैकाल है। ३१ हजार ५०० वर्ग किलोमीटर वाली इस झील की अधिकतम गहराई ९४६ मीटर है।

तिब्बत की टिसो सिकरू संसार की सबसे ऊंची झील है। यह तिब्बत के पठार पर करीब ६००० मीटर की ऊंचाई पर है। इसके खोजे जाने के पूर्व तक दक्षिण अमेरिका की टिटिकाका झील सबसे ऊंची झील मानी जाती थी। समुद्र तल से उसकी ऊंचाई ३८११ मीटर है।

मृत सागर संसार की सबसे नीची झील है। जॉर्डन और इस्राइल की सीमा पर स्थित यह झील सागर तल से १३०० फीट नीचे है। इसकी तली सागर तल से करीब २५०० फीट नीचे है।

क्यूबेक में उनगावा झील ऐसी झील है, जिसका निर्माण उल्का पिंड गिरने से बने गड्ढों में पानी भरने से हुआ है।

झील का पानी शांत होता है और अपने आप में लंबी कहानी समेटे रहता है। यह ऊंचे पहाड़ों, पठारों और मैदानों कहीं भी हो सकती है। कई जगह यह सागर तल से नीचे भी पाई जाती हैं। ज्यादातर झीलों का पानी खारा होता है जबकि कई झीलें ऐसी भी हैं जिनका पानी मीठा होता है। झीलों का निर्माण एक निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया के अन्तर्गत होता है।

धरती पर जितनी झीलें हैं उनमें से ज्यादातर उत्तरी गोलार्ध में हैं। यूरोपीय देश फिनलैंड में तो करीब एक लाख ९० हजार झीलें हैं। इनमें से करीब ६० हजार बेहद बड़ी हैं। झीलों की अधिकता के कारण ही इस देश को झीलों का देश कहा जाता है।

कैसे बनती हैं झीलें- धरती पर झीलों का निर्माण कई तरह से हुआ है। चारों ओर पहाड़ियों से घिरे गड्ढे जहां से पानी की निकासी संभव नहीं होती वहां लगातार पानी भरते रहने से झील निर्मित हो जाती हैं। कई झीलें ग्लेशियर के कारण बनती हैं। इसी तरह नदियां भी मैदान के निचले इलाकों में जहां वे सागर से मिलती हैं झीलों का निर्माण करती हैं। कई बार ज्वालामुखी के ठंडा होने से उसके गड्ढों में पानी भर जाता है, जो झील में परिवर्तित हो जाती हैं। कई झीलों को प्रकृति ने नहीं बल्कि मनुष्य ने बनाया है। इसे बिजली उत्पादन, कृषि कार्यों या फिर मनमोहक पर्यटन स्थल का रूप दिया गया है।

❋ दुनियाभर में कई ऐसे अजीबोगरीब झीलें हैं, जिनके बारे में जानकर हैरत होती है। इनमें से कोई झील खून की तरह

लाल दिखाई देती है, तो किसी का पानी खौलता रहता है। ऐसी ही एक अजीबोगरीब झील मणिपुर की राजधानी इम्फाल से कुछ दूरी पर स्थित है। इसे दुनिया की पहली तैरती हुई झील माना जाता है।

भारत के उत्तर-पूर्व में सबसे बड़े साफ पानी की लेक के रूप में प्रख्यात लोकतक झील में कई जगह पर भूखंड के टुकड़े तैरते हुए दिखाई देते हैं, जिनमें पानी भरा हुआ होता है। इन टुकड़ों को फुमदी के नाम से जाना जाता है, जो मिट्टी, पेड़-पौधों और जैविक पदार्थों से मिलकर कठोर संरचना में बने होते हैं। अपने अनोखेपन के कारण ये झील लोगों को खूब आकर्षित करती है।

❋ पहाड़ें के बीच बसा यह आईलैंड - भारत के एक राजा ने करवाया था निर्माण- अजमेर की अनासागर झील और उसके बीच बना आईलैंड हमेशा से लोगों को पसंदीदा प्लेस रहा है। पहाड़ियों के बीच बना यह आईलैंड और उसके चारों तरफ १३ किलोमीटर में फैली अनासागर झील के पानी की खूबसूरती देखते ही बनती है। शाम के समय झील के किनारे खड़े होने पर इसके पानी में विशाल नाग पहाड़ की परछाई झलकती है।

पृथ्वीराज चौहान के पिता ने करवाया था इसका निर्माण- इस झील का निर्माण राजा अरणो रानाजी ने ११३५ से ११५० के बीच करवाया था। झील में एक द्वीप है और सुंदर बगीचे और यह संगमरमर के मंडपों से घिरा हुआ है। बाद में मुगल शासक ने इसके किनारे एक शाही बाग बनवाया जिसे दौलतबाग व सुभाष उद्यान के नाम से जाना जाता है। शाहजहां ने सन् १६२७ में पुनरावृत्त कराया था और इसके किनारों पर संगमरमर के पांच स्तंभ बनवाकर इसकी खूबसूरती में चार चांद लगा दिए। यहां मनोरंजन में बच्चों के लिए झूले, मिनी ट्रेन और बोटिंग की सुविधा है।

४२ किलोमीटर में फैला है इस झील का फ्री कैचमेंट एरिया- झील की सुंदरता को बढ़ाने के लिए मुगलों द्वारा कई निर्माण भी किए गए थे। सर्किट हाउस, जो अंग्रेजों का निवास स्थान था, झील के पास एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित है। अजमेर की ऐतिहासिक अनासागर झील का फ्री कैचमेंट एरिया १६.२५ वर्ग मील यानी ४२.६४ किलोमीटर है। जबकि ग्रॉस कैचमेंट एरिया २७.२५ वर्ग मील यानी ७१.५१ किलोमीटर में फैला है।

❋ सबसे बड़ी झील- कैरिपयन सागर (३७१८००किमी)

❋ झीलों का देश- फिनलैंड।

❋ सिंगार ताल- ४९१९ मीटर की ऊंचाई पर स्थित तिलिचो झील को दुनिया की सबसे ऊंची झील का खिताब मिला है। हाल ही में नेपाल में पर्वतों के बीच मिली एक नई झील चर्चा में है। यह दुनिया की सबसे ऊँची झील हो सकती है। नेपाल हिमालयी क्षेत्र में अन्नपूर्णा रेंज में स्थित इस झील की ऊंचाई आधिकारिक तौर पर अभी नहीं मापी गई है। पर पर्वतारोहियों की टीम द्वारा ली गई माप के अनुसार, यह ५२०० मीटर की ऊंचाई पर स्थित है और इसके १५०० मीटर लंबी और ६०० मीटर चौड़ी होने का अनुमान है। अभी इसे आधिकारिक तौर पर सत्यापित किया जाना बाकी है। यह झील मनांग जिले के चामे ग्रामीण नगरपालिका के अंदर आनेवाली सिंगार खरका में स्थित है। झील को स्थानीय लोग सिंगार ताल कहते हैं। इस झील का निर्माण हिमालय की पिघली बर्फ से हुआ है। हिमालय क्षेत्र में ४९१९ मीटर की ऊंचाई पर स्थित तिलिचो झील को फिलहाल दुनिया की सबसे ऊंची झील होने का खिताब मिला है। तिलिचो झील ४९१९ मीटर की ऊंचाई पर है। स्थानीय मीडिया के मुताबिक, मनांग जिले में काजिन सारा झील को कुछ महीने पहले

पर्वतरोहियों के एक दल ने खोजा था। २०२० तक इसे पर्यटन के लिए तैयार किया जाएगा। इस झील के पूर्व में पर्वत मानास्लु, पश्चिम में पर्वत दामोदर, दक्षिण में लामजुंग और उत्तर में तिब्बत का पेरी है। म्युनिसिपल अधिकारियों में इसके बाद नई उम्मीद जगी है कि इससे पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। यह झील चामे से २४ किलोमीटर की दूरी पर मौजूद है।

❋ पत्थर की झील- आयरलैण्ड में एक अद्‌भुत झील है। उसमें जो भी चीज डालो वही पत्थर बन जाती हैं। कई वस्तुएं ऐसी भी होती है, जिन्हें डालने पर वे पूरी तरह से पत्थर तो नहीं बन पातीं परन्तु उनके चारों तरफ पत्थर की तह जम जाती है। धीरे-धीरे वह वस्तु भी पत्थर की तरह कड़क हो जाती है।

गायब होनेवाली झील- आस्ट्रेलिया के न्यू साउथ में जार्ज लेक नामक एक झील ऐसी भी है, जिसका सारा पानी अचानक गायब हो जाता है तथा लगभग साल पश्चात् झील में पुन: पानी आ जाता है तथा झील में लहरें उठने लगती हैं। पानी न रहने के समय सूखी झील की उर्वरा मिट्टी खेती के काम में लाई जाती हैं। उस समय वह झील खेतों में बदल जाती है।

अलकतरा की झील- दक्षिण अमेरिका ट्रिनीडाड क्षेत्र में एक बड़ी अलकतरा की झील है। जबसे इस झील का पता चला है तब से इसमें करोड़ों टन अलकतरा निकाला जा चुका है। यहां का भण्डार शायद ही खत्म होगा।

सांभर झील- राजस्थान की इस झील को नमक उत्पादन के लिए जाना जाता है। प्रतिवर्ष अक्टूबर से मई तक लगभग दो लाख टन नमक देने के बाद जून से सितम्बर तक चार माह इसका खारापन समाप्त हो जाता है। इन चार माह में बारिश होती है तथा इन दिनों झील का पानी भी मीठा हो जाता है।

❋ कुदरत का अजूबा झील के अन्दर झील - प्रकृति कई रहस्यों से घिरी हुई है। कई रहस्य तो ऐसे हैं जो आज तक वैज्ञानिकों के लिए एक अन्य अचरज का विषय बने हुए हैं।

झीलें तो आपने कई देखी होगी, उनमें नौका विहार का रोमांच भरा आनंद भी लिया होगा। वैसे हमारे देश की डल झील और उदयपुर की झीलें विश्व के सैलानियों के लिए प्राकृतिक मनोरंजन स्थल भी हैं। राजस्थान के सांभर की झील की तो विश्व में एक अलग ही पहचान है, क्योंकि यह अपने गर्भ में टनों नमक समेटे हुए है।

भू-वैज्ञानिकों का मानना है कि झील के बाएं हिस्से में जो प्राकृतिक खड्डा है, उसमें एक तरह की गैस भरी हुई है, जो झील के बाएं किनारे के पानी को सदा हरा बनाए रखती हैं।

तिब्बत की अरूत्सो झील का पानी प्रत्येक १२ वर्ष बाद बारी-बारी से खारे और मीठे जल में बदलता रहता है। एनओ, आयरलैंड में एट्रिम प्रदेश की लोधारीमा झील समय-समय पर एक भूमिगत निकास से अचानक गायब हो जाती है।

❋ साबुन की झील- अमेरिका के रेगिस्तान में साबुन की अनेक झीलें हैं। इनमें से एक झील तो अस्सी एकड़ में फैली हुई है। इसकी गहराई चालीस फीट से भी अधिक है। जिस स्थान पर ये झील बनी हैं, वहां बहुत-सा क्षार जमा होगा। इसी क्षार में पृथ्वी के नीचे से आकर प्राकृतिक तेल मिल गया होगा और इन दोनों ने मिलकर साबुन का इतना विशाल भंडार बना दिया होगा।

❋ आग की झील- हवाई द्वीप में ऐसी झील है जिसे आग की झील कहते हैं। इस झील से हमेशा लपटें और धुओं निकलता ही रहता है। वास्तव में यह झील मोना नामक ज्वालामुखी के मुहाने पर बनी हुई है। इसमें उबलता हुवा लावा भरा है। झील में यह लावा ज्वालामुखी के अंदर की चट्टानों से पिघलने से आता है।

❋ तारकोल की झील- वेस्टइंडीज में त्रिनिदाद नामक द्वीप में एक ऐसी झील है, जिसमें पानी की जगह तारकोल भरा है। आमतौर पर यह तारकोल ठोस रहता है परंतु कभी कभी इसमें बुलबुले उठने लगते हैं और बहुत-सी जगहों पर यह तरल हो जाता है। ऐसा विश्वास किया जाता है कि यह खनिज तेलों की सुखी हुई झील है, जो हजारों वर्ष पहले किसी भयंकर भूकंप के फलस्वरूप बनी होगी। अट्ठाइस फीट गहरी ये झील एक मील लंबी है।

❋ संसार की सबसे गहरी झील बैंकाल झील है जो रूस में है।

❋ उल्का पिंड से बनी क्रेटर झील - आकाशीय उल्का पिंड की टक्कर से निर्मित यह झील दुनिया की पहली और एकमात्र झील है। इसकी खोज ब्रिटिश सेना अधिकारी सी.जी. एलेग्जेंडर द्वारा १८२३ में की गई थी। तभी से यह वैज्ञानिकों के लिए एक अबूझ पहेली बनी है। यह पृथ्वी और ब्रह्मांड के सीधे संबंध का जीता-जागता उदाहरण है। लोनार क्रेटर का निर्माण पृथ्वी पर उल्का पिंड के टकराने से हुआ था। हालांकि दुनिया का सबसे भारी उल्का पिंड होबा नामीबिया में गिरा था। पृथ्वी में अनेक विशाल उल्का पिंडों की उपस्थिति के प्रमाण भूवैज्ञानिकों को मिले हैं। इनके गिरने से भूमि पर विस्तृत गड्ढे बन जाते हैं, जो कालांतर में झील को जन्म देते हैं। अमेरिका के ऐरीजोना प्रांत का बैरिंगर क्रेटर का व्यास १.६ कि.मी.य है। महाराष्ट्र के बुलढाणा जिले में स्थित लोनार क्रेटर का व्यास १.८ कि.मी. और गहराई १३७ मी. है। इस क्रेटर में इस झील का जल १.२ वर्ग किमी क्षेत्र में फैला हुआ है। इस क्षेत्र की आग्नेय चट्टान बेसाल्ट से बनी है। बेसाल्ट चट्टानों में बनी लोनार झील पृथ्वी पर एक अकेली झील है। केवल चंद्रमा में दो क्रेटर, कोपरनिकस व टायचो हैं।

मंगल की सतह जैसी - पूरी दुनिया के वैज्ञानिकों की निगाह इस झील पर है। अमेरिकी अंतरिक्ष संस्थान नासा का मानना है कि बेसाल्ट चट्टानों से बनी यह झील बिल्कुल वैसी ही है, जैसी मंगल की सतह पर पाई जाती है। इसके रासायनिक गुण मंगल पर पायी गयी झीलों के रासायनिक गुणों से मिलते हैं। वैज्ञानिकों के लिए इसका रहस्य हमेशा से ही अबूझ पहेली बना है। सन २००६ में जब एकाएक इस झील का पानी वाष्पीकृत हो गया और झील सूख गई तो इस झील के इर्द-गिर्द रहनेवाले लोगों ने पानी की जगह नमक और खनिजों के छोटे बड़े चमकते हुए क्रिस्टल देखे। ऐसी परिस्थिति में कोई भी इसमें जीवन की कल्पना नहीं कर सकता था, लेकिन इस झील में कई तरह के सूक्ष्म जीव पाए गए हैं। झील के बाहरी किनारे का पानी अलग तरह का है। अन्दर का जल क्षारीय है।

इस झील में पानी की ऊपरी सतह पर जमी नमक की परत अनोखी है। झील के पानी के लगातार बाष्पीकृत होने के बावजूद नमक का कम न होना अजीब बात है। सबसे हैरान करनेवाली बात तो यह है कि लोनार झील का पानी खारा है, लेकिन इसके आसपास के जल स्त्रोतों का पानी मीठा है। भूमि के जिस स्त्रोत से लोनार में जल आ रहा है, वह बाहर किसी भी दूसरे जल स्त्रोत से नहीं जुड़ा क्योंकि अगर ऐसा होता तो झील के आस-पास के इलाकों की पूरी फसल नष्ट हो गई होती। जबकि इसके ठीक विपरीत आस-पास के इलाकों में खेती उन्नत है।

❋ ताइवान में है दुनिया की अनोखी झील जो हर दिशा से दिखाई देती है अलग

यह झील ताइवान में मौजूद है। इस झील का नाम सनमून लेक है। सनमून लेक की खास बात ये है कि आप इसे अलग-अलग दिशाओं से देखेंगे तो इसका आकार आपको अलग-अलग दिखाई देगा। ये झील चारों तरफ से पहाड़ों से घिरी हुई है। अगर आप इसे पूर्व दिशा से देखेंगे तो आपको ये सूर्य के समान गोल दिखाई देगी। वहीं पश्चिम दिशा से

देखने पर झील का आकार आधे चंद्रमा के समान दिखाई देता है।

❊ जलप्रपात, झरने - ❊ विश्व का सबसे ऊंचा झरना वेनेजुएला में स्थित एंजिल झरना है।

❊ विक्टोरिया जलप्रपात- जिंबाब्वे और जांबिया की सीमा पर १.७ मीटर चौड़ा और १०८ मीटर ऊंचा यह झरना धुंध बनाता है, जिसे २० किलोमीटर दूर से देखा जा सकता है। यह झरना जांबिया के मोसी-ओआ-तुन्या राष्ट्रीय पार्क और जिंबाब्वे के विक्टोरिया जलप्रपात नैशनल पार्क का हिस्सा है। यहां आप झरने के साथ इंद्रधनुष के मनोरम दृश्य भी देख सकते हैं।

❊ कहीं आग तो कहीं खून जैसा पानी, ये हैं दुनिया के विचित्र झरने

चमकता हॉर्सटेल झरना, योसामेट- चमकती हॉर्सटेल झरने को प्रकृति का सबसे अद्‌भुत झरना माना जाता है। सैकड़ों फोटोग्राफरों ने योसेमेट नेशनल पार्क (कैलिफोर्निया, यूएस) पर घुसपैठ की थी। जो घोडेपूंछ (झरना घोड़े की पूंछ जैसा) में फायरफॉल (अग्नि झरना) के रूप में माना जाता है, जो की एक घटना है जो प्रत्येक वर्ष फरवरी महीने में दस दिनों के लिए होती है। यहां आनेवाले सैलानी ज्वालामुखी विस्फोट के लिए आग लगने के अनुभव की तुलना करते हैं। यह प्रभाव केवल कुछ मिनट तक चलता है, बस जब सूर्यास्त होता है और पानी पर नारंगी प्रकाश डालता है। प्रकाश की तीव्रता इतनी मजबूत होती है कि यह रसातल में बहनेवाले लावा को अनुकरण करती है, लेकिन यह केवल एक ऑप्टिकल भ्रम है।

रक्त झरना, अंटार्कटिका- अंटार्कटिका में मैकमुर्डो ड्राई वैलीज में स्थित टेलर ग्लेशियर के सामने के चेहरे पर बर्फ का झरना है रक्त के रंग के सामान गहरे लाल रंग के होते हैं। यह क्षेत्र दुनिया में सबसे अजीब है और कुछ वैज्ञानिक भी मानते है कि झील में जो जल प्रपात का कारण बनता है, वहां अस्थिर परिस्थितियों में जीवन के लिए बाह्य बाह्य जीव हो सकते हैं। अंटार्कटिका में मौजूद सबसे आकर्षक प्राकृतिक चमत्कारों में से एक ब्लड फॉल्स हैं। लगभग हर किसी के लिए अज्ञात, यह नमक के पानी का स्रोत है जिसमें गहरा लाल रंग होता है जो कभी-कभी टेलर ग्लेशियर से निकलता है।

बाटारा जॉर्ज झरना, लेबनान- माउंट लेबनान के रास्ते में स्थित पोथोल बाटारा के नीचे कास्केड को साल १९५२ में खोजा गया, इसके पानी की बूंद २५५ मीटर जुरासिक चूना पत्थर की गुफा में गिरती है। लेबनान माउंटेन ट्रेल पर स्थित बाटारा पोथोल में पानी २५५ मीटर से अधिक नीचे गिरता है और जुरासिक चूना पत्थर से बना होता है। वसंत ऋतु में पिघलने वाली बर्फ के दौरान, ९०-१०० मीटर का झरना तीन पुलों के पीछे गिर जाता है और फिर पाताल में गिर जाता है।

मॉरीशस में पानी के नीचे झरना- मॉरीशस के दक्षिण-पश्चिम कोने में स्थित एक असाधारण भ्रम, पानी के नीचे एक झरना। ऊपर से देखा जाने पर, आप पानी के नीचे झरने की छाप पैदा करते हुए रेत के दूसरे दौर को स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। रेत और गाद जमा होकर चलने के कारण पानी में निर्मित भ्रामक दृश्य इंप्रेशन विशेष रूप से हवाई शॉट्स और यहां तक कि उपग्रह चित्रों में प्रभावी और प्रभावशाली है। एक और कोण से देखा गया, समुद्र स्पष्ट रूप से केवल नीला, हरा और सफेद की एक शानदार श्रृंखला है, जो तीन-आयामीता की भावना को उत्तेजित करता है तो झरना फिसलने के रूप में गिर जाता है।

क्षैतिज फॉल्स- किम्बर्ले, पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया- पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया के किम्बर्ली में स्थित, यह केवल दो क्षैतिज झरनों में से एक है। वे दोनों पश्चिम ऑस्ट्रेलिया के किम्बर्ली बेल्ट में स्थिर टैलबोट बे, बुक्कानेर द्वीपसमूह में स्थित हैं।

इसके अलावा, इन क्षैतिज फॉल्स मैकलार्टी रेंज में स्थित खूबसूरत गोरग्स के साथ पूरक हैं।

❋ ब्लू नाइल फॉल्स- अफ्रीका के इथियोपिया में स्थित यह वॉटरफॉल ब्लू नाइल नदी पर स्थित है। इस वॉटरफॉल को टिस अबे के नाम से भी जाना जाता है। टिस अबे का मतलब होता है धुएं वाला पानी। यह विश्व के सुंदर पर्यटन स्थलों में से एक है। ऊंचाई से गिरते पानी की फुहारों पर जब इन्द्रधनुष बनता है तो उस दृश्य को देखना वाकई बहुत ही अद्भुत होता है।

❋ विन्नुफासेन फॉल्स- यूरोप का सबसे ऊंचा और विश्व में ऊंचाई के मामले में छठे स्थान पर है नार्वे की विन्नु नदी पर स्थित विन्नुफासेन फॉल। विन्नुफजेलेट पर्वत के विन्फोना ग्लेशियर से निकलने वाले इस वॉटरफॉल का मुख्य आकर्षण है नजदीक से गुजरनेवाली सड़क। इस सड़क से गुजरने वालों को दूर से ही यह सुंदर झरना दिखाई देता है। इस वजह से यह सैलानियों के आकर्षण का केंद्र रहता है। ऊंचाई से गिरने के कारण यहां भी सफेद धुंध छा जाती है। ग्लेशियर की बर्फ का पानी पिघलकर ८६५ मीटर की ऊंचाई से नीचे गिरता है। यहां भी लोग सालों भर आते रहते हैं।

❋ जलप्रपात- महात्मा गांधी या जोग गरसोप्पा जलप्रपात- यह भारत का सबसे ऊंचा जलप्रपात है जो कि कर्नाटक राज्य में शरवती नदी पर स्थित है। इस जलप्रपात की ऊंचाई २५५ मीटर है। जोग फॉल्स- यह वॉटरफॉल महाराष्ट्र तथा कर्नाटक की सीमा पर बसी शरवती नदी पर स्थित है यह ४ छोटे-छोटे झरनों से मिलकर बना है। यह फॉल्स जेरस्पा नाम से भी काफी मशहूर हैं।

शिवसमुद्रम जलप्रपात- यह कर्नाटक राज्य में कावेरी नदी पर स्थित है। इस जलप्रपात की ऊंचाई ९० मीटर है। येन्ना जलप्रपात- यह मध्यप्रदेश के महाबलेश्वर के समीप नर्मदा नदी पर स्थित हैं। इस जलप्रपात की ऊंचाई लगभग १८३ मीटर है।

चचाई जलप्रपात- यह जलप्रपात मध्यप्रदेश के रीवा जिले में बीहड़ नदी में स्थित है। इसकी ऊंचाई लगभग १३० मीटरहै। धुआंधर जलप्रपात- यह मध्यप्रदेश में जबलपुर के निकट नर्मदा नदी पर स्थित है। इसकी ऊंचाई १५ मीटर है। चूलिया जलप्रपात- यह जलप्रपात मध्यप्रदेश के मंदसौर में चम्बल नदी पर स्थित है। इसकी ऊंचाई १८ मीटरहै। पायकारा जलप्रपात- यह जलप्रपात तमिलनाडु राज्य में नीलगिरि की पहाड़ियों में स्थित है। इस जलप्रपात का प्रयोग जल विद्युत उत्पादन के लिए किया जाता है। गोकाक जलप्रपात- यह कर्नाटक राज्य के बेलगाँव जिले में गोकक नदी पर स्थित है। इस जलप्रपात की ऊंचाई लगभग ५४ मीटर है। बिहार जलप्रपात- यह टोंस नदी पर स्थित है। तथा इसकी ऊंचाई लगभग १०० मीटरहै। पुनासा जलप्रपात- यह राजस्थान में चंबल नदी पर स्थित है। मधार जलप्रपात- यह जलप्रपात चंबल नदी पर स्थित है। हुण्डरू जलप्रपात- यह जलप्रपात झारखंड राज्य में स्वर्णरेखा नदी के किनारे स्थित है। इसकी ऊंचाई लगभग ७४ मीटर है। चित्रकूट जलप्रपात- यह जलप्रपात छतीसगढ़ राज्य के बस्तर जिले में इंद्रावती नदी पर स्थित है। यह भारत का न्याग्रा प्रपात नाम से भी जाना जाता है। इसकी ऊंचाई लगभग ९० फुट है। दूधसागर जलप्रपात- यह जलप्रपात गोवा तथा कर्नाटक राज्य की सीमा पर मांडवी नदी पर स्थित है। इसकी ऊंचाई लगभग ३१० मीटर है। किलियूर जलप्रपात- यह तमिलनाडु राज्य में किलियूर नदी पर है। वसुधारा जलप्रपात- यह उत्तराखण्ड राज्य में अलकनंदा नदी पर स्थित है।

❋ दुनिया के विचित्र झरनों व झीलों की जानकारी

ऑस्ट्रिया के टौर्न पर्वत में नेडल जल प्रपात प्रतिदिन पानी के ऊपर ठीक साढ़े तीन बजे मध्यान्ह एक इंद्रधनुष प्रतिबिंबित करता है, स्कॉटलैंड का लोशक्रॉन जल प्रपात एक हजार फीट ऊंचा है फिर भी बहुत कम लोगों ने इसे देखा है, क्योंकि यह एक बार में सिर्फ ३० मिनट ही गिरता है और वह भी केवल मूसलाधार वर्षा के बाद ही।

आइसलैंड में आक्जारा जल प्रपात १०३० वर्ष पूर्व, इसलिए बनाया गया था ताकि द्वीप की संसद की एक सभा के लिए वह पिछले पर्दे तथा ध्वनि अवरोधक का काम दे सके। रोडेशिया में शक्तिशाली विक्टोरिया जल प्रपात का एक भाग सदैव चटकीला इंद्रधनुष बनाता है। इटली में आरमिआ के निकट एक ऐसा झरना है, जिसमें सर्दियों में भाप उठाता हुआ गरम पानी होता है और गर्मियों में बर्फ की तरह ठंडा पानी।

❋ इगुआजु फॉल्स- इस फॉल्स की खोज १५४१ में अलवर नुनेज कैबेजा ने की थी। यह दुनिया के सबसे खूबसूरत फॉल्स में से एक कहलाता है। यह वाटरफॉल ब्राजील और अर्जेंटीना के बॉर्डर में स्थित है।

❋ विक्टोरिया फॉल्स- यह वाटरफॉल्स जाम्बिया और जिम्बाब्वे के पास बसी जांबेजी नदी पर स्थित है। यहां पर पानी धुएं की तरह गिरता दिखाई देता है। इसकी लंबाई १.७ किलोमीटर और ऊंचाई १०८ मीटर है। यह दुनिया के सबसे बड़े वाटरफॉल की गिनती में आता है।

❋ एंजेल फॉल्स- यह दुनिया का सबसे ऊंचा वाटरफॉल है, जिसकी ऊंचाई ९७९ मीटर है। साथ ही यह वेनेजुएला के चुरूम नदी पर स्थित है। यहा का नजारा देखनेवाला होताहै , जो हर किसी को अपना दीवाना बना लेता है।

❋ अमेरिका के कैलिफोर्निया के योसमिते नेशनल पार्क में इस झरने का विचित्र नजारा दिखाई देता है। इसे देखकर ऐसा लगता है जैसे झरने से आग का लावा बह रहा हो। इस झरने का नाम हॉर्सटेल फायरफॉल है। यह सीजनल वाटरफॉल है, जो सर्दियों और पतझड़ की शुरुआत में बहता है।

यह एल कैप्टन के पूर्वी तरफ ४८० मीटर की ऊंचाई से बहता है। फरवरी के मध्य में जब मौसम काफी ठीक होता और शाम के वक्त जब सूरज की किरणें झरने पर गिरती हैं तो यह अनोखा दृश्य नजर आता है। ऐसा लगता है जैसे लावा बह रहा हो।

❋ ग्लेशियर (हिमनद) - ❋ हिमालय श्रेणी में १५ हजार से ज्यादा हिमनद (ग्लेशियर) हैं जो १२ हजार वर्ग किलोमीटर में फैले हुए हैं। ७२ किलोमीटर लंबा सियाचिन हिमनद विश्व का दूसरा सबसे लंबा हिमनद है। हिमालय की पर्वत श्रेणियां मानसूनी बादलों के मार्ग में अवरोध उत्पन्न करके इस क्षेत्र में पर्वतीय वर्षा कराती हैं। हिमालय पर्वत पांच देशों की सीमाओं में फैला है। ये देश हैं - भारत, पाक, नेपाल, भूटान और चीन।

❋ सन १९५६ में अंटार्कटिका में एक हिमखंड देखने को मिला, जो ३३५ कि.मी. लम्बा और ९७ कि.मी. चौड़ा था। इसका आकार हमारी राजधानी दिल्ली से भी कहीं बड़ा था।

❋ नहर - जमीन के नीचे एक नहर- मरुस्थलों में लोग कहीं-कहीं कैनेट भी बना लेते हैं। कैनेट एक तरह से जमीन के नीचे बनाई गई नहर है। यहां से गर्मी से पानी भाप बनकर उड़ नहीं जाता। इसके माध्यम से पहाड़ों के निचले इलाकों को मानव निर्मित तालाब से जोड़ दिया जाता है, ताकि पहाड़ से बहकर आनेवाला पानी तालाब में पहुंच जाए और उसे घरेलू कार्यों में इस्तेमाल किया जा सके। कैनेट बीच-बीच में से खुली होती है। इससे उसमें हवा की आवाज तो रहती ही है।

❋ बहुत सी नहरें होने के कारण थाईलैंड की राजधानी बैंकाक को पहले पूर्व का वेनिस कहा जाता था।

❋ स्वेज नहर भूमध्यसागर और लाल सागर को जोड़ती है।

❋ पनामा नहर प्रशांत महासागर और उत्तरी अटलांटिक महासागर को जोड़ती है।

❋ रेगिस्तान, मरूस्थल - ❋ रेगिस्तान- संपूर्ण पृथ्वी के इतिहास में रेगिस्तान की उपस्थिति सदैव रही है। वैज्ञानिकों के अनुसार रेगिस्तान वह क्षेत्र हैं जहां वार्षिक वर्षा २५० मि.मी. से कम होती है। विश्व में वर्षा की सर्वाधिक अनियमितता रेगिस्तान में ही देखी गई है। रेगिस्तान धरती के विशाल क्षेत्र में विस्तारित है। महासागरों के पश्चात् रेगिस्तान धरती के सबसे बड़े पर्यावरण तंत्र हैं। पृथ्वी की लगभग एक-तिहाई भूमि रेगिस्तानों से घिरी है। अधिकांश रेगिस्तान कर्क रेखा व मकर रेखा के निकटवर्ती क्षेत्रों में स्थित हैं। यह स्थान दोनों अक्षांशों पर भूमध्य रेखा से ३०० पर स्थित हैं। रेगिस्तान अस्थायी हैं जो सिकुड़ते व विस्तारित भी होते रहते हैं।

❋ रेगिस्तान उस जगह को कहते हैं जहां प्रत्येक वर्ष २५ सें. मी. से भी कम वर्षा होती है। कुछ रेगिस्तानी भागों में तो पूरे वर्ष बरसात नहीं होती। फलस्वरूप वहाँ धूल भरी आंधियां चलती है एवं इनके साथ ही थोड़ी देर के लिए भारी वर्षा भी होती है।

अधिकांश रेगिस्तान अत्यन्त गर्म एवं सूखे भूभाग होते हैं। लेकिन कुछ ठंडे एवं बर्फ के भी रेगिस्तान होते हैं। जैसे एशिया का गोबी एवं आर्कटिक एवं अन्टार्कटिक अत्यन्त गर्म रेगिस्तान में भी रातें ठंडी होती हैं। सारे रेगिस्तान बलुए नहीं होते, कहीं-कहीं चट्टानें एवं बजरीयुक्त भी होते हैं।

रेगिस्तान के पौधे और जानवर दोनों ही असह्य गर्मी सहने के आदी होते हैं तथा प्रकृति इनकी संरचना भी इसी के अनुरूप करती है। कुछ पौधे, जैसे कैक्टस, पानी का संग्रह किये रहता है। तथा उसकी जड़ें ऊंची होती जाती हैं ताकि जमीन से कम से कम नमी खींच सके। कुछ पौधे बीज बनकर झड़ जाते हैं और वर्षा होते ही अवलम्ब अंकुरित होकर जमीन के पूरी तरह सूखने के पहले ही पौधा बन जाते हैं। रेगिस्तान के छोटे-छोटे जानवर हल्की, छोटी झाड़ियों में दिनभर की गर्मी में छुपे रहते हैं, वे पत्थरों की खोहों में या रेत में बिल बनाकर रहते हैं एवं रात होते ही खाने की तलाश में निकल पड़ते हैं। अमेरिका के जैक खरगोश तथा अफ्रीका के फेनेक लोमड़ी के कान असाधारण तौर पर लंबे होते हैं। गर्मी का प्रभाव कम करने में ये संचालक का काम करते हैं। बड़े जानवर जैसे ऊँट आदि सूर्य की तपती गर्मी से अपने आपको छिपाने में असमर्थ होते हैं। उनके शरीर के घने बाल धूप से उनकी रक्षा करने में सहायक होते हैं। शरीर से निकला पसीना भी उन्हें ठंडा रखने में मददगार होता है। वैसे भी अन्य जानवरों की तुलना में रेगिस्तानी जानवर अधिक गर्मी बर्दाश्त करने के आदि होते हैं।

मांसाहारी जीवों को शाकाहारियों की अपेक्षा पानी की अधिक आवश्यकता होती है। शाकाहारी जानवर कैक्टस और दूसरे पेड़ों की पत्तियों से अपना जीवनयापन करते हैं, इन पत्तियों में कुछ पानी तो होता ही है। बारहसिंगा जैसा ही जानवर एडेक्स खाने की तलाश में लम्बी दूरी तय करता है। कुछ जीवों को तो पानी की बिल्कुल आवश्यकता नहीं पड़ती ऐसा ही एक जीव है हिरन-मुसा जो चूहे और कंगारू का मिला-जुला रूप है। इसके दोनों पिछले पैर बड़े-बड़े होते हैं तथा यह उछलकर चलता है।

❋ सहारा मरुस्थल हर महीने एक किमी बढ़ रहा है।

❋ अलास्का के रेगिस्तान में १०० फीट ऊंचे तक रेत के किले हैं।

❋ दुनिया का सबसे बड़ा मरूस्थल सहारा मरूस्थल है। ये उत्तर अफ्रीका में लगभग ३५ लाख वर्गफीट में फैला है। यहां साल में तीन इंच से भी कम पानी बरसता है।

❋ रेगिस्तान ऊर्जा के नये केंद्र हो सकते हैं। सहारा रेगिस्तान के ८०० किमी गुणा ८०० किमी क्षेत्र में इतनी सौर ऊर्जा का उत्पादन हो सकता है जो पूरे विश्व की विद्युत आवश्यकता से ज्यादा है।

❋ ऐसा एकलौता अरब देश लेबनान है जिसमें रेगिस्तान नहीं है।

❋ ४० मिलियन टन पोषक तत्वों से भरपूर धूल हवा में सहारा मरुस्थल से उड़कर अमेजन के जंगलों में हर साल पहुंच जाती है।

❋ एशिया महाद्वीप में मंगोलिया के अधिकांश भाग पर गोबी मरुस्थल फैला हुआ है। गोबी का मतलब होता है जल रहित स्थान। इस मरुस्थल का पश्चिमी भाग तारिम बेसिन का ही एक हिस्सा है। यह संसार का पांचवां बड़ा और एशिया का सबसे विशाल रेगिस्तान है। सहारा रेगिस्तान की भांति इस रेगिस्तान को भी तीन भागों में बांटा गया है।

गोबी रेगिस्तान का अधिकतर भाग रेतीला न होकर चट्टानी है। यहां रेगिस्तान की जलवायु में तेजी से बदलाव होता है। हर चौबीस घंटे में यहां का तापमान बदलता है। गोबी रेगिस्तान में वर्षा की औसत मात्रा ५० से १०० मि.मी. है। यहां अधिकतर वर्षा गर्मी के मौसम में ही होती है। रेगिस्तान में अधिकतर नदियां बारिश के मौसम में ही बहती हैं। केवल वर्षा ऋतु में ही नदी में पानी रहता है। यहां सूखा प्रतिरोधी गुणोंवाले सैकसोल नामक पौधे बहुतायत में मिलते हैं। लगभग पत्ती विहीन यह पौधा ऐसे क्षेत्रों में भी उग आता है। अपने इस विशेष गुण के कारण यह पौधा भूक्षरण को रोकने में सहायक होता है। गोबी रेगिस्तान बेकिटरियन ऊंट जिनके दो कूबड़ होते हैं, का आवास स्थल माना जाता है। जंगली गधे भी यहां पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त यहां जंगली घोड़े, गिलहरी व छोटे कद के बारहसिंग भी पाए जाते हैं।

संसार के बड़े मरुस्थलों में से एक गोबी का मरुस्थल, जिसका विस्तार उत्तर से दक्षिण में लगभग ६०० मील तथा पूर्व से पश्चिम में लगभग १००० मील है। इसकी प्राकृतिक भू-रचना ढालू मैदान के समान है, जिसके चारों तरफ पर्वतीय ऊंचाइयां हैं।

❋ सहारा रेगिस्तान में ये अद्‌भुत चट्टानें - अफ्रीका में सहारा रेगिस्तान के बीच में एक जगह ऐसी है, जहां की चट्टानें लोगों को अचरज में डालती हैं। मध्य सहारा में चाड़ के उत्तर पूर्वी इलाके के इनेडी पठार पहुंचना बेहद कठिन है। इस स्थान की यात्रा खतरनाक है, क्योंकि रास्ते में लुटेरों का भारी आतंक रहता है।

राजनीतिक अस्थिरता के कारण भी यहां जाना खतरे से बाहर नहीं है। यहां पर सड़कों की कल्पना करना व्यर्थ है। इस जगह पर केवल एक बार खानाबदोश लोगों का कारवां पहुंचा था। इसके काफी समय बाद अब बहुत कम संख्या में लोग यहां जाने लगे हैं। अब ४ बाय ४ वाहन (मरुस्थल में चल सकनेवाले वाहन जैसे जीप) से यहां पर्यटक पहुंचने लगे हैं।

चाड के इनेडी मरुस्थलीय पठार में बेहद विचित्र बालुई चट्टानें हैं। बालू की रॉक्स से बने कई नेचुरल आर्च इनेडी में नजर आते हैं। इनमें दुनिया का सबसे भव्य एलोबा आर्च है। इसकी ऊंचाई लगभग १२० मीटर है। भौगोलिक आकर्षण के अलावा इस क्षेत्र में कई रॉक पेंटिंग्स भी हैं। इनमें कई तरह के जानवरों के चित्र बने हुए हैं।

इनेडी पठार में कई रेगिस्तानी पोखर भी हैं। इनमें गुएल्टा डी आर्चेई काफी विख्यात है। यह फाड़ा कस्बे के नजदीक स्थित है। यह पोखर इस क्षेत्र का प्रमुख जलस्रोत है। इसमें बड़ी संख्या में क्रोकोडाइल भी हैं। इस क्षेत्र आने के लिए ऊंटों का सबसे अधिक उपयोग होता है।

❋ रेगिस्तान में पानी दिखे तो समझें मरूद्यान है - मरुस्थल में बारिश नहीं होती, इसका मतलब यह नहीं है कि यहां पानी बिलकुल नहीं होता। यहां कहीं-कहीं मरुध्यान (ओएसिस) यानी मरुद्यान पाए जाते हैं। उसका पानी रिस-रिसकर जमीन के नीचे चला जाता है और नीचे-नीचे वह बहता हुआ दूर तक निकल जाता है। कभी-कभी उसके रास्ते में कोई चट्टान या पथरीली जमीन आ जाती है तो पानी वहीं इकट्ठा होने लगता है। एक समय ऐसा भी आता है, जब पानी जमा होते-होते जमीन में पड़ी दरारों में से बाहर निकल आता हे। ऐसा ज्यादातर मरुस्थल के निचले इलाकों में होता है।

सबसे बड़ा रेगिस्तान- सहारा दुनिया का सबसे बड़ा रेगिस्तान है। यही नहीं, यह दुनिया का सबसे सूखा और गरम इलाका भी है। अफ्रीका महाद्वीप के एक चौथाई से भी अधिक इलाके में यह फैला हुआ है। इसका कुल क्षेत्रफल ३३२०००० वर्ग किलोमीटर है। इस क्षेत्रफल के और बढ़ने की आशंका है, क्योंकि धरती के बिगड़ते पर्यावरण का असर यहां के आसपास के भूभाग पर भी पड़ रहा है। वहां से हरियाली गायब होती जा रही है और धीरे-धीरे वह इलाका भी मरुस्थल में तब्दील हो रहा है। उत्तरी अफ्रीका और मध्य पूर्व एशिया में स्थित इलाकों में भीषण गर्मी पड़ती है। ये ज्यादातर इलाके रेगिस्तानी हैं और यहां शायद ही कभी बारिश होती है। छायादार स्थान का तापमान भी ३८ डिग्री सेंटीग्रेड तक होता है। कभी-कभी तो वह ४९ डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुंच जाता है।

तीन सितंबर, १९२२ को लीबिया के अल अजीयाह नामक स्थान का तापमान ५८ डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुंच गया था। गरम वातावरण के चलते ही यहां पसीना इतनी जल्दी सूखता है कि शरीर ठंडा हो ही नहीं पाता। इसीलिए यहां रहनेवाले लोग अपने सिर पर कपड़ा लपेटकर रखते हैं और शरीर पर ढीला-ढाला लबादानुमा वस्त्र पहनते हैं, ताकि सूरज की तेज किरणें शरीर तक न पहुंच पाएं और शरीर में पानी की पर्याप्त मात्रा बनी रहे। जल्दी-जल्दी पसीना सूखने के चलते शरीर में पानी की कमी हो सकती है।

❋ रेगिस्तान में आपने रेत के बड़े-बड़े टीले देखे होंगे। रेत ही रेत नजर आती हैं वहाँ चारों ओर। इस सब का एक कारण वहाँ वर्षा का कम होना भी है। अक्सर रेगिस्तान में बादल बहुत कम बरसते हैं। विश्व के अधिकतर रेगिस्तान भूमध्य रेखा से कुछ ही दूर पर हैं। रेगिस्तान से उठनेवाली गरम हवा तेजी से चलती है। जब यह हवा भूमध्य रेखा के पास से आनेवाली ठंडी हवा से टकराती है तो बादल बनते हैं। नमी से भरे ये बादल जहाँ बनते हैं, वहीं बरस जाते हैं। मतलब, रेगिस्तान से दूर ही ये सारा पानी बरसा देते हैं। पानी बरसाने के बाद नमी रहित ये हवा चारों ओर घूमने लगती है। घूमते-घूमते रेगिस्तान तक भी पहुंच जाती है। लेकिन इस हवा में इतनी नमी नहीं होती कि वहां की गरम हवा से मिलकर बादल बनाए। कभी-कभी हवा में कुछ नमी बच जाती है तो थोड़ी बहुत वर्षा हो जाती है।

❋ सबसे लंबी नदी - नील (अफ्रिका)

❋ लद्दाख भारत का एकमात्र शीत मरुस्थल है।

❋ **जंगल -** जंगल में शेर, भालू, बाघ, चीता, लकड़बग्घा, तेंदुआ और जंगली सुअर जैसे कई खूंखार जानवर रहते हैं।

इनके अलावा जंगल में लुटेरे और डाकू भी छिपे रहते हैं जो न केवल लोगों को लूटते हैं बल्कि कई बार जान से भी मार डालते हैं। जंगल हमारे बड़े काम आते हैं। उनमें सबसे प्रमुख तो लकड़ी ही होती है। यह भी दो प्रकार की होती है- एक जलाने के काम आनेवाली और दूसरी इमारती सामान और फर्नीचर बनाने के काम आनेवाली। खुशबूदार चंदन की लकड़ी भी जगलों से ही मिलती है। रबड़ भी जंगल के पेड़ों से प्राप्त होता है तथा कई जड़ी-बूटियां जंगलों से मिलती हैं।

सदाबहार जंगल- भारत के दक्षिण-पश्चिम घाट, अंडमान-निकोबार तथा उत्तर पूर्व के क्षेत्रों में सदाबहार जंगल पाए जाते हैं। इन जंगलों के पेड़ लम्बे और सीधे होते हैं। इनके तने मजबूत होते हैं जो आंधी-तूफान को आसानी से झेल लेते हैं। इस जंगल के पेड़ों में ताड़, सुपारी, आम, जामुन मुख्य होते हैं।

नम पतझड़ी जंगल- भारत के पश्चिमी तथा उत्तर-पश्चिमी क्षेत्रों को छोड़कर शेष सभी क्षेत्रों में यह जंगल पाए जाते हैं। ऐसे जंगलों में पाए जानेवाले पेड़ों के तने चौड़े होते हैं। पतझड़ के मौसम में कुछ पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं। इन पेड़ों में साल, सागौन, बांस और शीशम के अलावा आम के पेड़ भी मिलते हैं।

शुष्क उष्ण कटिबंधी जंगल- उत्तर-पूर्वी क्षेत्र को छोड़कर भारत के समस्त उत्तरी क्षेत्र, मध्यप्रदेश, गुजरात, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक और तमिलनाडु में शुष्क उष्ण कटिबन्धी जंगल पाए जाते हैं। वहां साल, बबूल, बांस, शीशम और आम के पेड़ मिलते हैं।

उष्ण कटिबंधी जंगल- पर्वतीय क्षेत्रों में पाए जानेवाले उष्ण कटिबन्धी जंगल पूर्वी हिमालय तथा पश्चिमी घाटों में पाए जाते हैं। यहां आल्डर, चेस्टनर, बिर्च और चेरी के अलावा कई तरह के आर्किड, बांस, लताएं आदि मिलते हैं। शिवालिक पहाड़ियों, पश्चिमी और मध्य हिमालय क्षेत्र, खासी, नागा और मणिपुर के पर्वतीय जंगलों में देवदार के पेड़ ज्यादा मिलते हैं। यहां चीड़, ओक और साल भी मिलते हैं। निचले क्षेत्रों में साल, संदल, आंवला तथा अमलतास के पेड़ होते हैं।

शुष्क सदाबहार जंगल- यह जंगल शिवालिक पहाड़ियों तथा हिमालय की तलहटियों में १००० मीटर की ऊंचाई तक मिलते हैं। इन जंगलों में अनार, जैतून और कनेर जैसे चमकीले पत्तोंवाले सदाबहार पेड़ मिलते हैं। जंगलों की अंधाधुंध कटाई होने से रही है। हमारी वन नीति के अनुसार कुल भौगोलिक क्षेत्र के ३३ फीसदी हिस्से में जंगल होने चाहिए जबकि हैं केवल २० फीसदी हिस्सों में ही।

इसका कारण यह है कि हमारे देश में औसतन प्रति व्यक्ति ७ पेड़ों का इस्तेमाल होता है। इस हिसाब से करीब ७०० करोड़ पेड़ प्रति वर्ष नष्ट हो जाते हैं। इसके अलावा जब कोई बांध बनाया जाता है तो २५ लाख पेड़ डूब जाते हैं। विकास परियोजनाओं में हर साल ३ मिलियन हेक्टेयर क्षेत्र के जंगल नष्ट हो जाते हैं। वन नियमों के अनुसार एक पेड़ के बदले १० पेड़ लगाए जाने चाहिए लेकिन इस नियम का भी पालन नहीं होता है।

❊ पृथ्वी के २५ प्रतिशत हिस्से वन से आच्छादित है।

❊ ५०,००० साल पहले भी ऑस्ट्रेलिया के घने जंगलों में किलर कंगारु रहते थे। उनके खाने में मांस ही ज्यादातर होता था।

❊ अपनी धरती पर बड़े-बड़े जंगल हैं। जहां हजारों तरह के पेड़-पौधे हैं और हजारों तरह के जीव रहते हैं। ऐसा ही एक घना जंगल है अफ्रीका महादेश में मध्य में। कांगो देश से जुड़ा यह जंगल दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा जंगल है। इस जंगल में हमेशा बारिश होती रहती है, इस कारण इसे कांगो रेन फॉरेस्ट कहा जाता है।

कांगो रेन फॉरेस्ट मध्य अफ्रीका में स्थित है। यह २३ लाख ४५ हजार वर्ग किलोमीटर से भी अधिक क्षेत्र में फैला है। अपना देश भारत लगभग ३२ लाख ८७ हजार वर्ग किलोमीटर में फैला है। यानी अपने देश के लगभग ७५ प्रतिशत क्षेत्र के बराबर है यह जंगल।

यहां औसतन ५८ इंच बारिश हर वर्ष होती है। पहले नम्बर पर अमेजन रेनफॉरेस्ट है, जो ५५ लाख वर्ग किलोमीटर में है। यानी अपने देश के क्षेत्रफल से डेढ़ गुना ज्यादा क्षेत्र में है अमेजन का जंगल।

कांगो रेन फॉरेस्ट का ज्यादा हिस्सा कांगो देश में आता है। जो अफ्रीका महादेश के मध्य में स्थित है। इसे डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो कहा जाता है। संक्षेप में इस देश को डीआरसी भी कहा जाता है और डीआर कांगो भी।

इस घने जंगल का काफी हिस्सा ऐसा है, जहां अब तक इंसान नहीं पहुंच पाया है। यहां तक कि इस जंगल में रहनेवाले लोग भी काफी बड़े हिस्से तक नहीं पहुंच पाए हैं। इन घने हिस्सों में सूर्य की एक प्रतिशत रोशनी ही जमीन तक पहुंच पाती है।

इस जंगल में रहनेवाले लोगों को पिग्मी कहा जाता है। यहां के पुरुषों की औसत लंबाई ४ फीट १० इंच होती है, जबकि महिलाओं की औसत लंबाई ४ फीट १ इंच होती है।

इस जंगल में पांच नेशनल पार्क हैं, जिन्हें युएन विश्व धरोहर का दर्जा प्राप्त है। यानी यह जंगल दुनिया भर के लिए बहुत महत्व रखता है।

इस जंगल के बीच से कांगो नदी निकली है, जिसकी लंबाई ४७०० किलोमीटर है। यह नदी कांगो देश के अलावा कई और देशों से होकर गुजरती है। इसे दुनिया की सबसे गहरी नदी का दर्जा प्राप्त है।

इस जंगल में २००० से भी अधिक तरह के जीव रहते हैं। इनमें ४५० से अधिक ऐसे जीव रहते हैं, जो अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं। ३०० से अधिक रेंगनेवाले जीव रहते हैं, जैसे कीड़े-मकौड़े, सांप आदि। २०० से अधिक तरह के ऐसे जीव रहते हैं। जो पानी और उसके बाहर दोनों जगह रह सकते हैं। एक हजार से अधिक तरह की चिड़िया इस जंगल में रहती है।

इस जंगल को दुनिया का अकेला जंगल माना जाता है। जहां तीनों तरह के गुरिल्ला रहते हैं। इस जंगल में बोनोबो भी रहते हैं। जिनके बारे में कहा और माना जाता है कि यह हमसे सबसे अधिक मिलता जुलता है।

यह जंगल ११ हजार से भी अधिक तरह के पौधों का घर है। इनमें से एक हजार से भी अधिक प्लांट सिर्फ इसी जंगल में होते हैं।

❊ पर्वत, पठार, चट्टान - ऊंचे खड़े विशाल पहाड़ बहुत अच्छे लगते हैं। इन पर ट्रैकिंग का तो अपना ही मजा है। पहाड़ों पर एडवेंचर गेम भी होते हैं। छुट्टियां हुई नहीं कि तुरंत पहाड़ों पर घूमने का प्रोग्राम बना लिया जाता है।

पहाड़ धरती और चट्टानों से मिलकर बनते हैं। पहाड़ी टीलों की अपेक्षा जो ऊंचे और सीधे खड़े होते हैं, वे पहाड़ कहलाते हैं। पहाड़ धरती का ही एक हिस्सा है, जो एक ऊंचाई का रूप लिए खड़ा है।

अधिकतर पहाड़ ६०० मीटर से ऊंचे होते हैं और ६०० मीटर से कम ऊंचाईवालों को पठार कहते हैं।

जिस तरह से दो कारों में आमने-सामने की टक्कर होती है, तो दोनों कारों के सामने के हिस्से ऊपर की ओर मुड़कर उठ जाते हैं। उसी तरह धरती की ऊपरी सतह की दो प्लेटें आपस में टकराती हैं, तो वे ऊपर की ओर उठ जाती हैं और पहाड़

का रूप ले लेती हैं। ज्वालामुखी के फूटने के बाद जो लावा होता है, उसके ठंडा होकर जमने पर भी पहाड़ों का निर्माण होता है। पहाड़ के सबसे ऊपर के पॉइंट को चोटी, पीक व शिखर (समिट) कहते हैं। एक श्रृंखला में एक जैसे कई पहाड़ों को पर्वत श्रृंखला (माउंटेन रेंज) कहा जाता है।

विश्व की बड़ी संख्या में आबादी पहाड़ों पर रहती है। पहाड़ों पर रहनेवालों का जीवन काफी मुश्किलों से भरा होता है। बच्चों को भी स्कूल के लिए मीलों चलकर जाना पड़ता है। पहाड़ों के कई पक्षी, पशु, फल और फूल बिल्कुल अलग किस्म के होते हैं। इनके बारे में जानना बहुत अच्छा लगता है। पहाड़ों पर खेत सीढ़ीनुमा बने होते हैं। कुछ पहाड़ों पर चारों ओर पेड़ उगे होते हैं। पहाड़ों पर कुछ खास किस्म के पेड़-पौधे पाए जाते हैं। जैसे- शंकु वृक्ष, ओक, अखरोट, चिनार आदि। पहाड़ पथरीले और बंजर भी होते हैं। विश्व का सबसे ऊंचा पहाड़ हिमालय में माउंट एवरेस्ट है। माउंट एवरेस्ट का नाम जॉर्ज एवरेस्ट के नाम पर पड़ा था। धरती में कंपन के कारण प्रति वर्ष एवरेस्ट ४ मिलीमीटर बढ़ता है। समुद्र तल में भी पहाड़ हैं। पहाड़ की ऊंचाई आमतौर पर समुद्र की सतह से नापी जाती है। वैसे समुद्र में पहाड़ बहुत कम होते हैं। कुछ आइलैंड में समुद्र के अंदर पहाड़ों की चोटियां हैं, जो पानी से बाहर निकल आने के कारण द्वीप जैसी बन जाती हैं। हिमालय को एशिया का वॉटर टॉवर माना जाता है। लगभग ८० प्रतिशत जगहों तक ताजा पानी पहाड़ों से पहुंचता है।

*** हिमालय पर्वत-** हिमालय पर बेहतरीन जड़ी-बूटियां मिलती हैं। हिमालय की सबसे ऊंची चोटी माउंट एवरेस्ट पर सबसे पहले २९ मई १९५३ में एडमड हिलेरी और तेनजिंग नोरगे पहुंचे थे। तेनजिंग ने माउंट एवरेस्ट की चोटी पर पहुंचकर अपनी बेटी की नीली व लाल पेंसिलें दबाई थीं। पहाड़ों की ऊंचाई मौसम के दुष्प्रभाव को रोकने, समुद्र के तूफानों को रोकने और बादलों से पानी लाने में सहायक होती है। बारिश, बर्फ और हवा के कारण पहाड़ साथ-साथ नष्ट भी होते हैं। पहाड़ों पर मौसम बहुत जल्दी बदलता है। इसी कारण पहाड़ों पर बर्फीले तूफान, बाढ़, चट्टानों का खिसकना, भूकंप और तेज हवाएं चलती ही रहती हैं।

दुनिया की सबसे ऊंची चोटी मानी जानेवाली एवरेस्ट की ऊंचाई पर पिछले काफी समय से चल रहे विवाद के समाधान के लिए नेपाल और चीन सहमत हो गए हैं। दोनों देश अब इस बात पर सहमत हैं कि एवरेस्ट की ऊंचाई ८८४८ मीटर मानी जाएगी।

नेपाल और चीन की सीमाएं इस पर्वत श्रृंखला से लगी हुई हैं। इस मसले पर चीन पहले कहता रहा है कि इसकी ऊंचाई चट्टानों को आधार बनाकर नापी जाए जबकि नेपाल का कहना था कि इसे चट्टानों पर जमीं बर्फ के आधार पर नापी जाए। नेपाल के नजरिए से एवरेस्ट की ऊंचाई चार मीटर अधिक हो रही थी। नेपाल की राजधानी काठमांडू में हुई बातचीत में चीन ने इस बात को स्वीकार कर लिया। इसका मतलब यह हुआ कि अब एवरेस्ट की आधिकारिक ऊंचाई ८८४८ मीटर मानी जाएगी। वर्ष १९५३ में तेनजिंग शेरपा और सर एडमंड हिलेरी के पहली बार एवरेस्ट फतह करने के बाद से हजारों लोग वहां पहुंच चुके हैं। एवरेस्ट की ऊंचाई पहली बार १९५६ में मापी गई थी लेकिन उसकी ऊंचाई को लेकर तभी से विवाद बना हुआ था। १९९५ में पहली बार एवरेस्ट की ऊंचाई ८८४८ मीटर मापी थी जिसे आज तक मोटे तौर पर माना जाता था। भारतीय सर्वेक्षण ने ऊंचाई को चोटी की चट्टानों की जगह उस पर पड़ी बर्फ से मापा था लेकिन भूवैज्ञानिकों का कहना है कि एवरेस्ट की ऊंचाई को लेकर दोनों देशों के अनुमान गलत हो सकते हैं

उनका कहना है कि महाद्वीपीय प्लेटों के स्थानांतरण के कारण भारत ने चीन-नेपाल को नीचे की ओर धकेल दिया है जिससे पर्वत और ऊंचा हो गया है। एक अमरीकी दल ने १९९९ में जीपीएस तकनीकी का उपयोग करते हुए एवरेस्ट की ऊंचाई ८८५० मीटर दर्ज की थी जिसे अमरीका की नेशनल ज्योग्राफिक सोसायटी भी मानती है। हालांकि नेपाल इसे आधिकारिक मान्यता नहीं देता है।

सभी पहाड़ों की परिस्थितियों में कुछ लक्षण एक से पाए जाते हैं। जैसे-लगातार ऊंचाई में बदलाव, मौसम में बदलाव, गीली मिट्टी, पौधे आदि काफी कम दूरी पर बदलते हैं। पहाड़ों पर मौसम ठंडा ही रहता है, क्योंकि यहां की हल्की हवा सूर्य के तापमान को टिकने नहीं देती, इसीलिए बहुत सी पहाड़ी चोटियों पर अक्सर बर्फ जमी रहती है। बर्फ पिघलती ही नहीं है। तापमान गिरा रहता है। कुछ पहाड़ों के रास्ते में बहनेवाली नदियां हमेशा के लिए बर्फ के रूप में जम चुकी हैं, जो ग्लेशियर कहलाती हैं। पहाड़ पर हवा के दबाव को बैरोमीटर से नापा जाता है। धरती की तुलना में पहाड़ पर ऑक्सीजन बहुत कम होती है।

तिब्बत का पठार- यह पठार हिमालय के उत्तर और क्यूनलुन पर्वत के दक्षिण में ४००० से ५००० मीटर की ऊंचाई पर स्थित है।

* सात पहाड़ियों का नगर रोम देश को कहते हैं।
* एल्प पर्वत श्रृंखला की उत्पत्ति के पहले ही डाएनासोर लुप्त हो चुके थे।
* तिब्बती पठार पर चीन ने दुनिया का सबसे ऊंचाई का रेल मार्ग बनाया जो २ हजार ४० किलोमीटर लंबा है।
* माउंट एवरेस्ट की समुद्र तल से ऊंचाई ८,८४८ मीटर।
* सबसे लम्बदी पर्वतमाला- दुनिया की सबसे लम्बी पर्वतमाला अटलांटिक महासागर के नीचे उत्तरी अमेरिका और यूरोपीय महाद्वीपों के बीच फैली है जिसे मिड अटलांटिक रिज कहा जाता है। बीसवीं शताब्दी से पूर्व इस पर्वतमाला की हमें कोई जानकारी नहीं थी। पानी के नीचे की यह विशाल पर्वतमाला ग्रीनलैण्ड के उत्तर से अंटार्कटिक सर्किल तक १६००० किलोमीटर से भी ज्यादा लम्बी है। एण्डीज पर्वतमाला की लम्बाई तो कुल ६४०० किलोमीटर है।

* **बाढ़ -** पानी बरसता है तो अच्छा लगता है क्योंकि गर्मी से राहत मिलती है और पेड़-पौधों, सड़कें, मकान सब धुले-धुले से हो जाते हैं। पेड़ों पर हरी-हरी पत्तियां लहलहाने लगती हैं हवा में ठंडक की सरसराहटे होने लगती है। किंतु उन इलाकों के लोगों को ज्यादा बारिश अच्छी नहीं लगती, जहां बाढ़ आ जाती है। बाढ़ भयंकर तबाही लाती है। घरेलू सामान, पशु और कभी-कभी तो रेल पटरियां और पुल तक पानी में बह जाते हैं। इसीलिए लोग बाढ़ के नाम से घबराते हैं।

बाढ़ के प्रकोप से भारत ही नहीं, अमरीका जैसे विकसित देश भी परेशान हैं, जापान की आधी आबादी बाढ़ से प्रभावित क्षेत्रों में निवास करती है। भारत में बाढ़ से सर्वाधिक प्रभावित राज्य उत्तर प्रदेश है इसके बाद नम्बर आता है- बिहार, आंध्र प्रदेश, पश्चिम बंगाल, गुजरात, उड़ीसा और फिर असम का।

बाढ़ के कारण प्राकृतिक और मानव निर्मित दोनों हैं। भारी वर्षा, चक्रवात, समुद्री ज्वार, भूकंप, भूस्खलन (जमीन धंसना), बर्फ की चट्टानें पिघलना तथा टूटना आदि। मानव निर्मित कारणों में बांधों का धंसना-टूटना, नदियों के बहाव में बाधा खड़ी करना तथा बाढ़ वाले क्षेत्रों में कल-कारखाने द्वारा लगातार प्रदूषण फैलाना आदि कारण प्रमुख हैं।

नदियों के तल पर जब बालू-मिट्टी तथा पत्थरों का अधिक जमाव हो जाए, तब उसका जल स्तर बढ़ जाता है। खतरे के निशाने से ऊपर उठकर जब नदी का पानी तेजी से इधर-उधर बहने लगता है तब उसे बाढ़ कहते हैं। व्यापक और तीव्र किस्म के तूफान से विनाशकारी बाढ़ आती है। पहाड़ी इलाकों में बर्फ के तेजी से पिघलने तथा जमीन धंसने के कारण बाढ़ आती है। कभी-कभी तेज तूफान के कारण भी बाढ़ आ जाती है।

ज्यादातर लोग यही समझते हैं कि सागर के नीचे का धरातल समतल है। लेकिन ऐसा है नहीं। जिस तरह हमारी धरती पर पहाड़, मैदान, पठार आदि पाए जाते हैं उसी तरह से सागर में भी यह सब चीजे पाई जाती हैं। बस अंतर यह होता है कि ऊपर से वे दिखाई नहीं देतीं। इनमें भी कई तरह की पर्वत श्रृंखलाएं मौजूद हैं। सागर में मौजूद सबसे बड़ी पर्वत श्रृंखला एंडीज पर्वतमाला से भी बड़ी है। इसका नाम है मध्य महासागरीय श्रृंखला जिसका अधिकांश हिस्सा सागर में डूबा हुआ है। यह करीब ७५०० किलोमीटर लंबी और १५००-४००० किलोमीटर चौड़ी है। भूवैज्ञानिक बताते हैं कि इसका कुल फैलाव एशिया, यूरोप और अफ्रीका के सम्मिलित क्षेत्रफल से भी अधिक है। इस श्रृंखला का पता १८७३ में चैलेंजर अभियान के दौरान लगा था। हालांकि इस बारे में विस्तृत जानकारी १९५६-१९६० के सामुद्रिक खोजी अभियानों के दौरान हुई।

मध्य महासागरीय श्रृंखला की शुरुआत आर्कटिक सागर से होती है। वहां से यह अटलांटिक महासागर को उत्तर से दक्षिण लगभग दो बराबर भागों में बांटती हुई हिंद महासागर पहुंचती है। अटलांटिक महासागर का पूर्वी व पश्चिमी हिस्सा इसी कारण दो अलग-अलग विशेषता रखनेवाला महासागर हो जाता है। दोनों की लहरों की दिशा, जल की लवणता और जीव-जंतु में अंतर देखे जा सकते हैं। हिन्द महासागर में इस पर्वतीय श्रृंखला की दिशा पश्चिम से पूर्व हो जाती है। यहां यह दो शाखाओं में भी बंट जाती है। इसकी एक शाखा कार्ल्सब्रिज पर्वत श्रृंखला के रूप में सेशल्स द्वीप पहुंच जाती है। यहां से यह मुड़कर अरब सागर होती हुई फारस की खाड़ी तक जाती है। इसकी दूसरी शाखा ऑस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड के दक्षिण से होते हुए प्रशांत महासागर में मिल जाती है।

❋ पर्वतों के शिखर कैलाश का इतिहास - कैलाश पर्वत तिब्बत में स्थित एक पर्वत श्रेणी है। इसके पश्चिम तथा दक्षिण में मानसरोवर तथा रक्षातल झील है। यहां से ब्रह्मपुत्र, सिंधु और सतलुज नदियों का उद्‌गम हुआ है। हिंदू धर्म में इस स्थान को बेहद पवित्र माना गया है। इस तीर्थ को गणपर्वत और रजतगिरि भी कहते हैं। पौराणिक मान्यताओं के अनुसार शिव और ब्रह्मा आदि देवगण रावण भस्मासुर व कई मुनियों ने यहां तप किया था। पांडवों के दिग्विजय प्रयास के समय अर्जुन ने इस प्रदेश पर विजय प्राप्त की थी। कुछ लोगों का कहना है कि आदि शंकराचार्य ने इसी के आसपास कहीं अपना शरीर त्याग किया था।

कैलाश पर्वतमाला कश्मीर से लेकर भूटान तक फैली हुई है। इस शिखर की आकृति विराट शिवलिंग की तरह है। कैलाश-मानसरोवर जाने के अनेक मार्ग हैं। यह भाग ५४४ किमी लंबा है और इसमें अनेक उतार चढ़ाव हैं। यहां जाते समय मार्ग में अनेक धर्मशालाएं और आश्रम स्थापित किए गए हैं, जहां यात्रियों को ठहरने की सुविधा प्राप्त है। तकलाकोट तिब्बत स्थित पहला ग्राम है, जहां प्रति वर्ष ज्येष्ठ से कार्तिक तक बड़ा बाजार लगता है। तकलाकोट से तारचेन जाने के मार्ग में मानसरोवर पड़ता है। कैलाश की परिक्रमा तारचेन से आरंभ होकर वहीं समाप्त होती है। उत्तर की ओर दूर तक कैलाश पर्वत के हिमाच्छादित धवल शिखर का रमणीय दृश्य दिखाई पड़ता है। यहां गर्म पानी के झरने भी

हैं। इन झरनों के आसपास चूनखड़ी के टीले हैं।

❋ हिमालय को पर्वतराज ऐसे ही नहीं कहा जाता। एवरेस्ट, के-२, कंचनजंगा समेत दुनिया की दस सबसे ऊंची पर्वतचोटियां हिमालय के हिस्से में ही हैं।

❋ हिमालय पर्वत के स्थान पर आज से हजारों वर्ष पूर्व टेथिस नामक सागर लहराता था।

❋ विश्व की सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखला हिमाचल पर्वत श्रेणी हैं।

❋ विश्व का सबसे ऊंचा पठार पामीर का पठार है।

❋ ऑस्ट्रेलिया में हाइडन के निकट वाटरफाल स्टोन नामक एक ऐसी चट्टान है, जो दूर से देखने पर एक शक्तिशाली जल प्रपात के समान दिखाई देती है।

❋ पहाड़ों पर मौजूद हवा, मैदानों की हवा की तुलना में कम गर्मी सोखती है। पहाड़ों पर दिन में एब्जॉर्ब हीट रात में हवा की लो डेंसिटी के चलते जल्दी रेडिएट हो जाती है। इसलिए पहाड़ों पर रातें ठंडी होती हैं। पहाड़ समतल नहीं होते, ऊबड-खाबड होते हैं और उनका ज्यादतर हिस्सा शेड में रहता है। सूर्यप्रकाश पहाड़ी जमीन को ज्यादा गर्म नहीं कर पाता, इसलिए वहां की हवा भी गर्म नहीं हो पाती।

❋ कई बार रंग बदलता है पहाड़- किसी पहाड़ के रंग बदलने की बात विचित्र लगती है, लेकिन ऑस्ट्रेलिया में एक पहाड़ है जो सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक रंग बदलता है। यह पहाड़ उत्तरी क्षेत्र के आयर्स रॉक पर स्थित है। वैसे तो ३३५ मीटर ऊंचे, ७ किलोमीटर घेरेवाले और २.४ किलोमीटर चौड़े इस पहाड़ का रंग लाल रहता है, लेकिन सूर्योदय के समय यह जैसे आग उगलने लगता है और इसमें बैंगनी और गहरे लाल रंग की लपटें निकलने लगती हैं। कभी यह लाल होता है, कभी पीला और कभी नारंगी। इस चट्टान के रंग बदलने का कारण इसकी संरचना है। असल में यह पहाड़ी बलुआ पत्थर से बनी है और सुबह व शाम को सूर्य की किरणों में लाल और नारंगी रंग अधिक मात्रा में होते हैं। इसी कारण यह पहाड़ी इस रंग की दिखती है। दोपहर के समय अन्य रंग भी किरणों के साथ आते हैं और बलुआ पत्थरों की विशेष संरचना के कारण पहाड़ी में ये रंग भी दिखने लगते हैं। इस पहाड़ी के रंग बदलने के कारण ही प्रचीन काल में यहां रहनेवाले लोग इसे भगवान का घर मानकर इसकी पूजा किया करते थे। आयर्स रॉक की खोज १८७३ में डब्ल्यू जी गोसे नामक अंग्रेज यात्री ने की थी और इसका नामकरण दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया के तत्कालीन प्रधानमंत्री हेनरी आयर्स के नाम पर आयर्स रॉक कर दिया गया था।

❋ **शिखर, चोटी -** एवरेस्ट, के-२ के बाद हिमालय की तीसरी सबसे ऊंची चोटी कंचनजंगा है।

❋ भारतीय हिमालय की सबसे ऊंची पर्वतीय चोटी कंचनजंघा सिक्किम राज्य में स्थित है।

❋ १० सबसे ऊंची पर्वत की चोटियां

माउंट एवरेस्ट- ८८४८ मीटर की ऊंचाई के साथ विश्व की सबसे ऊंची पर्वत चोटी।

के २- पाकिस्तान के उत्तरी भाग में स्थित ८६११ मीटर ऊंची इस पर्वत चोटी पर फतह का इरादा रखनेवाला प्रत्येक चार में से एक पर्वतारोही लौटकर नहीं आ पाता।

कंचनगंगा- पांच चोटियों में से एक यह चोटी ८५८६ मीटर ऊंची है। यहां स्थित शेष चार चोटियां भी ८००० मीटर से

ज्यादा ऊंची हैं।

लहोत्से- यह माउंट एवरेस्ट से संपर्क के कारण भी विश्वभर में लोकप्रिय हे। ८५१६ मीटर ऊंची यह चोटी दक्षिणी तरफ से विश्व की सबसे ढलवां चोटी है।

मकालू- यह चोटी पिरामिड के आकार का आभास देती है। ८४६२ मीटर ऊंची इस चोटी पर चढ़ाई दुरूह मानी जाती है।

चो ओयु- यह चोटी पर्वतरोहियों के लिए असाध्य नहीं है। यह तब है जब ८२०१ मीटर ऊंचाई के साथ यह छठे नंबर की सबसे ऊंची चोटी है।

धौलागिरी- पोखरा (नेपाल) से यहां पहुंचा जा सकता है। यह ८१६७ मीटर ऊंची है।

मनासलू- नेपाल की इस पर्वत चोटी की ऊंचाई ८१६३ मीटर है, जो अपनी घाटियों और चढ़ाई के लिए विख्यात है।

नंगा पर्वत- इसे किलर कहा जाता है। ८१२६ मीटर ऊंची इस चोटी पर चढ़ाई के दौरान कई पर्वतारोहियों को जान से हाथ धोना पड़ा।

अन्नपूर्णा- हिमालय की श्रृंखलाबद्ध पर्वत चोटियों में से एक अन्नपूर्णा की ऊंचाई ८०९१ मीटर है।

✲ भारत की सबसे ऊंची पर्वत चोटी का नाम के-२ हैं, जिसकी समुद्रतल से ऊंचाई ८६११ मीटर है।

✲ दक्षिण अमेरिका की सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखला का नाम बोनेट है।

✲ **किल्ले - कांगड़ा** का किला- यह किला हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा घाटी में स्थित है। इस किले का निर्माण कांगड़ा के शाही परिवार ने कराया था। इसी किले के अंदर व्रजेश्वरी मंदिर है। इस किले को भारत का सबसे पुराना किला होने का गौरव प्राप्त है।

✲ ग्वालियर का किला- मध्य प्रदेश में एक से बढ़कर एक किले हैं, पर सबसे भव्य है ग्वालियर का किला। गोपाचल की पहाड़ियों पर यह किला कब बना, ठीक से नहीं बताया जा सकता, पर अनुमान है कि इस किले का निर्माण ८वीं से १४वीं शताब्दी के बीच हुआ। इस किले के बनने की बड़ी रोचक कहानी है। कहते हैं यहां के राजा सूरज सेन को त्वचा की बीमारी थी। एक ग्वालिया नाम के फकीर ने राजा से कहा कि वह गरम पानी के तालाब में स्नान करें। राजा ने ऐसा ही किया, तो उनकी बीमारी ठीक हो गई। उस फकीर के सम्मान में राजा ने इस किले का निर्माण किया।

✲ फतेहपुर सीकरी - यह किला अकबर से जुड़ा है। कहते हैं, अकबर को सलीम चिश्ती के आशीर्वाद से बेटा हुआ, जो जहांगीर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सलीम चिश्ती सीकरी गांव में रहते थे। उनके सम्मान में अकबर ने यहां शहर बनाना आरंभ किया। फिर १५७१ में यहां किला भी बनवाया। इस किले के मुख्य द्वार को बुलंद दरवाजा कहते हैं, जो दुनिया का सबसे बड़ा दरवाजा है। सलीम चिश्ती की दरगाह इसी किले में है। इस इलाके में अकबर से पहले उनके दादा बाबर भी आए थे। राणा सांगा को एक युद्ध में हराकर बाबर की सेना यहां पहुंची थी, तो यहां झील देखकर उनकी जान में जान आई थी।

✲ प्रसिद्ध बेकल का किला केरल में है।

✲ ये है भारत का सबसे खतरनाक किला; यहां शाम होते ही मंडराने लगता है मौत का साया।

हमारे देश में पुराने जमाने के कई राजाओं के किले आज भी मौजूद है। जो अपनी खूबसूरती के लिए आज भी जाने जाते हैं, लेकिन इन किलों में से कुछ बेहद खतरनाक भी हैं। इन्हीं में से एक है प्रबलगढ़ का किला। जो महाराष्ट्र के

माथेरान और पनवेल के बीच स्थित है। इस किले को भारत के सबसे खतरनाक किलों में गिना जाता है।

इस किले को कलावंती किले के नाम से भी जाना जाता है। प्रबलगढ़ का किला २३०० फीट ऊंची खड़ी पहाड़ी पर बना हुआ है। इस किले पर बहुत कम लोग आते हैं। लेकिन सूरज ढलने से पहले ही लौट जाते हैं। इसकी एक वजह ये भी मानी जाती है कि खड़ी चढ़ाई होने की वजह से इंसान यहां लंबे समय तक टिक नहीं पाता। यही नहीं यहां ना तो बिजली है और ना ही पानी। सूरज ढलते ही यहां मीलों दूर तक सन्नाटा पसर जाता है। इस किले तक पहुंचने के लिए चट्टानों को काटकर सीढ़ियां बनाई गई हैं, लेकिन इन सीढ़ियों पर ना तो रस्सियां हैं और ना ही कोई रेलिंग। इसीलिए इस सीढ़ियों पर चढ़ने में लोगों की हालत खराब हो जाती है। जरा सी चूक की वजह से इंसान सीधा २३०० फीट नीचे खाई में गिरता है। इस किले से गिरकर कई लोगों की मौत भी हो चुकी है। इस किले का नाम पहले मुरंजन किला था, लेकिन छत्रपति शिवाजी महाराज के राज में इसका नाम बदल दिया गया। शिवाजी महाराज ने रानी कलावंती के नाम पर ही इस किले का नाम कलावंती भी रखा था।

इस किले से आसानी से आप चंदेरी, माथेरान, करनाल और इर्शल किले का नजारा देख सकते हैं। यहां से मुंबई का कुछ हिस्सा भी इस किले से नजर आता है। अक्तूबर से मई महीने तक यहां लोग खूब घूमने आते हैं, लेकिन बारिश के दिनों में यहां चढ़ना बेहद खतरनाक हो जाता है।

❊ गुफा, सुरंग - ❊ दुनिया की सबसे लंबी रेल सुरंग जापान के सीकन शहर में है। यह १९८५ में बनी थी और यह करीब ५४ किलोमीटर लंबी है।

❊ जब विश्व का सबसे बड़ा रेगिस्तान हरा-भरा था - सहारा रेगिस्तान की तपती धूप में ऊंटों पर सवार फौजी पसीने से लथपथ थे। यह बात सन १९३५ की है, जब अल्जीरिया फ्रांस के अधीन था। फौजी दस्ता अपनी गश्त पर था। गुफा के अंदर उसके फ्रांसीसी सेना पति लेफ्टीनेंट चार्ल्स ब्रेनान्स को एक अलग ही अनुभूति हो रही थी। इस अद्‌भुत अनुभूति का कारण था उन गुफाओं की दीवारों पर रेखांकित सैकडों की संख्या में चित्र और रंगलिपियां।

ब्रेनान्स उन चित्रों का मतलब अच्छी तरह समझ रहा था। वे गुफाएं ऐतिहासिक ही नहीं, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण साबित हो सकती थीं। ब्रेनान्स ने अपना अधिकतर समय उन चित्रों की प्रतिलिपियां बनाने में व्यतीत किया।

गुफाओं और उनकी दीवारों पर बने आठ हजार साल पुराने चित्र एक ऐसी बस्ती की कहानी कह रहे थे, जो कभी सहारा के उस भाग में बसी हुई थी और जिसके लिए सहारा एक निर्मम मरूस्थल न होकर एक हरा-भरा मैदानी इलाका था।

अल्जीर्स (अल्जीरिया की राजधानी) से करीब ८०० मील दक्षिण में तास्सिली-अन-अज्जर नामक स्थान ८ हजार वर्ष पहले के इतिहास का गवाह हैं। तब उस इलाके में असंख्य कबीले बसते थे। गुफाओं की दीवारें उनकी सीधी-सादी जिंदगी, धार्मिक रीति-रिवाज, विचित्र देवता, शिकारीदस्ते, उनके मवेशी, वीर सिपाहियों और दौड़ते रथों का विस्तृत लेखा-जोखा प्रस्तुत करती हैं। कहीं-कहीं ऐसे भी चित्र मिलते हैं, जिनकी प्रजातियां पृथ्वी से बहुत पहले लुप्त हो चुकी हैं। कहीं-कहीं दरियाई घोड़े, जिराफ, शुतुरमुर्ग और गैंडों के भी चित्र मिलते हैं, जो कि सिर्फ हरे-भरे मैदानों में ही पाये जाते हैं। इन चित्रों से साफ जाहिर होता है कि सहारा का यह इलाका कभी हरा-भरा और सम्पन्न रहा होगा।

फ्रांसीसी अन्वेषक और नेतृत्व वैज्ञानिक हेनरी लहोटे, ब्रेनान्स द्वारा नकल किये गये चित्रों से अत्यंत प्रभावित हुए और उन्होंने वहां जाने के लिए अभियान दल की तैयारी कर दी। जल्दी ही वे चित्रकारों और छायाकारों की पूरी टीम लेकर

तास्सिली-अन-अज्जन की गुफाओं के दर्शन करने पहुंचे। सन १९५७ में जब लहोटे अपनी टीम के साथ पेरिस वापस आये, तो उनके पास उन गुफाओं पर अंकित चित्रों की हजारों प्रतिलिपियां और चित्र थे।

ये चित्र हजारों साल पहले के समय के लुप्त जीवन को सजीव कर देते हैं। इन असंख्य गुफाओं में जो सबसे पुराना चित्र मिलता है, वह है एक हब्शी जाति का, जिसमें उन्हें जिराफ, हाथी और गैंडों का शिकार करते हुए दिखाया गया है। कहीं-कहीं सफेद, विशालकाय अर्धमानवों के भी चित्र मिलते हैं, जो शायद उन अज्ञात कबीलों के देवता रहे होंगे। एक जगह तो १८ फुट ऊंचे अर्धमानव का चित्र है, जिसका सिर कछुए की तरह है और आंखें अजीब सी हैं। गुफा पर हजारों साल पुराने इस चित्र को देखकर लोग अवाक रह गये, क्योंकि हूबहू इसी तरह का एक चित्र महान चित्रकार पिकासो ने भी बनाया था।

इसी प्रकार गुफाओं के कुछ और भागों में उनके घरेलू जीवन से संबंधित अनेक चित्र थे। चित्रों का वैज्ञानिक अध्ययन करने पर पता चला कि ५०००-४००० ईसा पूर्व के अंतराल में इन हब्शी लोगों की जगह एक हल्के और भूरे रंगवाली जाति ने ले ली थी। इस जाति के अपने अलग चित्र हैं। इनमें उन्हें पहाड़ी भेड़ों, जिराफ और हिरणों का शिकार करते दिखाया है।

एक हजार साल बाद (३००० ईसा पूर्व) फिर एक परिवर्तन देखा जा सकता है। हमें अचानक रथ दौड़ाते हुए सिपाहियों के चित्र मिलते हैं। उनके बारे में सोचा जाता है कि वे शायद प्राचीन मिस्र के कुछ दस्तावेजों में उल्लेखित समुद्री लोग थे, जिन्होंने मिस्र पर एशिया माइनर की तरफ से आक्रमण करने की कोशिश की थी। संभव है कि मिस्र के फैरो द्वारा हराये जाने पर तास्सली पठार की गुफाओं में आकर बस गये हो।

इस अवधि के बाद गुफाओं के चित्रों में भारी कमी आयी। कारण था तास्सिली में सूखा पड़ना। वहां की जनसंख्या के साथ चित्रों की संख्या भी कम होती गयी। लेकिन ये थोड़े भी चित्र भी काफी कुछ कहते हैं। चित्रों में अचानक घोड़े की जगह ऊंट प्रवेश करता है। जाहिर है, घोड़े उस सूखते वातावरण में ज्यादा दिन नहीं टिक सकते थे और फिर अचानक सन्नाटा। रेत और धूल ही अब उन निर्जन गुफाओं के साथी हैं। हजारों साल बीत गये, लेकिन तास्सिली की गुफाएं अपने अंदर एक इतिहास संजोये, सूनी आंखें लिये किसी को अपना गम सुनाने को तरसती रहीं।

❊ सबसे गहरी गुफा क्रूबेरा केव - क्रूबेरा केव धरती की अभी तक ज्ञात सबसे गहरी गुफा है। इसकी गहराई २१९७ मीटर (७२०८ फीट) है। ब्लैक सागर के तट पर स्थित क्रूबेरा केव बहुत ही दुर्गम इलाका है। यहां पर साल में केवल ४ महीनें ही जाने लायक मौसम रहता है। क्रूबेरा केव की खोज १९६० में हुई थी। इस गुफा का एक अन्य नाम वोरोनया केव भी है। इसका मतलब होता है कौओं की गुफा। इसको यह नाम इसलिए मिला क्योंकि जब १९८० में जब प्रथम बार इस गुफा में प्रवेश किया गया तो वहां पर कौओं के बहुत सारे घोसलें बने हुए थे। इसे सबसे गहरी गुफा का दर्जा २००१ में मिला जब यूक्रेनी स्पेलिओलॉजिस्ट का एक दल इसमें उतरा। अबकी बार वो २०८० मीटर (६८२० फीट) की गहराई तक गए और एक नया रिकॉर्ड बनाया। सन २०१२ में विभिन्न देशों के ५९ स्पेलिओलॉजिस्ट का एक दल इसमें उतरा और गहराई २१९७ मीटर (७२०८ फीट) नापी। इस दल ने क्रूबेरा केव में २७ दिन बिताए।

❊ लगभग ४० साल पहले चीन में दुनिया की सबसे खतरनाक सुरंग गुओलियांग को बनाया गया था। १२०० मीटर लंबी इस खतरनाक सुरंग को सिर्फ १३ लोगों ने ५ साल की कड़ी मेहनत के बाद बनाया था। लोगों के लिए इसे १ मई

१९७७ को खोला गया था।

इसकी दीवारों पर ३० अलग-अलग आकार की खिड़कियां हैं और यह लोगों के लिए आकर्षण का केंद्र है। चीन की तैहांग पहाड़ियों को बीच से तोड़कर बनाई गई ये गुओलियांग टनल हैं। ये दुनिया की सबसे खतरनाक टनल में से एक है। आज से चालीस साल पहले यहां जिंदगी बहुत मुश्किल थी।

इस सुरंग का निर्माण १९७२ में हुआ था। चीन के हेनान प्रांत के गुओ लियान कुनफ गांव में है ये सबसे खतरनाक सुरंग इस रास्ते को क्लिफ कॉरिडोर भी कहते हैं। इस गांव में ८३ परिवार रहते हैं। इससे पहले इस पर सिर्फ पैदल चलने की गुंजाइश थी और ये रास्ता हुइक्सियान, झिनझियांग, हेनान प्रांतों के गांवों को जोड़ता था। इसकी यात्रा बहुत मुश्किल थी। करीब ७२० खड़ी पहाड़ियों पर बने रास्तों को पार करना होता था।

रास्ते के बीच-बीच में बनी सीढ़ियां बेहद खतरनाक थीं। वो बहुत खड़ी, संकरी और बिना रेलिंग की थीं। इन परेशानियों को देखते हुए गांव के लोगों ने पहाड़ियों में टनल खोदने का फैसला किया। गांव के मुखिया शेन मिंगजिंग ने अपनी बकरियां और दवाइयां बेचकर हथौड़ा और बाकी औजार खरीदे।

१३ लोगों ने इस प्रोजेक्ट पर काम शुरू किया और १२०० मीटर लंबी टनल को खोदने में ५ साल लगे। ये टनल पांच मीटर ऊंची और चार मीटर चौड़ी थी। इस टनल के निर्माण में १२ टन की ड्रिल रॉड और ४००० हथौड़ों का इस्तेमाल हुआ था। १ मई १९७७ में इसे खोला गया।

टनल की दीवार में ३० अलग-अलग आकार की खिड़कियां हैं। ये चीन में पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र हैं। ये दुनिया की दस सबसे खड़ी (ऊंचाई की ओर बढ़ती) सड़कों में से एक है।

❋ विश्व की सबसे लम्बी समुद्री सुरंग है जापान की सीकन टनल

समुद्र की गहराइयों में भी सुरंग होती हैं। पहाड़ों को काटकर सुरंग बनाना कोई आसान काम नहीं है किन्तु समुद्र की तलहटी के नीचे सुरंग खोदना अत्यंत ही कठिन काम है। जापान में एक ऐसी ही समुद्री सुरंग है जिसका नाम सीकन टनल है। यह विश्व की सबसे लम्बी सुरंग है। जापान चार मुख्य द्वीपों एवं कुछ छोटे द्वीपों में बंटा हुआ देश है। यह सुरंग इनमें से दो द्वीपों हांशु और होकिडो को जल के नीचे बने रास्ते द्वारा एक-दूसरे से जोड़ती है। सीकन टनल सुगारू जलडमरू मध्य की तलहटी से १०० मीटर नीचे बनी है अर्थात समुद्र जल सतह से २४० मीटर नीचे इसका निर्माण किया गया है। इस टनल की कुल लम्बाई ५३.९ किलोमीटर है। १९४६ में इस जगह का भौगोलिक सर्वेक्षण किया गया तथा लगभग इक्कीस वर्ष तक खुदाई की गई। खुदाई के बाद करीब चौदह वर्ष तक इसका निर्माणकार्य दिनरात चलता रहा। इस सुरंग के निर्माण की एक विशेषता यह भी थी कि इसका निर्माण इस प्रकार की मशीनों से किया गया जो पृथ्वी को समतल रूप में काटती हैं। मुख्य सुरंग व अन्य दोनों सुरंगों के मध्य आकस्मिक आवश्यकताओं लिए रास्ते बनाकर उन्हें आपस में एक-दूसरे से भी जोड़ा गया। आधुनिकतम इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, लेसर बीम, कम्प्यूटर, विस्फोटकों, मलबे का ढेर हटाती मशीनों और गाड़ियों के आवागमन ने इस सुरंग को समुद्र के भीतर चल रही एक फैक्टरी का स्वरूप प्रदान कर दिया था। अंतत: सबका सम्मिलित प्रयास सफल रहा और वे विश्व में अपनी प्रकार की अनूठी समुद्री सुरंग बनाने में सफल हो ही गये। यह समुद्र के नीचे विश्व की सबसे लंबी सुरंग है।

❊ ग्रहनक्षत्र आकाश गंगा, पिंड - सूरज का निकलना और डूबना, चांद का घटना-बढ़ना, तारों, ग्रहों और उपग्रहों का अपनी धुरी में समन्वित रूप से घूमना और आकाशगंगाओं का २००-३०० करोड़ तारों के साथ निश्चित मार्ग में बिना किसी दुर्घटना के निर्धारित समय के अंदर परिक्रमा करना। ये सितारे जिनकी तादाद अनुमान ही लगाया जा सकता है। आकार में सूर्य से छोटे और बड़े भी हैं। हमारी पृथ्वी अपने परिक्रमा पथ पर बुलेट की गति से भी तेज गति से घूमती है। इतनी तीव्र गति से पृथ्वी घूम रही है और हमें इसका आभास भी नहीं होता। आकाशगंगा की गति पृथ्वी की गति से बहुत ज्यादा है जो ९५० किलोमीटर प्रतिघंटा की गति से २०० से भी अधिक तारों के साथ आकाश में घूमता है और बिना किसी हादसे के।

ग्रहों की खोज- सौर मंडल के ग्रहों को पहचानने से ही ग्रहों के खोज की शुरुआत मानी जाती है। मंगल जैसे ग्रहों को तो इंसान काफी पहले से अपनी नंगी आंखों से देखता रहा है। बृहस्पति और बुध का जिक्र भी काफी पहले से मिलता है। सौर मंडल के भीतर पहली बार सचमुच खोजा गया ग्रह यूरेनस था। इसे १७८१ ईस्वी में विलियम हर्सेल नामक एक संगीतज्ञ ने खोजा था। वे अपने घर में बनी एक दूरबीन से आकाश को निहार रहे थे। आज भले प्लूटो को ग्रह की बिरादरी से बाहर निकाल दिया गया है लेकिन इसकी खोज की कहानी भी काफी दिलचस्प है। यह पहला ग्रह था जिसे गणितीय सूत्र की सहायता से खोजा गया था। १९९२ से सौर मंडल से बाहर के ग्रहों को खोजने का अभियान शुरू हुआ। उनका उद्देश्य हमारे सौर मंडल से मिलते जुलते तंत्र को खोजना था। आज कम से ऐसे ४९२ ग्रहों की खोज की जा चुकी है।

❊ न्युट्रॉन तारे इतने घने होते हैं कि उनका आकार तो एक गोल्फ बॉल जितना होता है मगर द्रव्यमान (वजन) ९० अरब किलोग्राम होता है।

पृथ्वी - ❊ पृथ्वी पर होबा मीटिऑराइट नाम का एक बहुत बड़ा उल्का पिंड गिरा था जिसका वजन ६० टन से भी ज्यादा था।

❊ आज से ४५० करोड़ साल पहले पृथ्वी से एक ग्रह टकराया था जिसके कारण पृथ्वी मुड़ गई और पृथ्वी का एक हिस्सा भी टूट गया था जिसे हम चांद के नाम से जानते हैं।

वैज्ञानिकों ने पृथ्वी के पिछले ४२०० सालों को नया नाम दिया है। अब इस अवधि को मेघालयन काल के नाम से जाना जाएगा। इसका आरंभ एक भयानक सूखे के साथ हुआ था। करीब दो सदी तक चले इस सूखे के दौरान दुनियाभर की कई सभ्यताएं नष्ट हो गई थीं।

पृथ्वी के अस्तित्व में आने के बाद से ४.६ अरब वर्षों को विभिन्न अवधि में बांटा गया है। प्रत्येक अवधि में कुछ महत्वपूर्ण घटनाएं घटी थीं। जैसे- महाद्वीपों का बनना, जलवायु में परिवर्तन, किसी विशेष जानवर या पौधे की उत्पत्ति आदि। जिस अवधि में हम रह रहे हैं उसे होलोसीने काल कहा गया है।

११७०० वर्ष की इस अवधि की शुरुआत आखिरी हिमयुग के खत्म होने के साथ हुई थी। भूगर्भिक समयावधि का आधिकारिक ब्योरा रखनेवाले इंटरनेशनल कमिशन ऑन स्टैटिग्राफी (आईसीएस) ने होलोसीने काल को भी शुरुआती, मध्य और निचले चरण में विभाजित करने का प्रस्ताव दिया है।

मेघालयन काल की अवधि ४२०० वर्ष पूर्व से लेकर १९५० तक बताई गई है। जिस सूखे से इसकी शुरुआत हुई

उसका असर करीब दो सदी तक रहा था। इस दौरान मिस्र, ग्रीक, सीरिया, फलस्तीन, मेसोपोटामिया, सिंधु घाटी, यांगत्जे नदी के किनारे बसी कई सभ्यताएं नष्ट हो गई थीं। किसी अवधि को अलग पहचान देने के लिए उस समय में कोई ऐसी घटना का होना जरूरी है जिसके सबूत पूरी पृथ्वी पर मिलते हों। यह किसी विशेष पत्थर या रसायन से भी संबंधित हो सकते हैं।

✻ पृथ्वी तल का सबसे निचला हिस्सा चैलेंजर गर्त फिलीपाइन के करीब है।

✻ पृथ्वी पर जितना भी पानी है उसका ९७ प्रतिशत तो महासागरों में है।

✻ हम जिस धरती पर रहते हैं वह ४.६ अरब (४६०० करोड़ वर्ष) वर्ष पुरानी है।

✻ पृथ्वी के ३० से ४० प्रतिशत हिस्से की ऊपरी परत इतनी शुष्क हो चुकी है कि उसके रेगिस्तानों में बदलने की आशंका पैदा हो गई है।

✻ पृथ्वी का व्यास १२,७५६ किमी है।

✻ पृथ्वी के सभी महाद्वीप उत्तर की ओर दक्षिण की अपेक्षा चौड़े हैं और कोई नहीं जानता ऐसा क्यों ?

✻ पूर्णमासी को पृथ्वी का तापमान .०२ डिग्री बढ़ जाता है।

✻ अंग्रेजी भाषा के शब्द ज्योग्रेफी का मतलब पृथ्वी का वर्णन है।

✻ धरती के गुरुत्वाकर्षण के कारण पर्वतों का १५००० मीटर से ऊंचा होना संभव नहीं है।

✻ ३.७ बिलियन मील की दूरी से लिया गया पृथ्वी के फोटो का नाम पेल ब्ल्यू डॉट है। अभी तक यह सबसे अधिक दूरी से ली गई धरती की तस्वीर है।

✻ पृथ्वी को २३ घंटे ५६ मिनट और ४ सेकंड का समय अपनी धुरी पर पूरा घूमने में लगता है। इसे साइड रियल डे कहा जाता है।

✻ प्रत्येक ६० फुट की गहराई पर एक डिग्री (फारेनहाइट) गर्मी बढ़ती जाती है। इसी प्रकार पृथ्वी के भीतर केंद्र में (४००० मील की दूरी पर) तापक्रम ४,००,००० डिग्री हो जाएगा

✻ पृथ्वी पर सबसे विशाल उल्कापिंड गिरा था। इनका नाम होबा मीटिऑराइट है। १०० टन छोटे उल्का पिंड और इनकी धूल पृथ्वी के वायुमंडल में प्रवेश करती है।

✻ पृथ्वी का ९७ फीसदी पानी खारा है और फ्रेश पानी मात्र ३ प्रतिशत ही है।

✻ पृथ्वी- हमारे सौर मंडल में पृथ्वी मात्र ऐसा ग्रह है, जिसमें टैक्नोनिक्स प्लेट है। बिना इसके कार्बन को कंज्यूम नहीं किया जा सकता और पृथ्वी शुक्र की तरह गर्म हो जाएगी।

✻ ५५०० डि.से. (९९००० डि.फै.) पृथ्वी मे सबसे अंदर की सतह का तापमान है। इतनी गर्मी सूर्य की बाहरी सतह की है।

✻ पृथ्वी पर सबसें अधिक विशाल क्रिस्टल का वजन ५५ टन है। यह मैक्सिको की नैका सिल्वर खदान में मिला है।

✻ पृथ्वी की गहराई १.७ मील में जीवित बैक्टीरिया मिले। ये यूरेनियम की रेडियोएक्टिविटी को पानी में बदल लेते हैं।

✻ ५६.७ डि.से. (१३४ डि.फै.) तापमान अमेरिका के फर्नास क्रीक रैंच में १९१३ में दर्ज किया गया था। पृथ्वी पर

अब तक का यह सबसे अधिक तापमान है।

✻ वह अण्डाकार पथ इलिप्टिकल पथ जिससे होकर पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है पृथ्वी की कक्षा या भू कक्षा कहलाती है। इस पथ पर पृथ्वी की दूरी घटती बढ़ती रहती है। अपनी कक्षा से पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा ३६५ दिन, ५ घंटा, ४८ मिनट, ४६ सेकंड (लगभग ३६५ दिन) में पूरी करता है। पृथ्वी की कक्षा के अण्डाकार या दीर्घवित्तीय होने के कारण सूर्य से पृथ्वी की निकटतम स्थिति को उपसौर और अधिक दूर स्थिति को अपसौर कहते हैं।

✻ ४.६ अरब वर्ष पुरानी धरती पर जीवन का उद्‌भव ३.४ से ३.१ अरब साल पहले समुद्र में हुआ था। भूमि पर जीवन ४० करोड़ वर्ष पहले आया। यह धरती के इतिहास की दृष्टि से छोटा अरसा कहलाएगा।

✻ पृथ्वी के साथ दो उल्कापिंड रूपी उपग्रह भी सूर्य का चक्कर लगाते हैं, जिनके नाम हैं २००२ एए २९ और ३७५३ क्रूथिन।

✻ पृथ्वी पर सबसे बड़ा वृत्त है- भूमध्य रेखा।

✻ भूमध्य रेखा वह काल्पनिक रेखा है जो पृथ्वी को दो भागों में बांटती है।

✻ ४.५४ अरब साल पुरानी है पृथ्वी- हमारी पृथ्वी सूर्य का तीसरा ग्रह है। पृथ्वी सौरमंडल में द्रव्यमान और घनत्व में सबसे बड़ा स्थलीय ग्रह है। मानव के अलावा पृथ्वी में लाखों करोड़ों प्रजातियों का जीवनयापन होता है।

पृथ्वी के वातावरण में ७७% नाइट्रोजन, २१% ऑक्सीजन और कुछ मात्रा में ऑर्गन, कार्बनर डाइऑक्साइड और जल बाष्प है। पृथ्वी पर निर्माण के समय कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा ज्यादा रही होगी जो चट्टानों में कार्बोनेट के रूप में जम गई, कुछ मात्रा में सागर द्वारा अवशोषित कर ली गई, शेष मात्रा जीवित प्राणियों द्वारा प्रयोग में आ गयी होगी। पृथ्वी को टेलस और टेरा के नाम से भी जाना जाता है। पृथ्वी करीब ४.५४ अरब साल पहले अस्तित्व में आई। प्लेट टेक्टॉनिक और जैविक गतिविधि कार्बन डाईऑक्साइड का थोड़ी मात्रा का उत्सर्जन और अवशोषण करते हैं। यह रोज सूर्य के चक्कर लगाती है। हवा, पानी मौजूद होने से यहां जीवन व्यतीत किया जा सकता है।

✻ धरती के भीतर भी है पानी - समुद्रों में इतना पानी कहां से आया और अरबों साल में इनका स्तर ज्यों का त्यों कैसे बना हुआ है? भूवैज्ञानिकों को यह सवाल सदियों से परेशान किए हुए है। इस बारे में दो विचार लंबे समय से कायम है। एक यह कि पृथ्वी जब बनी तो उसके वायुमंडल में बहुत सारी भाप थी, जो इस ग्रह के ठंडे होने के क्रम में पानी बनकर बरस पड़ी। दूसरा यह कि सारा नहीं तो भी बहुत सारा पानी पुच्छल तारों के पृथ्वी से टकराने के क्रम में जमा होता गया। अभी इस मामले में एक तीसरा सिद्धांत आकार ले रहा है। सतह से लेकर केंद्र तक पृथ्वी के मोटे तौर पर तीन हिस्से हैं। जैसा कि हम जानते हैं, पृथ्वी पांच हजार मील या ६४०० किलोमीटर की तृज्या वाला एक गोला है। इसकी आधी मोटाई वाला सबसे भीतरी हिस्सा पिघला हुआ लोहा (साथ में थोड़ा-बहुत कोबाल्ट और निकिल) है, जिसे कोर कहते हैं। इससे ऊपरवाली २९०० किलोमीटर मोटी बेहद गरम परत को मैटल का नाम दिया गया है। सबसे ऊपर की ४० किलोमीटर मोटी परत को क्रस्ट कहते हैं, जो टेक्टॉनिक प्लेट्स से बनी है, जिनमें होनेवाली हरकतें भूकंप का कारण बनती हैं। सारे समुद्र और महाद्वीप इन प्लेटों पर ही टिके हैं। भूकंपों का अध्ययन कर रहे वैज्ञानिक हाल में इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि जिस मेंटल को अबतक बिल्कुल सूखी चीज माना जाता रहा है, उसमें पानी के कण मौजूद हैं। हिसाब लगाने पर पता

चला है कि समुद्रों में जितना पानी है, उसका तीन गुना पानी मैंटल में है। कुछ समय पहले अमेरिका और कनाडा में रिंगवुडाइट नाम का एक दुर्लभ खनिज पाया गया था, जिसे टेक्टॉनिक प्लेटों की गति के जरिये मैंटल से निकल कर ज्वालामुखियों के मार्फत धरती की सतह पर आ गया माना जाता है। इस खनिज में पानी की शिनाख्त पहले से ही चुगली कर रही थी कि मैंटल में कुछ पानी भी हो सकता है। अब सीस्मोलॉजी (भूकंप शास्त्र) की नई खोज से उस प्रस्थापना पर मोहर लग गई है। नतीजा यह कि समुद्रों और मैंटल के बीच पानी की आवाजाही है, हालांकि यह किस रूप में है, इसका पता लगाया जाना बाकी है। आनेवाले दिनों में पानी को लेकर हमारी समझ बदलनेवाली है।

✻ पृथ्वी की कठोर सतह (क्रस्ट) के ऊपरी ३ किलोमीटर भाग में मौजूद ताप का क्षेत्र सैद्धांतिक तौर पर १ लाख वर्ष तक हमें ऊर्जा देने में सक्षम है।

✻ **ध्रुवतारा -** सूर्य से भी बड़ा होता है ध्रुवतारा - आकाश में उत्तर की ओर एक चमकता हुआ तारा हर किसी को आकर्षित कर लेता है। वैज्ञानिक उसे ध्रुवतारा इसलिए कहते हैं, क्योंकि वह उत्तरी ध्रुव से हमेशा एक जगह चमकता हुआ नजर आता है, लेकिन धर्मग्रंथों में उसे बालक ध्रुव का तारा कहा गया है। पृथ्वी से इसकी दूरी ३९० प्रकाशवर्ष है। इसकी खूबी यह भी है कि उत्तरी पोल यानी ध्रुव से यह एक जगह स्थिर नजर आता है।

इस कारण समुद्र व रेगिस्तान में सफर करनेवाले लोग दिशा के ज्ञान के लिए भी इस तारे का सहारा लेते हैं। आकार में बड़ा होने के कारण इसे महादानव तारा भी कहते हैं। भार में यह सूर्य से ७.५० गुना अधिक है और इसकी चमक तो सूर्य से २२ सौ गुना अधिक है। सूर्य से पृथ्वी की दूरी लगभग १५ करोड़ किलोमीटर है। वैज्ञानिक मानते हैं कि २६ हजार वर्ष में एक बार ध्रुवतारे के स्थान में परिर्वतन आता है।

✻ **सूर्य -** पृथ्वी से ज्यादा भार सूर्य का है।

✻ सूर्य पृथ्वी से ९३० लाख मील दूर है। यदि सूर्य तक जाना संभव हो तब भी ६० मील प्रति घंटा की रफ्तार रखने पर भी वहां पहुंचने में आपको १७६ साल लगेंगे।

✻ सूर्य का प्रकाश पृथ्वी पर एक सेकंड में २९९,७८९ किलोमीटर की गति से आता है।

✻ सूरज धरती से ३३०,३३० गुना बड़ा है।

✻ सूर्य के वातावरण के मध्यवर्ती प्रदेश का नाम पेनुम्ब्रा है।

✻ सूर्य के प्रकाश में भार होता है, यह पृथ्वी पर दो पौंड प्रति वर्ग मील का दबाव डालता है।

✻ सूर्य के कोर से सतह तक यात्रा करने के लिए एक फोटोन को २००००० साल लगते हैं, फिर सूरज की सतह से आपकी आंखों तक केवल ८ मिनट से थोड़ा अधिक समय लगता है।

✻ सूर्यग्रहण ३ प्रकार के होते हैं - खग्रास सूर्यग्रहण, चंडग्रास सूर्यग्रहण, कंकणाक्रति सूर्यग्रहण।

✻ हमारे सूर्यमंडल पर सबसे ऊंची चोटी ओलंपस मॉन्स है जो कि मंगल ग्रह पर स्थित है। इसके आधार का घेराव लगभग ६०० किलोमीटर है और इसकी ऊंचाई २६ किलोमीटर है। किसी तारे की मौत एक सुपरनोवा धमाके से होती है। इस धमाके के कारण पैदा होनेवाली ऊर्जा हमारे सूर्य के जीवन काल के दौरान पैदा होनेवाली ऊर्जा से कई लाख गुना ज्यादा होती है। सबसे बड़ा ज्ञात तारा केनिस मिजोरिस है इसका अर्धव्यास हमारे सूर्य से ६०० गुना ज्यादा है जबकि वजन

(द्रव्यमान) सिर्फ ३० गुना ज्यादा।

❋ सूर्य हमारे सौरमंडल का सबसे बड़ा पिंड है और यह पृथ्वी से १०९ गुना बड़ा है और यह ऊर्जा का शक्तिशाली भंडार है और यह भंडार मुख्य रूप से हाइड्रोजन और हीलियम का एक विशाल गोला है सूर्य से पृथ्वी पर प्रकाश को आने में ८ मिनट ३० सेकेंड का समय लगता है। इसी प्रकाश ऊर्जा से प्रकाश संश्लेषण नाम एक बहुत ही महत्वपूर्ण जैव रासायनिक अभिक्रिया होती है जो कि पृथ्वी पर जीवन का आधार है पृथ्वी के जलवायु और मौसम को प्रभावित करता है। पृथ्वी से इसकी दूरी ९३ मिलीयन मील है।

❋ प्रति क्षण सूर्य के गर्भ से निकलनेवाली ऊर्जा सौ अरब परमाणु बमों के बराबर होती है।

❋ सूर्य की रोशनी समुद्र के अंदर ८० मीटर तक पहुंचती है।

❋ **चंद्रमा -** चंद्रमा पृथ्वी से लगभग तीन लाख ८४ हजार ४०० किमी. दूर है इसका व्यास तीन हजार ४७६ किमी. है।

❋ चंद्रमा के आस-पास एक चक्कर लगाना न्यूयॉर्क से लंदन की दूरी पार करने जितना है, क्योंकि पृथ्वी का आकार चंद्रमा से चार गुना ज्यादा है।

❋ मानव ने चांद पर पहला कदम २१ जुलाई, १९६९ को रखा।

❋ जर्मनी व अमेरिका के वैज्ञानिकों ने खोज की है कि चंद्रमा पर वायुमंडल है लेकिन यह बेहद हल्का है। पृथ्वी की तरह घना नहीं है। यहां की बनिस्बत वहां इसकी सघनता एक खरबवां हिस्सा ही है। इसमें ऑरगन, हीलियम, सोडियम, पोटॅशियम व मामूली मात्रा में ऑक्सीजन, सिलिकॉन व एल्यूमिनियम शामिल हैं। जो वैज्ञानिक वहां के वायुमंडल का अध्ययन कर रहे हैं उन्हें अभी तक वहां नाइट्रोजन नहीं मिली है जिससे हमारी पृथ्वी का तीन-चौथाई वायुमंडल बना है। इसलिए चंद्रमा पर कोई वायुमंडल नहीं है।

❋ चंद्रमा के पास अपनी कोई चमक नहीं है। इसके बावजूद रात में अंधेरे में चमकता है। इसका कारण सूर्य की किरणें हैं। पृथ्वी का एकमात्र प्राकृतिक उपग्रह है चंद्रमा। यह पृथ्वी की परिक्रमा उसी तरह पूरा करता है, जैसे पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा करती है। सूर्य की किरणें चंद्रमा की सतह पर पड़कर प्रतिवर्तित होती हैं और इस कारण चंद्रमा चमकता हुआ प्रतीत होता है। चंद्रमा पृथ्वी की परिक्रमा करता है, इसलिए उसका सिर्फ आधा ही भाग दिखाई देता है।

चंद्रमा पर वातावरण नहीं है इसलिए सूर्य की किरणों का वहां काफी प्रभाव पड़ता है। करीब चौदह दिनों पर सूर्य की किरणों के कारण चंद्रमा की सतह खौलते पानी के तापमान के कारण गर्म हो जाती है। वहीं बाकी दिन यह बर्फीला और स्याह रात जैसा होता है।

ऐसा ही एक और दिलचस्प प्रभाव सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा के एक सीध में आने से होता है। जब पृथ्वी चंद्रमा और सूर्य के बीच में आती है, तब पृथ्वी की छाया चंद्रमा पर पड़ती है और चंद्र ग्रहण पड़ता है।

❋ चन्द्रमा पृथ्वी का एकमात्र उपग्रह है, जो वायुमंडल विहीन है और जिसकी पृथ्वी से दूरी ३,८४,३६५ कि.मी. है।

❋ सौरमंडल में छिपा है एक और चंद्रमा

हमारे ग्रह पृथ्वी की जान है ये गोल चंद्रमा। वही नीला सा दिखनेवाला ग्रह, जो आकाशगंगा का आठवां और चौथा सबसे बड़ा ग्रह है।

हमारी पृथ्वी आकाशगंगा और सौरमंडल का एक हरा-भरा हिस्सा है, जहां जीवन है। इसकी तरह ऐसे कई ग्रह हैं, जहां वैज्ञानिक लगातार जीवन की खोज में लगे रहते हैं। रोवर यान मंगल ग्रह की यात्रा पर निकला हुआ है। वह यान मंगल पर मौजूद जीवन के संकेतों को इकट्ठा कर रहा है। इसी तरह वैज्ञानिकों को हमेशा से लगता रहा है कि नेपच्यून पर भी जीवन हो सकता है। इसके लिए नासा हमेशा हब्बल टेलिस्कोप की मदद से इस ग्रह की तांक-झांक में लगा रहता है।

नासा ने १९८९ में वोएजर नाम के अंतरिक्ष यान को इस ग्रह की खोज के लिए भेजा था, लेकिन उस समय वोएजर इस चंद्रका का पता नहीं लगा पाया, क्योंकि जब स्पेसक्राफ्ट नेपच्यून के पास से गुजरा तब वह इसे छोटे आकार के चलते इसे देख न सका था। उसके बाद फिर हिब्बल टेलिस्कोप को इस खोज में लगाया गया। वैज्ञानिकों के अनुसार इस टेलिस्कोप ने २००४ से २००९ तक इस ग्रह की तस्वीरें खींचीं और रिकॉर्ड इकट्ठे किए। पर आश्चर्य की बात है कि नासा के वैज्ञानिक उस समय भी उस छुपे बैठे चंद्रमा को देख नहीं पाए। वैज्ञानिकों को जब चैन नहीं मिला तो उन्होंने २००९ में अटलांटिस शटल को इस काम पर लगाया और उस मिशन को नाम दिया गया एसटीएस- १२५१। मई २००९ में अंतरिक्ष यात्री हब्बल स्पेस टेलिस्कोप में आखिरी बार पहुंचे। इसके बाद दो अंतरिक्ष यात्रियों एंड्रयू फ्यूसटेल और जॉन ग्रंसफील्ड ने वाइड फील्ड कैमरा ३ इंस्टॉल इस उम्मीद के साथ किया कि एक न एक दिन कोई संकेत तो अवश्य मिलेगा। एक दिन वैज्ञानिक मार्क शोवॉल्टर इन तस्वीरों का अध्ययन कर रहे थे कि अचानक उन्हें बाहर जाना पड़ा। जब मार्क लौटकर आए तब उन्हें एक तस्वीर में छोटा सा बिंदु दिखाई दिया और वह बिंदु नेपच्यून का १४वां चंद्रमा था।

यह चांद नेपच्यून के सिस्टम का सबसे छोटा चंद्रमा है, जो २३ घंटों में १२ मील की दूरी को तय करते हुए नेपच्यून का एक चक्कर लगाता है।

पहला चंद्रमा है ट्राइटन। नेपच्यून ग्रह की खोज १८४६ में हुई और उसके ठीक १७ दिन के बाद इसके पहले चंद्रमा ट्राइटन की खोज की गई। ट्राइटन बहुत बड़ा चंद्रमा है और वैज्ञानिक चाहते हैं कि वह इस चांद पर भी शोध करें।

कुछ मिलियन साल पहले की एक टक्कर में एक ही चांद बचा, जो आज हमें दिखाई देता है। प्रोफेसर एरिक कहते हैं कि कुछ मिलियन वर्ष पहले दोनों चांदों के बीच में टक्कर हो गई थी। इसमें आज हम जो चांद देखते हैं वह सुरक्षित रह गया। वह पृथ्वी के कक्ष में अपनी गति और दूरी के अनुसार ही घूम रहा है, लेकिन जब दोनों चांद की टक्कर हो रही थी तो उनकी गति थोड़ी धीमी हो गई थी। प्रोफेसर एरिक कहते हैं कि आकाश में दिखनेवाले इस चांद के जुड़वां चांद का वजन मौजूदा चांद का १/१३ वां भाग था।

❋ यूरेनस - यूरेनस पृथ्वी से ६३ गुना बड़ा - यूरेनस सौरमंडल का तीसरा सबसे बड़ा ग्रह है जिसकी खोज १३ मार्च १७८१ को विलियम हर्शेल ने की थी और यह सूर्य से दूरी के अनुसार सातवां ग्रह है। यूरेनस सूर्य से लगभग २९ करोड़ किलोमीटर दूर है और यह पृथ्वी से ६३ गुना बड़ा और १५ गुना भारी है और यूरेनस के २७ उपग्रह ज्ञात किए गए हैं एरियल मरिंडा आदि हैं और यूरेनस पर एक दिन लगभग ११ घंटे का होता है। इसको पृथ्वी से नंगी आंखों से नहीं देखा जा सकता पर कई बार रात के समय साफ आसमान में इसको दूरबीन के द्वारा देखा जा सकता है। यूरेनस को ठंडा ग्रह भी कहा जाता है क्योंकि इसके ऊपर बहुत अधिक मात्रा में बर्फ पाई जाती है और इसके सिवाय इस पर

८३ प्रतिशत हाइड्रोजन, १५ प्रतिशत हीलियम और करीब २ प्रतिशत मिथेन पाई जाती है। इसके ऊपर चट्टानें भी पाई जाती हैं जो हाइड्रोजन से बनी हो सकती है और यूरेनस का तापमान- २३५ डिग्री सेल्सियस है और यूरेनस का रंग बर्फ के कारण नीला दिखाई पड़ता है। यूरेनस अपने कक्ष में बाकी ग्रहों से उलटी दिशा की ओर घूमता है। यह कहा जाता है कि यूरेनस से पृथ्वी जितना कोई ग्रह टकराया था। इसी कारण से यह उलटी दिशा में परिक्रमा करता है। यूरेनस पर लगभग ४२ या ४० साल का एक मौसम होता है जिसमें वह ४२ साल सूर्य के सामने रहता है और २ साल अंधेरे में रहता है। इसलिए यूरेनस पर अब तक जीवन संभव नहीं हो पाया।

❋ केवल यूरेनस ही एक ऐसा ग्रह है जो नंगी आंखों से नहीं देखा जा सकता है।

❋ यूरेनस जिसे हिन्दी में अरुण ग्रह कहते हैं यह हमारे सौरमंडल में सूर्य के बाद सातवां ग्रह हैं उसके आधार पर सौरमंडल का तीसरा और द्रव्यमान के आधार पर यह चौथा बड़ा ग्रह है। १३ मार्च १९८१ में विलियम हरशल नाम के एक व्यक्ति ने खोज की थी। अरुण दूरबीन के द्वारा पाए जानेवाला पहला ग्रह है और इसका भार पृथ्वी से १४ गुना ज्यादा भारी है। हमारे सौरमंडल के अंदर चार ग्रहों को गैस का दाना कहा जाता है क्योंकि इनके अंदर मिट्टी पत्थर की जगह ज्यादा गैस पाई जाती है और उनमें से अरुण ग्रह भी एक है। यदि किसी तरह से अरुण ग्रह के बीच में जाकर इसका केंद्र देखा जाए तो वहां पर बर्फ और पत्थर पाए जाते हैं।

❋ युरेनस ग्रह का परिपथ ९० डिग्री तक झुक जाता है।

❋ **नेपच्यून -** नेपच्यून सूर्य से दूर हिसाब से सौरमंडल का आठवां ग्रह है। नेपच्यून पृथ्वी के मुकाबले में सूरज से लगभग ३० गुना अधिक दूर है और यह सौरमंडल का चौथा सबसे बड़ा ग्रह है। यूरेनस सबसे ठंडा ग्रह है, उसके बाद नेपच्यून ही ठंडा ग्रह है। नेपच्यून सूर्य से सबसे अधिक दूर होने के कारण सबसे ठंडा ग्रह नहीं है क्योंकि नेपच्यून के अंदर कार्बन डाइऑक्साइड की कुछ मात्रा पाई जाती है। वह सूर्य किरणों को अवशोषित कर लेती है।

बहुत ज्यादा दूर होने के कारण इसको पृथ्वी से नंगी आंखों से नहीं देखा जा सकता पर यह पृथ्वी से देखने पर एक तारे की तरह दिखाई देता है टिमटिमाता हुआ। इसका गुरुत्वाकर्षण बल पृथ्वी के समान है। बताया जाता है कि नेपच्यून के ऊपर हवाएं बहुत तेज चलती हैं। इन हवाओं की रफ्तार लगभग २१०० किलोमीटर प्रति घंटे की होती है। यह पृथ्वी के मुकाबले बहुत ज्यादा है। नेपच्यून की दूरी सूर्य से लगभग ४४९ करोड़ ८३ लाख ९६ हजार किलोमीटर है और नेपच्यून का औसतन तापमान लगभग २०० डिग्री सेल्सियस है। नेपच्यून की संरचना यूरेनस की संरचना से मेल खाती है क्योंकि नेपच्यून के ऊपर भी बर्फ और कुछ चट्टाने हैं पर नेपच्यून दूर से ज्यादा नीला दिखाई देता है। नेपच्यून पर भी अन्य ग्रह की तरह छल्ले हैं जिन्हें दूरबीन से देखा जा सकता है।

❋ नेपच्यून ग्रह- वरुण ग्रह जिसे हम नेपच्यून के नाम से जानते हैं, यह सौरमंडल से सूर्य का ८वां ग्रह है। नेपच्यून ऐसा ग्रह है जिसको बिना देखे ही उसकी खोज की भविष्णवाणियों कर दी और वह गणित के अध्ययन से की गई थी जिसे फिर उसके आधार पर खोजा गया। यह तब हुआ था जब अरुण परिक्रमा में कुछ दिक्कत पाई गई जिसका परिणाम सिर्फ यही हो सकता था कि उस पर कोई अज्ञात ग्रह गुरुत्वाकर्षण बल डाल रहा है जिसके कारण खगोल की खोजबीन करने के बाद यह अज्ञात ग्रह २३ सितंबर १९८६ को पहली बार दूरबीन से देखा गया और इसका नाम रख दिया नेपच्यून गया।

❊ **शनि ग्रह (सॅटुन) -** शनि ग्रह से उसके वलय की दूरी १,७०,००० मील है।

❊ शनि सबसे हल्का ग्रह - शनि ग्रह बृहस्पति ग्रह के बाद सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रह है। इसकी सूर्य की दूरी के अनुसार सौरमंडल में छठा स्थान है। इसकी सूर्य से दूरी लगभग १४३ करोड़ किलोमीटर है। यह सौरमंडल का सबसे हल्का ग्रह है। यह इतना हल्का है कि यदि पानी में रख दिया जाए तो भी नहीं डूबेगा और बृहस्पति के बाद यह सबसे चमकीला ग्रह भी है। यह चमकीला होने के कारण इसको पृथ्वी से देखा जा सकता है। यह ग्रह लगभग ९६ प्रतिशत हाइड्रोजन पर ३ प्रतिशत हीलियम और अन्य तत्वों जैसे मिथेन, अमोनिया और फास्फीन से बना है। शनि ग्रह के ६२ उपग्रह देखे गए हैं और इसका व्यास भूमध्य रेखीय व्यास १२०५३६ किलो मीटर है और इसका औसतन तापमान लगभग १३९ डिग्री सेल्सियस है। शनि ग्रह सूर्य के चारों ओर अपनी परिक्रमा १० घंटे और ३४ मिनट में पूरी कर लेता है जो बेस्ट बृहस्पति ग्रह के बाद सबसे तेज है। इसलिए शनि ग्रह पर केवल १० घंटे और ३४ मिनट का ही दिन होता है। शनि ग्रह के चारों ओर एक रिंग होता है जिससे इसको आसानी से पहचाना जा सकता है और इस रिंग में १२ छल्ले होते हैं और दो कान होते हैं और दो रिक्त स्थान और सभी छल्ले लगभग एक ही तल पर होते हैं जैसे डी छल्ला, सी छल्ला, बी छल्ला, कैसीनी दरार ए, छल्ला रोश दरार एफ छल्ला, जैनस/ऍपिमीथयस छल्ला जी, छल्ला मिथोनी छल्ला, खंड ऐन्थी छल्ला होते हैं।

❊ शनि गृह पर बहुत तेज हवाएं चलती हैं इन हवाओं की गति ११०० मील प्रति घंटा है।

❊ **ज्यूपिटर (गुरु), बृहस्पति -** ज्यूपिटर पर २६० मील प्रति घंटे की रफ्तार से ज्यादा घनता से चलनेवाले तूफानी हवा होती है।

सबसे बड़ा और सबसे छोटा उपग्रह- बृहस्पति का उपग्रह गैनिमीड सबसे बड़ा और सबसे वजनदार उपग्रह है। यह पृथ्वी के उपग्रह चन्द्रमा से २.०१७ गुना भारी है और इसका व्यास ५२६८ किमी है। मंगल ग्रह का चन्द्रमा डीमौस सबसे छोटा उपग्रह है। इसका आकार अनियमित है फिर भी इसका व्यास १२.५ किमी है।

❊ बृहस्पति सबसे बड़ा गृह है इसके अंदर करीब १००० धरती समा सकती हैं।

❊ हमारे सौर मंडल में मंगल और बृहस्पति ग्रहों के बीच अनेक छोटे-छोटे पिंड सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं। इन पिंडों को ही क्षुद्र ग्रह या एस्टेराइड कहा जाता है।

क्षुद्र ग्रह इतने छोटे हैं कि इनकी खोज खगोलविदों के लिए भूसे के विशाल ढेर में से नन्हीं-सी सुई खोज निकालने से भी कहीं अधिक कष्ट साध्य कार्य था। इनकी खोज की शुरुआत हुई अलग-अलग समय में हुए टाइटियस और बोडे नामक दो खगोलविदों के चिंतन से। उनका ध्यान इस तथ्य की ओर गया कि मंगल और बृहस्पति ग्रह के बीच असाधारण रूप से अत्यधिक दूरी है। इससे उन्होंने अनुमान लगाया कि इन दोनों ग्रहों के बीच एक ग्रह और होना चाहिए। इस विचार से प्रेरित होकर अनेक खगोलविद उस संभावित ग्रह का पता लगाने की कोशिश में जुट गए।

१६वीं सदी के पहले साल यानी सन १८०१ के जून माह में पिआज्जी नामक एक खगोलविद ने मंगल और बृहस्पति के बीच एक पिंड की उपस्थिति का पता लगाया, पर वह बहुत छोटा था। उसका व्यास था केवल लगभग ८०० किलोमीटर यानी हमारे चंद्रमा के व्यास से चौथाई भाग से भी कम। इसका नाम सीअरीज रखा गया। सीअरीज वास्तव में रोम की उपज देवी यान धरती का नाम है।

लेकिन गणनाओं के अनुसार मंगल और बृहस्पति के बीच का संभावित ग्रह सीअरीज के कहीं अधिक बड़ा होना चाहिए था। इसलिए सीयरीज की खोज से यह अनुमान बना कि वहां कुछ छोटे-छोटे ग्रहों का केवल एक समूह होना चाहिए न कि पूरा एक ग्रह। इसलिए खगोलविदों की खोज आगे भी चलती रही।

सात वर्ष बाद ही तीन और क्षुद्र ग्रहों का पता चला और उनका नाम पालास, जूनो और वेस्टा रखा गया। ये तीनों ही रोम और यूनान के देवी देवताओं के नाम हैं। इनका व्यास क्रमश: लगभग ५०० किमी., २४० किमी और ५३० किमी. है। खगोलविद इससे इस निर्णय पर पहुंचे कि अवश्य ही किसी बड़े ग्रह के फटने के बाद उससे ये चार छोटे-छोटे टुकड़े जो ग्रहों की तरह सूर्य की परिक्रमा कर रहे हैं, किन्तु बाद में १५ वर्षों की गहन खोज के फलस्वरूप एक और छोटे से क्षुद्र ग्रह का पता ला जिससे क्षुद्र ग्रहों की खोज का सिलसिला फिर से आरंभ हो गया।

इस तरह होते-होते सन १८६० तक ३०० छोटे ग्रह खोज लिए गये। १९२७ तक इनकी संख्या २००० से भी ऊपर पहुंच गई। ये सभी क्षुद्र ग्रह सूर्य के चारों और चक्कर लगाते हैं। इनमें से अधिकांश मंगल और बृहस्पति के बीच औसत मध्यवर्ती दूरी पर अपनी कक्षा में बड़े विषम मार्ग में चक्कर लगा रहे हैं और उनका झुकाव सूर्य की ओर बहुत अधिक है। इन्हें प्लेनेटाइड भी कहते हैं।

अब तक वैज्ञानिक लगभग २००० क्षुद्र ग्रहों की कक्षाओं का ही सही-सही निर्धारण कर पाए हैं। इन क्षुद्र ग्रहों का नामकरण भी हो चुका है। क्षुद्र ग्रहों में सिर्फ १६५ का व्यास ६७ किलोमीटर से अधिक है। ५०२ का व्यास ४० से ६७ किलोमीटर के बीच है, १६३ का १६ से ४० किलोमीटर के बीच है और २२ का व्यास केवल लगभग १६ किलोमीटर है। इस सब को यदि बटोर कर एक स्थान पर जमाकर दिया जाए तो इनका समूह हमारी पृथ्वी के केवल तीन हजारवें भाग के बराबर होगा। क्षुद्र ग्रह बृहस्पति ग्रह के किसी चंद्रमा (उपग्रह) के फटने से बने हैं।

बृहस्पति का गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी की तुलना में दोगुने से अधिक है। अगर आप बृहस्पति की यात्रा पर जाओ तो वहां आपके लिए चलना-फिरना बहुत कठिन हो जाएगा। वजह यह है कि वहां आप खुद को ही नहीं, हर चीज को लगभग दोगुना वजनी महसूस करोगे।

बृहस्पति को उपग्रह आयो बहुत छोटा है और गुरुत्वाकर्षण पृथ्वी की तुलना में बहुत कमजोर है। पृथ्वी में रहकर जितना ऊंचा तुम उछल पाते हो, उससे कई गुना ऊंचा तुम वहां उछल सकोगे।

उड़ जाना चाहे चांद- अंतरिक्ष में ग्रहों के उपग्रह (जैसे हमारी पृथ्वी का चांद) बहुत तेजी से घूमते है। कोई भी उपग्रही हमेशा अपने ग्रह से सीधी रेखा में दूर उड़ जाना चाहता है लेकिन ग्रह का गुरुत्वाकर्षण उपग्रह को अपनी ओर खींचता है। दोनों बल संतुलित हो जाते हैं और उपग्रह के चारों ओर लगातार चक्कर लगाता है।

❊ विनाशकारी हमलों से बचाता है गुरु ग्रह- गुरु, बृहस्पति या ज्युपिटर ग्रह हमारे सौर मंडल का वकुएम क्लीनर कहा जाता है। यह ग्रह पृथ्वी को विनाशकारी हमलों से बचाता है जिसके कारण हम सुरक्षित जीवन जी रहे हैं और उस ग्रह का नाम है जुपिटर यानी के ब्रहस्पति ग्रह। जुपिटर हमारे सौर मंडल का सबसे बड़ा और सबसे भारी ग्रह है। जुपिटर को सौर मंडल का रक्षा कवच भी कहा जाता है। हालांकि गैस के बादलों से ढके इस ग्रह के बारे में इंसान की समझ कुछ ज्यादा नहीं रही है।

जुपिटर ग्रह का आकार १३०० पृथ्वियों के समान है। जुपिटर ग्रह का वजन सौर मंडल के सारे ग्रहों के कुल वजन से ढाई गुना ज्यादा है। जुपिटर ग्रह पर दिन बाकी सभी ग्रहों से छोटा होता है। जुपिटर ९ घंटे ५५ मिनट में अपनी धुरी के समक्ष एक चक्कर पूरा करता है। बृहस्पति ग्रह की कोई जमीन नहीं है, यह पूरी तरह गैस के बादलों से बना हुआ ग्रह है।

जुपिटर ग्रह के लगभग ६७ चन्द्रमा हैं और इसमें से ४ चार बड़े चन्द्रमाओं की खोज सन १६१० में गैलिलियो ने की थी। जुपिटर ग्रह सबसे पुराने ग्रहों में से एक है। जुपिटर के जरिये पृथ्वी की उत्पत्ति के बारे में पता लगाया जा सकता है। जुपिटर ग्रह की सतह का औसतन तापमान १८० डिग्री सेल्सियस है। अब तक पृथ्वी से जुपिटर ग्रह पर ९ यान भेजे जा चुके हैं।

✻ बृहस्पति का गेनीमेड चंद्रमा सूर्य मंडल में एकलौती वस्तु है जो कि किसी ग्रह से बड़ी है। गेनीमेड का आकार बुध ग्रह से ज्यादा है।

✻ सौर मंडल के सारे ग्रह बृहस्पति में समा सकते हैं।

✻ **शुक्र ग्रह (वीनस ग्रह) -** हमारे सौर-मंडल में सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखला शुक्र ग्रह पर है। इसे मैक्सवेल माउंटेन कहा जाता है और यह पृथ्वी के माउंट एवरेस्ट से दो कि.मी. अधिक ऊंचा है। वीनस ग्रह से सूर्य की दूरी - १०,८०,००,००० किलोमीटर।

✻ शुक्र सौरमंडल का एकमात्र ऐसा ग्रह है, जो घड़ी की दिशा में घूमता है, जबकि अन्य सभी ग्रह घड़ी की विपरीत दिशा में घूमते हैं।

✻ शुक्र ग्रह कभी स्वर्ग जैसा लगता था लेकिन एक थोड़े से संतुलन के बिगड़ने के कारण के यह नर्क में बदल गया। यह ग्रह इतना गर्म है कि लोहा और शीशा भी पिघल जाएगा और यह बड़ी-बड़ी धातु को कुछ ही मिनटों में पिघला सकता है। वैज्ञानिकों का मानना है कि यहां पर पहले समुद्र हुआ करते थे, वह आज के समय में वाष्प बनकर काल की गर्मी में मिल गए हैं। शुक्र सरफेस की ग्रेविटी १.८७ मीटर प्रति सेकेंड स्क्वायर है जो कि लगभग हमारी पृथ्वी के बराबर है।

✻ शुक्र ग्रह की सतह का तापमान ३५१ डिग्री सेल्सियस या ८६४ डिग्री फैरनहाइट है, जो किसी भी ग्रह की सतह का सबसे अधिक तापमान है।

✻ **आकाशगंगा** के कुछ तारे पृथ्वी से ८०,००० मील दूरी पर हैं।

✻ ब्रह्माण्ड की आश्चर्यजनक आकाशगंगाएं देखिए - पृथ्वी से दूर स्थित अलग-अलग आकाशगंगाओं की रोशनी हम तक लाखों, करोड़ों साल में पहुंचती है। नासा की शक्तिशाली हब्बल टेलीस्कोप ने अंतरिक्ष की कई आकाशगंगाओं की तस्वीरों को लेने का अद्भुत काम किया है। कई आकाशगंगाएं इतनी दूर हैं कि उनका प्रकाश हम तक पहुंचने में लाखों साल का समय लेता है। इससे जाहिर है कि हम उस आकाशगंगा को लाखों साल पहले की अवस्था में देख रहे होते हैं।

अगर कोई आकाशगंगा एक करोड़ प्रकाश वर्ष दूर है तो हम उसे एक करोड़ साल पहले की अवस्था में देखते हैं, यह पृथ्वी पर मानव प्रजाति के अभ्युदय से पहले का समय है। पिनव्हील गैलक्सी का ही उदाहरण देखिए, इसे मेसियर १०१ भी कहते हैं। यह पृथ्वी से २.५ करोड़ प्रकाश वर्ष की दूरी पर स्थित है। यह तस्वीर इस आकाशगंगा की सबसे ज्यादा डीटेल्ड तस्वीर है और इसे हब्बल टेलीस्कोप ने लिया है।

इस आकाशगंगा के एक कोने पर स्थित तारे की दूरी दूसरे कोने पर स्थित तारे से १.७ लाख प्रकाश वर्ष है। इससे

जाहिर है कि यह हमारी आकाशगंगा के दोगुने आकार की है। इससे कुछ ही दूर सोमब्रेरो गैलेक्सी है, जिसे एम १०४ भी कहते हैं। यह करीब २.८ करोड़ प्रकाश वर्ष की दूरी पर स्थित है। इस आकाशगंगा का फैलाव करीब ५० हजार प्रकाश वर्ष है और इसका आकार ८०० अरब सूर्यों के आकार जितना है। ये दोनों सर्पिल आकार की आकाशगंगाएं हैं, इन्हें एंटेने आकाशगंगा भी कहते हैं। ये एक समय में एक दूसरे से अलग हो गई थीं, लेकिन बाद में एक दूसरे को गुरुत्व से खींचने लगीं। इन दोनों के बीच ये संवाद सैकड़ों, लाखों साल पहले शुरू हुआ था। ये पृथ्वी से ४.५ करोड़ प्रकाश वर्ष दूर हैं और आपस में टकरानेवाली आकाशगंगाओं में सबसे नजदीक हैं।

यह सर्पिली आकाश की आकाशगंगा (एनजीसी ६५०३) ब्रह्मांड के एक काफी बड़े खाली से दिखनेवाले क्षेत्र का शून्य भी कहते हैं और ये पृथ्वी से १.८ करोड़ प्रकाशवर्ष दूर है। ये तारा-विहीन अंधकार के १५ करोड़ प्रकाशवर्ष तक फैले क्षेत्र में इकलौती मालूम आकाशगंगा है। यहां दो आकाशगंगा एक गुलाब की शक्ल में टकराती हुई दिखाई देती हैं। इसकी रोशनी हम लोगों तक २० करोड़ प्रकाशवर्ष में पहुंचती है। इन्हें सामूहिक तौर पर एआरपी २७३ कहते हैं। दायीं ओर की आकाशगंगा थोड़ी बड़ी है, इसे यूजीसी १८१० कहते हैं। सर्पिल आकाश की होने की वजह से है इसकी साझेदार आकाश गंगा गैलेक्सी यूसीसी १८१३। इसमें चमकीला नीला डॉट यह बताता है कि युवा तारे काफी तेज रोशनी के साथ जल रहे हैं। आकाशगंगा एम१०६ से बड़ी मात्रा में गैस निकलती है। माना जाता है कि ये गैसें इस आकाशगंगा के केंद्र में स्थित बड़े ब्लैक होल में गिर जाती हैं। एम १०६ हमसे २.३ करोड़ प्रकाशवर्ष दूर है।

इसे बौना आकाशगंगा कहते हैं, आई ज्विकी १८। यह हमारी आकाशगंगा मिल्की वे से भी छोटी है। यह ५.९ करोड़ प्रकाशवर्ष दूर है। यह दक्षिणी पिनव्हील गैलेक्सी एम ८३ का क्लोज-अप है। इस आकाशगंगा में मिल्की वे की तुलना में तेजी से तारे बनते हैं। इसमें लाल रंग वाले तारे नए हैं जबकि कुछ तारे कुछ लाख साल पुराने।

❋ आकाशगंगा में १५० अरब तारे - हम नंगी आँख से रात को लगभग ६००० तारों को देख सकते हैं। अगर हम दूरबीन का प्रयोग करें तो ५०००० देख सकते हैं, जबकि हमारी आकाशगंगा में लगभग १५० अरब तारे हैं। किसी तारे की मौत एक सुपरनोवा धमाके से होती है। इस धमाके के कारण पैदा होनेवाली ऊर्जा हमारे सूर्य के जीवन काल दौरान पैदा होनेवाली ऊर्जा से कई लाख गुना ज्यादा होती है।

❋ ब्लैक होल सूर्य से ४ लाख गुना बड़ा - धनु-ए अपने सामने आनेवाले गैस और धूल से बने क्षुद्र ग्रहों को तोड़ कर निगल रहा है। इस दौरान एक्स-रे किरणें और इंफ्रारेड विकीरण भी दिखाई पड़ रहा है। ब्लैक होल आकार में सूर्य से ४,००,००० गुना बड़ा है। ब्रह्मांड में तैर रहे तारों के अवशेषों को भी धुन-ए निगलता जा रहा है। क्या ब्लैक होल सौर मंडल को नए सिरे से बनाते हैं। आकाश गंगा का केंद्र एक अत्यंत ऊर्जावाला स्थान है। बहुत कम दायरे में गतिशील रहनेवाले कुछ ग्रह वहां पर बन सकते हैं। एक्स रे किरणें और इंफ्रारेड विकीरण से साबित होता है कि आकाश गंगा के केंद्र के पास क्षुद्र ग्रह, पुच्छल तारे और ग्रह हो सकते हैं। ब्लैक होल के किनारे भले ही ग्रहों की उत्पत्ति के लिए अच्छा माहौल बनाते हों लेकिन इसी इलाके में ग्रहों की मृत्यु भी होती है। इस दौरान अपार ऊर्जा निकलती है। जब कोई बड़ा ग्रह ब्लैक होल में समाता है तो कुछ ही पलों के लिए इंफ्रारेड विकिरण और एक्स रे किरणें दिखाई पड़ती हैं। ब्लैक होल और उसके किनारे बनते ग्रहों के संबंध में यह जानकारी नई है।

❊ हम नंगी आंख से रात को लगभग ६००० तारों को देख सकते हैं। अगर हम दूरबीन का प्रयोग करें तो ५०००० देख सकते हैं। जबकि हमारी आकाशगंगा में ४०० तारें हैं।

❊ पृथ्वी आकाशगंगा (मिल्की वे) गैलेक्सी (तारा समूह) में है।

❊ १००० गुना ज्यादा चमकीली गैलेक्सी - वैज्ञानिकों ने हमारी आकाशगंगा (मिल्की वे) से १००० गुना ज्यादा चमकीली गैलैक्सी (आकाशगंगा) की खोज की है। स्पेन की वेधशाला में वैज्ञानिकों ने ग्रान टेलिस्कोपिया केनेरियास (जीटीसी) की मदद से इसे खोजा है। नासा के वाइस सेटेलाइट और यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी के प्लांक सेटेलाइट से मिले आंकड़ों की मदद से वैज्ञानिकों ने इस सबसे चमकीली आकाशगंगा को खोजा। इस आकाशगंगा में तारों के निर्माण की गति बहुत तेज है। इसमें सालाना १००० सौर द्रव्यमान के बराबर तारों का निर्माण हो रहा है। वहीं हमारी आकाशगंगा में महज २ सौर द्रव्यमान के बराबर तारों का निर्माण होता है। इसे ब्रह्मांड में सबसे तेज तारों के निर्माणवाला क्षेत्र भी माना जा रहा है।

❊ **प्लूटो -** किस तरह बौना ग्रह बन गया प्लूटो - यह पहले अपने सौरमंडल का ९वां ग्रह था। लेकिन अब इसे ग्रह नहीं माना जाता। प्लूटो २००६ तक सौरमंडल का काफी महत्वपूर्ण सदस्य था। इसे ९वें ग्रह का सम्मान प्राप्त था। लेकिन १३ सितम्बर, २००६ को इंटरनेशनल एस्ट्रोनोमिकल एसोसिएशन ने प्लूटो से यह अधिकार छीन लिया। एसोसिएशन ने घोषणा कर दी कि अब प्लूटो ग्रह नहीं है। उन्होंने एक नई श्रेणी भी बताई, जिसमें इसे बौने ग्रह का नाम देकर डाल दिया गया। तब से प्लूटो को बौना ग्रह कहा जाता है।

७५ देशों के वैज्ञानिकों ने प्लूटो के बारे में हुए शोध के बाद यह तय कि प्लूटो में ग्रह कहलाने वाले गुण नहीं हैं। वैज्ञानिकों ने कहा कि ग्रह वह होता है, जो इतना बड़ा हो कि उसमें गुरुत्वाकर्षक बल पैदा करने की क्षमता हो। यह गोलाकार हो। सूर्य के चक्कर लगाता हो और उसकी कक्षा किसी अन्य ग्रह की कक्षा को काटती न हो।

प्लूटो इन शर्तों को पूरा नहीं करता। वह तो बुध का आधा भी नहीं है। बुध अपने सौरमंडल का सबसे छोटा ग्रह है। प्लूटो सूर्य के चक्कर तो लगाता है, लेकिन कई बार सूर्य से काफी दूर भी चला जाता है और फिर रास्ते पर आ जाता है। वह कई बार नेपच्यून से भी करीब आ जाता है। नेपच्यून अपने सौरमंडल का अंतिम ग्रह है, जो सूर्य से ८वें नम्बर पर है, इसलिए वैज्ञानिकों ने घोषणा की कि प्लूटो ग्रह नहीं है।

प्लूटो का आकार हमारे चंद्रमा का एक तिहाई है। यानी हमारे चंद्रमा के तीसरे हिस्से के बराबर है प्लूटो। इसका व्यास लगभग २३०० किलोमीटर है। अपनी पृथ्वी तो प्लूटो से लगभग ६ गुना बड़ी है। सूर्य से औसतन ६ अरब किलोमीटर दूर है प्लूटो। इस कारण इसे सूर्य का एक चक्कर लगाने में हमारे २४८ साल के बराबर समय लग जाता है। यह नाइट्रोजन की बर्फ, पानी की बर्फ और पत्थरों से बना है। इसके वायुमंडल में नाइट्रोजन, मीथेन और कार्बन मोनोक्साइड गैसें हैं। इस कारण यहां का तापमान काफी कम रहता है। शून्य से २०० डिग्री सेल्सियम नीचे यानी (-) २०० डिग्री सेल्सियस रहता है। इतने कम तापमान में कोई यहां नहीं रह सकता। यहां गैस वाले वातावरण के कारण प्लूटो के भी छल्ले दिखाई देते हैं और यहां का रंग भी बदलता रहता है। वैसे यहां का रंग काले, नारंगी और सफेद रंग का मिश्रण लगता है।

प्लूटो की खोज १९३० में हुई थी। अमेरिकी खगोलशास्त्री क्लाइड डब्ल्यू टॉमबॉग ने इसकी खोज की थी। उस समय

लगा कि प्लूटो ग्रह है और उसे ९वां ग्रह मान लिया गया।

❋ किस ग्रह पर कितनी लम्बी रात होती है। यहां ग्रहों पर रात को दिन और घंटे पृथ्वी के हिसाब से है, जो हमारी घड़ी बताती है।

अपनी धरती पर- पृथ्वी २४ घंटे में ३६० डिग्री घूमती है, लिहाजा दिन और रात लगभग १२-१२ घंटे की होती है।

शुक्र ग्रह पर - शुक्र ग्रह को ३६० डिग्री घूमने में २४३ दिन लगते हैं। यानि १२१.५ दिन अंधेरा और १२.५ दिन रोशनी।

बुध ग्रह पर - बुध ग्रह का पूरा एक दिन ५८ दिन और १५ घंटा का होता है, यानि १९ दिन तक लगातार रात रहती है और बाकी के समय में दिन।

मंगल ग्रह पर - मंगल ग्रह लगभग हमारी पृथ्वी की गति से घूमता है। एक चक्कर २४ घंटे, ३९ मिनट ३५ सेकेंड में लगाता है। यानी करीब १२ घंटे अंधेरा रहता है।

गुरु ग्रह पर- बृहस्पति ग्रह का पूरा एक दिन ९.९ घंटों का होता है। यानी एक जगह पर मात्र साढ़े ४ घंटे में सुबह और अगले साढ़े ४ घंटे में रात।

शनि ग्रह पर - शनि ग्रह का एक दिन १० घंटे ४५ मिनट ४५ सेकंड का होता है। यहां ५ घंटे में ही रात हो जाती है और अगले ५ घंटे में दिन।

यूरेनस पर - यूरेनस यानी वरुण ग्रह पर १७ घंटे, १४ मिनट और २४ सेकेंड का एक पूरा दिन होता है।

❋ नेपच्यून - नेपच्यून ग्रह १६ घंटे, ६ मिनट और ३६ सेकेंड में ३६० डिग्री घूमता है। यानी यहां मात्र ८ घंटे में सुबह हो जाती है।

❋ **अंतरिक्ष -** अंतरिक्ष यात्रियों को आकाश काले रंग का दिखता है।

❋ अंतरिक्ष से गिरे उल्का पिंडों तथा धूल कणों के कारण पृथ्वी का वजन हर वर्ष ४०००० टन की गति से बढ़ रहा है।

❋ **द्वीप, महाद्वीप, उपद्वीप, देश -**

❋ सोकोट्रा द्वीपसमूह पर पौधों की ३०५ प्रजातियां; १९२ तरह के पक्षी भी यहां मौजूद - हिंद महासागर के उत्तर-पश्चिम में अदन की खाड़ी के पास स्थित सोकोट्रा द्वीपसमूह की है। चार द्वीपों से बना २५० किलोमीटर लंबा यह क्षेत्र अपनी जैव-विविधता, वनस्पति और प्राणी समूह के अनूठे खजाने के रूप में जाना जाता है। यहां पर मिलनेवाली ८२५ तरह के पौधों की प्रजातियों में से ३०५ प्रजातियां दुनिया में सिर्फ यहां पर ही पाई जाती हैं। इसके अलावा यहां मौजूद रेप्टाइल्स (सरीसृप) की ९० फीसदी और जमीन पर पाए जानेवाले घोंघे की ९५ फीसदी प्रजातियां भी सिर्फ यहां पर ही मिलती हैं। यहां पर १९२ तरह के पक्षी भी पाए जाते हैं। यहां के समुद्र में भी ७३० तरह की तटीय मछलियां और ३०० तरह के केकड़े व झींगे भी मिलते हैं।

❋ **यूरोप** महाद्वीप के अधिकांश देश तीन ओर से महासागर से घिरे हैं, जिससे वह महाद्वीप प्रायद्वीपों का महाद्वीप कहलाता है।

❋ यूरोप का खेल मैदान- स्विट्जरलैंड को दुनिया का सबसे खूबसूरत देश माना जाता है। आलप्स पर्वत की गोद में

बसा यह देश अपनी सुन्दर झीलों, हसीन वादियों और बर्फीली पहाड़ियों से दुनिया भर के पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र है। यही कारण है कि इसे धरती का स्वर्ग और यूरोप का खेल मैदान जैसे नामों से भी पुकारा जाता है।

✻ नीदरलॅन्ड (होलंड) यूरोप महाद्वीप का सबसे सघन बसा हुआ देश है।

✻ यूरोप अकेला ऐसा महाद्वीप है जिसमें रेगिस्तान नहीं है।

✻ सारायेवो- १९९२ से १९९५ के दौरान लगातार सर्ब फौजों से घिरे रहने के बाद आज यह शहर फिर पुरानी रौनक के साथ तैयार खड़ा है। उस दौरान हुई जंग में ११००० नागरिक मौत के मुंह में चले गए थे। १९९५ के डेटन शांति समझौते के बाद जब युद्ध समाप्त हुआ तो यह शहर नए देश बोस्निया हर्जेगोविना की राजधानी बनकर फिर नए उत्साह के साथ यूरोप के प्रमुख शहरों में शामिल हो गया।

✻ **आइसलैंड-** आइसलैंड एक ऐसा देश है जहां आप आधी रात को भी सूरज की रोशनी का आनंद उठा सकते हैं। यहां के झरने, ज्वालामुखी, ग्लेशियर्स और प्रकृति के बहुत खूबसूरत नजारे आपका मन मोह लेंगे। यहाँ प्रकृति का अद्भभूत नजारा देख के दिल छा जाएगा। १० मई से लेकर जुलाई के अंत तक यहाँ सूरज डूबता ही नहीं है।

✻ **हॉलंड -** नीदरलैंड में रहने की सबसे सुंदर जगह के लिए मशहूर है टाउन - यूरोपीय देश नीदरलैंड के ठीक मध्य में बसे छोटे-से टाउन ह्यूसडन को ऐतिहासिक माना जाता है, क्योंकि इस पर कब्जे को लेकर पूर्व में कई लड़ाइयां हो चुकी हैं। वर्तमान में यहां तकरीबन १५०० लोग ही रहते हैं। १९६८ में इसे ३०० साल पुराने नक्शे के आधार पर ठीक वैसा ही बसाया, जैसा यह १२ वीं सदी में था। तब के सम्राट बाल्डविन यहीं रहते थे, उन्होंने इसे कब्जे से बचाने के लिए कई बार संघर्ष किया। १३५७ में यह टाउन पूरी तरह डच कहलाया। १५६८ से १६४८ तक यहां स्पेनिश सम्राट का शासन चला। १६४९ में डच कलाकार जोहान्स ब्लाउ ने इस टाउन का व्यवस्थित नक्शा बनाया, लेकिन बाद में फिर लड़ाइयां हुईं, जिससे सब बिगड़ गया। १९६८ में उसी नक्शे के आधार पर इसे फिर बनाया गया। आज नीदरलैंडस् में इसे सबसे सुंदर बसाहट वाला टाउन कहा जाता है। हर साल ३.५ लाख से अधिक पर्यटक इसे देखने आते हैं।

✻ **एशिया -** एशिया महाद्वीप का कुल क्षेत्रफल लगभग ४.५ करोड़ वर्ग किमी है।

✻ **ऑस्ट्रेलिया** के एक रसदार फल बिलीगोट प्लम में संतरे से १०० गुना ज्यादा विटामिन सी होता है।

✻ टेकड़ी भी रंग बदलती है। दक्षिण आस्ट्रेलिया में आयर्सरॉक नामक टेकड़ी का रंग रोज बदलता है।

✻ संसार का सबसे बडा द्वीप और छोटा महाद्वीप ऑस्ट्रेलिया है।

✻ दुनिया का सबसे बड़ा संसदीय क्षेत्र पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया का कालगूली है जो २२,५५,००० वर्ग किमी. में फैला है।

✻ ऑस्ट्रेलिया में ७,००० समुद्री किनारे हैं, यह दुनिया के किसी भी अन्य देश से कहीं अधिक हैं।

✻ ऑस्ट्रेलिया के ऊपर के हिस्से में स्थित एल्म नामक झील का टापू लगातार एक किनारे से दूसरे किनारे तक तैरता रहता है।

✻ ऑस्ट्रेलिया की खोज जेम्स कुक ने की थी।

✻ ऑस्ट्रेलिया दुनिया का एकमात्र ऐसा महाद्वीप है, जहां कोई ज्वालामुखी नहीं है।

✻ ऑस्ट्रेलिया की गिनती दुनियाभर के बेस्ट टूरिस्ट स्पॉट में होती है। यहां की चमकीली रेत, दूर-दूर तक फैला नीला

समंदर लोगों को काफी आकर्षित करते हैं, इस छोटे से कॉन्टिनेंटल में दुनिया के सबसे डरावने और खतरनाक जानवर भी पाए जाते हैं। हर जगह दिखाई देंगे सांप ही सांप। यहां करीब १० हजार मकड़ी की उपजाती पाई जाती हैं। इतना ही नहीं कई समुद्री खतरनाक जानवर भी आपको यहां देखने को मिल जाएंगे। ऑस्ट्रेलिया में मॉल से लेकर सड़कों पर सांपों को देखा जा सकता है।

❋ अंडरग्राउंड कस्बा - दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया का कूबर पेडी गांव बहुत खास है। इस जगह की खासियत यह है कि यहां के सारे लोग अंडरग्राउंड घरों में ही रहते हैं। यहां ओपल की कई खदानें हैं। लोग यहां इन्हीं ओपल की खाली खदानों में रहते हैं। बाहर से देखने पर यह घर साधारण नजर आते हैं पर इनके अंदर जाने पर पता चलता है कि यह किसी होटल से कम नहीं हैं। ओपल एक दूधिया रंग का कीमती स्टोन होता है।

ओपल कैपिटल ऑफ द वर्ल्ड कहलाती है क्योंकि यहां पर विश्व की सबसे ज्यादा ओपल माइंस हैं। यहां पर माइनिंग का काम १९१५ में हुआ था। चूंकी कूबर पेडी एक रेगिस्तानी क्षेत्र हैं इसलिए यहां पर गर्मियों में तापमान बहुत ज्यादा होता है जबकि सर्दियों में बहुत कम हो जाता है इसके कारण यहां रहनेवाले लोगों को बहुत तकलीफ का सामना करना पड़ता था। इसका यह हल निकाला गया की लोगों को माइनिंग के बाद खाली बची खदानों में शिफ्ट कर दिया जाए।

इन अंडरग्राउंड घरों में न तो गर्मियों में एसी की जरूरत पड़ती है और न ही सर्दियों में हीटर की। आज यहां पर ऐसे तकरीबन १५०० घर हैं जिसमें कूबर पेडी की सम्पूर्ण आबादी रहती है। इन्हें डग आउट्स कहा जाता है।

जमीन के नीचे ये घर पूरी तरह से फर्निश और सारी सुख सुविधाओं से परिपूर्ण हैं।

❋ ऑस्ट्रेलिया के सबसे ऊंचे पर्वत का नाम माऊंट कोस्श्युस्को है।

❋ **न्यूजीलैंड-**न्यूजीलैंड मे पाये जानेवाले विलक्षण प्राणी टुआतेरा की तीन आंखें होती हैं और तीनों ही कार्य करती हैं।

❋ **जापान** के घरों में ऐसी मछलियां रखी जाती हैं जो भूकम्प आने से पहले अक्वेरियम में जोर जोर से घूमने लगती हैं।

❋ टोकियो का किसी जमाने में ईडो नाम था।

❋ संसार का सबसे अधिक आबादी वाला शहर टोक्यो जापान में है।

❋ **अमेरिका -** ब्राजील में चलने वाली आंधी एक मिनट में १५० किलोमीटर तेजी से चलती है।

❋ अमेरिका के मिसीसीपी क्षेत्र में जब १८९४ में बर्फ गिरी तो बर्फ के गोले के भीतर कछुआ इस तरह चला गया जैसे कोई चीज हम कपास में रखते हैं। वह उसमें बंद हो गया।

❋ अमेरिका के दस शहरों का नाम हॉलीवुड है।

❋ संयुक्त राज्य अमेरिका में कुल ५० राज्य हैं।

❋ कैलीफोर्निया, अमेरिका में एक कैक्टस पाया जाता है सेक्यूआरो। यह कठफोड़वों का घर है।

❋ मीठे जल की विश्व की सबसे बड़ी झील अमेरिका में है और इसका नाम है सुपीरियर झील।

❋ न्यूनार्क शहर को विश्व के सबसे बड़े बंदरगाह के रूप में भी जाना जाता है।

❋ कैलिफोर्निया में स्थित विश्व के सबसे पुराने पेड़ की उम्र- ४००० वर्ष।

❋ मैगलान का जलडमरू मध्य दक्षिणी अमेरिका के दक्षिणी किनारे पर है।

❋ न्यूयॉर्क शहर का निक नेम बिग एप्पल है।

❋ गेहूं की मंडी- न्यूयार्क।

❋ दक्षिण अमेरिकी महाद्वीप में क्षेत्रफल एवं जनसंख्या के लिहाज से सबसे विशाल देश का नाम ब्राजील है।

❋ मैक्सिको शहर १० सेमी प्रति वर्ष की दर से डूब रहा है। वेनिस से थोड़ा सा ज्यादा।

❋ **कनाडा -** कनाडा एक ऐसा देश है जहाँ गर्मी के मौसम में ५०-५० दिनों तक सूरज डूबता ही नहीं। यानी की यहाँ भी रात का अंधेरा देखने को मिलता ही नहीं है।

❋ **चिली देश -** चिली देश के वैज्ञानिकों ने आकाशगंगा के पार नए-नए तारे खोजने के उद्देश्य से पैरानल पर्वत श्रेणी पर एक विशालकाय दूरबीन लगाई है। इस दूरबीन में ४ गोलाकार दर्पण हैं। प्रत्येक दर्पण के कांच की मोटाई १० इंच और वजन ६ टन है। २७ फीट व्यास गोलार्द्ध के इन चारों दर्पणों को कम्प्यूटरों की सहायता से चलाकर आपस में जोड़ा जाएगा। इस भव्य विशालकाय दूरबीन का निर्माण यूरोप के ८ देशों ने मिलकर किया है। अब तक निर्मित दूरबीनों में इस दूरबीन को विश्व की सबसे विशाल दूरबीन का दर्जा प्राप्त हुआ है। वैज्ञानिकों को आशा है कि इस दूरबकीन के माध्यम से शीघ्र ही नए तारे खोजने में सफलता हासिल होगी।

❋ चिली में केलामा के पास स्थित डिजाइर्टिओ-डे-एटाकैमा ऐसा स्थान है जहां वर्षा नहीं होती। यह विश्व में सर्वाधिक सूखा है।

❋ **ब्रिटेन (इंग्लैंड) -** विश्व का पहला शहर जिसकी आबादी दस लाख से ज्यादा आंकी गई थी वह लंदन था। जो आज १३ वें स्थान पर है। जिसकी आबादी ८० लाख रहवासियों की है।

❋ ब्रिटेन के चारों ओर लगभग १०४० उपमहाद्वीप आईलैंड हैं।

❋ **अंटार्कटिका** कभी उष्ण महाद्वीप था जहां पेड़-पौधे पाए जाते थे।

❋ अंटार्कटिका में सबसे ज्यादा ठंड पड़ती है। वहां का तापमान माइनस ८९ डिग्री सेंटीग्रेट होता है।

❋ अंटाकर्टिका पर जो सबसे गरम दिन था उसका तापमान तीन डिग्री फारेनहाईट था।

❋ अंटार्कटिका में सांप नहीं होते।

❋ अंटार्टिका में बर्फ अधिक है अटलांटिक महासागर के पानी की तुलना में।

❋ अंटार्कटिका सबसे ठंडा महाद्वीप है जहाँ माइनस ७६% तापमान रहता है। इसके बावजूद अंटार्कटिका एक रेगिस्तान जैसा है।

❋ यदि अन्टार्टिका में जमी बर्फ की सारी परतें गल जाएं तो संसार के सभी सागर ६० से ६५ मीटर अर्थात २०० से २१० फुट तक और भर जाएंगे।

❋ दक्षिणी गोलार्ध में स्थित बर्फीला महाद्वीप अंटार्कटिका

दक्षिणी ध्रुव यानी अंटार्कटिका पृथ्वी के सबसे दक्षिणी छोर यानी दक्षिणी गोलार्ध में स्थित बर्फीला महाद्वीप है। एक करोड़ चालीस लाख वर्ग किलोमीटर बड़ा यह क्षेत्र दुनिया का पांचवां सबसे बड़ा महाद्वीप है। इस महाद्वीप का करीब ९८ प्रतिशत हिस्सा बर्फ से ढंका है। यहां मानव आबादी नहीं है, लेकिन विभिन्न देशों के शोधकर्ता यहां रहते हैं जिनकी संख्या

औसतन प्रतिवर्ष १००० से ५००० तक के बीच होती है।

यहां केवल ऐसे पौधे ही पनप सकते हैं जो बर्फीले माहौल के मुफीद हों। टुंड्रा क्षेत्रों में पाए जानेवाले पौधे और सूक्ष्म जीव यहां मिलते हैं। जानवरों में भी यहां पेंग्विन, सील आदि की भरमार रहती है।

रूसी खोजकर्ता मिखाइल लाजारेव यहां पहली बार १८२० में पहुंचे थे। इसे अंटार्क्टिका नाम १८९० में जॉन जॉर्ज बार्थोलोम्यू ने दिया था जिसका यूनानी भाषा में मतलब होता है- उत्तर दिशा का विपरीत छोर। हालांकि १७७३ में कैप्टन जेम्स कुक पहली बार अंटार्क्टिका के पास ७५ मील तक पहुंचे थे, लेकिन वह मुख्य भूमि तक नहीं पहुंच सके थे। १९५९ में अंटार्क्टिक ट्रीटी साइन की गई जिसके अंतर्गत यहां सैन्य कार्रवाई और खनिज उत्खनन पर रोक लगाई गई। साथ ही यहां शोधकार्य को मंजूरी और महाद्वीप के वातावरण को बचाने पर रजामंदी हुई थी।

भौगोलिक तौर पर इस महाद्वीप को उत्तर और दक्षिण दो हिस्सों में बांटा गया है। यहां दुनिया की ९० प्रतिशत बर्फ मौजूद है और दुनिया भर के स्वच्छ जल का ७० प्रतिशत यहां मिलता है। पश्चिमी अंटार्क्टिका वेस्ट अंटार्क्टिक आइस शीट से ढंका है। यदि यह शीट टूट जाती है तो समुद्र जलस्तर काफी बढ़ सकता है।

प्रतिवर्ष सर्दियों में यहां शोधकर्ताओं की संख्या घटा दी जाती है। यहां कोई सरकार नहीं है इसलिए इसे तटस्थ क्षेत्र माना जाता है। लेकिन कई देशों के यहां शोध केंद्र हैं और अंर्टार्क्टिका को अब मूलत: शोध स्थल के तौर पर जाना जाता है।

❊ इजिप्त - प्राचीन इजिप्तवासी अपने पालतू मगरमच्छ के लिए गहने खरीदते थे।

❊ भारत - भारतीय लोग दुनियाभर में पहुंचे - ब्राजील स्थित गौवंश को लेकर अनुसंधान करने को लेकर चर्चा के कई कारण है। एक भारतीय चीजों का भारत के बाहर कितना बड़ा विश्व है यह हमें समझना चाहिए। आमतौर हमें लगता है कि इस देश में सिर्फ बाहर के देशों से लोग आए थे। आर्य बाहर से आए हुए है, उनके बाद शक, कुशान, हूण, तुर्क, मुगल आए थे। लेकिन सच्चाई यह है कि अमेरिका में आज जितनी भी स्थानीय जातियां है वह सभी कोलंबस के वहां जाने से पहले थी और वह सभी जाति जनजातियां अपने आपको इंडियन मानती है।

१९वीं सदी में पूरी दुनिया में यूरोप का साम्राज्य फैला था। यूरोप से सभी कालोनिया और संस्कृति दुनियाभर में फैली थी यह भ्रम पैदा करने के लिए ब्रिटिश और यूरोपियन लोगों ने पूरी दुनिया में टोलियां पहुंचने का इतिहास लिखा था और इसी का एक हिस्सा है कि आर्य भारत में आए। अगर दूसरे पक्ष में विचार किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि दुनिया की हर भाषा में यानी चीन, जापान, यूरोप की हर भाषा, अफ्रीका की हर भाषा, अमेरिका की हर भाषा यानी दक्षिण भारत की हर भाषा में अलग-अलग दो हजार शब्द है। ऑस्ट्रेलिया में ६ हजार साल पहले के भारतीयों के अवशेष मिले हैं। इस पूरे इतिहास की दुनियाभर में मान्यता है। लेकिन भारत में एक हजार साल पहले में से चार सौ साल अफगानी गजनी, गोरी, एबक खिलजी सत्ता में थे। बाद में चार सौ साल बाबर शहाजहां, औरंगजेब अकबर ने राज किया। इसके बाद के समय की सरकारे पुराने शासकों द्वारा किए गए कार्य पर निर्भर थे इसलिए उन्होंने इतिहास को हाथ नहीं लगाया लेकिन इन सबके बारे में पूरा अध्ययन करने की आवश्यकता है।

भारतीय गौवंश के अध्ययन के संदर्भ में अनेक राज्यों के इतिहास में दावा किया जाता है कि यही से भारतीय गौ वंश विदेशों में पहुंचा है। यानी ब्राजील में ऐसा दावा किया जाता है। लेकिन प्रत्यक्ष ब्राजील के जानकारों ने जो लिखा है उस पर भी ध्यान

देना आवश्यक है। यानी दस हजार सालों की परंपरा वाला गौ वंश कुछ हजार साल पहले अफ्रीका से सटे मेडागास्कर पहुंचा। वहां पर ब्रिटिश लोग पहुंचने पर उन्होंने अफ्रीका और अमेरिका में गन्ने की खेती के लिए भारत से मजदूर लाए थे, उनकी मजदूरों के साथ यह गौ वंश पूरी दुनिया में पहुंचा। इस विषय को लेकर व्यापक अनुसंधान की आवश्यकता है।

भारत में आनेवाले विदेशी पर्यटकों की संख्या ३९,१५३२४ हैं।

❋ देशवासी यदि देश में कहीं पर्यटन के लिए सबसे ज्यादा जाना चाहते हैं तो वह स्थान है आंध्रप्रदेश। इसके बाद उत्तरप्रदेश की बारी आती है। देशी बाशिंदों को लुभानेवाले प्रदेशों में तीसरे क्रम में तमिलनाडु फिर कर्नाटक उसके बाद राजस्थान व बाद में महाराष्ट्र का स्थान है।

❋ देश के केवल ३९ प्रतिशत क्षेत्रों में ही अब खेती होती है।

❋ देश में १८४० लाख हेक्टेयर उपजाऊ जमीन उपलब्ध है।

❋ भारत के पश्चिमी भाग में स्थित लवणीय दलदल का नाम कच्छ का रन है।

❋ भारत में दिल्ली में कुतुबमीनार के पास बना लौह स्तम्भ है इसकी ऊंचाई २२ फुट, गोलाई में व्यास साढ़े चार फुट है। जिसका रहस्य वैज्ञानिक आज तक नहीं जान सके कि उसमें जंग क्यों नहीं लगती ?

❋ भारत का सबसे बड़ा संसदीय क्षेत्र लद्दाख है, जो १,७३,००० वर्ग कि.मी. में फैला है।

❋ जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के अनुसार देश में जमीन से १,२०० मीटर गहराई पर ही कोयले की २,५३,३०२ मिलियन टन उपलब्धता है।

❋ भारत का क्षेत्रफल विश्व के क्षेत्रफल का २.४२% प्रतिशत है।

❋ बड़े पैमाने पर वैज्ञानिक-अविष्कारोंवाला भारत विश्व में दूसरा देश कहलाता है।

❋ भारत में मुद्रा की विधिवत शुरुआत करने का काम शेरशाह सूरी ने किया। उसने शुद्ध चांदी से निर्मित ११.६ ग्राम वजन का रुपये का सिक्का जारी किया।

❋ प्रारंभ में भारत में कागज के नोट ब्रिटेन से छपकर आते थे। अंग्रेजों ने नासिक (महाराष्ट्र) में इंडिया सिक्योरिटी प्रेस स्थापित कर (१४ अप्रैल १९२८) कागज के नोट छापने शुरू किए।

❋ एक रुपये तक की मुद्रा भारत का वित्त मंत्रालय और उससे ऊपर की मुद्रा भारतीय रिजर्व बैंक जारी करता है।

❋ दो रुपये और अधिक कीमत के नोटों पर कीमत १५ भाषाओं में लिखी है और उन पर रिजर्व बैंक के गवर्नर के हस्ताक्षर होते हैं।

❋ पांच रुपये और उससे अधिक कीमत के नोटों में उर्ध्वाधर में एक सुरक्षा धागा रहता है। जिस पर हिंदी में भारतीय रिजर्व बैंक और अंग्रेजी में आरबीआई लिखा होता है।

❋ भारत की पश्चिमी घाट पर्वत श्रृंखला को सह्याद्रि के नाम से जाना जाता है।

❋ भारत की एकल समुद्री सैंचुरी गोवा में है।

❋ भारत में सबसे कम वर्षावाला स्थान लेह है।

❋ उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में समुद्र तक फैला यह उपमहाद्वीप भारतवर्ष के नाम से ज्ञात है, जिसे महाकाव्य

तथा भरतवर्ष अर्थात भरत का देश तथा यहां के निवासियों को भारती अर्थात भरत की संतान कहा गया है। यूनानियों ने भारत को इंडिया तथा मध्यकालीन मुस्लिम इतिहासकारों ने हिन्द अथवा हिन्दुस्तान के नाम से संबोधित किया है।

❋ भारतीय इतिहास को अध्ययन की सुविधा के लिए तीन भागों में बांटा गया है- प्राचीन भारत, मध्यकालीन भारत एवं आधुनिक भारत।

❋ **चीन** के बीजिंग शहर के डक रेस्टारेंट में एक समय पर ९००० लोगों के बैठने की व्यवस्था है।

❋ चीन देश के लोग सांप खाते हैं।

❋ कागज के नोट छापनेवाला विश्व का दूसरा देश बना चीन। सन १३६८ में छपा एक नोट आज भी चीन में सुरक्षित है।

❋ शहतूत की छाल से बने कागज पर विश्व का सबसे बड़ा नोट (लंबाई एक फुट एक इंच और चौड़ाई ९ इंच) सन १३९९ के दौरान चीन में मिंग शासकों ने चलाया था।

❋ रेशम के कपड़े की मुद्रा चीन में १२वीं सदी में चलती थीं। यह सिक्के थान की तरह होते थे और सिक्के में जितनी तहें होती थीं उससे उतने ही रेशम के थान खरीदे जा सकते थे।

❋ सर्वाधिक आबादी वाला देश चीन है।

❋ चीन विश्व का ऐसा देश है जिसकी सीमा को तेरह देशों ने घेर रखा है।

❋ सिंग नाइट चूं (चीन) शहर में ५ सूर्य दिखते हैं।

❋ **फ्रांस** में १७५० में पहला इन्साइक्लापीडिया बना।

❋ १७९५ में फ्रांस में रेशम के कपड़े की मुद्रा जारी की गई।

❋ **नाइजीरिया** का लागोस शहर दुनिया का सबसे महंगा शहर है।

❋ **इंडोनेशिया** की रचना कुल १३०० द्वीपों से मिलकर हुई है।

❋ **रूस -** क्षेत्रफल के हिसाब से रूस दुनिया का सबसे बड़ा देश है। इसका कुल क्षेत्र १७.१ मिलियन वर्ग किलोमीटर है। विखंडन के बाद भी रूस का क्षेत्र समूचे उत्तरी गोलार्द्ध का आधे से अधिक है। रूस में सौ प्राणी संरक्षण पार्क और ३५ नेशनल पार्क हैं। रूस की बैठल झील दुनिया की सबसे पुरानी और गहरी झील है। एक अनुमान के अनुसार इसमें दुनिया के स्वच्छ जल का बीस प्रतिशत पानी है।

❋ रूस का शहर मुरमांस्क और फिनलैंड का रोवानिएगी दुनिया के ऐसे इलाके हैं जहां समर सॉलस्टिस के दौरान रात ही नहीं होती। वहां आधी रात को भी सूरज चमकता रहता है। इसका मतलब है कि इस दौरान वहां पर २४ घंटे का दिन होता है।

❋ विश्व का रूस ऐसा देश है जिसके एक भाग में शाम और एक भाग में दिन होता है।

❋ रूस में साइबेरिया पूरे विश्व में अत्यधिक ठंडी जलवायु के लिए प्रसिद्ध है।

❋ **टर्की -** टर्की का इस्तानबुल दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है जो दो महाद्वीपों में स्थित है।

❋ **उत्तरी आयरलैंड -** जॉइंट्स कॉजवे यह विशालकाय सेतु (जाइंट्स कॉजवेत्र एक प्राचीन ज्वालामुखी विस्फोट के परिणामस्वरूप बना ४०,००० घने बसाल्ट स्तंभों का इलाका है। इसकी विशेषता है कि यहां बसाल्ट अधिकतर षटकोण आकार में हैं। कहा जाता है कि यह विशाल प्रायद्वीप एक गुस्साए असुर ने बनाया था।

❋ **ग्रेट ब्रिटेन -** ब्रिटेन के चैनेल द्वीपों का नन्हा सा सार्क द्वीप सर्वाधिक शांतिपूर्ण स्थान है और पुलिस बल के नाम पर एकमात्र अधिकारी है।

❋ **ग्रीनलैंड** देश दुनिया का सबसे बड़ा द्वीप भी है। इसका आकार ८४०००० वर्ग मील है।

❋ **उत्तरी ध्रुव** दक्षिणी ध्रुव की अपेक्षा २.७९९ मीटर ऊंचा है।

सड़क के पार खत्म हो जाती है दुनिया - आज तक आपने भी कई बार नॉर्थ पोल या उत्तरी ध्रुव के बारे में आप जानते होंगे। यहां पर दुनिया की आखिरी सड़क है। इस सड़क के बाद कोई भी रास्ता नहीं है। यहाँ पर धरती का सबसे दूर उत्तरी बिन्दु है और इसी धुरी के जरिए पृथ्वी घूमती है। इस जगह पर हमेशा ही बर्फ की मोटी चादर बिछी ही रहती है। यहां से जो सड़क गुजर रही है उसके आगे जाकर दुनिया खत्म हो जाती है। नॉर्वे की ये सड़क पृथ्वी के इस छोर को जोड़ती है और उसे ई-६९ के नाम से जाना जाता है। सिर्फ ये नाम ही नहीं बल्कि इस सड़क को तो दुनिया की आखिरी सड़क भी कहा जाता है और ऐसा इसलिए क्योंकि इससे आगे कोई सड़क नहीं है। ई-६९ हाईवे करीब १४ किमी लम्बा है और यहाँ पर सभी लोगों को हमेशा साथ में जाने की सलाह दी जाती है। जो भी यहॉ। अकेले जाता है वो गुम हो सकता है। यहां पर सर्दी के मौसम में रात खत्म नहीं होती है और गर्मी के मौसम में सूर्य डूबता ही नहीं है।

जो भी लोग यहाँ रहते हैं वो मछली का कारोबार कर जीवन बिता रहे हैं। साल १९३० में इस इलाके का धीरे-धीरे विकास होने लगा और तब जाकर साल १९३४ में स्थानीय निवासियों ने मिलकर यह निर्णय लिया कि यहां दुनियाभर से पर्यटकों का स्वागत किया जाना चाहिए ताकि रोजगार के अवसर बढ़ें।

❋ **दक्षिणी ध्रुव -** दक्षिणी ध्रुव की खोज सर्वप्रथम एमण्डसेन ने की।

❋ **इटली -** विश्व का सबसे छोटा राज्य वेटिकन राज्य है जिसे मात्र पंद्रह मिनट में पैदल पार किया जा सकता है। इसकी जन्म दर शून्य है। इसका क्षेत्रफल केवल ०.४४ वर्ग किमी है।

❋ इटली का उस्सेला पर्वत केवल सूर्योदय व सूर्यास्त के समय ही दिख पाता है।

❋ इटली के मोदेना भाग में स्थित पर्वत सालों से धीरे-धीरे एक दिशा में बढ़ रहा है। अब तक वह अपनी जगह से ४० किलोमीटर दूर जा पहुंचा है।

❋ रोम को सात पहाड़ियों का देश कहा जाता है।

❋ **इजराइल -** इजराइल देश का प्रत्येक नागरिक सैनिक होता है।

❋ **न्युगिनी -** पपुआ न्युगिनी देश के लोग नरभक्षी होते हैं।

❋ **स्पेन -** स्पेन देश के लोग सांड से लड़ते हैं।

❋ **नार्वे-** नार्वे में मई से जुलाई माह के अंत तक सूर्य कभी-भी अस्त नहीं होता और आधी रात को भी दिखता है। इसे मध्य रात्रि के सूर्य का देश भी कहते हैं।

❋ वो देश जहां रात नहीं होती - सूरज निकलने के बाद दिन की शुरुआत होना और सूरज डूबने के बाद रात की शुरुआत होना, ये तो प्रकृति का नियम ही है और दुनिया इसके मुताबित ही चलती है, लेकिन दुनिया में कुछ ऐसे भी देश हैं, जहाँ सूरज डूबता ही नहीं है, यानी यहाँ पूरे २४ घंटे दिन जैसा उजाला ही रहता है।

नार्वे - नार्वे एक ऐसा देश है जो पूरी तरह पहाड़ों से घिरा हुआ है। इस देश में मई से जुलाई तक लगभग ७६ दिन सूरज डूबता ही नहीं है। इस लैंड ऑफ द मिड नाइट सन भी कहा जाता है। अगर आप लंबे समय तक रोशनी का आनंद उठाना चाहते हो तो इस देश की सैर कर सकते हैं।

✲ **स्वीडन -** स्वीडन - स्वीडन दुनिया का ऐसा देश है, जहाँ आप आधी रात को भी सूरज की रोशनी का आनंद उठा सकते हैं। यहां मई की शुरुआत से लेकर अगस्त के अंत तक आधी रात को सूरज डूबता है।

✲ **फिलिपींस -** फिलिपींस में ७१०० उपमहाद्वीप हैं पर ज्यादातर लोग ११ वें सबसे बड़े उपमहाद्वीप पर रहते हैं।

✲ **पार्स -** ईरान का प्राचीन नाम पार्स था और पार्स के रहनेवाले लोग पारसी कहलाए, जो जरथुस्त्र के अनुयायी थे। सातवीं शताब्दी में अरबों ने पार्स पर विजय पाई और वहां इस्लाम का प्रचार प्रसार हुआ। उत्पीड़न से बचने के लिए बहुत से पारसी भारत आ गए। आज भी इनकी बहुत सी जनसंख्या भारत के पश्चिमी भागों में पाई जाती हैं।

✲ **सऊदी अरब** में एक भी नदी नहीं है, यह देश ८,३०,००० वर्गमील के क्षेत्रफल में फैला हुआ है।

✲ **अफगानिस्तान** में सबसे ज्यादा आबादी पठानों की है।

✲ **अफ्रीका -** दक्षिण अफ्रीका का एक इलाका है- सहेल। वहां के लोग मिट्टी के बने बड़े-बड़े मटकों में रहते हैं।

✲ इंसानों का बनाया सबसे बड़ा गड्ढा दक्षिण अफ्रीका के किंबरली में है। १.६ किलोमीटर व्यास और ८०० मीटर गहरा गड्ढा हीरे की खान रहा है।

✲ ऊष्ण कटिबंधीय अफ्रीका में भूमध्य रेखा पर स्थित माउंट केन्या नामक पर्वत हमेशा बर्फ से ढंका रहता है।

✲ विश्व में सबसे अधिक सोना तथा हीरे किम्बले दक्षिणी अफ्रीका में पाये जाते हैं।

✲ सोमालिया एकमात्र अफ्रीकी देश है जहां की पूरी आबादी एक ही भाषा, सोमाली बोलती है।

✲ अफ्रीकी महाद्वीप पर १००० से ज्यादा भाषाएं बोली जाती हैं।

✲ **मलेशिया -** पेनाग राज्य को मलेशिया की सिलिकॉन घाटी कहा जाता है।

✲ **मेसोपोटामिया -** दजला फरात की घाटी का संबंध मेसोपोटामिया की सभ्यता से है।

✲ **कोर्सिका-** भूमध्य सागर में एक द्वीप है। यह फ्रांस के दक्षिण पूर्व और सार्डिनिया के उत्तर में है। यहां नेपोलियन का जन्म हुआ था।

✲ **फिनलैंड -** फिनलैंड भी दुनिया का एक ऐसा देश है, जहाँ गर्मी के मौसम में ७३-७४ दिनों तक सूरज डूबता ही नहीं। आप यहां पर स्कींग, साइकलिंग, क्लाजइंबिंग और हाइकिंग जैसी गतिविधियां करके आनंद भी उठा सकते हैं।

✲ **ज्वालामुखी -** ✲ ज्वालामुखी- ज्वालामुखी के नाम से ही भर जाती है दिल में दहशत। दिलचस्प बात यह है कि पृथ्वी के ८० प्रतिशत ज्वालामुखी जमीन पर नहीं, पानी में हैं।

सौरमंडल में भी धमाके- ज्वालामुखी पृथ्वी पर ही नहीं, सौरमंडल के अन्य ग्रहों पर भी मौजूद हैं। हमारे सौरमंडल का सबसे बड़ा ज्वालामुखी मंगल ग्रह पर है और इसका नाम है ओलंपस मान्स। इसकी ऊंचाई माउंट एवरेस्ट से तीन गुना अधिक है। हमारे सौरमंडल में सबसे ज्यादा ज्वालामुखी विस्फोट बृहस्पति के एक उपग्रह लो पर होते हैं। लगातार धमाकों की वजह से इस उपग्रह की सूरत बार-बार बदलती रहती है।

१९०० ज्वालामुखी है सक्रिय- ज्वालामुखी तीन किस्म के होते हैं सक्रिय, सुप्त और मृत। सक्रिय ज्वालामुखी समय-समय पर भडकते रहते हैं, सुप्त का कोई भरोसा नहीं होता, जबकि मृत ज्वालामुखी वे होते हैं, जो पहले कभी भड़के थे पर अब उनके जागने की कोई संभावना नहीं हैं। इस समय हमारी पृथ्वी पर लगभग १९०० सक्रिय ज्वालामुखी हैं। दुनिया में सबसे ज्यादा सक्रिय ज्वालामुखी (७५) इंडोनेशिया में हैं। प्राचीन रोम के एक प्रसिद्ध शहर पॉम्पेई के ७९ ईस्वी में पूरी तरह तबाह हो जाने की वजह था विसुवियस नामक सुप्त ज्वालामुखी। पॉम्पेई के लोग इसके फूटने से पूरी तरह बेफिक्र थे, क्योंकि इसमें २००० सालों से कोई हलचल नहीं हुई थी। विश्व में ज्वालामुखी फूटने की सबसे बड़ी त्रासदी वर्ष १८१५ में टंबोरा, इंडोनेशिया में हुई थी, जहां लगभग १०००० लोग तुरंत और ८०००० बाद में अकाल के शिकार हुए थे।

वोल्कैनो शब्द प्राचीन रोमन सभ्यता में आग के देवता वल्कन के नाम से लिया गया है। ज्वालामुखी विस्फोट में लावा के साथ राख, भाप और गंधक (सल्फर) भी बाहर आती है।

किसी ज्वालामुखी के फूटने से उड़ी राख और चिंगारियां हवा में लगभग १७ मील (३० किलोमीटर) ऊंचाई तक उछल सकती है।

ज्वालामुखी विस्फोट के क्षेत्र में उड़ान भरते हुए पायलटों को खास सतर्कता बरतनी पड़ती है। इससे निकली राख और धूल जहाज का इंजन जाम कर सकती है।

किसानों का फायदा- ज्वालामुखी के पास रहना खतरनाक होता है फिर भी कई लोग, खासकर किसान वहां रहते हैं। ज्वालामुखी की राख से जमीन बहुत उपजाऊ हो जाती है और किसानों को बढ़िया उपज मिलती हैं।

ज्वालामुखी भूपटल पर वह प्राकृतिक छेद या दरार है जिससे होकर पृथ्वी के अन्दर का पिघला पदार्थ, गैस या भाप, राख इत्यादि बाहर निकलते हैं। पृथ्वी के अन्दर का पिघला पदार्थ, जो ज्वालामुखी से बाहर निकलता है, भूराल या लावा कहलाता है। लावा जमकर ठोस और काला हो जाता है जो बाद में जाकर ज्वालामुखी चट्टान के नाम से जाना जाता है। लावा में इतनी अधिक गैस होती है कि वह एक ही बार निकल पाती है। लावा में बुलबुले इन गैसों के निकलने के कारण हो उठते हैं। लावा का बहना बंद हो जाने पर कुछ काल तक भाप निकलते देखा जाता है।

पिघली चट्टान को ऊपर लाने में ये गैसें ही सहायक होती हैं मगर यह जरूरी है कि भूपटल पर कहीं कोई कमजोर परत मौजूद हो जिसे तोड़कर, फाड़कर या छेदकर गैस लावा को ऊपर की ओर रास्ता बनाने में मदद करे। ज्वालामुखी-विस्फोट होने पर भूकंप होना स्वाभाविक है। एक भूवेत्ता के शब्दों में ज्वालामुखी पृथ्वी की सतह पर उगे हुए फोड़े हैं। ये वहीं फूटते हैं जहां की पपड़ी कमजोर होती है, जहाँ इन्हें कोई रास्ता मिल जाता है। हम पृथ्वी की पपड़ी को भेदकर तो नहीं देख पाते, मगर अनुमान लगाते हैं कि वहाँ की स्थिति क्या हो सकती है।

* सन् १८८३ में क्रकाटोआ ज्वालामुखी के विस्फोट की आवाज ४८०० कि.मी. दूर ऑस्ट्रेलिया में भी सुनाई दी थी।
* भारत का एकमात्र ज्वालामुखी अंडमान और निकोबार द्वीप समूह पर है।
* दुनिया का सबसे ऊंचा पर्वत हवाली का सुप्त ज्वालामुखी माउना का है जिसकी ऊंचाई ३३,४६५ फीट है।
* बेरन भारत का एक मात्र जाग्रत ज्वालामुखी है। इससे लावा, तपते-छोटे-बड़े पत्थर, राख, गैस और जलते अंगारों की थोड़ी-बहुत मात्रा हमेशा छिटकती रहती है। वैसे कुछ वर्षों के अंतराल पर यह कुछ अधिक ही भीषण रूप ले लेता है।

१९९४-१९९५ के बाद इस वर्ष ऐसी ही स्थिति है। इस वर्ष बेरन के तीव्र गुस्से को देखते हुए जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया के वैज्ञानिक दल पहली बार इसके व्यापक निरीक्षण में जुटे हैं।

बेरन अंडमान-निकोबार द्वीप समूह का एक छोटा-सा द्वीप है। यह वीरान भू-भाग राजधानी पोर्टब्लेयर से १३५ किलोमीटर दूर स्थित है। यहां कुदरती जड़ी-बूटियां और औषधीय पौधे बहुतायत में हैं, लेकिन मानव आबादी शून्य है। जीवों के नाम पर केवल कुछ जंगली बकरे हैं जो ज्वालामुखी का तीव्र रूप देखते ही द्वीप के दूसरे हिस्से की ओर चले जाते हैं। बेरन में हर विस्फोट के बाद का नजारा अद्‌भुत होता है। ऐसा लगता है जैसे ज्वालामुखी के अंदर बैठा कोई डरावना राक्षस रह रहकर आकाश की ओर जलते पत्थर और चिंगारी फेंक रहा हो। माहौल तब और दर्शनीय हो उठता है जब इस दौरान बारिश भी हो। इससे गाढ़े धुएं और जलती बुझती चिंगारी के सैकड़ों मीटर स्तंभ आकाश तक उठे दिखते हैं।

* हमारे सौरमंडल का सबसे बड़ा ज्वालामुखी मंगल ग्रह का ओलम्पस मोन्स है जो अब ठंडा हो चुका है।

* जापान में दुनिया के १० प्रतिशत प्रसुप्त ज्वालामुखी है।

* तुर्केमेनिस्तान में एक डोर टू हेल है। यहां गैस से निकलती है। ४० साल से यहां एक ज्वालामुखी बना हुआ है।

*** भूकम्प -** धरती पर एक स्थान जहां सबसे अधिक भूकंप आए हैं, वह है जापान। वहां वर्ष के लगभग प्रत्येक दिन एक भूकंप आता है परन्तु इनमें से अधिकतर भूकंप मामूली होते हैं और कोई नुकसान नहीं पहुंचाते। १९२३ में आए टोक्यो भूकंप में एक लाख लोग मारे गए थे और योकोहामा शहर तबाह हो गया था। १९२० में चीन में आए भूकंप ने तीन सौ वर्ग मील क्षेत्र को प्रभावित किया और इसमें लगभग दो लाख लोगों ने अपनी जान गंवा दी थी। यूरोप के सबसे अधिक विनाशकारी भूकंपों में से एक पुर्तगाल के लिस्बन शहर में आया था। १७५५ में आए इस भूकंप में पूरा लिस्बन शहर तबाह हो गया था और लगभग ३० हजार लोग मारे गए थे। उत्तरी अमरीका के सान फ्रांसिस्को में १९०६ में आए भूकंप के बाद बहुत बड़े-बड़े अग्निकांड हुए जिसमें सम्पत्ति का अत्यधिक नुकसान हुआ और ७०० लोग मारे गए।

* विश्व में सबसे अधिक भूकंप जापान में आते हैं। क्योंकि यह पृथ्वी की सबसे प्रभावशाली भूकंप पट्टी में स्थित है। प्लेटो टैक्टोनिक्स सिद्धांत के अनुसार भूकंप पट्टी प्लेटों की सीमाओं पर स्थित है।

*** तूफान और बिजली -** बिजली - तूफान की शुरुआत - आसमान में छानेवाले काले-काले बादल बूंदों से ही नहीं, हवा से भी भरे हो हैं। बादल के अंदर मौजूद यह हवा किसी तेज शोर करती हुई मोटर की तरह पानी की बूंदों को मथती रहती है। हवा की यह हरकत बादल के अंदर काफी ऊर्जा पैदा करती हैं और धमाका सा होता है। इसे ही बादल का गरजना कहते हैं। इसी टक्कर में दोनों बादलों की ऊर्जा से बिजली की कौंध पैदा होती है। अगर ऐसे कई बादल जुड़ते जाएं तो इनकी तेज हवाओं की ताकत तूफान भी ला सकती है।

बिजली की कड़क - बिजली कड़कने की आवाज सुनकर लोगों का दिल बैठ जाता है। बिजली कड़कने की आवाज बादल की गरज से अलग होती है। लगभग १०००० वोल्ट की यह बिजली (हमारे घरों में आनेवाली बिजली २२० वोल्ट होती है) इतनी गरम होती है कि आकाश में मौजूद हवा के कारण एक सेकेण्ड के हजारवें हिस्से से भी कम में पॉपकॉर्न की तरह भुन जाते हैं। हवा के कणों की यही तड़क हमें बिजली की कड़क से रूप में सुनाई देती है। घरेलू बिजली की तरह यह भी आर्थिंग की तलाश करती है और इसे जो भी चीज इस काम के लिए उपयोगी लगती है, यह उसको अपना निशाना

बनाती है। इसे ही बिजली गिरना कहते है।

बेहतर है घर- तूफानी मौसम में घर के अंदर रहना सबसे ज्यादा सुरक्षित माना जाता है। तूफान या बादलों की गरज के दौरान कभी भी किसी पेड़ के नीचे नहीं छुपना चाहिए, यह आकाशीय बिजली के सबसे आसान शिकार होते हैं।

तूफान की टाइमिंग - तूफान कितनी दूर है, यह पता करना कोई मुश्किल बात नहीं। इसके लिए तुम्हें बिजली की कड़क और बादल की गरज के बीच सेकेण्डस् का अंतर गिनना होगा। इस गिनती में हर तीन सेकेण्ड का मतलब है एक किलोमीटर। मतलब यह कि अगर तुम कड़क और गरज के बीच नौ सेकेण्ड का अंतर पाते हो तो तूफान तुमसे तीन किलोमीटर दूर है। अगर कड़क और गरज की अगली गिनती में सेकेण्ड्स बढ़ते हैं तो तूफान दूर जा रहा है और कम होते हैं तो इसका मतलब है कि यह तुम्हारे और नजदीक आ पहुंचा है।

जाको राखे साइयां - बहुत मुश्किल है कि आकाश से गिरी बिजली का झटका कोई झेल जाए, लेकिन अमेरिका के एक इंसान पर सात बार बिजली गिरने का विश्व रिकॉर्ड यह अद्‌भुत इंसान हैं राय सी. सुलीवेन और हद तो यह है कि इस बिजली की चपेट में आकार भी उनके साथ सिर्फ या हुआ कि दो बार सिर के सब बाल उड़ गए, दो बार पलकें और एक बार पैर के अंगुठे का नाखून।

एवरेस्ट से ऊंचा - कई बार तूफानी बादल आसमान में १६ किलोमीटर तक ऊंचा टॉवर बना लेते हैं। यह माउंट एवरेस्ट की ऊंचाई से लगभग दोगुना होता है।

रफ्तार का खेल - आसमान में बिजली गरजने की घटना साथ-साथ होती है, लेकिन जमीन पर हमें पहले बिजली की कौंध दिखती है और कुछ सेकेण्ड बाद सुनाई देती है बादल की गरज। ऐसा बस इसलिए है क्योंकि प्रकाश की गति ध्वनि की गति से तेज होती है।

✲ राजधानियां - ✲ रियो डे जेनेरियो पुर्तगाल की राजधानी थी- एक समय पर रियो डे जेनेरियो पुर्तगाल की राजधानी हुआ करती थी। उस समय यह अकेली ऐसी यूरोपियन राजधानी थी जो यूरोप से बाहर थी।

✲ बहरीन की राजधानी मनामा है।

✲ त्रिपोली लीबिया देश की राजधानी है।

✲ रीगा यह लातविया की राजधानी हैं।

✲ पोर्ट ऑफ प्रिंस-हैती देश की राजधानी है।

✲ कोहिमा- नागालैंड की राजधानी है।

✲ छत्तीसगढ़ राज्य की राजधानी रायपुर है।

✲ अरुणाचल प्रदेश की राजधानी ईटानगर है।

✲ दुनिया की सबसे ऊंची राजधानियां

ला पाज, बोलीविया - ११९४२ फीट की ऊंचाई पर स्थित, ला पाज दुनिया का सबसे बड़ा राजधानी शहर है। यह दुनिया के सबसे लोकप्रिय यात्रा गंतव्यों में से भी एक है, लेकिन सबसे बड़ी चुनौती यह है कि बोलीविया की राजधानी के तापमान में बहुत ज्यादा अंतर रहता है। हालांकि इस शहर में बहुत सी ऐसी खासियतें हैं जो कि यहां के जीवंत रंगों की

ओर यात्रियों को आकर्षित करती हैं।

क्विटो, इक्वाडोर - ९३५० फीट की ऊंचाई पर स्थित इक्वाडोर का क्विटो शहर दुनिया की दूसरे सबसे ऊंची राजधानी शहर के तौर पर पहचाना जाता है। यह यात्रियों का पसंदीदा शहर है क्योंकि यह ऐसी जगहें हैं जहां ऐतिहासिक क्वार्टर, खूबसूरत बगीचे, दुकानें, कैफे, रेस्तरां और बहुत सारे पर्यटक आकर्षण केंद्र हैं।

थिम्पू भूटान - जब दुनिया की ऊंचाई पर बसे राजधानी शहरों के बारे में चर्चा होती है, तो यह असंभव है कि कोई पड़ोसी देश भूटान की राजधानी थिम्पू को याद न करे। दुनिया के सभी हिस्सों के यात्रियों के बीच यह बेहद लोकप्रिय गंतव्य है। यह शहर समुद्र तल से ८६८८ फीट की ऊंचाई पर स्थित है। यह दुनिया में तीसरा सबसे बड़ा राजधानी शहर है जो यात्रियों को आकर्षित करता है। यह सुंदर पहाड़ों और उनकी प्राकृतिक सुंदरता, अपने ऐतिहासिक बौद्ध मठों, कैफे, नाइटक्लबों आदि की वजह से वैश्विक आकर्षण माना जाता है।

बोगोटा, कोलंबिया - ८६१२ फीट की ऊंचाई पर स्थित, बोगोटा दुनिया का चौथा सबसे ऊंचा राजधानी शहर है। इसके अलावा यह साओ पाउलो ब्राजील और पेरू में लीमा के बाद दक्षिण अमेरिका का तीसरा सबसे बड़ा शहर भी है। यात्रियों के घूमने के लिए बोगोटा भी वास्तव में सबसे सुंदर स्थानों में से एक है। यह घाटी में पहाड़ों के बीच स्थित है। इसके अलावा यह कला, डिजाइन और नाइटलाइफ का प्रमुख शहरी केंद्र होने के चलते एक पर्यटक आकर्षण में बदल गया है।

अदीस अबाबा, इथियोपिया - ७७२६ फीट की ऊंचाई पर स्थित अदीस अबाबा दुनिया का पांचवां सबसे ऊंचा राजधानी वाला शहर है और अफ्रीका का सबसे बड़ा राजधानी शहर भी है। यह यात्रियों को कुछ बेहतरीन कारणों से रिझाता है, इसमे इथियोपियाई भोजन और संस्कृति की समृद्धता भी शामिल है। यहां उत्कृष्ट बाजार भी है जो लोगों को आकर्षित करते हैं। यहां पूरे साल सुखद मौसम रहता है, इसलिए यह हर समय एक यात्री के लिए अनुकूल बना रहता है।

❊ मणिपुर की राजधानी इम्फाल में ८०० साल पुराना इमा कैथल मार्केट है जहां पर सिर्फ महिलाएं व्यापार कर सकती है। इस बाजार को चलाने में महिलाओं की प्रधानता रही है। यहां पर किसी भी पुरुष को दुकान चलाने की अनुमति नहीं है। पुरुष चाहे तो यहां से खरीददारी कर सकते हैं। इम्फाल पारम्परिक, सांस्कृतिक और खेल कूद के लिए जाना जाता है। यह बाजार मदर्स मार्केट व नोपि कैथल के नाम से जाना जाता है। परिवार चलाने के लिए महिलाओं ने खुद को खेती, हस्तशिल्प उत्पादन और अन्य व्यापार करके इस बाजार को चलाया। इसके पीछे उद्देश्य महिलाओं की सशक्तिकरण मिसाल है जो कि दुनियाभर की महिलाओं के लिए सशक्तिकरण का उदाहरण बना। यह बाजार साड़ेतीन किलोमीटर की दायरे में बना हुआ है।

❊ मापुतो मोजाम्बीक देश की राजधानी है।

❊ **सड़क -** राष्ट्रीय महामार्गों की कुल लंबाई ६५,६६९ किमी है।

❊ दुनिया की सबसे लंबी स्ट्रीट, कनाडा की यांग स्ट्रीट है, जिसकी लंबाई १८९६ किलोमीटर है।

❊ खतरनाक सड़क जहां पल-पल मंडराती है मौत- चिली और अर्जेंटीना को जोड़नेवाला यह हाईवे लास काराकोल्स पास के नाम से जाना जाता है। पहाड़ों के बीच सुंदर घुमावदार रास्ते होने के कारण इसे हेयर पिन बैंडस् हाईवे कहा जाता है। १० हजार ४१९ फीट की ऊंचाई पर बना यह हाईवे बर्फबारी के कारण करीब ६ महीने बंद रहता है। २५ किमी लंबे रास्ते में कहीं सुरक्षा फेन्सिंग नहीं है। इसके विकल्प के तौर पर सुरंगें हैं, लेकिन वे बर्फबारी के कारण बंद रहती हैं। हालांकि

चिली और अर्जेंटिना करीब ८००० किमी लंबा बॉर्डर साझा करता है। ज्यादातर सड़कें एन्डिज पर्वत श्रृंखला के ऊपर ही हैं। दोनों देशों के बीच ४० जगह पर क्रॉसिंग बनाई गई है। लेकिन लास काराकोल्स को सबसे अमेजिंग सड़क कहा जाता है। इसे दुनिया की सबसे खतरनाक सड़कों में से एक भी बताया गया है।

❋ फ्रांस में एक सड़क ऐसी है, जो दिन में सिर्फ दो घंटे ही नजर आती है। दिन के बाकी समय वह समुद्र के पानी में डूबी रहती है। समुद्र के अंदर बनी यह सड़क फ्रांस के मुख्य भू-भाग को अटलांटिक तट पर स्थित नाइरमौटीयर नामक आइलैंड से जोड़ने के लिए बनी है। केवल पांच किलोमीटर लंबी यह सड़क पैसेज डू गोइस के नाम से जानी जाती है। इस सड़क को पार करना बहुत मुश्किल होता है, क्योंकि दो घंटे खुलने के बाद ही ज्वार के कारण सड़क पर पानी का स्तर बढ़ना शुरू हो जाता है और पानी की गहराई चार मीटर तक हो जाती है।

❋ हिरोशिमा का ६० किमी लंबा अनोखा साइकिल रूट, एडवेंचर के लिए है मशहूर

जापान के हिरोशिमा शहर को अब तक परमाणु हमले के लिए ही याद किया जाता है। यहां एक जगह ऐसी भी है, जिसकी विश्व में अलग पहचान है। नाम है शिमानामी काइदो बाइक रुट। यह दिखने में किसी एक्सप्रेसवे की तरह है, लेकिन यह केवल साइकिल चालकों के लिए है। यहां अक्सर वे लोग आते हैं, जिन्हें प्रदूषण रहित वातावरण और प्रकृति के करीब रहना अच्छा लगता है। ६० किमी लंबे रोड एवं ब्रिज नेटवर्क में बना यह रूट देश के मुख्य द्वीप होन्शु को चौथे बड़े द्वीप शिकोकु से जोड़ता है। पूरी लेन साइकिल चालक और पैदल चलनेवालों के लिए है। यहां से गुजरकर आप समुद्र की ऊंची उठती लहरों और सीतो इनलैंड सी नेशनल पार्क का नजारा भी देख सकते हैं।

साइकिल चलाने के दौरान आप कहीं भी रुककर स्वतंत्र होकर खूबसूरत स्थलों की फोटोग्राफी कर सकते हैं। साथ ही लाइटहाउस, मंदिर और प्राकृतिक आश्चर्यों का लुत्फ भी उठा सकते हैं। इसके लिए आपको पूरे मार्ग पर कहीं भी कैम्प लगाकर रात गुजारने की भी आजादी मिलती है। पूरे मार्ग पर जगह-जगह टर्मिनल बने हैं, जहां बैटरी चलित साइकिल हायर की जा सकती है।

❋ दुनिया की सबसे नीची सड़क समुद्र की सतह से ३९३ मीटर नीचे है। यह मृत सागर के इसराइली तट पर है।

❋ दुनिया की सबसे ऊंची सड़क पगडंडी तिब्बत में है। यह १३ किलोमीटर लंबी है। दो स्थानों पर तो उसकी ऊंचाई ६०८० मीटर तक पहुंच जाती है।

❋ **राष्ट्रीय उद्यान -** जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान, उत्तराखंड- जिम कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान को लुप्तप्राय: बंगाल बाघ की रक्षा के लिए बनाया गया था, यह भारत का सबसे पहला और बहुत ही प्रसिद्ध बाघ क्षेत्र है। अब पर्यटकों और वन्यजीवन प्रेमियों के लिए सबसे अच्छी जगह है।

❋ ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान, हिमाचल प्रदेश- ग्रेट हिमालयी राष्ट्रीय उद्यान हिमाचल प्रदेश के कुल्लू जिले में है। १९८४ में बनाए गए इस पार्क को १९९९ में राष्ट्रीय पार्क घोषित किया गया था। यह पार्क अपनी जैव विविधता के लिए प्रसिद्ध है। इसमें २५ से अधिक प्रकार के वन, ८०० प्रकार के पौधे और १८० से अधिक पक्षी प्रजातियों का वास है। हिमालय के भूरे भालू के क्षेत्र वाला यह नेशनल पार्क कुल्लू जिले में ६२० वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला है। यहाँ पश्चिमी हिमालय की अनेक महत्वपूर्ण वन्य प्रजातियां पाई जाती है जैसे मस्क डीयर, ब्राउन बीयर, गोराल, थार, चीता, बरफानी

चीता, भराल, सीरो, मोनल, कलिज, कोकलास, चीयर, ट्रागोपान, बरफानी कौआ आदि।

❋ देश में ४११ वन्य जीव उद्यान हैं।

❋ सबसे बड़ा एम्यूजमेंट पार्क- आरलेंडो (फ्लोरिडा) स्थित डिज्नीलैंड विश्व का सबसे बड़ा एम्यूजमेंट पार्क है। यह पार्क तीस हजार एकड़ में बसा है। १ अक्टूबर, १९७१ को इसे पर्यटकों के लिए खोला गया। इस डिज्नीलैंड को बनाने में लगभग चार मिलियन डॉलर राशि खर्च हुई।

❋ बिलाइज एकमात्र देश है जहां जैगुआर के लिए प्राणी उद्यान है।

❋ काजीरंगा नेशनल पार्क- साल १९०५ में ब्रिटिश वायसराय लार्ड कर्जन की पत्नी के कहने के बाद इसे बनाया गया। काजीरंगा नेशनल पार्क असम की एक बहुत ही बड़ी वाइल्ड लाइफ सैंक्चुअरी है। यह खास तौर पर दरियाई घोड़ों के लिए जाना जाता है। इसके अलावा यह टाइगर, हाथी, सांभर, हिरन, भैंस, भालुओं सहित और भी कई प्रकार के पक्षियों के लिए भी फेमस है।

असम का ये नेशनल पार्क ब्रह्मपुत्र नदी के काफी करीब है। मिकिर के पहाड़ों का नजारा भी इस नेशनल पार्क से आसानी से देखा जा सकता है। पक्षियों की लगभग १०० प्रकार की प्रजातियों को इस नेशनल पार्क में देखा जा सकता है। साथ ही यहां पाइथन, कोबरा और किंग कोबरा को देखने का अपना एक अलग ही रोमांच है।

❋ कैम्पबॅल बे राष्ट्रीय उद्यान- अंदमान-निकोबार आइलैंड में यह जंगल ४२६ वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है। यह जंगल बहुत घना है और यहां पर बहुत से जंगली जानवर हैं, जिनकी दुर्लभ प्रजातियां कुदरत के बेहद करीब रह रही हैं।

❋ इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान- इंद्रावती राष्ट्रीय उद्यान छत्तीसगढ़ के दंतेवाडा जिले में इंद्रावती नदी के किनारे स्थित है। यह बहुत ही घना और जंगली जानवरों से भरा हुआ इलाका है। यहां पर जंगली जानवरों की दुर्लभ आबादी रहती है।

❋ ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान- ग्रेट हिमालयन राष्ट्रीय उद्यान हिमाचल प्रदेश के कुल्लू में स्थित है। कुल्लू और मनाली में कुदरती रूप से बने हुए इस उद्यान को नेशनल पार्क का दर्जा दिया जा चुका है।

❋ गिर वन्यजीव अभयारण्य- भारत के गुजरात राज्य में स्थित गिर वन्यजीव अभयारण्य १४२४ वर्ग कि.मी. में बसा हुआ है। यहां पर शेर, सांभर, सूअर के अलावा और भी जंगली जानवर पर पाए जाते हैं।

❋ ३ नेशनल पार्कों को जोड़कर बना सूरीनाम रिजर्व

यूनेस्को ने दुनिया की जिन जगहों को विश्व धरोहर की लिस्ट में शामिल किया है, उनमें एक खास जगह है, दक्षिण अमेरिका के सूरीनाम में स्थित नेशनल पार्क सीएसएनआर यानी सेंट्रल सूरीनाम नेचर रिजर्व, जिसे तीन नेशनल पार्कों को मिलकर बनाया गया है।

सूरीनाम में स्थित सेंट्रल सूरीनाम नेचर रिजर्व (सीएसएनआर) का यह नाम इसलिए पड़ा, क्योंकि यह सूरीनाम के बीचों बीच बना हुआ है। पर्यावरण की सुरक्षा के लिए काम करनेवाले गैर-सरकारी संगठन कन्जर्वेशन इंटरनेनशल और सूरीनाम सरकार ने मिलकर इस नेचर रिजर्व को बनवाया है।

यह नेचर रिजर्व सूरी नाम के मध्य में स्थित टॉफेलबर्ग नेचर रिजर्व, उत्तरी सूरीनाम में स्थित रेलीवैलेन एन वोन्ट्जबर्ग नेचर रिजर्व और दक्षिणी सूरीनाम में स्थित एलटर्स डे हां नेचर पार्क को मिलाकर तैयार किया गया।

सेंट्रल सूरीनाम नेजर रिजर्व १६ हजार वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला है। इनमें सबसे बड़ा क्षेत्र एलट्र्ड डे हा नेचर पार्क का है। क्षेत्रफल के हिसाब से दूसरे नम्बर पर टॉफेलबर्ग नेचर रिजर्व आता है। साल १९९८ में इन तीनों पार्कों को जोड़ दिया गया था, जिससे इन जंगलों में रहनेवाले जानवरों का घर भी काफी बड़ा हो गया।

पर्यावरण के संतुलन को बनाए रखने में फायदेमंद होने की वजह से इस रेन फॉरेस्ट को यूनेस्को ने साल २००० में प्रमुख विश्व धरोहरों की सूची में शामिल कर लिया था।

सूरीनाम दक्षिण अमेरिका का सबसे छोटा देश है, जिसका क्षेत्रफल लगभग एक लाख ६५ हजार वर्ग किलोमीटर है। एक जनवरी २०१६ के अनुसार यहां की आबादी लगभग साढ़े पांच लाख है। इस नेचर रिसर्च का क्षेत्रफल इस देश के क्षेत्रफल का लगभग ११ प्रतिशत है।

सूरीनाम के कुल क्षेत्रफल का ८० प्रतिशत हिस्सा वर्षा वनों से घिरा है और सूरीनाम के लगभग १६ प्रतिशत हिस्से में नेचर रिजर्व और झीलें हैं।

❊ राज्य, प्रांत - मेघालय - भारत के मेघालय राज्य की गुफाओं में मिले स्टलैग्माइट के आधार पर मेघालयन काल घोषित किया।

भारत के मेघालय राज्य की गुफाओं में मिले स्टलैग्माइट (गुफा की छत से नीचे की तरफ बने चूने के खंभों) के आधार पर बीते ४२०० वर्षों को मेघालयन काल घोषित किया गया है। होलोसीन के शुरुआती चरण को ग्रीनलैंडियन और मध्य चरण को नार्थग्रीपियन कहा जाएगा। मध्य चरण ८३०० वर्ष पूर्व से मेघालयन काल से पहले की अवधि है। इसकी शुरुआत पृथ्वी के अचानक ठंडे होने से हुई थी।

❊ भारत के मेघालय राज्य को पूर्व का स्कॉटलैंड कहा जाता है।

❊ मेघालय के चेरापूंजी के निकटस्थ पर्वतों में ग्रामीण फाइकस इलास्टिका पेड़ों की जीवित जड़ों से पुल बनाते हैं।

❊ मेघालय है मेघों का घर- दुनियाभर में मेघालय में स्थित चेरापूंजी और मॉसिनराम में सबसे ज्यादा बारिश होती है। चेरापूंजी में औसतन ११४३० मिलीमीटर, तो मॉसिनराम में इससे भी अधिक ११८७३ मिलीमीटर बारिश हर साल होती है। बंगाल की खाड़ी से तेज हवाएं यहां आकर खासी हिल से टकराती हैं, जिससे मानसून का मौसम बनता है।

❊ **राजस्थान** के पहाड़ी दुर्ग- राजस्थान के छह पहाड़ी दुर्ग यूनेस्को के विश्व धरोहर में शामिल हैं। इनमें चित्तौड़गढ़ दुर्ग, कुम्भलगढ़ दुर्ग, सवाई माधोपुर का रणथंभोर दुर्ग, झालावाड़ का गागरौन दुर्ग, जयपुर का आमेर दुर्ग, जैसलमेर दुर्ग शामिल हैं। ये दुर्ग ८वीं से १८ वीं शताब्दी तक चले राजपूत शासन का प्रतीक है।

❊ रणथम्भौर अभयारण्य राजस्थान राज्य में है।

❊ राजस्थान के जोधपुर शहर का छीतर पैलेस दुनिया का सबसे बड़ा महल है। इसकी ऊंचाई १६० फीट है। इस महल में १०० कमरे हैं। इस महल के लान पर एक ही समय १०,००० लोग बैठ सकते हैं।

❊ बयाना शहर का प्राचीन नाम श्रीपंथ था।

❊ भारत के राजस्थान राज्य में सबसे अधिक जिप्सम पाया जाता है।

❊ राजस्थान के जोधपुर शहर को सन सिटी के नाम से जाना जाता है। राज्यसभा में राष्ट्रपति १२ सदस्यों को

मनोनीत करते हैं।

✻ फतेह सागर तथा स्वरूप सागर राजस्थानी शहर उदयपुर में है।

✻ राजस्थान -मांगलगढ़ के पास बनास, बेडच और मेनाल यह तीन नदियाँ त्रिवेणी संगम बनाती है। बीसलपुर बांध बनास नदी पर है। कर्क रेखा को दो बार पार करनेवाली नदी माही नदी है। राजस्थान में खारे पानी की झील में सागर के अवशेष टेथिस सागर। पश्चिमी रेगिस्तान की सबसे लम्बे नदी बनास नदी है। विश्व की सबसे प्राचीन वलित पर्वतमाला विन्ध्य पर्वतमाला है। अरावली की सबसे ऊंची चोटी गुरुशिखर। राजस्थान में अरावली उत्तर पूर्व में झुंझुनू जिले में प्रवेश करती है। राजस्थान का आर्द्रतम जिला झालावाड़ है। राजस्थान में चलनेवाली शुष्क और धूलभरी हवाएं लू कहलाती हैं।

✻ राजस्थान में सर्वाधिक राष्ट्रीय राजमार्ग अजमेर (पांच) जिले से निकलते हैं।

✻ खनिजों का अजायबघर राजस्थान राज्य को कहा जाता है।

✻ राजस्थान- राजस्थान भारत का एक प्रांत है। यहां की राजधानी जयपुर है। राजस्थान भारत गणराज्य का क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ा राज्य है। भौगोलिक विशेषताओं में पश्चिम में थार मरुस्थल और घग्गर नदी का अंतिम छोर है। विश्व की पुरातन श्रेणियों में प्रमुख अरावली श्रेणी राजस्थान की एक मात्र पर्वत श्रेणी है, जो कि पर्यटन का केंद्र है, माउंट आबू और विश्वविख्यात दिलवाड़ा मंदिर सम्मिलित करती है। पूर्वी राजस्थान में दो बाघ अभयारण्य, रणथम्भौर एवं सरिस्का हैं और भरतपुर के समीप केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान है, जो सुदूर साइबेरिया से आनेवाले सारसों और बड़ी संख्या में स्थानीय प्रजाति के अनेकानेक पक्षियों के संरक्षित-आवास के रूप में विकसित किया गया है।

माही बजाज सागर परियोजना का फैलाव राजस्थान तथा मध्य प्रदेश क्षेत्र में है। गैव सागर डूंगररपुर स्थित है। पूर्णत: राजस्थान में बहनेवाली सबसे लम्बी नदी बनास है। राजस्थान की बारहमासी नदियाँ चम्बल और माही है। बनास नदी का उद्‌गम स्थल खमनोर (राजसमन्द) है। भारत की एकमात्र अन्तर्वाही नदी लूनी नदी है। हिमालय पर्वत की नदियों की विशेषता वर्षभर बहती हैं। दक्षिणी राजस्थान की स्वर्ण रेखा माही नदी को कहा जाता है। घड़ियालों की शरण स्थली चम्बल को कहा जाता है। सबसे अधिक नदियां कोटा संभाग में पाई जाती है।

✻ राजस्थान का सबसे शुष्क स्थान फलोदी है।

✻ राजस्थान में डूगरपुर और बांसवाड़ा को पृथक करनेवाली नदी माही नदी है।

✻ राजस्थान में बांध बरेठा बांध भरतपुर में स्थित है।

✻ चूलिया प्रपात चम्बल नदी पर स्थित है।

✻ लूनी नदी का उद्‌गम स्थल आना सागर है।

✻ राजस्थान में उदयपुर जिले में सबसे ज्यादा वन पाए जाते हैं।

✻ रेगिस्तान वनरोपण और भू संरक्षण केंद्र जोधपुर में स्थित है।

✻ खनन क्षेत्र में होनेवाली आय की दृष्टि से राजस्थान का देश में आठवां स्थान है।

✻ राजस्थान में मेगनीज का सबसे बड़ा उत्पादक जिला बांसवाड़ा है।

✻ देश की एकमात्र टंगस्टन की खान राज्य में नागौर स्थित है।

❊ रणथम्भौर- राजस्थान की ऊंची पहाड़ी पर स्थित रणथम्भौर बेहद घना है। यह समुद्र तल से ४०१ मीटर की ऊंचाई पर बना हुआ है। यहां पर तेंदुआ, हिरण, चीतल, नीलगाय, जंगली सूअर के अलावा बहुत से जानवर और पक्षी देखने को मिलते हैं।

❊ **गुजरात -** चंपानेर- पावागढ़ पुरातत्व उद्यान, गुजरात- चंपानेर-पावागढ़ पुरातत्व उद्यान, भारत के गुजरात राज्य के पंचमहल जिले में स्थित हे। यह उद्यान ऐतिहासिक शहर चंपानेर (गुजरात के सुल्तान महमूद बेगदा द्वारा बनाया गया शहर) के पास है। पावागढ़ की पहाड़ी लाल-पीले रंग के चट्टानों से बनी है जो भारत के सबसे पुराने चट्टानों में से एक है। गुजरात के सोलंकी राजाओं और फिर खिची चौहानों के शासनकाल में पावागढ़ की पहाड़ी हिन्दुओं के लिए प्रसिद्ध किला था। सभी मंदिर नागर शैली में बने हैं। इनमें गर्भगृह, मंडप और प्रवेश द्वार है। चंपानेर के ऐतिहासिक स्मारकों में दुर्ग की श्रृंखला है।

पावागढ़ पार्क- चंपानेर-पावागड़ ऑर्कियो लॉजिकल पार्क गुजरात के पंचमहल जिले के सुल्तान महमूद बेगड़ा ने बसाया था। यहां ८वीं से लेकर १४वीं सदी के कुएं व बावड़ियां हैं। पावागढ़ हिल पर कालिका माता का मंदिर है। यहां हिंदू और मुसलमान दोनों संस्कृतियों की धरोहरें हैं।

❊ गांधीनगर- गांधीनगर भारत के गुजरात प्रांत की राजधानी है। यह भारत का दूसरा ऐसा शहर है जिसे पूरी तरह आयोजन से बसाया गया है। इसे हरित नगर कहा जाता है। सचिवालय और मंत्रियों के निवास भी यहां पर हैं। महात्मा गांधी की याद में इस शहर का नाम गांधीनगर रखा गया है।

❊ अहमदाबाद- अहमदाबाद गुजरात प्रदेश का सबसे बड़ा शहर है। भारतवर्ष में यह नगर का सातवें स्थान पर है। इक्कयावन लाख की जनसंख्या वाला ये शहर, साबरमती नदी के किनारे बसा हुआ है। १९७० में गांधीनगर में राजधानी स्थानांतरित होने से पहले अहमदाबाद ही गुजरात की राजधानी हुआ करता था।

❊ भारत के गुजरात के राज्य में देश का एकमात्र, अभयारण्य स्थित है।

❊ **गोवा -** चर्चेज एंड कॉन्वेंटस ऑफ गोवा- यूनेस्को द्वारा गोवा वेल्हा (पुराना गोवा) में स्थित धार्मिक स्मारकों के एक समूह को चर्चेज एंड कॉन्वेंटस ऑफ गोवा का नाम दिया गया है। इसे १९८६ में विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया था। गोवा पुर्तगाली भारत और एशिया की राजधानी थी और सोलहवीं शताब्दी से एक सुसमाचार केंद्र था।

❊ गोवा में (पणजी तथा वास्को डी गामा); इस भारतीय राज्य में सिर्फ दो ही जिले हैं।

❊ **भूटान** देश में कोई भी सिनेमा घर नहीं है।

❊ **सिक्कीम -** दुनिया का ऊंचा पर्वत शिखर- दुनिया का तीसरा सबसे ऊंचा पर्वतशिखर कंचनजंगा यहीं है और यहां के स्थानीय लोग अपने रक्षक देवता के रूप में ८५३४ मीटर ऊंचे इस शिखर की पूजा करते हैं। ऊंचे पर्वतशिखरों, हरी-भरी घाटियों तेजधार नदियों और खूबसूरत पहाड़ों से भरा यह राज्य प्राकृतिक सौंदर्य के दीवाने सैलानियों के लिए अपने आप में अनूझा है।

❊ सिक्किम में विभिन्न पर्वतीय स्थलों के लिए ट्रेकिंग के कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जाता है। इसके लिए जरूरी चीजें आपको सिक्किम के पर्यटन विभाग या मान्यता प्राप्त एजेंटों से किराए पर भी मिल सकती है। यहां समुद्रतल

से ६००० फुट से लेकर १४००० तक की ऊंचाई वाले स्थलों के लिए ट्रेकिंग के आयोजन किए जाते हैं।

❋ यहां आनेवाले लोग एक छोटे से गांव लाचुंग में ठहरते हैं। प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से यह गांव भी अनूठा है। लाचुंग के रास्ते पर ही एक जगह है सिंहिक, जो कंचनजंगा की अप्रतिम झलक पाने के लिए सर्वोत्तम समझा जाता है।

❋ मुख्य रूप से प्राकृतिक सौंदर्य के लिए मशहूर सिक्किम में ऐतिहासिक धरोहरें और धार्मिक दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थल भी खूब हैं। पर्वतारोहण और वाटर राफ्टिंग जैसे रोमांच के शौकीन लोगों के लिए यहां तमाम सुविधाएं हैं। इसके महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों में एक है कवि लुंग्त्सोक, जो गंगटोक से उत्तरी सिक्किम राजमार्ग पर १७ किलोमीटर दूर है।

❋ सिक्किम के उत्तरी जिले में स्थित यह वन्य जीव अभ्यारण्य ८५० वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला है और यहां तमाम दुर्लभ प्रजातियों के जंतु स्वच्छंद विचरते हैं। इसके क्षेत्र में कई ग्लेशियर भी हैं, जिनमें जेमू ग्लेशियर सबसे लंबा और नयनाभिराम है।

❋ **असम -** अबोर, अका और दाफला कोल फील्ड भारत के असम राज्य में स्थित है।

❋ असम का पुराना नाम कामरूप था।

❋ **उत्तर प्रदेश -** २००१ की जनसंख्यानुसार भारत का सबसे बड़ा राज्य उत्तरप्रदेश है जहां १६६०५२८५९ की आबादी है। दूसरे स्थान पर ९६७५२२४७ के साथ महाराष्ट्र है।

❋ भारत के उत्तर प्रदेश में देश का सबसे अधिक गन्ना होता है।

❋ अतरंजीखेड़ा उत्तर प्रदेश के एटा जिलांतर्गत गंगा की सहायक काली नदी के तट पर स्थित एक प्रागैतिहासिक स्थल है। इस स्थल की खोज १९६१-१९६२ ई. मे एलेक्जेण्डरा कर्निघम ने की थी।

❋ २०११ की जनगणना के अनुसार सर्वाधिक जनसंख्या वाला राज्य उत्तर प्रदेश है।

❋ **आंध्र प्रदेश -** हैदराबाद मूसा नदी के पास बसा है।

❋ **तेलंगाना -** भारत में बना नया राज्य तेलंगाना देश का २९ वां राज्य है। इसमें १७ लोकसभा सीटें और १० जिले हैं।

❋ सिकंदराबाद हैदराबाद का जुड़वां नगर है।

❋ **महाराष्ट्र -** एलिफेंटा भारत में मुम्बई के गेट वे आफ इण्डिया से लगभग १२ किलोमीटर दूर स्थित एक स्थल है जो अपनी गुफाओं में अंकित कलाकृतियों के कारण प्रसिद्ध है।

❋ **मध्यप्रदेश -** सतना- मध्य प्रदेश में मुंबई-हावड़ा रेल लाइन पर जबलपुर-इलाहाबाद के बीच स्थित सतना तत्कालीन विन्ध्य प्रदेश का प्रदेश-द्वार कहा जाता था, अर्थात रीवा, सीधी, पन्ना या छतरपुर आनेवाले लोग सतना स्टेशन पर उतरते थे। इसके अलावा प्रसिद्ध तीर्थ चित्रकूट और मैहर भी सतना जिले में स्थित हैं।

❋ बुरहानपुर- बुरहानपुर भारत के मध्य प्रदेश का एक प्रमुख शहर है। बुरहानपुर ताप्ती नदी के किनारे पर स्थित एक नगर है। यह खानदेश की राजधानी थी। इसको चौदहवीं शताब्दी में खानदेश के फारूकी वंश के सुल्तान मलिक अहमद के पुत्र नसीर द्वारा बसाया गया।

❋ सागर- सागर, मध्य प्रदेश का एक महत्वपूर्ण शहर है। सागर का इतिहास सन १६६० से आरंभ होता है, जब ऊदनशाह ने तालाब के किनारे स्थित वर्तमान किले के स्थान पर एक छोटे किले का निर्माण करवा कर उसके पास

परकोटा नाम का गांव बसाया था। निहालशाह के वंशज ऊदनशाह द्वारा बसाया गया वही छोटा सा गांव आज सागर के नाम से जाना जाता है।

❊ **अरुणाचल प्रदेश -** भारत के अरुणाचल प्रदेश राज्य में जनसंख्या घनत्व सबसे कम है।

❊ **कर्नाटक (कित्तुर प्रांत) -** डन्डेली अभ्यारण्य धारवाड़ (कर्नाटक) में है।

❊ चौदहवीं शताब्दी के दौरान मध्य कालीन भारत के महानतम साम्राज्यों में से एक, विजयनगर साम्राज्य की राजधानी, हम्पी कनार्टक राज्य के दक्षिण में स्थित है। हम्पी के चौदहवीं शताब्दी के भग्नावशेष यहां लगभग २६ वर्ग किलो मीटर के क्षेत्र में फैले पड़े हैं। इनमें विशालकाय स्तंभ और वनस्पति शामिल है। उत्तर में तुंगभद्रा नदी और अन्य तीन ओर पथरीले ग्रेनाइट के पहाड़ों से सुरक्षित ये भग्नावशेष मौन रहकर अपनी भव्यता, विशालता अद्‌भुत संपदा की कहानी कहते हैं।

महलों और टूटे हुए शहर के प्रवेश द्वार की गरिमा मनुष्य की असीमित प्रतिभा तथा रचनात्मक की शक्ति की कहानी कहती है, जो मिलकर संवेदनाहीन विनाश की क्षमता भी दर्शाती है। विजय नगर शहर के स्मारक विद्या नारायण संत के सम्मान में विद्या सागर के नाम से भी जाने जाते हैं, जिन्होंने इसे १३३६-१५७० ए.डी. के बीच हरीहर-१ से सदाशिव राय की अवधियों में निर्मित कराए। इस राजवंश के महानतम शासक कृष्ण देव राय (एडी १५०९-३०) द्वारा बड़ी संख्या में शाही इमारतें बनवाई गई।

इस अवधि में हिंदू धार्मिक कला- वास्तुकला को एक अप्रत्याशित पैमाने पर दोबारा उठते हुए देखा गया। हम्पी के मंदिरों को उनकी बड़ी विमाओं, फूलदार सजावट, स्पष्ट और कोमल पच्चीकारी, विशाल खम्भों, भव्य मंडपों और मूर्ति कला तथा पारंपरिक चित्र निरूपण के लिए जाना जाता है, जिसमें रामायण और महाभारत के विषय शामिल है। हम्पी में स्थित विट्ठल मंदिर विजय नगर शैली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। देवी लक्ष्मी, नरसिंह और गणेश की एक पत्थर से बनी मूर्तियां अपनी विशालता और भव्यता के लिए उल्लेखनीय है। यहां स्थित कृष्ण मंदिर, पट्टाभिराम मंदिर, हजारा राम चंद्र और चंद्र शेखर मंदिर भी यहां के जैन मंदिर हैं जो अन्य उदाहरण हैं। हम्पी के अधिकांश मंदिरों में कई स्तर वाले मंडपों के बगल में व्यापक रूप से फैले बाजार हैं।

धार्मिक प्रवेश द्वारा के बीच जनाना संलग्नक का उल्लेख भी आवश्यक है, जिसमें रानी के महल का विशालकाय पत्थरीला तहखाना और एक सजावटी मंडप कमल महल हैं जो यहां के ऐश्वर्य पूर्ण अंत:पुर की कहानी कहती हैं। ऊंची इमारतों के कोने वाले स्तंभ, धन नायक के संलग्नक खजाना) महा नवमी दिवा में सुंदर शिल्पकारी के पैनल, कई प्रकार के तालाब और पोखर, मंडप, हाथी का अस्तबल हैं, जो हम्पी के महत्वपूर्ण वास्तुकलात्मक अवशेष हैं हम्पी ने हाल में की गई खुदाई से बड़ी संख्या में संकुलों और अनेक मंचों के तहखाना को सामने लाया गया है। इसमें पाई गई रोचक जानकारियों में पत्थर की बनी हुई छवियां, टेराकोटा से बनी सुंदर वस्तुएं और स्टूको आकृतियां हम्पी के महल में बिखरी पड़ी हैं।

इसके अतिरिक्त सोने और तांबे के सिक्के घरेलू बर्तन, चौकोर सीढ़ियों वाले सरोवर महा नवमी दिबा के दक्षिण पश्चिम में हैं और साथ ही यहां सिरामिक की बड़ी संख्या पाई गई है। यहां दूसरी और तीसरी शताब्दी ए.डी. के पोर्सलेन से बने

विभिन्न प्रकार के बर्तन और बोध शिल्पकला के खुदाई के नमूने भी सामने आए।

❊ **उड़ीसा -** पाराद्वीप उड़ीसा राज्य में स्थित है।

❊ **पंजाब -** जलियां वाला बाग अमृतसर में स्थित है।

❊ **डैम, बांध, पुल (सेतु) -** वर्तमान में विश्व का सबसे लम्बा बांध अमेरिका में न्यू कॉर्नेलिया टेलिंग डैम है जिसकी क्षमता २०९५०० क्यूबिक मीटर हैं और वर्ष १९७३ में पूरा हुआ।

❊ पटना से हाजीपुर गंगा नदी पर महात्मा गांधी सेतु दुनिया का सबसे लम्बा एक ही नदी पर बना सड़क पुल है।

❊ ब्रिज के सहारे जा सकते हैं स्पेन के इस आइलैंड पर

दुनिया में कई ऐसे आइलैंड हैं, जो अपनी बनावट और सुंदरता के कारण लोगों को आकर्षित करते हैं। ऐसा ही एक आइलैंड गजटेलुगाटसे है। यह सुंदर द्वीप स्पेन के बास्क्यू कंट्री में स्थित बे ऑफ बिस्के से सटा हुआ है। यह द्वीप मानव निर्मित पुल द्वारा बे ऑफ बिस्के बीच से जुड़ा है, जो टूरिस्ट को अच्छा लगता है। लोग इस ब्रिज के सहारे आइलैंड पर जाते हैं और वहां के अद्भुत नजारे देखते हैं

इस आइलैंड का अपना ऐतिहासिक महत्व भी है। यहां पर जॉन बैपटिस्ट को समर्पित एक कुटिया है, जो ९वीं से १०वीं शताब्दी के बीच की है। ऐसा कहा जाता है कि यह आइलैंड मध्य युग में सबसे प्रभावशाली मठों में से एक था।

इस द्वीप पर कई बार आक्रमणकारियों ने हमला भी किया और इनकी सुंदरता को तहस-नहस करने की कोशिश की, लेकिन समय के साथ इसे फिर से सही कर दिया गया। १० नवंबर, १९७८ को यह द्वीप आग की चपेट में आ गया था, जिससे काफी नुकसान हुआ था। हालांकि, दो साल बाद ही इसे फिर से सही कर दिया गया। आइलैंड पर दुर्लभ तट के मनमोहक दृश्य, पानी के चट्टानों से टकराने की आवाज के साथ पक्षियों का झुंड दिखाई देता है, जो बहुत ही शानदार प्रतीत होता है।

युद्ध के लिहाज से यह काफी स्ट्रैटजिक स्थान था। यहां वर्ष १३३४ में लॉर्ड ऑफ बिस्के और जुआन नुनेज डी लारा ने कैसल के राजा अल्फांसो दख से युद्ध किया था।

१८ वीं सदी में यहां स्पेन के गृह युद्ध के दौरान इंग्लिश ट्रूप्स ने हमला किया था।

१५९३ में यहां फ्रांसिस ड्रैक ने हमला किया और उसकी सेनाओं ने यहां जमकर लूटपाट मचाई। साथ ही यहां क्लिफ के आश्रम को भी क्षति पहुंचाई और एक शताब्दी का भी नुकसान पहुंचाया।

❊ ये हैं दुनिया की सबसे खूबसूरत जगहें- नहीं हैं जन्नत से कम

दुनिया खूबसूरत जगहों से भरी पड़ी हैं। शायद हममें से कई लोगों को यकीन भी नहीं होगा कि दुनिया में इतनी खूबसूरत जगहें सच में हैं। अगर घूमने के शौकीन हैं तो यकीनन जिंदगी में एक बार इन जगहों की सैर जरूर करने जाएं। इन जगहों को देखने के बाद आपका मन भी इसी दुनिया में खो जाएगा।

मोरेन लेक, बैन्फ नेशनल पार्क, कनाडा- खूबसूरत वादियों के बीच स्थित ग्लैशियर से ढकी यह झील बेहद खूबसूरत है। शानदार लैंडस्केप के साथ यहां की वाइल्ड लाइफ एक अनोखा अनुभव देती है। यहां के रेस्टोरेंट भी बहुत लोकप्रिय हैं।

लेक टेकापो, न्यूजीलैंड - विराट कोहली और अनुष्का शर्मा लगातार न्यूजीलैंड से अपनी तस्वीरें पोस्ट करते हैं।

टेकापो झील अपने मिल्की-टक्वॉइज कलर की वजह से बेहद खास है। सूर्यास्त होते ही इस झील का नजारा अद्भुत हो जाता है। यहां पर रुककर आसमान में तारे देखना यादगार अनुभव होता है।

हवाना, क्यूबा- ऐतिहासिक बंदरगाह वाले इस देश में स्पैनिश आर्किटेक्चर हर पर्यटक को अपनी ओर खींच लेता है। वह देश प्राकृतिक सुंदरता से भी भरपूर है।

❋ १९२२ में पुरातत्व विज्ञानियों ने सिंधु नदी के किनारे पौराणिक शहर मोहनजोदाड़ो के अवशेष खोजे। बेहद समृद्ध सा दिखनेवाला ये शहर अचानक कैसे खत्म हुआ, वहां के सारे बाशिंदे कैसे मारे गए, इसका आज तक कोई जवाब नहीं मिला है। बार बार खुदाई होने के बाद भी मोहनजोदाडो रहस्य बना हुआ है।

❋ शिमला सन १८६४ से १९४१ तक भारत की ग्रीश्मकालीन राजधानी रहा है।

❋ हैमराफस्ट नार्वे इस नगर में दो महीने का दिन होता है।

❋ महान दरार घाटी (इथोपिया)- इथोपिया की महान दरार घाटी दुनिया की सबसे बड़ी दरार घाटी है। यह लाल सागर से ६००० किलोमीटर नीचे से लेकर मालावी झील से ७४ किलोमीटर ऊपर तक फैली है। इसके ढलान सबसे ऊंचे हैं, जिनकी ऊंचाई १.६ किलोमीटर से ज्यादा है।

❋ कुछ स्थानों के विशेष भौगोलिक नाम- ब्लू माउन्टेन- नीलगिरी, बंगाल का शोक- दामोदर नदी, बिहार का शोक- कोशी नदी, चीन का शोक- होआंग नदी, अट्टालिकाओं का शहर- न्यूयॉर्क, काला महादेश- अफ्रीका, विचित्र महादेश- आस्ट्रेलिया।

❋ सोमालिया की खोज इ.पू. २५०० में इजिप्त के लोगों ने की।

❋ भारत और चीन की बात छोड़ दें तो कहीं भी समाचार पत्रों ने इतनी तरक्की नहीं की।

❋ भारतीय मूल के सर्वाधिक लोग २९.०२ लाख म्यांमार (बर्मा) में हैं। इसके बाद अमेरिका में १६.७८ लाख।

❋ एशिया का क्षेत्रफल ४४ दशलक्ष वर्ग किमी है।

❋ विश्व में कुल २१२ देश हैं। इनमें से २६ ऐसे देश हैं जहां समुद्र अथवा समुद्र तट हैं ही नहीं।

❋ कनाडा एक भारतीय शब्द है जिसका अर्थ होता है बड़ा गांव।

❋ कनाडा स्थित हडसन खाड़ी विश्व की सबसे बड़ी खाड़ी है। यह १३०० मील लंबी और ५९० मील चौड़ी है।

❋ साल में २१ मार्च व २३ सितंबर को दिन-रात बराबर होते हैं। वही २१ जून को सबसे लंबा दिन व सबसे छोटी रात होती हैं वहीं २१ दिसंबर को सबसे छोटा दिन व लंबी रात होती है।

❋ आईसलैंड, एंटार्कटिका व ग्रीन लैंड पर एक भी चींटी नहीं है।

❋ रेतीले प्रदेश में रेत की टेकड़ी लगभग १२०० फीट ऊंची तक हो सकती है।

❋ विश्व के दो देश चीन व रूस हैं जिनकी सीमाएं सर्वाधिक देशों (१४-१४) को लगती हैं।

❋ चांद ३४७६ किमी. व्यास का है तो पृथ्वी १२७५६ किमी. व्यास की।

❋ भूमध्य रेखा की ओर बहनेवाली हवा हमेशा पश्चिम में मुड़ती है।

❋ मध्यकालीन इतिहास के अत्यंत संपन्न विजयनगर शहर में अब कोई नहीं रहता, यह नगर हम्पी खंडहरों के नाम से

प्रसिद्ध है।

✻ लीसोथो देश का कुल क्षेत्रफल ३०,३५५ स्केयर किलोमीटर है।

✻ कोई साढ़े छह करोड़ साल पहले ये माना जाता है कि चार से नौ मील व्यासवाला एक ऐस्टेरॉयड पृथ्वी पर आकर गिरा जिससे भयंकर आग लगी, ज्वालामुखी फट पड़े, समुद्री तूफान आए, मतलब व्यापक विनाश हुआ।

✻ विश्व की आधी जनसंख्या चीन, भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश और इंडोनेशिया में है।

✻ सैंडस्टोन चट्टानों में पेट्रोलियम पाया जाता है।

✻ पाक जल डमरूमध्य भारत और श्रीलंका दोनों को अलग करता है।

✻ तारे स्वयं टिमटिमाते नहीं हैं। वे हमें हवा में तापमान और हवा की घनता (घनत्व) की विभिन्नता के कारण टिमटिमाते हुए दिखाई देते हैं।

✻ ओजोन परत के छेद छोटा हुआ- २०१२ में देखा गया कि ओजोन परत पर बना एक छेद का आकार छोटा हो गया है। पिछले १० साल में इस होल के आकार में कमी पाई गई।

✻ विश्व का सबसे छोटा नोट (लंबाई १.४९ इंच, चौड़ाई १.०९ इंच) सन १९७१ ईस्वी तक शीशे के सिक्के चलते थे।

✻ जेट स्ट्रीम से मानसून प्रभावित - जेट स्ट्रीम या जेटधाराएं ऊपरी वायुमंडल में और विशेषकर समतापमंडल में तेज गति से प्रवाहित/बहने वाली हवाएं हैं। इनके प्रवाह की दिशा जलधाराओं की तरह ही निश्चित होती है, इसलिए इसे जेट स्ट्रीम का नाम दिया गया है। जेट स्ट्रीम धरातल से ऊपर यानी यानी ६ से १४ किमी की ऊंचाई पर लहरदार रूप में चलनेवाली एक वायुधारा है। इस वायुधारा का सम्बन्ध धरातल में चलनेवाली पवनों के साथ भी जोड़ा गया है। वैसे तो भारतीय जलवायु को प्रभावित करनेवाले अनेक कारक हैं, जैसे अक्षांशीय स्थिति और आकार, वायुदाब और पवन की समयानुसार बदलती प्रकृति, जल और स्थल का वितरण अथवा समुद्र से निकटता की दूरी। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय में ही जेट स्ट्रीम नामक एक वायुधारा की जानकारी मिली। इस वायुधारा की जानकारी दरअसल १९४५ ई. में इस जेट स्ट्रीम के साथ विश्व जलवायु के संबंधों को भी जोड़ा गया है। पूरे विश्व में जेट स्ट्रीम के चार प्रकार है। पर भारत के सन्दर्भ में यदि देखा जाए तो जेट स्ट्रीम दो प्रकार के होते हैं- पछुआ (पश्चिमी) जेट स्ट्रीम व पूर्वी जेट स्ट्रीम। पश्चिमी जेट स्ट्रीम व पूर्वी जेट स्ट्रीम। पश्चिमी जेट स्ट्रीम यह स्थाई जेट राष्ट्रीय है। यह सालों भर चलता है। इसके प्रवाह की दिशा पश्चिमोत्तर भारत से लेकर दक्षिण पूर्व भारत की ओर होती है। पश्चिमी जेट स्ट्रीम का सम्बन्ध सूखी, शांत और शुष्क हवाओं से है। यह शीतकाल की आंशिक वर्षा के लिए उत्तरदायी है। पूर्वी जेट स्ट्रीम-पश्चिमी जेट स्ट्रीम के ठीक विपरीत पूर्वी जेट स्ट्रीम की दिशा दक्षिण-पूर्व से लेकर पश्चिमोत्तर भारत की ओर है।

✻ यदि धरती के चारों ओर वायुमंडल न होता, तो आकाश हमें काला दिखाई देता।

✻ बर्फ और ओले-जब बादल का तापमान हिमांक से नीचे पहुंच जाता है तब वहां नन्हें-नन्हें हिमकण बनने लगते हैं। जब यह कण बादल से नीचे की ओर गिरते हैं तो वह एक दूसरे से टकराते हैं और एक दूसरे में जुड़ जाते हैं। इस प्रकार इनका आकार बड़ा होने लगता हैं। जितने ज्यादा हिमकण आपस में जुड़ते हैं। हिमकण का आकार उतना ही बड़ा होता जाता हैं। पृथ्वी पर वह छोटे-छोटे रुई के फाहों के रूप में झरने लगते हैं। इन्हें हिमपर्त कहते हैं। यह हिमपर्त

षटकोणीय होते हैं और कोई भी दो हिमपर्त्त आकार में एक से नहीं होते। हिमकण प्रकाश को प्रतिबिंबित करते हैं, इसलिए यह सफेद दिखाई देते हैं। अगर हवा का तापमान हिमांक से नीचे न हो तो यह हिमकण गिरते समय पिघल जाते हैं। केवल सर्दी होने से बर्फ नहीं गिरती है। इसके लिए हवा में पानी के कण होना जरूरी है। गिरी हुई बर्फ कहीं बहुत हल्की तो कहीं बहुत गहरी भी हो सकती है। क्योंकि, बर्फ हवा से उड़ती हुई-उधर जाती है और एक जगह पर इकट्ठा हो जाती है। गिरती हुई बर्फ हमेशा नर्म नहीं होती।

कभी-कभी यह छोटे-छोटे पत्थरों के रूप में भी गिरती है। इन पत्थरों को ओले कहते हैं। इनमें बर्फ की कई सतहें होती हैं। अभी तक सबसे बड़ा ओला १.२ किलो का पाया गया है। उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव पर बर्फ के पहाड़ हैं। इन पहाड़ों से बर्फ के बड़े-बड़े टुकड़े अलग होकर तैरते हुए आगे बढ़ते हैं। इन टुकड़ों को हिमशिला कहते हैं। बर्फ पानी पर इसलिए तैरती है क्योंकि वह पानी से हल्की होती है।

❋ आर्टेमिस का मंदिर- एशिया माइनर में स्माइना के दक्षिण में प्राचीन नगर इफेसिस जो अब समाप्त हो गया है में स्थित है। आटीमिसिया द्वारा बनाये गये प्रारूप पर इसका निर्माण ५वीं सदी ई. पू. लेनियन नगरवासियों द्वारा किया गया था।

❋ जियू (जुपीटर) का बुत- ओलंपिया की घाटी में मिस्र के दक्षिणी पेननिनसुला से २० किलोमीटर पश्चिम में इलस प्रांत में स्थापित किया गया था।

❋ रोह्डस कस्कोलोसस- यह यूनानी सुंगोड हेलियोज का तांबे का बुत है जो ३० मी. ऊंचा है। इसे मेडिटेरनियन सागर के पूर्वी भाग में शेड्स द्वीप के पोर्ट ऑफ सिटी में लिड्स के चार्ल्स ने स्थापित किया था।

❋ अलेक्जेन्ड्रिआ के फराउज- मिस्र में अलेक्जेन्ड्रिआ के समुद्र तट के निकट फाराउन के द्वीप में श्वेत संगमरमर के प्रकाश स्तम्भ अथवा निगरानी हेतु निर्मित मीनार। सम्राट टॉलोमी फिथ्माडेल्फस द्वारा २६५ ई.पू. में निर्मित।

❋ बफर स्टेट दो शत्रु देशों के बीच स्थित कोई भी वह छोटा देश है, जिसके कारण उनके मध्य सीमा संघर्ष या हमला रुका रहता है।

❋ मैकमहोन लाइन क्या है - मैकमहोन लाइन भारत और तिब्बत के बीच सीमा रेखा है। १९१४ में भारत की तत्कालिन ब्रिटिश सरकार और तिब्बत के बीच शिमला समझौते के तहत यह सीमा रेखा तय की गयी थी। यह रेखा ८९० किलोमीटर लंबी है। इसके पश्चिमी ओर भूटान है और पूर्वी ओर ब्रह्मपुत्र नदी। यह मुख्यत: हिमालय के शिखर पर है। १९३७ में ओलफ केरो नामक एक अंग्रेज प्रशासनिक अधिकारी ने तत्कालीन अंग्रेज सरकार को इसे आधिकारिक तौर पर लागू करने का अनुरोध किया। १९३७ में सर्वे ऑफ इंडिया के एक मानचित्र में मैकमहोन रेखा को आधिकारिक भारतीय सीमारेखा के रूप में दिखाया गया था। इस सीमा रेखा का नाम सर हैनरी मैकमहोन के नाम पर रखा गया था, जिनकी इस समझौते में महत्वपूर्ण भूमिका थी। वे भारत की तत्कालीन अंग्रेज सरकार के विदेश सचिव थे।

❋ अर्जेंटिना के पैम्पास को अर्जेंटीना का हरा समुद्र कहा जाता है। वास्तव में यह कोई सागर न होकर एक अंतहीन हरे घास का मैदान है। इसकी शुरुआत एंडिज पर्वत श्रृंखला से होती है जो कि पूर्व में एटलांटिक महासागर तक फैली हुई है। दूर से देखने पर यह एक विशाल हरे समुद्र की भांति दिखता है। विश्व में ऐसा अनोखा सागर और कहीं देखने को नहीं मिलता है। इस विशाल हरे मैदान में नदियां बहुत कम तथा धीरे बहती हैं। नदियों का पानी प्राय: स्थिर ही रहता है। नदियों

के स्थिर पानी पर भी घास उग जाती है, जो कि ऊपर से देखने पर सपाट मैदान की भांति दिखलाई पड़ता है।

ग्रीष्मकाल में यह मैदान बड़ा ही मनोरम दिखलाई देता है। ग्रीष्मकाल में यहां कहीं-कहीं हल्की वर्षा भी होती है। वर्षा के दौरान यहां पर पैम्पास की खेती की जाती है। यहां के चरवाहों को काउ बॉय कहा जाता है जो कि बहुत मेहतनी तथा साहसी होते हैं। हर वर्ष लाखों पर्यटक अर्जेंटीना के इस अद्‌भुत हरे समुद्र को देखने आते हैं। यहां की काउ बॉय टोपियां विश्व प्रसिद्ध हैं। आज के दौर में पशु पालन के क्षेत्र में लगातार कठिनाइयां आ रही हैं, फिर भी जानवरों का मांस ही अर्जेंटीना का मुख्य आय का स्रोत है।

❋ सबसे बड़ी खाड़ी- मैक्सिको की खाड़ी विश्व की सबसे बड़ी खाड़ी है। इसकी तटीय रेखा १५००० किमी तथा क्षेत्रफल १५५,४४,००० कि.मी. है।

❋ सभी चट्टानें खनिज होती हैं परन्तु सभी खनिज चट्टानें नहीं होते यह सही है।

❋ विश्व का सबसे लम्बा रेलवे पूल लूसियाना में स्थित ह्यूई पी लागे रेलवे का पुल है।

❋ दिल्ली से मुंबई के बीच ही दूरी दिल्ली से अफगानिस्तान की राजधानी काबुल की दूरी से कई ज्यादा है। दिल्ली से मुंबई १४०० किलोमीटर दूर है जबकि दिल्ली से काबुल की दूर मात्र १००० किलोमीटर है।

❋ वायु मंडल में सर्वाधिक मात्रा में उपस्थित गैस है नाइट्रोजन।

❋ हैली पुच्छल तारा ७६ वर्ष बाद दिखता है।

❋ समुद्र के किनारे मिलनेवाले गोल पत्थर किसी बड़ी चट्टान का टुकड़ा होता है या फिर कोई बड़ी चट्टान होती है। तूफान और भूकम्प जैसी किसी बड़ी हलचल के कारण चट्टान टूट जाती है और उसका बड़ा हिस्सा बहते पानी के साथ चल निकलता है। पानी के साथ बहते हुए यह पत्थर का टुकड़ा लगातार गोल-गोल घूमता रहता है। इस दौरान इसकी असमतल सतह गोल हो जाती है। आज हम समुद्र के किनारे जो बड़ी चट्टानें देखते हैं, वे भी आनेवाले कई सालों बाद छोटे-छोटे पत्थर में तब्दील हो जाएंगी। कई चट्टानें तो बारीक होकर रेत में बदल जाती हैं।

❋ अगर धरती का आकार एक मटर जितना कर दें तो बृहस्पति इससे ३०० मीटर दूर होगा और प्लूटो २.५ किलोमीटर। मगर प्लूटो आपको दिखेगा नहीं क्योंकि तब इसका आकार एक बैक्टेरिया जितना होगा।

❋ परमाणु बम भी एक्सपायर होते हैं। लगभग सब कुछ जो मानव निर्मित है उसकी एक समय सीमा होती है। परमाणु बमों की समाप्ति तारीख इस बात पर निर्भर करती है कि इसमें किस पदार्थ का प्रयोग किया गया है। इसमें प्रयोग किए गए पदार्थों को हाफ लाइफ के बाद बदलना होता है, वैसे ट्रिटियम की हाफ लाइफ १२.३ साल, प्लूटोनियम की २४१०० साल, यूरेनियम की ४ अरब साल और थोरियम की १४ अरब साल होती है। समय-समय पर कुशल इंजीनियर इन्हें देखते रहते हैं और जिस चीज में थोड़ा-सा भी डिफेक्ट मिलता है उसे बदल देते हैं।

❋ फूलों की घाटी उत्तराखंड में स्थित है।

❋ होर्मुज जलडमरूमध्य- यह जलडमरूमध्य ५५ से ९५ किलोमीटर तक चौड़ा है जो ईरान को अरब प्रायद्वीप से अलग करता है। होर्मुज जलडमरूमध्य को बंद करने के प्रयास से अमेरिकी हिमों को गंभीर खतरा पैदा होगा, भले ही इसमें कोई अमेरिकी जहाज शामिल न हो। होर्मुज को ओरमुज जलडमरूमध्य के नाम से भी जाना जाता है। यह फारस

की खाड़ी को ओमान की खाड़ी और अरब सागर से जोड़ता है। इसमें कीश्म, होर्मुज पर निर्भर सभी खाड़ी देशों का जलमार्गीय व्यापार इसी रास्ते से होता है। कच्चा तेल और तरल प्राकृतिक गैस का निर्यात ईरान, इराक, कुवैत, बहरीन, सऊदी अरब और संयुक्त अरब अमीरात द्वारा इसी मार्ग से किया जाता है।

❋ सिलवासा भारत के संघीय क्षेत्र दादरा और नगर हवेली की राजधानी है।

❋ मानचित्र सबसे पहले बेबिलोनियाई सभ्यता में करीब २३०० वर्ष पूर्व बनने शुरू हुए थे।

❋ हवाई एक यूएस स्टेट है, जहां कॉफी उगायी जाती है।

❋ नीला क्यों दिखाई देता है आकाश?

जब तेज हवा चलती है या बहुत से लोग कहीं एक साथ चलते हैं तो बारीक मिट्टी या गर्द उड़ती है। हवा में धूल कणों के होने से वह सांस के साथ नाक में जाते हैं और सांस लेने में तकलीफ होती है इन धूल कणों से ही हमारी पृथ्वी सुंदर लगती है। यही नहीं आकाश का नीला रंग भी इन्हीं धूल कणों की देन है। सूर्य की किरणें जब धरती पर पड़ती हैं तो पर्यावरण में फैले धूल-कण रुकावट डालते हैं। सूर्य से निकलनेवाली छोटी और नीली किरणों को यह धूल-कण चारों तरफ फैला देते हैं और आकाश को नीली रंगत में रंग देते हैं।

वातावरण में फैले इन कणों के कारण ही सूर्यास्त के समय आकाश में लाली फैलती है। बादलों के रंग कभी सफेद और कभी सलेटी रंग में रंग जाते हैं। यह छोटे छोटे कण मिट्टी से उपजते हैं। पर हवा में फैले असंख्य कणों को बनाने में समुद्र का भी बड़ा योगदान है। हर बार जब लहरें टूटती हैं तो हवा में अनेक नमक के बारीक कण घोल देती है। धरती पर चलने से, उद्योगों से पत्थरों की या दूसरे तरह की खानों से, सीमेंट के कारखानों से, आटे की चक्कियों आदि से बहुत मात्रा में धूल के कण हवा में मिलते रहते हैं।

सुबह खिड़की से कमरे में सूर्य की किरणें पड़ती हैं तब हम इन बेहद छोटे कणों को देख सकते हैं। यहीं नहीं इन कणों में दूर कहीं नक्षत्रों से आनेवाली गर्द के भी कण शामिल होते हैं। धूल-कण या गर्द की सबसे बड़ी खासियत है कि इसमें एक जगह से दूसरे जगह तक हवा के जरिए पहुंचने या यात्रा करने की अद्‌भुत क्षमता होती है। धूल-कण केवल सूर्य की किरणों के रंगों को बिखरेकर धरती को अनेक रंगों के जादू से चमत्कृत करने का ही काम नहीं करते, ये हवा में ज्यादा हैं तो धरती के तापमान को भी कम करते हैं।

❋ बरमूडा ट्राइएंगल - यह उत्तरी अटलांटिक महासागर का एक काल्पनिक क्षेत्र है जहां बहुत से जहाज, नौकाएं और विमान रहस्यमय परिस्थितियों में गायब होते रहे हैं। विश्व का मानचित्र देखें और बरमूडा द्वीप, पोर्तो रिको और अमेरिका के फ्लोरिडा राज्य के दक्षिणी कोने को सीधी रेखाओं से जोड़ें तो कोई चालीस लाख किलोमीटर का एक त्रिकोणीय क्षेत्र बनता है एक यह खतरनाक क्षेत्र है लेकिन यहां हुई दुर्घटनाओं की संख्या किसी अन्य क्षेत्र से अधिक नहीं है। अमेरिका के भूविज्ञान सर्वेक्षण का कहना है कि यहां मीथेन हाइड्रेट्स के क्षेत्र हैं जिनसे जब-तब मीथेन गैस के विशाल बुलबुले निकलते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि पानी झागदार हो जाता है, जो जहाजों को तैरने योग्य नहीं रहता और जहाज बड़ी तेजी से डूब सकता है। मीथेन के घनत्व हवा जितना नहीं होता और विमान टिका नहीं रह पाता। इसके अलावा समुद्र में कभी-कभी सौ फिट ऊंची लहरें भी उठ सकती हैं, जो किसी भी जहाज को डुबा सकती हैं।

सामान्य ज्ञान

❊ कुतुब मीनार- दिल्ली की ऐतिहासिक इमारतों में कुतुब मीनार की शान निराली है। यह दिल्ली के महरौली इलाके में स्थित है। यूनेस्को ने इसे वर्ल्ड हेरिटेज साइट का दर्जा दिया है।

कुतुबमीनार का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने ११९३ में शुरू करवाया था। पर ऐबक केवल काम शुरू ही करवा सका था कि उसकी मृत्यु हो गई। इल्तुतमिश ने जो ऐबक के बाद दिल्ली की गद्दी पर बैठा, इसमें तीन मंजिलें जुड़वाई। कुतुबमीनार में आग लगने के बाद उसका पुनर्निर्माण फिरोज शाह तुगलक के समय हुआ। काम शुरु ऐबक ने करवाया था पूरा करवाया इल्तुतमिश ने और १३८६ में मीनार को दुर्घटना के बाद दुरुस्त करवाया फिरोजशाह तुगलक ने।

लाल और हल्के पीले बलुआ पत्थरों से बनी यह मीनार, दुनिया की सबसे ऊंची मीनार है और यह भारत की कुछ शुरुआती इस्लामी इमारतों में से एक है। इसकी ऊंचाई ७२.५ मीटर (२३७.८६ फीट) है और इसमें कुल ३७९ सीढ़ियां हैं। आधार पर इसका व्यास (डायमीटर) १४.३ मीटर और टॉप पर केवल २.७ मीटर है।

कुतुब मीनार का नाम कुतुबुद्दीन ऐबक के नाम पर रखा गया है, लेकिन कुछ इतिहासकारों का कहना है कि इसका नाम प्रसिद्ध मुस्लिम संत ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के नाम पर रखा गया था। ऐसा माना जाता कि कुतुब मीनार का इस्तेमाल पास ही में बनी कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद की मीनार के रूप में होता था और यहां से अजान दी जाती थी। इस इमारत में कुरान की आयतें भी लिखी हुई हैं। इसकी दीवारों पर खुदे लेखों में उन बादशाहों और शासकों का भी जिक्र है, जिन्होंने समय-समय पर इसकी मरम्मत कराई है।

कुतुब मीनार कैंपस में कई और प्रसिद्ध ऐतिहासिक इमारतें भी हैं। इनमें कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा बनाई गई भारत की पहली मस्जिद कुव्वत उल-इस्लाम, चौथी सदी का चंद्र लौह स्तंभ (आयरन पिलर), अलाई दरवाजा, इल्तुतमिश का मकबरा (१२३५ ईसवी) प्रमुख हैं। आयरन पिलर की खासियत यह है कि १७०० साल के लंबे अर्से से यह खुले आसमान में खड़ा है। इसके ऊपर सालों से धूप, बारिश और धूल गिरती रही है, लेकिन इसके बावजूद भी इस पर जंग नहीं लगी है। इसके बारे में यह भी मान्यता है कि अगर इसे कोई व्यक्ति उल्टी तरफ से अपनी बाहों में पकड़ लें तो उसकी सभी मुरादें पूरी हो जाती हैं। अब इस पिलर के आसपास घेरा बना दिया गया है ताकि लोग इसे छूकर नुकसान न पहुंचा सकें।

पाँच मंजिला कुतुब मीनार की तीन मंजिलें लाल बलुआ पत्थर से एवं अन्य दो मंजिलें संगमरमर एवं लाल बलुआ पत्थर से बनाई गई हैं और प्रत्येक मंजिल के आगे बालकनी स्थित है।

वर्ष १९८३ में कुतुब मीनार को युनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल का दर्जा प्रदान किया गया।

कुतुबमीनार की प्रथम तीन मंजिले लाल पत्थर की बनी हैं। इन तीन मंजिलों की योजना में भी अंतर है। पहली मंजिल अंतर देते हुए कोणीय तथा गोलाकार लम्बी धारियों सहित, दूसरी की गोलाकार और तीसरी की केवल कोणीय है। इंसान अपने अस्तित्व को बरकरार रखने के लिए हर संभव कोशिश करता है। इससे उसे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह जिंदा रहेगा या नहीं। उसकी इसी अनंत लालसा ने दुनिया को कई नायब तोहफे दिए हैं, जिनमें कुतुबमीनार भी एक है। इस मीनार के निर्माण के साथ की बातें जुड़ी हुई हैं। इसके संबंध में कई मत मिलते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि इस मीनार का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपनी भारत विजयों को मूर्तरूप देने के लिए विजयी मीनार के रूप में कराया था। कुछ

ऐसे भी लोग हैं जो मानते थे कि कुतुबमीनार का निर्माण कुव्वततुल-इस्लाम मस्जिद में अजान के समय जनता को बुलाने के लिए किया गया था। एक मान्यता यह भी है कि पृथ्वीराज चौहान ने इस मीनार का निर्माण अपनी बेटी के लिए करवाया था ताकि वह प्रात:कालीन पूजा-अर्चना के समय पवित्र यमुना नदी के दर्शन कर सके।

मिथक कई हैं, मगर हकीकत यही है कि इस मीनार की तामीर, इंसानी जिंदगी की जद्दोजहद की बेहतरीन मिसाल है। इतिहास से ज्ञात स्त्रोतों के अनुसार इस मीनार का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने १२०६ में करवाया था। उसकी योजना चार मंजिलों की २२५ फुट ऊंची मीनार बनवाने की थी, लेकिन उसकी अचानक हुई मौत ने इस योजना को पूरा नहीं होने दिया। इल्तुतमिश ने अंतत: इसका निर्माण करवाया। नीचे के आकार में ३५ फीट घेरे में बना यह मीनार ऊपर क्रमश: पतली होती गई। इसका सबसे ऊपर का घेरा ९ फीट तक पहुंच गया है। नागरी और फारसी अभिलेखों से लबरेज इस मीनार की सारी लिखावट को अभी तक पूर्ण रूप से पढ़ा नहीं जा सका है, लेकिन जितना पढ़ा जा सका है उसके अनुसार इस मीनार को बिजली गिरने से वर्ष १३२६ और वर्ष १३६८ में दो बार नुकसान पहुंचा था। इसे फिरोजशाह तुगलक और सिकंदर लोदी ने फिर से ठीक कराया था। मंजिलों के छज्जे घुमावदार और लहरदार हैं। इस मीनार की इन मंजिलों पर लेखात्मक सजावटी धारियां, इस मीनार की पत्थरी संवेदना को लयात्मक और भावुक बना देती है। उपर की शेष दो मंजिलें गोलाकार हैं तथा इनमें संगमरमर का प्रयोग किया गया है।

भारत की पहली मस्जिद, कुव्वतुल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण यहीं करवाया गया था। यह मस्जिद हिन्दू-मुस्लिम शैली की प्रथम इमारत है। चूंकि इस मस्जिद के निर्माण में पुराने तराशे गए पत्थरों का इस्तेमाल किया गया है इसलिए इसमें स्थापत्य की अनेक शैलियां देखने को मिलती हैं। इस मस्जिद के आंगन में एक लौह स्तम्भ खड़ा है, जो पुरातत्व के अनुसार चौथी सदी का है। इसके संबंध में यह मान्यता है कि यह स्तम्भ वस्तुत: चंद्रगुप्त द्वितीय (गुप्त शासक) का अभिलेख है। इसके अलावा कुतुबमीनार के प्रांगण में इल्तुतमिश का मकबरा, अलाई दरवाजा, अलाई मीनार, अलाउद्दीन का मकबरा तथा अन्य ऐतिहासिक इमारतें व स्मारक हैं जो अपने पूर्ण रूप में भारत में इस्लाम के आगमन के समय को ईरानिक, अरब व भारतीय पाश्चात्य शैलियों का मिश्रण हैं, तो कुछ इमारतें मुगल काल की गंगा-जमुनी तहजीब की नजाकत लिए हुए इंडो-ईरानी शैली की भारतीय स्थापत्य कला में ढली हुई हैं।

गुप्त वंश के राजा महाराज चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वितीय द्वारा बनवाया गया यह लौह स्तंभ १६०० वर्ष से अधिक पुराना है। लोहे का बना हुआ यह स्तंभ ७ मीटर ऊँचा है और इसका वजन ६०००० किलो से अधिक है। इस खंभे का १ मीटर हिस्सा भूमिगत है। खंभे के मूल के पास इसका व्यास १७ इंच और शीर्ष पर १२ इंच व्यास है। आय आय टी कानपुर के प्रोफेसर डॉ. बालासुब्रमण्यम ने स्तंभ के लोहे का विश्लेषण किया। इस विश्लेषण में पता चला कि स्तंभ के लोहे को बनाते समय पिघले हुए कच्चा लोहा में फास्फोरस तत्व मिलाया गया था। इससे लोह के अणु बांड नहीं बन पाए, जिसकी वजह से जंग लगने की गति हजारों गुना धीमी हो गई।

फास्फोरस के जंग रोधी गुणों का पता तो आधुनिक काल में चला है। दुनिया भर में यह माना जाता है कि फास्फोरस की खोज सन १६६९ में हेन्निंग ब्रांड ने की, मगर यह स्तंभ तो १६०० वर्ष से अधिक पुराना है। अर्थात पुरातन काल में भारत में धातु-विज्ञान का ज्ञान उच्चकोटि का था। सिर्फ दिल्ली ही नहीं धार, मांडू, माउंट आबू, कोदाचादरी पहाड़ी पर पाए गए

लौह स्तंभ, पुरानी तोपों में भी यह जंग-प्रतिरोधक क्षमता पाई गई है। दिल्ली का यह लौह स्तंभ हमारे लिए गौरव का प्रतीक है और हमारे महान इतिहास का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

❋ ऐसा आयताकार जिसकी चारों भुजाएं बराबर हैं वो है वर्ग।

❋ सबसे छोटा प्राइम अंक एक है।

❋ भूमध्यसागर के किनारे स्थित देशों में उपयोग में लाए जानेवाले आहार सोच और स्मृति से जुड़ी समस्याओं को कम करते हैं। कोलंबिया विश्वविद्यालय मेडिकल सेंटर के मस्तिष्क विज्ञानी और इस संबंध में हुए शोधपत्र के लेखक निकोलस स्कारमीस के मुताबिक जो लोग भूमध्य सागर के किनारे स्थित देशों में उपयोग में लाया जानेवाला आहार ग्रहण करते हैं, उनके अंदर मृत ऊतकों के कारण पैदा हुई सोच संबंधी समस्याएं कम होती हैं।

❋ सर्दी लगने पर हम ठिठुरने लगते हैं। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि वायुमंडल का तापमान गिरने के साथ ही हमारे शरीर का तापमान भी गिर जाता है। इसके बाद शरीर की प्रक्रियाएं धीमी होनी शुरू हो जाती हैं। यदि सर्दी बहुत अधिक हो तो शरीर तापमान को चिंतनीय स्तर तक गिरने से रोकने के लिए गतिशील हो उठता है। शरीर के अंग सक्रिय हो जाते हैं। मांसपेशियों तथा शरीर के अनवरत सकंचन से तापमान बढ़ जाता है तथा इन्हीं संकुचनों को ठिठुरन कहते हैं।

❋ एक जोडी जीन्स के निर्माण में लगभग १० हजार लीटर पानी की खपत होती है।

❋ डीजल जैसे ईंधन तेलों को जमीनी पानी में नहीं छोड़ा जाना चाहिए। सिर्फ १ लीटर तेल से १० लाख लीटर पानी पीने योग्य नहीं रहता।

❋ धरती पर मौजूद पानी के १०० हिस्सों में से सिर्फ ३ प्रतिशत ताजा पानी के हैं। बाकी बचा पानी खारा है।

❋ अक्सर अपने निकट ग्रेनेड के विस्फोट के धमाके से सैनिक मर जाते हैं। विस्फोट की ध्वनि के फैलाव से उनके फेफड़े फट सकते हैं।

❋ अंतरिक्ष यात्री बिना रेडियो के भी अंतरिक्ष में बात कर सकते हैं। उन्हें सिर्फ अपने हेल्मेट्स एक दूसरे से जोड़ने होते हैं। उनके हेल्मेट्स ध्वनि को तरंगित करते हैं।

❋ मानव अस्तित्व से लेकर अब तक मनुष्य ने जितनी कुल ऊर्जा पैदा की है, प्रतिक्षण सूर्य उससे अधिक ऊर्जा उत्सर्जित करता है।

❋ मिस्त्र के एक फेरोह रेमसेस द्वितीय जिनकी मृत्यु १२२५ ईसा पूर्व हुई थी, के ९६ पुत्र और ६० पुत्रिया थीं।

❋ अब्राहम लिंकन अमेरिका के एकमात्र राष्ट्रपति थे जिनके नाम से एक पेटेंट दर्ज है।

❋ दुनिया का सबसे छोटा युद्ध इंग्लैंड और जांजीबार के बीच १८९६ का था जिसमें जांजीबार ने ३८ मिनट में समर्पण कर दिया था।

❋ १८९६ में भारत विश्व में हीरों का एकमात्र स्रोत हुआ करता था।

❋ क्षेत्रफल के हिसाब से रूस दुनिया का सबसे बड़ा देश है। इसका कुल क्षेत्र १७.१ मिलियन वर्ग किलोमीटर है।

❋ सूर्योदय और सूर्यास्त के समय सूर्य का आकार बड़ा हो जाता है। सूर्योदय और सूर्यास्त के समय उसकी किरणें हल्की होती हैं। ऐसे में वह हमें अपने पूर्ण रूप में दिखाई देता है। वहीं दोपहर के समय उसकी किरणों की चमक बहुत तेज

हो जाती है। इस कारण हमारी आंखें उस पर पूरी तरीके से नहीं ठहरतीं, जिससे हम सिर्फ उसके भीतरी भाग को ही देख पाते हैं और वह हमें छोटा नजर आता है। इसलिए सूर्योदय और सूर्यास्त के समय हमें सूर्य का आकार बड़ा नजर आता है।

✻ बोइंग विमान जहां बनते हैं वह जगह बहुत बड़ी होती है। जगह के मामले में वॉशिंग्टन स्थित इवरेट विश्व का सबसे बड़ा कारखाना है। जहां बोइंग विमानों को बनाया जाता है, इस स्थान का क्षेत्रफल ५.६ मिलियन क्यूबिक मीटर है। इस कारखाने में जो जंबो विमान बनते हैं, वे भी कम कीर्तिमान नहीं स्थापित करते। जैसे यहां बननेवाले विमानों में ५०० यात्री बैठ सकते हैं। इस विमान की लंबाई ७० मीटर होती है और इसके पंखों की खुलने पर लंबाई ६० मीटर होती है।

✻ प्राकृतिक संपदा के लिहाज से विश्व में ब्राजील सर्वाधिक संरक्षित देश है। कुल क्षेत्रफल का १६.८ फीसदी भाग संरक्षित घोषित है।

✻ वायनिल बनाने में सत्तर तरह की लकड़ियों का प्रयोग किया जाता है।

✻ शरीर में हर सेकेंड में १५ मिलियन लाल रक्त कोशिकाएं बनते और नष्ट होते हैं।

✻ जिंदा दफनाए जाने के डर को ताफीफोबिया कहते हैं।

✻ पेन ड्राइव- यदि कंम्प्यूटर सेवी हैं तो आप आजकल पेन ड्राइव खूब इस्तेमाल करते होंगे। इसे लोग फ्लैश ड्राइव के रूप में भी जानते हैं। यह छोटी सी डिवाइस बेहद उपयोगी तो है ही, लेकिन साथ-साथ काफी नाजुक भी होती है।

इस समय बाजार में इनकी बेशुमार प्रकार मिलती है।

ज्यादा छोटा फ्लैश ड्राइव न लें तो बेहतर है, वरना इनके खोने का डर हमेशा बना रहता है। पेन ड्राइव के साथ स्ट्रैप भी हो, अगर नहीं है तो आप मोबाइल फोन के जैसे स्ट्रैप इसके लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैं। इससे इनके खोने का डर कम होगा। ८ जीबी के एक डिवाइस की बजाय ४-४ जीबी के दो पेन ड्राइव रखें तो बेहतर होगा।

✻ श्याम विवर यानी ब्लैक होल एक अत्यधिक घनत्ववाला पिंड है। इसके गुरुत्वाकर्षण से प्रकाश की किरणों का भी बच पाना असंभव है। श्याम विवर के अस्तित्व का सिद्धांत १८वीं शताब्दी में गुरुत्वाकर्षण के नियमों के आधार पर आया था। इसके मुताबिक, किसी पिंड का जितना ज्यादा द्रव्यमान (भार) होगा या उसका आकार जितना छोटा होगा, उस पिंड की सतह पर उतना ही ज्यादा गुरुत्वाकर्षण बल महसूस होगा।

जॉन मीशेल और पीयरे सायमन लॉप्लास नामक वैज्ञानिकों ने कहा था कि अधिक द्रव्यमान या लघु पिंड के गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव से किसी का भी बचना असंभव है। इन पिंडों को श्याम विवर (ब्लैक होल) नाम जॉन व्हीलर ने १९६७ में दिया था। इसकी खोल के दौरान भौतिकशास्त्र के वैज्ञानिकों और गणितज्ञों ने यह पाया है कि श्याम विवर के पास काल और अंतराल (स्पेस एंड टाइम) के विचित्र लक्षण होते हैं।

श्याम विवर के बारे में कहा जाता है कि जब भी एक विशाल तारे की मृत्यु होती है तो एक श्याम विवर का जन्म होता है। यह विशाल तारा अपनी मृत्यु के बाद श्याम आमतौर पर एक-दूसरे से अलग लगते हैं, लेकिन यह उनके आसपास के क्षेत्रों की भिन्नता के कारण होता है।

✻ कॉफी पीने की शुरुआत-पुराने समय में अरब के कालदी नामक गड़रिए ने एक दिन अपनी भेड़-बकरियों को एक सदाबहार पौधे के लाल फल खाने के बाद उछलकूद करते देखा। कौतूहलवश कालदी ने भी वह फल खा लिया। उसे

लगा कि वह तरोताजा हो गया है। उसने एबोट नामक भिक्षु को इस फल के बारे में बताया भिक्षु ने इस फल को पीसकर पानी में मिलाकर खुद पिया और मठ के अन्य लोगों को पिलाया। सभी ने अपने भीतर स्फूर्ति अनुभव की। यह लाल फल कॉफी के पौधे का था। अरब के लोग प्राचीन काल से ही कॉफी के शौकीन हैं। सत्रहवीं शताब्दी में कॉफी पीने का चलन इंग्लैंड से शुरू हुआ तथा सन १६५० में ऑक्सफोर्ड में विश्व का पहला कॉफी हाउस खोला गया था।

* नाभिकीय ऊर्जा या न्यूक्लियर एनर्जी इको फ्रेंडली होती है, यह पर्यावरण में कोई भी नुकसानदायक गैस का उत्सर्जन नहीं करती है।

* विश्व में ११ प्रतिशत बिजली नाभिकीय ऊर्जा से प्राप्त की जाती है। बाकी स्रोतों में सौर ऊर्जा, पवन चक्की और कोयला से उत्पादित ताप ऊर्जा प्रमुख हैं।

* भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना एओ ह्यूम ने की थी।

* विश्व का सबसे बड़ा द्वीप ग्रीनलैंड है और बड़ा द्वीप समूह इंडोनेशिया है।

* मुंह में बननेवाली लार की प्रवृत्ति अम्लीय होती है। लार में हालिन और माल्टेज एंजाइम पाया जाता है। जब यह बड़ी आंत में जाता है, तो पित्त रस से मिलकर क्षारीय हो जाता है।

* भारत में मलबरी रेशम का प्रमुख उत्पादक राज्य कर्नाटक है, यहां प्रतिवर्ष २५०० टन से ज्यादा इस रेशम का उत्पादन होता है, यह देश के कुल उत्पादन का ८० प्रतिशत है।

* कठपुतलियों के साथ-साथ परछाइयों का आनंद- कठपुतलियों की परछाइयों के शो का मजा लोगों द्वारा पूरे विश्व में उठाया जाता है। इंडोनेशिया के एक द्वीप जावा में दर्शक कपड़े की बनी एक स्क्रीन के दोनों तरफ बैठते हैं। एक तरफ लोग कठपुतलियों का नाच देखते हैं जबकि दूसरी ओर के लोग उनकी परछाइयों का नृत्य देखते हैं जैसे कोई जादू हो।

वियतनाम के एक वाटर पपेट शो में कहानी को झील के पानी की सतह पर दर्शाया जाता है। यह कठपुतली नचानेवालों के लिए अवश्य ही बड़े मजे की बात होती क्योंकि इसके लिए उन्हें पानी में खड़ा होना पड़ता है।

रेत की बनी तस्वीरों में रोगियों को ठीक करने की शक्तियां भी होती हैं और ये इतनी बड़ी होती हैं कि कोई बीमार व्यक्ति इनके मध्य में बैठ सकता है। स्विटजरलैंड में गायों को चरानेवाले एल्पनहार्न्स बजाते हैं, जो लकड़ी के बने लंबे वाद्य यंत्र होते हैं और उनकी आवाज पर्वतों में बहुत दूर तक गुंजायमान होती है। जावा की कठपुतलियां रंगे हुए चमड़े से बनाई जाती है। कठपुतलियां नचानेवाले उन्हें तार या छड़ियों की सहायता से हिलाते-डुलाते हैं।

फ्लैमिंगो नर्तक स्पेन में पाए जाते हैं। गर्वीले दिखाई देनेवाले ये नर्तक स्पैनिश गिटार की धुन अपने सिर को झटका देते हैं तथा अपनी उंगलियों से चुटकियां बजाते हैं।

दक्षिण-पश्चिमी अमरीका के नावाजो लोग रंगी गई रेत के कणों से खूबसूरत चित्र तैयार करते हैं। इन चित्रों को भूमि पर विशेष समारोहों के अवसर पर बनाया जाता है परंतु कला के ये नमूने अधिक समय तक नहीं रहते, बाद में नष्ट हो जाते हैं।

* सभी महाद्वीपों के नाम उसी अंग्रेजी के अक्षर से समाप्त होते हैं जिससे वे शुरू होते हैं।

* अंग्रेजी भाषा के सबसे लम्बे शब्द में कुल १९०९ अक्षर हैं। यह डी.एन.ए. के एक खास भाग का नाम है।

* इंग्लैंड में संसद के स्पीकर को बोलने की इजाजत नहीं है।

❋ स्पीड क्यूबर- सभी ने आकार में चौकोर कई रंग-बिरंगे खानों वाला यह क्यूब कभी न कभी खेला जरूर होगा। उसे हल करना आमतौर पर लोगों के लिए बहुत कठिन होता है। इसीलिए उसे जो सही-सही खेल ले, वह बड़ा बुद्धिमान माना जाता है। इस क्यूब को पसंद करनेवालों में बहुत से ऐसे भी हैं, जो इसे सबसे जल्दी हल करने की प्रतियोगिता भी करते हैं। उन्हें स्पीड क्यूबर्स के नाम से जाना जाता है। बहुत से लोग इसके लिए प्रसिद्ध हैं, जैसे कि भारत के भार्गव नरसिम्हन। वह एक जाने-माने स्पीड क्यूबर हैं। उनके नाम रूबिक क्यूब के दो नेशनल रिकार्ड हैं उन्होंने ५ रूबीस क्यूब का वर्ल्ड रिकॉर्ड भी अपने नाम कर लिया है। यह उन्होंने एक मिनट के अंदर हल कर दिया। यह काम उन्होंने केवल एक हाथ से ही कर दिखाया। वैसे भार्गव केवल २२ साल के हैं और अभी पढ़ाई कर रहे हैं।

❋ सर्वाधिक पुराना रेस्टोरेंट - स्पेन की राजधानी मैड्रिड में स्थित रेस्तोरांते बोतिन इन काले दे कुचिलेरोज को १७२५ में खोला गया था। जीन बोतिन तथा उनकी ऑस्ट्रियन पत्नी ने इस रेस्टोरैंट की शुरुआत की थी। आज उनकी तीसरी पीढ़ी इस रेस्टोरैंट को चला रही हैं। आज भी इसमें १८ वीं सदी का इंटीरियर देखा जा सकता है।

❋ मग्गलेन ने खोजा इंडोनेशिया- समुद्र के रास्ते मसालों के द्वीप इंडोनेशिया तक पहुंचने का सपना विश्व में जिस पहले यूरोपीय व्यक्ति ने देखा वह था पुर्तगाल का समुद्र यात्री फेर्दिनंद मग्गेलन। १५१९ में उसने यूरोप के पश्चिम से होते हुए एशिया की ओर अपनी यात्रा प्रारंभ की। किसी भी नाविक को उसने नहीं बताया कि वे कहां जा रहे हैं। उसे भय था कि वे सब डर जाएंगे और इस यात्रा में उसका साथ नहीं देंगे।

दक्षिणी अमेरिका से गुजरते हुए उसके दो जहाज एक तूफान में पूरी नष्ट हो गए। लेकिन उन्होंने इस यात्रा में एक नए मार्ग की खोज की जिसे मग्गेलन जल डमरू मध्य के नाम से जाना जाता है। मग्गेलन का सपना इंडोनेशिया तक पहुंचकर वापस लौटने का था, लेकिन वह फिलिपींस के ऐतिहासिक मकतान युद्ध में मारा गया। पांच समुद्री जहाजों और २६० नाविकों का यह समुद्री बेड़ा तीन साल बाद जब वापस स्पेन पहुंचा तब उसमें केवल १८ व्यक्ति जीवित बचे थे। समुद्र के रास्ते पृथ्वी की परिक्रमा करनेवाला पहला व्यक्ति था ब्रिटेन का सर फ्रांसिस ड्रेक। उसने अपनी यात्रा १५७७ में मग्गेलन द्वारा खोजे गए रास्ते से शुरू की और सफलतापूर्वक १५८० में ब्रिटेन वापस लौटा।

❋ खुली आंखों के साथ छींक पाना असंभव है।

❋ शरीर की सबसे मजबूत मांस-पेशी जीभ होती है।

❋ अगर आप ८ साल ७ महीने और ६ दिन चीखते रहें तो इतनी ध्वनि ऊर्जा पैदा हो सकती है कि एक कप गर्म कॉफी बन जाए।

❋ अंटार्कटिका ही एक मात्र ऐसा महाद्वीप है जिस पर रेप्टाइल और सांप नहीं हैं।

❋ बुद्धिमान व्यक्ति के बालों में सामान्य आदमी की तुलना में अधिक जिंक और तांबा होता है।

❋ मंगल ग्रह- मंगल का एक दिन २४ घंटे से थोड़ा ज्यादा होता है। मंगल और धरती करीब दो साल में एक दूसरे के सबसे ज्यादा करीब होते हैं। मंगल का गुरुत्वाकर्षण धरती के गुरुत्वाकर्षण का एक तिहाई हैं। मंगल पर धूल भरे तूफान उठते रहते हैं। मंगल के दो चंद्रमा हैं। मंगल एक रेगिस्तान की तरह है इसलिए अगर कोई मंगल पर जाना चाहे तो उसे बहुत ज्यादा पानी लेकर जाना होगा।

✻ महान संगीतकार मोजार्ट को एक सामूहिक कब्र में दफनाया गया था। अपनी मौत के समय वह दिवालिया हो चुके थे।

✻ एक बोईंग ७४७ में २६०.४१८ लीटर ईंधर आ सकता है।

✻ पोलर बीयर और उंट की जीभ का रंग नीला होता है। (वन पशु)

✻ वसूवियस का कहर - रोम के प्राचीन वैभवशाली नगर पाम्पियाई की खुदाई हो रही थी। यह नगर नेपल्स की खाड़ी के निकट समुद्र तट पर स्थित था। वहां ज्वालामुखी पर्वत वसूवियस ने कहर ढाया था। इस महाविनाश में जो जिस रूप में था, उसी रूप में लावे के नीचे दफन हो गया। जो अवशेष मिले हैं, उनसे पता लगता है कि विनाश लीला आरंभ होने के समय दुकानदार दोपहर का भोजन करने के लिए अपनी दुकानें बंद कर रहे थे तथा लड़कियां एक फव्वारे के पास गपशप कर रही थीं। एक दुकानदार अपनी रोटी चूल्हे पर सेकते हुए मिला। एक मानव समूह भी खुदाई में मिला है, जो अपने किसी संबंधी के यहां दावत खा रहा था। कुछ लोग तो अपने धन को गाड़ते हुए स्वयं लावे में दफन हो गए थे। जो ज्वालामुखी के विध्वंस से बचने के लिए भाग रहे थे, वे भी बच नहीं पाए। खुदाई में जो अवशेष मिले हैं, उनसे इस बात का पता चलता है कि ज्वालामुखी के विस्पोट के समय आतंकग्रस्त नगर की क्या स्थिति थी तथा ज्वालामुखी की विनाशलीला कितनी तेज तथा भयावह थी। जब यह ज्वालामुखी शांत हुआ, तब पाम्पियाई नगर बीस फुट गहरे लावे के नीचे दफन हो चुका था। इसके बीस हजार नागरिकों में से दो हजार नागरिकों को मौत ने अपनी गोद में समेट लिया था। शताब्दियां बीत गई। लोग ज्वालामुखी के महाविनाश को भूल गए। १७४८ में यह फिर उभरा, जब नेपल्स के राजा का इंजीनियर १५० वर्ष पुरानी उस सुरंग का निरीक्षण कर रहा था। सरनो नदी से पानी लाने के लिए उस सुरंग को नहर का रूप दिया जा रहा था। संयोगवश खुदाई शुरू करते ही पाम्पियाई नगर के भित्ति चित्र मिले। मुट्ठी भर सोने के आभूषणों के साथ एक मानव अवशेष भी मिला।

✻ माउन्ट रोराइमा- वेनेजुएला और ब्राजील की सीमा पर एक ऐसा खड़ी चढ़ाई वाला पर्वत मौजूद है जो ९२०० फीट ऊंचा है। पर्वतारोहियों के लिए आकर्षण का केंद्र इस पर्वत की चढ़ाई में तीन दिन लगते हैं। इसे १९वीं सदी में खोजा गया था जो कि माउंट रोराइमा के नाम से जाना जाता है। माउंट रोराइमा को पेमोन यानी दक्षिण अमेरिकी नागरिकों की धार्मिक आस्था प्रतीक स्थल भी कहा जाता है। इस पर्वत का प्रसिद्ध साहित्यकार कॉनन डायल के उपन्यास द लॉस्ट वर्ल्ड में भी जिक्र है। इस पर्वत को लेकर १९६० में एक फिल्म भी बन चुकी है।

✻ रविवार की छुट्टी सन १८४३ से आरम्भ हुई।

✻ शाखाओं की दृष्टि से विश्व का सबसे बड़ा बैंक भारतीय स्टेट बैंक है।

✻ रूस में प्रदर्शित होनेवाली पहली भारतीय फिल्म धरती के लाल थी।

✻ अब तक आएं भयंकर तूफान के कारण सबसे ज्यादा तबाही सन १९३५ में क्वेटा शहर की हुई थी।

✻ शेक्सपियर ने आखिरी नाटक द टेंपेस्ट लिखा था।

✻ पलक झपकते ही नजरों से गायब होंगी चीजें- वैज्ञानिकों की ओर से किया गया भौतिकी सिद्धांतों का करिश्माई प्रयोग है जिसे क्लोकिंग पद्धति की मदद से किया गया है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके जरिए लेंसों को भेदकर निकलनेवाली प्रकाश किरणों से ऐसे चुंबकीय क्षेत्र का प्रभाव बन जाता है जिससे यह जिस वस्तु पर पड़ती है, वह

आखों से पूरी तरह या आंशिक रूप से दिखना बंद हो जाती है। न्यूयॉर्क में भौतिकीशास्त्र के एक प्राध्यापक जॉन हॉवेल ने कुछ लेंसों की मदद से यह कारनामा किया है। इससे आप अपने सामने रखी चीज को देख नहीं पाएंगे जबकि उसे पीछे और आसपास मौजूद सारी चीजें आपको दिखाई देंगी। जिस चीज को आप नहीं देख पाएंगे, वह ऐसा नहीं है कि अपने स्थान से गायब हो जाएगी, वह अपने स्थान पर ही रहेगी बस आपको दिखाई नहीं देगी। इसके लिए हॉवेल ने कई सारे लेंसों का एक साथ प्रयोग किया और उन्हें एक दूसरे के आगे इस क्रम में रखा कि उसके आखिरी छोर पर रखी वस्तु आंखों से दिखना बंद हो गई। इन लेंसों से देखने की प्रक्रिया का त्रिआयामी प्रभाव पड़ता है जिससे इसके पीछे रखी वस्तु दिखना बंद हो जाती है। हॉवेल का कहना है कि यह प्रयोग हाथों, मुंह और नापनेवाले स्केल पर किया गया है जो पूरी तरह सफल रहा है।

* ऐक्सेलरामिटर वाहन के त्वरण को मापनेवाला यंत्र है।
* एंटी एयर क्राफ्ट गन- गोला मारकर हवाईजहाज गिराने की तोप है।
* अल्टी मीटर- यह ऊंचाई मापक यंत्र है। जिसका प्रयोग विमानों में किया जाता है।
* ऑडिओमीटर- इससे ध्वनि की तीव्रता को मापा जा सकता है।
* एनीमोमीटर- इससे वायु का बल, गति को मापा जा सकता है। यह वायु की दिशा परिवर्तन भी करता है।
* छींकने से दिल पर असर- छींकते समय आंखें खुली रख पाना नामुमकिन है और छींकते समय दिल की गति एक मिली सेकंड के लिए रुक जाती है।
* ऑडिओफोन- इसे सुनने की मशीन कहा जाता है। इसे लोग सुनने में सहायता के लिए कानों में लगाते हैं।
* ऑक्टिमोमीटर- विद्युत चुम्बकीय विकिरण तीव्रता मापने का यंत्र है।
* ऐरोमीटर- यह वायु और गैसों के घनत्व को मापनेवाला यंत्र है।
* ऑस्ट्रोमीटर - तारों के प्रकाश की तीव्रता को मापनेवाला यंत्र कहते हैं।
* धुआं और कोहरा मिलने से स्मॉग

आजकल देश दुनिया के कई शहरों में प्रदूषण का स्तर इतना ज्यादा बढ़ है कि वहां की हवा ही जहरीली हो गई है और उसमें सांस लेना भी बीमारियों को बुलावा देने जैसा हो गया है। स्मॉग शब्द स्मॉक और फॉग से मिलकर बना है यानी धुआँ और कोहरा मिलकर स्मॉग बनाते हैं। सड़कों पर दिन-रात दौड़नेवाली ढेरों गाड़ियां, खतरनाक और जहरीली गैसें वातावरण में छोड़ती हैं, साथ ही फैक्ट्रियों से निकलने वाली गैसें और धुएं भी हवा को इतना दूषित कर देते हैं कि सांस लेना भी मुश्किल हो जाता है। ये जहरीले गैसें, जिसका असर कई दिनों तक हवा में बना रहता है। तेज हवा चलने या बारिश होने पर ही स्मॉग का असर खत्म होता है। गाड़ियों और फैक्ट्रियों से निकलनेवाले धुएं और कोहरा मिलकर स्मॉग बनाते हैं जिसका असर कई दिनों तक हवा में बना रहता है। तेज हवा चलने या बारिश होने पर ही स्मॉग का असर खत्म होता है। गाड़ियों और फैक्ट्रियों से निकलने वाले धुएं में राख, सल्फर, नाइट्रोजन, कार्बन डाईऑक्साइड के अलावा कई खतरनाक गैसें मौजूद होती हैं जो कोहरे के संपर्क में आकर स्मॉग बनाती है।

स्मॉग को सामान्य समझने की भूल नहीं करनी चाहिए क्योंकि स्मॉग से शरीर पर ऐसे दुष्प्रभाव पड़ रहे हैं- फेफड़ों और

सांस से जुड़ी गंभीर बीमारी का खतरा, रक्तचाप के मरीजों को ब्रेन स्ट्रोक आने का खतरा, अस्थमा के मरीजों को अटैक आने का खतरा, २ साल से बड़े बच्चों में अस्थमा की बीमारी बढ़ी है। १५ साल से कम उम्र के बच्चे ब्रोंकाइटिस बीमारी से ग्रस्त, आंखों में जलन और आंखें लाल होना। त्वचा सम्बन्धी रोग बढ़ना, बाल ज्यादा झड़ना, स्मॉग से बचाव के लिए इन चीजों का सेवन करें, हल्दीवाला दूध पिए, ओटमील खाएं। शहद से अपनी प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं। तुलसी और अदरक की चाय पिएं। नीम का प्रयोग करें। विटामिन सी से भरपूर फलों का सेवन करें।

❋ समुद्र के ७ भाग - हिन्दू शास्त्रों में समुद्र को ७ भागों में बांटा गया है- लवण का सागर, इक्षुरस का सागर, सुरा का सागर, घृत का सागर, दधि का सागर, क्षीर का सागर और मीठे जल का सागर। समुद्र का जन्म आज से लगभग पचास करोड़ से १०० करोड़ वर्षों के बीच हुआ होगा। समुद्र में इतना नमक है कि अगर सारा पानी सूख जाए तो पूरी धरती पर ५०० फीट मोटी नमक की परत फैलाई जा सकती है।

❋ धरती में ४९ चंद्रमा समा जाएंगे - चाँद धरती के इर्द-गिर्द घूमते समय अपना सिर्फ एक हिस्सा ही धरती की तरफ रखता है इसलिए चाँद का दूसरा पासा आज तक धरती से किसी मनुष्य ने नहीं देखा। चाँद का व्यास धरती के व्यास का सिर्फ चौथा हिस्सा है और लगभग ४९ चाँद धरती में समा सकते हैं।

❋ बृहस्पति है बहुत बड़ा- सौर मंडल में मौजूद सभी ग्रह बृहस्पति में समा सकते हैं। इसका एक नाम जुपिटर भी है।

❋ बरमूडा ट्रैंगल - अटलांटिक समुद्र में एक ऐसी जगह है जिसे बरमूडा त्रिभुज कहा जाता है। पिछले १०० वर्षों में बरमूडा त्रिभुज में लोगों की मान्यताओं के अनुसार असाधारण रूप से ज्यादा संख्या में वायुयान और जलवान रहस्यमय रूप से कोई सुराग न छोड़ते हुए अदृश्य हुए हैं।

❋ वायुमंडल में क्लोरीन नामक की गैस नहीं पाई जाती है।

❋ चाँद पर पड़े काले धब्बों को चीन में चाँद पर मेंढ़क कहा जाता है।

❋ अलहम्ब्रा स्पेन में स्थित है जिसका निर्माण ८८९ में एक किले के रूप में हुआ था। लेकिन बाद में सन १३३३ में ग्रेनेडा के सुल्तान यूसुफ ने इसे शाही महल में परिवर्तित करवा दिया। आज यह स्पेन के सबसे प्रचलित पर्यटन स्थल में से एक है।

❋ क्लोरोफिल के कारण पेड़ की पत्तियों का रंग हरा होता है।

❋ माचिस की तीली में लाल फास्फोरस इस्तेमाल किया जाता है।

❋ हम जो सांस लेते हैं उस ऑक्सीजन में करीब ०.०००५ प्रतिशत मात्रा में हीलियम मिली होती हे।

❋ आदमी से ज्यादा कुत्ते- फ्रांस की राजधानी पेरिस में जितने व्यक्ति हैं उससे कहीं ज्यादा संख्या में कुत्ते हैं।

❋ आदमी से ज्यादा भेड़ें- न्यूजीलैंड ऐसा देश है जहाँ ४० मिलियन लोग हैं और करीब ७० मिलियन भेड़ हैं।

❋ डायनासोर घास नहीं खाते थे, उनके जमाने में घास भी नहीं हुआ करती थी।

❋ दुनिया में सबसे ज्यादा डाकखाने भारत में स्थित हैं।

❋ २४ कैरेट वाला सोना भी पूरी तरह शुद्ध नहीं होता उसमें कुछ मात्रा में कॉपर मिलाया जाता है, एकदम शुद्ध सोने को हाथ से भी आसानी से मोड़ा जा सकता है।

❋ बिजली तार के अंदर होकर नहीं गुजरती बल्कि तार के चारों ओर होकर गुजरती है।

❋ समुद्र की गहराई तक तैरकर विश्व रिकॉर्ड बनाया

इटली की गोताखोर एलिसा जेचीनी ने अदभुत साहस का परिचय देते हुए नया विश्व रिकॉर्ड बनाया है। बहामा में साढ़े तीन मिनट से ज्यादा देर तक सांस रोकने के बाद उन्होंने ३५१ फीट की गहराई तक तैरने का कीर्तिमान बनाया है। उनकी उपलब्धि का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि उन्होंने जो दूरी तय की, वह एक फुटबॉल मैदान की दूरी के बराबर है। वीबी २०१८ डाइविंग चैंपियनशिप में गहराई तक उतरने के लिए जेचीनी को एक रस्सी से सहारा भी दिया गया था ताकि आपात स्थिति में चीजों को संभाला जा सके। वह शांत और सहजता के साथ नीचे की तरफ तैरती चली गईं। इस तरह की गोताखोरी के लिए फ्रीडाइवर अपनी बाहों को ज्यादा से ज्यादा फैलाकर तैरने की कोशिश करते हैं।

सांस रोके रखना बड़ी चुनौती- एलिसा जिन गहराइयों तक पहुंची, वहां तक सूरज की रोशनी तक भी नहीं पहुंच पा रही थी। इस दौरान एलिसा जेचीनी के लिए सांस रोके रखना बड़ी चुनौती था। वह जितनी तेजी से नीचे गई, उतनी ही तेजी से उन्होंने ऊपर की ओर लौटना शुरू किया ताकि खुले में सांस ले सकें। इस दौरान सपोर्ट स्टाफ उनका मार्गदर्शन करता रहा।

२६ वर्षीय एलिसा ने ११ साल की उम्र में पहली बार तैराकी करना शुरू किया था। विश्व रिकॉर्ड बनाने के बाद उन्होंने कहा, मैंरे सिर्फ सकारात्मक रहने की कोशिश की और उसके अलावा कुछ और सोचना छोड़ दिया। मैं बहुत ही खुश हूं। बहुत ही अच्छा महसूस हो रहा है।

❋ समंदर का पानी नमकीन - चाहे बरसात का हो या कोई और पानी, सभी में एक खास प्रकार का नमक मौजूद होता है। पानी सादा हो या नमकीन यह हमारे स्वाद करने की क्षमता पर निर्भर करता है, जिसके लिए हमारे स्वाद ग्रंथियां जिम्मेदार होते हैं। पानी में प्राकृतिक रूप से नमक की थोड़ी मात्रा मौजूद है। यदि समुद्र के पानी की तुलना सामान्यवाले लेक से करें, तो पाएंगे कि जहां समुद्र के एक स्वाद के स्तर समुद्र का पानी सामान्य जल के मुकाबले करीब २०० गुणा ज्यादा नमकीन होता है। समुद्र को अपने पानी से भरनेवाली नदियों का पानी नमकीन नहीं होता। समुद्री जल को एक सोल्यूशन के तौर पर देखा जाता है, जिसमें कई प्रकार के मिनरल्स, समय के साथ सड़े गले जैविक पदार्थ मुख्य तौर पर मिले हुए होते हैं। यदि समुद्र में सैकड़ों नदियों का फ्रेश वॉटर लगातार मिल रहा है, तो फिर भी वह नमकीन कैसे बना ? समुद्र अपने शुरुआती समय में फ्रेश वॉटर से भरा होगा और बहुत हल्का नमकीन रहा होगा, पर यह करोड़ों वर्ष पहले की बात होगी। अमेरिका की नदियां ही अकेले २२,५५,००००० टन घुलनशील सालिड नमक समुद्र में मिलाती है। पूरे विश्व में इस प्रकार से समुद्र की ओर बढ़ती हुई नदियां प्रतिवर्ष चार खरब टन डिजाल्व साल्ट समुद्र में मिलाती है। पर चूंकि प्रतिवर्ष यह साल्ट समुद्र की गहराई में बैठता रहता है, इसलिए प्रतिवर्ष जो साल्ट उसे मिलता है उतना ही समुद्र की सतह पर भी बैठ जाता है। पर्शियन गल्फ में स्थित रेड सी का जल पृथ्वी पर मौजूद सबसे अधिक नमकीन पानी माना जाता है। यहां पानी के बाष्पीकरण की दर ज्यादा है और पानी में मौजूद घुलनशील नमक की मात्रा बढ़ती ही जा रही है। उत्तरी अटलांटिक महासागर के सारगरगो समुद्र का दूसरा सबसे अधिक नमकीन समुद्र माना जाता है। ऑस्ट्रेलिया के तट पर समुद्री जल सबसे कम साल्टी होता है, क्योंकि यहां पास ही कि

कोलंबिया नदी से उसे बड़ी मात्रा में फ्रेश वॉटर उपलब्ध हो जाता है।

❋ अंडा भी बोलता है - जिस तरह से मां अपने गर्भ में पल रहे बच्चे से बात करती है, ठीक उसी तरह मुर्गी भी अपने अंडों से बात करती है। अंडे में से चूजा निकलने से चौबीस घंटे पहले मुर्गी और अंडा एक दूसरे से बात करते हैं। जब मुर्गी अंडे के अंदर बंद चूजे को आश्वस्त करती है कि बाहर सब कुछ ठीक है, तभी वह अंडे से बाहर आता है।

❋ घड़ी की दिशा में कौन घूमता है - हमारे सूर्यमंडल में नौ ग्रह हैं। ये सभी ग्रह सूर्य का चक्कर लगा रहे हैं। सभी सूर्य का एंटी क्लॉकवाइज चक्कर लगा रहे हैं। लेकिन सिर्फ वीनस ही एक ऐसा ग्रह है, जो सूर्य का चक्कर उसी दिशा में लगाता है, जिस तरह हमारी घड़ी घूमती है।

❋ कौन कहता है कि फ्राइडे द थर्टीथ अनलकी है?

फ्राइडे द थर्टीथ महज दिमागी उपज है। जिसके कारण कुछ अमेरिकी लोक उस दिन काम पर नहीं जाते या हवाई यात्रा नहीं करते। इस कारण एक दिन में ८००-९०० मिलियन डॉलर का नुकसान होता है।

फ्राइडे द थर्टीथ को जन्मे मागरिट थैचर और फिडेल कास्त्रो ने लंबे समय तक इंग्लैंड और क्यूबा पर राज किया है। इस दिन न तो विश्वयुद्ध शुरू हुए हैं और न ही न्यूयॉर्क के जुड़वाँ टॉवर धराशायी हुए हैं।

ईसा के बाद के दो हजार वर्षों में यूरोप के अनेक छोटे-बड़े राजा सैकड़ों बार लड़े-भिड़े होंगे, अनगिनत तूफान-भूकम्प आए होंगे। इन दो हजार वर्षों में पड़े ३४०० फ्राइडे थर्टीथ पर किसी न किसी घटना का संयोग होना कोई बड़ी बात नहीं। तो अब से इन दिन को अशुभ मानना छोड़ देना चाहिये।

❋ दुनिया में पहली ग्राफिक तस्वीर १८२७ में जोसेफ नीपेस ने डेवलप की थी, जबकि फिल्म कैमरे को पहली बार १८९४ में थॉमस एडिसन और डब्ल्यू के एल फिक्सन ने दुनिया के सामने रखा था।

❋ कागज से बनेंगे हवाई जहाज- इस्तेमाल किया जानेवाला कागज स्टील से १० गुना हल्का और ५०० गुना मजबूत होगा। इस कागज का नाम है बकी पेपर। यह दिखने में सामान्य कार्बन पेपर जैसा ही लगता है, लेकिन भविष्य में इस कागज से टेलीविजन से लेकर हवाई जहाज तक बन सकते हैं। बकीपेपर अत्यंत महीन कार्बन सिलिंडर जिसे कार्बनपनेनोट्यूब कहा जाता है से बने हैं।

राइस विश्वविद्यालय, अमेरिका के वाडे एडम्स के अनुसार, यह एक क्रांतिकारी खोज है जो भी लोग नॅनो (सूक्ष्म) तकनीक पर काम कर रहे हैं उनके लिए तो यह होली ग्रेल से कम नहीं है। फ्लोरिडा स्टेट विश्वविद्यालय के बेन वांग जो इस कागज से जुड़ी तकनीक को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं उनके अनुसार इस कागज का पहला उपयोग हवाई जहाज के लिए बिजली शील्ड बनाने के लिए किया जा सकता है। इसके अलावा इस कागज का उपयोग संगणक की ग्राफिक शीट बनाने में भी किया जा सकता है। विशेष तौर पर इसका उपयोग लैपटोप की ग्राफिक शीट बनाने में किया जा सकता है जो गर्मी को सोख सकता है। भविष्य में इस कागज का उपयोग रडार को छलावा देनेवाले स्टील्थ हवाई जहाजों में भी हो सकता है।

❋ जानें, कैसे पड़े साल के १२ महीनों के नाम

हमारे जीवन में कैलेंडर की बहुत महत्व है। प्रचलित कैलेंडर वर्ष में १२ महीने होते हैं, जिनके नाम इस प्रकार पड़े हैं-

जनवरी- यह रोमन देवता जेनस के नाम पर पड़ा है। जेनस के दो चेहरे हैं। एक से वह आगे, दूसरे से पीछे देखते हैं। जनवरी के दो चेहरे हैं, एक से वह बीते हुए वर्ष को देखता है तथा दूसरे से अगले वर्ष को। जेनस को लैटिन भाषा में जैनअरिस कहते थे, जो बाद में जेनुअरी (जनवरी) हो गया।

फरवरी- इसका संबंध लैटिन शब्द फैबरा से है, यानी शुद्धि की दावत। फरवरी का संबंध रोम की देवी फेबरएरिया से भी है, जो संतानोत्पत्ति की देवी है।

मार्च- यह रोमन देवता मार्स के नाम पर पड़ा। रोमन वर्ष का प्रारंभ इसी महीने से होता था। मार्स मार्टिअस का अपभ्रंश है जो आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है। शरद ऋतु समाप्त होने पर लोग दुश्मन देश पर आक्रमण करते थे इसलिए इसे मार्च कहा गया।

अप्रैल- लैटिन शब्द एस्पेरायर से अप्रैल की उत्पत्ति हुई है, जिसका भाव है खुलना। रोम में इस माह कलियां फूल बनती थीं यानी वसंत आता था। पहले इसे अप्रिलिस रखा गया था।

मई- रोमन देवता मरकरी की माता मइया के नाम पर मई महीने का नामकरण हुआ है। मई की उत्पति लैटिन के मेजोरेस शब्द से मानी जाती है।

जून- इस महीने शादी करके लोग घर बसाते थे। इसी आधार पर परिवार के लिए उपयोग होनेवाले लैटिन शब्द जेन्स के आधार पर जून का नामकरण हुआ है। एक अन्य मतानुसार जून महीने का नाम जियूस देवता की पत्नी जूनो के नाम पर पड़ा माना जाता है।

जुलाई- राजा जुलियस सीजर का जन्म एवं मृत्यु दोनों जुलाई में हुई थी इसलिए इस महीने का नाम जुलाई कर दिया गया।

अगस्त- जुलियस सीजर के भतीजे आगस्टस सीजर ने अपने नाम को अमर बनाने के लिए सेक्सटिलिस का नाम बदलकर अगस्टस कर दिया।

सितंबर- लैटिन भाषा में सेप्टै का अर्थ सात एवं बर का अर्थ है वां यानी सेप्टैंबर का मतलब हुआ सातवां। बाद में यह नौवां महीना बना।

अक्टूबर- लैटिन शब्द आक्ट के आधार पर बना अक्टूबर। इसका अर्थ है आठवां परंतु दसवां महीना होने पर भी इसका नाम अक्टूबर चल रहा है।

नवंबर- लैटिन शब्द नोवेम्बर से यह बना है। इसका अर्थ है नौवां पर ग्यारहवां महीना बनने के बावजूद इसका नाम नहीं बदला।

दिसंबर- लैटिन शब्द डेसेम के आधार पर दिसंबर महीने को डेसेंबर कहा गया है। वर्ष का १२ वां महीना होने पर भी नाम नहीं बदला।

❊ माइक्रोवेव ऊर्जा की अदृश्य तरंगे उस चीज में मौजूद पानी को तेजी से हिलाना शुरू करती हैं और खाना गर्म हो जाता है। इन तरंगों की खोज द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान दुश्मन के जहाजों को पकड़ने के लिए हुई थी। तब एक अमेरिकी वैज्ञानिक पर्सी स्पेंसर ऐसा उपकरण बना रहे थे, जिससे निकलने वाली तरंगें दुश्मन के जहाज से टकराकर उसका पता बता दें। यह प्रयोग करते हुए जब वह उस मशीन के सामने से निकले तो अचानक ही उनकी जेब में पड़ी

चॉकलेट्स पिघल गईं। उन्होंने यह प्रयोग बार-बार दोहराया और उस जासूसी मशीन की जगह दुनिया के सामने आ गया माइक्रोवेव ओवन।

❋ शुक्र ग्रह की खोज- इसरो, नासा और यूरोपी स्पेस एजेंसी २०२० तक शुक्र पर यान भेजने की तैयारी में हैं। ७२४ किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से हवाएं चलती रहती हैं शुक्र ग्रह पर।

बृहस्पति पर मिशन भेजने के बाद अब दुनिया की बड़ी अंतरिक्ष एजेंसियां शुक्र के राज खोलने में जुट रही है। नासा, यूरोपीय एजेंसी और इसरो शुक्र पर अंतरिक्ष यान भेजने की तैयारी कर रही हैं। इस मिशन में सूरज की गर्मी के पास काम करने लायक अंतरिक्ष यान बनाना बड़ी चुनौती है।

९० गुना ज्यादा गर्म - शुक्र के पास गंधक के बादल मौजूद होने से वहां का तापमान पृथ्वी से ९० गुना ज्यादा गर्म है। औसतन शुक्र का तापमान ४६० डिग्री रहता है। इस मिशन के लिए नासा के वैज्ञानिक कंप्यूटर चिप जैसी धातु का इस्तेमाल करेंगे। ऐसी धातु अधिक गर्मी में भी बिना पिघले वहां टिक पाएगी।

भारत मंगल तक पहुंच चुका है और अब शुक्र ग्रह पर पहुंचने की तैयारी कर रहा है। अगर भारत ऐसा करने में सफल रहा तो वो शुक्र पर पहुंचने वाला एशिया का पहला देश होगा।

हवा पहाड़ है रहस्यमयी- शुक्र को समझने के लिए लैंडर की जरूरत पड़ेगी। लैंडर ग्रह पर हवा व पहाड़ों की जांच करेगा। इससे पहले सोवियत संघ ने वेनेरा १३ नाम का लैंडर १९८२ में शुक्र पर भेजा था। लेकिन वह १२७ मिनट बाद खराब हो गया था। ऐसे में ऐसा यान बनाना होगा जो वहां की गर्मी में काम करें।

❋ दौड़ा दी लकड़ी की कार- बोस्निया के बैंजा लूका के एक बुजुर्ग इंजीनियर ने लकड़ी की कार बनाकर दौड़ा दी है। ७१ वर्षीय मोमिर बोजिक एक प्रतिष्ठित कार कंपनी के फैन हैं। उन्होंने इसी कंपनी के नाम की लकड़ी की कार बना दी। ५ हजार लकड़ी के टुकड़ों से बनाई गई यह कार दो साल में बनकर तैयार हुई है। इस कार में सभी पार्ट्स लकड़ी के लगे हैं, जो लगाए जा सकते हैं। हालांकि लकड़ी के कई पार्ट्स लगाए नहीं जा सकते हैं। लकड़ी की कार सड़कों पर उतारकर वह लोगों को पर्यावरण बचाने का संदेश देना चाहते हैं।

❋ ब्लैक होल को लेकर शुरुआती अवधारणा

ब्लैक होल का जिक्र यूं तो अल्बर्ट आइंस्टीन ने सापेक्षता के सिद्धांत में पहली बार किया था। लेकिन १७८३ में भू-विज्ञानी जॉन मिचेल द्वारा एक ऐसे भारी पिंड की अवधारणा की बात की गई थी, जिससे कि प्रकाश भी बचने से असमर्थ हो। इन्हें डार्क स्टार्स की संज्ञा दी गई। पहले आधुनिक ब्लैक होल की अवधारणा के उलट, ऐसा माना जाता था कि क्षितिज के पीछे की वस्तु का पतन नहीं हो सकता है। इसके बाद १९१५ में अल्बर्ट आइंस्टीन ने अपने सामान्य सापेक्षता के सिद्धांत को विकसित किया, वे पहले ही यह सिद्ध कर चुके थे कि गुरुत्वाकर्षण प्रकाश की गति पर वास्तव में प्रभाव डालता है। कुछ महीने बाद, कार्ल स्वार्जस्चिड ने कहा कि एक ब्लैक होल का अस्तित्व सिद्धांतत: संभव है। १९३० में, खगोलविद सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर ने सामान्य सापेक्षता का उपयोग करते हुए यह गणना की कि इलेक्ट्रॉन-डिजनरेट पदार्थ वाले एक गैर-चक्रित शरीर का सौर द्रव्यमान यदि १.४४ (चंद्रशेखर सीमा) से अधिक हुआ तो इसका पतन हो जाएगा।

ब्लैक होल की प्रकृति- इसे सिर्फ तीन स्वतंत्र भौतिक लक्षण होते हैं। द्रव्यमान, चार्ज और कोणीय गति। ये लक्षण

खास होते हैं, क्योंकि ये ब्लैक होल के बाहर से दिखाई देते हैं। सरलतम ब्लैक होल वह है जिसका द्रव्यमान है, लेकिन न तो चार्ज होता है और न ही कोणीय गति का होता है। विद्युत चुंबकीय बल की अपेक्षाकृत बड़ी ताकत के कारण, तारों के पतन से बननेवाले ब्लैक होल से अपेक्षा की जाती है कि वे तारों के न्यूट्रल चार्ज को बनाए रखेंगे। ब्लैक होल को सामान्यत: इनके द्रव्यमान के अनुसार वर्गीकृत किया जाता है।

❋ ठंड में क्यों खड़े हो जाते हैं रोंगटे- शरीर पर मौजूद हर बाल एक छोटी-सी मसल से जुड़ा होता है। वातावरण में ठंडक बढ़ते ही ये मसल्स सिकुड़ने लगती हैं। इसके चलते त्वचा पर भी खिंचाव उत्पन्न होता है और शरीर के खुले हिस्से जैसे हाथ-पैर के बाल खड़े हो जाते हैं, ताकि वे ठंड का असर कम कर पायें। इसे ही रोंगटे खड़े होना कहते हैं, जो असल में त्वचा पर ठंड बढ़ने से होनेवाली प्रतिक्रिया है।

❋ क्या होता है वायरल फीवर? - विषाणु के संक्रमण से होनेवाले बुखार को वायरल फीवर कहते हैं। वायरल बुखार के वायरस गले में सोये हुए निष्क्रिय रहते हैं। ठंडे वातावरण के संपर्क में आने, फ्रिज का ठंडा पानी, शीतल पेय पीने आदि से ये वायरस सक्रिय होकर हमारे प्रतिरक्षा तंत्र को प्रभावित कर देते हैं। यह बीमारी एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में बहुत आसानी तथा बड़ी तेजी से पहुंचती हैं। फैलने के बाद फ्लू एक-दो दिन तथा कभी-कभी कुछ घंटों में सक्रिय हो जाता है। शिशुओं के लिए वायरल और अधिक कष्टदायी होता है। इससे वे पीले तथा सुस्त पड़ जाते हैं। उन्हें सांस लेने तथा मां का दूध पीने में कठिनाई के साथ ही उल्टी-दस्त भी हो सकते हैं। इसके अलावा शिशुओं में निमोनिया, कंठशोथ और कर्णशोथ जैसी जटिलताएं भी पैदा हो जाती है। किसी अन्य रोग के साथ मिलकर वायरल बुखार रोगी की हालत को और भी खराब कर देता है। उदाहरण के लिए यदि खाँसी के रोगी बच्चे को वायरल हो जाए तो उसका तंत्रिका तंत्र भी प्रभावित हो सकता है। इसलिए पेचिश और क्षयरोग के मरीजों को इससे विशेष रूप से बचाना चाहिए।

❋ कोहरा- सर्दी के मौसम में सुबह और रात के समय बहुत कोहरा पड़ता है। कभी तो यह इतना ज्यादा हो जाता है कि आस-पास की चीजें भी दिखाई देनी बंद हो जाती हैं। कोहरा एक तरह से बादलों का ही रूप होता है। इसके बनने की प्रक्रिया भी बादलों जैसी ही होती है। बस फर्क है कि जहां बादल जमीन से ऊपर आकाश में होते हैं, वहीं यह कोहरा जमीन की तह के बिल्कुल करीब रहता है।

यह आमतौर पर ठंडी व नमी वाली हवा में बनता हैं ज्यादा ठंड होने पर जब हवा में नमी का स्तर बढ़ता है तो कोहरा तैयार होने लगता है। गर्म हवा की तुलना में ठंडी हवा वातावरण से ज्यादा नमी लेने की क्षमता रखती है। हवा यह नमी वाष्पन प्रक्रिया के द्वारा ही प्राप्त करती है। ठंडी के दौरान यह नमी हवा में सघनित होकर बहुत ही छोटी-छोटी बूंदों का रूप लेने लगती है जिससे कोहरा बनने लगता हैं। कोहरा जितना ज्यादा घना होता है हमारी देखने की क्षमता या दृश्यता का स्तर उतना ही कम होने लगता है। जब आसमान साफ होता है तो ज्यादा कोहरा पड़ता है और जब आसमान में बादल छाए रहते हैं, तब कोहरा कम पड़ता है।

ठंडी के दिन में देर रात और सुबह धरती के ऊपर धुएं जैसा आवरण छा जाता है इसे कोहरा (फॉग) कहते हैं। इसकी वजह से न केवल राहगीरों को बल्कि ट्रेन ड्राइवरों और एयरोप्लेन्स के पायलटों तक को रास्ता ठीक से नहीं दिखाई देता। कभी-कभी तो कोहरा इतना घना होता है कि हमें ड्राइंग रूम से मकान का मेन गेट तक नहीं दिखाई देता है।

हमारे चारों और उपस्थित हवा में जलवाष्प (वाटर वेपर) होती है, जिसे हम नमी कहते हैं। सदियों में पृथ्वी की सतह के पास की गर्म हवा में मौजूद जलवाष्प ऊपर मौजूद ठण्डी हवा की परतों से मिलकर जम जाती है। इस प्रक्रिया को संघनन (कंडेन्शन) कहते हैं। जब हवा में बहुत ज्यादा कंडेन्शन हो जाता है तो यह भारी होकर पानी की नन्हीं-नन्हीं बूंदों में बदलने लगती है। आसपास की अधिक ठंडी हवा के संपर्क में आने पर इसका स्वरूप धुएं के बाद जैसा बन जाता है इसी को मौसम वैज्ञानिक कोहरा बनना कहते हैं। औद्योगिक क्षेत्रों में कोहरा ज्यादा घना हो जाता है और इसे स्मॉग कहते है। स्मॉग स्मोक और फॉग से मिलकर बना शब्द है।

धुंध-धुंध भी कोहरे की तरह ही होती है, अंतर बस केवल इतना कि यह अधिक घनी हो जाती है। जहां कोहरा हमें जाड़ में दिखायी देता है वहीं धुंध बरसात के दिनों में हवा में नमी की मात्रा बढ़ जाने के कारण उत्पन्न होती है। धुंध पहाड़ियों और जंगलों वालों क्षेत्रों में अधिक बनती है।

हिमपात- कोहरे में उपस्थित पानी के कणों के कारण आर-पार देखना मुश्किल हो जाता है। जब यह प्रक्रिया खूब ठण्डे पहाड़ी इलाकों में होती है तब पानी की बूंदें जमकर बर्फ के नन्हें क्रिस्टल्स में बदल जाती है। इसी को हम हिमपात अथवा बर्फ गिरने के नाम से जानते हैं।

छांटा भी जा सकता है कोहरा- बड़े शहरों में कोहरा गांव व कस्बों में दिखानेवाली कोहरे की परतों की अपेक्षा अधिक मोटा होता है। कारण यह है कि बड़े शहरों की हवा में धूल और धुएं के कण अधिक होते है जो कोहरे में उपस्थित पानी के कणों से मिलकर इसे गहरा बना देते हैं। कोहरे वाले स्थान पर सिल्वर आयोडाइड या कैल्शियम क्लोराइड का छिड़काव करने से कोहरे में मौजूद पानी बूंदों के रूप में जमीन पर गिर जाता है और कोहरा छंट जाता है।

बिना सर्दियों के कोहरा- समुद्र में सफर करनेवाले नाविक अक्सर कोहरे से दो-चार होते हैं। समुद्र में पानी की गर्म और ठण्डी धाराओं के सतह के ऊपर की हवा से टकराने से कोहरा बन जाता है।

जीवन के लिए वरदान कोहरा रेगिस्तानी इलाकों में पशु-पक्षियों और वनस्पति के लिए जीवनदाता बनकर आता है। बाजा (कैलिफोर्निया), कैनरी आईलैण्ड, केव वर्डे आईलैण्ड, नामिब डेजर्ट, पेरू और चिली दुनिया के कुछ ऐसे स्थानों में हैं जहां वर्षभर सूखा पड़ा रहता है। कोहरे के कारण इन स्थानों में हवा में पानी की मात्रा बढ़ जाती है। इस पानी के कारण रेगिस्तानी पशु-पक्षी तथा पेड़-पौधे मजे से जीवित रह लेते हैं। इन क्षेत्रों के निवासियों ने ऐसी तकनीकें विकसित की हैं जिनसे कोहरे से पानी एकत्र किया जा सकता है।

❋ इन्द्रधनुष- सूर्य का प्रकाश जो देखने में सफेद होता है। सूर्य के प्रकाश में सात रंग होते हैं- लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, जामुनी और बैंगनी। वही सात रंग लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, जामुनी और बैंगनी इन्द्रधनुष में दिखाई देंगे।

प्रिज्म सूर्य के सातों रंगों को अलग-अलग करके दिखाता है। वर्षा की बूंदें भी प्रिज्म का काम करती हैं?

बारिश के पश्चात् वायुमंडल में नन्ही-नन्ही पानी की बूंदें काफी मात्रा में होती हैं। दिखने में सफेद सूर्य का प्रकाश बूंदों में पहुंचता है तो वह सात रंगों में बंट जाता है। इस क्रिया को वर्ण-विक्षेपण कहते हैं। पानी की नन्ही बूंदों के पीछे वाले हिस्से से सातों रंगों की किरणें सफेद किरण के रूप में प्रवेश करके पूर्ण परावर्तित होकर सातों अलग-अलग रंगों की किरणें एकसाथ पट्टीनुमा हमारी आंखों तक पहुंचती हैं और हमें इन्द्रधनुष के रूप में दिखाई देती है।

इन्द्रधनुष गोल भी तो दिखाई देता है, इसकी वजह यह है कि सूर्य गोल है, इसलिए इन्द्रधनुष भी गोल दिखाई देता है।

ज्यादातर इन्द्रधनुष उसी समय नजर आते हैं जब हम वर्षा के बाद वायुमंडल में उपस्थित जल की बूंदें और सूरज के बीच में हों। मतलब यह कि जल की बूंदों का समूह हमारी आंखें के सामने और सूरज हमारे पीछे यानी कमर की ओर होना चाहिए। इन्द्रधनुष बनने और दिखाई देने के लिए कुछ और बातों का भी होना जरूरी है। एक तो सूरज और हमारी आंखों एवं इन्द्रधनुष का केन्द्र बिंदु एक रेखा में हो। इन्द्रधनुष दिखाई देने और बनने के लिए बारिश के बाद सूर्य का निकलना तो जरूरी है ही।

❋ राजस्थान में सुधा माता नामक एक ऐसा पर्वत है, जहां खंडित मूर्तियों को रखना पवित्र माना जाता है।

❋ याहू डॉट कॉम का नाम पहले जेरीज गॉइड टू वर्ल्ड वाइड वेब था अप्रैल १९९४ में इसे बदल कर याहू डॉट कॉम कर दिया गया।

❋ आलू की खेती में विश्व में तीसरा स्थान रखनेवाला भारत १६वीं शती से पहले इसके विषय में जानता तक नहीं था।

❋ नीदरलैंड्स के लोग दुनिया में सबसे ऊंचे होते हैं। यहां पुरुषों की औसत ऊंचाई पांच फुट साढ़े ग्यारह इंच है, लेकिन दक्षिणी नीदरलैंड में यह औसत एक इंच कम है।

❋ च्यूइंग गम को हमारा पाचन तंत्र यानी डाइजेस्टिव सिस्टम पचा नहीं सकता। पर इसके बावजूद अगर कभी एकाध बार गलती से यह पेट में चली जाए तो इसका कोई नुकसान नहीं है, क्योंकि यह आंतों के रास्ते बाहर निकल जाती है। पर अगर कई दिनों तक लगातार कोई च्यूइंग गम निगलता रहे या च्यूइंग गम का सामान्य से काफी बड़ा टुकड़ा निगल जाए तो यह मुसीबत की वजह बन सकती है। इससे कब्ज की समस्या भी हो जाती है। अगर बहुत छोटे शिशु च्यूइंग गम निगल लें तो उन्हें सांस लेने में भी परेशानी हो सकती है।

❋ रोबोट- जापान तो दुनिया के आधे रोबोट्स का घर है।

रोबोट के पार्ट्स - रोबोट विभिन्न तरह के मैटीरियल्स से बनाये जाते हैं, जिसमें मेटल और प्लास्टिक आदि का इस्तेमाल किया जाता है। रोबोट के तीन हिस्से होते हैं।

१) कंट्रोलर- जिस तरह आपका दिमाग होता है, जो कंप्यूटर प्रोग्राम से चलाया जाता है, जहां से इसे कमांड मिलता है।

२) मेकेनिकल पार्ट- रोबोट को चलने, मुड़ने, किसी सामान को उठाने जैसे कामों में मदद करनेवाले मोटर्स, ग्रिपर्स, व्हील्स और गियर्स आदि मेकेनिकल पार्ट्स हैं, जो हवा, पानी या इलेक्ट्रिसिटी से पावर लेते हैं।

३) सेंसर्स- इनसे रोबोट को परिवेश के बारे में जानकारी मिलती है। इसकी मदद से रोबोट माप, आकार, चीजों के बीच की दूरी और अन्य चीजों के बारे में जान पाते हैं। काफी सारे रोबोट को इस बात के बारे में पता चल जाता है कि किसी भी चीज को पकड़ने के लिए कितनी ताकत लगानी है।

❋ फुटबॉल- सॉकर शब्द असल में इंग्लैंड से आया है। आज जिस तरह से फुटबॉल खेली जाती है उसे यह नया रूप भी इंग्लैंड ने ही दिया है। इंग्लैंड में फुटबॉल के दो खेल प्रचलित हैं। रग्बी फुटबॉल और एसोसिएशन फुटबॉल। रग्बी फुटबॉल को संक्षिप्त में रॅगर कहा जाने लगा। इसी तरह एसोसिएशन फुटबॉल को असॉक कहने लगे। असॉक ही धीरे-धीरे सॉकर में तब्दील हो गया। असॉक से सॉकर हो जाने का एक कारण यह भी था कि सॉकर बोलने में ज्यादा आसान था।

जब एसोसिएशन फुटबॉल शब्द उत्तरी अमेरिका में पहुंचा तो वहां ग्रिडिरॉन फुटबॉल प्रसिद्ध हो चुका था। पर किसी भी तरह का भ्रम न पैदा हो इसलिए अमेरिका के फुटबॉल प्रेमियों ने भी फुटबॉल को सॉकर कहना स्वीकार कर लिया।

ओलंपिक के पांच छल्ले- ओलंपिक के पांच छल्ले इन प्रतियोगिताओं में भाग लेनेवाले पांच महाद्वीपों को व्यक्त करते हैं। ये पांच महाद्वीप हैं ऑस्ट्रेलिया, अफ्रीका, अमेरिका, एशिया और यूरोप। ऊपर के तीनों छल्लों का रंग बाईं से दाहिं तरफ नीला, काला और लाल होता है। नीचे के दो छल्लों का रंग बाईं से दाईं तरफ ही पीला और हरा होता है।

* चांदी के सिक्कों का विशालतम संग्रह

चांदी के सिक्कों का सबसे विशाल संग्रह मैक्सिको के एक व्यक्ति के पास है जिसकी पुष्टि गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स के अधिकारियों ने १ जुलाई २००८ को की थी। इस व्यक्ति के पासचांदी के १६०० सिक्के हैं जो अपना नाम इस डर से सार्वजनिक नहीं करना चाहता है कि उसका यह संग्रह चोरी न हो जाए या उस पर हमला न हो जाए।

* एवरेस्ट पर सर्वाधिक बार विजय- नेपाल के अपा शेरपा ने १९ मई २००६ को १६वीं बार माऊंट एवरेस्ट की चोटी पर विजय हासिल की थी। वह विश्व के पहले ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने ८८४८ मीटर की ऊंचाईवाली सबसे ऊंची पर्वत की चोटी माऊंट एवरेस्ट पर सफलतापूर्वक इतनी बार विजय हासिल की। आमतौर पर माऊंट एवरैस्ट पर जानेवाले पर्वतारोही अपने साथ ऑक्सीजन लेकर ही जाते हैं परन्तु कुछ ऐसे दुस्साहसी भी हैं जिन्होंने बिना ऑक्सीजन एवरैस्ट पर विजय हासिल की है। इटली के रीनहोल्ड मैस्नर तथा आस्ट्रिया के पीटर हेबलर ने ८ मई १९८७ को पहली बार बिना सप्लीमेंटल ऑक्सीजन माउंट एवरैस्ट पर चढ़ाई की थी। इस कारनामे को कुछ प्योरिस्ट पर्वतारोहियों ने माऊंट एवरैस्ट की पहली वास्तविक चढ़ाई करार दिया था।

के-२ पाकिस्तान और चीन की सीमा पर कराकोरम पर्वत श्रृंखला में स्थित है। इसकी ऊंचाई ६८११ मीटर है और यह विश्व का दूसरा सबसे ऊंचा पर्वत है। के २ पर पहली सफल चढ़ाई ३१ जुलाई १९५४ को इटली के अशिले कम्पैग्रोनी तथा लिनो लेसडेली द्वारा की गई थी। ये दोनों आर्दितो देसियो के नेतृत्व वाले एक इतालवी अभियान के सदस्य थे।

* घास जो सूख जाएगी परंतु पीली नहीं पड़ेगी - किसी भी पेड़ के पत्ते झड़ने से पहले पीले पड़ जाते हैं। गर्मियों में मैदान की घास सूखकर पीली/मटमैली हो जाती है। परंतु एक घास है जो सूख जाएगी पर पीली नहीं पड़ेगी। इसके पत्ते सूखने के बाद भी हरे बने रहते हैं। यह घास है फेस्टुका प्रेटेन्सिस। यूरोप में कई स्थानों पर चारागाह में इसे विशेष तौर पर लगाया जाता है।

दरअसल पत्तियों का हरा रंग क्लोरोफिल नामक पदार्थ के कारण होता है। क्लोरोफिल वह पदार्थ है जो सूर्य की रोशनी को सोखकर उसकी ऊर्जा का उपयोग स्टार्च के निर्माण करता है। क्लोरोफिल की यह क्रिया सारे विश्व के भोजन का प्राथमिक स्रोत है।

जब पत्तियां मरने को होती है या झड़ने की होती है तो उनमें एक अजीब क्रिया होती है। उनमें मौजूद क्लोरोफिल का विघटन हो जाता है तथा विघटन से बने पदार्थ पौधे के अन्य भागों में पहुंच जाते हैं। क्लोरोफिल का विघटन होने के कारण ही पत्तियां हरी न रहकर पीली-धूसर पड़ जाती हैं। परंतु फेस्टुका प्रेटेन्सिस में यह क्रिया नहीं होती। इस घास में वह एन्जाइम ही नहीं होता, जो क्लोरोफिल का विघटन करता है।

❋ दुनियाभर में हर साल कई तरह के रिकॉर्ड बनाए जाते हैं। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में इन सभी को जगह दी जाती है। कई लोग पुराने रिकॉर्ड्स को तोड़ते हैं, तो कुछ नए तरह का रिकॉर्ड बनाते हैं।

आइसक्रीम स्कूप- दुनिया की सबसे बड़ी आइसक्रीम स्कूप का वजन १३६५ किलोग्राम था। २८ जून २०१४ को अमेरिका के विस्कोन्सिन के केडरबर्ग में कैंप्स एलएलसी ने स्ट्रॉबेरी फ्लेवर की इस विशालकाय आइसक्रीम को बनाया था। यह स्ट्रॉबेरी फ्लेवर आइसक्रीम ५ फुट ६ इंच लंबी और ६ फुट २ इंच चौड़ी थी। केडरबर्ग स्ट्रॉबेरी फेस्टिवल में तैयार इस आइसक्रीम के स्वाद का लुत्फ हजारों लोगों ने पूरे सप्ताह तक मुफ्त में उठाया था।

❋ जेट इंजन- सभी जेट इंजनों में ईंधन होता है जो जलने पर अत्यधिक मात्रा में गर्म गैसें तीव्रता से छोड़ता है। यह एक विस्फोट की तरह होता है। यह गर्म गैसें पीछे की ओर अत्यधिक तीव्र शक्ति से निकलती हैं और इंजन प्रतिक्रिया स्वरूप समान शक्ति से आगे की ओर धकेला जाता है।

प्रत्येक क्रिया की एक प्रतिक्रिया अवश्य होती है- न्यूटन ने काफी समय पहले यह सिद्धांत दिया था जिसे न्यूटन का गति का तीसरा नियम (थर्ड लॉ ऑफ मोशन) कहा जाता है। जेट इंजन इसी सिद्धांत पर कार्य करता है। इसकी कार्य प्रणाली की तुलना एक तैराक से की जा सकती है जो पानी को पीछे की ओर ढकेलते हुए आगे बढ़ता है। यदि न्यूटन के नियम के अनुसार देखें तो इसमें क्रिया है पानी को पीछे धकेलना और प्रतिक्रिया है तैराक का आगे बढ़ना।

आगे की ओर धकेलने वाली इस शक्ति को थ्रस्ट कहा जाता है। इस गतिविधि के बारे में जानने के लिए हम हवा से भरे एक गुब्बारे की गति का निरीक्षण कर सकते हैं। गुब्बारे में से जब हवा एकदम छोड़ी जाती है तो यह विपरीत दिशा में तेजी से उड़ जाता है। ऐसा थ्रस्ट के कारण ही होता है।

रॉकेट्स भी इसी सिद्धांत पर काम करते हैं। जेट तथा रॉकेट्स में मुख्य अंतर ईंधन के तौर पर ऑक्सीजन का स्रोत है। जेट इंजन अपने आसपास से ऑक्सीजन लेता है। इसके लिए इसमें एक इनटेक नोजल लगी होती है परन्तु रॉकेट में उसकी अपनी ऑक्सीजन होती है जो या तो टैंक में मौजूद तरल रूप में होती है या फिर ईंधन के रूप में ठोस।

जेट इंजन में सोखी गई हवा को संकुचित करने के लिए कम्प्रैशर लगे होते हैं। कम्प्रैशन का प्रयोग इंजन के भीतर विस्फोट की शक्ति को बढ़ाने के लिए किया जाता है।

❋ हवा बहने का कारण- पवन साधारण रूप में पृथ्वी के ऊपर हवा का बहना है परंतु हवा के गतिशील होने कारण है। यह तापमान में होनेवाला परिवर्तन है जो हर तरह की हवाओं के चलने का कारण बनता है। जब भी हवा गर्म होती है वह फैलती है। इससे यह हल्की हो जाती है तथा फिर ऊपर उठ जाती है। जब यह ऊपर उठती है इसका स्थान लेने के लिए ठंडी हवा वहां पहुंच जाती है और हवा की यही गतिशीलता पवन या विंड कहलाती है।

पवन दो तरह की होती है- एक तो हवाओं की विश्वव्यापी प्रणाली का भाग तथा दूसरी स्थानीय हवाएं। विश्व की प्रमुख पवन प्रणाली भूमध्य रेखा पर प्रारंभ होती है जहां पर सूर्य की गर्मी अधिकतम होती है। यहां गर्मी ऊंचाई की ओर उठती है तथा उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुवों की ओर धकेल दी जाती है। जब यह ध्रुव तक अपनी एक तिहाई यात्रा कर चुकी होती है, यह ठंडी हो जाती है तथा धरती की ओर वापस गिरना प्रारंभ कर देती है। इसमें से कुछ हवा दोबारा गर्म होने के लिए भूमध्य रेखा की ओर चल पड़ती है तथा कुछ ध्रुवों की ओर अपना सफर जारी रखती है। ये ग्लोबल या

विश्वव्यापी हवाएं, जिन्हें प्रिवेलिंग विंड्स कहा जाता है, आमतौर पर स्थानीय हवाओं द्वारा मोड़ दी जाती हैं जो विभिन्न दिशाओं से बहती हैं। स्थानीय हवाओं के बनने का कारण ऊंचे दबाव वाली ठंडी हवाओं के पिडों का आना या कम दबाव वाली गर्म हवाओं के पिंडों का आना हो सकता है। स्थानीय हवाएं आमतौर पर अधिक समय तक नहीं बनी रहतीं। कुछ घंटों बाद या अधिक से अधिक कुछ दिनों बाद प्रिवेलिंग विंड पैटर्न फिर से उनका स्थान ले लेता है। अन्य स्थानीय हवाओं के बनने का कारण रोज-रोज भूमि का गर्म तथा ठंडा होना है। लैंड तथा सी ब्रजेज अर्थात भूमि तथा समुद्री पवनें इस तरह की हवाओं के उदाहरण हैं।

✲ एलईडी सेमीकंडक्टर डायोड होता है, जिसमें विद्युत धारा प्रवाहित करने पर यह प्रकाश का उत्सर्जन करता है। एलईडी कई प्रकार की होती हैं। इनमें मिनिएचर, फ्लैशिंग, हाई पावर, मल्टी कलर, अल्फान्यूमेरिक एलईडी, ओएलईडी प्रमुख है। मिनिएचर एलईडी का इस्तमाल मुख्यत: इंडीकेटर में किया जाता है। लैपटॉप, नोटबुक, सेल्युलर फोन, डीवीडी प्लेयर, वीडियो गेम, पीडीए में इस्तेमाल होनेवाली ओएलईडी (आर्गेनिक लाइट एमिटिंग डायोड) को एलसीडी और सीआरटी टेक्नोलॉजी से बेहतर माना जाता है। इसकी खासियत यह है कि इसे किसी प्लास्टिक फिल्म तक में लगाया जा सकता है।

इतिहास- निक को एलईडी के पितामह के तौर पर जाना जाता है। एम.जॉर्ज क्रॉफर्ड ने पीली और लाल-नारंगी एलई डी की खोज की। इसका इस्तेमाल घड़ी, कैल्कुलेटर, टेलीफोन, टीवी और रेडियो में किया जाता है। ऊर्जा की बचत में एलईडी उपयोगी होते हैं।

इनका आकार छोटा होता है, जिसकी वजह से इन्हें प्रिंटेड सर्किट बोर्ड में लगाने में ज्यादा दिक्कत नहीं होती। दूसरे स्त्रोतों की तरह एलईडी ऊष्मा का विकिरण कम करते हैं। एलईडी का जीवनकाल काफी होता है। सामान्यत: इनका जीवनकाल ३५००० घंटे से ५०००० घंटे होता है। दूसरे फ्लोरोसेंट लैंप की तरह एलईडी में मर्करी नहीं होती, जिससे इसके जहरीले होने की संभावना कम ही होती है।

✲ डोनाल्ड डक- डोनाल्ड डक वॉल्ट डिज्नी द्वारा रचित एक एनिमेटेड (कार्टून) पात्र है, जिसका जन्मदिन हर साल ९ जून को मनाया जाता है।

डोनाल्ड डक १९३४ में वाइज लिटिन हेन नाम की मूवी में पहली बार दिखा था। जिसका पूरा नाम डोनाल्ड फॉउटलेरी डक था। डोनाल्ड डक के अनोखी आवाज के श्रेय क्लेरेंश नैश को जाता है, नैश १९३४-१९८३ तक डोनाल्ड की आवाज थे।

✲ अंदमान के कुछ आदिवासी समूहों में बच्चे का जन्म होने पर उसकी जीभ के बीच में गर्म सीखचों से छेद कर उसमें हाथी दांत का रिंग पहना दिया जाता है। यह रिंग बच्चे की जीभ में तीन साल तक रहता है। उसके बाद इसे हटाकर उस बच्चे के बच्चे के लिए सुरक्षित रख दिया जाता है। जो रिंग बहुत से बच्चों को पहनाया हुआ होता है, उसे लकी माना जाता है और घर के दूसरे सदस्य उसकी पूजा करते हैं।

✲ तेरहवीं सदी में बड़े पैमाने पर घड़ियां बनी थीं। उस समय की कोई घड़ी आज अस्तित्व में नहीं है।

✲ बेबीलोन सभ्यता के खगोलविदों ने ज्योतिष की बारह राशियों की खोज की थीं।

✲ १८४० में प्रकाशित अमेरिकी पुस्तक दि बर्ड्स ऑफ अमेरिका आज तक बिकी सबसे महंगी पुस्तक है। मार्च २००० में यह पुस्तक ८,८०२,५०० डॉलर की बिकी थी।

❋ लोटस टेंपल - लोटस टेंपल मंदिर दक्षिण दिल्ली के नेहरू प्लेस के पास है। इसका नाम है लोटस टेंपल। यह कमल के फूल की तरह दिखता है। लोटस टेंपल यहां आनेवाले लोगों को शांति और पवित्रता का वातावरण प्रदान करता है, जो उन्हें अध्यात्म की ओर मोड़ता है। इस मंदिर को यह रूप ईरानी वास्तुकार फरीबर्ज सहबा ने दिया है। मंदिर १९८६ में बनकर तैयार हुआ। इस मंदिर की खासियत है इसके चारों ओर फैले विशाल घास के मैदान। शाम के समय तो मंदिर और भी सुंदर दिखने लगता है। अंधेरा होने पर यहां का लाइट-अरेंजमेंट इसकी चमक को और बढ़ा देता है। राष्ट्रीय फूल कमल को मूर्त रूप देते लोटस टेंपल की बड़ी विशेषता है- इसके नौ गेट और नौ कोने। यह मंदिर चारों ओर से नौ बड़े जलाशयों से घिरा हुआ है। ये जलाशय न केवल इस मंदिर की सुंदरता को बढ़ाते हैं, बल्कि मंदिर को ठंडा भी रखते हैं।

❋ छींकते समय आपके दिल की धड़कन एक मिली सेकेंड के लिए रुक जाती है तथा फिर से स्वचालित होती है।

❋ १७७० में बना था राइटिंग कम्प्यूटर- स्विट्जरलैंड के घड़ी निर्माता पियारे जेक्वेट ड्रोज ने वर्ष १७७० में बेटे हेनरी लुईस की मदद से अविश्वसनीय रोबोट बनाया था। उसे उन्होंने नाम दिया द राइटर। जेक्वेट की पहचान उस दौर में बहुत अच्छे मशीन डिजाइनर के रूप में थी उन्होंने लकड़ी की टेबल पर बिना जूते पहने एक बच्चे जैसी आकृति को हाथ में कलम देकर बिठा दिया था। करीब ६००० अलग-अलग सामग्री से उन्होंने प्रोग्रामेबल राइटिंग मशीन बना डाली थी।

❋ क्रियॉन्स- वैक्स क्रेयॉन्स कितने कूल होते हैं न। न तो स्केच पेन की तरह खराब होते हैं, न ही पेंसिल कलर्स की तरह इन्हें बार-बार शार्पनर से छीलना पड़ता है।

१९०० के शुरुआती दौर की। मालुम है, एडिवन बिनी और हैरॉल्ड स्मिथ दो कजिन थे जिन्होंने क्रयोला नाम से एक क्रेयॉन बनानेवाली कम्पनी बनाई। १९०३ में क्रयोला का पहला क्रेयॉन बॉक्स मार्केट में आया।

ऑयल वाला चॉक- बच्चों तक पहुंचने से पहले क्रेयॉन्स आर्टिस्ट ही इस्तेमाल करते थे। तब न तो ये बहुत मशहूर थे और न ही इनका अच्छा इस्तेमाल हो पाया था। बिनी और स्मिथ ने इन्हें बच्चों के लए तैयार करने का फैसला लिया। ये पहले नॉन टॉक्सिक क्रेयॉन्स थे जो ऑयल से बने थे। इसलिए बिनी की पत्नी एलिस ने इसका नाम क्रयोला रखा। फ्रेंच में क्रया मतलब चॉक और ओला मतलब ऑयल होता है यानी ऑयल वाली चॉक।

आज क्रेयॉन्स में १२० कलर्स आते हैं, पर इनकी शुरुआत सिर्फ आठ रंगों से हुई थी। ये रंग हैं काला, नीला, भूरा, हरा, नारंगी, बैंगनी, लाल और पीला। बाद में १९५७ तक ४० नए क्रेयॉन कलर्स आ गए थे।

❋ तारों की चमक तथा उनका रंग वास्तव में उनके तापमान पर निर्भर करता है। जितना अधिक तारे का तापमान होगा उतना ही अधिक वह चमकदार होगा। तारे के रंग तथा तापमान के मध्य के संबंध से हमें तारे की चमक निर्धारित करने में सहायता मिलती है। जिन तारों का रंग लाल या संतरी होता है वे तारे पीले या हरे रंग के तारों से अधिक ठंडे होते हैं। सफेद तारे अत्यधिक गर्म होते हैं, जबकि पीले या हरे तारे और नीले तारों का सतह का तापमान सर्वोच्च होता है।

❋ सुरक्षाकर्मी क्यों पहनते हैं काला चश्मा?

धूप हो या न हो, बारिश हो या आंधी- तूफान, सेलिब्रिटीज या नेताओं की सुरक्षा के लिए तैनात सुरक्षाकर्मी हर वक्त काला चश्मा पहने रहते हैं। जब भी कोई नेता भाषण दे रहे होते हैं या रैली में जाते हैं, उनके पीछे खड़े बॉडीगार्ड यानी सुरक्षाकर्मी काला चश्मा लगाए रहते हैं।

सेलिब्रिटीज की सुरक्षा की जिम्मेदारी होती है सुरक्षाकर्मी पर। ऐसे में उन्हें अपनी आंखों को चौकन्ना रखना पड़ता है। आसपास की गतिविधियों पर नजर गड़ाए रहना पड़ता है। इस तरह से देखा जाए तो उनकी आंखें उनके लिए किसी हथियार से कम नहीं होती। जिस प्रकार वे अपने हथियारों को संभालकर और छिपाकर रखते हैं, उसी प्रकार उन्हें अपनी आंखों को भी ढककर रखना होता है, जो सिर्फ काले चश्मे के द्वारा ही संभव है। काले चश्मे से वे अपनी आंखों को स्वस्थ और साफ भी रखते हैं। अगर अचानक कहीं विस्फोट हो जाए या गोलीबारी होने लगे, इस स्थिति में आंखें अपने आप कुछ सेकंड के लिए बंद हो जाती हैं। लेकिन सुरक्षाकर्मियों को हर हाल में अपनी आंखें खोलकर रखना होता है, ताकि सेलिब्रिटीज को कोई नुकसान न पहुंचे। ऐसे में चश्मा ही उनके लिए मददगार साबित होता है।

❊ वायलिन - पश्चिमी आर्केस्ट्रा में वायलिन कमानी से बजानेवाले तारवाले वाद्य यंत्रों में प्रमुख है तथा सबसे ऊंचा दर्जा रखती है। ऐसे वाद्य यंत्रों के परिवार में वायोला, सेलो तथा डबल बॉस भी शामिल हैं। मध्यकाल की वायलिन, रेबेक तथा लीरा डा ब्रासियो से विकसित हुई वायलिन लगभग १५०० ईस्वी में सामने आई जिसके २०० वर्ष बाद वायोला का जन्म हुआ। पहले पहल की वायलिन में चार तारें होती थीं जिन्हें पांचवे सुर में ट्यून किया गया होता था। उसकी आकृति कमरदार (वेस्टेड) जिसके कंधे गोलाई लिए हुए, साउंड होल (छिद्र) अंग्रेजी के अक्षर एक की आकृति लिए हुए तथा इसमें कोई रीड नहीं होती थी। इन वर्षों के दौरान इस आकृति में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ। वायलिन बनाने का कार्य १६वीं शताब्दी में इटली में प्रारंभ हुआ परन्तु १७वीं तथा १८वीं शताब्दी के दौरान सत्रादिवारी तथा गारनेरी जैसे वाद्ययंत्र निर्माताओं के साथ यह कार्य फला-फूला।

१८वीं और १९वीं शताब्दी के दौरान वायलिन के तार पहले हो गए और उन्हें कस कर या अच्छी तरह खींचकर लगाया जाने लगा। अच्छा झुकाव तथा पूर्ण सशक्त आवाज के लिए अधिक ऊंची गोलाईवाला एक ब्रिज इसमें शामिल किया गया। वायलिन को कमानी से बजाया जाता है तथा इसे बाजू पर पकड़ा जाता है। परन्तु तार को खींचने की पिजिकाटो तकनीक गिटार की तरह का आकर्षक प्रभाव पैदा करती है।

वायोला- मूल रूप से किसी भी कमानी से बनाए जानेवाले तार वाद्ययंत्र को वायोला के नाम से ही पुकारा जाता है परन्तु अब यह परिभाषा वायलिन परिवार के केवल आल्टो (मर्दाना स्वर पैदा करनेवाले) सदस्य पर लागू होती है। यद्यपि इसकी आकृति वायलिन से मिलती है। यह आकार में बड़ा होता है तथा इसका स्वर सुरीला होता है। इसका विकास हैडिन तथा लायनेल टेर्टिस तथा विलियम प्राइमरोज ने वाद्ययंत्र की महत्ता तथा सुरीले स्वर की विशेषता को २०वीं शताब्दी में प्रचारित किया।

वायलिन सेलो- सेलो के नाम से लोकप्रिय वायलिन सेलो वायलिन परिवार का बास सदस्य है तथा इसे एक खूंटी की सहायता से फर्श पर टिकाया जाता है। इसे वायलिन के मुकाबले छोटी तथा मोटी कमानी से बजाया जाता है। १७वीं शताब्दी में सेलो को केवल बकास लाइन बजाने के लिए आर्केस्ट्राज तथा चैम्बर संगीत में शामिल किया गया परन्तु १८वीं शताब्दी के प्रारंभ तक यह अपनी बहुमुखी प्रतिमा तथा एक्सप्रैसिव टोन के कारण एक लोकप्रिय एकल वाद्ययंत्र बन गया।

❊ मैप बनाने की कला को कार्टोग्राफी कहा जाता है। प्राचीन काल में चीन की कार्टोग्राफी सबसे उन्नत थी। यूनान में भी इस कला का काफी प्रयोग होता था। दुनिया का सबसे पहला मैप २३०० ईसा पूर्व में बेबीलोन में मिट्टी से बनाया था।

मध्यकाल में यूरोप में यह कला प्रचलित थी। इस दौरान ज्यादातर मैप धार्मिक भावनाओं को केंद्र में रखकर बनाए जाते थे। उस दौरान टी-ओ मैप का सबसे अधिक प्रचलत था। इस मैप में येरूसलम को धरती का केन्द्र दिखाया गया था। सिसली जो इटली में पड़ता है के राजा रोजर-द्वितीय के दरबार में अल इदरीसी नाम के एक विद्वान थे। उन्होंने विश्व का मैप बनाया। यह १२वीं शताब्दी की बात है।

❋ ओपरा विनफ्रे ने जब पहली बार टॉक शो शुरू किया तब वे ३१ वर्ष की थीं। बाद में उनका कार्यक्रम सबसे ज्यादा देखे जानेवाले कार्यक्रम के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

❋ जब एडमंड हिलेरी ने माउंट एवरेस्ट पर कदम रखे थे, तब उनकी उम्र ३३ वर्ष थी।

❋ मार्टिन लूथर किंग (जूनियर) ने जब आई हैव अ ड्रीम नामक भाषण लिखा, तब उनकी उम्र ३४ वर्ष थी। भौतिकी के लिए नोबल पुरस्कार के नामांकन के समय मेरी क्यूरी की उम्र ३५ वर्ष थी।

❋ अपने बनाए हवाई जहाज द्वारा विश्व में सबसे पहली सफल उड़ान भरने वाले ऑर्विल व विब्लर राइट बंधु क्रमश: ३२ व ३६ वर्ष के थे। उन्होंने विमान की उड़ान के लिए आवश्यक शक्ति व नियंत्रण आदि को सुचारू रूप से नियोजित कर, उड़ान भरने में सफलता हासिल की।

❋ प्रसिद्ध चित्रकार विसेंट वैन गॉङ का ३७ वर्ष की उम्र में निधन हो गया। उस समय लोग उनके बारे में ज्यादा नहीं जानते थे लेकिन आज वे अपने चित्रों की बदौलत अमर हो गए हैं। आज उनके द्वारा बनाए गए चित्रों का मूल्य करोड़ों में आंका जाता है।

❋ नील आर्मस्ट्रॉंग ने चंद्रमा पर कदम रखे, तब उनकी आयु ३८ वर्ष थी।

❋ मार्क ट्वेन ने एडवेंचर्स ऑफ टॉम स्वॉयर लिखा था, तब उनकी आयु ४० वर्ष थी। ४९ वर्ष की आयु में उन्होंने एडवेंचर्स ऑफ इकलबेरी फिन नामक उपन्यास लिखकर पूर्ण किया।

❋ क्रिस्टोफर कोलंबस ने जब अमेरिका की खोज की, तब वे ४१ वर्ष के थे। जब रोजा पार्क ने गोरे यात्री को बैठने के लिए सीट देने के बसचालक के आदेश का विरोध किया, तब उनकी उम्र ४२ वर्ष थी। इसके बाद ही अमेरिका में सभी के लिए समान अधिकारों के संबंध में आंदोलन की शुरुआत हुई।

❋ जॉन एफ. केनेडी अमेरिका के राष्ट्रपति बने तब उनकी उम्र ४३ वर्ष थी।

❋ फोर्ड कंपनी की स्वचालित मोटर कार के मॉडल फोर्ड टी ने सड़कों पर दौड़ना शुरू किया तब हेनरी फोर्ड की आयु ४५ वर्ष थी।

❋ सुजान कोलिंस ने द हंगर गेम्स नामक उपन्यास लिखा तब उनकी उम्र ४६ वर्ष थी।

❋ अब्राहम लिंकन ५२ वर्ष की आयु में अमेरिका के राष्ट्रपति बने।

❋ चार्ल्स डार्विन ने अपना शोध निबंध द ओरिजिन ऑफ स्पीसीज लिखा, तब वे ५० वर्ष के थे।

❋ प्रसिद्ध चित्रकार लियोनार्डो दा विंची ने जब अपना विश्वप्रसिद्ध चित्र मोनालिसा बनाया था, तब वे ५१ वर्ष के थे।

❋ मैकडोनाल्ड की फ्रेंचाइजी देने का निर्णय, इस व्यवसाय के लिए अभूतपूर्व ऊंचाइयों को छूनेवाला साबित हुआ। इस निर्णय के समय रे क्रॉक्स की आयु ५३ वर्ष थी।

❋ थियोडोर गिसेल ने डॉ. सुस के नाम से बच्चों के लिए चित्रोंवाली पुस्तक द कैट इन द हैट लिखी, तब वे ५४ वर्ष के थे।

❋ चेस्ले सुलेनबर्गर (तृतीय)/सुली नामक रिटायर्ड एयरलाइन कैप्टन ने २००९ में, अमेरिका में, इंजन की खराबी के कारण गिरते हुए यात्री विमान को हडसन नदी पर सफलतापूर्वक उतारकर, उसमें बैठे १५५ यात्रियों की जान बचाई थी उस समय उनकी उम्र ५७ वर्ष थी।

❋ कर्नल हालैंड सैंडर्स ने केएफसी की फ्रेंचाइजी देने की शुरुआत की, तब वे ६१ वर्ष के थे।

❋ द लॉर्ड ऑफ द रिंग्ज नामक पुस्तक के प्रकाशन के समय उसके लेखक जे. आर.आर. टोल्केन ६२ वर्ष के थे।

❋ रोनाल्ड रेगन ६९ वर्ष की उम्र में अमेरिका के राष्ट्रपति बने।

❋ नेल्सन मंडेला दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति बने, तब उनकी उम्र ७६ वर्ष थी।

❋ दुनिया के सबसे खतरनाक रोप ब्रिज- नजर चूके तो मौत तय

आमतौर पर आप जिन पुलों से गुजरते हैं, वे इंजीनियरिंग की दृष्टि से काफी बेहतर, मजबूत और सुरक्षित होते हैं, लेकिन सभी पुल इस तरह के नहीं होते हैं। दुनिया में कई जगह ऐसी हैं, जहां ऐसे पुल भी बनाना संभव नहीं होता है।

❋ केशवा चाका, पेरू- पेरू की कुजको वैली में क्यूचुआन समुदाय के लोगों ने इस पुल को हाथ से बनकर बनाया। दरअसल यह जंगली घास से बनाई गई रस्सियों से तैयार किया गया है। इसकी लंबाई ११८ फीट है और २२० फीट की ऊंचाई है। यह कैनयान की तेज बहती हुई नदी पर बना है।

❋ कोटमेल फूटब्रिज, श्रीलंका- श्रीलंका की कोटमेल ओया नदी पर यह पुल बना हुआ है। यह लटकते हुए खूबसूरत दिखता है, लेकिन लंबे समय से अभी तक इसे रिपेयर नहीं किया गया है। यह श्रीलंका की चौथी बड़ी नदी महावेली पर बना हुआ है।

❋ जापान की ल्या वैली का रोप ब्रिज- जापान की विन वैली एक भव्य घाटी है। यह पुराने समय में बनाए गए रस्सी के पुल खास हैं। यहां के इन पुलों में से हसबैंड ब्रिज और वाइफ ब्रिज सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। अगर आपको ऊंचाई से डर लगता है तो इनसे नहीं गुजरें।

❋ हुसैनी हैंगिग ब्रिज, पाकिस्तान- का यह पुल दुनिया के सबसे खतरनाक रोप ब्रिज में से प्रमुख था। २०११ में मानसून की भारी बारिश में यह नष्ट हो गया था। पाकिस्तान के उत्तरी इलाके गिलगित-बाल्टिस्तान क्षेत्र १९७८ तक देश से कटा हुआ हिस्सा था। इस इलाके में बोरित झील को पार करने के लिए अपर हुंजा में यह हुसैनी हैंगिग ब्रिज बनाया गया था।

❋ कैरिक-ए-रीड रोप ब्रिज, आयरलैंड- यह रोप ब्रिज उत्तरी आयरलैंट के काउंटी एंट्रिम के पास बालिनटाय में स्थित है। एक आइलैंड को जोड़नेवाले इस रोप ब्रिज की लंबाई ६६ फीट और ऊंचाई ९० फीट से अधिक है। इस पुल को देखने लाखों पर्यटक यहां आते हैं।

❋ आरामदायक यात्रा का सफर बसें - १८५० के दशक में ब्रिटिश सरकारी कानूनों ने सड़कों पर भाप से चलनेवाले वाहनों पर कई तरह की पाबंदियां लगा दीं। इसलिए बड़े नए शहरों ने घोड़ों द्वारा खींची जानेवाली बसें विकसित कर ली।

१८९५ में जर्मनी में पेट्रोल इंजन से चलनेवाली बस निर्मित की गई। लंदन जनरल ओमनी बस कम्पनी ने पहली पेट्रोल इंजन वाली बस सर्विस शुरू की। बसें डबल डेकर थीं। १९०५ में पहली मोअर बसें न्यूयॉर्क के ५ वें एवेन्यू में दौड़ी।

१९२८ में पहली ट्रांस कांटीनैंटल बस सेवा संयुक्त राज्य अमेरिका से होकर गुजरी। १९५० के दशक से यूरोपियन शहरों में आर्टिकलेटिड का इस्तेमाल किया जाता था। बस के साथ जोड़े गए एक ट्रेलर में अतिरिक्त यात्रियों को ले जाया जाता था। पहले-पहल की सभी बसों की तरह, जैसे कि १९२० के दशक के प्रारंभिक समय की यह बस है, इस बस को एक लॉरी बेस पर कोच की बॉडी फिट करके बनाया जाता था।

✻ दांत सबसे मजबूत- अगर हमारे शरीर में कोई सबसे मजबूत अंग है तो वो है दांत, इन्सान के दांतों में चट्टान जैसी मजबूती होती है लेकिन शरीर के दूसरे हिस्से खुद की मरम्मत कर लेते हैं जबकि दांतों में एक बार खराबी हो जाये तो वो खुद की मरम्मत नहीं कर पाते और कमजोर होने लगते हैं।

✻ टेप फाउंटेन, मेनोर्का- आकाश में धूलती एक बड़ी टोंटी। स्पेन के मेनोर्का द्वीप का यह झरना कुछ ऐसा ही दिखता है। जमीन से काफी ऊपर लटकी टोंटी से लगातार पानी के बुलबुले नीचे गिरते हैं। असल में टोंटी एक खंभे पर टिकी हुई है। खंभा पानी के बुलबुलों के चलते दिखाई नहीं पड़ता है।

✻ बैक्टीरिया से वजन - हमारे शरीर के वजन का करीब १० प्रतिशत हिस्सा हमारे शरीर में मौजूद बैक्टीरिया के कारण होता है। १ वर्ग इंच त्वचा में करीब ३.२ करोड़ बैक्टीरिया पाए जाते हैं।

✻ खाना खाने में समय- एक इन्सान अपनी जिन्दगी में औसतन ५ साल खानाखाने में व्यतीत करता है। इंसान पूरी उम्र में अपने वजन से करीब ७००० गुना ज्यादा खाना खा लेता है।

✻ झपकती पलकें - पलकों के झपकने के पीछे का कारण ये होता है की आंखों से पसीना बाहर निकले और उनमें नमी बनी रहे। महिलाओं की पलकें पुरुषों के मुकाबले दोगुना बार झपकती हैं।

✻ भारतीय सेना के विध्वंसक हथियार - पुलवामा में १४ फरवरी को सीआरपीएफ के काफिले पर हुए आतंकी हमले के बाद भारतीय वायुसेना ने पाकिस्तान में घुसकर हवाई हमले से वहां छुपे बैठे आतंकियों को करारा जवाब दिया। वायुसेना ने नियंत्रण रऐखा के पार आतंकी कैंप पर १२ मिराज- २००० लडाकू विमानों के जरिये करीब १००० किलोग्राम के पांच बम बरसाए। वैश्विक शक्ति बनने की ओर अग्रसर भारतीय सेना के पास मिराज के अलावा अन्य दस ऐसे विध्वंसक हथियार हैं जिनके नाम से ही दुश्मन भी कांप जाते हैं।

सुखोई- ३० - रूस में निर्मित सुखोई- ३० लड़ाकू विमान विश्व के चुनिंदा बेहतरीन विमानों में से एक है। रूस की सेना के जखीरे में भी प्रमुख तौर पर शामिल है। २१.९३ मीटर लम्बाई और १४.७ मीटर चौढ़ाई वाले इस विमान का वजन १८ हजार चार सौ किलोग्राम है। हथियार के साथ इसका वजन २६ हजार किलोग्राम तक हो सकता है। इसकी अधिकतम रफ्तार २१२० किमी प्रति घंटे है। दो इंजन पर आधारित वे विमान तीन हजार किमी तक की गहराई तक निशाना साधकर हमला करने में सक्षम है।

आईएएनएस चक्र- २ - परमाणु क्षमता युक्त पनडुब्बी आईएएनएस चक्र- २ नौसेना का बड़ा हथियार है। इसकी खासियत है कि ये पानी में ६०० मीटर तक गहराई में रह सकती है। इसकी अधिकतम गति ३० समुद्री मील है। इसमें आठ पनडुब्बी रोधी टॉरपीडो हैं। भारतीय नौसेना ने रूस से इसे एक अरब डॉलर के सौदे पर १० साल के लिए लिया गया है।

टी ९० भीष्म- ये भारतीय सेना का सबसे ताकतवर टैंक माना जाता है। इसे रासायनिक या रेडिसोएक्टिव हमले से नष्ट

नहीं किया जा सकता है। इसकी मारक क्षमता पांच किमी तक है। ४८ टन के इस टैंक में १२५ एमएम की स्मूथबोर गन और १२.७ एमएम की मशीनगन है जिसे टैंक के अंदर बैठा कमांडर रिमोट से नियंत्रित कर सकता है।

ब्रम्होस- ब्रह्मोस मिसाइल का भारत और रूस मिलकर विकास कर रहे हैं। ये रूस की पी-८०० ऑकिस क्रूज मिसाइल की प्रोद्योगिकी पर आधारित है। यह मिसाइल भारत की अब तक की सबसे आधुनिक प्रक्षेपास्त्र प्रणाली है और जिसने भारत को मिसाइल तकनीकी में अग्रणी देश बना दिया है। ये मिसाइल जमीन, समुद्र और आकाश से समुद्र और जमीन पर हमला कर सकती है। इसकी मारक क्षमता २९० किमी और गति २०८ मैक है। स्टीप डाइव क्षमता की वजह से ये पहाड़ी क्षेत्रों के पीछे छिपे लक्ष्यों पर भी हमला कर सकती है।

✻ गुरु जल सबसे महंगा पानी- नाभिकीय भट्टियों में प्रयुक्त गुरु-जल विश्व का सबसे महंगा पानी है। इसके एक लीटर का मूल्य लगभग १३५०० रुपये होता है।

✻ देश में कई धर्मों का जन्म- भारत ही एक मात्र ऐसा देश है जहां अलग-अलग धर्मों के लोग एक साथ रहते हैं। हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म और सिख धर्म इन सबका जन्म भारत में ही हुआ था।

✻ प्रकाश को आकाशगंगा के एक छोर से दूसरे छोर तक जाने के लिए १,००,००० साल का समय लगता है।

✻ अंतरिक्ष में हवा का दबाव नहीं- अगर आप अंतरिक्ष में जाते हैं तो आप गला घुटने की बजाय शरीर के फटने से पहले मर जाएंगे, क्योंकि वहां पर हवा का दबाव नहीं है।

✻ सोना खरीदने में भारत सबसे आगे- सोना खरीदने के मामले में भारत सबसे आगे है। सोने को भारत की संस्कृति का सबसे अहम भाग माना जाता है चाहे वो उपहार के तौर पर ही या फिर किसी शादी समारोह में प्रयोग में लाया जाना हो।

✻ पारे पर तैरता है लोहा- क्विक सिल्वर या पारा ऐसी एकमात्र धातु है, जो तरल अवस्था में रहती है और इतनी भारी होती है कि इस पर लोहा भी तैरता है।

✻ अंगूर के बीज में एंटीऑक्सिडेंट्स भरे होते हैं। अंगूर से शराब बनाने का उत्पादन ५००० ईसा पूर्व शुरू हुआ। शराब की एक बोतल बनाने के लिए लगभग २.५ पौंड अंगूर लगते हैं।

✻ अमेरिका की सबसे संहारक मिसाइल- एलजीएम-३० माइन्यूट मैन अमेरिका की सबसे सक्षम मिसाइलों में से एक है। इसकी मारक क्षमता १३ हजार किलोमीटर है और ये एक साथ ३ परमाणु हथियारों को ले जाने में सक्षम है, जो ३ अलग-अलग लक्ष्यों को भेद सकते हैं, अमेरिकी सेना ने इसे ट्राइडेंट मिसाइल सिस्टम से लैस करके दुनिया की सबसे मारक मिसाइल बना दिया है। फिलहाल ये अमेरिकी सेना में शामिल इकलौती अंतरमहाद्वीपीय मिसाइल है।

✻ ११६ साल से ज्यादा उम्र- दुनिया की आबादी में से सिर्फ ४ लोग ऐसे होते हैं जो ११६ साल से ज्यादा की उम्र जी रहे हैं।

✻ चीन में हर ३० सेकेंड के बाद एक विकलांग बच्चा पैदा होता है।

✻ ताश के पत्तों में हर किंग इतिहास के राजा का प्रतीक है। स्पेड-किंग डेविड, क्लब्स-अलेक्जेंडर द ग्रेट, हार्ट्स-चार्लमेगन, डायमंड जूलियस सीजर के नाम पर है।

✻ मानव शरीर की २५% हड्डियां पैरों में होती हैं।

❋ हमारे पैरों का आकार लगभग फोर आर्म (पंजे से कोहनी तक) के आकार के बराबर होता है।

❋ यदि हमारे जीभ का रंग गुलाबी है, तो यह जर्म फ्री है। यदि यह उजली है, तो समझ लीजिए बैक्टीरिया की पतली परत इस पर चढ़ी है।

❋ नींद में हमारे शरीर से १०० वाट बल्ब के बराबर ऊर्जा उत्पन्न होती है।

❋ एस्केलेटर- आधुनिक एस्केलेटर ६० फुट के आकार तक सीमित होते हैं। फ्लोर से फ्लोर तक इसका उभार १२ फुट होता है। आधुनिक शहरों के गगनचुम्बी भवनों तथा मॉल्स में अक्सर अपने आप चलनेवाली सीढ़ियां यानी एस्केलेटर्स देखने को मिलती हैं। ये सीढ़ियां लोगों को अलग-अलग मंजिलों से ऊपर-नीचे ले जाती हैं। ऐसे भवनों में ऊपर-नीचे जाते वक्त शरीर पर पड़नेवाले दबाव से बचने के लिए लोग एस्केलेटर्स का प्रयोग करते हैं। इनका प्रयोग सबवेज तथा अन्य पैदल मार्गों में लोगों की आवाजाही हेतु भी किया जाता है।

एस्केलेटर का बुनियादी मैकेनिज्म १८८१ में अमेरिका के जैस्स डब्ल्यू. रेनो द्वारा आविष्कृत किया गया था। इसका प्रयोग मुख्यत: समुद्री जहाज में लकड़ी या लोहे के खम्भों पर चलाने के लिए होता था ताकि समुद्री जहाज की सेल्स को सपोर्ट देने के लिए रस्सियां बैल्टें बांधी जा सकें। सन १९०० में जब पेरिस में एक अपने आप चलनेवाली सीढ़ी का प्रदर्शन किया गया था तो इसे एस्केलेटर नाम दिया गया था। बुनियादी तौर पर इसका पेटैंट ओटिस एलीवेटर कम्पनी के नाम था। आगे चलकर लोगों द्वारा इसके प्रयोग के चलते इसका यही नाम यानी एस्केलेटर प्रसिद्ध हो गया।

आधुनिक एस्केलेटर ६० फुट के आकार तक सीमित होते हैं। इन्हें बिजली द्वारा ऊर्जा मिलती है और यह एक अंतहीन चेन द्वारा चलती हैं जो गोल-मोल घूमते हुए कभी रुकती नहीं। सीढ़ी के सोपानों को एक-दूरसे से जोड़ती चेन का संचालन एक मीटर द्वारा किया जाता है।

सीढ़ी के अंतर पर जाकर इसके सोपान एस्केलेटर के नीचे की ओर चले जाते हैं। एस्केलेटर के सोपान रेलिंग पर चलते हैं और उन्हें इस तरह व्यवस्थित किया जाता है कि एक के बाद दूसरा सोपान एक सामान्य सीढ़ी की तरह ही उभरा हुआ बनता जाए। टॉप तथा बॉटम के नजदीक सोपानों को इस तरह व्यवस्थित किया जाता है कि एस्केलेटर पर कोई व्यक्ति आसानी से चलकर भी जा सकता है और खड़ा-खड़ा भी। एस्केलेटर सामान्यत: १२० फुट प्रति मिनट की दर से ऊपर जा सकता है। कई बड़े एस्केलेटर एक घंटे में ६ हजार लोगों को ले जाने की क्षमता रखते हैं।

❋ टिम-टिमाते तारे- टिम-टिम करते तारे अपने में बहुत कुछ ऐसा छिपाए हैं जो हैरानी पैदा करता है। तारों की राख में हीरे छिपे हैं तो सूरज जैसा बड़ा तारा लौह, निकिल, टाईटेनियम, सिलिकॉन, सोडियम जैसी महत्वपूर्ण धातुएं समाए हुए है। हमारी आकाशगंगा में टिम-टिमाते तारे बड़ी मात्रा में कोई न कोई धातु लिए हुए होते हैं। इसके अलावा चमकते तारों में लगातार ऐसी क्रियाएं होती रहती हैं जो धातुओं को पहले विखंडित करती हैं फिर अधिक ताप के कारण उन्हें पिघला कर बड़ा आकार देती है और एक धातु का गोला बन जाता है।

स्पेस टेलीस्कोप साइंस इंस्टीट्यूट, बाल्टीमोर के वैज्ञानिक जेफ वेलेन्टी के अनुसार यह धातु कण एक तरह से चमकते सितारे के बीज हैं जो तारे के आकार को बढ़ाते हैं और नए तारे को जन्म देते हैं। रोचक बात यह है कि हमारा सूरज अन्य तारों की तरह ही भरपूर धातु समेटे हुए है। हालांकि तारों में कई धातुएं पाई गई हैं, मगर पांच धातुएं ही प्रमुखता से पाई

जाती हैं और भी बहुत कुछ है इन तारों में जो आधुनिक उद्योग विकास की काया ही बदल देती है। संभव है कल मानव चांद, मंगल, शुक्र और शनि को छोड़ तारों को टटोले और अपने मतलब की धातुएं ढूंढ़ निकाले।

✲ पानी आग कैसे बुझा देता है? - जब भी कहीं आग लग जाती है तो आग बुझाने के लिए पानी का इस्तेमाल किया जाता है। आग बुझानेवाले फायर ब्रिगेड भी पानी द्वारा ही आग बुझाते हैं।

किसी जलनेवाली वस्तु, जैसे लकड़ी, कोयला, कागज आदि का होना। आग के जलने के लिए ऑक्सीजन गैस का होना, ऊष्मा यानी गर्मी का होना। ऊष्मा द्वारा ही जलनेवाली वस्तु अपने ज्वलनांक तक पहुंचती है। हर वस्तु एक निश्चित तापमान पर जलने लगती है। इसी तापमान को वस्तु का ज्वलनांक कहते हैं।

जब वस्तु का तापमान ज्वलनांक तक पहुंच जाता है तो वस्तु में आग लग जाती है। वस्तु वायुमंडल की ऑक्सीजन की सहायता से जलती ही रहती है।

आग बुझाने के लिए यदि ऑक्सीजन का ईंधन तक पहुंचना बंद कर दिया जाए तो आग बुझ जाएगी, क्योंकि कोई भी वस्तु बिना ऑक्सीजन के नहीं जल सकती, या यदि किसी भी तरीके से ईंधन का तापमान कम कर दिया जाए तो भी आग बुझ जाएगी। आग पर पानी डालने से ईंधन का तापमान उसके ज्वलनांक से कम हो जाता है, क्योंकि पानी गर्मी को सोख लेता है। यही कारण है कि आग पर पानी डालने से यह बुझ जाती है। पानी को धार के रूप में डालने से आग शीघ्र ही बुझ जाती है। यह तरीका आग बुझाने में अधिक प्रभावशाली सिद्ध होता है। लेकिन पानी वो आग नहीं बुझा पाता जो तेल या ग्रीस में लगी हो, क्योंकि ये पदार्थ पानी से हल्के होते हैं। पानी डालने पर ये पानी के ऊपर तैरने लगते हैं और जलते ही रहते हैं। इस प्रकार की आग बुझाने के लिए दूसरे प्रकार के अग्निशामक प्रयोग में लाए जाते हैं।

✲ एरिक कहते हैं कि क्षितिज हमेशा ही पूरी तरह से फ्लैट नजर आता है। क्षितिज उस जगह को कहते हैं, जहां धरती और आकाश मिलते हुए नजर आते हैं। रिक का तर्क है कि आप ऊंचाई पर खड़े होकर दूर क्षितिज देखें, तब भी वह फ्लैट ही नजर आता है, गोलाई लिए हुए नहीं।

✲ नदियां सिर्फ नीचे की तरफ बहती हैं- यदि पृथ्वी ग्लोब की तरह होती, तो कई नदियों को समुद्र में मिलने के लिए ऊपर की ओर बहना पड़ता है। पानी सब तरफ फैलता है- यदि धरती गेंद की तरह होती, तो पानी एक जगह समतल बने रहने के बजाय सब तरफ फैलता रहता।

✲ एरोप्लेन को हमेशा एड्जस्ट नहीं किया जाता- एरिक कहते हैं कि धरती गोल होती, तो विमान के पायलटों को उसका कंट्रोल हमेशा एडजस्ट करना पड़ता कि कहीं वह स्पेस में न पहुंच जाए। उन्हें हमेशा विमान की दिशा धरती की गोलाई के हिसाब से नीचे की तरफ रखनी पड़ती।

✲ दुश्मन के जहाज उड़ा सकती है यूक्रेन की ये डॉलफिन

यूक्रेन की तीन खूंखार डॉलफिन फरार हो गई हैं। यूक्रेन की ये डॉलफिन आम नहीं है। यूक्रेन नेवी की ये किलर डॉलफिन हथियारों से लैस हैं। ये अपने सिर पर लगे खास चाकू और पिस्टल का दुश्मन पर प्रयोग करने के लिए प्रशिक्षित हैं। यूक्रेन की नेवी में इस तरह की पांच किलर डॉलफिन थीं। ये पांचों एक प्रशिक्षण के लिए गईं थीं। इनमें से दो तो वापस आ गई, लेकिन तीन अब तक नहीं लौटी हैं। इनकी खोज जारी है। रूस और पौलेंड के बीच स्थित यूक्रेन एक बड़ा देश

है। इसके उत्तर में बेलारूस और दक्षिण में काला सागर है। यहां यूक्रेन की नेवी का एक बड़ा बंदरगाह सेवास्टोपोल है। जहां इन डॉलफिन को प्रशिक्षित किया गया है। यह प्रोग्राम इस देश में १९७३ से जारी है। यूक्रेन की नेवी इन्हें दुश्मन देशों के तैराकों और खनिज का पता लगाने के लिए प्रशिक्षित करती है। ये डॉलफिन दुश्मन देशों के जहाजों को डुबाने के लिए विस्फोटकों का उपयोग करने में भी सक्षम हो सकती हैं। काले सागर में आजाद घूम रही ये डॉलफिन किसी भी देश की समुद्र सीमा में पहुंच सकती हैं।

❋ डायबिटीज से लड़ेगा डिजिटल टूल - ग्रामीण इलाकों में डायबिटीज के मरीजों की पहचान और उनके प्रभावी उपचार के लिए इम्पैक्ट डायबिटीज नामक एक ऐसा ही ऐप काफी कारगर है। ऐप की मदद से डायबिटीज जांच, आहार एवं जीवन शैली संबंधी परामर्श, रेफरल और मरीजों की निगरानी में मदद मिल सकती है। इम्पैक्ट डायबिटीज ऐप को दिल्ली स्थित जॉर्ज इंस्टीट्यूट ऑफ ग्लोबल हेल्थ के शोधकर्ताओं ने बनाया है। भारत में करीब पांच करोड़ लोग टाइप-२ मधुमेह से ग्रस्त हैं औरयह आंकड़ा हर साल बढ़ रहा है। यह ऐप दूरदराज के ग्रामीण इलाकों में रहनेवाले लोगों को समय पर दिशा-निर्देशों के मुताबिक किफायती स्वास्थ्य देखभाल सेवाएं मुहैया कराने में मददगार हो सकता है।

इस ऐप के उपयोग से जानलेवा जटिलताओं और मधुमेह के कारण होनेवाली मौतों के जोखिम को कम करने में भी मदद मिल सकती है। जांच के दौरान बीमारी से संबंधित केस-हिस्ट्री ली जाती है और शर्करा तथा रक्त की जांच की जाती है। इसके साथ-साथ वजन और लंबाई को भी दर्ज किया जाता है। इन तथ्यों को ऐप में दर्ज किया जाता है और मरीज के मधुमेह से ग्रस्त होने का पता लगाया जाता है। जांच में जो लोग अधिक जोखिम से ग्रस्त पाए जाते हैं, उन्हें चिकित्सक के पास भेजा जाता है और उपचार का नियमित अनुसरण भी किया जाता है। यह पहल स्मार्ट हेल्थ कार्यक्रम का हिस्सा है, जिसके तहत सामुदायिक महिला स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया जाता है।

❋ अमेरिकी अंडों पर बैन- ब्रिटेन में अमेरिकी अंडों पर बैन है क्योंकि ये धोए जाते हैं और अमेरिका में ब्रिटिश अंडों पर बैन है क्योंकि ये धोए नहीं जाते।

❋ ८ दिनों में दांतों का नया सेट- मॅकेरेल्स नाम की मछली एक समय पर ३ लाख से १५ लाख तक अंडे दे सकती है। शार्क मछली को दांतों का नया सेट उगाने में सिर्फ ८ दिन लगते है।

❋ २०५ नए देश- यदि दुनिया में सभी अलगाववादियों (अलग देश की मांग करनेवाले) की मांगें पूरी हो जाएं तो २०५ नए देश निकलकर आएंगे।

❋ सबसे बड़ा लोकतंत्र- दुनिया में सबसे बड़ा लोकतंत्र भारत में है। भारत में सबसे ज्यादा मतदाता हैं और चुनाव में होनेवाले खर्चों के मामले में भी भारत सबसे आगे है।

❋ प्रकाश की गति बहुत ज्यादा - प्रकाश की गति इतनी ज्यादा होती है कि यह लंदन से न्यूयार्क की दूरी को एक सेकेंड में ५० से ज्यादा बार तय कर लेगी। लेकिन मंगल और पृथ्वी के बीच (२२.५ करोड़ किलोमीटर की दूरी) यदि दो लोग प्रकाश गति से भी बात करें, तो एक को दूसरे तक अपनी बात पहुंचाने में १२.५ मिनट लगेगी।

❋ शुक्र ग्रह को सान्य तारा कहा जाता है।

❋ आसमान में जगमगाते तारों को देखकर हमें ऐसा लगता है जैसे वे अनवरत नहीं चमक रहे हैं, पल-पल चमकना बंद

करते रहते हैं। किंतु ऐसी कोई बात नहीं है। तारे सदा निरंतर, एक समान चमकते हैं। दरअसल तारों से छूटती रोशनी को हमारी आँखों तक पहुंचने से पहले वायुमंडल में विद्यमान अवराच्चे का सामना करना पड़ता है। अत: उनकी रोशनी रास्ते में विचलित होती रहती है, सीधी हम तक नहीं पहुंच पाती। वायुमंडल में हवा की कई चलायमान परतें होती हैं। ये परतें तारों की रोशनी के पथ को बदलती रहती हैं। इसके फलस्वरूप उनकी रोशनी हमारी नजरों से कभी ओझल, कभी प्रकट होती रहती हैं। इसीलिए तारे टिमटिमाते दिखाई देते हैं।

✲ चीन, द टेंपल ऑफ हेवन- चीन के बीजिंग शहर में बने द टेंपल ऑफ हेवन का नजारा किसी स्वर्ग से कम नहीं है। यहां कई धर्म परंपराओं के अनुसार पूजा की जाती है। धार्मिक मान्यताओं के लिए मशहूर इस मंदिर की खूबसूरती भी किसी से कम नहीं है।

✲ म्यांमार, स्वेडगन पगोडा- म्यांमार के यंगुन में स्थित यह मंदिर भारत में बने गोल्डन टेंपल की ही तरह है। ९८ मीटर ऊंचे इस मंदिर को बेहद भव्य तरीके से बनाया गया है। इस मंदिर से आप खूबसूरत प्राकृतिक नजारे का भी मजा ले सकते हैं।

✲ इंडोनेशिया, प्रम्बनन मंदिर- इंडोनेशिया में बने इस इकलौते मंदिर में ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी की प्रतिमाएं एक साथ मौजूद है। मंदिर की दीवारों पर भी धार्मिक कहानियां और शानदार नक्काशियां उकेरी गई है।

✲ ७२ मसल्स का प्रयोग- बोलते समय आप ७२ अलग-अलग मसल्स का प्रयोग करते हैं। इससे काफी ऊर्जा खर्च होती है।

✲ बिना सरकारी इजाजत पुनर्जन्म नहीं- वैसे तो जन्म और मृत्यु पर किसी का नियंत्रण नहीं होता पर चीन में बिना सरकारी इजाजत से किसी का पुनर्जन्म नहीं हो सकता।

✲ प्रधानमंत्री करता है भारत रत्न की सिफारिश- भारत रत्न किसको देना है इसकी सिफारिश भारत का प्रधानमंत्री राष्ट्रपति को करता है। एक साल में ज्यादा से ज्यादा ३ व्यक्तियों को ही भारत रत्न से सम्मानित किया जा सकता है।

✲ हर वो सिगरेट जिसका धुआं आपके शरीर में जाता है आपकी जिंदगी के ११ मिनट कम कर देता है।

✲ माइकल जैक्सन वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुए ९/११ हमले में ही मारे गए होते पर वो घर पर सोए ही रह गए और उनकी मीटिंग कैंसल हो गई।

✲ चार तरह के होते हैं बादल- हम जानते हैं कि नदियों, झीलों, तालाबों और सागरों का पानी सूर्य की गरमी से भाप में बदल जाता है। यह भाप वाष्प के रूप में हवा में मिल जाती है। वाष्प मिली गर्म हवा हल्की हो जाती है। जब हवा से भरे वाष्प एक स्थान पर एकत्र होते हैं तो वे धुएं जैसे दिखाई देते हैं। इसे ही बादल कहते हैं। बादल दस प्रकार के होते हैं। परंतु विभिन्न आकारों और आकृतियों के आधार पर इन्हें चार मुख्य भागों में बाँटा गया है।

सायरस बादल- सायरस बादल सफेद रंग के होते हैं और पक्षियों के पंखों जैसे दिखाई देते हैं। ये बर्फ के छोटे कणों से बने होते हैं। इनकी ऊंचाई ८००० से ११००० मीटर के बीच होती है।

स्ट्रैटस बादल- इन बादलों का निर्माण लगभग २४०० मीटर की ऊंचाई पर होता है। ये धुंध की परतों जैसे दिखाई देते हैं। ये बादल खराब मौसम और बूंदाबांदी के सूचक होते हैं।

क्यूमुलस बादल- ये बादल लगभग १२२० से १५२५ मीटर की ऊंचाई पर बनते हैं। ये ऊपर से गुंबद जैसे और नीचे

से सपाट होते हैं। ये आकाश में सफेद पहाड़ या कपास के ढेर जैसे दिखाई देते हैं।

निम्बोस्ट्रैट्स बादल- ये बादल बहुत कम ऊंचाई पर बनते हैं। ये पानी के नन्हें कणों से बने होते हैं। इनका रंग गहरा भूरा अथवा काला होता है। यही वे बादल हैं जो धरती पर वर्षा करते हैं।

✻ यदि सूरज बीच बॉल के आकार जितना हो तो बृहस्पति गोल्फ बॉल के आकार जितना होगा और पृथ्वी एक मधुमक्खी जितनी छोटी होगी।

✻ अंटार्कटिका प्लूमेट का तापमान -३५ डिग्री सेल्सियस से भी कम होता है। हर साल धरती पर तकरीबन १ लाख भूकंप आते हैं।

✻ शेर भले ही जंगल का राजा हो, लेकिन वह कभी भी हाथी और गेंडे से लड़ाई करना पसंद नहीं करता।

✻ सबसे बड़ी गैलेक्सी में लाखों तारों का समावेश होता है। ब्रह्माण्ड में तकरीबन १०० अरब गैलेक्सी का समावेश है।

✻ रबर का एक अणु ६५००० एकल परमाणु से बनाया जाता है। क्वेजार तारे के निकलने की ऊर्जा १०० विशाल गैलेक्सी से भी ज्यादा होती है।

✻ धरती पर एक इंसान की त्वचा के गुणसूत्र कभी-कभी धरती पर रह रहे दूसरे इंसान के गुणसूत्रों से भी मेल खा सकते हैं।

✻ हमेशा पूरी नींद लेनी चाहिए, क्योंकि २ हफ्ते न सोने से आपकी जान भी जा सकती है। पर्याप्त नींद न लेने से सेहत पर बुरा असर पड़ता है।

✻ न मनुष्य के शरीर में ७०% पानी है, लेकिन जब कभी चोट लगे तो खून निकलता है और मनुष्य का हृदय खून से बना होने पर भी, जब हृदय को चोट लगती है तो आंख से पानी निकलता है।

✻ आईपीएल ऐसी लीग है जो कि दुनियाभर की सबसे बड़ी क्रिकेट लीग में इसका नाम सबसे ऊपर आता है। आईपीएल का मतलब इंडियन प्रीमियर लीग है। इंडियन प्रीमियर लीग को २००८ में शुरु किया गया था और उसके बाद से इसके इस लीग में बहुत ज्यादा रोमांच बढ़ता रहता है। जिस भी टीम का मालिक अपनी टीम में किसी भी खिलाड़ी को देगा वह खिलाड़ी उसी की टीम में शामिल किया जाता है।

आईपीएल की नीलामी हर साल होती है। आईपीएल के नियम के अनुसार कोई भी टीम ज्यादा से ज्यादा २५ और कम से कम २८ खिलाड़ी अपनी टीम में शामिल कर सकती है। जिसमें से ८ खिलाड़ी विदेशी कोई भी टीम अपनी टीम में शामिल कर सकती है। इंडियन प्रीमियर लीग टी-२० क्रिकेट टूर्नामेंट है और यह भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड द्वारा करवाई जाती है और यह एक ऐसा टी-२० टूर्नामेंट है जो दुनिया में सबसे ज्यादा जाना जाता है। इस टूर्नामेंट में ८ शहरों की ८ टीमों को शामिल किया जाता है और सबसे पहले आईपीएल २००८ में जब शुरू किया गया था तो इसकी प्रथम विजेता राजस्थान रॉयल्स थी।

✻ भारत में विश्व का सर्वाधिक दुग्ध का उत्पादन किया जाता है। यहां पर गाय-भैंस भी काफी संख्या में पाली जाती हैं, जिनसे बहुत से लोगों की रोजी-रोटी चलती है।

✻ भारत में लाल रंग को शुभ माना जाता है, विवाह और अलग-अलग अवसरों पर इसी रंग के कपड़े पहने जाते हैं।

✻ पैसे को छूने से दर्द कम हो सकता है और सामाजिक तौर पर अकेलेपन में भी कमी आती है।

✻ खाने में ६ तरह के स्वाद हमारे भारतीय खाने में ६ तरह के स्वाद होते हैं, मीठा, नमकीन, खट्टा, तीखा, कसैला और कड़वा।

✻ बाहमस के एक आइलैंड में २० तैरते हुए पिग्स दिख जाते हैं और इसका नाम पिग आइलैंड रखा गया है।

✻ आप पूरे का पूरा अंडा खा सकते हो क्योंकि अंडे के छिलके में सबसे ज्यादा कैल्शियम होता है।

✻ ७५ लाख टन नमक- मेक्सिको नमक उत्पादन करने वाला विश्व का सबसे प्रमुख देश है। यहाँ प्रतिवर्ष करीब ७५ लाख टन नमक का उत्पादन किया जाता है।

✻ ८ किलो के हाथ- भारत के झारखंड में रहनेवाले मोहम्मद कलीम को एक अजीब बीमारी है जिसमें इन्हें हाथ इनके शरीर से भी बड़े हैं। इस बीमारी के चलते इनके दोनों हाथ ८-८ किलो के हैं। कुछ लोग अचानक इस बच्चे को देखकर डर भी जाते हैं।

✻ अंकुरित अनाज- अंकुरित अनाज प्रोटीन का बेहतरीन स्रोत है। इसमें प्रोटीन की मात्रा अधिक और कैलोरी बहुत कम होती है। एक कप अंकुरित अनाज में लगभग १५ ग्राम प्रोटीन होता है। इन्हें कच्चा खा सकते हैं, सलाद में या हल्का मसालेदार बनाकर भी खा सकते हैं। अंकुरित अनाज को स्वादिष्ट बनाने के लिए उसमें टमाटर, प्याज, धनिया, खीरा, नींबू, काली मिर्च और नमक जैसी चीजों को मिलाया जा सकता है।

✻ फेयरी क्वीन ट्रेन- फेयरी क्वीन स्टीम इंजन से चलने वाली सबसे पुरानी ट्रेन है, इसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज है।

✻ दो राज्यों के बीच स्टेशन- भारत का नवापुर एकमात्र ऐसा अनोखा रेलवे स्टेशन है जिसका आधा हिस्सा महाराष्ट्र में और आधा हिस्सा गुजरात में आता है।

✻ महिला के नाम पर देश- सेंट लुसिया दुनिया का इकलौता ऐसा देश है जिसका नाम एक महिला के नाम पर रखा गया है।

✻ अकेला भारत देश ऐसा है जहां ३०० मिलियन अलग-अलग तरह के भगवानों को पूजा जाता है। आपको हर गांव में नये इष्ट देव मिलेंगे।

✻ सबसे चमकीला ग्रह शुक्र ग्रह (वीनस) है।

✻ कहां से आये गांधीजी के तीन बंदर - गांधीजी के यह तीन बंदर मूलत: जापानी संस्कृति से लिए गए हैं।

वर्ष १६१७ में जापान के निक्को स्थित तोगोशु की बनाई गई इस समाधि पर यह तीनों बंदर उत्कीर्ण हैं। हालांकि ऐसा भी माना जाता है कि यह बंदर जिन सिद्धांतों की ओर इशारा करते हैं, वे बुरा न देखो, बुरा न सुनो, बुरा न बोलो को दर्शाते हैं। वे मूलत: चीनी दार्शनिक कन्फ्यूशियस के थे और आठवीं शताब्दी में ये चीन से जापान में आये। उस समय जापान में शिंतो संप्रदाय का बोलबाला था। शिंतो संप्रदाय में बंदरों को काफी सम्मान दिया जाता है। शायद इसीलिए इस विचारधारा को बंदरों का प्रतीक दे दिया गया। यह यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में शामिल है। जापान में इन्हें मिजारूयानी जिसने दोनों हाथों से आंखें बंद कर रखी हैं, यानी जो बुरा नहीं देखता, दूसरे को किकाजारू, यानी जिसने दोनों हाथों से कान बंद कर रखे हैं, यानी जो बुरा नहीं सुनता और तीसरे को इवाजारू, जिससे दोनों हाथों से मुंह बंद कर

रखा है, यानी जो बुरा नही बोलता। वहां पर इन्हें बुद्धिमान बंदर माना जाता है।

❋ दुनिया की बीस प्रतिशत आबादी चीन में रहती है।

❋ कड़कने वाली बिजली का तापमान सूर्य की सतह के तापमान से पांच गुना अधिक होता है।

❋ भारतीय पर्यावरण और वन मंत्रालय के अनुसार, भारत में कुल १०३ राष्ट्रीय उद्यान हैं।

हेमिस राष्ट्रीय उद्यान, जम्मू कश्मीर- लद्दाख क्षेत्र के आसपास स्थित हेमिस राष्ट्रीय उद्यान एक उच्च ऊंचाई का राष्ट्रीय उद्यान है और भारत में बर्फ तेंदुए के उच्च घनत्व के लिए प्रसिद्ध है। हेमिस राष्ट्रीय उद्यान में बर्फ तेंदुए को खोजने के लिए सर्दी सबसे अच्छा मौसम है।

इंद्रवती राष्ट्रीय उद्यान, छत्तीसगढ़- इंद्रवती राष्ट्रीय उद्यान छत्तीसगढ़ का सबसे प्रसिद्ध वन्यजीव उद्यान है और राज्य में जंगली जल भैंस की अंतिम आबादी का घर है। लुप्तप्राय: जंगली एशियाई भैंस, भारतीय हिरण और सुस्त भालू पार्क की कुछ मुख्य प्रजातियां हैं।

रेगिस्तान राष्ट्रीय उद्यान, राजस्थान- जैसलमेर शहर के पास रेगिस्तान उद्यान सबसे अद्वितीय पारिस्थितिकी तंत्र और अद्भुत पक्षी जीवन का समर्थन करता है। थार रेगिस्तान की रेत की धुनें प्रवासी पक्षियों जैसे फाल्कन बाज, गरुड़, गिद्ध और चील के लिए एक अच्छा आश्रय प्रदान करती है।

राजाजी राष्ट्रीय उद्यान, उत्तराखंड- उत्तराखंड में हिमालय की तलहटी के पास राजाजी राष्ट्रीय उद्यान एक घने जंगल और जीवंत वन्य जीवन का घर है। राजाजी के घने हरे जंगलों में कई जंगली जानवरों के लिए सबसे उपयुक्त आवास प्रदान करता है।

डिब्रू सैखोवा राष्ट्रीय उद्यान, असम- डिब्रू सैखोवा राष्ट्रीय उद्यान भारत में सबसे बड़ा सैलिक्स दल-दल वन है और लुप्तप्रायत: जंगली जानवरों और पक्षी प्रजातियों की सूची के लिए स्वर्ग है। पार्क का दल-दल जंगल में पाए जानेवाले बंदर, बड़ी बिल्लियों और जंगली घोड़े की विभिन्न प्रजातियों का रक्षण करता है।

❋ आप अगर सोचते हुए सो जाते हैं तो आपका दिमाग भी नींद में सोचता रहता है, जिससे परिणाम ये आता है कि जागने पर आप आराम महसूस नहीं कर सकते और थकावट महसूस करने लगते हो।

❋ बिजली का तापमान जब आसमान की बिजली गिरती है तब तापमान ३०००० डिग्री तक हो सकता है।

❋ लंदन में कुल मिलाकर ७२ अरबपति रहते हैं जो कि किसी भी शहर के मुकाबले सबसे ज्यादा है।

❋ मिस्र के पिरामिड का रंग सफेद था पर समय के चलते उसका रंग मटमैला हो गया।

❋ दुनिया में ११ प्रतिशत लोग बायें हाथ का इस्तेमाल करते हैं।

❋ मिक्की माउस का इटली में नाम टोपोलिनो है।

❋ हवाइयन अल्फाबेट सिर्फ १३ होते हैं। यह भाषा हवाई द्वीप समूह में बोली जाती है।

❋ दुनिया में रोल्स रॉयल कारें सबसे ज्यादा हांगकांग शहर में है इसीलिए इसे सिटी ऑफ रोल्स रॉयस कहा जाता है।

❋ सभी महिलाओं में आयरन कमी हो जाती है, पर अगर हरी मिर्च भोजन के साथ रोज खाने पर ये कमी पूरी हो जाती है।

❋ अमेरिका से ज्यादा इंजीनियर- भारत में हर साल अमेरिका से दोगुना इंजीनियर बन जाते हैं।

❋ प्रजनन तंत्र- यह तंत्र प्रजनन के कार्य में अपनी भागीदारी करता है यानी इस तंत्र की सहायता से संतानोत्पत्ति की प्रणाली पूरी की जाती है।

❋ शुक्र ग्रह को सांध्य तारा कहते हैं।

❋ भूपटल पर सबसे अधिक एल्युमिनियम धातु है।

❋ शरीर में सबसे बड़ी अंत:स्रावी ग्रंथि अवटुका (थॉइरॉइड) है।

❋ पीतल तांबा और जस्ता इन दो धातुओं का मिश्रण है।

❋ पहला कृत्रिम उपग्रह स्पुतनिक-१ था।

❋ अधूरा स्तंभ, मिस्र - उत्तरी मिस्र के असवान में जमीन पर लेटा पत्थर का एक विशाल स्तंभ मिला। स्तंभ की लंबाई ४२ मीटर है और वजन करीब १२०० टन। इतिहासकारों के मुताबिक निर्माण के दौरान पत्थर में दरार आने की वजह से इसे अधूरा छोड़ दिया गया।

❋ पत्थर की विशाल गेंदे, कोस्टा रिका- पत्थर की ये बड़ी गेंदें बिल्कुल गोल हैं, लेकिन इन्हें किसने बनाया, इसका पता किसी को नहीं है। १९३० में केले के पौधों की रोपाई के दौरान ये गेंदे मिली। पौराणिक कथाओं के मुताबिक इन गेंदों में सोना था।

❋ अंतरिक्ष यान- पहले अंतरिक्ष यान कोलम्बिया का प्रक्षेपण अमेरिका द्वारा १२ अप्रैल, १९८१ को किया गया था। पृथ्वी की कक्षा का ३६ बार भ्रमण करने के बाद यह १४ अप्रैल १९८१ को पृथ्वी पर वापस आ गया था।

अंतरिक्ष यान यानी स्पेश शटल एक पुन: उपयोग में लाया जानेवाला यान है जिसे सर्वप्रथम अमेरिका द्वारा विकसित किया गया था। इसकी सहायता से लोग अंतरिक्ष में उसी प्रकार जा सकते है जिस प्रकार वे कही भ्रमण करने जाते हैं। इसका प्रयोग वैज्ञानिक तथा सुरक्षा उद्देश्यों के लिए भी किया जाता है।

यह अंतरिक्ष उड़ानों के इतिहास में एक बड़ी उपलब्धि थी और यह बात सिद्ध हुई थी थी कि हवाई जहाजों की तरह काम करनेवाले अंतरिक्ष यानों का निर्माण किया जा सकता है।

कोलम्बिया में एक ओरबिटर, तीन मुख्य इंजन, एक बाहरी टैंक तथा दो बूस्टर रॉकेट्स थे। अपने प्रक्षेपण के १२२ सैकंड बाद जब यह ४६ किलोमीटर की ऊंचाई पर पहुंच गया था इसके बूस्टर रॉकेट्स मुख्य यान से अलग हो गए। जब यह ११६ किलोमीटर की ऊंचाई पर पहुंचा तो इसके तीनों इंजनों ने काम करना बंद कर दिया था। तब इसने पृथ्वी के कक्ष का वृत्ताकार भ्रमण करना शुरु कर दिया था। अपनी निर्धारित यात्रा पूरी करने पर कोलम्बिया एक आम विमान की तरह पृथ्वी पर उतरा। इसकी क्रू के ४ सदस्य थे जबकि इसमें ७ की क्षमता थी। दूसरी बार उसका प्रक्षेपण १४ नवम्बर १९८१ को किया गया था। उसके बाद इसने दो अन्य उड़ानें भरी। कोलम्बिया के बाद एक अन्य अंतरिक्ष यान चैलेंजर ने अपना मिशन शुरू किया। इसने भी कई सफल उड़ानें भरीं। एक तीसरे अंतरिक्ष या डिस्कवरी ने भी कई सफल अंतरिक्ष यात्राएं कीं। उसके बाद आया अटलांटिक नामक अंतरिक्ष यान। मार्च १९८९ में अटलांटिक ने शुक्र ग्रह पर १३०० मिलियन किलोमीटर की यात्रा पर एक अंतरिक्ष यान प्रक्षेपित किया। ६ जुलाई १९९२ को कोलम्बिया ने अंतरिक्ष में सर्वाधिक लम्बी उड़ान का रिकॉर्ड तोड़ा। उसकी यह उड़ान १३ दिनों के लिए थी जबकि पिछला रिकॉर्ड १०

दिन २१ घंटे तथा १ मिनट का था।

इन अंतरिक्ष यानों की सहायता से ही उपग्रह भी अंतरिक्ष में प्रक्षेपित किए जाते हैं। विभिन्न आंतरिक्ष यानों की उड़ानों के दौरान कई महत्वपूर्ण प्रयोग भी किए जा चुके हैं। एडवेंचर से भरपूर तथा सफल मिशन पूरे करनेवाले अंतरिक्ष यानों की उड़ानों को उस वक्त एक बड़ा झटका लगा जब २८ जनवरी १९८६ को प्रक्षेपित किए गए यान चैलेंजर में टेक ऑफ करने के ७५ सेकंड के बाद ही विस्फोट हो गया और इसमें मौजूद सभी सातों क्रू सदस्यों की मृत्यु हो गई।

❋ छठ के त्योहार में सूर्य भगवान की पूजा की जाती है।

❋ प्रकाश को पृथ्वी से चंद्रमा तक पहुंचने में करीब तीन सेकंड लगते हैं।

❋ ज्योतिष में मिथुन (जैमिनी) राशि को दोहरी प्रकृति से इंगित किया जाता हैं। इसका अर्थ है दो मौसमों ग्रीष्म और वर्षा का मेल।

❋ अंग्रेजी शब्द जे रसायन शास्त्र की आवर्त सारणी में नहीं आता है।

❋ सूर्य पृथ्वी से करीब १४९ मिलियन किलोमीटर दूर है।

❋ हमें बार-बार किस वजह से छींक आती है?

छींक आमतौर पर तब आती है जब हमारी नाक के अंदर की झिल्ली, किसी बाहरी पदार्थ के घुस जाने से खुजलाती है। नाक से तुरंत हमारे मस्तिष्क को संदेश पहुंचता है और वह शरीर की मांसपेशियों को आदेश देता है कि इस पदार्थ को बाहर निकालें, छींक जैसी मामूली क्रिया में पेट, छाती, डायफ्राम, वाकतंतु, गले के पीछे और यहां तक कि आंखों की मांसपेशियां काम करती हैं। ये सब साथ मिलकर काम करती हैं और पदार्थ बाहर निकाल दिया जाता है। कभी-कभी एक छींक से काम नहीं चलता तो कई छींके आती हैं। जब हमें जुकाम होता है तब छींकें इसलिए आती हैं जुकाम की वजह से हमारी नाक के भीतर की झिल्ली में सूजन आ जाती है और उससे खुजलाहट होती है।

❋ नागरहोल राष्ट्रीय उद्यान को जानें - देश में अनेक राष्ट्रीय उद्यान स्थित हैं जहां जीव-जंतुओं एवं पेड़-पौधों की असंख्य प्रजातियों को सुरक्षा प्रदान की जाती है। देश के पांच प्रमुख नेशनल पार्कों से एक है नागरहोल नैशनल पार्क। इसे राजीव गांधी नेशनल पार्क के रूप में भी जाना जाता है।

नागरहोल पार्क में शांत जंगल, गर्म बुलबुलेवाला बहता पानी और मन को मोहनेवाली तरह-तरह की झीलें है। यह पार्क कर्नाटक के कोडागु और मैसूर जिले में ६४३ वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में फैला हुआ है। यह बांदीपुर नेशनल पार्क और मृदुमलाई नेशनल पार्क से सटा हुआ है। नागरहोल और बांदीपुर नेशनल पार्क के बीच में कबीनी जलाशय है। इस पार्क का नामकरण नाग और होल शब्दों को मिलाकर किया गया है। नाग का मतलब है सांप और होल का मतलब नदी या धारा।

नागरहोल की स्थापना १९५५ में गेस सैंक्चुरी के रूप में हुई थी। १९७४ में मैसूर के जंगलों को इसमें शामिल कर इसका क्षेत्र बढ़ा दिया गया। १९८८ में इसे नेशनल पार्क का दर्जा दे दिया गया। इस पार्क का जल स्रोत काफी समृद्ध है, जिसमें कबीनी नदी के अलावा लक्ष्मनतीर्था नदी, सरती होल, नगार होल, चार बारहमासी धाराएं, ४७ मौसमी धाराएं, चार छोटी बारहमासी धाराएं, चार छोटी बारहमासी झीलें, ४१ कृत्रिम झीलें और कबीनी जलाशय आदि शामिल हैं।

इस पार्क के भ्रमण के लिए सबसे अच्छा साधन जीप, हाथी की सफारी और नाव हैं। साथ ही यहां पर ट्रैकिंग की भी अच्छी व्यवस्था है। पार्क में हाथियों को अपने प्राकृतिक निवास और नदी के किनारे मस्ती में घूमते हुए भी देखा जा सकता है। बांधवगढ़ की तरह यहां भी चीतों के शिशु आपस में अठखेलियां करते मिल जाएंगे। यहां आने का सबसे अच्छा समय अप्रैल से अक्टूबर के मध्य होता है।

पेड़-पौधों का पार्क- चूंकि पार्क अधिक बारिश वाले क्षेत्र में आता है इसलिए यहां हर तरफ घास फैली हुई है। दूर तक फैली हरी-हरी घास आंखों को अद्‌भुत सुकून देती है। यहां का जंगल टीक और यूकेलिप्टस के पेड़ों से घिरा हुआ है। इस पार्क की विशेषता यह है कि तमाम तरह के जानवरों के देखने के लिए दूर-दूर भटकना नहीं पड़ेगा।

जानवर और पक्षी- यहां आने पर चीता, सांभर, चीतल, हाथी, भालू, जंगली सांड, तेंदुआ, हिरन और तमाम तरह के स्तनपायी जानवरों के अलावा करीब २५० प्रजातियों के पक्षियों को निहारने का मौका मिल सकता है।

* हिंदी को खड़ी बोली नहीं कहा जाता, बल्कि कहा यह जाता है कि आज की जो मानक हिंदी है, वह खड़ी बोली से निकली है। खड़ी बोली पश्चिम रुहेलखंड, गंगा के उत्तरी दो आब और अंबाला जिले की उपभाषा है, जो ग्रामीण जनता द्वारा मातृभाषा के रूप में बोली जाती है। इसे कौरवी भी कहते हैं। यानी कौरवों की बोली। इसके इलाके में रामपुर, सहारनपुर, देहरादून का मैदानी भाग, अंबाला और कलसिया और भूतपूर्व पटियाला रियासत के पूर्वी भाग आते हैं।

मुसलमानी प्रभाव के निकटतम होने के कारण इस बोली में अरबी, फारसी के शब्दों का व्यवहार हिंदी में ब्रज, अवधी, भोजपुरी, राजस्थानी, मगधी वगैरह बोलियां हैं। खड़ी बोली अनेक नामों से पुकारी गयी है। जैसे हिंदुई, हिंदवी, दक्खिनी, दखनी या दकनी, रेखता, हिंदोस्तानी आदि। खड़ी बोली को खरी बोली भी कहा गया है।

* बहुत पहले कलम और स्याही का प्रयोग लिखने या किसी प्रकार के चिन्ह आदि लगाने के लिए किया जाता था। उस समय पेन्सिल का भी बहुत कम प्रयोग किया जाता था। वैसे प्रारंभिक अवस्था में लोग पेन्सिल को खोज भी नहीं पाये थे।

पुराने समय में तो लोग स्याही में कलम डुबोकर लिखते थे, लेकिन आजकल कलम में स्याही यानी रोशनाई भरकर लिखा जाता है।

मिस्र के लोगों ने सबसे पहले स्याही का प्रयोग करना सीखा था। ब्रिटिश अजायबघर में ढाई हजार वर्ष पुरानी स्याही रखी हुई है। पुराने जमाने में स्याही मूलत: कार्बन द्वारा बनायी जाती थी। प्राचीन काल की स्याही कार्बन में गोंद मिलाकर तैयार की जाती थी। आजकल जिस चाइनीज इंक का प्रयोग किया जाता है, उसका प्रयोग ईसा पूर्व २५९५ में किया गया था। यह भी कार्बन से बनायी जाती थी।

आजकल प्रयोग में लायी जानेवाली स्याही और प्राचीन काल की स्याही में कोई समानता नहीं है। आधुनिक युग में साधारण स्याही मुख्यत: दो तत्वों से मिलकर बनायी जाती है, और वे दोनों तत्व हैं- गलटैनिक एसिड और फेरस सल्फेट। फेरस सल्फेट को हीरा कष भी कहते हैं। यह लोहे से निकला लवण है। गलटैनिक एसिड गलनैट नामक फल से निकाला गया एसिड होता है। गलनैट फल शायद किसी ने कहीं देखा होगा क्योंकि यह हमारे देश का फल नहीं है।

ऑक के पेड़ पर गोलावाप्स नामक कीड़े लगते हैं। ये कीड़े ऑक के पेड़ के पत्तों पर अण्डे देते हैं, जिनसे पत्तों की शिराएं नष्ट हो जाती हैं, तब पेड़ के उस स्थान से रस टपकता है और वही रस जमकर गलनैट बन जाता है। गलनैट को

पीसकर एलकोहल के साथ फेंटने पर गलटैनिक एसिड तैयार होता है। स्याही बनाने के लिए सबसे पहले गैलटैनिक एसिड में फेरस सल्फेट, सलफ्यूरिक एसिड, गोंद और फेनल मिलाया जाता है। साथ ही एक रंग, जिसका नाम एनिलिन है, उसे मिलाया जाता है। कागज पर लिखने के बाद स्याही का सूखना बहुत जरूरी होता है, स्याही के साथ थोड़ी सी स्प्रिट मिला दी जाती है जिससे जैसे जैसे लिखते जाते हैं, वैसे-वैसे स्याही सूखती जाती है। आजकल स्याही बनाने की तकनीक में और भी विकास हुआ है। जिससे इसमें चटकपन, चमक और रफ्तार से चलने के साथ-साथ सूखने के अद्‌भुत गुण होते हैं।

❋ चीन में २० करोड़ से अधिक लोग भरोसे के लायक नहीं -चीन में भले ही भ्रष्टाचार रोकने को राष्ट्रपति शी जिनपिंग कदम उठा रहे हों लेकिन लोगों में डर नहीं है। इसका पता राष्ट्र को ऋण प्रणाली के आधार पर बनाई गई एक सूची को देखकर चलता है। इस सूची में देश के ऐसे १४-२१ करोड़ लोग शामिल हैं, जिनको भरोसे के लायक नहीं माना जा सकता। सरकार ने इनको काली सूची में डालते हुए सख्त सजा देने का मन बनाया है।

बीजिंग में सामाजिक ऋण प्रणाली बनाई गई थी, जिसका उद्देश्य देश की अर्थव्यवस्था को संकट में डालनेवाले लोगों का पता लगाना था। इस सोशल क्रेडिट वॉच डॉग ने १४-२१ करोड़ ऐसे मामलों का पता लगाया। इसमें अकेले ३.६ करोड़ मामले पिछले साल के थे। जिन मामलों के आधार पर लोगों को भरोसे के योग्य नहीं माना गया उसका आधार उनका नुकसान देय आचरण था।

❋ नलिन काउंटी ताइवान के झांग हू गांव के चाय बागान में फैली हरियाली। यह गांव चाय और कॉफी के उत्पादन के लिए जाना जाता है।

❋ केन्या- केन्या के किरिचो के बाहर प्लान्टेशन में चाय के हरे-भरे व खूबसूरत बागान।

❋ चील हिरण के बच्चे को मार सकती है और लेकर लड़ सकती है।

❋ बुद्धिमान व्यक्ति के बालों में सामान्य आदमी की तुलना में अधिक जिंक और तांबा होता है।

❋ नाक और कान की लम्बाई-चौड़ाई में हमेशा वृद्धि होती रहती है।

❋ पृथ्वी पर ज्वालामुखी क्यों फूटते हैं? - लाखों-करोड़ों साल पहले पृथ्वी एक जलता हुआ पिंड थी, समय के साथ यह ठंडी होती चली गयी और इसका बाहरी आवरण ठोस बनता गया। इससे यह बात समझ में आती है कि आज भी पृथ्वी पर ज्वालामुखी क्यों है? पृथ्वी के व्यास के मुकाबले इसका बाहरी ठोस आवरण बहुत पतला है- यानी १२७४२ किलोमीटर की तुलना में सिर्फ ४० किलोमीटर। यही बाहरी आवरण आंतरिक अत्यधिक गरम पदार्थ को घेरे हुए है। आंतरिक गरम पदार्थ इस आवरण के कारण अत्यधिक दाब झेल रहा है और यह बाहरी आवरण के ठोस होते रहने तथा सिकुड़ने के कारण बाहर आने को तत्पर रहता है, जो ज्वालामुखी बनकर बाहर फूट निकलता है।

❋ सरदार वल्लभ भाई पटेल पुलिस अकादमी हैदराबाद में स्थित है।

❋ सोनोथैरेपी नामक चिकित्सा पद्धति में रोगों का इलाज संगीत से किया जाता है।

❋ सैंट्रल लैदर रिसर्च इंस्टीट्यूट चेन्नई स्थित है।

❋ राजा त्रिभुवन नेपाल देश के राजा थे।

✻ सितार वादक पंडित रवि जिनके पिता झालावाड़ के दीवान और बाद में इंग्लैंड की प्रिवी कौंसिल के सदस्य बने।

✻ १९६८ से १९७४ तक लगातार सात वर्ष ऑल इंग्लैंड बैडमिंटन चैम्पियन रूडी हार्टोनो था।

✻ विश्व में अंग्रेजी भाषा है जिसमें मात्राएं नहीं होती।

✻ स्पेन यह देश ऐसा है जो कपड़े पर अखबार निकालता है।

✻ इटालियन (२० अक्षर) सबसे कम अक्षरों वाली भाषा है।

✻ अफ्रीका से आया तरबूज - तरबूज अफ्रीका की पैदावार है। जो अफ्रीका में लगभग पांच हजार साल से उगाया जाता था। वहीं कुछ लोगों का मानना है कि तरबूज की खेती पांच हजार साल पहले मिस्र में की जाती थी और यहीं से होते हुए दसवीं सदी में तरबूज चीन जा पहुंचा। चीन के लोगों को तरबूज इतना पसंद आया कि वे इसकी खेती करने लगे और आज दुनिया में सबसे ज्यादा तरबूज का उत्पादन चीन में ही होता है। यह फल नहीं, बल्कि सब्जी है, जो खीरा, कद्दू जैसी सब्जियों के परिवार से संबंध रखता है। आज पूरी दुनिया में तरबूज की लगभग १२०० किस्में उगाई जाती हैं। चीन और जापान जैसे देशों में तो तरबूज का इस्तेमाल किसी को गिफ्ट देने के लिए भी किया जाता है। जापान में अलग-अलग आकार के तरबूज उगाए जाते हैं, जैसे चौकोर और दिल के आकार के आदि।

✻ लाल बीच- चीन में एक ऐसा बीच है, जो हर जगह से लाल रंग का ही दिखाई देता है। यह बीच दावा काउंटी में है। लाल घास की वजह से यह इतना लाल दिखता है। दुनिया भर से लोग इसे देखने यहां पहुंचते हैं। यह दुनिया का सबसे बड़ा वेटलैंड भी है। यहां हर साल २३६ तरह के माइग्रेटिड बर्ड आते हैं। २६ वर्ग किलोमीटर में फैला बीच पूरा लाल ही लाल है। यहां ४०० तरह के जानवर रहते हैं। इसके पास जाने के लिए लकड़ी के लंबे और टेढ़े-मेढ़े पुल से जाना पड़ता है, जो कि करीब ६८० मीटर लंबा है। यह पुल ५१९ खंभों पर टिका हुआ है।

✻ अनार के जूस का नियमित सेवन रक्तचाप को कम कर सकता है। यही नहीं यह बीयर बेली (बीयर सेवन) के खतरे को भी कम कर सकता है। यह एक ऐसा सुपर फ्रूट है, जो न केवल उच्च रक्तचाप को कम कर सकता है, बल्कि पेट के पास बढ़ रहे अतिरिक्त वसा को भी कम करता है।

✻ धरती का वजन ६५०० मिलियन टन है।

✻ जब भी आप छींकते हैं आपका हृदय एक मिली सेकेंड के लिए रुक जाता है।

✻ अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में चिल्ला नहीं सकते क्योंकि वहां गुरुत्वाकर्षण नहीं होता।

✻ दरियाई घोड़े को गुलाबी पसीना आता है।

✻ कंगारू जो पैदा होने के समय मात्र एक इंच का होता है।

✻ भारत की कृष्णा नदी दक्षिण भारत की यह वह नदी है जिसमें हीरे पाए जाते हैं।

✻ नाइट्रस ऑक्साइड यह एक ऐसी गैस है जिसके सूंघने पर आदमी केवल हंसता ही रहता है।

✻ ब्राजील के जंगलों में आग बरसाने वाला पेड़ है।

✻ पृथ्वी को सूर्य से ऊर्जा मिलती है और यही ऊर्जा पृथ्वी की सतह को गरम करती है। सूर्य की ऊर्जा का कुछ भाग पृथ्वी और समुद्र की सतह से टकराकर वायुमंडल में बदल जाता है।

❋ पृथ्वी आकार में पांचवां सबसे बड़ा ग्रह है।

❋ पृथ्वी को सूर्य की एक परिक्रमा करने में लगे समय को सौर वर्ष कहा जाता है।

❋ पृथ्वी अपने अक्ष पर पश्चिम से पूरब की ओर १६१० किमी प्रतिघंटा की चाल से चक्कर लगाती है।

❋ पृथ्वी अपने अक्ष पर २३ घंटे ५६ मिनट और ४ सेकेंड में एक चक्कर पूरा करती है, जिससे दिन और रात होते हैं।

❋ वी.एल.बी.ए. की स्थापना

वर्ष १९९३ में एक जैसी दिखनेवाली १० रेडियो डिशेज का एक नेटवर्क अमेरिका में स्थापित किया गया था। यह नेटवर्क वाशिंग्टन से लेकर कैरेबियाई वर्जिन द्वीपों तक तथा हवाई से लेकर न्यू हैम्पशायर तक फैला हुआ था। इस नेटवर्क को स्थापित करने का उद्देश्य रेडियो किरणों का उत्सर्जन करनेवाले आकाशीय पिंडों की अत्यधिक विशुद्ध तस्वीरें प्राप्त करना था। रेडियो डिशेज के इस नेटवर्क को वैरी लांग बेसलाइन ऐरे (वी.एल.बी.ए.) नाम दिया गया था। इंटरफैरोमीट्री नामक एक पद्धति का प्रयोग करके २ या अधिक रेडियो एंटीना के संकेतों को जोड़कर रेडियो वेव्स स्त्रोतों की बढ़िया तस्वीरें लेना संभव हो गया था। यह किसी एक डिश द्वारा ली गई तस्वीरों से अधिक विशुद्ध था।

❋ पीटर शिल्वर्स- शिल्वर्स सिर्फ १२ वर्ष के थे जब उन्होंने सन १९५८ में इंग्लैंड के हेलिंग द्वीप में बोर्डसेलिंग यानी विंडसर्फिंग का आविष्कार किया था।

❋ लुईस ब्रेल- इन्होंने महज १५ वर्ष की आयु में ब्रेल लिपि का आविष्कार किया था। ब्रेल लिपि दृष्टिहीन लोगों द्वारा उभरे हुए बिंदुओं को छूकर पढ़ने में सक्षम बनाती है। लुईस स्वयं दृष्टिहीन थे।

❋ होरालियो एडम्स- एडम्स ने मात्र १६ वर्ष की आयु में ही अपने पिता थॉमस की सहायता करनी शुरू कर दी थी। एडम्स चिकल नामक एक मैक्सिकन पेड़ के सूखे दूध पर प्रयोग कर रहे थे। इस सूखे दूध से च्यूइंगम का आविष्कार हुआ था।

❋ महासागरों में धरती से ज्यादा सोना है। आज तक धरती से जितना सोना निकला है उससे कहीं ज्यादा सोना महासागरों में पड़ा है लेकिन समुद्र के पानी से सोना निकालना काफी महंगा पड़ता है। अभी तक इसकी कोई सस्ती प्रक्रिया नहीं खोजी जा सकी है।

❋ हम अपनी दोनों आंखों का इस्तेमाल एक ही परिणाम में नहीं करते। देखने के लिए कुछ लोग दायी आंख का इस्तेमाल ज्यादा करते हैं तो कुछ बायीं आंख का। मतलब यह कि हर व्यक्ति किसी एक आंख का ही इस्तेमाल ज्यादा करते हैं, जिससे वे अच्छी तरह देख सकते हैं। अपनी पसंदीदा आंख से देखने पर वस्तुएं दूसरी आंख के मुकाबले कुछ बड़ी नजर आती हैं।

❋ संसार का पहला प्लास्टिक सर्जन एक भारतीय था। २६०० वर्ष पूर्व भारत में रहनेवाले एक महान चिकित्सक और शल्य चिकित्सक सुश्रुत को प्लास्टिक सर्जरी का जनक माना जाता है। सुश्रुत ओंठ, कान के पल्ले और नाक की सर्जरी कर सकते थे। इसके लिए वे रोगी के गालों से मांस लेते थे।

❋ भारत विश्व में सोने का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। भारत में प्रतिवर्ष ८०० टन सोने की खपत होती है। इसमें से ज्यादातर का इस्तेमाल २२ या २४ कैरेट के आभूषणों के रूप में होता है। भारतीय परिवारों में करीब १५००० टन सोना है यानी रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया में रखे गए सोने से ४० गुना ज्यादा।

❋ हब्बल स्पेस टेलीस्कोप- यह अंतरिक्ष में २६ वर्ष से अधिक समय तक रही। हब्बल दूरबीन का व्यास २.४ मीटर और फोकल लेंथ ५७.६ मीटर है। इसकी सहायता से ७००० प्रकाश वर्ष दूर स्थित सबसे प्राचीन माने जानेवाले तारों के एक समूह का भी पता लगा। हब्बल दूरबीन का नाम वैज्ञानिक एडविन हब्बल के नाम पर रखा गया, जिन्होंने ब्रह्मांड निर्माण की बिग बैंग सिद्धांत दिया।

दूरबीन यानी जिससे दूर की चीज पास दिखे। ब्रह्मांड की चीजों यानी आकाशगंगाओं, तारों, ग्रह, नक्षत्रों, उनकी आयु, एक-दूसरे से और हमारी धरती से उनकी दूरी आदि के बारे में जानकारी के लिए वैज्ञानिकों ने बड़ी-बड़ी दूरबीनें बनाई हैं, जो हजारों प्रकाश वर्ष दूर स्थित ग्रहों-उपग्रहों को अपनी आंखों से न केवल देख लेती हैं, बल्कि उसकी तस्वीर भी उपलब्ध कराती हैं।

राजस्थान के उदयपुर में भारत की सबसे बड़ी दूरबीन द मल्टी एप्लीकेशन सोलर टेलीस्कोप स्थापित की गई है। यह दूरबीन सूरज की हाई रेजोल्यूशन वाली थ्रीडी इमेज लेती है। २००४ में इसकी डिजाइन फाइनल हुई और २००८ में ऑप्टिकल एलीमेंट फिट किए गए। २०१३ में इसे उदयपुर सोलर ऑब्जर्वेटरी में स्थापित किया गया।

यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी की हर्शल दूरबीन ने अंतरिक्ष में ऑक्सीजन के अणु होने के पुख्ता प्रमाण उपलब्ध कराए हैं। दूरबीन ने ऑक्सीजन के ये निशान ओरियन नक्षत्र के तारों के निर्माण क्षेत्र में देखे हैं यानी आनेवाले समय में वहां जीवन की पूरी संभावना की खबर आ सकती है। रूस ने सबसे आधुनिक दूरबीन स्पेक्ट्रम आर भी अंतरिक्ष की कक्षा में स्थापित कर दी है। इस दूरबीन का व्यास १० मीटर है और यह अंतरिक्ष में ३ लाख ४० हजार कि.मी. लंबी कक्षा में चक्कर लगाकर पांच सालों तक काम करेगी।

❋ अचेतन दृष्टि अपेक्षाकृत ज्यादा सटीक होगी क्योंकि इसके बिना हम कोई काम नहीं कर पाएंगे। ऐसी कई स्थितियां होती हैं जिसमें हमारी आंखें ठीक-ठाक आकलन नहीं कर पाती हैं। हम जिस चीज को बड़ा समझते हैं, वह छोटी निकलती है या हम जिन रेखाओं को घुमावदार समझते हैं वे वास्तव में सीधी होती हैं। ऐसी स्थितियों को दृष्टि भ्रम कहा जाता है।

❋ दुनिया की पहली हाइड्रोजन ट्रेन- जर्मनी ने सफलतापूर्वक हाइड्रोजन से चलनीवाली ट्रेन की शुरुवात की है। इससे प्रदूषण भी कम होगा। इसे इको-फ्रेंडली कहा गया है। पूरी दुनिया में धीरे-धीरे प्रदूषण की समस्या बढ़ती जा रही है। इसलिए फ्रांस की मल्टीनेशनल कंपनी अलस्टॉम ने हाइड्रोजन से चलनीवाली ट्रेन को तैयार किया। फ्रांसीसी टीजीवी-निर्माता अल्स्टॉम द्वारा निर्मित दो ब्राइट नीली कॉर्डिया आईलिंट ट्रेनों ने उत्तरी जर्मनी में कक्सहेवन, ब्रेमरहेवन, ब्रेमर्वोर्डे और बक्सटैहुड के कस्बों और शहरों के बीच एक १०० किलोमीटर के मार्ग पर हाइड्रोजन ट्रेन की शुरुआत की जिसे यहां पर डीजल से चलनेवाली ट्रेनों के विपरीत चलाया गया।

इस ट्रेन की यह खासियत है कि पारंपरिक डीजल इंजन की तुलना में ६० फीसदी कम शोर करेगी, यह पूरी तरह उत्सर्जन मुक्त है। इसकी रफ्तार और यात्रियों को ले जाने की क्षमता भी डीजल ट्रेन की परफॉर्मेंस के बराबर है। हाइड्रोजन ट्रेन डीजल इंजन जैसी तकनीक का इस्तेमाल करती है। फर्क सिर्फ इंजन की बनावट और ईंधन का है। ट्रेन में डीजल की जगह फ्यूल सेल, हाइड्रोजन और ऑक्सीजन डाले गए हैं। ऑक्सीजन की मदद से हाइड्रोजन नियंत्रित ढंग से जलेगी और इस ताप से बिजली पैदा होगी। बिजली लिथियम आयन बैक्टरी को चार्ज करेगी और इससे ट्रेन चलेगी। इस दौरान धुएं

की जगह सिर्फ भाप और पानी ही निकलेगा।

✻ हर सेकेंड १०० बार आसमानी बिजली धरती पर गिरती है। बिजली गिरने से जो लोग मारे जाते हैं उनमें से ८० प्रतिशत पुरुष होते हैं।

✻ आमतौर पर क्लासेस में पढ़ाया जाता है कि प्रकाश की गति ३ लाख किलोमीटर/सेकेंड होती है पर वास्तव में यह गति २,९९,७९२ होती है।

✻ जलेबी भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश, ईरान के साथ-साथ लगभग दुनिया के सभी अरब देशों में भी बहुत पसंद की जाती है, बस इसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है।

✻ भारतीय मसालों के लोकप्रिय निर्माता और निर्यातक प्रतिष्ठान एम.डी.एच. का पूरा नाम महाशियां दी हट्टी है।

✻ वयस्कों के शरीर में औसतन ३५ से ४० लीटर पानी हमेशा बना रहता है। एक वयस्क पुरुष के शरीर में पानी उसके शरीर के कुल भार का लगभग ६५ प्रतिशत और एक वयस्क स्त्री के शरीर में उसके शरीर के कुल भार का ५२ प्रतिशत तक होता है।

✻ भारत के राजस्थान के श्रीगंगानगर में चुकन्दर से चीनी बनाने का एक कारखाना स्थापित किया गया है।

✻ पटाखों का आविष्कार- हान राजवंश के दौरान चीन में पटाखों का बनना शुरू हुआ ताकि लोग इसके जरिये बुरी आत्माओं को डरा सकें या भगा सकें। हान राजवंश के लोगों ने जोर से धमाके का उत्पादन करने के लिए बांस को आग में फेंक दिया। आग में बांस जलने लगा, धीरे-धीरे उसमें से आवाज हुई और अंत में एक विशाल विस्फोट के साथ फट गया। बांस में खोखले गड्ढे होते हैं जिनमें वायु होती है, जो गर्म होने पर एक बड़ी आवाज के साथ फूलती है और फट जाती है। यह चीन के लोगों के लिए एक रोमांचक अनुभव था। उन लोगों को लगा कि लकड़ी के विस्फोट से जो आवाज होती है वो बुरी आत्माओं को डराने के लिए काफी है। बुरी आत्माओं से छुटकारा पाना एक खुशी का संकेत था। इसलिए बांस का फटना खुशी और उत्सव से जोड़ा जाने लगा।

✻ अब्राहम लिंकन जब अवसाद से गुजर रहे थे तो वह चाकु-छुरों से दूर रहते थे, उन्हें डर था कि वह खुद को मार न ले।

✻ बीयर अल्कोहलिक ड्रिंक- रूस में बीअर को अल्कोहल ड्रिंक नहीं माना जाता था। २०११ के बाद से इसे सॉफ्ट ड्रिंक से अल्कोहल ड्रिंक होने का दर्जा मिला।

✻ मीठी चीजें पसंद करनेवाले खुश- खाने से इंसान की प्रवृत्ति पता लगाई जा सकती है। चॉकलेट और मीठी चीजें पसंद करनेवाले लोग खुश रहते हैं और खुले विचारों के होते हैं।

✻ ८८ प्रतिशत लोग मोबाइल फोन पर बात करने की एक्टिंग कर लोगों से बात करना टालते हैं।

✻ जादूगोड़ा (झारखंड) यूरेनियम खनिज के उत्खनन के लिए प्रसिद्ध है।

✻ मिशिगन (अमेरिका) में रहनेवाले जैरी ग्रेटजिंगर पचास साल से ऐसी दुनिया का नक्शा बना रहे हैं, जो सिर्फ उनकी कल्पनाओं में है। १९६३ में एक शीट से शुरु हुआ इस मैप नामक यह नक्शा दो हजार वर्ग फीट में फैला है। वे इस नक्शे को हर रोज बढ़ाते जा रहे हैं। वे कहते हैं अपनी यह दुनिया बनाने की शुरुआत एक शहर बनाने से की थी। पेनल्स पर अपनी कल्पना से नदी, रेल, रोड और स्टेशन बनाना शुरू किया। इतने में वह शीट छोटी पड़ गई। इसके बाद एक और

शीट ले दोनों को साथ जोड़ा। तब से यह सिलसिला आज तक जारी है। जैरी मैप में किए गए हर कंस्ट्रक्शन का हिसाब कंप्यूटर पर रखते हैं।

✻ बादाम में प्रोटीन भरपूर- नट्स विशेष रूप से बादाम प्रोटीन का अच्छा स्रोत हैं। १०० ग्राम बादाम में २० ग्राम तक प्रोटीन होता है। भरपूर मात्रा में प्रोटीन के अलावा बादाम विटामिन, मिनरल और फाइबर से भी भरपूर होता है। इसका नियमित सेवन करने से बहुत सारे स्वास्थ्य लाभ प्राप्त होते हैं। मिठाई और व्यंजनों में बादाम के इस्तेमाल से यह अतिरिक्त स्वास्थ्यवर्धक और स्वादिष्ट हो जाता है।

✻ महिलाओं की उम्र पुरुषों की तुलना में ज्यादा होती है और इसका मुख्य कारण है महिलाओं का प्रतिरोधक प्रणाली ज्यादा बेहतर होता है। अगर आंकड़ों को देखें तो १०० की उम्र को पार करनेवाले लोगों में ५ में से ४ महिलाएं होती हैं।

✻ दो हड्डियां मिलने या कनेक्ट होने वाली जगह को जोड़ कहते हैं। स्नायुबंधन अर्थात लिगमेंट सख्त रेशेदार संयोजी ऊतक के बैंड होते हैं, जो जोड़ बनाने के लिए एक हड्डी को दूसरे से जोड़ने का काम करते हैं। कुछ जोड़ चल होते हैं, तो कुछ अचल। खोपड़ी में मौजूद जोड़ चल नहीं सकते हैं।

✻ थिएटर में बिस्तर लगे हैं- ग्रीस का ओलिंपिया थिएटर सबसे अनोखा है और इसकी खासियत ये है कि यहाँ बैठने के लिए कुर्सियां नहीं बल्कि लेटने के लिए बिस्तर लगाए गए हैं जहाँ आप आराम से लेटकर फिल्म का आनन्द ले सकते हैं।

✻ भारतीय रेलवे के ट्रेक की कुल लम्बाई है करीब १ लाख १५ हजार किलोमीटर है जबकि भारत में फिलहाल लगभग ७५०० रेलवे स्टेशन बने हुए हैं।

✻ भारत की सबसे धीमी गति से चलनेवाली ट्रेन का नाम है मेट्टुपाल्यम ऊटी नीलगिरी पैसेंजर ट्रेन जो मात्र १० किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलती है।

✻ भारत की सबसे बड़ी मानव निर्मित झील गोविन्दवल्लभ पन्त सागर, उत्तराखंड है।

✻ भारत में आम लगभग ५००० साल पहले से ही उगाया जाता था। चौथी से पांचवीं शताब्दी पूर्व ही यह एशिया के दक्षिण पूर्व तक पहुंच गया था। महाकवि कालिदास ने भी अपने ग्रंथों में आम का वर्णन किया है।

साल १४९८ में पुर्तगाली व्यापारी केरल से अपने साथ मसाला अपने देश ले जाते थे। वहीं से आम और इसका नाम भी ले गए। वे लोग इसे मंगा बोलते थे। अंग्रेजी शब्द मैंगो की उत्पत्ति तमिल शब्द मैन-गे से हुई मानी जाती है। जब भारत में पुर्तगाली व्यापारियों का आना-जाना हुआ तो उन्होंने इसे मैंगो नाम दिया। चीनी यात्री ह्वेनसांग जब सातवीं शताब्दी में भारत आया था, तब वह यहां से अपने साथ आम लेकर गया था।

✻ आज से दस हजार साल पहले ही पेरू और बोलीविया जैसे देशों में आलू की खेती होने लगी थी। १४वीं सदी में स्पेन ने पेरू पर हमला कर दिया। जब उन्हें इस लाजवाब कंद का पता चला तो वे इसे अपने देश स्पेन ले गए। उसके बाद यह यूरोप के देशों से होते हुए अफ्रीका पहुंचा, फिर एशिया में इसका प्रवेश हुआ। भारत में आलू का प्रवेश १७वीं शताब्दी में हुआ, पुर्तगालियों ने ही सर्वप्रथम भारत में आलू की खेती शुरू की। पुर्तगाल में आलू को बटाटा कहा जाता है, यही कारण है कि आज भी भारत के पश्चिमी राज्यों में कहीं-कहीं आलू को बटाटा नाम से जाना जाता है। इंग्लिश का पोटॅटो शब्द स्पैनिश शब्द बटाटा से आया है।

❋ ज्वालामुखी एक पहाड़ है। जिसके भीतर पिघला लावा भरा होता है। पृथ्वी के नीचे दबी उच्च ऊर्जा यानी जियोथर्मल एनर्जी से पत्थर पिघलते हैं। जब जमीन के नीचे से ऊपर की ओर दबाव बढ़ता है तो पहाड़ ऊपर से फट पड़ता है। ज्वालामुखी के नीचे पिघले हुए पत्थरों और गैसों के मिश्रण को मैग्मा कहते हैं।

❋ मनुष्य के शरीर में खून प्लाज्मा और रक्त कणिकाओं से मिलकर बना होता है, ये रक्त कणिकाएं तीन प्रकार होती हैं लाल रक्त कणिका, श्वेत रक्त, कणिका और प्लैटलेट्स। इनके अलग-अलग कार्य होते हैं। लाल रक्त कणिकाएं शरीर में ऑक्सीजन पहुंचाने का कार्य करती हैं। लाल रक्त कणिकाओं में लाल रंग का हीमोग्लोबिन होता है, जिसकी वजह से ये लाल रंग दिखाई देता हैं और इनकी संख्या खून में ९७ प्रतिशत होती है। यही कारण है कि खून का रंग लाल दिखाई देता है। यह बिलकुल वैसे ही है जैसे पेड़-पौधों में हरे रंग का क्लोरोफिल होने के कारण उनके पत्तों का रंग हरा दिखाई देता है।

❋ सभी तरह के ग्रहण- सोलर सिस्टम में केवल धरती ही ऐसी जगह है जहाँ सब तरह के ग्रहण लगते हैं। सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण आदि।

❋ हर समय सूरज- नार्वे के लोंगयेमरब्येन स्वालबार्ड, आर्कटिक सागर के ग्रीनलैंड में नार्वे द्वीप समूह है। इस जगह के बारे में कहा जाता है कि यहां २० अप्रैल से २३ अगस्त तक सूरज अस्त ही नहीं होता है, रात हो या दिन सूरज दिखता ही है।

❋ लाल रंग का झरना - अंटार्कटिका के टेलर ग्लेशियर पर जमी बर्फ में एक जगह ऐसी भी है, जहां से लाल रंग का झरना (ब्लड फॉल्स) बहता है। इसे देखकर ऐसा लगता है कि इस झरने से खून बह रहा हो। यह लाल झरना अभी भी रहस्य बना हुआ है।

❋ गाड़ी अपने आप चलती है- मैग्नेटिक हिल, मॉन्कटन, न्यू ब्रंसविक यह मैग्नेटिक हिल अपने आप में खास है। इस हिल पर ऐसा मैग्नेटिक प्रभाव है कि बिना स्टार्ट किए ही गाड़ी चलने लगती हे। इस हिल का पता १९३० में चला था।

❋ बकरी जैसी आवाज- रैप गायिका शकीरा को एक बार स्कूल में अध्यापकों ने ये कहते हुए रिजेक्ट कर दिया था कि तुम्हारी आवाज बकरी जैसी है।

❋ बाजू से पूरा शरीर- स्टारफिश अपनी बाजुओं को दोबारा उगा लेती है। एक तथ्य ये भी है कि ये केवल अपनी बाजू से ही पूरा शरीर भी उगा सकती है।

❋ अजूबा जैसे मोराकी पत्थर- साउथ आइलैंड न्यूजीलैंड के ईस्ट कोस्ट में स्थित कोईकोहे बीच पर १२-१२ फीट के पत्थरों का ढेर किसी अजूबे से कम नहीं है। यह पत्थर दिखने में सीप और मोती की तरह हैं। हजारों साल से यह पत्थर यहाँ देखे जा रहे हैं।

❋ आइलैंड में आइलैंड- आइसलैंडिक आइलैंड किसी रहस्य से कम नहीं है। ऐसा अनुमान है कि अचानक वेस्टमैन आइलैंड में ज्वालामुखी फटा। ज्वालामुखी फटने से जो भी गतिविधियां थीं, वह अंदर ही सेटल हो गई और १९६७ में यहां आइलैंड के अंदर एक नया आइलैंड बन गया।

❋ लोकसभा और राज्यसभा की संयुक्त बैठक की अध्यक्षता लोकसभा का अध्यक्ष करता है।

❋ पृथ्वी का तीन चौथाई हिस्सा जल ही है। इसीलिए जब अंतरिक्ष यात्रियों (एस्ट्रोनॉट्स) ने अंतरिक्ष से पृथ्वी को देखा, तो उन्हें यह अधिकतर नीली ही दिखाई दी और इसका नाम ब्लू प्लेनेट पड़ गया।

❋ महासागरों का निर्माण बेसाल्टिक चट्टान से हुआ है।

❋ चीटियां अपने वजन से ५० गुना अधिक वजन उठा लेती हैं और ३०० गुना अधिक वजन खींच लेती हैं।

❋ घोड़ा एक मिनट में १२ बार, मनुष्य १४ से १८ बार, गाय २० बार, मुर्गी ५० बार, कबूतर ६० बार और चूहा ३० बार सांस लेते हैं।

❋ गैण्डा ऐसा जानवर है जो नित्य एक ही स्थान पर मल त्याग करता है।

❋ हाथी को हर चीज अपने से दोगुनी बड़ी दिखायी पड़ती है।

❋ टारटुआं ऐसा अकेला जीव है जिसके तीन आंखें पायी जाती हैं।

❋ हीरे का नाम ग्रीक शब्द एडेमस पर पड़ा है। इसका अर्थ होता है अजेय यानी जिसे जीता नहीं जा सकता।

❋ सृष्टि का आरंभ ही जल से हुआ

हमारी चिंतन-परंपरा में सृष्टि का आरंभ ही जल से हुआ है, जल विस्तार, गहराई, अद्वैत इन सबका प्रतीक है। हमारी वाणी का नाम ही सरस्वती है। राष्ट्र की कल्पना में सात नदियों, गंगा, यमुना, गोदावरी, सरस्वती, सिंधु, कावेरी, नर्मदा का महत्वपूर्ण योगदान है। तीर्थ का अर्थ ही पानी का घाट है और पानी ही इसलिए तीर्थ है। पानी के स्रोत हमारे देश में मुख्यत: देव और नदी हैं। वैसे पृथ्वीगर्भ जल-स्रोत भी हैं और कृत्रिम जलप्रणालियां एवं कूप-तड़ागादि भी प्राचीन काल से हैं, सिंचाई के साधन बहुत प्राचीन हैं। हमारे देश में सिंधु, ब्रह्मपुत्र और शोणभद्र (सोन) नदी हैं, नर्मदा, ताप्ती, महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी बड़ी नदियां हैं, शेष इनकी सहायक नदियां हैं।

❋ सर्वाधिक विशाल कुर्सी - विश्व की सर्वाधिक विशाल कुर्सी २६ मीटर (८५ फुट ४ इंच) ऊंची है। इसकी सीट १० मीटर (३२ फुट १० इंच) चौड़ी है। इस कुर्सी का निर्माण स्पेन की एक कम्पनी ग्रुपो हेरमानोस ह्यूएर्तास ने किया। इस कुर्सी का निर्माण कम्पनी ने अपनी फर्नीचर फैक्टरी के प्रचार के लिए अप्रैल २००५ में किया था। यह कुर्सी कम्पनी ने स्पेन के ल्यूसेना में स्थित अपनी फैक्टरी के बाहर रखी है।

❋ जिस प्रकार एक व्यक्ति की अंगुली की छाप दूसरे व्यक्ति की अंगुली से नहीं मिलती, ठीक उसी तरह से दो जेब्रा (जिराफ) की धारियां एक-दूसरे से नहीं मिलती हैं।

❋ घोंघा बिना घायल हुए ब्लेड (रेजर पत्ती) की धार के ऊपर आसानी से चल सकता है।

❋ एक सामान्य मकड़ी में ६०० रेशम की ग्रंथियां होती हैं और वह एक बार में एक साथ ६०० अंडे तत्काल दे सकती है।

❋ हवाई सैर करने की कल्पना को हकीकत बनाया राइट बंधुओं ने। उन्होंने चार साल की कड़ी मेहनत और बार-बार नाकामी मिलने के बावजूद अपने सपने को टूटने नहीं दिया। १७ दिसंबर, १९०३ को अमेरिकी समयानुसार सुबह १० बजकर ३५ मिनट पर जब राइट बुधओं ने विमान उड़ाया, तो विश्व के लोग दांतों तले अंगुलियां दबाने को मजबूर हो गये।

आविष्कार वाले दिन मौसम बेहद ठंडा था। हवा २७ मील प्रति घंटे की रफ्तार से बह रही थी। राइट बंधुओं ने तीन कोशिशें कीं जो मिली-जुली संतुष्टि देनेवाली रहीं। चौथी कोशिश सौ फीसदी कामयाब रही। राइट बंधुओं का विमान ७०० पौंड वजनी था। इसके लिए राइट ने उत्तरी कैरोलीना में एक ट्रैक भी तैयार किया था। राइट बंधुओं के विमान के आविष्कार की कहानी वर्ष १८८९ से शुरू होती है, जब अमेरिका के ओहियो के रहनेवाले इन भाइयों में से एक विल्बर

राइट ने स्मिथ सोनियल इंस्टीट्यूशन को पत्र लिख पूर्व में उड़ानों को लेकर हुए प्रयोग के बारे में जानकारी मांगी। उन्होंने पक्षियों के आकाश में उड़ान भरने के तरीके का बारीकी से अध्ययन किया। ऊंचाई पर पहुंचने के बाद पक्षी कैसे पंख मोड़ लेते हैं और हवा के बहाव के मुताबिक मुड़ने, ऊपर जाने या नीचे आने के लिए किस तरह पंखों का इस्तेमाल करते हैं।

❋ बैंड-एड ऐसी दवा है जो हर घर में मिलती है। इसके अलावा चोट को कीटाणु और अन्य खतरों से भी सुरक्षित रखती है।

❋ बवंडर हवा का चक्कर लगाता एक तूफान है, जो जमीन के ऊपर बहुत तेजी से घूमता रहता है। यह अपने रास्ते में आनेवाली हर चीज को उड़ा ले जाता है। बवंडर उत्तर अमेरिका में बहुत अधिक आते हैं। १९३१ में वहां आया एक बवंडर एक ट्रेन को उड़ा ले गया था और उसे खाई में गिरा दिया था। बवंडर का ही साथी है चक्रवात और अक्सर लोग दोनों के बीच धोखा खा जाते हैं।

दरअसल चक्रवात भी घूमता हुआ तूफान ही है, लेकिन यह केवल उष्णकटिबंधीय समुद्रों के ऊपर ही आता है। किसी चक्रवात की रफ्तार २४० किमी प्रति घंटे से अधिक तक भी हो सकती है।

❋ सांस रोक कर मर नहीं सकते- यदि आप सोचते हैं कि आप सांस रोककर मर जाएंगे तो ऐसा नहीं हो सकता।

❋ स्पेस स्टेशन को ऑर्बिटल स्टेशन भी कहते हैं। इसको इंसानों को रहने के लिए सभी सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए बनाया गया है। यानी यह अंतरिक्ष में मानव निर्मित ऐसा स्टेशन है, जिससे पृथ्वी से कोई अंतरिक्ष यान जाकर मिल सकता है। इसके अलावा इसमें इतनी क्षमता होती है कि इस पर अंतरिक्ष यान उतारा जा सके। इन्हें पृथ्वी की लो-ऑर्बिट कक्षा में ही स्थापित किया जाता है। स्पेस स्टेशन एक प्रकार का मंच है जहां से पृथ्वी का सर्वेक्षण किया जा सकता है, आकाश के रहस्यों को मालूम किया जा सकता है। अप्रैल २०१८ तक दो स्पेस स्टेशन पृथ्वी कक्षा में है। अंतर्राष्ट्रीय स्पेस स्टेशन (परिचालन और स्थायी रूप से निवास) और चीन का टींगॉग-२ (परिचालन लेकिन स्थायी रूप से निवास नहीं)। पिछले स्टेशनों में अल्माज और साल्यूट सेरिज, स्काइलैब, मीर और हाल ही में टींगॉग- १ शामिल हैं। अंतरिक्ष में स्पेस स्टेशन इसलिए बनाया गया है ताकि वैज्ञानिक लंबे समय तक अंतरिक्ष में काम कर सकें। यह गलत नहीं है यह अंतरिक्ष में उड़ता हुआ उपग्रह, नई तकनीक, खगोलीय, पर्यावरण और भूगर्भीय शोध के लिए एक प्रयोगशाला है। अंतरिक्ष में वैज्ञानिकों द्वारा बनाया गया एक ऐसा स्टेशन है जहां से अंतरिक्ष के बारे में गहराई से अध्ययन किया जा सकता है।

❋ नील आर्मस्ट्रांग की मानें तो उन्हें चंद्रमा से धरती पर वापस आने में सिर्फ ५० प्रतिशत विश्वास था।

❋ सऊदी अरब को प्रति लीटर तेल उत्पादन में सिर्फ दो डॉलर का खर्च आता है जबकि यही तेल दूसरे देशों को १०० डॉलर प्रति लीटर तक बेचा जाता है। (शायद इसीलिए वहां के शेख इतने अमीर हैं।)

❋ हर साल दुनिया में असली नोटों से ज्यादा तो नकली नोट छापे जाते हैं। इससे आर्थिक हालात खराब होती है।

❋ केसर दुनिया का सबसे कीमती मसाला है जिसकी सिर्फ एक पौंड मात्रा (करीब ४०० ग्राम) खरीदने के लिए आपको ५०० डॉलर तक खर्चने पड़ सकते हैं।

❋ बिल गेट्स अपने घर के लिए प्रत्येक वर्ष लगभग १०० मिलियन डॉलर प्रॉपर्टी टैक्स के रूप में जमा करते हैं।

❋ सूखे अंगूर यानि कि किशमिश में केवल १५% ही पानी उपलब्ध होता है। यह दिल के दौरे के जोखिम को कम करने में मदद करते हैं क्योंकि वे खून में नाइट्रिक एसिड के स्तर को बढ़ाते हैं जो कि रक्त के थक्कों को रोकता है। अस्थमा अपच, माइग्रेन, गुर्दे की बीमारी और थकान का इलाज करने में अंगूरों का उपयोग किया जाता है।

❋ अनोखे फिल्टर हैं फेफड़े - हमारे फेफड़े काफी महत्वपूर्ण काम करते हैं, आपको यकीन नहीं होगा लेकिन हमारे फेफड़े हर रोज करीब २० लाख लीटर हवा फिल्टर करते हैं। इसके अलावा अगर फेफड़ों को खींचा जाये तो ये किसी टेनिस कोर्ट के एक हिस्से को ढक सकते हैं।

❋ शरीर खराब मौसम जैसे तूफान, बारिश इत्यादि होने की संभावना पहले ही महसूस कर लेते हैं। कुछ ऐसे लोगों के तूफान या खराब मौसम से पहले घुटने में दर्द होने लगता है तो कुछ लोगों को खराब मौसम से पहले माइग्रेन, सिरदर्द और शरीर के अंगों में दर्द होने जैसी शिकायत होने लगती है।

❋ हमारे दिमाग में सायनेप्सेज (सूत्र- युग्मन) मौजूद होते हैं और इनकी संख्या ब्रह्मांड के सितारों से भी अधिक होती है। अंतरिक्ष में अनुमानित ४०० अरब सितारे होते हैं और इस हिसाब से हमारा दिमाग हर सेकेंड दो करोड़ अरब की गणना करने में सक्षम होता है।

❋ कनेर भारत सहित अमेरिका पुर्तगाल मोरक्कों आदि देशों में पाया जाता है, इसका बीज विषैला होता है। एक बीज का सेवन भी जान लेने के लिए काफी है। कनेर का जहर डाइगाक्सीन ड्रग की तरह है। डाइगाक्सीन दिल की धड़कन की रफ्तार कम करता है। कनेर का एक बीज डाइगाक्सीन के सौ टैबलेट के बराबर होता है। पहले तो यह दिल की धड़कन को धीमा करता है और आखिरकार एकदम रोक देता है।

❋ १९३९ में रॉयल नेवी के दो एडमिरलों की याद में यह फव्वारा बनाया गया। लंदन के ज्यादातर लोगों के लिए यह चौक शहर का केंद्र है। आम तौर पर सैलानी और स्थानीय लोड यहीं मुलाकात करते हैं।

❋ कैसोवरी घने जंगल में भी ५० किमी प्रति घंटे की गति से दौड़ सकते हैं और डेढ़ मीटर की ऊंचाई तक कूद सकते हैं।

❋ आँसू बनानेवाला ग्लैंड- लैक्रिमल ग्लैंड आँखों के ऊपरी हिस्से में स्थित होता है। बहुत अधिक आँसू बनने की दशा में ये आँखों से बाहर तो निकलते ही हैं बल्कि श्वास नली में भी चले जाते हैं जिससे नाक बहने लगती है।

❋ सोमालिया एकमात्र अफ्रीकी देश है जहां की पूरी आबादी एक ही भाषा, सोमाली बोलती है। अफ्रीकी महाद्वीप पर १००० से ज्यादा भाषाएं बोली जाती हैं।

❋ अंग्रेजी को विश्व की सबसे लोकप्रिय भाषा माना जाता है।

❋ अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों मे सभी पायलट अंग्रेजी भाषा से परिचित होते हैं।

❋ भारत में १६५२ बोलियां या भाषाएं बोली जाती हैं।

❋ जिस भाषा में सरकार अपने सारे प्रशासनिक कार्य करती है, उस भाषा को राजभाषा कहते हैं।

❋ गाजर खरगोश के लिए हानिकारक होती है, क्योंकि इसमें बहुत ज्यादा शर्करा होती है, जबकि मनुष्य के लिए काफी लाभदायक होती है।

❋ भारत में हिंदू धर्म के लोग ज्यादा हैं। सबसे ज्यादा त्योहार और छुट्टियां भारत में ही होती हैं। इनमें होली, दिवाली,

मोहर्रम, क्रिसमस आदि प्रमुख त्योहार हैं।

✻ दुनिया में किसी भी देश की तुलना में भारत में सबसे ज्यादा मस्जिद हैं। इतना ही नहीं मुस्लिम आबादी में भारत दुनिया का दूसरा बड़ा देश है।

✻ जापान एशियाई देश विश्व में जलयान निर्माण में प्रथम स्थान रखता है।

✻ सांप और सीढ़ी का यह अनोखा खेल भी हमारे भारत में ही उत्पन्न हुआ था। इसके खेल के पीछे भलाई और दुराचार की शिक्षा छुपी हुई है।

✻ भारत में लगभग २६०० साल पहले सुश्रुत द्वारा शल्यचिकित्सा की जाती थी। इन्होंने आयुर्वेद विकसित किया है और कई जटिल सर्जरी और ऑपरेशन का रिकॉर्ड बनाया है।

✻ जितनी भीड़ न्यूयार्क के मैनहट्टन में है, यदि उतनी भीड़ में सभी इंसान इकट्ठे कर दिए जाएं तो सारी जनसंख्या न्यूजीलैंड जितनी जगह में आ जाएगी।

✻ काजीरंगा अभयारण्य असम में स्थित है।

✻ कागज का जहाज उड़ाना- कागज से बने हवाई जहाज को उड़ाने का रिकॉर्ड २२६ फीट है। यह एक वर्ल्ड रिकॉर्ड है।

✻ दो आदमी कभी भी एक जैसा रेनबो नहीं देख सकते।

✻ जब कार रेडियो प्रचलन में आया तब कई देशों ने इसका विरोध किया था। उनका कहना था कि रेडियो से ड्राइवर का ध्यान भटकेगा और ज्यादा दुर्घटनाएं होगी। लेकिन आजकल तो टीवी भी लगने लगे हैं कारों में।

✻ दुनिया के सबसे गरीब ६४ प्रतिशत लोग केवल ५ देशों में रहते हैं- भारत, चीन, नाइजीरिया, बांग्लादेश और कांगो।

✻ वैज्ञानिकों ने ऑक्सीजन से भरे माइक्रो पार्टिकल की खोज कर ली है, जिसे इंजेक्शन के माध्यम से नसों में उतारा जा सकता है। इससे बिना साँस लिए भी जिन्दा रह सकेंगे।

✻ ओजोन परत हम पृथ्वीवासियों की रक्षा सूर्य से निकलने वाली अल्ट्रा वायलेट किरणों को रोककर करती है।

✻ जब पूर्ण चन्द्रग्रहण होता हो तो उस समय चन्द्र को ब्लड मून कहा जाता है। सुपर ब्लू मून ब्लू मून, सुपर मून और पूर्ण ग्रहण का संयोजन है और ये तीन दुर्लभ घटनाएं हैं। ब्लड मून की विशेषता यह है कि सफेद रंग की बजाय यह लाल या गाढ़े भूरे रंग का होता है। ब्लू मून शब्द का उपयोग कब किया जाता है? जब पूर्णिमा एक महीने में दो बार आती है और चांद पूरा निकलता है, लगभग २८ दिनों से कम समय में ऐसा होता है क्योंकि चन्द्रमा पृथ्वी की चारों ओर चक्कर लगाने में लगभग २७ दिन लेता है। हर तीन साल में अधिकतर ब्लू मून देखने को मिलता है।

ग्रहण एक खगोलीय अवस्था है जिसमें कोई खगोलीय पिंड जैसे ग्रह या उपग्रह किसी प्रकाश के स्रोत जैसे सूर्य और दूसरे खगोलीय पिंड जैसे पृथ्वी के बीच आ जाता है जिससे प्रकाश का कुछ समय के लिए अवरोध हो जाता है। मुख्य रूप से पृथ्वी के साथ जो ग्रहण होते हैं वह इस प्रकार हैं।

चंद्रग्रहण- इस ग्रहण में चंद्रमा और सूर्य के बीच पृथ्वी आ जाती है। ऐसी स्थिति में चांद पृथ्वी की छाया से होकर गुजरता है। ऐसा सिर्फ पूर्णिमा के दिन संभव होता है।

सूर्यग्रहण - इस ग्रहण में चंद्रमा, सूर्य और पृथ्वी एक ही सीध में होते हैं और चंद्रमा, पृथ्वी और सूर्य के बीच होने की

वजह से चाँद की छाया पृथ्वी पर पड़ती है। ऐसा अक्सर अमावस्या के दिन होता है।

❋ जीभ के निशान भी अलग-अलग- हमारी उंगलियों के निशान की तरह ही हर इंसान के जीभ के निशान भी अलग अलग ही होते हैं।

❋ आइसलैंड में पालतू कुत्ता रखना कानून के विरुद्ध माना जाता है, जबकि भारत में लोग शौक से कुत्ता पालते हैं।

❋ विश्व में सुरक्षा पर खर्च किया जानेवाला खर्च जहां ४०० अरब अमरीकी डॉलर से अधिक है वहीं शिक्षा पर १०० अरब अमरीकी डॉलर से कम।

❋ सीटी बजाना शिष्टाचार के खिलाफ माना जाता है लेकिन यह फेफड़ों के लिए एक बेहतरीन व्यायाम है।

❋ विश्व में अभी भी ३० प्रतिशत लोग ऐसे हैं जिन्होंने कभी मोबाइल का प्रयोग नहीं किया है।

❋ पैसों के नोट आम कागज से नहीं बनते हैं बल्कि इन्हें बनाने के लिए एक विशेष कॉटन और मलमल का मिश्रण लिया जाता है।

❋ अंगूर के बीज में तेल भी होते हैं जो त्वचा के देखभाल करनेवाले उत्पादों के निर्माण के लिए कोस्मटिक उद्योग में उपयोग किए जाते हैं। दुनिया में सबसे महंगे फल के रूप में, रूबी रोमन अंगूर सबसे महंगे हैं।

❋ एंटीबायोटिक दवाओं के प्रति सूक्ष्मजीवों में प्रतिरोधक क्षमता लगातार बढ़ रही है। केरल के मैन्ग्रोव क्षेत्रों में पाये जाने सूक्ष्मजीवी में भी एंटीबायोटिक प्रतिरोधी जीन्स मौजूद हैं। इन सूक्ष्मजीवों में एक्रिलफैविन, तांबा, फुरोक्विनोलोन, बीटालैक्टमेज और मेथिलिसिन प्रतिरोधी जीन्स की उपस्थिति के बारे में वैज्ञानिकों को पता चला है। भारी धातुओं और एंटीबायोटिक दवाओं के प्रति प्रतिरोधक क्षमता रखनेवाले जीन्स मानवीय गतिविधियों से प्रभावित क्षेत्रों के अलावा मूल पर्यावरणीय स्थलों में भी मिले हैं। ये प्रतिरोधी जीन्स यदि गैर हानिकारक सूक्ष्मजीवों से रोगजनक सूक्ष्मजीवों में स्थानांतरित हो जाते हैं तो इसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं। इन जीन्स के स्थानांतरण से अन्य सूक्ष्मजीवों में भी जैव प्रतिरोधी दवाओं के प्रति प्रतिरोधक क्षमता उत्पन्न हो सकती है। इस तरह के प्रतिरोधी जीन्स की बड़े पैमाने पर मौजूदगी नए जीन्स के स्रोत के रूप में उभर सकती है। यह एक खतरे की घंटी हो सकती है, क्योंकि इससे सूक्ष्मजीवों की प्रतिरोधक क्षमता में बढ़ोत्तरी हो सकती है, जिसका बीमारियों के उपचार पर महत्वपूर्ण असर पड़ सकता है।

❋ आसमान में जगमगाते तारों को देखकर हमें लगता है जैसे वे अनवरत नहीं चमक रहे हैं, पल-पल चमकना बंद करते रहते हैं। तारे सदा निरंतर, एक समान चमकते हैं। तारों से छूटती रोशनी को हमारी आँखों तक पहुंचने से पहले वायुमंडल में विद्यमान अवराच्चे का सामना करना पड़ता है। अत: उनकी रोशनी रास्ते में विचलित होती रहती है, सीधी हम तक नहीं पहुंच पाती। वायुमंडल में हवा की कई चलायमान परतें होती हैं। ये परतें तारों की रोशनी के पथ को बदलती रहती हैं। इसके फलस्वरूप उनकी रोशनी हमारी नजरों से कभी ओझल, कभी प्रकट होती रहती हैं। इसीलिए तारे टिमटिमाते दिखाई देते हैं।

❋ टैडी बीयर- टैडी का जन्म १९०२ में अमरीका में हुआ था। उसके जन्म का किस्सा बड़ा रोचक है। हुआ यूं कि तत्कालीन राष्ट्रपति थिरोडोर रूजवेल्ट एक सीमा विवाद सुलझाने के लिए मिसीसिपी गए हुए थे। फुर्सत मिली तो वे हिरन का शिकार करने जंगल की ओर निकल गए। सहायकों ने कुत्तों की मदद से एक बूढ़े और लंगड़े भालू को घेर लिया। उसे

एक पेड़ से बांध दिया गया। परंतु राष्ट्रपति को दया आ गई और उन्होंने भालू पर गोली चलाने से इन्कार कर दिया। एक अखबार के कार्टूनिस्ट ने इस घटना पर एक कार्टून बना दिया। ब्रुकलिन के एक खिलौना स्टोर के मालिक को वह कार्टून इतना अच्छा लगा कि उसने उसी तरह का एक भालू बनाकर अपने शो केस में रख दिया। कपड़े और रुई से बने उस भालू के समीप ही उसने वह कार्टून लगा दिया और लिख दिया टैडी भालू। रूजवेल्ट को लोग प्यार से टैडी कहते थे अत: उस व्यापारी ने राष्ट्रपति को पत्र लिखा कि क्या वह टैडी नाम को ट्रेडमार्क के रूप में इस्तेमाल कर सकता है। राष्ट्रपति ने उसे लिखा कि अगर मेरे नाम से वह खिलौना बिक सकता है, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है। इस तरह से करोड़ों के व्यापार की नींव पड़ी। टैडी भालू का उपयोग घरों को सजाने में ही नहीं, अस्पतालों मे, एम्बुलेंस गाड़ी में और होटलों में भी होने लगा है। अमरीकी गश्ती पुलिस की गाड़ियों में एक-दो टैडी बीयर जरूर रखे रहते हैं। इनकी मदद से पुलिसकर्मी छोटे बच्चों से जल्द ही दोस्ती करने में सफल रहते हैं।

पश्चिमी देशों में टैडी बीयर की मांग कुछ ज्यादा ही है क्योंकि यह खिलौना लाड़ और दुलार का प्रतीक है। करीब एक हजार बच्चों से बात की गई, तो पता चला कि ६० प्रतिशत बच्चे अपने मम्मी-पापा के बाद टैडी बीयर को ही सबसे ज्यादा अपना मानते हैं। वह पास रहे। तो उन्हें सुकून मिलता है और लगता है कि कोई बेहद अपना उनकी देखभाल के लिए पास में है।

टैडी सिर्फ खेलने और मानसिक शांति पहुंचाने के काम ही नहीं आता, बल्कि कई वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने के लिए भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। टूथब्रश से लेकर जूते-चप्पल तक कई उत्पाद टैडी का हंसता-खेलता चिन्ह छापकर या खिलौना पास में रखकर बेचे जाते हैं। भारत में सिर्फ टैडी नहीं, इनसे मिलती-जुलती बनावट वाले खरगोश, बंदर वगैरह भी खूब बेचे और खरीदे जाते हैं। इन्हें सॉफ्ट टोएज (नर्म खिलौने) कहां जाता है, इनमें चुभनेवाली चीजें नहीं होती, जिससे छोटे बच्चे भी बिना चोट खाए इनसे खेल सकते हैं। इन खिलौनों को मजे से धोया और सुखाया भी जा सकता है।

❋ पेटेंट एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अंतर्गत किसी भी नयी खोज से बननेवाले उत्पाद पर एकाधिकार दिया जाता है। उसके बाद कोई भी उस उत्पाद को न बना सकता है और न बेच सकता है। अगर बनाना चाहे तो उसे अनुमति प्राप्त करना होता है और उस पर रॉयल्टी भी देनी पड़ेगी। इस पेटेंट की अवधि पहले पर देश ने अपने-अपने हिसाब से तय की हुई थी, लेकिन अब विश्व व्यापार संगठन ने इसके लिए २० वर्ष की अवधि तय कर दी है। इसके साथ प्रोसेस पेटेंट भी होता है। जिसका संबंध नयी प्रौद्योगिकी से है।

❋ नागार्जुन सागर- आधुनिक तकनीक से बना नागार्जुन सागर बांध अपनी मजबूती के साथ-साथ अपनी भव्य बनावट खूबसूरती के लिए भी प्रसिद्ध है। आकर्षक लैंडस्केप, अतुलनीय वॉटरफॉल व बांध के समीप बने वाइल्डलाइफ सैंच्युरी और म्यूजियम्स दुनियाभर के पर्यटकों को अपनी ओर खींचने में कोई कसर नहीं छोड़ते। आंध्र प्रदेश के लिए सिंचाई का अहम साधन है। नागार्जुन सागर डैम की ऊंचाई १२४ मीटर और लंबाई १४५० है।

❋ सूर्य सफेद रंग का है, पीले रंग का नहीं

दिन में कोई भी सूर्य को खुली आंखों से देख नहीं सकता, सूर्योदय व सूर्यास्त के समय यह पीला-नारंगी नजर आता है। इसलिए सभी को यह पीला ही दिखता है। लेकिन सच यह नहीं है। सूर्य असल में सफेद है।

वैज्ञानिकों के अनुसार सूरज के पीला नजर आने के पीछे मुख्य कारण हमारा वातावरण है। सूर्य की किरणे ७ रंगों से मिलकर बनी हैं- बैंगनी, जामुनी, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल। रोशनी के सबसे छोटे कणों को फोटोन कहते हैं। रोशनी में ऐसे अरबों फोटॉन होते हैं। नीले, इंडिगो और बैंगनी रंग के फोटॉन हमारी यानी पृथ्वी के वातावरण में प्रवेश करते ही बिखर जाते हैं, परंतु लाल, नारंगी और पीले रंग के फोटॉन बहुत कम बिखरते हैं। क्योंकि दिन में पीला रंग सबसे कम बिखरता है, इसीलिये हमें सूरज पीला ही नजर आता है। यदि आप पृथ्वी के वातावरण से निकलकर अंतरिक्ष में जाकर सूर्य देखेंगे तो वह सफेद नजर आएगा, लेकिन पृथ्वी पर से देखने पर पीला ही नजर आता है। इसी सफेद रंग की वजह से बारिश के समय नजर आनेवाला इंद्रधनुष ७ रंग में दिखता है। दोपहर के समय सूर्य की किरणें सीधे धरती पर पड़ती हैं, लेकिन सुबह और शाम को इन्हें दोगुनी दूरी तय करना पड़ती है। इसलिए उनमें इतनी ऊष्मा नहीं रह जाती कि वे वास्तविक रंग में धरती तक पहुंच सकें।

❋ खजुराहो, मध्य प्रदेश- खजुराहो के कलात्मक मंदिर का निर्माण ९५० से १०५० एडी के बीच १०० साल के समय में हुआ। उस वक्त खजुराहों में कुल ८५ मंदिर बनाए गए थे, जिनमें अब सिर्फ २२ बचे हुए हैं। खजुराहो मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित है जो अपने प्राचीन एवं मध्यकालीन मंदिरों के लिये प्रसिद्ध है। मध्य प्रदेश के खजुराहो को प्राचीन काल में खजूरपुरा और खजूर वाहिका के नाम से भी जाना जाता था।

❋ द ओरिजिन ऑफ स्पेशीज बाइ मीन्स ऑफ नेचुरल सिलेक्शन नामक युग प्रवर्तक पुस्तक के यह लेखक अपनी शोध के लिए पूरे पांच वर्ष तक समुद्री भ्रमण करते रहे थे इनका नाम है सर चार्ल्स राबर्ट डार्विन।

❋ सर विन्स्टन चर्चिल इंग्लैंड के यह पूर्व प्रधानमंत्री द सेकेंड वर्ल्ड वार जैसी कई प्रसिद्ध पुस्तकों के लेखक भी थे।

❋ मेरी क्यूरी यह पहली महिला वैज्ञानिक थी, जिन्हें दो बार नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

❋ थॉमस एल्वा एडिसन इस महान वैज्ञानिक का फोनोग्राफ, मोशन पिक्चर कैमरे तथा लाइट बल्ब की खोज में महत्वपूर्ण योगदान था।

❋ डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति थे।

❋ प्रत्येक देश के लिए एक मानक निर्धारित समय निश्चित किया गया है उसे स्टैंडर्ड टाइम कहते हैं।

❋ जापान में एक नीलामी में प्रीमियम दो खरबूजों की कीमत २९३०० अमेरिकी डॉलर यानी लगभग २० लाख रुपए तय हुई। असल में वहां इन युबरी खरबूजों को प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है। खानदानी लोग इन खरबूजों की बोली लगाकर खरीदते हैं। फिर इसे अपने खास दोस्तों या रिश्तेदारों को उपहार के रूप में देते हैं। यह परंपरा काफी पुराने समय से चली आ रही है। जापान के उत्तरी होक्काइडों में साप्पोरो सेंट्रल होलसेल मार्केट में एक स्थानीय फल पैकिंग फर्म ने इतनी बड़ी कीमत की बोली लगाकर इन्हें खरीदा है।

❋ कार का अविष्कार हेनरी फोर्ड ने नहीं किया

१८८५ में तीन पहियों की पहली कार मीटरवैगन को चलाया गया था। इसके बाद अन्य कई लोगों ने कार बनाने या इस कार में सुधार करने की कोशिश की जिनमें हेनरी फोर्ड भी शामिल थे।

दुनिया भर में कारों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। इनमें नए-नए प्रयोग और इनोवेशन हो रहे हैं। आम तौर पर

यही बात प्रचलित है कि कार का अविष्कार हेनरी फोर्ड ने किया था। लेकिन यह सच नहीं है। सच तो यह है कि उन्होंने कार का अविष्कार नहीं किया था बल्कि वे सस्ती और तेज कारें लेकर आए थे।

कार के आविष्कार का श्रेय जर्मन मैकेनिकल इंजीनियर कार्ल बेंज को है। उन्होंने इंजिन पावर से चलनेवाली पहली प्रैक्टिकल कार बनाई थी। तीन पहियों की इस कार को मोटरवैगन नाम दिया गया था। हेनरी फोर्ड ने तो १८८६ तक कारें बनानी शुरू भी नहीं की थी। बाद में उन्होंने बड़े स्तर की प्रोडक्शन लाइन और फैक्ट्रियां लगाकर बड़े पैमाने पर कारों का उत्पादन शुरू किया था, जिसमें लागत कम आती थी। यानी ये कारें सस्ती और तेज थीं। अमेरिका में ऑटोमोबाइल का क्रेज और ज्यादा मांग को देखते हुए यह बात प्रचलित हुई कि कार का आविष्कार हेनरी फोर्ड ने किया था।

❋ अब स्नो-सी स्मार्ट जैकेट करेगा स्मार्टफोन को चार्ज

अब स्नो-सी स्मार्ट जैकेट आ गई है, जो स्मार्टफोन को बिना किसी वायर के ४० मिनट में चार्ज कर सकती है। इस स्मार्ट जैकेट को अमेरिका के यूटा राज्य के शहर साल्ट सिटी की वेब टेक्नोलॉजी कंपनी द वेब्स ने बनाया है। इस जैकेट में ३००० एमएएच की बैटरी लगी है। इसके जरिए उन स्मार्टफोन को चार्ज कर सकते हैं, जिनमें बिना तार लगाए चार्ज होने का फीचर दिया गया हो। इस जैकेट में इलेक्ट्रिक सर्किट को इतना बेहतर और सुरक्षित बनाया गया है कि इसे तेज बारिश और ठंड में भी उपयोग में लाया जा सकता है। जैकेट में बैटरी को बिल्कुल नीचे की ओर लगाया गया है, ताकि इससे कोई परेशानी न हो।

❋ दूसरी बड़ी परमाणु शक्ति- अमेरिका दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी परमाणु शक्ति है। (पहली शक्ति रूस है)

❋ यम्बिला फाल्स ८९६ मीटर ऊंचा- यम्बिला फॉल्स दुनिया का पाँचवां सबसे ऊंचा झरना है। यह भी दक्षिण अमेरिकी देश पेरू में ही स्थित है। इसे कैटारेटा यम्बिला के नाम से भी जाना जाता है। इसकी कुल ऊंचाई ८९६ मीटर (२९३८ फुट) है। थ्री सिस्टर्स फाल्स के बाद यह पेरू का दूसरा सबसे ऊँचा झरना है। लेकिन इसकी ही तरह इसका भी बहाव और चौड़ाई अधिक नहीं है, इसकी ऊँचाई अवश्य दर्शनीय है। चूंकि संसार के सात नये आश्चर्यों में से एक माचू-पिच्चु भी पेरू में ही स्थित है, इसीलिये पेरू घूमने आनेवाले पर्यटक इसे देखने के साथ-साथ यहाँ के तीन प्रसिद्ध और सबसे ऊंचे झरनों को भी देखने आते हैं।

❋ मिशिगन झील- मिशिगन लेक संसार की पाँचवीं सबसे बड़ी और अमेरिकी महाद्वीप की दूसरी सबसे बड़ी झील है। किसी एक ही देश में स्थित यह दुनिया की सबसे बड़ी झील है। यह झील संयुक्त राज्य अमेरिका में स्थित है। इस झील का कुल क्षेत्रफल ५८००० वर्ग किमी (२२००० वर्ग मील) और आयतन ४९०० किमी ३ है। इसकी लम्बाई ४९४ किमी (३०७ मील) और अधिकतम गहराई २८१ मीटर (९२२ फीट) है।

❋ आधा किलो शहद बनाने के लिए मधुमक्खियों द्वारा तय की गई दूरी, धरती के दो बार चक्कर लगाने जितनी होती है।

❋ माउंटेन रेलवे ऑफ इंडिया, बंगाल- भारत के पहाड़ी क्षेत्रों में रेल की मदद से आने-जाने के लिए इस रेलवे की व्यवस्था की गई थी। सामूहिक रूप से इसे भारत के पर्वतीय रेलवे के रूप में जाना जाता है। इनमें चार रेल अभी भी चल रही हैं। इसमें दार्जिलिंग हिमालयी रेल, नीलगिरि पर्वतीय रेल, कालका शिमला रेलवे, माथेरान हिल रेलवे शामिल है।

❋ यूनान के एथेन्स नगर में एक बगीचा है। उस बगीचे के मालिक का नाम एकेडेमस था। एकेडेमस किसान था। उसी

के नाम पर उस बगीचे को एकेडिमिया के नाम से जाना जाता था। महान दार्शनिक प्लेटो इसी बगीचे में स्कूल चलाता था और उपदेश देता था। वहां दार्शनिक वाद-विवाद होता था। बाद में यह बगीचा शिक्षा, दर्शन, ज्ञान-विज्ञान और कला का पर्याय माना जाने लगा।

❋ ध्वनि की तीव्रता को हम डेसिबल में मापते हैं। ६० डेसिबल तक की तीव्रता वाली आवाजें सामान्य मानी जाती हैं। ६० से ८० डेसिबल तीव्रता वाली ध्वनियां तेज व ८० डेसिबल से अधिक तीव्रता वाली ध्वनि बहुत तेज होती है, जो हमारे स्वास्थ्य को स्थाई नुकसान पहुंचा सकती हैं।

❋ भारत में पहली विद्युत रेलगाड़ी सन १९२५ में वी.टी. (बंबई) और कुर्ला के बीच चलायी गयी थी।

❋ विश्व में २२९ देश हैं, जिनमें से १७० प्रभुतासंपन्न तथा ५९ गैरप्रभुतासंपन्न है।

❋ विश्व का सबसे छोटा देश वैटीकन सिटी है, जहां की जनसंख्या-वृद्धि दर शून्य है। यहां की जनसंख्या केवल ८०० है।

❋ मकानों पर नंबर डालने की प्रथा सन १४६३ में पेरिस में आरम्भ हुई थी। इसके लगभग ३०० वर्ष बाद यह चलन लंदन में शुरू हुआ।

❋ आंध्र प्रदेश के तिरुपति मंदिर में प्रतिदिन लगभग १० लाख रुपये एकत्रित हो जाते हैं।

❋ पंजाबी शासक महाराजा रणजीत सिंह खाने के बड़े शौकीन थे। उनके विशाल निजी रसोईघर में करीब डेढ़ सौ रसोईये थे जिनमें से १६ केवल एग करी (कड़) रोजाना पकाया करते थे। सोलहों एगकरियों को चखकर राजा अपने लिए कोई एक करी चुनते थे।

❋ ब्रिटेन के रेमंड नामक व्यक्ति को पत्र लिखने का बड़ा शौक था। केवल १५ दिन में उन्होंने हाथ से ३००० से अधिक पत्र लिख डाले।

❋ कीलें एकत्र करना भी एक शौक हो सकता है। इलिनालय (अमरीका) के फ्रेंक हॉवर्थ ने कीलें एकत्र करनी शुरू कीं तो लगभग २० देशों की विभिन्न तरह की २०००० से अधिक कीलें एकत्र कर डालीं।

❋ महत्वपूर्ण पुस्तके एवं लेखक

पुस्तकें	लेखक
द गॉड आफ स्माल थिंगस	अरूंधती राय
वर्शिपिंग फाल्स गाड्स	अरूण शौरी
दि इंसाइडर	पीवी नरसिंहराव
फुले वेचिता	लता मंगेशकर
आई रिगोबटो	सलीम अली
नयनतारा सहगल	रिच लाइक अस
आर.के. नारायणन	द वर्ल्ड आफ नागराज
खुशवंत सिंह	नेताजी एंड गांधी
एडम्स जेम्स	सुभाषचंद्र बोस

कुलदीप नैयर	इंडिया हाउस
मेनका गांधी	हेड्स एंड टेल्स
तारा देशपांडे	फिफ्टी एंड डन
तस्लीमा नसरीन	कोरानेर नारी
टी.एन. कौल	माई इयर्स थ्रु राज टु स्वराज
नीरद सी चौधरी	एन अननोन इंडियन
डॉ. एस. राधाकृष्णन	एन आइडियलिस्ट व्यु आफ लाइफ
जवाहरलाल नेहरू	एन आटोबायोग्राफी
बंकिम चंद्र चटर्जी	कपाल कुंडला
मुल्कराज आनंद	कुली
अमृता प्रीतम	कोरे कागज
रवींद्रनाथ टैगोर	गीतांजली
आर.के. नारायण	गाइड
लुई फिशर	गांधी एंड स्टालिन
ताराशंकर बंधोपाध्याय	गणदेवता
बंकिम चंद्र चटर्जी	आनंद मठ
अमर सिंह	अमरकोश
अबुलफजल	अकबरनामा
तस्लीमा नसरीन	लज्जा
डा. शंकर दयाल शर्मा	हमारी सांस्कृतिक धरोहर
टी. एन. शेषन	विद थ्री प्राइममिनिस्टर्स नेहरू,
इंदिरा एंड राजीव	
सोनिया गांधी	राजीव
जगमोहन	माई फ्रोजेन टर्बुलेंस इन कश्मीर
मदर टेरेसा	डाउन द मेमोरी लेन
एम. जे. अकबर	नेहरू : द मेकिंग आफ इंडिया
खुशवंत सिंह	दिल्ली
गिरिराज किशोर	ढाई घर
कुबेरनाथ राय	कामधेनु

* हमारी सभी अंगुलियों के नाखून सामान्यत: एक वर्ष में १.५ इंच बढ़ जाते हैं। परंतु बीच वाली अंगुली (मध्यिमा)

का नाखून अन्य की अपेक्षा धीरे-धीरे बढ़ता है। वैसे इसका अभी तक कोई तर्क संगत कारण नहीं खोजा जा सका है।

❋ आक छीं इस शब्द के अचानक हमारी नाक से उत्पन्न होने के बाद मन हल्का सा हो जाता है। छींकते समय नाक से निकलने वाली हवा की गति लगभग १५२ फीट प्रति सेकण्ड होती है।

❋ जब अचानक हमारे शरीर के किसी अंग में कोई चोट लगती है तो इस चोट की सूचना उस जख्मी अंग से हमारे मस्तिष्क तक लगभग २०० मील प्रति घंटे की चाल से पहुंचती है।

❋ एक स्पष्ट दृष्टि वाला मनुष्य अपनी आंखों से २५ सेमी तक की दूरी पर रखी वस्तु स्पष्ट देख सकता है। परंतु इससे कम दूरी होने पर वस्तु धुंधली नजर आने लगती है। अर्थात स्पष्ट दृष्टि की न्यूनतम दूरी २५ सेमी होती है।

❋ कुछ लोग धीमी से धीमी आवाज भी सुन लेते हैं परंतु इसकी भी एक सीमा है। हमारे कान सिर्फ २० से २०००० हर्ट्ज तक आवृत्ति वाली आवाजों को ही सुन सकते हैं।

❋ विश्व में सबसे कम पुस्तकें भूटान से प्रकाशित होती हैं। भारत में सबसे अधिक पुस्तकें हिन्दी में प्रकाशित होती है। विश्व की सबसे नन्हीं पुस्तके जापान में प्रकाशित हुई है। बन्द किए जाने पर इन पुस्तकों का आकार दियासलाई की तिली के मसाले जितना हो जाता है।

❋ उन्नीसवीं सदी की विख्यात ब्रिटिश उपन्यास लेखिका चार्लोट यॉन्ज ने ७ वर्ष की आयु में अध्यापन कार्य प्रारंभ किया था।

❋ प्रथम परिकलन यंत्र (हिसाब जोडने की मशीन) का आविष्कार फ्रांस के ब्लेज पास्कल ने किया था। पास्कल गणित में तेज था और एक सेठ के पास बतौर मुनीम काम कर रहा था। इसी दौरान १६४२ में उसने मात्र १९ वर्ष की आयु में उक्त क्रांतिकारी आविष्कार किया था।

❋ फ्रांसीसी विद्रोह की सर्वोगा वैधानिक संस्था ग्रीड असैंबली का एक बालक विधायक चुना गया। विधायक चुने जाने के वक्त जीन बैप्टिस्ट टैस्टे नामक इस बालक की उम्र १३ वर्ष थी।

❋ प्राच्य संस्कृति के जर्मन छात्र ने यूनानी, हिब्रू व लैटिन भाषाओं का बढ़िया ज्ञान प्राप्त कर इन भाषाओं में १६ वर्ष की आयु में कविताएं लिखना शुरू कर दिया था।

❋ हरिशचंद्र चटर्जी ने १४ वर्ष की उम्र में प्रसिद्ध नाटक अबूहसन लिखा था।

❋ सरोजिनी नायडू ने १३०० पंक्तियों की अंग्रेजी कविता १३ वर्ष की आयु में लिखी थी।

❋ रानी अहिल्या बाई ने १८ वर्ष की आयु में राजकाज संभाला था।

❋ सिसिली द्वीप में फ्रैंक फ्रांसिको नामक एक बालक के ३ पांव थे और वह तीनों पांव से चलता था।

❋ हिमाचल की नैनकली नामक एक महिला विगत लगभग तीन दशक से सिर्फ पानी पीकर जीवित है, स्वास्थ्य से सामान्य।

❋ जहाज डूबे जाने के कारण ब्रिटिश जहाज कर्मी पूनलिम शहतीरों पर १३३ दिन समुद्र पर भटकता रहा। बेहद खराब हालत में जब उसे मछुआरों ने निकाला तो डाक्टर आश्चर्यचकित रह गये कि सिर्फ समुद्र के पानी के सेवन पर वह इतने समय तक जीवित कैसे रहा।

✻ जापान की एक लड़की सियोरी तनाका बंद आंख से भी देख लेती थी। वह आंख से ही नहीं नाक से भी देखती थीं। नाक से देखने के उसने कई सार्वजनिक प्रदर्शन किये।

✻ रूस का क्लेरिज जब चाहता अपने शरीर में विद्युत ऊर्जा का निर्माण कर लेता और बल्ब जलाकर दिखा देता। वह अपनी शारीरिक ऊर्जा से विद्युत चालित अन्य छोटे उपकरण भी चालू कर देता था।

✻ सांप की रीढ की हड्डी में ४०० तक जोड होती है।

✻ मिस्त्रके पिरामिड मिस्री सम्राटों की समाधिया है।

✻ मंगल ग्रह को लाल नक्षत्र या लाल ग्रह कहते हैं।

✻ वायु में ऑक्सिजन से अधिक मात्रा नाइट्रोजन की है यह वायु में ७८ प्रतिशत है।

✻ जॉन ऑफ कैनेडी अमेरिका के ३५ वें राष्ट्रपति थे और उन्हकी आयु ४६ वर्ष थी।

✻ पारदर्शक शरीर - भारतीय ग्लास पर्च का शरीर बिल्कुल पारदर्शक होता है।

✻ मरमोट- मरमोट इतनी जोर से बोलता है कि इसकी आवाज ३ कि.मी. दूर तक सुनी जा सकती है।

✻ मनुष्य का हृदय एक मिनट में ७२ बार धड़कता है।

✻ एक अमेरिकी जेट ने एक मिनट में ६० कि.मी. उड़ने का रिकार्ड स्थापित किया।

✻ पृथ्वी अपनी धुरी पर एक मिनट में २७१ कि.मी. की दूरी तय करती है।

✻ ढलाई कारखाने एक मिनट में ६५० टन कच्चा लोहा व १०० टन इस्पात ढालते है।

✻ धातु शोधक फैक्ट्रियां एक मिनट में ३२ पौंड तांबा, ३० पौंड चांदी और ४ पौंड सोना तैयार करती हैं।

✻ आवाज एक मिनट में १२ मील की यात्रा करती है।

✻ कार्डीनल की आयु ३० वर्ष प्रमाणित की गई है।

✻ एक घड़ी में २११ कल-पुर्जे होते हैं।

✻ पहला नोबल पुरस्कार १० दिसम्बर १९०१ में रंटगेन नामक वैज्ञानिक को दिया गया था।

✻ पहला विश्व मेला १८५१ में लंदन में हाइड पार्क में लगाया गया।

✻ नयी वैज्ञानिक खोज के अनुसार पेड पौधे भी संगीत की धुनों को सुन व समझ लेते हैं। सुअर भी संगीत प्रेमी होते हैं। अगर आप किसी सुअर से दोस्ती करना चाहते हो तो उसे गाना जरूर सुनाना।

✻ भारत में सर्वोच्च- कुतुबमीनार (दिल्ली)- २८८ फुट, राजाबाई टावर (बम्बई)- २६० फुट, गोल-गुम्बज (बीजापुर)- १९८ फुट, कांचीपुरम का मंदिर- १८८ फुट, चारमीनार (हैद्राबाद)- १८१ फुट, कलकत्ता हाईकोर्ट- १८० फुट, बुलंद दरवाजा- १७६ फुट, पुरी का मंदिर- १४२ फुट, बृहदेश्वरी मंदिर- ११० फुट।

✻ खट्टा शहद ब्राजील के जंगलों में मिलता है।

✻ अमेरिका में प्रतिदिन लगभग ४५ करोड़ कप काफी लोग पी जाते हैं।

✻ शतरंज में बादशाह बहुत जरूरी मोहरा होता है, लेकिन ज्यादा ताकतवर नहीं होता।

✻ डिज्नीलैंड के पार्क में १०० से भी ज्यादा जंगली पालतू बिल्लियां चूहों को पकड़ने के लिए घूमती रहती हैं।

❋ पहला रबर बैलून फैराडे नामक व्यक्ति ने १८२४ में बनाया था।

❋ चीटियों के अध्ययन को माइरमेकोलॉजी कहा जाता है।

❋ अबनेर डाउक्लीडे (यू.एस.ए.) को बेसबॉल का जनक माना जाता है।

❋ मनुष्य का सर्वाधिक प्रमाणित दीर्घायु का रिकार्ड १२० वर्ष २३७ दिन है।

❋ मनुष्य के बाद सर्वाधिक उम्र तक जीने वाला स्तनधारी प्राणी हाथी है, सर्वाधिक आयु तक जीने वाले हाथी का नाम राजाहा था, श्रीलंका का यह नर हाथी १६ जुलाई १९८८ को ८१ वर्ष की आयु में मरा।

❋ किसी गाय की सर्वाधिक प्रमाणित आयु ७८ वर्ष है, कैलीफोर्निया की मोडोक नामक गाय १७ जुलाई, १९७५ को मरी, इसका जन्म १८८६ में जर्मनी में हुआ था।

❋ हैरी पॉटर श्रृंखला की आगामी पुस्तक का नाम हैरी पॉटर एंड द हॉफ ब्लड प्रिंस है।

❋ भूतपूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश की जन्मतिथि ७ जून १९४६ है।

❋ अमेरिकी खुफिया एजेंसियों की भाषा में पोटस का मतलब अमेरिकी राष्ट्रपति है।

❋ अमेरिकी राष्ट्रपति भवन को व्हाइट हाउस की संज्ञा थियोडोर रूजवेल्ट ने दी थी।

❋ व्हाइट हाउस के वास्तुकार का नाम जेम्स होबान था।

❋ विश्व का सबसे बडा ऊन उत्पादक देश आस्ट्रेलिया है। चीन देश विश्व का ऊन का सबसे बडा खरीददार है। विश्व में भेड की ९१४ किस्में पाई जाती है। भेडों से ऊन वसंत मौसम में उतारा जाता है। अंगोरा का संबंध ऊन से है।

❋ यह अंध:विश्वास प्रचलित था कि प्राचीन काल में लोगों को दफनाते समय उनके हाथों में चांदी और कांसे के सिक्के रख दिए जाते थे ताकि नई दुनिया में वे आसानी से यात्रा कर सकें।

❋ जापान के इतिहास में विभिन्न नगरों में आये कुछ भूकंपों की तिथि इस प्रकार है- १ सितंबर- ८२७, १ सितंबर- ८५९, १ सितंबर- ८६७, १ सितंबर- ११३५, १ सितंबर- १६४९, १ सितंबर- १९२३।

❋ विश्व में सबसे अधिक सिनेमाघर १४४००० रूस में हैं।

❋ जापान में एक वृक्ष पाया जाता है, जो सूर्यास्त के समय धुआं फेंकता है।

❋ ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ प्रथम अपने जमाने की सबसे ज्यादा सफाई पसंद महिला थी। इस बात का अंदाज उनकी इस आदत से ही लगाया जा सकता है कि उस जमाने में भी वे महिने में कम से कम एक बार जरूर नहाती थी, चाहे उन्हें इसकी जरूरत हो या नहीं ?

❋ पुराने जमाने में भारत में राजा और प्रजा के बीच बहुत दूरियां होती थी। सम्राट अशोक पहला राजा था, जिसने प्रजा से सीधा संवाद कायम किया। उसने प्रजा में अपने संदेश पहुंचाने के लिए अभिलेख लिखवाए। ये गुफा, स्तंभ या शिलाओं पर खोदे गए थे.। इनमें राजा की नीतियों और प्रजा के कर्त्तव्यों का उल्लेख था। इन अभिलेखों के कारण सम्राट अशोक को लिखित संदेशों का अग्रदूत भी कहा जाता है।

❋ गुरू नानक को ९ वर्ष की आयु में अपने गुरू मौलाना कुतुबुद्दीन से अधिक ज्ञान प्राप्त हो गया था।

❋ संत ज्ञानेश्वर ने १२ वर्ष की उम्र में भगवत गीता पर मराठी छंदों में ज्ञानेश्वरी गीता लिखी थी।

❋ छत्रपति शिवाजी ने १२ वर्ष की उम्र में ही तोरण का किला जीता था।

❋ प्रख्यात नाटककार श्री हरिश्चन्द्र चट्टोपाध्याय ने अपना प्रसिद्ध नाटक अबूहसन १४ वर्ष की उम्र में लिखा था।

❋ जगद्गुरू शंकराचार्य ने ६ वर्ष की उम्र में ही सारे भारत के पंडितों को शास्त्रार्थ में पराजित किया।

❋ विश्व विजेता सिकन्दर ने १६ वर्ष की उम्र में शोरोनिया का युद्ध जीता था।

❋ रानी अहिल्याबाई ने १८ वर्ष की उम्र में ही राजकाज हाथ में लिया था।

❋ सन १५९४ में जन्मे जर्मनी के वॉन पैथनहेम को बाल्यावस्था में ही इतना योग्य समझा गया कि सिर्फ १४ वर्ष की उम्र में ही एल्डोर्फ यूनिवर्सिटी का प्राचार्य नियुक्त कर दिया गया।

❋ अंग्रेज इतिहासकार थामस बैबिंग्टन मैकाले बाल्यावस्था में बहुत तेज दिमाग था। मात्र ४ वर्ष की आयु में उसने ४२ पृष्ठ की कैटेलॉग द आर्फोड क्लैक्शन ऑफ आर्ट में अंकित ३००० वस्तुओं के नाम याद कर लिए थे।

❋ लेबनान के कैंटुकी नगर के सैंट मैरीज कॉलेज के एक छात्र मार्टिन जे स्पैंडलिंग (जन्म- १८१० मृत्यू- १८७२) इतना प्रतिभासंपन्न समझा गया कि स्नातक की परीक्षा पास करने से दो वर्ष पहले ही मात्रा १४ वर्ष की आयु में गणित का प्रोफेसर नियुक्त कर दिया गया।

❋ फ्रांस के विश्व प्रसिद्ध कविता थेवेन्यू चार्ल्स साइमन केवल १५ वर्ष की उम्र में एक कॉलेज के प्रोफेसर बन गया था।

❋ चीन के लेनजिंग नगर के निवासी बेल रु ओयांग नामक व्यक्ति की आंखे एक्सरे की तरह काम करती थी। वह दीवार के पार और जमीन के भीतर भी स्पष्ट देख लेता था।

❋ कश्मीर में जन्मे मौला बक्स ने अमरीका और यूरोप में अपनी शारीरिक विलक्षणता के अनेक सार्वजनिक प्रदर्शन किये। वह आग के शोलों पर नंगे पांव चल लेता था, आंखों पर पट्टी बांधकर भीड़ भरे मार्गों पर मोटर साइकिल चलाता और कई मिनट तक हृदय गति रोक लेता था।

❋ वियतनाम का एक बालक इसलिए पूरी दुनिया में चर्चित हुआ, क्योंकि उसकी रीढ के निचले हिस्से में (जहां जानवरों की पूंछ होती है) एक डेढ फुट लंबी पूंछ। उक्त पूंछ जानवरों की पूंछ की तरह मांसल तथा बालों से परिपूर्ण थी और बालक इस पूंछ को इच्छानुसार हिला डुला सकता था।

❋ वर्तमान में विश्व का सबसे लम्बा बांध अमेरिका मे न्यू कॉर्नेलिया टेलिंग डैम है जिसकी क्षमता २०९५०० क्यूबिक मीटर हैं और वर्ष १९७३ में पूरा हुआ।

❋ भारत के राष्ट्र गान शब्द के साथ-साथ संगीत भी रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा बनाया गया। वास्तव में बांग्लादेश के राष्ट्रीय गान के शब्द और संगीत भी रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा बनाया गया।

❋ भारत का ९५ प्रतिशत विदेशी व्यापार-व्यवसाय समुद्र के जरिए होता है।

❋ भारत का समुद्री तट ७,५१७ कि.मी. लंबा है।

❋ भारत के १२ प्रमुख बंदरगाह है। कुछ भारतीय बंदरगाह सौ से भी अधिक वर्ष पुराने हैं। सबसे नया बंदरगाह इनोरे है, जो दो साल पुराना है।

❋ पीलिया रोग का संबंध लीवर अंग से है।

❋ टेलीविजन का आविष्कार जे. एल. बेयर्ड ने किया था।

❋ एक सामान्य मनुष्य की त्वचा पर लगभग २० लाख सूक्ष्म छिद्र होते हैं।

❋ हम सांस लेते समय भोजन नहीं निगल सकते। यह भी नामुमकिन है कि छींकते समय हमारी आंखे खुली रहें।

❋ आमतौर पर लड़के और लड़कियां सत्रहवें वर्ष में अपनी पूरी ऊंचाई पा लेते हैं।

❋ पुच्छल तारे की पूंछ करोड़ों मील लम्बी होती है।

❋ १९ वीं शताब्दी की शुरुआत तक दोनों पैरों के जूते बिल्कुल एक जैसे बनाए जाते थे।

❋ परमाणु घड़ियां इतनी प्रमाणिक हैं कि ३०,००० वर्षों के समय में ये अधिक से अधिक एक सैकंड सुस्त या तेज होती हैं।

❋ यदि आसपास पानी उपलब्ध हो तो रेकून नामक एक अमेरिकी जीव अपना भोजन प्राय: धोकर खाना पसंद करता है।

❋ जिस प्रकार मनुष्यों को उनकी उंगलियों की छाप से पहचाना जा सकता है उसी प्रकार जानवरों को उनकी नाक की छाप से पहचाना जा सकता है।

❋ संयुक्त राज्य अमेरिका में मुर्गियां प्रति मिनट १३,८०००० अंडे देती है।

❋ विज्ञान के प्रमुख नियम तथा खोजनेवाले

नियम	खोजकर्ता
गति का आधारभूत नियम	कैपलर
ताप की अविनाशिता का सिद्धांत	जूल
प्रकाश के ग्रहण करने का सिद्धांत	स्नेह
विद्युत अपघटन नियम	फैराडे
आपेक्षित घनत्व का सिद्धांत	आर्कमिडीज
प्राकृतिक चयन का नियम	डारविन
बहु अनुपात का नियम	डाल्टन
गिरते पिन्डों का नियम	न्यूटन
व्यावहारिक गणनाओं तथा प्रत्यावर्ती नियम	स्टाइनिमिट

❋ आदरसूचक संबोधन

राष्ट्रपिता	मोहनदास करमचंद गांधी
राष्ट्रनायक/चाचा	जवाहरलाल नेहरू
लोकमान्य	बाल गंगाधर तिलक
देशरत्न	बाबू राजेंद्र प्रसाद
नेताजी	सुभाषचंद्र बोस
लौहपुरुष	सरदार वल्लभभाई पटेल

लोकनायक	जयप्रकाश नारायण
महामना	मदनमोहन मालवीय
राजर्षि	पुरुषोत्तमदास टंडन
नरकेसरी/स्वातंत्र्यवीर	सावरकर
शहीदेआजम	भगतसिंह
अमर शहीद	चंद्रशेखर तिवारी आजाद
देशबंधु	चित्तरंजन दास
दीनबंधु	एंड्रयुज
बंगबंधु	बिपिनचंद्र पाल
पंजाब केसरी	लाला लाजपतराय
सीमांत गांधी	खान अब्दुल गफ्फार खां
योगिराज	अरविंद
मैथिल कोकिल	विद्यापति
कवींद्र/गुरुदेव	रवींद्रनाथ टैगोर
महाप्राण	सूर्यकांत त्रिपाठी निराला
महापंडित	राहुल सांकृत्यायन
शेरे कश्मीर	शेख अब्दुल्ला
राजाजी	चक्रवर्ती राजगोपालाचारी
वीरांगना	लक्ष्मीबाई (झांसी की रानी)
हॉकी के जादूगर	ध्यानचंद
राष्ट्रकवि	मैथिलीशरण गुप्त
फ्लाइंग सिख	मिल्खासिंह
उड़नपरी	पी.टी.उषा
गदाधर	रामकृष्ण परमहंस
स्वामी विवेकानंद	नरेंद्रनाथ
महर्षि वेदव्यास	कृष्ण द्वैपायन
कवि रसखान	सैयद इब्राहिम
राहुल सांकृत्यायन	केदारनाथ
बीरबल	महेश दास
अमीर खुस्रो	अबुल हसन

तात्या टोपे	रामचंद्र रघुनाथ पांडुरंग
फिराक गोरखपुरी	रघुपति सहाय
उपन्यास सम्राट	प्रेमचंद
संगीत सम्राट-	तानसेन
गौतम बुद्ध	सिद्धार्थ
भीष्म पितामह	देवव्रत
वाल्मीकि	रत्नाकर
तुलसीदास	रामबोला
महावीर	वर्धमान
जैनेंद्र	आनंदीलाल
बच्चन	हरिवंशराय
प्रेमचंद	धनपत राय
भूषण कवि	घनश्याम

❋ पचास फीट लम्बे, २५ फीट चौड़े और १० फीट ऊंचे कोहरे में लाखों पानी की बूंदे होती हैं, पर वे सिर्फ पानी के एक गिलास में समा सकती है।

❋ रस्टीड जर्मनी में स्थित यह मीनार १५९९ से १७८३ के मध्य आकाशीय बिजली से चार बार नष्ट हुई प्रत्येक बार ठीक १८ अप्रैल के दिन।

❋ राष्ट्रीय ध्वज के चक्रमें २४ तीलियां होती हैं।

❋ देश का पहला कृषि विश्व विद्यालय पंतनगर स्थित है।

❋ ऊंची इमारत - विश्व की सबसे ऊंची इमारत का निर्माण अमेरिका के शिकागो शहर में चल रहा है। दुनिया की इस सबसे ऊंची आवासीय और वाणिज्यिक इमारत के निर्माण संबंधी योजना को १९९९ में शिकागो शहर परिषद ने स्वीकृति प्रदान की थी। कुल ११२ मंजिला इस गगनचुंबी इमारत की ऊंचाई १५५० फुट होगी और उसकी छत पर ४५० फुट के दो एंटीना भी लगे होंगे। इससे पूर्व विश्व की सबसे ऊंची इमारत का दर्जा मलेशिया के कुआलालंपुर में स्थित इमारत को हासिल है जिसकी ऊंचाई १४८३ फुट है।

❋ सबसे ऊंचा जल प्रपात- एंजेल फाल विश्व का सबसे ऊंचा जल प्रपात है, जिससे लगभग ९७९ मीटर (३२१२ फुट) ऊंचाई से पानी गिरता है, जो कुतुबमीनार की ऊंचाई से भी पांच गुना अधिक है। जिस पर्वत से इस झरने का पानी निकलता है, उसे माऊंट अनयनटेपुई के नाम से जाना जाता है। भारी वर्षा होने पर पानी दरारों और भूमि के नीचे इकट्ठा होने के बाद तेज प्रवाह से झरने के रूप में फूट पड़ता है। इस जल प्रपात की खोज उस समय अचानक हुई थी, जब दक्षिणी अमेरिका स्थित बेनेजुएला की घाटियों और जंगलों में एक विमान चालक सोना ढूंढ रहा था।

❋ हिमालयी याक के दूध का रंग गुलाबी होता है।

✻ परमाणु बम एक मिनट में ४४ हजार किलोमीटर के क्षेत्र को नष्ट कर सकता है।

✻ संसार की सबसे तेज चलने वाली कार पोर्श है। यह एक मिनट में दो किलोमीटर का सफर तय करती है।

✻ प्रकाश एक मिनट में. १८,००,००,००० किलोमीटर की गति से चलता है यानी एक सेकंड में ३,००,००० किलोमीटर।

✻ चाणक्य का दूसरा नाम विष्णु गुप्त था।

✻ राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज सामाजिक आंदोलन का सूत्रपात किया था।

✻ रणजीत सिंह भारतीय राजा का राज्य अफगानिस्तान तक विस्तृत हो गया था।

✻ भारत का संघर्षशील इतिहास- रामायण-महाभारत काल से वर्तमान तक जीवन मूल्यों की स्थापना का संघर्ष अनवरत। सिकंदर-सैल्यूकस के आक्रमण एवं उनका पराभव (चंद्रगुप्त मौर्य से सेल्यूकस की पुत्री का विवाह)। इस्लाम की आंधी का भी यही अवसान-राणा सांगा, महाराणा प्रताप, छत्रपति शिवाजी व गुरू गोविंदसिंह द्वारा अपूर्व शौर्य का प्रकटीकरण अकबर की छाती पर किरणावती का चढ़ना व अकबर का समर्पण। क्रांतिकारियों द्वारा अंग्रेजों को चुनौती एवं स्वतंत्रता (लक्ष्य) प्राप्ति। हम सदैव सत्य, न्याय एवं धर्म रक्षणार्थ संघर्षरत रहे। समाज के लिए कष्टपूर्ण जीवन बीताना ही दुष्कर लेकिन सभी से अपेक्षा। वर्तमान में विभिन्न अवसरों पर भारत ने अपनी अतीत की गौरवशाली परंपरा को कायम रखते हुए दुश्मनों के दांत खट्टे किए।

✻ मानव का अस्तित्व- यद्यपि पृथ्वी पर जीवन का आरम्भ लगभग ३.५ अरब वर्ष पहले हुआ था, तथापि मानव का अस्तित्व केवल १० लाख वर्ष पुराना है।

✻ मनुष्य की हड्डियां इस्पात से ज्यादा मजबूत और ग्रेनाइट पत्थर से ज्यादा कडी, मगर दोनों से बहुत हल्की होती हैं। स्वस्थ मनुष्य के शरीर में २०६ से २१८ हड्डियां होती हैं। मनुष्य की आंख, १७००० रंगों की अलग-अलग पहचान सकती है। नवजात शिशु में ३५० हड्डियां होती हैं, मगर बडे होने पर वे केवल २०६ रह जाती हैं।

मनुष्य के दिमाग में एक संगणक से लाख गुणा ज्यादा बाते रिकार्ड रहती हैं। मनुष्य के मस्तिष्क का वजन लगभग तीन पौंड होता है। मनुष्य का दिमाग शरीर में होने वाले हर किस्म का दर्द महसूस करता है, मगर दिमाग को काटा जाए तो दर्द बिल्कुल मालूम नहीं होता। मनुष्य की आंखें ४५० कि.मी. प्रति घंटा की रफ्तार से दिमाग को खबर पहुंचाती है। शिशु के जन्म के समय ३०० हड्डियां होती हैं परंतु वयस्क मनुष्य के शरीर में कुल २०६ हड्डियां ही रह जाती हैं।

✻ प्याज काटते समय आखों से आंसू गिरते हैं, ऐसा इसमें मौजूद सल्फर तत्व की वजह से होता है।

✻ कद्दू का अंग्रेजी नाम पंपकिन मूलत: ग्रीक शब्द पेपोन से लिया गया है, इसका अर्थ सूरज द्वारा पकाया गया है।

✻ अमेरिका के मूल निवासी रेड इंडियन शकरकंद कृषि उत्पाद का प्रयोग आपसी खरीद-फरोख्त के लिए करते थे।

✻ कैथरीन डी मेडिको इस फ्रांसीसी रानी ने यह आदेश जारी किया था कि उसे भोजन में हर समय पालक जरूर परोसी जाए।

✻ नादिर शाह दुर्रानी गड़रिये का बेटा था।

✻ रूसी मलिका जोजफीन तम्बाकू फरोश की लड़की थी।

❋ अमरीका का सदर इब्राहीम लिंकन किसान का बेटा था।

❋ अमरीकी सदर आईजन हावर अखबार फरोश था।

❋ रूसी सदर स्टालिन एक मोची का बेटा था।

❋ अमरीकी सदर रोनाल्ड रीगन फिल्मी अदाकार थे।

❋ विश्व में लगभग २७९२ प्रकार की भाषाएं बोली जाती है।

❋ पाकिस्तान एशियाई देश ने १९७२ में कॉमनवेल्थ की सदस्यता त्याग दी थी लेकिन १९८९ में पुन: इसका सदस्य बन गया।

❋ एशिया के वियातनाम देश की राजधानी लाल नदी के तट पर है।

❋ भूटान एशियाई देश की संसद धान के खेतों के बीच में है।

❋ चीन एशियाई देश की पैदल सेना विश्व में सबसे बड़ी है।

❋ मालदीव एशियाई देश के नाम का अर्थ हजारों द्वीप है।

❋ विश्व बाल दिवस १४ नवम्बर को मनाया जाता है।

❋ ११ सितम्बर २००१ को आतंकी हमले में ध्वस्त हुए वर्ल्ड ट्रेड सेंटर वाले स्थान को जीरो ग्राउण्ड नाम से जाना जाता है।

❋ शुक्र ग्रह रात में सबसे अधिक चमकीला दिखायी देता है।

❋ कम्प्यूटर की घड़ी की गति का मापक नैनोसेकण्ड्स और पिकोसेकेण्डस् है।

❋ मानव खोपड़ी में बाईस अस्थियां संधियों के माध्यम से आपस में एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। परंतु उनमें से मात्र एक जबड़े की संधि ही गति करने में सक्षम है। जिसके फलस्वरूप मानव मात्र जहां बातचीत करने में सक्षम होता है, वहीं हंसने सहित भोजन चबाने में भी सक्षम होता है। इंसानी खोपड़ी २२ छोटी-छोटी हड्डियों की बनी होती है। शरीर को आधार देनेवाला हड्डियों का ढांचा कंकाल कहलाता है।

❋ मानव शरीर का औसतन भार रात्रि में सोने के समय ग्यारह औंस घट जाता है।

❋ जहां मानव मस्तिष्क का दाहिना भाग शरीर के बाएं भाग को नियंत्रित करता है, वहीं मानव मस्तिष्क का बायां भाग मानव शरीर के दाहिने भाग को नियंत्रित करता है।

❋ मानव शरीर को एक बार में ग्रहण किए भोजन के पाचन हेतु लगभग अड़तालीस घंटे की आवश्यकता होती है।

❋ भिन्न-भिन्न सत्रह हजार रंगों की पहचान करने में मानव नेत्र सक्षम होते हैं।

❋ बनी-ठनी चित्र जिसे भारतीय कला की मोनालिसा कहा जाता है।

❋ यजुर्वेद की रचना गद्य एवं पद्य दोनों से की गई है।

❋ महावीर स्वामी यती घर त्यागने के बाद कहलाये।

❋ दही में लैक्टोबैक्टर बैक्टीरिया पाया जाता है।

❋ वृद्धावस्था से संबंधित विज्ञान की शाखा है जीरोन्टोलॉजी।

❋ पानी का घनत्व सर्वाधिक होती है- ४ डिग्री सेल्सियस।

✻ चरक नामक चिकित्साशास्त्री कनिष्क काल में हुये।

✻ शेर शाह सूरी ग्रैंड ट्रंक रोड भारत की सबसे लम्बी सड़क है।

✻ हमारे मरने के कुछ समय बाद तक भी हमारे सिर के बाल और नाखून बढ़ते रहते हैं।

✻ सागरों में इतना नमक मौजूद है जिससे सारे भूपृष्ठ पर १५३ मीटर मोटी परत बिछाई जा सकती है।

✻ विश्व भर के सागरों में सबसे ज्यादा गर्म पानी फारस की खाड़ी में पाया जाता है। हिन्द महासागर महासागरों में सबसे गर्म होता है।

✻ बसे ऊंचे ज्वार कनाडा के फंडी खाड़ी में उठते है। ये ज्वार १५ मीटर की ऊंचाई तक उठते हैं।

✻ अब तक की सबसे ऊंची लहर ३४ मीटर रिकार्ड की गई है। इसे सन् १९३३ में संयुक्त राज्य के रामापो से प्रशांत महासागर में देखा गया था।

✻ गंगा नदी का नाम दो नदियों के संगम के बाद लिया जाता है। गंगोत्री से लगभग १८ कि.मी. दूर उत्तर पश्चिम में गोमुख दो पर्वतों का संधि स्थल है। यहाँ भागीरथी का उद्‌गम है। गंगोत्री में गंगा का मन्दिर है और भगीरथ की तपस्थली। फिर भी नदी का नाम भागीरथी है। यह उत्तरकाशी और टिहरी गढ़वाल से आगे बढ़ती है और अलकनन्दा में मिलती है। यह मनोहारी हिमालय की उपत्यकाओं में उद्दाम गति से उछलती है। अलकनन्दा, बदरीनाथ धाम के पास से बहकर दक्षिण पश्चिम दिशा में आती है और उत्तर पूर्व में पिण्डर ग्लेशियर से निकलनेवाली पिण्डर नदी से कर्णप्रयाग में मिलती है। यही पिण्डर अपने नाम को त्याग देती है। मंदाकिनी के किनारे केदारनाथ का ज्योतिर्लिंग है। यह दक्षिण पश्चिम में चलकर अलकनंदा से मिलती है रुद्रप्रयाग में। मन्दाकिनी अलकनन्दा में समर्पित होकर दक्षिण पश्चिम में प्रवाहित होती है। इस तरह पश्चिम से आगत भागीरथी और पूर्व से अलकनन्दा के मिलने पर गंगा का नाम सार्थक हो जाता है। इस संगम स्थल का नाम देवप्रयाग (उत्तराखण्ड) है।

✻ किसी चीख से होनेवाले असामान्य संवेदना को एलर्जी कहते है।

✻ उदर के पीछे १५ सेमी लंबी ग्रंथि को अग्न्याशय कहते हैं।

✻ गर्भ के साथ स्थित स्त्री लैंगिक ग्रंथि को अंडाशय कहते हैं।

✻ मांसपेशी को अस्थि से मिलानेवाले उत्तक को कंडरा कहते हैं।

✻ लचीला, सफेद संयोगी उत्तक जो शरीर के जोडों को जोडती है और कानों, नाक के आगे के हिस्से और कंठ को कठोर बनाती है उसे उपस्थि कहते है।

✻ अग्न्याशय में लैंगर हेंस उपद्वीप नामक कोशिका समूह द्वारा निर्मित हारमोन को इंसुलिन कहते हैं।

✻ पेट अथवा अंतड़ियों में वायु का जमा होना उदरवायु कहलाता है।

✻ यूनाइटेट स्टेटस् आर्मी एयर कॉर्टर्स (अब अमरीकी वायुसेना) में जुलाई १९४४ में ७९९०८ वायुयान शामिल थे और मार्च १९९४ में २४११,२९४ वायुसैनिक थे। १९९५ के मध्य तक अमरीकी वायुसेना, जिसमें स्ट्रैटेजिक मिसाइल फोर्स भी शामिल है, में ४०८,७०० वायुसैनिक तथा ५९०० वायुयान थे, जो कार्यरत थे।

✻ संयुक्त राष्ट्र का सबसे लम्बे समय सधे चला आ रहा शांति अभियान है यूनाइटेड नेशज्न ट्रूज सुपरविजन आर्गेनाइजेशन

(अंटसो), जो जून १९४८ से अस्तित्व में है। अंटसो का प्रमुख मुख्यालय इसराईल के यरूशलम शहर में है परन्तु इसकी सैन्य निगरानी संस्थाएं पूरे मध्य पूर्व में है। मूल रूप से अंटसो की स्थापना फिलस्तीन में १९४८ में अस्थायी युद्धविराम संधि पर नजर रखने के लिए की गई थी।

❊ विश्व की सबसे पुरानी स्थापित सेना है वैटिकन सिटी की ८०-९० सदस्यी पॉन्टिफिकल स्विस गार्ड, जिसकी स्थापना २१ जनवरी १५०६ में की गई थी, यद्यपि यह बनी १४०० ईस्वी में थी।

❊ भारत में प्रथम महिला- प्रथम भारतीय महिला प्रधानमंत्री- श्रीमती इंदिरा गांधी १९६६, योजना आयोग की प्रथम महिला अध्यक्ष- श्रीमती इंदिरा गांधी। भारतीय महिला केन्द्रीय मंत्री- राजकुमारी अमृत कौर, महिला मुख्यमंत्री - सुचेता कृपलानी- उत्तर प्रदेश, भारतीय महिला राजदूत- विजयलक्ष्मी पंडित-रुस, महिला मुस्लिम शासिका- रजिया सुलतान १२३६, एवरेस्ट पर पहुंचनेवाली महिला- बछेन्द्री पाल, महिला कांग्रेस अध्यक्ष- एनी बेसेंट। अशोक चक्र से सम्मानित प्रथम महिला- नीरजा मिश्र (मरणोपरांत)। भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित प्रथम महिला- आशापूर्णा देवी। साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित प्रथम महिला- अमृता प्रीतम। अंटार्कटिका पहुंचनेवाली प्रथम भारतीय महिला- डॉ. सुदीप्ति सेन गुप्ता एवं डॉ. अदिती पंत। किसी उच्च न्यायालय की प्रथम महिला मुख्य न्यायाधीश- न्यायमूर्ति लीला सेठ। प्रथम महिला पत्रिका की प्रथम महिला संपादक- कमला स्वामीनाथन (इंडियन लेडीज मैगजीन)। प्रथम महिला बैंक मॅनेजर- शांता कुमार (सिंडीकेट बैंक)। प्रथम दूरदर्शन समाचार वाचिका- प्रतिमा पुरी। प्रथम महिला सर्कस कलाकार- अबदा बाई पेरूलकर। ओलंपिक खेलों में भाग लेनेवाली प्रथम महिला- मेरी लीला रो। स्नातक की उपाधि (बी.ए.) प्राप्त करनेवाली प्रथम महिला- कादंबिनी बोस एवं चंद्रमुखी बोस। एम.बी.बी.एस. की उपाधि प्राप्त करनेवाली प्रथम महिला- विधुमुखी बोस। इंजीनियरिंग उपाधि (बी.ई.) प्राप्त करनेवाली प्रथम महिला- इला मजूमदार। देश की प्रथम महिला सर्जन- डॉ. प्रेमा मुखर्जी। देश की प्रथम महिला बैरिस्टर- कोर्नोलिया सोराबजी। प्रथम महिला अधिवक्ता- रेगिना गुहा। प्रथम महिला राजदूत- विजय लक्ष्मी पंडित। प्रथम महिला पायलट- सुषमा। इंडियन एयरलाइंस की प्रथम महिला पायलट- कैप्टन दूर्बा बनर्जी। इंडियन एयरलांइस की प्रथम महिला एयर क्राफ्ट मेंटेनेंस इंजीनियर- भुवनश्री गौतम। भारतीय सेना की प्रथम महिला जनरल- मेजर जनरल जी.एम. राम। भारतीय प्राशसनिक सेवा (आई.ए.एस.) अधिकारी बननेवाली प्रथम महिला- अन्ना जार्ज। भारतीय पुलिस सेवा (आई.पी.एस.) में चयनित प्रथम महिला- किरण बेदी। अंग्रेजी भाषा में लिखनेवाली प्रथम लेखिका- तरू दत्त। प्रथम महिला कस्टम्स् एवं सेंट्रल एकसाइज कमिश्नर- कौशल्या नारायणन। दिल्ली की पहली साम्राज्ञी- रजिया सुल्तान दिल्ली, सल्तनत की प्रथम साम्राज्ञी थी। दादा साहब फाल्के पुरस्कार : भारतीय फिल्म अभिनेत्री देविका रानी ऐसी प्रथम महिला थीं जिन्हें दादा साहब फाल्के पुरस्कार से पुरस्कृत होने का गौरव प्राप्त हुआ। सर्वोच्च न्यायालय की प्रथम महिला न्यायाधीश- न्यायमूर्ति मीरा साहिब फातिमा बीबी। इंग्लिश चैनल तैरकर पार करनेवाली प्रथम महिला- आरती शाह। प्रथम महिला राज्यपाल- सरोजिनी नायडू (उत्तर प्रदेश)। देश के किसी शहर की प्रथम महिरा मेयर- तारा चेरियन (मद्रास)। देश के किसी राज्य की प्रथम महिला मंत्री- सुचेता कृपालानी (उ.प्र.)। केंद्रीय मंत्रिमंडल में प्रथम महिला मंत्री- राजकुमारी अमृत कौर। मिर्स वर्ल्ड से सम्मानित प्रथम महिला- रीता फारिया। मिस यूनिवर्स खिताब जीतनेवाली प्रथम महिला- सुष्मिता सेन। भारत की पहली राष्ट्रीय

कांग्रेस अध्यक्षा महिला ऐनी बेसेन्ट हैं। एवरेस्ट के शिखर पर पहुंचनेवाली पहली महिला जापान की जुन्को ताबेई थी जिसने १९७५ में यह कर दिखाया। जीन जीनविरोवे गारनियर पहली महिला थी जिसने १७९९ में गर्म हवा के गुब्बारों से पैराशूट की मदद से छलांग लगाई थी। दुनिया की सबसे वयस्क महिला धावक ब्रिटेन की ९० वर्षीय जेनी एलेन हैं। देश में अमृत कौर केंद्रीय मंत्रिमंडल में शामिल होनेवाली पहली महिला थीं। डॉ. आनंदीबाई जोशी भारत की पहली महिला डॉक्टर थी। ज्योत्स्ना चिनप्पा पहली भारतीय युवती हैं जिसने ब्रिटेन में ब्रिटिश स्कैवशय चैम्पियन का खिताब जीता वहीं १४ साल की उम्र में वरिष्ठ राष्ट्रीय खिताब जीता। केरल की एल. अथिरा कृष्णा ने लगातार ३२ घंटे वायलिन बजाने का रिकॉर्ड कायम किया। वर्ष २०११ में चुनी गईं दक्षेस की प्रथम महिला महासचिव मालदीव देश की हैं। भारत की २१ साल से कम उम्र की महिला क्रिकेट टीम की कप्तान करूव जैन विजयकुमार हैं। भारत की पहली महिला रेलवे ड्राइवर सुरेखा यादव हैं।

❋ विटामिन ए की कमी से रतौंधी रोग हो जाता है।

❋ वेद कौन वह जिसमें देवों की स्तुतियां विद्यमान हैं ? ये स्तुतियां मंत्र कहातीं पातीं जग में बडा मान हैं- ऋग्वेद

❋ अश्वघोष था अपने युग का एक बड़ा उद्भट विद्वान। कनिष्क शासक के कार्यकाल में उसने महान कीर्ति पायी।

❋ मधुशाला के गायक बच्चन ने अर्जित की कीर्ति महान। दशद्वार से सोपान तक रचना पर सरस्वती सम्मान दिया गया।

❋ दीनदयाल उपाध्याय मुगलसराय रेल्वे स्टेशन पर मृत पाये गए।

❋ सबसे अधिक अंडे देनेवाली एक सीपी है जो कि एक मिनट में लगभग ४१,००० अंडे देती है।

❋ ऊंची जगह पर बना पुल- दुनिया में सबसे ऊंचे स्थान पर बना पुल लद्दाख घाटी में द्रास और सरयू नदी के बीच है। यह घाटी समुद्र तल से ५६०२ मीटर (१८३७९ फीट) ऊंचाई पर भारतीय क्षेत्र में है। मात्र ३० मीटर लंबा यह पुल भारतीय सेना ने १९८२ में बनाया था।

पानी के ऊपर सबसे ऊंचा पुल- अमरीका में कॉलोराडो स्थित अरकांसस नदी पर बना रॉयल जॉर्ज ब्रिज पानी से सबसे ऊंचाई पर बना पुल है। १९२९ में बना यह पुल पानी से ३२१ मीटर (१०५३ फीट) ऊपर है।

सबसे व्यस्त पुल- दुनिया का सबसे व्यस्त पुल होने का रिकार्ड हावड़ा ब्रिज के नाम है। यह कोलकता में हुगली नदी पर बना है। इस पुल पर हर रोज हजारों पदयात्रिकों के अलावा ५७००० से ज्यादा वाहन गुजरते हैं। यह पुल ५०० फीट लंबा और ७२ फीट चौड़ा है।

सबसे महंगा पुल- दुनिया का सबसे महंगा पुल जापान स्थित सेटो-ओहाशी-कोजिमा है। १९८८ में बने इस पुल पर ८.३ अरब डालर की लागत आयी थी। यह पुल १३.२२ किलोमीटर लंबा है।

विशाल पुल- अमरीका स्थित ट्रांस बे ब्रिज दुनिया का सबसे विशाल पुल है जो १३.२७ किलोमीटर लंबा है और सैन फ्रांसिस्को को ऑकलैंड से जोडता है।

सबसे लंबा पुल- दुनिया का सबसे लंबा पुल भी अमरीका में है। न्यू ओरलींस स्थित पोंटचार्टिरेन नामक इस पुल की कुल लंबाई ३८.६ किलोमीटर है।

❋ एक औसत व्यक्ति का मस्तिष्क उतनी ही ऊर्जा का इस्तेमाल करता है, जितनी एक दस वॉट का बिजली का बल्ब जलने में इस्तेमाल होती है।

❋ रोमकूपों की कुल संख्या एक औसत मानव की त्वचा पर लगभग २,०००,००० होती है।

❋ रॉबर्ट ई पिथरी अपने दल के साथ ग्रीनलैण्ड पहुंचनेवाला पहला व्यक्ति था। इस व्यक्ति को इस बात का श्रेय मिला कि उसने सिद्ध कर दिया कि ग्रीनलैंड एक द्वीप है केवल एक विशाल द्वीप।

❋ बाईकिल में सल्फर खनिज की चर्चा ब्रिमस्टोन के नाम से की गई है।

❋ रत्न परीक्षा प्राचीन संस्कृत रचना में हीरे-जवाहरात और मूल्यवान धातुओं की विस्तृत चर्चा की गई है।

❋ भारत में मिले अब तक के सबसे बड़े हीरे का नाम ग्रेट मुगल है।

❋ जापान में पारा खनिज की अधिकता से होने वाले रोग मीनामाता ने बहुत से लोगों की जानें पिछले दशकों के अंदर ले ली है।

❋ टोपाज, जो एक चर्चित मूल्यवान पत्थर है, हमारे देश में पुखराज के नाम से जाना जाता है।

❋ प्लेटिनम का रंग स्टील के रंग जैसा होता है।

❋ पुरुषों के दिमाग का औसत वजन १३८० ग्राम व स्त्रियों के दिमाग का औसत वजन १२५० ग्राम होता है।

❋ मनुष्य के शरीर में २५ करोड़ लाल रक्त कण रहते हैं। अगर इन रक्त कणों को एक-एक करके रखा जाए तो वे करीब तीन वर्ग मीटर जगह घेरेंगे।

❋ जीभ पर स्वाद बतानेवाले ९००० अंकुरक होते हैं।

❋ यकृत (जिगर) में लंबी नुकीली दस लाख थैलियां (छन्ने) हैं।

❋ प्रति घन मिलीमीटर में ५० लाख लाल रक्त कण रहते हैं।

❋ रेटिना (दृष्टि पटल) में १३ करोड़ ७० लाख प्रकाश संवेदनशील कोश होते हैं।

❋ फेफड़ों में १८ करोड़ छोटी थैलियां (वायु कोठरियां) होती है।

❋ दिमाग में कुल कोश १० अरब तथा सारे शरीर में कुल ६० अरब कोशिकाएं हैं।

❋ सत्तर साल की उम्र तक मनुष्य का हृदय करीब २७० करोड़ बार धडक चुका होता है तथा करीब २७ करोड़ लीटर रक्त पंप कर चुका होता है। तब तक रक्त करीब आठ करोड़ किलोमीटर की दूरी तय कर चुका होता है जो सूर्य के अर्धव्यास सात लाख किलोमीटर से भी कई गुना ज्यादा है।

❋ ८,७०,१६० कर्मचारियों की संख्या के सथ विश्व की सबसे बड़ी सरकारी डाक सेवा यूएसए देश में है।

❋ अंग्रेजी भाषा का सबसे प्राचीन वर्ण ओ है।

❋ दुनिया की पहली कार जो १०० कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से भी तेज चलनेवाली थी वह बैट्री संचालित थी और यह १८९९ में चलाई गई।

❋ हर साल बिजली गिरने से विश्व भर में १००० लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है।

❋ सन १९८६ में बांग्लादेश में विश्व का सबसे बड़ा ओला पत्थर गिरा था। उस ओला पत्थर का वजन वह पूरे एक किलो का था।

❋ विश्व में पाए जाने वाले तमाम खनिजों में सबसे मुलायम खनिज का नाम टेल्क है।

✻ भारत में कोयले की खुदाई सर्वप्रथम १८७७ में रानीगंज स्थान पर हुई।

✻ पेट्रोलियम खनिज को तरल सोना भी कहा जाता है।

✻ यूरेनियम का सबसे बड़ा उत्पादक देश अमेरिका है।

✻ थोरियम की खोज बर्जेलियस ने की थी।

✻ कोलार, जो कर्नाटक में स्थित सोने की खान है, में एक समय उत्पादन बंद हो गया था। यहां दोबारा खुदाई टीपू सुल्तान ने शुरू करवाई थी।

✻ भारत के समस्त सोने की खदानों का राष्ट्रीयकरण १९७२ में किया गया।

✻ वोलफ्रेम टंग्सटन खनिज का दूसरा नाम है।

✻ फ्रांस में विश्व का सबसे बड़ा काला हीरा है। यह ४८९.७ कैरेट का हीरा है। काले हीरे अधिकतर ब्राजील और मध्य अफ्रीका की खानों से ही प्राप्त होते हैं।

✻ १८ वीं सदी में इंग्लैंड के राजा रहे जॉर्ज (चतुर्थ) की पत्नी रानी कैरोलीन महीने में बस एकाध बार नहाती थीं। इस वजह से राजा के रानी से संबंध कभी सामान्य नहीं रहे।

✻ लेनिनग्राद (रुस) में एक संग्रहालय के एक हिस्से में दाँतों का भी विशाल संग्रह है। मानव दाँतों का यह संग्रह रूसी क्रूर शासक पीटर (१६७२-१७२५) ने कायम किया था। यह दाँत मरे हुए लोगों के नहीं हैं बल्कि गायकों, कवियों, राजदूतों, बिशपों और नर्सों आदि के हैं जो पीटर ने जबरदस्ती उखड़वाए थे।

✻ न्यू ओर्लिंस शहर (अमेरिका) में प्रख्यात उपन्यासकार टिनेसी विलियम्स के प्रसिद्ध नाटक ए स्ट्रीट कार नेम्ड डिजायर पर आधारित एक वार्षिक प्रतियोगिता स्टेल ऑफ होती है। इस प्रतियोगिता में प्रतियोगी पूरे जोर-शोर से स्टेला-स्टेला चिल्लाते हैं।

✻ ब्रिटेन की महारानी से भी धनी ३० करोड़ पौंड की संपत्ति के मालिक लंदन के जॉन पामर को सन् २००१ में जेल जाना पड़ा। इस अमीर को ठगी के आरोप में जेल हुई। यह इंग्लैंड का अब तक सबसे बड़ा ठग माना गया है।

✻ मनुष्य का मस्तिष्क किसी भी सुपर कम्प्युटर के मुकाबले एक लाख गुना ज्यादा सूचनाएं इकट्ठी करके रख सकता है।

✻ मनुष्य की नाक एयर कंडीशनर का काम करती है। यह हर रोज करीब १४ घन मीटर हवा को व्यवहार में लाती है अर्थात करीब एक छोटे कमरे में भरी जा सकनेवाली हवा।

✻ मनुष्य के शरीर की रक्त वाहिनियों को एक-एक करके किनारे से किनारा जोड़ते हुए बिछाया जाए तो वे पृथ्वी की दो परिक्रमा पूरी कर लेंगी।

✻ एक साल में लीवर इतना रक्त छान देता है कि उससे २३ दूध के ट्रक भर जाएं।

✻ छींक की गति १६० किलोमीटर प्रति घंटा रहती है।

✻ ऑस्ट्रेलिया का पर्थ थिएटर दुनिया में सबसे बड़ा है, जहां ८००० लोग एक साथ बैठकर फिल्म देख सकते हैं।

✻ एक औसत व्यक्ति अपने पूरे जीवनकाल में ५० टन भोजन करता है व ४२००० लीटर तरल पदार्थ पीता है।

✻ भारत की कृषि योग्य कुल जमीन के २३ प्रतिशत पर चावल की खेती की जाती है।

❋ दुनिया में सबसे ज्यादा धर्मावलंबी क्रिश्चन हैं, जिनकी संख्या १४५.४९ करोड़ है। इसके बाद हिंदू-धर्म को माननेवालों का स्थान आता है जो ६४.७८ करोड़ है।

❋ अलग-अलग अंगुलियों के नाखूनों के बढ़ने की दर अलग-अलग होती है। बीच की अंगुली के नाखून सबसे तेज बढ़ते हैं, जबकि अंगूठे व सबसे छोटी अंगुली के सबसे धीमें।

❋ यदि सभी राज्यों के पुलिस बल को देखें तो भारत में १०.३ लाख पुलिस जवान हैं।

❋ यूरोप में टमाटर के पौधे को केवल शो के लिए लगाया जाता था। वहां १८३० तक उसे खाया नही गया था।

❋ भारत के दीपक स्याल ने एक रुपए के २५३ भारतीय सिक्कों से अब तक का सबसे बडा मुद्रा स्तंभ बनाया। सबसे ऊपर पांच रुपए का सिक्का रखा गया।

❋ मां के गर्भ में जब कोई शिशु केवल २५ दिन का होता है तभी उसका दिल धडकने लगता है। जबकि वह केवल आधा सेंटीमीटर आकार का होता है। बिना किसी रिपेयर या मेंटेनेंस के मृत्यु तक वह बिना रूके धड़कता है।

❋ फ्लाइंग सिक्ख के नाम से जाने जाते मिल्खा सिंह के पिता अच्छे गोल्फ खिलाड़ी हैं तो पत्नी भारत के लिए वॉलीबॉल खेल चूकी हैं।

❋ अभी भारत में ३० करोड़ लोगों का एक मध्यम वर्ग है।

❋ बारिश के दिनों में ऑफिस में छाता भूलनेवालों में जापानी सबसे आगे है।

❋ पहली अलार्म घड़ी जर्मनी में १३६० में बनी थी।

❋ विश्व में सबसे अधिक सिनेमा घर रूस में हैं। जिनकी संख्या लगभग डेढ़ लाख है।

❋ पृथ्वी का सबसे अधिक गहराई फिलीपाइन के करीब है, जिसे चैलेन्जर गर्त कहा जाता है।

❋ किसी प्राणी के लिए बनाए गए सबसे बड़े रक्षा कवच का श्रेय भारत को है। युद्ध में काम में लाए जानेवाले एशिया के बड़े हाथी के लिए भारत में १६ वी सदी के उत्तरार्ध व १७ वीं सदी की शुरुआत में उत्तर भारत के मुगल शासकों ने इसे बनाया। यह ११८ किलो वजनी है। हालांकि पूरी हिस्सा उपलब्ध नहीं है पर इसे ८४३९ धातु हिस्सों से बनाया गया। संभवत: यह १५९ किलो वजनी होगा। इसे ब्रिटेन के संग्रहालय में रखा गया है।

❋ एक व्यक्ति के सिर पर औसतन १००,००० बाल होते हैं और हर दिन ६० बाल टूटकर गिर जाते हैं।

❋ चेरापूंजी में प्रतिवर्ष औसतन ११००० मिमी वर्षा दर्ज होती है। बावजूद इसके यहां नौ महीने पानी किल्लत होती है।

❋ मलेरिया इटालियन भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है खराब हवा।

❋ पहले लकड़ी के ब्लॉक्स की मदद से किताब की छपाई होती थी। जहां तक जानकारी मिलती है छपी हुई पहली किताब बौद्ध विचारों की थी जिसे चीन में ८६८ साल में प्रकाशित किया गया था।

❋ हमारी हड्डियां प्रति ग्राम के हिसाब से स्टील से भी ज्यादा मजबूत होती हैं।

❋ औसत व्यक्ति अपने जीवन काल में करीब ३० हजार किलोग्राम खाना खाता है।

❋ मनुष्य शरीर में इतनी बिजली रहती है कि उससे २५ वाट का बल्ब कुछ मिनट तक जलाया जा सकता है।

❋ मानव शरीर में इतना लोहा रहता है कि उससे दो इंच लंबी कील, इतना फासफोरस कि उससे २२०० माचिस की

तीलियां, इतना कार्बन कि उससे ९००० पैंसिलें, इतनी चर्बी कि उससे साबुन की सात टिकियां बनाई जा सकती हैं।

✻ हमारी मांसपेशियों से इतनी गर्मी पैदा होती है कि उससे एक लीटर पानी एक घंटे तक उबाला जा सकता है।

✻ मनुष्य औसत अपनी जिंदगी के बीस वर्ष तो सोकर ही गुजार देता है।

✻ सिटी ऑफ ड्रीमिंग स्पायर्स के उपनाम से ऑक्सफोर्ड को जाना जाता है।

✻ नॉलिज इज पावर हॉब्स का कथन है।

✻ अरुणाचल प्रदेश में ब्रह्मपुत्र नदी दिहांग नाम से जानी जाती है।

✻ किरिनल इटली देश के राष्ट्रपति भवन का नाम है।

✻ रेफ्रिजरेटर में जल ठंडा करने के लिए प्रयुक्त गॅस अमोनिया है।

✻ फोबोस और डीनोस मंगल ग्रह के उपग्रह हैं।

✻ फिल्म जगत के सबसे बड़े पुरस्कार ऑस्कर की शुरुआत १९२९ में हुई।

✻ यूरेनस ग्रह लेटा हुआ ग्रह के नाम से जाना जाता है।

✻ नेसेट इजराइल देश की संसद का नाम है।

✻ चूहे पानी के बिना ऊंटों से ज्यादा समय तक जीवित रह सकते हैं।

✻ गेटवे ऑफ इंडिया- मुम्बई, नील नदी की देन- मिस्र, पवित्र भूमि- जेरूजेलम, पांच नदियों का राज्य- पंजाब, लैंड ऑफ मेपललीफ कनाडा, हाथियों का देश- लाओस, झीलों का देश- फिनलैंड, एकाकी आयरलैंड- प्रिस्टन, यूरोप का स्वर्ग- स्वीट्जरलैंड, दुनिया की छत- पामीर, अंग्रेजी की कब्र-गिनी, इटर्नल सिटी- रोम, ग्रेनाइट सिटी- एवरडन, काकपिट ऑफ यूरोप- वेल्जीयम, भूमध्य सागर का द्वार- जिब्राल्टर, सूर्योदय का देश- जापान, मध्यरात्रि का सूर्य- नार्वे, सदाबहार शहर-क्विटो, सांपों का देश- ब्राजील।

✻ आदमी के चेहरे की बनावट बड़ी विचित्र होती है। उसकी एक आंख दूसरी आंख से अधिक शक्तिशाली होती और एक कान, दूसरे कान से अपेक्षा कुछ ऊंचाई पर होता है।

✻ सर्वाधिक उम्र का व्यक्ति चीन का था, जिसकी आयु २५६ वर्ष थी।

✻ चीन के लोग सांप खाते हैं।

✻ स्पेन के लोग सांड से लड़ते हैं।

✻ नदी की अपेक्षा समुद्र में अधिक सरलता से तैरा जा सकता है।

✻ हमारे पुराणों के अनुसार वे महान श्रीकृष्ण थे, जिनके पैर में बाण लगने से मर गये।

✻ प्रथम अंतरिक्षगामी जान हेच ग्लेन था।

✻ ब्रह्म समाज के संस्थापक राजाराम मोहन राय थे।

✻ राजधानी दिल्ली में महात्मा गांधी की समाधि है और कस्तूरबा की समाधि पुणे के आगाखान के भवन प्रांगण में, जहां वे मरी थीं।

✻ २५०० साल पहले गौतम बुद्ध ने अपने धर्म का प्रचार एक उद्यान में शुरू किया। वह वाराणसी के समीप सारनाथ में है।

❋ गुरुनानक जब गाते थे, तब उनके एक शिष्य रबाव बजाते थे। उनका नाम मर्दाना है।

❋ प्रकाश प्रति सेकेंड २,९८१२० कि.मी. जाता है।

❋ ताजी हवा प्रति घंटे ८ कि मीटर की रफ्तार से चलती है।

❋ रवींद्रनाथ टैगोर को १९१३ में नोबल पुरस्कार मिला।

❋ वाडीलाल ने २० फीट लंबे व ९ फीट ऊंचे विश्व के सबसे बड़े आइस्क्रीम को बनाने का रिकार्ड बनाया है।

❋ किन्हीं भी दो व्यक्तियों के हाथों की अंगुलियों की छाप एक सी नहीं होती।

❋ भारत में लगभग १६३ मान्यता प्राप्त चिड़ियाघर है।

❋ व्हिनेगर नाम वाईन शब्द से आया है।

❋ भारत की भारती टेलनेट कंपनी ने ६ बाय ३ फीट आकार का बड़ा फोटो अल्बम बनाया।

❋ भारत में हर साल ३,००,६०० टन कॉफी का उत्पादन होता है। इसमें से ८० प्रतिशत कॉफी का निर्यात होता है।

❋ पहला रिक्शा रेव जे. स्कूबी ने बनाया जो अपनी पत्नी को याको हामा घूमाना चाहता था।

❋ दक्षिण के नायक चिरंजीव का असली नाम शिवशंकरा वरप्रसाद है।

❋ पृथ्वी की गति धीरे-धीरे कम हो रही है। कुछ लाखों साल बाद लीपईयर नहीं होगा।

❋ शरीर के कुल वजन का ७ प्रतिशत वजन खून का होता है।

❋ बीबीसी पर पहला डेली ब्रॉडकास्ट नवंबर १९३६ में शुरू हुआ।

❋ विश्व का सबसे बड़ा कॉमिक्स संग्रह करनेवाला डेनिस गिकोर्ड है। तीन साल की उम्र से कॉमिक्स का संग्रह करते हुए ५९ साल की उम्र में उसके पास १५,४९८ अलग-अलग कॉमिक्स थे।

❋ यदि आपके शरीर से केवल एक प्रतिशत पानी कम होता है तो आपको प्यास लगने लगती है।

❋ देश का ७,७०,०७८ वर्ग किमी क्षेत्र वनाच्छादित है।

❋ विश्व का सबसे लोकप्रिय शौक डाक टिकट इकट्ठा करना है।

❋ किसी अच्छी संस्था, दोस्त या रिश्तेदारों से मिलते रहना चाहिए इससे थकान व तनाव दूर हो जाता है।

❋ पहला चिड़ियाघर ३५०० साल पहले इजिप्त की रानी हट्सपेद के अधिपत्य का था।

❋ राघव सोमाणी नामक एक भारती ने ११५ एयरलाइन कंपनियों के ४६९ एयरलाइन बैज व टैग्स् संग्रहित करने का रिकॉर्ड बनाया।

❋ हमारे शरीर से दिनभर में लगभग ३०० मिलीलीटर पसीना निकलता है।

❋ भारत ७८० लाख टन दूध उत्पादन करनेवाला सबसे बड़ा देश है।

❋ रेनकोट को १८२३ में चार्ल्स मेकिनटॉश ने वाटरप्रूफ फेब्रिक से बनाया था।

❋ जर्मनी के एक स्कूल में एक ही कुर्सी पर ४०७ विद्यार्थियों ने बैठकर रिकॉर्ड बनाया।

❋ हमारे शरीर में जितनी वसा होती है उससे साबुन की सात टिकियां बनाई जा सकती हैं और जितना लोहा होता है, उससे २.५ सेंटीमीटर की एक कील बन सकती है।

❋ विश्व का सबसे बड़ा स्टेडियम प्राग, चेकोस्लवाकिया में है जहां २,४०,००० दर्शक बैठ सकते हैं।

❋ केरल के मालापुरम में लोगों के पास ज्यादा फोन हैं। मोबाइल सर्विसों के यहां ४४,००० उपभोक्ता है। बीएसएनएल के ६६,००० फोन लगे हैं। जबकि शहर की आबादी ६०,००० से भी कम है।

❋ बेन हर (१९५९) नामक फिल्म पहली फिल्म थी जिसे ११ आस्कर मिले।

❋ भारत में बाल मजदूरों की संख्या पांच करोड़ से भी ज्यादा है।

❋ जिराफ अपने कानों को अपनी ५० सेमी (२० इंच) लंबी जुबान से साफ करते हैं।

❋ देश में १,५१,१६३ पोस्ट ऑफिसेस (डाक घर) हैं।

❋ जितने लोग ब्रिटेन में बसते हैं उससे भी कहीं ज्यादा अमेरिका में टीवी सेटस् हैं।

❋ विश्व की पहली ट्रेवल एजेंसी थॉमस कुक है जिसकी स्थापना १८५० में हुई।

❋ सूर्य, पृथ्वी से ३,३०,३०० गुना बड़ा है।

❋ चीन के लोग दुनिया के सबसे ज्यादा सिगरेट पीनेवाले हैं।

❋ आप खाना खाए बगैर महीनेभर तक जिंदा रह सकते हैं, पर पानी न पीकर केवल एक सप्ताह।

❋ भारती ध्वज के मध्य स्थित नीले चक्र में २४ लकीरें हैं, जो दिन के २४ घंटों को बताती हैं।

❋ विद्युत के लिए उपयोग में लाए जानेवाला वोल्ट शब्द इटली के भौतिकशास्त्री एलेसेड्रो वोल्टा की याद में रखा गया।

❋ महिलाओं ने पहली बार नायलॉन के स्टाकिन्स १९४० में पहने।

❋ उमराव जान के लिए खय्याम को राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था।

❋ हर साल तिरूवंतपुरम (केरल) में पोंगल पर्व पर दस लाख से अधिक महिलाएं इकट्ठा होती हैं। सभी जाति-धर्मों व समुदाय की ये महिलाएं घर-परिवार की सुख-समृद्धि की चाह में खाने के बरतन लेकर आती हैं। अब तक यहां २३ फरवरी १९९७ को सबसे ज्यादा १५ लाख महिलाएं इकट्ठा हुई थीं। यह विश्व कीर्तिमान बना।

❋ दो कानों की मदद से हमें आवाज किस दिशा से आ रही है इसका बड़ी आसानी से अंदाज हो जाता है। यदि केवल ०.०००१ सेकंड (ए सेकंड का एक हजारवां हिस्सा) के अंतर से भी दो अलग दिशाओं से आवाज आए तब भी हम उसमें फर्क कर सकते हैं। यह जान सकते हैं कि कौन सी आवाज किस दिशा से आई।

❋ भारत में कोयले की १,५९,९९ दशलक्ष सुप्त खानें हैं। इसमें से ६०,००० दशलक्ष टन उत्पादनक्षम हैं।

❋ दूध की बोतलों का पहली बार प्रयोग न्यूयार्क की इको फार्म्स डेयरी ने १८७९ में किया था।

❋ भारतीय रेलवे में सबसे ज्यादा १५,८३,६१४ नियमित कर्मचारी हैं। भारतीय रेलवे का १९९६-९७ का वेतन बिल १,०५,१४,५०,००००० रुपए आया, जो एक रिकॉर्ड है।

❋ भारत में ६,५२९ दैनिक, २०,८१४ साप्ताहिक, १७,८१८ मासिक व ३,६८२ द्वि मासिक समाचार पत्र न्यूजपेपर्स ऑफ इंडिया में रजिस्टर हैं।

❋ पर्यटन विश्व का सबसे बड़ा व्यवसाय है, इससे २४०० लाख लोगों को नौकरी मिलती है।

❋ यूरेनस पर २१ साल गर्मी पड़ती है और ठंड भी इतनी ही लंबी होती है।

❋ उत्तरी गोलार्ध में वर्ष का सबसे लंबा दिन २१ जून तथा सबसे छोटा दिन २१ दिसंबर को पड़ता है।

❋ यद्यपि उल्लू अपनी आंखें नहीं घुमा सकता, लेकिन वह अपने शरीर का कोई अन्य अंग हिलाये बिना अपने सिर को बिल्कुल पीछे घुमा कर देख सकता है।

❋ देशांतर के प्रत्येक अंश पर ४ मिनट का समय अंतराल पड़ जाता है।

❋ एक औसत मानव खोपड़ी पर १,००,००० बाल होते हैं।

❋ जिस समय रॉकेट पृथ्वी के वातावरण में पुन: प्रवेश करता है, उस समय पैदा होनेवाली गर्मी सूर्य की सतह की गर्मी अर्थात् लगभग ६,००० डिग्री सेंटीग्रेड के बराबर होती है।

❋ देश का सबसे पुराने जयपुर जंतुआलय की स्थापना सन् १८७६ में जयपुर रियासत द्वारा परकोटे के बाहर राम निवास बाग के मध्य की गई थी।

❋ देश में सड़कों की कुल लंबाई लगभग १६ लाख किलोमीटर है।

❋ कोलकाता के ई. जयरमन (५४ वर्ष) के नाम सबसे लंबे समय तक अनवरत बोलने का रिकॉर्ड दर्ज है। उन्होंने १४ सितंबर १९८६ को १६५ घंटे लगातार बोलकर यह रिकॉर्ड बनाया।

❋ जब बच्चा पैदा होता है तो उसका दिल केवल २८ ग्राम का होता है। बड़े होने पर भी यह छोटा-सा दिल केवल ३०० ग्राम का ही होता है।

❋ भारत में सालाना ८०० टन सोना खरीदा जाता है जबकि ७,६६,५९६ किलो सोना आयत करना पड़ता है।

❋ प्रथम व द्वितीय विश्वयुद्ध में जिन प्राणियों ने जान पर खेलकर मनुष्यों की मदद की उन्हें डिकेन मेडल से नवाजा गया। यह उनके साहस का पुरस्कार था।

❋ बारिश से बचानेवाला रेनप्रूफ पहला छाता यूरोप की देन है। यह १९३७ की बात है।

❋ भारत के संजीव बाबू ने १४ व १५ अगस्त २००३ को वायएमसीए ग्राउंड, त्रिवेंद्रम, (केरल) में २४ घंटे ३० मिनट तक लगातार गिटार बजाकर रिकॉर्ड बनाया।

❋ त्वचा की कोशिकाएं केवल तीन सप्ताह तक जीवित रहती हैं।

❋ हमारा देश विश्व का सातवां बड़ा देश है जहां ३२,८७,७८२ वर्ग किमी क्षेत्र में १०८ करोड़ से ज्यादा लोग व दुनिया के सर्वाधिक पशु निवास करते हैं।

❋ रशियन लोगों का पसंदीदा सूप ब्रॉश शलजम का बना होता है।

❋ अकेले ही पहली बार विश्व के लिए उड़ान भरने का श्रेय विले पोस्ट को जाता है। उन्होंने १९३३ में यह कमाल किया।

❋ गिनीज बुक में दर्ज ६३ कलशों से नृत्य करने का रिकार्ड, राजस्थान की सुरभि गर्ग ने १०१ कलशों के साथ भवई नृत्य कर तोड़ डाला।

❋ सांध्य महालक्ष्मी ने २५ गुणा २० मी. मीटर आकार का सबसे छोटा अखबार मुद्रित करके पिछला रिकार्ड तोड़ डाला।

❋ रोमेश शर्मा ने ११ मीटर लंबे नाखून दिखाकर ६.१५ मीटर लंबे नाखूनों का रिकार्ड तोड़ डाला।

❋ उज्जैन की माता जगदम्बा ने अपने १४ फुट लंबे बाल दिखाकर विश्व रिकार्ड बनाया।

❋ विश्व में सबसे लंबी जीभ का रिकार्ड हिमाचल के डॉ. रवींद्र शर्मा के नाम है। उनकी जीभ ९.५ सें. मी. लंबी है।

❋ दुनिया का सबसे कम अवधि का राजा वह था जिसने मात्र २० मिनट तक राज किया। ये थे पुर्तगाल के युवराज लुइस फिलिस। १ फरवरी, १९०८ को लिसबन में एक हादसे में उनके पिता की गोली लगने से मृत्यु हो गई और वे मरणासन्न रूप से घायल हो गये। वैधानिक रूप से पुर्तगाल में राजा की मृत्यु के बाद युवराज ही राजा होता है। अत्यधिक घायल होने से २० मिनट बाद ही उनकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार वैधानिक रूप से वह २० मिनट तक पुर्तगाल का राजा रहा। उसे इतिहास में डोम लुईस तृतीय के नाम से जाना जाता है।

❋ पाइन फ्लैश नामक गुबरैले की तीन से लेकर आठ तक पत्नियां होती हैं और अपने प्रत्येक परिवार के लिए वह अलग-अलग घर बनाता है। एक नर के साथ कई मादाएं होती हैं क्योंकि नर घर बनाते-बनाते थककर कम उम्र में ही मर जाते हैं, इसलिए मादाओं की संख्या बढ़ जाती है।

❋ जैकसन विले में इलिनॉयज फीमेल कालेज की एक प्रशिक्षिका बैले ल्योनार्ड इतनी अंधविश्वासी थी कि वह अपने किसी भी पत्र को तब तक डाक में नहीं डालती थी, जब तक कि उसे इस बात का पूरा भरोसा नही हो जाता था कि उसका पत्र रविवार के दिन रास्ते में नहीं होगा।

❋ कारमैथियन्स पर ९०० से ९१३ ई. तक शासन करने वाला सुल्तान जन्नारी अपनी आंखें बंद करके सोने से डरता था। उसने अपने वस्त्रों और शस्त्रों से पूरी तरह लैस होकर और स्वयं को अपनी आंखें खुली रखकर सोने का आदी बना लिया था, लेकिन दो ऐसे षड्यंत्रकारियों द्वारा अंतत: उसका वध कर दिया गया, जिन्होंने स्वयं भी बिना आंखें बंद किए सोना सीख लिया था और जो इस बात को अच्छी तरह समझ गए थे कि सुल्तान को इसी स्थिति में ही मारा जा सकता है।

❋ कांगो की फेरादजे आदिम जाति के लोगों को अपने मुखिया की ओर सीधे देखना मना है। वे सिर्फ अपने छुरों में बने विशेष छिद्रों से ही उसकी ओर देख सकते हैं।

❋ हैदराबाद के छठे निजाम और भारत के सबसे धनी शहजादे मीर महबूब अली खां (१८५६-१९११) ने अपने जीवन में एक वस्त्र को कभी दूसरी बार नहीं पहना। उसके बेशकीमती, सफेद, बारीक मलमल से बने कपड़े एक बार इस्तेमाल करने के बाद महल के नौकरों को दे दिए जाते थे।

❋ केंट (इंग्लैंड) में नोल के किले में वर्ष के १२ महीनों के लिए १२ आंगन हैं, सप्ताहों की संख्या के हिसाब से ५२ सीढ़ियां हैं और वर्ष के ३६५ दिनों में प्रत्येक दिन के लिए एक-एक खिड़की अर्थात् कुल ३६५ खिड़कियां हैं।

❋ सन् १६५० में जन्मे सर जार्ज रूके एक मामूली सी चोरी के लिए दंडित होकर अपने पिता द्वारा एक बार नौकर के रूप में समुद्र पर भेज दिया गया, जो आगे चलकर ब्रिटेन का नौसेनाध्यक्ष, बना जिसने जिब्राल्टर को जीता।

❋ मुस्कराने के लिए चेहरे को १७ मांसपेशियों की आवश्यकता पड़ती है, जबकि क्रोधित होने के लिए ४३ मांसपेशियों की।

❋ यह असंभव है कि छींकते समय व्यक्ति की दोनों आंखें खुली रहें।

❋ अमेरिका के दो राष्ट्रपतियों अब्राहम लिंकन और जॉन कैनेडी की हत्या बहुत ही रहस्यपूर्ण ढंग से की गई थी। इतिहास को देखने से कई समान परिस्थितियां उत्पन्न हुईं जिससे लगता है कि इतिहास स्वयं को दोहराता है- लिंकन

१८६० और कैनेडी १९६० में राष्ट्रपति चुने गये थे। लिंकन का हत्यारा बुश १८३९ में पैदा हुआ था और कैनेडी का हत्यारा ओस्वाल्ड सौ साल बाद १९३९ में पैदा हुआ था। लिंकन के उत्तराधिकारी एन्ड्रस जान्सन दक्षिण के डेमोक्रेट थे और १८०८ में पैदा हुए थे जबकि कैनेडी के उत्तराधिकारी लिण्टन जान्सन भी दक्षिण के डेमोक्रेट थे और १०० साल पश्चात् १९०८ में पैदा हुए थे। दोनों राष्ट्रपतियों को शुक्रवार के दिन उनकी धर्मपत्नियों की उपस्थिति में गोली मारी गई थी। दोनों को गोली पीछे से एवं सिर में मारी गई थी। लिंकन के सचिव का नाम कैनेडी था जिसने राष्ट्रपति लिंकन को उस थियेटर में न जाने का आग्रह किया था जहां उन्हें गोली मार दी गई थी। राष्ट्रपति कैनेडी के सचिव का नाम लिंकन था जिसने डलस न जाने के लिए जोर दिया था जहां उनकी हत्या कर दी गई थी।

अमेरिकी राष्ट्रपति लिंकन तथा कैनेडी के मध्य रहे संयोग अनूठे हैं। लिंकन के पुत्रों के नाम एडवर्ड तथा रॉबर्ड थे जिनमें से एडवर्ड तीन वर्ष की आयु में ही मर गया। कैनेडी के दोनों पुत्रों के नाम भी रॉबर्ट एवं एडवर्ड थे जिनमें से रॉबर्ट मारा गया और एडवर्ड जिंदा बचा रहा। लिंकन के सचिव का नाम कैनेडी तथा कैनेडी के सचिव का नाम लिंकन था। दोनों को शुक्रवार को ही गोली लगी। लिंकन को थिएटर में गोली लगी तथा उसका हत्यारा गोदाम में छिपा पाया गया। कैनेडी को एक गोदाम से गोली मारी गयी तथा उसका हत्यारा थिएटर में पकडा गया। दोनों ही हत्यारों को न्यायालय के समक्ष लाने से पूर्व मार दिया गया। अब्राहम लिंकन के उत्तराधिकारी एण्ड्रयू जॉनसन थे, जो सन् १८०८ में पैदा हुए थे तथा कैनेडी के उत्तराधिकारी लिंकन जॉनसन थे जो सन् १९०८ में पैदा हुए थे। दोनों के हत्यारों के नाम में भी १५ ही अक्षर थे।

* श्रीलंका में आदम की चोटी नामक एक चट्टान है जिसके ऊपर पैर का एक बड़ा चिन्ह बना हुआ है। पूरे विश्व के अधिकांश हिंदू, मुस्लिम, बौद्ध और ईसाई धर्मों के अनुयायी हर साल यहां पूजन करने आते हैं।

* समाचार पत्र का सबसे बड़ा संस्करण रविवार १० अक्टूबर, १९७१ को अमेरिकी दैनिक द न्यूयार्क टाइमस ने निकाला था, इसमें १५ भाग व ९७२ पृष्ठ थे।

* नया दिन-नई रात वह फिल्म थी, जिसमें संजीव कुमार ने नौ भूमिकाएं निभाई।

* भारत की स्वतंत्रता के समय ब्रिटेन में मजदूर दल की सरकार थी।

* रास बिहारी बोस ने जापान में इंडियन इंडिपैंडेंस लीग की स्थापना की थी।

* राज्यसभा की अधिकतम सदस्य संख्या २५० हो सकती है।

* संसद के तीन भाग होते हैं- राष्ट्रपति, लोकसभा तथा राज्यसभा।

* भारत में उच्च न्यायालयों की संख्या २१ हैं।

* संविधान की प्रथम अनुसूची में राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्रों का वर्णन है।

* अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में नियुक्ति राष्ट्रपति करता है।

* राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग की स्थापना वर्ष १९९३ में की गई थी।

* दो नदियों के मध्य भू-भाग को दोआब कहते हैं।

* भारत के पश्चिमी भाग में स्थित लवणीय दलदल का नाम कच्छ का रन है।

* हिमालय की उत्पत्ति से संबंधित सर्वमान्य सिद्धान्त प्लेट-विवर्तनिक सिद्धांत है।

✻ भारत की दो प्रमुख बड़ी नदियां नर्मदा और ताप्ती हैं जो अरब सागर में गिरती हैं।

✻ आर्थिक दृष्टि से भारत के उष्णकटिबंधीय पर्णपाती व वन सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं।

✻ संविधान के अनुसार संघ की कार्यपालिका शक्ति राष्ट्रपति में निहित है।

✻ बृहस्पति ग्रह के चंद्रमा यूरोप पर तरल पानी का समुद्र है, जिसे बर्फ की एक मोटी चादर ने पूरी तरह ढ़क रखा है।

✻ मंगल ग्रह का गुरुत्वाकर्षण बल पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण बल की तुलना में एक तिहाई अधिक शक्तिशाली है।

✻ सौर मंगल में स्थित चंद्रमा यहां मौजूदा ग्रहों से बड़े हैं। बृहस्पति ग्रह के चंद्रमा गेनीमेड, सौर मंडल का सबसे बड़ा चंद्रमा है। साथ ही शनि का चंद्रमा टीटैन बुध और प्लुटो ग्रह के चंद्रमा से बड़ा है।

✻ प्लूटो ग्रह से सूरज की दूरी पृथ्वी और सूरज की दूरी से लगभग चालीस गुना अधिक है।

✻ शुक्र ग्रह धीरे-धीरे अपनी धुरी पर घूमता है। जब शुक्र अपनी धुरी पर एक चक्र पूरा करता है, तो एक शुक्र दिवस होता है। शुक्र को इस चक्कर को पूरा करने में पृथ्वी के २४३ दिन के बराबर समय लगता है।

✻ हमारे शरीर में खून का बहाव पता लगाने का काम किया था विलियम हार्वे ने सन् १६२८ में।

✻ में इगनास सीमिलविस ने सबसे पहले मरीजों का इलाज करने से पूर्व क्लोरिनेटेड लाइम से हाथ धोने की शुरूआत की थी। इस खोज के साथ ही इलाज के दौरान अस्वच्छता से मरनेवालों की संख्या में बहुत कमी आई थी।

✻ में जोसेफ लिस्टर ने सर्जरी में एंटीसेप्टिक दवाइयों का उपयोग करना शुरू किया था।

✻ १८ वीं शताब्दी में जॉन हंटर ने इंसानों और जानवरों के शरीर का डिसेक्शन (चीर-फाड़) कर पता लगाया कि हमारा शरीर काम कैसे करता है। लुईस पाश्चर ने पहली बार कीटाणुओं का पता लगाया। उन्होंने ही यह पता लगाया कि आग पर उबालने से कीटाणुओं को नष्ट किया जा सकता है।

✻ १८९० में एमिल वॉन बेरिंग ने डिप्थीरिया के इलाज में सहायक सिरम बनाया।

१९२२ में फ्रेड्रिक बांटिग और चार्ल्स बेस्ट ने डायबिटीज के इलाज में कारगर सिद्ध इंसुलिन को पहली बार एक मधुमेह के मरीज के शरीर में डाला था।

१९५५ में फ्रेड्रिक सेंगर ने केमिकल्स की सहायता से इंसुलिन बनाना शुरू किया। इससे पहले इंसुलिन जानवरों के शरीर में से निकाला जाता था।

१९६७ में दक्षिण अफ्रीका के एक सर्जन डॉ. क्रिस्टीयन बरनार्ड ने पहला मानव से मानव हृदय प्रत्यारोपण किया था। टाइपराइटर का आविष्कार सन् १८६८ में अमेरिका के शोल्ज गेटलिंग नामक व्यक्ति ने किया था।

✻ एक ही मकसद से इकट्ठा हुए सबसे ज्यादा लोगों का समूह कुंभ मेले में देखा जा सकता है। उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद में त्रिवेणी संगम पर ३० जनवरी २००१ में लगे कुंभ मेले में २०० लाख लोगों ने इकट्ठा हो रिकार्ड बनाया।

✻ हमारे शरीर में सबसे ज्यादा क्रियाशील आंखों की मांसपेशियां होती है। यह दिनभर में १००,००० बार गतिमान होती है।

✻ सार्वजनिक क्षेत्र की विश्व की सबसे बड़ी संस्था होने का गौरव भारतीय जीवन बीमा निगम को है।

✻ इलेक्ट्रिक लिफ्टस् की शुरुआत १८८० में हुई।

✻ रामोजी फिल्म सिटी को विश्व का सबसे बड़ा फिल्म स्टुडियो काम्पलेक्स होने का सम्मान मिला है। हैदराबाद स्थित इस सिटी का नाम गिनिजबुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में है।

✻ केवल इंडोनेशिया में ही ३००० प्रजाति के वृक्ष हैं।

✻ विश्व के जल स्त्रोतों का केवल चार प्रतिशत भारत के हिस्से में है।

✻ मशीनगन का प्रयोग पहली बार अमेरिकन सिविलवार में (१८६१-६५) में किया गया था।

✻ एच. के. सोनी नामक भारतीय ने १८,१८० रांगोलियों के डिजाइन संग्रहित करने का रिकार्ड बनाया।

✻ मनुष्य एक दिन में लगभग ५३० घनफुट हवा सांसों के जरिए लेता है।

✻ रेशमी वस्त्र बनाने की प्रक्रिया में भारत में ६० लाख कर्मचारी हैं।

✻ पहली ह्यूमन सेक्स चेंज की घटना १९५० में हुई जब डेनिस डॉक्टर क्रिस्टिन हैम्बरगर ने न्यूयार्क के जॉर्ज जारगेनसेन का लिंग बदला।

✻ सबसे लोकप्रिय सर्च इंजन गूगल में ४२८०० करोड़ पेजेस है। यह वेब दुनिया के सबसे ज्यादा पेजेस का रिकार्ड रखने वाला सर्च इंजन है। यहां प्रतिदिन २००० लाख सर्च क्वेरिज होती है।

✻ एक वयस्क के फेफड़े में लगभग तीन लीटर वायु होती है।

✻ पर्वतारोहण को खेल के रूप में सन् १८५० में मान्यता मिली।

✻ समुद्रों में इतना पानी है कि वह पृथ्वी के हर व्यक्ति को ३६५० लाख टन पानी दे सकते हैं। अफसोस कि वह खारा है।

✻ पहला डाकटिकट सन् १८४७ में ब्रिटेन में जारी हुआ। यह आकार में चौकोना न होकर अष्टभुजाकार था। इसके सात साल बाद उनका उपयोग शुरू हुआ।

✻ हिन्दी सिनेमा की पहली संगीतकार जद्दन बाई थीं। जो नर्गिस की मां या यूं कहें संजय दत्त की नानी के रूप में ज्यादा जानी गईं।

✻ जमीन पर केवल मनुष्य ऐसा प्राणी है जो रोकर अपने भाव प्रदर्शित करता है। अन्य कोई प्राणी भावाकुल होकर नहीं रोता। आंखों की सतह की सफाई आंसुओं के जरिए होती है।

✻ प्लास्टिक का प्रयोग पहली बार १८७० में हुआ। फिल्म बनाने के लिए १८८० में इसे प्रयोग में लाया जाता था। सिंथेटिक का प्रयोग कर पहला प्लास्टिक १९०९ में बना।

✻ अब तक खोजे गए ग्रहों में सबसे छोटा ग्रह प्लूटो है। इसका व्यास महज २,३२४ किमी (१,४४४ मील) है और भार, पृथ्वी का केवल ०.००२२ है।

✻ सउदी संभ्रात घराने में ४,२०० से ज्यादा रॉयल प्रिंसेस व ४०,००० से अधिक अन्य रिश्तेदार हैं। यह विश्व की सबसे बड़ी रॉयल फेमिली है।

✻ जब आप चलते हैं तो २०० से ज्यादा अलग-अलग मांसपेशियों का प्रयोग करते हैं।

✻ ऑल इंडिया कौंसिल ऑफ टेक्निकल एज्यूकेशन (AICTE) हर साल इंजीनियरिंग व तकनीकी महाविद्यालयों की मान्यता का विस्तार करता है। वर्तान में AICTE से मान्यता प्राप्त कॉलेजों की संख्या १,३५५ है।

❋ जब कनाड़ा में १६८५ फ्रांसीसी उपनिवेशकों को सिक्कों की कमी महसूस हुई तो उन्होंने ताश के पत्तों का प्रयोग मुद्रा राशि के रूप में किया था।

❋ वसा और पोटाश के मिश्रण से ५००० साल पहले भी साबुन का उपयोग होता था। यूरोप में ई.पू. ९०० साल में साबुन प्रयोग में लाया जाता था। पहला साबुन पावडर १८४५ में बना।

❋ महाराजा जय सिंह द्वारा निर्मित चार जन्तर-मन्तर अथवा खगोलीय घड़िया हैं वे राजस्थान, उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, दिल्ली में स्थित हैं।

❋ कर्नाटक-कोलार गोल्ड फिल्ड्स इस राज्य से भारत का सर्वाधिक स्वर्ण उत्पादन आता है।

❋ एक राज्य के नाम का अर्थ है नया घर वह सिक्कीम राज्य है।

❋ भारत के डॉ. कैरोमल एम. चंदीरमणि ने ७५ साल १९८ दिनों तक मुंबई में जनरल प्रेक्टिस कर रिकार्ड बनाया। उन्होंने १०० साल की उम्र में ९ मई १९९९ को प्रेक्टिस छोड़ी।

❋ विश्व के सबसे उम्दा कंप्यूटर से १००० गुना ज्यादा मनुष्य के दिमाग की क्षमता है।

❋ भारत में आईएआरआई संस्था ने विश्व का पहला हाइब्रीड चावल बनाया।

❋ गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस् का पहला संस्करण १९५५ में आया था।

❋ निर्देशक विशाल भारद्वाज ने मकबूल के केंद्रीय पात्र का तानाबाना शेक्सपीयर के नाटक मेकबेथ से प्रेरित होकर रचा था।

❋ साल के ३६५ दिनों में से युगांडा के टोरोरो में २५० दिन तूफान आता रहता है।

❋ मानव शरीर में इतनी ऊर्जा है कि उससे ३६ वॉट का बल्ब जल सकता है।

❋ भारत में हर साल ८० लाख लोग मरते हैं उनमें से केवल १२,००० लोगों ने नेत्रदान किया होता है।

❋ पहली फैक्स मशीन का पेटेंट १८४३ में हुआ।

❋ दुनिया में एक बालक ऐसा भी हुआ है जो ८ वर्ष से भी कम आयु में विश्वविद्यालय में दाखिल हो गया था। यह मेधावी छात्र था माइकल टेन, जिसे न्यूजीलैंड के केन्टबरी विश्वविद्यालय ने ७ वर्ष ११ माह की आयु में विज्ञान स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश दिया था।

❋ शतरंज के जादूगर के नाम से प्रसिद्ध अमेरिका निवासी पाल मार्फी ने ५३५ पृष्ठोंवाले लोसियाना सिविल कोड को बचपन में रट डाला था और उसने अपने कानून की परीक्षा मात्र १९ वर्ष की आयु में ही पास कर ली थी।

❋ मोरक्को का नरभक्षी शासक इस्माईल ५४८ पुत्रों और ३४० पुत्रियों का पिता था।

❋ दुनिया के सबसे बड़े कैक्टस सैगुआरी जाति के होते हैं। इनकी लंबाई १६ मीटर तक पायी जाती है। ये एरिजोना (अमेरिका) और सोनोरा (मैक्सिको) में पाये जाते हैं।

❋ भारत देश से ७ देशों की सीमाएं लगी हैं।

❋ जमीन के अंदर जल सिरने की क्रिया को अन्त: स्रवण कहते हैं।

❋ स्वस्थ बने रहने के लिए आपको रोजाना खाद्य पदार्थ से ३००० कैलोरी ऊर्जा की जरूरत होती है।

❋ भारतीय पुरुष की वर्तमान में औसत आयु २५.२ वर्ष व महिला की २५.७ वर्ष आंकी गई है। यानी भारत एक युवा राष्ट्र है।

❋ विश्व के सभी देशों के राष्ट्रीय ध्वज लगभग वर्गाकार या आयाताकार हैं पर नेपाल का ध्वज तिकोना है।

❋ छोटे स्कर्ट पहनने का प्रचलन १९२० में पाश्चात्य महिलाओं ने लाया जो घुटनों के ऊपर के होते थे।

❋ विश्व में सबसे मजबूत बाल ११ साल की गुलिंदर कौर के दर्ज किये गए हैं। लिइस्टर में २३ मई १९४९ को उसने अपने एक बाल से २२७ ग्राम वजन उठाया था।

❋ मानव शरीर में आंखों का वर्चस्व बहुत ज्यादा है। माना जाता है बाहरी दुनिया की ८० प्रतिशत जानकारी हम आंखों से पाते हैं।

❋ चीन में दो करोड़ दस लाख साइकिल हैं। वहां हर पांचवे व्यक्ति में से एक के पास साइकिल है।

❋ पहला भाप इंजन १८२५ में इंग्लैंड में बना। स्टॉकटन से डार्लिंगटन तक ३३ डब्बों की पहली रेलगाड़ी तभी चली।

❋ सामान्य व्यक्ति की छींक की आवाज की स्पीड एक घंटे में १६० कि.मी. की होती है।

❋ लगभग ज्यादातर लोगों का एक पैर दूसरे पैर से मोटा होता है।

❋ शून्य का आविष्कार भारत में ब्रह्मगुप्त ने किया।

❋ सर्वप्रथम ग्रहों की गणना आर्यभट्ट ने ४९९ ई.पू. में की।

❋ मोहनजोदड़ो व हड़प्पा में मिले अवशेषों के अनुसार भारतीयों को त्रिकोण व रेखागणित का २५०० ई.पू. में ज्ञान था।

❋ जर्मन लेखक डॉ. थामस आर्य के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता से मिले भार-माप यंत्र भारतीयों के दशमलव प्रणाली ज्ञान को दर्शाती है।

❋ समय और काल की गणना करने वाला विश्व का पहला कैलेंडर भारत में लता देव ने ५०५ ई.पू. सूर्य सिद्धांत नामक अपनी पुस्तक में वर्णित किया।

❋ सिंधु घाटी सभ्यता में मिले प्रमाण सिद्ध करते हैं कि भारतीयों को २५०० ई.पू. तांबे तथा जस्ते की जानकारी थी।

❋ लिम्बा ऑफ रिकार्ड्स के अनुसार ५००० ई.पू. सुश्रुत (भारतीय चिकित्सक) ने सर्वप्रथम प्लास्टिक सर्जरी का प्रयोग किया।

❋ विश्व के पहले लेखक कार्य का प्रमाण ५५०० वर्ष पूर्व हड़प्पा संस्कृति के अंतर्गत मिलता है।

❋ संस्कृत दुनिया की सबसे पहली भाषा है तथा यह सभी यूरोपियन भाषाओं की जननी है।

❋ विभिन्न रासायनिक प्रक्रियाओं एवं रासायनिक रंगों का प्रयोग पांचवीं शताब्दी में भारत में किया गया।

❋ बैंगलोर के मल्लिकार्जुन रेड्डी ने हाल में टूथपिक्स की २८ कड़ियों को जोड़कर चेन बनाई व रिकार्ड में अपना नाम जोड़ा।

❋ हमारा दाहिना फेफड़ा, बाएं फेफड़े की तुलना में ज्यादा हवा खीचता है।

❋ संभवत: भारत में बाल श्रमिकों की संख्या विश्व में सबसे ज्यादा है। विश्व श्रम रिपोर्ट में इसे रेखांकित किया गया है।

❋ पोलिश वैज्ञानिक मेरी क्यूरी (१८६७-१९३४) को दो बार नोबल पुरस्कार दिया गया। एक बार भौतिकी के लिए दूसरी बार रसायन शास्त्र के लिए। उन्होंने रेडियो एक्टिविटी का अध्ययन किया व रेडियम तथा पोलोनियम की खोज की।

❋ सबसे पुराना राष्ट्रीय ध्वज डेनमार्क का है। वे पहले थे जिन्होंने १२१९ में झंडा फहराया।

❋ माइक्रोसॉफ्ट के हॉटमेल के पूरे विश्व में फरवरी २००४ को १७०० लाख सक्रिय सदस्य दर्ज किए गए हैं। प्रतिदिन हॉटमेल से जुड़नेवालों की संख्या १,००,००० के हिसाब से बढ़ती है। यह २३० देशों में उपलब्ध है।

❋ मस्तिष्क कोशिका सेरे ब्रिलियम सबसे छोटी कोशिका होती है जो केवल ०.००५ मिमि (०.०००१९६८ इंच) या ५ माइक्रोन की होती है।

❋ भारत में आय.ए.एस. अफसरों की संख्या ५०४४ व आयपीएस अफसरों की संख्या २८८३ दर्ज है।

❋ केन ओपनर, केन बनने के ४८ सालों बाद ईजाद हुआ।

भारत में पहला म्चुयल फंड सेटअप १९६३ में यूनिट ट्रस्ट ऑफ इंडिया का था।

❋ पृथ्वी का वातावरण ५.५ क्वाड्रेलियन टन के वजन का है।

❋ प्रो. जगदीश शुक्ला ने विश्व के सबसे छोटे आकार के धार्मिक ग्रन्थ बनाने का रिकार्ड बनाया।

❋ ऑल इंडिया कौंसिल फॉर टेक्निकल एजूकेशन (AICTE) द्वारा देश के १००० बिजनेस स्कूलों को मान्यता दी गई है।

❋ स्वीडन के लोग सबसे ज्यादा चॉकलेट खाते हैं।

❋ पहली मोटरसाइकिल १८८५ में बनी हालांकि इसकी अधिकतम रफ्तार केवल १९ किमी प्रति घंटा थी।

❋ भारत के जेम्स सिएमीयोंग ने ५१ सेमी हील की सैंडल बनाकर रिकार्ड कायम किया।

❋ आपकी रीढ़ की हड्डी अलग-अलग ३३ हड्डियों से मिलकर बनी होती हैं।

❋ आंध्रप्रदेश का नुन्ना मैंगो मार्केट एशिया का सबसे बडा आम का बाजार है।

❋ बोस्टन में १८४५ में सबके नहाने पर पाबंदी थी। केवल डॉक्टर का परचा होने पर ही नहाने दिया जाता था।

❋ पहला रेडियो (ट्रांजिस्टर) १९४८ में ईजाद हुआ।

❋ केरल के १२ मजदूरों ने मिलकर ३०x२५ फीट की दुनिया की सबसे बड़ी खिड़की बनाई।

❋ रविवार के दिन ओहियो में कॉर्नक्फ्लैक्स बेचने पर पाबंदी है।

❋ डॉक्टरों के सबसे काम की चीज स्टेथोस्कोप का पहला उपयोग १८१६ में हुआ।

❋ दस मिनट तक चलनेवाले अंधड् (आंधी-तूफान) में इतनी ताकत होती है जो दुनिया भर के सारे नाभिकीय अस्त्रों को मिलाने पर होगी।

❋ टायटेनिक सबसे बडा जहाज था जो १९१२ में बीच यात्रा में डूब गया था।

❋ विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में १२० लाख लोग दृष्टिहीन हैं।

❋ इंग्लैंड व फ्रांस के बीच १३३८ से १४५३ तक चलनेवाली लड़ाई इतिहास की सबसे लंबी लड़ाई है।

❋ आज हम बैटरी से चलनेवाले कई उपकरणों का प्रयोग करते हैं। पहली बार एलेसानड्रो वोल्टा ने १७९९ में बैटरी बनाई थी।

❋ कभी सहारा का बड़ा मरुस्थल उपजाऊ भूमि था जहां नदियां बहती थीं व पेड-पौधे थे।

❋ महत्वपूर्ण तिथियां- १८१५- एलिजाबेथ कैडी स्टैनट्न का अमरीका के जोहान्स टाऊन में जन्म। १८४८-

अमरीका के सेनेका फाल्स में महिला अधिकारों के लिए पहली कन्वैशन आयोजित की। १८६९- अमरीकी महिलाओं के लिए मताधिकार हेतु अभियान शुरू किया। १८९८- प्रेरणादायक जीवन वृत्तांत एटी ईयर्स एंड मोर प्रकाशित किया। १९२०- अमरीकी महिलाओं को मताधिकार मिला।

❋ गौतम वर्मा के नाम ३८ मिनट में ५१ नारियल दांतों से छीलने का रिकार्ड दर्ज है।

❋ भारत में कपास की ९,९३६ प्रजातियां है।

❋ ब्राजील की खदानों से निकला हीरा अफ्रीका की खदानों से निकाले गए हीरे की तुलना में ज्यादा कठोर होता है।

❋ देवनागरी लिपि को पहली बार शेरशाह ने चलन में लाया।

❋ भारत की विमला ऋषि ने १ सेमी x१ सेमी के सबसे छोटे आकार के विवाह कार्ड बनाने का रिकार्ड किया।

❋ **त्वचा-** शरीर के भीतर के ही भागों की सुरक्षा के लिए प्रकृति ने प्राणियों को एक ऐसा अनोखा आवरण प्रदान किया है, जिसे हम खाल, चमड़ी या त्वचा के नाम से जानते हैं। त्वचा हमारे शरीर का रक्षात्मक आवरण है। यह रोगकारी जीवाणुओं और अन्य हानिकारक पदार्थों को शरीर में प्रवेश करने नहीं देता। स्पर्श, दर्द, सर्दी और गर्मी को महसूस करने का काम भी त्वचा करती है। हम गोरे हैं या काले, यह हमारी त्वचा द्वारा बनाए गए भूरे पिगमेंट; जिसे मेलालीन कहते हैं, पर निर्भर करता है। गहरे रंग के लोगों की त्वचा ज्यादा मात्रा में मेलालीन बनाती है जबकि कम मेलालीन बनने पर त्वचा गोरी दिखती है।

औसत रूप से मनुष्य की त्वचा का क्षेत्रफल डेढ़ वर्ग मीटर और भार कोई चार किलोग्राम के लगभग होता है। हमारी त्वचा में प्याज की तरह कई परतें होती हैं। परंतु मुख्य रूप से तीन परतें होती हैं सबसे नीचे की चर्बीदार परत हाइपोडर्मिस, बीच की मोटी परत डर्मिस और सबसे ऊपर पारदर्शी परत एपिडर्मिस। त्वचा में उपस्थिति मेलानिन नामक रंजक की वजह से व्यक्ति गोरा या काला होता है। यदि मेलानिन अधिक होता है तो चमड़ी काली और कम होता है तो चमड़ी गोरी होती है। हमारी त्वचा सूर्य के प्रकाश से विटामिन डी बनाती है जो हड्डियों के विकास के लिए बहुत जरूरी है। त्वचा में पसीने की ग्रंथियां भी होती हैं। ये ग्रंथियां पसीना बहाकर शरीर का तापमान नियत रखती हैं। हमारे शरीर में इनकी संख्या तीन लाख तक होती है। हमारी त्वचा में जगह-जगह बाल होते हैं। इनकी जड़े डर्मिस के निचले हिस्से तक फैली होती है। पक्षियों के पंख की तरह से ये बाल भी झड़ते और निकलते रहते हैं।

❋ बालों के विग (नकली बाल) पहली बार १९६० में अपनाए गए।

❋ समुद्र में बीच में टापू की तरह दिखनेवाले पहाड़ असल में जमीन के पहाड़ों से ज्यादा ऊंचे होते हैं। समुद्री सतह पर तो केवल उनकी चोटी दिखती है; भीतर वे ९००० मीटर की ऊंचाई पानी में छिपाए होते हैं।

❋ राजस्थान के कल्याण रामजी सैनी नामक व्यक्ति ने ११ फीट लंबी मूंछें रखने का कीर्तिमान रचा।

❋ हम अपनी जुबान से तकरीबन १०,००० तरह के स्वाद पहचान सकते हैं।

❋ जॉन ग्रिशम की रचनाओं को प्रारंभ में ३५ प्रकाशकों ने अस्वीकार कर दिया था। आज दुनियाभर में उनकी आठ करोड़ किताबें बाजार में हैं।

❋ पहली बार १८२५ में इंग्लैंड में रेलगाड़ी चली। यह स्टॉकटन व जरलिंगटन के बीच ३३ डिब्बों की चलाई गई।

आज हम जो पानी पी रहे हैं, वह ३०,००० लाख साल पुराना है। यानी इतने साल पहले पानी, धरती पर आया था। तब

से वह पानी रिसाइकल होकर बार-बार पृथ्वी पर आ रहा है।

✻ सी.एच. पुष्पा के नाम २७९३ बस टिकट इकट्ठा करने का रिकार्ड है।

✻ भारत की सबसे बड़ी ओपन यूनिवर्सिटी इग्नू इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना १९८५ में हुई।

✻ जब पूर्णिमा होती है तब न केवल हत्या प्रकरणों में बढ़ोतरी होती है बल्कि डकैती, हथियार बंद डाका और दूसरे अपराध भी बढ़ जाते हैं।

✻ विश्व की सबसे बड़ी एयरलाइन सोवियत स्टेट की एयरलाइन एरोफ्लॉट है।

✻ ज्यादातर सपनों की अवधि केवल ५ से २० मिनट होती है।

✻ शतरंज के ग्रैड मास्टर का खिताब पानेवाली कोनेस हंपी एकमात्र भारतीय महिला हैं।

✻ सोनी कंपनी द्वारा १९९८ में गलती से ७,००,००० ऐसे कैमरे बिक गए थे जिसमें उपयोग में लाई गई तकनीक से लोगों के कपड़ों के भीतर का भाग भी दिख जाता था।

✻ सबसे पहले ट्रैफिक लाइट का उपयोग १९१९ में डेटरॉइट (अमेरिका) में किया गया।

✻ पृथ्वी के दक्षिणी ध्रुव पर बर्फ की ४८०० मीटर परत जमी है।

✻ विश्व के सबसे छोटे मोबाइल हॉस्पिटल का श्रेय हरियाणा की एक सेवा संस्था द्वारा चलाए जाने वाले चलते-फिरते फरिश्ता हॉस्पिटल को जाता है।

✻ हमारे शरीर में ६०० प्रकार के स्नायु हैं।

✻ इंडियन क्लीनिकल एपिडेमियोलॉजी नेटवर्क और आयुर्विज्ञान संस्थान के अनुसार भारत में हर साल लगनेवाले कुल ३००-६०० करोड़ इंजेक्शनों में करीब ६३ प्रतिशत असुरक्षित हैं।

✻ हथगोलों का आविष्कार १००० साल पहले चीन में हुआ।

✻ किसी भी स्तनधारी प्राणी की बात करें तो नर की तुलना में मादा लंबे समय तक जीवित रहती है।

✻ विश्व प्रसिद्ध पेंटर पिकासो ने अपने जीवन काल में १३,५०० पेंटिंग १,००,००० एनग्रेविंग, ३४,००० पुस्तक चित्र तथा ३०० स्कल्पचर और कूरेमिक्स तैयार किये थे।

✻ विश्व में प्रतिवर्ष लगभग एक करोड़ लोगों की मृत्यु हो जाती है।

✻ विश्व में हर साल लगभग २.७ करोड़ बच्चे पैदा हो जाते है।

✻ विश्व में प्रतिवर्ष होनेवाले तलाकों में से ४६.५ प्रतिशत तलाक अमेरिका में लिए जाते हैं।

✻ सबसे अधिक गाये जानेवाला गीत, हैप्पी बर्थ डे टु यू।

✻ भारत की लता मंगेशकर ने सन् १९४८ और १९८५ के बीच २० भारतीय भाषाओं में लगभग ३०,००० गीत गाये।

✻ बेर्फलर (फ्रांस) की प्रथम आधिकारिक लाइफबोट का नाम ऑथेलो रखा गया। ४ दिसम्बर, १८७२ को यह अपने प्रथम सुरक्षा लक्ष्य की तरफ अग्रसर हुई तथा इसने एक अमेरिकी जहाज के २८ नाविकों को डूबने से बचाया। संयोगवश इस डूबते जहाज का नाम भी ऑथेलो ही था।

✻ १० जून, १९५१ को टेम्बा (फ्लोरिडा) के सेंट जोसफ अस्पताल में दो औरतें एक ही प्रकार के ऑपरेशन के लिए

भर्ती हुई। दोनों का नाम इरीन स्मिथ, दोनों की उम्र ४७ वर्ष थी तथा दोनों के पति का नाम था फ्रेक।

❋ विश्व का सबसे बड़ा बंदरगाह अमेरिका में स्थित है। इसका नाम है हार्बर बंदरगाह। यह न्यूयार्क शहर में है।

❋ संसार का सबसे बड़ा समुद्री जहाज इस समय नार्वे के पास है। इस विशालकाय जहाज की लंबाई १०३५ फुट साढ़े सात इंच है। इसका खाली वजन लगभग ७०,२०० टन है।

❋ दुनिया में एक से एक सुंदर व विशाल रेलवे स्टेशन है। लेकिन, विश्व का सबसे बडा रेलवे स्टेशन ग्रांड सेंट्रल टर्मिनल है। लाखों यात्रियों को प्रतिदिन अपने गंतव्य पर पहुंचने के लिऐ यहां आना होता है। यह रेलवे स्टेशन अमेरिका के न्यूयार्क शहर में है।

❋ सामान्य व्यक्ति की छींक की आवाज की स्पीड एक घंटे में १६० कि.मी. की होती है।

❋ एक सामान्य व्यक्ति अपने जीवन के दरम्यान ३०,००० कि.ग्रा. भोजन खा जाता है।

❋ लगभग ज्यादातर लोगों का एक पैर दूसरे पैर से मोटा होता है।

❋ व्यक्ति का मस्तिष्क सभी प्रकार की पीड़ा अनुभव कर सकता है। लेकिन अगर मस्तिष्क को काटा जाय तो उसके ऊपर कोई शल्यक्रिया की जाए तो उसे बिल्कुल पीड़ा नहीं होती।

❋ गला रुंधने से मृत्यु : प्रतिवर्ष ३००० अमेरिकी गले में भोजन की रुकावट से, १२० अमेरिकी स्नानघर के टबों में और ४३,००० सड़क दुर्घटनाओं में मर जाते हैं।

❋ अधिकतम बच्चों का जन्म - १३ जून १९७१ को आस्ट्रेलिया के सिडनी शहर के रॉयल अस्पताल में श्रीमती गेराल्डाइन ब्रोडरिक ने ९ बच्चों को एक ही बार में जन्म दिया। इनमें ५ लड़के और ४ लड़कियां थी।

❋ लगभग १४४ फिल्मों में पुलिस इंस्पेक्टर की भूमिका करनेवाले जगदीश राज के नाम रिकार्ड दर्ज है।

❋ आपके शरीर से २४ घंटों में १ लाख स्किन स्केल्स गिरते हैं।

❋ चाय की पत्तियों को चुनकर हम तक पहुंचानेवाले प्लांटस् की संख्या देश में १,५७७ है। इनमें आसाम, बंगाल व तमिलनाडु में ये सर्वाधिक हैं।

❋ मोनालिसा की रहस्यमयी मुस्कान का चित्र बनाकर प्रसिद्ध होनेवाले लियो नार्दो दविंची का रुझान विज्ञान में थी। उन्होंने ग्लाइडर का डिजाइन बनाया था।

❋ पहली एम्बूलेंस नेपोलियन के निजी शल्यचिकित्सक (सर्जन) डोमेनिक जेन लेरी ने १७९६ में बनाई। जब युद्ध के मैदान से घायल योद्धा को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के लिए इसकी मदद ली जाती थी।

❋ कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) ने २००४-०५ में अपने ४.११ करोड़ सदस्यों के जरिए १६,४६३ करोड़ रुपए की राशि एकत्र की।

❋ हर साल मैक्सिको सिटी १८ इंच की दर से डूब रही है।

❋ मेन शहर में दुनिया की पहली शराब बंदी १८५१ में हुई।

❋ अमेरिका के सचिव पद पर अफ्रीकन-अमेरिकन महिला के रूप में पहली बार कोंडोलिसा राइस चुनी गई हैं।

❋ हाथ में पकड़ी जानेवाली छोटी पर्स की शुरुआत सन् १८०० की महिलाओं ने की थी।

❋ मोमबत्तियों के साथ बच्चों के जन्मदिन मनाने का चलन २०० साल पहले जर्मनवासियों ने शुरू किया।

❋ सी. नटराजन ने १० फिट लंबी व ७० किलो वजनी सबसे बडी वीणा बनाई है।

❋ जिनके पास लैंड लाइन फोन थे उसमें से ३७ लाख कनेक्शन २००४-५००५ में लौटा दिए गए। बावजूद इसके आज भारत में ४.६६ करोड़ लैंड लाइन कनेक्शन है।

❋ हिंदुस्तान की पहली हड़ताल २२ मई, १८२७ को कलकत्ता शहर में हुई थी। उसमें कलकत्ता के मूल निवासियों की कोई भागीदारी नहीं थी। सिर्फ उडीसा से आये हुए पालकी ढोनेवाले कहारों ने यह हड़ताल की थी, जो २६ मई १८२७ तक चली।

❋ पीटर दी ग्रेट रूस का १५ वीं शताब्दी का एक ऐसा राजा था, जिसने दाढ़ी पर कर लगाकर तम्बाकू पीना अनिवार्य कर दिया था।

❋ भारत की प्रथम रेलगाड़ी विधिवत रूप से १६ अप्रैल १८५३ को चली। भारत में रेलगाडी शुरू करने का निर्णय सन् १८४४ में ईस्ट इंडिया कंपनी के लंदन में स्थित कोर्ट ऑफ डायरेक्टर्स ने किया था।

❋ हिन्दी की प्रथम पुस्तक का प्रकाशन सन् १८०२ में हुआ और उस पुस्तक का नाम था- सिकीन कृत मिरसियां।

❋ २-३ दिसंबर १९८४ की रात को विश्व की भीषणतम औद्योगिक (भोपाल गैस) दुर्घटना हुई थी, जिसमें यूनियन कार्बाइड प्लांट (संयंत्र) से निकली विषैली एम.आई.सी. गैस से कई हजार लोग प्रभावित हुए थे और मरे थे।

❋ दुनिया की सबसे लंबी जीवित महिला शिकागो की सेण्डी एलन है। एलन का कद २१३.७ सें.मी. लंबा है।

❋ हेरिसबर्ग (पेनसिलवानिया) के ए.डी. जार्डन का घर दो बार आग से जलकर नष्ट हो गया। दोनों बार आग शनिवार को लगी, दोनों अग्निकांड की सूचना एक ही व्यक्ति द्वारा गई। दोनों बार एक ही फायर कंपनी की गाडी अपने उपकरणों को लेकर आग बुझाने लगी। दोनों बार आग लगने के कारण का पता नहीं चल पाया। दोनों बार श्रीमती और श्री जार्डन बाजार गये हुए थे तथा ताज्जुब यह था कि दोनों बार समूचा घर जलकर राख हो गया तथा दोनों बार मात्र एक सिलाई मशीन बची।

❋ डन्डाल्फ (आयरलैंड) में जेल का निर्माणकर्ता जॉन कॉफी अपने इस कार्य के दौरान ही दिवालिया हो गया। सन् १८५३ में बने इस जेल का प्रथम कैदी था। इसको बनानेवाला स्वयं जॉन कॉफी।

❋ पहला फ्रिज जो घरेलू उपयोग के लिए लाया गया वह डोमेलर का था जिसे १९१३ में अमेरिका में बनाया गया।

❋ गगन गांधी ने अपने दोनों कानों से कई अलग-अलग करतब दिखाकर अपना नाम रिकार्डस् में दर्ज किया।

❋ हड्डियां आपस में लिगामेंटस् के जरिए जुड़ी होती हैं। मांसपेशियां उन्हें गति देती हैं।

❋ पूरे विश्व में अभी भारत युवाराष्ट्र है जहां अधिकांश जनसंख्या १५ से ३० आयुवर्ग की है। भारत में उम्र की औसत धीरे-धीरे बढ़ रही है। इस आधार पर २०५० तक हर पांचवां भारतीय ६० साल के ऊपर होगा।

❋ मार्केट शेयर की अपेक्षा मुनाफों को वापिस ले लेना अक्सर आसान है।

❋ मालिश रक्त संचार को बढ़ाती है। यह नाड़ी संस्थान व मांसपेशियों को सबल करती है।

❋ डिक्कन मेडल पानेवाली अकेली बिल्ली सीमोन है जो द्वितीय विश्वयुद्ध में जहाज के चूहे पकड़ती थी। जबकि उसे पता भी नहीं चला और ब्लास्ट हो गया है।

❋ रेशम का कीड़ा जिस कोकून में अपने अंडे देता है उससे १,००० मीटर लंबा रेशम बन सकता है।

❋ दुनिया के सबसे महंगे होटल्स की सर्वाधिक संख्या मास्को में है।

❋ जिन लोगों का वजन थोड़ा ज्यादा होता है उनकी अचानक मरने की आशंका सामान्य वजनवाले व्यक्तियों की तुलना में कम होती है।

❋ सफेद दाग होनेवाला रोग भारत के तीन प्रतिशत लोगों में दिखता है।

❋ चीन की सीचुऑन एयरलाइंस ने अपने लिए फोन नं ८८८८-८८८८ लेने के लिए २,८१,५०० डॉलर का भुगतान किया। चीन में ८ अंक का मतलब है अमीरी।

❋ एयरप्लेन मशीन की खोज स्लिन्की ने की। जब वे इंजन पार्टस से यूं ही खेल रहे थे तो उन्हें लगा कि स्प्रिंग्स का बेहतर उपयोग इस तरह भी हो सकता है।

❋ ऑस्ट्रेलिया में लगी आग ५००० सालों तक जलती रही थीं।

❋ रामजीत भिंड ने रेशमी धागों से हाथ का बुना कपड़ा बनाने का कीर्तिमान रचा।

❋ आंखों को नम बनाए रखने के लिए सालभर में हमें २०० ग्राम आंसुओं की जरूरत पड़ती है।

❋ भारत-पाकिस्तान बॉर्डर की कुल लंबाई ३३१० किमी है। भारत के चार राज्यों से यह जाती है जो हैं- पंजाब, राजस्थान, गुजरात व जम्मू-कश्मीर।

❋ द्वितीय विश्वयुद्ध (१९३९-४५) के दरम्यान ५५० लाख लोग मारे गए थे।

❋ ऑल इंडिया रेडियो का पहला न्यूज बुलेटिन १९३७ में प्रसारित हुआ।

❋ आसमान के तारे दरअसल गरम गैसों से भरे बादल होते हैं। उनमें जितनी ज्यादा गैसें होती हैं वे उतने ज्यादा गरम व चमकदार होते हैं।

❋ हर दिन पांच लाख ४० हजार बैरल तेल का उत्पादन करनेवाली जामनगर की पेट्रोकेमिकल रिफायनरी विश्व की सबसे बड़ी रिफायनरी है।

❋ हमारे शरीर का सामान्य तापमान ३७°c होता है।

❋ शिकार खेलने का लाइसेंस दुनिया में १००० लाख लोगों के पास है।

❋ दुनियाभर में २००५ में केवल भूख से ६० लाख से ज्यादा लोग मर गए।

❋ आइस्क्रीम की शुरुआत चीन में हुई।

❋ भारत के कौशल किशोर के नाम ५१ साल में १७५४ पत्र प्राप्त करने का रिकॉर्ड है।

❋ संयुक्त राष्ट्र बालकोष (यूनिसेफ) के मुताबिक भारत में बाल कुपोषण की स्थिति भयावह है। दुनिया के तीन कुपोषित बच्चों में से एक भारत में है।

❋ रोड एक्सीडेंट का पहला मामला १७ अगस्त १९८६ को प्रकाश में आया जब इंग्लैंड के क्रिस्टल पैलेस जैसी भीड़भाड़ भरे रस्ते पर ब्रिजेड डिस्कॉल को ऑर्थर इडलिस ने अपनी कार से टक्कर मारी।

❋ धरातल से सबसे ऊंचाई पर जो बादल बनते हैं वे सिररस होते हैं। वे इतने पतले होते हैं जैसे बाल लेकिन वे ५०००

से १३७०० मीटर (१६,४००-४४,९५० फीट) ऊंचाई पर होते हैं।

❋ दुनिया की सबसे लंबी ९५ फीट की राखी ऑडोरा कंपनी ने बनाई।

❋ आपके एक बूंद खून में ५००० लाल रक्त कोशिकाएं (आरबीसी) व ११० लाख श्वेत रक्त कोशिकाएं (डब्ल्यूबीसी) होती हैं।

❋ मोबाइल की एसएमएस सेवा के बारे में भारत का एशिया में चौथा स्थान है।

❋ पहली बार जब ट्रेन ने अधिकतम गति पकड़ी तो वह केवल ८ किमी प्रति घंटा थी।

❋ ज्वालामुखी फटने पर उसका जोर इतना होता है कि वातावरण में वह ५० किमी दूर तक राख को फेंकता है।

❋ चार साल में एक हजार चिट्ठियां लिखकर पुणे के अरविंद नवरे ने हाल में रिकार्ड बनाया।

❋ जब बच्चा पैदा होता है तब ३०५ हड्डियां होती हैं। बड़े हो जाने पर उनकी संख्या केवल २०६ रह जाती है।

❋ भारत में वर्तमान में ५३ लाख लोग एचआईवी पीड़ित हैं।

❋ अलजेब्रा शब्द अरब की गणित कील किताबों में इ.पू. ८२५ से आया।

❋ पहला हैमबर्गर १९०२ में अमेरिका में बना। इसे जर्मन शहर के हैमबर्गर शहर के नाम से जाना जाने लगा।

❋ भारत के चित्रकार आर. सुगुमार ने लगातार १०० घंटे चित्र बनाने का रिकॉर्ड बनाया।

❋ आपके घुटने में सात हड्डियां होती हैं, जो तीन की कतार में होती हैं।

❋ इंग्लैंड की महारानी १८ साल की उम्र में ब्रिटिश मिलिट्री में मैकनिक थीं।

❋ जोसेफ सिरील बामफोर्ड ने १९४५ में निर्माणकार्य व खेती के लिए उपयोगी अनेक उपकरणों का निर्माण किया। उनके प्रथमाक्षरों को लेकर ही एक उपकरण जेसीबी यंत्र का निर्माण १९५४ में हुआ।

❋ केवल डेढ़ साल की उम्र में ड्रम बजाकर सिद्धार्थ नागराजन ने सबसे छोटी उम्र के ड्रमवादक का खिताब पाया है।

❋ औसतन एक व्यक्ति के शरीर में ०.१ मिलिग्राम यूरेनियम, ०.२ मिलिग्राम स्वर्ण व ७ मिलिग्राम अर्सेनिक होता है।

❋ एयरपोर्टस ऑथिरिटी ऑफ इंडिया (AAI) से लगभग २०,००० कर्मचारी संलग्न हैं।

❋ बैग पाइप को पहले-पहले भेड़ के तींवर से बनाया गया था।

❋ पूजा शुक्ला ने १२००० बॉलपेन्स की खाली रिफिल इकट्ठा की है।

❋ भारत में पब्लिक कॉल ऑफिसेस (PCO's) की वर्तमान में सख्या ३० लाख है।

❋ अमेरिका में हर साल तकरीबन दस लाख लोग पशुओं द्वारा मारे जाते हैं।

❋ माडर्न मिनी स्कर्ट को ब्रिटिश फैशन डिजाइनर मेरी क्वांट ने ईजाद किया। उन्होंने १९६६ में घुटनों से ४ इंच ऊपर के स्कर्ट बनाए।

❋ डॉ. ब्रह्मजीत सिंह ने १७,००० माचिस की तिल्लियों से ८ फीट ऊंचा एफिल टॉवर बनाने का रिकार्ड बनाया।

❋ अनुमानत: झुग्गी झोपड़ियों में रहनेवाले लोगों की संख्या ४८८ लाख से भी कहीं ज्यादा है।

❋ जब २५० टन खदान खोदी जाती है तब केवल एक कैरेट (०.२ ग्राम) हीरा मिल पाता है।

❋ पहली ग्रेफिटी पेंसिल जो लकड़ी के खोल से घिरी थी (जैसी हम आज देखते हैं) को १७०० में उपयोग में लाया गया।

❋ चंदर बाबला ने एक समय ४०० स्ट्रा को अपने मुंह में पकड़ने का रिकार्ड बनाया।

❋ अंगुलियों के नाखून हर सप्ताह ०.५ एमएम (०.०२ इंच) बढ़ते हैं।

❋ वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम ने हालमें २००५ की विश्व आर्थिक विकास सूची जारी की है। जिसमें ११७ देशों में भारत का स्थान ५० वां है।

❋ अमेरिका ने गरीबी के खिलाफ जब १९६० में जंग छेड़ी तो वहां ३६० लाख लोग इसमें आते थे। आज वहां ३५० लाख लोग इस श्रेणी में आते हैं।

❋ लोगों के बीच पहली बार टोपी पहनने वाला जेम्स हेदरिंगटन था।

❋ एक-दूसरे में ७० ग्रीटिंग काड्र्स को मिलाकर एक ग्रीटिंग कार्ड बनानेवाले नसीर अंसारी ने रिकार्ड कायम किया।

❋ कलर ब्लाइंडनेस रंग न पहचानने का दोष महिलाओं की तुलना में पुरुषों में ज्यादा दिखता है।

❋ सार्वजनिक स्थानों पर तंबाखू के प्रयोग के निषेध के बावजूद तंबाखू का प्रयोग बढ़ा है। यदि २००४-०५ का आंकड़ा देखें तो भारत में तंबाखू का उत्पादन २४३३.५ लाख किलो हुआ।

❋ गुजरात में गधों का अभयारण्य है।

❋ भारत का पहला स्विमसूट कैलंडर किंगफिशर कंपनीने प्रकाशित किया।

❋ चेन्नई के वसंतकुमार (१८ वर्ष) ने १.३७ मिनट में ५० टाइल्स अपनी ठुड्डी से तोड़कर रिकार्ड दर्ज किया।

❋ देश में हर साल तीन लाख सड़क दुर्घटनाएं होती हैं। जिसमें ९०,००० लोग अकाल मर जाते हैं।

❋ नेपोलियन भी अपनी एक तिहाई लडाइयां हार गया था।

❋ स्टेथॉस्कोप की खोज फ्रेंच डॉक्टर रेने थिओफिल हायसिंध लायनके ने की।

❋ एक दक्षिण भारतीय कॉफी उत्पादक कंपनी ने २० फीट ऊंचे, १४ फीट चौड़े व ३५०० किलो वजनी दुनिया के सबसे बड़े कॉफी मग को बनाया।

❋ भारतीय मूल और भारत की राष्ट्रीयता रखनेवाले लोग पूरे विश्व के लगभग १७० देशों में फैले हैं।

❋ मैक्सिको में पर्यटकों द्वारा दो से ज्यादा सीडी ले जाना अवैधानिक है।

❋ पहले तेल कुएं का खनन पेनसिल्वानिया (अमेरिका) में १८५९ में हुआ था।

❋ ऑस्कर के लिए लगान से पहले केवल मदर इंडिया हिंदी फिल्म थी जिसे बेस्ट फॉरेन फिल्म के ऑस्कर नामांकन के लिए चुना गया था।

❋ एक प्रौढ़ व्यक्ति के शरीर में ५० लाख करोड़ से भी ज्यादा कोशिकाएं होती हैं।

❋ पूरे शरीर में रक्त-संचार का एक चक्र पूरा होने में सिर्फ २३ सेकंड का समय लगता है।

❋ एक पैर साल भर में औसतन एक हजार मील से भी ज्यादा चलता है।

❋ शरीर के कुल वजन में पेशियों की भागीदारी तकरीबन ४० फीसदी होती है।

❋ सबसे बड़ा ग्रह बृहस्पति है।

❋ सबसे छोटा ग्रह बुध है।

❋ सूर्य के सबसे नजदीक बुध ग्रह है।

❋ बृहस्पति के पास सबसे अधिक उपग्रह हैं।

❋ सबसे अधिक जनसंख्यावाला देश चीन है।

❋ सबसे कम जनसंख्यावाला देश वैटिकन सिटी है।

❋ सबसे बड़ा मरुस्थल सहारा (उत्तर अफ्रीका) है।

❋ सबसे बड़ी झील कैस्पियन सागर है।

❋ स्वर्ण मंदिर का नगर अमृतसर को कहते हैं।

❋ महलों का नगर कोलकता को कहते हैं।

❋ भारत का बागीचा, बंगलोर को कहते हैं।

❋ उगते सूर्य का देश जापान को कहते हैं।

❋ अर्द्धरात्रि के सूर्य का देश नार्वे को कहते हैं।

❋ पुर्तुगाली टिमोर के द्वीप की संभ्रांत महिलाएं- मलाया के पुर्तुगाली टिमोर के द्वीप की संभ्रांत महिलाएं कानों में खांचे काटकर अपना सामाजिक स्तर प्रदर्शित करती हैं।

❋ निराले गुलाब के फूल- कॉबर्ग (जर्मनी) के दुर्ग में एक बगीचा है जहा नारंगी, काले, हरे व लाल रंग के गुलाब के फूल पास-पास उगे हैं।

❋ मानव की दो खोपड़ियों से बना ढोल- जिसे रामपुर (भारत) के तिब्बती लामा प्रयोग में लाया करते थे।

❋ रोग निवारक अंगूठियां- जिनमें घोंघे के मटर जैसे आकार के छोटे-छोटे खोल जड़े रहते थे औरा ऐसा विश्वास किया जाता है कि इन्हें पहनकर पेट दर्द, कृमि रोग और नकसीर से छुटकारा पाया जा सकता है।

❋ भारत, दुनिया का सबसे बड़ा फिल्में बनानेवाला देश है। जहां १९९० में ९४८ फिल्में बनी वहीं १९९४ में ७५४ फिल्में भारत की १६ भाषाओं में बनीं।

❋ ताउम्र यदि कोई कोशिका साथ निभाती है तो वह मस्तिष्क कोशिका है। हड्डियों की कोशिकाएं तो १० से ३० साल तक ही जीवित रहती हैं, फिर नई बनती हैं।

❋ भारत में ३२५ भाषाएं बोली जाती हैं।

❋ लगभग ५००० साल पुरानी ग्रीक की ममियों में भी कैंसर पाया गया है।

❋ पहला परिवार अफ्रीका वासियों का था। दो वयस्क व दो बच्चे तंजानिया में ३७ लाख साल पहले घूमने गए थे। यह ऐसे पता चला क्योंकि उनके कदमों के निशान पाए गए।

❋ भारत के मलकित सिंह के २० साल के कैरियर में भांगड़ा के ४९ लाख रिकॉर्डस् बिके। उनके भांगड़ा के हर एल्बम की औसतन २,६०,००० कॉपियां बिकीं जो रिकॉर्ड है।

❋ जैसा कि ज्यादातर लोग सोचते हैं हृदय बाईं ओर नहीं होता है। यह छाती के बीच में होता है जबकि यह एक तिहाई दांई ओर होता है।

❋ मोबाइल पर रिंगटोन्स डाउनलोट के द्वारा लगभग १५ करोड़ रुपए की राशि संगीत जगत के पास सालाना जाती है।

❋ अनुमानत: हर साल पूरे विश्व में ५००० करोड़ से एक करोड़ खरब ($१०^{१८}$) तक के प्लास्टिक बैग्स की खपत होती है।

❋ देखा जाए तो पेड़, पृथ्वी के फेफड़ों जैसे हैं। वे नाइट्रोजन को ग्रहण कर हवा में ऑक्सीजन भरते हैं।

❋ भारत के दिनेश शांडिल्य ने १९९६ में विश्व की सबसे बड़ी बांसुरी बनाने का रिकार्ड बनाया। लगभग १.५२ मी (५ फीट) लंबी PVC□की इस बांसुरी का व्यास ८.८९ सेमी (३.५ इंच) है।

❋ शरीर के वजन का ४० प्रतिशत मांसपेशियों का वजन है।

❋ भारत में हर साल १०० लाख मौतें डायरिया से हो जाती हैं।

❋ विश्वविजेता कहलाने की चाह रखनेवाले फ्रांसीसी जनरल नेपोलियन बोनापार्ट को बिल्लियों से डर लगता था।

❋ पहला टाईपराइटर अमेरिका में १८६७ में बनाया और उपयोग में लाया गया। इलेक्ट्रिक टाईपराइटर १९२० में काम में लाए गए।

❋ पृथ्वी के दसवें हिस्से में बर्फ की चादर बिछी है।

❋ डी. सत्यबुद्धू ने १५४ देशों के १७७४ सिक्के संग्रहित किए हैं।

❋ एक दिन में पुरुषों के ४० बाल झड़ते हैं, महिलाओं के ७० बाल झड़ते हैं।

❋ देश में १०० में से एक व्यक्ति का अंधत्व या आंखों संबंधी किसी जटिल रोग की समस्या है। पूरे देश में १,०६,३४,८८१ लोग इससे जूझ रहे हैं।

❋ कैटरीना तूफान में मरने वालों की अंत्येष्टि करने के लिए ऑर्लिंस शहर में २५,००० शवपेटियां तैयार की गईं।

❋ नींद आने की पहली दवा १८८० में बनी।

❋ सुरभी गर्ग ने अपने सिर पर १५१ मटके रख नृत्य करने का रिकार्ड बनाया।

❋ निशानेबाजी की पहली प्रतियोगिता १९७३ में लखनऊ में हुई।

❋ भारत में सिनेमा के पोस्टर रंगने का काम १९२१ से शुरू हुआ।

❋ पांच मंजिल भवन से कूदने के बावजूद चूहे को कोई चोट नहीं लगती।

❋ भारतीय रेलवे द्वारा हर साल भंगार में लगभग १,००० करोड़ का सामान बेचा जाता है। वित्त वर्ष २००४-०५ में यह बिक्री १,०३२ करोड़ रुपए की रही।

❋ अमेरिकी जितना कमाते हैं उसका १८ प्रतिशत आवागमन पर खर्च करते हैं।

❋ नूडल्स वास्तव में चीन की ही देन है। लगभग ४,००० साल पहले भी वहां नूडल्स बनाए जाते थे।

❋ महावीर प्रसाद जैन ने आक्सफोर्ड डिक्शनरी के ८०,००० शब्दों को याद कर लिया।

❋ भारत में सिंचाई संबंधी जरूरतों के लिए दो करोड़ से ज्यादा ट्यूबवेल्स लगे हैं।

❋ न्यूजीलैंड में १५ लोगों पर एक भेड़ है।

❋ सीमेंट की खोज ई.पू. २५० साल में रोमन लोगों ने की।

❋ बिल्ली मीठी चीजें नहीं खाती।

❋ अर्जुन इलायाराजा ने ३ मिनट में ६८८ हरी मिर्ची खाने का पराक्रम किया।

❋ जब तक आप छह से आठ हफ्ते के शिशु नहीं होते तब तक आंखों से आंसू नहीं आते।

❋ बाल मजदूरों को बंधुआ न बनाने संबंधी कानून संसद में १९७६ में पारित हुआ। बावजूद १९७८ से अब तक तमिलनाडु में सबसे ज्यादा ६५,५७३ बाल मजदूर पाए गए।

❋ फ्रेंच प्रोफेसर व्हेलेंटाइन ने दृष्टिहीनों को पढ़ने में मदद हो सके इसलिए एम्बॉस पद्धति (खास उठाव) शुरू की लेकिन वे इसमें लिख नहीं सकते थे। लुईस ब्रेल ने केवल १५ वर्ष की आयु में ऐसी लिपि ईजाद की जिसे दृष्टिहीन पढ़ भी सकते थे व लिख भी। उन्हीं के नाम से इसे ब्रेल लिपि कहा गया।

❋ मेसोपोटामिया में पहली बार मिट्टी के बरतन बने।

❋ हैदराबाद स्थित रामोजी फिल्म सिटी की शुरुआत १९९६ में हुई। केवल भारतीय नहीं बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर के प्रोजेक्टस के लिए भी इस फिल्म सिटी का प्रयोग हुआ।

❋ अड़ोरा कंपनी ने १३.७२ लाख रुपए की विश्व की सबसे कीमती हीरे जड़ित राखी बनाई।

❋ सिर में ८ हड्डियां होती हैं।

❋ विश्व की कुल जमीन का २.४ प्रतिशत भाग भारत के पास है।

❋ गुडईयर रबर कंपनी ने शोध किया कि सीधे पैर के जूते बांए (उलटे) पैर के जूते की तुलना में जल्दी फटते हैं।

❋ जॉन ए. लार्सन नामक कैलिफोर्निया वि. वि. के विद्यार्थी ने १९२१ में पहला लाय डिटेक्टर यंत्र बनाया।

❋ एक वयस्क व्यक्ति में ६ पौंड खून होता है।

❋ देश में मूंग की सालाना पैदावार १५,५०० टन होती है।

❋ सोडियम की एक बूंद भी पानी में गिरे तो भयानक विस्फोट करती है।

❋ अंतरिक्ष में जानेवालों में लायका नाम का कुत्ता पहला प्राणी था।

❋ यूनाइटेड किंगडम की प्रसिद्ध पत्रिका गार्जियन में उल्लेख है कि लगान फिल्म एक बार तो देखनी चाहिए।

❋ सौर्य प्रणाली में सभी ग्रह घड़ी की उल्टी दिशा में घूमते हैं, केवल शुक्र ही ऐसा ग्रह है जो घड़ी की दिशा में घूमता है।

❋ जेम्स सिएमियांग ने ४३ सेमी ऊंची हील के जूते बनाए।

❋ हमारे पैर में ३१ हड्डियां होती हैं।

❋ विश्व बैंक का अनुमान है कि भारत में किसानों को दी जानेवाली सब्सिडी, बिजली की आपूर्ति पर आनेवाली कुल लागत का लगभग दस प्रतिशत या लगभग २४० अरब रुपए प्रतिवर्ष है।

❋ अमेरिका में खगोलविदों की संख्या केवल ३,५०० है पर ज्योतिषों की संख्या १५,००० है।

❋ कांटेक्ट लेंस का प्रयोग ए.ई.फिक ने पहली बार १८८७ में किया।

❋ स्लॉय नामक प्राणी हमेशा झाड़ पर उलटा टंगा रहता है।

❋ अग्नि वर्मा ने ९० घंटे सितार बजाने का रिकार्ड बनाया।

❋ हमारे शरीर से रोज ०.७ लीटर पसीना निकलता है।

❋ दुग्ध उत्पादन में भारत सबसे आगे है।

❋ हवाई जहाज के ब्लैक बॉक्स नामक उपकरण का रंग नारंगी होता है।

❋ एक्यूपंक्चर पद्धति का उदय २५०० साल पहले चीन में हुआ।

❋ कैलिफोर्निया के एक हाईस्कूल छात्र ने १९८२ में केवल २२.९५ सेकंड में रुबिक क्यूब को फिर जमा दिया था।

❋ खड़े होकर आपके लिए नापे गए कद व सोकर नापे गए कद में थोड़ा फरक आ जाता है।

❋ घरेलू रसोई गैस कनेक्शन इंतजार करने वालों की पूरे भारत में संख्या ३,९०,४७७ है।

❋ पहला किंडरगार्टन (केजी) स्कूल १८७३ में विसकॉनसिन में बनाया गाया।

❋ न्यूजीलैंड के ए.जे.हेकेट ने ५९० फीट ऊंचाई से बंगी जंप ली।

❋ अध्ययन से सिद्ध हुआ है कि पुरुष अपना दिमाग किसी काम को करने से पहले दो या तीन गुना बार ज्यादा बदलते हैं। बजाए महिलाओं के।

❋ आज थलसेना के ३४००० अधिकारियों में ६४०, एयरफोर्स के १०२०० अधिकारियों में ४२० और नेवी के ७००० अधिकारियों में १०० महिलाएं हैं।

❋ डायनामाइट बनाने में मूंगफली के दाने भी प्रयोग में लाए जाते हैं।

❋ मानव शरीर के रक्त प्रवाह का पहला संशोधन ब्रिटेन के विलियम हार्वे ने १६२८ में प्रस्तुत किया।

❋ अक्षियला सेशू बाबू ने लगातार ३० घंटे मूर्ति के जैसे खड़े रहने की रिकार्ड बनाया।

❋ भारत में साइबर क्राइम भी बढ़ रहा है। सूचना तकनीकी एक्ट २००० व इंडियन पैनल कोड १८६० की विभिन्न धाराओं के तहत एक वर्ष में ४९६ मामले दर्ज हुए।

❋ डिपार्टमेंटल स्टोर में जानेवाली महिलाओं में से ९० प्रतिशत तुरंत दाहिने हाथ की दिशा में मुड़ती हैं।

❋ जितना असरदार एक अच्छा उदाहरण होता है उतनी असरदार डांट फटकार नहीं होती।

❋ बाल व नाखून वातावरण की भाप सोख लेते हैं।

❋ भारत में ५.०६ करोड़ लोग इंटरनेट का प्रयोग करते हैं।

❋ केवल १९ साल की उम्र में डिकी डोल्मा ने एवरेस्ट की ऊंचाई को छुआ।

❋ लगभग १,४०,००० सीए देश में इन्कम टैक्स अपील ट्रिब्यून में अर्थ संबंधित वकालत करते हैं।

❋ द न्यूयार्क टाइम्स के संडे एडिशन के न्यूजप्रिंट के लिए औसतन ६३००० वृक्ष लग जाते हैं।

❋ पहली दोपहिया साइकल १८६१ में बनी।

❋ कैलिफोर्निया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के छात्र लियान लो ने ११.१३ सेकेंड में सबिक क्यूब की पहेली का हल दे दिया।

❋ वयस्क व्यक्ति में ३० लाख स्वेद ग्रंथियां हैं। यदि उन्हें फैलाकर लंबा किया जाए तो वे ३० मील की दूरी में फैलेंगी।

❋ सालाना दुनिया के महासागरों में जितनी गंदगी डाली जाती है वह समुद्रों से पकड़ी जानेवाली मछलियों के वजन से तीन गुना ज्यादा होती है।

❋ गाड़ियों की कांच पर लगाए जानेवाले वाइपर की खोज १९१६ में हुई।

❋ आमतौर पर ६६० दिनों तक विचार करने के बाद हथिनी जन्म देने को तैयार होती है।

❋ अमेरिका के डाना वॉरेन ने ३८ फीट ऊंचे टेडी बियर को बनाया।

❋ हमारा दिमाग १००० लाख पर दस लाख इतनी ज्यादा चीजें सालों साल याद रख सकता है। जबकि एक ६४के कम्प्यूटर केवल ५,००,००० सूचनाएं याद रख पाता है।

❋ भारतीय मनोरंजन उद्योग का ६७ प्रतिशत दूरदर्शन है।

❋ एक तरबूज की कीमत जापान में ४५०० रुपए तक है।

❋ पहली सुरक्षित माचिस १८४४ में स्वीडन के रसायन गुस्तावई पास्क ने बनाई।

❋ आस्ट्रेलिया के गैरी दुवाल इंजिनियर ने १० फीट ऊंची कार बनाई।

❋ कान के भीतर की त्वचा सबसे महीन होती है।

❋ पूरे देश में ४,२२८.० पनचक्की संकुल है।

❋ औसतन पूरे विश्व में हर तीसरे सेकेंड एक बच्चा जन्म लेता है।

❋ सूर्यास्त के बाद सबसे ज्यादा ठंड रेगिस्तान में होती है।

❋ बेल्जियम के वॉटर एरक्युयल ने दांतों से रेलगाड़ी खींची।

❋ औसतन हर गृहणी अपने घरेलू कामों के लिए घर में १० मील प्रतिदिन चल लेती है।

❋ मृत मां के गर्भ से शिशु को निकालने के लिए ई.पू. ७६२-७१५ काल में रोम में सिझेरियन किया जाता था। जिसे लेक्स केझिया कहते थे।

❋ स्पेन की मेडेन सनशाइन कंपनी ने ३० फीट लंबा दुनिया का सबसे बड़ा टॉवेल बनाया।

❋ बच्चों का विकास वसंतऋतु में सबसे ज्यादा होता है बजाए और किसी ऋतु के।

❋ भारत में आनेवाली विदेशी मुद्रा का सबसे बड़ा हिस्सा १७.२६ प्रतिशत रत्नों व आभूषणों से आता है। इसके बाद १०.९ प्रतिशत पेट्रोलियम उत्पादों से, रेडीमेड गारमेंट से ८.०७ प्रतिशत व ट्रांसपोर्ट उपकरणों से ४.८० प्रतिशत आता है। सबसे कम ४.४९ प्रतिशत मशीनरी से आता है।

❋ मूलहठी चूर्ण शहद के साथ चाटने से हिचकी आना बंद होता है। यह प्रयोग वात व पित्त का शमन भी करता है।

❋ इस धरती पर सबसे ज्यादा स्वीडन में फोन है। वहां के एक व्यक्ति के पास कई फोन हैं।

❋ पतंग की खोज २५०० साल पहले हुई। माना जाता है चीनी इंजीनियर कुंगशु फान जो ई.पू. चौथी सदी में था, ने इसे खोजा।

❋ महिलाओं के सिर के बाल पुरुषों की तुलना में जल्दी सफेद होते हैं।

❋ वाटर स्कीइंग में जेफ रागर्स दुनिया में सर्वश्रेष्ठ है।

❋ भारत में सामाजिक मकसदों जैसे शादी, ब्याह, निधन या खुशी-गम के मौके पर घर से निकलनेवालों की संख्या सबसे ज्यादा लगभग ५८.९ प्रतिशत है। इसके बाद १३.८ फीसदी लोग तीर्थाटन करते हैं, केवल ६ फीसदी लोग खालिस

मनोरंजन के लिए निकलते हैं।

✻ अधिकांश बैंक डकैतियां शुक्रवार को सुबह ९ से ११ बजे तक होती हैं। बैंक में सबसे कम डाके बुधवार को दोपहर ३ से ६ बजे तक पड़ते हैं।

✻ बोइंग ७४७ की पहली टेस्ट फ्लाइट १९६९ में थी।

✻ दुनिया का सबसे बड़ा जलप्रपात वेनेजुएला में सॅहटो एंजल है।

✻ आपकी नब्ज वयस्क होने पर ७० से ८० बार प्रति मिनट चलती है। उम्र बढ़ जाने पर वृद्धावस्था में ६० बार प्रति मिनट होती है जबकि बच्चों में यह एक मिनट में १०० बार चलती है।

✻ भारत में नहाने का साबुन सालाना ४,७०० करोड़ रुपए का खरीदा जाता है।

✻ हॉट एयर बलून की पहली उड़ान पेरिस में २१ नवम्बर १९८३ में हुई।

✻ डॉ. देविंदर पाल सहगल ने सुई से भी छोटे आकार की पतंग बनाई।

✻ श्वसननलिका व उसकी उपशाखाओं में हुआ रोग ब्रांको कहलाता है।

✻ देश की लगभग सवा सौ करोड़ जनता का प्रतिनिधित्व ५४३ निर्वाचित जनप्रतिनिधि करते हैं।

✻ अफ्रीकी मुल्क में हर छह लाख की आबादी पर महज एक डॉक्टर है और उलट ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा व आस्ट्रेलिया में प्रति एक लाख पर २२० डॉक्टर हाजिर हैं। ये उन्हीं मुल्कों के पलायन करनेवाले डॉक्टर हैं।

✻ नायलॉन की खोज ७५० में अमेरिका के वेलेस एच कोरायर्स ने की।

✻ न्यूयार्क की थिएटर कंपनी ब्रॉड वे प्रोडक्शन की पेशकश द फेन्टम ऑफ द ओपेरा ने ब्रॉडवे के इतिहास में लंबे समय तक चलनेवाले नाटक का कीर्तिमान बनाया।

✻ गैस चेंबर में केवल पांच मिनट में आप मर सकते हैं।

✻ देश में दिसम्बर २००५ तक ७ करोड़ ५२ लाख लोगों के पास मोबाइल हो गया। केवल दिसम्बर में ही ४४ लाख लोगों ने मोबाइलधारक के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

✻ दूरदर्शन पर महाभारत के प्रसारण के बाद विदेशी निर्देशक पीटर ब्रुक ने १९८९ में महाभारत फिल्म का निर्माण किया।

✻ गेंहू के एक दाने से हर साल पचास दाने अंकुर पाते हैं। वे पचास दाने हर साल एक-एक भी बोए तो १२ साल में ही एक दाने से ही २४,४१,६२,५०,००,००,००,,००,००० दाने आएंगे। अत: एक दाना भी नष्ट न करें।

✻ पहला प्रवासी भारतीय दिवस ९ जनवरी २००३ को प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने मनाया।

✻ राम श्रीनिवास नामक भारतीय व्यक्ति ने १०० मिनट में १०० तरीकों से चलकर दिखाने का रिकार्ड बनाया।

✻ मन में होनेवाली उथलपुथल को सिरोटोनिन नामक रसायन नियंत्रित करता है। जो अवसाद से पीड़ित होते हैं उन्हें यह रसायन नहीं मिल पाता इसलिए निराश रहते हैं।

✻ भारत में कम से कम ३१,७००,००० लोगों को मधुमेह (डायबिटिज) है, जबकि आशंका है २०३० तक यह आंकड़ा बढ़कर ७९,४००,००० हो जाएगा।

✻ शरीर को जरूरी प्रोटीन मिलने का सबसे सरल उपाय है खूब चीज खाना।

❋ ठंड में पहनी जानेवाली कानटोपी की खोज १८५० में हुई।

❋ इंद्रधनुष सुबह व दोपहर बाद ही दिख पाता है।

❋ हैदराबाद के हरिसत्य संदीप ने लगातार ५० घंटे टाइप कर रिकार्ड बनाया।

❋ शरीर की अन्य पेशियों की तुलना में मेंदू की पेशी की उम्र ज्यादा होती है।

❋ भारत की लगभग ६० करोड़ आबादी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि से जुड़ी है।

❋ न्यूजर्सी के शहर न्यूवार्क में यदि आपके पास डॉक्टर की चिट्ठी न हो तो आप शाम ६ बजे के बाद आइस्क्रीम नहीं खरीद सकते।

❋ ऑप्टिकल फायबर की खोज जॉन टेंडल ने १८७० में की।

❋ चलता-फिरता महल- रूस की महारानी कथरीन (द्वितीय) द्वारा उपयोग में लाया जानेवाला चलता-फिरता महल, जो ३० घोड़ों द्वारा खींचा जाता था, में एक ड्राइंग रूम, एक अध्ययन कक्ष, एक पुस्तकालय तथा शयन कक्ष सहित सुखोपभोग की सारी सुविधाएं मौंजूद थीं। यह प्राय: एक दिन में १०० मील की दूरी तय करता था।

❋ स्वास्थ्यवर्धक वाद्ययंत्र- कोई वाद्ययंत्र आपका सिर्फ मनोरंजन ही न करवाकर, स्वास्थ्य लाभ भी करवाता है। ब्रिटेन की एक संगीत मंडली ने बडा ही विचित्र ऑर्केस्ट्रा तैयार किया है, जिसमें अनेक वाद्यों के साथ गुबरैलों, तिलचट्टों और रॉबिन चिड़िया के संगीत का भी सम्मिश्रण किया गया है। यह संगीत सुनने पर मनुष्य अतिरेक आनंद में डूब जाता है।

❋ जर्मनी का कार्लविट नौ वर्ष में लिपजिंग विश्वविद्यालय का स्नातकोत्तर छात्र था। चौदह वर्ष की उम्र में वह पी.एच.डी. तथा सोलहवें वर्ष में डॉक्टर ऑफ लॉ मानद उपाधियों से विभूषित हो चुका था।

❋ आदिगुरू शंकराचार्य को मात्र ८ वर्ष की उम्र में सभी आर्षग्रन्थ याद थे। १६ वर्ष की उम्र में तो वे सभी भारतीय विद्वानों को शास्त्रार्थ में हरा चुके थे।

❋ मुगल सम्राट अकबर ने १३ वर्ष में गद्दी संभाली थी। चौदहवें वर्ष में तो उसने पानीपत की दूसरी लड़ाई में अपनी सेना का संचालन किया था।

❋ पहली अखिल भारतीय जनगणना १८७२ में हुई थी। दूसरी गणना इसके नौ वर्ष के बाद १८८१ में हुई और तब से हर दसवें वर्ष होती चली आ रही है।

❋ ताश के पत्तों में सिर्फ पान का बादशाह और चिड़ी का गुलाम बिना मूछों के होते हैं, शेष तीनों बादशाहों और गुलामों के मूछें होती हैं।

❋ भारत का प्रथम पोस्टकार्ड एक जुलाई, १८७९ को जारी हुआ था। उस समय इसका मूल्य चौथाई आना, यानी एक पैसा था। गुलाबी रंग के इस पोस्टकार्ड की दूसरी और दाईं तरफ महारानी विक्टोरिया का चित्र था और बीचोबीच सरकारी प्रतीक। चिन्ह के इधर-उधर ईस्ट इंडिया पोस्टकार्ड शब्द अंकित थे।

❋ शून्य में प्रकाश की गति २,९९,७९२,५५ कि.मी. अथवा १,८६,२८२ मील प्रति सेकंड है।

❋ फ्रेंच उद्योगपति माइकल पॉट ने ११० जेट फाइटर विमान एकत्रित किए।

❋ अंतरिक्ष में जाने पर आपका कद कुछ बढ़ जाता है।

✻ देश में अवैधानिक तरीके से रहनेवाले विदेशियों की संख्या ४६,५०२ है।

✻ शरीर के रक्त प्रवाह का प्रथम गहन अध्ययन विलियम हार्वे ने १६२८ में किया।

✻ मनाली दास भारतीय युवती ने १००० से ज्यादा नोटपैट संग्रह करने का रिकार्ड बनाया।

✻ तीन पौंड के मस्तिष्क में तेरह सौ करोड़ नर्व रोल्स होते हैं।

✻ हेयर कलरिंग का बाजार ४०० करोड़ रुपए से ज्यादा का है।

✻ ग्रेनाइड्स की खोज चीन में १००० साल पहले हुई।

✻ सी.डीसिल्वा नामक भारतीय ने ४६२ प्रकार के पेंसिल शॉर्पनर इकट्ठा करने का रिकॉर्ड बनाया।

✻ यदि हमारा यकृत काम करना बंद कर दे तो २४ घंटे में हमारी मृत्यु हो जाती है।

✻ देश के ४८.६ प्रतिशत किसान कर्ज में डूबे हैं।

✻ आप पर शार्क से बड़ा हमला गाय कर सकती है।

✻ दुनिया का पहला पोलोराइड कैमरा १९४८ में बेचा गया।

✻ रशियन हेलीकॉप्टर मिली-मी-२६ दुनिया का सबसे बड़ा हेलीकॉप्टर है।

✻ पांच सौ मांसपेशियां, दो सौ हड्डियां व सात मील लंबा नर्व फाइबर हमें चलने में मदद करता है।

✻ एडोल्फ हिटलर की एक टोपी रिचर्ड मारोविट्ज ने अपने पास रख ली थी जो आज सेफ्टी डिपॉजिट बॉक्स में सुरक्षित है। इस टोपी की आज कीमत कहते हैं-३५,००० डॉलर (लगभग १५,७५,०००) रुपये) है।

✻ भारत के ट्राय होडगेज ने १ इंच मोटी ३१ संगमरमर की फर्शियों को हाथ की कोहनी से तोड़ने का रिकार्ड बनाया।

✻ रात का खाना खाते समय हम आमतौर पर २९५ बार निगलते हैं।

✻ भारतीय रेलवे में सर्वप्रथम कम्प्यूटरीकृत यात्री आरक्षण व्यवस्था १५ नवंबर १९८५ को नई दिल्ली में शुरू हुई।

✻ महेश पांड्या के नाम ११४३ दुर्लभ पोस्टकार्ड संग्रह करने का रिकार्ड है।

✻ जिसे हम छोटी आंत कहते हैं वह हमारे पाचनतंत्र का हिस्सा है। वह चौड़ाई में छोटी होती है न कि लंबाई में। इसकी लंबाई २१ फीट है।

✻ भारत द्वारा १२,०१,००,००० रुपए के केलों का निर्यात किया जाता है।

✻ परंपरागत फ्रेंच किस (मुंह से मुंह का चुंबन) में ४०,००० से ज्यादा परजीवी व २५० प्रकार के बैक्टीरिया एक के मुंह से दूसरे के मुंह में चले जाते हैं।

✻ नहाने के साबुन लक्स की पहली बट्टी १९३४ में बाजार में आई, जिसकी कीमत केवल दो आना थी।

✻ बरसात के १०० पाउंड पानी से धरती पर केवल एक पाउंड अन्न बन पाता है।

✻ दुनिया के सबसे छोटे पालक १९१० में चीन के ८ साल व ९ साल के थे।

✻ हमारा दिल साठ हजार मील लंबी शिराओं, धमनियों व नसों में खून शुद्ध करता है।

✻ भारत में क्रेडिट कार्ड धारकों की संख्या ३५ लाख है।

✻ सकारात्मक बिक्री का नजरिया कौतूहल व आत्मविश्वास से भरा हुआ होता है।

❋ सुनामी की लहरें जेट विमान से भी तेज गति की होती हैं।

❋ भारत की पहली ऑनलाइन आर्ट डायरेक्टरी www.kalavishkar.com□की शुरूआत हाल में हुई। इसमें देश की लगभग ४०० कलावीथिकाओं की जानकारी व १०० कलाकारों के पोर्ट फोलियो हैं।

❋ इस्त्राइल के याकोव वोसियाव ने १४००० बस टिकट इकट्टे किए।

❋ देश में कैंसर की दवाओं की बिक्री से हर साल कुल टर्न ओवर ३०० करोड़ रुपए होता है।

❋ भाप से चलनेवाली पहनी नाव १७८३ में फ्रांस ने बनाई।

❋ ब्रिटेन के टोनी मट्टिया ने ११२५ बार्बी डॉल इकट्ठी की हैं।

❋ मानवीय मेंदू का वजन ज्यादा से ज्यादा २.३ किलो होता है।

❋ देश के लगभग ६ से १४ आयु वर्ग के एक करोड़ बच्चे कभी स्कूल ही नहीं गए हैं।

❋ चीन में क्राय बार है। जहां २७० रुपए एक घंटे के देकर आप जी भर रो सकते हैं।

❋ कैलिडोस्कोप की खोज सर डेविड बुस्टर ने १८१६ में की।

❋ चंद्रग्रहण केवल पूर्णिमा को होता है व साल में तीन से ज्यादा चंद्रग्रहण नहीं होते।

❋ निवारण महतो ने ३१ सेकेंड में मिट्टी के २० मटके लात मारकर फोड़ दिए।

❋ रतौंधी का प्रमाण महिलाओं से ज्यादा पुरुषों में दिखता है।

❋ पूरे भारत के १२,१३३५९ क्षेत्रफल पर खरीफ की फसल में बीटी कॉटन का उत्पादन होता है। इस उन्नत कपास के उत्पादन में महाराष्ट्र सबसे आगे है जहां ३,९९,००० क्षेत्रफल पर बीटी कॉटन की पैदावार होती है।

❋ भारत की पहली मॉडेल प्रभात फिल्म कंपनी में तुतारी बजानेवाली शांताबाई देशमुख थीं। यही प्रभात फिल्म कंपनी का लोगो था। जो १९३३ में बना।

❋ इंडियन एवार्ड्स के इतिहास में पहली बार बेस्ट प्लेबेक सिंगर का एवार्ड इला अरुण व अलका याग्निक को चोली के पीछे के लिए बांटकर दिया गया।

❋ इकबाल अहमद ने दुनिया की सबसे छोटी लेथ मशीन बनाई।

❋ कैंसर के विविध प्रकारों से देश में हर साल ७ लाख लोग मर जाते हैं।

❋ प्राचीन इंग्लैंड में राजा की रजामंदी के बिना कोई सेक्स नहीं कर सकता था।

❋ ऑक्सफोर्ड स्थित द अश्मोलीन म्युजियम दुनिया का पहला संग्रहालय है जो १६७९ में बना।

❋ हमारी पृथ्वी का केंद्र हमारे पैरों के तले ६४०० किलोमीटर की दूरी पर है।

❋ नवी मुंबई के विभूति नाईक के नाम गिनीज बुक के ५ रिकार्ड व लिम्का बुक के २ रिकार्ड दर्ज हैं।

❋ विकासशील देशों में भारत डॉक्टरों का सबसे बड़ा निर्यातक देश है। अमेरिका में १३२५ अमेरिकियों पर एक भारतीय डॉक्टर है। जबकि खुद अपने देश में २४०० नागरिकों पर एक डॉक्टर है।

❋ वैज्ञानिकों ने प्रमाणित किया है कि यदि १२० सैनिक एक साथ परेड करते हुए किसी ५० फुट ऊंचे पूल से गुजरें तो उसके टूटने की संभावना ९० प्रतिशत से अधिक बढ़ जाती है। यह शक्ति २४० किलो डायनामाइट के बराबर होती है।

इस कारण पुल पार करते हुए सैनिकों को लय तोड़ने का आदेश दिया जाता है।

❋ सुजेकू की प्रथम रचना गणितज्ञ लियोनार्ड इलूट ने की थी।

❋ स्टीवन क्लार्के ने एक घंटे में ४२ कद्दुओं पर नक्शेकारी की।

❋ एक औसत मनुष्य के शरीर में ०.१ मिलीग्राम यूरिनियम, ०.२ मिलीग्राम स्वर्ण व ७ मिलीग्राम आर्सेनिक होता है।

❋ दो सौ करोड़ में से केवल एक व्यक्ति ११६ साल तक जी पाता है।

❋ न्यूयार्क के अमेरिकन टॉय फेयर में फरवरी १९५९ में पहली बार बार्बी डॉल को लोगों के सामने लाया गया।

❋ बकरे को आगे के ऊपरी दांत नहीं होते।

❋ मणिकंदन ने ७१ मिलीमीटर ऊंचाई की दुनिया की सबसे छोटी मोटरसाइकिल बनाई। स्वीडन के टॉम विबर्ग ने डेढ़ इंच ऊंची, दुनिया की सबसे छोटी मोटरसाइकिल बनाई।

❋ जब हमें प्यास लगती है तो हमारे शरीर में पानी की मात्रा एक प्रतिशत कम हो चुकी होती है।

❋ देश में ७.५ करोड़ लोग नि:शक्त हैं।

❋ यदि आप १०,००० बार सिक्का उछालेंगे तो ऐसा नहीं होगा कि ठीक आधे यानी ५,००० बार चित्त आए बल्कि यह ४,९,५० बार होगा क्योंकि चित्त पर छपे चित्र के कारण उसका वजन बढ़ जाता है इसलिए वह उलटा ज्यादा गिरता है।

❋ मिस वर्ल्ड स्पर्धा का पहली बार आयोजन १९५१ में लंदन फेस्टीवल में उद्योगपति एरिक मोर्स ने किया।

❋ एक बूंद खून में ५० लाख लाल रक्त कोशिकाएं व १०,००० श्वेत रक्त कोशिकाएं होती हैं साथ ही २५०,००० पेटेलेहस होते हैं, जो कट जाने पर खून बहने पर तुरंत रक्त के थक्के बनाते हैं।

❋ भारत में कुल ७१० म्युचुअल फंड है।

❋ बहुओं को ससुराल में प्रताड़ित करने के मामले में इजिप्त (९४ प्रतिशत) सबसे आगे है।

❋ जापान की निकोली कंपनी ने १९८४ में पहला सुजेकू प्रकाशित किया।

❋ जिस हाथ से आप काम करते हैं उस हाथ की अंगुलियां ज्यादा तेजी से बढ़ती हैं।

❋ भारत के ३५५ गैर सरकारी संगठनों ने ४५८.५६ लाख रुपए का दुरूपयोग किया। जिनका नाम अब काली सूची में है।

❋ विश्व का पहला चिड़िया घर ३५०० साल पहले इजिप्त में था।

❋ ब्राजील के सांता मरिनेला कंपनी ने १२ फीट ऊंची दुनिया की सबसे बड़ी हैंग्बेग बनाई।

❋ जब आप दर्द से कराह उठते हैं, तो यह दर्द ३५० फीट प्रति सेकेंड की गति से आपके शरीर में गुजरता है।

❋ भारत में प्रमुखता से ८ धर्म, २८ भाषा व दो हजार बोलियां हैं।

❋ एक ओवन में जितनी ऊर्जा खर्च होती है उसकी ठीक आधी एक टोस्टर खर्च करता है।

❋ ट्रांजिस्टर रेडियो १९४८ में खोजा गया।

❋ इंग्लैंड के हेक्सान क्षेत्र के एक स्कूल में एक ग्राउंड पर ६६० लोगों ने नृत्य किया।

❋ अधिकतर लोग १०,००० प्रकार की विभिन्न गंधों को सूंघकर बता सकते हैं।

❋ भारत में वर्तमान में ७ करोड़ बहरे लोग हैं।

❋ वाशिंगटन में लोगों से ज्यादा फोन है।

१३४८) क्रांकीट की खोज इजिप्तवासियों ने ५००० साल पहले की।

❋ अंतरिक्ष में हम आमने-सामने धरती की तरह बातें नहीं कर सकते। इसके लिए रेडियो ट्रांसमीटर व रिसीवर का प्रयोग करना पड़ता है।

❋ दुनिया की सबसे ऊंची रेल लाइन चीन के छिंगहोए प्रांत में शिनिंग से ल्हांसा तक है। यह ४५०० मीटर ऊंची है व सबसे ऊंचा प्लेटफार्म ५०७२ मीटर पर है।

❋ केले के वेफर्स बनाने में भारत अग्रणी है।

❋ हिन्दी के पहले साप्ताहिक उदंड मार्तंड का प्रकाशन ३० मई १८२६ को हुआ। यही दिन हिन्दी जगत का पत्रकारिता दिवस है।

❋ इटली के गिपान कार्लो फ्रेन्सेलिना ने ८ फीट ऊंचा दुनिया का सबसे बड़ा अकॉर्डियन वाद्य बनाया।

❋ माउंटेन बाइकिंग में फ्रेंच महिला वर्ल्ड चैंपियन ऐने काटो लिन है।

❋ भारत की ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री दुनिया की दो पहियावाहन बनानेवाली दूसरी सबसे बड़ी इंडस्ट्री है।

❋ इंग्लैंड से आस्ट्रेलिया की १९३० में ऐमी जानसन नामक महिला पायलट ने पहली यात्रा की।

❋ गेराल्डिन विलियम्स नामक ब्रिटिश महिला ने लगातार ३० घंटे नुकीले कीलों की सेज पर सोकर बिताए।

❋ २० में से एक व्यक्ति को अतिरिक्त पसली होती है।

❋ इंडियन रीडरशिप सर्वे के अनुसार भारत में सबसे ज्यादा ५.७४ करोड़ हिन्दी पाठक हैं।

❋ हॉवर क्राफ्ट नामक समुद्री यान का वेग १५० किलोमीटर प्रति घंटा होता है।

❋ दुनिया का पहला दूरदर्शन प्रेक्षपण १९२६ में जॉन लॉगी बेर्ड ने किया।

❋ अमित शुक्ला ने तेज गति से शार्ट हैंड में लिखने का रिकॉर्ड बनाया।

❋ एक व्यक्ति अपने जीवनकाल में औसतन २०,००० गैलन पानी पी जाता है।

❋ बाढ़, आंधी-तूफान व जोरदार बारिश के चलते २००५ में देश की २६.६१ लाख हेक्टेयर भूमि पर खड़ी फसल चौपट हो गई। सबसे ज्यादा १५.०५ लाख हेक्टेयर महाराष्ट्र की फसल नष्ट हुई।

❋ यदि १०० किमी प्रति घंटे की रफ्तार से भी किसी कार को चलाया जाए तब भी धरती के सबसे करीबी ग्रह तक पहुंचने में २९० साल लग जाएंगे।

❋ विख्यात चित्रकार लियोनार्डो दाविंची ने कैंची की खोज की।

❋ भारत के विजयदत्त ने केवल नारियल के खोल से ८ फीट ३ इंच का दीपस्तंभ (समई) बनाया।

❋ पूरे देश में २,०७५.९२ हेक्टेयर रेलवे जमीन पर अतिक्रमण हो गया है।

❋ मोती विनेगर में पिघल जाते हैं।

❋ बर्थ डे कार्ड की प्रथा सौ साल पहले इंग्लैंड से शुरू हुई।

❋ दुनिया की पहली कपड़ा मिल १७२० में इंग्लैंड के डर्बी में शुरू हुई।

❋ अमेरिका के ब्रियान बर्ग ने ताश के पत्तों का बड़ा बंगला बनाया।

❋ पांच इंच लंबी व पांच औंस वजन की हमारी किडनी २४ घंटे में ३९५ गैलन रक्त शुद्ध करती है।

❋ मोटरसाइकिल रेस में अमेरिका के कार्ल फोगर्टी ने सबसे ज्यादा पदक प्राप्त किए।

❋ शक्कर खाने के मामले में भारतीयों में २० प्रतिशत की वृद्धि दो दशक में देखी गई यदि ऐसा ही रहा तो २०१० तक प्रत्येक भारतीय ३६ किलो शक्कर खा चुका होगा।

❋ जेम्स बांड को मि. किस-किस बैंग-बैंग भी कहा जाता है।

❋ डाक टिकट के पीछे गोंद लगा हो ऐसा पहला टिकट १ मई १८४० को जारी हुआ।

❋ शनि का वलय ५,००,००० मील लंबा है।

❋ रामकृष्णन ने लगातार ३६ घंटे मृदंग बजाने का रिकॉर्ड स्थापित किया।

❋ हमारी त्वचा ठंड में सिकुड़ती तो गर्मी में प्रसरण पाती है।

❋ वर्तमान में देश में लगभग साढ़े आठ करोड़ वृद्ध हैं।

❋ मिशीगन वस्तु संग्रहालय में थॉमस एडिसन का दिमाग एक बोतल में बंद कर रखा गया है।

❋ पहले फोन का आविष्कार अलेक्सेंड ग्राहम बेल ने १८७६ में किया।

❋ बर्फीले स्थानों पर पेंग्विन पाए जाते हैं, पर उत्तरी ध्रुव पर एक भी पेंग्विन नहीं है।

❋ टोकियो के न्यू टोकाइडो लाइन पर चलनेवाली रेल दुनिया की सबसे तेज रेलगाड़ी है वो एक मिनट में सवा तीन किलोमीटर दूरी तय करती है।

❋ हमारी आंखें १७,००० रंगों की अलग-अलग पहचान कर सकती है।

❋ वर्ल्ड गोल्ड काउंसिल के अनुसार भारतीय लोग हर साल ४५,००० करोड़ रुपए का सोना खरीदते हैं।

❋ ४० डिग्री सेल्सियस व ४० डिग्री के फेरेनहाइट समान होता है।

❋ भारत में फ्रिक्वेंसी मोड्युलेशन (एफ.एम.) रेडियो की शुरूआत २३ जुलाई १९७७ को हुई।

❋ शिकागो के सन होटल में ६८१८ किलो वजन का दुनिया का सबसे बड़ा केक बना।

❋ जागृत अवस्था में हम हर ६ सेकेंड में एक बार पलक झपकाते हैं।

❋ यदि दोनों दल के लोग रजिस्टर्ड रक्तदाता हों तो प्रॉंगे में द्वंद युद्ध को कानूनी मान्यता है।

❋ डेल मेगजिन ने १९१० में सबसे पहले गणित पहेली छापना शुरू किया। तब इसका नाम था मेजिक स्क्वेयर।

❋ लंदन की एक संस्था ने एक होटल में १८५० किलो वजन के १.७३ वर्गमीटर लंबे कबाब को तैयार किया।

❋ महिलाओं का दिल पुरुषों के दिल की अपेक्षा तेजी से धड़कता है।

❋ भारत के केवल छह राज्यों में ५०० कि.मी. से लंबे फोर लेन रास्ते व राष्ट्रीय राजमार्ग हैं।

❋ टायटेनिक जहाज को डूबने में २ घंटे ४० मिनट का समय लगा था।

❋ पहली पैसेंजर अंडरग्राउंड रेल लंदन में १० जनवरी १८६३ को चलाई गई।

❋ लेनिन बानू ने १२,७७,४१६ बिंदुओं से ९ x ६ फीट आकार का चित्र बनाया।

❋ आप अपनी औसत आयु में हर दिन ५,००० शब्द बोलते हैं इसका ८० प्रतिशत खुद से की जानेवाली बात होती है।

❋ एक बाल्टी वाईन बनाने के लिए ६०० अंगूर लगते हैं।

❋ पहली-पहली बार १०,००० साल पहले मध्य पूर्व के देशों में गेंहू की पैदावार की गई व भेड़-बकरियों को पाला गया।

❋ एम. ताहेर ने दुनिया की सैर साइकिल की सवारी से की।

❋ हमारे शरीर में रक्त धमनियां तीन परतों से बनी होती हैं।

❋ वर्तमान में भारत में ५० लाख लोग एड्स पीड़ित हैं। इसमें २१ प्रतिशत पुरुष, ११ प्रतिशत महिला व १० प्रतिशत छोटे बच्चे हैं।

❋ रोलर कोस्टर में बैठनेवालों को दिमाग में खून के थक्के जमने की संभावना सबसे ज्यादा है।

❋ भारत में पहला कार उत्पादन प्रोजेक्ट १९२८ में शुरू हुआ।

❋ व्यंकण्णा जालीमेन ने फूल-पत्ती व वनस्पति से १६५० वर्गफूट के सबसे बड़े कोलाज चित्र को बनाया।

❋ मानव मस्तिष्क से शरीर में इतने कनेक्शन आते हैं जितने कि विश्व की सभी दूरदर्शन लाइनों से भी नहीं आते।

❋ सेवा क्षेत्र में आईटी सेक्टर की रोजगार उपलब्धता की दृष्टि से बेहतर क्षेत्र माना जाता है, पर वहां भी देशभर में सिर्फ १० लाख लोगों को ही रोजगार मिला हुआ है।

❋ एक औसत घर में जितना प्रदूषण होता है वह एक औसत कार द्वारा प्रदूषण के बराबर है।

❋ चीनी लोगों ने ५००० साल पहले नेल पालिश ईजाद की। उनके पसंदीदा रंग लाल व काले हैं।

❋ रामजीत भिंड ने सबसे बारीक रेशम बनाई।

❋ मस्तिष्क हमारे शरीर का सबसे बड़ा अंग है।

❋ उम्मीद है कि निजी क्षेत्र द्वारा मार्च २००८ तक देश की विद्युत ऊर्जा में ५९८२.६० माइक्रो वॉट की बढ़ोतरी का योगदान दिया जाएगा।

❋ बोइंग ७४७ एयरलाइन में ५७,२८५ गैलन इंधन होता है।

❋ भारत के रेस्टोरेंट में पहला तंदूर नई दिल्ली के कश्मीरी मोती महल में १९४८ में बना।

❋ केवल ८ साल की उम्र में ड्रम बजाकर सिद्धार्थ नागराजन ने रिकार्ड बनाया।

❋ हम अपनी दोनों आंखों का प्रयोग कभी एक समान नहीं करते।

❋ देश में रसोई गैस के वितरकों की संख्या ९,१०४ है।

❋ भारत में एक करोड़ २६ लाख बाल मजदूर हैं।

❋ रिक्शे का निर्माण पहली-पहली बार १८८८ में जापान में हुआ।

❋ छोटे केकड़े की लार बड़े केकड़े की लार से कई गुना ज्यादा जहरीली होती है।

❋ इलाहाबाद स्थित लॉ बुक कंपनी में कानून से संबंधित सबसे ज्यादा किताबें हैं।

❋ मानवी मस्तिष्क से निकलनेवाली तरंगों की संख्या दुनियाभर में किए जानेवाले टेलीफोन तरंगों से ज्यादा होती है।

❋ गाय के दूध से पूरे विश्व में बकरी का दूध ज्यादा इस्तेमाल किया जाता है।

❋ कैलाइडोस्कोप की खोज स्कॉटिश वैज्ञानिक सर डे विड ब्रुस्टर ने १८१६ में की।

❋ बी. एम. गोपीकृष्णन ने एक बार में ८,३६७ उठक-बैठक लगाई।

❋ यदि हमारे शरीर की वसा निकाली जाए तो साबुन की ४० टिकिया बन सकती है।

❋ तलवारबाजी के खेल में तलवार १-१ मीटर लंबी व ५०० ग्राम वजन की होती है।

❋ डीएनए परीक्षण की खोज १० सितंबर १९८४ को सर अलेक जेफ्रीस ने की।

❋ हमारे शरीर में इतना फास्फोरस है कि उसे इकट्ठा कर माचिस की दो हजार तिल्लियां बनाई जा सकती हैं।

❋ दुनिया भर के इमर्जेंसी नंबरों पर रोज १,८०,००० कॉल्स होते हैं।

❋ पानी में कूदने के लिए उपयोगी उपकरण का निर्माण १८९ में जर्मन वैज्ञानिक ऑगस्टस सीबे ने किया।

❋ अंग्रेजों ने राजा राम मोहन राय को भारत का आधुनिक नक्षत्र कहा था।

❋ महात्मा बुद्ध की मृत्यु कुशी नगर में हुई थी।

❋ भारत में सालभर में ९४ सौ करोड़ सिगरेट स्टिक्स बनती हैं।

❋ पहला वैक्यूम क्लीनर १९०१ में हर्बट बूथ ने बनाया।

❋ किसी गुफा से बाहर निकलते समय चमगादड़ हमेशा बाए ही मुड़ते हैं।

❋ गंभीर सिंह को अनेक सालों के कैलंडर के दिनांक व दिन याद हैं।

❋ हाथ के नाखून, पैरों के नाखूनों की तुलना में चार गुना तेजी से बढ़ते हैं।

❋ दुनिया का पांच में से एक व्यक्ति चीन में रहता है।

❋ आधुनिक तरीके के सर्कस की शुरुआत फिलिप ॲस्टेल ने १७६८ में की।

❋ कुंतोल रक्षित ने ५,५३,९०८ रुपए के १२२६ रेलवे टिकट इकट्ठा किए।

❋ एक हाथ में ३ हड्डियां होती हैं।

❋ भारत में महिला स्वयं सहायता समूह की संख्या ३,६१,७३१० लाख है।

❋ लिखावट के आधार पर व्यक्ति को कैसे पहचाना जा सकता है इस बारे में पहली किताब १६२२ में इटालियन डॉक्टार कैमिला बाल्डोने लिखी।

❋ कुमकुम रॉय चौधरी ने विभिन्न धातुओं के १२०० से ज्यादा गणेशमूर्ति संग्रहित करने का रिकॉर्ड बनाया।

❋ मानवीय सिर में २२ हड्डियां होती हैं।

❋ भारत का सबसे पुराना होमियोपैथिक मेडिकल कॉलेज और अस्पताल कोलकाता में है।

❋ ईमानदारी के लिहाज से आइसलैंड, फिनलैंड के बाद न्यूजीलैंड का तीसरा स्थान है। डेनमार्क, सिंगापुर व स्वीडन के बाद स्विट्जरलैंड सातवां ईमानदार राष्ट्र है। ब्रिटेन ११ वें व अमेरिका १७ वें स्थान पर है।

❋ सर वाल्टर रेलेइज ने इंग्लैंड में सन् १६०० की शुरुआत में तंबाकू का प्रचार प्रसार किया।

❋ डी. मुनिअप्पम ने विपरीत दिशा में २२ किलोमीटर की पहाड़ी पर चढ़ने का रिकॉर्ड बनाया।

❋ आप दिन में १५००० बार पलक झपकाते हैं। महिलाएं पुरुषों से दुगुनी बार पलक झपकाती हैं।

❋ केंद्र सरकार द्वारा देश के ३,६०० केंद्र रक्षित ऐतिहासिक स्मारकों के रखरखाव के लिए १०० करोड़ रुपए से भी ज्यादा प्रति वर्ष खर्च किए जाते हैं।

❋ अमेरिका में हर साल डेढ़ अरब किलो आलू के चिप्स बनाए जाते हैं।

❋ भारत में दूरदर्शन पर पहला सीधा प्रसारण सन् १९६० में हुआ।

❋ हर साल औसतन १३,००० भूकंप आते हैं।

❋ केवल सात साल की पुल्लीपति तेजस्विनी ने ३० शब्द एक मिनट में इंग्लिश टाइपिंग का रिकार्ड बनाया।

❋ हमारे शरीर में सबसे छोटा जीवनकाल कोशिकाओं का होता है जो हर तीन से चार दिन बाद मर जाती हैं व नई कोशिकाएं आती हैं।

❋ सशस्त्र सेना बल ने सन २००० से अब तक ६,००० के खिलाफ कोर्ट मार्शल किया।

❋ मैक्सिको में दो से ज्यादा सीडी ले जाना अवैधानिक है।

❋ भारत के नदीम अहमद ने आंखों पर पट्टी बांधकर दूसरों के बाल काटने का रिकार्ड बनाया।

❋ आपके दिल का वजन ३०० ग्राम है।

❋ देश में साक्षरता की दर ५६.२ प्रतिशत है।

❋ यूनान में जो नाटक होते थे, उनमें पात्रों को अपने चेहरे पर एक मुखौटा लगाना पड़ता था। उस मुखौटे का नाम परसोना होता था उसी से पर्सनैलिटी शब्द बना।

❋ भारत का पहला कृत्रिम बीच समुद्री किनारा उदयपुर के पास बनाया गया है।

❋ कैलाश चंद्र मोदी ने १.४ ग्राम वजन के १.४ सेमी लंबे ताले को बनाया।

❋ कलाई में ८ हड्डियां होती हैं।

❋ भारत में पेट्रोलियम की मांग २००४-०५ में १२३० लाख टन रही जबकि २००२-०३ में वह १०९० लाख टन थी।

❋ आठ में से एक अमेरिकी गरीब है पर हर छह में से एक घर में कम से कम तीन कार या ट्रक हैं।

❋ पिज्जा पहली बार इटली के नेपल्स क्षेत्र में तैयार किया गया।

❋ डॉ. ए. अलेक्झेंडर ने लगातार १२ घंटे जादू के कार्यक्रम करने का रिकार्ड बनाया।

❋ हमारी त्वचा पांच परतों से बनी है।

❋ राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो ने १९९५ से फांसी के रिकार्ड रखने की शुरूआत की।

❋ विश्व स्वर्ण परिषद के अनुसार २००१ के अंत तक १४५,००० टन सोने का खनन पूरे विश्व में किया गया था।

❋ रॉजन बेकन ने १३ वीं शताब्दी में पहली बार बंदूक की बारूद तैयार की।

❋ सौर प्रणाली में शुक्र की सतह सबसे गर्म ४४७° सेल्सियस है।

❋ विश्व का सबसे ऊंचाई पर स्थित रेल मार्ग पेरू में है। उसकी समुद्रतल से ऊंचाई ५२२८ मीटर है।

❋ एक औसत मनुष्य के शरीर में इतनी वसा होती है जिससे साबुन की सात टिकिया बनाई जा सके।

❋ देश में हर साल लगभग ५० लाख लोग हार्ट अटैक से मरते हैं।

✻ लैवंडर के फूल के प्रति इंग्लैंड की रानी एलिजाबेथ का आग्रह था कि उनके बाग में उसके फूल हमेशा होने चाहिए। फ्रांस के राजा लुई १४ भी अपनी जेब में हमेशा लैवंडर के फूल रखते थे।

✻ चीनी लोगों ने सर्वप्रथम रॉकेट बनाया।

✻ भारतीय फिल्मों में देशभक्ति पर बनी फिल्मों में सबसे ज्यादा काम करने का श्रेय मनोज कुमार को है।

✻ विश्व की सबसे ऊंची मीनार सीयर्स टॉवर है जो ११० मंजिली है व १५५४ फुट ऊंची है।

✻ हमारे मुंह में प्रतिदिन लगभग २ लीटर लार बनती है।

✻ देश के पुलिस दल में १४,९६,२७६ लोग हैं जिनमें ३६,५५२ महिलाएं हैं।

✻ लास वेगॉस के जुआघरों में घड़ी नहीं होती।

✻ कोल्हापुर के आनंद राव पेंटर ने पहला मूवी कैमरा बनाया था।

✻ चींटी अपने वजन से तीन सौ गुना अधिक वजन खींच सकती है।

✻ उड़ान का कीर्तिमान- भारतीय विंग कमाण्डर एम. दत्ता ने विश्व की सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखला से बचाव अभियान को सफलतापूर्वक पूरा करके विश्व कीर्तिमान बनाया। उन्होंने १४-१८ नवंबर १९८६ में ७५ उडान भरकर बर्फ में घिरे १४५ लोगों को मौत के मुंह से बचाया था।

✻ शराब की बोतल- एक खुदाई के दौरान प्राचीन जर्मनी के प्लेटीनेट राज्य से १७०० वर्ष पुरानी रोमन शराब की एक बोतल निकली है। शराब आज भी उतनी ही शुद्ध है, जितनी बाटलिंग के वक्त रही होगी।

✻ पूना के नाना साहब पेशवा की आज्ञा थी कि जब भी सोकर उठें तभी आठ बजे का घंटा बजाया जाये। चाहे सुबह छह बजे उठें या दस बजे, घंटा आठ का ही बजाया जाता था। उसके बाद क्रमानुसार नौ, दस। आदि के घंटे बजाये जाते थे। किसी समय रावलपिंडी पर मुराद खां का राज्य था। वह अपने महल में मांगने आये भिखारी को एक लाख रुपये से कम की भिक्षा कभी नहीं देता था और जब उसके पास रुपये नहीं होते थे तब भिखारी को मौत के घाट उतार देता था। फारस के महाराज जरक्सीज ने एक नदी के पानी को तीन सौ कोड़े लगवाये थे, क्योंकि पानी की धारा ने महाराजा के बनवाये एक पुल को बहा दिया था। पर्शिया के महाराजा साइरस ने इराक के गेंदस (वर्तमान नाम दियाला) नदी को मृत्यु दंड दिया था, क्योंकि साइरस का पवित्र श्वेत घोड़ा उसमें डूब गया था। सातवीं नदी में चीन की महारानी ने एक दिन एक प्रकार के पौधों को तुरंत फूलने का आदेश दिया। जब पौधे फूले तब महारानी ने उस जाति के पौधों को अपने राज्य से जड़ से उखाड़ने का हुक्म सुना दिया।

✻ हमारी त्वचा ०.०५ सेमी मोटी होती है।

✻ भारत में पांच वर्ष की आयु से कम के ४७ प्रतिशत यानि लगभग ७८ लाख बच्चे कुपोषित हैं।

✻ प्राचीन ग्रीक में यदि ऑपरेशन के दौरान किसी सर्जन के हाथों कोई मर जाता था तो उस सर्जन के हाथ काट दिए जाते थे।

✻ गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में सबसे बड़ा चुंबन ४१७ घंटे का दर्ज है।

✻ गुणसूत्रीय आधार पर ९९.९ प्रतिशत लोग एक समान होते हैं और इन गुणसूत्रों में से ९८.४ प्रतिशत चिम्पाजी के

गुणसूत्रों से मेल खाते हैं।

✻ टाइप राइटर पर लिखा गया पहला उपन्यास द एडवेंचर्स ऑफ टॉम स्वॉयर था।

✻ प्लेनी एल. विंगों नामक अमेरिकी व्यक्ति ने विपरीत दिशा में १२,८७५ किमी चलते जाने का रिकार्ड बनाया।

✻ अमेरिकी सामूहिक तौर पर देखें तो हर सेकेंड में एक सौ पाउंड चॉकलेट खा लेते हैं।

✻ ब्राजील की अमेजान नदी की खोज १४९९ में विन्सेंट यानेडा विनजॉन ने की।

✻ दुनियाभर में लगभग ११०० तरह की मिट्टी उपलब्ध है।

✻ निशानेबाजी में मुर्मू ने १७ साल की उम्र में राष्ट्रीय स्तर पर जीत हासिल की।

✻ भारत में ६ से १४ आयुवर्ग के ३ करोड़ ५० लाख बच्चे स्कूल नहीं जाते। इसमें से दो तिहाई लड़कियां हैं।

✻ डाइनासोर पर अब तक ३० से ज्यादा फिल्में बन गई है।

✻ कंम्प्यूटर के पहले डोमेन का नाम symbolics.com था।

✻ जिस इन्सान का धरती पर वजन १०० पाउंड हो वह मंगल ग्रह पर केवल ३८ पाउंड का रह जाता है।

✻ अमेरिका के कर्ट मे अजिज ने २४,८१० चाबियों के गुच्छे जमा किए।

✻ भारत में १८ वर्ष से कम उम्र के लड़कों की संख्या ४,००० लाख है।

✻ सुबह-शाम खाना खाने के बाद एक-एक लौंग खाने से एसीडीटी में आराम पहुंचता है।

✻ लियोनार्दो द विंची एक हाथ से लिखते थे और उसी वक्त दूसरे हाथ से चित्र बना सकते थे।

✻ आधुनिक तरीके का पहला ताला १८६१ में लायनस येल ने बनाया।

✻ रजनी आर्य ने १३० किलोमीटर तेजी से दौड़ रहे टू व्हीलर को हाथ से रोक दिया।

✻ रात को सोते समय हमारा वजन औसतन २५० ग्राम कम हो जाता है।

✻ भारतीय स्टेट बैंक द्वारा २००५ में ८५ लाख डेबिट कार्ड्स जारी हुए। दूसरे स्थान पर आईसीआईसीआई बैंक था जिसने ६९ लाख डेबिट कार्ड जारी किए। सभी बैंकों को मिलाकर इस साल २९८.१ लाख कार्ड जारी हुए।

✻ पहली बार थैंक्स गिविंग डे १६२१ में मनाया गया। कुछ मानते हैं कि यह १९२१ में दक्षिण अमेरिका में शुरू हुआ। हर साल नवम्बर के चौथे गुरुवार को यह मनाया जाता है।

✻ फ्रांस के आलेस्के क्षेत्र में एक ऐसा कुआं है जो बारिश आने से पहले जोरदार आवाज करता है।

✻ विश्व की सबसे बड़ी चलन मुद्रा अलास्का में है जिसकी लंबाई ३ फीट है।

✻ एक बार खाए गए भोजन को पूरी तरह पचाने में शरीर को ४८ घंटे लग जाते हैं।

✻ नई स्वास्थ्य इंश्यूरेंस योजना में गरीबी रेखा के नीचे रहनेवाले २६ करोड़ परिवारों को दवा उपलब्ध कराना है।

✻ लंदन यूनिवर्सिटी के मेडिकल कॉलेज को १८३२ देहदान मिली। यह इस तरह का पहला देहदान था।

✻ भारत के एम.ए. ज्यातिमुरुगन ने ५ दिन में १२६४ किलो सब्जी काटने का रिकॉर्ड बनाया।

✻ आपके बाल किसी भी दिन सुबह सबसे ज्यादा बढ़ते हैं बनिस्पत दिन के अन्य समय के।

✻ भारतीय कोल लि. (CIL) में पूरे देश से ४.५ लाख कर्मचारी काम करते हैं।

❋ भारत में छायाचित्र कला १८५४ से विकसित हुई।

❋ परेश हलवावाला ने केवल १० महीने में अपना वजन ८५ किलो कम किया।

❋ यदि हमारा जीवन काल ७० वर्ष मान लें तो यह जानकर आपको आश्चर्य होगा कि इतने वर्षों में हमारा हृदय दो अरब दो सौ पचास करोड़ बार धड़कता है।

❋ देश में प्रति व्यक्ति प्रति माह औसत वेतन पानेवालों में गुजरात सबसे आगे है। जहां यह राशि लगभग १६,७७९ रुपए प्रति व्यक्ति प्रति माह है। महाराष्ट्र दूसरे स्थान पर १६,४७९ रुपए के साथ है। बिहार सबसे पीछे है जहां यह राशि मात्र ३,५५७ रुपए है।

❋ अमेरिका में ५५ साल से ऊपर के आधे लोगों को दांत नहीं है।

❋ डाक टिकट संग्रह करने की शुरुआत १८५६ में एडवर्ड स्टेनली ने की।

❋ केवल तीन साल की उम्र से हर्ष पांडे ने योगासन के कार्यक्रम देना शुरू किया।

❋ हमें एक सपना ५ से १० मिनट का पड़ता है।

❋ भारत की आबादी का कुल ३० प्रतिशत हिस्सा आज भी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करता है।

❋ जो घड़िया १६६० से पहले बनी थी उसमें केवल एक ही कांटा था जो एक घंटे को बताता था।

❋ रूस में दिखाई जानेवाली पहली भारतीय फिल्म धरती के लाल थी।

❋ आधा किलो शहद इकट्ठा करने के लिए मधुमक्खी ६०,००० किलोमीटर की यात्रा करती है।

❋ युवा विवेक दवे ने अलग-अलग तरह के वाहनों के १३५० से अधिक मॉडल्स इकट्ठे किए हैं।

❋ हमारी आंखों का वजन ७ औंस होता है।

❋ भारत में हर महीने लगभग २० लाख लोग मोबाइल खरीदते हैं।

❋ प्राचीन रोमवासी टूथपेस्ट में मानवीय मूत्र का प्रयोग करते थे।

❋ खाद्यान्नों को डिब्बाबंद करने की शुरुआत १८०९ में फ्रेंच व्यक्ति अपार्ट ने की।

❋ पूर्ण सूर्यग्रहण की दशा में तापमान ६ डिग्री सेल्सियस (लगभग २० डिग्री फेहरेनाइट) तक गिर जाता है।

❋ सतनाम सिंह ने ६० साल में ५२०० ऑटोग्राफ इकट्ठा किए।

❋ हमारी आंखें पैदाइशी जिस आकार में होती हैं अंत तक उतनी ही रहती हैं।

❋ भारतीय आर्मी में १२ लाख लोग काम करते है। इसका सालाना बजट ४०,००० करोड़ रुपए है।

❋ एक ट्यूब महीनेभर तक उपयोग करने से १० यूनिट बिजली खर्च होती है।

❋ जेम्स बांड ००७ इस काल्पनिक गुप्तचर की रचना १९५३ में इयान फ्लेमिंग ने की थी। उसकी मृत्यु के बाद किंग्सले असीम, जॉन पियरसन, जॉन गार्डनर, रेमंड बेन्सन व चार्ली हिगसन ने उसकी कहानियों में नवीनता लाई। क्रिस्टोफर वूड ने भी दो उपन्यास लिखे।

❋ ताहेर मद्रासवाला ने साइकिल से १,२५००० किलोमीटर यात्रा करने का रिकार्ड बनाया।

❋ औसतन कोई व्यक्ति एक मिनट तक अपनी सांस रोक सकता है।

❋ भारत में शेयर्स के उतार-चढ़ाव पर नजर रखनेवाले २४ स्टॉक एक्सचेंज हैं।

❋ छह प्रतिशत पुरुष शादी का प्रस्ताव फोन पर देते हैं।

❋ भारत में कॉलेजों में अंग्रेजी सिखाने की शुरुआत १८२८ से हुई।

❋ ए. जेटली ने एक ही समय १३ लोगों को स्कूटर पर बिठाकर स्कूटर चलाई।

❋ मुस्कुराने में १७ मांसपेशियां कार्य करती हैं त्यौरी चढ़ाने के लिए ४३ की जरूरत होती है।

❋ भारत में १२ करोड़ लोग दमे के शिकार हैं।

❋ दूध, मलाई से भारी होता है।

❋ शू लेस की खोज १७९० में इंग्लैंड में हुई।

❋ बारिश के पानी में विटामिन बी-१२ होता है।

❋ वर्सानी गोपाल कंजी ने अपने दांत से १२० किलो वजन उठाया।

❋ काम के बदले अनाज योजना में २०००-०५ में पूरे देश में ३,८९,४६५ टन खाद्यान्न का वितरण किया गया।

❋ आधी दुनिया के लोगों का मुख्य खाद्य पदार्थ चावल है।

❋ पृथ्वी पर एक जगह से दूसरी जगह की दूरी निश्चित करने में थियोडो लाइट उपकरण का इस्तेमाल होता है। लिपोनार्ड डिग्ज ने १९वीं सदी में इसकी खोज की।

❋ पृथ्वी, अंतरिक्ष में ६,६०,००० मील प्रति घंटे की रफ्तार से घूमती है।

❋ वेंकण्णा जालिमन नामक भारतीय ने फूल-पत्ते व वृक्षों की डाली का उपयोग कर १,६५० कोलाज चित्र बनाने का रिकॉर्ड किया।

❋ यदि आप युवा हैं तो एक साल में आप ८३ लाख बार सांस लेते हैं।

❋ हरियाणा में स्त्री-पुरुष अनुपात में बड़ा अंतर है यहां १००० पुरुषों के पीछे महज ८६१ महिलाएं हैं।

❋ अंधेरे में बिल्ली का मूत्र चमकता है।

❋ अक्षय नायर ने अपने सिर के बल १५ बार घूमने का कीर्तिमान रचा।

❋ जन्म लेने से भी पहले से मानव शिशु सपने देखने लगता है।

❋ देश में प्रतिवर्ष तेल व गैस कंपनियां १.२ लाख करोड़ रुपए से ज्यादा कर, डिविडेंड, रायल्टी आदि के रूप में देती है।

❋ रोल्स रायस को बनाने में छह महीने लगे तो टोयटा को बनाना केवल १३ घंटे का काम है।

❋ पनचक्कियों की शुरुआत यूरोप में १२ वीं सदी में हुई।

❋ ज्वालामुखी में इतनी ताकत होती है कि वह ५० किमी दूर तक वातावरण में राख फेंक सकता है।

❋ डैन स्कली नामक अमेरिकी अर्किटेक्ट ने बड़ी कार जैसे घर को बनाया।

❋ हमारे दोनों गुर्दों में २० लाख रक्त छानने की छननियां होती हैं जो प्रतिदिन ५० गैलन रक्त को साफ करती हैं।

❋ देश में प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष औसतन १९.७१ मीटर कपड़े की खरीदी होती है।

❋ संतरे से ज्यादा विटामिन सी स्ट्रॉबेरी में होता है।

❋ हुडीनी पहला व्यक्ति था जिसने आस्ट्रेलिया में अकेले किसी प्लेन को उड़ाया था।

❋ कमरे के तापमान पर औसत वायुकण राइफल बुलेट की गति सा चलते हैं।

❋ मुर्गा- बांग दे तभी सवेरा, कॉलेज- पिकनिक स्पॉट, खिचडी- दाल चावल का दंगल, जूता- घर के बाहर, पैरों का घर, बीडी- जेब में हुक्का, जब चाहे फूंका, सिगरेट- सफेद चिमनी, गुटखा- मीठा जहर, टीचर- बोलती किताब, मंदिर- याचना स्थल, पति- पत्नी का पर्स, मेहमान- जिसके आने से सभी परेशान।

❋ नितिन व्यास ने १२ अंकोंवाले पहाड़े तक याद करने का रिकॉर्ड बनया।

❋ आपकी अंगुलियां जितनी बड़ी हों नाखून उतनी ही तेजी से बढ़ते हैं।

❋ ट्रैक्टर के उत्पादन में भारत पूरे विश्व में प्रथम है। देश में अभी १८ लाख ट्रैक्टर काम में लाए जाते हैं।

❋ अमेरिका में हर सेकंड में ४८४८ कप कॉफी पी जाती है।

❋ चंद्रगुप्त मौर्य की ग्रीक पत्नी हेलन ने पहली बार साड़ी पहनने की शुरूआत की थी।

❋ भारतीय स्टेट बैंक विश्व की सबसे ज्यादा शाखावाली बैंक है।

❋ पैर के अंगूठे की स्नायु ज्यादा मजबूत होती है।

❋ देखा जाए तो भारत में सांसदों को प्रतिमाह केवल १२ हजार रुपए वेतन मिलता है। लेकिन उन्हें अन्य कई सुविधाएं मिलती हैं मसलन हर महीने दस हजार चुनाव क्षेत्र अलाउंस, दस हजार रुपए ऑफिस अलाउंस, सत्र व कमीटीयों में भाग लेने के रोजाना पांच सौ रुपए, साल में पचास हजार यूनिट मुफ्त बिजली, हर साल एक साल मुफ्त टेलीफोन कॉल्स, रेलगाड़ी में एसी की मनचाही यात्राएं, परिवार सहित मुफ्त इलाज व दिल्ली में मुफ्त का घर।

❋ दुनिया के सभी जंगलों को मिलाएं तो उसका २५ प्रतिशत केवल साइबेरिया में है।

❋ जल्जा कुमारी ने धागे से ३ सेमी लंबे शिल्प को बनाया।

❋ देश में असंगठित कर्मचारियों की संख्या अनुमानत: ३० करोड़ है।

❋ स्टेपलर की खोज १८६८ में हुई।

❋ अमेरिका व कनाडा के बीच का सुपेरियर तालाब दुनिया का सबसे बड़ा तालाब है।

❋ भारत में कुल रबर उत्पादन का ९० प्रतिशत रबर केवल केरल में होता है।

❋ भारत का पहला नेत्रकोष १९४५ में चेन्नई में शुरू हुआ।

❋ यदि तेज संगीत बज रहा हो तो दीमक लकड़ी को दुगुनी गति से चाट जाते हैं।

❋ एक ही जगह पर सी. चंद्रशेखर ने ३,१२५ छलांग मारकर रिकॉर्ड बनाया।

❋ हमारा हृदय इतना दाब निर्माण करता है कि रक्त ३० फीट दूर फेंका जा सकता है।

❋ भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग अथॉरिटी पिछले चार सालों से अपने लक्ष्य को पूरा करने में असफल रही है। २००१-०२ में जहां ५१५.१७ किमी लंबे राष्ट्रीय राजमार्ग बन जाने थे वे केवल २७०.७६ किमी ही बन पाए। २००४-०५ में २,८९०.१० किमी के लक्ष्य को रखा गया था पर केवल २,३४८.४७ किमी ही बन पाए।

❋ सबसे अच्छा हीरा नीले-सफेद रंग का होता है।

❋ ग्रीक इतिहासकार जेनाफोन ने शार्टहैंड टाइपिंग की खोज की।

❋ हाथी के एक दांत का वजन १२ पाउंड के बराबर होता है।

❋ बर्नेट ओर्लेंडो ने ८ साल की उम्र में ५ मिनट में सबीक्स क्यूब की पहेली सुलझा दी थी।

❋ एक औसत व्यक्ति के शरीर पर ५० लाख बाल होते हैं। उसमें से १,००,००० से १,५०,००० तो केवल सिर पर होते हैं।

❋ देश में काम आनेवाली रसोई गैस में से ५० प्रतिशत गुजरात रिफाइनरी से आती है। गुजरात से २००४-०५ में ३,७८३ हजार टन रसोई गैस आई। इसके बाद महाराष्ट्र का स्थान रहा जहां से १,०३३ हजार टन रसोई गैस आई।

❋ पूरे सप्ताह में काम करने की रफ्तार मंगलवार को सबसे ज्यादा होती है। इसी दिन ज्यादा काम होते हैं।

❋ इतिहास लिखने की शुरुआत ५,००० साल पहले हुई।

❋ वास्तव में चंद्रमा हर साल १.५ इंच की दर से पृथ्वी से दूर जा रहा है।

❋ लोहे के फेफड़े- अमेरिका की श्रीमती लॉरेल निसबेल लोहे से बने फेफड़ों के सहारे ३७ वर्ष ५८ दिन जीवित रहीं।

❋ रिचर्ड- इंग्लैंड के सम्राट रिचर्ड ने अपने शासन-काल में ९५ प्रतिशत समय अपनी सत्ता से बाहर ही बिताया और अपने शासन काल में वह केवल दो बार इंग्लैंड आए।

❋ इटली के झंडे का डिजाइन नेपोलियन बोनापार्ट ने तैयार किया था।

❋ असिन किरगीज नामक आदिवासियों में यदि कोई महिला अपने पति का नाम ले लेती है, तो उसका तुरन्त तलाक हो जाता है।

❋ यदि आपका आई. क्यू. १८० या इससे अधिक है, तो आप १० लाख व्यक्तियों में से एक हैं।

❋ भय, क्रोध और प्रेम ये तीन मूलभूत मनोवेग हैं।

❋ पेट्रोलियम खनिज को तरल सोना कहा जाता है।

❋ मिकी माउस कार्टून फिल्में सबसे पहले सन् १९२८ में प्रदर्शित की गई थीं।

❋ कुचीपुड़ी आंध्रप्रदेश का नृत्य है।

❋ सांची का स्तूप अशोक ने बनवाया था।

❋ लंदन टेम्स नदी के किनारे बसा है।

❋ नटराज मंदिर तमिलनाडु के राज्य में है।

❋ हर किसी की निंदा सुनो लेकिन अपना फैसला गुप्त रखो यह शेक्सपीयर ने कहा।

❋ हमारे हाथों के नाखून एक इंच के ३२६ वें भाग के बराबर बढ़ जाते हैं।

❋ अबाध गति से बोलनेवाले वक्ता महोदय पांच हजार शब्द बोल देते हैं।

❋ एक घंटे में विश्वभर में मिलाकर साढ़े तीन हजार के लगभग मोटर-गाड़ियां बनती हैं।

❋ विश्व में इस समय डेढ़ करोड़ पत्र लिखे जाते हैं।

❋ एक घंटे में दुनियाभर में लगभग ३०,००० टन शक्कर तैयार होती है।

❋ विश्व की कोयला खानों से लगभग १५००० टन कोयला निकाल लिया जाता है।

❋ भारतवर्ष में सबसे पहला समाचार-पत्र बंगाल गजट था, जिसके संपादक जेम्स हिर्फ थे।

❋ चीनी वर्णमाला में २१४, संस्कृत में ४४, रूसी में ४५, फारसी में ३१, अरबी में २८, रोमन में २६, लेटिन में २४ और अंग्रेजी में २६ अक्षर होते हैं।

❋ पतंग का आविष्कार चीन के सेनाध्यक्ष हेवड़ी घेतसी ने ईसा के १६५ वर्ष पूर्व किया था।

❋ जापान में एक ऐसा वृक्ष है, जो सूर्यास्त के बाद धुआं निकालता है।

❋ बाएं हाथ से काम करनेवाले व्यक्तियों के दिमाग का दायां भाग दूसरे भाग की तुलना में अधिक सक्रिय होता है।

❋ चंदूलाल चौधरी नामक भारतीय ने ३७ सालों तक लगातार प्रतिदिन डायरी लिखकर एक रिकार्ड बनाया।

❋ हमारे यहां एक लाख लोगों पर २.७ जज हैं जबकि अंतर्राष्ट्रिय स्तर पर मानदंड ६.८ का है।

❋ टाइम मैगजीन ने १९३८ में हिटलर को मैन ऑफ ईयर घोषित किया था।

❋ सूर्य इतनी तेज गति से घूमता है कि कोई भी सूर्य ग्रहण सात मिनट ५८ सेकेंड से ज्यादा देर तक नहीं हो सकता।

❋ दक्षिण अफ्रीका के नॉरवुड हाइपर मार्केट के कर्मचारियों ने १२२ फीट व्यास का दुनिया का सबसे बड़ा पिज्जा बनाया।

❋ आपके शरीर पर नियंत्रण करने के लिए चालीस लाख दर्द की अनुभूति देनेवाली संरचनाएं, पांच लाख स्पर्श सूचक व दो लाख ताप सूचक हैं।

❋ भारतीय सशस्त्र बल में अधिकारियों की कमी दिख रही है। आर्मी, नेवी व एयरफोर्स में ऑफिसरों की संख्या १३,३९९ है जबकि रैंक के नीचे वाले ९,१८६ ही हैं। जो कल ऑफिसर बन पाएंगे।

❋ इस धरती के शुरू होने के समय से इस पर आज तक सत्तर सौ करोड़ लोग रह चुके हैं।

❋ ब्रिटिश ब्रॉडकास्टिंग कार्पोरेशन (बीबीसी) की स्थापना १९२७ में हुई।

❋ अंटार्क्टिक लगभग पूरा बर्फ से ढंका है पर फिर भी वह धरती की सबसे रूखी-सूखी जगह है। यहां इतनी उमस है कि गोबी के रोगिस्तान में भी नहीं है।

❋ दुनिया की सबसे ज्यादा मोटरसाइकिलें भारत में बनती हैं। जिस की वृद्धि दर १६ प्रतिशत है व निर्माण ८३ लाख।

❋ हमारे एक कान में २४ हजार तंतु होते हैं जो आवाज आप तक पहुंचाते हैं।

❋ सरकार ने निजी टेलीकॉम सर्विसेस से ५०० करोड़ रुपए से ज्यादा आउट स्टैंडिंग लाइसेंस फीस व अन्य बकाया के रूप में प्राप्त किया है।

❋ अमेरिका में १९९६ में टॉयलेट में ४३,६८७ अपघात दर्ज हुए।

❋ कागज की खोज ई. स. १०५ में चीन में हुई।

❋ यदि पानी की एक बूंद में हम अणुओं की संख्या गिनें तो वह १०० लाख संख्या होगी।

❋ कटालू फिश एक ऐसी विचित्र मछली है जिसके तीन हृदय होते हैं। दो हृदय गिलों के पास होते हैं। जो अशुद्ध खून को गिलों में भेजते हैं। यह खून तीसरे हृदय में जाता है।

❋ हेमिंग्वे प्रतियोगिता- विश्व साहित्य में अर्नेस्ट हेमिंग्वे एक अमिट नाम है। उनके नाम पर, उस नगर, की वेस्ट

(फ्लोरिडा, अमेरिका) में जहां वे १९ वर्ष रहे प्रतिवर्ष २१ जुलाई (हेमिंग्वे का जन्मदिन) को प्रतियोगिता में भाग लेनेवाले हेमिंग्वे स्टाइल के बाल, उनके जैसी पोशाक और चाल-ढाल का प्रदर्शन कर दर्शकों को लुभाते हैं। यह प्रतियोगी हेमिंग्वे उसी बार में एकत्र होते हैं जहां हेमिंग्वे नियमित जाते थे। इस बार का नाम स्लोपी है और स्लोपी में ही हेमिंग्वे की तीसरी पत्नी मार्था से उनकी प्रथम भेंट हुई थी। इस प्रतियोगिता में हेमिंग्वे से सर्वाधिक मेल खानेवाला बंदा विजयी होता है।

❋ विभिन्न तरह के २०० विषाणुओं से जुकाम हो सकता है।

❋ न्यूयॉर्क की एंपायर एस्टेट बिल्डिंग की लिफ्ट शाफ्टें कुल ७ मील लंबी हैं। इस इमारत में कुल १०२ मंजिलें व ऊंचाई १,४५४ फुट है।

❋ मनुष्य की जीभ पर लगभग ३००० स्वाद कोशिकाएं होती हैं।

❋ सूर्य की किरणें समुद्र के अंदर ४०० मीटर से अधिक नीचे तक नहीं पहुंच पातीं।

❋ जेल में लिखी गयी महान पुस्तकें- माई एक्सपेरीमेंट्स विद ट्रूथ - महात्मा गांधी, गीता रहस्य- बाल गंगाधर तिलक, पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस- जॉन बनयन, बाइबिल (जर्मनी भाषा में)- मार्टिन लूथर, ले मिजरेबल- विक्टर ह्यूगो, लांग वाक टु फ्रीडम- नेल्सन मंडेला, ग्लिम्प्सेज ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री- डिस्कवरी ऑफ इंडिया- पं. जवाहरलाल नेहरू

❋ सतत अभ्यास और कठोर परिश्रम करके कोई भी व्यक्ति अभीष्ट दिशा में विलक्षण विकास कर जगत को आश्चर्यचकित कर सकता है किंतु कुछ व्यक्तियों में प्रकृतित: उनके ऐसे गुण होते हैं कि वे दुनिया में अल्पवयस में ही अपना नाम रोशन कर जाते हैं। कुछ वैसे ही विलक्षण प्रतिभाशाली बालकों की जानकारी प्राप्त करें। बीसवीं सदी के महानतम वैज्ञानिक सापेक्षवाद के जन्मदाता आइन्स्टीन १४ वर्ष के अल्पवयस में ही भौतिकी, बीजगणित एवं उच्च ज्यामिति के मास्तर बन गए थे।

❋ मास्को की इर्मासोखाद में नामक तीन वर्षीया बालिका ने सभी प्रकार के संगीत में विशेषता अर्जित कर ली थी। नौ वर्ष की उम्र में उसे अट्ठारह भाषाओं के दो सौ गीत याद थे।

❋ जर्मनी का दो वर्षीय बालक जॉन फिलिप फ्रेंच, जर्मन और लैटीन धारा-प्रवाह बोलता था। पांचवें वर्ष में उसने बाइबिल का ग्रीक भाषा में अनुवाद करना शुरू कर दिया था। छ: वर्ष की उम्र में उसे बर्लिन की रॉयल एकेडमी का सदस्य बनाया गया तथा दुनिया में सबसे कम उम्र में पी.एच.डी. की मानक उपाधि प्रदान की गई किन्तु दुर्भाग्यवश मात्र १९ वर्ष की अल्पायु में ही उसकी मृत्यु हो गई।

❋ ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम- जी.पी. एस. अर्थात ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम उपग्रहों एवं रिसीवरों पर आधारित एक ऐसी प्रणाली है, जिसके माध्यम से व्यक्ति और उपकरणों की पृथ्वी पर सटीक स्थिति मालूम की जाती है। इस व्यवस्था का केन्द्र बिन्दु उन चौबीस उपग्रहों पर आधारित है जो एक दिन में पृथ्वी के दो बार चक्कर लगाते हैं। जिन उपकरणों में जी.पी.एस. सिस्टम लगा होता है, वे इन चौबीस उपग्रहों में कुछ की सहायता से पृथ्वी पर अपना सटीक स्थान ज्ञात कर लेते हैं। पहला जी.पी.एस. उपग्रह १९७४ में छोड़ा गया था और चौबीसवां जी. पी. एस उपग्रह १९९४ ई. में. यह व्यवस्था संयुक्त राज्य अमेरिका के रक्षा मंत्रालय द्वारा नियंत्रित होती है। क्रूज मिसाइलों को नियम स्थान पर पहुंचाने के लिए सेनाएं इस व्यवस्था का उपयोग करती हैं, साथ ही समुद्र में जानेवाले मछुआरे, पर्वतारोही और रक्षा सेवायें

भी जी.पी.एस. का उपयोग करती हैं।

❋ अभिरंजित कांच- रूपहले रंग से रंग कर भट्टी में तपाये जाने के बाद अभिरंजित कांच का निर्माण होता है। यह साफ कांच मोटाई के अनुसार सुनहरा, पीला अथवा भूरे रंग का प्रभाव छोड़ता है। इस तरह के कांच अधिकतर खिड़कियों पर लगाये जाते हैं। इस कांच के निर्माण में अनेक रंगों के कांच को टुकड़ों में काटकर उचित आकार दिया जाता है और फिर सोल्डर करके तस्वीर और डिजाइनयुक्त खिड़की, चौखट या लैम्पशेड का निर्माण किया जाता है।

❋ अनोखी सजा- सन् १३६० में पति की मृत्यु के बाद केन्ट के काउण्ट की पत्नी एलिजाबेथ ने शपथ ली कि वह दुबारा विवाह नहीं करेगी, लेकिन उसने शपथ विधि तोड़ दी। परिणामस्वरूप उसे सजा मिली हर साल में एक बार ४० मील पैदल चलने, रोज २२ भजन पढ़ने और सप्ताह में एक दिन सूप और रोटी खाने की।

❋ भीड़ भरा अंतिम संस्कार- पुलिस के अनुसार तमिलनाडु के मुख्यमंत्री सी.एन. अन्नादुराई (मृत्यु ३ फरवरी १९६९) के अंतिम संस्कार के समय १५० लाख व्यक्ति उपस्थित थे।

❋ हमारे पौराणिक ग्रंथों में पृथ्वी की आयु दो से साढ़े चार अरब वर्ष के बीच बताई गई है। पृथ्वी की आयु के बारे में उपर्युक्त अनुमान आधुनिक वैज्ञानिकों द्वारा अनुमानित आयु के बहुत निकट हैं। विभिन्न मतानुसार पृथ्वी की आयु के बारे में भिन्न अनुमान हैं- अथर्ववेद के भाग ८, अध्याय-१, श्लोक २१ में पृथ्वी की आयु ४ अरब ३२ करोड़ वर्ष बताई गई है। विष्णु पुराण के अध्याय-१, श्लोक ३ के अनुसार पृथ्वी की आयु १ अरब ९७ करोड़ वर्ष से अधिक है। आर्यभट्ट द्वारा लिखित सूर्य सिद्धांत में बताया गया है कि पृथ्वी की आयु १ अरब ९७ करोड़ २७ लाख वर्ष से अधिक है। आयरलैंड के आर्कविशेष अशर ने बताया कि पृथ्वी की उत्पत्ति ४००४ वर्ष ईसा पूर्व में हुई थी।

❋ मध्यमा अंगुली का नाखून सबसे तेज बढ़ता है।

❋ शीशे के टूटने पर उसके टुकड़े ४८०० कि.मी. प्रति घंटे की रफ्तार से चटकते हैं।

❋ यदि कद्दू की जड़ को एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैलाया जाये तो वह २४ कि.मी. तक फैल जायेगी।

❋ पैर, शरीर का वह भाग है, जहां सबसे अधिक मच्छर काटते हैं।

❋ वर्षा के पानी में विटामिन बी १२ होता है।

❋ भारत का सबसे पुराना हाईकोर्ट कलकत्ता हाईकोर्ट है।

❋ भारत की सबसे पहले बोली जानेवाली बोली तमिल बोली है।

❋ भारत के अहमदाबाद शहर में पतंग म्यूजियम है।

❋ कावालेट्टी नामक इटालियन ने ७१ देशों के ३२८४ सॉफ्टड्रिंक कैन संग्रहित करने का रिकार्ड बनाया।

❋ भारत में हर साल ६० लाख मेट्रिक टन पेट्रोल प्रयोग में आता है।

❋ इराकी सेना में राकेट लांच करने में आमतौर पर गधों का प्रयोग किया जाता है।

❋ डाक टिकट संग्रह की शुरुआत १८६१ में दक्षिण अफ्रीका से हुई।

❋ चेन्नई के गिरी बागरी ने एक ही समय मारुति कार में ४२ व्यक्तियों को बैठाकर चलाने का कीर्तिमान बनाया।

❋ भारत में इंटरनेट का प्रयोग करनेवाली महिलाओं की संख्या १ करोड़ २० लाख से ज्यादा है।

✻ सूर्योदय से डेढ़ घंटे पहले उठना स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा होता है।

✻ वेलेंटाइन डे के कार्ड ८५ प्रतिशत महिलाओं द्वारा खरीदे जाते हैं।

✻ सीमेंट की खोज १९२४ में ब्रिटिश संशोधक जोसेफ एस्पडीन ने की।

✻ सम्राट अशोक ने वन्य प्राणी संरक्षण कानून बनाए थे।

✻ भारत का राष्ट्रीय पशु शेर नहीं बल्कि टाइगर यानी बाघ है।

✻ विश्व में सर्वाधिक वर्षावाला क्षेत्र आसाम में मासिमराम है।

✻ ग्रीनलैंड नामक द्वीप का क्षेत्रफल भारत के कुल क्षेत्रफल के तीन गुणा से भी अधिक है।

✻ सबसे लम्बी तटीय सीमावाला भारतीय राज्य गुजरात है।

✻ भारत के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल ऊटी का दूसरा नाम उद्गमंडलम है।

✻ रावण के पिता का नाम ऋषि विश्रवा था।

✻ २४ घंटे में सामान्य मनुष्य का दिल १०६५६० बार धड़कता है।

✻ बच्चे फरवरी और दिसम्बर के महीनों में कम रोते हैं।

✻ स्पेन संसार का एकमात्र ऐसा देश है जहां कपड़े पर अखबार छपता है।

✻ पृथ्वी से चन्द्रमा की दूरी २२२३८८५० मील है।

✻ दतिया (म.प्र.) की सीमा भदौरिया ने मुंबई पोर्ट ईस्ट में ४३० टन का जहाज अपने दांतों से खींचा।

✻ हमारे गले में सात हड्डियां होती हैं उतनी ही जितनी जिराफ कीं बस जिराफ की लंबी होती हैं।

✻ हॉर्स शो जंपिंग में जानोऊ टिसोस्ट फ्रेंच महिला जॉकी ने लगातार दो बार गोल्ड मेडल जीता।

✻ भारत सरकार की मध्यान्ह भोजन योजना में कक्षा एक से पांचवीं तक के १२ करोड़ बच्चों को सरकारी स्कूलों में दोपहर का भोजन दिया जाता है।

✻ जंग लगने के बाद लोहे का वजन बढ़ जाता है।

✻ दुनिया का पहला आइस्क्रीम पार्लर १७७६ में न्यूयार्क में शुरू हुआ।

✻ पुरुषों को महिलाओं की तुलना में ४० प्रतिशत ज्यादा पसीना आता है।

✻ एशिया का चौथा बड़ा कार बाजार भारत है।

✻ हममें से ९१ प्रतिशत लोग नियमित तौर पर झूठ बोलते हैं.।

✻ पहली बार बने क्रेयान रंग चारकोल व तेल से मिलकर बनाए गए थे।

✻ शुक्र अपनी धुरी पर उल्टी परिक्रमा करता है इसी कारण शुक्र पर सूर्य पश्चिम में उदय होता व पूर्व में डूबता दिखता है।

✻ ब्रह्मांड में तारों की संख्या लगभग पांच सौ करोड़ है।

✻ दुनिया का सबसे गहरा कुआं अमेरिका में है लगभग ८ मील गहरा।

✻ सूर्य पृथ्वी से तीन लाख गुना बड़ा है।

✻ दुनिया की सबसे लम्बी सड़क अमेरिका में है जिसकी लम्बाई ३,७६४ मील है।

❋ भारत में ८४५ बोलियां बोली जाती हैं।

❋ भारत में प्रतिदिन एक करोड़ साइकिलें बनती हैं।

❋ भारत का सबसे बड़ा चिड़ियाघर कोलकाता में स्थित है।

❋ भारत और पाकिस्तान के बीच चलनेवाली रेलगाड़ी है समझौता एक्सप्रेस।

❋ सबसे बड़ी समुद्री सुरंग- १७ बिलियन डॉलर की लागत से तैयार चैनल सुरंग इंग्लिश चैनल के नीचे गुजरती है। यह इंग्लैंड के फोल्कसस्टोन और फ्रांस के कैलाइस को जोड़ती है। दिसंबर १९८७ और दिसम्बर १९९० में बनकर तैयार इस सुरंग का औपचारिक उद्घाटन महारानी एलिजाबेथ द्वितीय और फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रैंकोस मित्रां ने ६ मई १९९४ को किया। प्रत्येक सुरंग की लंबाई ३१ मीनल ५३ यार्ड है, जिनका व्यास २४ फुट ११ इंच है।

❋ सबसे बड़ी सड़क सुरंग- दो लेनेवाली सेंट गॉटहार्ड सुरंग स्विटजरलैंड विश्व की सबसे बड़ी सड़क सुरंग है। दस मील २४६ यार्ड लंबाईवाली यह सुरंग गॉशेनन और एयरोलो को जोड़ती है। १९६९ में इसका निर्माण शुरू हुआ और १९९८ में निर्माण के खात्मे वक्त इसकी लागत ४१८ मिलियन डॉलर आंकी गई।

❋ यातायात के लिए यह सुरंग ५ सितम्बर १९८० को खोली गई।

❋ सबसे लंबा पुल- लुसिआना स्थित द सैकण्ड लेक पोंचारट्रेन कॉसवे विश्व का सबसे बड़ा पुल है। १९६९ में बनकर तैयार यह पुल २३ मील और १,५३८ यार्ड लंबा है, जो माण्डेविले और मेटायरी को जोड़ता है।

❋ एरिजोना का फाउन्टेन पेन फव्वारा १३ लाख डॉलर मूल्य से बनाया गया है। यह १७० मीटर ऊंचाई तक पानी फेंकता है।

❋ हमारा दिल साल में तीन करोड़ साठ बार धड़कता है।

❋ जूडो की उत्पत्ति जापान से हुई थी।

❋ भारत के लगभग ३ करोड़ अविवाहित इंटरनेट विवाह वेबसाइट के सदस्य हैं।

❋ पहला स्विमिंग सूट १९०९ में एनेट केलरमॅन ने पहना था।

❋ सूर्य के चारों ओर दस करोड़ से भी अधिक संख्या में धूमकेतु चक्कर लगाते हैं।

❋ कुछ व्यक्तियों में प्रकृतित: उनके ऐसे गुण होते हैं कि वे दुनिया में अल्पवयस में ही अपना नाम रोशन कर जाते हैं। वैसे ही विलक्षण प्रतिभाशाली बालकों की जानकारी इसप्रकार- फ्रांस का जालुई कार्दियेक नामक बालक जन्म के तीसरे माह से ही वर्णमाला पढ़ने लगा था। तीन वर्ष की उम्र में वह लैटिन भाषा पढ़ लेता था। फ्रेंच तथा अंग्रेजी का लैटिन अनुवाद कर लेता था। हीब्रू और ग्रीक भाषा पर भी उसका अधिकार था। महज सात वर्ष की उम्र में ही वह अद्वितीय बालक संसार से चल बसा। अपनी शिक्षा नीति के लिए बहुचर्चित (या बदनाम कहें) लॉर्ड मैकाले भी अद्वितीय प्रतिभा का धनी था। वह दो वर्ष की उम्र में ही पढ़ता-लिखता। व बुजुर्गों की तरह बात करता था। उसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक विश्व का इतिहास मात्र आठ वर्ष की आयु में लिखी थी। प्रो. हावी फ्रिडमैन ने बिना मैट्रिक पास किए ही मैसाचुसेट्स इंजीनियरिंग कॉलेज के छ: वर्षीय कोर्स को पूरा कर लिया था। दस वर्ष की उम्र में तो उसे इंजीनियरिंग में पी.एच.डी. की उपाधि भी मिल चुकी थी। इंग्लैंड का एक अभिनेता ११ वर्ष की उम्र में ही अभिनय में विश्व-विख्यात हो चुका था।

बचपन से ही वह शेक्सपीयर के नाटक हेमलेट में हेमलेट की भूमिका निभाता था। लंदन के कोट गार्टेन के रंगमंच पर पहली ही बार अभिनय के लिए उत्तरा तो भीड़ को नियंत्रित करने के लिए पुलिस बुलानी पड़ी।

❋ अधिक ठंडे कमरे में सोने से भयानक सपने आने की आशंकाएं बढ़ जाती हैं।

❋ चंदन के इतने उपयोगी होने के बाद भी इसमें एक खास बात है कि इसके फूलों में किसी प्रकार की खुशबू नहीं होती।

❋ मादा मच्छर मांसाहारियों की तुलना में शाकाहारी लोगों को अधिक काटते हैं क्योंकि शाकाहारियों में मच्छरों का अत्यधिक प्रिय रसायन होता है। एक बार में मादा मच्छर ४० से १०० तक नाव के आकार के अंडे देती है।

❋ मनुष्य के जांघ की हड्डी कंक्रीट से भी ज्यादा मजबूत होती है।

❋ एक बड़ा चम्मच शहद बनाने के लिए २००० फूलों के पराग की आवश्यकता पड़ती है।

❋ यूं तो चांद हमें बहुत करीब दिखाई पड़ता है मगर पृथ्वी से उसकी दूरी २,३९,००० मील से कम नहीं है। चंद्रमा का व्यास लगभग २,१६० मील है तथा वह प्रकाशहीन संरचना है, जो सूर्य के प्रकाश से चमकता है। पृथ्वी से चांद की यह विशाल दूरी ही व्याख्या करती है कि चलते वाहन से आसमान की ओर देखने पर चांद हमारे साथ चलता है अथवा हमारा पीछा करता प्रतीत होता है।

गतशील अवस्था में चांद की ओर निहारने पर उसका हमारे साथ-साथ चलना एक मनोवैज्ञानिक अनुभव है, प्रतिक्रिया है। जब हम किसी तेज चलते वाहन पर सवार हों तो हमें हर चीज पीछे छूटती दिखती है, जैसे-पेड़, मकान, खम्भे, सड़क, इमारतें व अन्य वस्तुएं किन्तु जब हम चांद को निहारते हैं तो वह पीछे छूटता नहीं महसूस होता बल्कि हमारे साथ चलता या हमारा पीछा करता प्रतीत होता है।

पृथ्वी से चांद की दूरी अत्यधिक है। वाहन द्वारा कुछ क्षणों में तय की गई, उस दूरी की तुलना में नगण्य है, अत: आगे बढ़ते हुए चंद्रमा पर हमारी दृष्टि का कोण यथावत रहता है। दरअसल हम मीलों लम्बा सफर तय कर लें मगर चांद की ओर निहारने पर हमारी नजर के कोण में बदलाव न होगा और बाकी सब पीछे छूटता रहे तो भी चांद हमारे संग-संग चलता ही प्रतीत होता है।

❋ संसार में सबसे अधिक अंडा देनेवाली एक सीपी है, जो एक मिनट में लगभग ४१,००० अंडे देती है।

❋ उत्तर अटलांटिक महासागर में एक निराला समुद्र है- सरगासो। सरगासो के पानी का रंग गहरा नीला है। यह पानी इतना स्वच्छ और साफ है कि दूसरे समुद्रों की अपेक्षा मछलियां इसमें ज्यादा दूर तक देख सकती हैं। महासागर की गोद में दुबके इस समुद्र की विशेषता यह है कि इसका कोई तट ही नहीं है। इसकी सतह पर हमेशा समुद्री शैवाल के गुच्छे के गुच्छे तैरते रहते हैं और उन्हीं से इस सागर की सीमा की जानकारी होती है।

सरगामो को सबसे पहले पुर्तगाली नाविकों ने पार किया। उन्होंने देखा कि शैवाल समुद्र की सतह पर पोली थैलियों की मदद से तैर रहे हैं। उन थैलियों का आकार उन्हें पुर्तगाल के एक खास अंगूर सरगाको से मिलता-जुलता लगा। लिहाजा उन्होंने समुद्र का नाम रख दिया- सरगाको, जो अंग्रेजी में सरगासो हो गया।

❋ अफ्रीका के जंगल में एक ऐसा फूल पाया जाता है जो एक मिनट में सात रंग बदलता है। वहां के रहनेवाले इसे इन्द्र धनुष कहते हैं।

❋ ब्राजील में चलनेवाली आंधी की रफ्तार एक मिनट में १६९ किलो मीटर होती है।

❋ परमाणु बम एक मिनट में ४४,००० किलो मीटर के क्षेत्र को तबाह कर सकता है।

❋ दुनिया में सबसे तेज चलनेवाली कार पोर्श है। पोर्श एक मिनट में २ किलो मीटर की दूरी तय करती है।

❋ एक जेट जहाज एक मिनट में ४८ किलो मीटर की रफ्तार से उड़ता है।

❋ टोक्यों में न्यू काइडो लाइन पर चलनेवाली रेलगाड़ी दुनिया की सबसे तेज चलनेवाली रेलगाड़ी है। यह एक मिनट में सवा तीन किलो मीटर की रफ्तार से चलती है।

❋ घड़ी की सूई सिर्फ एक मिनट में ६० सैकेंड पूरे कर लेती है।

❋ प. जर्मनी की कुजेजिया शेबाट के बालों की लंबाई ९ फिट ५ इंच है।

❋ अमेरिका के फ्लोरिडा शहर की विद्रा के बालों की लंबाई ५ फिट १० इंच है।

❋ जुड़वां बहन विमला के बालों की लंबाई ४ फिट ९ इंच है।

❋ दुनिया का सबसे ऊंचा होटल थाइलैंड में है।

❋ दुनिया की सबसे लंबी रोड टनल स्विट्जरलैंड में है।

❋ महापुरुषों की जयंतियाँ- सत्येन नाथ बोस- १ जनवरी, स्वामी विवेकानंद- १२ जनवरी, सुभाष चंद्र बोस- २३ जनवरी, लाला लाजपत राय- २८ जनवरी, डॉ. जाकिर हुसैन- ८ फरवरी, सरोजनी नायडू- १३ फरवरी, रामकृष्ण परमहंस- २० फरवरी, गुरू रविदास- १५ फरवरी, स्वामी दयानंद सरस्वती- २४ फरवरी।

❋ प्रतीक सोनी ने ५.७७ मिलीमीटर लंबी सोने की बंदूक बनाई।

❋ हमारे शरीर से प्रति सेकंड ०.२ ग्राम कार्बनडाई आक्साइड बाहर फेंका जाता है।

❋ कर्मचारी राज्य बीमा के हॉस्पिटलों की संख्या देश में १२२ व डिस्पेंसरी की संख्या १,४०९ है।

❋ बहुत पहले सन् १६०० में थर्मामीटर में पारे की जगह ब्रांडी डाली जाती थी।

❋ तांबे से बनाए जानेवाले अस्त्रों का प्रयोग ८००० साल पहले हुआ।

❋ चीन की राजधानी बीजिंग का महल ७,२०,००० वर्गमीटर में फैला है। इसके चारों ओर १० मीटर ऊंची दीवार है।

❋ पथरीले रास्ते पर चलने से आपकी सरल राह पर चलने की तुलना में ७ प्रतिशत ज्यादा कैलोरी खर्च होती है।

❋ देश में केवल १६ लाख परिवार ऐसे हैं जिनकी वार्षिक आय ४५ लाख रुपए से ज्यादा है।

❋ फ्लोरिडा में स्विम सूट पहनकर सार्वजनिक स्थानों पर गाना गाना अवैधानिक है।

❋ रक्त समूह जांच का पहला यंत्र १९०१ में विकसित हुआ।

❋ सूर्य पृथ्वी से १४ करोड़ ९४ लाख ५० हजार किमी दूर है।

❋ अमेरिका के रिचर्ड पोर्टर ने ४५८० थर्मामीटर इकट्ठा किए हैं।

❋ जब आपका चेहरा शर्म से लाल होता है तो आपके पेट के बल भी लाल हो जाते हैं।

❋ भारत के मध्यमवर्ग के लगभग २००० लाख लोग विमानयात्रा करते हैं।

❋ स्टीरियो फोनिक साउंड सिस्टम का प्रयोग १९५० से शुरू हुआ।

❋ मंगल व प्लूटो पर वातावरण अन्य ग्रहों जैसा सघन नहीं होता।

❋ दादा साहब फालके पुरस्कार फिल्म उद्योग के लिए सराहनीय कार्य करनेवाले को सूचना और प्रसारण मंत्रालय के द्वारा दादासाहब फालके की याद में १९७० से यह पुरस्कार दिया जाने लगा।

❋ भारत में रेडियो प्रसार का श्री गणेश १९२७ में हुआ जब मंबई और कोलकाता में दो प्राइवेट ट्रान्समीटरों ने कार्य प्रारंभ किया।

❋ १९३० में सरकार ने आकाशवाणी विभाग को अपने हाथों में ले लिया।

❋ आकाशीय रेडियो सेवा का शुभारंभ १ अप्रैल १९९४ से हुआ।

❋ आकाशवाणी के राष्ट्रीय चैनल का प्रारंभ १८ मई १९८८ को हुआ था।

❋ इस समय आकाशवाणी सारे देश में रेडियो कार्यक्रम के लिए प्रसारण हेतु इन्सेट-१ डी व इन्सेट-२ ए का इस्तेमाल कर रहा है।

❋ विश्व का सबसे महंगा पनीर ले लेरून्स है, जो मादा भेड़ के दूध से बनाया जाता है।

❋ एशिया महाद्वीप में पाये जानेवाले पौधे टेलिग्राफ के पत्ते हमेशा फड़फड़ाते रहते हैं, चाहे हवा चले अथवा न चले।

❋ तपता हुआ नृत्य- बाली द्वीप में बच्चे संघयंग नामक एक धार्मिक अनुष्ठान में नंगे पांव लाल अंगारों पर नाचते हैं। नाचते-नाचते व समाधि की उस अवस्था में पहुंच जाते हैं, जहां न तो उन्हें पीड़ा का अहसास होता है और न ही वे घायल होते हैं।

❋ गोलकी एक ऐसा मसाला है जिसे काला सोना माना जाता है।

❋ हमारी पृथ्वी का ७५% भाग पानी में डूबा हुआ है।

❋ भारत में २००४-२००५ में १४२.७ मिलियन टन लोहे का उत्पादन हुआ। जिसमें से ५४.० मिलियन टन प्रयोग में लाया गया व ७८.१ मिलियन टन निर्यात किया गया।

❋ अमेरिका के ८० प्रतिशत लोग जीवन में एक न एक बार किसी अपराध के शिकार हो जाते हैं।

❋ इलेक्ट्रिक शब्द का प्रयोग पहली बार १६०० में विलियम गिलबर्ट ने किया जो रानी एलिजाबेथ प्रथम के डॉक्टर थे।

❋ मन्ना डे ने पहला गीत १९४५ में रामराज्य के लिए गाया था।

❋ दुबई की एक संस्था ने २१,९५८ वर्गफुट की फूलों की रंगोली बनाई।

❋ जोलांडा सेप्लक सबसे तेज धावक हैं।

❋ पूरे भारत में दलित उद्यमियों की संख्या २६ लाख २९ हजार ९१२ है। इसमें आदिवासी शामिल नहीं है।

❋ अपने संपूर्ण जीवनकाल में लुई १४ वें ने केवल तीन बार स्नान किया।

❋ सबसे पहले अंतरिक्ष में जानेवाला प्राणी लाइका नामक कुतिया थी।

❋ झारखंड सरकार ने कुछ महीने पहले ही तनुश्री दत्ता के नाम पर पोस्टकार्ड व स्टाम्प जारी किए हैं।

❋ सड़क के किनारे लेटर बॉक्स लगाने की प्रथा सन १६६३ से पेरिस में शुरू की गई थी ताकि नगर में पत्र-व्यवहार की सुविधा मुहैया की जा सके, यूं लेटर बॉक्स मुख्य मार्गों के मोड़ पर लगाये जाते थे और इनको एक दिन

में तीन बार खोला जाता था।

✻ दुनिया में सबसे अधिक संख्या में डाक घरोंवाला देश भारत है, यहां १९९८ में १ लाख ४४ हजार ८२९ डाकघर थे। डाक हेतु पत्रों पर मकान नंबर लिखने की प्रक्रिया पोंट नोट्रेडेम, पेरिस (फ्रांस) में १४६३ में आरंभ हुई थी।

✻ स्विटजरलैंड उन पत्रों और पार्सलों की औसत संख्या में (जो प्रत्येक व्यक्ति एक वर्ष के अंदर डाक द्वारा भेजता है।) सर्वप्रथम स्थान रखता है। १९८८ में यह संख्या ६५५ थी।

✻ ऑस्ट्रेलिया ने सबसे पहले पोस्टकार्ड सन १८६९ में और उसके बाद १८७० में ब्रिटेन ने जारी किये। प्राचीनतम डाक टिकट १ मई, १८४० को जीपीओ में बिक्री के लिए रखे गये, जिन पर ग्रेट ब्रिटेन की साम्राज्ञी विक्टोरिया के चित्र थे, वे एक पेंस मूल्य के थे।

✻ दुनिया में सबसे अधिक डाक अमेरिका की होती हैं, जहां जनता ने वर्ष १९९१ में १६५.९ मिलियन पत्र और पार्सल भेजे थे, तब अमेरिकी डाक सेवा के पास ७ लाख ४९ हजार कर्मचारी व पौने दो लाख कारों तथा ट्रकों का बेड़ा था, जो विश्व का सबसे बड़ा असैनिक वाहनों का बेड़ा है।

✻ ऑस्ट्रेलिया की श्रीमती इडाडॉगल तथा सेवेन्स ओकस, केंट की कु.आर. नार्टन के बीच पत्र व्यवहार ७५ वर्षों तक (१९०४-१९७९) चला जो श्रीमती डॉगल की मृत्यु के साथ ही समाप्त हुआ।

✻ सबसे बड़ा कैथीड्रल - न्यूयार्क का कैथीड्रल ऑल डॉयोसेस है। १२१,००० वर्गफुट क्षेत्रफल के भूतलवाली इस धर्मपीठ का घनत्व १६,८२२,००० घन फुट है। इस इमारत की आधारशिला दिसम्बर १८९२ में रखी हुई, लेकिन इमारत का काम १९४१ में रुक गया जो दोबारा से जुलाई १९७९ में ही शुरू हो सका।

✻ सबसे बड़ी मस्जिद- इस्लामाबाद की शाह फैजल मस्जिद का कुल क्षेत्रफल ४६ ९/१० एकड़ है। इसका प्रार्थनाघर ही १-१/५ एकड़ में फैला हुआ है। इसके समेत प्रांगण में एक लाख लोग एक साथ नमाज पढ़ सकते हैं। इसके बगल में स्थित मैदान में दो लाख नमाजी बैठ सकते हैं।

✻ सबसे बड़ा मंदिर- अंगकोरवाट का है। कंबोडिया स्थित यह मंदिर अब तक बने धार्मिक इमारतों से सबसे विशाल है। ४०२ एकड़ क्षेत्रफल में फैला है अंगकोरवाट का मंदिर। पूरा मंदिर १५ गुणा ५ मील के दायरे में फैला है, जिसमें ७२ प्रमुख स्मारक हैं। इसका निर्माण ९०० ईसवी सन् में शुरू हुआ था।

✻ सिक्कों का विचित्र संसार- सिक्के प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति, सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक स्थितियों के गवाह रहे हैं। विश्व में अनेक प्रकार के सिक्कों पर नजर डालें तो इसका संसार भी अपनी कम विचित्रताओं वाला नहीं है। यदि हम सिक्कों के आकार का अध्ययन करें तो कोई सिक्का हैट की आकृति का है तो कोई फावड़े का सा। कोई सिक्का घोड़े की नाल जैसा नजर आता है तो कोई चीते की जीभ जैसा। कागज, धातु, चमड़े, पत्थर, कौड़ियों आदि कई प्रकार के सिक्के भी विश्व के विभिन्न भागों में प्रचलित हुए। संसार का सबसे बड़ा सिक्का कहलाने का श्रेय हावर्ड गिब्ज नामक व्यक्ति के पास रखे तांबे के सिक्के को जाता है। इसका वजन लगभग ४३ किलोग्राम है। लगभग १५० वर्ष पूर्व अमेरिका के उत्तर देशों में इस सिक्के का प्रचलन था। वर्षों पूर्व बर्मा (अब म्यांमार) चाय, रूस में रोटी, चीन में मट्टा तथा बैनी कोरोद्वीप में पक्षियों के पंखों के सिक्कों का मूल्य पंखों की सुंदरता के आधार पर होता था। याब नामक द्वीप में पत्थर

के बड़े-बड़े टुकड़े सिक्के रूप में प्रचलित थे। फिजी द्वीप में व्हेल मछली के दांत और दक्षिणी अफ्रीकी में हाथी के बाल भी सिक्के के रूप में प्रचलित थे। बालों की लंबाई के आधार पर सिक्कों का मूल्य निर्धारित होता था। भारत में भी प्राचीन काल में विभिन्न प्रकार के सिक्कों का प्रचलन रहा है। हमारे यहां भी पत्थर, मिट्टी, कौड़ियां, चमड़ा, स्वर्ण, तांबा, गिलट, स्टील आदि सिक्कों के निर्माण में प्रयुक्त होते रहे हैं। हमारे यहां प्रचलित सिक्कों में मुख्यत: यहां के राजाओं, प्रसिद्ध व्यक्तियों विकास की कहानियों तथा महत्वपूर्ण घटनाओं को चिंतित किया जाता रहा है।

❋ मुंबई के रेस्तरां समूह संकल्प ने ३० फुट का डोसा बना गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्डस में अपना नाम दर्ज किया।

❋ अभी भी भारत के ५२,५८९ गांवों में सार्वजनिक टेलिफोन नहीं है।

❋ रॉबर्ट चार्ल्स डार्विन, अल्बर्ट आइंस्टीन सर आइजेक न्यूटन, कवि शेली, लियो टॉलस्टॉय, हर्बट जार्ज वेल्स, जॉर्ज बनार्ड शॉ, विलियम शेक्सपियर सभी शुद्ध शाकाहारी थे।

❋ अमेरिका के ८ से १० साल के उम्र के ४००० स्कूली बच्चों ने अमेरिकी राष्ट्रपति जार्ज बुश को २००० फुट लंबा पत्र लिखा जो दुनिया का सबसे बड़ा पत्र है।

❋ हमारे शरीर में खून ५ से ६ लीटर होता है।

❋ भारत में हर साल सोने की खपत करीब ८०० टन है।

❋ न्यूयार्क नगरपालिका निगम के क्षेत्र में दस लाख गली के कुत्ते हैं।

❋ धातु से बनी पहली नाव ई.स. १८०९ में बनी।

❋ समुद्र से वाष्पित होने के बाद पानी को वापस समुद्र में जाने में लगभग १००० वर्ष का समय लगता है।

❋ दादासाहेब फालके ने १९१२ में पहली एनीमेशन फिल्म बनाई।

❋ केवल ४ फीट की ली झियोशुन व ३ फीट का झंग देहुआ नामक चीनी युगल दुनिया के सबसे बौने युगल हैं।

❋ दीवार पर सिर पटकने से एक घंटे में आपकी १५० कैलोरी खर्च होती है।

❋ केंद्र सरकार ने २००२-२००३ में हस्तकला के कलाकारों को हुनरमंद करने के लिए प्रकल्प बनाया पर अब तक पूरे देश में ७१४.१६ लाख रुपए खर्च करने के बावजूद केवल ९,९८५ कलाकारों को ही प्रशिक्षण दिया गया।

❋ अधिकतर लिपस्टिक में मछलियों की त्वचा इस्तेमाल की जाती है।

❋ गुवाहाटी देश का सबसे ज्यादा घाटे में जानेवाला एयरपोर्ट है। यहां २००४-२००५ में ५,१०९.६७ लाख रुपए का घाटा दर्ज हुआ। इसके बाद क्रमश: नागपुर, इलाहाबाद, भुवनेश्वर, वाराणासी, जयपुर व लखनऊ के एयरपोर्ट घाटे में जानेवाले हैं।

❋ तिरुपति बालाजी की स्विस भक्त एलिजाबेथ ने अपनी सारी जमीन जो ५ करोड़ रुपए की है की वो पति की याद में जून २००५ में मंदिर को दान कर दी।

❋ पहला कीटनाशक स्प्रे जोसेफ लिस्टर ने १८६५ में बनाया।

❋ अमेरिका के जॉर्ज ब्लेयर ने ८७ वर्ष की आयु में वॉटर स्कीइंग की।

❋ हृदय हर साल छह लाख गैलन खून को पंप करता है।

✻ भारत का दुग्ध उत्पादन प्रति वर्ष ९०,७३३ हजार टन है।

✻ पहला आइस्क्रीम पार्लर १७७६ में न्यूयार्क में शुरू हुआ।

✻ पृथ्वी के सभी महाद्वीप उत्तर में चौड़े हैं बजाए दक्षिण के और इसका कारण कोई नहीं जानता।

✻ स्वीडेन की फ्रेसेंस कंपनी के कर्मचारियों ने २१५८ किलो वजन की सबसे बड़ी लॉली पॉप बनायी।

✻ यदि आपको पूरी तरह बंद कमरे में रहना पड़ जाए तो आप कार्बनडाइ आक्साइड के जहर से पहले मरेंगे न कि ऑक्सीजन की कमी से।

✻ देश के कुल क्षेत्रफल का लगभग ८ प्रतिशत हिस्सा चक्रवाती तूफान से असुरक्षित बना रहता है।

✻ दूध से भरे गिलास में हवा का वजन उतना ही होता है जितना एक एस्पिरीन टेबलेट में।

✻ पूर्व अफ्रीका के भेंड़पालक काद्री ने पहली पहली बार कॉफी के बीज चखे। यहां से १७०० में एक फ्रेंच पर्यटक इसे अमेरिका ले गया व यह कॉफी रूप में लिया जाने लगा।

✻ प्रति सेकंड आपकी बीस लाख रक्त कोशिकाएं मरती हैं और बीस लाख नई कोशिकाएं जिंदा होती हैं।

✻ भारत २३० लाख टन अनाज को देश के १,०४० गोदामों में सुरक्षित रख सकता है।

✻ इंगलैंड के सभी हंस रानी की संपत्ति हैं।

✻ २९ जनवरी १९५२ को मुंबई में पहला अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह हुआ था जो १५ दिन तक चला था।

✻ आठ भुजाओंवाले अष्टावक्र की भुजा की लंबाई २८ फीट होती है।

✻ छत्रपति शिवाजी तेरह वर्ष की आयु में ही तोरण का किला जीतकर औरंगजेब तथा बीजापुर के शासकों की आंखें की किरकिरी बन चुके थे।

✻ भारत कोकिला सरोजनी नायडू ने भी १४ वर्ष की आयु में ही चौदह सौ पंक्तियों की एक गंभीर कविता लिखी थी।

✻ एल. अथिरा कृष्णा ने लगातार ३२ घंटे वायलीन बजाने का रिकार्ड बनाया।

✻ हमारे शरीर में २०६ हड्डियां हैं।

✻ चमड़े और उससे बने उत्पादों के निर्यात से भारत का लाभ १२ प्रतिशत तक बढ़ने की उम्मीद है।

✻ फोरेंसिक आर्टिस्ट लुइस गिब्सन की मदद से १९८२ से अब तक अमेरिका के १५० अपराधियों को पकड़ा गया।

✻ अंगुलियों की छाप लेकर अपराधी पकड़ने की शुरुआत ब्रिटेन में १८९६ में हुई।

✻ दुनिया की सबसे बड़ी नदी नील है जो ६,६९५ किमी (४,१६० मील) लंबी है।

✻ जी. जयप्रकाश ने ४ सेमी की लंबाई का दुनिया का सबसे छोटा सुशिरी नामक वाद्य बनाया।

✻ रक्त के थक्के बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाली मेगाकरयोस्टाइल सबसे बड़ी कोशिका है जो ०.२ मिमी (०.०८७ इंच) लंबी है।

✻ कुक्कुट पालन के क्षेत्र में भारत, विश्व में छठें स्थान पर है।

✻ ताजमहल को बनाने में २२ साल तक २०,००० लोग जुटे थे।

✻ टोपेरी (हाथी-घोड़े-जिराफ या किसी भी कलाकृति में झाड़ियों को सजाना) की शुरुआत ३०० साल पहले १६९०

में हुई। ब्रिटेन के लेविन हॉल बगीचे में छाते के रूप में झाड़ी को आकार दिया गया था।

❋ सौर प्रणाली में सबसे गर्म जगह सूर्य के केंद्र में है। यहां का तापमान १५.६ सौ करोड़ डिग्री सेंटीग्रेट है।

❋ दक्षिण अफ्रीका के प्रेटोरिया शहर के कॉलेज छात्रों ने ३४ फीट लंबा हॉट डॉग बनाया।

❋ यदि आपका धरती पर वजन ७२ किलोग्राम है तो चंद्रमा पर केवल १२ किलोग्राम रह जाएगा। पर सूर्य पर यही वजन बढ़कर २०१६ किलोग्राम हो जाएगा।

❋ देश में २० से २५ वर्ष तक के लड़के-लड़कियों का औसत संतुलन बिगड़ गया है। इस उम्र के एक हजार युवकों पर केवल ७९६ युवतियां हैं।

❋ पन्द्रहवीं सदी तक अंग्रेजी भाषा में कोई विराम चिह्न नहीं थे।

❋ सबसे पहला बारूदी गोला १२३० में मंगोलों के बादशाह कुबलई (काबुली) खान ने बनाया।

❋ सूर्य का आकार इतना बड़ा है कि उसमें १०९ पृथ्वियां समा सकती हैं।

❋ सऊदी अरब के रियाद क्षेत्र का किंग खालिद इंटरनेशनल एयरपोर्ट सबसे बड़ा एयरपोर्ट है। जो १२० वर्ग किमी है।

❋ भारत द्वारा शोध एवं विकास गतिविधियों (आरएनडी) पर बहुत कम ०.८० प्रतिशत ही सकल आय का खर्च किया जाता है।

❋ सीधे हाथ से काम करनेवालों के लिए बनाए जानेवाले औजारों के प्रयोग से उलटे हाथ से काम करनेवाले २५०० से ज्यादा लोग प्रति वर्ष मरते हैं।

❋ इजीप्शियन की गूज ऐसी चिड़िया है जो ११-१२ मील ऊंचा उड़ सकती है।

❋ सबसे बड़ा होटल- यह खिताब लॉस वेगास, नेवादा स्थित एम जी एम ग्राण्ड हॉटेल और कैसीनो को हासिल है। ११२ एकड़ क्षेत्रफल में फैली इस इमारत में ३० मंजिलें, चार-चार टॉवर हैं। होटल में कुल ५,००५ कमरें, १५,२०० सीटोंवाला रंगस्थल और ३३ एकड़ में फैला थीमपार्क है।

❋ सबसे बड़ा इग्लू- स्वीडन के जुकासजवी स्थित आइस होटल के ३,८०० वर्ग यार्ड क्षेत्रफलवाले भूतल पर एक साथ सौ आदमी सो सकते हैं। अपने क्षेत्रफल और क्षमता के कारण यह विश्व का सबसे बड़ा इग्लू है। पिछले पांच वर्षों से लगातार इसका दिसंबर में पुनर्निमाण किया जाता है। खास बात यह कि प्रत्येक वर्ष इसका आकार बढ़ता जाता है। वर्तमान में इसमें बर्फ के शिल्प, एक सिनेमाहॉल, सोनाबॉथ, बार और विश्व का एकलौता बर्फ का चैपल है।

❋ सबसे बड़ा महल- माना जाता है बीजिंग स्थित इम्पीरियल पैलेस। यह कुल १७८ एकड़ क्षेत्रफल में बना हुआ है।

❋ सबसे बड़ा रिहायशी महल- ब्रूनई के सुल्तान का महल इस्ताना नुरूल इमान विश्व का सबसे बड़ा रिहायशी महल है। ४०० मिलियन डॉलर की लागत से तैयार इस आलीशान महल में १,७८८ कमरे, २५७ बाथरूम और अण्डरग्राउण्ड गैरेज हैं, जिसमें १५३ कारें खड़ी हो सकती हैं। यह महल १९८४ में बनकर तैयार हुआ।

❋ कैलाश पर्वत की यात्रा करने के लिए तिब्बत जाना पड़ेगा।

❋ होमर ग्रीक भाषा के प्रमुख कवि थे।

❋ भारत के पंजाब में राज्य के प्रति व्यक्ति विद्युत की खपत सर्वाधिक है।

❋ भारतीय इस्पात उद्योग का जनक सर जमशेदजी टाटा को कहा जाता है।

❋ खनिज तेल का प्रथम कुंआ अमेरिका देश में खोदा गया था।

❋ आपके मस्तिष्क में इतनी कोशिकाएं हैं कि उनकी संख्या धरती पर रहनेवाले इंसानों से तीन गुना ज्यादा है।

❋ संसद चलाने का एक मिनट का खर्च भी २०,००० रुपए आता है। संसद का २६ प्रतिशत समय कोहराम में फालतू जाता है।

❋ औसतन हर दिन १२ नवजात शिशु गलत पालकों को थमा दिए जाते हैं।

❋ स्काऊट की शुरुआत १९०३ में ब्रिटिश सेना के लेफ्टीनेंट कर्नल सर रॉबर्ट बेडन पॉवेल ने की।

❋ बिच्छु को शराब का एक छोटा घूंट भी पिला दिया तो वह पगला जाता है। ऐसी स्थिति में वह कई बार खुद को डंक मार लेता है।

❋ अमेरिका के पॉल मैक कापी ने ११४ फुट का गुब्बारा शिल्प बनाया।

❋ भागने पर आपकी कम ऊर्जा खर्च होती है बजाए एक ही जगह कूदने के।

❋ भारत में बालों के जेल व क्रीम का व्यवसाय अभी ३० करोड़ रुपए का है।

❋ वेबस्टर की १९९६ की डिक्शनरी की ३१५ प्रविष्टियां प्राप्त नहीं हो पाईं वे गुम गईं थी।

❋ घर बैठे इंटरनेट से आप दुनियाभर की जानकारी पा सकते हैं। याहू, गुगल जैसे कई सर्च इंजन आपकी मदद कर सकते हैं।

❋ ऑस्ट्रेलिया के रोर्ले दुवाल ने १० फीट ऊंची कार बनाई।

❋ हमारी हथेली की त्वचा प्रति वर्ग इंच में ३,००० स्वेद (पसीना) ग्रंथियां होती हैं।

❋ जापानी सुमो पहलवान कोनोशिकी रोज ५०० दंड बैठक पेलता है।

❋ देश में तीन करोड़ मामले छोटी-बड़ी अदालतों में लटके पड़े हैं।

❋ मदर्स-डे, टेलीफोन कंपनियों के लिए व्यस्ततम दिन होता है। किसी भी अन्य दिन की तुलना में इसमें कार्ड सबसे ज्यादा खरीदे जाते हैं ?

❋ पहला गुड़िया घर १५५८ में ड्यूक अल्बरेश्च्ट ने बनाया।

❋ १९३५ में सबसे ज्यादा यानि दो चंद्रग्रहण व पांच सूर्यग्रहण पड़े थे।

❋ गर्भाधान के समय अंडे के रूप में बच्चे का आकार ऑलपिन की नोंक के बराबर होता है।

❋ आइस स्केटिंग में स्वीडन के गिलीस ग्रेफस्ट्रॉम ने तीन बार गोल्ड मेडल जीता।

❋ देश के मंदिरों में लिफाफों में बंद हर साल ७५० करोड़ रुपये तक का प्रसाद बंटता है।

❋ न तो सेक्साफोन न ट्यूबा न कॉरनेट। इनमें से ऑर्केस्ट्रा में बजाए जानेवाले कोई भी वाद्य १८०० से पहले ईजाद ही नहीं हुए थे।

❋ चीन में ई.पू. डेढ हजार में शेन नून राजा शिकार पर गए थे तब उन्होंने चाय पत्ती की खोज की।

❋ विश्व का सबसे बड़ा बंदरगाह जहां बड़ी संख्या में माल उतरता-चढ़ता है वह हांगकांग का है।

❋ हर कोई एक घंटा यानी ६० मिनट को कोई अहमियत नहीं देता, आप भी शायद नहीं देते होंगे। लेकिन प्रकृति (होनी-अनहोनी, विश्व का संचालक) के लिए एक-एक क्षण की कीमत होती है। इस थोड़े से लगनेवाले ६० मिनट में विश्व में क्या कुछ हो जाता है- एक घंटे में पृथ्वी ६६०० मील की यात्रा अपनी धुरी पर कर लेती है। पृथ्वी पर ब्रह्मांड से लगभग ८३ टन धूल की वर्षा इस समय में हो जाती है। इस ६० मिनट के समय में पृथ्वी को औसतन बीस झटके लग जाते हैं। एक घंटे में विश्व में औसतन तीन हजार शादियां हो जाती हैं। अबाध गति से बोलनेवाले वक्ता महोदय पांच हजार शब्द बोल देते हैं। हमारा शरीर भी लगातार गतिशील रहता है तभी हमारा जीवन चलता रहता है। एक घंटे में हमारे शरीर में क्या-क्या होता है। विश्व में बारह हजार से अधिक बच्चे औसतन एक घंटे में जन्म लेते हैं। हमारा शरीर इस दौरान इतनी ऊर्जा खर्च कर देता है कि यदि उससे पानी गर्म करें तो आधा किलो पानी आसानी से उबल जाए। हमारे हाथों के नाखून एक इंच के ३२६ वें भाग के बराबर बढ़ जाते हैं। एक घंटे में हमारा दिल लगभग दो टन खून पम्प कर देता है।

❋ ५० प्रतिशत रूसी आज भी मानते हैं कि जोसफ स्टालिन जनता का नेता था। २५ प्रतिशत मानते हैं कि वह आज राष्ट्रपति का चुनाव लड़े तो उसे ही वोट देंगे।

❋ अमेरिका के ५,३०,००० बैंक टैलर्स में से हरेक के हाथों औसतन २५० डॉलर प्रतिवर्ष का गलत भुगतान हो जाता है। यह कुल राशि १३.२ करोड़ डॉलर होती है।

❋ तानसेन के गुरु थे स्वामी हरिदास।

❋ प्राचीन काल में देश, राज्य और व्यक्ति की संपन्नता की पहचान उसके स्वामित्व में कितने गोकुल हैं, इससे होती थी। युधिष्ठिर के पास अठारह गोकुल थे जिसमें प्रत्येक दस लाख गायों का था। इन सबकी देखभाल का कार्य पाण्डुपुत्र सहदेव के जिम्मे था।

❋ गोदान प्रेमचंद के उपन्यास का नाम है।

❋ बंगला देश का राष्ट्रीय फल कटहल है।

❋ संसार में मोहम्मद नामक व्यक्ति सर्वाधिक हैं।

❋ पहला विश्व मेला १८५९ में लंदन में हाइड पार्क में लगाया गया।

❋ भारत की नर्मदा तथा ताप्ती दोनों नदियां पूर्व से पश्चिम की तरफ बहती हैं।

❋ हवा का १/५ भाग वस्तुओं के जलने में काम आता है। यह हवा का सक्रिय भाग है।

❋ शुद्ध पानी रंगहीन, गंधहीन तथा स्वादहीन होता है।

❋ जयपुर शहर १७७२ में बसा था।

❋ दक्षिण भारत में काइनेमा सेंट्रल सबसे पुराना सिनेमाघर है।

❋ आयरलैंड में पहाड़ों से घिरे एक स्थान में बिगुल की एक आवाज की १०० गूंजें तक गिनी जाती हैं।

❋ जर्मनी के राजा ओटो एडवर्ड लीओपोल्ड व्हॉन बिस्मार्क ने १८९१ में वृद्धों को पेंशन देने की शुरूआत की।

❋ भारतवर्ष में आयुर्वेदाचार्य सुश्रुत ने नाक शल्य क्रिया की तकनीक ई.पू. १०० वर्ष पहले विकसित की थी।

❋ भारत के सुरेश शर्मा ने लकड़ी पर चलनेवाला पंखा बनाकर कीर्तिमान किया।

❋ जन्मांध लोगों को सपने में दृश्य नहीं दिखते केवल ध्वनियां सुनाई देती हैं।

❋ भारत के ९० प्रतिशत डाक घर बचत बैंक ग्रामीण क्षेत्रों में हैं। ग्रामीण क्षेत्र में इनकी संख्या १,३८,७४९ व शहरी क्षेत्र में १६,४४४ हैं।

❋ संसार की पहली घड़ी की स्प्रिंग घोड़े के बालों से बनाई गई थी।

❋ लीथियम सबसे हल्की धातु है।

❋ रात को सोते समय हम ५ रंगीन सपने देखते हैं जो १० से ३० मिनट के होते हैं।

❋ देश में कपास उत्पादन केंद्रों की संख्या २६२ है।

❋ संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष २००६ को अंतर्राष्ट्रीय मरुस्थल वर्ष घोषित किया है।

❋ एक्यूप्रेशर का प्रयोग अमेरिका में १९७१ में लोकप्रिय हुआ।

❋ बुध व शुक्र का कोई उपग्रह नहीं है।

❋ भारत के अरुण कुमार के नाम २,०३५ प्रकार के अलग-अलग दुर्लभवाले एकत्रित करने का रिकार्ड दर्ज है।

❋ हमारे शरीर में इतना फास्फोरस है कि माचिस की २०० से ज्यादा तीलियां बन जाएं।

❋ देश में २.५ करोड़ बाल मजदूर हैं।

❋ ऑपरेशन करते हुए जो सर्जन संगीत सुनते हैं वे दूसरों से ज्यादा अच्छा ऑपरेशन कर पाते हैं।

❋ १८ किलोग्राम वजन का म्यूट स्वान उड़ सकता है।

❋ जावेद स्पाइसर स्प्रिंगफील्ड शस्त्रागार में शेज की बगावत में २५ जनवरी १७८७ को दो गोलियों के लगने से मारा गया। उसने उस समय वही कोट पहन रखा था, जो उसे भाई डेनियल ने उस समय पहन रखा था, जब ५ मार्च, १६८४ को दो गोलियों द्वारा उसकी हत्या कर दी गयी थी। जावेद को मारनेवाली गोलियां कोट के इन्हीं दो छेदों में से होकर पार हुई थीं, जो तीन साल पहले डेनियल की हत्या के समय उसमें बन गये थे।

❋ इटली के राजा अम्बेटो प्रथम (१८४४-१९००) का अम्बर्टी सन्तिनी नामक एक हमशक्ल व्यक्ति था। शक्ल से दोनों एक जैसे ही लगते थे। दोनों टोरिनो में एक ही दिन पैदा हुए। एक ही दिन अम्बेटो राजा बना, तो दूसरा एक रेस्तरां का मालिक। दोनों की ही पत्नियों का नाम मार्गेरिटा था तथा दोनों के एकलौते पुत्र का नाम विक्टोरिया ही रखा गया था। दोनों एक ही दिन इटली में घायल होकर मरे।

❋ विश्व की प्रथम धोखाधड़ी रहित मशीन बनानेवाले अर्ल लेफरॉफ को आजीवन कारावास की सजा दी गयी। कारण था- धोखाधड़ी।

❋ मैनोमीटर गैस का दाब नापने का यंत्र है।

❋ बैरोग्राफ किसी समयान्तराल में वायुमण्डलीय दाब के परिवर्तनों को कागज पर अंकित करनेवाला यंत्र है।

❋ गाइगर काउण्टर रेडियो एक्टिव विकिरण का संसूचन करने का उपकरण होता है।

❋ हाइड्रोफोन यंत्र जल के अंदर ध्वनि अंकित करता है।

❋ थिथोजोलाइट अनुप्रस्थ तथा लम्बवत कोणों का माप ज्ञात करने का यंत्र है।

✻ मेगाफोन ध्वनि को दूर स्थान तक ले जानेवाला यंत्र है।

✻ थर्मोस्टेट किसी वस्तु का ताप एक निश्चित बिन्दु पर बनाए रखने का यंत्र है।

✻ गर्म पानी की तुलना में ठंडे पानी में जहाज ज्यादा तेज चलता है।

✻ बिना पानी पिए चूहा ऊंट से अधिक दिनों तक जीवित रह सकता है।

✻ आधे चांद से पूरा चांद नौ गुना ज्यादा चमकदार होता है।

✻ महापुरुषों की जयंतियाँ- सी.वी.रामन- २८ फरवरी, मोरारजी देसाई- २९ फरवरी, मानदेव नाथ राय- २१ मार्च, राम मनोहर लोहिया- २३ मार्च, जगजीवन राम- ५ अप्रैल, राहुल सांकृत्यायन- ९ अप्रैल, डॉ. बी.आर.अम्बेडकर- १४ अप्रैल। महापुरुषों की जयंतियाँ- सर सय्यद अहमद खां- १७ अप्रैल, सत्यजीत राय- २ मई, मोतीलाल नेहरू- ६ मई, रविंद्र नाथ टैगोर- ७ मई, गोपाल कृष्ण गोखले- ८ मई, छत्रपति शिवाजी- १२ मई, फखरूद्दीन अली अहमद- १३ मई, नीलम संजीव रेड्डी- १९ मई, श्यामा प्रसाद मुखर्जी- ६ जून।

✻ सोडा वाटर में बिल्कुल सोडा नहीं होता है।

✻ डायनामाइट बनाने में मूंगफली का प्रयोग किया जाता है।

✻ मनुष्य के पेशी-तंत्र में ६ सौ से अधिक मांसपेशियां होती हैं।

✻ २४ घंटे में एक व्यक्ति औसतन २३,००० बार सांस लेता है।

✻ भारत में चावल की कम से कम ८० किस्में पाई जाती हैं।

✻ सहारा रेगिस्तान में तेगज्जा नामक शहर पूरी तरह से नमक से बना है।

✻ १५ वर्ष की आयु में मनुष्य के मस्तिष्क का आकार विकास रुक जाता है।

✻ अमेरिका में मुर्गियां प्रति मिनट १३,८०,००० अंडे देती हैं।

✻ कराटे का अर्थ खाली हाथ।

✻ विशालतम संरचना- चीन की दीवार, सबसे लंबी सुरंग- जापान, ५४ किमी., सबसे ऊंची राजधानी- ला पाज बोलीविया, सबसे ऊंचा नगर- ल्हासा, सबसे महंगा नगर- टोकियो (जापान), सबसे चौड़ा जलप्रपात- खोने, सबसे अधिक जनसंख्यावाला देश- चीन, सबसे कम जनसंख्यावाला देश- वैटीकन सिटी, सबसे बड़ा पार्क- वुड बफैलो, कनाडा।

✻ इटली की लुका ब्रागुटी ने १५०० लीटर क्षमतावाला कॉफी मग बनाया।

✻ दिमाग में पीनलग्लैंड होती है जो मेलाटोनिन द्रव निकालती है। यही बाद में खून में मिलता है। यही हॉर्मोन हमें नींद के लिए तैयार करता है।

✻ घड़ियों को सरलता से चलायमान बनाने के लिए लगभग १३,५०० गैलन तेल लगता है।

✻ अमेरिका के डॉक्टरों को १९८१ में एक अलग सिंड्रोम दिखा। फ्रेंच शास्त्रज्ञ डॉ. ल्यूक माटेग्नियर ने १९८३ में इसके कारणीभूत रोगाणु का पता लगाया। यही विषाणु ह्यूमन इम्प्रुनो डेफिशियंसी सिंड्रोम (एड्स एच.आय.व्ही.) कहलाया।

✻ पृथ्वी के घरातल के नीचे जितने जाएंगे उतने हर ६० फीट पर १ डिग्री सेंटीग्रेड तापमान बढ़ता जाएगा।

✻ तमिलनाडु के एक ही स्कूल में ५९ जुड़वा बच्चे शिक्षा ले रहे हैं।

✻ नवजात शिशु का सिर उसकी कुल ऊंचाई के १/४ के बराबर होता है।

✻ फ्री डायव्हिंग में आस्ट्रेलिया का हबर्ट निंट वर्ल्ड चैंपियन है।

✻ देश में औसतन प्रति हेक्टेयर पर १०.३० टन फल व १४.८० टन सब्जियों का उत्पादन होता है।

✻ इंग्लैंड में १८८० के काल में पैंट्स को भद्दे शब्द के रूप में लिया जाता था।

✻ गुरु सौर मंडल का सबसे बड़ा ग्रह है, जिसके १४ उपग्रह व परिक्रमण काल १२ वर्ष है।

✻ सिर के बाल एक दिन में ०.३ मिमी मीटर और दाढ़ी के ०.६ मिमी मीटर बढ़ते हैं।

✻ टॉमी क्लोअर्स के नाम मोटर साइकिल से ३५ फीट ऊंची छलांग लगाने का रिकार्ड दर्ज है।

✻ सरकारी जानकारी के मुताबिक हमारे देश में ४० करोड़ बच्चे अभी भी जिंदगी की बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं।

✻ गलत जगह कार पार्किंग करने पर सबसे ज्यादा दंड अमेरिका में भरा जाता है।

✻ भारत के पहले हास्य क्लब की स्थापना मुंबई में हुई थी।

✻ जर्मनी में १९३८ में छपी २.९ मिलीमीटर लंबी व २.४ मिलीमीटर चौड़ी सबसे छोटी किताब है।

✻ फिंगर प्रिंट्स इसलिये लिए जाते हैं, क्योंकि किन्हीं भी दो लोगों की अंगुलियों के निशान कभी एक समान नहीं होते।

✻ वड सर्फिंग में इटली के सेरगियो फेरेरो सबसे आगे है।

✻ देश की लगभग १०-१२ प्रतिशत जनसंख्या किडनी रोग से ग्रस्त है।

✻ बंदूक से निकली गोली १४ घंटे में पृथ्वी की परिक्रमा कर पाएगी।

✻ खाद्य पदार्थ लंबे समय तक ताजा बना रहे इसलिए १८०९ में फ्रेंच शास्त्रज्ञ निकोलस अपार्ट ने पहला संशोधन प्रस्तुत किया।

✻ मोहम्मद नझीबुद्दीन अंसानी ने लगातार २५ घंटे डांस किया।

✻ भारत में ११२ लाख बाल गृहकार्य करनेवाले हैं। इसमें से ९० प्रतिशत लड़कियां हैं।

✻ चार्ली चैपलिन १९२० व १९३० में इतना प्रसिद्ध था कि लंदन के दो दिवसीय प्रवास में उसे ७,३०० पत्र आए थे।

✻ पहले पहले बनी अलार्म घड़ी में केवल सुबह चार बजे का अलार्म बजता था।

✻ बत्तख केवल अहले सुबह ही अंडे दे पाती हैं।

✻ अब तक ५५० लेख व कहानियों के साथ ही सिंधी व मराठी भाषा की किताबों के साथ सिंधी साहित्यकार तोलाराम रहेजा का नाम लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्डस् में दर्ज है।

✻ हमारे दोनों गुर्दों में प्रत्येक में लगभग १० लाख छोटी इकाई (वृक्कागु) होती है।

✻ देश में ४१ फीसदी बच्चों का तो जन्म के समय उस सरकारी रजिस्टर में नाम ही दर्ज नहीं हो पाता जिसके सहारे बच्चों की गिनती होती व योजनाएं बनती हैं।

✻ फिलीपींस में दांतों का प्राकृतिक रूप से होना स्त्री पुरुष दोनों के लिए कुरूपता की निशानी माना जाता था। इस कारण वहां रेती से घिस-घिसकर दांतों को नुकीला बनाया जाता था।

✻ दुनिया का पहला शब्दकोश ई.स. १०० में शू शेन ने तैयार किया था।

❋ ख्यात संगीतकार खय्याम का पूरा नाम मोहम्मद जहूर खय्याम हाशमी है।

❋ दुनिया की सबसे बड़ी अखंड प्रतिमा जैन धर्म के २५ वें तीर्थकर भगवान पार्श्वनाथ की है। जो दुनिया की सबसे बड़ी पंचधातु में बनी अखंड प्रतिमा है। मुंबई से १०३ किमी दूर मुंबई अहमदाबाद राजमार्ग पर मनोर (ठाणे) में यह २५ करोड़ रुपए की लागत से बनी है।

❋ पुरुषों को महिलाओं की तुलना में जल्दी नींद आती है।

❋ ट्रेकिंग की शुरुआत ८ अगस्त १७८६ को होरेस बेनिडिक्स ने की।

❋ लोकसभा के सांसदों में २.५ प्रतिशत पर कम से कम एक अपराध दर्ज है। इनमें से ३०% ३६ से ४५ आयु वर्ग के हैं।

❋ अमेरिकी कांग्रेस ने १९८७ में मार्च महीने को वीमेंस हिस्ट्री मंथ घोषित किया। तब से इसे इसी रूप में मनाया जाता है।

❋ देश में आंगनवाड़ी योजना की शुरुआत १९७४ में हुई।

❋ समुद्र का पानी खारा होता है, लेकिन मृत सागर का पानी अन्यों की तुलना में ८ प्रतिशत ज्यादा खारा है।

❋ जापान के याकोहामा परिवार में चार पीढ़ियों के लोगों का जन्मदिन एक ही दिन है।

❋ पैदा होते समय नवजात शिशु का वजन ढाई से तीन किलो होता है व ऊंचाई ५० से.मी.

❋ स्पेन के एंजल रोल्डन निएटो ने लगातार पांच बार मोटोक्रास की अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा में यश कमाया।

❋ भारत में जन्मदर व मृत्युदर में कमी आने से ६० वर्ष से अधिक आयु के लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है।

❋ आलू में कार्बोहाइड्रेट्स, फास्फोरस, पोटेशियम, तांबा, लोह, गंधक आदि हैं। मेहनत करनेवाले, अतिपरिश्रम से दुर्बल हुए लोगों के लिए आलू बहुत पोषक है।

❋ इंग्लैंड के राजा जॉर्ज प्रथम को अंग्रेजी नहीं आती थी। वे जर्मन भाषा का उपयोग करते थे।

❋ एक तूफान को पृथ्वी की परिक्रमा करने में ६० घंटे लगते हैं।

❋ चेन्नई के एस. राजेंद्र ने लगातार १५१ घंटे मुंह में ब्रश रख चित्रकारी करने का रिकार्ड बनाया।

❋ मस्तिष्क में लगभग १० अरब कोशिकाएं हैं व इसका वजन लगभग १.४ किलो ग्राम होता है।

❋ भारत विश्व के ३ सबसे तेजी से विकसित हो रहे पर्यटन केंद्रों के रूप में उभर रहा है।

❋ टाइपिंग करते हुए बाएं हाथ का प्रयोग ५६ प्रतिशत तक करना पड़ता है।

❋ सबसे बड़ा रेलवे पुल अमेरिका का लांग ब्रिज है।

❋ पैर के नाखून हाथ के नाखूनों की तुलना में कम गति से बढ़ते हैं।

❋ देश में कुष्ठरोगियों की संख्या १,४८,९१० है। इसमें क्रमश: उत्तर प्रदेश, पं. बंगाल, बिहार, महाराष्ट्र, उड़ीसा, झारखंड में सर्वाधिक कुष्ठरोगी हैं।

❋ जब आप हंसते है तो संसर्ग व रोग को दूर करनेवाली श्वेत रक्त कणिकाएं बढ़ती हैं।

❋ दुनिया का पहला अनगढ़ प्रेशर कुकर बनाने का श्रेय डेनिस पॅपीन को जाता है जिन्होंने १६८० में इसे बनाया।

❋ जापान के असोनो कंपनी के कर्मचारियों ने १५ फीट व्यास का ड्रम बनाया।

❋ एक युवक के शरीर पर लगभग ५ करोड़ बाल होते हैं।

❋ भारत ने २००५ में ८४४ पाकिस्तानियों को भारतीय नागरिकता दी। वही १८५ अफगानिस्तानियों व ६३ श्रीलंकाइयों को नागरिकता दी।

❋ इटली में जनसंख्या वृद्धि न होने से वहां हर बच्चे के जन्म लेने पर ६ लाख रुपए ईनाम देने की घोषणा की है।

❋ १९०२ में रुजवेल्ट अमेरिका के राष्ट्रपति थे व जनता में वे टेडी नाम से प्रसिद्ध थे। एक बार मिसिसिपी में शिकार पर जाते हुए एक सफेद भालू उन्हें देख झाड़ियों में छिपा व कांपने लगा। वाशिंगटन पोस्ट ने १८ नवंबर १९०८ को टेडी बियर कार्टुन छापा व १९०३ के लेपजिंग सम्मेलन में वह पहली बार खिलौने के रूप में रखा गया।

❋ यदि चांद के पृष्ठ पर बन्दूक दागी जाए, तो क्या एक किलोमीटर की दूरी पर किसी आदमी को उसकी ध्वनि सुनाई पड़ेगी ? - ध्वनि के संचरण के लिए माध्यम आवश्यक होता है, चूंकि चांद पर वायुमण्डल नहीं है इसलिए ध्वनि का संचरण संभव नहीं होगा। अत: एक किलोमीटर दूरी पर दागी गई बन्दूक की आवाज आदमी नहीं सुन पाएगा।

❋ तिथियां और उनके स्वामी- प्रतिपदा- अग्नि, द्वितीया- ब्रह्मा, तृतीया- गौरी, चतुर्थी- गणेश, पंचमी- शेषनाग, षष्ठी- कार्तिकेय, सप्तमी- सूर्य, अष्टमी- शिव, नवमी- दुर्गा, दशमी- काल, एकादशी- विश्वदेव, द्वादशी- विष्णु, त्रयोदशी- काम, चतुर्दशी- शिव, पूर्णमासी- चंद्रमा, अमावस्या- पितर।

❋ फ्रांस में एक अखबार रूमाल जैसा निकला करता था, जो रूमालों पर ही छपता था। इसे पाठकगण बाद में उपयोग किया करते थे।

❋ १८४५ में रूस के सम्राट ने बर्फानी प्रदेश में एक बर्फ का महल बनवाया था। इसे बर्फ की सिलें काटकर बनाया गया था।

❋ १९७७ में एक अमेरिकी ने ऑस्ट्रेलिया के पहाड़ी प्रदेश से शुद्ध सोने का एक डला निकला, जिसका वजन करीब छह सेर और मूल्य ढाई लाख पौंड था।

❋ सामान्य व्यक्ति के शरीर में प्रतिदिन २५०० कैलोरी ऊर्जा बनती है।

❋ देश के लिए मर मिटनेवाले वर्दीधारी सैनिकों में से २००५ में ११९ ने आत्महत्या का मार्ग चुना। इसमें नेवी के चार, एयरफोर्स के २३ व सबसे ज्यादा ९२ आर्मी के आदमी थे।

❋ साफ पानी के एकत्रीकरण के लिए पहला बांध इ.स. १४०० में तुर्कस्तान में बांधा गया।

❋ स्वित्जरलैंड के सोल्डानेवा फूल के बीज यदि बर्फ में गाड़ दिए जाएं तो अंकुर बर्फ को फाड़ कर बाहर आ जाता है।

❋ हमारी आंतों की लंबाई लगभग २७ फुट होती है।

❋ खाना खाने के बाद गुलकंद खाने से पाचनक्रिया व्यवस्थित होती है।

❋ प्राचीन ग्रीक वासी पत्थर को तकिया बनाकर सोते थे।

❋ अमेरिका में कंगारू रेट नामक एक ऐसा जीव पाया जाता है जिसे जीवन भर पानी की जरूरत ही नहीं पड़ती है और वह बिना पानी पिये ही सारी उम्र गुजार देता है। दरअसल इसे पानी की बहुत कम आवश्यकता होती है जो पेड़-पौधों की जड़ों आदि को खाकर पूरी हो जाती है और अलग से पानी पीने की जरूरत ही नहीं पड़ती।

❋ मनुष्य का एक और दिमाग पेट में होता है।

❋ मलावी के राष्ट्रपति बिंगू वा मुतारिका ने मार्च २००५ में ३०० बैडरूमवाले राष्ट्रपति निवास को यह कहकर खाली

कर दिया कि उसमें भूत रहते हैं।

✻ दक्षिण अफ्रीका में बंदूक रखने के कानूनों में सख्ती होने के बाद से तलवारों, भालों और धनुषों की बिक्री बढ़ गई है।

✻ कैवालेट्री नामक इटालियन व्यक्ति ने साफ्टड्रिंक के ३२८४ कैन इकट्ठा किए।

✻ हमारे शरीर में ३ से ४ किलोग्राम खून होता है।

✻ हमारे देश में १५ वर्ष से अधिक आयु के एक करोड़ ६७ लाख लोग इंटरनेट का प्रयोग करते हैं। मतलब कुल जनसंख्या के एक प्रतिशत से कुछ ज्यादा।

✻ अगर एक गृहिणी के सारे कार्यों का लेखा-जोखा तैयार किया जाए व हर काम के लिए एक निश्चित वेतन हो तो उसका सालाना वेतन ठहरता है ५५ लाख रुपए।

✻ शनि पर दिन की अवधि मात्र ११ घंटे ४७ मिनट व ६ सेकंड होती है व इसे पूरा चक्कर लगाने में १० घंटे ४७ मिनट का समय लगता है।

✻ एक पाउंड केसर तैयार करने के लिए करीब ७५,००० फूलों की जरूरत होती है।

✻ इलिनोइस के वकील एमर्ट विस ने गलती से अपने खिलाफ ही मुकदमा दायर कर दिया।

✻ १९५० में जब कोरिया युद्ध शुरू हुआ तब कॅप्टन वॉयला मैकोनल समूचे कोरिया प्रायद्वीप में एकमात्र फौजी नर्स थी।

✻ न्यूयॉर्क टाइम्स ने १० अक्टूबर १९७१ को रविवार का एडीशन १५ खंडों, ९७२ पन्नों व १२ लाख लाइनों का निकाला था। इसका वजन था साढ़े सात पाउंड व कीमत थी ५० सेंट।

✻ जब हम सोते हैं तो हमारे मस्तिष्क के विभिन्न तंत्रों के नॉड्स-एक दूसरे से संपर्क तोड़ लेते हैं व मस्तिष्क छोटे-छोटे विभागों में बंट जाता है।

✻ लॉन टेनिस को पहले स्फाइरीस्टिक के नाम से जाना जाता था।

✻ जम्मू-कश्मीर व उत्तर पूर्व राज्यों में शांति स्थापित हो सके इसलिए २००५ में १३६ जवानों ने जान की बाजी लगा दी।

✻ ब्रूस ली इतने तेज थे कि फिल्म को वास्तव में अपनी गति कम करानी पड़ती है ताकि उनकी गतिविधि दर्शक देख सकें, वैसे यह नियमों के विरुद्ध है।

✻ भारत में १७ अप्रैल १८५३ को पहली रेलगाड़ी चली। भारत की पहली रेलगाड़ी बम्बई और ठाणे के बीच १७ अप्रैल १८५३ को चली।

✻ नीदरलैंड के निएक वर्मेड लेन ने ७५५ हवाई यात्री कंपनी के ३,३०७ एयर बैग्ज का संग्रह किया।

✻ हमारे शरीर में ६०० स्नायु हैं।

✻ भारत के पास दुनिया की कुल २.४५ प्रतिशत भूमि है।

✻ गर्भवती महिलाओं व बच्चों के लिए लियाबीन बहुत पौष्टिक होता है।

✻ जब से पृथ्वी के तापमान संबंधी रिकार्ड आंकड़ों में उपलब्ध हैं यानी १८९० से लेकर २००५ तक में सबसे गर्म वर्ष सन २००५ रहा।

✻ ज्यूल्स रिमेट ने १९२० में पहली अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल स्पर्धा आयोजित की।

❋ क्रिश में ९० मिनट्स के स्पेशल इफैक्टस् हैं जिनका खर्च १५ करोड़ रुपए आया।

❋ खरबूज खाने से यकृत की सूजन कम होती है।

❋ चीन में दुनिया का सबसे बड़ा जायंट वील है। इस स्टार ऑफ नान चैंग की ऊंचाई ५२५ फीट है।

❋ जन्म के समय बच्चों के मस्तिष्क का आकार वयस्कों के मस्तिष्क के आकार का करीब ७० प्रतिशत होता है, लेकिन उसके शरीर का वजन वयस्कों की अपेक्षा केवल ५ प्रतिशत ही होता है।

❋ सरकारी सूत्रों के मुताबिक देश में अवैधानिक तरीके से दूसरे देशों के ६३,००० लोग रह रहे हैं। इसमें सबसे ज्यादा ३५,७१८ बांग्लादेशी हैं तो अमेरिका के ७१६ लोग हैं।

❋ प्रति सेकंड दुनिया की जनसंख्या में ४४ लोगों की वृद्धि हो रही है। इस समय दुनिया की जनसंख्या ७.५ अरब हो चुकी है।

❋ सबसे पहले तरबूज की पैदावार मिस्र में आज से लगभग सवा पांच हजार साल पहले शुरू हुई थी।

❋ ठण्ड महसूस होने पर व्यक्ति कांपते क्यों हैं ? - ठण्ड के कारण कंपकपी आना मांसपेशियों की स्वचालित गति है, जब हमें कंपकपी आती है, तो मांसपेशियां बहुत जल्दी-जल्दी सिकुड़ती एवं फैलती हैं। हर बार जब हमारी मांसपेशियां सिकुड़ती हैं, तो उनकी कोशिकाओं में अधिक खाद्य एवं ऊर्जा का व्यय होता है, इससे उष्मा उत्पन्न होती है। इस प्रकार कंपकपी आना शरीर की एक ऐसी क्रिया है, जो शरीर को गर्म रखने में सहायता प्रदान करती है। इसलिए जब हम ठण्ड महसूस करते हैं तब कंपकपी अपने आप होने लगती है।

❋ भारत में रेल मार्गों के निर्माण का कार्य १८५० में तत्कालीन वायसराय लार्ड डलहौजी के कार्यकाल में प्रारंभ हुआ। रेलवे बोर्ड की स्थापना १९०५ में हुई। सर्वप्रथम विद्युत गाड़ी बंबई वी.टी. और कुर्ला के मध्य १९२५ में चली। भारतीय रेल का राष्ट्रीयकरण १९५१ में हुआ। भारतीय रेलों को विभिन्न क्षेत्रों में १९५१ में बाँटा गया। १९५३ में रेलवे शताब्दी दिल्ली और कलकत्ता में मनायी गयी। भारतीय रेलवे सबसे बड़ा राष्ट्रीयकृत संस्थान है। भारत में सर्वप्रथम भूमिगत रेल २५ अक्टूबर १९६४ को कलकत्ता में प्रारंभ की गयी। भारत की सबसे लंबी रेल सुरंग मंकीहिल और खंडाला के बीच है।

❋ बाओ झिरपुन दुनिया का सबसे ऊंचा व्यक्ति है। चीन के इस व्यक्ति की ऊंचाई २.३६ मीटर है।

❋ चिकित्सा अध्ययन से यह सामने आया है कि बुद्धिमान लोगों के बालों में तांबा व जिंक ज्यादा होता है।

❋ आज १५ लाख से अधिक भारतीय अमेरिका में जीवनयापन कर रहे हैं और दस लाख भारतीयों को आउटसोर्सिंग के तहत नौकरी मिली है।

❋ देश का पहला सर्पोद्यान पुणे शहर के निकट स्थित कात्रज परिसर में विकसित किया गया है।

❋ ब्रिटेन में बीबीसी विज्सएल इफेक्ट्स कंपनी के कर्मचारियों ने सबसे बड़ा रेल्वे इंजन का मॉडल बनाया।

❋ हृदय से पूरे शरीर के अंगों तक हर मिनट में साढ़े चार लीटर रक्त भेजा जाता है।

❋ भारत में अभी एक करोड़ से ज्यादा लोग पोलियो से पीड़ित हैं।

❋ हिंदुस्तान में एड्स का पहला रोगी १९८६ में दिखा।

❋ जितनी गहरी सांस जुगनु लेता है उतना ही ज्यादा प्रकाश पड़ता है।

❋ रिचर्ड टी पोर्टर ने ४५८० थर्मामीटर इकट्ठा किए।

❋ छोटी आंत भोजन का पूरा पाचन करने में १२ घंटे का समय लेती है।

❋ निचली अदालतों में दो हजार पद खाली हैं जबकि हाई कोर्टों में २० प्रतिशत जगह रिक्त है।

❋ अडोल्फ हिटलर की मर्सीडीज 770K में झूठा फ्लोर बिछाया गया था ताकि जब वह कार में खड़ा हो तो ऊंचा दिखाई दे।

❋ भारत में ई. पू. ८०० में पहला सिक्का देखा गया जब व्यापारी वर्ग उस पर कुछ चिन्ह अंकित करते थे। मौर्यकाल में इसे राजा द्वारा बनाया जाने लगा।

❋ स्वीडन की फ्रेनसॉन्स कंपनी ने १० फीट लंबा लॉलीपॉप बनाया।

❋ हमारे दो गुर्दे होते हैं जिनकी लंबाई १० से १२ सें.मी. चौड़ाई लगभग ५ से ७.५ सें.मी. व मोटाई लगभग २.५ से ३.५ सें.मी. होती है।

❋ भारतीय राष्ट्रीय राइफल संघ की स्थापना १९५१ में हुई थी।

❋ हमारे देश में हर १३ मिनट में छह वर्ष से कम उम्र का बच्चा नेत्रहीन हो जाता है व दूसरे की नेत्रज्योति आंशिक रूप से जाती है।

❋ १८४१-४२ में मेक्सिको के लोगों ने साबुन का प्रयोग चलन मुद्रा के रूप में किया।

❋ ईस्ट इंडिया कंपनी के कुछ अफसरों ने १७९२ में कोलकाता के एक क्रिकेट मैदान पर भारत के पहले क्रिकेट क्लब की स्थापना की नाम था द कैलकटा क्रिकेट क्लब यही मैदान आगे जाकर ईडन गार्डन नाम से जाना गया।

❋ दुनिया में सबसे ज्यादा महंगी कोई वस्तु है तो वह है यूरेनियम।

❋ महिलाओं का दिल पुरुषों के दिल से तेज धड़कता है।

❋ तरबूज में विटामिन सी की अधिकता होती है जो गर्मियों में अच्छी होती है।

❋ रोम की गद्दी पर जब ल्यू (दशम) बैठा तो उसके स्वर्णिम काल को दिखाने के लिए निकाली गई रैली में एक छोटे बच्चे को सिर से पैर तक स्वर्ण आभूषणों से सजाया गया था।

❋ कैलुआ क्रोना, हवाई स्थित एक महिला ने अपने बगीचे में २.२५ किलो के आम उगाए।

❋ केवल छह महीने की उम्र में ही हम आईना देख मुस्कुराने लगते हैं।

❋ एक आकलन के अनुसार उत्तर प्रदेश की जनसंख्या देश में सर्वाधिक गति से यानि प्रतिवर्ष ढाई प्रतिशत की दर से बढ़ रही है।

❋ रात को सोते समय केवल टाइमपास के लिए कुछ न खाएं इससे ब्लडप्रेशर बढ़ता है।

❋ एक सिगरेट आपकी जिंदगी के ११ मिनट चुरा लेती है।

❋ बारिश होने का एक प्रमुख कारण हवा में मौजूद जलबाष्प का धूल के कणों पर इकट्ठा होता है। जब इन धूल कणों पर जलबाष्प करना मात्रा में इकट्ठा हो जाती है तब बारिश होती है।

❋ सूती धागे बनाने में तमिलनाडु सबसे आगे है। इसके बाद पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश व आंध्रप्रदेश का स्थान है।

✻ सायरन की खोज १८ वीं सदी में जर्मनी के थॉम्स जॉन सीबेक ने की। ई.स. १८१९ में कॉनियर्ड डी ला टौर ने इसका पहली बार प्रयोग किया।

✻ रुमानिया की जिमनास्ट नादिया कोमेंसी को रबड़ की गुड़िया कहा जाता है।

✻ १८७१ में पहली बार तोप से गोले के स्थान पर मानव को दागा गया था। आगे चलकर १९५५ में डेविड स्मिथ ने किसी तोप द्वारा अधिकतम दूरी तक दागे जाने का विश्व रिकार्ड बनाया।

✻ फैशन के तौर पर महिलाओं के विचित्र रंग-ढंग बहुत पुरानी बात है। सन् १७७० में यूरोप की स्त्रियां अपनी भौंहे मुंडवा देती थीं और उनकी जगह चूहे के बालों की पट्टियां चिपकाया करती थीं। यह बड़ा आम फैशन था।

✻ १९९३ से ७००० से अधिक टुकड़ों का अंतरिक्षीय मलबा, पृथ्वी का चक्कर लगा रहा है। जिसमें व्यर्थ होकर रह गए रॉकेटों और वैज्ञानिक उपग्रहों के अंश खण्ड बिखरे हैं।

✻ एक औसतन व्यक्ति अपने सारे जीवन में १६,००० गैलन पानी पी लेता है।

✻ देश और राजधानी- ब्राजील-ब्राजीलिया, चिली- सेन्टियागो, पेरू लीमा, गयाना- जार्ज टाउन, बेनेजुएला- कराकस, इक्वेडोर- क्विटो, फ्रेंचगियाना- केयन, कोलम्बिया- ब्रोगोटा, परागुए- असन्शियन, युरूगुवे- मोंटो विडियो, कनाडा- ओटावा, पनामा- पनामा, हांडूरास- टैगुसीगाल्स, कोस्टारिक- सानजोन, वेली- बेलयोयान, निकारगुआ- मनागुआ, जिम्बाब्वे- हरारे।

✻ ऑस्ट्रेलिया के ८० कर्मचारियों ने एक घंटे में ५६ लोगों की हेअर कटिंग की।

✻ वृद्धावस्था में सुबह के समय याददाश्त अच्छी तरह काम करती है और दोपहर बाद कम होने लगती है।

✻ देश के संघटित क्षेत्र के कर्मचारियों को ही पेंशन मिलती है व उनकी संख्या देश की कुल जनसंख्या के दस प्रतिशत भी नहीं है।

✻ डायबीटीज में कार्बोहाइड्रेट की मात्रा कम रखो।

✻ सुबह की भागमभाग में तेज गाड़ी चलाने से इस समय दुर्घटनाएं १० प्रतिशत बढ़ती हैं।

✻ स्पेस शटल कार्यक्रम के तहत १२ अप्रैल १९८१ को कोलंबिया शटल ने पहली उड़ान ली।

✻ वर्ष २००१ में फिल्म उद्योग को ३०० करोड़ रुपए का नुकसान उठाना पड़ा था जबकि कुल कारोबार ३९०० करोड़ रुपए का था पर आज फिल्म उद्योग १९ प्रतिशत की दर से बढ़त दर्ज करा रहा है।

✻ इजराइल के याकोव योसिपोव ने १४००० बस टिकट इकट्ठे किए।

✻ मानव मस्तिष्क का एक चौथाई हिस्सा आंखों को नियंत्रण रखने पर खर्च होता है।

✻ भारत ने २००५-०६ में अंगूर का निर्यात ४०,००० टन किया।

✻ एक गाय अपने जीवनकाल में लगभग २,००,००० गिलास दूध देती है।

✻ दुनिया की पहली दिल की शल्यक्रिया १९६७ में डॉ. ख्रिस्टियन बर्नार्ड ने की।

✻ मंगल की गुरुत्वाकर्षण क्षमता पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण क्षमता से एक तृतीयांश ज्यादा है।

✻ नीदरलेंड के विम हॉफ ने लंदन के एक स्टुडियो में ११ सितंबर २००४ को कैमरे के सामने लगातार एक घंटे आठ

मिनट बर्फ में रहने का कीर्तिमान बनाया।

❋ दुनिया में शिकार के शौकीनों में १००० लाख से ज्यादा लोग हैं जिनके पास अधिकृत परवाना है।

❋ १६५९ में मैसेच्युएट्स में क्रिसमस पर्व मनाना गैर कानूनी था।

❋ वर्ल्ड बैंक की स्थापना २७ दिसंबर १९४५ को हुई।

❋ सिंगापुर में दुनिया के सबसे ज्यादा सीढ़ियोंवाले होटल (१३३६ सीढ़ियां) द वेस्टिन स्टेमफोर्ड में तेजी से चढ़ने का कारनामा विक्रम बलविंदर सिंह ने किया।

❋ हमारा खून लाल रक्त कोशिकाओं, श्वेत रक्त कोशिकाओं व थक्के व प्लाज्मा से बनता है।

❋ देश में प्रति मिनट चार लोग हार्ट अटैक से मर जाते हैं।

❋ यूरोपी देशों में ब्रिटिश नागरिकों का औसत आई क्यू (बुद्धिमत्ता गुणांक) १०० देखा गया है, फ्रेंच नागरिकों का ९४ व जर्मन लोगों का १०७ पाया गया है।

❋ प्रथम अंतरराष्ट्रीय बाल पुस्तक दिवस १९६७ में मनाया गया।

❋ आस्ट्रेलिया के लेम स्टिवर्ट ने १ से १० लाख तक के अंक टाइप किए।

❋ रक्तशिराओं के प्रसरण-संकुचन से पूरे शरीर में रक्त पहुंचता है।

❋ राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण कार्यक्रम के तहत शीघ्र निदान व यौन संचारित रोगों का उपचार सुनिश्चित करने के लिए ७९५ यौन संचारित रोज क्लिनिकों को आवश्यक सामग्री व औषधि प्रदान की जाती है।

❋ यदि कोई कार १०० मीटर प्रति घंटे की रफ्तार से चलाई जाए तो पृथ्वी के निकटतम तारे तक पहुंचने में उसे २९० लाख साल लगेंगे।

❋ स्वस्थ व्यक्ति की नाड़ी हर मिनट में ७५ से ८० बार चलती है।

❋ पूरे देश में कृषि शोध संस्थानों की संख्या ९७, कृषि विश्वविद्यालयों की संख्या ४९ व कृषि विज्ञान केंद्र ५०७ हैं। इनमें सर्वाधिक उत्तर प्रदेश में हैं। फिर महाराष्ट्र गुजरात, पं. बंगाल व कर्नाटक का क्रम है।

❋ आजकल ज्यादातर चॉकलेट बनानेवाले ४० प्रतिशत बादाम व २० प्रतिशत काजू का उपयोग करते हैं।

❋ दुनिया की पहली पेंसिल ई.स. १४०० में देखी गई।

❋ केवल ७ साल की उम्र में जस्टिन मिलर ने विविध पकवानों पर किताब लिखी।

❋ हमारे शरीर के कुल वजन का ४० प्रतिशत वजन स्नायूओं का है।

❋ रेल यात्रा करनेवाले यात्रियों की संख्या २००६ में ५७,०७० लाख दर्ज हुई।

❋ माउंट एवरेस्ट की चोटी ८८८४ मीटर ऊंची है।

❋ कैनेडा की गुएल्फ यूनिवर्सिटी के १००० छात्रों ने सबसे बड़ी मानव श्रृंखला बनाई।

❋ ग्रामीण भारत में प्रति व्यक्ति वार्षिक आय ९,८०० रुपए है।

❋ रबर बैंड फ्रिज में रखने से वह लंबे समय तक टिकता है।

❋ निक, एडम व स्टीवहन तीन ब्रिटिश युवकों ने लगातार ४७ घंटे दूरदर्शन देखने का रिकार्ड बनाया।

❋ नाखूनों पर सफेद निशान जिंक की कमी दर्शाते हैं।

❋ स्टीफन हेंड्री २१ वर्ष का ब्रिटिश युवक सबसे कम आयुका वर्ल्ड चैम्पियन बिलियर्ड खिलाड़ी है।

❋ देश के १००० लाख बच्चे भूखे हैं।

❋ एलिक्जेंडर अपने तकिये के नीचे धारदार चाकू रखकर सोता था।

❋ आमतौर पर मनुष्य के शरीर का तापमान ३७° सेल्सियस या ९८.४° फारेनहाईट होता है।

❋ दुनिया में मधुमेह के शिकार लोगों की सर्वाधिक संख्या भारत में है।

❋ इंग्लैंड के शेफर्ड ब्रेवरी ने ८ फीट ऊंची बियर बॉटल बनाई।

❋ जागृत अवस्था में सबसे ज्यादा दिमाग थकता है। उसे रात की नींद, आराम के लिए जरूरी होती है।

❋ भारत में वरिष्ठ नागरिकों की संख्या ८ करोड़ से ऊपर है।

❋ चीन की करीब २०% आबादी बढ़ते वजन को लेकर परेशान है।

❋ हिंदी का पहला समाचार साप्ताहिक दिनमान था।

❋ अमेरिका के तस्तुमेना लोज ने २५,७७७ तरह की टोपी संग्रहित कीं।

❋ दुनिया में जितने लोग हैं उससे कहीं ज्यादा संख्या में आपके मुंह में बैक्टिरिया हैं।

❋ देश में सभी मोबाइल धारकों में से ७५ प्रतिशत प्रीपेडवाले हैं।

❋ चॉकलेट, कुत्ते के दिलो-दिमाग को नुकसान पहुंचाती है। इसकी कुछ औंस छोटे कुत्ते को मार तक सकती हैं।

❋ प्रथम भारत रत्न पुरस्कार १९५४ में दिया गया।

❋ एक औसत जीवनकाल में हृदय लगभग दस लाख बैरल रक्त को पंप करता है।

❋ देश में इंजीनियरिंग व तकनीकी सीटों को AICTE ने कम किया। २००५-२००६ में पूरे देश में २७,१६४ सीटें कम की गईं। इसमें सबसे ज्यादा महाराष्ट्र में ५,४२७ घटीं।

❋ कार्टून की दुनिया के शहंशाह वाल्ट डिस्नी के दांत लकड़ी के थे।

❋ घर में एयर कंडिश्नर लगा हो तो उसे २५ डिग्री तापमान पर रख बिजली की खपत कम करें।

❋ भारत की पहली जनगणना १८७२ में की गई।

❋ दुनिया की सबसे लंबी ट्रेन नेशनल बेल्जियम रेलवे कंपनी ने २७ अप्रैल १९९१ को शुरू की जो १७३२ मीटर लंबी है।

❋ २०० करोड़ लोगों में केवल एक व्यक्ति ११६ साल तक जीवित रहता है।

❋ इस बार भारत पाकिस्तान के साथ ३६ साल के अंतराल के बाद डेविस कप में खेल है। इसके पूर्व मलेशिया के कुआलालंपुर में १९७३ में दोनों का आमना-सामना हुआ था।

❋ फलोत्पादन में भारत में आंध्रप्रदेश सबसे आगे है। यहां ६,८०,००० हेक्टेयर जमीन पर ८४,१०,००० टन फलों की पैदावार होती है। पूरे देश में ५२,४२,००० हेक्टेयर क्षेत्र में ५,२०,५२,००० टन फल उत्पादन होता है।

❋ मलेशियावासी अपने बच्चों को बीमारियों से बचाने के लिए मद्यस्नान करवाते हैं।

❋ सिनेमास्कोप की खोज फ्रेंच संशोधक हेनरी प्रेत्येन ने १९२० में की।

❋ सूर्य का ९५ प्रतिशत भाग हाइड्रोजन व हीलियम गैसों से बना है।

❋ उरेका, केलिफोर्निया के गुए न्यूजन नामक व्यक्ति के पास मनुष्य का हाथ मालूम पड़नेवाली एक गाजर थी, जिसमें पांचों उंगलिया साफ-साफ बनी हुई थीं।

❋ नुकरोपा, स्वीडन में लारस एल्म नामक रोगी को अस्पताल ले जाने के लिए एंबुलैन्स गाड़ी भेजी गई लेकिन जब गाड़ी वापस अस्पताल पहुंची तो उसे रोगी चला रहा था और ड्राइवर हृदय गति रुक जाने के कारण अंदर मरा पड़ा था।

❋ स्पेन में फिलिप चतुर्थ के समय एक ऐसा आदमी था जिसने नौ वर्षों तक कुछ खाया ही नहीं। वह केवल तरल पदार्थ ही पीता रहा।

❋ मानव की जीभ ज्यादा से ज्यादा ९ सें.मी. बढ़ सकती है।

❋ यदि १ जनवरी २००६ के आंकड़े देखें तो देश में ८५६.७५ लाख घरेलू गैस उपभोक्ता हैं।

❋ स्वतंत्रता के घोषणा पत्र को जूट पर लिखा जाता है।

❋ माउथ आर्गन को दुनिया में सबसे ज्यादा बजाया जाता है।

❋ वयस्क व्यक्ति के कान के बाल ज्यादा से ज्यादा ४ इंच तक बढ़ सकते हैं।

❋ बोइंग ७४७ विमान को पृथ्वी की परिक्रमा करने में ४४ घंटे लगेंगे।

❋ १९०४ में जर्मनी की डार्मस्टेड कंपनी ने स्फटिक का निर्माण शुरू किया।

❋ पृथ्वी पर किसी भी समय चंद्रमा का ४१ प्रतिशत हिस्सा नहीं दिखता।

❋ महापुरुषों के पिता- भक्त ध्रुव- राजा उत्तानपद, महावीर स्वामी- राजा सिद्धार्थ, हर्षवर्धन- राजा प्रभाकर वर्धन, इंदिरा गांधी- जवाहर लाल नेहरू, भक्त प्रहलाद- राजा हिरण्य कश्यप, छत्रपति शिवाजी- शाहजी भोसले, जवाहर लाल नेहरू- मोतीलाल नेहरू, जगद्गुरु शंकराचार्य- शिवगुरु।

❋ इंग्लैंड के रिचर्ड नोबेल ने थ्रस्ट नामक राकेट इंजिन के वाहन को १०१९ किलोमीटर प्रति घंटा चलाया।

❋ कठोर परिश्रम करनेवाले हर दिन चार गैलन पसीना बहाते हैं।

❋ भारत की बुजुर्ग आबादी में कुल ६५ प्रतिशत महिलाएं हैं और ५२ प्रतिशत पति की मृत्यु के बाद अकेली हैं।

❋ टोमेटो कैचअप को १८३० में दवा के रूप में बेचा जाता था।

❋ अमेरिका के डेल डेकर्ट ने २०,८८४ बॉटल ओपनर इकट्ठे किए।

❋ जब आप चलते हैं तो एक ही समय में २०० मांसपेशियां प्रयोग में लाते हैं।

❋ देश के गरीब राज्य जैसे- बिहार, उड़ीसा व झारखंड के अधिकांश लोगों के पास घरेलू रसोई गैस नहीं है। पूरे देश में जनवरी २००६ के आकलन के मुताबिक केवल ४४.८८ प्रतिशत लोगों के पास ही एल.पी.जी. है।

❋ देश के २० राज्यों में बीते २७ सालों से बच्चों के हित में सीआरवाय संस्था कार्यरत है। इसके पूरे नाम का अर्थ चाइल्ड रिलिफ एंड यू है। पर अब इसने अपने नाम को बदलकर चाइल्ड राइट्स एंड यू किया है।

❋ फ्रूट जूस या कोल्ड ड्रिंक्स पीने में जो स्ट्रॉ प्रयोग में आती है उसे १८३६ में मार्व्हिन चेस्टर स्टोन ने बनाया।

❋ अमेरिका के न्यूयार्क शहर में ४२२ युवकों ने एक ही समय में पानी से भरे हुए ५२२१ गुब्बारे फोडे।

❋ हमारे शरीर में ६५ प्रतिशत पानी है।

❋ भारत से होनेवाला निर्यात २००५-२००६ में १०० अरब डॉलर को पार कर गया है।

❋ छोटे पर्दे के प्रक्षेपण के लिए पहला कृत्रिम उपग्रह १९६२ में अंतरिक्ष में छोड़ा गया।

❋ जर्मनी के रूडी होर्न ने एक समय में ६ कप-प्लेट हाथ में लेकर एक पहिये की साइकिल चलाई।

❋ गोरे लोगों की शरीर की हड्डियां अंतरिक्ष की भारविहीनता में ज्यादा दिन रहने पर कमजोर होने लगती हैं। काले रंगोंवालों के साथ ऐसा नहीं होता।

❋ फुफ्फुस के कैंसर से देश में सबसे ज्यादा कैंसर रोगी मृत्युमुखी हो जाते हैं। हर साल ९० हजार पुरुष व ७५ हजार महिलाओं की फुफ्फुस के कैंसर से मौत होती है।

❋ कारबोंनिक एसिड मिलाने से शीतल पेय पदार्थों की बोतलों की कार्क खोलने पर झाग पैदा होती है।

❋ भारत में स्थापित हुआ पहला बैंक प्रेसिडेन्सी बैंक था।

❋ भारतीय हेयर डिजाइनर नीलेश ठक्कर ने अपनी आंखों पर पट्टी बांधकर हेयर सेटिंग करने का रिकार्ड बनाया। खास बात यह कि उन्होंने कैंची से बाल काटने की बजाए लाइटर से उन्हें जलाकर सेट किए।

❋ शरीर का ४५० ग्राम पानी पसीने व सांस के साथ बाहर जाता है।

❋ जहां १९५० में भारत सिर्फ पांच करोड़ टन अनाज पैदा करता था। हरित क्रांति के बाद वहीं आज उसका उत्पादन १५ करोड़ टन से अधिक तक बढ़ चुका है।

❋ एल्फ्रेड हिचकॉक की मूवी साइको में ४५ सेकंड के शॉवर सीन में खून दिखाने के लिए चॉकलेट सीरप का प्रयोग किया गया था। उस दृश्य को फिल्माने में वास्तव में ७ दिन लगे थे।

❋ दुनिया का सबसे बड़ा नाट्यगृह ऑस्ट्रेलिया के पर्थ भाग में है।

❋ वयस्क व्यक्ति के दिल का भार ३०० ग्राम होता है।

❋ देश के राजमार्गों, पुलों व बोगदों (टनल) के जरिए २००४-०५ में ५३५.५७ करोड़ रुपये का टोल टैक्स जमा हुआ इसमें भी सबसे ज्यादा हरियाणा से मिला। इसके बाद गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान, आंध्रप्रदेश व उत्तरप्रदेश का स्थान था।

❋ दुनिया का पहला रेस्टोरेंट १७६५ में पेरिस का शॉम्प द्वासो था।

❋ कोलम्बस ओहायो में १०,००,००० डॉलर का एक चेक लिफाफे में रखा न होने के बावजूद डाक विभाग के मार्फत अपने गंतव्य तक पहुंच गया।

❋ जर्मनी के २१ वर्षीय अल्बर्ट वोन ठर्न अंड टैक्सिस दुनिया के सबसे कम उम्र के बिलियनेयर हैं। उनकी हैसियत २ अरब डॉलर के ज्यादा की है।

❋ १६६१ में अंग्रेज क्रांतिकारी ओलीवर क्रॉमवैल की लाश को कब्र से निकाला गया। उसके सिर का २० साल तक सार्वजनिक प्रदर्शन होता रहा। इसके बाद वह सिर कई पीढ़ियों तक निजी संग्रहों में रहा और अंतत: १९६० में फिर दफना दिया गया।

❋ प्रोसोप्रैग्लोसिया या मुख अंधता ऐसी बीमारी है जिसमें व्यक्ति दूसरों के चेहरे पहचान नहीं पाता।

❋ सियाटल का रिक नो क्लब ब्राउन ५० सेकंड में ७०० शब्दों को रैप अंदाज में गा सकता है।

❋ सदियों से दुनिया के अनेक क्षेत्रों में लोग दलदल में पास और सरकंड के बीच घुसकर छोटी गोलियों जैसे लौह अयस्क की तलाश में लगे रहते हैं।

❋ कुछ हवाई जहाज बनानेवाले घास काटनेवाली उड़न मशीनें भी बना रहे हैं।

❋ पुराने जमाने में भारत में राजा और प्रजा के बीच बहुत दूरियां होती थी। सम्राट अशोक पहला राजा था, जिसने प्रजा से सीधा संवाद कायम किया। उसने प्रजा में अपने संदेश पहुंचाने के लिए अभिलेख लिखवाए। ये गुफा, स्तंभ या शिलाओं पर खोदे गए थे। इनमें राजा की नीतियों और प्रजा के कर्त्तव्यों का उल्लेख था। इन अभिलेखों के कारण सम्राट अशोक को लिखित संदेशों का अग्रदूत भी कहा जाता है।

❋ इंग्लैंड में बोरूकेसल नामक चट्टान खुद-ब-खुद इस तरह कट-छंट गई है कि पूरी चट्टान महारानी विक्टोरिया का चेहरा मालूम पड़ती है, इसीलिए यह चट्टान क्वीन विक्टोरिया रॉक कहलाती हैं

❋ १६२६ में लंदन के एडवर्ड एलिन नामक व्यक्ति ने डलविच कॉलिज की स्थापना की और साथ ही हुक्म जारी किया कि २३१ साल तक उस कॉलेज का प्रेसीडेंट उसी व्यक्ति को बनाया जाए जिसका नाम एलिन हो।

❋ १८ वीं शताब्दी के जेनरी व्टिशेल नामक एक हरकारे ने घोड़े की पीठ पर बैठ कर वोरसेस्टर और हार्टफोर्ट के बीच की ६० मील लंबी दूरी केवल तीन घंटे में तय की थी। उस समय सड़क पर दो-दो फुट ऊंची बर्फ जमी थी।

❋ मध्यप्रदेश में बसनेवाली गोंड जाति का एक युवक एक छोटे बरछे को एक साल तक अपनी जीभ में घुसेड कर लटकाए रहा। उसका विश्वास था कि ऐसा करने से देवता प्रसन्न हो जाएंगे।

❋ दुनिया में एक ऐसा सागर भी है, जिसमें किसी के डूबने का खतरा नहीं रहता है। यह सागर है फिलीस्तीन देश का डेड सी या मृत्युसागर। इसके पानी में नमक की मात्रा बहुत अधिक है, जिसके कारण कोई भी प्राणी इसमें जीवित नहीं रहता। पानी में मिश्रित नमक की मात्रा जहां २-३ प्रतिशत पाई जाती है, वहीं डेड सी के पानी में २७ प्रतिशत नमक रहता है। नमक के कारण इस सागर का पानी बहुत भारी हो जाता है, इसलिए पानी के तरणशील गुण के कारण किसी भी मानव के डूबने की आशंका बिल्कुल नहीं रहती। दुनिया में एक सागर ऐसा भी है, जिसके पानी का लाल रंग है। यह विचित्र सागर पूर्वी अफ्रीका और पश्चिमी यूरोप के बीच है। इस सागर का नाम रेडसी या लाल सागर है। रेडसी के पानी में पेट्रोलियम नामक, डेनोमाईट, जिप्सम एवं अन्य प्रकार के खनिजों के अलावा खास तरह के छोटे-छोटे पौधे दिखाई देते हैं, जिनका नाम है ऐलगी टाइकोडेसमियम एरियथरियम। यह पौधा बहुत बड़ी मात्रा में इस सागर के पानी में सड़ता रहता है। सड़ने के कारण इसमें से एक खास तरह का रस निकलने लगता है, जिसके कारण सागर का पानी हल्का लाल रंग का दिखाई देता है।

❋ सुपारी का पेड़ पतला दुबला और बेहद ऊंचा होता है। इसके पत्ते नारियल के पत्तों की तरह पतले और एक बड़ी डाल पर बहुत सारे होते हैं। असम में सुपारी के पेड़ बहुत उगते हैं। सुपारी के पेड़ १८ से ३० मीटर ऊंचाई तक हो सकते हैं पर इनका तना केवल डेढ़ फीट मोटा होता है। सुपारी के पेड, फल लटके होने पर काफी आकर्षक लगते हैं। फल के अंदर का बीज ही सुपारी होती है। हरी सुपारी कड़वी होती है। सुपारी गोलाकार रूप में निकलती है।

सुपारी के पेड़ की आयु २५ वर्ष मानी जाती है और हर वर्ष एक पेड़ से लगभग ३०० सुपारियां प्राप्त होती हैं। एशिया में सुपारी का प्रचलन सर्वाधिक है और यहां हर वर्ष ५०,००० टन से ज्यादा सुपारी खाई जाती है। शुभ कार्यों के लिए हिन्दुओं में सुपारी का बहुत महत्व है।

* संसार का सबसे बड़ा पुस्तकालय लेनिन पब्लिक लाइब्रेरी है।
* सबसे अधिक महत्वपूर्ण और बहुतायत से मिलनेवाला रासायनिक तत्त्व सम्मिश्रण पानी है।
* सबसे कम वजन की लकड़ी वाल्सा दक्षिण अमेरिका में पायी जाती है।
* विश्व का सर्वाधिक प्राचीन विज्ञान खगोल विज्ञान है।
* सौर मण्डल का सबसे बड़ा ग्रह जूपिटर है।
* प्राचीन दुनिया से नयी दुनिया में लायी जानेवाली फसल का नाम है- चावल।
* भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (१८५७) के प्रथम शहीद का नाम था मंगल पांडे।
* २५ नवंबर २००४ को फुकोका, जापान में एक लुटेरा एक बैंक से ४,५०० डॉलर लूट ले गया। बाद में उसे इतनी ग्लानि हुई कि उसने पूरी रकम डाक से लौटा दी और इसके एक हफ्ते बाद चिट्ठी भेजकर क्षमा भी मांगी।
* मिनेसोटा के एक डेयरी प्लांट में आग लगने के बाद लाखों-करोड़ों पाउंड मक्खन पिघल कर सड़कों पर फैल गया। इससे अग्निशमन दस्त के उपकरण खराब हो गए और पानी निकालनेवाले ड्रेन जाम हो गए।
* वयस्क व्यक्ति के शरीर में अमूमन ६ लीटर खून होता है।
* नक्सलवाद के बढ़ते प्रभाव से २००५ में ६६९ निरपराध लोग मारे गए। मरनेवालों में सबसे ज्यादा आंध्रप्रदेश के २०६ लोग थे। इसके बाद छत्तीसगढ़, झारखंड, बिहार व महाराष्ट्र पर आतंक का साया दिखा।
* रशिया का वॉर एंड पीस सबसे महंगा सिनेमा है जिस पर ७२ करोड़ रुपए खर्च किए गए।
* सामान्य व्यक्ति की मृत्यु पर बची राख का वजन ९ पाउंड होता है।
* केंद्रीय पुरातत्व विभाग के अंतर्गत आनेवाले संग्रहालयों से २००४-०५ में ५० करोड़ रुपए की आय हुई।
* स्वर्ण उत्पादन में दक्षिण अफ्रीका की हिस्सेदारी ६० प्रतिशत है।
* दुनिया की पहली स्टिरियोफोनिक ऑडियो कैसेट १९६० में बनी।
* सब ग्रहों में केवल शुक्र ही ऐसा ग्रह है जो घड़ी की दिशा में परिक्रमा करता है।
* आपकी रीढ़ की हड्डी ३३ मनकों से बनी है।
* देश में ५ से १४ साल के बाल मजदूरों की संख्या १.२७ करोड़ है।
* हर तीन में से एक वयस्क को उच्चरक्तचाप की शिकायत होती है।
* टमाटर को १८३० में पहली बार खाने में उपयोग में लाया गया।
* पेरू के कार्डिलेस पहाड़ी पर उगनेवाली पुया रेमांडी वनस्पति रेसिन से भरी है जिसे जलाकर रोशनी पाई जाती है।
* गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में दर्ज एमवी डौलॉस नामक पानी का जहाज सबसे पुराना पानी जहाज है।
* हमारी पलकें हर ६ सेकंड में एक बार झपकती है।

❋ २००५ में गांवों में ७८४ करोड़ लोग व १५७ करोड़ परिवार रहते हैं।

❋ समुद्र में ९२ परमाणु बम खो जाने की बातें लोगों को पता हैं।

❋ एक शताब्दी में पृथ्वी का तापमान १ डिग्री फेरन हाइट बढ़ गया है।

❋ उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध का अमेरिकी योद्धा डेविड क्रॉकेट जब अलामो की रक्षा कर रहा था तब उसके पास सिर्फ एक किताब थी- बेंजामिन फ्रैंकलिन की आत्मकथा।

❋ प्राचीन सिकन्दरिया के पुस्तकालय को समृद्ध बनाने के वास्ते वहां के लोग बाहर से आनेवालों की किताबें जब्त करके लाइब्रेरी में रख देते थे।

❋ लैन साई विंग ने दुनिया का सबसे महंगा वॉशरूम बनाया है। उन्होंने अपनी दुकान के लिए यह वॉशरूम बनाया और वॉशरूम की हर चीज सोने व नगीनों से बनी है। यह १५७५ लाख रुपए में बनाया गया है।

❋ एक व्यक्ति अपने जीवन काल में औसतन ५००० लाख बार सांस लेता है।

❋ जितने भी ग्रीटिंग कार्डस् खरीदे जाते हैं उनमें से ९३ प्रतिशत महिलाएं खरीदती हैं।

❋ मार्गरिन जिसे गरीबों का मक्खन भी कहा जाता है का निर्माण १५ जुलाई १८६९ में हिपोलिट मेज-मॉरिस ने किया।

❋ हर साल अलास्का में ५००० भूकंप आते हैं।

❋ लंदन के लॉब लॉज सुपर मार्केट के कर्मचारियों ने १० फीट लंबा व ७ फीट चौड़ा बिस्किट का पैकेट बनाया।

❋ प्रत्येक व्यक्ति की जुबान के निशान भी अलग-अलग होते हैं जैसे अंगुलियों के।

❋ देश में २००४-२००५ में शहद का उत्पादन ५२,८७९ टन हुआ पर निर्यात केवल ६,६४७ लाख रुपए का ही हुआ।

❋ आस्ट्रेलिया में १९७४ में सौर ऊर्जा पर आधारित पहला टेलीफोन लगाया गया।

❋ ब्रिटेन के १० सैनिकों ने ३७ टन वजन के विमान को ३२८ फीट तक खींचने का रिकार्ड बनाया।

❋ हमारी हड्डियों की पेशी की आयु लगभग २० साल होती है।

❋ भारत द्वारा अन्य देशों को ७८१.४५ लाख टन लोहा निर्यात किया जाता है। इसमें से ९० प्रतिशत से ज्यादा चीन व जापान को जाता है।

❋ पृथ्वी का कुल क्षेत्रफल ५१,००,६५,६०० वर्ग किमी है।

❋ सन १३०५ में स्कॉटिश फौजी विलियम वैलेस को तीन सजाए मौत मिलीं। उसे सड़कों पर घसीटा गया, फांसी पर लटकाया गया। फिर भी बच गया तो दुबारा लटकाया गया। इसके बाद उसके टुकड़े-टुकड़े किए गए। ये टुकड़े सारी दुनिया में भेजे गए ताकि दूसरों को नसीहत मिले।

❋ स्टार्म प्रोडक्टस्, यूताह की बोलिंग बॉल फलों, चॉकलेटों और मसालों की खुशबुओं के साथ भी मिलती है।

❋ राष्ट्रीय चिन्ह- वाराणसी के पास सारनाथ में अशोक निर्मित सिंह स्तंभ है, भारतीय सरकार ने इसी को अपना राष्ट्रीय चिन्ह चुना है, राष्ट्रीय चिन्ह में तीन शेर दिखाई देते हैं, चौरस पट्टी के मध्य में उभरी हुई नक्काशी में एक चक्र है जिसके दाईं ओर एक सांड और बाईं ओर एक घोड़ा है, चिन्ह के नीचे देवनागरी लिपी में सत्यमेव जयते लिखा है।

❋ राष्ट्रीय झंडा- यह झंडा आयताकार तीन पट्टियों से बना है, सबसे ऊपर केसरिया, मध्य में श्वेत और नीचे हरे की

पट्टियां हैं, झंडे की लंबाई-चौड़ाई का अनुपात तीन-दो है, श्वेत पट्टी के मध्य में नीले रंग का चक्र है, जो धर्म-चक्र है, यह प्रगति का सूचक है।

✻ राष्ट्रीय गीत- श्री बंकिमचंद्र चटर्जी द्वारा रचित गीत वंदे मातरम् को राष्ट्रीय गान के समान दर्जा दिया गया है, यह गीत राष्ट्रीय आंदोलन में एक महान प्रेरणा स्त्रोत रहा है।

✻ राष्ट्रीय गान- रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा सन् १९१२ में लिखित गीत जन-गण-मन को २४ जनवरी, १९५० को राष्ट्रीय गान के रूप में स्वीकार किया गया।

✻ राष्ट्रीय पक्षी, पशु व पुष्प- क्रमश: मोर, बाघ व कमल।

✻ २३ अमेरिकी राज्यों में अवैध नशीले पदार्थों पर भी टैक्स लिया जाता है।

✻ भारत के हैदराबाद शहर में टैक्स न देनेवालों के घर के बाहर लगातार नगाड़े बजाए जाते हैं। इससे फायदा हुआ है और टैक्स की वसूली बढ़ गई है।

✻ जॉन डोर के एक डिवीजन प्लुश्टेक ने जंगलात में काम करनेवाली ऐसी मशीन तैयार की है जो मच्छरों जैसे छह पैरों पर चलती है। यह किसी भी तरह की उबड़-खाबड़ जमीन पर चल सकती है।

✻ धातु के तार का आविष्कार होने के पहले वॉयलिन जैसे तंत्र वाद्यों में पशुओं की आंत से बने तार लगाए जाते थे।

✻ लोग किंग हेनरी अष्टम को मोटे और निर्दयी के रूप याद करते हैं। वह अपनी जवानी में सुंदर और अच्छे स्वभाव का होता था।

✻ जापान में वर्षों से क्यूजीरो कनाओका नाम के जिस व्यक्ति को देश का सबसे उम्रदार व्यक्ति माना जाता है वह करीब दस साल पहले से मरा पड़ा है।

✻ अमेरिकन डेयरी एसोसिएशन के सदस्यों ने एक ही बार में २२,७१२.४७ लीटर मिल्कशेक बनाया।

✻ त्वचा के हर वर्ग इंच में लगभग १०० स्वेद ग्रंथियां होती हैं।

✻ लियोनार्दो द विन्ची ने १५०३ से १५०६ के बीच मोनालिसा की रचना की।

✻ स्पेनिश सम्राट हरनंडो कोर्टेज ने १५२८ में यूरोप को चॉकलेट से परिचिय कराया।

✻ टोनी माहिया ने ११२५ बार्बी डॉल इकट्ठा की।

✻ हमारे दोनों कानों की श्रवण क्षमता अलग-अलग होती है।

✻ इटली के मैक्स बियागी ने लगातार चार बार मोरोक्रास चैम्पियन रेस जीती।

✻ देश में ७,९९७ आयुर्वेदिक फार्मेसियां कार्यरत हैं। इसमें से सरकारी २४ व गैर सरकारी ७,१०६ हैं।

✻ अमेरिका के सभी उच्चतम मनोरंजन पुरस्कारों की अकेली विजेता हैं। उन्हें ऑस्कर, एमी, ग्रैमी और टोनी समेत तमाम पुरस्कार मिल चुके हैं।

✻ दुनिया में सबसे ज्यादा महंगी कोई वस्तु है तो वह है यूरेनियम।

✻ महिलाओं का दिल पुरुषों के दिल से तेज धड़कता है।

✻ गोताखोरी (डाइविंग) दो तरह से होती है- प्लेट फार्म से व स्प्रिंग बोर्ड से।

✻ देश के रोजगारों में बीते साल २१.५ प्रतिशत वृद्धि हुई। इस साल वह वृद्धि ३३ प्रतिशत अपेक्षित है।

✻ रोम की गद्दी पर जब ल्यू (दशम) बैठा तो उसके स्वर्णिम काल को दिखाने के लिए निकाली गई रैली में एक छोटे बच्चे को सिर से पैर तक स्वर्ण आभूषणों से सजाया गया था।

✻ दूरदर्शन की खोज ब्रिटेन में हुई।

✻ दुनिया भर में २०० से ज्यादा देशों में बिकनेवाला कोकाकोला सबसे बड़ा ब्रांड है।

✻ बच्चों के रोने की आवाज १००० से ६००० हर्टज् की रेंज में होती है।

✻ दुनिया में सबसे ज्यादा कपास की पैदावार भारत में होती है।

✻ दुनिया में कम से कम १५ हजार बड़े व असंख्य छोटे आकार के बांध हैं। जिन्हें सुपर कहते हैं। ऐसे १५० मीटर से अधिक ऊंचे १५० बांध हैं।

✻ इटली के जियान कार्लो फ्रैन्सेनेला ने ८ फीट ऊंचा ऑर्किडियन बनाया।

✻ आपके हाथ की बीच अंगुली का नाखून सबसे तेजी से बढ़ता है तो अंगूठे का सबसे धीरे।

✻ पूरे देश में ५,२१,८७२ मेगावॉट बिजली की जरूरत है जबकि उपलब्धता केवल ४,८०,२४२ मेगावॉट ही है। इस तरह कुल कमी ८ प्रतिशत है।

✻ तरबूजों के बीजों में कुकुरलोटरिन नाम का तत्व पाया जाता है जो खून को प्राकृतिक ढंग से पतला बनाता है, जिससे हाई ब्लडप्रेशर सामान्य रहता है।

✻ पौराणिक ग्रंथों में कई बार महारथी शब्द का उल्लेख आता है, महारथी शब्द का अर्थ होता है जो अकेला दस हजार सैनिकों का सामना कर सके ऐसा वीर।

✻ जर्मनी के मैथियाज एस्क ने ७२६ पिज्जा एक के ऊपर एक रख रिकॉर्ड बनाया।

✻ हमारी जीभ पर दस हजार से ज्यादा स्वाद तंत्रिका हैं।

✻ भारत में सालाना बजट का कुल एक प्रतिशत ही बच्चों की सेहत के लिए तय है।

✻ यदि पेशाब करते समय पीड़ा का अनुभव होता है तो भरपेट तरबूज खाना चाहिए, इससे मूत्र मार्ग की रुकावटें दूर होती है और दर्द भी कम होता है।

✻ देश में माध्यमिक स्कूल के बारे में पहली संहिता १८५९ में लागू हुई।

✻ पिक्सवाले शहर में भैसों का एक झुंड भाग निकला जिसे घेरने के लिए १० क्रूजर गाड़ियां और एक हैलीकॉप्टर लगाना पड़ा।

✻ जेम्स कैंडी नाम के एक सज्जन में परालौकिक शक्तियां साबित करनेवाले व्यक्ति को १० लाख डॉलर का इनाम देने का वादा किया है। आज तक इस इनाम को कोई जीत नहीं पाया है।

✻ वैस्ट बॅंड, विस्कॉनसिन के लैरी हॉफमेन ने चंद डॉलरों में एक पुरानी कमीज खरीदी, जिसकी जेब में उन्हें २००० डॉलर का नोट मिला।

✻ शब्द ठग भारत के ठगी से बना है जो भारत में सैकड़ों साल से कला मानी जाती है।

❋ अटलांटिक के तट पर बसे बोर्ड वॉक नामक शहर में हर साल करीब तीन करोड़ लोग हर साल घूमने आते हैं।

❋ सजावट की चीनी कला फेंग शुई के अनुसार इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों, दर्पणों और नुकीली चीजों के पास सोने से डरावने सपने आते हैं।

❋ हीरु ओनोदा नाम का जापानी सैनिक द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान एक सुंदर द्वीप में तैनात था। युद्ध खत्म होने के बाद वह २१ साल तक लड़ता रहा। १९७४ में जब उसे जापानी पराजय की जानकारी मिली तो वह रो पड़ा।

❋ लंदन के रॉयल कॉलेज ऑफ आर्ट को ऐसे दंपत्ति का इंतजार है जो अपनी हड्डियों के सैल को दान करे। बाद में उनके साथी की हड्डियों के सैल से विकसित अंगूठी भेंट की जाएगी।

❋ शिकागो की संस्था लाइफजैम दफनाए गए व्यक्तियों की कब्र से प्राप्त कार्बन से उच्चस्तरीय हरे तैयार करती है।

❋ अजीब सवाल- कलयुग का अमृत- चाय, बिना किराये का घर- जेल, गाँव का अलार्म- मुर्गी, बिना गुनाह की फाँसी- टाई, देश का दर्पण- दूरदर्शन, पृथ्वी की छतरी- आकाश, एक हाथ की हथकड़ी- घड़ी, गरीब का आभूषण- मेहनत।

❋ तैरना- नदी की तुलना में समुद्र में तैरना अधिक सरल होता है, क्योंकि घुले हुए नमक के कारण समुद्री जल का घनत्व अधिक होता है।

❋ अदभुत ईंटें- वैज्ञानिकों ने पोलीयूरेथिन पदार्थ से ऐसी ईंटें विकसित की हैं, जो पानी पर तैर सकती हैं। ये ईंटें मिट्टी के ईंटों की तुलना में कहीं अधिक मजबूत होती हैं।

❋ सिरका- एक लीटर सिरका जाड़े के दिनों में गर्मियों की अपेक्षा अधिक भारी होता है।

❋ पढ़ने की मशीन- अमरीकी वैज्ञानिकों ने कम्प्यूटर से युक्त एक ऐसी मशीन विकसित की है, जो आदमियों की तरह लिखित सामग्री को पढ़ सकती है।

❋ किण्वन- एक बैरल रस या शराब को किण्वन द्वारा सिरके में बदलने में एक से दो वर्ष का समय लगता है।

❋ यूक्रेन का रसलन नामक ४०५ टन का विभाग दुनिया का सबसे वजनदार विमान है।

❋ हमारी आंखें १७०० प्रकार के रंग पहचान सकती हैं।

❋ भारत की एक अरब छह करोड़ की आबादी (२००५) को हर साल ५३ अरब लीटर पानी चाहिए।

❋ एंटोनी सेस्को ने फलों के चित्र के ३४,५०० स्टिकर इकट्ठा किये।

❋ जितनी बार हम पलकें झपकाते हैं उतनी बार मस्तिष्क, दृश्य तंत्र के अवयवों को कुछ क्षण का आराम देता है।

❋ देश में रेलवे क्रॉसिंग की संख्या २५०९३ है।

❋ लियोनार्दो द विंसी ने जब अपनी रहस्यमयी मुस्कान बिखेरती मोनालिसा की तस्वीर बनाई तब वे ५१ साल के थे।

❋ अंतर्राष्ट्रीय दूरसंचार संगठन (इंटरनेशनल टेलिकम्युनिकेशन यूनियन) की स्थापना १७ मई १८६५ को हुई।

❋ दक्षिण उड़ीसा के प्रेटोरिया विश्वविद्यालय के छात्रों ने ३४ फीट लंबा हॉट डॉग बनाया।

❋ प्रति सेकेंड एक इस तरह हर साल हमारे मस्तिष्क के सेरेब्रेल कॉर्टेक्स के मुख्य भाग के लगभग ३०० करोड़ १० लाख मज्जातंतु (न्युरांस) नष्ट होते हैं।

❋ देश में बड़े पैमाने पर पासपोर्ट आवेदन इसलिए लंबित रह जाते हैं क्योंकि पुलिस को जांच रिपोर्ट नहीं मिल पाती।

यदि ३१ जनवरी २००६ का आंकड़ा देखें तो देश भर में ३० दिन से ज्यादा लंबित रहे पासपोर्टों की संख्या ४,९५,६४९ रही जिसमें पुलिस वेरिफिकेशन न मिलने के कारण २,२४,०६२ लंबित रहे।

✻ मानव इतिहास पर नजर दौड़ाएं तो अभी तक ५० लाख टन से ज्यादा स्वर्ण उत्पादन हुआ है। अभी नौ हजार पांच सौ करोड़ टन शेष हैं।

✻ रशिया ने ४ अक्टूबर १९५७ को पहला अंतरिक्ष यान स्पुतनिक भेजा।

✻ इटली के पेरूजिना फैक्टरी के कर्मचारियों ने ५९८० किलो भार का चॉकलेट बनाया।

✻ हमारी जुबान पर १०,००० कोशिकाएं है जिससे हमें स्वाद पता चलता है।

✻ देश में विचाराधीन कैदियों की संख्या ६११७ हैं जो न्याय की गुहार लगा रहे है। इसमें सबसे ज्यादा बिहार में १६७१ हैं।

✻ अपराधी का संभावित चित्र लगाने के लिए पुलिस आयडेंटी किट तरीका अपनाया जाता है। ह्यूज मेकेडानाल्ड ने १९६० में इसे विकसित किया।

✻ ठंडे पानी का वजन गरम पानी से ज्यादा होता है।

✻ शरीर के अन्य अंगों की तुलना में पलकें ज्यादा संवेदनशील होती है।

✻ प्रति व्यक्ति प्रति माह को आपकी नजर से देखें तो भारत में गोवा (३०५०६ रुपए) सबसे आगे हैं। इसके बाग गुजरात (१६७७९ रुपए) का स्थान है। महाराष्ट्र (१६,४७९ रुपए) तीसरे स्थान पर है। बिहार (३५५७ रुपए) के साथ आठवें स्थान पर है।

✻ स्वतंत्रता प्राप्ति के समय (१९४७-४८ में) भारत में सोना १०० रुपए प्रति तोला था।

✻ ई.यू. ५३५ में पहला रोमन कैलंडर बना। जिसमें १० महीने व ३०४ दिन थे। मार्च महीने से साल की शुरूआत होती थी।

✻ खिलौनों के निर्माण क्षेत्र में चीन सबसे आगे है।

✻ चेहरे के दोनों ओर २२-२२ मांसपेशियां होती हैं।

✻ पिछले वित्त वर्ष २००५-०६ में ७७ हजार ९०० करोड़ रुपए से ऊपर के प्रॉपर्टी से जुड़े लेन-देन हुए।

✻ ताईवान की कंपनी अपने डिनर के बर्तनों को गेहूं से बनाती है ताकि आप प्लेट भी खा सकें।

✻ अलग-अलग करे टुकड़ों को जमाकर एक आकृति को रूप देनेवाले जिगसॉ पझल को १७६७ में जॉन स्विलबरी ने बनाया था।

✻ सैम रेबर्न टैक्सस में विभिन्न पदों के लिए लगातार ५५ साल तक चुना जाता रहा। उनके अंतिम संस्कार में ३०,००० से ज्यादा लोग आए जिनमें अमेरिका के चार पूर्व राष्ट्रपति भी थे।

✻ आस्ट्रेलिया में सिगरेट के एक बड की नीलामी में बोली ६,९४८ डॉलर की लगी। दावा किया जाता है कि देश में धूम्रपान पर रोक लगने के ठीक पहले पी गई अंतिम सिगरेट का वह टुकड़ा है।

✻ टार्जन, कैलिफोर्निया का नाम एडगर राइस बरो के मशहूर काल्पनिक पात्र टार्जन पर रखा गया।

✻ पैरों की विकृति के बावजूद कार्मन मिरांडा (१९०९-१९५५) नृत्य और गायन के लिए मशहूर थी।

✻ पीठ में हुकों, छल्लों और रिबन को इस तरह चुभोने और बांधने की कला है कि लगता है कि अंत:वस्त्र पहन रखा है।

✻ साइबेरिया के येनीसाई नामक एक छोटे से प्रांत में सुबह सात बजे सन् १९०८ की ३० जून को एक अति भयंकर उल्का देखी गई। इसमें चमक के साथ-साथ गर्जना भी थी। इसके गिरने पर धरती थर्रा उठी, पूरा जंगल नष्ट हो गया, जमीन फट गई और गहरे गड्ढे बन गये। असंख्य मनुष्य काल के ग्रास में समा गये।

✻ समाचार पत्र का सबसे बड़ा संस्करण दि न्यूयार्क टाइम्स को रविवार १० अक्टूबर १९७१ को निकाला गया। रविवारीय संस्करण था, जिसमें १५ भाग, ९७२ पृष्ठ, १२ लाख पंक्तियां वर्गीकृत व अन्य विज्ञापनों की थीं। इसका वजन चार किलो और इसका मूल्य ५० सेंट था।

✻ विश्व का सबसे बड़ा कार्टून अमेरिका के न्यूयार्क शहर में स्थित संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्यालय के पीछेवाली दो मंजिली, ३५ फुट लंबी और ३० फुट चौड़ी पूरी इमारत का बनाया गया था। इसमें आठ पूर्वी यूरोपीय देशों के विरुद्ध रूस के रुख का उपहास किया गया था। कार्टून जगत में अमेरिका के वाल्टर एलिस डिजनी ने विश्व में बहुत अधिक ख्याति प्राप्त की थी।

✻ फ्रांस के प्रसिद्ध हेनरी राजघराने का नामकरण हेनरी नाम के भिखारी को लेकर हुआ था। जिस दिन हेनरी का जन्म हुआ, उस दिन उसके घर भीख मांगने आनेवाले पहले भिखारी का नाम हेनरी था, अत: नवजात शिशु का नाम उसके मां-बाप ने हेनरी ही रख दिया। इस बच्चे ने बड़े होकर फ्रांस में हेनरी घराने का साम्राज्य स्थापित किया।

✻ रोम में एक विशाल थियेटर है। यह गोल थियेटर ७० वीं ए.डी. के आस-पास बना। यह इतना बड़ा है कि इसमें ५०,००० से भी अधिक दर्शक एक साथ बैठ सकते हैं। इसमें अभी तक हजारों तमाशे या प्रदर्शन हो चुके हैं।

✻ चीनी भाषा में शब्द और वर्ण का इस्तेमाल लिखने में नहीं किया जाता है। बल्कि इसके स्थान पर ५०,००० से अधिक चित्र प्रयोग में लाये जाते हैं। इन चित्रों के नाम ही शब्द के रूप में प्रयोग होते हैं। लोग चित्रों के नाम से ही अर्थ लगाते हैं। लेकिन इस तरह लिखना काफी मुश्किल होता है। एक चित्र का मतलब एक से ज्यादा शब्द होते हैं। पढ़नेवालों की सुविधा के लिए लेखक उच्चारण भी साथ में लिख देते हैं।

✻ इंग्लिश चैनल को पार करनेवाला पहला व्यक्ति कैप्टन मैथ्यू वेब था। १८७५ ई. में मैथ्यू ने डावर से केप क्रिस की दूरी २१ घंटे ४५ मिनट में तय की। सबसे कम समय में इसे पार करने का रिकॉर्ड ७ घंटे का है।

✻ किसी संदेश के भेजने और पाने के बीच का अंतराल ७३ वर्षों का है। एक संदेश एक लोशन की बोतल में ९ जून, १९१० को भेजा गया और यह ६ जून १९८३ को पाया गया।

✻ वैज्ञानिक उपयोग और उनका प्रयोग- अल्टीमीटर- यह एक प्रकार का वैज्ञानिक यंत्र है जिसका डायल ऊंचाई सूचित करने के लिए या मीटर के रूप में प्रयोग किया जाता है। आमीटर- यह यंत्र दर्शाता है कि विद्युत सर्किट में विद्युत की कितनी एम्पीयर धारा प्रवाहित हो रही है। एनेमोमीटर- वायुवेग मापी यंत्र इस यंत्र से वायु का वेग मापा जाता है। आडियो पोन- श्रवण शक्ति सुधारना। बाइना क्यूलर- इस यंत्र का उपयोग दूरस्थ वस्तुओं को देखने में किया जाता है।

✻ सुसान विलियम्स ने बबलगम का २३ इंच का गुब्बारा फुलाया।

✻ हमारे सिर पर प्रति वर्ग सेमी. में १६१५ बाल होते हैं। अमूमन ३० साल की उम्र तक ये प्रमाण ऐसा ही रहता है।

❋ साइकिल रैप जम्प में जर्मनी के टिमो प्रिटजेल का नाम अग्रणी है।

❋ नाव पलटने से देश में प्रतिवर्ष ५०० से ज्यादा लोग मर जाते हैं। जहां २००२ में ५५०, २००३ में ७६५ व २००४ में ५६२ मौतें इसी वजह से दर्ज हुईं।

❋ लौंग उत्साहवर्धक दर्दनाशक व वायु नाशक है।

❋ पेरिस में मेट्रो की १६ लाइनें हैं और ३८० स्टेशन हैं जो इस खूबसूरत शहर की जमीन के भीतर २२१ किमी. क्षेत्र में फैले हुए हैं। इन पर ३५०० मेट्रो कार (ट्रेन) दौड़ती हैं। यहां की हर इमारत मेट्रो से सिर्फ ५५० मीटर दूरी पर है।

❋ भारत आनेवाला पहला अंग्रेज थॉमस स्टीवंस था।

❋ प्रिंस एडवर्ड द्वीप, कनाडा के हैरल्ड हैकेट १९९६ से अब तक बोतलों में बंद करके १४०० से ज्यादा संदेश अटलांटिक सागर में मिल चुके हैं। इनमें ७०० से ज्यादा के उन्हें उत्तर भी मिल चुके हैं।

❋ डस्टिन कास्त्रो नामवाले ये सज्जन अपनी नाक में १७ सिक्के रोक सकते हैं।

❋ ई.पू २१८ में चियांग लियांग ने १६० पौंड वजन की लौह गदा से चीन के सम्राट की हत्या का प्रयास किया था।

❋ मध्य अफ्रीका में रहनेवाली तुत्सीन जनजाति की लंबाई सबसे ज्यादा मानी जाती है। इस जाति के लोगों की साधारण ऊंचाई १८५ सेमी. होती है।

❋ हमारे शरीर से रोज लगभग एक लीटर पसीना निकलता है।

❋ लिप्टन येलो लेबल कंपनी के कर्मचारियों ने ८ किलो वजन का व १० फीट ऊंचा सबसे बड़ा टी बैग बनाया।

❋ त्वचा के तीन वर्ग सेमी. भाग में लगभग दस बाल, सौ पसीना निकालनेवाले रोमछिद्र व एक मीटर खून की शिराओं का जाल होता है।

❋ वैष्णोदेवी के दर्शन के लिए प्रतिदिन १८००० श्रद्धालु जाते हैं। यह आंकड़ा २००५ में पूरे साल मिलाकर ६४,५१,९९८ हुआ था।

❋ दुनियाभर में रोज ६० अरब ई-मेल भेजे जाते हैं।

❋ इंटरनेट पर पहला डोमेन नाम जो रजिस्टर हुआ वह symbolics.com था।

❋ जापान की कंपनी स्टील ड्रगन ने ८१३३ फीट लंबा रोलर कोस्टर बनाया।

❋ हमारे शरीर में २०६ हड्डियां हैं। उनमें से सबसे ज्यादा हाथ-पैरों में हैं।

❋ देश में यदि कोई शहर सबसे ज्यादा प्रदुषण युक्त है तो वह लखनऊ है। इसके बाद कानपुर, झारिया, फरीदाबाद, आगरा व अहमदाबाद का स्थान है।

❋ भारत में सर्वाधिक प्रदूषणवाला शहर कलकत्ता है।

❋ रविवार की छुट्टी सन १८४३ से प्रारंभ हुई।

❋ विश्व में सबसे लंबी बस अमेरिका में है। ७६ फुट लंबी, ११ टन भारी, १२१ यात्री बैठ सकते हैं।

❋ ठण्ड के कारण कंपकपी आना मांसपेशियों की स्वचालित गति है, जब हमें कंपकपी आती है, तो मांसपेशियां बहुत जल्दी-जल्दी सिकुड़ती एवं फैलती हैं। हर बार जब हमारी मांसपेशियां सिकुड़ती हैं, तो उनकी कोशिकाओं में

अधिक खाद्य एवं ऊर्जा का व्यय होता है, इससे उष्मा उत्पन्न होती है। इस प्रकार कंपकपी आना शरीर की एक ऐसी क्रिया है, जो शरीर को गर्म रखने में सहायता प्रदान करती है। इसलिए जब हम ठण्ड महसूस करते हैं तब कंपकपी अपने आप होने लगती है।

❋ एशिया का सबसे बड़ा पुस्तकालय पेइचिंग में खोला जा रहा है। इसमें करीबन १ लाख २० हजार शीर्षकों से पुस्तकें रखे जाने की योजना है। यह पुस्तकालय पेइचिंग के शिडान के व्यापारिक जिले में है। पेइचिंग सरकार द्वारा नियंत्रित इस पुस्तक केंद्र का सारा कामकाज संगणकीकरण से होगा। इसमें सभी महत्वपूर्ण पुस्तकें होंगी, साथ ही बच्चों का मनोरंजन करनेवाली गतिविधियां एवं पर्यावरण कला संबंधी क्रियाकलापों की शिक्षा-दीक्षा भी दी जाएगी। पेइचिंग पुस्तक केंद्र का निर्माण १९९४ में शुरू हुआ था। यह केंद्र ग्यारह मंजिला है।

❋ ब्राजील के सेंटा मेरिनेला कंपनी के कर्मचारियों ने १२ फीट लंबा लेदर बैग बनाया।

❋ जन्म के पहले से ही शिशु सपने देखने लगता है।

❋ यदि दुनिया के किसी देश में सबसे ज्यादा विश्वविद्यालय हैं तो वह भारत है।

❋ इंग्लिश, जर्मन, फ्रेंच, स्विडीश व पोर्तुगीस में यदि किसी शब्द की स्पेलिंग समान है तो वह है टैक्सी- Taxi

❋ देश में गरीबी रेखा के लिए पहला सर्वे १९८२ में किया गया।

❋ नॉथ कैरलीना के स्टीव ग्रीन ने टॉर्नेडो नाम से एक गाड़ी तैयार की है जो २४० मील प्रति घंटा के वेग से चल रही हवा का सामना कर रही है। यह गाड़ी टॉर्नेडो (चक्रवात) में घुसकर ड्राइव करने के इरादे से बनाई गई है।

❋ सूर्य के धब्बों का पहला ज्ञान अध्ययन १६५ इं.पू. में चीनी खगोल विज्ञानियों ने किया। वे उन्हें सूर्य पर सम्राट की छवि कहते थे।

❋ एमिलियो अरेनास ने ६८८५ पेन्सिल इकट्ठी कीं।

❋ त्वचा के बाहरी भाग को इपिडमस कहते हैं। यह परत लगातार बदलती रहती है व नई पेशी तैयार होती है। हर ७५ दिन में यह पूरी तरह नई होती है।

❋ कुंग-फू किंग नाम से जाने जाते ब्रुसली को केवल १० तक ही गिनती आती थी।

❋ ब्रिटेन में २००४ से नागरिकत्व जाननेवालों में भारतीयों की संख्या १४,१९० है।

❋ टॉड विल्किंसन का न्यूयॉर्क शहर मे कुत्तों को बिस्कुट खिलाने वाली मशीनों का पूरा कारोबार है।

❋ मशहूर अभिनेत्री ल्यूसी हॉल को अभिनय विद्यालय से वापस घर भेज दिया गया था, क्योंकि वे बहुत शर्मीली थीं।

❋ स्वीडन में कैदियों के शरीर सौष्ठव से चिंतित अफसरों ने जेलों में जिम के इस्तेमाल पर पाबंदियां लगा दीं। इसके विरोध में कैदियों ने आंदोलन शुरू कर दिया।

❋ सेंट जॉन्स विश्वविद्यालय की आय का बड़ा हिस्सा १८०० के दौरान तैयार किए गए ब्रैंड के व्यंजन की रॉयल्टी से आता है।

❋ बगैर हाथ-पांव के जन्मे काइल मेनॉर्ड ने हाईस्कूल वी पढ़ाई के दौरान कुश्ती लड़ना शुरू कर दिया था। ३६ मुकाबले जीते और १६ हारे।

✻ जापानी संस्था इनाटसु के कर्मचारियों ने ९ फीट व्यास के सिरेमिक प्लेट बनाई।

✻ छोटे बच्चों में पहले साल बुद्धि क्षमता उतनी नहीं बढ़ती जितनी १३ वें महीने से वे दूसरे साल के होते-होते चीजों को समझने लगते हैं।

✻ देश के शक्कर उत्पादन का ६० प्रतिशत महाराष्ट्र व उत्तरप्रदेश में होता है।

✻ सिर पर नारियल गिरने से ज्यादा लोग मरते हैं ना कि शार्क के काटने से। लगभग हर साल १५० लोगों की मौत पर सिर पर नारियल गिरने से होती है।

✻ पलाश के पत्तों के सेवन से खून में शक्कर की मात्रा कम करने में मदद मिलती है।

✻ टाइम मैगजीन ने १९३८ में मेन ऑफ द ईयर अडोल्फ हिटलर को घोषित किया था।

✻ कुत्ते, बिल्ली, चीता आदि प्राणी डायरिया होने पर पेट का विषारी द्रव्य बाहर निकालने के लिए घास खाकर उलटी करते हैं।

✻ एक घंटे में दुनियाभर में लगभग ३०,००० टन शक्कर तैयार होती है।

✻ फ्रेड बुर्टीन ने छाती पर २० ईंटें रख संतुलन बनाया।

✻ यदि आपने जीवन भर नाखून नहीं काटे तो नाखून २४ फीट तक बढ़ेंगे।

✻ देश में अनुदान प्राप्त संस्कृत विश्वविद्यालयों की संख्या ११ हैं जिनमें से हर साल आठ विश्वविद्यालयों पर सरकार ४५ करोड़ रुपए खर्च करती है।

✻ भुनी हुई बड़ीसौंफ रोज खाने से पाचन क्रिया में सुधार होता है।

✻ दुनिया के जंगलों में से २५ प्रतिशत से ज्यादा जंगल साइबेरिया में है।

✻ शार्टहैंड की खोज इ.पू. ४८१ में यांगत्से नदी के किनारे हुई।

✻ दुनिया में सेब की ७५०० से ज्यादा किस्में हैं।

✻ विस्कांसिन विश्वविद्यालय का छात्र ११ साल तक अंडरग्रेजुएट कक्षाओं में फेल होता रहा क्योंकि वह ग्रेजुएट होना नहीं चाहता था।

✻ हबल टेलीस्कोप अपने १५ वर्ष के कार्यकाल में सितारों और मंदाकिनियों की ७ लाख फोटो खींच चुका है और पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए तीन अरब मील चल चुका है।

✻ ब्रेन जोन्स ने हॉट एयर बलून में १९ दिन रहने का रिकॉर्ड बनाया।

✻ घुटना सबसे ज्यादा जटिल जोड़ है व उसे आसानी से चोट पहुंच सकती है।

✻ भारत का हर दूसरा बच्चा कुपोषित है।

✻ काली मिर्च पीस कर रोज खाने से आंखों की रोशनी बढ़ती है।

✻ घर ही घर में ही कोई महिला औसत १० मील चल लेती हैं।

✻ हमारे शरीर का सबसे लंबा अवयव मतलब त्वचा। त्वचा में तीस करोड़ पेशियां होती हैं।

✻ कोयला उत्पादन में भारत विश्व का तीसरा बड़ा देश है। अमेरिका व चीन के बाद वह दुनिया के कोयलें उत्पादन

में तीसरी बड़ी दस प्रतिशत की भागीदारी रखता है।

❋ लीडर शब्द लॉर्ड से बना है, जिसका मतलब पुराने समय में नार्वे में था- समुद्र में जहाज का रास्ता।

❋ स्वित्जरलैंड की यूफेमिया स्टेडलर ने लगातार ४० घंटे कपड़े प्रेस किए।

❋ जब आप छींकते हैं तो बाहर निकलनेवाली हवा का वेग १६० किलोमीटर होता है।

❋ अब तक थल सेना से सेवानिवृत्त होनेवाले सैनिकों को भूतपूर्व सैनिक कहा जाता है पर अब उन्हें गौरवशाली सेनानी के नाम से पुकारा जाएगा।

❋ आधुनिक तरीके के रेनकोट की खोज १८२३ में चार्ल्स मेकिनतोश ने की।

❋ क्यूबा के लुईस एंटिनियो नामक व्यक्ति ने अपने चेहरे पर २३० जगह पर टंकन करवाया।

❋ हमारे मस्तिष्क में १० हजार करोड़ न्यूरॉन है।

❋ देश को हर साल वर्षा के जरिये तकरीबन २२ हजार घनमीटर पानी हासिल होता है व इतना ही पानी ग्लेशियरों के पिघलने व हिमपात से हासिल होता है।

❋ छाते का सर्वप्रथम प्रयोग चीनी लोगों ने किया।

❋ वायु गतिकी के नियमों के अनुसार भौंरे के शरीर की रचना इस प्रकार से है कि वह उड़ नहीं सकता। लेकिन वह फिर भी उड़ता है।

❋ डाक टिकट का प्रयोग सबसे पहले ग्रेट ब्रिटेन देश में हुआ था।

❋ महात्मा बुद्ध का वास्तविक नाम सिद्धार्थ था।

❋ एवींडास और डायना गायकुनास नाम के दो सर्कस कलाकारों ने १० टन के बर्फ के एक ब्लॉक के अंदर ६३ घंटे और ३१ मिनट रहकर रिकॉर्ड बनाया।

❋ डोवर, ओहायो के जौन हरजिग के पास ऐतिहासिक, नामी और शाही परिवारों से जुड़े ५०० व्यक्तियों के अंतिम संस्कार की स्मारक सामग्री का संग्रह है।

❋ हेनरी फोर्ड को एक टेस्टट्यूब भेंट की गई जिसमें टॉमस एडीसन की अंतिम सांस जमा की गई थी। इस विश्वास के साथ कि यह उनकी आत्मा है।

❋ दुनिया का सूक्ष्मतम इलेक्ट्रिक मोटर कैलिफोर्निया के शोधकर्ताओं ने बनाया है। वह इंसान के बाल का शतांश है। यदि वह २२५ अश्वशक्तिवाले वी ६ इंजन के आकार का हो तो उससे १०० गुना ज्यादा शक्तिशाली होगा।

❋ गूगल के सर्वोच्च तीन अधिकारी सिर्फ एक डॉलर प्रतिवर्ष का वेतन लेते हैं।

❋ सन् २००५ में नार्वे में ईस्टर की छुट्टियों के दौरान स्कीइंग करने वालों के इतने एक्सीडेंट हुए कि स्थानीय अस्पताल में २७८ मरीजों के प्लास्टर चढ़ाने की सामग्री कम पड़ गई।

❋ जर्मनी के स्टटगार्ट राष्ट्रीय अकादमी के छात्रों ने ऐसा उपकरण बनाया है जो फ्रिक्शन और वैक्यूम तकनीक से दीवार पर चढ़ने में मदद करता है।

❋ १८५३ में विलियम टॉमस ने अनोखी पाल गाड़ी तैयार की थी जो पवन के वेग से चलती थी।

✻ नई दिल्ली के निशांत काशीभाटला महज तीन मिनट और २१ सेकंड में २०० युग्म संख्याएं याद करके व बिना किसी गलती के पांच मिनट में उन्हें दोहराने की बेजोड़ क्षमता रखते हैं।

✻ एक मिनट में व्यक्ति का दिल औसतन ७० बार धड़कता है।

✻ देश में जीएसएम आधारित मोबाइल सेवा के ग्राहकों की संख्या मई २००६ में ७.५३ करोड़ हो गई है।

✻ लौंग वायुनाशक है जो पचन व चयापचय क्रिया को सुधारती है। खांसी, दमा, दांत का दर्द, कान दर्द, मांसपेशियों की जकड़न, सिरदर्द ऐसे कितने ही रोगों में यह लाभदायी है।

✻ गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स के बाद लिम्का बुक ऑफ रिकार्ड्स की शुरुआत १९९० में की गई थीं।

✻ Maserati कार जिसकी गति ३१५ किलोमीटर प्रति घंटा है व कीमत लगभग १.५ करोड़ रुपए है। यह दुनिया की सबसे तेज गति की कारों में से एक है।

✻ टॉम लेपर्ड ने पूरे शरीर पर गोंदवा लिया।

✻ जन्म के समय सभी बच्चे कलर ब्लाइंड होते हैं, यानी वे रंग-भेद नहीं कर पाते।

✻ भारत में ५७ लाख लोग एचआईवी से पीड़ित हैं।

✻ दिन में पैदा होनेवाले शिशुओं में ज्यादातर लड़के होते हैं व रात में पैदा होनेवाले कन्या शिशु होती हैं।

✻ दुनिया का पहला डाक टिकट १ मई १८४० को ब्रिटेन में जारी हुआ। १९५१ तक ब्रिटेन के डाक टिकट पर उसी देश का मतलब ब्रिटेन नाम होता था।

✻ कनाड़ा के अल्बटी शहर में दुनिया का सबसे बड़ा कार पार्किंग क्षेत्र है।

✻ नेशनल सैंपल सर्वे (एनएसएस) के एक सर्वेक्षण के मुताबिक ग्रामीण क्षेत्रों में १००० में से ७८४ बुजुर्गों की पूरी जिम्मेदारी उनके बच्चों ने संभाल रखी है। शहरी इलाके में ऐसे वृद्धों की संख्या ७६२ है।

✻ एक हेक्टयेर मतलब २.४७१ एकड़।

✻ पेट्रोल पर चलनेवाली पहली तीन पहिया कार जर्मन इंजीनियर कार्ल फ्रेडरिजी बेन्ज ने १८८५ में बनाई।

✻ होनोलुलु (अमेरिका) के एक क्लब के सदस्यों ने १४,५५० फीट लंबे फूलों का हार बनाया।

✻ प्रत्येक व्यक्ति एक मिनट में १५ बार सांस लेता है। पूरे दिन में २१,६६० सांसें व सालभर में वह ७८.८४ लाख सांसें लेता है।

✻ देश की २६१ मिलों में हर साल लगभग १९० लाख टन शक्कर का उत्पादन होता है।

✻ विश्व पृथ्वी दिवस २२ अप्रैल को मनाया जाता है।

✻ भारत में पहली बार जनगणना १८७२ में की गई।

✻ हंटर की आवाज तब होती है जब हंटर का चोटी का हिस्सा ध्वनि की गति से तेज गतिमान होता है।

✻ मेटल स्टॉर्म कंपनी के संस्थापक माइक ओ ड्वायर ने एक मिनट में दस लाख गोलियां दागनेवाली बंदूक की ईजाद की थी।

✻ कला सामग्री तस्कर असल में संग्रहालय से कलाकृति की तस्करी करते हैं पर एक ब्रिटिश कलाकार बैंकसी ने

अपनी कलाकृति संग्रहालय की तस्करी करके बेच दी।

❋ आधुनिक समुद्री डाकू मलेशिया और इंडोनेशिया के बीच मलक्का की खाड़ी में सबसे ज्यादा सक्रिय हैं। इस इलाके में दुनिया का एक तिहाई कारोबार होता है।

❋ ज्वारभाटा चंद्रमा की आकर्षण शक्ति के कारण आता है।

❋ बीसीजी का टीका क्षय रोग से बचाव के लिए लगाया जाता है।

❋ निमोनिया का संबंध शरीर के फेफड़े से है।

❋ शुष्क वायु की अपेक्षा आर्द्र वायु में ऊष्मा अधिक देर तक विद्यमान रह सकती है। यही कारण है कि ऊष्ण कटिबंधीय देशों में रातें गर्म होती हैं और रेगिस्तानों में रातें ठंडी होती है।

❋ दुनिया का सबसे बड़ा पोत एक फ्रांसीसी तेल टैंकर है, जिसकी लंबाई ४१५ मीटर अर्थात् सिडनी हार्बर पुल के बराबर है।

❋ वैज्ञानिक उपकरण और उनका प्रयोग- १) बेरोग्राफ- यह वायुमंडल का दाब अभिलेषित करनेवाला यंत्र है। २) क्रेस्कोग्राफ- यह पौधों में हुई वृद्धि अभिलिखित करनेवाला यंत्र है। ३) कार्डियोग्राफ- यह एक डाक्टरी संयंत्र है जिसका उपयोग हृदय की गति अभिलिखित करने में किया जाता है। ४) क्रोनीमीटर या काल मापी यंत्र- यह एक घड़ी है जिसका इस्तेमाल ठीक-ठीक समय जानने के लिए जहाज आदि में किया जाता है। ५) डिपसर्किल- इस यंत्र के सहारे किसी स्थान के त्रिकोण का मान ज्ञात किया जाता है। ६) इपीडीयास्कोप या चित्रदर्शी- यह फिल्म और अपारदर्शी पदार्थों के बिम्ब को पर्दे तक प्रक्षेपित करनेवाला यंत्र है।

❋ प्रशीतक संयंत्र- विश्व की सबसे गहरी खान दक्षिण अफ्रीका के कार्लेटनविले नामक स्थान पर है। इसके अंदर २५०० टन क्षमता का बर्फ संयंत्र लगाया गया है। बिना इस प्रशीतक के इस खाने के सबसे निचले स्तर, जो ३७७७ मी. गहरा है, का तापमान ५५ डिग्री सेल्सियस रहता है। प्रशीतक के कारण तापमान कम रहता है, जिस पर मजदूर सरलता से काम कर लेते हैं।

❋ मिराबेला दुनिया का सबसे ऊंचा जहाज है जो २९५ फीट ऊंचा है।

❋ हर व्यक्ति औसतन दिन में १.४५ लीटर पानी पीता है।

❋ कृषि और उससे जुड़े क्षेत्र में २००५-०६ में केवल ३.९० प्रतिशत की वृद्धि हुई।

❋ इंग्लैंड के राजा जॉर्ज तृतीय ने अपने पूरे जीवनकाल में ६७ हजार किताबें खरीदकर पढ़ीं।

❋ सबसे पहला नोबल पुरस्कार जिस भारतीय को दिया गया वो डॉ. सी.वी. रमन थे।

❋ न्यू ऑर्लिंस का लुइजियाला सुपरजेम दुनिया का सबसे बड़े आकार का गुम्बद है। इसके बाह्य भाग का व्यास पूरे ६८० फीट है।

❋ दिल से निकला रक्त पूरे शरीर में घूमकर फिर दिल की ओर आता है उसे केवल एक मिनट का समय लगता है।

❋ पांच हॉर्सपावर के एक करोड़ पंप रोज तीन घंटे बिजली खींचते हैं। यदि यह बिजली बचाएं तो १२०० मेगावॉट बिजली आसानी से मिलेगी।

✻ लुई ब्रेल ने स्वयं दृष्टिहीन होते हुए भी दृष्टिहीनों के लिए ब्रेल लिपि का आविष्कार किया।

✻ संयुक्त राज्य अमेरिका का जन्म ब्रिटेन से आजादी की घोषणा के साथ ४ जुलाई १७७६ को हुआ था।

✻ घोषणापत्र पर ५६ व्यक्तियों के हस्ताक्षर थे, पर ४ जुलाई को दस्तखत एकमात्र जॉन हैनकॉक ने किया।

✻ टॉमस जैफरसन ने स्वतंत्रता के घोषणापत्र को लिखा था, बगैर किसी संदर्भ पुस्तक की मदद के।

✻ पावर लंच क्लेवलैंड ओहायों ८० वर्षीय पायलट और रिटायर्ड बैंकर रॉजर लेवरिंग, का शौक है अपने दोस्तों को अपने प्रिय रेस्तरां में लंच के लिए हवाई जहाज से ले जाना।

✻ पोप अरबन षष्ठम केवल १३ दिन अपने पद पर रहे। इतिहास में पोप पद का यह सबसे छोटा कार्यकाल है।

✻ पांचवे बड़े धर्म सिक्ख के अधिकांश पुरुष नाम के अंत में सिंह और महिलाएं कौर लिखती हैं।

✻ एससी हितकारी के पास ५००० ऑटोग्राफ हैं।

✻ हमारे शरीर में हमेशा सात लीटर खून होता है।

✻ करीब चार करोड़ अमेरिकी नींद में खलल से होनेवाली बीमारी से परेशान हैं तो उम्मीदें कर्मचारियों की वजह से जापान को सालाना ३० अरब डालर का नुकसान हो रहा है।

✻ जी बम नाम से जाना जाता सबसे ज्यादा क्षमतावाला ग्रेफाइट बम सबसे पहले १९९१ में खाड़ी युद्ध में प्रयोग में लाया गया।

✻ भले ही सूरज पर दिखाई न दे पर जो दाग हैं वे ज्यादा से ज्यादा ८००० मील व्यास के व कम से कम ३०० मील व्यास के होते हैं।

✻ कमांडर उदय सोंधी एक टांग गंवाने के बावजूद कृत्रिम पैर के साथ लगभग २००० घंटों की हेलीकॉप्टर उड़ान भर चुके हैं।

✻ एक साल में एक व्यक्ति एक टन अनाज ग्रहण करता है।

✻ फुटबॉल खिलाड़ी डियागो मेराडोना का जर्सी नंबर १० मेराडोना की याद में समर्पित कर दिया गया। अब अर्जेंटीना में कोई फुटबॉल खिलाड़ी यह नंबर नहीं पहनेगा।

✻ दुनिया की जनसंख्या लाखों सालों बाद एक अरब हुई थी। एक से दो अरब होने में १०० साल लग गए, २ से ३ अरब होने में ३० साल, ३ से ४ अरब होने में १५ साल, ४ से ५ अरब होने में महज १२ साल व ५ से ६ अरब होने में भी १२ साल लगे।

✻ देश में २००१ में खिलौना निर्माण तकनीकी संस्थान (आईटीएमटी) की संस्थापना हुई।

✻ हमारी हाथों की अंगुलियां ज्यादा क्रियाशील होती हैं न कि पांवों की।

✻ देश में रेशम का उत्पादन १६,५०० टन होता है। इसमें भी सर्वाधिक कर्नाटक व आंध्र प्रदेश में बनता है।

✻ शरीर में तिल्ली की वृद्धि, किडनी के रोग, अजीर्ण आदि पर सौंफ लाभदायी है।

✻ खिलौनों की खरीददारी में अमेरिका सबसे आगे है।

✻ हमारे पूरे जीवन काल में औसतन दिल २५० करोड़ बार धड़कता है।

❋ देश में २००४-०५ में ८८,३४,७२,००० टन एल्युमिनियम का उत्पादन हुआ।

❋ कोई नहीं जानता कि अमेरिका का पहला झंडा किसने बनाया था।

❋ न्यूयार्क के एल्बेरी टेंप्लो ने १८९६ में पैडल बोट बनाई।

❋ ब्रेन वायनर नामक ब्रिटिश व्यक्ति ने ४५०० फ्रॅक्चर प्लास्टर जमा करने का रिकार्ड बनाया।

❋ छह-सात माह की उम्र में बच्चा एक ही समय निगल सकता व सांस ले सकता है वयस्क ऐसा नहीं कर सकते।

❋ प्यू रिसर्च सेंटर के सर्वे के मुताबिक जहां पिछले साल भारत में ७१ फीसदी अमेरिका परस्त थे वहीं इस साल वह आंकड़ा ५६ फीसदी रह गया है।

❋ इतिहास में फरवरी १८६५ ही एकमात्र महीना पड़ा जिसमें पूर्णिमा नहीं आई थी।

❋ राबर्ट एल. रेटे ने सबसे छोटा २ इंच का वायलिन बनाया।

❋ पीठ की रीढ़ की हड्डी के पास की त्वचा को सबसे ज्यादा स्पर्श ज्ञान होता है।

❋ भारत निर्माण योजना के तहत केंद्र सरकार १० मिलियन हेक्टयर जगह सिंचाई के लिए उपलब्ध कराएगी।

❋ अक्टूबर २०१२ में विश्व बिरादरी यानी दुनिया की जनसंख्या बढ़कर ७ अरब हो जाएगी।

❋ जॉनसन एंड जॉनसन में काम करते हुए १९२१ में इरेली डिक्सन ने बैंडएड की खोज की।

❋ हिमालय की श्रृंखला में पाए जानेवाले पौधे बसूटी के फूल के निचले हिस्से की नली को चूसने पर शहद जैसी मिठास आती है।

❋ २४ वर्षीय फ्रांसीसी एले लेनिया ने बगैर कागज-कलम का सहारा लिए २०० अंकों की संख्या का १३ वां मूलांक सिर्फ ८ मिनट ३३ सेकंड में निकाल कर दिखाया।

❋ मशहूर सिगरेट मार्लबोरों का सेवन करते पुरुष के चित्र के साथ दर्शाए गये राज्य मोंटाना में सार्वजनिक भवनों में सिगरेट पीने पर रोक है।

❋ अल्बानिया का मोस्ट वांटेड अपराधी रिजा मलाज वर्षों तक पुलिस की आंखों में धूल झोंकता रहा पर अप्रैल २००५ में गलती से विस्फोटक फटने से उसका एक हाथ उड़ गया और वह पकड़ा गया।

❋ न्यूयार्क शहर की तीन वर्षीय क्लार्क रिकी डेविस जूनियर एक फिल्म देखने अकेले निकल पड़ी और बस पर बैठकर थिएटर तक पहुंचने में सफल भी हो गई।

❋ अर्जेंटीना के ब्यूनर्स आयर्स विश्वविद्यालय में विदेशी कर्ज का संग्रहालय बनाया गया है।

❋ अखबारों के स्तम्भ लेखक अरमा बॉम्बेक (१९२७-१९९६) को डेटन, ओहायो में दफनाया गया है। उनकी कब्र की जगह १४.५ टन की शिला रखी गई है।

❋ फ्रांस के एंटोनी सेको ने फलों के ३४,५०० चित्रों के स्टीकर एकट्ठा किए।

❋ हमारे वजन का ४० प्रतिशत भार मांसपेशियों का होता है।

❋ भारत में २० साल से ज्यादा उम्र के डायबिटीज के मरीजों की संख्या ३ करोड़ हैं।

❋ बार-बार होनेवाली सर्दी में बेर का रस गुणकारी है।

❋ शिकागो के ओ हैरे विमानतल से हर ४० सेकंड में एक विमान उड़ता है।

❋ प्रथम दया मोदी पुरस्कार से अमिताभ बच्चन को सम्मानित किया गया।

❋ सुभाष चंद्र बोस द्वारा गठित रेजीमेंट में एक महिला कैप्टन थी, उसका नाम कैप्टन लक्ष्मी बाई था।

❋ फादर एंड सन्स का लेखक इवान तुर्गनेव है।

❋ हॉलीवुड जहां विदेशी फिल्म बनाती है यह संयुक्त राज्य अमेरिका देश में स्थित है।

❋ संयुक्त राष्ट्र संघ में पर सर्वप्रथम हिन्दी में भाषण देनेवाले व्यक्ति का नाम अटलबिहारी वाजपेयी है।

❋ विश्व में सर्वप्रथम मार्ग प्रकाश व्यवस्था (स्ट्रीट लाइट) १८०७ में लंदन के पाल माल में की गई और सदियों से जलती मशालों की जगह ली केरोसिन या गैस की लौ वाली लालटेनों (लैम्प) ने।

❋ भय के मारे रोंगटे अथवा सिर के बाल खड़े हो जाना कोई असामान्य बात नहीं है। शरीर की त्वचा में बालों के नीचे एक नन्हीं मांसपेशी होती है। जो मानसिक या शारीरिक आघात लगते ही सिकुड़ जाती है और बाल खड़े हो जाते हैं।

❋ हमारी पलक की त्वचा काफी संवेदनशील होती है।

❋ पिछले वित्त वर्ष २००५-०६ में ७७ हजार ९०० करोड़ रुपये से ऊपर प्रॉपर्टी से जुड़े लेन-देन हुए।

❋ दुनियाभर के खिलौनों के बाजार का वार्षिक टर्नओवर ३,३७,५०० अरब रुपये है।

❋ स्नूकर की शुरूआत ब्रिटिश अधिकारियों ने बिलियर्ड्स के आधार पर भारत में ही १८७५ में की थी।

❋ केवल चाउ को छोड़ दें तो हर श्वान की जुबान गुलाबी होती है जबकि चाउ की नीली काली होती है।

❋ बाइबिल की सूचनाओं के आधार पर साउथ डैकोटा के बॉब और कैरेन टोस्टेरड ने ईसा मसीह की गंधवाली मोमबत्तियां बनाई हैं।

❋ मझोले आकार के एवोकैडो फल में चौथाई पाउंड के चीजबर्गर से ज्यादा चिकनाई होती है। पर यह चिकनाई फायदेमंद है।

❋ अलास्का के स्कॉट मैकाइन्स पर १९६७ में और फिर अप्रैल २००५ में भालू ने हमला किया। इस प्रकार अलास्का के पहले व्यक्ति हैं, जो भालू के दो हमलों के बाद भी बचे रहे।

❋ सबसे बड़ा बेलन ऑस्ट्रेलिया के लेन शिर्षे ने बनाया जो ४३ फीट लंबा था।

❋ मां का दूध पीनेवाले बच्चे अपने पालकों की तरह ज्यादा दिखते हैं न कि वे बच्चे जो मां का दूध नहीं पीते।

❋ देश में इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटंटस् ऑफ इंडिया में संलग्न सी.ए. की संख्या १,३०,००० है जिसमें हर साल ७५०० की बढ़ोतरी होती है।

❋ बारिश हो रही हो और आसमान में बिजली चमक रही हो तो वृक्ष के नीचे न खड़े रहें क्योंकि पेड़ व आपका शरीर दोनों गीला होता है ऐसे में बिजली का खतरा बढ़ जाता है।

❋ मोती विनेगर में पिघल जाते हैं।

❋ मानव ने मॉडर्न कल्चर तब अपनाया जब उसने ४०००० साल पहले यूरोप में प्रवेश किया।

❋ आसमान की आतिशबाजी नाम से जिस घटना का आकलन किया जाता है वह है बिजली चमकना। यह बिजली

पृथ्वी से ८ से १६ किमी दूरी पर होती है।

* लिंडोन यार्क नामक ब्रिटिश ने पानी पर तिपहिया साइकिल चलाने का रिकॉर्ड बनाया।

* हमारी दृष्टि की मर्यादा ४०० नैनोमीटर से ७०० नैनोमीटर है।

* भारत में हर साल ८० लाख लोग मरते हैं। पर उनमें से केवल ६० हजार व्यक्ति नेत्रदान करते हैं।

* दुनिया का सबसे बड़ा होटल अमेरिका के लासवेगास शहर का एमजीएम ग्रांड होटल है जो ११२ एकड़ में फैला है।

* हमारे पेट में ही १०० खरब माइक्रोब्स (बैक्टेरिया) बसे हैं। जो हजार से ज्यादा प्रजाति के हैं। ये बैक्टेरिया हमारे साथ-साथ विकसित हुए हैं व हमारे सिस्टम का हिस्सा हैं।

* वर्ष २००५ के अंत तक भारत में फास्ट फूड का बाजार सालाना ४८०० करोड़ रुपए से ऊपर जा पहुंचा।

* जर्मन रसायनविद राबर्ट बनसेन ने १८५५ में लैबोरेटरी बर्नर को ईजाद किया।

* चांद पर हवा और पानी की अनुपस्थिति में वहां मौजूद धूल बहुत कड़ी और तीखी होती है जो चंद यात्रियों और उनके उपकरणों के लिए नुकसानदायक होती है।

* येल विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने लेजर रिमोट के सहारे दूर उड़ती मक्खी की उड़ान को नियंत्रित करने में सफलता प्राप्त की।

* कैथलिक चर्च के विभाजन यानी पैपल शिज्म (१३७८-१४१७) के दौर में ३ प्रतिद्वंदी पोप ईसाइयत के ध्वजवाहक बन गए थे।

* मयामी के पेड्रो अलकैंटारा ने तम्बाकू की पत्तियों से बेसबॉल का एक बैट बनाया है।

* ७ अप्रैल २००५ को अलास्का में रहने वाले एक सज्जन अपने ड्राइविंग लाइसेंस के नवीकरण के लिए सरकारी कार्यालय आए तो कार इमारत से ठोक दी।

* ५ मई २००५ को ओरलॅंडो के आर्नल्ड पामर अस्पताल में तीन माताओं ने एक साथ तीन-तीन बच्चों को जन्म दिया।

* ओमरॉन जापानी कंपनी के शोधकर्ता ने बिल्लियों जैसी आवाज करनेवाले रोबोट को बनाया।

* आपके ६० बरस के होने पर शरीर में कंपन की शुरुआत होने लगती है।

* अंगोला के फुटबॉल डिफेंडर लोको का उपनाम उनके माता-पिता ने नहीं रखा, बल्कि फुटबॉल की दीवानगी के कारण उन्हें इस नाम से बुलाया जाने लगा जिसका स्पेनिश में मतलब है दीवाना।

* आज देश में १८० लाख लोग भूखे हैं इसमें से १३० लाख लोग पिछले पांच सालों में बढ़े हैं।

* इराक में अब तक लगभग २५०० अमेरिकी सैनिक मारे जा चुके हैं।

* चलते समय व बैठे रहने पर आपका रक्तदाब अलग-अलग होता है।

* देश में प्राथमिक कृषि सकारी संस्थाओं की संख्या १०५७३५ हैं जिसमें से सर्वाधिक २०८६६ महाराष्ट्र में हैं।

* भारतीय संस्कृति ५००० वर्षों से फल-फूल रही है।

* पृथ्वी पर हर मिनट में दस हजार बिजली चमकती है।

* विश्वप्रसिद्ध स्टार बक्स कॉफी की हर दुकान में जाने का निश्चय कर चुके विंटर नाम के सज्जन अब तक उत्तरी

अमेरिका के ४५०० और शेष विश्व के २१३ केन्द्रों में कॉफी पी चुके हैं।

❋ प्लेनेरियम फ्लैट वर्म के हर टुकड़े में जीने की शक्ति होती है। यहां तक कि उसके मूल आकार का २५० वां हिस्सा भी जीवित रह सकता है।

❋ गरम दूध में डूबोने वाले टी बैग्स की शुरूआत १९०८ में हुई।

❋ हमारे शरीर में ६५ से ७० प्रतिशत पानी है।

❋ एक घंटे में विश्वभर में मिलाकर साढ़े तीन हजार के लगभग मोटर-गाड़ियां बनती हैं।

❋ जर्मनी के एंजेलिका उन्वेरू ने २,८५,००० बॉलपेन संग्रहित किए।

❋ तंदुरुस्त रहने के लिए हमें अपनी शारीरिक ऊर्जा का २० प्रतिशत खर्च करना पड़ता है।

❋ देश में साहसिक उद्योगपतियों (इंटरप्राइजर्स) की संख्या ४२१.२४ लाख है।

❋ सतयुग में मनुष्य का जीवन औसतन डेढ़ सौ वर्ष माना गया, त्रेता युग में १०२ वर्ष।

❋ फ्रान्स के मार्ग ग्रेगॉयर ने १९५४ में पहला नानस्टिक फ्राइंग पेन बनाया।

❋ अमेरिका की ड्यूक कंपनी ने कुत्ते के आकार का वैक्युम क्लीनर बना रिकार्ड दर्ज किया।

❋ कान की पाल (जहां बाली पहनी जाती है) में हड्डी नहीं होती।

❋ सरकारी आंकड़ों के अनुसार बिहार के करीब ७५ लाख लोग प्रदेश छोड़ पलायन कर गए हैं।

❋ पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के विरुद्ध जाने के लिए किसी भी अंतरिक्ष यान को ११-२७ किमी प्रति सेकंड की रफ्तार पकड़नी पड़ती है।

❋ पोटेटो चिप्स को न्यूयार्क शहर के सेराटोगा रेस्टोरेंट में १८३३ में पहली बार बनाया गया।

❋ दुनिया का सबसे बड़ा एयर ट्रेफिक कंट्रोल टावर मलेशिया के क्वालालंपुर में है जो ४२५ फुट ऊंचा है।

❋ हमारे बाल इपीथीलियल सेल्स से तैयार होते हैं। बालों की तीन परत होती है। सबसे भीतर की मेडुला, बीच की कॉर्टेक्स व बाहर की क्यूरिकल।

❋ घोड़ा ७० किमी प्रति घंटा तो हाथी ४० किमी प्रतिघंटा तक दौड़ सकता है।

❋ बेंजामिन हिश हॉर्न के नाम टी बेग पेटंट है जो उन्होंने १९१९ में किया।

❋ रिचर्ड रोमन ने एल्युमिनियम फॉइल का प्रयोग कर ७३२ किलो वजनी गोला बनाया।

❋ उम्र, धूम्रपान, नशीले पदार्थों का सेवन व इसी तरह के कुछ अन्य कारणों से अंगुलियों के निशानों में परिवर्तन आता है।

❋ देश की ११३५ जेलों में बंद ३.२२ लाख कैदियों में से २.२३ लाख यानी करीब ७० फीसदी विचाराधीन कैदी हैं।

❋ राष्ट्रसंघ द्वारा तय मानक के मुताबिक हर व्यक्ति को प्रतिदिन सभी काम सही ढंग से निपटाने के लिए ५० लीटर पानी चाहिए होता है।

❋ आसमान में चमकनेवाली बिजली का तापमान सूर्य की ऊपरी सतह से भी ज्यादा होता है।

❋ मनुष्य को समय की जानकारी के लिए प्राय: घड़ी की आवश्यकता पड़ती है। ये घड़ियां भी विचित्र प्रकार की होती हैं। अनेक घड़ियां तो अपनी किस्म, गुण व विशेषताओं के कारण संसार भर में मशहूर हो जाती हैं। विश्व की सबसे ऊंची

चार मुंहवाली घड़ी विलियम्स बर्ग बैंक बुकलिन न्यूयॉर्क में है। यह न्यूयार्क में सड़क की सतह से ४३० फुट ऊंचाई पर लगी हुई है। सबसे महंगी घड़ी लंदन में १६८० में ११ लाख के मूल्य से बनी थी। सबसे भारी घड़ी सेस्टमिन्सटर पैलेस की ब्लॉक टावर है। इसे एडवर्ल प्रथम ने लगवाया था। इसके ४ डायल हैं, जो प्रत्येक २ फुट ६ इंच व्यास के हैं। यह घड़ी १८५६ में ७ लाख में बनी थी। इस घड़ी का घंटा ही १५ टन का है। विश्व की विशालतम घड़ी डेनमार्क में है, जिसका उद्घाटन वहां के सम्राट ने १५ दिसंबर १९५५ में किया था। यह विश्व की सबसे अधिक ठीक समय देनेवाली घड़ी मानी गई है। इसे घड़ी निर्माता व खगोलविद् जेम्स आल्सन ने दस वर्षों में तैयार किया था। इसमें १४००० पुर्जे ५,७०,००० ढंग से कार्य करते हैं। निचले भाग के बीच में कैलेंडर है तथा अन्य भाग नक्षत्रों के बारे में बताते हैं।

❋ हमारे शरीर में इतना लौह है कि कोई कील आसानी से बन सकती है।

❋ किसी भी विचाराधीन कैदी के भोजन, दवा व कपड़े आदि पर लगभग ५५ रुपए प्रतिदिन का खर्च है। इस हिसाब से सालाना २० हजार रुपए का खर्च है। देश के २.२३ लाख विचाराधीन कैदियों पर देश का चार अरब ४६ करोड़ रुपया उन्हें जेलों में बनाए रखने पर खर्च होता है।

❋ ग्रीन टी पीने से वजन कम होता है। खून में शक्कर की मात्रा नियंत्रित रहती है।

❋ आसमान में बादलों की बिजली का भार ५००० वोल्ट प्रति सेंटीमीटर तक हो सकता है। यदि आसमान की समस्त बिजली का प्रयोग किया जाए तो पुणे, बेंगलोर, हैदराबाद शहरों में छह से आठ महीनों तक बिजली मिल सकती है।

❋ नॉनवेज सेंडविच १८ वीं सदी में जॉन मॉटेंग ने बनाया।

❋ नेब्रास्का के मार्क वॉटर ने रोबोटिक ट्रॉली बनाने का रिकार्ड बनाया।

❋ डर के मारे रोमांच होता है या सिर के बाल खड़े हो जाते हैं। दरअसल शरीर पर बालों के नीचे एक छोटा स्नायु होता है जो मानसिक व शारीरिक आघात से संकुचित होता है व बाल खड़े हो जाते हैं।

❋ अब तक दुनिया के ७५८ लोगों को नोबल पुरस्कार मिला है।

❋ दुनिया में पहली बार स्ट्रीट लाइट में १८०७ में लंदन में लगाई गई।

❋ सबसे कम उम्र के ड्रम वादक के रूप में सिद्धार्थ रंगराजन का नाम दर्ज है।

❋ ६० साल की उम्र तक ज्यादातर लोगों की ५० प्रतिशत स्वाद ग्रंथियां नष्ट हो जाती हैं।

❋ तम्बाकू में ४००० से ज्यादा रसायन होते हैं।

❋ दुनिया की सबसे बड़ी आर्क कमान मिसिसीपी में ६३० फीट ऊंची है।

❋ अपनी ऊंचाई लीजिए व उसे ८ से भाग कर दीजिए, इस तरह आप जान पाएंगे कि आपका सिर कितना लंबा है।

❋ देश में २००५ में गेहूं का उत्पादन ७२०० लाख टन हुआ।

❋ बबूल के गोंद से त्वचा की जलन कम होती है।

❋ चार्ली चैपलिन की तरह लगनेवालों की प्रतिस्पर्धा में एक बार खुद चार्ली सहभागी हुए थे और उसमें उन्हें तीसरा पुरस्कार मिला था।

❋ भारत में पोस्टकार्ड का उपयोग पहली बार १ जुलाई १८७९ को किया गया।

❋ गीतों में सबसे ज्यादा रिकॉर्ड्स आज तक बिटेल्स के बिके हैं।

❋ औसतन मानवीय शरीर में १ मिलीग्राम यूरेनियम, २ मिलीग्राम स्वर्ण व ७ मिलीग्राम असैनिक होता है।

❋ दुनिया के दृष्टिहीनों में से २० प्रतिशत भारत में हैं।

❋ आलूबुखारे में विटामिन-सी की प्रचुरता होती है। इससे प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है। यह दिल के रोगियों के लिए अच्छा होता है।

❋ माचिस की खोज से पहले ही सिगरेट लाइटर की खोज हो गई थी।

❋ पहली बार ऊन से बने मोजे की खोज छठीं सदी में इजिप्त में हुई।

❋ पायलट क्ले सेंटर कैनसस के माइक स्पाइसर अपराधियों को पकड़ने में पुलिस की मदद कर रहे थे कि उनके सिर में गोली लगी। उन्होंने फिर भी विमान को सफलतापूर्वक उतार दिया।

❋ अमेरिकी गृहयुद्ध के जनरल डेनियल सिकल्स ने अपना कटा हुआ पैर राष्ट्रीय स्वास्थ्य संग्रहालय को दान कर दिया और उसे हर साल देखने जाते हैं।

❋ मैडिसन, विसकांसिन में १६ अप्रैल २००५ में ऐसी दौड़ हुई जिसमें धावक शादी के परिधान पहन कर दौड़े।

❋ सन् १५०७ का एक नक्शा जिसमें पहली बार नई दुनिया यानी अमेरिका को दिखाया गया था, १५ लाख डॉलर में बिका।

❋ दुनिया का सबसे बड़ा रोलर कोस्टर जापान के नागाशिमा स्पैलैंड नामक एम्युजमेंट पार्क में है। उसकी लंबाई ८,१३३ फीट व ऊंचाई ३११ फीट है। इसकी रफ्तार पति घंटे १४९ किमी है।

❋ जब आप केवल खड़े रहते हैं तब भी संतुलन बनाने के लिए आपके शरीर की ३०० मांसपेशियां काम कर रही होती हैं।

❋ एक घंटे में विश्वभर के तेल के कुओं से मिलाकर लगभग बीस लाख बैरल तेल निकाल लिया जाता है।

❋ नासा में ३० प्रतिशत वैज्ञानिक भारतीय हैं।

❋ भारत का पहला व्यावसायिक वायुयान १८ फरवरी १९११ को इलाहबाद-नानी के बीच उड़ा।

❋ अमेरिका के चार्लोट ली ने रबर के १४०० बतखों का संग्रह किया।

❋ हमारी आंखों की पुतली द्वारा रेटिना तक पहुंचाई जानेवाली छवि की दूरी कैमरा व ऑटोफोक्स लैंस की ही तरह खुद ब खुद बदलती है।

❋ सरकार की मध्यान्ह भोजन योजना से देश के लगभग १२ करोड़ बच्चों को लाभ मिल रहा है।

❋ सबसे ज्यादा यूरेनियम का उत्पादन अमेरिका करता है।

❋ पान के पत्तों की खेती मूलत: मलेशिया की देन है।

❋ संवाद के लिए पशु-पक्षी गंध व दृष्टि का प्रयोग करते हैं। फेरोमोन जैसे रसायन को छोड़ चीटियां व कुत्ते आपस में संवाद बनाने में उसकी गंध का प्रयोग करते हैं।

❋ थामे, नेपाल का अपा शेरपा एवरेस्ट शिखर पर १४ बार चढ़ चुका है।

❋ यहूदियों के भोजन नियमों के अनुसार टिड्डे और कीड़े कोशर। (पवित्र भोजन) की श्रेणी में आते हैं।

❋ फिल्म अनशील्ड के निर्माण के दौरान कलाकार जेटली ने कुत्तों की तरह पिंजरे में बंद योद्धा की भूमिका के निर्वाह के पहले अनुभव के वास्ते कुत्तों के बाड़े में रहने का अनुभव हासिल किया था।

❋ सन् २००५ में कोलैरेडो रॉकीज और एरिजोना डायमंड्स बैक के बीच बेसबाल इसलिए रोक देना पड़ा क्योंकि मैदान में मधुमक्खियों ने हमला बोल दिया।

❋ अप्रैल २००५ में नार्वे में हैल्प वांटेड शीर्षक से पोस्टर लगे थे। इनके उद्देश्य वाइकिंग यानी समुद्री डाकुओं को खोजना था।

❋ सन १९०७ में हेवरहिल के डॉक्टर डंकन मैकडूगल ने आत्मा का वजन जानने के लिए मरीजों के मरने के पहले और बाद में वजन लिया।

❋ लिचिलेस्ती, रोमानिया में यूरोप की अंतिम कुष्ठ रोगियों की बस्ती थी।

❋ स्टानी ब्रुक, न्यूयॉर्क के दो वर्षीय बालक रॉबर्ट पैलेंज को तीन टन की गाड़ी ने कुचल दिया, पर वह तीन हफ्ते के भीतर चलने-फिरने लगा।

❋ थर्माकोल बनाने की दुनिया की सबसे लंबी मशीन महाराष्ट्र के माण तहसील के रामदास माने ने बनाई। इसकी लंबाई ३२ फीट, चौड़ाई २६ व ऊंचाई १९ फीट है।

❋ एक कदम चलने में हम २०० मांसपेशियों का प्रयोग करते हैं।

❋ भारतीय रेल से हर दिन लगभग ११० लाख यात्री यात्रा करते हैं।

❋ भारत सरकार ने १९९० में एयर कॉर्पोरेशन एक्ट रद्द किया व निजी कंपनियों के लिए राह खोली।

❋ ब्लड ग्रुप की खोज १९०१ में डॉ. कार्ल लैंडस्टेनर ने की।

❋ पृथ्वी पर रोजना ४.५ पौंड सूर्य प्रकाश आता है।

❋ केरल की एल. अथिरा कृष्ण ने लगातार ३२ घंटे वॉयलिन बजाकर रिकॉर्ड बनाया।

❋ हमारे मेमोरी बैंक में १०० अरब सूचनाएं इकट्ठा करने की क्षमता होती है।

❋ देश में ४०० हवाई अड्डे हैं उनमें से १२२ का प्रबंधन भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण करता है। अंतर्देशीय सेवा ९४ हवाई अड्डों पर है।

❋ हमारी पृथ्वी की उम्र ४५० करोड़ वर्ष है।

❋ भारत में सर्वप्रथम पोस्टकार्ड का प्रयोग १ जुलाई १८७९ को किया गया।

❋ आंखों की मांसपेशियों में से एक से ज्यादा निष्क्रिय हो जाए तो आंखों में भेगापन आ जाता है।

❋ देश में २००५ में फल व सब्जियों का उत्पादन १५ करोड़ टन हुआ। विश्व में भारत का इस क्षेत्र में दूसरा स्थान है।

❋ लौंग के तेल से मालिश करने पर मांसपेशियों का दर्द रुकता है।

❋ तीन साल की उम्र में पड़े मिर्गी के दौरे के बाद से डेनियनल टैमेट की मानसिक शक्ति अचानक बढ़ गई। वह सात भाषाएं बोलता है, गणितीय फौरन गणनाएं फौरन कर सकता है और पाई से लेकर दार्शनिक पद्धति के २२.५१४ वे स्थान तक फौरन पता लगा लेता है।

❋ १९८० में चेचक का सफाया होने के पहले इस बीमारी से संक्रमित तीन में से एक व्यक्ति की मौत हो जाती थी। साठ के दशक तक हर साल बीस लाख से ज्यादा लोग इससे मरते हैं।

❋ तंजानिया में इंसान की खाल का काला बाजार है। इस खाल तथा शरीर के अन्य अंगों का इस्तेमाल तांत्रिक क्रिया-कलाप और जादू टोने में होता है।

❋ हिलो हैटी कंपनी के कर्मचारियों ने १० फीट ऊंचा व ६ फीट चौड़ा दुनिया का पहला सबसे बड़ा शर्ट बनाया।

❋ हमारे दिमाग को ग्लुकोज की सप्लाई हर मिनट होती है।

❋ देश में २००५ में चावल का उत्पादन ८५३१ लाख टन हुआ।

❋ एक हजार हीरों में से केवल दो ऐसे होते हैं जिन्हें पूरी तरह रंगहीन कहा जाता है।

❋ ट्यूलिप के फूलों को हालैंड से जोड़ा जाता है, पर मूलत: वे टर्की अंनाटोलिया में १६ वीं सदी में पाए गए।

❋ सबसे महंगी घड़ी लंदन में १६८० में बनाई गई जिसकी कीमत थी ११ लाख पाउंड।

❋ भारत दुनिया का १२ वां अमीर देश है।

❋ अलास्का में उन लोगों की संख्या सबसे ज्यादा है जो अपने काम पर पैदल जाते हैं।

❋ चिकित्सकीय थर्मामीटर के बारे में भारतीय मानक संस्था ने पहली बार १९७१ में दिशा निर्देश तय किए जिनमें १९९४ में फिर संशोधन किया गया।

❋ दुनिया की सबसे बड़ी गुण सूत्रों की बैंक चेन्नई में स्थापित होगी।

❋ जब छींक आती है तो एक मिली सेकंड के लिए हमारा दिल काम करना बंद कर देता है।

❋ कराटे का जापानी अर्थ खुले हाथ है।

❋ देश में सबसे कम जन्मदर केरल में है।

❋ ५ से १७ वर्ष के बच्चे स्कूल में २५ हजार घंटे बिताते हैं।

❋ सैन जुआन प्यूतों रिको के पैट्रीशिया पेना ने ६२ फुट लम्बा सिगार बनाया। इसमें २० पाउंड तम्बाकू और लपेटने के लिए १०० पत्तियां लगीं। इस सामग्री की कीमत २००० डॉलर (९० हजार रू. से ज्यादा थी)

❋ तकरीबन ८ फुट ऊंचा झांग जुनकाई एशिया का सबसे ऊंचा व्यक्ति है।

❋ कनाडा और ब्रिटेन के अधिकारियों का निष्कर्ष है कि सुनसान जगहों में शास्त्रीय संगीत बजाने से उत्पात मचा।

❋ दिसम्बर २००४ में अमेरिका के एक सरकारी खजाने को डाकू लूट ले गए। इस खजाने में ३६ लाख सिक्के थे, जिनका वजन था २२.५ टन।

❋ ब्रिटेन के पहले सरकारी बिल्ला पीटर १७ वर्ष का होने तक जिया।

❋ उत्तर अमेरिका में ऐसे विशिष्ट सुरक्षित कमरे बनाए गए हैं, जहां युद्ध की स्थिति में देश के नेता किम जोंग इल की प्रतिमा और चित्रों को रखा जा सके।

❋ सियाटल, वाशिंगटन के जैफ ट्वायडा नाम के सज्जन स्टार वॉर्स- एपिसोड ३ रिलीज होने के २२ हफ्ते पहले ही सिनेमाघर में टिकट लेने के इंतजार में बैठ गए थे।

❋ बिल डूगर्टी, नाम के कार वॉश मैनेजर ने गौर किया कि स्टार्लिंग चिड़िया उसके कारखाने से सिर्फ सिक्के चुराकर ले जाती है।

❋ २००४ के चुनाव में ६७ करोड़ पंजीकृत वोटरों और सात लाख मतदान केंद्रों के साथ भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है।

❋ दूरबीन एक प्रकाशीय उपकरण है, जिसमें काफी दूर स्थित वस्तु का प्रतिबिंब इतने पास आ जाता है कि उसे आसानी से देखा जा सके। इसके लिए दूरबीन में उस कोण को बहुत बढ़ा लिया जाता है, जिस पर किसी दूरस्थ वस्तु (जिनमें खगोलीय पिंड भी शामिल हो सकते हैं) को देखा जाता है। टेलीविजन के प्रसारण केंद्र में, किसी वस्तु से आनेवाली प्रकाशीय-किरणों को रेडियो-तरंगों में परिवर्तित करके दूरस्थ स्थानों को प्रेषित किया जाता है, जहां विशेष युक्तियों (टेलीविजन रिसीवर सेटों) से उन्हें पुन: प्रकाशीय-किरणों में बदल लिया जाता है और इस तरह उस वस्तु का प्रतिबिंब प्राप्त होता है।

❋ अमेरिका की मुनरो काउंटी, मिसिसिपी के प्लैसंट ग्रोव कब्रिस्तान में हेटी व्हाइटवर्थ को तीन बार दफनाया गया। अक्टूबर १९७९ में दायाँ पैर, मई १९८१ में बायाँ पैर और जून १९८१ में शेष शरीर।

❋ मौत की कीमत २००३ में अमेरिका के कोलेरेडो राज्य ने अस्पतालों को २० लाख डॉलर से ज्यादा के बिल इन लोगों के लिए दिए जो मर बए।

❋ अमेरिका के ब्लैकवुड, न्यूजर्सी का जो टॉर्नेटर मैस्टोसाइटोसिस से ग्रस्त है। इसमें सामान्य से मच्छर का काटना भी प्राणघातक हो सकता है। २००१ के बाद से वह केवल एक बार बगैर बी सूट पहने घर से बाहर निकला, वह भी अपनी शादी के मौके पर।

❋ माली ने पानी का पाइप उठाया तो हम अंदाजा लगा लेते हैं कि वह अब बाग में पानी देगा। इस तरह अंदाजा लगाने की क्षमता हमें मस्तिष्क में स्थित मिरर न्यूरॉन्स मांसपेशी से मिलती है।

❋ अनुमानत: देश में हर साल ४० लाख विदेशी पर्यटक आते हैं।

❋ पृथ्वी पर जमा होने वाली टनों धूल से पृथ्वी पर हर दिन वजन टनों में बढ़ रहा है।

❋ देश में कर्मचारी भविष्य निर्वाह निधि कानून १९५२ में अमल में आया।

❋ ऑस्ट्रेलिया के डेविड इक्सले ने १,८६,९९९ किलो वजन का विमान २९८ फीट दूर तक खींचा।

❋ पुरुष अपने मस्तिष्क को महिलाओं की तुलना में दो से तीन बार ज्यादा बदलते हैं।

❋ तुर्किस्तान का हलीलमत्लू वल्ड् चैम्पियन वेट लिफ्टर है।

❋ दुनिया में सबसे सस्ता जहाज को डिसमेंटल करना गुजरात के अलंग में होता है। यहां चालीस हजार मजदूर २४ घंटे विषैले वातावरण में रहते हैं। जिनमें से हर महीने ३० लोग जान खो देते हैं।

❋ विश्व में १०० करोड़ से भी ज्यादा लोग उच्च रक्तचाप (हाई ब्लड प्रेशर) से पीड़ित हैं।

❋ पहला सेल फोन १९२४ में बना।

❋ आनंद बक्शी का सबसे ज्यादा फिल्मों (५६०) में गीत लिखने का रिकार्ड है।

❋ वयस्क स्त्री या पुरुष के बालों को बालों की ही लंबाई के २५ प्रतिशत तक खींचा जा सकता है वो भी बिना टूटे।

❋ देश में हर साल २० लाख लोगों को मलेरिया होता ह।

❋ इंग्लैंड में ई. १६०० तक सात साल के लड़के-लड़कियां एक जैसे ही कपड़े पहनते थे।

❋ देश में नगर निगम नाम की पहली संस्था की स्थापना मद्रास प्रेसिडेंसी में वर्ष १६८८ में की गई।

❋ आइसलैंड, अंटार्कटिका और ग्रीनलैंड पर एक भी चींटी नहीं है।

❋ पुणे के लक्ष्मण दिनकर ने ९२ वर्ष की उम्र में २३४ फीट ऊंची पर्वती पहाड़ी पर दिन में ८ बार जाकर रिकॉर्ड बनाया।

❋ हमारे दिमाग को दिनभर में लगभग १२० ग्राम कार्बोहाइड्रेड व ५०० कैलोरी की जरूरत होती है।

❋ प्रति वर्ष लगभग दो लाख लोग केवल बस, ट्रेन या सिनेमाघरों में ही अपने छाते भूल जाते हैं।

❋ दुनिया में सबसे पहला लीवर ट्रांसप्लांट १९६३ में डेनवर (अमेरिका) में हुआ था जबकि सफल ट्रांसप्लांट डेनवर में ही १९६७ में हुआ।

❋ इंग्लैंड के स्टीफन टेलर की जीभ ३.७ इंच लंबी है। जो अब तक की सबसे लंबी जुबान है।

❋ माता के गर्भ में जन्म के पूर्व से छह वर्ष की आयु तक बालक की बुद्धि का क्रमिक विकास होता है। शेष विकास ६ से १२ वर्ष की उम्र में होता है।

❋ देश में केंद्रीय कर्मचारियों की संख्या ५५ लाख है।

❋ धूप से बचाव वाली कुछ क्रीमें शरीर के लिए नुकसानदायक हैं। इनमें प्रयोग किए जानेवाले टिटेनिआ (टिटेनियम ऑक्साइड) के अति सूक्ष्म कणों (नैनोपार्टिकल्स) का प्रभाव मस्तिष्क में न्यूरॉन की रक्षा करनेवाली कोशिकाओं पर बुरा पड़ता है।

❋ पहले अंतरिक्षयात्री का बहुमान यूरी गागारिन को है जिसने १२ अप्रैल १९६१ को पृथ्वी की कक्षा पार की।

❋ विश्व मौसम विज्ञान संगठन की स्थापना १९५१ में की गई। इसका मुख्यालय जेनेवा में है।

❋ दुनिया का सबसे बड़ा सब-वे रशिया के मास्को शहर में है। मास्को मैट्रो के जरिए रोज ३०.३ करोड़ लोग यात्रा करते हैं।

❋ दांतों के ऊपर का दंत वल्क (इनेमल) मानव शरीर का सबसे कठोर पदार्थ होता है। इतना होने पर भी इसके सड़ने की बडी संभावना होती है।

❋ देश में ३८० लाख लोग इंटरनेट का प्रयोग करते हैं।

❋ फिलिपीन्स के रिलीज पार्क में ३०,३६५ छात्रों ने सात रंगों के टी शर्ट पहनकर मानवीय इंद्रधनुष बनाया।

❋ स्त्री या पुरुष के दांत अलग-अलग पहचाने जा सकते हैं। क्योंकि दांतों की पल्प मांसपेशी में ४ क्रोमोसोम होता है। इस गुणसूत्र को विशिष्ट क्रिया द्वारा रंग देने पर खास रंग आता है। ये गुणसूत्र मरने के ५ महीने बाद भी वैसी ही रहती है जिससे लिंग व ब्लडग्रुप की भी जानकारी मिल सकती है।

❋ एक लाख गर्भवती महिलाओं में से देश में ६७७ महिलाएं बच्चे को जन्म देते समय मर जाती हैं।

❋ सबसे बड़ा सर्फ बोर्ड नेव्ह हेमन ने बनाया जो ३९ फीट लंबा है।

❋ दिन में शरीर का तापमान ज्यादा होता है जो हमें जगाये रखता है।

❋ देश में इंटरनेट के द्वारा टिकट की सबसे ज्यादा बिक्री मुंबई में होती है।

✻ इमली में क पोषकतत्व की प्रधानता होने से स्कर्वी रोग में वह उपयोगी है।

✻ प्राचीन इजिप्त के पिरामिड में ५००० साल पुराने इत्र को भी देखा गया।

✻ ग्रेगरी डनहम ने ११ फीट ऊंची व २० फीट लंबी मोटरसाइकिल बनाई, जिसका वजन २९४८ किलो है।

✻ यदि आप ८ साल, ७ महीने व ६ दिन लगातार चीखते रहें तो आप इतनी ऊर्जा का निर्माण करेंगे कि कप भर कॉफी गरम हो जाये।

✻ गंगा सहित भारत की अन्य नदियों की सफाई पर अब तक ४७३६ करोड़ रुपये खर्च हो चुके हैं।

✻ पक्की इमली व काली मिर्च का काढ़ा सर्दी-जुकाम पर उपयोगी है।

✻ इलेक्ट्रॉनिक मीटर २५ से ३० प्रतिशत अधिक तेजी से चलते हैं। इससे यह रोज १० से १२ यूनिट ज्यादा दिखाते हैं।

✻ भारत सरकार ने १९५३ में एयरलाइंस कंपनी का राष्ट्रीयकरण किया।

✻ केविन कूल ने ११००० डायस इकट्ठा किए।

✻ यदि व्यक्ति को दिनभर हिचकी आती रही तो उसके शरीर की ऊर्जा में १० प्रतिशत कमी हो जाएगी।

✻ भारत की सेना के चार लाख लोग कश्मीर में हैं व वहां आतंकवादियां की संख्या दो हजार से भी कम है।

✻ अति सिगरेट पीने से दृष्टिहीन होने का खतरा होता है।

✻ मानसून अवधि का निर्धारण पहली बार १६ वीं शताब्दी में हुआ।

✻ पृथ्वी का तापमान आप जितने नीचे जाते हैं उतने हर ६० फीट पर एक डिग्री बढ़ता है।

✻ सबसे बड़ा पास्ता टोनी कंपनी ने बनाया।

✻ हमारी नाक ज्यादा से ज्यादा ८.८ से.मी. लंबी होती है।

✻ देश के राज्यों की सड़कें सुधारने के लिए बीते दो सालों में ३,१२,७,७१ करोड़ रुपए खर्च हुए।

✻ सैंडविच का यह नाम जॉन मार्टेग्यू की देन है।

✻ नींबू के रस से तैयार पहला कोल्डड्रिंक पेट कॉंकलीन ने बनाया।

✻ अमेरिकन कंपनी ने ११ फीट ऊंचा आइस्क्रीम कोन बनाया।

✻ हमारे शरीर में कोई अवयव तेजी से बढ़ता है तो वह है बालों के ऊतक।

✻ भारत में पांच साल की उम्र तक के १२ लाख बच्चे हर साल कुपोषण से मर जाते हैं।

✻ भारत में इस समय सात बैंक ऐसे हैं जहां से आप सोना खरीद सकते हैं।

✻ बालों को घुंघराले (पर्म) करने का चलन १९०६ में प्रचलित हुआ।

✻ हांगकांग के पो ले ऊंग कुक संस्था के ७,७२७ लोगों ने एक साथ ड्रम बजाया।

✻ शरीर में अन्न की कमी पड़ने के कुछ समय पहले ही हमें भूख की अनुभूति होती है।

✻ कच्चा आंवला चबाकर खाने से पाचनक्रिया में सुधार होता है।

✻ पूरी दुनिया में हथियारों की खरीद कर ९०० अरब डॉलर सालाना खर्च किए जाते हैं।

✻ आपके घर की आवाजें दूसरों तक न जाएं इसलिए १३ इंच की मोटी दीवार बनाएं। एयर कंडीशनर व मोटे कांच भी

आवाज शोषित करते हैं।

✻ सोडा आइस्क्रीम की खोज फ्रेंक इयरसन ने की।

✻ अनुमानत: प्रति सेकंड ११५ टन समुद्री नमक छिड़ककर पृथ्वी पर बिखर जाता है।

✻ देश में हर घंटे दो बलात्कार, दस खून व एक दहेज हत्या हो जाती है।

✻ कोलंबिया में अफवाह फैलाने वाले को ४ वर्ष की कैद है।

✻ बनार्ड लैवरी नामक ब्रिटिश किसान ने १२ फीट लंबी व ३० किलो वजन की ककड़ी का उत्पादन किया।

✻ हमारे शरीर के ३० से ४० प्रतिशत हिस्सों में मांसपेशियां है।

✻ इस समय देश में २८,००० करोड़ रुपए के पानी का व्यापार है।

✻ प्राकृतिक गैस में कोई गंध नहीं होती। उसमें कृत्रिम तरीके से गंध डाली जाती है ताकि लोग लीकेज का पता लगा सकें व उस लीकेज को रोक सकें।

✻ फूड कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया की स्थापना भारत में १९६५ में हुई।

✻ आपका दिल १ मिनट मे ७२ बार धड़कता है। इस लिहाज से वह २४ घंटों मे १ लाख ३ हजार ६८० बार धड़कता है। इसी तरह आपका दिल १ मिनट मे ५ लीटर रक्त पंपिंग करता है।

✻ रक्त की १ बूंद में २५० मिलियन से अधिक रक्त कोशिकाएं पायी जाती है।

✻ शिकागो के फील्ड म्यूजिक के कर्मचारियों ने ४१ फीट लंबा कृत्रिम डायनासोर बनाया।

✻ हमारी स्वार्देंद्रिय के ऊतकों की संख्या ९००० है।

✻ इंडियन ऑटो कम्पोनेंट्स इंडस्ट्री में २,५०,००० लोग काम करते हैं।

✻ सऊदी अरब में ३६०० करोड़ टन खनिज तेल की उपलब्धता है।

✻ फ्री सॉफ्टवेयर के प्रणेता रिचर्ड स्टॉलमन हैं।

✻ अमेरिकी प्रशासन में ७६ फीट लंबी दुनिया की सबसे बड़ी यात्रा बस बनाई।

✻ भारत के पास दुनिया के जल स्त्रोत ४ प्रतिशत है।

✻ अमेरिकन क्वीन भाप पर चलनेवाला सबसे बड़ा जहाज है।

✻ हमें स्वस्थ रहने के लिए २५०० कैलोरी ऊर्जा देनेवाले संतुलित आहार की जरूरत होती है।

✻ देश में १९ हजार अरब घनमीटर पानी नदियों में आता है जिसमें से महज ७०० अरब घनमीटर पानी का हम उपयोग कर पाते हैं।

✻ दुनिया में पहली बार हवाई यात्रा का टिकट १९१९ में बिका।

✻ अमेरिकी ग्रेग स्कॉट ने २२ फीट ऊंचे दुनिया की सबसे बड़ी पॉपकॉर्न मशीन का निर्माण किया।

✻ पहाड़ी से नीचे उतरते समय आपके घुटनों पर पड़नेवाला वजन आपके पूरे शरीर के वजन का तीन गुना होता है।

✻ जहां पूरे विश्व में बीते पांच सालों में वनस्पति तेल का सेवन बढ़ा है। भारत में जरूर यह कम हुआ है। भारत में प्रति व्यक्ति प्रतिवर्ष औसतन ११.५ किलोग्राम खाद्य तेल का सेवन कर रहा है तो विश्व में यह आंकड़ा २०.२ है।

❋ अमेरिका में १२ प्रतिशत वैज्ञानिक भारतीय मूल के हैं जबकि नासा के ३६ प्रतिशत वैज्ञानिक भारतीय हैं।

❋ मायकल विनर ने ५०,००० से ज्यादा नंबर प्लेट्स इकट्ठा कीं।

❋ जो ऑक्सीजन हम सांस द्वारा ग्रहण करते हैं उसका लगभग २० प्रतिशयत ऑक्सीजन मस्तिष्क उपयोग करता है।

❋ स्नूकर का जन्म भारत में हुआ था।

❋ भारत में हर साल लगभग साढ़े पांच सौ टन सोना खरीदा जाता है।

❋ अनार खाने से भूख बढ़ती है।

❋ इराक ने कुवैत पर अगस्त १९९० में आक्रमण किया था।

❋ आजादी के बाद भारतीय नेताओं ने राज्यों को भाषा के आधार पर विभाजित करने का फैसला किया। इस आधार पर सबसे पहले आंध्रप्रदेश का निर्माण हुआ।

❋ दस दिन में रानी चींटी लगभग २.५ लाख अंडे देती है।

❋ अमेरिका की कर्विल कार्पोरेशन कंपनी ने ५४८६ किलो वजन का केक बनाया।

❋ भारतीय संचार निगम लिमिटेड द्वारा टेलीग्राम पर काफी पैसे खर्च करता है। जहां उसे हर टेलीग्राम पर १४० रुपए खर्च करना पड़ते हैं वहीं उसके बदले में केवल १६.७५ रुपए मिलते हैं। टेलीग्राम करने में लाख में से केवल १५१ लोग होते हैं।

❋ टाइफाइड में धनिया लाभदायी होता है।

❋ १६६० से पहले बननेवाली घड़ियों में केवल घंटे की सुई ही होती थी।

❋ इ.पू. २७०० में सुमेरी व बैबी लोन संस्कृति में पुस्तकालय देखे गए हैं।

❋ इटली का वेटिकन पैलेस १४०० कमरों के साथ दुनिया का सबमें बड़ा महल है।

❋ अपने औसत जीवन काल में मनुष्य लगभग ६ साल सपने देखता है। हर बार का सपना दो घंटे का होता है।

❋ एचआईवी/एड्स से पीड़ित ६,८०,००० लोगों ने देश में २००५ में दम तोड़ दिया।

❋ टमाटर खाने से प्रोटेस्ट ग्रंथि का कैंसर नहीं होता।

❋ कम्प्यूटर की फ्लॉपी डिस्क की खोज १९६७ में हुई व १९७१ में पहली फ्लॉपी बाजार में आई।

❋ लगभग चार करोड़ दर्शक बॉलीवुड की फिल्में देखते हैं।

❋ विश्व में गन्ने व इथेनॉल का सबसे ज्यादा उत्पादन ब्राजील में होता है। वहां ४० करोड़ टन गन्ना पैदा होता है व हर साल १७ अरब लीटर इथेनॉल बनता है।

❋ जिनको नींद अच्छी लगती है उनकी स्मृति भी अच्छी होती है।

❋ देश की कुल जनसंख्या का ६.७ प्रतिशत यानी लगभग २ करोड़ ४० लाख मध्यम वर्ग की संख्या है।

❋ पहले छोटे पत्थर या मनके के जरिए गणना की जाती थी। इस छोटे पत्थर को कैलक्युलस कहते थे। उसी से कैलक्युलेटर शब्द की उत्पत्ति हुई।

❋ देश की पहली नाव प्रतियोगिता २५ जुलाई १८१३ को कोलकाता में प्रारंभ हुई।

❋ बॉलीवुड के टर्नओवर में हर साल १८ प्रतिशत वृद्धि होती है।

❋ टोयाटो कंपनी ने कोरोला कार के ३ करोड़ मॉडल बनाए।

❋ पैर के नाखून २४ फीट तक बढ़ सकते हैं।

❋ माओवादी आतंकवादी, देश के ६०० जिलों में से करीब १५० जिले यानी भारत के एक तिहाई हिस्से में फैले हैं।

❋ पानी गुर्दे को स्वच्छ व क्रियाशील बनाता है जिससे पथरी होने की संभावना नहीं होती।

❋ आज का रोलर कॉस्टर लगभग १२० मील प्रति घंटा से ज्यादा की रफ्तार तक जाता है, वह ४१५ फीट की ऊंचाई तक चढ़ जाता है व तकरीबन २५० फीट की ऊँचाई से गिरने की डरावने किंतु रोमांच का भी अनुभव करता है।

❋ सॉफ्टवेयर शब्द का प्रयोग पहली बार जॉन टर्की ने १९५७ में किया।

❋ अमेरिका के रेस बाजार में रॉबर्ट नाम का घोड़ा १३-१ मिलियन डॉलर (६० करोड़ रुपये) में बिका।

❋ मनुष्य देखने में ६५ प्रतिशत अपनी दाईं आंख का, ३२ प्रतिशत बाईं आंख का व कुल ३ प्रतिशत दोनों आखों का प्रयोग करता है।

❋ भारत के बाजार व घरों में वर्तमान में साढ़े सात हजार से पंद्रह हजार टन तक सोना है।

❋ रोजगार गारंटी योजना के अंतर्गत काम करनेवाले मजदूर को ८ कि.मी. के परिसर में रोजगार उपलब्ध कराना होता है।

❋ सर्वप्रथम सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न सी. राजगोपालाचारी को दिया गया था।

❋ एलाइन डेविडसन ने अपने शरीर पर २५२० नुकीली पिन चुभोईं।

❋ यदि आवाज की तीव्रता १४० डेसीबल से ज्यादा हो तो कान का परदा फट जाता है।

❋ भारत के पास १६ पनडुबियां हैं।

❋ जापान के चौराहों पर जो सिग्नल लगे हैं उसमें पैदल चलनेवालों के लिए दिखाए जानेवाले सिग्नल में अलग आवाज भी होती है ताकि दृष्टिहीन भी जान सकें व आसानी से सड़क पार कर सकें।

❋ भारत में सहकारी संस्थाओं के बारे में पहला कानून १९०४ में बना।

❋ तूफानी चक्रवात समुद्र की ऊपरी सतह पर बनता है जब हवा का वेग ७४ मील प्रति घंटा होता है व हवा चक्र की तरह घूमती है।

❋ अल ड्रफोर फूड कंपनी के कर्मचारियों ने २२७९ किलो वजन की चॉकलेट बर्फी बनाई।

❋ द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान नार्वे के एक सुरंगभेदी पोत में तैनात बम्से नाम का कुत्ता अपनी छुट्टी के दौरान शहर के पबों में सूंघ-सूंघकर अपने साथी नाविकों को खोजता था।

❋ मशहूर संगीतकार वेन न्यूटन को ६ साल की उम्र में अपने पहले प्रदर्शन पर ५ डॉलर का मेहनताना मिला था।

❋ रिचर्ड डोर्सी शिकागो के लेक शोर ड्रॉब्रिज के नीचे माइक्रोवेव अवन और वीडियो गेम के सहारे तीन साल तक रहा।

❋ एंटन ओहायो के रिचर्ड और डोना हैमन ने दिसम्बर २००४ में क्रिसमस गिफ्ट के रूप में पूरे शहर के लोगों का बिजली बिल भरा।

❋ जेम्स सूई नाम के सज्जन ने चश्मा गिरने का इलाज यह निकाला कि नाक की हड्डी में सुराख करा कर उसके पार डंडी लगाई जिसके सहारे दोनों शीशे लगते।

✻ जापान के शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि पानी की सतह पर पत्थर फिसलाने के लिए उसे २० अंश के कोण से फेंकना सबसे अच्छा है।

✻ अर्मान को एक फ्रांसीसी मूर्ति में ६० कारें, १६०० टन कंक्रीट और रेत का इस्तेमाल हुआ है। यह कलाकृति ६५ फुट ऊंची है।

✻ मेलबर्न, आस्ट्रेलिया के सुरक्षाकर्मियों ने एक औरत को स्कर्ट के भीतर ५१ मछलियों की तस्करी करते हुए पकड़ा।

✻ माइकेल वीनर नाम के इन सज्जन के पास ५०,००० से ज्यादा नम्बर प्लेटों का संग्रह है।

✻ आइकोनोजो, कोलम्बिया में गॉसिपिंग अपराध है, जिसके लिए चार साल तक की कैद हो सकती है।

✻ मारबर्ग हैमरेजिक फीवर का कोई इलाज नहीं है और इसमें ८० फीसदी रोगियों की मृत्यु हो जाती है।

✻ १५ सेकेंड में क्रिकेट में जितना शोर होता है उसमें ३७ जोड़ने से तापमान पता चलता है।

✻ रूस के बोलोलिकोवो गांव में १९ मई, २००५ को एक झील का रातभर में नामोनिशान मिट गया।

✻ साइडवॉक लिक्विडेशन का न्यूयॉर्क सिटी में दुनिया का सबसे बड़ा पॉपसिकल बनाने का सपना धरा रह गया जब ३५ हजार पाउंड का फ्रोजन जूस पिघलकर सड़कों पर फैल गया।

✻ चीन के शांक्सी प्रांत के अधिकारियों का चार साल के खाने का पैसा इतना ज्यादा था कि सरकार को उसे अदा करने में ३६ साल लगे।

✻ वर्किंघम, इंग्लैंड में रिवॉल्विंग डोर से गुजरते हुए एक कर्मचारी के चोट लगने के बाद २००४ में बीबीसी नेरिवॉल्विंग दरवाजों से सावधानी से गुजरने के लिए बकायदा कार्य योजना बनाई।

✻ ज्यार्जिया के लैरी टेलर के सिर पर लुटेरों ने गोली मार दी। घायल टेलर अपनी माँ के सामने मरना चाहते थे। वे दो मील चलकर घर पहुंचे। वहा माँ नहीं थी। अंतत: लैरी बच गए।

✻ माइकल हिल के दिमाग में ८ इंच का चाकू घुस गया। ऑपरेशन के बाद चाकू निकाला गया। ब्रेन को खास नुकसान नहीं हुआ।

✻ चीन में लंबे होने के लाभ ने बॉडी स्ट्रेचिंग मशीन और शरीर के अंग जोड़ने वाली सर्जरी को बढ़ावा दिया।

✻ मैक्सिको में बौनों का एक ग्रुप बुल फाइटिंग के लिए प्लास्टिक के हथौड़े इस्तेमाल करता है।

✻ लागोस में एक गाय को इंसान की हत्या करने पर ९ जून, २००५ को गिरफ्तार किया गया।

✻ अमेरिका में गृह युद्ध के दौरान सरकार ने गर्म हवा का बैलून उड़ाने के लिए बैलून टुकड़ी बनाई थी।

✻ डेडहम, मैसाच्युसेट्स भद्दी कलाओं के संग्रहालयों से भरे पड़े हैं।

✻ ब्रिटन के कैथोलिक चर्च ने नए पादरी की भरती के लिए बीयर के कोस्टरों पर विज्ञापन दिए थे।

✻ चीन में मोबाइल धारकों की संख्या सबसे ज्यादा २,६९,०००,००० है।

✻ हमारे शरीर के २३ प्रतिशत भाग को रक्तवाहिनों ने घेरा है।

✻ बर्फ से मारा-मारी करने का खेल सबसे ज्यादा विसकॉन्सिन में खेला जाता है।

✻ ताजा अध्ययन के अनुसार पूरे देश में ५,५२६९२ वर्ग किमी क्षेत्र निरूपयोगी है, यह कुल भूमि का १७.४५ प्रतिशत है।

❋ किसी भी कागज के टुकड़े को सात बार से ज्यादा आधा नहीं मोड़ा जा सकता।

❋ डीवीडी-डिजीटल वर्सेटाइल डिस्क या डिजिटल वीडियो डिस्क के पहली बार तैयार होने की अधिकृत घोषणा १९९५ में की गई।

❋ औसत व्यक्ति के शरीर में लगभग ६ क्वार्टस् रक्त हमेशा बहता रहता है।

❋ वर्तमान में देश में पांच करोड़ घरों की जरूरत है।

❋ बिजली गिरने पर दस में से नौ लोग बच जाते हैं।

❋ देश के पहले लोकसभा चुनावों में ३७ निर्दलीय सांसद चुने गये थे।

❋ सबसे बड़ी घड़ी डेनमार्क में है उसमें १४,००० खुले पार्ट्स हैं जो ५,७०,००० तरीकों में काम करते हैं।

❋ शिशु की दृष्टि सिर्फ १०-१४ इंच होती है। साथ ही वह सारे रंग भी नहीं देख सकता।

❋ २००१ की जनगणना के मुताबिक भारत की २७.८ प्रतिशत आबादी शहरों में रहती है।

❋ आलू बुखारे (प्लम्स) की २००० प्रजातियां हैं।

❋ औसत जिंदगी में हम जितना पैदल चलते हैं वह पूरी दुनिया के दो बार चक्कर लेने के बराबर है।

❋ देश में तार भेजनेवालों की संख्या सालभर में केवल १५१ लाख है।

❋ लाइफ इंश्योरेंस कॉर्पोरेशन (एलआईसी) की स्थापना १९५६ में हुई। आज उसके लगभग १७ करोड़ उपभोक्ता व २०४८ शाखाएं, दस लाख एजेंट हैं।

❋ दूरदर्शन का आविष्कार जॉन लॉगी बाइरड ने किया। उन्होंने १९२६ में श्वेतश्याम व १९३९ में रंगीन दूरदर्शन बनाया।

❋ ऑस्ट्रेलिया के मरूश कैफे रेस्टोरेंट के कर्मचारियों ने ४१३ किलो वजन का कबाब बनाया।

❋ हमारी आंखें पीले रंग के प्रति ज्यादा संवेदनशील होती हैं न कि लाल रंग के प्रति।

❋ मौजूदा वर्ष २००७ के लिए १८,३३७ करोड़ रुपये शिक्षा का राष्ट्रीय बजट है।

❋ अल्बार्ट आइंस्टीन ने कभी मोजे नहीं पहने।

❋ रबरबैंड को फ्रिज में रखें वे ज्यादा दिन तक टिकेंगे।

❋ दंतशास्त्र की पढ़ाई १४७७ में जॉन डी ट्रॉयला ने पहली बार प्रयोग में लाई।

❋ यदि समुद्रों के सारे खारेपन को सूखाकर नमक बनाया जाये तो वह इतना होगा कि महाद्वीपों को पांच फीट तक ढंक सकेगा।

❋ सुनहरे रंगवालें बाल ज्यादा घने होते हैं बजाय काले बालों के।

❋ चीन में भंवरा घूमाने की प्रतिस्पर्धा होती है।

❋ देश व ग्रामीण क्षेत्रों में १५ करोड़ दूरदर्शन उपकरण हैं।

❋ भारत में छाते बनाने का व्यवसाय १८६० में शुरू हुआ।

❋ अमेरिका के बाला पार्क में १५.६२० किलो वजन का एप्पल पाय बनाया गया।

✻ रात को सोते समय आप औसतन ४० बार करवट बदलते हैं।

✻ एक दिन में ८६,४०० सेकेंड्स होते हैं।

✻ मानवीय मस्तिष्क दर्द के प्रति संवेदना शून्य होता है। उसे दर्द की जानकारी ज्ञानेंद्रियां पहुंचाती हैं।

✻ अफ्रीका के जंगलों में आदिवासी फुटबॉल न मिलने पर मृत व्यक्ति की खोपड़ी को गेंद बना खेलते थे।

✻ अक्टूबर २००५ तक होम लोन लेनेवालों को हाउसिंग फाइनैन कंपनियों और बैंकों ने १,५३,२६७ करोड़ रुपए के लोन दिए।

✻ फैशन डिजाइनर रितु बेरी ने अपनी आत्मकथा की किताब की कीमत एक लाख रुपए रखी है।

✻ स्कॉटलैंड में १८१६ में ओवेन ने पहली आंगनवाडी खोली।

✻ सबसे मोटे जुड़वां बच्चों में अमेरिका के टेक्सास क्षेत्र के बिलि लियोन (३३७ किलो) व बेनी (३२८ किलो) के नाम हैं।

✻ सोने पर आपकी ज्यादा कैलोरी खर्च होती है न कि दूरदर्शन देखने से।

✻ मांसपेशियों की अकड़न, गले की खराश दूर करने के लिए, बंद नाक खोलने के लिए गर्म दूध में अदरक मिलाकर पीना लाभदायी है।

✻ सिंगापुर का नाम संस्कृत में आपा है जो सिंग पुर (सिंहों की नगरी) था।

✻ अमेरिका के पेनिसेल्विया क्षेत्र के क्लियरफील्ड भाग के डेनीज पब में दुनिया का सबसे बडा बर्गर बनता है जो ४ किलो वजन का होता है व साधारण बर्गर से दस गुना बड़ा होता है।

✻ मानव हृदय प्रति मिनट ७२-८० की दर से धड़कता है। यह आराम की स्थिति होती है। इससे कार्य करने पर धड़कन की गति बढ़ती है।

✻ नायक सूबेदार एस.सी. बोध ८००० मीटर से अधिक ऊंचाईवाली पांच चोटियों पर चढ़ाई करनेवाले पहले भारतीय हैं।

✻ जो लोग कॉफी का सेवन करते हैं उनमें लीवर कैंसर की संभावना ५० प्रतिशत कम होती है।

✻ १९४१ के पहले तक फिंगर प्रिंटस् को कोर्ट में साक्ष्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता था तब तक माना जाता था कि दो लोगों के फिंगर प्रिंटस् एक समान होते हैं।

✻ कुत्ता घास खाता दिखे तो समझें तूफानी वर्षा होगी।

✻ टेक्सास क डेव न्यूमैन ने एक तरीके को बचाने के लिए नदी में गोता लगाया और बाद में उसे गिरफ्तार कर बचाव काम में दखलंदाजी की।

✻ १८९७ में न्यूयॉर्क के नेचरुल हिस्ट्री ऑफ अमेरिकन म्यूजियम के अधिकारियों ने ग्रीनलैंड से मिली छह चीजों को उनकी इच्छा के खिलाफ प्रदर्शित कर दिया।

✻ सिजोफ्रेनिया के ज्यादातर मरीज अपनी बातों को ऐसे भूल जाते हैं जैसे अधेड़ उम्र के परेशान लोग।

✻ ब्रिटेन के बेरी एंडरसन ने चीची उंगली (कनिष्ठिका) की मदद से ६.३ किलो वजन उठाया।

✻ पर्याप्त मात्र में पानी पीने से कब्ज नहीं होता।

✻ आधुनिक ऑर्केस्ट्रा का जन्म १७४३ में मेनहेम (जर्मनी) में हुआ।

✻ सिंगापुर के सिलोसो बीच पर १४९१ लोगों ने इकट्ठा हो बैलून हैट पहना।

✻ वयस्क व्यक्तियों में आंतों का वजन १.५ किलो होता है।

✻ पिछले साल देश में कॉफी के १३ लाख पैकेट्स बिके व ४४ लाख पैकेट्स का उत्पादन हुआ था।

✻ आठ दिन में एक बार कान में तेल डालें इससे कान अच्छे रहेंगे।

✻ संगणक के फ्लैश ड्राइव की खोज १९९८ में इजराइल के एम. सिस्टम फ्लैश पायोनियर के अध्यक्ष व सीईओ जेव मोरान ने की।

✻ अमेरिका के स्टिफन क्रिएगर ने कागज का २०७ फीट तक जानेवाला विमान बनाया।

✻ हमारे शरीर में २७.५ प्रतिशत भाग में हड्डियां हैं।

✻ फास्ट मूविंग कंस्यूमर गुड्स का देश में ५०,००० करोड़ रुपये का बाजार है।

✻ अमेरिकन एयरलाइंस ने १९८७ में फर्स्ट क्लास के हर सलाद से एक जैतून फल बचाकर पूरे ४०,००० डॉलर बचाये थे।

✻ सॉल्ट लेक सिटी की ली रेडमोंड का नाम लंबे नाखूनों की वजह से गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स में शामिल है। आज उनके दोनों हाथों की हर उंगली में लगभग ३३ इंच लंबे नाखून हैं।

✻ मोटोर न्यूरांस हमारे शरीर की सबसे बड़ी मांसपेशी है।

✻ भारत का मीडिया व इंटरटेनमेंट जगत ३५,३०० करोड़ रुपए का है।

✻ समुद्र में न्यूक्लियर बम नष्ट होने के ९२ मामले दर्ज हैं।

✻ देश में १९९१ में पहली बार प्राइवेट दूरदर्शन चैनल्स को हरी झंडी मिली।

✻ बारिश की एक बूंद पृथ्वी पर २० फीट प्रति सेकंड की रफ्तार से गिरती है।

✻ औसतन एक व्यक्ति रोज १/५ ग्राम त्वचा को शरीर से हटाता है जिस पर धूल जमी होती है।

✻ भारत में रेल की पटरियों का जाल ६३,००० किमी. में फैला है।

✻ मोबाइल की जानकारी या उस पर आये चित्र को कम्प्यूटर पर डाउनलोड करने के लिए यूएसबी केबल जरूरी होता है। पहली यूएसबी १९९५ में नवम्बर महीने में बाजार में आया था।

✻ हर स्तनधारी में नर से ज्यादा मादा जीवित रहती है।

✻ जापान के सैपोरो शहर के १००७९ लोगों ने एक साथ टोस्ट बनाया।

✻ यदि आपके सिर के बाल सामान्य हैं (न घने, न कम) तो आपके सिर पर १,००,००० बाल होते हैं।

✻ भारत दुनिया में सबसे अधिक मतदाताओं वाला देश है। २००४ में ६७.१ करोड़ मतदाता थे जिनतें ३२.२ करोड़ महिलाएं थीं।

✻ भारतीय संविधान में अब तक ९३ संशोधन किए गए जबकि अमेरिकी संविधान में २१७ साल में केवल २७ संशोधन हुए हैं।

❋ जिस उत्पाद को प्रथम बार कोड मिला वह या विरिगिले का गोंद।

❋ सागर के सबसे गहरे बिंदु पर जो दबाव होता है वह प्रति वर्ग इंच आठ टन से भी ज्यादा होता है। इसे यूं देख सकते हैं जैसे कोई व्यक्ति ५० जम्बो जेट की मदद से जितना दाब निर्माण कर पाए, उतना।

❋ आइसक्रीम सन् १५५० ई. में रोम के एक वैज्ञानिक ब्लेसियस विलेफ्रेंका ने खोज की कि यदि बर्फ में नमक मिला दिया जाए तो उसका तापमान इतना गिर जाता है कि इस तापमान पर क्रीम जमाई जा सकती है। बस, यही खोज बाद में आइसक्रीम बनाने में मददगार हुई। इतिहास में इंग्लैंड के राजा जैम्स द्वितीय द्वारा सन् १६८६ में आइसक्रीम खाने का जिक्र है। उस समय इसके एक हिस्से की कीमत एक पौण्ड हुआ करती थी। १८५७ में अमरीका के बाल्टीमोर शहर में एक दूधवाले ने देखा कि गर्मियों में क्रीम अक्सर खराब हो जाती है। तब उसके दिमाग में विचार आया कि क्यूं न इन दिनों क्रीम की आइसक्रीम बना कर बेची जाए। इस तरह दुनिया में आइसक्रीम की फैक्ट्री लगी। बाद में इसी तरह की एक फैक्ट्री लंदन में सन् १८७० में स्थापित हुई लेकिन आम जनता के बीच सबसे ज्यादा प्रसिद्धि इसे सन् १९२२ में मिली जब एक अंग्रेज व्यापारी ने आइसक्रीम को बार के रूप में बनाकर सस्ते दामों पर बेचना शुरू किया।

❋ मैथ्यू मेक्ग्रोरी दुनिया के सबसे लंबे व्यक्ति हैं।

❋ प्रत्येक की जुबान का निशान अलग-अलग होता है।

❋ सरकार द्वारा चलाये जा रहे देश के सभी प्राथमिक स्कूलों में शिक्षकों का अनुपात एक स्कूल में २.५४ शिक्षक का औसत है।

❋ नींद न आती हो तो रोज सेब खायें और नींद पायें।

❋ हमारे देश में चंडीगढ़ के निजी स्कूलों में ८७ प्रतिशत शिक्षक महिलाएं हैं व दिल्ली में यह दर ८२ प्रतिशत है।

❋ चीन में १९९५ में १.९१ मिलियन डॉक्टर्स दर्ज किये गये।

❋ यदि आप सामान्य से कुछ मोटे हैं तो आपके मरने का खतरा सामान्य वजनवालों से कम होता है।

❋ देश में वाहनों की कुल संख्या २ करोड़ १० लाख है।

❋ शरीर में प्रोटीन की मात्रा बढ़ाने के लिए दालें, दूध, दही, पनीर का सेवन करें।

❋ इंटरनेट द्वारा कंम्प्यूटर वायरस फैलाने की पहली घटना १९८८ में देखी गई।

❋ अमेरिकी वायुसेना एसी-१३० विमान से तोपों के लिए बड़ी गन ले जाया करते थे।

❋ के-९ मिनरल वॉटर पैकिंग कंपनी कुत्तों के लिए भी मिनरल वॉटर बनाती थी।

❋ अल्बर्ट त्रेविनो का एक मिलियन डॉलर का घर चट्टान खिसकने से तबाह हो गया, सिर्फ २० डॉलर की एक पेंटिंग ही बचा पाए। उनके पड़ोसी का कहना था कि वह ५ लाख डॉलर का मास्टरपीस है।

❋ लॉस एंजलिस के रिचर्ड गिब्सन ने उन्हें ७९८ डाक टिकट दिए, ये टिकटें तीन सेंटीमीटर से ज्यादा नहीं था।

❋ कॉपरटोन सटैन क्रीम को खोजने वाले बेंजामिन ग्रीन ने सबसे पहले उसे अपनी पत्नी के स्टोव पर बनाया और अपने ही सिर पर टेस्ट किया।

❋ अंतरिक्ष यात्री पृथ्वी पर रहने वालों से कम तेजी से बूढ़े होते हैं।

❋ पनामा नहर की वजह से रोजाना अटलांटिक और प्रशांत महासागर के बीच २ अरब गैलन पानी बहता है।

❋ भारत के संजीव बाबू ने लगातार २४ घंटे ३० मिनट गिटार बजाई।

❋ नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के अनुसार देश में हर तीन मिनट में किसी महिला के साथ जुर्म होता है। हर २९ मिनट में एक रेप व हर ७७ मिनट में एक दहेज मौत होती है।

❋ यदि सालभर में निकले गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स के सारे संस्करण आप एक के ऊपर एक रखेंगे तो उसकी ऊंचाई इतनी हो जाएगी कि आप आकाश छू सकें। वह १००६ मील ऊंचा बन जाएगा।

❋ ए. एल्याराजा ने अपने पेट पर ५० किलो वजन के बर्फ को रख उसे हथौड़े से तोडा।

❋ हमारा यकृत एक दिन में ५०० से ज्यादा काम करता है।

❋ पहली बार १९६१ में बॉलीवाल का अर्जुन पुरस्कार ए.पलनी स्वामी को दिया गया।

❋ अनाज उत्पादन में भारत २०४० टन से विश्व में तीसरे क्रम पर है।

❋ क्यूबा केवल १ लाख १० हजार वर्ग किमी व सवा करोड की जनसंख्यावाला छोटा देश है जबकि केवल महाराष्ट्र का ही क्षेत्रफल ३ लाख ७ हजार वर्ग किमी है।

❋ दक्षिण भारत के चक्रवर्ती सरनेम के व्यक्ति का नाम सबसे लंबा है जिसमें ७१ अंग्रेजी अक्षर हैं।

❋ नवजात शिशु के हृदय का वजन केवल २८ ग्राम होता है।

❋ स्वास्थ्य के लिए नेशनल हेल्थ मिशन को बजट से ८२०७ करोड़ रुपये दिये गये हैं।

❋ सिंगापुर में बाहर से आनेवाली महिलाओं को स्थानीय पुरुष से विवाह करने की अनुमति नहीं है।

❋ भारत में कंप्यूटराइज्ड रेलवे रिजर्वेशन की शुरूआत १९८६ में दिल्ली में हुई।

❋ घर या फ्लैट की सुरक्षा कवच देनेवाले इंश्योरेंस को स्टैंडर्ड फायर या स्पेश पेरिल इंश्योरेंस कहते हैं। इस पॉलिसी में आग, बिजली गिरने, विस्फोट, बाढ़, भूकंप, दंगे, हड़ताल, पानी की टंकी फटने, हवाई जहाज गिरने जैसे हादसों से होनेवाले नुकसान को कवर किया जाता है।

❋ विश्व की सबसे ऊंची राजधानी लासा है।

❋ विश्व का सबसे छोटा स्वतंत्र देश वेटिकन है।

❋ भारत की सबसे ऊंची हिमालय चोटी कंचनजंगा है।

❋ विश्व का सबसे कम आबादीवाला देश वेटिकन है।

❋ विश्व का सबसे ज्यादा आबादीवाला देश चीन है।

❋ धरती की सबसे ठंडी जगह- वोस्तोक है।

❋ विश्व का सबसे ज्यादा शक्कर उगानेवाला देश ब्राजील है।

❋ भारत का सबसे बडा दिन २१ जून है।

❋ भारत का सबसे पहला नेशनल पार्क- कोर्बेट।

❋ १८ जून, २००५ को ब्रिटिश कोलंबिया के फोर्ट नेलसन में अलास्का हाइवे के दोनों तरफ खडे तकरीबन २,२६६

लोगों ने एक दूसरे पर ४०,३६० पानी के गुब्बारे फेंके।

❋ पीनेट्स कॉमिक के लेखक चार्ल्स शुल्ज रिपली पैनल में सबसे पहले १९३७ में छपे, इसमें उनके कुत्ते स्पाइक की फोटो थी, कॉमिक के किरदार स्नूपी की प्रेरणा उन्हें स्पाइक से ही मिली थी।

❋ हमारे दिमाग में १०० बिलियन न्यूरॉन्स होते हैं। इनकी संख्या पृथ्वी पर कुल मानव आबादी से १६६ गुना ज्यादा है और इन्हें गिनने बैठोगे तो लग जायेंगे ३,१७१ साल।

❋ एल्बर्ट आईन्सटिन के अनुसार मानव स्मृति कोष में १०० अरब सूचनाएं संग्रहित करने की क्षमता होती है।

❋ ब्रिटेन की महारानी एलिजाबेथ प्रथम अपने जमाने की सबसे ज्यादा सफाई पसंद महिला थीं। इस बात का अंदाज उनकी इस आदत से ही लगाया जा सकता है कि उस जमाने में भी वे महिने में कम से कम एक बार दूध से जरूर नहाती थीं, चाहे उन्हें इसकी जरूरत हो या नहीं।

❋ जैमन सैम्युल ने २७६ दुर्लभ मॉडल विमानों का संग्रह किया।

❋ गर्भस्थ शिशु २५ दिन का होने पर उसकी दिल की धड़कन शुरू हो जाती है।

❋ देश के ग्रामीण क्षेत्रों में ९२ प्रतिशत शिक्षाकर्मी हैं। जो एक स्कूल एक शिक्षक की तर्ज पर नियुक्त हैं।

❋ सर्च इंजन Google का नाम शब्द Googol से पड़ा जिसका अर्थ है अंक एक के बाद सौ शून्य।

❋ दुनिया की पहली अलार्म घड़ी जर्मनी में १८६० में बनी।

❋ आसमान में चमकनेवाली बिजली की चौड़ाई औसतन ६ से १० मील होती है।

❋ हमारे दिमाग का एक चौथाई प्रयोग तो आंखों को नियंत्रित रखने में ही होता है।

❋ कोई न कोई, कहीं न कहीं प्रतिदिन हर ३० सेकेंड में फेफड़े के कैंसर से मौत के मुंह में समा रहा है।

❋ नारियल पानी में मौजूद शुगर, प्रोटीन, एंटी ऑक्सीडेंट, विटामिन व मिनरल्स एक बेहतरीन इलेक्ट्रोलाइट बैलेंस देते हैं। यह किडनी को डिटॉक्सिफाइड कर शरीर के विषैले तत्वों को दूर करता है।

❋ जिन लड़कों के नाम अनोखे होते हैं वे उन लड़कों की तुलना में ज्यादा मानसिक तनाव पालते हैं जिनके नाम आम होते हैं। लड़कियों को ऐसी समस्या नहीं आती।

❋ ऑस्ट्रियन इंजीनियर पॉल इस्लेर को संगणक के पीसीबी (प्रिंटेड वायरिंग बोर्ड) का निर्माता कहा जाता है। १९३६ में उन्हें यह कल्पना और १९४६ में इसे सबके लिए खुला किया गया।

❋ पूर्णिमा के दिन पृथ्वी का तापमान ०.२ डिग्री बढ़ जाता है।

❋ जयपुर की रेखा शर्मा ने मनुष्य के बालों से कपड़े व चप्पल बनाई।

❋ ज्यादातर लोग एक मिनट में २५ बार पलकें झपकाते हैं।

❋ भारत में ७००० कॉलेज व ५० यूनिवर्सिटी से हर साल २० लाख डिग्रीधारी लोग निकलते हैं।

❋ हममें से २२ प्रतिशत लोग रोज दोपहर का खाना टाल जाते हैं, नहीं खाते।

❋ भूकंप को नापने के लिए १९३५ में चार्ल्स रिश्टर स्केल बनाई।

❋ १९१३ में टी.एल. विलियम्स नाम के केमिस्ट ने कोयले की धूल में पेट्रोलियम जेली मिलाकर पहली बार मसकारा

बनाया था।

✻ फ्लोरिडा की कंपनी ने ब्लॉग्स को अंतरिक्ष में भेजना शुरू कर दिया इस उम्मीद से कि दूसरे ग्रह के लोग हमारे बारे में जान सके।

✻ ८० वर्षीय मैडेलीन लिंडेल ने अपने अपार्टमेंट में आग लगने पर अपने युवा पड़ोसी को बचाया और दो तल्ला सीढ़ी नीचे तक लाद कर ले गई।

✻ ल्यूसियस क्विंक्टियस सिनसिनेटस अपने देहाती घर से निकला, रोम का डिक्टेटर बना, शत्रुओं की सेना को परास्त किया, दुश्मन से घिरे कौंसल मिन्युसियस को आजाद कराया और फिर अपने देहाती घर में लौट गया। यह सब सिर्फ १६ में हुआ।

✻ २००५ में न्यूजर्सी के केप. में के बीच टाउन में पुरुषों के स्पीडो-स्टाइल स्विम सूट पहनने पर लगी रोक हटा दी गई। यह रोक ३० साल से लगी थी।

✻ माइकल ट्रिमबाथ के कुत्ते में इमर्जेंसी सायरन जैसी आवाज निकालने का गुण था, २७ जुलाई २००५ को कुत्ते ने सायरन की आवाज निकालकर मालिक को घर में आग लगने की सूचना दी।

✻ शिकागो के एक बैंक डकैत ने अप्रैल २००४ में ८१,००० डॉलर चुराए, लेकिन रेडियो पर जारी सूचना से डरकर वह पूरे कैश के साथ सामने आया।

✻ दक्षिण अफ्रीका के ७९ वर्षीय मॉरिस क्रेस्विक दुनिया के पहले ऐसे व्यक्ति हैं जिन्होंने बिना कोई पैसा लिए स्वेच्छा से ३५० पिंट रक्तदान किया।

✻ पंजाब के नरेंद्र सिंग ने दांतों से १५० टन वजन का रेलवे इंजन खींचा।

✻ एक मनुष्य के शरीर-में एक हजार प्रजातियों के बैक्टीरिया रहते हैं। हमारा पाचन तंत्र ठीक से काम करे इसके लिए बैक्टीरिया ही उत्तरदायी होते हैं।

✻ देश में ८० लाख से ज्यादा हस्तशिल्पकार है।

✻ हमारे हाथों के नाखून एक इंच के ३२६ वें भाग के बराबर बढ़ जाते हैं। तो यह है एक घंटे की कीमत।

✻ अरबी के तने को घी में पकाकर खाने से पेट की गैस कम होती है।

✻ जैन कवि बनारसी दास ने अपना जीवनवृत्त अर्द्धकथा के नाम से १६४१ में प्रस्तुत किया जो न केवल हिंदी बल्कि भारत की अन्य भाषा साहित्य में रची पहली आत्मकथा थी।

✻ भारत के रफी ने १४४ घंटे में १५०७ लोगों का हेयर कट किया।

✻ दाहिनी ओर का फेफड़ा बाईं ओर से बड़ा होता है, क्योंकि बाईं ओर दिल होता है।

✻ भारत में हर साल दिल के दौरे से पीड़ित लोगों में ८० लाख लोग वे हैं, जिनकी उम्र ४० साल से कम है।

✻ बाजरे की रोटी खाने से डायबिटीज, सिरोस्थित ऑफ लीवर (जलोदर) में लाभ होता है।

✻ बॉलीवुड के पहले ब्रोशर जिसमें फोटोग्राफ व डिटेल थे को १९२१ में पहली बार बाबूराव पाटील ने जारी किया था।

✻ दस मिनट के आंधी तूफान में दुनिया के सभी नाभिकीय अस्त्रों से ज्यादा की ऊर्जा निकलती है।

❋ चेन्नई के गिरी बागरी ने एक ही समय ४२ लोगों को एक मारुति कार में बैठाकर उसे चलाया।

❋ औसत मानवीय आंख से ग्रे के ५०० अलग-अलग शेड्स देखे जा सकते हैं।

❋ मौजूदा वित्तवर्ष में रक्षा बजट ८९००० करोड़ रुपए तक है।

❋ कनाडा शब्द लेटिन अमेरिका से आया है जिसका अर्थ है बड़ा गांव।

❋ सांप जैसी दिखनेवाली मछली इलेक्ट्रिक इल को छूने पर ६५० वोल्ट्स का शॉक लगता है।

❋ बचपन में सभी रोते हैं लेकिन रोने को लेकर लड़के-लड़की का भेदभाव १२ से १८ वर्ष की उम्र में शुरू हो जाता है। रोने से शरीर का टॉक्सिन बाहर निकलता है।

❋ हमारे देश की ५४ प्रतिशत जनसंख्या २४ वर्ष से कम आयुवालों की है।

❋ फराली चावल (भगर) खाने से दमा, खांसी, पुरानी सर्दी आदि में लाभ होता है।

❋ समुद्री पानी के प्रति गैलन से आप क्वार्टर पाउंड से ज्यादा नमक पा सकते हैं।

❋ कपास का जिक्र १५०० ई.पू. लिखे ऋग्वेद में होता है।

❋ अनिरुद्ध कुमार ने आंखों पर पट्टी बांधकर धनुष से निशाना साधा।

❋ जन्म लेने से पहले ही शिशु सपने देखने लगता है।

❋ अवैधानिक हथियारों से भारत में हर साल ६००० लोग मारे जाते हैं।

❋ शहद एकमात्र ऐसा कुदरती आहार है जो खराब नहीं होता।

❋ पहली दूरभाष दिग्दर्शिका (फोन बुक) केवल एक पेज की थी जिसमें केवल ५० नाम थे।

❋ विदेश की गंगा सौर- सौर नदी को विदेश की गंगा कहा जाता है। वह ब्रिटेन की लाइसेस्टर काउंटी क्षेत्र में बहने वाली एक छोटी सी पवित्र नदी है। ब्रिटेन में रहनेवाले हिंदू अपने परिजनों की मृत्यु पर प्राय: उनकी अस्थियां यहीं प्रवाहित करते हैं।

❋ मिस्त्री महारानी मार्केडा सेलिया को लिपस्टिक के स्थान पर सुन्दर लड़कियों के ओठों का रक्त लगाने का शौक था। महारानी के सेवक सुन्दर लड़कियों का अपहरण कर लाते और महारानी जब मागंती तब किसी लड़की का होंठ काटकर खून महारानी को पेश कर दिया जाता।

❋ मैक्सिको के एजटेक सभ्यता के लोगों ने कोको ट्री से सबसे पहली चॉकलेट बनाई। जब स्पेन के राजा हरनान कोर्टिस ने सन् १५१९ में एजटेक लोगों को अपना दास बना लिया था, जब एजटेक लोगों ने उसे खुश करने के लिए चॉकलेट का ड्रिंक बनाकर सर्व किया। कोर्टिस और बाकी लोगों को यह ड्रिंक बहुत पसंद आया और तभी से चॉकलेट सबकी फेवरेट बन गई।

❋ प्रसिद्ध उर्दू शायर मिर्जा गालिब बहादुर शाह जाफर मुगल शासक के दरबारी थे।

❋ महाभारत में कर्ण ने देवराज इंद्र से प्राप्त अमोघ शक्ति से भीम के घटोत्कच पुत्र का वध किया।

❋ भूमिहीन किसानों को कृषि हेतु भूमि दिलाने के लिए १९५१ में पोचमपल्ली (आंध्रप्रदेश) से भूदान आंदोलन की शुरूआत करनेवाले विनायक नरहरि का लोकप्रिय नाम विनोबा भावे है।

❋ शेखर कपूर निर्देशित फिल्म बैंडिट क्वीन फूलन देवी दस्यु सुन्दरी के जीवन पर आधारित है।

❋ संस्कृत शब्द रुपया का शाब्दिक अर्थ है चांदी।

❋ महमूद बेग ने बड़ी बुद्धिमत्ता के साथ पूरे ५३ वर्ष गुजरात पर शासन किया। लेकिन इस महान शासक की एक कमजोरी थी। वह यह कि उसे भूख बहुत लगती थी। उसने सख्त निर्देश दे रखे थे कि जब वह जागे तो बढ़िया लज्जतदार खाना उसके सामने होना चाहिए। ऐसा न होने पर उसका गुस्सा सातवें आसमान पर चढ़ जाता। तो महमूद के सिरहाने मक्खन, शहद, केले, दूध वगैरह हमेशा रखे रहते थे। महमूद का जब पेट भर जाता तो वह तोंद पर हाथ फिराकर कहता, शायद ईश्वर ने मुझे ढेर सारा खाना खाने के लिए ही गुजरात का शासक बनाया है।

❋ रिनैते अग्रैच्चा फिलीपीन्स निवासी था। वह जिस जहाज से सफर कर रहा था, वह डूब गया। वह लहरों से लड़ता रहा और भूख मिटाने के लिए उसने अपने शरीर के सारे कपड़े एक-एक करके खा लिए। कई दिनों बाद जब उसे बचाया गया, तो उसके शरीर पर एक भी वस्त्र नहीं था।

❋ एलिवे प्रेस्ले का रसोईघर उसकी भूख मिटाने के लिए २४ घंटे खुला रहता था। क्योंकि प्रिस्ले की भूख मिटाते रह पाना आसान काम नहीं था। चीज बर्गर के शौकीन प्रेस्ले के रसोईये सुबह ४ बजे से तेज हरकत में आ जाते थे। क्योंकि एक मिनट की भी देरी होने पर प्रेस्ले की भूख कहर बरपा देती थी। उसके जीवन का ज्यादा समय खाने में बीता।

❋ मनुष्य के शरीर में इतना लोहा है कि तीन-चार इंच की दो कीलें बनाई जा सकती हैं।

❋ मोती का सृजन आश्चर्य और कौतूहल का विषय है। यह विश्वास किया जाता था कि सीप के अंदर पानी की बूंदों के प्रवेश करने से मोती बनता है। यह प्राचीन विश्वास है कि पानी की बूंदों के प्रभाव से एक विशेष प्रकार की क्रिया होने के कारण मोती का निर्माण होता है। परंतु यह विश्वास आज मान्य नहीं है। मोती जलीय सीपों में केवल उत्तेजना के विकृत प्रभाव में ही उत्पन्न होता है। सन् १८५२ में प्रसिद्ध वैज्ञानिक फिलिपी ने यह खोज की कि स्वच्छ जलीय सीप में मोती एक पराश्रयी जंतु के कारण पैदा होता है। यह पराश्रयी जंतु एक प्रकार का चिपिट कृमि है जो सींप में पहुंचकर एक प्रकार की विशेष जलन उत्पन्न करता है। जिससे बचने के लिए सीप मल पैदा करता है जो कि उस उत्तेजनकर्ता पर जा सकता है। इसके विपरीत कनचैन मइस्तर का कहना है कि मोती पानी में रहनेवाली एक प्रकार की मकड़ी के कारण बनता है। फिर भी प्राकृतिक मोती की निर्माण-विधि अभी तक प्रश्न ही है।

❋ नंबर सिस्टम का आविष्कार भारत में हुआ था।

❋ रवीनद्रनाथ टैगोर को गुरूदेव कहा जाता है।

❋ चाचा नेहरू जवाहरलाल नेहरू को कहा जाता है।

❋ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक नाम के साथ जुड़ा है।

❋ सुभाष चंद्र बोस का उपनाम नेताजी है।

❋ सरदार वल्लभभाई पटेल को लौह पुरुष कहा जाता है ?

❋ पंजाब केसरी या शेरे पंजाब नाम से लाला लाजपत राय को जाना जाता है।

❋ दुनिया के सबसे छोटे तबला वादक के रूप में अगम शिंगार का नाम है, उसकी उम्र पांच साल है।

❋ महिलाओं की तुलना में पुरुष ज्यादा देर तक ज्यादा बार व लंबे ठहाके लगाते हैं।

❋ अनुमान है कि आज भारत की करीब एक लाख महिलाएं मध्यपूर्वत देशों में नर्स से लेकर घरेलू नौकरानी तक के काम कर रही हैं।

❋ मस्तिष्क के नीचे के भाग की ब्रेनस्टेन मांसपेशी ही हमें नींद दिलाती है। वास्तविक नींद आने से पहले के १०-१२ मिनट लेटेंट पिरीफ्ड होते हैं।

❋ इंग्लैंड में १८८० में पैंट्स एक भद्दा शब्द माना जाता था।

❋ वैज्ञानिकों ने मैक्सिको के वेराक्रूज प्रांत में मिले शिलालेख को आधुनिक दुनिया का प्राचीनतम लेख बताया है, जिस पर शब्द दो हजार वर्षों से भी पहले उकेरे गये होंगे।

❋ दुनिया की सबसे लंबी महिला के रूप में चीन की याओ डेफेन जानी जाती है। वह २.३६ मीटर लंबी है व उसके पैर में ५७ नंबर की जूतियां आती हैं।

❋ बच्चा जब तक ६ से ८ हफ्ते का नहीं हो जाता। उसकी आंखों से आंसू नहीं आते।

❋ देश के १५ करोड़ लोगों के पास खुद का घर नहीं है।

❋ भारतीय रिजर्व बैंक का जम्मू-कश्मीर राज्य से कोई आर्थिक व्यवहार नहीं होता।

❋ भारत में एसटीडी फोन सेवा पहली बार कानपुर व लखनऊ में शुरू हुई।

❋ आल मालविया (इराक) में विश्व की सबसे बड़ी मस्जिद है।

❋ यदि आप दो हजार बार चिढ़चिढ़ाते हैं तो आपके चेहरे पर एक झुर्री तैयार हो जाती है।

❋ देश में साक्षरता की दर ६४.८ प्रतिशत है।

❋ खून की कमी हो तो रोज सोयाबीन युक्त दूध पीएं।

❋ विश्व स्वास्थ्य संगठन का अनुमान है कि चूल्हे के धुएं से पैदा होनेवाले प्रदूषण के चलते हर साल १५ लाख लोगों की मृत्यु हो जाती है।

❋ पहली बार १९५६ में कई लक्जरी कार मॉडल्स में इलेक्ट्रिक डोर लॉक्स की सुविधा दी गई।

❋ धूम्रपान करने वाले प्रति मिनट (विश्व भर में) ८० लाख सिगरेटें फूंक देते हैं।

❋ जेट विमान प्रति मिनट ६० किलोमीटर की गति से उड़ सकता है।

❋ संसार में प्रति मिनट एक लाख नब्बे हजार पत्र डाक से आते-जाते हैं।

❋ संसार की कोयला खदानों से प्रति मिनट ६०० टन की दर से कोयला निकाला जाता है।

❋ संसार के तेल कुओं से प्रति मिनट ४५००० टन तेल निकाला जाता है।

❋ एक मिनट में आवाज १२ मील की यात्रा करती है।

❋ संसार के लोग एक मिनट में २० लाख ३५००० कप चाय और काफी पीते हैं।

❋ जापान की सुपर एक्सप्रेस रेल एक मिनट में दो किलोमीटर तक उड़ान कर लेती है।

❋ ८५३९ बच्चे प्रति मिनट जन्म लेते हैं।

❋ ६३९७ आदमी प्रति मिनट मरते हैं।

❋ जापानी पहाड़ तायहेवी से प्रतिमिनट ६३० पत्थर लुढ़कते हैं।

❋ प्रति मिनट शेर ४ बार ऊंची कूद लगा सकता है।

❋ हंगेरियन कथाकार इश्तवान ओरकेन्य एक मिनट में पढ़ी जाने वाली लघु कहानियां लिखने के कारण प्रसिद्ध हुए।

❋ हमारा राष्ट्रगान जन गण मन एक मिनट से भी कम समय (५२ सेकेंड) में गाया जाता है।

❋ इराकियों की मदद के लिए अमेरिकी सेना के सार्जेंट डेल हॉर्न शेख बन गए थे।

❋ दुनिया में चेक गणाराज्य में सबसे ज्यादा बीयर पी जाती है। यह रेकॉर्ड प्रति व्यक्ति सालाना ३५ गैलन से भी ज्यादा है।

❋ केवल ३ साल के सात्विक भट के नाम कम उम्र में वीणा बजाने का रिकार्ड दर्ज है।

❋ पहला माइक्रोवेव कूकर १९४८ में उपयोग में लाया गया।

❋ सबसे बड़ा रिहायशी महल- ब्रूनई के सुल्तान का महल इस्ताना है। ४०० मिलियन डॉलर की लागत से तैयार इन आलीशान महल में १७८८ कमरे, २५७ बाथरूम और अण्डरग्राउण्ड गैरेज हैं, जिसमें १५३ कारें खड़ी हो सकती हैं। यह महल १९८४ में बनकर तैयार हुआ।

❋ तम्बाकू में मुख्य रूप से निकोटीन सा हानिकारक तत्व होता है।

❋ १३ फरवरी को सरोजिनी नायडू का जन्मदिन मनाया जाता है।

❋ विश्व का सबसे महंगा पनीर ले लेरून्स है, जो मादा भेड़ के दूध से बनाया जाता है।

❋ दुनिया का सबसे बड़ा बीज दुहरे नारियल का होता है जो केवल हिंद महासागर में पाया जाता है- १८ कि.ग्रा. वजन।

❋ भारत की स्वतंत्रता के समय ब्रिटेन में मजदूर दल की सरकार थी।

❋ रास बिहारी बोस ने जापान में इंडियन इंडिपैंडेंस लीग की स्थापना की थी।

❋ राज्यसभा की अधिकतम सदस्य संख्या २५० हो सकती है।

❋ भारत में उच्च न्यायालयों की संख्या २१ है।

❋ संविधान की प्रथम अनुसूची में राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्रों का वर्णन है।

❋ अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवाओं में नियुक्ति राष्ट्रपति करता है।

❋ राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग आयोग की स्थापना वर्ष १९९३ में की गई थी।

❋ अद्‌भुत है मानव शरीर विज्ञान- अगर एक व्यक्ति उसके कान, नाक, किडनी और ज्ञानतंतुओं की कार्यशक्ति को जाने तो कम्प्यूटर और अन्य अत्याधुनिक यंत्र उसके लिए बिल्कुल गौण बन जायेंगे। यहां मानव शरीर की अद्‌भुत रचना और कार्यशक्ति की विशिष्टताएं प्रस्तुत हैं- १) एक साधारण व्यक्ति को नींद आने में लगभग सात मिनट लगते हैं। २) आंखों की एक पलक में व्यक्ति सेकंड का कुछ भाग तक देख नहीं सकता है। आदमी एक दिन में जितनी बार पलक झपकाता है उनकी गिनती करें तो व्यक्ति ३० मिनट के लिए अंधा बन सकता है। ३) कैमरा जैसी दो आंखें एक घंटे में ४५० कि.मी. की स्पीड से मस्तिष्क को जानकारी पहुंचाती है। ४) व्यक्ति का हृदय नाजुक नहीं होता। पूरे शरीर में हृदय स्नायु सबसे मजबूत होते हैं। ५) मानव हृदय एक दिन में ७५०० लीटर रक्त शरीर के अलग-अलग अंगों को पहुंचाता है। ६) हमारी किडनी एक साल में २३ टैंकर रक्त शुद्ध करती है। ७) मनुष्य की हड्डियां लोहे से ज्यादा मजबूत और ग्रेनाइट

से ज्यादा कड़क होने के बावजूद वजन में हल्की होती है। ८) नवजात शिशु के शरीर में ३५० हड्डियां होती हैं। लेकिन बालक जब बड़ा होता है तो उसके शरीर में सिर्फ २०६ हड्डियां ही रह जाती हैं। ९) मानव के मस्तिष्क में एक कम्प्यूटर से एक लाख गुना ज्यादा बातों का संग्रह हो सकता है। १०) व्यक्ति के शरीर की नसें एक-दूसरे के साथ जोड़ दें तो उसकी लंबाई उतनी होती है कि पृथ्वी को दो बार बांध सकते हैं। ११) सामान्य व्यक्ति की छींक की आवाज की स्पीड एक घंटे में १६० कि.मी. की होती है।

❋ इतिहास का पिता हेरोडोटस को कहते हैं।

❋ स्पेन में रबर की सड़क पाई जाती है। स्पेन कपड़े पर अखबार निकालता है।

❋ स्विट्जरलैंड के राष्ट्रपति का शासन एक साल का होता है।

❋ सर्वप्रथम कागजी मुद्रा का प्रचलन चीन में हुआ था।

❋ विश्व का सबसे बड़ा चिड़ियाघर अफ्रीका में है।

❋ मंदिरों का शहर वाराणसी को कहते हैं।

❋ विश्व में नील नदी का पानी गर्म होता है।

❋ विश्व की सबसे बड़ी मस्जिद अलमालविया (इराक) है।

❋ विश्व की सबसे बड़ी सेना चीन की मुक्ति सेना है।

❋ विश्व की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत है।

❋ राष्ट्रीय विज्ञान दिवस २८ जनवरी को मनाया जाता है।

❋ साबुन के बुलबुले हवा में तैरते हैं क्योंकि उनके अंदर हवा होती है।

❋ बिजली के पश्चात मेघ की गर्जना सुनाई देती है क्योंकि ध्वनि की गति धीमी और प्रकाश की गति बहुत तेज है।

❋ बारह सौ से अधिक किस्में है पक्षियों की- हमारे देश में ८४ राष्ट्रीय उद्यान तथा ४४७ वन्य प्राणी उद्यान हैं। ऐसे सभी उद्यानों का कुल क्षेत्रफल लगभग १.५० लाख वर्ग कि.मी. है जो भौगोलिक दृष्टि से देश का मात्र ४.५ प्रतिशत है। भारतीय प्राणी सर्वेक्षण विभाग, कलकत्ता के देश के विभिन्न हिस्सों में कुल १६ क्षेत्रीय केन्द्र हैं। इनके माध्यम से महत्वपूर्ण जानकारी एकत्र की गई है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग जलवायु तथा वातावरण के कारण ८१,२५१ किस्म के जीव जंतु पाए गए हैं। इनमें से प्रमुख जीव- जंतुओं की पाई गई किस्मों की संख्या इस प्रकार है-

मछलियां- २५४६ किस्में, उभयचारी जीव- २०४ किस्में, सरीसृप- ४४६ किस्में, पक्षी- १२२८ किस्में, स्तनपायी जीव- ३७२ किस्में, मोलस्क प्राणी- ५११० किस्में, कीड़े-मकोड़े- ६०,००० किस्में।

❋ कुछ देशों के नाम उन्हें खोजनेवाले व्यक्तियों के नाम पर, कुछ वहां रहनेवाली जातियों के नाम पर, तो कुछ अन्य विशेषताओं के आधार पर पड़े हैं। अमेरिका की खोज अमरिगो वेसपुसी नामक व्यक्ति ने की थी। उसी के नाम पर इस भूखंड का नाम अमेरिका हुआ। फ्रेन्किस नामक आक्रमणकारियों के नाम पर फ्रांस देश को नाम मिला।

रोम और ग्रीक लोगों ने इंग्लैंड के लोगों की सफेद त्वचा सबसे पहले देखी होगी। लैटिन भाषा का एक शब्द है एलबम। जिसका अर्थ है सफेद त्वचावाला। ग्रीक और रोमन लोगों ने इस देश को एलबियन कहना शुरू किया। वैसे इंग्लैंड नाम

की उत्पत्ति एंजल्स से हुई मानी जाती है।

कनाडा के क्यूबैक नाम की उत्पत्ति की कहानी बहुत दिलचस्प है। फ्रांस के नाविक इस देश के पास पहुंचे, तो उन्हें इसकी चट्टानी जमीन का नुकीला हिस्सा समुद्र में घुसा हुआ-सा दिखाई दिया। यह हिस्सा किसी पक्षी की चोंच की तरह दिखाई पड़ता है। इसे देखकर क्वेल बेक कहकर चिल्लाये, जिसका अर्थ है चोंच तभी से इसका नाम क्यूबैक पड़ गया।

भारत का नाम शकुंतला और राजा दुष्यंत के वीर पुत्र भरत के नाम पर पड़ा। कहा जाता है कि भरत बचपन में शेर के शावकों से खेलता था। भारत का एक और नाम हिंदुस्तान है। हमारे देश की एक नदी का नाम सिंधु है। फारसी में स का उच्चारण ह होने के कारण सिंधु को हिंदू और उसके तटीय क्षेत्र को हिंदुस्तान कहा जाने लगा। कुछ विदेशी इसका उच्चारण इंडु या इंडस करते थे। इसी प्रकार आगे चलकर इसे इंडिया या हिंदुस्तान कहा जाने लगा। यह भूमि आर्यों की भूमि रही है। इसी कारण भारत वर्ष को आर्यावर्त भी कहा जाता है।

इसी प्रकार कुछ देशों के दो-दो नाम भी हैं। जैसे फिनलैंड के लोग अपने देश को सुओमी कहते हैं। हॉलैंड को नीदरलैंड्स भी कहा जाता है। ऑस्ट्रेलोइड्स के नाम पर ऑस्ट्रेलिया का नाम चल पड़ा। इसी प्रकार अन्य देशों के नाम की उत्पत्ति के स्रोत भी हैं।

✻ पलकें क्यों झपकती हैं ?- पलकों का झपकना अत्यंत आवश्यक है। इस क्रिया से विभिन्न कार्य संभव होते हैं। आंखों में गिरने वाले धूल-धक्कड़ तथा रेटिना पर तीव्र प्रकाश से होनेवाली क्षति से प्रकृति प्रदत्त आंखों को बचाने का कार्य पलकें ही करती हैं।

✻ चाकू की धार चाकू का वह भाग होता है जिस पर काटने के लिए प्रयुक्त बल केंद्रित होता है। यही बल काटने वाले पदार्थ द्वारा उत्पन्न घर्षण जैसे विपरीत बलों के विरुद्ध कार्य करता है। धार के मोटे होने पर यही बल उसकी मोटाई में बंट जाता है। जिससे काटने में अधिक बल की आवश्यकता होती है। धार के मोटे होने से कटने वाले पदार्थ के संपर्क में आनेवाला भाग भी बढ़ जाता है, जिससे घर्षण जैसे विपरीत बल की मात्रा में वृद्धि हो जाती है।

✻ बुढ़ापे में त्वचा झुर्रीदार क्यों हो जाती है ?- हमारी त्वचा के ठीक नीचे कनेक्टिव टिशू विद्यमान होते हैं, जो प्रोटीन तंतुओं तथा कोलौजेन व इलेस्टिन के बने होते हैं। कोलौजेन जो संख्या में कम होते हैं, ऊतक व इलैस्टिन तंतुओं को कुछ विशेष तत्वों की आपूर्ति करते हैं, जिसके फलस्वरूप त्वचा मुलायम व कोमल रहती है। लेकिन उम्र बढ़ने के साथ-साथ त्वचा में इलैस्टिन की कमी होती जाती है और कोलौजेन तंतुओं में गड़बड़ी आ जाती है। इसके कारण संयोजी ऊतक अपना लचीलापन खो देते हैं। यही कारण है कि बुढ़ापे में त्वचा झुर्रीदार हो जाती है। सूर्य किरणों में विद्यमान पराबैंगनी किरणें भी त्वचा के परिवर्तन पर प्रभाव डालती हैं।

✻ किस्सा ६० मिनट का- विश्व में इस समय डेढ़ करोड़ पत्र लिखे जाते हैं।

✻ लॉस वेगास की एक कंपनी ने ऐसी घड़ी बनाई है- जो आदेश मिलते ही कहीं भी फोन लगा सकती है। इसके लिए नंबर लगाने की भी जरूरत नहीं। इस घड़ी में डिजिटल कैमरा भी लगा है, जिसमें सौ तस्वीरें सुरक्षित रखी जा सकती हैं।

✻ कैलिफोर्निया (अमेरिकी) में बिजली की किल्लत रहती है, अब कैलिफोर्निया के कई हिस्सों में लोग लकड़ी का बुरादा और अखरोट के छिलके जलाकर बिजली बना रहे हैं।

✻ अंतरिक्ष यात्रियों को अंतरिक्ष में पहुंचने पर नंगी आंख से पृथ्वी पर मानव-निर्मित केवल एक ही चीज दिखाई दी- वह चीज थी चीन की महान दीवार।

✻ सूर्य जब क्षितिज से ४० अंश से कम का कोण बनाता है, तभी इंद्रधनुष निकलता है।

✻ मुस्कुराने के लिये चेहरे को १७ मांसपेशियों की आवश्यकता पड़ती है, जबकि क्रोधित होने के लिये ४३ मांसपेशियों की आवश्यकता होती है।

✻ सहारा में तेगज्जा नामक एक शहर है, जो पूरी तरह से नमक से बना है।

✻ सोयाबीन का प्रयोग गोंद, रोगन, प्लास्टिक तथा विस्फोटक बनाने में किया जाता है।

✻ मनुष्य की रीढ़ की हड्डी में चौबीस जोड़ होते हैं, तो सांप की रीढ़ की हड्डी में कई सर्पों की रीढ़ की हड्डी में ४०० तक जोड़ होते हैं।

✻ मंगल ग्रह को लाल नक्षत्र या ग्रह कहते हैं।

✻ वायु में नाइट्रोजन ७८ प्रतिशत है।

✻ ऑस्कर- फिल्मी दुनिया में ऑस्कर को सबसे अधिक प्रतिष्ठित अवार्ड माना जाता है। इसके वार्षिक फंक्शन तथा पुरस्कार वितरण समारोह की शो बिज पैनोरमा में शान ही निराली है, वह एक बुत के रूप में होता है, जिसे ऑस्कर कहा जाता है। यह अनुमान लगाया जा सकता है कि ऑस्कर कोई बड़ी हस्ती है, जिसने इन पुरस्कारों को शुरू करने में अग्रिम भूमिका अदा की थी, परंतु वास्तव में बात ऐसी नहीं है। ऑस्कर फिल्म ट्राफी का नाम टैक्सास के एक किसान ऑस्कर पियर्स पर रखा गया है। आरंभ में इस ट्राफी को कोई नाम नहीं दिया गया था। पुरस्कारों से संबंधित सभी समारोह मोशन पिक्चर्स आर्टज् तथा साइन्सेज द्वारा आयोजित किए जाते थे। इस दफ्तर में पियर्स की भतीजी एक लाइब्रेरियन का कार्य करती थी। जब उसने ट्राफी को देखा तो वह चिल्लाई, यह ट्राफी बिल्कुल मेरे अंकल ऑस्कर से मिलती है। एक समाचार पत्र के स्तम्भ लेखक, जो उस वक्त वही मौजूद थे, ने लेखों में लिखा है, दफ्तरवालों ने अपने मशहूर बुत को बहुत प्यार से ऑस्कर की उपाधि दी है। बस, इसी तरह से इस पुरस्कार का नाम ऑस्कर पड़ गया।

✻ प्रथम मोनोरेल प्रणाली टोकियों में १९६४ में शुरू हुई। इस प्रकार की छोटी रेल गाड़ियां कुछ अन्य देशों में भी चालू की गई हैं। बाद में ब्रिटेन में इसका विकसित रूप सामने आया। मोनोरेल का विचार इस सदी के आरंभ में शुरू हुआ जब कुछ कल्पनाशील तकनीशियनों ने विचार किया कि रेलगाड़ी को एक पटरी पर ही सीधा खड़ा रखा और चलाया जा सकता है। परंतु इस प्रणाली को कभी व्यवहार में नहीं लाया गया क्योंकि इसे इतना सस्ता और सुरक्षित नहीं माना जा सका।

द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद एक स्वीडिश उद्योगपति ऐक्सेल एल. वेनसोन ने एक ऐसी मोनोरेल का विकास किया जो एक पटरी पर दौड़े और जिसके डिब्बे कोर और रोलर के जरिए पट्टी पर टिके रहें। इस रेल को बिजली या डीजल से चलाना संभव था। इसे ड्राइवर द्वारा या दूर से नियंत्रित करके भी चलाया जा सकता था। पटरी के खत्म हो जाने के बाद रेल जमीन पर उतर सकती थी और बस की भांति भी चल सकती थी। उस आविष्कार के नाम के आरंभिक अक्षरों को मिलाकर इसका नाम ऐल्वेग रेल रखा गया। यह उन क्षेत्रों में भी लंबी दूरी के तेज रफ्तार परिवहन के रूप में उपयोगी सिद्ध हो सकती है जहां अभी रेल की पटरियां नहीं बिछ सकती हैं। एल्वेग रेल की पटरी बिछाने का खर्च दो पटरियोंवाली लाइन

बिछाने के खर्च का आधा होता है। इस प्रकार की प्रथम मोनोरेल प्रणाली टोकियों में १९६४ में शुरू हुई जो शहर से हवाई अड्डे तक नौ मील की दूरी तय करती है। इस प्रकार की छोटी ऐल्वेग रेल गाड़ियां कुछ अन्य देशों में भी चालू की गई हैं।

लेकिन एक ब्रिटिश आविष्कारक ने इसे भी पुराना सिद्धकर दिया। इस नयी रेल का आविष्कार लंदन के इम्पीरियल कॉलेज में इ. आर. लेदवेट द्वारा किया गया है। इसमें एक रेखिक मोटर होती है और इसके लिए इस्पात को एक बहुत हल्की और अकेली पटरी की जरूरत होती है। इस मोटर में घूमनेवाले हिस्से नहीं होते, बल्कि एक कुंडली में ४० इंच लंबे, एक छड़नुमा चुंबक लगा होता है और इस प्रकार गाड़ी को आगे की ओर खींचता है। इसके लिए शहर से हवाई अड्डे तक एक ऊंची चुंबकीय पटरी बिछाई जा सकती है जो नगर के केंद्रीय भाग में सड़कों के ऊपर से होकर गुजर सकती है।

❋ सफरनामा सुई का- आधुनिक ढंग की स्टील की सुइयां सबसे पहले चीन में बननी प्रारंभ हुईं। चीन से धीरे-धीरे से सुइयां यूरोप पहुंचीं। इस प्रकार चौदहवीं शताब्दी में न्यूरेमबर्ग (जर्मनी) में भी धातु की सुइयां बननी प्रारंभ हुईं। एलिजाबेथ प्रथम के शासनकाल में जर्मनी के इलयास ग्राउस नामक व्यक्ति ने इंग्लैंड के लोगों को सुई निर्माण की कला का ज्ञान कराया। अब तो संसार के हर देश में सुइयां बनने लगी हैं व इंग्लैंड एवं फ्रांस में संसार के सभी देशों से अधिक सुइयों का उत्पादन होता है। कहने को तो सुई एक छोटी-सी चीज है और इसके निर्माण में मशीनों का प्रयोग होता है फिर भी निर्माण के दौरान इसे अनेक लोगों के हाथों से गुजरना पड़ता है। २० मार्च १९७१ को विस्टर शायर (इंग्लैंड) की एक छात्रा ने बेहद छोटे छेद वाली सुई में २ घंटे में ३७९५ बार धागा डालकर विश्व कीर्तिमान कायम किया, जो आज तक नहीं टूटा है।

❋ सन १९०३ की बात है। फ्रांसीसी रसायनवेत्ता ए. बैनेडिक्टस अपनी प्रयोगशाला में कुछ कार्य कर रहे थे। सामने की अलमारी में अनेक तरह के रसायनों से भरी कई शीशियां रखी थीं। उन्हीं शीशियों में एक शीशी सेल्युलाइड की भी थी। प्रयोग करते समय जैसे ही उन्होंने सेल्युलाइड की शीशी उठाई, वह उनके हाथ से छूटकर फर्श पर जा गिरी। गिरते ही शीशी तो टूट गई, परंतु उसके टुकडे टूट़ने की बजाय आपस में जुडे रहे। बैनेडिक्टस यह घटना देखकर आश्चर्यचकित रह गये। जब उन्होंने उस शीशी का निरीक्षण किया, तब उन्हें पता चला कि शीशी के अंदर सेल्युलाइड की एक पतली परत जम जाने से ऐसा हुआ है। इस घटना से प्रभावित होकर उन्होंने एक विशेष प्रकार के कांच का निर्माण किया जो कि बहुत मजबूत कांच था। इस कांच का उपयोग आजकल कारों और मिनी बसों में किया जाता है।

❋ जहां अनिद्रा रोग से पीड़ित व्यक्ति एक रात्रि में लगभग सत्तर बार करवट बदलते हैं, वहीं सामान्यत: अधिकतर व्यक्ति एक रात्रि में निद्रावस्था में चालीस बार करवटें बदलते हैं।

❋ जहां स्वप्नावस्था में सामान्य व्यक्ति भिन्न-भिन्न नजारे देखते हैं, वहीं जन्म से नेत्र विहीन व्यक्ति स्वप्नावस्था में मात्र आवाजें सुनते हैं।

❋ जहां अंगूठे के नाखून में वृद्धि सर्वाधिक धीरे-धीरे होती है, वहीं मध्य की अंगुली के नाखून में वृद्धि सर्वाधिक तीव्र गति से होती है।

❋ बालिकाओं की तुलना में बालकों में तुतलाना चार से छह गुना अधिक पाया जाता है।

❋ एल. अथिरा कृष्णा ने लगातार ३२ घंटे वायलिन बजाया।

❋ बच्चे वसंत ऋतु में तेजी से बढ़ते हैं बजाय अन्य किसी मौसम के।

❋ भारत के १.३० करोड़ बच्चे स्कूल नहीं जाते।

❋ १९७६ के बाद १०० से ज्यादा पिज्जा बॉक्स संबंधी पेटेंट्स जारी हुए।

❋ उमा जयकुमार ने ११ सेकेंड में साड़ी पहनकर रिकॉर्ड बनाया।

❋ हमारी श्रवणशक्ति इतनी संवेदनशील है कि यह सैकड़ों से लेकर हजारों प्रकारों की विभिन्न आवाजों में विभेद कर सकती है।

❋ हैंग ग्लायडिंग को खेल का स्वरूप जर्मन खिलाड़ी ऑटो लिलेनयाल ने दिया।

❋ भारत में पौने आठ हजार लोगों पर एक जज है।

❋ पृथ्वी के उत्तरी धरातल पर खाली आखों से भी आसमान साफ हो तो लगभग ५००० तारे देख सकते हैं।

❋ पहली इलेक्ट्रॉनिक क्वार्ट्ज कलाई वाली घड़ी २५ दिसंबर १९६९ को बेची गई।

❋ एक दिन में २८ गाने गाने का वर्ल्ड रिकॉर्ड कुमार शानू के नाम है। कुमार शानू के नाम एक महीने में १६१ गीत और एक कलैंडर वर्ष में १,१०० गीत गाने का रिकॉर्ड है।

❋ भारतीयों की औसत उम्र ६४-७१ वर्ष है।

❋ विश्व की सबसे पहली नाभिकीय संलयन भट्टी १९५६ में सोवियत वैज्ञानिक ने टोकानैक के रूप में बनाई।

❋ आमतौर पर आप केवल एक नाक से ही एक समय में सांस लेते हैं।

❋ भारत में ५.३ की औसत से शहरी लोगों के पास मकान हैं।

❋ लंदन में १६६६ में लगी भीषण आग में आधा लंदन जल गया था पर केवल ६ लोग जख्मी हुए थे।

❋ डेववाययनर ने अप्रैल १९९७ को नई वेबसाइट से ब्लॉगिंग की शुरूआत की। उसी साल दिसंबर से इसे वेबब्लॉग कहा गया।

❋ भारत के नदीम अहमद ने आंख पर पट्टी बांध लोगों के बाल काटने का रिकॉर्ड बनाया।

❋ यदि औसत जीवन ७० साल माना जाए तो व्यक्ति पूरे जीवन काल में लगभग २५ करोड़ बार पलकें झपकाता है।

❋ भारत के उत्तर और उत्तर-पूर्व की सीमा पर ५,००,००० जवान तैनात हैं। यह अमेरिकी सैनिकों की कुल संख्या के बराबर है।

❋ जूते खरीदने का सबसे बेहतर समय दोपहर का है क्योंकि इस समय आपके पैरों में कुछ सूजन आती है।

❋ शल्यचिकित्सा का जनक सुश्रुत को माना जाता है जिन्होंने २६०० साल पहले शल्यक्रिया की थी।

❋ परेरा हलवावाला ने केवल १० महीनों में अपना वजन ८५ किलो कम किया।

❋ यकृत के बाद हमारे शरीर में दूसरा बड़ा अंग अग्नाशय है जिसकी लंबाई १२ से १५ सेंटीमीटर होती है।

❋ कम्प्यूटर क्षेत्र की सबसे बड़ी कंपनी माइक्रोसॉफ्ट के दुनियाभर के १०२ देशों में ७२ हजार कर्मचारी रात-दिन काम करते हैं।

❋ फिल्मों के लिए दिए जानेवाले प्रतिष्ठित पुरस्कारों में ऑस्कर का नाम सर्वोपरि है जिसकी शुरूआत १९२९ में हुई।

❋ स्लग प्राची को चार नाक होती हैं।

✻ दुनिया का सबसे ऊंचा रेलमार्ग पेरू में है जो समुद्र से ५२२८ मीटर ऊंचाई पर है।

✻ हमारी आंखें लगभग १० लाख तक की रंगीन पृष्ठभूमि में विभेद कर सकती है। साथ ही ये दुनिया के सबसे बड़े टेलीस्कोप से भी ज्यादा सूचना रखती हैं।

✻ देश में मधुमेह और उच्च रक्तचाप के रोगियों की अनुमानित संख्या ४ करोड़ से भी ऊपर है।

✻ मुंह का स्वाद जाता रहे हो तो अमचूर, जीरा, अदरक का रस व शक्कर को इकट्ठा पीसें व थोड़ा-थोड़ा चाटते रहें।

✻ मिकी माउस को बनानेवाले वाल्ट डिज्नी चूहों से डरते थे।

✻ भारत में एफ. एम. रेडियो २३ जुलाई १९७७ में शुरू हुआ।

✻ सिवला विजयादुर्गा ने लगातार ५० घंटे कुचीपुड़ी नृत्य किया।

✻ पूरे विश्व कप में २००३ में ऑस्ट्रेलिया एकमात्र ऐसी टीम थी जो अंत तक एक बार भी नहीं हारी थी।

✻ हर साल भारत में ३.५ लाख इंजीनियर तैयार होते हैं।

✻ हर महाद्वीप में एक शहर का नाम रोम है।

✻ फिंगर प्रिंट्स का काम करीब २००० साल पहले शुरू हुआ पर प्रमाणित रूप से सामने आया १६८६ में।

✻ स्पेन का उत्तरी शहर बार्सिलोना २ जनवरी २००७ को दुनिया की सबसे ज्यादा उम्र में माँ बनने का गवाह बना। शहर के सैंट पाउ अस्पताल में ६७ वर्षीय महिला ने जुड़वां बच्चों को जन्म दिया।

✻ विटामिन ए की कमी हमें चिड़चिड़ा बना देती है तो विटामिन बी की कमी भयग्रस्त।

✻ २००६-२००७ वित्तीय वर्ष में देश में तेल आयात की लागत २,००,००० करोड़ रुपए थी।

✻ कार्टून शब्द का इस्तेमाल सबसे पहले १८५१ में शुरू ब्रिटिश पत्रिका पंच में आई।

✻ एक औसत वयस्क एक रात में ४० से ७० बार तक करवट बदलता है।

✻ भारत दुनिया का दूसरा बड़ा ट्रैक्टर निर्माता है।

✻ ग्राहक इंतजार करने से घृणा करता है।

✻ जापान की सड़कों के नाम नहीं होते।

✻ अंतरिक्ष ब्लागर के रूप में अनौशेह अंसारी का पहला नाम है। http:// spaceblog. xprize.org जिनकी पर डेढ़ हजार से ज्यादा लोगों ने विचार व्यक्त किये हैं।

✻ एम. ताहेर ने साइकिल पर दुनिया घूमने का रिकॉर्ड बनाया।

✻ मानव शरीर की सबसे छोटी पेशी स्पर्म मतलब पुरुषबीज। एक स्त्रीबीज जितना होने के लिए पौने दो लाख पुरुषबीज लगेंगे।

✻ कामनवेल्थ गेम्स में मिल्खा सिंह ने ४०० मीटर दौड़ में स्वर्णपदक पाया।

✻ भारत में प्रति व्यक्ति आय का चार-पांच प्रतिशत रक्षा पर खर्च होता है।

✻ अमेरिका की आबादी लगभग ३० करोड़ है, जबकि यहां कारों की संख्या २४.३ करोड़ है।

✻ एक से रंगवाले खांचे जोड़ने का सबिक क्यूब पहली बार १९७४ में बना।

❋ सात साल की पुल्लीपति तेजस्विनी ने छोटी उम में ३० शब्द प्रति मिनट के हिसाब से टाइपिंग का रिकॉर्ड बनाया।

❋ हमारे शरीर में प्रति सेकेंड ८० लाख रक्त कोशिकाएं नष्ट होती हैं और प्रतिक्षण उतनी ही नई कोशिकाएं बनती भी हैं।

❋ अधिकृत तौर पर भारत के क्रिकेट को नियंत्रित करनेवाली निजी संस्था भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) है जिसकी स्थापना लगभग ८० साल पहले १९२९ में हुई।

❋ किसी भी भारतीय समुदाय में ९४.१ प्रतिशत साक्षरता की दर जैनियों की है जबकि सबसे कम ५९.१ फीसदी मुस्लिमों में है।

❋ बॉर्बी का पूरा नाम बारबरा मिलिसेंट रोबर्ट्स है।

❋ लगभग पांच हजार साल पहले चीन के राजा शेननंग द्वारा चाय की खोज की गई।

❋ हमारी त्वचा शरीर का संरक्षक कवच है जो बाह्य वातावरण के जंतुओं से हमारे शरीर का रक्षण करती है।

❋ देश में हर १६ वें मिनट में एक हत्या होती है।

❋ पूर्णिमा के दिन केवल हत्या का अपराध नहीं बढ़ता बाकी शेष अपराध जैसे लूट, अपहरण व बलात्कार की घटनाएं नाटकीय रूप से पूर्णिमा को बढ़ती है।

❋ देश में उच्च स्तरीय तकनीकी शिक्षा की शुरूआत १९५३ से हुई जब खड़गपुर में पहला भारतीय तकनीकी संस्थान (आईआईटी) खुला।

❋ फोटोग्राफर संदीप माहेश्वरी ने १० घंटे ४६ मिनट में १२२ लोगों के १०,०४४ फोटो खींचे।

❋ हाथ की उंगलियों के नाखून पैर की उंगलियों के नाखूनों से चौगुनी गति से बढ़ते हैं।

❋ देश में बॉलीवुड जगत का वर्तमान टर्नओवर ६,८०० करोड़ रुपये है।

❋ अमेरिका में ७०,००० लोग दृष्टिहीन होने के साथ बहरे भी हैं।

❋ दिल्ली के विनोद कुमार ने २ सेमी. लंबा दुनिया का सबसे छोटा बॉलपेन बनाया।

❋ हमारे मस्तिष्क में ८० प्रतिशत जल होता है।

❋ कृषि संबंधित वस्तु व सामान के उत्पादन में भारत का अमेरिका व चीन के बाद तीसरा स्थान है।

❋ भारत के चावल को विश्व बाजार में पाकिस्तान के चावल के साथ प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है पर भारत की सॉफ्टवेयर कंपनियों की प्रतिस्पर्धा में कोई पाकिस्तानी कंपनी नहीं है।

❋ सूरज की उम्र १२ अरब साल है जिसमें से बीते ५ अरब साल से वह प्रकाश दे रहा है।

❋ सबसे कम उम्र के डॉक्टर का खिताब न्यूयॉर्क के बाल मुरली अमबाती के नाम है। उन्होंने १९ मई १९९५ में माउंट सिनाई स्कूल ऑफ मेडिसिन से जब डिग्री ली तो वे केवल १७ साल के थे।

❋ जब शरीर ज्यादा पोषक तत्वों की मांग करता है, तब ग्रेलिन नामक हार्मोन का स्राव होता है। यही हार्मोन हमें ज्यादा खाने के लिए प्रेरित करता है।

❋ भारत के २५ प्रतिशत प्राथमिक स्कूल शिक्षक अपने काम से गैरहाजिर रहते हैं।

❋ आज पूरी दुनिया में दो लाख टॉय बैंक सफलतापूर्वक चल रहे हैं। इसमें हर बच्चे को उसके सदस्यता कार्ड पर एक

बार में एक खिलौना मिलता है। पहला खिलौना जमा कर वह दूसरा ले सकता है।

✻ माना जाता है कि पटाखों का आविष्कार करीब २००० वर्ष पहले चीन में एक रसोइए ने किया।

✻ ध्वनि की तरंगे हवा की तुलना में पानी में चौगुनी गति से पहुंचती है।

✻ अभिनेत्री हेलन वागनर का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में शामिल हुआ है, क्योंकि वे एक ही भूमिका को टीवी सीरियल एजद वर्ल्ड टर्न में ५० सालों से कर रही हैं।

✻ एक महीने में हमारे बाल एक चौथाई इंच बढ़ते हैं।

✻ हमारे देश में ३१ राज्य हैं।

✻ मूली के पत्तों को खाने से पीलिया के दौरान कम हुई भूख बढ़ती है।

✻ एक लीटर पेट्रोल से इतनी शक्ति प्राप्त होती है जो एक व्यक्ति को चार दिन तक चलाये रख सकती है।

✻ श्वान की प्रजाति बॉक्सर का यह नाम इसलिए पड़ा, क्योंकि वह अपने सामने के श्वान से ठीक उसी तरह लड़ता है जैसे दो आदमी (बॉक्सर) लड़ते हैं।

✻ मनाली दास ने १००० से ज्यादा लेटरपैड संग्रहित किए।

✻ २००४ के ओलम्पिक में केवल मेजर राठौड़ ने रजत पदक जीता।

✻ १९५६ में अमेरिका के ८० प्रतिशत घरों में फ्रिज था लेकिन ब्रिटेन के केवल ८ प्रतिशत घरों में ही यह था।

✻ अमेरिका के डेनिस वॉलमेर ने जब पहली किताब लिखी वह केवल ६ साल का था।

✻ जिस हाथ से आप ज्यादा काम करते हैं उसके नाखून ज्यादा जल्दी बढ़ते हैं।

✻ देश के ६५० लाख घरों में केबल व सेटेलाइट्स हैं।

✻ कब्जवालों के लिए पपीता कब्जनाशक है।

✻ एप्पल मैकिन्तोश कम्प्यूटर के लिए पेजमेकर सॉफ्टवेयर १९८५ में बाजार में आया। यह डेस्कटॉप पब्लिशिंग का प्रारंभ था। पेजमेकर पहला डेस्कटॉप पब्लिशिंग साफ्टवेयर था।

✻ एम. प्रकाश ने प्राणी, मनुष्य, पक्षी व अन्य वस्तुओं के आकार के ६२५ से ज्यादा ट्रांजिस्टर इकट्ठा किये हैं।

✻ नीली आंखें प्रकाश के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं वह गहरी भूरी सबसे कम।

✻ सकल घरेलू उत्पाद में सेवा क्षेत्र का योगदान करीब ५३ प्रतिशत है, करीब २७ प्रतिशत मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र का जबकि कृषि का योगदान २० प्रतिशत से भी कम है।

✻ दुनिया का पहला अखबार रोमन सम्राट जूलियस सीजर के शासन काल ई.पू. ६० में रोम में प्रकाशित हुआ था।

✻ घोड़ों के प्रत्येक कान में १९ मांसपेशियां होती हैं जिससे उन्हें अपने कान पूरे १८० डिग्री घुमाते आते हैं।

✻ पेस्टर एस जेयासिलन नामक भारतीय गायक ने २६२ घंटे गाने का रिकॉर्ड बनाया।

✻ देश में साढ़े चार करोड़ रुपये की संपत्ति रखनेवालों की संख्या ८३ हजार है।

✻ स्वाद के साथ टमाटर सेहत के लिए भी लाभदायी है। इसमें लाइकोपीन नामक तत्व मौजूद होता है। यह तत्व शरीर के किसी भी भाग में कैंसर होने खासकर प्रोस्टेट कैंसर की आशंका को काफी हद तक कम कर देता है।

❋ विश्व के ५७ देशों की ४० फीसदी आबादी १५ वर्ष से कम उम्र के लोगों की है।

❋ इंटरनेट पर किसी भी साइट पर जाने के लिए http/www. लिख आगे बढ़ना होता है। हायपरटेक्स्ट ट्रांसफर प्रोटोकॉल (http) की खोज गणितज्ञ टिम बर्नर्स ली ने १९८९ में की। वहीं world wide web (www) को टिम बर्नर्स ली ने १९९० में विकसित किया।

❋ ६५ साल की ली रेडमंड का नाम विश्व में सबसे लंबे नाखून के लिए गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज हुआ है। ली के नाखून की लंबाई २४ फीट ७ इंच है।

❋ हमारे एक क्रोमोजोम में २५ से ३५ हजार जीन होते हैं।

❋ फ्रेंच महिला एनी करॉलिन ने पहाड़ी के उतार से साइकिल चलाने की प्रतियोगिता में लगातार १० बार जीत कर रिकॉर्ड बनाया।

❋ देश के १.२ लाख बच्चे एड्स से पीड़ित हैं।

❋ सौ ग्राम पिस्ता में ६२५ कैलोरी होती है। यह कैल्शियम, फास्फोरस व लौह का भी अच्छा स्रोत है। पिस्ते में विटामिन बी-१ व वेजीटेबल ऑइल भी होता है।

❋ भारतीय एकमात्र ऐसी सभ्यता है जो ५००० वर्षों से भी अधिक समय से अनवरत जीवित है।

❋ घर के मुख्य द्वार पर स्वास्तिक, ओम या त्रिशूल के चिन्ह लगाने से घर में नकारात्मक ऊर्जाओं का प्रवेश नहीं होता।

❋ मिनी स्कर्ट पहनने की शुरूआत १९२० में हुई।

❋ फ्रांस के बेव किर्क ने साबुन से ३१७५ किलो वजन की शिल्पाकृति बनाई।

❋ यदि किसी व्यक्ति की गर्दन की मोटाई ४.३ सेमी. से अधिक है तो उसके खर्राटे लेने की संभावना बहुत ज्यादा होती है।

❋ देश में ग्रामीण भाग के पर्यटन की उत्पादन क्षमता ४३०० करोड़ रुपये है।

❋ भारतीय मानक समय व ग्रीनविच मिन टाइम में ५ १/२ घंटे का अंतर है।

❋ लंदन के चिड़ियाघर में पहली बार प्राणियों को लोगों के देखने के लिए रखा गया।

❋ वॉडीलाल कंपनी ने २० फीट लंबी व ९ फीट ऊंची आइस्क्रीम बनाई।

❋ हर हर दस सेकेंड में पलकें झपकाते हैं। पूरे जीवन में हम २५ करोड़ बार पलकें खोलते बंद करते हैं।

❋ कराटे वास्तव में भारत की देन है पर बाद में वे चीन में विकसित हुए।

❋ ब्रिटेन के मैट हैंड ने १,१९४ शुगर क्यूब्स एक के ऊपर एक स्थिर करने का रिकॉर्ड बनाया।

❋ मनुष्य के घ्राण जीन्स की संख्या ३५० है।

❋ पली ग्रांड प्रिक्स रेस १९०१ में जीती गई जबकि औसत रफ्तार केवल ४६ एमपीएल थी।

❋ यदि २००५ के आंकड़ों पर नजर डालें तो देश में इंजीनियरिंग संस्थान १४७८ हैं।

❋ ब्राजील से खनन किये गये हीरे अफ्रीका के हीरों से सख्त होते हैं।

❋ दिल्ली के आर. सी. गुप्ता ने १०० से ज्यादा होटलों के मेनू कार्ड्स का संग्रह किया।

❋ हमारा मस्तिष्क प्रति सेकंड ८०० से ज्यादा बातें ध्यान में ला सकता है और वह भी अथक ७० से ७५ वर्ष की उम्र तक।

✻ एक समय राष्ट्र के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का प्रमुख योगदान था जो अब केवल १९ प्रतिशत रह गया है।

✻ खाना खाते हुए नींबू की एक फांस भी पूरे भोजन को पचाने की ताकत रखती है। नींबू में साइट्रिक एसिड, विटामिन सी, प्रोटीन्स, फ्रक्टोज, कैल्शियम, फास्फोरस होता है। आंतों के कीटाणु नींबू से मरते हैं।

✻ शुद्ध सोना इतना नरम होता है कि उसे हाथों से मोड़ सकते हैं या कोई भी रूप दे सकते हैं।

✻ खाने से पहले सूप पीना आज आम बात है। पहली बार सूप ई.पू. ६००० में बना था जिसे हिप्पोपोटोमस (दरियाई घोड़ा) की हड्डियों से बनाया गया था)

✻ विश्व में सबसे तेज चलनेवाली ट्रेन फ्रांस की इंटरसिटी ट्रेन है।

✻ सालभर में हमारा दिल ४० लाख बार धड़कता है।

✻ देश के सिनेमाघरों में ७०० डिजीटल स्क्रीनवाले सिनेमाघर हैं।

✻ ज्यादा बोलने से आवाज बार-बार खराब होती हो तो मुनक्का खाएं।

✻ विश्व के कुल १० करोड़ बेघर शहरी लोगों में से करीब एक चौथाई हमारे देश में रहते हैं।

✻ १९५० में असेब्लर्स, मैको असेब्लर्स और इंटरप्रिंटस् का निर्माण हुआ।

✻ भारत के सतनाम सिंह ने ६० साल में विख्यात व्यक्तियों के ५२०० ऑटोग्राफ इकट्ठा किये।

✻ हमारी त्वचा की पेशी विभिन्न आवरणों से बनती है। पहले आवरण को इंपीडर्मिस दूसरे को डर्मिस व तीसरे को चर्बी का आवरण कहते हैं।

✻ भारत के हवाई अड्डों की संख्या ३३४ है।

✻ वर्सानी गोपाल कंजी ने अपने दांत के बल पर १२० किलो वजन उठाने का रिकॉर्ड बनाया।

✻ नींद में रैपिड आय मूवमेंट यानी आर. ई. एम. निद्रा को महत्वपूर्ण माना जाता है। यह नींद का वह हिस्सा होता है जब हमारी पुतली में तेज गति होती है और हम सपने देखते हैं।

✻ भारत में २००३ में ५५.३ करोड़ मीट्रिक टन तेल की खपत हुई।

✻ मध्य पूर्व के कई देशों में महिला कर्मचारी को, परिवार को देश में साथ लाने की इजाजत नहीं है।

✻ लगभग ३००० साल पहले चीनी लोग पतंग का प्रयोग खेलने के लिए करते थे।

✻ दुनिया की सबसे ज्यादा कर्मचारीवाली कंपनी वॉलमार्ट स्वेअर्स है, जहां १७ लाख कर्मचारी हैं।

✻ हमारे शरीर की सबसे मजबूत मांसपेशी हमारी जुबान है।

✻ मायकल शूमाकर अत्यंत गतिमान व धोखाजनक फार्मूला वन मोटर रेस में सात बार वर्ल्ड चैम्पियन रहा।

✻ जनगणना विभाग के आंकड़ों के अनुसार शहरों में रहनेवाले १५ फीसदी लोग कच्ची बस्तियों में रहते हैं।

✻ गंदी बर्फ साफ की तुलना में जल्दी पिघलती है।

✻ कौशल किशोर ने ५१ सालों मे आए १७५४ पत्रों को संग्रहित किया है।

✻ पलकों के झपकने की वजह से जागते हुए रहने पर भी हमारी आंखें एक घंटे में दो मिनट बंद रहती हैं।

✻ भारत में इस समय २.५ करोड़ से ज्यादा लोग इंटरनेट का उपयोग कर रहे हैं, जिसमें ८१.०६ प्रतिशत युवा है।

✻ गर्म पानी, ठंडे पानी की तुलना में जल्दी बर्फ बन जाता है।

✻ क्रिसमस पर क्रिसमस ट्री सजाने की शुरूआत जर्मनी में हुई। इंग्लैंड में पहली बार १८४१ में क्रिसमस ट्री सजाया गया।

✻ इंग्लैंड के क्रेल पार्क में फेस टू फेस क्लब के ५ सदस्यों ने २३९ के चेहरे रंगने का रिकॉर्ड बनाया है।

✻ देश में कुल छह लाख लोग फुटपाथ पर सोते हैं।

✻ खून की कमी हो तो स्ट्रॉबेरी के फल खाएं।

✻ Bookkeeper□अंग्रेजी का एकमात्र शब्द है जिसमें लगातार तीन दोहरे (डबल) अक्षर आते हैं।

✻ केबल न्यूज नेटवर्क (सीएनएन) दुनिया का पहला २४ घंटे चलनेवाला टीवी न्यूज चैनल है जो १९८० में शुरू हुआ।

✻ जब चांद सीधा सिर के ऊपर होता है तो हमारा वजन कुछ कम हो जाता है।

✻ अजयकुमार नाग ने हाथ से मुक्के मारकर एक मिनट में २६ नारियल फोड़े हैं।

✻ आपके जीवनकाल में आप लगभग ६०,००० पौंड भोजन लेते हैं जो लगभग ६ हाथियों के बराबर है।

✻ भारतीय परिवारों की २००३ में १,४८,६२,००० करोड़ रुपये मूल्य की कुल क्रय शक्ति थी।

✻ टाइटेनिक फिल्म बनाने में जितनी लागत आई वह टाइटेनिक जहाज को बनाने में आई लागत से कहीं ज्यादा थी।

✻ हवाई जहाज की सारी जानकारी ब्लैक बॉक्स में होती है। ऑस्ट्रेलिया के डॉ. डेविड वॉरेन ने १९५७ में इस उपकरण की खोज की।

✻ हाइड्रोजन विस्फोटक, ज्वलनशील गैस है और ऑक्सीजन अग्नि को प्रज्वलित करती है। बावजूद हाइड्रोजन व ऑक्सीजन का मेल पानी होता है जो आग बुझाने का काम करता है।

✻ हांगकांग इंटरनेशनल एयरपोर्ट दुनिया का सबसे बड़ा एयरपोर्ट है।

✻ हम २४ घंटे में २१,००० बार श्वास लेते हैं।

✻ देश में १३४६ इंजीनियरिंग कॉलेज हैं जिन्हें अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद का अनुमोदन प्राप्त है।

✻ उड़ीसा के बालासर जिले में रामू नाम का बंदर सांप्रदायिक हिंसा फैलाने के आरोप में पांच साल से सीखचों में कैद है।

✻ आधुनिक तरीके का सर्कस फिलिप एस्टले ने १७६८ में शुरू किया।

✻ पास्टोर एस. जीयासिलन नामक भारतीय गायक ने पूरे २६२ घंटे गाकर रिकॉर्ड बनाया।

✻ हमारी आंखों की प्राकृतिक रचना दूर का देखने की है इसलिए लगातार पास का देखने से हमारी आंखों पर तनाव पड़ता है।

✻ संयुक्त परिवार में रहनेवाले बच्चे मानसिक व भावनात्मक तौर पर खुद को ज्यादा सुरक्षित पाते हैं।

✻ देश में रुड़की में १८४७ को पहला शासकीय तकनीकी शिक्षा कॉलेज खुला।

✻ नागपुर के इकबाल अहमद ने अंगूठे के नाखून के बराबर दुनिया का सबसे छोटा इंजन बनाया है।

✻ ६१ से ७० साल के दौरान व्यक्ति आमतौर पर कम बोलने लगता है।

✻ भारत में बच्चों की संख्या लगभग ४५ करोड़ है।

✻ १०० ग्राम गुड़ में ८० ग्राम कैल्शियम, लोहा, विटामिन ए, बी व ३८३ कैलोरी एनर्जी मिलती है।

✻ विश्व में चीन एकमात्र ऐसा देश है जिसकी दो चलन मुद्राएं हैं।

✻ जिप या चेन की खोज विटकांब एल जडसन ने की पर उसे अधिक उपयोगी १९१३ में गिडी ओन संडबैक ने बनाया। वर्तमान में जिस तरह की जिप लगाई जाती है, उसकी खोज १९४० में हुई।

✻ ए. जेटली ने एक ही समय १३ लोगों को स्कूटर पर बिठाकर स्कूटर चलाने का रिकॉर्ड बनाया।

✻ अंतरिक्ष में अंतरिक्ष यात्री का दिल वास्तव में छोटा हो जाता है।

✻ देश में ८ आईआईटी व १८ एनआईटी नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी सेंटर है।

✻ १६वीं सदी के फैशन डिजाइनर अपने फैशन परिधानों को गुड़ियों के नाप का बना उन गुड़ियों को शो में लाते थे।

✻ डिकी डोल्मा ने १९ वें वर्ष में एवरेस्ट शिखर पर चढ़ाई की।

✻ अंतरिक्ष में आपकी ऊंचाई बढ़ जाती है।

✻ आंकड़े बताते हैं कि अब भारतीय पुरुष एक सप्ताह में सवा घंटे के स्थान पर १६ घंटे घर के कामों में सहयोग करने लगे हैं।

✻ शहतूत की पत्तियों में एंटी डाइबिटिक व एंटी हाइपरटेंशन एजेंट मौजूद रहता है।

✻ शेक्सपियर के चार नाटकों में भूत दिखता है- जूलियस सीजर, रिचर्ड III, हेमलेट व मेकबेथ।

✻ जीवविज्ञानी समझते थे कि ५५० मीटर के नीचे कोई जीवन नहीं होता। वैज्ञानिक सर जेम्स रौस ने १८०० मीटर गहराई में स्टारफिश को खोज निकाला।

✻ भारत के नितिन व्यास ने १२ अंकों वाले पहाड़े याद रखने का रिकॉर्ड बनाया।

✻ २.३० करोड़ व्यक्ति रोजाना भारतीय फिल्में देखते हैं।

✻ गर्म पानी में दस मिनट पैर डालकर बैठने से सिरदर्द से आराम मिलता है।

✻ हर पांच सौ मनुष्यों में से एक की एक आंख नीली, एक आंख भूरी या एक काली, एक भूरी होती है।

✻ भारत में पेट्रोल में इथेनॉल का मिश्रण करना १९९८ से शुरू हुआ।

✻ जिस व्यक्ति का पृथ्वी पर वजन १०० पौंड होगा उसका मंगल पर वजन केवल ३८ पौंड होगा।

✻ बंगलौर के प्रो. जगदीश शुक्ला ने दुनिया का सबसे छोटा धार्मिक ग्रंथ बनाया।

✻ हमारे शरीर की सबसे लंबे समय तक जीवित रहनेवाली कोशिका मस्तिष्क की है जो हमारे पूरे जीवनकाल में जीवित रहती है।

✻ फार्चून ५०० की १२५ कंपनियों ने भारत में अपनी शोध इकाइयां कायम की हैं।

✻ गाजर के रस का नित्य सेवन करने से दिमागी कमजोरी दूर होती है।

✻ आइस्क्रीम कोन का पहला पेटेंट १९०३ में न्यूयॉर्क की इंटेलो मार्किओनी कंपनी ने हासिल किया।

✻ डॉमिनो पिज्जा कंपनी ने सैनफ्रांसिस्को से दिल्ली के २०,४८४ किलो मीटर तक लंबी दूरी का पिज्जा डिलीवरी ऑर्डर लिया।

✻ महिलाएं पुरुषों की उपेक्षा दुगुनी बार पलकें झपकाती हैं।

❋ हमारे देश में प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय २५,९०७ रुपये है।

❋ ग्रीस (यूनान) में संसार का प्रथम थिएटर बना जो करीब ५०० वर्ष ई. पू. बना था।

❋ अनिवासी भारतीय अनिश कपूर ने भीमकाय आईना बनाया है, अमेरिका के मैनहेट के रॉकफेलर सेंटर में यह स्कायमिरर लगाया गया है। जिसका भार ३० टन है व उसे स्टेनलेस स्टीलसे बनाया गया है।

❋ हमारे शरीर में एक हजार अरब कोशिकाएं हैं।

❋ दुनिया के रोजगारों में से ३० प्रतिशत रोजगार भारतीयों ने पाया है।

❋ मक्का पानी सोख लेता है इससे वह आंतों को साफ रख पेट साफ रखने में मदद करता है।

❋ विकी नामक सॉफ्टवेयर व इनसायक्लोपीडिया (ज्ञानकोष) से मिलकर विकीपिडिया शब्द इंटरनेट पर आया जो २००१ में शुरू हुआ।

❋ बैंगलोर की शकुंतलादेवी ने ५० सेकेंड में दो १३ अंकों की संख्या का गुणाकर रिकॉर्ड बनाया।

❋ हमारी आंखें साल भर में औसतन ४२,००,००० बार झपकती हैं।

❋ देश के ८० से ९० फीसदी किशोर एनीमिया से प्रभावित हैं, खासकर लड़कियां।

❋ इन्फोसिस के ६०,००० कर्मचारियों को बांटा जानेवाला वेतन १२६ करोड़ रुपये होता है।

❋ भारत के चित्रकार पोधिनी ने साइकिल चलाते-चलाते चित्र बनाने का रिकॉर्ड कायम किया।

❋ हमारे शरीर की एक चौथाई हड्डियां पैरों में होती हैं।

❋ १९८२ के नई दिल्ली एशियाड का शुभंकर हाथी था।

❋ भारत में प्रत्येक ३ में से एक घर में पेयजल की पाइप लाइन है।

❋ समुद्र में सालाना जितना कचरा डाला जाता है उसका वजन समुद्र की मछलियों से तीन गुना ज्यादा होता है।

❋ ब्यूटी पार्लर की शुरूआत १४वीं सदी में तुर्की में हुई व १६वीं सदी के अंत तक वे विकसित रूप में सामने आने लगे।

❋ एक लाख किलोमीटर से ज्यादा लोहमार्ग का प्रयोग करनेवाली भारतीय रेलवे दुनिया की सबसे सस्ती रेल के रूप में जानी जाती है।

❋ यदि हम ७५ डेसीबल से ऊंची आवाज आठ घंटे से अधिक देर तक प्रति घंटे सुनें तो हमारे कान बहरे होने लगते हैं।

❋ भारत में ३ लाख के करीब इंजीनियर हर साल बनते हैं।

❋ क्लियोपात्रा इजिप्त की नहीं वह ग्रीकवासी थी।

❋ पहली कॉफी शॉप कॉन्स्टॅटिनोपल (आज का इस्तूंबल) में १४७५ में शुरू हुई।

❋ डॉ. ए. अलेक्जेंडर ने पूरे १२ घंटे जादू के प्रयोग किये।

❋ हमारे शरीर में छह शरब कोशिकाएं हैं।

❋ २००१ की जनगणना में भारत में विकलांगों की संख्या २२० लाख है।

❋ गंगा में हर रोज २९० लीटर गंदगी और जहर मिल रहा है।

❋ रामजीत भिंड ने अत्यंत महीन रेशमी वस्त्र तैयार किया।

❋ औसतन एक व्यक्ति की ऊंचाई शादी के बाद एक इंच बढ़ती है।

❋ यदि केंद्र सरकार की कुल देनदारियों में हिस्सेदारी बांटने की बात कही जाये तो हर भारतीय को २२ हजार रुपये से अधिक देने पड़ेंगे। यानी हर भारतीय पर है २२ हजार रुपये का कर्ज।

❋ पूरी दुनिया में मुसलमानों की बढ़ती हुई जनसंख्या दर विश्व जनसंख्या वृद्धि दर (२.३ प्रतिशत) के मुकाबले ज्यादा (२.९ प्रतिशत) है।

❋ ओरगोन में महाकाय मशरूम है जो २४०० साल पुराना है जिसने ३.४ वर्गमील जगह को घेरा है और अभी भी बढ़ रहा है।

❋ सभी तरह की ज्ञानेंद्रियों में सुगंध का याददाश्त से गहरा संबंध होता है।

❋ देश के हाईकोर्ट व सुप्रीम कोर्ट के ६१० न्यायमूर्तियों में अनुसूचित जाति-जनजाति के न्यायमूर्ति केवल २० हैं।

❋ विश्व का पहला डाक टिकट महारानी विक्टोरिया के शासनकाल में ६ मई १८४० ई. को इंग्लैंड में जारी किया गया।

❋ जेम्स सिएनियांग ने ४३ सेमी ऊंची हील के जूते तैयार किये।

❋ नीली आंखों वाले अंधेरे में ज्यादा बेहतर देख पाते हैं।

❋ भारत के विभिन्न कॉलेजों में ९९ लाख विद्यार्थी दर्ज हैं।

❋ विश्व में सबसे ऊंचा झरना एंजिल है।

❋ यदि आपकी जीभ गुलाबी है तो समझिए ये बैक्टीरिया मुक्त है, यदि सफेद है तो जानिए इस पर बैक्टीरिया की परत चढ़ी है।

❋ भारत में बुजुर्ग आबादी लगभग आठ परसेंट है यानी आठ करोड़।

❋ लॉस एंजिल्स में हॉलीवुड का जो साइन दिखता है वह १९२३ में बना है। इसका सुझाव रियल इस्टेट एड देनेवाले ने दिया था जो मूलत: हॉलीवुड लैंड था। यह साइन ५० फीट लंबा, २०५ टन वजनी व ४५० फीट पर फैला हुआ था।

❋ एनाबोलिक स्टेराइड जो पुरुषों में यौन उत्तेजना बढ़ाता है और जिसका उपयोग मांसपेशियों को सुडौल व मजबूत करने में भी किया जाता है। इसकी खोज १९३० के दशक में अमेरिका में हुई थी।

❋ केरल के १२ कारीगरों ने मिलकर दुनिया की सबसे बड़ी लकड़ी की खिड़की की फ्रेम तैयार की जो ३० फीट X□R५ फीट की है।

❋ दिल की धड़कनों में पैदा होनेवाली आवाज की तीव्रता १० डेसीबल है।

❋ हिंदुस्तान में अरबपतियों की संख्या में १९.३ प्रतिशत की वृद्धि हुई।

❋ अमेरिका में ५० फीसदी अस्पताल और ७५ फीसदी होटल इंडिया डॉक्टरों और कारोबारियों की बदौलत चलते हैं।

❋ भारत ने सबसे पहले आर्यभट्ट उपग्रह प्रक्षेपित किया।

❋ राजस्थान के कल्याण रामजी सैनी की मूंछें ११ फीट लंबी हैं।

❋ आमतौर पर हमारे शरीर में लगभग ३० प्रतिशत विषैले द्रव्य संचित ही रहते हैं। यदि वे बढ़कर ६० प्रतिशत तक हुए तो शरीर असहयोग दिखाता है।

❋ देश के नवधनाढ्यों में ७ प्रतिशत युवा हैं।

❋ मूली के पत्तों का पाव कप रस लेने से पेशाब साफ होता है।

❋ दुनिया भर में जितने लोग ई-मेल का प्रयोग करते हैं। उसमें से ३४.५ प्रतिशत सबसे पुरानी ई-मेल सेवा हॉटमेल का प्रयोग करते हैं।

❋ भारत में पुर्तगालियों ने १५७५ में कोच्ची में पहली बार एक प्रिंटिंग प्रेस लगाई।

❋ सामान्य बोलने से ज्यादा श्रम स्वरों को फुसफुसाने पर होता है।

❋ देश की नदियों का ४० फीसदी पानी बहकर समुद्र में चला जाता है।

❋ केले में फोलेट नामक तत्व पाया जाता है जो शरीर के टिश्यूज की समुचित वृद्धि में सहायक है। टिश्यूज के समुचित विकास से हृदय रोग व कैंसर से बचाव संभव है।

❋ अमेरिका में भारतीय कपड़ा कंपनियों को चीन के कपड़ों से प्रतिस्पर्धा मिलती है पर कोई चीनी सॉफ्टवेयर कंपनी इनफोसिस और टाटा कंसल्टेंसी के समकक्ष नहीं है।

❋ रेस कार ड्राइवर इन्झो फेरारी ने १९३९ में फेरारी के बारे में सोचा। पहली फेरारी १९४६ में बनी।

❋ वृंदा पुरोहित नाम के व्यक्ति ने बहुभाषी घड़ी बनाई है, इस घड़ी में हर नंबर अलग भाषा में है।

❋ यदि आप कठोर श्रम करनेवाले व्यस्क हैं तो प्रतिदिन आप ४ गैलन पसीना बहाते हैं।

❋ सिंघाड़े के पत्तों का काढ़ा, शहद व सौंठ लेने से जोड़ों के दर्द में आराम मिलता है।

❋ ६०० सालों से भी ज्यादा समय तक इंग्लैंड की कार्यालयीन भाषा फ्रेंच थी।

❋ अशोक झलानी ने आंखों पर पट्टी बांधकर हेयर कटिंग करने का रिकॉर्ड बनाया।

❋ औरतों के शरीर का खून पुरुषों की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली होता है, क्योंकि इनमें अधिक प्लाजमा होते हैं।

❋ देश में आज भी ३९ करोड़ लोग प्रतिदिन ५० रुपये से कम में अपना गुजारा कर रहे हैं।

❋ देश में पहली बार बिजली का वितरण १८९७ में दार्जलिंग में शुरू हुआ।

❋ चीन की राजधानी बीजिंग में २,२८५ लोगों ने लगातार ११८ घंटे गीत गाये।

❋ शिशु की दृष्टि सिर्फ १०-१४ इंच होती है। वह सारे रंग भी देख सकता है।

❋ देश की एक तिहाई आबादी आज भी भूखे पेट सोने के लिए शापित है।

❋ भारतीय संस्कृति में दीपक का उद्‌भव ५००० वर्ष पूर्व देखा गया।

❋ हैदराबाद के सुधाकर ने कैमरा, बैंगन जैसे नाना आकार की कारें बनाईं।

❋ हमारी खून की एक बूंद में ५० लाख लाल रक्त कणिकाएं व १० हजार श्वेत रक्त कणिकाएं होती हैं।

❋ भारत दुनिया में चौथा सबसे बड़ा इकोनॉमी वाला देश है। लेकिन उसके पास कुल ग्लोबल एफडीआई (विदेशी प्रत्यक्ष निवेश) का केवल ०.८ प्रतिशत ही है।

❋ न्यूयार्क सिटी के ३७ टैक्सी ड्राइवरों का नाम अमरजीत सिंह है।

❋ आईबीएम के एक सिस्टम का प्रयोग लोक कर सकें ऐसी सुविधा १९६१ में उपलब्ध हुई। यह इंटरनेट, ई-मेल की

प्रारंभिक अवस्था थी।

✻ दुनिया की सबसे चौड़ी सड़क ब्राझील के मान्यूमेंटल एक्सिस पर है जहां १६० कारों को एक साथ पास-पास रख समानंतर चलाया जा सकता है।

✻ हमारे मस्तिष्क में ८० प्रतिशत जल है।

✻ देश में अर्थव्यवस्था वृद्धि दर गत तीन सालों से लगातार ८ प्रतिशत रही है। गरीबी हटाने के लिए यह दर ८ से १० प्रतिशत होना जरूरी है।

✻ अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष से लौटने पर अपना कद दो इंच बढ़ा पाता है। रीढ़ की हड्डी में स्थित कार्टिलेज डिस्क गुरुत्वाकर्षण की अनुपस्थिति में विस्तार पाती है।

✻ जेम्स टी रसल ने साठ के मध्य में ही सीडी प्लेयर को ईजाद किया था, पर उन्हें लगा इसमें कुछ ज्यादा हो नहीं सकता तो १९८० तक इस दिशा में कोई प्रगति नहीं हुई।

✻ महेश पांड्या ने अत्यंत दुर्लभ व प्राचीन ११४३ पोस्ट कार्ड्स इकट्ठा किये।

✻ अंतरिक्ष गमन करने पर आपका दिल वास्तव में थोड़ा छोटा हो जाता है।

✻ तलवारबाजी खेल में प्रयोग की जानेवाली तलवार की लंबाई १.१ मीटर व भार ५०० ग्राम होता है।

✻ भारत का कुल खुदरा बाजार करीब चार लाख करोड़ रुपये का है।

✻ जिस दिन आपका जन्मदिन होता है उसी दिन दुनिया में कम से कम ९० लाख अन्य लोगों का भी जन्मदिन होता है।

✻ कानपुर के एस. के. सोनी ने ई.स. १८८३ से २००२ तक की विभिन्न प्रकार की ईंटों का संग्रह किया।

✻ पैदा होते समय हमारे घुटने को कवच नहीं होता। दो से छह साल की उम्र में वहां सख्त कवच तैयार होता है।

✻ देशभर में कुल ३९९ बिलियन घन मीटर भूमिगत जल उपलब्ध है, इसमें से सालाना २३१ बिलियन घन मीटर जल का उपयोग होता है।

✻ किडनी के लिए पालक खाना लाभदायी है। रक्ताल्पता भी इससे दूर होती है।

✻ दुनिया के हर पांच लोगों में एक भारतीय है।

✻ सन् १६७६ में पहली बार सॉफ्ट ड्रिंक बाजार में पहुंचा। ऐसा करने में फ्रांस आगे रहा।

✻ हमारे बाल रात की बजाए दिन में ज्यादा बढ़ते हैं।

✻ भारत की आजादी की लड़ाई और विश्व शांति के लिए महान कार्य करनेवाले महात्मा गांधी का नोबल पुरस्कार के लिए करीब पांच बार नामांकन हुआ और करीब तीन बार पुरस्कार के संभावित विजेताओं की सूची में उनका नाम आया लेकिन उन्हें इस पुरस्कार से नवाजा ना जा सका।

✻ ई. पू. ३५०० में लोग इशारों में बोलते थे यही आद्य भाषा थी।

✻ दुनिया का सबसे ऊंचा व्यक्ति मंगोलिया का एक्सी शुन (७ फीट ८.९५ इंच) है।

✻ यदि आप मानवीय शरीर में से फेफड़े को निकाल उसकी गोलाई को सपाट करेंगे तो उसका आकार टेनिस कोर्ट जितना बड़ा होगा।

✻ इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया (ICAI) के अनुसार देश में महिला CA की संख्या १७११६ है।

✻ पपीता खाने से भोजन को पचानेवाला रसायन पेपेंन प्राप्त होता है।

✻ पहला संगणक वायरस दो पाकिस्तानी भाइयों द्वारा १९८६ में बनाया गया ब्रेन वायरस माना जाता है।

✻ रामकृष्णन ने लगातार ३६ घंटे मृदंग बजाया।

✻ हमारी जीभ के नीचे तीन जोड़ी लार ग्रंथियां होती हैं जिनमें प्रतिदिन एक से डेढ़ लीटर तक लार का स्राव होता है।

✻ कराटे का मतलब है खाली हाथ।

✻ २२ फीसदी भारतीयों को इंश्योरेंस के बारे में पता भी नहीं है।

✻ पत्ता गोभी खाने से, दिल को टॉनिक मिलता है यह रक्त संचार को सुचारू कर रक्तदाब को नियंत्रित रखती है।

✻ बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के परिसर में एशिया का दूसरा बड़ा बायोडिजल फार्म हाऊस बन रहा है।

✻ भारत के प्रतीक सोनी ने केवल ५.७७ मिलीमीटर लंबी सोने की बंदूक बनाई।

✻ निरोगी नाखून हर साल दो सेंटीमीटर बढ़ते हैं। हाथ के नाखून पैरों के नाखूनों की अपेक्षा चौगुनी गति से बढ़ते हैं।

✻ देश में बेरोजगारी ८.९ फीसदी की दर से बढ़ रही है।

✻ दो चम्मच हल्दी पाउडर में १६ कैलोरी होती है। इसमें मैग्नीशियम, आयरन, विटामिन बी-६ व पोटैशियम की भी प्रचूरता होती है।

✻ डायम्लिर मोटर वर्क्स के एक बोर्ड मेम्बर इमेलि जेलीनेक ने १९०० में गोट्टिलेब डायम्लिर को इस बात के लिए राजी किया कि वे एक रेसकार बनायेंगे और इसका नाम इमेलि की बेटी के नाम पर रखा मर्सिडीज।

✻ वसंत आगमन की खुशी में ३००० ई.पू. परर्शियन रंगीन अंडों का प्रयोग करते थे। मेकडोनियन्स पहला क्रिश्चन था जिसने १३ वीं सदी में ईस्टर के दौरान इनका प्रयोग शुरू किया। वह पश्चिम एशिया से इसे यूरोप ले गया।

✻ आठ घंटे औसतन नींद के हिसाब से व्यक्ति अपने जीवन का १/३ काल नींद में बिताता है।

✻ भारत में विज्ञापन से जुड़ी आय १३,२०० करोड़ रुपये है जो जीडीपी का ०.३४ फीसदी है।

✻ भारत में पहली बार संगणक का प्रयोग १९५९ में किया गया।

✻ १७ मई २००६ को ७० वर्ष ७ महीने और १३ दिन की आयु में जापान में कामाकुरा के निवासी ताकाओ आरायाना ने ८८५० मीटर ऊंचे एवरेस्ट शिखर पर चढ़कर एक नया कीर्तिमान बनाया।

✻ प्राकृतिक गैस गंधविहीन होती है। उसमें गंध मिलाई जाती है ताकि लोग गैस के रिसाव को जान सकें।

✻ पृथ्वी के दक्षिणी छोर पर यदि पाइप से पानी नीचे डाले जाये तो उसका घुमाव घड़ी की उल्टी दिशा में होगा।

✻ भारत के अग्नि वर्मा ने ९० घंटे सितार बजाई।

✻ यदि आपकी घ्राण शक्ति अच्छी है तो किसी भी व्यक्ति की सांस सूंघकर आप ९५ प्रतिशत तक स्त्री या पुरुष भेद बता सकते हैं।

✻ भारतीयों की औसत उम्र ६४.७१ वर्ष है।

✻ प्रति क्षण एक बच्चा अंधत्व का शिकार होता है।

❋ जनगणना के अनुसार भारत में युवा १८.३ फीसदी की दर से बढ़ रहे हैं।

❋ इलेक्ट्रॉनिक उपकरण बनानेवाले सोनी ने सबसे पहले चावल का कुकर बनाया था।

❋ भारत के राष्ट्र गान शब्द के साथ-साथ संगीत भी रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा बनाया गया। वास्तव में बांग्लादेश के राष्ट्रीय गान के शब्द और संगीत भी रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा बनाया गया।

❋ पालतू जानवरों एवं पक्षियों का इलाज प्राय: डॉक्टर ही किया करते हैं, पर पशु-पक्षी स्वयं भी खुद का इलाज कर लेते हैं। जैसे जंगली खरगोश जख्मी होने पर बड़ी मेहनत से चिपचिपी राल पैदा करते हैं, जिसे वे घावों पर लगाकर स्वस्थ हो जाते हैं।

भालू शीत ऋतु में अपनी मांद में सोने से पूर्व चीड़ तथा देवदारू वृक्षों की छाल ढूंढकर खाता है जिससे भालू के पेट में सोते समय सभी प्रकार के रोगाणु नष्ट हो जाते हैं।

बिज्जू को इंसान से बहुत पहले निज जल के गुणों का पता था। यदि पशु पक्षी या उनके बच्चों को कोई त्वचा रोग हो जाता है तो वे उन्हें खनिज जल में तब तक स्नान कराते हैं जब तक वे त्वचा रोग से मुक्त न हो जाएं। इसी तरह बंदरियां दातुन से अपने तथा बंदरों के दांत साफ करती हैं और स्वस्थ रहते हैं। भैंसे अपनी खरोंच व जख्मों को ठीक करने के लिए घंटों कीचड़ से सने तालाबों में लेटी रहती हैं। जंगली मुर्गे गीली मिट्टी तथा लकड़ी की खपची लगाकर अपना तरह-तरह का इलाज करते हैं। इसी तरह कुत्ता अपने जख्म अपनी जीभ से ही चाटकर ठीक कर लेता है।

❋ विश्व की कोयला खानों से लगभग १५००० टन कोयला निकाल लिया जाता है।

❋ एक अनुमान के अनुसार एक घंटे में एक उच्चाधिकारी दस लोगों को फोन कर लेता है, औसतन दो सिगरेट फूंक देता है व अपने पी.ए. को लगभग तीन चिट्ठियां लिख मारता है।

❋ अनुमानानुसार एक घंटे में लगभग ४ लाख मन तम्बाकू पी लिया जाता है।

❋ **विश्व की सबसे तीखी भूत मिर्ची-** आलेख ग्लोबल वार्मिंग के अनुसार भूत जोलोकिया का तीखापन सिर्फ काली मिर्च से तैयार चिली सास में ही मिलता है। मिर्च का तीखापन स्कोवाइल हीट यूनिट (एसएचयू) में मापा जाता है और जहां किसी मिर्च के मुख्य कैप्सैसिनायड खालिस कैप्सैसिन में इसकी मात्रा ६ करोड़ एसएचयू होती है। भूत मिर्ची में इसकी मात्रा १० लाख एसएचयू है। उल्लेखनीय है कि सितंबर २००० में रक्षा शोध प्रयोगशाला तेजपुर ने घोषणा की थी कि उसने विश्व की सबसे तीखी मिर्च की पहचान की है।

❋ डाटा (जानकारी) के समूह को रिकॉर्ड कहा जाता है।

❋ पारिवारिक जरूरतों के उत्पाद सर्वाधिक बिकते हैं। मगर इन्हें खराब होने से बचाया जाए तो मुनाफा खूब मिलता है।

❋ अंग्रेजी भाषा में लगभग ५,४०,००० शब्द हैं। जबकि हिन्दी भाषा में १० लाख से ज्यादा शब्द हैं।

❋ महात्मा बुद्ध द्वारा दिये गये प्रथम उपदेश को धर्मचक्र प्रवर्तन कहा जाता है।

❋ दिल्ली के फिरोज तुगलक सुल्तान ने ब्राह्मणों पर भी जजिया कर लगाया था।

❋ वायुमंडल में गंधक तत्व के कणों के कारण चांदी कुछ समय के बाद काली हो जाती है।

❋ जैन धर्म के अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर ने दीपावली के ही दिन पावापुरी में निर्वाण प्राप्त किया था।

❋ विद्यार्थी दुर्घटना बीमा योजना देश में सबसे पहले मध्यप्रदेश में शुरू की गई थी।

❋ १९८९ के लोकसभा चुनाव में १८ वर्ष की आयु वाले मतदाताओं ने पहली बार मतदान किया।

❋ महमूद गजनवी के आक्रमण के समय हिन्दूशाही साम्राज्य की राजधानी उदमाण्डपुर या ओहिन्दँ थी।

❋ उच्च घनत्व (हाय-डेंसिटी) के कारण मृत सागर (डेड-सी) में तैराकों का डूबना असंभव है इसी कारण से इसमें कोई मछली जीवित नहीं रह सकती।

❋ हाउस ऑफ द पीपल को लोकसभा का नाम वर्ष १९५४ में दिया गया।

❋ संगीत में एक विशेष राग वसंत ऋतु के नाम पर बनाया गया है जिसे राग बसंत कहते हैं।

❋ गोस्वामी तुलसीदास का जन्म उत्तर प्रदेश के बांदा जिले में राजापुर गांव में हुआ था।

❋ जयपुर में सवाई राजा जयसिंह द्वितीय द्वारा १७३४ में निर्मित जंतर मंतर विश्व की सबसे बड़ी पत्थर निर्मित वेधशाला है।

❋ जैसलमर विश्व का एकमात्र अनोखा किला है जिसमें नगर की लगभग एक चौथाई आबादी रहती है।

❋ भारत के वर्तमान राष्ट्रीय ध्वज की अभिकल्पना पिंगली वैंकेया नामक एक युवक ने सन १९२१ में की थी।

❋ मानव शरीर में जितनी मानव कोशिकाएँ हैं, उससे लगभग १० गुना अधिक जीवाणु कोष है।

❋ संगीत में पंचम स्वर कोयल पक्षी का द्योतक है।

❋ अलकनंदा की पाँच सहायक नदियाँ हैं जो गढ़वाल क्षेत्र में ५ अलग-अलग स्थानों पर अलकनंदा से मिलकर पंच प्रयाग बनाती हैं।

❋ मराठों ने गुरिल्ला युद्ध प्रणाली का कुशल प्रशिक्षण अहमदनगर के अबीसीनियायी मंत्री मलिक अम्बर से प्राप्त किया था।

❋ जावा का पुराना नाम सुवर्ण द्वीप है।

❋ विश्व में सबसे पुरानी पिज्जा की दुकान इटली के हर नेपल्स में १८३० में खुली थी जो आजतक अस्तित्व में है।

❋ यजुर्वेद मूलत: कर्मकाण्ड ग्रन्थ है। इसकी रचना कुरुक्षेत्र में मानी जाती है। यजुर्वेद में आर्यों की धार्मिक एवं सामाजिक जीवन की झांकी मिलती है।

❋ भारत रत्न नामक सम्मान की स्थापना जनवरी १९५४ में भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री राजेंद्र प्रसाद द्वारा की गई थी।

❋ जलेबी भारत, बांग्लादेश, पाकिस्तान, ईरान के साथ-साथ लगभग सभी अरब देशों में भी खूब शौक से खाई जाती है।

❋ बंगाल के समुद्रगुप्त बन्दरगाह को पुर्तगाली पोर्टो ग्राण्डे या महान बन्दरगार कहते थे।

❋ हल सम्बन्धी अनुष्ठान का पहला व्याख्यात्मक वर्णन शतपथ ब्राह्मण में मिला है।

❋ बिहार राज्य ने भ्रष्ट अधिकारियों की संपत्ति जब्त कर उनमें स्कूल खोलने के लिए कानून बनाया है।

❋ ५ तारवाले वाद्य यंत्र आज भी परशिया के लोक-संगीत में इस्तेमाल किये जाते हैं। सम्भव है कि इस वाद्य के प्रचार में अमीर खुसरो का विशेष हाथ रहा हो। हिन्दू तथा मुसलमान, इन दोनों के श्रेष्ठ वाद्य यंत्रों के मिश्रण से सितार की उत्पत्ति मानी जाती है। सितार पारंपारिक वाद्य होने के साथ ही सबसे अधिक लोकप्रिय है और सितार ऐसा वाद्य यंत्र है, जिसने पूरी दुनिया में हिन्दुस्तान का नाम लोकप्रिय किया।

❋ हिंदी हिंदू हिंदुस्तान का नारा भारतेंदु हरिश्चंद्र ने दिया था।

❋ कम्पूटर साक्षरता दिवस दो दिसंबर का मनाया जाता है।

❋ विश्व जल दिवस २२ मार्च को मनाया जाता है।

❋ अंग्रेजी की ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में २०१३ में एक नया शब्द जोड़ा गया है- selfie इस शब्द का मतलब है सेल्फोन या मोबाईल फोन द्वारा खींचा गया खुद अपना फोटो।

❋ महादेव गोविंद रानडे के शिष्य गोपाल कृष्ण गोखले को वित्तीय मामलों की अद्वितीय समझ और उस पर अधिकारपूर्वक बहस करने की क्षमता से उन्हें भारत का ग्लेडस्टोन कहा जाता है।

❋ सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने बंगाल के विभाजन का घोर विरोध किया और उसके विरोध में जबर्दस्त आंदोलन चलाया, जिससे वे बंगाल के निर्विवाद रूप से नेता मान लिए गये।

❋ हिंदी का सबसे पहला उपन्यास नूतन ब्रह्मचारी १८८६ में सुप्रसिद्ध हिंदी गद्यकार बालकृष्ण भट्ट द्वारा लिखा गया था।

❋ ५००० वर्ष पूर्व जब विश्व में अधिकतर सभ्यताएँ खानाबदोश जीवन व्यतीत कर रही थीं भारत में सिधु-घाटी समृद्धि के शिखर पर थी।

❋ रूसी उपन्यासकार लियो टालस्टाय को उनका उपन्यास वार एंडपीस लिखने में छह साल लगे।

❋ लोहा, स्टील और सीमेंट सबसे ज्यादा प्रदूषण फैलानेवाले उद्योग हैं।

❋ हर साल दुनिया में ५ करोड़ नई कारें रोड पर आती हैं।

❋ हर व्यक्ति का औसतन शब्दकोष ५ से ६ हजार शब्दों का होता है।

❋ दुनिया का ९०% व्यापार जहाजों से होता है और देशों के बीच ५०% संपर्क अंडरवाटर केबल्स से होता है।

❋ आदमी जीवन का १/३ समय सोने और तकरीबन ६ साल सपने देखने में बिताता है।

❋ दुनिया के सबसे चौड़े ब्राजील के मान्युमेंटल एक्सिस रोड पर एक साथ १६० कारें दौड़ सकती हैं।

❋ अंग्रेजी में set शब्द की सबसे ज्यादा व्याख्याएं है।

❋ रामास्वामी वेंकटरमन सबसे लंबी आयु प्राप्त करनेवाले भारतीय राष्ट्रपति थे। उनका देहांत ९८ वर्ष की आयु में हुआ।

❋ दुनिया में १०% लोग लेफ्ट हैन्डेड होते हैं।

❋ धूप से झुलस जाने पर रक्तवाहिकाओं को ठीक होने में १५ महीने का समय लगता है।

❋ फलों को पकाने के लिए एथिलीन गैस का प्रयोग किया जाता है।

❋ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना १९५६ में हुई थी।

❋ ब्रोकन किंग की रचना सरोजिनी नायुडू ने की थी।

❋ कम्बोडिया में स्थित अंकोरवाट नामक स्थान विष्णु मंदिर के लिए प्रसिद्ध है।

❋ भारत के प्रथम लोकसभा अध्यक्ष गणेश वासुदेव मावलंकर थे।

❋ एक घड़ी में २११ कलपुर्जे होते हैं।

❋ पृथ्वी पर मौजूद कुल पानी का मात्र एक प्रतिशत ही मानव उपयोग के लिए है। शेष ९८% समुद्र में खारे पानी के

रूप में, तो दो प्रतिशत बर्फ के रूप में है।

✻ एक व्यक्ति अपने जीवनकाल में करीब ६१००० लीटर जल पी जाता है।

✻ भारत में रेलों की शुरुआत १६ अप्रैल, १८५३ को बोरीबंदर से ठाणे के बीच हुई। तब भाप के इंजन ने करीब ३४ किलोमीटर की दूरी तय की।

✻ फेफड़ों में ५ लीटर प्राणवायु धारण करने की क्षमता होती है।

✻ जो दाहिने हाथ से लिखते हैं उनका बायां मस्तिष्क अधिक सक्रिय रहता है तथा जो बाएं हाथ से लिखते हैं उनका दायां मस्तिष्क अधिक काम करता है।

✻ ध्यान से अल्फा तरंगे पैदा होती हैं जिससे प्रसन्नता एवं आनंद की अनुभूति होती है।

✻ दर्शन दो घनश्याम नाथ मेरी अँखियाँ प्यासी रे... भजन के रचयिता कवि गोपाल सिंह नेपाली हैं।

✻ कार्बन शब्द लैटिन भाषा के कार्बो शब्द से आया है जिसका अर्थ कोयला या चारकोल होता है, इसकी खोज प्रागैतिहासिक युग में हुई थी और चीन के लोग ५००० वर्ष पहले भी हीरे के बारे में जानते थे।

✻ सामूहिक बलात्कार की घटना में सम्मिलित हर बलात्कारी की पहचान डीएनए फिंगर प्रिंट द्वारा अलग-अलग की जा सकती है।

✻ अमेरिका में प्रति ९० सेकेंड में एक व्यक्ति की कैंसर से मृत्यु होती है।

✻ ऑस्ट्रेलिया के ऊपरी हिस्से में स्थित एल्म नामक झील का टापू लगातार एक किनारे से दूसरे किनारे तक तैरता रहता है।

✻ यदि यकृत की क्रिया बंद हो जाये, तो मनुष्य की ८ से २४ घंटों के अंदर मृत्यु हो जाती है।

✻ बीसवीं सदी से पूर्व इंसान के शरीर की हड्डियों को रीसाइकिल कर बटन, पेपर, गोंद आदि सामान बनाने के लिए इस्तेमाल किया जाता था।

✻ वैज्ञानिकों ने समुद्र की गहराई का केवल एक प्रतीशत हिस्सा ही खोजा है। वह मानते है कि अभी भी लाखों जीव-जंतू अपनी खोज के लिए इंतजार कर रहे हैं।

✻ अन्तरिक्ष यात्री एक दिन की समयावधि यानी २४ घंटे में १६ बार सूर्योदय और सूर्यास्त देखते हैं।

✻ एक आदमी दिनभर में करीब २०,००० बार साँस लेता है। इसके लिए उसे करीब ३८ पौंड ऑक्सीजन की जरूरत है।

✻ मानव-शरीर में पायी जानेवाली सबसे छोटी हड्डी स्टेप्स है, जो कान में होती है।

✻ भारत के प्रथम राष्ट्रीय उद्यान का नाम कार्बेट नेशनल पार्क है। इसकी स्थापना १९३५ में नैनीताल में की गयी थी।

✻ हॉलमार्किंग बहुमूल्य धातुओं जैसे सोने, चाँदी और प्लेटिनम की क्वालिटी या गुणवत्ता आँकने का तरीका है। हॉलमार्क शब्द गोल्डस्मिथ्स् हॉल या सुनार शाला से आया है जहाँ उत्पादों पर ठप्पा लगाया जाता था। हॉलमार्किंग का तरीका बड़ा प्राचीन है और अलग-अलग देशों में इसका अपने अपने ढंग से प्रयोग होता रहा है। भारत में सोने की खपत दुनिया में सबसे ज्यादा है। हर वर्ष कोई ८५० टन सोने का इस्तेमाल होता है जिसमें से अधिकांश आयात किया जाता है। एक लाख से ज्यादा आभूषण निर्माता हैं। सोने की हॉलमार्किंग का काम भारतीय मानक ब्यूरो, निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों को सौंपता है। आभूषणों की गुणवत्ता आंकने के लिए पहले आभूषणों में से बेतरतीब ढंग से नमूने चुने

जाते हैं, उन्हें मिलाकर गलाया जाता है और फिर उसकी शुद्धता का परीक्षण किया जाता है। भारत में आमतौर पर २२ कैरट सोने का इस्तेमाल किया जाता है। इसका मतलब ये कि सोना ९१.६% होना चाहिए। अगर ऐसा है तो उस आभूषण पर ९१६ का ठप्पा लगा होगा। अभी भारत में ये ठप्पा लगाना जरूरी नहीं है लेकिन जिन जेवरों पर ये लगा होता है उन्हें खरीदते हुए ग्राहक को ये भरोसा रहता है कि सोना बढ़िया है।

❋ मनुष्य का जबड़ा २७९ कि.ग्रा. से ज्यादा बल सहन कर सकता है।

❋ जो आपका जन्मदिन है, वही दुनिया के एक करोड़ से अधिक लोगों का जन्मदिन है।

❋ हमारे शरीर में जानेवाली कुल ऑक्सीजन का पांचवां हिस्सा मस्तिष्क की कोशिकाओं द्वारा प्रयुक्त किया जाता है।

❋ चन्द्रग्रहण पूर्णमासी को ही पड़ता है और पूरे वर्ष में तीन चन्द्रग्रहण से अधिक नहीं पड़ सकते।

❋ जूलियस सीजर के युग में पृथ्वी की कुल जनसंख्या थी १५ करोड़।

❋ एक टन यूरिनियम से उतनी ही ऊर्जा प्राप्त होती है जितनी कि ३०,००० टन कोयले से।

❋ अभी तक ज्ञात प्रकाश उत्पादन के स्त्रोतों में जुगनू प्रकाश का सर्वाधिक सक्षम उत्पादक है।

❋ अमेरिका के दूसरे राष्ट्रपति जॉन अदमास और तीसरे राष्ट्रपति थॉमस जेफरसन की मृत्यु एक ही दिन ४ जुलाई १८२६ को हुई थी। यह एकलौते दो ऐसे राष्ट्रपति है जिनकी मृत्यु एक ही दिन हुई।

❋ अब्राहम लिंकन अवसाद से गुजर रहे थे, वह चाकू-छुरों से दूर रहते थे क्योंकि उन्हें डर था कि वह खुद को मार न लें।

❋ घर घर में गाई जानेवाली आरती ओम जय जगदीश हरे के रचयिता पं. श्रद्धाराम शर्मा थे।

❋ **मानव शरीर की संरचना-** लाल रक्त कणिकाओं की आयु- १२० दिन। श्वेत रक्त कणिकाओं की आयु- १ से ३ दिन। चेहरे की अस्थिता- १४, जत्रुक की संख्या- २, हथेली की अस्थियां- १४। वयस्क व्यक्तियों में अस्थियों की संख्या- २०६, खोपड़ी में अस्थियां- २८, कशेरुकाओं की संख्या- ३३, पसलियों की संख्या- २४, गर्दन में कशेरुकाएं- ७, श्वसन गति- १६ बार प्रति मिनट। हृदय गति- ७२ बार प्रति मिनट, दंत सूत्र- २:१:२:३, रक्तदाब- १२०/८०, शरीर का तापमान- ३७ डिग्री ९८.४ फारेनहाइट। शरीर में अमीनो अम्ल कमी संख्या २२, शरीर में तत्वों की संख्या २४, शरीर में रक्त की मात्रा ५ से ६ लीटर (शरीर के भार का ७ प्रतिशत), शरीर में पानी की मात्रा ७० प्रतिशत, रक्त का पीएच मान ७.४, हृदय का भार ३०० ग्राम, महिलाओं के हृदय का भार २५० ग्राम, रक्त संचारण में लगनेवाला समय २२ सेकेंड, छोटी आंत की लंबाई २२ फीट, शरीर में पानी की मात्रा २२ लीटर, मस्तिष्क का भार १३८० ग्राम, महिलाओं के मस्तिष्क का भार १२५० ग्राम, गुणसूत्रों की संख्या २३ जोड़े, जीन्स की संख्या ९७ अरब। मनुष्य के नाक और कान जीवन पर्यंत बढ़ते रहते हैं, जबकि मानव मस्तिष्क का विकास १५ वर्ष की आयु के बाद बढ़ना बंद हो जाता है।

❋ समुद्र में खनिज तेल लाखों करोड़ों साल पहले सागरों और उनके आसपास के क्षेत्रों में रहनेवाले जीव जंतुओं और वनस्पतियों के अवशेषों से बना है। जब ये नष्ट हुए तो धीरे-धीरे इनपर रेत और मिट्टी की परतें चढ़ती चली गईं, जिन्होने बाद में चट्टानों का रूप धारण कर लिया। जीवों और वनस्पतियों के अवशेष कालांतर में गहरे द्रव में बदलकर चट्टानों के बीच जहाँ जगह मिली वहाँ कैद हो गए। इसी द्रव को कच्चा तेल कहा जाता है।

❋ सिवाकासी ये तमिलनाडु के विरुदनगर जिले में है। यहाँ पटाखे ही नहीं बल्कि दियासलाई और छपाई के कारखाने

भी हैं। बीसवीं शताब्दी के शुरू में नाडार भाइयों ने इन उद्योगों की स्थापना की थी। कहते हैं कि सिवाकासी के इस औद्योगीकरण के चलते पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इसे मिनी जापान का नाम दिया था। इस उद्योग में हर साल, सात अरब रुपए का व्यापार होता है और इसमें कोई एक लाख लोग काम करते हैं। भारत से पटाखों का निर्यात बहुत कम होता है। कुल व्यापार का चार या पाँच प्रतिशत और इसका प्रमुख कारण ये है कि भारत की पोत परिवहन सुविधाएं सीमित हैं। फिर कोलम्बो, सिंगापुर, दुबई जैसे बंदरगाह आतिशबाजी से लदे जहाज को अपने क्षेत्र से होकर भी नहीं जाने देते।

✻ विश्व की पहली सिलाई मशीन इग्लैण्ड में थॉमस सेंट ने बनाई थी। वे एक कैबिनेट मेकर थे और उन्होंने मशीन को १७ जुलाई, १७९० को पेटेंट किया। आजकल प्रयोग होनेवाली इलेक्ट्रिक सिलाई मशीन सबसे पहले न्यू जर्सी की सिंगर मैन्यूफैक्चरिंग कंपनी ने १८८९ में शुरु की।

✻ दक्षिण ध्रुव पर पहुंचने की कोशिश करनेवाला पहला व्यक्ति एक आइरिश था, अर्नेस्ट हेनरी शेकलटन। वह लगभग सफल ही हो गया था। बाद में दो व्यक्ति एक नार्वे का खोजकर्ता राओल्ड एमंडसन व दूसरा था इग्लैण्ड की नौसेना का कैप्टन राबर्ट स्कॉट था। इसमे एमंडसन जीत गया और वह १४ दिसम्बर १९११ को पहले पहुंच गया। स्कॉट व उसके अन्य व्यक्ति एमंडसन के पहुंचने के एक महीने के बाद पहुंचे और वहां नार्वेवासी का झंडा देखकर काफी निराश हुए। एमंडसन व उसकी टीम वापिस पहुंच गयी लेकिन स्कॉट व उसकी बहादुर टीम के लोग उतने खुशकिस्मत नहीं थे वे वापसी की यात्रा में ठंड और भूख से मारे गये।

✻ अमेरिका के मरे स्टीनबर्ग ने अब तक ६७८ टाईपिन्स जमा की हैं।

✻ एथलौन ६०० एमएजझेड सीपीयू को २२ दशलक्ष ट्रांजिस्टर्स होते हैं।

✻ भारत के विश्वरूप राय चौधरी ने पूरा ११ फीट ११ इंच लंबा बॉल पाइंट पेन बनाया था।

✻ इंटेल ८०२८६ प्रोसेसर का निर्माण १९८२ में किया गया था।

✻ सोलापुर की चादरें सारे देश में प्रसिद्ध हैं।

✻ भारत के संविधान की धारा ५८ के अधीन वही व्यक्ति राष्ट्रपति बन सकता है जो भारत का नागरिक हो, कम से कम ३५ साल का हो, संसद सदस्य बनने के लिए सभी योग्यताएं रखता हो, राज्य या केन्द्र सरकार के किसी ऐसे पद पर न हो जिससे उसे आर्थिक लाभ मिलता हो। लेकिन उसे लोकसभा, राज्यसभा या किसी भी राज्य की विधानसभा या विधान परिषद का सदस्य नहीं होना चाहिए। अगर वो है तो उसे राष्ट्रपति पद ग्रहण करने से पहले उसे छोड़ना होगा।

✻ द्वितीय विश्व युद्ध में सोवियत संघ के प्रशिक्षित कुत्ते अपनी पीठ पर बारूद लेकर जर्मन टैंकों के रास्ते में आत्मघाती हमलावरों की तरह धावा बोलते थे।

✻ साइबेरिया में दूध को अक्सर एक छड़ी पर जमाकर बेचा जाता है। आइस कैंडी की तरह दूध को जमा लेने से उसे इधर-उधर लाने-ले जाने में काफी सुविधा होती है।

✻ कोणार्क जगन्नाथपुरी (उड़ीसा) के पास है। कोणार्क में एक सूर्यमंदिर है जो अपने बेहतरीन स्थापत्य के लिए जाना जाता है। इसे गंग वंश के राजा नरसिंह देव बर्मन ने बनवाया था। इस मंदिर को बनाने में १६ साल का समय लगा था।

✻ उत्तरकाशी का धार्मिक महत्व है। यहां अर्धनारीश्वर और चंद्रशेखर का मंदिर है। इसके पास ही कालीगंगा और

मंदाकिनी के संगम पर दुर्गा, लक्ष्मी और सरस्वती के मंदिर हैं। उत्तरकाशी उत्तरांचल के खूबसूरत पहाड़ों पर बसा है। यह हिंदुओं का महत्वपूर्ण तीर्थ बद्रीनाथ जाने के रास्ते में स्थित है।

❋ गरुड़पुराण में पूजा, श्राद्ध-कर्म, तर्पण आदि विधि का वर्णन है। इसके दो खंड हैं। इस पुराण में नरकों का उल्लेख मिलता है। मृत्यु बाद की हिंदू-क्रिया के लिए इसे आधार माना जाता है।

❋ जब किसी वस्तु पर लगाए गए बाह्य बल की आवृत्ति, वस्तु की अपनी स्वाभाविक आवृत्ति के बराबर हो जाती है तो इस दशा में वस्तु के कंपनों का आयाम बहुत अधिक हो जाता है। इस घटना को अनुनाद कहते हैं।

❋ बेन्जाइल अल्कोहल यह एक रंगहीन कार्बनिक अल्कोहल है, जो ईस्टर के रूप में फूलों में पाया जाता है। इसका प्रयोग इत्र बनाने में, रंगीन फिल्म बनाने तथा अन्य रंजक के रूप में किया जाता है।

❋ बल्ब में नाइट्रोजन गैस भरी जाती है।

❋ गर्म करने से विटामिन डी नष्ट हो जाता है।

❋ शरीर में विटामिन ए की कमी से रतौंधी सा रोग उत्पन्न होता है।

❋ दूध में पाई जानेवाली शर्करा का नाम लेक्टोज है।

❋ मनुष्य चौबीस घंटे में २,१६,००० बार सांस लेता है।

❋ सिर्फ दूध पर रहनेवाले बच्चों को प्रतिदिन सात सौ पैंतीस (७३५) ग्राम दूध की आवश्यकता होती है।

❋ काहिरा में एक रेस्टारेंट है, जहां अनेक गूंगे- बहरे काम करते हैं।

❋ रूस के वैज्ञानिकों ने गुलाब की एक ऐसी प्रजाति का विकास किया है, जिसमें नींबू के आकार के विटामिन से पूर्ण फल लगेंगे।

❋ मनुष्य की आंखें सबसे ज्यादा हरे रंग के शेड्स को देख पाती हैं।

❋ हवाई जहाज में लगा ब्लैक बॉक्स नारंगी रंग का इसलिए होता है कि दुर्घटना होने पर उसे आसानी से पहचान कर उसकी जांच की जा सके।

❋ नीले रंग का टूथब्रश सबसे ज्यादा प्रयोग में लाया जाता है।

❋ टाइटैनिक जहाज को बनाने के लिए उस समय ३५ करोड़ ७० लाख रुपये लगे थे जबकि टाइटैनिक फिल्म बनाने के लिए १००० करोड़ के लगभग लागत आई थी।

❋ बिल गेट्स हर सेकेण्ड में करीब १२००० रुपये कमाते हैं यानि एक दिन में करीब १०२ करोड़ रुपये।

❋ रेगिस्तान स्तनधारी पशुओं सहित अनेक प्रजातियों के जीवों का आवास स्थल हैं।

❋ विश्व की १३ प्रतिशत जनसंख्या रेगिस्तानों में निवास करती है।

❋ एक गहरा चमकीला धब्बा जो लंबी समयावधि के बाद रेगिस्तानी चट्टानों पर पाया जाता है, वह रेगिस्तानी या चट्टानी वर्निश कहलाता है।

❋ विटामिन सी का रासायनिक नाम है ऐस्कॉर्बिक ऐसिड। इसका सबसे पहले प्रयोग अट्ठारवीं सदी में ब्रिटिश नौसैनिकों पर किया गया था जो ताजा सब्जियों के अभाव से होनेवाली बीमारी स्कर्वी से पीड़ित थे। तब से शोधकर्ताओं ने ये पाया

है कि विटामिन सी हमारे शारीरिक विकास में कितनी अहम भूमिका निभाता है। स्वस्थ हड्डियों, दांतों, मसूड़ों, स्नायु तन्तुओं, रक्त वाहिकाओं के लिए ये बहुत जरूरी है और ये हमारी प्रतिरक्षात्मक शक्ति को बढ़ाता है। बहुत से लोग ये मानते हैं कि विटामिन सी सर्दी जुकाम को ठीक करता है। लेकिन इस बारे में कोई ठोस प्रमाण नहीं हैं। हमें प्रतिदिन ६० मिलिग्राम विटामिन सी की जरूरत पड़ती है जिसमें से बहुत कुछ हमारे आहार से पूरी हो जाती है। विटामिन सी नींबू वंश के फलों, सेव, केले, अनन्नास, खरबूजे, आम, पपीते और विभिन्न सब्जियों जैसे पत्ता गोभी, फूल गोभी, भिन्डी, प्याज, मटर, शलजम, पालक आदि में पाया जाता है।

✲ भारत में रेडियो प्रसारण की शुरुआत १९२७ में हुई थी। मुंबई और कोलकाता में दो निजी ट्रांसमीटर थे जिन्हें १९३० में सरकार ने अपने हाथ में ले लिया और प्रसारण सेवा का नाम रखा गया। इंडियन ब्राडकास्टिंग सर्विस। १९३६ में इसे बदलकर ऑल इंडिया रेडियो कर दिया गया। बाद में इसका हिंदी नाम पड़ा- आकाशवाणी।

✲ शून्य यह संख्या रोमन अंकों में नहीं लिखी जा सकती।

✲ कंचनजंगा पर्वत को सिक्किम का रक्षक देवता माना जाता है।

✲ मुम्बई के जे.जे. स्कूल ऑफ आर्टस् के पहले प्रधानाध्यापक का नाम जॉन लॉकवुड किपलिंग, लेखक रुडयार्ड किपलिंग के पिता।

✲ हिंदी हिंदू हिंदुस्तान का नारा भारतेंदु हरिश्चंद्र ने दिया था।

✲ अमेरिका में पेपर मनी फैब्रिक से तैयार होती है न कि लकड़ी के गूदे से। इसमें २५ प्रतिशत लिनेन और ७५ प्रतिशत कॉटन होता है।

✲ पनामा सिटी से ६० मील दूर मैक्सिको की खाड़ी में फिशिंग बोट कैप्टन रोडीनी सालोमन प्रूदो के मछली पकड़नेवाले एक कांटे में एक एयरफोर्स मिसाइल फंसी हुई मिली थी।

✲ लंदन में हर वर्ष जूते चमकाने की प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। प्रतियोगिता ८ घंटे तक चलती है और इसमें किशोर उम्रवाले लोग ही भाग ले सकते हैं। प्रत्येक टीम में ४ सदस्य होते हैं। ८ घंटे में ११,६५१ जोड़े जूतों को चमकाकर लंदन के कोवेट गाईन में लंदन चर्च ऑफ क्राइस्ट की टीम ने प्रतियोगिता जीती थी।

✲ विद्युत प्रवाह नापने की इकाई को एम्पीयर मीटर कहते हैं।

✲ रूस का राष्ट्रीय खेल शतरंज है।

✲ आजादी से पूर्व सबसे बड़ी एवं समृद्ध रियासत हैदराबाद थी।

✲ पहले-पहले इंग्लैंड में वर्ष १८४० में डाक-टिकट बेचने की व्यवस्था शुरू की गई। हालांकि इसके पहले ही डाक वितरण व्यवस्था शुरु हो चुकी थी परंतु पत्र पहुंचने के लिए पत्र भेजनेवाले को पोस्ट ऑफिस तक जाना ही पड़ता था। पहले किसी भी पत्र भेजनेवाले को पोस्ट-ऑफिस जाकर पत्र पर पोस्ट मास्टर के दस्तख्त करवाने पड़ते थे पर डाक-टिकटों के बेचे जाने से इस परेशानी से मुक्ति दिला दी।

जब डाक टिकट बिकने लगे तो लोग उन्हें खरीदकर अपने पास रख लेते थे और फिर जरूरत पड़ने पर उनका उपयोग कर लेते थे। १८४० में ही सबसे पहले जगह-जगह लेटर-बॉक्स भी टाँगे जाने लगे ताकि पत्र भेजनेवाले उनके जरिए पत्र

भेज सकें और पोस्ट-ऑफिस जाने से छुट्टी मिल गई। पहले पत्र भेजने में कितनी तकलीफ आती थी आज पत्र भेजना कितना आसान हो गया है। अब तो संदेश भेजने के लिए पत्र से बहुत तेज सुविधाएँ भी हमें उपलब्ध हैं।

❋ अमेरिका के फिल व सुसान एर्शलर माउंट एवरेस्ट फतह करनेवाले विश्व के पहले दम्पत्ति माने गए। मई २००२ में उन्होंने यह रिकॉर्ड बनाया।

❋ क्विक रिस्पांस टाइम प्रदान करना यह रियल टाइम सिस्टम का प्राथमिक मकसद है।

❋ ओमन चांडी केरल राज्य के अब तक के २१ वें मुख्यमंत्री हैं।

❋ इंडस्ट्रीलय डेवलपमेंट बँक ऑफ इंडिया यह आई.डी.बी.आई. का पूरा नाम है।

❋ फ्रांस में एक बार ड्राइवर की टीम ने पूरे १६ चक्के की गाड़ियां एक ही समय एक ही साइड से सिर्फ दो चक्कों पर चलाकर दिखाई थी।

❋ ८ लैंग्वेज में लिखित पहली ऑपरेटिंग सिस्टम यूनिवर्स है।

❋ तरुण गोगोई लगातार तीसरी बार असम के मुख्यमंत्री बने हैं।

❋ नेशनल क्राइम रिकार्ड की रिपोर्ट के मुताबिक २००९ में १७ हजार ३६८ किसानों ने आत्महत्या की।

❋ के.षणमुगम- भारतीय मूल के हैं। सिंगापुर के विदेश मंत्री नियुक्त हुए हैं। उनकी मातृभाषा तमिल है तथा वे पेशे से वकील हैं। सिंगापुर के कानून मंत्री के पद पर आज भी कायम हैं।

❋ जर्मनी की सूसी बेमसेल व डैनियम स्नैडर ने रिक्शे में बैठकर ३७,४१० किलो लंबा सफर किया था।

❋ ब्लूम पी सी अपटूडेट कम्प्यूटर का एक ऐसा रूप है जिसमें कहीं भी स्क्रीन नहीं है।

❋ राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोग शाला (एन.सी.एल.) के संशोधक वी.वी. रानडे को १९९९ में केन्द्र सरकार की स्वर्ण जयंती फैलोशिप घोषित हुई थी।

❋ भारत के प्रथम टेस्ट ट्यूब शिशु का जन्म छह अगस्त १९८६ को हुआ था।

❋ COM मतलब commercial.

❋ झांसी (उत्तरप्रदेश) में पैदा हुए धर्मेन्द्रकुमार वर्मा ने ३ मिनिट २० सेकंड में विश्व के सभी देशों की राजधानी के नाम बता दिए थे।

❋ कलामहर्षि बाबूराव पेंटर का जन्म १८९० में हुआ था।

❋ प्रा. रजत मूना- सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ एडवांस कम्प्यूटरिंग (सी-डैक) के नवनियुक्त महासंचालक। १९८५ में आईआईटी (कानपुर) में बी-टेक की पदवी प्राप्त की। कम्प्यूटर साइंस एण्ड ऑटोमेशन विषय में पीएचडी। ई-टोल संबंधी प्रस्तुत किए रिपोर्ट की विश्वभर में चर्चा।

❋ ब्रिटेन के कोलोसस नामक कम्प्यूटर को सिर्फ कोड-वर्ड पढ़ने के मकसद से बनाया गया है।

❋ १९६५ में भारत में सिर्फ ७३८.३ मिली मीटर इतनी कम बरसात दर्ज होने से इस वर्ष को अकाल ग्रस्त घोषित किया गया था।

❋ एड्. एम. के देशमुख- महाराष्ट्र राज्य सहकारी संघ के संचालक चुने गए हैं। इससे पहले महाराष्ट्र सहकारी संघ के

संचालक, मानद सचिव व मुख्य कार्यकारी अधिकारी रह चुके हैं। पुणे जिला नागरी सहकारी बैंक असोसिएशन के मानद सचिव व पुणे अर्बन बैंक के संचालक के रूप में भी कार्यरत रह चुके हैं।

❋ जनरी बैलॉइंग (फिलीपीन्स) नामक ५९.९३ सेंटीमीटर के व्यक्ति को विश्व के सबसे बौने आदमी के रूप में गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज किया गया है।

❋ www.time and date.com इस वेबसाइट पर विश्व के विविध शहरों के अनुसार वहां के समय की जानकारी मिल सकती है।

❋ बायनरी सिन्क्रोनस कॅरेक्टर कंट्रोल पर आधारित है।

❋ खगोल भौतिकी विषय में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त करनेवाले पहले भारतीय विशेषज्ञ के रूप में मेघनाद साहा नाम से पहचाने जाते हैं।

❋ अॅंद्रेई जेइम- मैंचेस्टर विद्यापीठ में भौतिक शास्त्र के प्राध्यापक और प्रसिद्ध रशियन विशेषज्ञ। १९८२ में मॉस्को फिजिकल- टेक्निकल इन्स्टिट्यूट में एम.एस.सी. पदवी प्राप्त की। ग्रेफेन पदार्थ के विशेषतापूर्ण गुणधर्म का संशोधन करने हेतु भौतिक शास्त्र नोबेल पुरस्कार प्रदान किया गया।

❋ छाया गुप्ता (आगरा) ने १३५.१४ मीटर लंबा और १.४५ मीटर चौड़ा सबसे विशाल ग्रीटिंग कार्ड बनाया था।

❋ हार्ड डिस्क का बूट सेक्टर खराब करनेवाले वायरस का नाम बूट सेक्टर वायरस है।

❋ वरिष्ठ समाजवादी नेता, लेखक, विचारक नारायण गणेश उर्फ नानासाहेब गोरे का जन्म १९०७ को हुआ था।

❋ एशियन राकेट ने १९९६ में अंतरिक्ष में सफल उड़ान भरी थी।

❋ एक प्रोसेसर द्वारा सेकंडरी मैमरी सीधे सीधे एक्सेस की जा सकती है।

❋ डॉ. अलका वाडकर- पुणे विद्यापीठ में मानसशास्त्र विभाग में अध्यापिका हैं। शिक्षा रत्न पुरस्कार व ग्लोरी ऑफ इंडिया गोल्ड मैडल अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार पानेवाली पहली महाराष्ट्रीय अध्यापिका हैं। टीवी आणि मुले, नोकरदार स्त्री आणि लिंगवाद उनकी चर्चित किताबें राज्य पुरस्कार से सम्मानित की गई हैं। सामाजिक दृष्टि से उपयुक्त संशोधन के लिए अमेरिकन फाऊंडेशन फैलाशिप मिली है।

❋ ब्रिटेन के जेन्स फ्रायर और निक जेनकिन्स ने मिलकर एक मिनट में पूरी ४८ मेंढ़क मारे थे।

❋ मदर बोर्ड में जिस स्थान पर रैम चिप बिठाई जाती है, उस स्थान को मैमरी बैक कहा जाता है।

❋ अच्छे उत्पाद को एक किनारे रखकर सबसे पहले उसी गुणवत्ता का हल्का माल बेचने में ही समझदारी है।

❋ वीणा जोशी- पुणे आकाशवाणी केन्द्र की संचालिका है। १९७७ में केन्द्र में कार्यक्रम अधिकारी के रूप में कार्यरत हुई थी। इससे पहले जलगांव में सहायक केन्द्र संचालक और सातारा केन्द्र में संचालक पद पर कार्य किया है। समाचार पत्र विद्या विभाग की पदवी परीक्षा में १९७४ में वे पुणे विद्यज्ञापीठ में प्रथम आई थीं।

❋ ब्रिटेन के झैफोड लीग ने बारह इंच का पीजा सिर्फ चार मिनट ५६ सेकंड में खाकर दिखाया था।

❋ ARPANET- एडवांस्ड रिसर्च प्रोजेक्ड एन्ड न्यू इमिशन टैक्नोलॉजी को कहते हैं।

❋ नेशनल पुलिस एकेडमी संस्थान हैदराबाद (आंध्र प्रदेश) में है।

✻ CPS का मतलब होता है- कैरेक्टर्स पर सेकंड।

✻ तेलूगू भाषा का सर्वोच्च तेलगुथल्ली पुरस्कार वरिष्ठ विचारवादी तर्कतीर्थ लक्ष्मण शास्त्री जोशी को १९९३ में दिया गया था।

✻ हेमंत रावे- सेल्स टैक्स प्रैक्टिसनर्स एसोसिएशन ऑफ महाराष्ट्र के निविरोध अध्यक्ष चुने गए हैं। १९८८ से संगठन में कार्यरत हैं। १९८६ से हाइकोर्ट में वकील बने थे। दि सेल्स टैक्स ट्रायब्यूनल एसोसिएशन मुंबई के मानद कार्यवाह हैं।

✻ ISDN इंटिग्रेटेड सर्विसेस डिजीटल नेटवर्क को कहते हैं।

✻ पैरेलल डाटा ट्रांसमिशन के अंतर्गत एक समय में एक ही कैरेक्टर ट्रांसफर किया जा सकता है।

✻ भानुप्रताप बगे- पुलिस निरीक्षक के रूप में कार्यरत हैं। १९८५ में पुलिस विभाग में शामिल हुए थे। मुंबई के संगठित अपराधों पर अंकुश लगाने प्रभावी कार्य किया है। इन दिनों विशेष शाखा में नियुक्त हैं। राष्ट्रपति पुरस्कार से नवाजे गए हैं।

✻ सुषमा शिरोमणि-बाल कलाकार के रूप में १९५८ में फिल्म में प्रवेश किया था। सतीचं वाण फिल्म में सहनायिका। दाम करी काम में अभिनय की हर तरफ प्रशंसा हुई। भिंगरी फिल्म सुपरहिट कहलाई। फटाकडी भन्नाट भानू गुलछड़ी प्रसिद्ध फिल्में हैं। इम्पा की अध्यक्ष की जिम्मेदारी संभाली हैं।

✻ लक्जमबर्ग के जॉर्जेस किस्टेन ने सिर्फ ५२.६८ सेकंड में गर्म पानी की रबर की थैली मुंह कीद सहायता से फुगाई थी।

✻ WORM यह एक ऑप्टिकल मैमरी है।

✻ १९२८ में मुंबापुर वर्तमान नामक अखबार शुरू हुआ था।

✻ विटामिन सी को एसकार्बिक एसिड के नाम से भी जाना जाता है।

✻ एनीयोमीटर वायु वेग मापने में प्रयुक्त होता है।

✻ समुद्र की गहराई मापने के यंत्र को फैदोमीटर कहते हैं।

✻ सोयाबीन के प्रति ग्राम में सबसे ज्यादा प्रोटीन पाई जाती है।

✻ वाशिंगटन के बेलिंघम में किसी महिला द्वारा नाचते समय तीन कदम पीछे लेना गैरकानूनी है।

✻ कैलिफोर्निया में कोई महिला हाउसकोट पहनकर गाड़ी नहीं चला सकती।

✻ मिशीगन में रास्ते पर चलते हुए कोई कीचड़ भरा गड्ढा आ जाए, तो महिलाएं अपनी स्कर्ट ६ इंच से ज्यादा ऊंची नहीं कर सकती हैं।

✻ इदाहो में कोई पुरुष अपनी प्रेमिका को ५० पौंड से ज्यादा वजन का कैंडी बॉक्स नहीं दे सकता।

✻ हॉलैंड में किराना दुकान पर खरीददारी करते वक्त आपने खरीददारी बास्केट का इस्तेमाल नहीं किया, तो जुर्माना देना पड़ सकता है।

✻ स्वीडन में अपार्टमेंट में रहनेवाला व्यक्ति रात १० बजे के बाद टॉयलेट में फ्लश नहीं कर सकता।

✻ अल्बामा में रेलवे ट्रैक पर नमक रखने पर मृत्युदंड की सजा हो सकती है।

✻ बायोमिंग में जून महीने में खरगोश की फोटो लेना मना है।

✻ टेक्सास में प्लास या तार मोड़नेवाले औजार रखना अपराध माना जाता है।

❋ कोलंबिया में गॉसिप करने पर अपराधी को ९०,००० डॉलर तक जुर्माना देना पड़ सकता है।

❋ फिरोज तुगलक ने फलों की गुणवत्ता सुधारने के लिए प्रयत्न किए।

❋ सूफी संत निजामुद्दीन औलिया ने सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक से मिलने से इन्कार कर दिया था।

❋ परपल हर्ट अमेरिकी सेना द्वारा स्थापित शौर्य पुरस्कार है।

❋ पुष्पों को क्रम से लगाने की जापानी कला को इकेबाना कहा जाता है।

❋ सौर उर्जा को बढ़ावा देने के लिए तीन मई को अंतर्राष्ट्रीय सूर्य दिवस के रूप में मनाया जाता है।

❋ एंजाइम जैविक सिस्टम में रासायनिक क्रिया की प्रक्रिया को तेज करते हैं।

❋ दक्षिण कोरिया के प्रेसिडेंट के घर को ब्लू हाउस के नाम से जाना जाता है।

❋ फ्रांस के सम्राट नेपोलियन प्रथम की यह आदत थी कि वह अपने नये जूते जब तक नहीं पहनता था, जब तक कि उन्हें पहले उसके नौकर न पहन लें।

❋ किसी उभयचर की सबसे प्रमाणित आयु ५५ वर्ष है, यह जापानी सरट की है, जिसकी मृत्यु नीदरलैंड के एक चिड़ियाघर में १८८१ में हुई।

❋ मानव की एक कोशिका में ५००० रसायन, २००० एंजाइम और १००० क्रियाएं चलती हैं।

❋ एक अक्षर का भार ०.०००१२५ ओंस होता है।

❋ एक मिनट में संसार में ७६२५ बच्चे जन्म लेते हैं, जिनमें से ५३१० बच्चे मर जाते हैं।

❋ जब जीवन पाषाण उपकरणों पर निर्भर था, उस काल को पाषाण काल कहते है।

❋ बटिकाश्म उपकरणों की प्रधानता सोहन संस्कृति की विशेषता है।

❋ पूर्व पाषाणकाल में लोग गुफाओं और शैलाश्रयों में रहते थे।

❋ भीमबेटका पूर्व पाषाणकालीन गुफाओं के कारण प्रसिद्ध है।

❋ पूर्व पाषाणकाल का भोजन जानवरों का कच्चा मांस, जंगली फल तथा कंदमूल है।

❋ मध्य पाषाणकाल का कालक्रम १०,००० ई.पू. ५,००० ई.पू.।

❋ मध्य पाषाणकाल के औजारों को माइक्रोलिथ कहते हैं?

❋ मनुष्य ने पशुपालन मध्यपाषाण काल में शुरु किया।

❋ भूगोल के लिए ज्योग्रेफी शब्द का पहली बार यूनानी वैज्ञानिक इरैटोस्थनीज ने किया।

❋ हावड़ा ब्रीज- यह दुनिया का चौथा सबसे बड़ा कैन्टलीवर के सहारे बनानेवाला पुल है। यह गेटवे ऑफ कलकत्ता के नाम से मशहूर और १५० फीट लंबा। यह पुल आज भी दुनिया का छटा सबसे बड़ा पुल है। यह पुल कलकत्ता का प्रतीक है। सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, मृणाल सेन, राजकपूर, रोलैण्ड ज्यॉफ और मीरा नायर जैसे दिग्गज फिल्मकारों को आकर्षित कर चुका है। मधुबाला अभिनीत शक्ति सामंत की हिंदी फिल्म हावड़ा ब्रीज काफी सफलता प्राप्त करी इसी पुल के नाम पर बनी है।

❋ विभिन्न शोधों के अनुसार सड़क दुर्घटनाओं के लिए महिलाओं की अपेक्षा पुरुष दो गुना ज्यादा कारण होते हैं।

❋ अमेरिकन लोग हर घंटे २५ लाख प्लास्टिक बोतल फेंक देते हैं।

❋ कर्निघम ने पावापुरी का अभिज्ञान कसिया के दक्षिण पूर्व में १० मील पर स्थित फाजिलपुर नामक ग्राम से लिया है। जैन ग्रंथ कल्पसूत्र के अनुसार महावीर ने पावापुरी में एक वर्ष बिताया था। यहीं उन्होंने अपना प्रथम धर्म- प्रवचन दिया था, इसी कारण इस नगरी को जैन धर्म के सम्प्रदाय का सारनाथ माना जाता है। महावीर स्वामी द्वारा जैन संघ की स्थापना पावापुरी में ही की गई थी।

❋ कार दुर्घटनाओं में किशोरों के मरने का खतरा ज्यादा होता है। हर साल ३ लाख किशोर घायल होते हैं और तकरीबन ५००० मरते हैं।

❋ चावल की सबसे ज्यादा १५००० प्रकार है। कुछ देशों में चावल की विशिष्ट वैरायटी है, जो अन्य कहीं पायी नहीं जाती।

❋ स्वित्झर्लैंड के के जिनेवा शहर में छह करोड़ डॉलर की रिकॉर्ड कीमत का हीरा है जो पिंक स्टान नाम से जाना जाता है। यह अंडाकार हीरा पृथ्वी के महानतम खजानों का हिस्सा कहा जाता है। यह आकार में २७.७८ कैरोट का है। यह हीरा अफ्रीका से हासिल किया गया है उस समय यह १३२.५ कैरेट का था बाद में तराशा गया। पांच कैरेट वजन का गुलाबी हीरा मिलना बहुत कठिन है फिर ५९.६ कैरेट का हीरा तो बेहद खास है।

दुनिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी- जुलाई, १९७३ में बनी ब्रिटिश लाइब्रेरी दुनिया की सबसे बड़ी लाइब्रेरी है। यूके स्थित इस लाइब्रेरी को देखने दुनिया भर से लोग आते हैं। यहां दुनिया भर के देशों से लाई गई तकरीबन २ करोड़ से अधिक पाठ्य सामग्री हैं, जिसमें लगभग सारी भाषाओं में बुक्स, डिजिटल बुक्स, मेन्यूस्क्रिप्टस्, जर्नल्स न्यूजपेपर, मैग्जीन, साउंड एंड म्युजिक रिकॉर्डिंग, वीडियोज, पेटेंट्स, मैप, स्टैम्प्स आदि शामिल हैं। लगभग २००० ईसा पूर्व की मेन्यूस्क्रिप्टस् यहां आज भी मौजूद है। हर साल ३० लाख किताबें और पढ़ाई की सामग्री यहां आती है। दुनिया भर के ८० लाख स्टैम्पस यहां उपलब्ध हैं। इन सभी को रखने के लिए ६२५ किलोमीटर लंबी शेल्फ बनी हुई है और हर साल किताबों की संख्या बढ़ने से शेल्फ की लंबाई १२ किलोमीटर बढ़ानी पड़ती है। यहां १२०० लोग एक साथ बैठकर किताबें पढ़ सकते हैं।

मानव शरीरसंरचना ❋ अकेला मानव मस्तिष्क ही रक्त में प्रवाहित होनेवाली ऑक्सीजन का बीस प्रतिशत इस्तेमाल कर लेता है। ७० किलोग्राम वजन के एक सामान्य आदमी के शरीर में पाँच लीटर खून होता है, जबकि महिलाओं में साढ़े चार लीटर। मनुष्य के कान के मध्य की हड्डी स्टेप्स साइज में सर्वाधिक छोटी होती है।

❋ सूर्यग्रहण की अधिकतम संभव अवधि ७ मिनट ३१ सेकंड है। २० जून १९५५ को फिलिपींस में ७ मिनट ८ सेकंड तक सूर्य ग्रहण देखा गया।

❋ टेबल क्लॉथ बिछाने की शुरुआत अतिथियों के हाथ-मुंह पोंछने के टॉवेल के रूप में हुई थी, पर अब उनमें हाथ-मुंह पोंछना असभ्यता मानी जाती है।

❋ दूध के एक बड़े गिलास या एक कटोरी दही से करीब ७०० मिलीग्राम कैल्शियम मिलता है, जो एक स्वस्थ वयस्क की एक दिन की आवश्यकता के लिए पर्याप्त है।

❋ कुत्तों के पास आठ सुरों के बीच अंतर करने की काबलियत होती है। करीब १४ हजार वर्ष पूर्व सबसे पहले जंगली कुत्ते को घरेलू बनाया गया था। प्रशिक्षित कुत्ते ५ मीटर की दूरी से ही छिपे हुए कीड़ों का पता लगा सकते हैं। आनुवांशिक

नजरिए से घरेलू कुत्ते की तुलना भेड़िए से की जा सकती है।

✻ माउंट एवरेस्ट की समुद्र तल से ऊंचाई ८८४८ मीटर।

✻ प्राचीन ग्रीक में महिलाओं को किसी भी ओलंपिक मैच देखने की इजाजत नहीं थी। अगर कोई महिला ऐसा करते हुए पाई जाती थी तो उसे मृत्युदंड दिया जाता था।

✻ विश्व में सबसे बड़ा रॉक शो १९९४ के नववर्ष की पूर्व संध्या पर आयोजित हुआ था। पाप गायक रोड स्वीवर्ट के इस परफॉर्मेंस को देखने के लिए ३.५ मिलियन लोग जमा थे।

✻ बर्गर बनानेवाली कंपनी मैकडोनॉल्ड एक वर्ष में २३०० टन खरबूजे के बीज को व्यवहार में लाती है।

✻ एक घड़ी में २११ कलपुर्जे होते हैं।

✻ पहला नोबल पुरस्कार १० दिसम्बर १९०१ में रंटगेन नामक वैज्ञानिक को दिया गया था।

✻ पहला विश्व मेला १८५१ में लंदन में हाइड पार्क में लगाया गया।

✻ पहली मोटर दौड़ २२ जुलाई १८९४ में हुई।

✻ १४ वीं शताब्दी में प्लेग से यूरोप की एक तिहाई जनसंख्या खत्म हो गई थी।

✻ स्लग नामक अरीढ़धारी मालूस्क के चार नासाछिद्र होते हैं।

✻ धुआं किसी वस्तु के अधूरे जलने की स्थिति बताता है।

✻ सिक्कों के चारों ओर बनी हुई छोटी-छोटी लकीरें उन्हें घिसने से बचाने के लिए होती हैं।

✻ अलास्का में भालू को मारने पर कोई प्रतिबंध नहीं है। लेकिन फोटो खींचने के लिए भालू को उठाने पर प्रतिबंध है।

✻ स्विटजरलैंड में अपनी कार के दरवाजे को जोर से बंद करना जुर्म है।

✻ लास वेगास के कैसिनोस में घड़ियां नहीं होती।

✻ बग्स बनी को अपनी आवाज देनेवाले मेल ब्लैंक को गाजरों से एलर्जी थी।

✻ १६ वीं और १७ वीं शताब्दी में एक समय चॉकलेट खाना पाप माना जाता था।

✻ एक औसत मनुष्य अपने सिर के २०० बाल रोजाना गंवा देता है।

✻ कोका कोला का मूल रंग हरा था।

✻ प्याज काटते समय यदि च्यूइंगम का सेवन किया जाए तो आंख से आंसू नहीं निकलते।

✻ १११,१११,१११ को १११,१११,१११ से गुणा करने पर उत्तर १२,३४५,६७८,९८७,६५४,३२१ आएगा।

✻ यदि लंबे बालों की बंटी हुई डोरियों से एक रस्सी बनाई जाए, तो उससे एक भारी वाहन को उठाया जा सकता है।

✻ अधिकृत आंकड़ों के अनुसार अमेरिका में प्रति बीस मिनट में एक आत्महत्या होती है।

✻ बनाना आयल केले से नहीं निकलता। इसे केले के रासायनिक आसवन से प्राप्त किया जाता है।

✻ विश्व की सभी प्रमुखतम भाषाओं में अंग्रेजी में सबसे अधिक शब्द हैं। उनकी कुल संख्या ८००,००० हैं।

विश्व के पुल ✻ सबसे लंबा तैरता हुआ पुल सिएटल वाशिंगटन का सेकंड लेक वाशिंगटन ब्रिज है। यह ३८३९ मीटर लंबा है। इसके तैरनेवाले भाग की लंबाई २२९१ मीटर है। डेढ़ करोड़ की लागत से यह १९६३ में बनाया गया था। उत्तरी

इंग्लैंड का हंबर ब्रिज बहुत ही लंबा लटकनेवाला पुल है। इसका डैक हवाई जहाज के पंखों की तरह नीचे की ओर झुका हुआ है ताकि हवा जितनी तेज चले, इसकी पकड़ उतनी ही मजबूत हो जाये। इसकी रस्सियां एक विशेष कोण पर झुकी हुई हैं ताकि वे कम वायुवेग में इस पुल को संभाल सकें। इसकी लंबाई १४१० मीटर है। फिनलैंड के पुनखारजू में प्यूरोवेसी झील पर साढ़े ४ मील लंबा और जल की सतह से ८५ फुट ऊंचा एक मिट्टी का पुल है, जो पूरी तरह प्रकृति द्वारा निर्मित है। भारत का सबसे लंबा पुल ब्रह्मपुत्र नदी पर तेजापुर में है। इसकी लंबाई ९८८९ फुट है। भूकंपीय क्षेत्र में होने के कारण इसमें ४९ फुट लंबे मेहराब बीच में दिये गये हैं। स्विजरलैंड में कुहमट दर्रे के ऊपर बना रेल मार्गीय पुल १४६ फुट लंबा है। शीतकालीन वर्षा के कारण इसे हर साल शरद ऋतु में खोलकर अलग कर दिया जाता है और हर बसंत ऋतु में पुन: बना दिया जाता है। अमेरिका में एल्प पर्वतों के पश्चिमी ढलान पर ३ प्राकृतिक पुल हैं। इनमें सिपापू पुल नदी से २८६ फुट ऊंचा और २६९ फुट लंबा है। कोचिना पुल २१० तथा ओवाकोमो १०६ फुट ऊंचा है। पश्चिमी वर्जिनिया में एक प्राकृतिक पुल २१५ फुट ऊंचा और १०० फुट लंबा है। गोल्डन गेट, झूलता पुल जलस्तर से ७४७ फुट ऊंचा है। यह सेन फ्रांसिस्को और मारिन काउंटी को जोड़ता है। इसके टॉवर सबसे ऊँचे है। ऑस्ट्रेलिया के सिडनी हार्बर पुल की चौड़ाई १६५० फुट है, इसके ऊपर २ विद्युत रेलवे ट्रैक हैं। साइकिल चालाकों और पदयात्रियों के लिए अलग-अलग लेन के अलावा सड़क यातायात के लिए ८ लेन हैं। रॉयल कोलंबिया में आरनिको नदी को पार करने के लिए वहां के आदिवासी केवल जंगली पौधों के तनों का उपयोग करके सौ फुट लंबा पुल बनाते हैं। मगर हवा और पानी कुछ ही दिनों में इस पुल को बहा ले जाते हैं और आदिवासी दल को फिर से नया पुल बनाना पड़ता है। चीन में काशिंह के निकट ३१२ मीटर ऊंचा तथा ४५ मीटर विस्तार का एक प्राकृतिक पुल है। भारतीय अंजीरों के वृक्षों की हवाई जड़ें एक-दूसरों को इतनी मजबूती और तेजी से पकड़ती हैं कि नदी के दूसरे किनारों पर पेड़ों की जड़ों के साथ मिलकर ये अत्यंत मजबूत पुल बना देती हैं। १०८० फुट लंबा बिर्शेनफ पुल रोडेशिया में साबी नदी पर बना है, जिसका नामकरण सर सेम्युएल बिर्शेनफ के नाम पर हुआ, जिन्होंने इसके निर्माण का पूरा व्यय उठाया। इन्द्रधनुषी पुल - अरिजोना में बना इन्द्रधनुषी पुल पत्थर से बना हुआ विश्व का सबसे बड़ा प्राकृतिक पुल है। इस पुल की ऊंचाई ९४ मीटर तथा चौड़ाई ८५ मीटर है। इस पुल की ऊंचाई इतनी अधिक है कि इसके नीचे लगभग ३२ मंजिला भवन बनाया जा सकता है। यह पुल पॉवेल झाल के पश्चिम छोर पर स्थित है। यह लाल अथवा भूरा दिखाई देता है और इसके अंदर नीले रंग की परत चढ़ी हुई है। यह विशालकाय पुल नदी मे द्वारा किए गए भू-कटाव का परिणाम है।

विश्व की सड़कें- ❋ दुनिया में सबसे लंबी मोटर चलाने योग्य सड़क पैन अमेरिकन हाइवे है, जो उत्तर-पश्चिम अलास्का से चिली के सबसे दक्षिण तक २७३८७ किलोमीटर (१७०१८ मील) लंबी है। दुनिया की सबसे संकरी सड़क इंग्लैंड में टम्पलवार और डाल्फिन स्ट्रीट के जंक्शन पर स्थित है और स्कर्वी गली के नाम से लोकप्रिय है। इस सड़क के सबसे संकरे स्थल की चौड़ाई मात्र ४९ सेंटीमीटर है। दुनिया की सबसे चौड़ी स्ट्रीट का नाम मानमेंटल एक्सिस है। यह ब्राजील की राजधानी ब्रासीलिया में म्युनिसिपल प्लाजा ऑफ द थ्री पॉवर्स तक है। इसकी चौड़ाई २.४ किलोमीटर है। यह अप्रैल १९६० से शुरू हुई थी। सबसे लंबी स्ट्रीट टोरंटो से उत्तर-पश्चिम को जानेवाली योंगे स्ट्रीट है। इसकी अधिकतम लंबाई १८९६.२ किलोमीटर है सबसे छोटी स्ट्रीट का दावा बेल फोटेन, ओहायो (संयुक्त राज्य अमेरिका) की

मैकीन्ली स्ट्रीट के लिए किया जाता है। चीनी मिट्टी की ईंटों से बनी इस सड़क की लंबाई ९.१४ मीटर है। सबसे ढालदार सड़क सेंट फ्रांसिस्को में रशियन हिल की फिल्बर्ट स्ट्रीट तथा डोलरस की सड़क है। उसकी ढाल ३१.५ प्रतिशत है।

❋ अपने पूरे जीवन में आप करीब ६०००० पौंड खाना खाते हैं। जिसका वजन करीब छह हाथियों के बराबर होता है।

❋ संसार का सबसे पुराना च्यूइंगम का टुकड़ा करीब ९००० साल पुराना है।

❋ अधिकतर लोग लाल की जगह नीला ब्रश प्रयोग करते हैं।

❋ व्हाइट हाउस में करीब १३०९२ छुरी, कांटे और चम्मच हैं।

❋ विश्व का यह अनोखा म्यूजियम है- न्यूयॉर्क का इंटरनेशनल म्यूजियम ऑफ कार्टून। इसमें दुनिया भर के ५० से ज्यादा देशों से कार्टून इकट्ठे करके रखे गये हैं। करीबन एक लाख, ६०,००० ड्राइंग्स इसमें हैं, जिनमें कला का हर नमूना देखने को मिलता है। कॉमिक बुक्स, कॉमिक स्ट्रिप, एनिमेटिड कार्टून पात्र, ग्रीटिंग कार्डस् से लेकर कैरीकेचर, स्पोर्ट्स कार्टून तक यहां देखने को मिल सकते हैं। यहां कार्टूनों से संबंधित १०००० से ज्यादा पुस्तकें हैं, तो एनीमेशन फिल्मों और डॉक्यूमेंट्री के भी सैकड़ों कैसेट हैं। कार्टून म्यूजियम का मुख्य उद्देश्य दुनियाभर से श्रेष्ठ कार्टूनों को इकट्ठा करना, उनका संरक्षण करना और उनका प्रदर्शन करना है। शायद इसीलिए दुनियाभर से लोग इस अजब-अनोखे म्यूजियम को देखने को आते हैं। यह ५२००० वर्गफुट में फैला हुआ है और इसमें कार्टून प्रदर्शनी के लिए गैलरी, क्लासरूम, थिएटर, स्कल्पचर गार्डन, गिफ्ट स्टोर से लेकर आनेवाले दर्शकों के लिए खाने-पीने के लिए कैफे भी है।

❋ प्रति ग्राम मिट्टी में लगभग ढाई अरब जीवाणु पाए जाते हैं।

❋ सोने की इतनी पतली चादर बनायी जा सकती है कि २० लाख चादरों की मोटाई केवल एक सेमी. होगी।

❋ मनुष्य में ४६ क्रोमोसोम पाए जाते हैं जबकि क्रेफिश में २००।

❋ विश्व में सबसे ज्यादा महिलाएँ यक्ष्मा, टी.बी. (ट्यूबरकुलोसिस) के कारण मरती हैं।

❋ जब अलेक्जेंडर ग्राहम बेल को दफनाया गया तो १ मिनट के लिए बतौर श्रद्धांजलि अमेरिका में दूरसंचार व्यवस्था को बंद कर दिया था।

❋ बड़ी आकाशगंगा में ४०० अरब तारे तक होते हैं।

❋ साइकिल-बच्चे पहले तीन पहियोंवाला साइकिल चलाना सिखते हैं फिर दो पहियों वाला। लेकिन कम ही लोग इस लोकप्रिय वाहन के इतिहास से वाकिफ हैं। दरअसल साइकिल का इतिहास १८वीं शताब्दि से शुरुआत होता है। बैरन वौन ड्रॉप्स नामक एक जर्मन से सन् १८१७ ई. में दो पहिलोंवाला एक उपकरण विकसित किया। इसके दोनों पहिए लकड़ी की एक छड़ के माध्यम से जुड़े थे। इसे दोनों तरफ से पैरोंसे एक के बाद एक धरती को पीछे की ओर धकेलकर चलाया जाता था। इसके बाद १८३९ में किर्क पैट्रिक मैकमिलन नामक एक स्कॉटिश लोहार ने पैंडलों और ब्रेकयुक्त साइकिल का निर्माण किया। उसने पिछले पहिए के एक्सल पर एक क्रैंक यानी चेन भी रख थी। पैंडल क्रैक से जुड़ी छड़ों की सहायता से पहिए को घुमाते थे लेकिन तेजी से पैडल घुमाने के बावजूद पहिया बहुत कम गति से घूमा था। सन् १८६५ में एक फ्रांसीसी लालेमैंट ने पैडल अगले पहिए पर रख दिए और दो पहियों वाला इस वाहन को बाइसिकल नाम दिया। इसका फ्रेम लकड़ी का और टायर लोहे के थे। बाद में उसे और विकसित करते हुए हल्की धातु के पहिए जिन में

स्पोक्स के जरिए धुरी से जोड़ दिया और लोहे की जगह रबड़ के पहिए प्रयोग किए जाने लगे।

लेकिन इस साइकिल का अगला पहिया काफी बड़ा था और पिछला काफी छोटा। चालक अगले पहिए पर लगी सीट के ऊपर बैठकर उसे चलाता था लेकिन इसे चलाने के लिए अधिक संतुलन बनाने की जरूरत होती थी।

क्योंकि अगले पहिए के बड़े होने के कारण चालक को उसके ऊपर से आगे की ओर गिरने का भी डर रहता था। आज के आधुनिक और संतुलित बाइसिकल को सन् १८७० में जेस्स स्टार्ले ने विकसित किया था। इसके दोनों पहिए का आकार एक समान था और पिछले पहिए से जरा-सा आगे फ्रेम के ऊपर फिट सीट के ऊपर बैंठ कर इसे चलाता है।

पैड़लों की बड़ी क्रैंक और चेन व्हील के बड़े दातों ने साइकिल की रफ्तार तेज कर दी। बाद में इस साइकिल में हवा भरनेवाला टायर लगाया गया और इसके साथ ही साइकिल में हवा जैसी तेजी आ गई। आज हमारे पास बेहतरीन आधुनिक साइकिल हैं।

✻ गोल्फ गेंद में छेद क्यों होते हैं? - यदि आप नजदीक से गोल्फ की गेंद को देखें तो आप पाएंगे कि ये दरअसल छेद नहीं होते। आप इन्हें डिम्पल्स यानी नन्हे-नन्हे गड्ढे कह सकते हैं। जब बॉल पर ठीक प्रकार से प्रहार किया जाए तो ये गड्ढे उसे हवा में सीधे उड़ने में सहायता करते हैं और ये गड्ढे हवा की प्रतिरोधकता को भी कम करते हैं। यही कारण है कि इन गेंदों में दूर तक जाने की शक्ति होती है। गोल्फ की गेंद का भार लगभग ४५.९ ग्राम होता है और इसका व्यास लगभग ४.११ सेंटीमीटर होता है। पहले ये गेंदें भारी चमड़े से बनाई जाती थी और इनमें पंख भरे जाते थे लेकिन आज कल यह गेंद कॉर्क की एक गुठली के गिर्द रबड़ की पट्टियों को कसकर लपेटकर बनाई जाती है जिस पर रबड़ जैसा एक सख्त पदार्थ चढ़ाया जाता है। इन गड्ढों के कारण अच्छे खिलाड़ी गोल्फ की गेंद को २७५ मीटर या इससे भी दूर तक मार सकते हैं।

✻ भारत विश्व का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है। भारत ने १९९८ में दुग्ध उत्पादन में अमेरिका को पीछे छोड़ दिया। इस समय भारत में करीब १० करोड़ मीट्रिक टन दूध प्रतिवर्ष उत्पन्न हो रहा है जो गेहूं या चावल के उत्पादन से अधिक है। डेयरी उद्योग खरबों रुपए वार्षिक का व्यापार बन गया है।

✻ स्पेस- १५० बिलियन डॉलर कुछ लागत है इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन की। यह सबसे अधिक खर्चीला प्रोजेक्ट है, जिस पर सबसे ज्यादा राशि खर्च हुई।

✻ २-०० मिनट तक ही मनुष्य स्पेस में बिना किसी सुरक्षा उपाय के जीवित रह सकता है।

✻ २२,००० वस्तुएं इंसानों की बनाई हुई पृथ्वी की कक्षा में घूम रही हैं, जो १० से.मी. या इससे अधिक हैं। इस कचरे में काम कर रहे सैटेलाइट से ५ फीसदी, निष्क्रिय और टुकड़ों में बिखरे सैटेलाइट ८७ फीसदी और ८ फीसदी स्पेंट रॉकेट्स शामिल हैं।

✻ १२ मील (१९ किमी) की ऊंचाई पर जरूरी होता है प्रेशराइज्ड सूट पहनना।

✻ पृथ्वी पर हर दिन ८०.६ लाख बार आकाशीय बिजली गिरती है।

✻ समुद्र के एक लीटर पानी के १३ बिलियन हिस्से में एक ग्राम सोना मिला रहता है।

✻ २००० जलीय जीवों की प्रजातियों के बारे में हर साल बताया जाता है।

✻ ९० फीसदी विश्व का कचरा समुद्रों में पहुंचता है।

✻ बेहद दुर्लभ माना जानेवाला लीथियम तत्व पृथ्वी पर मौजूद सोना से २०० गुना अधिक है।

✻ ९९ फीसदी सोना पृथ्वी के सबसे आंतरिक भाग में स्थित है।

✻ १५०० मील चौड़ी लोहे की बॉल- पृथ्वी के अंदर १५०० मील चौड़ी आयरन की बाल है। यहां प्रेशर इतना है कि यह पिघल नहीं सकी।

✻ अब तक का सबसे कम तापमान - ८९.२ डिग्री सेंटीग्रेड (-१२८.डि.फै.) १९८३ में अंटार्टिका के वोस्तोक स्टेशन में दर्ज किया गया था।

✻ ३.५ बिलियन वर्ष पुराने बैक्टीरिया के अवशेष ऑस्ट्रेलिया में मिले थे। यह पृथ्वी के वातावरण में ऑक्सीजन के होने से पहले का बैक्टीरिया।

✻ मनुष्य- २००,००० लोग पृथ्वी पर हर दिन जन्म लेते हैं।

✻ १०६ बिलियन लोग पृथ्वी पर हैं। आगामी वर्ष २०५० में ९.२ बिलियन लोगों की संख्या बढ़ जाएगी।

✻ हर सेकंड में दो लोगों की मौत हो रही है।

✻ कॉफी को यदि दुनिया का सर्वाधिक लोकप्रिय पेय पदार्थ कहा जाये तो गलत नहीं होगा। एक हानिकारक पेय पदार्थ होते हुए भी उपभोक्ता इसके नुकसानदायक पहलुओं को गंभीरता से नहीं लेते और इसकी खपत का दायरा दिन प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। हालांकि कॉफी का इतिहास काफी पुराना है। कॉफी को पेय के रूप में सबसे पहले कब पीना आरंभ किया गया इसका कहीं उल्लेख नहीं मिलता। संभवत: सर्वप्रथम अफ्रीका के देश इथोपिया के कुछ ईसाई पादरियों ने इसके गुणों को पहचाना। पंद्रहवीं शताब्दी के अंत तक कॉफी का प्रचार-प्रसार दुनिया के कई भागों में हो गया था। अरब देश में जब कॉफी पहुंची तो वहां इसे कहवा से जाना गया। यहीं से कॉफी शब्द की उत्पत्ति हुई भारत में कॉफी का प्रसार लगभग ३०० वर्ष पूर्व एक मुस्लिम तीर्थयात्री द्वारा लाए गए कॉफी के सात बीजों से हुआ। चाय की उत्पत्ति का स्थान चीन को माना जाता है। वहां चाय को बेहद परंपरागत ढंग से पीने का प्रचलन है।

✻ दुनिया में ऐसे लाखों दरख्त हैं जिन्हें उन गिलहरियों ने लगाया है जो दानों (बीज) को जमीन में छुपाकर भूल जाती हैं कि उन्होंने दाने कहां छुपाये हैं।

✻ हाउस ऑफ द पीपुल को लोकसभा का नाम वर्ष १९५४ में दिया गया।

✻ मुगलकाल की कानूनी भाषा फारसी थी।

✻ भारत मे भाषाई आधार पर गठित पहला राज्य आंध्र प्रदेश था।

✻ प्रसिद्ध संगीतज्ञ तानसेन की समाधि ग्वालियर मे है।

✻ सबसे ऊंचा गैस फ्लेटफार्म- उत्तरी सागर में नॉर्वे के तट के समीप स्थित द ट्रॉल नामक एक ऑफ शोर गैस फ्लेटफार्म विश्व का सबसे ऊंचा मानव निर्मित ढांचा है, जिसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया गया था। यह फ्लेटफार्म रिकॉर्ड १२१० फुट ७ इंच यानी एफिल टावर से भी १४७ फुट अधिक ऊंचा है। इस गुरुत्वाकर्षण आधारित ढांचे का सूखा वजन ६ लाख ५६ हजार टन है। यह प्लेटफार्म २ लाख ४५ हजार घन मीटर कांक्रीट और १ लाख टन स्टील से बना है। रोमानिया के बुखारेस्ट में स्थित द पैलेस ऑफ पार्लियामेंट (संसद का महल) ७ लाख टन स्टील तथा

कांस्य, १० लाख घन मीटर मार्बल, ३५०० टन क्रिस्टल ग्लास तथा ९ लाख घन मीटर लकड़ी से बना है। यह विश्व का सबसे वजनी भवन है।

विश्व का सबसे बड़ा अर्ध गोलाकार भवन- स्वीडन में द स्टॉकहोम ग्लोब एरेना विश्व का सबसे बड़ा अर्ध गोलाकार भवन है। यह २८८ फुट ऊंचा, ३६१ फुट व्यास वाला है। इसकी कुल वाल्यूम (आयतन) ६ लाख घन मीटर है। इसे १९ फरवरी १९८९ को खोला गया था। यह स्टॉकहोम की ए.आई.के. तथा जुरगार्डन्स आई.एफ.नामक दो विशिष्ट वर्गीय आइस हॉकी टीमों का घर है।

❊ सबसे बड़ा दुर्ग चितौड़गढ़ - गढ़ों में गढ़ चित्तौड़गढ़, यह दुर्ग विश्व विरासत की सूची में शामिल है। राजस्थान का यह किला मौर्य वंश के राजा मानसिंह के पास था। ७३४ ईसवी में उन्होंने अपने भांजे बप्पा रावल को इसे सौंप दिया था, जो मेवाड़ के सिसोदिया वंश के संस्थापक थे। सैकड़ों वर्षों तक यह किला मेवाड़ के शासकों की राजधानी रहा। १५६८ में अकबर ने इसे जीत लिया था। तब राणा उदयसिंह ने उदयपुर को मेवाड़ की राजधानी बनाया था।

❊ सर्दी के मौसम में सुबह और रात के समय बहुत कोहरा पड़ता है। कभी तो यह इतना ज्यादा हो जाता है कि आस-पास की चीजें भी दिखाई देनी बंद हो जाती हैं। असल में कोहरा एक तरह से बादलों का ही रूप होता है। इसके बनने की प्रक्रिया भी बादलों जैसी ही होती है। यह कोहरा जमीन की तह के बिल्कुल करीब रहता है।

यह आमतौर पर ठंडी व नमी वाली हवा में बनता हैं ज्यादा ठंड होने पर जब हवा में नमी का स्तर बढ़ता है तो कोहरा तैयार होने लगता है। गर्म हवा की तुलना में ठंडी हवा वातावरण से ज्यादा नमी लेने की क्षमता रखती है। हवा यह नमी वाष्पान प्रक्रिया के द्वारा ही प्राप्त करती है। ठंडी के दौरान यह नमी हवा में संघनित होकर बहुत ही छोटी-छोटी बूंदों का रूप लेने लगती है जिससे कोहरा बनने लगता हैं। कोहरा जितना ज्यादा घना होता है हमारी देखने की क्षमता या दृश्यता का स्तर उतना ही कम होने लगती है। जब आसमान साफ होता है तो ज्यादा कोहरा पड़ता है और जब आसमान में बादल छाए रहते हैं, तब कोहरा कम पड़ता है। इसका कारण यह है कि साफ आसमान होने पर बाष्पीकरण ज्यादा होता है जिससे हवा में नमी की मात्रा ज्यादा रहती है। इससे हवा में नमी का स्तर भी कम हो जाता है। इसकी तरह तालाब, नदी, पहाड़ और खेत-खलिहान जैसे इलाकों में ज्यादा कोहरा बनता है। इसका कारण यह है कि इन इलाकों में नमी की मात्रा अधिक होती है। कई बार कोहरे के पीछे हवा और बादल भी महत्वपूर्ण कारक बनते है।

❊ अपनी आंखें खुली रखकर छींकना असंभव है।

❊ एक लाइन में पतंग उड़ाने का रिकॉर्ड जापान के पतंग बनानेवालों के नाम हे। इन्होंने ११२८४ पतंगों को एक ही लाइन में उड़ाकर यह रिकॉर्ड बनाया है।

❊ बीना दास- बीना दास बंगाल की भारतीय क्रांतिकारी और राष्ट्रवादी महिला थीं। उन्होंने कोलकाता विश्वविद्यालय के एक दीक्षान्त समारोह में अंग्रेज क्रिकेट कप्तान और बंगाली गवर्नर स्टनली जैक्शन की हत्या का प्रयास किया था। वे सुप्रसिद्ध ब्रह्म समाजी शिक्षक बेनी माधव दास और सामाजिक कार्यकर्ता सरला देवी की पुत्री थीं। वे सेंट जॉन डोसेसन गर्ल्स हायर सेकण्डरी स्कूल की छात्रा रहीं। बीना दास कोलकाता में महिलाओं के संचालित अर्ध-क्रांतिकारी संगठन छात्री संघ की सदस्या थीं। इसके लिए उन्हें नौ वर्षों के लिए सख्त कारावास की सजा दी गई।

❋ शून्य की खोज - गणित में शून्य की अवधारणा का आविष्कार क्रांतिकारी था। शून्य कुछ भी नहीं या कुछ नहीं होने की अवधारणा का प्रतीक है। यह एक आम व्यक्ति को गणित में सक्षम होने की क्षमता पैदा करता है। इससे पहले, गणितज्ञों को सरल अंकगणितीय गणना करने के लिए संघर्ष करना पड़ता था। आजकल शून्य का प्रयोग एक सांख्यिकीय प्रतीक और एक अवधारणा दोनों के रूप में जटिल समीकरणों को सुलझाने में तथा गणना करने में किया जाता है।

इसके साथ ही शून्य कंप्यूटर का मूल आधार भी है। भारत में शून्य पूरी तरह से पांचवीं शताब्दी के दौरान विकसित हुआ था या फिर यूं कहें कि पांचवीं शताब्दी में ही पहली बार भारत में शून्य की खोज हुई थी। वास्तव में भारतीय उपमहाद्वीप में गणित में शून्य का स्थान बहुत महत्वपूर्ण है। तीसरी या चौथी शताब्दी की बख्शाली पाण्डुलिपि में पहली बार शून्य दिखाई दिया था। ऐसा कहा जाता है कि १८८१ में एक किसान ने पेशावर, जो कि अब पाकिस्तान में है, के पास बख्शाली गांव में इस दस्तावेज से जुड़े पाठ को खोदकर निकाला था। यह काफी जटिल दस्तावेज है क्योंकि यह सिर्फ दस्तावेज का एक टुकड़ा नहीं है, बल्कि इसमें बहुत से टुकड़े हैं जो कई शताब्दी पहले लिखे गए थे।

❋ अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र दुनिया का सबसे बड़ा और कीमती चीजों में से एक है जो कि १५० बिलियन अमेरिकी डॉलर के बराबर है।

❋ अल्बर्ट आइंस्टाइन के अनुसार हम रात में आकाश के अंदर लाखों तारों को देखते हैं लेकिन वह तारे जहां हम देखते हैं उस जगह पर मौजूद नहीं होते हैं बल्कि और जगह पर मौजूद होते हैं। हमें तो उनके द्वारा छोड़ा गया कई लाख साल पहले का प्रकाश दिखाई देता है।

❋ एंड्रोमेडा आकाशगंगा नंगी आंखों से देखी जानेवाली सबसे दूर स्थित आकाशगंगा है। यह पृथ्वी से लगभग २३ लाख ९००० प्रकाशवर्ष दूर स्थित है। इसके अंदर ३०० खरब से भी ज्यादा तारे हैं। इसका व्यास एक लाख ८० हजार प्रकाश वर्ष है।

❋ शरीर में अंगों की संख्या ७९ - हमारा शरीर एक जटिल संरचना है जिसकी सबसे छोटी इकाई कोशिका है। शरीर में विभिन्न कोशिकाएं मिलकर ऊतकों का निर्माण करती हैं और कई ऊतकों से मिलकर शरीर के अंग बनते हैं। कुल अंगों की संख्या ७८ है, जिसमें आकार और वजन के हिसाब से सबसे बड़ा अंग त्वचा है और हमारे शरीर का सबसे प्रमुख अंग है दिमाग जिससे शरीर के सभी अंग संचालित होते हैं। अब हमारे शरीर में ७८ नहीं बल्कि ७९ अंग हैं। हमारे शरीर में इस नए अंग की खोज आयरलैंड स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ लिमरिक के वैज्ञानिकों ने की। यह नया अंग हमारे पाचन तंत्र का एक हिस्सा है। शरीर के इस नए खोजे अंग को मेसेन्टरी यानि आंत्रसंयोजी नाम दिया गया है। वैज्ञानिकों के मुताबिक यह नया अंग पेट को आंत से जोड़ता है। मेसेन्टरी एक एकल संरचना है जबकि पहले माना जाता था कि यह कई अलग-अलग हिस्सों से मिलकर बना है। मानव हृदय शंकु के आकार का- मानव हृदय शंकु के आकार का, खोखला माँसपेशीय अंग है जो फेफड़ों के बीच का स्थान में स्थित होता है। यह १२ सेमी लंबा, ८ सेमी चौड़ा और ६ सेमी मोटा होता है। इसका आकार व्यक्ति की अपनी बंद मुट्ठी जितना ही होता है। यह मनुष्य के बायें स्तन से थोड़ा सा नीचे, पसलियों की हड्डी के बीच अवस्थित रहता है। हृदय चार भागों में बंटा होता है बायाँ अलिंद व बायाँ निलय और दायाँ अलिंद व दायाँ निलय।

✻ २४ साल की उम्र से ही आपका दिमाग धीमा होने लगता है लेकिन उम्र के अनुसार आपका दिमाग परिपक्व हो जाता है और नयी-नयी तकनीकों और योग्यताओं को हासिल कर लेता है।

✻ १९८२ में भारतीय सेना द्वारा लद्दाख घाटी में शुरू और द्रास नदी के बीच निर्मित बेली ब्रिज विश्व में सर्वाधिक ऊंचाई पर बना पुल है।

✻ बीजगणित, त्रिकोणमिति और कलन जैसी गणित की अलग-अलग शाखाओं का जन्म भारत में हुआ था।

✻ शल्य चिकित्सा का प्रारंभ २६०० वर्ष पूर्व भारत में हुआ था। अनेक प्राचीन ग्रंथों में गुरु सुश्रुत और उनकी टीम द्वारा आंखों को मोतियाबिंद से मुक्त करने, प्रसव कराने, हड्डियाँ जोड़ने, पथरी निकालने, अंगों को सुंदर बनाने और मस्तिष्क की चिकित्सा में शल्य क्रिया करने के उल्लेख मिलते हैं।

✻ आपके दिमाग में ७३% पानी होता है। २% पानी की कमी भी आपके ध्यान को विचलित कर सकती है, इसीलिये दिमाग में पानी का सही स्तर बनाये रखना बहुत जरूरी है।

✻ हीरा- १७०० के दशक के बाद से भारत विश्व का प्रमुख हीरा उत्पादक देश नहीं है, इसके बावजूद भारत में हीरे का खनन जारी है। २०१३ में, भारत की बड़ी औद्योगिक खदानों और कई छोटी खदानों को मिलाकर केवल ३७५१५ कैरेट हीरे खनन किए गए थे जो उस वर्ष पूरे विश्व के उत्पादन १३२.९ मिलियन कैरेट के एक प्रतिशत के दसवें हिस्से से भी कम था।

बहुत से लोग कहते हैं कि विश्व के पहले हीरे की खोज आज से ४००० साल पहले भारत के गोलकोंडा क्षेत्र (आधुनिक हैदराबाद) में नदी के किनारे की चमकदार रेत में हुई थी। पश्चिमी भारत के औद्योगिक शहर सूरत में दुनिया के ९२% हीरों को काटने और पॉलिश करने का काम किया जाता है और इस काम के कारण दुनिया में करीब ५००००० लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया गया है। अमेरिका के जेमोलॉजिकल इंस्टीट्यूट के शोध के मुताबिक बेहद गहराई से निकलनेवाले हीरे रासायनिक रूप से शुद्ध होते हैं और ये अद्भुत रूप से पारदर्शी होते हैं। प्राकृतिक हीरां और फैक्ट्री में बनाए गए हीरों के बीच फर्क बताना बहुत ही मुश्किल है। केवल एक खास उपकरण से असली हीरे की पहचान होती है।

✻ अंतरिक्ष की गंध किसी गर्म धातु या किसी जले हुए मांस की तरह है। वैसे तो अंतरिक्ष के अंदर किसी तरह का कोई भी वातावरण मौजूद नहीं है लेकिन फिर भी एस्ट्रोनॉट्स ने इस तरह की गंध को महसूस किया है और उनका मानना है कि यह किसी गरम धातु के जलने या किसी मांस के जलने पर जो गंध उत्पन्न होती है उस तरह की गंध है।

✻ सूर्य द्वारा छोड़े गए ८०० अरब से ज्यादा न्यूट्रॉन आपके शरीर में से गुजर गये होंगे।

✻ अगर आपको १ किलो शहद चाहिए तो इसके लिए मधुमक्खियों को लगभग ३५-४० लाख बार फूलों से रस को लेकर इकट्ठा करना पड़ेगा।

✻ बर्फ से बनाया तीन मंजिला ऊंचा डायनासोर - इस स्टैच्यू को पृथ्वी से विलुप्त हो चुके डायनासोर का आकार दिया गया। इसे बनाने में २० दिन का समय लगा था, जिसमें १२० लोगों ने सहयोग किया।

विश्व में सबसे बड़ा बर्फ का स्टैच्यू बनाने का रिकॉर्ड चीन में बनाया गया था। बर्फ की क्यूब से बनाया गया यह स्टैच्यू करीब १५ मीटर ऊंची यानी ५३ फीट का था। इस रिकॉर्ड को बनाने में ८५० क्यूब मीटर बर्फ का इस्तेमाल किया गया।

इसके अलावा एक और रिकॉर्ड बनाया गया। वो था स्नोबॉल फेंकने का।

ऐसा ही एक और रिकॉर्ड बनाया गया, जिसमें एक साथ पांच हजार लोगों ने स्नोबॉल प्रतियोगिता में भाग लिया। इस प्रतियोगिता में चीन के स्कूली बच्चों और युवाओं ने भाग लिया। स्नोबॉल फेंकने की इस प्रतियोगिता में सबसे अधिक लोगों के शामिल होने का रिकॉर्ड था।

* ऐसा माना जाता है कि सत्तर हजार ईसा पूर्व आग का आविष्कार हुआ था।

* कलम के उद्‌भव से विकास की अहम्‌ जानकारी

फ़ब्बारे की कार्यशैली पर आधारित होने के कारण इसे फाउन्टेन पेन का नाम दिया गया। आधुनिक पेन का यह प्रारंभिक स्वरूप था, लेकिन इसमें बार-बार स्याही टपकने और स्याही जमने की समस्या बनी रही। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में इंग्लैंड में स्टील के पेनों का निर्माण शुरू हुआ। लेकिन यह पेन भी स्याही टपकने और जमने की समस्या से मुक्त नहीं थे। निरन्तर खोजों और अनुसंधानों के पश्चात सन १८८४ में लेबिस वाटरमैन ने फाउन्टेन पेन का परिष्कृत नमूना तैयार करके रजिस्टर्ड कराया। वाटरमैन के पेन में पहली बार रबरवाली नली का इस्तेमाल किया गया। इस पेन की निब चौदह कैरेट सोने की बनी हुई थी तथा निब के ऊपरी हिस्से को रेडियम के प्रयोग से सख्त किया गया था। इस पेन ने स्याही टपकने की समस्या से मुक्ति दिलाई।

तब से अब तक पेनों में सुधार की प्रक्रिया सतत रूप से अनवरत चल रही है। इस दरमियान बालपेन जैसा लोकप्रिय आविष्कार हुआ। अब बाजार में बालपेन की अगली पीढ़ी रोलर बालपेन आ चुकी है। इसमें रेशे की नली में पेस्ट जैसी स्याही भरी रहती है। इसकी लिखावट अत्यन्त सुन्दर व स्पष्ट और चमकदार रहती है। इसी तरह इरेजर रोलर बालपेन भी बाजार में उपलब्ध हैं। इनके लिखे हुए को आवश्यकता होने पर कुछ घंटों बाद सरलता से मिटाया जा सकता है। प्लास्टिक, कांच, धातु आदि की सतह पर लिख सकनेवाले मार्कर पेन इस श्रृंखला की अगली कड़ी हैं।

आज विश्व में करीब साढ़े तीन सौ विभिन्न किस्मों और शैलियों के पेन उपलब्ध हैं। कलम की यह विकास यात्रा अनन्त है। समय के साथ-साथ कलम के स्वरूप और उपयोगिता में दिन प्रतिदिन और निरन्तर निखार आता जाएगा।

* छपाई का सफर- मुद्रण कला का प्रयोग पहली बार चीन में शुरू हुआ, जब ६५० ई. में भगवान बुद्ध की मूर्ति छापी गई। इतना ही नहीं, चीन की सहस्र बुद्ध गुफाओं से हीरक सूत्र नामक मिली पुस्तक को ही संसार की पहली मुद्रित पुस्तक माना जाता है। सबसे पहली टाइप मशीन १०४१ ई. में चीन के केपी शैंग ने बनाई थी। चीनी-मिट्टी के बने ये टाइप अच्छी छपाई नहीं देते थे, इसलिए शैंग ने टीन के टाइप बनाए, लेकिन वो भी गीली स्याही पर अच्छा काम नहीं करते थे। फिश्र वांग चांग ने १३१४ ई. में लकड़ी के टाइप बनाए, जो चीनी भाषा के लिए उपयुक्त थे। लेकिन इसके बावजूद वांग चांग को टाइप के आविष्कार का श्रेय नहीं मिला, क्योंकि वांग चांग द्वारा बनाए गए टाइप शब्दों के थे, वर्णों के नहीं। इसीलिए अलग-अलग वर्णों के टाइप बनाने का श्रेय अंतत: जर्मनी के जॉनर गुटनबर्ग को मिला। गुटनबर्ग ने इन टाइपों का आविष्कार १४४० से १४५० के बीच किया और १४५६ ई. में ४२ लाइनों वाली बाइबिल छापी। इस बाइबिल को ही यूरोप की पहली मुद्रित पुस्तक माना जाता है। बाद में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप मुद्रण कला का निरंतर विकास होता चला गया।

भारत का पहला प्रेस- भारत में पहला प्रेस ६ दिसंबर १५५६ को आया। इसके बारे में कहा जाता है कि यह प्रेस पुर्तगाल से ओबीसीनिया यानी वर्तमान इथोपिया के लिए भेजा गया था, किंतु उन दिनों स्वेज नहर नहीं बनी थी। इसलिए भारत होकर ही ओबीसीनिया जाना पड़ता था। लेकिन किन्हीं कारणों से यह प्रेस ओबीसीनिया न जाकर गोवा में ही रह गया और सन १५५७ में यहीं सेंट जेवियर ने दौक्त्रीना क्रिस्ताओ नामक पुस्तक छपवाई। भारत में मुद्रण कला का व्यापक विस्तार बंगाल में हुआ। सन १७७८ में हुगली में बांग्ला भाषा का व्याकरण छपा।

भारतीय भाषाओं के टाइप बने- भारतीय भाषाओं में सबसे पहले तमिल भाषा के टाइप बनाए गए। नागरी लिपि के टाइप सबसे पहले यूरोप में बने। अस्थानासी किंचरी कृत चाइना इलस्टरेटा १६७५ में प्रकाशित पहली पुस्तक है, जिसमें नागरी लिपि छपी। वर्ष १७७१ में एक पुस्तक रोम में प्रकाशित हुई और इसे ही खड़ी बोली की प्रथम वर्णमाला पुस्तक माना जाता है। भारत में बांग्ला तथा नागरी टाइप के जनक दो व्यक्ति थे, चार्ल्स विल्किंसन व पंचानन कर्मकार। विल्किंसन वो व्यक्ति थे, जिन्होंने १७७८ में पहली बार बांग्ला भाषा का व्याकरण छापा। उसके बाद १७७९ में देवनागरी लिपि में पहली पुस्तक छपी हिन्दुस्तानी भाषा का व्याकरण, इसे गिलक्राइस्ट ने छपवाया था।

❊ प्रिंटिंग प्रेस के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी - प्राचीन काल में जब मनुष्य पत्थरों पर चित्र बनाता था तथा जबसे उसने पेड़ों के पत्तों व छालों पर लिखना प्रारम्भ किया तभी से वह प्रिंटिंग प्रेस की अविष्कार की उधेड़ बुन में लग गया था। धीरे-धीरे विकास हुआ और आखिरकार उसने प्रिंटिंग प्रेस लकड़ी से बनाकर तैयार कर दिया। इस प्रकार छपाई का प्रारम्भ सबसे पहले चीन में हुआ, जहां ८६८ ईस्वी में सबसे पहली पुस्तक छपकर तैयार हुई।

छपाई के लिए चीन में अभी तक लकड़ी को खोदकर अक्षर बनाए जाते रहे, तत्पश्चात धीरे-धीरे लकड़ी का स्थान धातु ने ले लिया और अक्षरों को धातु में खोदकर उपयोग किया जाने लगा। फिर मनुष्य ने सोचा, क्यों न धातु को अक्षरों में ही ढाल दिया जाए। यह विचार आते ही उसने सुविधा-पूर्वक़ ढलने योग्य धातु को खोज निकाला और वह धातु थी सीसा।

१४०० ईस्वी में जर्मनी के जॉन गटनबर्ग ने सीसे को पिघलाकर एक-एक अक्षर के टाइप ढाले और एक नयी छपाई की परम्परा की नींव डाली। गटनबर्ग ने १४५५ में एक हजार दो सौ चौरासी पृष्ठों की सर्वप्रथम एक बाइबिल छापी, जिसकी छपाई में ३०,००,००० अक्षरों को हाथ से जमाया गया था। धीरे-धीरे प्रिंटिंग प्रेस में सुधार होते रहे और एक दिन प्रिंटिंग प्रेस लकड़ी के स्थान पर लोहे का बना दिया गया। लोहे ने प्रिंटिंग प्रेस में एक नयी शक्ति डाल दी और इस तरह १७९८ में लंदन में इस नयी शक्ति के साथ प्रिंटिंग प्रेस का प्रचलन शुरू हुआ। फ्रांस, अमेरिका, इंग्लैंड, जर्मनी और अन्य देशों में समय-समय पर प्रिंटिंग प्रेस में सुधार होते रहे। १८२२ में प्रिंटिंग प्रेस पानी की भाप का उपयोग किया गया जिसके अंतर्गत प्रिंटिंग प्रेस अमेरिका में भांप द्वारा चलाया गया और इस नये निकाय सहित प्रिंटिंग प्रेस को सिलेंडर प्रेस का नाम दिया गया जहां प्रिंटिंग प्रेस में एक घंटे में एक हजार कागज छापती थी। इसके पश्चात १८६१ में गोलाई से मुड़ी हुई प्लेटों से छपाई की परम्परा प्रारम्भ हुई जिसमें प्रिंटिंग प्रेस को रोटरी प्रेस का नाम मिला।

धातु के अक्षरों को एक-एक कर जोड़ना फिर छापना अर्थात्त कम्पोजिंग से मनुष्य के हाथ थकने लगे और वह इस उबाऊ कार्य से बचने के लिए नयी युक्ति सोचने लगा। हाथ से कम्पोजिंग की बाधा का दूर करने के लिए १८८६ में जर्मनी

के मेगथिलर ने एक मशीन का अविष्कार कर डाला। इस मशीन का नाम लाइनों टाइपिंग मशीन रखा गया।

❋ एक मिनट में १ करोड़ सिगरेट पी ली जाती है। एक मिनट में दुनिया में सात लोग धूम्रपान की वजह से मारे जाते हैं।

❋ दुनिया का सबसे ऊंचा ब्रिज, म्याऊ वीआडक्ट फ्रांस में है, जिसकी ऊंचाई १००० फीट है। वह बीम्स और तारों द्वारा टिका है।

❋ दुबई में स्थित पाम द्वीप अपने आप में अभियांत्रिकी (इंजीनियरिंग) का एक चमत्कार है। ये द्वीप मानव निर्मित हैं और पानी पर तैरते हैं।

❋ विश्व का पहला कंप्यूटर २७ टन का था और एक हॉल जितना विशाल था। आज तो इससे काफी हल्के कंप्यूटर आ गए हैं। जिन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से ले जाया जा सकता है। इंटरनेट तथा वर्ल्ड वाइड वेब दो अलग-अलग चीजें हैं।

❋ पहला वीडियो गेम १९६७ में विकसित किया गया था और उसे ब्राउन बॉक्स कहते थे, क्योंकि वह एक भूरे रंग का डिब्बा ही दिखता था।

❋ वनस्पतियों के कचरे से मीथेन गैस बनाई जाती है जिससे फिर बिजली का उत्पादन किया जाता है।

❋ पाई की कीमत संसार में सबसे पहले छठवीं शताब्दी में भारतीय गणितज्ञ बुधायन द्वारा पता की गई थी।

❋ कमल के फूल को भारत के साथ-साथ वियतनाम के राष्ट्रीय पुष्प होने का गौरव भी प्राप्त है।

❋ भारत के बंगलुरू नगर में २५०० से अधिक सॉफ्टवेयर कंपनियों में २६००० से अधिक कंप्यूटर इंजीनियर काम करते हैं।

❋ भारतीय गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त (५९८-६६८) तत्कालीन गुर्जर प्रदेश के प्रख्यात नगर उज्जैन की अन्तरिक्ष प्रयोगशाला के प्रमुख थे।

❋ ईसा से ८०० वर्ष पूर्व स्थापित तक्षशिला विश्वविद्यालय (आधुनिक पाकिस्तान) में २०५०० से अधिक विद्यार्थी ६० से अधिक विषयों की शिक्षा प्राप्त करते थे।

❋ प्लास्टर ऑफ पेरिस (पेरिस प्लास्टर) जिप्सम से बनता है।

❋ हाइड्रोजन बम अधिक खतरनाक - दूसरे विश्व युद्ध के अंत में अमेरिका ने जापान पर दो परमाणु बम हिरोशिमा और नागासाकी पर गिराए थे जिसकी वजह से २०००००० से भी ज्यादा लोग मारे गए थे और बहुत नुकसान हुआ था। इसी प्रकार से हाइड्रोजन बम भी है जिसका परिक्षण नोर्थ कोरिया ने किया है।

परमाणु बम और हाइड्रोजन बम के बीच मुख्य अंतर विस्फोट प्रक्रिया का है। परमाणु बम को नाभिकीय अभिक्रिया के सम्मिलन से बनाया जा सकता है। इसमें फिशन यानी विखंडन की प्रक्रिया होती है। फिशन में परमाणुओं को हल्के तत्वों में विखंडित करने से ऊर्जा निकलती है। एक हजार किलोग्राम से बड़ा परमाणु बम इतनी ऊर्जा उत्पन्न कर सकता है, जितनी कई अरब किलोग्राम विस्फोटकों से उत्पन्न हो सकती है। परमाणु बम को महाविनाशकारी हथियार कहा जाता है। सबसे शक्तिशाली विस्फोटक ब्लॉकबस्टर का इस्तेमाल दूसरे विश्व युद्ध में किया गया था। इसको बनाने में ११ टन ट्राईनाइट्रीटोलीन का इस्तेमाल हुआ था।

✻ एक बार चार्ली चैपलिन ने चार्ली चैपलिन जैसे दिखते हैं के लिए प्रतियोगिता में प्रवेश किया और वह तीसरे स्थान पर आया।

✻ मेलबोर्न ने अपने कुछ पेड़ को ईमेल पते दिए ताकि वहां के निवासी किसी भी समस्या की रिपोर्ट कर सकें। इसके बजाय पेड़ों को लव लेटर्स प्राप्त हो रहे हैं

✻ अगर आपको अंटार्कटिका में काम करना है तो सबसे पहले आपको अपने दांतों और अपेंडिक्स को निकलवाना पड़ेगा, भले ही वो एकदम स्वस्थ ही हो, क्योंकि यहां के वर्क स्टेशनों पर किसी भी तरह की शल्यचिकित्सा उपलब्ध नहीं है।

✻ फ्रांस में सुपरमार्केट के लिए खाना बर्बाद करना अवैध है। सुपरमार्केट को या तो इसे कंपोस्ट करना चाहिए या बेकार या लगभग समाप्त होनेवाले सामान दान करना चाहिए।

✻ हृदय के धक-धक करने की जो आवाज निरंतर होती रहती है वह इसके चारों वाल्वों के खुलने और बंद होने के कारण होती है। हृदय के यह वाल्व इसके सबसे क्रियाशील भाग हैं जो ३ मास के गर्भस्थ भ्रूण से लेकर मनुष्य के जीवित रहने तक लगातार कार्य करते हैं।

✻ भारत में भले ही बेटी बचाओ अभियान चलाया जा रहा हो मगर रूस में महिलाओं की आबादी पुरुषों से लगभग ९ लाख अधिक हैं।

✻ एक एवोकैडो कभी पेड़ पर नहीं पकता है, इसलिए किसान पेड़ों को भंडारण के रूप में उपयोग कर सकते हैं और सात महीने तक ताजा अवशोषित रख सकते हैं।

✻ उत्तर कोरिया में गरीब लोगों की तस्वीर खींचना सख्त मना है क्योंकि ऐसा माना जाता है कि इससे देश की छवि बिगड़ती है जबकि यहां सबसे ज्यादा गरीबी है।

✻ दुनिया की पहली ऑयल पेंटिंग यूरोप में नहीं बल्कि अफगानिस्तान के बामियान की गुफाओं में बनी थी।

✻ संस्कृत सभी उच्च भाषाओं की जननी मानी जाती है, क्योंकि यह कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर के लिए सबसे सटीक है और इसलिए उपयुक्त भाषा है।

✻ वैज्ञानिक मानते हैं कि मंगल पर करीब साढ़े तीन अरब साल पहले भयंकर बाढ़ आई थी। हालांकि ये कोई नहीं जानता ये पानी कहां से आया था, कितने समय तक रहा और कहां चला गया।

✻ अफजल खान की एक बीवी ने उसे शिवाजी की शरण जाने को कहा तो अफजल खान इतना भड़क गया कि उसने अपनी सारी ६३ बीवियों को मारकर एक कुएं में फिंकवा दिया।

✻ प्रथम ओपेन हार्ट सर्जरी सन १८९३ में संयुक्त राज्य अमेरिका में हुई थी जिसे प्रसिद्ध कार्डियालाजिस्ट डेनियल हेल विलियम्स ने संपन्न किया था।

✻ जापान में बच्चे और अध्यापक एक साथ मिलकर क्लासरूम को साफ करते हैं।

✻ दुबई में ऊंट रेसिंग और संयुक्त अरब अमीरात में बाल शोषण को रोकने के लिए रोबोट जॉकी का इस्तेमाल करते हैं।

✻ प्रथम एशियाई खेल भारत में आयोजित किए गए थे।

✻ साल १९०३ में राइट भाइयों ने ५९ सेकंड तक उड़ान भरी थी। उसके ३८ साल बाद जापान ने पर्ल हार्बर पर हमला

किया और उसके भी २८ साल बाद, हम चंद्रमा पर उतर गए।

✻ साल २०५० के बाद स्पेन दुनिया का सबसे बूढ़ा देश होगा। जहां की ४०% आबादी की उम्र ६० साल से ज्यादा होगी।

✻ सर्दियों में भी पृथ्वी तारों की धूल से होकर गुजरती है। उस समय भी उल्कापिंडों को देखने की संभावना होती है। ये मौका नवंबर और दिसंबर में आता है।

✻ हर तीन में से एक शिशु के शरीर पर जन्म से ही एक निशान होता हैं और लड़कियों में लड़कों की तुलना में दोगुने होते हैं।

✻ जब हम कुछ स्पर्श करते हैं, तो हमारे न्यूरॉन उस संवेदना को एक घंटे में १२४ मील प्रति घंटे की गति से मस्तिष्क तक पहुंचाते हैं।

✻ कोरडोबा में १००० ई में पहले स्ट्रीट लैंप को लगाया गया।

✻ वर्ष १७९२ में विलियम मर्डोक ने गैस लाइटनिंग का प्रयोग किया और इसी साल पहली गैस लाइट भी बनायी।

✻ फ्रेडरिक विंजर ने १८१३ में नेशनल हीट एंड लाइट कंपनी की स्थापना की।

✻ अजूबा अंक है ७ - माना जाता है कि संसार की रचना सात दिनों में ही हुई थी। सात दिनों का एक सप्ताह होता है। आदिकाल से उन ग्रहों की संख्या भी सात ही मानी जाती थी जिनके बारे में विश्वास था कि वे पृथ्वी पर होनेवाली सभी घटनाओं को प्रभावित करते हैं। संगीत के सुर क्रम में भी सात सुर होते हैं। सात महासागर और सात महाद्वीपों से मिलकर ही पृथ्वी बनी है इसलिए सूरज तथा इंद्रधनुष की किरणों में सात रंग होते हैं।

संसार में आश्चर्य भी सात हैं। ग्रीस के बुद्धिमानों की संख्या सात थी और ग्रीक वर्णमाला में भी सात स्वर हैं। यूनानी कथा के अनुसार अपोलो ने आरफियस को जो वीणा दी थी, उसमें भी सात ही तार थे। गुणों की सख्या भी सात बताई गई है। इनमें आशा, विश्वास, आदर्श, दान, धैर्य, निग्रह तथा न्याय शामिल हैं। पाप भी सात हैं- जिनमें अभिमान, लालच, ईर्ष्या, क्रोध, वासना, अति भोजन तथा आलस्य शामिल हैं। सूर्य के रथ में भी सात घोड़े होते हैं। तंत्र-मंत्र दोनों में सात की संख्या का बड़ा महत्व है। यही नहीं, यह अंक विज्ञान की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना गया है। ऐसा विश्वास है कि सातवीं संतान तत्वदर्शी होती है। हिन्दू युवक-युवतियां शादी में अग्नि के सात फेरे लेते हैं तो मुसलमान तीर्थयात्री काबा की सात परिक्रमा करते हैं। ओल्ड टेस्टामेंट में आत्मा के सात उपहार बताए गए हैं- विवेक, उपदेश, प्रज्ञा, शक्ति, ज्ञान, भक्ति तथा ईश्वर का भय। लार्डस प्रेयर में भी सात ही प्रार्थनाएं हैं। सात की संख्या रहस्यमय शक्तियों की प्रतीक है। रोम की एक देवी सात आवक्ष प्रतिमाओं का मुकुट धारण करती थी। प्रभु के आदेशानुसार जब इजरायलियों ने सात की संख्या का मंत्रों द्वारा आवाहन किया, तब वे जेरिको शहर पर विजय पाने में सफल हुए। कहते हैं मंत्रों के प्रभाव से शहर की मुख्य प्राचीर गिर गई और लोग शहर में प्रवेश कर गए। यह भी माना जाता है कि पृथ्वी पर जीवन-मृत्यु, विकास और विनाश आदि घटनाएं चद्रमा चक्र के बढ़ाव-घटाव प्रभावित होती है। चन्द्र चक्र के चार रूपों में से प्रत्येक रूप सात दिनों का होता है। चार सप्ताहों के महीने के विधान के पीछे यही तथ्य जान पड़ता है।

✻ सर्बत की वर्षा- सन १८५७ में कैलिफार्निया के नापा काउंटी में हुई बरसात का लोगों ने भरपूर लाभ उठाया, क्योंकि इस बारिश में ऐसा मीठा पानी बरसा जो शर्बत से कहीं अधिक मीठा था। यहां के निवासियों ने बोतलों-शीशियों में भरकर

इसका भरपूर सेवन किया।

मेंढ़कों-मछलियों की वर्षा- सन् १९७४ में जब फ्रांसीसी सैनिक एक मोर्चे पर आस्ट्रिया के विरुद्ध डटे हुए थे, तब वहां हुई बरसात में उन पर धड़ाधड़ मेंढ़क और मछलियां बरसनी शुरू हो गई। इसी तरह विलीथासा के एक गांव में सन् १९३६ में मेंढ़कों की वर्षा हुई। सन १८५२ में गुजरात के राजकोट में बरसात के साथ मछलियां टपकने से जमीन पर मछलियों की कई इंच मोटी तह जम गयी थी। इसी प्रकार सिंगापुर में एक बार ज्वालामुखी फटने के बाद जोरों से हुई बारिश में इतनी अधिक मछलियां बरसी कि पचास एकड़ धरती मछलियों से पट गयी थी।

क्रास के ओलों की वर्षा- सन १५०९ में बेल्जियम और जर्मनी में ऐसे ओलों की वर्षा हुई जो क्रास पर लटके ईसा मसीह को दर्शा रहे थे। इतना ही नहीं यह अद्भुत ओले लोगों की त्वचा तथा कपड़ों अपने चिन्ह भी छोड़ गए थे।

केकड़ों की बारिश- वर्षा के नये रूप में इंग्लैंड के लैस्टर में २५ मई, १८८१ को केकड़ों तथा घोंघो की बारिश हुई। सन १९५५ में अल्जीरिया के एक नगर में ऐसी बरसात हुई, जिसमें चारों ओर घोंघे बरस रहे थे। इसी तरह ३ जनवरी, १९७४ को स्वीडन के हीमएरे नगर में कीड़े-मकौड़ों की बारिश हुई।

भंवरे भी बरसे- सन १९५८ में इंग्लैंड के पश्चिमी तट पर भारी तादाद में भंवरों की बरसात हुई। इनसे बचाव के लिए लोग तालाबों तक में जा कूदे थे।

अंगारों की बारिश- १३ नवंबर, १८३३ को उत्तरी अमेरिका में अंतरिक्ष से छोटी-छोटी असंख्य उल्काएं बरसी थीं। लगभग दो लाख दहकते अंगारे जैसी उल्कायें तेजी से नभ से धरा पर गिरती दिखाई दीं। लोगों का सौभाग्य समझिए कि ये अंगारे धरती को छूने से पूर्व ही बुझकर ठंडे हो गये थे।

❋ लाल रंग के वाहनों के एक्सीडेंट अन्य किसी भी रंग के वाहनों की तुलना में ज्यादा होते हैं।

❋ आप बोलते समय ७२ किस्म की भिन्न-भिन्न मांसपेशियां उपयोग करते हैं।

❋ बर्फ पानी पर क्यों तैरता है - कोई भी ठोस पदार्थ किसी भी तरल पदार्थ पर क्यों तैरता है, डूबता क्यों नहीं है, परन्तु सभी ठोस पदार्थ नहीं तैरते है जैसे कि पत्थर। बर्फ पानी के ऊपर तैरती है, डूबती क्यों नहीं।

जब कोई भी वस्तु तैरती है, ये निर्भर करता है उसके घनत्व पर। इसके पीछे वैज्ञानिक कारण है और वह है आर्किमिडीज का सिद्धांत।

आर्किमिडीज के सिद्धांत में कहा गया है कि किसी भी वस्तु को पानी पर तैरने के लिए, वस्तु के वजन के बराबर पानी की मात्रा को विस्थापित करना होता है। ठोस वस्तु में तरल पदार्थ की तुलना में अधिक घनत्व होता है। ठोस वस्तु में अणु एक-दूसरे के साथ अधिक निकटतापूर्वक बंधे होते हैं, जिसकी वजह से ये कठोर होते हैं और उनमें वजन भी अधिक होता है।

अक्सर जब कोई भी तरल पदार्थ ठोस पदार्थ में बदलता है तो उसका आयतन घट जाता है और वह भारी हो जाता है। बर्फ पानी पर इसलिए तैरती है क्योंकि बर्फ का घनत्व पानी से कम होता है। आम भाषा में हम यह कह सकते हैं कि बर्फ पानी पर तैरती है क्योंकि यह पानी की तुलना में हल्की होती है या फिर जमने के बाद बर्फ ज्यादा जगह घेरती है, जिस कारण बर्फ का घनत्व पानी के घनत्व से कम हो जाता है। हाइड्रोजन जो कि पॉजिटिवली चार्ज होता है और एक ऑक्सीजन जो कि निगेटिवली चार्ज होता है कि साथ हाइड्रोजन बांड़ के द्वारा जुड़े हुए होते है। पानी ४सी से नीचे ठंडा

होता है और यह एक क्रिस्टल जाली का उत्पादन करता है, जिसे आमतौर पर बर्फ कहा जाता है।

बर्फ तैरती है क्योंकि इसमें ९ प्रतिशत कम घनत्व होता है तरह पानी से। दूसरे शब्दों में, बर्फ पानी से ९ प्रतिशत अधिक जगह लेती है। इसलिए एक लीटर बर्फ का वजन एक लीटर पानी से कम होता है।

* विश्व की सबसे भारी धातु ऑस्मियम है। इसकी २ फुट लंबी, चौड़ी व ऊँची सिल्ली का वजन एक हाथी के बराबर हो जाता है।

* नाभिकीय भट्टियों में प्रयुक्त भारी पानी विश्व का सबसे महँगा पानी है। इसके एक लीटर मूल्य लगभग १३५०० रुपये होता है।

* शरीर पर लगाए जानेवाले सुगंधित पाउडर को टैल्मक पाउडर इसलिए कहते हैं क्योंकि वह टैल्क नामक पत्थर से बनाया जाता है।

* लोग हर साल शार्कों के हमला करने से ज्यादा नारियल सिर पर गिरने से मारे जाते हैं।

* जो लोग रात को काम करते हैं उनका वजन साधारण से ज्यादा होता है।

* आज एक रुपए से लेकर एक हजार रुपए तक के कागज के नोट प्रचलन में हैं। इन्हें लाना-ले जाना आज बहुत सरल है। एक जमाना था केवल धातु के सिक्के ही मुद्रा के रूप में प्रचलित थे और हजारों-लाखों रुपयों की धनराशि को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाना आसान काम नहीं था। तब ये बोझ के रूप में खच्चरों पर लाद कर ले जाए जाते थे।

इंग्लैंड में एक गरीब परिवार का एक बालक था थामस (थरॉमस डी. ला.)। उसके पिता ने थॉमस को एक मुद्रणालय (प्रिंटिंग प्रेस) में काम पर लगा दिया। थॉमस प्रेस और कागज समेटने जैसे काम करता था। कुछ समय बाद वह कम्पोजिंग और छपाई पर भी ध्यान देने लगा। धीरे-धीरे वह कुशल कम्पोजिटर और मशीनमैन बन गया।

कुछ समय बाद प्रेस के मालिक ने उसे नामालूम क्यों प्रेस से निकाल दिया। बेचारा थॉमस परेशान हो गया। घर की कुछ जिम्मेदारियां थीं। घर में भुखमरी का आलम था, सो वह कूड़े के ढेरों से कबाड़ियों को बेची जा सकनेवाली वस्तुएं एकत्र कर बेचने लगा।

एक दिन जब वह अपना यही कर्म कर रहा था तो उस समय के प्रतिष्ठित चित्रकार रिचर्ड से उसकी मुलाकात हो गई। बातों ही बातों में उसने रिचर्ड को बताया, मैं एक कुशल मुद्रक (प्रिंटर) हूं। मैं अपनी एक प्रिंटिग प्रेस लगाना चाहता हूं परंतु मेरे पास पैसा नहीं है। सहृदय रिचर्ड पिघल गए। उन्होंने थॉमस डी.ला. का नाम-पता नोट कर लिया।

कुछ समय बाद रिचर्ड ने थॉमस को बुलाकर उसके समक्ष प्रस्ताव रखा, मैं प्रिंटिंग प्रेस खोलना चाहता हूं। तुम उसमें बिना पैसे दिए हिस्सेदार बनोगे। शर्त इतनी है कि प्रेस को सुव्यवस्थित चलाना तुम्हारी जिम्मेदारी है। थॉमस तैयार हो गया। कुछ दिन बाद थॉमस की देखरेख में प्रेस लगी और चलने लगी।

प्रतिभा के धनी थॉमस ने इतनी बढ़िया प्रिंटिंग की कि उसके काम की सर्वत्र चर्चा होने लगी। उसे बाइबिल सहित अनेक महत्वपूर्ण किताब छापने के ऑर्डर मिले, जिनकी कलात्मक व आकर्षक छपाई ने उसे बहुत प्रसिद्ध कर दिया। उसने ताश के पत्ते छापे तो लोग वाह-वाह कर उठे।

उसकी कीर्ति चारों ओर फैली तो सरकारी प्रेस के प्रभारी ने उसे बुलाकर प्रेस का प्रमुख मुद्रक (चीफ प्रिंटर) नियुक्त कर

दिया। यहां भी उसने अपनी प्रतिभा का कमाल दिखाया। आगे चलकर थॉमस ने सरकार को सुझाव दिया कि मुद्रा के रूप में सिक्कों के स्थान पर कागज के नोट जारी करें तो इन्हें रख-रखाव और लाने-ले जाने में आसानी होंगी। सरकार में उसके सुझाव पर बहस चली और अंतत: उसका सुझाव मान कर नोट को छापने का जिमा थॉमस को दिया गया। थॉमस ने अपनी श्रेष्ठ प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए सन १३६४ में नोट छापे। इस प्रकार ब्रिटेन विश्व का पहला वह देश बना जिसने कागज का नोट जारी किया। सन १३६८ में छपा एक नोट चीन में आज भी सुरक्षित है।

एक सेन (अर्थात इंडोनेशिया के रुपए का सौवां हिस्सा) का नोट इंडोनेशिया में प्रचलन में है। यह विश्व का सबसे कम कीमत का नोट है।

रोमानिया में विश्व का सबसे छोटा नोट (लम्बाई १.४९ इंच एवं चौड़ाई १.०९ इंच) जारी किया गया।

सन १३६८ से १३९९ के मध्य मिड (मिंग) वंश के शासकों ने चीन में विश्व का सबसे बड़ा नोट चलाया-लम्बाई एक फुट एक इंच और चौड़ाई ९ इंच।

भारत में कागज के नोटों की शुरुआत अंग्रेज शासकों ने की।

शुरुआत में माउस को बस नाम से जाना जाता था लेकिन इसे माउस इसलिए कहा गया कि स्टैनफोर्ड रिसर्च इंस्टीट्यूट में विकसित किए गए माउस का आकार बिल्कुल चूहे की तरह था। १९८१ में माउस इस्तेमाल के लिए बाजार में आया, जिसमें बॉल और बटन होते थे। जोरोक्स स्टार ८०१० पर्सनल कंपयूटर के साथ इसे बेचा गया। उस समय इस कंप्यूटर की कीमत थी १६००० डॉलर। माउस की बॉल का अविष्कार बिल इंग्लिश ने १९७० में किया था।

माइक्रोसॉफ्ट ने पहली बार १९८३ में माउस की बिक्री शुरू की। १९९१ में लॉजिटेक ने दुनिया का पहला वायरलेस माउस पेश किया, जिसमें रेडियो फ्रीक्वेंसी ट्रांसमिशन का इस्तेमाल किया गया। २००४ में लॉजिटेक कंपनी ने पहला लेजर माउस बाजार में उतारा था। इस माउस की स्पीड ऑप्टिकल माउस से २० गुना ज्यादा थी। माउस की स्पीड को मिकी यूनिट में गिना जाता है। एक मिकी एक इंच का २०० वां हिस्सा होता है। इसे इंग्लिश, स्पेनिश, इटालियन, जर्मन, फ्रेंच और रूसी सहित अनेक भाषाओं में माउस के नाम से ही जाना जाता है।

❊ बोलियां जानवरों की

हैन्स क्लक- मुर्गियां कुड़कुड़ाती हैं। फ्रॉग्स क्रॉक- मेंढ़क टर्राते हैं। क्रॉज काव- कौवे कांव-कांव करते है। स्नेक हिस्- सांप फुफकारते हैं। एसेज ब्रे- गधे रेंकते हैं। मंकीज चैटर- बंदर चह-चह करते हैं।

❊ शेर की चमड़ी धारीदार होती है, जेबरा की नहीं।

❊ मनुष्य का दायां फेफड़ा बाएं फेफड़े से अधिक हवा खींचता है।

❊ अमेरिका में चक्रवात मई में आते हैं।

❊ बर्थ डे पर क्यों बुझाई जाती हैं मोमबत्तियां?

जन्मदिन पर कैंडल बुझाने का रिवाज जर्मन लोगों के बीच १७४६ से शुरू हुआ, क्योंकि उसी वर्ष जर्मनी के धार्मिक और समाज सुधारक निकोलर जिंजेनडॉर्फ के जन्मदिन पर लोगों ने केक पर कैंडल लगाकर खुशियां मनाई थीं। एक ओर जर्मन मान्यता के अनुसार जर्मनी के लोग किंडरफेस्ट के दौरान कैंडल के साथ जन्मदिन मनाते थे। १७०० के दशक में

किंडरफेस्ट बच्चों का जन्मदिन मनाने का समारोह होता था। उस समय केक के बीच में एक कैंडल लगाई जाती थी जो जीवन की ज्योति का प्रतीक होती थी।

❋ शरीर की पल्स रेट संगीत के अनुसार घटती या बढ़ती रहती है।

❋ बेल्जियम को चॉकलेट के मामले में धरती का स्वर्ग कहा जाता है। यहाँ चॉकलेट की २ हजार से भी ज्यादा दुकानें हैं।

❋ दूध की तरह ही संतरे का रस भी विटामिन डी से भरपूर होता है। विटामिन डी से स्वास्थ्य में जल्दी सुधार कर सकते हैं। इसके लिए वे आपको संतरे के जूस को अपने आहार का हिस्सा बनाना चाहिए।

❋ एक चॉकलेट खाने से वजन बढ़ानेवाले भोजन की इच्छा में कमी होती है, जिससे आपका वजन नियंत्रित रहता है।

❋ नवजात शिशु अपनी माँ के चेहरे को जन्म के कुछ घंटों बाद ही पहचानने लगता है।

❋ शरीर का सबसे बड़ा हिस्सा मानव त्वचा है। ये हर मिनट में ५०००० टिशू बनाती है। शारीरिक त्वचा का वजन लगभग १८.१ किलोग्राम होता है।

❋ हड्डियों का रंग हल्का भूरा होता है, संग्रहालय में सफेद दिखाई देती हैं, क्योंकि उसे गरम पानी और केमिकल से साफ करके रखा जाता है।

❋ मशरूम में भी विटामिन डी प्रचुर मात्रा में होता है, लेकिन यह मशरूम के प्रकाश पर भी निर्भर करता है। शीटेक मशरूम में सफेद मशरूम के तुलना में अधिक विटामिन डी होता है। अगर आप अपने आहार में विटामिन डी को जोड़ना चाहते हैं तो उसमें शीटेक मशरूम को शामिल करें।

❋ जो जन्मजात अंधे, बहरे या गूंगे होते हैं, उनकी आंतरिक शक्ति अधिक मजबूत होती है अर्थात उनमे स्पर्श, सूंघने, सुनने की क्षमता ज्यादा होती है।

❋ बबलगम एक ऐसा च्यूइंगगम है, जिसे खाने के अलावा गुब्बारे की तरह फुलाया भी जा सकता है। यह कई तरह के रंगों और फ्लेवर्स में आता है, जैसे स्ट्रॉबेरी, एप्पल, रैस्पबेरी, वेनीला आदि। बबलगम मुख्यत: लैटेक्स से बनाया जाता है, जो कि रबड़ के पेड़ से प्राप्त होता है। यूएसए में रहनेवाले चैड फेल ने अपने बबलगम से इतना बड़ा (२० इंच के डायामीटर वाला) बबल फफलाया कि उनका नाम गिनीज बुक ऑफ रिकॉर्डस् में दर्ज हो गया। यह रिकॉर्ड २४ अप्रैल २००४ को बनाया गया था।

❋ पानी के बीच पहाड़ी पर बना रेस्तरां- पूर्वी अफ्रीका में ऐसा ही एक रेस्तरां है। जांजीबार पहाड़ी पर बने इस रेस्तरां में आनेवाले टूरिस्ट यहां से खास अनुभव लेकर जाते हैं। इस रेस्तरां के चारों ओर पानी ही पानी है। यहां पर मोटरबोट से पहुंचा जा सकता है। इसका नाम है रॉक रेस्टोरेंट। इसके मालिक निगेल फ्रीमेन के अनुसार, इसे हाल ही में खोला गया है। इसमें एक बार में सिर्फ १५ लोग ही खाना खा सकते हैं। जब पानी का बहाव कम होता है तो टूरिस्ट यहां खड़ होकर समुद्र की लहरों का मजा ले सकते हैं। धीरे-धीरे यह रेस्तरां प्रचलित हो रहा है। लोगों को अब इसके लिए एक सप्ताह तक वेटिंगे में रहना पड़ता है।

❋ बहुउपयोगी तत्व कार्बन- कार्बन ब्रह्मांड में चौथा सबसे अधिक पाया जानेवाला पदार्थ है। यह कई रूपों में मिलता है। पृथ्वी पर यह जीवित प्राणियों में किसी न किसी रूप में पाया जाता है। पृथ्वी के स्थायित्व और स्वास्थ्य के लिए भी यह

कार्बन साइकिल के जरिए योगदान देता है। यह साइकिल बेहद जटिल है और पृथ्वी के अनेक जीवों के बीच संबंध दर्शाता है।

कार्बन के मॉलीक्यूल्स अन्य अनेक तत्वों के साथ आसानी से किया करते हैं, जिससे हजारों रसायनों का निर्माण हुआ है। कार्बन से ही हीरा बनता है जो दुनिया से सबसे ठोस तत्वों में से एक है और इसी से ग्रेफाइट का भी निर्माण होता है, जो सबसे नाजुक तत्वों में से एक है। अत: कार्बन अपने आप में एक बहुआयामी और अनोखा तत्व है और इसके अणु अनेक परिस्थितियों और तत्वों के साथ अलग तरीके से काम करते हैं। इसके अतिरिक्त, कोयला, चूना पत्थर और पेट्रोलियम जैसे पदार्थों में भी जीवाश्म मिलते हैं। लाखों वर्ष पुराने पौधों और जानवरों के जीवाश्म इन तत्वों में जा मिलते हैं। लेकिन कार्बन के जिस खतरनाक रूप से सब वाकिफ हैं, वह है कार्बन मोनोऑक्साइड। वह वाहनों से निकलने वाला धुआं है। इसके विपरीत, अपने प्राकृतिक रूप में कार्बन सामान्यत: क्रियाहीन होता है। हाइड्रोजन जैसे अन्य कुछ तत्वों से मिलने पर यह क्रियाशील होता है। इसी बहुआयामी रूप के कारण औद्योगिक क्षेत्रों और ईंधन के तौर पर कार्बन का इस्तेमाल होता है। पुरातत्वविदों द्वारा इतिहास के साक्ष्यों की प्रामाणिकता जांचने में भी कार्बन का इस्तेमाल किया जाता है।

❋ हाइड्रोजन गैस की खोज कैसे हुई - हाइड्रोजन एक अति ज्वलनशील पदार्थ है जो ब्रह्मांड में भारी मात्रा में पाया जाता है। दरअसल समूचे ब्रह्मांड में ७५ प्रतिशत हाइड्रोजन है। इसके साथ ही यह अनेक तरह के योगिकों में भी मिलता है, विशेषकर वह जो जैविक तत्वों से बने हैं। हाइड्रोजन का अणु क्रमांक एक है और इसे आवर्त सारिणी में अंग्रेजी शब्द एच से इंगित किया जाता है। यह अपने आप में संपूर्ण तत्व भी है, जिसे किसी अन्य तत्व के सहारे की जरूरत नहीं।

हाइड्रोजन का इस्तेमाल औद्योगिक कार्यों में, खासकर पेट्रोलियम उत्पादों की साफ-सफाई के कार्यों में किया जाता है। हाइड्रोजन की खोज का पहला प्रायस १४०० ईसवी के आसपास उस समय किया गया था जब प्रयोगकर्ताओं ने ज्वलनशील गैस बनाने के लिए एसिड और अन्य तत्वों को आपस में मिलाया था। १६७१ में रॉबर्ट बॉयल ने इस क्रिया को विस्तार से समझाया था, लेकिन १७६६ में हेनरी कैवेंडिश ने ही हाइड्रोजन को विधिवत एक तत्व के तौर पर स्थापित किया था।

१७८३ में आंतोन लेवोसियेरने इस नए तत्व को हाइड्रोजन का नाम देने की सलाह रखी। उन्होंने इसे यूनानी भाषा के शब्द हाइड्रोज और जीन्स पर रखने को कहा था, जिनका मतलब क्रमश: पानी और जन्म या निर्माण होता है। लेवोसियर ने पाया कि जब हाइड्रोजन जलती है तो यह अपने बाय-प्रोडक्ट के रूप में पानी का निर्माण करती है। ऐसा वायु पानी के निर्माण तत्वों के कारण होता है जो कि हाइड्रोजन और ऑक्सीजन हैं। इस लिहाज से यह तत्व पानी को जन्म देता है। इसके बाद हाइड्रोजन की एक तत्व के रूप में पहचान बनने के बाद इसे कई प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त करने का प्रयास शुरू हो गया। हाइड्रोजन का इस्तेमाल गुब्बारों में किया जाता है क्योंकि यह बहुत हल्की गैस है, लेकिन इसकी ज्वलनशील प्रकृति के कारण हीलियम को इसकी बजाय अधिक सुरक्षित विकल्प समझा गया है। इसकी क्रियाशील प्रकृति के कारण कई दुर्घटनाएं भी हो चुकी हैं।

❋ प्रत्येक ६० फुट की गहराई पर एक डिग्री (फारेनहाइट) गर्मी बढ़ती जाती है। इसी प्रकार पृथ्वी के भीतर केंद्र में (४००० मील की दूरी पर) तापक्रम ४,००,००० डिग्री हो जाएगा।

❋ ऐस्बेटस एक ऐसा पदार्थ है, जो आग में डालने पर नहीं जलता। आग बुझानेवाले दल के लोग एम्बेस्टस से बने

कपड़े पहनकर बिना झिझक के जलते हुये मकानों में घुस जाते हैं।

* इंसान का दिल एक दिन में एक लाख बार से ज्यादा बार धड़कता है।
* संविधान सभा की पहली बैठक ९ दिसंबर, १९४६ में हुई।
* शुष्क सेल में अमोनियम क्लोराइड होता है।
* विश्व बैंक का मुख्यालय वाशिंगटन में हे।
* भारत में पुर्तगालियों का प्रथम व्यापार केंद्र गोवा था।
* दिवाली पर्व वाले दिन १८८३ में स्वामी दयानंद की मृत्यु हुई थी।
* कादम्बरी बाणभट्ट की रचना है।
* सम्राट अशोक के अधिकांश शिलालेख ब्राह्मी लिपि में लिखे हैं।
* पेंसिल की लीड ग्रेफाइट की बनी होती है।
* वैज्ञानिकों ने बनाई ऐसी धातु, जिसके एक ग्राम की कीमत ९७० करोड़ रुपए

कोई अपने जीवन में बहुत पैसेवाला बनना चाहता है, तो उसे एन्डोहेड्रल फुलेनेरेज का कारोबार शुरू कर लेना चाहिए। यह विश्व में सबसे महंगी धातु है, जिसे ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने तैयार किया है। उनके अनुसार, इसे डिजाइनर कार्बन मटीरियल में बनाया जाता है। हाल ही में पहली बार इस धातु का २०० माइक्रोग्राम वजनी भाग २१ लाख रुपए में बेचा गया है। यानी एक ग्राम हिस्से की कीमत ही ९७० करोड़ रुपए है।

एन्डोहेड्रल फुलेनेरज की पहली खोज १९८५ में की गई थी। उसमें कार्बन का नेनोस्ट्रक्चर होता है। जिसमें ६० कार्बन एटम्स होते हैं। भविष्य में इसका उपयोग पहले से कहीं ज्यादा परफेक्ट डिवाइसेस बनाने में किया जाएगा। यह ऐसे उपकरणों के लिए क्रांतिकारी साबित हो सकता है, जिनके निर्माण में किसी न किसी रूप में कार्बन का उपयोग किया जाता है। इसे खरीदनेवाला कोई सामान्य व्यक्ति नहीं होगा।

* मूल अमेरिकी रेड इंडियन भाषा में कनाडा शब्द का अर्थ है बड़ा गांव।
* फिंगर प्रिंट की तरह लोगों की जीभ के प्रिंट भी अलग होते हैं।
* पुरुष महिलाओं से छोटे शब्दों को पढ़ सकते हैं जबकि महिलाएं पुरुषों से बेहतर सुन सकती हैं।
* गोसामर कोनडोर नामक पैडल शक्ति वाले पहले जहाज का वजन केवल ३२ किलोग्राम था।
* पहला लाइट हाऊस ६६० ईसवी पूर्व बनाया गया था - अधिकतर लाइट हाऊसेज में सायरन लगे होते है जो चेतावनी देते हैं। कुछ लाइट हाऊसेज तो समुद्री जहाजों को दिशा दिखाने के लिए रेडियो डायरेक्शन फाइंडर्स द्वारा सिग्नल भी छोड़ते हैं।

लाइट हाऊस एक ऐसा भवन या कह लें आमतौर पर एक लंबा मीनार होता है जिसे कंक्रीट या पत्थरों से बनाया जाता है। इस पर रात के समय समुद्र में विचरण करनेवाले नाविकों को चेतावनी देने तथा दिशा दिखाने के लिए एक लाइट लगी होती है। अक्सर यह लाइट अत्यधिक चमकदार होती है और इसे कई किलोमीटर की दूरी से देखा जा सकता है। लाइट हाऊस का निर्माण आमतौर पर बंदरगाहों के निकट स्थित द्वीपों या चट्टानों पर किया जाता है। लाइट हाऊस इतने

शक्तिशाली होते हैं कि ये शक्तिशाली समुद्री लहरों तथा तूफानों का सामना कर सकते हैं। ये अपने आधार पर काफी चौड़े तथा शिखर पर काफी संकरे होते हैं।

प्राचीन काल में लाइट हाऊसेज लकड़ी के मीनार होते थे जिनके ऊपर धातु की एक बाल्टी में लकड़ी या कोयला जलाया जाता था। यह बाल्टी मीनार की शिखर पर स्थित होती थी। आधुनिक लाइट हाऊसेज का निर्माण कास्ट आयरन या शक्तिशाली सीमेंट से किया जाता है। इनकी लाइट को लैंसिज द्वारा खड़ा किया जाता है ताकि यह अत्यधिक दूरी से भी दिखाई दे सके।

अधिकतर लाइट हाऊसेज में सायरन लगे होते हैं जो चेतावनी देते हैं। हर लाइट हाऊस का अपना रंग तथा आकार होता है। रात के समय प्रत्येक लाइट हाऊस अपने-अपने पैटर्न पर विशेष रंगीन रोशनी छोड़ता है। नाविक समुद्र में लाइट हाऊस को लाइट लिस्ट्रस नामक एक किताब के माध्यम से देख लेते हैं।

❊ पहला थर्मामीटर इतालवी वैज्ञानिक गैलिलियो ने बनाया

थर्मामीटर एक ऐसा उपकरण है जिसका प्रयोग हमारे शरीर या वातावरण के तापमान को मापने के लिए किया जाता है। पहला थर्मामीटर इतालवी वैज्ञानिक गैलिलियो इतालवी वैज्ञानिक गैलिलियो गौलिली द्वारा निर्मित किया गया था।

थर्मामीटर की मुख्य किस्में - लिक्किड इन ग्लास थर्मामीटर्स- इस प्रकार के थर्मामीटर्स में मर्करी या अल्कोहल को तरल के रूप में प्रयोग किया जाता है। यह थर्मामीटर कांच की एक ट्यूब का बना होता है जिसमें एक संकरा बोर मौजूद होता है। कांच की ट्यूब के तल पर एक छोटा बल्ब रहता है जिसमें तरल मर्करी या अल्कोहल रखे जाते हैं। इसके बाद इसे एक हॉट बाथ में डाला जाता है जिसके परिणामस्वरूप कुछ तरल बाहर निकाल जाता है। थर्मामीटर की रेंज बाथ के तापमान द्वारा निर्धारित की जाती है। अंतत: इसका ऊपरी सिरा सील कर दिया जाता है। जब हमें अपने शरीर का तापमान होता है। तो थर्मामीटर को शरीर के संपर्क में लाया जाता है। थर्मामीटर का तरल फैलता है और तब रुकता है जब बल्ब का तापमान शरीर के तापमान के बराबर हो जाता है तब तापमान को कैपिलरी में मौजूद तरह के उच्चतम बिन्दु से पढ़ लिया जाता है। क्लीनिकल थर्मामीटर्स में मर्करी भी मौजूद होता है।

बाइमैटेलिक स्ट्रिप थर्मामीटर्स- इस तरह के थर्मामीटर में दो विभिन्न धातुओं वाली एक स्ट्रिप शामिल होती है। इन धातुओं में फैलाव के विभिन्न सहायक मौजूद होते हैं। इसका अर्थ यह है कि एक ही तापमान पर विभिन्न धातु असमान रूप से फैलते हैं। सामान्य तौर पर ब्रास तथा इनवार नामक धातुओं का प्रयोग किया जाता है। ब्रास कॉपर तथा जिंक की एक मिश्र धातु है जबकि इनवार आयरन तथा निक्कल की। इन दोनों स्ट्रिप्स को जोड़ा जाता है। जब तापमान परिवर्तित होता है तो दोनों धातुएं विभिन्न दरों पर फैलती तथा सिकुड़ती हैं। इससे स्ट्रिप टेढ़ी हो जाती है। स्ट्रिप को एक प्वाइंटर से जोड़ा जाता है जो तापमान का संकेत देता है।

बाइमैटेलिक स्ट्रिप थर्मामीटर का प्रयोग रैफ्रीजरेटर्स में तापमान को नियंत्रित करने के लिए किया जाता है। इलैक्ट्रिकल थर्मामीटर्स २ किस्म के होते हैं- रैजिसटैंस थर्मामीटर तथा थर्मोकपल थर्मामीटर। गैस थर्मामीटर्स सर्वाधिक विशुद्ध थर्मामीटर हैं। इनकी रेंज भी बहुत विस्तृत हैं। यह २७३ डिग्री सैंटीग्रेड से लेकर लगभग १५०० डिग्री सैंटीग्रेड तक हो सकती है।

❊ ऑटो पायलट का आविष्कार - अमेरिका की एयर फोर्स के सी-५४ स्काईमास्टर नामक हवाई जहाज ने वर्ष १९४७ में अटलांटिक सागर स्वयं ही पार किया था यानी इस जहाज का यह सफर पहली बार एक ऑटो पायलट द्वारा तय किया गया था। ऑटो पायलट एक गाइडरोस्टैब्लाइजिंग सिस्टम में होता है जिसे गाइरोस्कोप्स की एक श्रृंखला से बनाया गया था जो ऑटोमैटिक तरीके से जहाज के उपकरणों को एडजस्ट करती थी। ऑटो पायलट का सर्वप्रथम प्रयोग १९२६ में किया गया था परन्तु १९४७ में यह पहला अवसर था जब इतने बड़े जहाज सी-५४ का प्रयोग इतने अधिक लम्बे सफर के लिए किया गया था। इस जहाज के पंखों का फैलाव ११७ फिर ६ इंच था।

❊ क्वांटम कंप्यूटर करेंगे कमाल - वैज्ञानिकों ने उन्नत श्रेणी के कम्प्यूटर क्वांटम कंप्यूटर्स के निर्माण का पहला ब्लूप्रिंट जारी किया है। इसे पृथ्वी का सर्वाधिक शक्तिशाली कंप्यूटर माना जा रहा है जो उद्योग, विज्ञान, चिकित्सा और वाणिज्य के क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव ला सकता है।

लंदन की यूनिवर्सिटी ऑफ सेंसेक्स और गूगल के वैज्ञानिकों द्वारा तैयार किए गए इस खाके से एक ऐसी शक्तिशाली मशीन के निर्माण के लिए वास्तविक औद्योगिक ब्लूप्रिंट दिखाया गया है जो कि अब तक निर्मित किसी भी कंप्यूटर के मुकाबले अनेकों समस्याओं को कम समय में अधिक सटीकता से हल कर सकता है।

क्वांटम कंप्यूटर्स, अंतरिक्ष के अभी तक अनछुए पहलुओं तक पहुंचने और उनके रहस्यों से पर्दा उठाने में भी सहायता कर सकते हैं। इसके साथ ही यह उन समस्याओं को आसानी से हल कर सकेगा जिन्हें हल करने में साधारण कंप्यूटर को लाखों वर्ष लग सकते हैं। इस प्रारूप में एक नई तकनीक को शामिल किया है जिसमें वास्तविक क्वांटम बिट्स (छोटे टुकड़े) को प्रत्येक कंप्यूटिंग माड्यूल के बीच संचारित किया जाता है। इससे पहले वैज्ञानिकों का प्रस्ताव था कि प्रत्येक कंप्यूटर माड्यूल को फाइबर ऑप्टिक्स के जरिये जोड़ा जाना चाहिए लेकिन नई खोज के अनुसार एक माड्यूल को दूसरे मॉड्यूल से इलेक्ट्रिक क्षेत्रों के जरिये जोड़ा जाए जो कि चार्ज अणुओं को एक माड्यूल से दूसरे तक पहुंचने में मदद करते हैं।

❊ आग- कंपकंपाती ठंड में कहीं दूर भी आग की जलती लौ दिख जाए, तो बड़ी राहत मिलती है। यूरोप की गुफाओं में जहां हजारों साल पहले मानवों का बसेरा था, वहां चारकोल और झुलसी हुई हड्डियां पाई गई हैं। इन साक्ष्यों से यह साबित होता है कि हजारों साल पहले आग की खोज हो चुकी थी। लेकिन कैसे हुई आग जलाने की विधि की खोज? इस बारे में हम केवल अनुमान लगा सकते हैं और इस आधार पर कई तरह के तर्क उभरते हैं। यह भी कहा जाता है कि आग जलाने की विधि की खोज से पहले ही इंसानों को आग का इस्तेमाल कैसे किया जाए, इसकी जानकारी थी।

गुफाओं में बसेरा करनेवाले इंसानों ने पत्थरों के आपस में टकराने के बाद निकलने वाली चिंगारी से आग पैदा की होगी। यह अलग बात है कि आग पैदा करने की इस विधि के स्थायी होने में कई पीढ़ियां यानी कई-कई साल लग गए होंगे। अलास्का में ट्राइबल की एक प्रजाति आग पैदा करने के लिए सल्फर को दो पत्थरों पर रगड़ने के बाद आपस में टकराते हैं। इसके बाद जलते हुए पत्थरों को सूखी घास या अन्य ज्वलनशील पदार्थों में छोड़ दिया जाता है और धू-धू कर आग जलने लगती है। आग जलाने एक विधि है दो छड़ियों को आपस में रगड़ना। यह विधि उत्तरी अमेरिकन इंडियंस में काफी प्रसिद्ध थी।

प्राचीन ग्रीक और रोमन के लोग आग जलाने के लिए एक लेंस का प्रयोग करते थे, जिसे बर्निंग ग्लास कहा जाता था।

लगातार सूर्य की किरणों पर केंद्रित करने के बाद जो हीट या गर्मी निकलती थी, वह सूखी लकड़ियों को जलाने के लिए काफी होती थी। वैसे, लेंस से आग जलाने की इस विधि का प्रयोग महज मनोरंजन के लिए ही सही आज भी होता है।

✻ ऐसी पहली चीज जिस पर सबसे पहले बारकोड का इस्तेमाल किया गया था, वह ब्रिगले का एक च्विंग-गम था। मिस्टर ब्रिगले ने ही पुदीना फ्लेवर भी लाया था।

✻ यदि सोते वक्त आपको बार-बार सपने आते हैं, तो इसका मतलब है कि आपका बौद्धिक स्तर सामान्य से बेहतर है। इसलिए आपको सपने ज्यादा आते हैं।

✻ हाइप्सो मीटर यह द्रवों के क्वथनांक ज्ञात करनेवाला यंत्र है।

✻ हाइग्रास्कोप यह वायुमण्डलीय आर्द्रता में परिवर्तन दिखानेवाला यंत्र है।

✻ हाइड्रोफोन पानी के अंदर तरंगों को संसूचित करनेवाला यंत्र है।

✻ सभी दिमागी कोशिकाएं एक जैसी नहीं होती। दिमाग में न्यूरोन्स के तकरीबन १०००० प्रकार होते हैं। सिर्फ ५ मिनट ही बिना ऑक्सीजन के रहने से आपके दिमाग को भारी क्षति पहुंच सकती है।

✻ जब भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ईसरो) ने किसी अन्य अनुसंधान संगठन के साथ पहला रॉकेट विकसित किया तब भारत का पहला रॉकेट साइकिल पर लाया गया था।

✻ विश्व की सबसे बड़ी डाक व्यवस्था केवल भारत में ही है जो अपनी सेवाएं गांव, शहर और कस्बों तक पहुंचाती है। कश्मीर की डल लेक में हाल ही में एक तैरनेवाला पोस्ट ऑफिस शुरू किया गया है।

✻ भारत अमेरिका के बाद विश्व का दूसरा देश है जहां सबसे ज्यादा अंग्रेजी बोली जाती है। भारत में २९ राज्य हैं जहां हिंदी और अंग्रेजी मानक भाषा के रूप में प्रयोग की जाती है।

✻ दुनिया का सबसे छोटा अंतर्राष्ट्रीय पुल कनाडा और संयुक्त राज्य अमेरिका के बीच में है।

✻ एकता का प्रतीक मठ- बेलूर मठ रामकृष्ण परमहंस मिशन का हेडक्वार्टर है। यह पश्चिम बंगाल में हुगली नदी कि किनारे बेलूर नामक स्थान पर स्थित है। इसकी स्थापना स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु रामकृष्ण परमहंस की याद में की थी। यह मठ रामकृष्ण परमहंस मिशन मूवमेंट का प्रमुख केंद्र है। इस मठ का आर्किटेक्चर हिंदू, मुस्लिम और ईसाई धर्म के प्रतीकों को ध्यान में रखकर बनाया गया है, इसीलिए इस मठ को राष्ट्रीय एकता का प्रतीक माना जाता है।

✻ मुंबई से प्रकाशित गुजराती भाषा का अखबार बम्बई समाचार भारत का सबसे पुराना अखबार है, जिसका प्रकाशन १८२२ से शुरू हुआ।

✻ वयस्क व्यक्ति के शरीर में ४५ लीटर पानी होता है, जो शरीर के भार का ७० प्रतिशत है।

✻ नाइट्रस आक्साइड गैस सूंघने से आदमी हंसने लगता है।

✻ स्कॉटलैंड के एडिनबर्ग क्षेत्र की निवासी एलेन डेविडसन के शरीर में ६०० छेदन (बॉडी पीयरसिंग्स) हैं।

✻ हमारी आंखों में २० लाख से ज्यादा ऑपरेशनल पार्ट होते हैं, जो हर घंटे ३५००० इन्फॉर्मेशन को प्रोसेस करते हैं। दिमाग के बाद यह इंसान का दूसरा सबसे ज्यादा पेचीदा हिस्सा है। इंसानी पलकें एक मिनट में १५ से २० बार झपकती हैं। हमारी आंखों का रेटिना सब कुछ उल्टा देखता है, लेकिन हमारा दिमाग उन उल्टी तस्वीरों को हमारे लिए सीधा कर

देता है, इसलिए हम सीधा देख पाते हैं। आंखों के कॉर्निया में शरीर के दूसरे हिस्सों की तरह खून की आवश्यकता नहीं होती, क्योंकि इसमें ब्लड वेसल्स होने से देखने में परेशानी हो सकती है। कॉर्निया को ऑक्सीजन और न्यूट्रिएंट्स शरीर के दूसरे हिस्सों से मिलते हैं, जिसमें आंसूवाला द्रव्य भी शामिल हैं। आंखों की मांसपेशियां शरीर के दूसरे हिस्सों के मुकाबले ज्यादा मजबूत होती हैं। ये मसल्स इतनी स्ट्रॉंगे यानी मजबूत होती हैं कि लगातार आईबॉल की पोजिशन को एडजस्ट करती रहती हैं, फिर भी थकती नहीं हैं।

✻ ब्रिटेन की सड़कों पर १८८८ में जब पहली बार साइकिलें उतरीं, तब साइकिल सवारों को लगातार घंटी बजानी पड़ती थी, ताकि पैदल चलनेवाले सतर्क रहें।

✻ दिल्ली में बहादुरशाह जफर मार्ग पर स्थित नेहरू भवन में मौजूद यह संग्रहालय ५१८५ वर्गफुट स्थान में बना है। दो हिस्सो में बंटे इस संग्रहालय में १००० फुट की लम्बाई में दीवारों पर लगे कांच के १६० केस हैं जिनमें गुड़ियाएं प्रदर्शित की गई हैं।

एक हिस्से में इंग्लैंड, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंट तथा अन्य यूरोपीय देशों की गुड़ियाएं, जबकि दूसरे में एशियाई देशों, मध्यपूर्व, अफ्रिका तथा भारतीय गुड़ियाएं सजा कर रखी गई हैं।

संग्रहालय की स्थापना के समय यहां १००० गुड़ियाएं थीं जो अब बढ़कर लगभग साढ़े ६ हजार हो चुकी हैं। इनमें ८५ देशों की गुड़ियाएं शामिल है।

संग्रहालय के विशेष आकर्षण में १५० प्रकार की विशिष्ट भारतीय कास्ट्यूम डॉल्स का संग्रह भी शामिल है जिसे इस संग्रहालय से जुड़े डॉल्स वर्कशॉप में तैयार किया गया है।

✻ बहुत विचित्र संसार है आकाशीय उल्कापिंडों का

आकाश में टूटते तारे के बारे में हम सब जानते हैं। कभी-कभार अंधकार में जब हम आकाश की ओर देखते रहते हैं। तो बहुत ही तेज गति से जाते हुए ये दिखाई पड़ते हैं। वायुमंडल में रोजाना लाखों की संख्या में ये प्रवेश करते हैं लेकिन ८ से ५० मील प्रति सेकेंड की रफ्तार से वायुमंडल में घुसने के कारण प्राय: ये धरती पर पहुंचने से पहले ही जलकर भस्म हो जाते हैं। लेकिन जो बड़े पिंड होते हैं, वे धरती पर गर्म सफेद पत्थरों के रूप में गिरते हैं। इन्हें ही उल्का कहते हैं।

यह सौभाग्य ही है कि आज तक किसी की भी मौत उल्कापात से नहीं हुई। १८४७ में तीन बच्चे किसी तरह से उल्का से बचे थे। बोहेमिया के एक घर में ये तीनों बच्चे खेल रहे थे अचानक उस घर पर उल्का गिर पड़ी। लेकिन आश्चर्यजनक रूप से घर तो जलकर खाक हो गया पर ये बच्चे जीवित बच गये। उल्का का धरती पर गिरना कोई नई बात नहीं है। अरिजोना के रेगिस्तान में उल्का गिरने से तीन चौथाई भाग मील के व्यास का एक गड्ढा बन गया था। उसे डेविल्स केनोन क्रेटर कहा जाता है और इसे कई वर्षों तक वहां के कबीले वाले अशुभ मानते रहे। वहां के जंगली इस गड्ढे से इतने भयभीत रहते थे कि उन्होंने हजारों वर्ष पहले गिरे इस उल्का के छोटे-छोटे टुकड़ों को हाथ तक नहीं लगाया था। इस उल्का का व्यास कम से कम १०० से १३० यार्ड तो होगा ही। यदि इतनी विशाल उल्का आबादी वाले इलाके में गिरती तो भयंकर तबाही ला देती। उल्का के जमीनी सतह को छूते ही हल्के भूकंप के झटके महसूस किए गये, जो ३००० मील दूर से स्टेशनों में रिकार्ड किया गया था। यही नहीं, उल्का का धूल-कण वायुमंडल की ऊपरी सतह पर तैरने

लगे, जिससे कई दिनों तक यूरोप में चटकीले सूर्यास्त देखने को मिले थे।

१९४७ में व्वादियोस्तोके शहर से करीब २०० मील दूर, उत्तर में जो उल्का गिरी, वह अपने साथ तेज तूफान लायी थी, इस तूफान में न केवल पेड़ उखड़े बल्कि वे कई मील दूर-तूफान के साथ उड़ते रहे।

❋ खरगोश और तोता दो ऐसे जीव हैं, जो अपनी गर्दन पीछे घुमाए बिना अपने सिर के पीछे का सारा दृश्य साफ-साफ देख सकते हैं। इन दोनों जीवों की आंखें इनकी खोपड़ी के सामने न होकर साइड में होती हैं। इसके अलावा इनकी आँखों की पुतलियां ३६० डिग्री तक घूम सकती है, जिससे ये आगे-पीछे की ओर समान रूप से देख सकते हैं।

❋ छह लाख वाली चॉकलेट- चॉकलेट चीज ही ऐसी है। कोई त्योहार हो या जन्मदिन की पार्टी, आपको चॉकलेट खाने का बहाना चाहिए। दुनिया की सबसे महंगी चॉकलेट की कीमत है ६ लाख १८ हजार ४०० रुपये। दुनिया की सबसे महंगी इस चॉकलेट का नाम है बॉनबॉन और यह पुर्तगाल में मिलती है। इसकी कीमत यूं तो लाखों में है, फिर भी विशेष मांग पर इस चॉकलेट के १००० पीस तैयार किए गए हैं। इस चॉकलेट की जितनी कीमत है, उसमें तो एक कार भी आ सकती है। इस चॉकलेट को स्पेशल तरीके से तैयार किया गया है। इसकी कीमत इसलिए भी ज्यादा है, क्योंकि इस चॉकलेट पर सोने की पॉलिश की गई है। जिस तरह बाजार में ज्वेलरी बेची जाती है, ठीक उसी तरह यह चॉकलेट भी बनाई गई है। इस अनोखी चॉकलेट को बनाने में एक साल का समय लगा है। बॉनबॉन, इक्वेटोरियल ब्लैक वालोन्हा चॉकलेट, सेफ्रॉन फ्लेमेंट्स, पेरीगोर्ड व्हाइट टर्फल ऑयल, मेडागास्कर वनीला, गोल्ड फ्लैक्स आदि कई तत्वों से मिलाकर बनाई गई है। डायमंड शेप के इस चॉकलेट को ग्लोरियस नाम दिया गया है।

❋ इन १२ शख्स ने चंद्रमा की सतह पर अपने कदम रखकर रचा इतिहास

ये इंसान का एक छोटा सा कदम है और मानवता की लंबी छलांग है। चांद पर कदम रखनेवाले दुनिया के पहले इंसान नील आर्मस्ट्रॉग ने ये बात कही थी। २० जुलाई, १९६९ को इस अमेरिकी अंतरिक्ष यात्री ने इतिहास रच दिया था। तब से लेकर अब तक सिर्फ १२ लोग ही चांद पर कदम रखने में सफल रहे हैं।

१) नील आर्मस्ट्रान्ग- चांद पर कदम रखनेवाले पहले व्यक्ति नील आर्मस्ट्रॉग हैं, लेकिन नील अंतरिक्ष यात्री बनने से पहले नौसेना में थे। नौसेना में रहते हुए उन्होंने कोरिया युद्ध में भी हिस्सा लिया था। वो एक प्रोफेसर भी थे। नासा से सेवानिवृत्त होने के बाद वो एक कॉलेज में पढ़ाया करते थे। पांच अगस्त १९३० को अमेरिका के ओहियो में जन्मे नील आर्मस्ट्रॉग का साल २०१२ में ८२ साल की उम्र में निधन हो गया था।

२) बज एल्ड्रिन- बज एल्ड्रिन चांद पर कदम रखनेवाले दूसरे व्यक्ति है। वह भी नील आर्मस्ट्रॉग के साथ अपोलो ११ मिशन पर गए थे। २० जनवरी, १९३० को जन्मे बज एल्ड्रिन एयर फोर्स के एक पायलट भी थे। फिलहाल वह फ्लोरिडा में रहते हैं।

३) पेटे कॉनराड- चांद पर कदम रखनेवाले दुनिया के तीसरे इंसान पेटे कॉनराड हैं। वह अपोलो १२ मिशन का हिस्सा थे, जो नवंबर १९६९ में चंद्रमा पर गया था। साल १९९९ में ६९ वर्ष की आयु में मोटरसाइकिल दुर्घटना में उनकी मौत हो गई।

४) एलन बीन- अपोलो १२ मिशन के ही सदस्य रहे एलन बीन चंद्रमा पर कदम रखनेवाले दुनिया के चौथे शख्स थे।

वह साल १९८१ में नासा से सेवानिवृत्त हो गए थे। उसके बाद वह एक पेंटर बन गए थे। उन्होंने अपनी पेंटिंग्स में अपने अंतरिक्ष सूट के टुकड़े का इस्तेमाल किया था। १५ मार्च १९३२ को जन्मे एलन का २६ मई, २०१८ को ८६ साल की उम्र में निधन हो गया था।

५) एलन शेपर्ड- चंद्रमा की धरती पर कदम रखनेवाले दुनिया के पांचवें व्यक्ति एलन शेपर्ड थे। वह नासा के अपोलो १४ मिशन का हिस्सा थे। साल १९७१ में उन्होंने चांद पर कदम रखा था। उससे पहले १९६१ में अंतरिक्ष में जानेवाले वो पहले अमेरिकी बने थे। १८ नवंबर, १९२३ को जन्मे शेपर्ड का साल १९९८ में ७४ साल की उम्र में देहांत हो गया था।

६) एडगर मिशेल- अपोलो १४ मिशन का ही हिस्सा रहे एडगर मिशेल चांद पर कदम रखनेवाले दुनिया के छठे इंसान थे। छह फरवरी, १९७१ को उन्होंने यह कारनामा किया था। १७ सितंबर, १९३० को टेक्सास में जन्मे मिशले की ८५ वर्ष की आयु में साल २०१६ में फ्लोरिडा में मृत्यु हो गई थी।

७) डेविड स्कॉट- नासा के अपोलो १५ मिशन के कमांडर रहे डेविउ स्कॉट चंद्रमा पर कदम रखनेवाले दुनिया के सातवें व्यक्ति हैं। स्कॉट ने तीन बार अंतरिक्ष की यात्रा की है। वह किसी भी अपोलो मिशन के एकमात्र जीवित कमांडर हैं जो चंद्रमा की सतह पर उतरे थे।

८) जेम्स इरविन- चांद पर कदम रखनेवाले आठवें शख्स जेम्स इरविन थे। वह भी अपोलो १५ मिशन के सदस्य थे। साल १९९१ में ६१ साल की उम्र में उनकी मौत हार्ट अटैक से हो गई थी। वह चांद पर जानेवाले अंतरिक्ष यात्रियों में से सबसे पहले मरनेवाले शख्स है।

९) जॉन यंग- जॉन यंग चंद्रमा की धरती पर कदम रखनेवाले नौवें शख्स हैं। उन्होंने यह कारनामा अप्रैल १९७२ में किया था। वह नासा के अपोलो १६५ मिशन के कमांडर थे। जॉन यंग ने करीब ४२ साल तक नासा के लिए काम किया और साल २००४ में सेवानिवृत्त हो गए। पांच जनवरी, २०१८ को ८७ साल की उम्र में उनकी मौत हो गई।

१०) चार्ल्स ड्यूक- चार्ल्स ड्यूक चंद्रमा पर जानेवाले दुनिया के १०वें शख्स हैं। वह भी अपोलो १६ मिशन का हिस्सा थे। साल १९७५ में वो नासा से रिटायर हो गए थे। फिलहाल वह टेक्सास में रहते हैं।

११) यूजीन सेरनन- यूजीन सेरनन चांद पर जानेवाले दुनिया के ११वें व्यक्ति थे। साथ ही वह ऐसे शख्स भी थे, जिन्होंने आखिरी बार चंद्रमा की धरती पर अपने कदमों के निशान छोड़े। वह अपोलो १७ के सदस्य थे। साल २०१७ में ८२ साल की उम्र में टेक्सास में उनकी मौत हो गई।

१२) हैरिसन श्मिट- हैरिसन श्मिट चंद्रमा पर कदम रखनेवाले दुनिया के १२वें व्यक्ति हैं। वह भी अपोलो १७ मिशन का हिस्सा थे। हैरिसन एक भूविज्ञानी हैं। फिलहाल उनकी उम्र ८४ है और वो न्यू मेक्सिको में रहे हैं।

❋ सभी स्तनधारी जीवों को जन्म देते हैं लेकिन स्पाइज ऐन्ट ईटर और प्लेटीपस ऐसे स्तनधारी जीव है जो अंडे देते हैं।

❋ रोंगटे खड़े कर देनेवाले दुनिया के एयरपोर्ट

आमतौर पर एयरपोर्ट की हवाई पट्टी या रनवे की लंबाई १८०० मीटर से लेकर २४०० मीटर तक होती है। लेकिन जिन छह रनवे को क्योरा यूजर्स ने सिलेक्ट किया, वो न केवल लंबाई में छोटे हैं बल्कि खतरनाक लोकेशन में भी हैं।

नेपाल-तेनजिंग-हिलेरी एयरपोर्ट- नेपाल के तेनजिंग-हिलेरी एयरपोर्ट के रनवे को आप रोमांच का दूसरा नाम कह

सकते हैं। हिमालय की चोटियों के बीच बसे शहर लुकला में है ४६० मीटर लंबा रनवे। इसके चलते यहां केवल छोटे विमान और हेलीकाप्टर ही उतर सकते हैं। रनवे के उत्तर में पहाड़ की चोटियां हैं तो दक्षिण में ६०० मीटर गहरी खाई। एक चूक हादसे का सबब बन सकती है। माउंट एवरेस्ट पर चढ़नेवाले लोग इसी एयरपोर्ट पर उतरते हैं। दुनिया के सबसे खतरनाक एयरपोर्टस् में से एक है ये।

स्कॉटलैंड- बारा एयरपोर्ट- इससे एकदम अलग है स्कॉटलैंड का बारा एयरपोर्ट। समुद्र में ज्वार-भाटा आने पर यह एयरपोर्ट पानी में डूब जाता है। यह एयरपोर्ट अपने आप में खास है क्योंकि यह ऐसा रनवे है, जहां उड़ानों का समय समुद्री तूफानों के समय से प्रभावित होता है। यह एयरपोर्ट ट्रेग मोर समुद्री तट पर बना हुआ है। बारा द्वीप पर स्थित ये रनवे त्रिकोणीय आकार बनाता है और यहां लकड़ी के पोल लगाए गए है ताकि विमानों को बालू पर उतारने में मदद मिल सके।

मालदीव- माले एयरपोर्ट- मालदीव के माले इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर उड़ान भरना पायलटों के लिए बेहद चुनौतीपूर्ण होता है। यह दुनिया का इकलौता ऐसा एयरपोर्ट है जो अलकतरा (एसफॉल्ट) से बना हुआ है और समुद्री तट से केवल दो मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यह एयरपोर्ट द्वीप के एक छोर से शुरू होकर दूसरे छोर तक जाता है। पायलट की एक छोटी सी चूक से हवाई जहाज सीधे हिंद महासागर में जा गिरेगा। यह दुनिया के चुनिंदा एयरपोर्ट में शामिल है जो पानी से शुरू होकर पानी पर ही खत्म हो जाता है। हुलहुले द्वीप उस समूह का हिस्सा है जो ९०००० वर्ग किलोमीटर के दायरे में फैला है। इसमें कुल ११९२ द्वीप हैं। हुलहुले द्वीप का पूरा इस्तेमाल केवल एयरपोर्ट के लिए किया गया है। यहां उतरने के बाद पर्यटकों को स्पीडबोट्स की मदद से अपने दूसरे ठिकाने तक पहुंचना होता है।

साबा- इरास्किन एयरपोर्ट- कैरेबियाई द्वीप साबा के यूजानको ई इरासकिन एयरपोर्ट पर लैंड करना कमजोर दिलवालों के लिए नहीं है। इस एयरपोर्ट का रनवे व्यावसायिक उड़ानों के लिए इस्तेमाल किए जा रहे रन-वे में सबसे छोटा है। इस रन-वे की लंबाई करीब ३९६ मीटर है। अमूमन रनवे १८०० मीटर से २४०० मीटर की लंबाई के होते हैं। इसका मतलब ये है कि यहां केवल छोटे विमान जिनकी स्पीड तेजी कम हो सकती हो, वही उतर सकते हैं। ये रन-वे बेहद खूबसूरत है।

❋ चीन के झांगजियाजी के नेशनल पार्क में शीशे का ब्रिज तैयार किया गया है। जमीन से ९८० फीट ऊंचाई पर बना ये ब्रिज पर्यटकों के लिए इस साल जुलाई से खोल दिया जाएगा। ग्लास के तलवाला ये ब्रिज नेशनल पार्क की दो पहाड़ियों के बीच बना है। इसका नाम रखा गया है युआनडुआन, जिसका अर्थ होता है बादलों के उस पार। ग्लास बॉटम वाला ये दुनिया का सबसे ऊंचा और लंबा ब्रिज है। इस पुल की लंबाई १४१० फीट और चौड़ाई १९ फीट है। इस पर एक साथ ८०० लोग खड़े हो सकते हैं।

❋ ब्रिज की डिजाइन इजरायल के आर्किटेक्ट हैम डॉटन ने तैयार की है। पिछले महीने ऐसा ही खतरनाक रास्ता चीन के चेंगकिंग में खुला है।

❋ ये हैं भारत के सबसे अमीर राज्य

महाराष्ट्र- यह भारत का सबसे रईस राज्य हैं और दूसरा सबसे बड़ा शहरी राज्य। यह भारत का दूसरा सबसे बड़ा जनसंख्या और क्षेत्रफल के लिहाज सें तीसरा सबसे बड़ा राज्य है। देश के कुल रेवेन्यू का ४० फीसदी महाराष्ट्र से आता है जबकि १५ फीसदी इंडस्ट्रीयल आउटपुट में महाराष्ट्र का योगदान है। महाराष्ट्र की जीडीपी १३२३७६८ करोड़ रुपए की

है जबकि प्रति व्यक्ति आय ६९६२७ रुपए है।

उत्तर प्रदेश- यह भारत का सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला राज्य है। इस राज्य में छोटे स्तर पर कई इंडस्ट्रीज काम कर रही हैं, जिनसे बड़ी संख्या में सरकार को रेवेन्यू मिलता है। सर्विस सेक्टर का भी बड़ा योगदान है लेकिन सबसे ज्यादा रेवेन्यू टूरिज्म सेक्टर से आता है। यूपी की कुल जीडीपी ८८६४१० करोड़ रुपए है इस राज्य में प्रति व्यक्ति आय २१६७० रुपए है।

आंध्र प्रदेश- यह भारत का चौथा सबसे बड़ा राज्य है इस राज्य को सबसे ज्यादा रेवेन्यू अपने सर्विस सेक्टर से मिलता है मिनरल वेल्थ के मामले में आन्ध्र प्रदेश भारत में दूसरे स्थान पर है। इस राज्य की कुल जीडीपी ८५७३६४ करोड़ रुपए है जबकि प्रति व्यक्ति आय ४७८२४ रुपए।

तमिलनाडु- यह भारत का सबसे ज्यादा साक्षर राज्य है इस राज्य में औद्योगिकीकरण बड़ी तेजी से बढ़ा है। कई बड़ी कार कंपनियों के प्लांट तमिलनाडु में हैं जिसमें निसान, फोर्ड, बीएमडब्ल्यू आदि प्रमुख है तमिलनाडु की कुल जीडीपी ८५०३१९ करोड़ रुपए है और प्रति व्यक्ति आय ५९९४७ रुपए।

उड़ीसा- यह भारत का दूसरा सबसे तेजी से विकास करनेवाला राज्य हैं। यहां कई तरह के उद्योग फल-फूल रहे हैं। उड़ीसा की जीडीपी ७८८४१४ करोड़ रुपए की है जबकि प्रति व्यक्ति आय ३२९४७ रुपए।

❋ बीरबल की मृत्यु- राजा बीरबल अकबर के दरबार के नवरत्नों में से एक था। उसके हंसोड़पन और हाजिरजवाबी के किस्से बच्चे-बच्चे की जबान पर है। मगर कम ही लोगों को पता है कि बीरबल वीर योद्धा भी था। २५ फरवरी १५८६ को वह पश्चिमोत्तर सीमा पर (जो अब पाकिस्तान में है) अफगानों के साथ जूझते हुए मारा गया और उसका शव नहीं ढूंढा जा सका। कुछ इतिहासकार ऐसा समझते हैं कि मुगल फौजों के सेनापति जईन खां ने जान-बूझकर बीरबल को ऐसी जगह भेजा जहां वह फंस जाए। कारण, वह अकबर के साथ बीरबल की घनिष्ठा से जलता था। बीरबल की मौत की की खबर से अकबर को अपार दु:ख हुआ।

बीरबल का असली नाम पं. महेशदास था। वह जन्म से ब्राह्मण था। अकबर उस पर इस कारण मुग्ध हुआ कि वह संगीत, कविता, युद्धकला और विनोद में एक-सा दक्ष था। अकबर ने उसे बीरबल (मूलत: वीरवर) उपाधि और नगरकोट की जागीर दी। अकबर की सेवा में आने से पहले बीरबल रीवा के दरबार में था। आगरा में वह ३० वर्ष रहा और अकबर से उसकी घनिष्ठता बढ़ती ही चली गई।

❋ संगीतमय ताश का इतिहास - ताश का रिश्ता संगीत के सुरों से भी हो सकता है। लेकिन ऐसा है, प्रख्यात संगीतज्ञ डॉ. जयचंद्र शर्मा ने संगीतमय ताश का आविष्कार १९४२ में अपनी अष्टसूत्री संगीत योजना के तहत किया था, जो संगीत जगत में खासा लोकप्रिय हुआ, लेकिन संगीतज्ञों में खास स्थान बनानेवाली यह ताश अब लुप्तप्राय: है।

संगीतमय ताशों में ५२ पत्तों के बजाय मात्र ३६ पत्ते होते हैं। सभी पत्तों पर संगीत के सुर विविध रूपों में दर्शाए गये होते हैं। इसमें १५ पत्तों में शुद्ध स्वर, १२ पत्तों में कोमल स्वर एवं ३ पत्तों में तीव्र स्वर समाहित होता है। इसके अलावा जोड़ी स्वरों में ६ पत्ते शामिल होते हैं।

यह ताश संगीत सीखनेवालों तथा संगीत जाननेवालों के मनोरंजन तथा अभ्यास के लिए बनायी गयी थी इसके माध्यम

से संगीत के ५०४० अलंकारों की जानकारी, ७२ थाटों का ज्ञान एवं प्रत्येक थाट के ४८४ रागों की उत्पत्ति तथा राग जाति की रोचक बातें बताई जाती हैं।

संगीत के इस वैज्ञानिक ताश को चार व्यक्ति खेल सकते हैं। खेल प्रारंभ करते समय कोई भी एक खिलाड़ी ताशों को फेंटकर चारों खिलाड़ियों में ६-६ पत्ते बांट देता है तथाशेष पत्तों को जमीन पर उलटा रख देता है। पहला खिलाड़ी जमीन पर रखे पत्तों में से ऊपर का पत्ता उठायेगा और अपने पास रखे पत्तों में उसकी उपयोगिता तय करेगा। अगर वह उसके काम का है तो उसे रखकर अपने पास रखे पत्तों में उसकी उपयोगिता तय करेगा। अगर वह उसके काम का है तो उसे रखकर अपने पास से एक अनावश्यक पत्ता जमीन पर डाल देगा। इसी तरह अगले खिलाड़ी अपनी बारी आने पर करेंगे। जब किसी खिलाड़ी के पत्तों में कोई राग बन जाता है तो सभी को दिखाकर वह अलग हो जाता है और उसे विजेता घोषित हो जाता है। इसी तरह बाकी खिलाड़ियों में क्रम चलता है। इसे राग बनाओ खेल कहा जाता है। इस बात का विशेष ख्याल रखा जाता है कि इसमें ६ पत्तों से ही राग बनाया जाये।

✻ डबल रोटी में क्यों होते हैं छेद?

ब्रेड मैदे से तैयार की जाती है। इसे गूंथते समय इसमें थोड़ा-सा खमीर (फफूंद) भी मिलाया जाता है। आटे की गरमी व पानी की नमी के कारण फफूंद तेजी से बढ़ने लगती है। प्रक्रिया में खास किस्म की गैसें बनती हैं, जिससे बुलबुले उठते हैं। इससे मैदे का आयतन बढ़ जाता है। जब इसे पकाने के लिए भट्टी में रखा जाता है, तो ये बुलबुले फूटकर ब्रेड में कई सारे छोटे-छोटे छेद बना देते हैं।

✻ १८५० में जर्मन समाचार एजेंसी रायटर्ज के संस्थापक पॉल जूलियस रायटर ने संदेश लाने-ले जानेवाले कबूतरों के माध्यम से अपनी पहली खबर भेजी थी।

✻ इतिहास में पहला लाइव टेलीविजन प्रसारण बर्लिन में आयोजित १९३६ की ओलम्पिक खेलों के उद्घाटन के समय किया गया था।

✻ बच्चों के कार्यक्रमों में आमतौर पर विज्ञापनों के लिए ब्रेक्स की अनुमति नहीं होती।

✻ हू वांट्स टू बिकम ए मिलियनेयर की पहली कमर्शियल ब्रेक में ३० सैकेंड स्पॉट का खर्च ६० हजार यूरो था।

✻ पुरातत्वविद यह जानने के लिए प्राचीन लोग क्या खाते थे और किन उपयोगी पौधों को बीजते थे, इसके लिए वे शौच वाले खड्डों के अवशेषों की जांच भी करते हैं।

✻ १९९१ में टाइरोल आल्प्स में मिली ओत्जी नामक ममी एक ऐसे व्यक्ति की थी जिसकी ३३०० ईसा पूर्व मौत हुई थी।

✻ पुरातत्वविद प्राचीन घरों में प्रयुक्त लकड़ी के वार्षिक छल्लों (एनुअल रिंग्स) के माध्यम से इस बात का पता लगा सकते हैं कि घर का निर्माण कब हुआ था।

✻ भारतीय संविधान की प्रस्तावना में समाजवादी एवं धर्मनिरपेक्ष शब्द ४२वें संविधान संशोधन के द्वारा शामिल किए गए थे।

✻ शुक्र ग्रह को सुबह का तारा कहा जाता है।

✻ जोग जलप्रपात कर्नाटक राज्य में है।

❋ राष्ट्रीय विकास परिषद के अध्यक्ष उपराष्ट्रपति होते हैं।

❋ अंकोटरवाट का मंदिर भगवान शिव का है।

❋ पैराशूट को मुख्यत: संकट के समय हवाई जहाज से कूदते समय इस्तेमाल में लाया जाता है। लेकिन हवाई जहाज के आविष्कार से काफी समय पूर्व पैराशूट का आविष्कार हो चुका था। यह आविष्कार इस आशय से किया गया था कि ऊंची इमारतों में आग लग जाने की स्थिति में पैराशूट की मदद से कूदकर जान बचायी जा सके। आज पैराशूट की सहायता से पहाड़ी व अन्य दुर्गम स्थानों पर सैनिकों को उतारा जाता है।

चीन का कहना है कि पैराशूट का आविष्कर्ता वही देश है, परंतु पैराशूट का रेखाचित्र इटली के विश्वविद्यालय चित्रकार लियोनार्दो द विंची की डायरी में मिला था। विंची का जन्म १४५२ में और मृत्यु १५१९ में हुई थी। अगली सदी में यानि सन १९१७ में ईटली के फाउस्टे बंराजियों ने अपने हाथ से बनाया हुआ पैराशूट कंधों में बांधकर एक चर्च की छत से सैकड़ों लोगों की सामने छलांग लगा दी थी।

लोगों ने रत्ती भर भी आशा न की थी कि बंराजियो सही सलामत बच जायेगा। मगर उसे सकुशल देखकर लोग हतप्रभ रह गये थे। परंतु यह बंराजियों का दुर्भाग्य था कि उसे पैराशूट आविष्कार का श्रेय नहीं मिला। बल्कि १७८३ में फ्रांस के सबस्तिय लेनोमदि नामक व्यक्ति ने जब अपना बनाया पैराशूट धारण कर ऊंची इमारत से छलांग लगाकर धरती पर सकुशल उतर कर दिखाया तो उसे पैराशूट आविष्कर्ता का नाम मिला।

❋ पैराशूट लोकप्रिय कैस हुआ - फिल्मों में, सैनिक अभ्यासों के प्रदर्शन में या फिर बाढ़ के समय पैराशूट का इस्तेमाल किया जाता है। पैराशूट वह छतरीनुमा चीज है जिससे ऊंचाई से धरातल पर आसानी से उतरा जा सकता है। वायुसेना में पैराशूट अभिन्न अंग बन चुका है। बाढ़ आने पर खाद्य सामग्रियां रसद वगैरह इसकी सहायता से नीचे उतारी जाती हैं। हवाई जहाज में कोई गड़बड़ी आने पर सवारियों को पैराशूट में ही बांध कर नीचे उतारा जाता है। फ्रांस के लैकवर्ड ने एक टोकरी में कुत्ते को बैठाकर पैराशूट में बांध कर ऊंचाई से नीचे गिराया और उनका यह प्रयोग सफल रहा। इस सफलता से अभिभूत हो वह स्वयं गुब्बारे की सहायता से ऊपर जाकर पैराशूट लेकर कूद पड़ा और उसका एक पैर टूट गया।

राबर्ट काकिंग ने कुछ गुणात्मक सुधारों से इसे और बेहतर बना दिया। पर लैकवर्ड का हश्र देखकर कोई भी इस प्रयोग को आजमाने की हिम्मत न कर सका। १९१२ में कैप्टन नामक व्यति आकाश में उड़ते विमान से पैराशूट बांधकर सकुशल नीचे उतर आया।

समय के साथ इसकी उपयोगिता सिद्ध होती गई। प्रथम महायुद्ध में सैनिकों को पैराशूट की मदद से सुरक्षित उतारा गया। पैराशूट नायलान या रेशम के महीन-महीन धागों से तैयार एक मजबूत कपड़े का बना होता है। यह खुलने पर करीब २४ फीट का हो जाता है। तथा बीच में एक छोटा सा छेद बना होता है ताकि जो हवा उसमें भर रही है वह धीरे-धीरे निकल जाए अन्यथा पैराशूट के पलटने या फटने का खतरा बना रहता है।

पैराशूट को एक बेल्ट की मदद से कूदनेवाले की कमर में बांध देते हैं। जब व्यक्ति विमान से कूदकर थोड़ा नीचे आता है तो डोरी को झटका देकर पैराशूट खोला जाता है। तब व्यक्ति आसानी से हवा में तैरता सुरक्षित स्थान पर उतर सकता है।

❋ भारत की सशस्त्र सेनाओं का सर्वोच्च सेनापति भारत का राष्ट्रपति होता हैं। भारतीय थल सेना विश्व की चौथी बड़ी

सेना है। थल सेना पांच कमानों में संगठित है। नौसेना के दो बेड़े हैं- पश्चिमी बेड़ा (मुम्बई) एवं पूर्वी बेड़ा (विशाखापतनम)। भारतीय वायुसेना विश्व की पांचवी बड़ी वायु सेना है। वायु सेना के सात कमांड हैं।

❋ राष्ट्रीय रक्षा अकादमी संस्थान (एन.डी.ए.) खड़कवासला में है।

❋ प्रथम परमवीर चक्र मेजर सोमनाथ शर्मा को (मरणोपरांत) प्रदान किया गया था।

❋ इस्त्राइल एकमात्र ऐसा देश है जहां महिलाओं के लिए सैन्य सेवा अनिवार्य है।

❋ थल सेना दिवस १५ जनवरी, वायु सेना दिवस- ८ अक्टूबर, जल सेना दिवस- ४ दिसम्बर।

❋ भारतीय सेना के प्रथम भारतीय कमांडर इन-चीफ जनरल के.एम.करिअप्पा थे।

❋ विक्टोरिया क्रॉस पाने वाले पहले भारतीय अफसर इंजीनियर कोर के सेकेंड लेफ्टीनेंट परमिन्दर सिंह भगत थे।

❋ ताजमहल बनानेवाला मुख्य शिल्पकार ईसा था, जो ईरान का निवासी था।

❋ आप सबने संयुक्त राष्ट्र संघ का नाम सुना होगा। अंतर्राष्ट्रीय शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने का कार्य करनेवाली इस अंतर्राष्ट्रीय संस्था का गठन कब केसे हुआ? द्वितीय विश्व-युद्ध में जापान, जर्मनी, इटली के विरुद्ध मित्र राष्टों ने यह अनुभव किया कि विश्व युद्ध समाप्ति के बाद विश्व शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने के लिए प्रभावशाली अंतर्राष्ट्रीय संस्था की आवश्यकता है। मित्र राष्ट्रों की इसी सोच ने संयुक्त राष्ट्र संघ को जन्म किया। २५ अप्रैल, १९४५ को सैन फ्रांसिस्को में ५० देशों के प्रतिनिधियों ने एक सम्मेलन में संयुक्त राष्ट्र संघ का चार्टर तैयार किया और ६ जून १९४५ को सम्मेलन में भाग लेनेवाले देशों ने संयुक्त राष्ट्र संघ के चार्टर पर हस्ताक्षर किये। २४ अक्टूबर, १९४५ को संयुक्त राष्ट्र संघ का गठन हुआ। इसकी प्रथम बैठक १० जनवरी, १९४६ को लंदन में हुई।

❋ कोरिया के लोग एक दिन में लगभग ३०००० सांप खाते हैं।

❋ मलाया के पुर्तगाली के द्वीप की संभ्रांत महिलाएं अपने कानों में खांचे काटकर अपना सामाजिक स्तर प्रदर्शित करती हैं।

❋ मि. मैक ग्रेनर नामक कुत्ते के मालिक पिट्सबर्ग निवासी जॉजफ डडी को इस कुत्ते के नाम प्रतिवर्ष २५ दिसंबर के दिन ३०० क्रिसमस कार्ड प्राप्त होते थे।

❋ १८८५ में जन्मे फ्रांस के मेधावी अभिनेता चार्ल्स डलिन ने अपना अभिनय प्रशिक्षण शेरों से भरे एक पिंजरे में कई वर्षों तक प्रतिदिन कविता पाठ करके प्राप्त किया।

❋ झंडे की कहानी - दुनिया का पहला झंडा किसी देश, सेना, प्रांत का नहीं था। झंडे का सर्वप्रथम इस्तेमाल भूत-प्रेत व बुरी आत्माओं से बचने के लिए किया जाता था। उस समय लोग अपने घरों की छतों पर बाँस लगाकर उस पर कपड़ा बाँध देते थे, जिस पर उस क्षेत्र के ओझा द्वारा बताया कोई जादुई निशान या किसी भयानक जानवर का निशान अंकित रहता था। उस वक्त लोगों के मन में विश्वास था कि ऐसा करने से बुरी आत्माएँ और भूत-प्रेत डरकर भाग जाएंगे। कोई भी त्योहार-मेले पर भी लोग ऐसे ही झंडे के नीचे इकट्ठे होते थे।

ईसा से ५ शताब्दी पूर्व चीन में ड्रैगन झंडा था। जब झंडा लहराता तो लगता कि ड्रैगन अपनी जीभ लपलपाकर आगे बढ़ रहा है। ऐसा करने से उनका विश्वास था, दुश्मन डरकर भाग जाएगा। ऐसा धीरे-धीरे हर क्षेत्र, स्थान, प्रांत व देश आदि में होने लगा और वह आकृति उस स्थान का प्रतीक चिन्ह बन गई। इस तरह विभिन्न राष्ट्रों के झंडों का निर्माण

हुआ। युद्ध में सर्वप्रथम सेनापति का झंडा, फिर सेना का एक भाग, फिर राजा का झंडायुक्त रथ, फिर अंत में शेष सेना जाती थी। राजा के झंडे का गिरना राजा की हार मानी जाती थी। अत: राजा के झंडे की हिफाजत जान से बढ़कर की जाती थी। रूस के झंडे पर बना हँसिया और हथौड़ा क्रमश: वहां के किसान और औद्योगिक मजदूर का प्रतीक निशान है। झंडे की अवमानना या अनादर करने पर सजा का प्रावधान है।

❋ पहली सिनेमा स्कोप फिल्म- १९५९ में बनी ब्लैक एंड व्हाइट फिल्म कागज के फूल पहली भारतीय सिनेमा स्कोप फिल्म थी। इसे अभिनेता गुरुदत्त ने बनाया था। पहली भारतीय ३-डी फिल्म मलयालम भाषा की माई डियर कुट्टीच्थन थी, जो १९८४ में बनाई गई थी। इसके बाद सन १९८६ में हिंदी की पहली ३-डी फिल्म शिवा की इंसाफ बनी। भारत की पहली ७० एमएम फिल्म थी अराउंड द वर्ल्ड, जिसमें राज कपूर और राजश्री ने अभिनय किया था। पहली मूक फिल्म १९१३ में दादा साहब फाल्के की फिल्म राजा हरिश्चंद्र पहली भारतीय मूक फिल्म थी।

❋ नोबेल पुरस्कार ७ क्षेत्रों में दिया जाता है - नोबेल पुरस्कार वह उच्चतम सम्मान है जिसके लिए प्रत्येक व्यक्ति प्रयत्न करता है। यह पुरस्कार सात क्षेत्रों में प्रदान किया जाता है। भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, अर्थशास्त्र, शरीर विज्ञान, चिकित्सा, साहित्य तथा शांति। इन पुरस्कारों की शुरुआत स्वीडन के प्रसिद्ध रसायन शास्त्री अल्फ्रेड नोबेल द्वारा की गई थी। नोबेल ने १८६६ में डायनामाइट का आविष्कार किया था। हालांकि उसके इस आविष्कार ने उसे बहुत अमीर बना दिया और डायनामाइट बहुत ही उपयोगी सिद्ध हुआ परंतु कई लोगों द्वारा अल्फ्रेड को एक विध्वंसक प्रवृत्ति वाला इंसान समझा जाने लगा। वह स्वयं भी अपने इस विध्वंसक आविष्कार से प्रसन्न नहीं था। अत: उसने इस उपलब्धि से कमाई दौलत में से नोबेल पुरस्कार शुरू करने की घोषणा की। तभी से विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए नोबेल पुरस्कार दिया जाने लगा।

❋ मनुष्य के शरीर में ९६००० कि.मी. लंबी रक्त नलिकाएं होती हैं। मनुष्य के शरीर में ६५ प्रतिशत जल तथा ६-७ लीटर रक्त होता है। मनुष्य के फेफड़े का आंतरिक क्षेत्रफल ९३ वर्गमीटर होता है जो शरीर के बाह्य क्षेत्रफल का ४० गुना होता है। हृदय की रक्त पंप करने की क्षमता प्रति मिनट ४.५ लीटर होती है। वयस्क पुरुष के मस्तिष्क का वजन लगभग १४०० ग्राम होता है।

❋ आइसक्रीम बनाने के लिए पहले कारखाने की स्थापना १८५१ में मैरीलैंड के बाल्टीमोर में की गई और फिर जब रेफ्रीजरेशन का आविष्कार हुआ, तो आइसक्रीम गर्मियों में भी उपलब्ध होने लगी।

❋ हीरे की चमक का मुख्य कारण परावर्तन है।

❋ ऐग्रोस्टोलॉजी घास की खेती से संबंधित है।

❋ इतिहास का पिता हेरीडोटस को कहते हैं।

❋ स्पेन में रबर की सड़क पाई जाती है।

❋ स्विटजरलैंड में राष्ट्रपति का शासन एक साल का होता है।

❋ सर्वप्रथम कागजी मुद्रा का प्रचलन चीन में हुआ था।

❋ भारत का सबसे बड़ा पशुओं का मेला सोनपुर (बिहार) में लगता है।

✻ विश्व का सबसे बड़ा चिड़ियाघर अफ्रीका में हैं।

✻ क्रांतिकारियों में सबसे पहले फांसी खुदीराम बोस की दी गयी थी।

✻ बटन की कहानी - वर्तमान युग में कपड़े से बने वस्त्रों में बटन का अलग ही महत्व है। आकर्षक और रंग-बिरंगे बटनों से कपड़े की शोभा ही निराली हो जाती है। बटन का प्रयोग १३वीं शताब्दी में शुरू हुआ। इससे पहले लोग अपने वस्त्र किसी अन्य वस्त्र से बांधकर अपना काम चलाया करते थे। सर्वप्रथम सम्पन्न लोग ही सोने-चांदी के बटनों का प्रयोग करते थे।

सन १७०० के अंत में धागे के बने बटन लोकप्रिय थे। कुछ धागों के बटन में शीशे का भी प्रयोग होता था। सन १८४० में रबर के बने बटन का प्रचलन शुरू हुआ, जो ज्यादा लोकप्रिय नहीं हो पाया। १९वीं शताब्दी के प्रथम दशक से ही विद्युत मशीनों द्वारा सस्ते पीतल के बटन बनाए जाने लगे, क्योंकि इन बटनों पर आसानी से डिजाइन बनाए जा सकते थे जिसे बच्चे काफी पसंद करते थे। द्वितीय विश्वयुद्ध के समय ऐसे बटनों को निर्माण किया गया, जो ब्लैक आउट में चमकते थे। फिर भी वे लोकप्रिय नहीं हो पाए।

इसके बाद तो सीप, चमड़ी, लकड़ी, मोटी धातु आदि के बटन तैयार होने लगे। आजकल बटन प्लास्टिक के बनने लगे हैं तथा बहुतायत में प्रयोग किए जाते हैं। इस प्रकार ये बटन मानव जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं।

✻ संथाल विद्रोह का वर्णन आनंद मठ में है।

✻ इब्नबतूता विदेशी यात्री दिल्ली का काजी बना था।

✻ अकबर का पूरा नाम जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर था।

✻ विवेकानंद आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन के आध्यात्मिक पिता है यह कथन सुभाष बोस का है।

✻ अबुल फजल का जन्म नागौर (राजस्थान) में हुआ था।

✻ कश्मीर के हिंदू राज्य का ऐतिहासिक स्रोत कल्हण राजतरंगिणी है।

✻ हंगरी स्टोन्स किताब का लेखक रवीन्द्रनाथ टैगोर है।

✻ गांधीजी द्वारा स्थापित हरिजन सेवा संघ के अध्यक्ष घनश्यामदास बिड़ला थे।

✻ विभाजन करो और भागो यह मुस्लिम लीग का नारा था।

✻ मैं नास्तिक क्यों हूं के लेखक भगतसिंह हैं।

✻ भारतीय राष्ट्रीय आय का प्रथम वैज्ञानिक अध्ययन डॉ. वी.के.आर.वी.राव ने किया था।

✻ बहिष्कृत भारत के संपादक अम्बेंडकर थे।

✻ जय हिंद का नारा सुभाष चन्द्र बोस ने जर्मन भाषा में दिया था।

✻ यदि ईश्वर अस्पृश्यता को मानता है तो मैं ऐसे देवता को नहीं मानता यह वाक्य तिलक ने कहा।

✻ ग्रेमी पुरस्कार संगीत के क्षेत्र से संबंधित है।

✻ मनुष्य के शरीर में २०६ हड्डियां तथा ६५० मांसपेशियां होती हैं। शरीर की सबसे छोटी हड्डी कान की स्टीरप तथा सबसे बड़ी जांघ की हड्डी फीमर होती है। शरीर की सबसे बड़ी ग्रंथि यकृत है। हृदय जितनी बार धड़कता है उतनी ही बार नाड़ी चलती है। हृदय एक मिनट में ६० से ७५ बार धड़कता है। आंख के भीतर प्रकाश के प्रति संवेदनशील अंग का

नाम रेटिना है। शरीर के भीतर रक्त परिभ्रमण में लगभग २३ सेकेंड का समय लगता है। शरीर के सबसे कठोर तत्व दांतों के ऊपर एनेमल है।

❋ कहानी डिक्शनरी की - डिक्शनरी की कहानी बड़ी रोचक है। सर्वप्रथम अंग्रेजी की संपूर्ण डिक्शनरी ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी ७१ साल में तैयार हुई। जिसे बनानेवाला केवल आठवें दर्जे तक पढ़ा हुआ था। वह स्कॉटलैंड के रहवासी दर्जी का बेटा था। जिसका नाम जेम ऑगस्टस हेनरी मुरे था।

मुरे जब केवल डेढ़ वर्ष का था तभी उसे लोकप्रिय २० भाषाओं के ज्ञान के साथ अंग्रेजी में महारत हासिल थी। इसी ज्ञान की वजह से इंग्लैंड के भाषा-शास्त्री फिलोलॉजिकल सोसायटी ने मुरे को ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी को बनाने की काफी कठिन जिम्मेदारी सौंपी। इसकी शुरुआत सन् १८५७ में हुई। जब मुरे का अनुमान था कि लगभग दस सालों में इसका काम पूर्ण हो जाएगा।

किंतु जब उसने डिक्शनरी की एकत्रित सामग्री को देखा तो वह हक्का बक्का रह गया। इन २५ लाख से भी अधिक पर्चियों को सुरक्षित रखने हेतु उसने स्वयं के बगीचे में लोहे का शेड बनवाया, जिसमें मुरे अपने ११ बच्चों समेत दिन-रात काम करता था। कई बार एक-एक छोटे से शब्द के पीछे महीनों गुजर जाते थे। आपको आश्चर्य होगा कि आज हम जिस छोटे से डू शब्द का प्रयोग कर रहे हैं उस पर पूरे छह महीने लग गए। लेकिन सन १९१५ में जब डिक्शनरी केवल अक्षर टी तक ही तैयार हो पाई थी तबही यह महान आविष्कारक मात्र ७८ साल की उम्र में स्वर्ग को चले गए। लेकिन मुरे के जाने के बाद यह काम उनके बच्चों ने पूरा किया और सन १९२८ में पूरी डिक्शनरी प्रकाशित हो गई। इस तरह इस डिक्शनरी को तैयार होने में २९१००० पौंड खर्च हुए। इसमें ४१४८२५ शब्द थे।

हालांकि ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के पहले भी सन १७५५ में सैमुअल जॉनसन की लघु डिक्शनरी छपी थी किंतु उसमें कई कमियां थी जिन कमियों को ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी ने दूर कर दिया।

प्रथम द्विभाषी डिक्शनरी सन १४८० में विलियम्स ने बनाई। विलियम्स ने उक्त डिक्शनरी पर्यटकों को ध्यान में रखकर बनाई थी। फिर डिक्शनरी में धीरे-धीरे सुधार होता गया और आज बाजारों में विभिन्न भाषाओं में तरह-तरह की डिक्शनरियां उपलब्ध हैं।

❋ फिल्म मदर इंडिया में नरगिस के पति की भूमिका राजकुमार ने अदा की थी।

❋ मुख्यमंत्री बननेवाली भारत की पहली अभिनेत्री ज. जयललिता थी।

❋ के.आर. नारायणन भारत के दसवें राष्ट्रपति रहे हैं।

❋ क्रॉसिंग द थ्रेस होल्फ ऑफ होप पुस्तक के लेखक पोप जानपाल हैं।

❋ द जंगल बुक नामक बच्चों की कृति के लेखक जोसेफ रूडयाड् किपलिंग हैं।

❋ पृथ्वी के व्यास की गणना इरेटोथिन्स ने तीसरी शताब्दी में की थी।

❋ अमेरिका के पहले राष्ट्रपति जॉर्ज वॉशिंग्टन - जॉर्ज वॉशिंगटन (१७३२-९९) ने उस सेना की कमान संभाली थी, जिसने इंग्लैंड से अमेरिका को आजादी दिलाई थी। हर साल ४ जुलाई को अमेरिका का स्वतंत्रता दिवस मनाया जाता है।

वॉशिंग्टन के समय का संयुक्त राज्य आज के अमेरिका से काफी भिन्न था। जब वह राष्ट्रपति बने, तब केवल ११ राज्य

थे। उनके राष्ट्रपति काल में पांच और राज्य अमेरिका में शामिल हो गए, परंतु ये सभी राज्य मिसीसिपी नदी के पूर्व में थे और उनकी कुल जनसंख्या ४० लाख से कम थी। अमेरीकी लोग वॉशिंग्टन को बहुत प्यार और पसंद करते थे और उन्हीं के नाम पर उन्होंने अमेरिका की राजधानी का नाम भी वॉशिंग्टन डी.सी. रखा।

❋ जन्मजात नेत्रहीनों के सपनों में दृश्यों के स्थान पर केवल ध्वनियाँ ही होती हैं।

❋ तुतलाना लड़कों में लड़कियों की अपेक्षा ४ से ६ गुना ज्यादा पाया जाता है।

❋ पैंट या पायजामा पहनते समय जिस टांग को व्यक्ति पायंचे में पहले डालता है, उससे जाना जा सकता है कि वह बायें हाथ से काम करता है या दायें हाथ से।

❋ अठारहवीं सदी में दांतों के चिकित्सक ऐसे दांतों की अच्छी कीमत देते थे जिनका उपयोग बत्तीसी बनाने में हो सके। तब सड़कों पर दांतों के लुटेरे घूमा करते थे जो लोगों पर हमला करके जबर्दस्ती उनके दांत उखाड़कर ले जाते थे।

❋ चीनी भाषा में चाय को चा कहा जाता है। उनकी देखा-देखी अंग्रेज भी चाय के प्याले को ए कप ऑफ चा कहने लगे।

❋ विश्व का सबसे बड़ा घंटा मॉस्को में है। इसे द ग्रेट बेल ऑफ मॉस्को कहा जाता है। यह इतना बड़ा है कि इसके भीतर ४० लोग बैठ सकते हैं।

❋ अमेरिका के महत्वपूर्ण तिथियां

१७३२ जॉर्ज वॉशिंग्टन का जन्म।

१७७५ अमेरीका का स्वतंत्र संग्राम शुरु।

१७८३ शान्ति संधि पर हस्ताक्षर।

१७८९ वॉशिंग्टन पहले राष्ट्रपति चुने गए।

१७९९ ६७ वर्ष की उम्र में वॉशिंग्टन का निधन।

१८०९ अब्राहम लिंकन का जन्म।

१८६० लिंकन राष्ट्रपति चुने गए।

१८६१ गृह युद्ध शुरू।

१८६३ गुलामी की समाप्ति की घोषणा।

१८६५ गृह युद्ध समाप्त; लिंकन को गोली मारी गई, ५६ वर्ष की आयु में मौत।

❋ सैक्रीन, चीनी के मुकाबले ५०० गुना से भी अधिक मीठी होती है।

❋ इंग्लैंड का राजा हेनरी बिल्ली को देखकर बेहोश हो जाता था।

❋ जब शरीर के किसी अंग में चोट लगती है तो उसकी सूचना मस्तिष्क तक २०० मील प्रति घंटे की रफ्तार से पहुंचती है।

❋ शरीर की रक्त कोशिकाओं को यदि एक पंक्ति में रखा जाए तो इनकी लंबाई से पृथ्वी को चार बार लपेटा जा सकता है।

❋ आप अपनी कोहनी को जीभ से नहीं छू सकते हैं।

❋ मनुष्य के सर पर औसतन एक लाख बाल होते हैं, वहीं भौ पर औसतन ५०० बाल होते हैं।

❋ चलने के क्रम में मनुष्य की चौपन मांसपेशियां काम करती हैं।

❋ मनुष्य साल में लगभग ४ लाख बार अपनी पलकें झपकाते हैं।

❋ एक औसत आकार के पेड़ से लगभग १,७०,००० पेंसिल बनायी जा सकती हैं।

❋ पृथ्वी के धरातल से १६५ मी. की ऊंचाई पर तापमान एक डिग्री सेंटीग्रेड घट जाता है।

❋ सबसे बड़ा अजायबघर अमेरिकन म्यूजिम ऑफ नेचुरल है।

❋ दुनिया में सबसे बड़ा पुस्तकालय नेशनल लायब्रेरी रूस में है।

❋ सबसे बड़ा चिड़ियाघर एवोशा रिजर्व दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका में है।

❋ रोम के एक प्रसिद्ध वकील ने अपनी वसीयत में लिखा कि जो व्यक्ति उसकी मृत्यु के समय सबसे ज्यादा हँसे, उसे संपत्ति के ट्रस्ट का चेयरमैन नियुक्त किया जाए और जो रोए, उसे कुछ न दिया जाए।

❋ अमरीका के एंडरसन को बिल्लियों से बड़ा प्रेम था। उनके पास १७ बिल्लियाँ एवं ३ बिल्ले थे। जब उनकी मृत्यु १२ दिसंबर १९९० को हुई तो उनकी वसीयत में सारी संपत्ति में से तीनों बिल्लों को ११-११ लाख डॉलर मिले। कुल सम्पत्ति थी १३५ लाख डॉलर। जब वसीयत पढ़ी गयी तो सभी रिश्तेदार मौजूद थे। पुत्र एलिस की तो इस सदमे में मौत ही हो गई कि उसके पिता ने उसके लिए फूटी कौड़ी तक नहीं छोड़ी।

❋ दाढ़ी-मूँछों से घृणा करनेवाले लंदन के एक फर्नीचर व्यापारी ने अपनी वसीयत में सारी सम्पति उन कारीगरों के नाम लिख दी जिनकी दाढ़ी-मूंछे सफाचट हों।

❋ टैक्सास के विल्सन ने अपनी वसीयत के प्रति संदेह दूर करने के लिए उसे अपनी पीठ पर ही गुदवा लिया था।

❋ फ्रांस की मदामा क्लारा ने अपनी वसीयत में अपनी सारी जायदाद उस व्यक्ति के नाम कर दी, जो मंगल ग्रह से आनेवाला पहला आदमी हो। क्या कोई दाबेदार कभी मंगल ग्रह से पृथ्वी पर आएगा?

❋ फिनलैण्ड के फ्रेडरिक रिचर्ड ने अपनी सारी सम्पति शैतान यानी भूत के नाम कर दी। जब काफी अर्से तक किसी भूत ने दावा पेश नहीं किया तो सरकार ने सारी जायदाद अपने कब्जे में कर ली।

❋ फ्रांस के एक सौंदर्य प्रेम ने अपनी सारी संपत्ति उन महिलाओं के नाम लिख दी जिनकी आंखें, नाक, होंठ और बाल सर्वाधिक सुन्दर हों।

❋ स्कॉटलैण्ड के एक उद्योगपति ने अपनी संतानों के वजन के मुताबिक अपनी संपत्ति का बँटवारा किया। अधिक वजन- अधिक संपत्ति, कम वजन- कम संपत्ति। इसमें मोटो की किस्मत खुल गयी और दुबलों का बेड़ा गर्क हो गया।

❋ इटली के विख्यात पशु चिकित्सक बारोमोलियो का भेड़ों से बड़ा लगाव था। वे उन्हें अपने बंगले में बड़े ही ठाठ से रखते थे। उनके पास लगभग १३५ भेड़ें थीं। उन्होंने अपनी कुल संपत्ति का आधा हिस्सा यानी १४ लाख लीरा इन भेड़ों को समर्पित कर दिया था।

❋ थालर डॉलर का बिगड़ा रूप

ऑस्ट्रिया में सन १७४० से १७८० तक मारिया थेरेसा नामक रानी का राज था। अपने शासनकाल में उसने जो सिक्के चलाए, वे इतने लोकप्रिय हुए कि ऑस्ट्रिया के साथ-साथ विश्व के अन्य देशों ने भी उन्हें अपनाया। अरब और कुछ

अफ्रीकी देशों में भी इनका इस्तेमाल बड़े पैमाने पर होता रहा। इनकी बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए इनका निर्माण लगातार होता रहा। सन १७८० में रानी मारिया की मृत्यु के लंबे समय के पश्चात भी यह सिक्के बनते रहे। इन पर रानी मारिया का चित्र और वर्ष १७८० ही छपता रहा।

ऑस्ट्रिया के अतिरिक्त ब्रिटेन में भी इनका उत्पादन २० वीं सदी के मध्य तक होता रहा। शुरुआत में ये जॉकिम्स थाल नामक स्थान की खदानों से बनी चांदी से बनाए जाते थे। इसीलिए इन्हें थालर कहा जाने लगा। डॉलर शब्द थालर का ही बिगड़ा अपभ्रंश स्वरूप है।

❋ मनुष्य शरीर की बनावट- हमारे शरीर की बनावट काफी हद तक कुत्ते और भेड़िए जैसी होती है। लेकिन हमारा आकार इनसे छोटा होता है। हमारा मुंह कुत्ते के समान होता है। हमारे खड़े हुए कान तिकोने दिखाई देते हैं। हमारी सुनने की शक्ति इतनी प्रबल होती है कि हम ४० गज दूर खड़े होकर तुम्हारे हाथ में बंधी घड़ी की टिक-टिक सुन सकते हैं। इसी प्रकार हमारी देखने और सूंघने की शक्ति भी अच्छी होती है। हमारे शरीर पर मोटे फर होते हैं। वैसे हमारी लम्बी पूंछ पर आपको ब्रश जैसे बाल देखने को मिलेंगे। हमारी पूंछ की लम्बाई लगभग ४० इंच होती है, जबकि बाकी शरीर की लम्बाई ६५ से ७२ इंच तक हो सकती है और वजन ५ से ६ किलोग्राम होता है। मादा लोमड़ी का वजन नर से कम होता है।

हमारे पैर भले ही छोटे होते हैं किन्तु हम ४८ किलोमीटर प्रतिघंटा की रफ्तार से दौड़ लेते हैं। हम खरगोश, चूहे आदि का शिकार करते हैं। इनके अलावा हम पक्षी, मछलियां, सांप, ग्रास-होपर और कई बार फल भी खाते हैं। पर एक समझदारी वाली बात है हम अपना बचा हुआ भोजन बाद में खाने के लिए पत्तियों, मिट्टी या बर्फ में छिपा देते हैं, क्योंकि हम एक दिन में बस एक किलोग्राम तक भोजन कर पाते हैं। हमें अकेले ही शिकार करने की आदत होती है। हम बड़े समूह के स्थान पर एक छोटे परिवार के रूप में रहना पसंद करते हैं।

❋ मोस्को? की राजधानी खात है।

❋ अफ्रीका को अंधेरे वाला महाद्वीप कहा जाता है।

❋ भारत में लिग्नाइट कोयले की खानें नेवली तमिलनाडु में हैं।

❋ भारत की फिल्म इंडस्ट्री विश्व की सबसे बड़ी फिल्म इंडस्ट्री है।

❋ भारत विश्व का सबसे बड़ा चाय उत्पादक देश है।

❋ २६९ मीटर की ऊंचाई वाले टाइटेनिक जहाज को अगर सीधा खड़ा किया जाये तो अपने समय की हर इमारत से ऊंचा होता है।

❋ दूरदर्शन किसी एक व्यक्ति का आविष्कार नहीं है बल्कि इसके विकास में अनेक वैज्ञानिक प्रयत्नशील रहे हैं। दूरदर्शन के आविष्कार की शुरुआत १८१७ में जान्स बर्जेलियस द्वारा की गयी थी। तत्पश्चात जी आर करे, दौल नियको आदि ने भी इसके विकास में योगदान दिया। वास्तविक रूप में दूरदर्शन १९४५ में बनकर तैयार हुआ। भारत में टेलीविजन की शुरुआत सितम्बर १९५९ में हुई। इसका प्रयोग करने के लिए दिल्ली में दूरदर्शन केन्द्र की स्थापना की गयी। इसके बाद इसका नाम दूरदर्शन रखा गया। प्रयोग में सफल होने के बाद इसका विस्तार करके अनेक केन्द्रों की स्थापना की गयी तथा इसके माध्यम से समाचार, शिक्षा और मनोरंजन के कार्यक्रमों का प्रसारण प्रारम्भ किया गया। इस

समय देश में लगभग ५०० ट्रांसमीटर काम कर रहे हैं और लगभग ४८ केंद्र कार्यक्रम तैयार करने का काम कर रहे हैं। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और चेन्नई में दूरदर्शन का दूसरा चैनल भी काम कर रहा है। भारत में सबसे ऊंचा दूरदर्शन टॉवर नयी दिल्ली में पीतमपुरा में हैं जो २३५ मीटर ऊंचा है। यह टॉवर ऐतिहासिक कुतुब मीनार से भी तीन गुना ऊंचा है इसका उद्घाटन ७ नवम्बर, १९८८ को किया गया था। इस समय दूरदर्शन पर जो राष्ट्रीय कार्यक्रम प्रसारित हो रहा है इसकी शुरुआत १५ अगस्त, १९८४ से हुई थी। दैनिक प्रात:कालीन समाचारों की शुरुआत १९८७ से तथा दोपहर का प्रसारण २६ जनवरी, १९८९ से शुरू हुआ था। दूरदर्शन पर वाणिज्यिक सेवा जनवरी, १९८६ से शुरु हुई थी। बाद में यह सेवा कई केन्द्रों से चालू कर दी गयी जिससे इसकी राजस्व आय काफी बढ़ गयी।

✻ मुगल कला का बेजोड़ नमूना है अकबर का मकबरा - आगरा के सिकंदरा नामक स्थान में स्थित आकार का मकबरा मुगल कला का बेजोड़ नमूना है। अकबर ने इसका प्लान खुद तैयार किया था और यह जगह भी इसके लिए पसंद की थी। अकबर के बेटे जहांगीर ने इसका निर्माण करवाया था। इसका दक्षिणी द्वार सबसे बड़ा है। यही इसका प्रवेश द्वार है। इस पर ताजमहल की तरह चार संगमरमर की मीनारें हैं। मकबरा चार मंजिला पिरामिड में बना है।

✻ दुनिया का सबसे छोटा कंप्यूटर - जानी-मानी कंपनी आईबीएम ने दुनिया का सबसे छोटा कंप्यूटर प्रस्तुत किया है। नमक के कण से भी छोटा है यह। और १० सेंट से भी कम है एक कंप्यूटर की कीमत। इससे उत्पादों को प्रमाणित करने से लेकर दवा को जांचने जैसे काम किए जा सकते हैं। इसकी क्वालकॉम स्नैपड्रैगन चिप का आकार लगभग एक वर्ग सेंटीमीटर है। यह ९० के दशक में बने सुपर कंप्यूटर से भी ज्यादा ताकतवर है। धोखाधड़ी और खाद्य सुरक्षा सहित कई अन्य मुद्दों से निपटने के लिए उपकरणों में बहुत ही सूक्ष्म कंप्यूटर जैसे क्रिप्टोग्राफिक एंकर लगाए जाएंगे।

✻ इलाहाबाद का किला - अकबर चाहता था कि वह हिंदुओं की पवित्र नगरी प्रयाग के पास, जहां गंगा और यमुना का संगम होता है, एक नया शहर बसाए। उसने यहां एक नया शहर बसाया इलाहाबाद। उसने इसे नाम दिया था इल्लाहाबास यानी अल्लाह की देन। समय के साथ इसका नाम बदलकर इलाहाबाद हो गया। यहा गंगा-यमुना के संगम पर उसने १५८३ में एक किला बनवाया। इस किले का कुछ हिस्सा पानी में है। यह अकबर द्वारा बनवाया गया सबसे बड़ा किला है। कहते हैं, इस किले का उद्घाटन करने अकबर नाव पर सवार होकर यमुना नदी के रास्ते गया था।

✻ भारत में होते हैं सबसे ज्यादा आम

आम को फलों का राजा कहा जाता है और यह फलों का राजा दुनिया में प्रति वर्ष १,५१,८८,००० टन आम पैदा होते हैं। चीन में ४३,५०,००० टन आम पैदा हैं, जबकि तीसरे स्थान पर थाईलैंड है, जहां केवल २६,००,००० टन आम पैदा होते हैं। भारत, पाकिस्तान और फिलीपींस में इसे राष्ट्रीय फल का दर्जा मिला है, जबकि बांग्लादेश का यह राष्ट्रीय वृक्ष है।

✻ शहद अकेला ऐसा खाद्य पदार्थ है, जो तीन हजार साल तक भी खराब नहीं होता।

✻ अपनी आंखे खोलकर तुम कभी नहीं छींक सकते हो।

✻ एक पेंसिल में इतना ग्रेनाइट होता है कि इससे ३५ मील लंबी लाईन खींची जा सकती है और करीब ४५००० शब्द लिखे जा सकते हैं। यही नहीं, पहले पेंसिल के निशान मिटाने के लिए ब्रेड का प्रयोग किया जाता था। १७७० में एडवर्ड नैरने ने ब्रेड की जगह रबर का प्रयोग किया, तब से रबर का प्रयोग होने लगा।

❋ दाएँ हाथ वाले लोग बाएं हाथ वालों से करीब ९ साल ज्यादा जीते हैं।

❋ कोका कोला में अगर रंग ना मिलाया जाये तो यह हरे रंग की होती है।

❋ एक इंसान बिना खाने के १ महीने तक जिन्दा रह सकता है लेकिन बिना पानी के १ हफ्ते भी नहीं रह सकता।

❋ अगर आपके शरीर से १% पानी निकाल दिया जाये तो आपको बहुत तेज प्यास लगने लगेगी और अगर १०% पानी निकाल दिया तो आपकी मृत्यु तक हो सकती है।

❋ श्रीलंका में १८९६ में आसमान से खून की बारिश हुई थी।

❋ रेडियो से आनेवाली आवाज इलेक्ट्रोमैग्नेटिक वेव्हज के जरिये आती है।

❋ इंसान की जाँघ की हड्डी कंक्रीट से भी ज्यादा मजबूत होती है।

❋ आप साँस रोककर खुद को नहीं मार सकते।

❋ पूरे विश्व में चावल की तकरीबन चालीस हजार प्रजातियां मौजूद हैं।

❋ दुनिया की करीब १०% जनसंख्या बायें हाथवाला है।

❋ नाखून और बाल एक ही तत्व केराटिन से बनते हैं।

❋ आगरा की तरह इन जगहों पर भी बना हुआ है ताजमहल

दुनिया भर में प्यार की मिसाल मानी जानेवाली इमारत यानि ताजमहल की खूबसूरती आज भी बरकरार है। ताजमहल की बनावट जैसी कुछ इमारते आगरा के अलावा कुछ शहरों और विदेशों में हैं। जो असली के ताजमहल जितनी खूबसूरत चाहे न हो लेकिन उससे कम भी नहीं है।

औरंगाबाद का ताजमहल- महाराष्ट्र के शहर औरंगाबाद में बीवी का मकबरा नाम से मशहूर इमारत पूरी तरह से ताजमहल की हूबहू नकल है। आकार और प्रकार में यह असली ताजमहल के साथ मेल नहीं खाता। बहुत कम जगह में बनी यह इमारत देखने के लिए भी लोग दूर-दूर से यहां आते हैं। इसे भारत का छोटा ताजमहल भी कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि इस मकबरे को शाहजहां के परपोते यानि औरंगजेब के बेटे आजम शाह ने अपनी मां दिलसार के लिए इस इमारत का निर्माण करवाया था।

बांग्लादेश का ताजमहल- भारत के पड़ोसी देश बांग्लादेश में भी ताजमहल की नकल से एक इमारत बनाई गई। दरअसल इस ताजमहल को बांग्लादेश के फेमस फिल्म डायरेक्टर असनुल्ला ने बनवाया था। १९८६ में असनुल्ला भारत का ताजमहल देखने के लिए आए और उन्होंने अपने देश में भी हूबहू ऐसी इमारत का निर्माण करने का मन बनाया। यह इमारत साल २००८ में बनकर तैयार हुई। इसकी वजह थी कि टूरिस्टों को अपने देश आने के लिए आकर्षित करना।

दुबई का ताजमहल- दुबई में बने ताजमहल को वैडिंग डेस्टिनेशन की तरह इस्तेमाल किया जाता है। दुबई में ताज अरेबिया नाम से बनाई गई यह इमारत बहुत खूबसूरत है। इसे बनाने के लिए अरबों डॉलर का खर्च किया गया। इसकी खूबसूरती के कारण ही यहां के लोग इसे क्राउन ऑफ इरेबिया भी कहते हैं।

चीन का ताजमहल- इमारतें बनाने में चीन किसी से पीछे नहीं है। ताजमहल की तरह यहां पर एक पार्क में छोटी रैप्लिका बनाई गई है। जो ताज की हल्की सी झलक है। यहां पर और भी कई कई ऐतिहासिक इमारतों की रैप्लिका मौजूद है।

ताजमहल ही नहीं, ये इमारतें भी हैं प्यार का प्रतीक

सिर्फ ताजमहल ही नहीं दुनिया में और भी बहुत सी इमारतें हैं जिन्हें प्यार का प्रतीक माना जाता है।

बोल्ट कैसल- कनाडा में बने इस महल को जौर्ज बोल्ट ने अपनी पत्नी लुईस की याद में बनवाया था। जौर्ज बोल्ट अमेरिका का एक अरबपति था जो अपनी पत्नी से बहुत प्यार करता था और उनके लिए बोल्ट ने १००० आईसलैंड पर इस महल का निर्माण करवाया। साल १९०० में इस महल का बनना शुरू हुआ और बोल्ट अपनी पत्नी को उसके जन्मदिन पर तोहफा देना चाहता था लेकिन अपने जन्म दिन से १ महीने पहले ही लुईस की मौत हो गई। आज इस महल को एक टूरिस्ट प्लेस के तौर पर जाना जाता है।

माउसोलस का मकबरा- टर्की देश के इस मकबरे का निर्माण ३७७ में हुआ और इसे किसी पति ने नहीं बल्कि एक महिला ने अपने पति की याद में बनवाया। यह उस समय का सबसे शानदार मकबरा माना जाता था। १२५ फुट ऊंचा यह मकबरा तीन मंजिला है और इस पर शिल्पकाल की कृतियां बनी हुई है। राजा माउसोलस अपनी रानी अर्टमीसिया से बहुत प्यार करता था और उसके बिना जीने के बारे में सोच भी नहीं सकता था लेकिन ३५२ में राजा माउसोलस की अचानक मौत हो गई और उसी की याद में रानी ने इस मकबरे का निर्माण करवाया।

हुमायूं का मकबरा- दिल्ली में बना यह मकबरा ताजमहल से कम नहीं है। इसे मुगल शासक हुमायूं की याद में उनकी पत्नी बेगम बानो ने १५६५ में इस आलीशान मकबरे का निर्माण करवाया। इसी स्मारक से ही दुनिया को शिल्पकला और वास्तुकला के बारे में पता चला। इस मकबरे के निर्माण में करीब १५ लाख रुपए लगे जो आज दिल्ली का मुख्य पर्यटक स्थल है।

हैंगिंग गार्डेंस- पंजाब के अमृतसर में बना हैंगिंग गार्डेंस २५०० साल पुराना है। बेबीलोन के बादशाह ने इसे साल ६०५ में अपनी पत्नी एमिटिस को खुश करने के लिए बनवाया था। शादी से पहले एमिटिस हरे भरे मैदान, ऊंचे पहाड़ और प्रकृति के सौंदर्य में रहती थी और शादी के बाद वह काफी उदास रहने लगी थी।

* इतिहास के गवाह हैं ये मंदिर

दुनियाभर में ऐसे कई मंदिर हैं जो पौराणिक वास्तुकला और संस्कृति के सबूत हैं। इनमें से कुछ हिंदू और बौद्ध मंदिर तो भारत से बाहर दूसरे देशों में हैं।

मृतकों का मंदिर, मिस्र- करीब १३०० ईसा पूर्व मिस्र में मृतकों का यह मंदिर बनाया गया। यहां शव रखे जाते थे, जिन्हें पौराणिक देवता अमून को चढ़ाया जाता था।

पार्थेनॉन का मंदिर, ग्रीस- इस मंदिर के खंडहर आज भी सिकंदर वाले ग्रीक साम्राज्य की निशानी है। एंथेस नाम की देवी के सम्मान में यह मंदिर ४३८ ईसा पूर्व में बनाया गया।

टेम्पल ऑफ इनस्क्रिप्शन, मेक्सिको- माया सभ्यता से जुड़ा यह मंदिर सन ६८३ के आसपास तैयार हुआ। मिस्र के बाहर यह दुनिया में पिरामिड आकार का सबसे बड़ा ढांचा है।

सोमनाथ मंदिर, भारत- सोमनाथ मंदिर पहली बार कब बना, इसका सही सही अंदाजा नहीं है। लेकिन दूसरी बार यह ६४९ ईसवी में बना। इसके बाद सोमनाथ बार बार हमलों का शिकार हुआ। १९५१ में मंदिर का चालुक्य वास्तुकला के

अनुसार पुनर्रोद्धार किया गया।

प्रांबानन मंदिर, इंडोनेशिया- ९वीं शताब्दी के मध्य में ही इंडोनेशिया के दूसरे इलाके में हिंदू साम्राज्य संजय के राजाओं ने प्रांबानन मंदिर बनवाया। ४७ मीटर ऊंचा यह मंदिर वास्तुकला का मास्टरपीस भी माना जाता है।

अंकोरवाट मंदिर, कंबोडिया- १२वीं शताब्दी में खमेर साम्राज्य के सूर्यवर्णम द्वितीय राजा ने अंकोरवाट में विष्णु का मंदिर बनाया। मान्यताओं के मुताबिक विशाल इलाके में फैला यह मंदिर एक रात में बनाया गया।

❋ जानें क्या होता है पाश्च्युराइजेशन - पाश्च्युराइजेशन एक ऐसा खास तरीका होता है, जिसमें खाने-पीने की चीजों के स्वाद-सुगंध, रंग-रूप आदि में बिना कोई बदलाव किए इनमें मौजूद खतरनाक बैक्टीरिया को खत्म किया जाता है। दूध, मक्खन, जूस जैसी कई चीजों की पैकिंग पर पाश्च्युराइज्ड लिखा होता है।

अगर दूध को उबाला न जाए तो वह कुछ ही देर में खराब होकर फट जाता है। लेकिन अगर दूध को उबाल दिया जाए तो वह कई घंटों तक भी खराब नहीं होता। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि दूध में कई तरह के बैक्टीरिया होते हैं। खुले वातावरण में आने के बाद इनकी संख्या तेजी से बढ़ने लगती है। इस वजह से दूध खराब होने लगता है। दूध में बैक्टीरिया के आने के कई कारण हो सकते हैं जैसे- पशु का बीमार होना, पशु के थनों का दूध निकालने वाले व्यक्ति के हाथों को अस्वच्छ होना वगैरह। दूध की तरह ही कई बार खाने-पीने की दूसरी चीजों में भी सेहत के लिए हानिकारक बैक्टीरिया अपना डेरा जमाने लगते हैं। दूध को देर तक उबालने से बैक्टीरिया खत्म हो जाते हैं, लेकिन ऐसा करने से इनके पोषक तत्वों के नष्ट होने का डर रहता हैं और व्यावसायिक रूप में यह तरीका महंगा भी पड़ता है। इस तरह की परेशानियों से बचने के लिए इन चीजों को पाश्च्युराइजेशन किया जाता है।

पाश्च्युराइजेशन की खोज १८६०-६५ के दौरान प्रसिद्ध फ्रेंच वैज्ञानिक लुई पाश्चर ने की थी और उन्हीं के नाम पर इस विधि का यह नाम रखा गया। पाश्च्युराइजेशन में दूध, मक्खन, जूस जैसी जल्दी खराब होनेवाली चीजों को किसी निश्चित तापमान पर एक निश्चित समय तक गर्म किया जाता है, जिससे उसके बैक्टीरिया खत्म हो सकें। दूध के पाश्च्युराइजेशन के लिए उसे ७२ डिग्री तापमान पर १५-२० सेकंड तक गर्म किया जाता है। फिर जल्दी से ४ डिग्री सेल्सियस तापमान तक ठंडा करके रखा जाता है। एक अन्य विधि में किसी चीज को १३८-१५० डिग्री सेल्सियस के तापमान पर १-२ सेकंड के लिए गर्म किया जाता है। इसमें समय के साथ पैसे की भी बचत होती है और बैक्टीरिया से बचाव हो जाता है।

❋ मुख्यमंत्रियों में लगातार सबसे लंबा कार्यकाल सिक्किम के पवन कुमार चामलिंग के मुख्यमंत्री के नाम है।

❋ दक्षिण अमेरिकी देश ऊरुग्वे की राजधानी मोंटे वीडियो स्थित है।

❋ दुनिया में सबसे अधिक बाघ भारत में हैं।

❋ स्तनपायी जीव की उत्पत्ति पहले जल में हुई।

❋ कुष्ठरोग के विषाणु का पता सर्वप्रथम नॉर्वे के डॉ. आर्मेनर हैनसन ने लगाया था।

❋ रासायनिक ढंग से निर्मित सबसे कठोर पदार्थ एल्यूमिना सिरेमिक है।

❋ विश्व का विशालतम टेलीफोन एक्सचेंज पेंटागन में है।

❊ प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन में लगभग ६० टन अनाज खा सकता है।

❊ टेलीफोन- इस चमत्कार को हुए १४० वर्ष हो चुके हैं तथा आप-हम कार या हवाई जहाज में बैठकर भी अपने आत्मीयों से बात कर सकते हैं। युवा प्रोफेसर एलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने विद्युत के साथ कुछ परीक्षण शुरू किये। इसी दौरान वह टेलीग्राफ के आविष्कारक चार्ल्स स्हीटस्टोन से मिले और इतने ज्यादा प्रभावित हुए कि उनके मन में ख्याल आया कि एक ऐसी प्रणाली विकसित हो जिसमें एक समय में बहुत सारे संदेश भेजे जा सके। उन्होंने सोचा कि संदेश को एक विशेष प्रकार की लोहे की रॉड पर प्रेषित किया जा सकता है, क्योंकि हर रॉड प्रति सेकेंड अलग-अलग कम्पित होगी और हरेक से अलग-अलग सुर निकलेगा।

१८७५ में इसी प्रकार के एक प्रयोग के दौरान एक रॉड में कम्पन नहीं हुआ तो वाटसन (बेल के सहायक) ने सोचा रॉड फंस गई है। उसने रॉड को खींच लिया और बेल के कमरे में लगी रॉड को छुआ। इससे बेल को पता लगा कि रॉड के कम्पन से पैदा होनेवाली विद्युत तरंगे इतनी शक्तिशाली हैं जो दूसरी रॉड में भी कम्पन पैदा कर देती हैं, साथ ही कई ध्वनियां उत्पन्न हुईं। बेल ने ध्वनियों का गहन अध्ययन किया था।

वह इस बात को जानते थे कि राड के बजाय एक खिंची हुई झिल्ली ध्वनि की पुनरावृत्ति के लिए ज्यादा ठीक रहेगी। अंतत: उन्होंने लोहे का डायफ्राम प्रयोग किया। बेल के इस प्रयोग को किसी ने नहीं स्वीकारा। १८१८ में महारानी विक्टोरिया ने एक प्रदर्शन के उपरांत बेल से टेलीफोन की मांग की। फिर कुछ और लोगों ने टेलीफोन के कनेक्शन लिए और एक्सचेंज बनाए गए।

उस समय ऑपरेटरों द्वारा संचालित एक्सचेंज से बातचीत की जाती थी और टेलीफोन भी इतने सुविधाजनक नहीं होते थे। तब कैमरे की तरह का टेलीफोन उपकरण होता था और रिसीवर व ट्रांसमीटर दोनों का काम करता था। इस समय तक ट्रांसमीटर कम संवेदनशील भी होते थे। बाद में अमेरिकी आविष्कारक थॉमस आल्वा एडीसन ने बेल की सहायता से ऐसा टेलीफोन बनाया, जिसमें बोलने व सुनने का हिस्सा अलग-अलग था।

❊ डायनासोर- करीब २३ करोड़ वर्ष पहले पृथ्वी पर रहनेवाले तथा साढ़े छ: करोड़ वर्ष पहले इस पृथ्वी पर से विलुप्त हो चुके डायनासोर्स की दुनिया बड़ी निराली है।

अंतरिक्ष में डायनासोर- माइया सौरा पिथ्लेसौरम डायनासोर की हड्डियों के टुकड़े तथा उसके अंडे का खोल १९८५ में अंतरिक्ष यात्री लोरेन एक्टन अंतरिक्ष में ले गए थे। १९९८ में बोनी डनबर एक कोइलोफाइसिस डायनासोर की खोपड़ी अंतरिक्ष में लेकर गए थे।

जुलाई १८४१ में वैज्ञानिक रिचर्ड ओवन ने इन्हें डायनासोरिया नाम दिया था।

सिस्मोसॉरस, अरजैंटिनासॉरस, सुपरसॉरस, अल्ट्रासॉरस तथा ब्रेक्योसॉरस जैसी प्रजातियां शाकाहारी थीं। टाइरैनोसॉरस रैक्स प्रजाति के डायनासोर मांसाहारी होते थे। ये १५ मीटर लंबे, ६० हजार किलो वजनी थे। इनके जबड़े में ६० दांत थे, जिनमें सबसे लंबा २३ सेंटीमीटर का था।

टाइरैनोसॉरस प्रजाति के तीन डायनासोर के पुरावशेष हाल में मिले हैं। इनकी लम्बाई तीन मीटर है।

हिपसैलोसॉरस नामक डायनासोर का अंडा सबसे बड़ा माना जाता है। एक करोड़ वर्ष पुराने इसके अंडे का माप ३०

सेंटीमीटर गुना २५.५ सेंटीमीटर है। यह एक शुतुरमुर्ग के अंडे से तीन गुणा बड़ा है।

सबसे तेज दौड़नेवाली डायनासोर प्रजाति थी और निथोमाइमस। ये संभवत: ७० किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से दौड़ सकते थे।

❋ कैलेंडर - इस समय पूरी दुनिया में प्रचलित कैलेंडर ग्रेगोरियन के नाम से ही जाना जाता है। दुनियाभर में कई प्रकार के कैलेंडर प्रचलित हैं, जिनमें रोमन, यहूदी, इस्लामी, चीनी और विक्रमी कैलेंडर प्रमुख हैं। इस समय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सबसे अधिक प्रचलित साल को ३६५ दिनों में वितरीत करनेवाला ग्रेगोरियन कैलेंडर है।

पुराने समय में इंसान के पास समय नापने की कोई तकनीक नहीं थी। वे सूरज और चंद्रमा के घूमने के हिसाब से ही दिन और रात की गणित करते थे। धीरे-धीरे खगोल विज्ञान का अध्ययन और शोध से जाना गया कि पृथ्वी सूरज की परिक्रमा करती रहती है। इसी तरह पृथ्वी के अपनी ही धुरी या एक्सिस पर घूमने की ड्यूरेशन को दिन और रात सूरज की परिक्रमा करने की ड्यूरेशन को एक साल माना गया। इसके बाद साल की इस अवधि को चंद्रकलाओं या चंदा मामा के बढ़ने घटने के हिसाब से बारह भागों में बांटा गया, जिसे महीना कहा जाने लगा।

करीब २००० साल पहले रोम में कैलेंडर का अविष्कार हुआ। रोमन सम्राट रोम्यूलस द्वारा तैयार कराए गए इस कैलेंडर में ३०४ दिन का साल और १० महीने थे। लेकिन इसमें महीने के दिनों की संख्या तय नहीं थी। इस वर्ष का आरंभ मार्च महीने से होता था। फिर सम्राट पोंपीलस ने रोमन देवी जेनिस के नाम पर जनवरी तथा रोमन त्योहार फ्रेबुआ के नाम पर फरवरी माह जोड़े। इस तरह साल के १२ महीनों वाला यह पहला कैलेंडर चलन में आया। लेकिन इसमें दिन अब भी ३५५ ही माने गए थे। यह कैलेंडर मुख्यत: चंद्रमा पर आधारित था।

सूर्य के आधार पर कैलेंडर को तैयार करने की प्रक्रिया मिस्र में ईसा से करीब ३००० साल पहले ही शुरु हो चुकी थी। उस कैलेंडर में साल को चार-चार महीनों के तीन ऋतु काल में विभाजित किया गया था और साल को सूरज की गति के हिसाब से ३६० दिन का माना गया। फिर रोमन सम्राट जूलियस सीजर ने सूरज को समय गणना का आधार मानकर कैलेंडर विकसित किया।

जूलियस कैलेंडर में बाकी कमियों को दूर किया आधुनिक कैलेंडर के जन्मदाता रोम के १३वें पोप ग्रेगरी ने। उन्होंने कैलेंडर की शुरुआत प्रभु यीशु के जन्म माह जनवरी से की। उनके कैलेंडर में साधारण वर्षा में ३६५ दिन तथा लीप ईयर (हर चौथा वर्ष) में ३६६ दिन होते हैं। फरवरी में २८ दिन तथा हर चौथे वर्ष में २९ दिन होते हैं।

❋ असिन किरगीज नामक आदिवासियों में यदि महिला अपने पति का नाम ले लेती है, तो तुरन्त तलाक हो जाता है।

❋ दुनिया की सबसे महंगी किताबें- २०० करोड़ रुपए में बिकी थी एक किताब- किताबों की दुनिया भी बड़ी अनोखी है और इस दुनिया में किताबों का महत्व किसी के लिए क्या हो सकता है, यह शायद उसी से जाना जा सकता है। हर साल हजारों किताबें लिखीं और पढ़ी जाती हैं। लोग बुक रिलीज से पहले ही इन्हें खरीदने के लिए बुकिंग कराते हैं। दुनिया में लेकिन कुछ किताबें ऐसी हैं जिनकी कीमत नहीं चुकाई जा सकी। ऐसी रेयर बुक्स को ऑक्शन में भी रखा गया। दुनिया के चंद रईसों ने इनके लिए बोली भी लगाई, लेकिन यह किताबें बिकी नहीं। दुनिया की सबसे महंगी किताबें, उनकी कीमत और उनके लेखक की जानकारी- दि कोडेक्स लिसेस्टर- लेखक- लियोनार्डो द विंसी।

दि गोस्पेल ऑफ हेनरी द लॉयन, ऑर्डर ऑफ सेंट बेनेडिक्ट- यह ईसाई धर्म से संबंधित पुस्तक है। १२वीं सदी पुरानी यह पुस्तक रोमन संस्कृति पर प्रकाश डालती है। इस धार्मिक किताब को जर्मनी सरकार ने १९८३ में नीलामी में लंदन स्थित सूदबे से ८,१४०००० पाउंड (११.७ मिलियन डॉलर) में खरीदा था। इस पुस्तक में २६६ पृष्ठ हैं, जिसमें ५० पूरे पृष्ठ हैं।

बडर्स् ऑफ अमेरिका- लेखक- जेम्स ऑडबॉन। क्रिस्टी ने वर्ष २००० में बड्र्स ऑफ अमेरिका की एक कॉपी की नीलामी (इसकी केवल ११९ कंप्लीट कॉपियां हैं) ८,८०२५०० डॉलर में की। १० वर्ष बाद इसका दूसरे संस्करण की नीलामी लंदन स्थित सूदबे ने ७,३२१२५० पाउंड (११.५ मिलियन डॉलर) में की।

द कैंटरबरी टेल्स- लेखक- जेयोफ्रे चाउसर- कीमत- ७.५ मिलियन डॉलर (४८.७५ करोड़ रुपए) क्रिस्टी ने अंग्रेजी कविता के जनक माने जानेवाले जेयोफ्रे चाउसर की सबसे चर्चित कृति कैंटरबरी टेल्स की पहले संस्करण की इस प्रति की बिक्री लंदन में १९९८ में की थी। इसकी नीलामी से उसे ७.५ मिलियन डॉलर मिले थे। इसकी अधिकतर प्रतियां १४७७ के पहले संस्करण की उपलब्ध हैं।

फर्स्ट पोलिया- लेखक विलियम शेक्सपीयर- अंग्रेजी साहित्य के महान नाटककार विलियम शेक्सपीयर की इस कृति की मूल कॉपी को क्रिस्टी ने २००१ में न्यूयार्क में हुई एक नीलामी में ६ मिलियन डॉलर में की थी। तकनीक जगत की दिग्गज कंपनी माइक्रोसॉफ्ट के सह संस्थापक पॉल एलेन ने इस किताब को ६ मिलियन डॉलर में नीलामी में खरीदा था।

गुटेनबर्ग बाइबल- क्रिस्टी ने १९८७ में गुटेनबर्ग बाइबल की नीलामी ४.९ मिलियन डॉलर में की थी। दुनिया की पहली मूवेवल प्रिंटिंग मशीन में केवल ४८ प्रतियां छापी गई थीं।

लुइस डफहमेल डु मोनकाउ- लेखक- पियरे एंटोनी, फलवाले पौधों पर लिखी गई अब तक की सबसे महंगी किताब है। इलस्ट्रेशन में विभिन्न प्रकार के फलों के चित्र हैं। यह किताब ५ वॉल्यूम में है।

द फर्स्ट बुक ऑफ यूरीजेन- लेखक- विलियम ब्लैक, विलियम ब्लैक की द फर्स्ट बुक ऑफ यूरीजेन मूल रूप से १७९४ में प्रिंट हुई थी। विलियम ब्लैक की यह महत्वपूर्ण कृतियों में से एक है। मूल से इसकी आठ प्रतियां उपलब्ध हैं। सूदबे ने १९९९ में इसकी प्रति की नीलामी २.५ मिलियन डॉलर में एक निजी संग्राहक को नीलामी की थी।

* यह गुरुद्वारा पंजाब के अमृतसर शहर में है और इसे श्री दरबार साहिब व स्वर्ण मंदिर भी कहा जाता है। टूरिज्म के हिसाब से इसे भी भारत का सबसे प्रसिद्ध स्थल माना जाता है। यहां रोजाना ५०-७० हजार लोग आते हैं और किसी खास मौके पर यह संख्या १ लाख तक पहुंच जाती है। यहां पर विदेशी लोगों के लिए खास इंतजाम किए गए हैं।

* जब केचप का मतलब होता था मछली का सॉस

केचप यानी जो टमाटर से बनता है और जिसे बर्गर, फ्राइज, हॉट डॉग आदि के साथ खाया जाता है। लेकिन पहले केचप टमाटर से नहीं बनता था।

इसकी शुरुआत १७वीं शताब्दी में चीन में हुई थी। पहले केचप मछली के सॉस के रूप आया था। इसमें टमाटर नहीं होता था। चीन में केचप को के-चप, गे-चप या क्यू-चियप के नाम से जाना जाता है।

यहां चप का मतलब होता है सॉस। चीनी लोग ही इसे दक्षिण एशिया में लेकर गए। ब्रिटेन के लोगों ने इसे समुद्री यात्रा के दौरान लोगों को बांटा। उसके बाद यह अमेरिका तक पहुंचा। केचप १८वीं शताब्दी में सबसे ज्यादा वायरल हुआ।

१८०० ई. के पहले केचप को बनाने के लिए एन्कोई मछली, मशरूम, अखरोट और ऑइस्टर मछली का बेस इस्तेमाल किया जाता था। उसके बाद रेसिपी बनाने के लिए टमाटर का इस्तेमाल किया जाने लगा।

१९वीं शताब्दी में केचप में टमाटर के साथ ही मिठास लाने के लिए चीनी डाली जाने लगी, क्योंकि यह स्वाद अमेरिकियों को पसंद था। एफडीए (फूड एंड ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन) के मुताबिक, केचप में टमाटर के साथ विनेगर, शुगर, स्पाइसेज, फ्लेवरिंग, प्याज और लहसुन मिलाया जाता है।

वैसे तो इसमें मिठास के लिए फ्रक्टोज कॉर्न सिरप भी मिलाया जाता है लेकिन यह नुकसानदायक है। इसलिए केचप खरीदने से पहले लेबल जरूर चेक कर लें।

अगर आपने केचप को खोल दिया है तो इसे फ्रिज में ही रखें, क्योंकि अगर केचप की बोतल खोल दी है तो फ्रिज के बाहर एक महीने तक ताजा रहेगी। बिना खुली हुई बोतल को आप एक साल तक फ्रिज के बाहर रख सकते हैं। केचप की बोतल में भरी गैस के कारण वह लंबे समय तक सुरक्षित रहता है।

और भी हैं टेस्ट- बनाना केचप, बनाना सॉस भी बहुत लोकप्रिय है। यह भी काफी स्वादिष्ट होता है और कई तरह के मसालों से बनाया जाता है। यह केले से बनाया जाता है। इसमें टमाटर नहीं होता। विनेगर, शुगर, नमक और स्पाइसेज होते हैं। यह सामान्य केचप से पतला और फलीय स्वाद का होता है। इसमें खाने का रंग भी मिलाते हैं।

❋ रोशनी की गति किसी भी वस्तु द्वारा प्राप्त की जा सकनेवाली गति से सर्वाधिक तेज होती है। ऐसा अल्बर्ट आइंस्टीन ने थ्यूरी ऑफ रैलेटिविटी में कहा था।

❋ ४८ से शुरू होनेवाले वोल्टेजिस घातक माने जाते हैं। इसलिए इलैक्ट्रानिक खिलौनों में अधिकतम २४ वोल्ट्स की वोल्टेज ही होनी चाहिए।

❋ पावर सेविंग लैम्प्स आम बल्ब के मुकाबले आठ गुना अधिक चलते हैं और सिर्फ एक-चौथाई बिजली की खपत करते हैं।

❋ मैग्नेटिक लैवीटेशन ट्रेन (हवा में तैरनेवाली ट्रेन) की पटरी में शक्तिशाली इलैक्ट्रोमैग्नेट्स लगे होते हैं। जब करंट प्रवाहित किया जाता है तो दोनों मैग्नेट्स एक-दूसरे को विपरीत दिशा में धकेलते हैं। इस तरह ट्रेन १५ मिलीमीटर ऊपर उठ जाती है और पटरी से बिना किसी घर्षण के चलने लगती है।

❋ तोहफा नर्मी से- जापान में तोहफा स्वीकारने का भी तरीका है। वहाँ आपको कोई तोहफा दे, तो उसे तनिक धैर्य से दो-एक बार मना कीजिए, इसे आपकी विनम्रता समझा जाएगा।

❋ न करें तारीफ- सऊदी अरब जाएं तो खास ख्याल रखें। अपने मेजबान की किसी चीज की ज्यादा तारीफ न करें। इससे वह खुद को इसके लिए बाध्य समझने लगता है कि वह चीज आपको भेट करे। अब आप उसे कुबूल न करें, तो इसे वह अपना अपमान समझ लेता है।

❋ घमंडी की पहचान- ऑस्ट्रेलियाई लोगों के सामने अपनी शेक्षिक या निजी खूबियों का ज्यादा गुणगान नहीं करना चाहिए, ऐसा करनेवालों को वहां घमंडी समझा जाता है।

❋ मिटिंग में लेट तो अपमान- आप सिंगापुर में हों और किसी मिटिंग में जाना हो, तो कभी लेट मत पहुंचिए। किसी

सिंगापुरियन अधिकारी को मीटिंग के लिए इंतजार कराना अपमान माना जाता है।

❋ लाल नाम यानी मौत- साऊथ कोरिया में किसी व्यक्ति का नाम लाल स्याही से मत लिखिए। इससे यह माना जाता है कि लाल स्याही से जिस व्यक्ति का नाम लिखा है, उसकी मृत्यु हो चुकी है।

❋ जहाजों को तोड़नेवाला दुनिया का सबसे बड़ा यार्ड गुजरात के अलंब नामक शहर में है।

❋ गुप्त शासकों द्वारा जारी किए गए चांदी के सिक्कों को रूपक नाम से जाना जाता था।

❋ बौद्ध गाथाओं में बुद्ध के जन्म का प्रतीक हाथी को माना जाता है।

❋ असहयोग आन्दोलन शुरू करने के समय भारत का वायसराय लाड चेम्स फोर्ड था।

❋ प्राचीन मिस्र में वास्तविक लैड वाली पेंसिलें ही प्रयोग में लाई जाती थीं। बाद में लेड के स्थान पर ग्रेफाइट का इस्तेमाल होने लगा। लेकिन इन्हें आज भी लैड पेंसिलों के ही नाम से जाना जाता है। एक औसत पैंसिल से ३५ मीटर लंबी रेखा खींची जा सकती है।

❋ विख्यात सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती ने भारत में चिश्ती संप्रदाय की नींव रखी थी।

❋ रूसी वैज्ञानिक कोस्तालिन तिस्ओएकोवस्की ने १८५७ से १९३५ के बीच अपने प्रयोग के आधार पर यह धारणा व्यक्त की थी कि राकेट की मदद से अंतरिक्ष में यात्राएं संभव हैं।

❋ मध्यकालीन चीनी लोग तीरों को पथभ्रष्ट होने से बचाने के लिए उन पर कंफ्यूशियस के कहे गए शब्द भ्रष्ट विचार न रखो खोद दिया करते थे।

❋ न्यूजीलैंड के पिग्मी पाईस अन्नानास इतने छोटे होते है कि सैकड़ों की संख्या में इकट्ठे किए जाने पर भी ये एक तकिए से ज्यादा स्थान नहीं घेरते।

❋ जोहांसबर्ग (दक्षिण अफ्रिका) का थिएटर रायल ऑस्ट्रेलिया में बनाया गया था और वहां से यह वायुयान, घोड़ागाड़ी व बैलगाड़ी द्वारा ६००० मील दूर वर्तमान स्थान पर पहुंचाया गया था।

❋ टाइप करते समय औसतन उलटा हाथ ५६ प्रतिशत कार्य करता है।

❋ कोआला और मनुष्य दो ही प्राणी हैं जिनमें हरेक की उंगलियों के निशान दूसरे से अलग होते हैं।

❋ रेडियो को पांच करोड़ लोगों तक पहुंचने में ३८ वर्ष लगे थे, जबकि टेलीविजन तेरह वर्षों में ही पांच करोड़ लोगों तक पहुंच गया था।

❋ जर्मनी के फ्रैंकफ्रर्ट शहर में विश्व का सबसे बड़ा पुस्तक मेला लगा है। इसमें १०० देशों के ७००० से अधिक प्रकाशक और तीन लाख से अधिक लोग भाग ले रहे हैं।

❋ सोने की खपत चीन में सबसे अधिक होती है। इस साल के अंत तक कुल १४०० टन सोने की खपत होने की उम्मीद है।

❋ डिस्कवरी ऑफ इंडिया के लेखक जवाहरलाल नेहरू हैं।

❋ मदर टेरेसा ने भारत में मिशनरीज ऑफ चैरिटी नामक संस्था की स्थापना १९५० में की।

❋ भारत के राष्ट्रपति राज्यसभा में १२ सदस्यों को मनोनीत कर सकते हैं।

❋ भारत में २८ राज्य व ७ केन्द्र शासित क्षेत्र हैं।

❋ राष्ट्रीय विकास परिषद का अध्यक्ष प्रधानमंत्री होता है।

❋ कोहिनूर हीरा - संसार के सबसे कीमती हीरों में कोहिनूर हीरा सबसे अधिक मूल्यवान व सुंदर माना जाता है। यह हीरा गोलकोंडा की हीरे की खान से प्राप्त हुआ था। कोहिनूर हीरे का इतिहास बहुत प्रसिद्ध है। यह हीरा अब तक कई राजाओं, बादशाहों तथा अन्य व्यक्तियों के हाथ आया और सभी को इनसे अपना दीवाना बना दिया। सन १३०४ में बादशाह अलाउद्दीन खिलजी ने मालवा नरेश को पराजित किया। उस वक्त हीरा भी उसके हाथ लगा। यह हीरा राजा विक्रमादित्य, हुमायूं, अकबर, जहांगीर, शहाजहां, औरंगजेब, मुहम्मदशाह, नादिरशाह, शाहशुजा, रणजीत सिंह, दिलीप सिंह आदि कई सम्राटों के हाथों गया और अंत में रानी विक्टोरिया को प्राप्त हुआ। तब से यह लंदन में है और अब इसके टुकड़े हो चुके हैं।

❋ आज दूरदर्शन चैनलों ने पूरी दुनिया को समेट कर ड्राइंगरूम में ला दिया है। गीत-संगीत, फिल्म, समाचार तथा खेलों के अपने-अपने चैनल हैं। मनोरंजन व सूचना के क्षेत्र में एक क्रांति-सी पैदा कर दी है दूरदर्शन ने। दूरदर्शन सेवा का शुभारंभ बी.बी.सी. ने १९३६ में ही कर दिया था और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद इसकी शनै:-शनै: वृद्धि होती रही। हमारे देशों में १५ सितंबर, १९५९ को दूरदर्शन सेवा का श्रीगणेश हुआ था। दिल्ली स्थित आकाशवाणी भवन की पांचवीं मंजिल पर एक छोटा-सा स्टूडियो बनाया गया था। भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्र प्रसाद ने इसका उद्घाटन किया था। तब इसके कार्यक्रम केवल २० कि.मी. के क्षेत्र में ही देखे जा सकते थे।

१९६० में पहली बार स्वतंत्रता के झंडारोहण समारोह का दूरदर्शन पर सीधा प्रसारण किया गया था। इस समय लोगों के पास अपने दूरदर्शन सैट नहीं थें यूनेस्को के अनुदान से कुछ सैट खरीदकर टैली क्लब बनाए गये थे। उस समय सप्ताह में केवल दो दिन ही कार्यक्रम प्रसारित किये जाते थे वे भी सिर्फ बीस-बीस मिनट के। बाद में इनकी अवधि बढ़ाकर इनमें गीत-संगीत, नृत्य, नाटक के साथ-साथ स्वास्थ्य, सफाई, परिवार नियोजन व कृषि संबंधी कार्यक्रमों का भी प्रसारण किया जाने लगा।

२ फरवरी, १९७३ को पूरे दूरदर्शन केंद्र से ग्रामीण कार्यक्रम प्रसारित होने लगे। इसी दौरान श्रीनगर, अमृतसर में भी दूरदर्शन केंद्र आरंभ कर दिये गये, जहां से पंजाबी, हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी में रोज तीन घंटे की सेवा दी जाती थी। उन दिनों इनके प्रोग्राम केवल १६०० वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में देखे जा सकते थे। २७ अप्रैल, १९७५ को पंजाब में जालंधर केंद्र स्थापित हो गया। बाद में कोलकाता, चेन्नई तथा लखनऊ में भी केंद्र आरंभ कर दिये गये।

दूरदर्शन के विकास का सबसे बड़ा चरण एशियाड १९८२ के साथ प्रारंभ हुआ। इस दौरान (१५ अगस्त, १९८२) दूरदर्शन को रंगीन कर दिया गया। इनसैट और एशियाई खेलों ने दूरदर्शन केंद्र अथवा रिले केंद्र खुल रहे हैं। केबल दूरदर्शन ने तो रुख ही बदल दिया है।

❋ नील आर्मस्ट्रॉंग ने सबसे पहले अपना बायां पैर चंद्रमा पर रखा था और उस समय उनके दिल की धड़कन १५६ बार प्रति मिनट थी।

❋ ३० से ३५ मिनट की पढ़ाई के बाद १० मिनट का ब्रेक पढ़ा हुआ याद रखने का सबसे कारगर तरीका है।

❋ जब आप खुश होते हैं आप गाने की धुन का आनंद उठाते हैं और अगर आप दुखी होते हैं तो आप गीत के शब्दों को

समझते हैं।

❋ भारत का संविधान विश्व के किसी भी गणतांत्रिक देश का सबसे लंबा लिखित संविधान है। भारतीय संविधान में वर्तमान समय में ४६५ अनुच्छेद, १२ अनुसूचियां और २२ भागों में विभाजित है।

❋ अगर कपड़े सिकुड़कर छोटे हो गए हैं तो उन्हें गर्म पानी और हेयर कंडीशनर के घोल में ५ मिनट के लिए भिगो दीजिए। वे वापस अपने पुराने आकार व नाप में आ जाएंगे।

❋ केले में मूड़ बदलने के गुण होते हैं। इससे चिड़चिड़ाहट, गुस्सा और अवसाद दूर होते हैं।

❋ डिजिटल प्रणाली - आजकल डिजिटल घड़ियां, डिजिटल रिकॉर्डिंग तथा डिजिटल दूरदर्शन, ब्राडकास्टिंग इत्यादि हो रहा है। डिजिटल प्रणाली अच्छे परिणाम देती है परंतु डिजिटल का अर्थ क्या है? वास्तव में डिजिटल प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है जो संख्या (नंबरों) के साथ काम करती है। कंप्यूटर भी डिजिटल मशीनें होती हैं जो इस डिजिटल प्रणाली को हैंडल करती हैं। रिकॉर्डिंग करने के लिए ध्वनि (साउंड वेव्ज) माप ली जाती हैं और फिर उन्हें संख्या में परिवर्तित कर दिया जाता है। पुनरुत्पादन किये जाने पर यह ध्वनि अथवा चित्र अपने मौलिक रूप की तरह ही होते हैं। इस तरह यह डिजिटल प्रणाली बिना किसी विकृति के अच्छी गुणवत्ता देती है।

❋ ९-११ जनवरी भारतीय प्रवासी दिवस।

❋ १२ जनवरी राष्ट्रीय युवा दिवस। (स्वामी विवेकानंद की स्मृति में)।

❋ १५ जनवरी- थल सेना दिवस।

❋ २३ जनवरी निवारण दिवस।

❋ २६ जनवरी भारत का गणतंत्र दिवस।

❋ ३० जनवरी बलिदान दिवस (बापू अर्थात राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पुण्य स्मृति में) राष्ट्रीय कुष्ठ उन्मुक्तिकरण दिवस।

❋ १ फरवरी तटरक्षक दिवस, कल्पना चावला स्मृति दिवस।

❋ २२ फरवरी प्लस पोलियो दिवस। (रमन प्रभाव खोज की स्मृति में)।

❋ २८/२९ फरवरी मादक द्रव्य उन्मूलन दिवस।

❋ हीरा - आखिर यह हीरा है क्या? कहां से आया? कैसे बना? क्यों इतना चमकीला है? आवर्तसारिणी के चौदहवें ग्रुप में पहला सदस्य है काला कलूटा कार्बन। हीरा इसी कार्बन का अपररूप है। यदि हम आंध्रप्रदेश के गोलकुंडा क्षेत्र से मिलनेवाले हीरों की बात करें, तो ये हमें किंबर लाइट चट्टानों से प्राप्त होते हैं।

विभिन्न भौगोलिक परिवर्तनों के कारण अनेकों पेड़-पौधों के जमीन के अंदर भूगर्भ में समा जाने पर कुछ विशिष्ट परिस्थितियों में पेड़-पौधों में उपस्थित कार्बन कोलीफिकेशन की प्रक्रिया द्वारा हजारों लाखों वर्षा में कोल (पक्का कोयला) में परिवर्तित हो जाता है, किंतु यदि वहां का ताप पंद्रह सौ डिग्री सेंटिग्रेट, दाब सत्तर हजार एटमास्फियर हो, तो कुछ कार्बन हीरे में परिवर्तित हो जाता है। अब भूगर्भ से किंबरलाइट चट्टान एक तीर की तरह सतह की ओर उठती है एवं अपने साथ हीरे के टुकड़े भी लेकर आती है। यदि इसकी रफ्तार पंद्रह किलोमीटर प्रति घंटे एवं भूगर्भ की गहराई पृथ्वी की ऊपरी सतह से एक सौ पचास किमी अंदर हो तो यह हीरों को पृथ्वी की ऊपरी सतह तक ले आती है और यही हीरे लोगों को प्राप्त होते हैं, किंतु यदि रफ्तार,

तापक्रम या चट्टान ओरिजन की गहराई में परिवर्तन आया, तो हीरा, ग्रेफाइट या कार्बन में बदल जाता है।

पृथ्वी की सतह पर आया यह हीरा तराशने की निपुणतापूर्ण कठिन प्रक्रिया से गुजरता है, तब उसका संसार चकाचौंध करनेवाला रूप सामने आता है। वही कार्बन एक परिस्थिति में हीरा बन जाता हैं वही दूसरी परिस्थिति में कोयला ग्रेफाइट? यह जानने के लिए हमें हीरे और ग्रेफाइट की आंतरिक संरचना समझनी होगी। कार्बन की संयोजकता या कहें अन्य परमाणुओं से संयुक्त होनेवाले बिंदु चार होते हैं। डायमंड के केस में ये चारों संयोजकताएँ कार्बन के अन्य परमाणुओं की चारों संयोजकताओं से संबद्ध होती हैं और अत्यंत कठोर सुदृढ़ प्यारा और संसार के सबसे अधिक दैदीप्यमान पदार्थ को जन्म देती है, किंतु ग्रेफाइट का अध्ययन करने पर पाया गया कि ग्रेफाइट के केस में कार्बन की चार संयोजकताओं में से एक भटक जाती है।

❋ दुनिया के पांच सबसे महंगे हीरे

हीरा सभी रत्नों में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है और यही वजह है कि इसकी कीमत भी बाकी सभी रत्नों से अधिक होती है। दुनिया में ऐसे कई हीरे हैं, जिनकी कीमत अरबों में है।

पिंक स्टार दुनिया के दुर्लभ हीरों में से एक है। ५९.६ कैरेट का यह हीरा अंडे के आकार का है। साल २०१७ में हांगकांग में हुई नीलामी में यह गुलाबी रंग का हीरा रिकॉर्ड ४६२ करोड़ रूपये में बिका था। यह सबसे महंगे हीरों की बिक्री का एक विश्व रिकॉर्ड था।

ओपनहाइमर ब्लू हीरा भी दुर्लभ हीरों में से एक है। १४.६२ कैरेट के इस हीरे को साल २०१६ में स्विटजरलैंड के शहर जेनेवा के क्रिस्टी नीलामी घर द्वारा नीलाम किया गया था, जिसमें यह करीब ३२९ करोड़ रुपये में बिका था।

ब्लू मून नाम का यह हीरा साल २०१५ में ३१५ करोड़ रुपये में बिका था। एक अंगूठी पर लगे इस हीरे को हांगकांग के रहनेवाले जोसफ लू ने अपनी बेटी के लिए खरीदा था। इसके बाद उन्होंने हीरे का नाम ही अपनी बेटी के नाम पर ब्लू मून ऑफ जोसेफाइनफ रख दिया। यह हीरा १२.०३ कैरेट का है।

१४.८२ कैरेट का यह हीरा दुनिया का सबसे बड़ा नारंगी हीरा है। साल २०१३ में जेनेवा क्रिस्टी नीलामी घर द्वारा इसकी नीलामी की गई थी, जिसमें यह १५.६ करोड़ रुपये प्रति कैरेट के हिसाब से बिका था। प्रति कैरेट के हिसाब से बिकनेवाला यह उस समय का सबसे महंगा हीरा था।

दुनिया के सबसे बड़े हीरों में शुमार ग्राफ पिंक की नीलामी साल २०१० में हुई थी।

❋ डीवीडी डिस्क - हम सूचना प्रौद्योगिकी के युग में जी रहे हैं। ऐसे में कम्प्यूटर, इंटरनेट जैसे साधनों से हम अच्छी तरह जानकार हो चुके हैं। डीवीडी जैसे शब्द और चीजें तो हमारे नित्य उपयोग की हो चुकी हैं। छोटी सी डीवीडी में सूचना के भंडारण की गजब क्षमता होती है।

डीवीडी पर एक-दो ही नहीं बल्कि पांच छह फिल्में भी रखी जा सकती हैं इसे वीडियो लेता है और हमें कॉम्प्रेशन की जरूरत होती है। इस काम्प्रेशन को एमपीईजी अर्थात मूविंग पिक्चर एक्सपर्टस् ग्रुप कहा जाता है। यह एमपीईजी सिस्टम लंबी फिल्मों को भी संकुचित कर लेता है। किसी भी मूवी का हर सेकंड में २४ फ्रेम्स के हिसाब से फिल्मांकन किया जाता है। अर्थात हर सेकेंड में हम परदे पर २४ दृश्य देखते हैं। डीवीडी में एमपीईजी-२ नामक एक डिकोडर भी होता है, जो

संकुचित किए गए डाटा को जल्द ही संकुचन से मुक्त कर लेता है।

❋ हवा से हलका एयरोग्रेफाइट - जर्मन वैज्ञानिकों ने हवा से भी हल्की चीज को खोज लिया है। इसका नाम एयरोग्रेफाइट है। वैज्ञानिकों को लगता है कि इस खोज से इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में नई क्रांति आ जाएगी।

एयरोग्रेफाइट काले रंग का अपारदर्शी और छेदोंवाला एक कार्बनिक पदार्थ है। इसमें हवा की मात्रा अधिक हैं। एयरोग्रेफाइट से विद्युत शक्ति का संवहन हो सकता है। इसका वजन काफी कम होने से भविष्य में हल्की बैटरियां बनाने में इसका इस्तेमाल हो सकता है। आकार में छोटी इन बैटरियों का इस्तेमाल इलेक्ट्रिक मोटरों और ई-बाइक्स में हो सकता है। एक घन सेमी एयरोग्रेफाइट का वजन केवल ०.२ मिलिग्राम होता है। धरती पर मौजूद तमाम चीजों में यह सबसे हल्की है। इसे ९५ प्रतिशत तक संकुचित किया जा सकता है और उसके मूल आकार में भी लाया जा सकता है।

❋ इको-फ्रेंडली साइकिल - बचपन से हमारी पसंदीदा चीजों में साइकिल भी एक होती है। हम कई बार दोस्तों के साथ साइकिल रेस भी करते हैं साइकिल कहते ही स्टील बॉडी की बनावट वाली मजबूत आकृति हमारी आंखों के सामने आ जाती है, लेकिन इजराइल के एक पर्यावरण प्रेमी ने ऐसी साइकिल बनाई है, इस अनोखी साइकिल को बनानेवाले युवक का नाम इजर गफनी है। उसने एक इको-फ्रेंडली साइकिल बनाई है, जिसे बनाने के लिए उसे लगभग दस अमेरिकन डॉलर्स खर्च करने पड़े हैं। यह साइकिल केवल कार्डबोर्ड से बनी हुई है। लेकिन इस पर पानी का कोई विपरीत असर नहीं होता है। कार्डबोर्ड के इस्तेमाल से साइकिल बनाने की योजना उसने पहले तीन इंजीनियरों को बताई थी। लेकिन उन तीनों ने उसे कोई सहयोग नहीं दिया। उलटा, उन्होंने इसे असंभव बताया था। तीनों इंजीनियरों द्वारा प्रस्ताव को ठुकराए जाने से गफनी नाउम्मीद नहीं हुआ। उसने अपनी जिद और लगन से इस अनोखी साइकिल को साकार कर ही लिया। इस साइकिल को बनाते समय भार सहन करने के लिए कार्डबोर्ड को मजबूत करना जरूरी था। इसलिए उसने जापानी ओरिगामी कला के सिद्धांत का इस्तेमाल कर कार्डबोर्ड को मजबूत बना लिया। किसी भी तरह के तापमान से साइकिल खराब नहीं होगी इसलिए उसने अलग-अलग रसायन्स का इस्तेमाल किया। गफनी ने अपनी मेहनत से इकोफ्रेंडली साइकिल बनाकर साबित कर दिया कि दुनिया में कोई काम मुश्किल नहीं है।

❋ ध्वनि की गति - ध्वनि या आवाज के बिना मानव की कल्पना शून्य साबित हो सकती है। गाड़ियों की आवाजों से लेकर कुत्ते बिल्ली इत्यादि अनेक जानवरों की आवाजों को हम झट से पहचान लेते हैं। आवाजों में बदलाव स्थान के अनुसार होता है। हवा यह अलग तो बंद कमरे में, लोहे, पानी इत्यादि में अलग-अलग होती है। ध्वनि की गति में हवा में ० डिग्री सेल्सियस पर ३४० मीटर प्रति सेकेंड होती है। जो लगभग ११५० किमी. प्रति घंटे के हिसाब से होती है। इसी तरह कमरे में यह गति ३४८ मीटर प्रति सेकेंड हो जाती है। हवा की अपेक्षा अन्य जगहों पर इसमें काफी बदलाव होता है। हवा में इसकी गति न्यूनतम होती है पानी में ध्वनि की गति हवा की अपेक्षा चार से पांच गुनी ज्यादा तेज होती है। शीशे में इसकी गति १२३० मीटर प्रति सेकेंड है। एल्युमिनियम में ध्वनि लगभग एक सेकेंड में ५२३० मीटर की गति रखती है। इस प्रकार धातुओं में लगभग पांच किमी. प्रति सेकेंड ध्वनि की गति होती है। जबकि इतनी ही गति पानी और हवा में क्रमश: तीन और पंद्रह सेकेंड में होती है। इसका कारण अणुओं पर निर्भर करता है।

हवा में अणु दूर-दूर तक होते हैं। जबकि लकड़ी, लोहे, पानी इत्यादि में हवा की अपेक्षा काफी नजदीक होते हैं।

तापक्रम घटने से ध्वनि की गति में भी परिवर्तन होता है। इस प्रकार ध्वनि की तीव्रता जगह के अनुसार अलग-अलग होती है। वहीं दूसरी ओर जिस तरीके से ध्वनि को किसी सीमा से अधिक बनाए जाने से मानसिक तनाव भी उत्पन्न हो सकता है। ध्वनि की गति विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग होती है।

❋ जहाज की विकास यात्रा - आधुनिक जहाज काफी बड़े होते हैं। यहां न केवल यात्रियों के बैठने और खाने-पीने की व्यवस्था होती है, इसकी कई मंजिलें होती हैं। सबसे ऊपरी मंजिल पर कमरे होते हैं, जिन्हें केबिन कहा जाता है। निचले हिस्से में सामान रखने की व्यवस्था होती है। लोगों के चढ़ने-उतरने के लिए यहां लिफ्ट भी होती है। कई दुकानें, जिम, तरणताल, अस्पताल जैसी सुविधाएं भी यहां होती हैं। इन जहाजों में दिशादर्शक यंत्र, रेडियो, राडार जैसे आधुनिक वैज्ञानिक उपकरण भी लगे होते हैं। आधुनिक जहाजों का वजन १००० क्विंटल तक होता है।

जहाज की विकास यात्रा काफी लंबी है। इन्सान पहले लकड़ों को पानी में डालकर उनके सहारे नदी या समुद्रों में कुछ दूरी तक जाते थे। इसके बाद नाव का विकास हुआ। लगभग छह हजार पूर्व नाव तैयार की गई थी। अमेरिकन इंजीनियर जॉन फिच ने १७८७ में भाप पर चलनेवाले इंजन का जहाज बनाया। १८ वीं शताब्दी के अंत में डीजल पर चलनेवाले इंजन का सफल रूप से जहाज में इस्तेमाल किया गया। इसके बाद लगातार जहाज भी विकसित होते रहे।

जहाज का सर्वाधिक विकास परमाणु शक्ति के प्रयोग से हुआ। १९५४ में अमेरिका ने सबसे पहले परमाणु ऊर्जा पर चलनेवाले जहाज बनाए। अब तो बर्फ के समुद्र में चलनेवाला जहाज भी बनाया जा रहा है। १९८२ में अमेरिका ने ऐसा जहाज बनाया था।

❋ सबसे लंबी आइस्क्रीम डेजर्ट- आइसक्रीम, वह भी इतनी लंबी। अमेरिका के ह्यूस्टन में स्पिरिट ऑफ टैक्सास उत्सव में दुनिया की सबसे लंबी आइसक्रीम डेजर्ट पेश की गई। आइसक्रीम बनाने में माहिर कई विशेष लोगों ने मिलकर इसे बनाया है। इसकी लंबाई १३८६.६२ मीटर है। इसे ५०० गैलन वनीला आइसक्रीम और कैंडी क्रंच से बनाया गया है। इस पर लगी है ३०० गैलन चॉकलेट और स्ट्रॉबेरी सिरप। २००० कैन क्रीम डेजर्ट में लगाई गई है। २०००० चेरी का इस्तेमाल इसे बनाने के लिए किया गया है। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में इसे शामिल किया गया है। इतनी लंबी आइसक्रीम को खत्म करने के लिए लगभग चार हजार लोगों को बुलाया गया था। उन्होंने इसे आधे घंटे में खाकर खत्म किया।

❋ इंग्लैंड के सभी हंस वहां के राजा और रानी की मिल्कियत हैं।

❋ संगीत सुनने से गंभीर दर्द २० फीसदी कम हो जाते हैं। जबकि अवसाद २५ प्रतिशत तक कम हो सकता है।

❋ पोप केवल लाल रंग के प्राडा शू ही पहनते हैं।

❋ विजार्ड ऑफ ओजेड फिल्म में शेरों के लिए बनाए लिबास सचमुच शेरों कीखालों से बनाए गए थे।

❋ महात्मा गांधी ने पत्नी कस्तूरबा को निमोनिया से बचाव के लिए पेनिसिलिन दवा देने से मना किया था, क्योंकि वह विदेशी दवाओं के खिलाफ थे। मलेरिया के इलाज के लिए खुद क्विनीन औषधि का प्रयोग किया था।

❋ मनुष्य की आंख के गोलक (आईबॉल) का औसत वजन २८ ग्राम होता है।

❋ दुनिया में फैले प्रदूषण की शुरुआत १८वीं और १९वीं सदी के यूरोप की औद्योगिक क्रांति से मानी जाती है।

❋ हरेक कॉमिक बुक के किसी भी चित्र में बाईं ओर दिखाए व्यक्ति को पहले बोलता हुआ दिखाया जाता है।

❋ दो देशों की सीमा में बंट गया होटल - एक ऐसा होटल, जो दो देशों की सीमाओं के बीचों-बीच स्थित है और यही इस होटल की खासियत भी है। यहां आनेवाले लोग अगर खाना-पीना स्विट्जरलैंड की सीमा में करते हैं तो उनके सोने की व्यवस्था, हो सकता है फ्रांस में हो। वास्तव में १५० साल पुराने इस होटल का एक तिहाई हिस्सा स्विट्जरलैंड में है और दो तिहाई फ्रांस की सीमा में। एक छोटे से गांव ला क्योर में स्थित अरबेज फ्रेंको सुइस नाम के इस होटल के कमरों में लगे डबल बेड कुछ इस तरह सेट किए हैं कि ये आधे-आधे दोनों ही देशों में पड़ते हैं तकिए भी दोनों देशों के हिसाब से अलग-अलग लगे हुए हैं। यहां जाने के बाद हो सकता है कि आपसे पसंद के देश में सोने के बारे में पूछ भी लिया जाए। इस होटल में लगभग सभी कमरे दो हिस्सों में बंटे हुए हैं। यह जगह १५० सालों से भी ज्यादा समय पहले दो देशों के बीच बांट दी गई थी। बंटवारे के समय ही साल १८६२ में फ्रांस और स्विस कन्फेडरेशन के बीच ला क्योर नाम के इस गांव को दो देशों में बांट दिया गया था।

❋ राज-काज हाथ में लेते समय रानी अहिल्याबाई की उम्र १८ वर्ष थी।

❋ गुरु नानकदेव जी को नौ वर्ष की उम्र में ही उनके शिक्षक मौलाना कुतुबुद्दीन से अधिक ज्ञान प्राप्त हो चुका था।

❋ जगद्गुरु शंकाचार्य ने छह वर्ष की उम्र में सारे भारत के पंडितों को शास्त्रार्थ में पराजित किया था।

❋ भारत कोकिला सरोजिनी नायडू ने १३ वर्ष की उम्र में १३०० पंक्तियों की एक अंग्रेजी कविता लिखी थी।

❋ संत ज्ञानेश्वर ने १२ वर्ष की उम्र में भगवद्गीता पर मराठी छंदों में ज्ञानेश्वरीगीता लिखी थी।

❋ विश्व कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने ब्रिटेन के महाकवि शेक्सपियर के मैंकबैंथ नाटक का बंगला अनुवाद मात्र १४ वर्ष की उम्र में कर दिया था।

❋ अंग्रेजी को विश्व की सबसे लोकप्रिय भाषा माना जाता है।

❋ अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों के सभी पायलट अंग्रेजी भाषा से परिचित होते हैं। भारत में १६५२ बोलियां या भाषाएं बोली जाती हैं। जिस भाषा में सरकार अपने सारे प्रशासनिक कार्य करती है, उस भाषा को राजभाषा कहते हैं। कुछ भाषा विशेषज्ञों का मत है कि इस सदी में दुनिया की ५० से ९० प्रतिशत भाषाएं लुप्त हो जाएंगी। किसी भाषा को जीवित रहने के लिए कम से कम एक लाख लोगों द्वारा उसे बोला जाना जरूरी है। एक अनुमान के अनुसार इस समय दुनिया भर में ४१८०६ भाषाएं बोली जाती हैं।

❋ सौन्दर्य का आराम- कपड़ों और जूतों के फैशन सदियों से बदलते रहे हैं। आज यदि कोई समतल जूतों को देखे तो वह यही समझेगा कि यह बिल्कुल नए फैशन के होंगे। १७ वीं शताब्दी में वीनस में ऊंचे तथा समतल जूतों का बहुत फैशन था। यह फैशन उस समय हास्यास्पद स्थिति में पहुंच गया जब जूतों की एड़ी इतनी ऊंची हो गई कि औरतों को अपने साथ-साथ चलने के लिए नौकर रखने पड़े ताकि वे उन्हें गिरने से बचा सकें। किसी ने कितना सही कहा है कि सौन्दर्य और आराम साथ-साथ नहीं चलते।

❋ शरीर में मौजूद रक्त कणिकाओं को यदि एक पंक्ति में रख दिया जाए तो इनकी लंबाई से पृथ्वी को ४ बार लपेटा जा सकता है।

❋ जापान में कॉमिक बुक्स का प्रकाशन वहां के कुल प्रकाशन जगत का बीस प्रतिशत से भी अधिक हिस्सा है।

✻ सिकंदर, जूलियस सीजर और पयोद्योर दोस्तोवस्की मिरगी के रोगी थे।

✻ मैग्नीशियम द्वारा आतिशबाजी तैयार की जाती है।

✻ एक गिलास पानी में एक चम्मच नमक डालने से पानी का स्तर कुछ कम हो जाता है।

✻ पोटेशियम साइनाइड के सही स्वाद का पता अभी तक नहीं लगा है।

✻ ताजमहल का प्रतिबिंब- बीबी का मकबरा

महाराष्ट्र में औरंगाबाद एक ऐतिहासिक शहर है। इस शहर का नाम शहंशाह औरंगजेब के नाम पर रखा गया था। इसका वास्तविक नाम खिड़की था। वह पैंठण, देवगिरी व दौलताबाद का प्रवेश द्वार कहलाता था।

औरंगाबाद में व आसपास कई दर्शनीय स्थल हैं। इनमें पनचक्की, अजन्ता-एलोरा की गुफाएं, दौलताबाद का किला, पैठण में जैन मन्दिर, संत एकनाथ का मन्दिर, एलोरा के पास ज्योतिर्लिंग महादेव मन्दिर, लक्ष विनायक मन्दिर, खलताबाद में औरंगजेब की कब्र एवं औरंगाबाद शहर में स्थित बीबी का मकबरा प्रमुख है।

बीबी के मकबरे में प्रवेश द्वार से घुसते ही ताजमहल का प्रतिबिंब मस्तिष्क में बन जाता हैं। ऐसा प्रतीत होता है, हम ताजमहल ही देख रहे हैं। या विशालकाय ताजमहल का मॉडल लाकर रख दिया हो। यह मकबरा उतना श्वेत चमकता हुआ प्रतीत नहीं होता, जितना संगमरमर से निर्मित ताजमहल।

औरंगजेब के पिता शाहजहां ने आगरा में अपनी बीबी मुमताज की याद में ताजमहल बनवाया था, वैसा का वैसा ही बीबी का मकबरा १९७९ में शहंशाह औरंगजेब ने अपनी बीबी रबिया-उद-दुर्रानी की यादगार के रूप में बनवाया था। देखते ही लगता है यह कुछ धुंधला ताज है। प्रवेश द्वार भी ताजमहल जैसा ही है व सामने हैं फव्वारों की पंक्तियां व आसपास सीधी कतारों में खड़े पेड़।

मकबरे में जाने के लिए सीढ़ियां हैं। ऊपर की ओर भवन के अन्दर कब्र बनी हुई है व वास्तविक कब्र नीचे है, ताजमहल के समान नीचे उतरकर जाना पड़ता है। कब्र के चारों ओर जालीदार संगमरमर के पत्थर लगे हुए है।। चारों तरफ चार मीनारें हैं। भवन के चारों ओर ऊंची-ऊंची दीवारें, उभरे हुए किले जैसी प्रतीत होती हैं। गुम्बद पर संगमरमर लगा हुआ है, पर दीवारें प्लास्टर की ही हैं। चिकना प्लास्टर, सफेद, हल्का-सा मटमैला जैसा प्राचीन महलों में कोड़ी से बनाया हुआ होता था। मकबरे के पीछे विशाल प्रांगण है व अन्तिम द्वार पर अन्य भवन बने हुए हैं।

✻ अधिकांश स्वप्न पांच से बीस मिनट तक लंबे होते हैं।

✻ इंसान की आंख का लेंस जीवन भर विकास करता रहता है।

✻ इंसान के शरीर का दायां फेफड़ा बाएं की अपेक्षा अधिक हवा खींचता है।

✻ पीठ दर्द के ८० प्रतिशत से अधिक मामलों में असली कारण का पता नहीं लगता है।

✻ हमारे मस्तिष्क का ७५ प्रतिशत हिस्सा पानी होता है। इसी कारण डिहाइड्रेशन में सिरदर्द उठता है।

✻ पैर की खाल शरीर के अन्य हिस्सों की त्वचा की अपेक्षा अधिक मजबूत होती है।

✻ चंपानेर- पावागढ़ पार्क- चंपानेर-पावागड़ ऑर्कियो लॉजिकल पार्क गुजरात के पंचमहल जिले के सुल्तान महमूद बेगड़ा ने बसाया था। यहां ८वीं से लेकर १४वीं सदी के कुएं व बावड़ियां हैं। पावागढ़ हिल पर कालिका माता का मंदिर है।

यहां हिंदू और मुसलमान दोनों संस्कृतियों की धरोहरें हैं।सबसे पहली भूमिगत ट्रेन कहां और कब चली ?

सबसे पहले भूमिगत ट्रेन लंदन में सन १८६३ में चली, यह ट्रेन शहरी इलाकों में चलती थी। इसके बाद लंदन के टावर सब-वे पर १८७० में रेल चली। यह ट्रेन भाप इंजन से चलती थी।

बिजली से चलने वाली पहली ट्यूट रेल १९८० में शुरु हुई। लंदन की धरती के नीचे ट्यूट लाइनों का जाल सा बिछ गया। १९६८ में विक्टोरिया लाइन का पहला खंड चालू किया गया, जो लंदन में ट्यूब लाइनों को जोड़ने वाली एक जरूरी कड़ी सिद्ध हुआ। यह पश्चिमी यूरोप में पहली स्वयं नियंत्रिय भूमिगत लाइन है। भारत में कोलकाता और दिल्ली में भूमिगत मेट्रो सेवा उपलब्ध है।

❋ मैप बनाने की कला को कार्टोग्राफी कहा जाता है। प्राचीन काल में चीन की कार्टोग्राफी सबसे उन्नत थी। यूनान में भी इस कला का काफी प्रयोग होता था। दुनिया का सबसे पहला मैप २३०० ईसा पूर्व में बेबीलोन में मिट्टी से बनाया गया था। मध्यकाल में यूरोप में इस कला का बोलबाला था। इस दौरान ज्यादातर मैप धार्मिक भावनाओं को केंद्र में रखकर बनाए जाते थे। उस दौरान टी-ओ मैप का सबसे अधिक प्रचलन था। इस मैप में येरुसलम को धरती का केन्द्र दिखाया गया था। सिसली जो इटली में पड़ता है के राजा रोजर-द्वितीय के दरबार में अल इदरीसी नाम के एक विद्वान थे। उन्होंने विश्व का मैप १२ वीं शताब्दी की बात है।

❋ माचिस की डिबिया का संग्रह - सिकंदराबाद के २१ वर्षीय इंडस्ट्रियल डिजाइन स्टूडेंट भरत पेरला को माचिस की डिबिया जमा करने का शौक है। करीब एक साल से अधिक समय से इस शौक में लिप्त भरत को हॉस्टल में रहते हुए यहां-वहां फैंकी खूब सारी माचिस की डिबियां दिखाई दिया करती थीं। जिनके अलग-अलग तरह के ग्राफिक डिजाइन तथा नाम उन्हें आकर्षित करने लगे और यहीं से इन्हें एकत्र करने का शौक भी शुरू हो गया।

आज उनके संग्रह में अलग-अलग तरह की १३० माचिस की डिबियां हैं। शुरू-शुरू में उनके इस शौक को उनके दोस्त अजीब निगाहों से देखते थे परंतु इससे भरत का शौक जरा भी कम नहीं हुआ। वह अपने इस शौक के लिए कुछ भी कर सकते हैं। एक बार रेलवे स्टेशन पर उन्हें कूड़ेदान में छतरी ब्रांड की एक माचिस दिखाई दी। उसे निकालने के लिए उन्हें काफी जद्दोजहद करनी पड़ी। आसपास खड़े लोग शायद उन्हें पागल समझ रहे थे परंतु उन्हें तो अपने संग्रह में जोड़ने के लिए एक नायाब चीज दिखाई दे रही थी।

❋ ब्लैक बॉक्स - दुर्घटनाग्रस्त होने पर हवाई जहाज के लगभग सभी लोग मारे जाते हैं उस स्थिति में दुर्घटना के बारे में सही विवरण उपलब्ध कराता है ब्लैक बॉक्स।

जब भी दुर्भाग्यवश किसी हवाई जहाज की दुर्घटना हो जाती है तो उस समय हवाई जहाज के मलबे से ब्लैक बॉक्स की तलाश की जाती है। दुर्घटना के कारणों की जानकारी का दारोमदार पूर्ण रूप से ब्लैक बॉक्स पर ही निर्भर होता है।

ब्लैक बॉक्स को अंग्रेजी में फ्लाइट डेटा रिकार्डर कहते हैं, यानी उड़ान संबंध तथ्यों को रिकार्ड करनेवाला यंत्र। यह ताप रोधी होता है तथा इसका बाहरी कवच बहुत ही कठोर होती है। उड़ान के समय के समस्त रिकॉर्ड जैसे-पाइलट, सह-पाइलट, नेविगेटर एवं फ्लाइट इंजीनियर के बीच की बातचीत इसमें दर्ज होती हैं। साथ ही पाइलट और यातायात नियंत्रण कक्ष के बीच हुई बातचीत उड़ान के समय उसके आसपास उड़ रहे विमानों के बीच की बातचीत इसमें रिकॉर्ड हो जाता

है। इसके अलावा इसमें वायुयान के इंजन दक्षता संबंधी डेटा भी रिकार्ड होते हैं। कुल मिलाकर उड़ान संबंधी सभी रिकार्ड इसमें दर्ज होते हैं। हवाई जहाज के इंजन चालू होते ही ब्लैक बॉक्स के अन्दर की मशीन अपने आप चालू होकर काम करना शुरू कर देती है। ब्लैक बॉक्स को चालू तथा बंद करने की आवश्यकता नहीं होती है।

किसी हवाई दुर्घटना में हजारों फीट की ऊंचाई से गिरने एवं आग लग जाने से पैदा हुई भीषण तापमान में वृद्धि के बावजूद इसके कठोर कवच एवं तापरोधी होने के कारण इसमें इकट्ठा तथ्यों पर कोई भी हानिकारक प्रभाव नहीं पड़ता है।

अक्सर हवाई दुर्घटना में सारे यात्री मारे जाते हैं, उस स्थिति में दुर्घटना के बारे में सही विवरण उपलब्ध करवाने के लिए केवल यह ब्लैक बॉक्स ही एकमात्र चश्मदीद गवाह के रूप में बचता है।

इसका आकार कोई निश्चित नहीं है। यह चौकोर या आयताकार या अन्य किसी प्रकार का भी हो सकता है। इसकी अन्दर रखी मशीन एवं उसका ताप रोधी कवच बहुत महत्वपूर्ण है। फ्लाईट डेटा रिकॉर्डर बड़ा ही उपयोग यंत्र हैं, क्योंकि इसके माध्यम से दुर्घटनाओं का कारण ज्ञात होने से जहां गल्तियों का पता चलता है, वहीं सावधानी रखने में आसानी होती है। इसके माध्यम से जहां गल्तियों की पुनरावृत्ति को रोकने में सहायता मिलती है, वहीं आगे होनेवाली संभावित दुर्घटनाओं को बचाया जा सकता है। जिससे इंसानों की जिन्दगी और अरबों रुपयों की क्षति को रोका जा सके।

❋ जादुई बक्सा यानी ब्लैक बॉक्स - ब्लॅक बॉक्स यानी फ्लाइट डाटा रिकॉर्डर जो विमान दुर्घटना के बाद महत्वपूर्ण साक्ष्य होता है। अक्सर वायु दुर्घटना के वक्त वायुयान के क्षत-विक्षत मलबे से इसी जादुई बक्से की खोज की जाती है। क्योंकि दुर्घटना के कारणों की जानकारी का सारा दारोमदार इसी पर निर्भर करता है। मुख्यत: ब्लैक बॉक्स का कोई खास रंग नहीं होता पर अधिकांशत: इसे लाल रंग का बनाया जाता है ताकि पहचानने में आसानी हो। इसके अतिरिक्त इसको ढूंढने में कठिनाई न हो इसके लिए इसमें एक ट्रांसमीटर लगा रहता है। इस कारण इसमें से लगातार चुंबकीय तरंगें निकलती रहती हैं। किसी भी विमान दुर्घटना के बाद इन्हीं तरंगों को रिस्पांडर यंत्र से पता लगाकर ब्लैक बॉक्स खोज लिया जाता है।

विमान की उड़ान से संबंधित सभी जानकारी रिकॉर्ड करनेवाला यह एक यंत्र है। इसका बाहरी आवरण बहुत कठोर तथा तापरोधी होता है। यह ब्लैक बॉक्स एक तरह से अविनाशी न आग में जलता है न पानी में गलता है। गहरे सागर में गिरने पर भी वर्षों इसका बाल बांका नहीं होता। उड़ान के समय कई महत्वपूर्ण जानकारियां जैसे- पायलेट, सहायक पायलेट, नेविगेटर एवं फ्लाइट इंजीनियर के बीच की बातचीत इसमें दर्ज होती है। इसके अलावा पायलेट और वायु यातायात नियंत्रण कक्ष के बीच हुई बातचीत, उड़ान के समय दो या अधिक हवाई जहाजों के बीच की बातचीत इसमें रिकॉर्ड होती है। इसके अलावा वायुयान की हाईजैकिंग (अपहरण) के समय हवाई दस्युओं और पायलेट के बीच हुई बातचीत भी इसमें रिकॉर्ड की जाती है।

वायुयान के चालू होते ही ब्लैक बॉक्स के अंदर की मशीनरी अपने आप चालू हो जाती है, इसे बंद चालू करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। दुर्घटना के बाद तमाम साक्ष्य आग एवं जमीन से टकराने के झटके के कारण जलकर राख हो जाते हैं। ऐसे में इसी बॉक्स के माध्यम से जानकारी प्राप्त होती है। इसके कठोर कवच एवं तापरोधी होने के कारण हवाई दुर्घटना में हजारों फुट की ऊंचाई से गिरने एवं आग लग जाने से तापमान में कई भीषण वृद्धि के बाद भी इसमें एकत्रित तथ्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह आकार में चौकोर या कुछ भिन्न भी हो सकता है। इसके अंदर की रिकॉर्डिंग

मशीनरी एवं इसका कठोर एवं तापरोधी कवच। ब्लैक बॉक्स बड़े काम की चीज है क्योंकि इससे दुर्घटनाओं के कारणों का पता चलता है वहीं संभावित दुर्घटनाओं को बचाया जा सकता है।

❋ अंतरिक्षीय पर्यटकों के तौर पर बहुत कम लोग इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पर गए हैं। अंतरिक्ष में पर्यटक के तौर पर अमेरिकी करोड़पति डैनिक टलीटो २००१ में पहली बार गए थे।

❋ कुछ उपग्रहों को नंगी आंखों से देखा जा सकता है। ये रोशनी के बिंदु होते हैं जो रात्रिकालीन आकाश में धीमी गति से इधर-उधर घूमते रहते हैं।

❋ हम सिर्फ स्थान के मुताबिक ही देख सकते हैं क्योंकि हमारी सिर्फ २ आंखें हैं। इन दोनों तस्वीरों को आधार बनाकर हमारा दिमाग एक त्रि आयामी (थ्री-डी) तस्वीर बनाता है।

❋ शरीर के अंदर आपका खून साठ हजार से एक लाख मील लम्बी दूरी तय करता है।

❋ अपने जीवन में मनुष्य ५२ ठोस भोजन और १९ हजार गैलन तरल पदार्थ पीता है।

❋ हमारे फेफड़ों में ३० करोड़ से भी अधिक सूक्ष्म थैलियां होती हैं, जिनमें श्वसन क्रिया के दौरान हवा भरती है।

❋ मानव शरीर में उपस्थित कैल्शियम की मात्रा आयु के साथ-साथ घटती जाती है। जन्म के समय शरीर में ३०० हड्डियां होती हैं, जबकि मृत्यु के समय २०६ ही शेष रह जाती हैं।

❋ शरीर में उपस्थित मैग्नीशियम से मैग्नीशिया की एक खुराक तैयार की जा सकती है।

❋ मानव शरीर में उपस्थित पोटैशियम से एक छोटी बन्दूक चल सकती है।

❋ मानव शरीर में इतनी बिजली होती है कि उससे ३६ वॉट का एक बल्ब जलाया जा सकता है अथवा बड़ी केतली भर पानी उबाला जा सकता है।

❋ स्पेन के सेविले शहर में आज भी एक पेड़ खड़ा है जिसे १९४३ में कोलंबस नई दुनिया से लाया था और उसके बेटे फरनैन्डो ने अपने घर के सामने लगाया था।

❋ मनुष्य ने कुछ जानवरों को दोस्त बनाया और फिर पालतू बनाकर उनसे कार्य लेने लगा। जैसे कि घोड़े पर बैठकर शिकार करने लगा, कहीं लंबी यात्रा करनी होती तो वह ऊंट का, गधे का इस्तेमाल करने लगा। फिर धीरे-धीरे उसने और कुछ नया करने की सोची और उसने लंबे लकड़ी के फट्टे बनाई, जिससे वह बर्फ में भी आसानी से चल या फिसल सके। बस यह बनते-बनते उनके मन में अनेक विचार आने लगे और फिर आविष्कार हुआ लकड़ी को गोल काटकर उनके पहियों को उससे काम लेना शुरू किया गया। गोलाई में लकड़ी को काटकर उसका इस्तेमाल शुरू हुआ। अब मनुष्य इसमें और सुधार करना चाहता था, अत: उसे बीच में काटा गया।

❋ मिलाउ पुल - दक्षिणी फ्रांस के मिलाउ नगर में सात कंक्रीट तथा इस्पात के खंभों के सहारे ३४० मीटर ऊंचा तथा २.५ किलोमीटर लंबा एक अत्यंत सुंदर पुल खड़ा है। अपने ही देश में इंजीनियरिंग के एक अन्य कमाल एफिल टावर से २३ मीटर ऊंचा यह पुल संसार का सबसे ऊंचा मोटर मार्ग है। यहां मोटर गाड़ियां टैम नदी की घाटी के २७२ मीटर ऊपर से गुजरती हैं।

इसे सहारा देनेवाले इस्पात के रस्से सफेद रंग गए हैं। इसलिए पीछे खुले आसमान के आगे वे दृष्टि से ओझल हो जाते

हैं और ऐसा लगता है जैसे कि पतले फीते जैसी यह सड़क बादलों में से लटक रही है। इसके ब्रिटिश आर्किटैक्ट नॉर्मन फिशर का कहना है कि इसका डिजाइन ऐसा बनाया गया है ताकि यह अपने आसपास की भूमि के अभिन्न अंग जैसा दिखाई दे। हालांकि यह पुल बेहद मजबूत है लेकिन इसका रूप नाजुक तितली के जैसा दिखता है।

५२ करोड़ ३० लाख यू.एस.डॉलर की लागत से एक निजी कंपनी द्वारा बनाया गया यह पुल पेरिस और मैडिटैरिनियन को जोड़नेवाली नई उत्तर-दक्षिणी कड़ी हे। यह पुल मिलाउ नगर के पास यातायात की भीड़ भी कम करेगा, खास तौर से गर्मियों में जब सैलानियों की बड़ी संख्या मैडिटैरिनियन तट पर छुट्टियां बिताने जाती है।

✻ एक नजरिये से तापमान मापने के लिए सेल्सियस स्केल फॉरेनहाइट स्केल से ज्यादा अक्लमंदी से बनाया गया। पर इसके निर्माता एंडरो सेल्सियस एक अनोखे वैज्ञानिक थे। जब उन्होंने पहली बार इस स्केल को विकसित किया, उन्होंने गलती से जमा दर्जा १०० और ऊबाल दर्जा ० डिग्री बनाया। पर कोई भी उन्हें इस गलती को कहने का हौसला न कर सका, सो बाद के वैज्ञानिकों ने स्केल को ठीक करने के लिए उनकी मृत्यु का इंतजार किया।

✻ प्रकाश की गति २,९९,७९२ किलोमीटर प्रति सेकेंड होती है। यह १,८६,२८७ मील प्रति सेकेंड के बराबर होती है। अगर हम प्रकाश की गति से अपनी नजदीकी गैलैक्सी पर जाना चाहें तो हमें २० साल लगेंगे।

✻ अक्टूबर १९९२ में लंदन के आकार जितना बड़ा बर्फ का गोला अंटार्कटिक से टूटकर अलग हो गया था।

✻ जब पानी से बर्फ बन रही होती है तो लगभग १०% पानी तो उड़ ही जाता है। इसलिए ही हमारे फ्रिज में ट्रे पर पानी जमा हो जाता है।

✻ न्युट्रॉन तारे इतने घने होते हैं कि उनका आकार तो एक गोल्फ बाल जितना होता है मगर द्रव्यमान ९० अरब किलोग्राम होता है।

✻ अगर धरती का आकार एक मटर जितना कर दें तो बृहस्पति इससे ३०० मीटर दूर होगा और प्लुटो २.५ किलोमीटर। मगर प्लुटो आपको दिखेगा नहीं क्योंकि तब इसका आकार एक बैक्टीरिया जितना होगा।

✻ सूर्य द्वारा छोड़े गए ८०० अरब से ज्यादा न्यूट्रॉन आपके शरीर में से गुजर गये होंगे जब तक आपने ये वाक्य पढ़ा है।

✻ विश्व के विद्युत उत्पादन का एक तिहाई सिर्फ बल्बों के द्वारा प्रकाश पाने में खर्च होता है।

✻ हर घंटे यूनिवर्स सभी दिशाओं में १ बिलियन मील से भी ज्यादा फैल जाता है।

✻ इतिहास का पिता हेरोडोटस को कहते हैं।

✻ स्विट्जरलैंड में राष्ट्रपति के शासन का कार्यकाल एक साल का होता है।

✻ सर्वप्रथम कागजी मुद्रा का प्रचलन चीन में हुआ था।

✻ भारत का सबसे बड़ा पशुओं का मेला सोनपुर (बिहार) में लगता है।

✻ क्रांतिकारियों में सबसे पहले फांसी खुदीराम बोस को दी गयी थी।

✻ विश्व में नील नदी का पानी गर्म होता है।

✻ भारतीय रेलवे - भारत में पहली रेलगाड़ी १६ अप्रैल १८५३ को बंबई व ठाणे के बीच चली थी, जिसने लगभग ३४ कि.मी. की दूरी तय की थी। दूसरी रेलगाड़ी सन १८५४ में हावड़ा से हुगली के बीच चली थी। भारतीय रेलवे बोर्ड की

स्थापना मार्च १९०५ में की गई थी। भारतीय रेलवे का विश्व में दूसरा व एशिया में प्रथम स्थान है। हिमसागर एक्सप्रेस भारत की सर्वाधिक दूरी तय करने वाली रेलगाड़ी है जो कन्याकुमारी से जम्मू तवी के बीच सप्ताह में एक दिन चलती है। भारतीय रेलवे की लगभग ६२.३७० कि.मी. मार्ग पर १२६७० रेलगाड़ियां चलती हैं जो लगभग ७१०० स्टेशनों से गुजरती हैं। भारतीय रेलवे में लगभग १६.१२ लाख नियमित तथा लगभग २ लाख आकस्मिक कर्मचारी कार्यरत हैं।

✻ रेडक्रॉस का जन्म- रेडक्रॉस नामक संस्था अंतर्राष्ट्रीय मानवतावादी संगठन के रूप में मानी जाती है। प्रारंभ में यहा संस्था केवल युद्ध में जख्मी हुए सैनिकों की सेवा का कार्य करती थी परंतु अब सभी प्रकार के मानवी दुखों को हल्का करने में अपना योगदान करती है। विश्व के सभी देशों में अब रेडक्रॉस की शाखाएं, जाति, धर्म, राष्ट्र इत्यादि का विचार न करते हुए समर्पित भावना से कार्यरत हैं।

रेडक्रॉस की स्थापना २४ जून १८५९ में जॉन हेनरी ट्यूरांट ने की, अपने व्यवसाय के सिलसिले में जब ड्यूरांट लावार्डी नामक शहर में गए हुए थे, उस समय फ्रांस और ऑस्ट्रिया के बीच युद्ध चल रहा था। उसने देखा युद्ध में जख्मी हुए हजारों स्त्री-पुरुष चिकित्सा के अभाव में दम तोड़ रहे थे। ड्यूरांट पर इस बात का गहरा प्रभाव पड़ा उसने अपना काम छोड़ा और वह जख्मी लोगों के उपचार में लग गया। उसके प्रयोग से अनेक घायल बच गए। इसके बाद ड्यूरांट ने यह प्रचार प्रारंभ किया कि युद्ध में जख्मी सैनिक इंसान ही होते हैं और उनको मदद देना प्रत्येक आदमी का कर्त्तव्य है। इसका आम जनता पर अच्छा परिणाम हुआ। उसी की प्रेरणा से १८३४ में जिनेवा में १४ देशों ने मिलकर रेडक्रॉस की स्थापना की।

स्विट्जरलैंड एक शांतिप्रिय देश है। उस देश के ध्वज पर लाल पार्श्वभूमि पर सफेद फूल रहता था अत: रेडक्रॉस नामक अंतर्राष्ट्रीय संस्थान ने उसी की तर्ज पर सफेद पार्श्वभूमि पर लाल रंग का ध्वज अपनाने का निर्णय लिया। इसीलिए इस संस्था का नाम रेडक्रॉस पड़ा।

✻ कांच बनाने के लिए रेत की जरूरत पड़ती है। साधारण कांच बनाने के लिए रेत, चूना, पत्थर और सोडियम कार्बोनेट (सोडा-राख) को एक साथ गर्म किया जाता है। १९४५ में न्यू मेक्सिको मरुस्थल में जब पहले अणु बम का परीक्षण किया गया था, तब एक विस्तृत क्षेत्र कांच की एक परत में बदल गया था।

✻ दलदल रेत और पानी का मिश्रण होता है यह व्यक्ति को नीचे की ओर नहीं खींचता, लेकिन यदि व्यक्ति संघर्ष करते हुए जोर-जोर से हाथ-पैर चलाये तो नीचे की तरफ धंसने लगता है। यदि आसपास का कीचड़ धीरे-धीरे हटाकर सावधानी से तैरने की कोशिश की जाए, तो व्यक्ति आसानी से दलदल से बाहर आ सकता है।

✻ चाकू - हजारों साल पहले आदिमानव ने पत्थर के नुकीले टुकड़े से एक धारदार फलकवाला औजार बनाया। वह संसार का पहला चाकू था। जमीन के नीचे से आदिमानव के जीवाश्मों के साथ वैज्ञानिकों ने ऐसे पुरातन चाकू खोज निकाले हैं। जिनकी धार का मुकाबला आज के बेहतरीन चाकू भी नहीं कर सकते। इस चाकू को जब एक मरे हुए हाथी की चमड़ी पर चलाया गया तो वह आसानी से कट गयी। इस चाकू की खूबियों के आधार पर चीनी मिट्टी (सिरामिक) का ऐसा चाकू बनाया गया है जिनकी धारण हमेशा तेज और एक जैसी बनी रहती है। कुल्हाड़ी के बाद चाकू मनुष्य द्वारा बनाया गया सबसे पुराना औजार है। लोहे और कांसे के युग में पहली बार धातु के हत्थेवाले धारदार चाकू बनाए गए। रोमन लोगों ने स्टील के चाकू सबसे पहले बनाए। पिछले दिनों कुछ डॉक्टरों ने आपरेशन के समय चाकू की जगह पानी

की तेज धार का इस्तेमाल किया। दूसरे चाकुओं की तुलना में वह ज्यादा कारगर था। लेजर विधि का भी आजकल सर्जरी में उपयोग हो रहा है। दिखाई न देनेवाली फ्रीक्वेंसी के प्रकाश की इस बहती गर्म धार के चाकू से चीर- फाड़ करते समय शरीर से खून भी नहीं बहता है।

❋ पिनकोड - पिनकोड का विस्तार होता है पोस्टल इंडेक्स नंबर कोर्ड अर्थात डाक सूची अंक प्रणाली। पिनकोड हमेशा छह अंकों का होता है। यदि पिनकोड पांच या सात अंकों में लिखा मिले तो यह समझ लेना चाहिए कि पिनकोड गलत लिखा हुआ है। पिनकोड का प्रथम अंक (बाईं ओर) डाक क्षेत्रों को दर्शाता है। यह अंक हमेशा एक से आठ के बीच होगा, क्योंकि समस्त भारत को आठ डाक क्षेत्रों में विभक्त किया गया है। यदि पिनकोड का यह प्रथम अंक ८ हो तो यह बिहार डाक क्षेत्र को दर्शाता है क्योंकि डाक क्षेत्र संख्या ८ के तहत सिर्फ बिहार का भू भाग आता है। इसी प्रकार डाक क्षेत्र संख्या-१ के अंतर्गत दिल्ली, पंजाब, चंडीगढ़, हरियाणा, जम्मू-कश्मीर तथा हिमाचल प्रदेश आते हैं। वहीं डाक क्षेत्र संख्या - २ के तहत सिर्फ उत्तर प्रदेश आता है। डाक क्षेत्र संख्या ३ में गुजरात, राजस्थान, दादर और नगर हवेली तथा दमन दीव आते हैं। डाक क्षेत्र संख्या- ४ महाराष्ट्र, गोवा तथा मध्य प्रदेश को मिला है जबकि डाक क्षेत्र संख्या- ५ आंध्रप्रदेश तथा कर्नाटक को। डाक क्षेत्र संख्या- ६ में केरल, तमिलनाडु तथा लक्ष्यद्वीप आते हैं जबकि डाक क्षेत्र संख्या- ७ में उड़ीसा, पं. बंगाल आसाम, मणिपुर, नागालैण्ड, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश, मेघालय तथा अंडमान-निकोबार आते हैं। नये बननेवाले राज्य झारखंड, उत्तरांचल और छत्तीसगढ़ की डाक संख्या वही होगी जो वर्तमान में है यानी झारखंड का ८, उत्तरांचल का २ और छत्तीसगढ़ का ४। पिनकोड का दूसरा एवं तीसरा अंक जिले के मुख्य डाकघर की सूचना देते हैं। शेष बचे तीन अंक उस जिले के मुख्य डाकघर के अंतर्गत उस विशेष डाकघर की संख्या बताते हैं जो पत्र को पानेवाले व्यक्ति तक पहुंचाने का काम करता है।

हमें अपने पत्रों के पते पर पिनकोड अवश्य लिखना चाहिए। क्योंकि पिनकोड लिखे पतों के प्रेषण और वितरण में डाक विभाग को काफी सुविधा होती है। साथ ही हमारा पत्र सहज एवं शीघ्र अपने लक्ष्य तक पहुंच जाता है।

❋ विश्व का सबसे ऊंचा होटल बैंकॉक में है इसका नाम बाइयोक द्वितीय टॉवर है। इस होटल की ऊंचाई ३१९ है।

❋ विश्व का सर्वाधिक महंगा शहर जापान का टोक्यो शहर है।

❋ दुनिया में सबसे ज्यादा फिल्में भारत में बनती हैं। यह दर ७५४ फिल्म वार्षिक की है।

❋ विश्व का सबसे बड़ा रेलवे प्लेटफॉर्म अमेरिका मे है। इसकी लम्बाई १०६७ मीटर है।

❋ विश्व के अधिकांश बड़े शहरों में भूमिगत रेल सेवा यानी मेट्रो रेल होती है। इसी तरह लंदन की भूमिगत रेल सुरंग है जो सर्वप्रथम १८६३ में शुरू हुई थी, यह सबसे प्राचीन रेल सुरंग है। यह विश्व की सबसे बड़ी मेट्रो रेल सेवा भी है। इसकी कुल लंबाई ४१० किमी है। इसके जरिये प्रतिवर्ष ५०० मिलियन यात्री अपना सफर तय करते हैं। न्यूयॉर्क सब-वे की भूमिगत मेट्रो सेवा विश्व की सबसे व्यस्त मेट्रो सेवा है। इसके जरिये प्रतिवर्ष लगभग एक बिलियन यात्री सफर करते हैं।

❋ रहस्यमयी हैं ये मूर्तियां- ईस्टर द्वीप की पत्थर की विशाल मूर्तियों का आज भी रहस्य बना हुआ है। उस द्वीप में ८८७ विशाल मूर्तियां पाई गई हैं। दुनिया में ऐसे बहुत से रहस्य हैं, जो आज भी एक पहेली बने हुए हैं।

एलियन के लिए बनाई गई थीं ये लकीरें- दक्षिण अमेरिका का एक देश है पेरु। उसमें नाज्का के रेगिस्तान में करीब ८०

किलोमीटर लंबे क्षेत्रफल में जमीन पर उभरी हुई लकीरें बनी हैं, जो अंतरिक्ष से भी दिखाई देती हैं। यह क्षेत्र यूनेस्को की विश्व विरासत है। अनुमान है कि इसका निर्माण करीब दो-ढाई हजार वर्ष पूर्व हुआ है। लोगों की मान्यता है कि नाज्का के लोगों ने एलियन की उड़नतश्तरी की लैंडिंग के लिए ये लकीरें बनाई थीं। आसमान से फोटो लेने पर वे फूलों का रस चूसनेवाली हमिंग बर्ड जैसी दिखाई देती हैं।

सेंट फ्रैंसिस जेवियर का मृत शरीर तो ४५६ साल से ज्यों का त्यों हैं। सेंट जेवियर की मृत्यु २ दिसंबर १५५२ को हुई थी। उन्हें पहले मलक्का में दफनाया गया। दो वर्ष बाद मृत शरीर गोवा लाया गया। सन १६९५ में बेसिलिका ऑफ बॉम जीसस चर्च बना। उनका शरीर चांदी के ताबूत में इसी चर्च में रख दिया गया। आज भी हर १० वर्ष बाद लोगों को उनके शरीर के दर्शन कराए जाते हैं।

इंग्लैंड में सेलिस्बरी के उत्तर-पश्चिमी पठार पर खड़ी उन विशाल चट्टानों का रहस्य आज भी बरकरार है, जो ४००० वर्ष पुरानी हैं। नीले पत्थर की चार-चार टन तक भारी चट्टानों के दो घेरे बनाए गए हैं। पुरातत्ववेताओं का कहना है कि इन्हें वहां से लगभग ४०० किलोमीटर दूर प्रेसेली की पहाड़ियों से लाया गया।

येती (बिगफुट) वैज्ञानिक और दूसरे खोजकर्ता लाख कोशिश कर चुके हैं, लेकिन अब तक इसका सच सामने नहीं आया है। उसके पैरों के बड़े-बड़े निशान मिले हैं। कई पर्वतारोहियों ने भी येती को देखने का दावा किया है।

टीपॉट बाओबाब- मैडागास्कर का एक अद्‌भुत पेड़ है, जो १००० साल पुराना है। इसकी ऊंचाई ८० मीठर (२६२ फुट) और परिधि २५ मीटर (८२ फुट) तक है। इसके फूले हुए तने में सैकड़ों लीटर पानी जमा रहता है, जो सूखे के समय इसकी पानी की जरूरत को पूरा करता है।

❋ ४ एकमात्र ऐसा नंबर है, जिसमें वर्णमाला यानी अक्षरों की संख्या भी ४ ही है।

❋ मानव आंखों में दस मिलियन से भी अधिक रंगों की पहचान और अंतर करने की क्षमता होती है।

❋ कभी १० लाख डॉलर में बिकने को तैयार था गूगल- गूगल को अमेरिका के स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय पीएचडी के दो छात्रों लैरी पेज और सर्गेई ब्रिन ने ४ सितंबर १९९८ में खड़ा किया था। २००४ में इसकी सार्वजनिक सेवाएं शुरू की गई थीं। आज यह दुनिया भर में फैले अपने डेटा केंद्रों से करीब १० हजार सर्वर चलाता है। लेकिन १९९९ में इसके संस्थापक इसे १० लाख डॉलर में बेचने को तैयार हो गए थे।

❋ इंद्रधनुष केवल सुबह या देर शाम को ही नजर आता है।

❋ अंतरिक्ष में एस्ट्रोनॉटस् द्वारा पिया जानेवाला पहला सॉफ्ट ड्रिंक कोका कोला है।

❋ स्प्रिंग टेंपल बुद्ध - चीन के हेनान में बनी भगवान बुद्ध की इस प्रतिमा को देखो। कमल के आकार के स्टैंड पर बनी बुद्ध की इस मूर्ति की ऊंचाई भी लोगों को खास आकर्षित करती है। भगवान बुद्ध की इस मूर्ति को अब तक दुनिया के सबसे ऊंची प्रतिमा का दर्जा प्राप्त था, मगर भारत में स्टैच्यू ऑफ युनिटी के बन जाने से यह दूसरे नंबर पर है। बुद्ध की यह प्रतिमा १० मिटर लंबे कमल के सिंहासन पर खड़ी है, जिसमें तांबे के ११०० टुकड़े शामिल हैं। इस स्टैंड से लेकर मूर्ति की ऊंचाई १५३ मीटर है। इसकी सुंदरता पर्यटकों को खास आकर्षित करती है।

❋ एक ही चट्टान से बना विशाल मंदिर - कैलाश मंदिर महाराष्ट्र में स्थित एलोरा के ३२ गुफा मंदिरों में से एक है।

इसका वास्तुशिल्प कमाल का है, जो पल्लव और चालुक्य शैली की झलक दिखाता है। इसकी सबसे बड़ी खासियत है कि यह एक ही चट्टान से बना है, जो एक अजूबा है। इसका निर्माण सन ७५६-७७३ के बीच राष्ट्रकूट राजा कृष्ण-१ ने करवाया था। कैलाश मंदिर को हिमालय के कैलाश पर्वत का रूप देने का प्रयास किया गया है।

❋ एडमंड हैली (सन १६५६-१७४२) इंग्लैंड के इस वैज्ञानिकों ने पृथ्वी व उसके वातावरण की संरचना के मौलिक सिद्धांत दिए। उन्होंने कहा कि १४५६, १५३१, १६०७ व १६८२ में नजर आए धूमकेतु एक ही है और १७५८ में वह फिर नजर आएगा। बाद में उसे हैली का धूमकेतु नाम दिया गया।

❋ श्रीकृष्ण का प्रिय फूल- श्रीकृष्ण के प्रिय कृष्ण कमल पुष्प में पूरी महाभारत है। यह फूल पुरुषोत्तम मास यानी मल मास में तीन साल में एक बार ही खिलता है। मल मास तीन साल में बननेवाली तिथियों के योग से बनता है, इसलिए इसे अधिक मास भी कहते हैं। इस फूल में १०० बैगनी पत्तियां होती हैं, जो कौरवों की प्रतीक हैं। इसके बाद पांच हरे कोंपल है, जो पांच पांडवों के प्रतीक हैं। उसके ऊपर तीन कोपल ब्रह्मा, विष्णु और महेश के प्रतीक हैं। बीच में सुंदर्शन श्रीकृष्ण का स्वरूप है।

❋ पहली भारतीय मिस टीन एज इंटर कॉन्टिनेंटल पैजेंट- एलिजावेथ अनिता रेड्डी मिस टीन एज इंटर कॉन्टिनेंटल पैजेंट का ताज पहननेवाली पहली भारतीय हैं। उन्हें यह अवॉर्ड १९७८ में अरुबा की राजधानी आरांजेश्टाड में मिला था। वह १९७७ में फेमिना टीन प्रिंसेस और १९८० में फेमिना मिस इंडिया वर्ल्ड के लिए भी चुनी गई थीं। मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता में उनका स्थान १५ वां रहा था।

❋ रोते रोते चुप कराने का तरीका - अमेरिकी वैज्ञानिकों ने रोते बच्चे को चुप कराने का नया तरीका खोजा है। रोनेवाले बच्चे को अगर उसी की आवाज टेप करके सुनवाई जाए तो वह रोना बंद कर देता है। छोटा बच्चा दुनिया की चीजों के बारे में कम जानता है मगर अपनी आवाज को पहचान लेता है।

❋ टूथब्रश का मूल आविष्कार १६वीं शताब्दी में हुआ था। वक्त के साथ टूथब्रश के ब्रिसल्स (दाँत साफ करनेवाले रेशे) का मैटीरियल बदलता रहा, टूथब्रश के हैंडिल की ग्रिप और एंगिल बदलते रहे, इलेक्ट्रिक टूथब्रश भी आए पर मूल डिजाइन आज भी वही है। दाँतों की सफाई के लिए सुबह सभी को टूथब्रश की जरूरत पड़ती है।

सभ्यता की शुरुआत में इंसान पेड़ों की कोमल टहनियों की कूची से दाँत साफ किया करता था। इसे दातून कहते थे।

दुनिया का पहला टूथब्रश बनाने का श्रेय चीन को जाता है। चीनी इतिहास के मुताबिक ग्यारहवीं शताब्दी के आसपास वहाँ सुअर के बालों से टूथब्रश बनाए जाने की शुरुआत हुई। यह सिलसिला लगभग चार सौ सालों तक चला और अंतत: कृत्रिम बालों से बने टूथब्रश आने के बाद सुअरों को इंसानों के दांत साफ करने के लिए अपने बाल नुचवाने की इस मुसीबत से मुक्ति मिली।

अब यह नायलॉन के बने होते हैं और इसे सबसे पहले ड्यूपोंट डी निमारश ने बनाया था। इस टूथब्रश को डॉक्टर बेस्ट मिरेकलके नाम से प्रचारित किया गया। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान न केवल अमेरिका में इसकी लोकप्रियता काफी बढ़ी बल्कि फौजियों के साथ यह दुनिया के कई देशों में पहुंचा। टूथब्रश से अनजान सभ्यताएं और समुदाय दाँत साफ करने की इस नई चीज से परिचित हुए और धीरे-धीरे इसने दुनिया के अधिसंख्य वॉशबेसिन्स के ऊपर अपनी जगह बना ली।

❋ नीला क्यों दिखाई देता है आकाश - जब तेज हवा चलती है या बहुत से लोग कहीं एक साथ चलते हैं तो बारीक मिट्टी या गर्द उड़ती है। हवा में धूल कणों के होने से वह सांस के साथ नाक में जाते हैं और सांस लेने में तकलीफ होती है आकाश का नीला रंग भी इन्हीं धूल कणों की देन है। सूर्य की किरणें जब धरती पर पड़ती हैं तो पर्यावरण में फैले धूल-कण रुकावट डालते हैं। सूर्य से निकलनेवाली छोटी और नीली किरणों को यह धूल-कण चारों तरफ फैला देते हैं और आकाश को नीली रंगत में रंग देते हैं।

वातावरण में फैले इन कणों के कारण ही सूर्यास्त के समय आकाश में लाली फैलती है। बादलों के रंग कभी सफेद और कभी सलेटी रंग में रंग जाते हैं। यह छोटे-छोटे कण मिट्टी से उपजते हैं। हवा में फैले असंख्य कणों को बनाने में समुद्र का भी बड़ा योग है। हर बार जब लहरें टूटती हैं तो हवा में अनेक नमक के बारीक कण घोल देती हैं। धरती पर चलने से, उद्योगों से पत्थरों की या दूसरे तरह की खानों से, सीमेंट के कारखानों से, आटे की चक्कियों आदि से बहुत मात्रा में धूल के कण हवा में मिलते रहते हैं।

सुबह खिड़की से कमरे में सूर्य की किरणें पड़ती हैं तब हम इन बेहद छोटे कणों को देख सकते हैं। यहीं नहीं इन कणों में दूर कहीं नक्षत्रों से आनेवाली गर्द के भी कण शामिल होते हैं। धूल-कण या गर्द की सबसे बड़ी खासियत है कि इसमें एक जगह से दूसरे जगह तक हवा के जरिए पहुंचने या यात्रा करने की अद्‌भुत क्षमता है। धूल-कण केवल सूर्य की किरणों के रंगों को बिखेरकर धरती को अनेक रंगों के जादू से चमत्कृत करने का ही काम नहीं करते, ये हवा में ज्यादा हैं तो धरती के तापमान को भी कम करते हैं।

❋ जोवियन उपग्रहों लो, यूरोपा तथा कैलिस्टो का पहली बार दूरबीन के माध्यम से गैलिलिओ गैलिली महान वैज्ञानिक ने निरीक्षण किया था।

❋ सन १९८७ में सत्यजीत राय इस महान भारतीय विभूति को उनकी कहानियों के लिए फ्रांस के प्रतिष्ठित पुरस्कार लीजियन डी ओनिओर से सम्मानित किया गया था।

❋ यदि राणा प्रताप के पास चेतक था तो कोपेनहेगन ड्यूक ऑफ वेलिंगटन के पास था, जिस पर सवार होकर उन्होंने वाटरलू का का युद्ध लड़ा था

❋ टिनटिन कॉमिक्स श्रृंखला में शरारती और अधिक चालाक अब्दुल्ला का पिता बेन कलिश एजाब है।

❋ छींक आमतौर पर तब आती है जब हमारी नाक के अंदर की झिल्ली, किसी बाहरी पदार्थ के घुस जाने से खुजलाती है। नाक से तुरंत हमारे मस्तिष्क को संदेश पहुंचता है और वह शरीर की मांसपेशियों को आदेश देता है कि इस पदार्थ को बाहर निकालें, छींक जैसी मामूली क्रिया में पेट, छाती, डायफ्राम, वाकतंतु, गले के पीछे और यहां तक कि आंखों की मांसपेशियां काम करती हैं। ये सब साथ मिलकर काम करती हैं और पदार्थ बाहर निकाल दिया जाता है। कभी-क़भी एक छींक से काम नहीं चलता तो कई छींके आती हैं।

जब हमें जुकाम होता है तब छींकें इसलिए आती हैं जुकाम की वजह से हमारी नाक के भीतर की झिल्ली में सूजन आ जाती है और उससे खुजलाहट होती है।

❋ मध्य युग में लोगों की औसत आयु ३० वर्ष होती थी। बोत्सवाना, लिसोथी तथा स्विट्झरलैंड जैसे देशों में आज भी

जीवन दर इतनी ही कम है।

❋ मध्य युग में एक किसान स्वयं द्वारा बोए गए बीजों के एक थैले से सिर्फ ३ थैले भुट्टे ही उगा सकता था। आज वह इससे बहुत अधिक झाड़ लेता है। इसका कारण कृत्रिम खादें हैं।

❋ १२९० के आसपास फ्रांस तथा इंग्लैंड के सभी यहुदीधर्म के अनुयायियों को वहां से देश निकाला दे दिया गया था। इंग्लैंड में कई सदियों तक इस कानून को तोडा नहीं गया था।

❋ मध्यकालीन भारत में शहर बहुत कम परन्तु बहुत बड़े और प्रभावशाली हुआ करते थे।

❋ घड़ी के आविष्कार की कहानी - सूरज की छाया का उपयोग कर समय बताने वाली घड़ियां भारत में और लगभग प्राचीन यूनान यानी ग्रीस में पानी से चलनेवाली अलार्म घड़ियां हुआ करती थीं, लेकिन आधुनिक घड़ी के आविष्कार का मामला कुछ पेंचीदा है। वर्ष १५७७ में स्विट्जरलैंड के जॉस बर्गी ने अपने एक खगोलशास्त्री मित्र के लिए घड़ी की मिनट वाली सुई का आविष्कार किया, इनसे पहले जर्मनी के न्यूरमबर्ग शहर में पीटर हेनलेन ने ऐसी घड़ी बना ली थी, जिसे एक जगह से दूसरी जगह ले जाया सके। लेकिन जिस तरह हम आज हाथ में घड़ी पहनते हैं वैसे पहली घड़ी पहननेवाले आदमी थे जाने माने फ्रांसीसी गणितज्ञ और दार्शनिक ब्लेज पॉस्कल। इन्होंने कैलकुलेटर का आविष्कार किया। लगभग १६५० के आसपास लोग घड़ी जेब में रखकर घूमते थे, ब्लेज पॉस्कल एक रस्सी से इस घड़ी को हथेली में बांधते थे, ताकि वे काम करते समय घड़ी देख सकें, उनके कई साथियों ने उनका मजाक भी उड़ाया था।

प्राचीन काल में लोग समय को जानने के लिए सूरज का सहारा लेते थे। धीरे-धीरे छाया, तारों आदि का प्रयोग होने लगा। संसार की पहली घड़ी सूरज ही थी, जिसे धूप घड़ी का नाम दिया गया। सबसे पुरानी धूप घड़ी ३५०० वर्ष पहले मिस्र में बनाई गई थी। यूनानियों ने सर्पिल चक्र नाम की धमप घड़ी बनाई। इस घड़ी में छाया एक वक्र पृष्ठ पर पड़ती थी। अधिकतर धूप घड़ियों में दिन के केवल चार भाग किए गए थे।

लगभग २००० वर्ष पूर्व, सूर्योदय से सूर्यास्त तक के समय को बारह भागों में बांटा गया। बाद में यही बारह घंटों में बदल गए। यदि वे चाहते तो दिन को १५ या १६ घंटों में भी बांट सकते थे। दिन की तरह रात को भी कुछ लोगों ने बारह घंटों में बांट दिया। ये धूप घड़ियां सैकड़ों वर्षों तक अपना राज बनाये रहीं। धूप घड़ी के साथ समस्या यह थी कि बारिश के दिनों में तथा रात को समय का पता नहीं चल पाता था। शायद इसी के हल के लिए जल घड़ी बनाई गई।

जल घड़ी धातु की एक बोतल होती थी, जिसकी पैंदी में छेद होता था। बोतल में पानी भर दिया जाता था, जो छेद से टपकता रहता था। दूसरे प्रकार की जल घड़ी में कटोरे में छेद कर दिया जाता था। एक बड़े बर्तन में पानी भर कर छेदवाला कटोरा उसमें तैरा दिया जाता था। कटोरे में जैसे-जैसे पानी भरता जाता था, कटोरा डूबता जाता था। लोग कटोरे के डूबने से समय का अंदाजा लगा लेते थे।

बगदाद के सम्राट हारू-उल-उसीद ने ११५० वर्ष पूर्व महान सम्राट शार्लमन को एक विशेष प्रकार की घड़ी भेंट की थी। यह घड़ी कांसे की थी, जिस पर सोने का काम था। इसमें बारह घंटों के लिए बारह छोटे-छोटे दरवाजे थे। एक घंटे बाद एक दरवाजा खुलता और पीतल की गेंद लुढ़क कर तल पर गिरती। गेंद के गिरने से टनटनाहट होती, जिससे समय का पता आसानी से चल जाता।

जल घड़ियों में भी समस्याएं आने लगी थीं। कभी पानी जम जाता तो कभी पानी सूख जाता। इससे मिनटों और सैकण्डों का पता नहीं चल पाता था, इसलिए रेत घड़ी का आविष्कार किया गया। इनको घंटा घड़ी का नाम दिया गया, लेकिन रेत घड़ियां अधिक समय तक प्रयोग नहीं की गई।

इसके बाद आग द्वारा समय मापा जाने लगा। धारीदार मोमबत्तियां, गांठ लगी रस्सियां या तेल भरा लैम्प जलाकर लोग समय का पता लगाते थे।

११०० वर्ष पहले से प्रचलित घड़ी को रूप देने का प्रयास शुरू किया गया। करीब ५०० वर्ष पहले छोटी घड़ियां बनने लगीं, लेकिन इसका प्रयोग राजा-महाराजा या रईस ही करते थे। २००० वर्ष तक लगातार घड़ियों पर प्रयोग होते रहे। धीरे-धीरे इसमें मिनट और सैकेंड को भी शामिल कर लिया गया। लगभग ५०० वर्ष पूर्व से घड़ियों का प्रचलन खूब शुरू हो गया था। १७१५ के आसपास ब्रिटिश सरकार ने बढ़िया और नई घड़ी बनानेवाले को दस हजार पौंड का ईनाम देने की पेशकश की।

अतीत से वर्तमान तक प्रचलित घड़ियों ने हजारों व लंबी यात्रा तय की है, तब जाकर आज हमारे सामने घड़ी का निखरा हुआ रूप आया है। हमारी सांसों के साथ-साथ घड़ी का दिल भी तेजी से धड़कता रहता है।

✻ १२४६ की संख्या में कुल ८९ नंबर १४ होंगे।

✻ इनमें से ग्रेनाइट में कोशिकाएं नहीं होतीं- मनुष्य, प्याज का छिलका, ग्रेनाइट तथा मेपल की पत्ती।

✻ हृदय से रक्त को शरीर के अन्य भागों तक ले जानेवाली नलियों के जाल को रक्त वाहिनियां कहते हैं।

✻ नाटो का पूरा रूप है नॉर्थ अटलांटिका ट्रीटी ऑर्गेनाइजेशन। इस अंतर्राष्ट्रीय संगठन की स्थापना १९४९ में उत्तरी अटलांटिका महासागर के तट पर अवस्थित देशों की सामूहिक सुरक्षा के लिए की गयी थी। १७ मार्च १९४८ को ब्रिटेन, बेल्जियम नीदरलैंड्स, लक्जमबर्ग और फ्रांस ने सैन्य गठबंधन की। लेकिन सोवियत संघ की सैन्य शक्ति का मुकाबला करने के लिए इसमें अमेरिका को भी शामिल करना जरूरी था।

४ अप्रैल १९४९ को अमेरिका के अलावा कनाडा, पुर्तगाल, इटली, नॉर्वे, डेनमार्क और आइसलैंड भी इसमें शामिल हो गये। इस संधि में कहा गया कि किसी सदस्य देश या देशों पर किया गया हमला सब पर किये गये हमले के रूप में देखा जायेगा और अगर ऐसा होता है तो सब मदद करेंगे।

✻ विश्व की सबसे लम्बी रेल सुरंग जापान की सीकन है। इसकी लम्बाई ५३.९० किमी है। इसके बाद नम्बर आता है यूरोप की सबसे बड़ी चैनल सुरंग का। इसकी लम्बाई ४९.९४ किमी है।

✻ विश्व का सबसे बड़ा बांध कनाड़ा के एल्बर्टा में स्थित है। सिंक्रूड टेलिंग्स नामक इस बांध का आयतन ५,४०,०००,००० क्यूबिक मीटर है।

✻ विश्व में सर्वाधिक मीठे की खपत डेनमार्क में है। यहां प्रति व्यक्ति प्रति वर्ष १७ किलोग्राम के लगभग मीठा खाया जाता है, इसमें सात किलोग्राम चॉकलेट होती है।

✻ विश्व का सबसे ऊंचा रिहायशी टॉवर शिकागो का लेक प्वाइन्ट टावर है। ७० मंजिला इस टॉवर की ऊंचाई १९७ मीटर है।

❋ खारा क्यों होता है समुद्र का पानी?

समुद्र के पानी का खारापन इसमें विभिन्न स्रोतों से घुलनेवाले लवणों के लगातार जमने का परिणाम है। नदियों और झरनों के पानी में प्रकृति के अन्य पदार्थों से आये लवण घुलते हैं। लेकिन क्योंकि उनकी मात्रा कम होती है इसलिए नदी झरनों का पानी हमें मीठा लगता है। लेकिन जब यह पानी समुद्र में पहुंचता है तो वहां लवण जमा होते जाते हैं। इनमें खास लवण है सोडियम क्लोराइड जो नमक बनाते हैं। इनका आवास काल बहुत लंबा होता है यानी जब ये समुद्र में पहुंच जाते हैं तो करोड़ों वर्ष तक वहीं जमा रहते हैं, इसीलिए समुद्र का पानी हमें खारा लगता है।

❋ फायर ब्रिगेड - कुछ दशकों पहले जब कहीं आग लग जाती थी तो प्रत्येक व्यक्ति आग से लड़ता-जूझता था लोग आग बुझाने के लिए बाल्टी सेना बना लेते थे। वे एक पंक्ति में आग लगने वाले स्थान से नदी या कुएं तक कतार बना लेते थे तथा एक दूसरे के हाथ में पानी की भरी बाल्टियां देते जाते थे। अंतिम व्यक्ति आग पर पानी डालता रहता था और वही सभी तक जानकारी पहुंचाता।

लंदन शहर में सन १६६६ में एक भयंकर अग्निकांड हुआ, जिसमें १५ हजार भवन जल गये। उनमें सेंटपाल का गिरजाघर भी था। तब अंग्रेजों ने आग से लड़ने के लिए हाथ से चलनेवाला पम्प बनाया, जो एक मोटे पाइप द्वारा आग पर पानी का छिड़काव करता था नागरिक तक आग बुझानेवाली कंपनियों के सदस्य बनने लगे। ये सदस्य हर काम को छोड़कर जहां आग लगी होती थी, वहां आग बुझाने के लिए पहुंच जाते थे। नगर की ओर से घंटी बजानेवाला नियुक्त किया जाता था। जो रात को सड़कों व गलियों में गश्त लगाता था तथा आग लगने पर नागरिकों को सचेत करता था। वह ही आग से लड़नेवाला सामान भी संभाल कर रखता था। इसी बीच बीमा कंपनियों ने भी आग बुझानेवाले दस्ते गठित किए। जो बीमा हुए भवनों की आग तो जरूर बुझाते थे, मगर अन्य स्थानों पर लगी आग से उसका कोई वास्ता नहीं होता था। सन १८३५ में न्यूयार्क शहर ने अपने पहले सवैतनिक अग्निशामक दस्ते की स्थापना की, जिसमें चार सदस्य होते थे। उन्हें प्रति वर्ष २५० डॉलर मिलते थे। अगले साल उनकी संख्या बढ़ाकर ४० कर दी गयी। तब उन्हें शामक पुलिस कहा जाने लगा। न्यूयॉर्क में ही सन १८५५ में पहला अग्निगृह (फायर हाउस) बनाया गया।

आज अमेरिका में लगभग एक हजार से अधिक अग्निशामक हैं जिनमें लगभग बीस हजार अग्निशामक सेवक काम करते हैं। इसके अतिरिक्त इंग्लैण्ड में भी हजारों अग्निशामक हैं। आज भारत के प्रत्येक बड़े शहर एवं जिला स्तर पर अग्निशामक स्टेशन हैं, जिनमें लगभग एक लाख व्यक्ति काम करते हैं।

❋ सरोजिनी नायडू को भारत कोकिला कहा जाता है।

❋ अर्थशास्त्र के क्षेत्र में नोबेल पुरस्कार प्राप्त करनेवाले एकमात्र भारतीय का नाम अमर्त्य सेन।

❋ प्रसिद्ध सितार वादक पंडित रवि शंकर की पुत्री का नाम अनुष्का शंकर है जो भारतीय शास्त्रीय संगीत के साथ ही पश्चिमी संगीत में भी समान रूप से पारंगत है।

❋ गांधीनगर गुजरात की राजधानी है।

❋ विश्व का सबसे ऊंचा देश तिब्बत है।

❋ भारत में सबसे पहले जो समाचार पत्र छपा, उसका नाम बॉम्बे कैरियर था।

❋ भारतीय संस्कृति का प्रथम ग्रंथ ऋग्वेद है।

❋ संसार में सबसे बड़ी लाइब्रेरी मास्को में है। उसमें एक करोड़ दस लाख से भी अधिक पुस्तकें हैं।

❋ इंडोनेशिया में दिल्ली नाम का तथा कनाडा में लखनऊ नाम का स्थान है।

❋ दहाड़ता धुआं - मध्य अफ्रीका में अपना आधा मार्ग तय कर लेने के बाद जैम्बेजी नदी एकाएक १०० मीटर गहरे और दो किलोमीटर लम्बे खड्डे में कूद पड़ी है और धुंध तथा पानी की फुहारों के विशाल बादलों को जन्म देती है। स्थानीय लोग इसे जलप्रपात को मोसाई ओआ तून्या कहते हैं, जिसका अर्थ है दहाड़ता धुआं। दुनिया उसे विक्टोरिया जलप्रपात के नाम से जानती है और यह दुनिया के सबसे अद्‌भुत जलप्रपातों में गिना जाता है। इसका मुकाबला हो सकता है तो उत्तर अमेरिका के न्याग्रा जलप्रपात से। जाम्बिया-जिम्बाब्वे की सीमा पर स्थित विक्टोरिया प्रपात को यह नाम अंग्रेज खोजी डॉ. डेविड लिविंग्स्टोर ने दिया। वह इसे देखनेवाले पहले यूरोप वासी थे।

❋ सबसे पहले बनी अलार्म घड़ी में केवल सुबह ४ बजे ही अलार्म बज सकता था।

❋ जेट विमानों में केस्टर ऑयल का प्रयोग ल्यूब्रिकेंट की तरह किया जाता है।

❋ इलेक्ट्रिक चेयर का आविष्कार एक डेंटिस्ट ने किया था।

❋ अंतर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस १० दिसंबर को मनाया जाता है।

❋ बूंदी का किला राजानगर सिंह ने बनवाया था।

❋ तुगलकाबाद का संस्थापक ग्यासुदीन तुगलक था।

❋ कोटा में जगमोहन महल का निर्माण राजकुमार ब्रजकुमार ने करवाया था।

❋ धोलपुर में कानपुर महल शाहजहां ने बनवाया था।

❋ फिरोजशाह तुगलक शासक ने सर्वप्रथम लोकनिर्माण विभाग की स्थापना की।

❋ अजंता की गुफाओं का निर्माण गुप्त शासकों ने करवाया था।

❋ दरगाह अजमेर शरीफ का निर्माण सुंल्तान ग्यासुद्दीन ने करवाया था।

❋ उदयपुर में सहेलियों की बाड़ी महाराणा फतह सिंह ने बनवाई थी।

❋ बूंदी में छत्र महल का निर्माण रानी छत्रसाल ने करावया था।

❋ कलिंग पुरस्कार विज्ञान क्षेत्र के लिए दिया जाता है।

❋ सरस्वती सम्मान साहित्य क्षेत्र में योगदान के लिए दिया जाता है।

❋ मैन ऑफ डेस्टिनी नेपोलियन बोनापार्ट को कहा जाता है।

❋ ग्रेंड मैन ऑफ ब्रिटेन ग्लेडस्टोन को कहा जाता है।

❋ कविगुरु नाम से रवींद्र नाथ ठाकुर को जाना जाता है।

❋ भारत का शेक्सपियर महाकवि कालिदास को कहा जाता है।

❋ तोता ए हिद के नाम से अमीर खुसरो को जाना जाता है।

❋ एतमादूद्दौला का मकबरा नूरजहां ने बनवाया।

❋ हैदराबाद में चार मीनार का निर्माण कुली कुतुबशाह ने करवाया।

❋ अकबर का मकबरा जहांगीर ने बनवाया।

❋ पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव कांग्रेस का लाहौर अधिवेशन में दिया गया।

❋ कांग्रेस नरम व गरम दल में १९०७ में विभाजित हुई।

❋ आजाद हिंद सरकार की स्थापना सुभाष चंद्र बोस ने की।

❋ वीमेन्स इंडिया एसोसिएशन की स्थापना लेडी सदाशिव अय्यर ने की।

❋ आमिर खान जो अतुल्य भारत के बाद रोड सेफ्टी कैंपेन से भी हटाए गए।

❋ एक औसतन लैड की पेंसिल से अगर एक लाइन खींची जाए तो वह ३५ किलोमीटर लम्बी होगी जिससे ५०००० अंग्रेजी शब्द लिखे जा सकते हैं।

❋ वितस्ता युद्ध- यह युद्ध सिकंदर एवं पोरस के बीच ३२६ ई.पू. में हुआ था। जिसमें सिकंदर विजयी हुआ था इसे हाइडेस्पीज या झेलम का युद्ध के नाम से भी जाना जाता है।

❋ चन्द्रगुप्त मौर्य- सेल्यूकस युद्ध- मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य एवं सेल्यूकस निकेटर के बीच ३०५ ई.पू. युद्ध हुआ जिसमें चन्द्रगुप्त मौर्य विजयी हुआ। सेल्यूकस ने इस युद्ध में चन्द्रगुप्त से संधि कर जिसके अनुसार काबुल, कंधार, हेरात, तथा मकरान चन्द्रगुप्त को दिया गया। सेल्यूकस निकेटर ने अपनी पुत्री का विवाह चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ कर दिया।

❋ हर्ष- पुलेकेशिन द्वितीय- यह युद्ध लगभग ६३०-६३४ ई. में पुष्यभूति वंश के हर्षवर्धन तथा चालुक्य शासक पुलेकेशिन द्वितीय के बीच हुआ था जिसमें हर्षवर्धन पराजित हो गया था। इस युद्ध की जानकारी पुलेकिशन द्वितीय के एहोल लेख से प्राप्त होती है।

❋ तराईन का प्रथम युद्ध- यह युद्ध ११९१ ई. में मुहम्मद गौरी एवं पृथ्वीराज चौहान बीच हुआ था। इस युद्ध में पृथ्वीराज चौहान विजयी हुआ।

❋ तराईन का द्वितीय युद्ध- ११९२ ई. में पृथ्वीराज चौहान एवं मुहम्मद गौरी के बीच दोबारा युद्ध हुआ जिसमें मुहम्मद गौरी विजयी हुआ।

❋ चंदावर का युद्ध- चन्दावर का युद्ध ११९४ ई. में मुहम्मद गौरी एवं कन्नौज के राजा जयचन्द के बीच हुआ था जिसमें गौरी विजयी हुआ।

❋ पानीपत का प्रथम युद्ध- यह युद्ध बाबर एवं इब्राहिम लोदी के बीच १२ अप्रैल १५२६ ई. में हुआ था। इस युद्ध में बाबर ने विजय प्राप्त करके मुगल साम्राज्य की स्थापना की। बाबर द्वारा इस युद्ध में पहली बार तोपखाना एवं तुगलमा नीति का प्रयोग किया था।

❋ खानवा का युद्ध- बाबर एवं राणा सांगा के बीच यह युद्ध १६ मार्च १५२७ ई. को हुआ जिसमें बाबर विजयी हुआ।

❋ चन्देरी का युद्ध- चन्देरी का युद्ध २९ जनवरी १५२८ को बाबर एवं मेदिनीराय के बीच हुआ था। इसमें भी बाबर विजयी हुआ।

❋ सोना- विश्व का ग्यारह प्रतिशत सोना भारतीय गृहणियों के पास मिलता है। भारत के बाद अमेरिका, जर्मनी की महिलाओं का नंबर आता है।

❋ बाल दिवस- भारत में ही बाल दिवस १४ नवंबर को मनाया जाता है वो भी १४ फरवरी यानी वैलेंटाइन डे के ठीक ९ महीने के बाद।

❋ एयर एंडिया- एयर इंडिया ही एक ऐसा विमान है जो कि महिला स्टाफ को हायर करता है क्योंकि महिलाओं के हल्के होने से हर साल ५००००० डॉलर सालाना ईंधन की बचत होती है।

❋ २१ भारतीय जवान- १८९७ में अफगान से लड़ाई करते हुए २१ भारतीय जवानों ने अकेले १००० अफगानों से मुकाबला किया था।

❋ गुलाबी गैंग- गुलाबी गैंग अकेला महिलाओं का ऐसा संगठन है जो कि अपने पति के अत्याचारों से निपटने के लिए बनाया गया है। महिलाएं खुद अपने पति को झाड़ुओं से पिटती हैं अगर वो उनको गाली देते हैं या मारते पीटते हैं।

❋ इकोसिस्टम- अकेला भारतीय किसान १३६० एकड़ की जमीन को जोत सकता है।

❋ ३०० मिलियन भगवान अकेला भारत देश ऐसा है जहां ३०० मिलियन अलग-अलग तरह के भगवानों को पूजा जाता है। आपको हर गांव में नये ईष्ट देव मिलेंगे।

❋ कैदियों के लिए नौकरी- भारत के संविधान के मुताबिक कैदियों को भी सुधरने का मौका मिलता है, यहां तक की कैदी नौकरी भी कर सकता है और टीचर जैसे सम्मानित पद को भी पा सकता है।

❋ हीरा- भारत में ही चार हजार साल पहले हीरे की खोज हुई थी।

❋ भारतीय रेलवे सर्विस- विश्व में सबसे ज्यादा कर्मचारी भारतीय रेलवे सर्विस में है।

❋ बुद्ध का स्टेच्यू साल- १९५४ में पुरातत्वविभाग ने स्वीछन में खुदाई के दौरान बुद्ध का स्टेचू प्राप्त किया था जो कि भारतीय सभ्यता का प्रतीक है।

❋ स्वर्ण मंदिर- सोने से जड़े स्वर्ण मंदिर में हर रोज एक हजार लोग लंगर करते हैं जो कि अपने आप में ही सुखद और बड़ी बात है।

❋ बार्बर रमेश बाबू- विश्व में अकेले रमेश बाबू ऐसे बार्बर है जिन्होंने मात्र अपने बाल काटने और दाढ़ी बनाने की हूनर से इतने पैसे कमा लिये कि उनके पास रॉल्स रॉय जैसी कार है।

❋ खीरा- खीरा व ककड़ी एक ही प्रजाति के फल हैं। खीरे में विटामिन बी व सी, पोटेशियम, फास्फोरस, आयरन आदि विद्यमान होते हैं। पेट की गैस, अम्लता, छाती की जलन में नियमित रूप से खीरा खाना लाभप्रद होता है।

जो लोग मोटापे से परेशान रहते हैं उन्हें सवेरे इसका सेवन करना चाहिये। इससे वे पूरे दिन अपने आपको फ्रेश महसूस करेंगे। खीरा हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को भी बढ़ाता है। खीरे को भोजन में सलाद के रूप में अवश्य लेना चाहिये। नमक, काली मिर्च व नींबू डालकर खाने से भोजन आसानी से पचता है व भूख भी बढ़ती है।

आप यदि उदर विकार से परेशान हैं तो दही में खीरे को कसकर उसमें पुदीना, काला नमक, काली मिर्च, जीरा व हींग डालकर रायता बनाकर खाएं आराम मिलेगा।

घुटनों के दर्द को भी दूर भगाता है खीरे का सेवन। घुटनों के दर्दवाले व्यक्ति को खीरे अधिक खाने चाहिये तथा साथ में एक लहसुन की कली भी खा लेनी चाहिये।

पथरी के रोगी को खीरे का रस दिन में दो-तीन बार जरूर पीना चाहिये। इससे पेशाब में होनेवाली जलन व रुकावट दूर होती है।

खीरा रक्तचाप को भी काबू में रखने में कारगार है। इसमें मौजूद पोटेशियम ज्यादा और कम दोनों तरह के रक्तचाप को नियंत्रित रखता है। अगर आपके नाखून बार-बार टूट जाते हैं तो खीरे का सेवन शुरू करें, यह आपके नाखूनों को मजबूती देता है। गैस की समस्या में भी खीरा बेहद लाभदायक होता है।

अगर आप गुर्दे या यकृत की समस्या से परेशान हैं तो खीरे का नियमित रूप से सेवन करने से आपके बालों को भी फायदा होगा। अपने बालों का सेहतमंद रखने के लिए खीरे के जूस का सेवन करें।

इसके नियमित इस्तेमाल से बाल लंबे और घने होते हैं। दांतों और मसूढ़े से जुड़ी समस्या और पायरिया जैसे रोग में भी खीरा फायदेमंद है।

✻ मानव गर्भनिरोधक गोलियां गोरिल्ला पर भी काम करती है।

✻ अगर आप जोर से छींके तो आप अपनी पसली तुड़वा सकते हैं।

✻ अगर आप छींकते वक्त अपनी आंखे जोर से खुली रखने की कोशिश करें तो आपकी आयबॉल तिड़क सकता है।

✻ मोबाईल - २०१० में विश्व में मोबाइल फोनों की संख्या पांच अरब तक पहुंच गई है। चार वर्ष पहले मोबाइल फोनों की संख्या २.२ अरब थी। तार से जुड़े टेलीफोनों की संख्या में, गत चार वर्षों में एक करोड़ साठ लाख की कमी हुई है। पिछले चार सालों में जो दो अरब पचास करोड़ नए मोबाइल आये हैं उनमें से दो अरब कनेक्शन विकासशील देशों में हैं।भारत में हर महीने दो करोड़ नए फोन कनेक्शन जुड़ रहे हैं। इस समय मोबाइल फोन के सिग्नल पृथ्वी के ९० प्रतिशत हिस्सों पर पहुंच रहा है, जो २०१५ तक बढ़कर सौ प्रतिशत हो जाएगा। दुनिया के ग्रामीण इलाकों में ७५ प्रतिशत जनसंख्या तक मोबाइल सिग्नल पहुंचता है और ग्रामीण इलाकों की ५० प्रतिशत जनता इसका उपयोग करती है। विश्व में पांच अरब मोबाइल कनेक्शन है। कुछ विकसित देशों में जितने लोग आबाद है उससे दोगुनी संख्या में वहां मोबाइल फोन है। २०१५ तक भी विश्व की केवल ५० प्रतिशत जनसंख्या के पास ही मोबाइल फोन होगा और इसे सौ प्रतिशत होने में २०२० तक का समय लगेगा। यूरोप और पूर्व सोवियत यूनियन में शामिल देशों में मोबाइल फोन की सुविधा सौ प्रतिशत तक पहुंच गई है।

✻ कंप्यूटर के स्पेस बार बटन पर उसका नाम नहीं होता।

✻ गांधीजी ने डांडी यात्रा साबरमती आश्रम से शुरु की थी।

✻ राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन २००५ में प्रारम्भ की गई है।

✻ सोडियम का रासायनिक नाम एनए है।

✻ भारत में सबसे विशाल म्यूजियम चेन्नई में है।

✻ भारत में सबसे विशाल चिड़ियाघर कोलकाता में है।

✻ भारत में सबसे विशाल एक्वेरियम मुंबई में है।

✻ विश्व में सबसे बड़ा चिड़ियाघर कुगर नेशनल पार्क (दक्षिण अफ्रीका) में है।

✻ रावण की पत्नी का नाम मंदोदरी था।

✻ भारत में प्याज का सबसे बड़ा उत्पादन राज्य महाराष्ट्र है।

✻ कलम का सिपाही मुंशी प्रेमचंद को कहा जाता है।

✻ विश्व में सर्वाधिक तेल भंडार वाला देश सऊदी अरब है।

✻ स्विडन की किरूना सिटी दुनिया की सबसे बड़ी कच्चे लोहे की खानों के लिए प्रसिद्ध है।

✻ टाइटैनिक की चिमनिया इतनी बड़ी थी कि इनमें से दो ट्रेनें गुजर सकती थी।

✻ सिगरेट लाइटर की खोज माचिस से पहले हुई थी।

✻ हमारी अंगुलियों के निशानों की तरह हमारी जुबान के भी निशान भिन्न होते है।

✻ विश्व में अभी भी ३० प्रतीशत लोग ऐसे हैं जिन्होंने कभी मोबाइल का प्रयोग नहीं किया।

✻ औसतन हर दिन १२ नव जन्में बच्चे किसी और मां-बाप को दे दिए जाते हैं।

✻ आईसलैंड में पालतू कुत्ता रखना कानून के विरुद्ध है।

✻ इजिप्त के पिरामिडों में फैरो बादशाह की कब्र में पाया गया शहद।

✻ वेटिकनसिटी दुनिया का सबसे छोटा देश है। इसका क्षेत्रफल ०.२ वर्ग मील है और इसकी आबादी लगभग ७७० है। इनमें से कोई भी इसका परमानेंट नागरिक नहीं है।

✻ धरती के गुरूत्वाकर्षण के कारण पर्वतों का १५००० मीटर से ऊंचा होना संभव नहीं है।

✻ रोम दुनिया का वो शहर है जिसकी आबादी ने सबसे पहले १० लाख का आकड़ा पार किया था।

✻ २६९ मीटर की ऊंचाई वाले टाइटैनिक को अगर सीधा खड़ा कर दिया जाए तो यह अपिने समय की हर इमारत से ऊंचा होता।

✻ थाईलैण्ड- सफेद हाथियों के देश थाईलैण्ड में छुट्टियां बहुत अच्छे ढंग से मनाई जा सकती हैं। यह देश सुंदर होने के साथ-साथ काफी रास्ता भी है। थाईलैण्ड में आपको ३०० रुपए से भी कम में रहने के लिए कमरा मिल जाएगा।

✻ कंबोडिया- कंबोडिया के अंकोरवाट मंदिर को तो पूरा विश्व जानता है। कंबोडिया में भी आप ३०० से ३५० रुपए के बीच होटल में लजीज खाना खा सकते हैं। अगर आप बीयर के शौकीन हैं तो यह जगह आपको और भी पसंद आएगी क्योंकि यहां बीयर मात्र १५ से १८ रुपए में मिल जाती है।

✻ वियतनाम- वियतनाम भी एक बेहद खूबसूरत देश है। इस देश में आप केवल ६० से ७० रुपए में वियतनामी खाने का लुत्फ उठा सकते हैं।

✻ बुल्गेरिया- बुल्गेरिया दक्षिण-पूर्वी यूरोप का एक सुंदर देश है। बुल्गेरिया में खाना और रहना दोनों ही आपके बजट के अंदर बहुत आसानी से आ जाएंगे।

✻ भूटान - प्राचीन मंदिरों के देश भूटान जाने के लिए भूटान में आप केवल ७० रुपए में बेहद ही लजीज खाने का मजा

ले सकते हैं। इस देश में रहने के लिए आपको बहुत ही कम रुपए खर्च करने पड़ेंगे।

✻ समुद्री गुफा के बीच खूबसूरत रेस्टोरंट- इस रेस्टोरंट का नाम गोरोटा पालाजीस है। ये साऊथ इटली के पोलीगानो ए मारी में बनाया गया है। इस रेस्टोरेंट के पास ही एडरीआटिक नामक समुद्र है। यह चट्टान को काटकर बनाया गया खूबसूरत रेस्टोरेंट है। यहां का नजारा किसी जन्नत से कम नहीं है। इस रेस्टोरेंट में १७०० वीं सदी से ही लोग अपने मनोरंजन को लिए आते हैं। इस जगह की खूबसूरती को देखते हुए लेखक इसकी खूबसूरती को देखें तो वह इस पर एक पूरी किताब लिख सकता है। यहां पर लोग अपनी जिंदगी के हसीन पल बिताते हैं। इस खुशनुमा पलों को अपने दोस्तों और परिवार के बिताते हैं। आपको इस रेस्टोरेंट में नृत्य, मस्ती करने के बहुत सी सुविधाए मिलती हैं।

✻ प्योंगयांग का मशहूर रूगयोंग होटल- १९८० में बना और हाल ही में रेन्नोवेट हुआ ये होटल प्योंगयांग की सबसे ऊंची बिल्डिंग है। ये होटल आज तक खुला ही नहीं। फ्योदोर के मुताबिक, उन्होंने ऐसा सुना है कि स्ट्रक्चर में कोई दोष है इसलिए ये कभी नहीं खुलेगा, जबकि ये पूरा स्ट्रक्चर दोबारा बन चुका है।

✻ नॉर्थ कोरिया की फैशन पुलिस- ये यूनिवर्सिटी में तैनात किए जानेवाले डिसिप्लिनरी अफसर हैं। प्योंगयांग में इनकी संख्या काफी ज्यादा है। इनके निशाने पर महिलाएं होती हैं, जो उनके कपड़ों पर नजर रखती हैं। इनकी नौकरी महिलाओं के पैन्टस और कलरफुल कपड़ों को रेग्युलेट करना है।

✻ नॉर्थ कोरिया की अकेली क्रूज फेयरी मान ग्योंग बॉन्ग हो- ये नॉर्थ कोरिया की अकेली क्रूज फेयरी मान ग्योंग बॉन्ग हो है। ये जापान और नॉर्थ कोरिया के बीच ट्रैवल करती है।

✻ लाइमस्टोन के बने १७८० चॉकलेट हिल्स - दुनिया में ऐसी कई जगहें हैं जो जितनी विचित्र हैं, उतनी खूबसूरत भी। इन जगहों का इतिहास भी उतना ही अजीबो-गरीब है। यहां का नजारा ऐसा है कि जो एक बार आए वो बार बार यहां की सुंदरता की तरफ खिंचा चला आता है। फिलिपीन्स के बोहोल में स्थित द चॉकलेट हिल्स हैं। यहां पर ५० वर्ग किलोमीटर में १७७६ से ज्यादा ऐसे पहाड़ फैले हैं। बोहोल आानेवालों के लिए यह जगह आकर्षण का केंद्र बनती है।

यहां सभी पहाड़ घास से ढके हुए हैं। सूर्य की तेज किरणों के कारण घास का रंग सुनहरा हो जाता है जिससे ये पहाड़ चॉकलेट के जैसे दिखाई देने लगते हैं। इस जगह को यूनेस्को की वर्ल्ड हैरिटेज में जोड़ा जाएगा।

यह कोन या डोम आकार के पहाड़ लाइमस्टोन के बने हैं। इन पहाड़ों की ऊंचाई ३० से ५० मीटर के बीच है। सबसे ऊंचा पहाड़ १२० मीटर का है। यहां की सरकार ने इसे फ्लैगशिप टूरिस्ट डेस्टिनेशन खिताब दिया है। इन पहाड़ों के बीच की जगह को खेती के काम में लाया गया है। ज्यादातर जगह पर चावल की खेती है। १९८८ में इसे नेशनल जियोग्राफिकल मॉन्यूमेंट घोषित किया गया है।

✻ गुलाम वंश की स्थापना १२०६ ई. में कुतुबुद्दीन ऐबक ने किया था। वह गौरी का गुलाम था।

✻ कुतुबुद्दीन ऐबक ने अपनी राजधानी लाहौर में बनायी थी।

✻ कुतुबमीनार की नींव कुतुबुद्दीन ऐबक ने डाली थी।

✻ दिल्ली का कुवत-उल-इस्लाम मस्जिद एवं अजमेर का ढाई दिन का झोपड़ा नामक मस्जिद का निर्माण ऐबक ने करवाया था।

❋ कुतुबुद्दीन ऐबक को लाख बख्श (लाखों का दान देनेवाला) भी कहा जाता था।

❋ प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय को ध्वस्त करनेवाला ऐबक का सहायक सेनानायक बख्तियार खिलजी था।

❋ ऐबक की मृत्यु १२१० ई. में चौगन खेलते समय घोड़े से गिरकर हो गयी। इसे लाहौर में दफनाया गया।

❋ ऐबक का उत्तराधिकारी आरामशाह हुआ जिसने सिर्फ आठ महिनों तक शासन किया।

❋ आरामशाह की हत्या करके इल्तुतमिश १२११ ई. में दिल्ली की गद्दी पर बैठा।

❋ इल्तुतमिश तुर्किस्तान का इल्बरी तुर्क था, जो ऐबक की मृत्यु के समय से वह बदायूँ का गवर्नर था।

❋ इल्तुतमिश लाहौर से राजधानी को स्थानान्तरित करके दिल्ली लाया।

❋ इल्तुतमिश पहला शासक था, जिसने १२२९ ई. में बगदाद के खलीफा से सुल्तान पद की वैधानिक स्वीकृति प्राप्त की।

❋ इल्तुतमिश की मृत्यु १२३६ ई. में हो गयी।

❋ इल्तुतमिश के बाद उसका पुत्र रूकनुद्दीन फिरोज गद्दी पर बैठा, वह एक अयोग्य शासक था।

❋ रेलवे के संबंध में बड़ी लाइन तथा छोटी लाइन का अर्थ है- बड़ी और छोटी लाइन का तात्पर्य रेल पटरियों के मध्य की दूरी (चौड़ाई) से है। बड़ी लाइन (ब्रोड गेज) की पटरियों के मध्य १.६७६ मीटर की दूरी होती है। छोटी लाइन की पटरियों के मध्य १.० मीटर की दूरी होती है। इसी कारण इसे मीटर गेज कहते हैं। इसके अलावा एक और छोटी लाइन होती है। जिसे नैरोगेज कहते हैं। इसकी पटरियों के मध्य ०.७६२ मीटर की दूरी होती है।

❋ जंग लगने से लोहे का वजन बढ़ जाता है- क्योंकि जंग लगने से लोहा ऑक्सीजन के साथ पानी की उपस्थिति में आयरन ऑक्साइड बनाता है। इसे ही प्रचलित भाषा में जंग लगना कहते हैं। जंग में लोहे के भार के साथ ऑक्सीजन का भार भी शामिल हो जाता है। इसी कारण जंग लगे लोहे का भार सामान्य होने से अधिक होता है। बढ़ा हुआ वजन वायुमंडल से शोषित ऑक्सीजन के बराबर होता है।

❋ उबले हुए दूध में ठंडा होने के बाद उस पर मलाई कैसे जम जाती है?

यदि किसी अघुलनशील पदार्थ के इतने छोटे-छोटे टुकड़े किए जाएं कि किसी विलायक में उस का समरूप मिश्रण तैयार हो जाए तो उस मिश्रण को कोलाइड घोल कहते हैं। कच्चा दूध ऐसा ही मिश्रण होता है। उसमें चरबी के अघुलनशयील कण मिले होते हैं। दूध उबलने पर व नन्हे कण तेजी से गतिशील हो जाते हैं। इस प्रक्रिया में वे एक दूसरे के पास भी आ जाते हैं और जुड़कर चरबी के बड़े कण बना लेते है। चरबी का यही बड़ा कण कहलाता है।

❋ बैजेटियम वास्तुकला का बेजोड़ नमूना विश्व प्रसिद्ध हेजिया सोफिया मस्जिद और चर्च दोनों हुआ करता था।

तुर्की के कॉन्सटैंटिनोपोल में स्थित हेजिया सोफिया का निर्माण सन ५३२ से सन ५३७ के बीच रोमन सम्राट जस्टिनियन प्रथम ने ईसाई कैथडरल के रूप में किया था, लेकिन जब १४५३ में तुर्कों ने इस शहर को जीत लिया तो उसे मस्जिद के रूप में इस्तेमाल किया जाने लगा लेकिन १९३५ के बाद से हेजिया सोफिया को एक म्यूजियम के रूप में चलाया जा रहा है।

❋ गरुड़ इंडोनेशिया राष्ट्र का राष्ट्रीय प्रतीक है - सही, हिन्दू पुराणों के अनुसार भगवान विष्णु का वाहन गरुड़ इंडोनेशियाई साहित्य और कला में भी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। ऐसा इसलिए है कि कभी इंडोनेशिया पर कई हिन्दू

राजाओं ने राज किया था। आधुनिक युग में इंडोनेशिया ने १७.८.१९४५ में डचों से आजादी हासिल की, इसलिए उनके राष्ट्रीय प्रतीकवाले गरुड़ के उड़ान पंख १७ हैं, पूंछ के पंख ८ हैं और उसके गर्दन के पंखों की कुल संख्या ४५ है।

* मनुष्य के शरीर का तापमान ९८.४० फारेनहाइट होता है।
* एग्जिमा चमड़ी की बीमारी है।
* जॉण्डिस यकृत की बीमारी है।
* पायरिया मसूढ़ों की बीमारी है।
* टाइफायड सम्पूर्ण शरीर की एक बीमारी है।
* मानव शरीर में जल की कमी के कारण जलाभाव हो जाता है।
* भोजन में लोहे की कमी से रक्ताल्पता रोग हो जाता है।
* इन्सुलिन की अपूर्णता से मधुमेह हो जाता है।
* रिकेट्सा रोग विटामिन डी की कमी के कारण होता है।
* समुद्री डाकू सिर्फ पुरुष ही नहीं होते थे। १६२० के लगभग ऐसे बोनी, मैरी रीड जैसी महिला समुद्री डाकू सक्रिय थीं।
* ब्रिटिश ताज के कुछ ज्यूल्स एक बड़े कच्चे हीरे से काटे गए थे जो १९०६ में दक्षिण अफ्रीका में खोजा गया था। यह बुनियादी पत्थर ६०० ग्राम वजनी था।
* ४५० मीटर लम्बे एक सुपरटैंकर को ब्रेक लगाने के लिए कई किलोमीटर दूरी की जरूरत होती है।
* स्वेज नहर के माध्यम से समुद्र यात्रा का खर्चा इस बात पर निर्भर करता है कि आप जो समुद्री जहाज ले जा रहे हैं उसकी लम्बाई तथा वजन कितना है।
* अक्सर रेलों की चौड़ाइयां अलग-अलग होती हैं।
* यह शब्द कहां से आए - इंटरपोल- यह इंटरनेशनल क्रिमिनल पुलिस ऑर्गेनाइजेशन का संक्षिप्त रूप है। इंटरपोल विश्व के सौ से अधिक देशों की पुलिस का एक मिला-जुला संगठन है। इसका मुख्य कार्यालय तथा सचिवालय फ्रांस की राजधानी पेरिस है। इंटरपोल का प्रारंभ १९२३ में यूरोप में हुअए था।

थिएटर- थिएटर शब्द ग्रीक भाषा के शब्द थिएट्रोन से बना है। यह मूलत: थिएस्थाई शब्द से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है देखना। अंग्रेजी में नाटक, नृत्य, संगीत आदि प्रस्तुत करने के लिए बनी इमारत को थिएटर कहते हैं।

इडियट- यह शब्द मूलत: ग्रीक भाषा का ईडिओटिस है, जिसका अर्थ है मूर्ख, अबोध या साधारण व्यक्ति। ग्रीक से यह शब्द लैटिन में आया। लैटिन में इसे इंडिओटा कहा गया, अर्थ भी अबोध व्यक्ति से है। अंग्रेजी में मूढ़ व्यक्ति को ईडियट कहते हैं।

ऑफिस- यह शब्द लैटिन भाषा के ऑफिसियम से बना है। ऑफिसियम का अर्थ कार्य करने से है। ऑफिसियम स्वयं ओपस व फैसीयर दो शब्दों से मिलकर बना है। ओपस का अर्थ कार्य व फैसीयर का अर्थ करना है। हिंदी में इसे कार्यालय कहते हैं।

* उत्तरी रोडेशिया की वाऊशी जाति की स्त्रियां सुहाग चिन्ह के रूप में एक लकड़ी की छड़ को होठों में छेदकर पहनती है।
* जवाहरलाल नेहरू ने अपनी महान रचना डिस्कवरी ऑफ इंडिया अहमदनगर किले में लिखी थी।

❋ महान संगीतकार उस्ताद अली अकबर खां सरोद के वाद्य के विशेषज्ञ थे।

❋ नीला, हरा तथा लाल यह तीन रंगीन टी.वी. स्क्रीन पर टॉट्स बनाते हैं।

❋ क्रेनियोलॉजी में मुख्यत: शरीर के खोपड़ी का अध्ययन किया जाता है।

❋ स्व. इंदिरा गांधी का मध्य नाम प्रियदर्शिनी था।

❋ स्वामी विवेकानंद के जन्म के समय नरेंद्र नाथ दत्त यह नाम रखा गया था।

❋ सूरज के प्रकाश से पत्तियां गरम क्यों नहीं होती?

सुबह-शाम सूर्य की धूप में अधिक गर्मी नहीं होती, लेकिन दिन चढ़ने के साथ ही सूर्य की गर्मी का प्रकोप बढ़ने लगता है और शाम होते-होते धीरे-धीरे उनकी तपन का तीखापन कम होने लगता है, दोपहर की तेज धूप में हर वस्तु गरम हो जाती है, लेकिन यह एक आश्चर्य और कौतुहल का विषय है कि दिनभर की कड़ी धूप में भी पेड़ पौधों की पत्तियां गरम नहीं होतीं। वे हमेशा हरी-भरी तरोताजा और ठंडी रहती हैं। पेड़ों की पत्तियां कोशिकाओं की कई परतों से मिलकर बनी होती हैं।

प्रत्येक पत्ती की कोशिकाएं ऊपर और नीचे की ओर बाह्य त्वचाओं से ढंकी रहती हैं। नीचे की त्वचाओं में अनेक छोटे-छोटे सूक्ष्म छिद्र होते हैं। ये छेद वाल्व की तरह काम करते हैं। ये वाल्व पत्ती और वायुमंडल के बीच गैसों के विनियम पर नियंत्रण रखते हैं। जब ये छेद खुलते हैं, तो वायुमंडल से कार्बन डाईऑक्साइड गैस पत्ती में अंदर प्रवेश करती है। इन्हीं छेदों से पत्तों के अंदर की ऑक्सीजन और जलवाष्प बाहर आती है। जब ये छिद्र बंद होते हैं, तो कोई भी गैस न अंदर जा सकती है और न पत्ती से बाहर आ सकती है।

सामान्य रूप से स्टोमेटा दिन के समय खुले रहते हैं और रात के समय बंद रहते हैं। इन स्टोमेटाओं से जलवाष्प बाहर आनेवाले जल की पूर्ति जड़ों द्वारा होती रहती है। इस प्रक्रिया को वाष्पोत्सर्जन क्रिया कहते हैं। इसी वाष्पोत्सर्जन प्रक्रिया के द्वारा पेड़ों पत्तियां धूप में भी ठंडी रहती हैं।

❋ हॉबिट फैन ने बनाया अनोखा भूमिगत संग्रहालय

स्विट्जरलैंड में काल्पनिक चरित्र हॉबिट्स (भूमिगत रहनेवाले बौने) के एक प्रशंसक ने उन्हें समर्पित करके एक भूमिगत संग्रहालय ही बना डाला है। जर्मनी के बेरंड ग्रेइसिंगर ने अपनी जमापूंजी से स्विट्जरलैंड के एक गांव जेनिन्स के बाहरी हिस्से में द ग्रेइसिंगर मिडल अर्थ कलैक्शन नामक संग्रहालय स्थापित किया है जो इस साल सितम्बर में आधिकारिक रूप से खोल दिया जाएगा।

३०० मीटर में फैले इस भूमिगत संग्रहालय की हॉबिट्स से संबंधित चीजें प्रदर्शित की जाएंगी जिनमें १०० से अधिक पेंटिंग के अलावा विभिन्न देशों से एकत्र की गई ३००० से अधिक पुस्तकें भी शामिल हैं। यहां से फैन्स हॉबिट्स से जुड़ी चीजें खरीद भी सकेंगे। अपनी तरह का दुनिया में यह सबसे बड़ा संग्रह होगा।

इस संग्रहालय की स्थापना के लिए ४८ वर्षीय बेरंड ने २० लाख यूरो खर्च किए हैं। उनका कहना है कि वह लम्बे समय से बिल्बो, फ्रोडो जैसे हॉबिट चरित्रों के फैन रहे हैं और वे यह सब पैसे कमाने के लिए नहीं कर रहे हैं। हाल ही में हॉबिट्स पर बनी एक हॉलीवुड फिल्म द हॉबिट एन अनएक्पैक्टेड ने भी रिकॉर्डतोड सफलता अर्जित की है।

❋ नकली बारिश - ५० से अधिक देश जरूरत पड़ने पर नकली बरसात का उपयोग करते हैं। चीन में बीजिंग

ओलिंपिक के उद्घाटन समारोह में भी कई जगह नकली बारिश हुई थी।

बादलों के बनने और बरसात होने की प्रक्रिया को समझकर वैज्ञानिकों ने ४० के दशक में ही ऐसी तरकीब खोज निकाली थी। जिससे बारिश करवाई जा सके। चूंकि इस विधि में बारिश अपने आप नहीं होती, बल्कि करवाई जाती है, इसलिए इसे नकली बारिश कहा जाता है। यह एक खास तरह की प्रक्रिया होती है जिसमें बादलों में इस तरह से बदलाव पैदा किया जाता है, जो इसे वर्षा के अनुकूल बना देता है। बादल बहुत छोटे-छोटे जलकणों से बने होते हैं लेकिन कई बार ये बहुत हल्के होने की वजह से बरस नहीं पाते। इसलिए वैज्ञानिकों ने इन जलकणों का आकार व भार बढ़ाकर पानी की बूंदों का रूप लेकर धरती पर बरसाया।

नकली बरसात की सबसे प्रचलित विधि में सिल्वर आयोडाइड या ठोस कार्बन डाईऑक्साइड (सूखी बर्फ) को विमान, मिसाइल या गैस के गुब्बारे के जरिए आकाश में फैलाया जाता है। जिससे वातावरण में मौजूद जलकण इनके साथ मिलकर सघन व भारी हो जाते हैं। सूखी बर्फ इन जलकणों को ठंडा करके बर्फकणां में बदल देती है। भार व सघनता बढ़ने से ये जमीन की तरफ नीचे आने लगते हैं और तापमान के अनुसार पानी की बूंदों या बर्फ के रूप में बरसने लगते हैं। इस तरह मनचाही जगह बरसात करवाने के लिए बादलों में नमी की मात्रा, हवा की रफ्तार व दिशा, तापमान वगैरह जैसी कई बातों का ध्यान रखना पड़ता है।

❋ इतिहास-ए-रसगुल्ला - १८६८ में कलकत्ता के नवीनदास नाम नामक एक हलवाई ने सबसे पहले रसगुल्ला बनाया। तब पनीर और मैदे की मिठाई चलन में थी। नवीनदास की कलकता के बाग बाजार में अपर चितपुर रोड पर एक मिठाई की दुकान थी। जो बहुत अच्छी नहीं चलती थी। लेकिन उसके दोस्त हमेशा हौसला अफजाई करते रहते थे। दोस्तों के कहने पर नवीनदास ने पीर की ऐसी मिठाई बनाने की सोची जो अलग और स्वादिष्ट हो।

उन्होंने पनीर के छोटे-छोटे गोले बनाकर चाशनी में डाले। लेकिन ये प्रयोग सफल नहीं रहा, क्योंकि चाशनी में गिरते ही गोले बिखर जाते। एक दिन नवीनदास ने आम चाशनी से थोड़ी अलग किस्म की चाशनी बनाकर उसमें पनीर के गोले छोड़े तो वह न ही टूटे न ही बिखरे।

उन्होंने एक गोला खाकर देखा तो इसके स्वाद से बहुत खुश हो गए। उन्होंने अपने अन्य मित्रों को भी ये मिठाई खाने को दी, वह भी इसे चखकर बहुत खुश हुए। उन्होंने मिलकर इस मिठाई को रसगुल्ले का नाम दिया। लेकिन रसगुल्ले की खोज के बाद इसकी बिक्री न होने के कारण नवीनदास को बहुत ही निराशा हुई। एक दिन मारवाड़ी सेठ भगवानदास बागला ने जब रसगुल्ले खाए तो इसके अनोखे स्वाद से बहुत प्रभावित हुए। वे नवीन दास की दुकान से रसगुल्ले खरीदकर अपने रिश्तेदारों को भेजने लगे। इसके बाद नवीन दास की दुकान भी अच्छी चल पड़ी और रसगुल्ले पूरे देश में प्रसिद्ध हो गए। कहते हैं कि सम्राट जॉर्ज पंचम, ख्रुश्चोव और बुलगानिन ने रसगुल्ले को बहुत पसंद किया था।

❋ रसगुल्ला मूल तौर पर बंगाल की मिठाई है लेकिन ये देशभर में बहुत पसंद की जाती हैं। रसगुल्ला लगभग हर राज्य में उपलब्ध होता हैं क्योंकि ये लोगों की सबसे पसंदीदा मिठाइयों में से एक है। रसगुल्ले का आविष्कार कब हुआ किसने किया और कैसे हुआ?

आज के समय में दूध से बननेवाली कई मिठाइयां बहुत प्रसिद्ध है और दूध से बननेवाली हर मिठाई को बनाने के लिए

दूध को फाड़कर छेना बनाया जाता है जिससे मिठाइयां तैयार की जाती हैं। लेकिन सालों पहले दूध को फाड़कर छेना बनाने पर रोक थी और इसके पीछे धार्मिक मान्यता थी। दरअसल गाय को हमारे देश में सबसे पूजनीय पशु माना गया है और उसके दूध को फाड़ना अशुभ समझा जाता था। सन १४९८ में वास्को डी गामा भारत आए और बाद में सन १५११ में मलक्का की विजय के बाद पुर्तगाली व्यापारियों का बंगाल से संपर्क बढ़ा और धीरे-धीरे पुर्तगालियों ने चित्तगाँव में कारखाने लगाने शुरू किए और यहाँ उनकी संख्या बढ़ते बढ़ते ५००० से भी ज्यादा हो गयी। पुर्तगाली पनीर के बहुत शौकीन थे और उनके व्यापार के चलते वहां छेने की डिमांड बढ़ने लगी। बढ़ते व्यापार के कारण भारतियों को भी दूध फाड़कर छेने बनाने से कोई आपत्ति नहीं रही।

छेने की बढ़ती मांग को देखते हुए बंगाली में मोइरा कहे जानेवाले हलवाइयों ने छेने के साथ कई तरह के प्रयोग करना शुरू किये। उस समय नोबिन चंद्र दास नाम के एक मोइरा हलवाई जो कलकत्ता के बाग बाजार में अपनी दास स्वीटस नाम की मिठाई की दुकान लगाते थे। उन्होंने १८६८ में छेने से मिठाई बनाने को लेकर एक प्रयोग किया और अपने प्रयोग में इन्होंने छेने को गोलाई देकर उसे चासनी में उबाला और इस तरह रसगुल्ले का आविष्कार किया। फिर एक दिन भगवन दास बागला जो की एक बहुत बड़े मारवाड़ी व्यापारी हुआ करते थे वो अपने परिवार के साथ जब नोबिन चंद्र दास की दुकान के सामने से गुजर रहे थे तब उनके बच्चे ने पानी पीने की मांग की और बच्चे को पानी पिलाने के लिए भगवन दास, नोबिन चंद्र दास की दुकान में गए और नोबिन चंद्र दास ने पानी के साथ बच्चे को रसगुल्ला भी खाने को दिया और जब बच्चे ने रसगुल्ला खाया तो उसे इतना स्वादिष्ट लगा की उसने और खाने की मांग की बच्चे की इतनी उत्सुकता देखकर भगवन दास से भी रहा नहीं गया और उन्होंने भी वो रसगुल्ला चखा।

❋ ब्रेल लिपि - ब्रेल सिस्टम एक तरह की लिपि है, जिसको दुनियाभर में नेत्रहीनों को पढ़ने और लिखने में छूकर व्यवहार में लाया जाता है। इस अनोखी कला को १८२१ में खोजा गया था। यह अलग-अलग अक्षरों, संख्याओं और विराम चिन्हों को दर्शाते हैं।

फ्रांसिसी लेखक ब्रेल को यह आइडिया नेपोलियन के उस कोड से आया, जिसमें लड़ाई के दौरान रात को अंधेरे में सैनिक बिना कुछ बोले अपनी बात एक दूसरे तक पहुंचा देते थे। यह नाइट राइटिंग के नाम से जाना जाता था। महत्वपूर्ण बात यह है कि फ्रांस के रहनेवाले ब्रेल खुद एक नेत्रहीन थे।

इसमें प्रत्येक आयताकार सेल में ६ वॉट्स होते हैं, जो थोड़े-थोड़े उभरे होते हैं। यह दो पंक्तियों में बनी होती हैं। इस आकार में अलग-अलग ६४ अक्षरों को बनाया जा सकता है। सेल की बाई पंक्ति में उपर से नीचे १,२,३ बने होते हैं। इसी तरह दांई ओर ४,५,६ बनी होती हैं। एक डॉट की औसतन ऊंचाई ०.०२ इंच होती है।

पढ़ने की तकनीक- ब्रेल स्क्रिप्ट को पढ़ने के लिए अंधे बच्चों में इतना ज्ञान होना जरूर होता है कि वो अपनी अंगुली को विभिन्न दिशाओं में सेल पर घुमा सकें। हालांकि दुनिया भर में इसको पढ़ने का कोई स्टैंडर्ड तरीका ईजाद नहीं है। ब्रेल स्क्रिप्ट को स्लेट पर भी प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अलावा इसे ब्रेल टाइपराइटर पर भी प्रस्तुत किया जा सकता है। अब ब्रेल स्क्रिप्ट को ८ डॉट्स के सेल में विकसित कर दिया गया है, ताकि दृष्टिहीनों को अधिक से अधिक शब्दों को पढ़ने की सुविधा उपलब्ध हो। इस आठ डॉट्स वाले ब्रेल स्क्रिप्ट सेल में अब ६४ की बजाय २५६ अक्षर, संख्या और

विराम चिन्हों के पढ़ सकने की सुविधा उपलब्ध करवाई गई है।

हालांकि ब्रेल स्क्रिप्ट नेत्रहीनों के पढ़ने और लिख सकने के उपाय का पहला अध्याय नहीं रहा है। इससे पहले भी १७वीं शताब्दी में इटली के जेसूट फ्रांसिस्को लाना ने नेत्रहीनों के लिखने-पढ़ने को लेकर काफी कोशिशें की थीं।

* सत्तर वर्ष की आयु तक हमारा हृदय २ अरब दो सौ पचास करोड़ बार धड़क चुका होता है।

* रात में सोते समय हमारी लंबाई बढ़ जाती है और सुबह उठने पर सामान्य हो जाती है।

* गर्म जल ठंडे पानी के मुकाबले भारी होता है।

* शरीर में दर्द ३५० फीट प्रति सेकेंड की रफ्तार से दौड़ता है।

* केवल एक प्रतिशत बैक्टीरिया ही हानिकारक होते हैं।

* अमेरिका के पास स्थित हवाई की पारंपरिक वर्णमाला में बारह शब्द हैं।

* सन् १८३८ में बरथौलिम्यू पारकर बिडर रायल एक्सचेंज एश्योरेंस कम्पनी में बीमांकित थे। उस समय आग लगने की एक घटना में कम्पनी के रिकॉर्ड जलकर नष्ट हो गए थे।अपनी स्मरण शक्ति के बल पर बरथैलिम्यू इन रिकॉर्डस् को दोबारा लिखने में कामयाब हो गया।

* जर्मन गणितज्ञ गोटफ्रीट १२ किताबों के महाकाव्यों को सुना सकता था।

* वॉरफेनी एमेडियस मुजार्ट विभिन्न संगीतकारों की तीन घंटे की संगीत गोष्ठी में हाजिर होने के बाद उसका पूरा स्कोर अपनी स्मरण शक्ति के बल पर लिख सकता था।

* जैन क्रिस्टियन सम्यूरस को ५०० किताबें याद थीं।

* कागज की कहानी - शुरू में कागज बनाने का काम बड़ा ही श्रमसाध्य था। आरंभिक युग में नील नदी के किनारे अधिक संख्या में पाए जानेवाले पैपायरस पेड़ के तने के रेशों से सबसे पहले कागज तैयार किया गया। कागज का सही रूप ईसा पूर्व २४०० वर्ष के लगभग मिस्र की सभ्यता में पाया गया है। पैपायरस तने से रेशे निकाल कर उन्हें साथ-साथ सीधा रखा जाता था, फिर उनके ऊपर अन्य रेशों की ९० डिग्री के कोण पर अनुप्रस्थ रूप से रखा जाता था। तने से निकलनेवाले गोंद से उन्हें चिपकाकर किसी भारी वस्तु से दबाकर चादरें तैयार की जाती थीं।

इसके बाद इन चादरों को पत्थरों या हाथीदांत से घिसकर नरम किया जाता था। पैपायरस पेड़ से बनाए जाने के कारण ही अंग्रजी में कागज को पेपर के नाम से जाना जाता है। इस तरह बना कागज धीरे-धीरे मिस्र के अलावा यूरोपी व अफ्रीकी सभ्यताओं में उपयोग में लाया जाने लगा। प्राचीन काल में भारत में अधिकतर लिखाई ताड़ के पत्तों पर की जाती थी। पहली बार चीनियों ने कागजी शहतूत के पेड़ के तने की छाल से कागज बनाने की एक विधि विकसित की। अरबवालों ने चीनियों से इस विधि को सीखा तथा उनके माध्यम से कागज निर्माण की जानकारी विश्व के अन्य देशों में फैलती चली गई। बाद में इस मूल विधि में अनेक विकासात्मक परिवर्तन करके विभिन्न प्रकार के कागजों को बनाने की आधुनिक तकनीकों का विकास किया गया।

कागज बनाने के लिए सबसे अधिक स्प्रूस, चीड़ और यूकेलिप्टस जैसे पेड़ों की लकड़ी के गूदे या लुगदी का इस्तेमाल किया जाता है। इनके अलावा सेल्यूलोज, कपड़ों के रेशों, जूट, बेकार पड़े पेड़-पत्तियों तथा उत्तरी अमेरिका और स्पेन में पाई

जानेवाली घास एस्पार्टो का उपयोग भी किया जाता है। विश्व में कागज का सबसे अधिक उत्पादन अमेरिका और जापान में किया जा रहा है। भारत में कागज बनाने के लिए मुख्यत: बांस, घास और भांग के पेड़ की लकड़ी का उपयोग किया जाता है।

❋ झांसी की रानी लक्ष्मीबाई पांच वर्ष की आयु में पढ़ना-लिखना सीखकर भगवान राम के ११०० विभिन्न नाम प्रत्येक दिन दो घंटे धार्मिक भावना से जीवन पर्यंत लिखती रहीं।

❋ आंध्र प्रदेश में भारत का पहला महिला न्यायालय बना।

❋ भारत का पहला नवोदय विद्यालय नावेगांवखैरी (नागपुर) में बना।

❋ १८५२ में कराची में भारत की पहली डाक टिकट प्रकाशित की गई थी।

❋ भारत की पहली प्रिंटिंग प्रेस १५५६ में पुर्तगालियों द्वारा गोवा में स्थापित की गई थी।

❋ मॉडर्न होर्स का वैज्ञानिक नाम इक्यूस कैबालस है।

❋ अंतर्राष्ट्रीय रेडक्रॉस के झंडे की संरचना स्विटजरलैंड के झंडे जैसी है। परंतु इनका रंग एक दूसरे के विपरीत है।

❋ पंचवर्षीय योजना का प्रारंभ १९५१ में हुआ।

❋ विश्व में एक सेकेंड में ४ शिशु जन्म लेते हैं।

❋ चॉकलेट- दक्षिण अमेरिका एवं अफ्रीका के गर्म व घने जंगलों में पाए जानेवाले पेड़ों के बीज दानों को इकट्ठा करके फैक्ट्रियों में भेजा जाता है, जहां बड़े-बड़े ओवन में इन्हें पकाया जा सके। इसके बाद इन्हें घोंटकर एक गाढ़े द्रव्य में बदल दिया जाता है। मीठा बनाने के लिए इसमें शक्कर, स्वाद व पौष्टिकता के लिए दूध मिलाया जाता है। इस मिश्रण को जब फैक्ट्री में भेजा जाता है तो वहां चॉकलेट के कई स्वादों व प्रकारों में ढाला जाता है। मशीनों के द्वारा इन्हें आकर्षक रूप दिया जाता है। कुछ लोग तो लगातार इनकी जांच करते हैं वह इस जांच के दौरान इन चॉकलेटों का थोड़ा-थोड़ा स्वाद लेते रहते हैं। चॉकलेट के स्वाद का सबसे पहले पता लगानेवाले लोग एफटेक (मैक्सिको) के थे। उन्होंने जमीन पर पड़े इन दानों को एक गाढ़े, कड़वे व झागदार पेय में बदला और उसे चाखोलटक नाम दिया। स्पैनिश लोग जब मैक्सिको गए तो इस पेय को स्पेन ले गए। वहां उन्होंने वनीला तथा शक्कर मिलाकर इसे मीठा बनाया।

❋ फ्रिज में रखी वस्तुएं अधिक समय तक ताजा रहती हैं- खाद्य पदार्थ तब तक ताजा रहते हैं जब कि उनमें उपस्थित सूक्ष्म जीवियों द्वारा रासायनिक सड़न न पैदा की जाए। फ्रिज का काम तापमान को कम बनाए रखना है। इस कम तापमान में सूक्ष्म जीवियों की क्रियाशीलता अपेक्षाकृत कम हो जाती है। इससे खाद्य पदार्थ अधिक समय तक ताजा बना रहता है।

❋ निकटदृष्टि व्यक्ति चश्मे में अवतल लेंस का प्रयोग करते हैं- निकटदृष्टि व्यक्ति निकट की वस्तुओं को भली प्रकार देख सकते हैं, लेकिन दूर की वस्तुएं उन्हें ठीक से नजर नहीं आतीं। इस दोष को मायोपिया कहते हैं। यह दोष या तो नेत्र गोलक के लंबा हो जाने के कारण पैदा होता है या फिर नेत्र लेंस की फोकस दूरी में कमी हो जाने से। उस दशा में नजदीक की वस्तुओं का प्रतिबिंब तो ठीक रेटिना पर बनता है और वे ठीक से दिखाई देती हैं। पर दूर की वस्तुओं का प्रतिबिंब रेटिना के सम्मुख आगे की ओर पड़ता है इसीलिए वे ठीक से नहीं दिखाई देतीं। इस कमी को दूर करने के लिए सही फोकस दूरी का अवतल लेंस चश्में में लगाया जाता है ताकि दूर की वस्तुओं का प्रतिबिंब रेटिना पर ठीक प्रकार से बने।

❋ सुखाए गए अथवा सूखा रक्त - युद्धकाल में रक्त को आवश्यकतानुसार प्राप्त करना, इकट्ठा करना और सहेजना वास्तव में कठिन कार्य होता है। इसलिए द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान रक्त को सुखाने का तरीका ढूंढा गया था ताकि सुखाया गया खून घायल सैनिकों के लिए युद्ध शिविर पर ले जाया जा सके और जरूरत पड़ने पर उसे गीला कर के घायल सैनिकों को चढ़ाया जा सके।

❋ गहरे नीले रंग का सूट मोमबत्ती की रोशनी में काला दिखाई देता है - मोमबत्ती की लौ में नीले रंग का अभाव होता है जबकि पीला रंग अधिक होता है। अत: जब पीले रंग की लौ नीले सूट पर पड़ती है तो वह नीले रंग को सोख लेती है इसलिए सूट का रंग काला दिखाई देता है।

❋ नदी से सागर में प्रवेश करते समय जहाज उछलता है - समुद्र के जल का घनत्व नदी के जल से अधिक होता है। अत: समुद्र जल द्वारा उत्पन्न किया उत्प्लावन बल नदी द्वारा उत्पन्न उत्प्लावन बल से अधिक होता है। अत: नदी से समुद्र में प्रवेश करते समय जहाज उछलता है।

❋ शिकागो का अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा इतना अधिक व्यस्त रहता है कि वहां औसतन प्रति घंटा २५ हवाई जहाज उड़ान भरते एवं उतरते हैं।

❋ सबसे पहले चीन ने कागज को नोटों के रूप में इस्तेमाल किया था। संयुक्त राज्य अमेरिका में कागज के सभी नोट वाशिंगटन डी.सी.में छपते हैं।

❋ भारत में वकील का कोट काला रहता है - अदालतों की वेशभूषा हमारे यहां अंगरेजी राज की निशानी है। यूरोप में न्यायाधीश और वकील लबादे पहनते हैं, ये लबादे पुराने राज दरबारों में लाल, काले और सफेद रंग के भी होते थे। बहरहाल इन परिधानों में दुनिया भर में बदलाव हो रहे हैं। हमारे यहां भी ऐसी मांग उठती है। हमारे वकील सफेद कपड़ों पर काले कोट और सफेद रंग की नेकटाइ लगाते हैं, जिसमें दो पट्टियां सामने की ओर होती हैं। इसे अब वकील अपने चिन्ह की तरह इस्तेमाल में लाते हैं। इस काले और सफेद के पीछे कुछ कारण बताये जाते हैं। सबसे बड़ा कारण है इस व्यवसाय की अंतर्विरोधी प्रवृत्ति। न्याय से जुड़े लोगों को दो विपरीत धारणाओं के बीच में से न्यायपूर्ण निर्णय को निकालना होता है। सफेद और काले रंग विपरीत धारणाओं के प्रतीक हैं। एक बात यह भी कही जाती है कि काला रंग सुरक्षा का रंग है।

❋ ट्रैफिक जाम होने की सबसे बड़ी घटना १६ फरवरी १९८० को फ्रांस में घटित हुई थी। जब लियोन से पेरिस की ओर जानेवाला मार्ग १७६ कि.मी. तक वाहनों से अवरुद्ध हो गया था।

❋ ब्रिटेन के लंकाशायर के ब्लैक पूल नामक समुद्र तट पर मनोरंजन के लिए सबसे अधिक व्यक्ति जाते हैं। अनुमानतया प्रति वर्ष वहां लगभग ६५ लाख सैलानी पहुंचते हैं।

❋ अनोखे संग्रहालय- पश्चिम जर्मनी का आफन बैंक म्यूजियम जूतों का म्यूजियम है। प्राचीनकाल की पादुका से लेकर मध्यकाल के नुकीले, चमक रोधी व आधुनिक फैशनयुक्त चमचमाते जूते, सभी वहां देखने को मिलते हैं। महिलाओं की सुकुमार चप्पलें, सैनिक बूट, धार्मिक खड़ाऊँ भारी व बेडौल जूते भी वहाँ सुरक्षित हैं। जूतों के संबंध अध्ययन करनेवाले छात्र, व्यवसायी या कलाकार यहाँ जूतों का पुराना इतिहास अच्छी तरह देख सकते हैं।

हैम्बर्ग नगर में आदिकालीन मिट्टी के पात्रों से लेकर, आधुनिक काँच की सुंदर बोतलों के हजारों नमूने रखे हुए हैं। उनमें

प्रारंभिक पत्थर, मिट्टी व लकड़ी की बोतलें भी हैं। इनसे पता लगता है कि आधुनिक बोतल का विकास कैसे हुआ। यहाँ एक बोतल है जिसके द्वारा प्राचीनकाल में समुद्र में गये पोत का संदेश भेजा जा सकता था।

स्पेनवर्ग में ताश के पत्तों का म्यूजियम है। वहाँ पर ताश के पत्तों के २००० खेलों के दाँव भी बिछे हैं। इसमें से कुछ खेल राजाओं व बादशाहों द्वारा खेले जाते थे हैम्बर्ग नगर में टोपियों का म्यूजियम है। प्राचीन युग के घास के टोपों से लेकर आधुनिक फैशनेबल टोप तक इसमें देख जा सकते हैं। ब्लैक फॉरेस्ट नगर में घड़ियों का म्यूजियम है। इस संग्रहालय में सन १८७६ ई. में बनी वह प्रथम घड़ी भी है जिसमें मुर्गे के आकार की एक सुई है, जो समय बतलाती है। वहाँ पर ऐसी अनेक मुर्गों की घड़ियाँ विद्यमान हैं।

❋ जब एल्यूमिनियम सोना और चांदी से महंगा था- एल्यूमिनियम एक नरम, हल्की और लचीली धातु है। पृथ्वी की परत में यह प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। सिलिकॉन और ऑक्सीजन के बाद यह सबसे ज्यादा मात्रा में पाया जाता है। एल्यूमिनियम बहुत प्रतिक्रियाशील धातु है। इस कारण ही यह मुक्त रूप से नहीं पाया जाता। यह धातु बहुत ही उपयोगी है क्योंकि यह मजबूत होने के साथ ही बहुत हल्का भी होता है। हवाई जहाज बनाने में भी इसका प्रयोग होता है। लगभग २०० साल पहले एल्यूमिनियम सोना और चांदी से भी महंगा था।

लगभग १८०० ई. में जब एल्यूमिनियम बहुत मुश्किल से पृथ्वी से निकाला जाता था, उस समय इसका मूल्य सोना और चांदी से भी ज्यादा था। नेपोलियन अपने खास मेहमानों को ही एल्यूमिनियम के विशेष बर्तनों में खाना खिलाता था। नेपोलियन को एल्यूमिनियम इतना प्रिय था कि वह अपने कुरते का बटन भी एल्यूमिनियम का ही बनवाता था।

❋ लिथुआनिया का प्रतीक ग्रैंड प्रिंस पैलेस - करीब २०० सालों से लिथुआनिया की राजधानी में स्थित ग्रैंड प्रिंस महल जर्जर हालत में रहा। तब इसके जीर्णोद्धार का पुनर्निर्माण के बारे में सोचना भी बेतुकी बात प्रतीत होती परंतु २१ वीं सदी की शुरूआत पर १३ साल पहले लिथुआनिया ने इसके पुनर्निर्माण का फैसला किया गया। इस महल को लगभग दोबारा तैयार किया गया है। ठीक वैसा ही जैसा यह हुआ करता था। अब इसे आम जनता के लिए खोल दिया गया है। इस महल में ही बनाए गए नेशनल म्यूजियम के डायरेक्टर वाइडस डोलिन्सकास कहते हैं, हर देश को उन चीजों की जरूरत होती है जो उनकी राष्ट्रीय सम्प्रभुता तथा राष्ट्रीय सम्मान के प्रतीक हों।

इस महल के निर्माण से हम ऐतिहासिक विरासत तथा इस इमारत के सांस्कृतिक महत्व को पुनर्स्थापित करना चाहते थे। यह महल ४ मंजिला है जिसके पुनर्निर्माण में एक दशक से अधिक का समय लगा है और अभी भी थोड़ा काम रहता है। पूरी तरह तैयार हो जाने पर यह १४००० वर्ग मीटर का कॉम्प्लेक्स होगा। १३वीं सदी में इसी महल में लुथिआनियन सम्राट माइंडायुगास रहा करता था जिसके बाद तीन सदी से अधिक समय तक यहां इस देश के ग्रैंड प्रिंस रहते रहे। कई बार ग्रैंड प्रिंस ही पोलैंड के राजा हुआ करते थे। पोलिश-लिथुआनियन साम्राज्य बाल्टिक सागर से ब्लैक सी के उत्तर तक फैला था। फिर पोलिश-लिथुआनियन साम्राज्य के खात्मे के साथ ही इस महल का वैभव भी क्षीण होने लगा। १८०१ तक यह महल जर्जर हो चुका था। १९८७ में लिथुआनिया की आजादी के साथ ही इस महल के निर्माण को लेकर आवाज उठने लगी थी परंतु तब यह सोवियत संघ का ही एक हिस्सा था। उससे अलग होने पर इस महल का काम शुरू किया गया।

❋ देश में पहली एस.टी.डी. (सबस्क्राइबर ट्रंक डायलिंग) सेवा २६ नवम्बर १९६० को लखनऊ और कानपुर के मध्य

शुरू की गई थी। इसी तरह पहली आई.एस.डी. सेवा (इंटरनेशनल सबस्क्राइबर डायलिंग) मुंबई और लंदन के मध्य सन् १९७६ में आरंभ की गई थी।

❋ विशुद्ध सोने के आभूषण कदापि नहीं बन सकते।

❋ एंपायर एस्टेट बिल्डिंग (न्यूयॉर्क) की सबसे ऊंची मंजिल पर पहुंचने में २५७५ सीढ़ियों का इस्तेमाल करना पड़ता है।

❋ अनुमानत: हमारा शरीर एक दिन में दो से ढाई क्वार्टर्स् तक पानी खर्च करता है।

❋ लाइट बल्ब का अनोखा संग्रह- बिजली की खोज के बाद रोशनी के लिए सबसे पहले बल्ब का आविष्कार हुआ था। आज लाइट बल्ब हर आकार-प्रकार में मौजूद है। थिएटरों में बड़े से बड़े आकार के बल्ब से लेकर हवाई जहाजों में छोटे तथा डिजाइन के तौर पर इस्तेमाल करने के लिए स्टाइलिश आकार के बल्ब आज भी मिल जाते हैं, परंतु आनेवाले समय में ये इतिहास की बात बन सकते हैं। इनका स्थान कम से कम बिजली की खपत करनेवाले बल्ब लेने लगे हैं। भारत में भी इनके स्थान पर अधिक से अधिक लोग सीएफएल या ट्यूब्स का इस्तेमाल कर रहे हैं। ऐसे में जर्मन कस्बे फिल्डरस्टेड्ट में स्थित एक संग्राहल में लाइट बल्ब का एक अनोखा संग्रह और भी खास बन जाता है। यहां हॉल में अलग-अलग तरह के ७०० से अधिक बल्ब प्रदर्शित हैं, जिनमें २० किलोवॉट वाला विशालकाय ओस्ची बल्ब भी देखाजा सकता है। यह अनोखा संग्रह ५६ वर्षीय मैथियाज बैक का है।

❋ मानव शरीर की आधे से अधिक हड्डियां हाथों और पैरों में होती हैं।

❋ जिस तरह अंगुलियों के अलग-अलग प्रिंट होते हैं, ठीक वैसे ही कुत्तों की नाक का प्रिंट भी अलग-अलग होता है। इसी से उनकी पहचान होती है।

❋ सेब को पानी में डालने पर तैरने लगता है। सेब २५ प्रतिशत हवा से बने होते हैं।

❋ पुर्तगाल के पेना राजमहल में एक ऐसी सूरज घड़ी है जिसमें एक आतिशी शीशा और एक छोटी सी तोप लगी है जो दिन के ठीक बारह बजे अपने आप गोला दागती है।

❋ शेक्सपियर अपना नाम ११ अलग-अलग स्पैलिंग में लिख सकता था।

❋ संसार में कुल ५००० बोलिया बोली जाती हैं। इनमें ६४५ बोलियां केवल भारत में ही बोली जाती हैं।

❋ अंग्रेजी भाषा में ई शब्द का सबसे ज्यादा प्रयोग होता है और क्यू शब्द का सबसे कम प्रयोग होता है।

❋ अंग्रेजी वर्णमाला में २६ अक्षर हैं। जो कि एक पंक्ति में आ जाते हैं। यह पंक्ति है (द क्विक ब्राउन फॉक्स जम्प्स ओवर द लेजी डॉग)।

❋ कनाडा के जीन-गुए लकारे के पास सांता क्लॉस मैमोरिबिला की २५१०४ अलग-अलग चीजें हैं।

❋ स्विट्जरलैंड के जीन-फ्रैंकोइस वेर्ने ट्री के पास दुनिया के १८९ देशों के होटलों के ११,१११, अलग-अलग डू नॉट डिस्टर्ब साइन हैं।

❋ जर्मनी के बेर्न्ड सिकोरा के पास ४३ देशों के १,४८२ क्रिस्प पैकेट्स हैं।

❋ अमेरिका के मैनफ्रेड एस. रोथस्टीन के पास ७१ देशों के ६७५ बैक स्क्रैचर (पीठ खुजलाने के लिए इस्तेमाल किए जानेवाले) का संग्रह है।

✻ अमेरिका के ही ब्रैंट डिक्सन के पास अलग-अलग ४१,४१८, चाबी के छल्ले हैं।

✻ चैक रिपब्लिक के लादिस्लाव सेजनोहा के पास ३६ देशों की २ लाख से अधिक टिकटें हैं।

✻ नीदरलैंड्स के मारिनस वॉन डूर्न के पास ३३,४९२ बोटल ओपनर्स का संग्रह है।

✻ जर्मनी के मार्कस ड्रैक्सलर के पास १८१७९ कॉफी पॉट्स हैं।

✻ ताश के पत्ते - हुकुम यानी स्पेड्स के पत्तों पर बना होता है किंग डेविड का चित्र। चिड़ी यानी क्लब्स पर फोटो छपी होती है सिकंदर महान की, जबकि पान यानी हर्ट्स पर चार्ल मग्ने का चित्र बना होता है। अब बचा ईंट यानी डायमंड, जिसमें फोटो बनी होती है जूलियस सीजर की।

✻ ७० वर्ष की आयु तक हमारा हृदय २ अरब दो सौ पचास करोड़ बार धड़क चुका होता है। हमारे फेफड़े को इनकी ऊपरी सतह को फैलाया जाये तो फेफड़े का संपूर्ण क्षेत्रफल टेनिस के खेल के मैदान के बराबर होगा। रात में सोते समय हमारे शरीर का वजन ११ औंस कम हो जाता है और सवेरे उठने पर सामान्य स्थिति में आता है। रात में सोते समय हमारी लंबाई बढ़ जाती है और सुबह उठने पर सामान्य हो जाती है।

✻ चिड़ियाघर सभी बड़े शहरों में होते हैं। हम आज इक्कीसवीं शताब्दी में पहुंच गए हैं और चिड़ियाघर की शुरुआत लगभग ३००० साल पहले हुई। चीन के एक राजा के पास पशुओं के व्यवहार का अध्ययन करता था। यही दुनिया का सबसे पहला चिड़ियाघर था। आज चिड़ियाघर काफी विकसित हो गया है। बहुत समय से ही घर में जानवर रखने की परम्परा चली आ रही है। लोग पशुओं के साथ अपना मनोरंजन करते थे। साथ ही घर व संपत्ति की रक्षा करने में कुत्ता जैसा जानवर सहायक सिद्ध होता था और आज भी कुत्ता सबसे ज्यादा स्वामीभक्त माना जाता है।

लोग शिकार पर जाने के लिए जानवर अपने साथ ले जाते थे। कुछ समय बाद कुछ संपन्न लोगों ने अपने विभिन्न प्रकार के जानवर पालना शुरू कर दिया। इसके लिए उन्होंने एक स्थान निश्चित किया। जहाँ पर उन्होंने अपने अलावा अन्य लोगों को भी अपने पशु-पक्षी देखने की अनुमति दी। जनता के लिए सबसे पहले चिड़ियाघर ९ वीं सदी में पूर्वी यूरोप के मुख्य शहरों में बने। ७००-८०० वर्ष पूर्व बड़े-बड़े शहरों में जनता के मनोरंजन के लिए चिड़ियाघर बनाए गए। विश्व का सबसे बड़ा चिड़ियाघर अमेरिका के कैलिफोर्निया नगर में सेन डियागो है। इंग्लैंड और बर्लिन में भी कई दर्शनीय चिड़ियाघर है।

✻ तकनीकी ज्ञान- बिना तारवाली डिवाइस - ब्लूटूथ शब्द स्वीडिश शब्द ब्लाटांड का अंग्रेजी रूपांतर है। ब्लूटूथ इन्फार्मेशन के लेन-देन का सुरक्षित तरीका मना जाता है। ब्लूटूथ की खासियतों का विकास करने और लाइसेंस देने की जिम्मेदारी ब्लूटूथ स्पेशल इंटरेस्ट ग्रुप की है। इस ग्रुप में १३ हजार कंपनियां शामिल हैं।

प्रमुख रूप से ब्लूटूथ तकनीकी दो उपकरणों के बीच बिना तार के संपर्क स्थापित करने की टेक्नोलॉजी है इसके तहत शॉर्ट वेबलेंथ रेडिया ट्रांसमिशन का इस्तेमाल करते हुए डाटा को ट्रांसफर किया जाता है। इसके जरिए एक बार में कई उपकरणों को भी कनेक्ट किया जा सकता है।

ब्लूटूथ की डाटा ट्रांसफर करने की रेंज तकरीबन ३२ फुट यानी १० मीटर तक की हो सकती है। ब्लूटूथ के जरिए डाटा ट्रांसफर की स्पीड १ एमबबीपीएस तक की होती हे। हालांकि विशेषज्ञ इसकी क्षमता के विकास पर लगातार

कार्य कर रहे हैं।

* भारत में सबसे लंबा दिन २१ जून को होता है।
* अकबर की हिंदू पत्नी का नाम जोधाबाई था।
* अंतर्राष्ट्रीय रेडक्रॉस के झंडे की संरचना स्विटजरलैंड के झंडे जैसी है। परंतु इनका रंग एक दूसरे के विपरीत है।
* हड्डियां एवं दांतों में कैल्शियम एक आवश्यक अंग है।
* स्कर्वी रोग विटामिन सी की कमी के कारण होता है।
* पैलेग्रा रोग विटामिन बी-२ कॉम्प्लेक्स की कमी के कारण होता है।
* खाने का नमक - वैज्ञानिक विश्लेषणों से अनुमान लगाया गया है कि समुद्र के पानी में ४५ लाख घन मील के लगभग नमक है यह नमक धरती से ही सागरों में पहुंचा है। प्रतिशत मात्रा के अनुसार यह माना जाता है कि समुद्र के पानी में तीन से साढ़े तीन प्रतिशत के बीच तक नमक है। अधिकतर नमक हमें सागरों से ही प्राप्त होता है, लेकिन लाखों वर्ष पहले झीलें समुद्र से अलग हो गई थीं। जिनका पानी धीरे-धीरे वाष्पित होता गया और वे केवल नमक की झीलें बन गईं। इस प्रकार की झीलों में ऊटा की ग्रेट साल्ट लेक ऐसी है, जिसके पानी में समुद्र के पानी की तुलना में चार-पाच गुना अधिक नमक है। इसी प्रकार तुर्की के लेक वान में लगभग ३३ प्रतिशत नमक है।

खाने का नमक वास्तव में सोडियम और क्लोरिन का एक यौगिक (कम्पाउंड) है। इसे सोडियम क्लोराइड कहते हैं। सोडियम का एक परमाणु क्लोरीन के एक परमाणु से मिलकर सोडियम क्लोराइड का एक अणु बनाता है। सामान्यत: नमक प्राप्त करने के लिए समुद्र का पानी प्रयोग में लाया जाता है। इस काम के लिए समुद्र के पानी को लंबे चौड़े खेतों में भेजा जाता है।

इन खेतों की गहराई लगभग तीन फुट होती है। पहले खेत में जब पानी जाता है। तो उसमें से बालू, कीचड़ और छोटे-छोटे जन्तु नीचे जम जाते हैं। इसके बाद पानी दूसरे खेतों में पहुंचता है, जहां इसका वाष्पीकरण होता है। वाष्पीकरण की प्रक्रिया में पानी तो उड़ जाता है लेकिन नमक जम जाता है। इस नमक को इकट्ठा करके सुखाया जाता है। इसके बाद इसमें से अशुद्धियां अलग कर दी जाती हैं और इस प्रकार शुद्ध नमक प्राप्त हो जाता है।

ठंडे प्रदेशों में नमक निकालने के लिए एक दूसरा तरीका प्रयोग में लाया जाता है। समुद्र के पानी को जमने के लिए छोड़ दिया जाता है। चूंकि जमे हुए पानी में नमक नहीं आ पाता, इसलिए बिना जमे हुए पानी में पहुंचकर अपनी प्रतिशत मात्रा बढ़ा लेता है। जमी हुई बर्फ को हटा दिया जाता है और शेष पानी को जमने के लिए छोड़ दिया जाता है। जब तक कि बहुत नमकीन पानी ही शेष न रह जाए। इस नमकीन पानी में से कृत्रिम गर्मी द्वारा पानी का वाष्पीकरण कर दिया जाता है और इस प्रकार अंत में केवल नमक बच जाता है। संसार में बहुत से स्थानों पर नमक के जमे हुए भंडार भी हैं। अकेले अमेरिका में ही कन्यास, ओक्लाहोमा, टेक्सास और न्यू मैक्सिको के लगभग पौने दो लाख वर्ग किसी के क्षेत्र में नमक की खाने हैं। यह विश्व में नमक का सबसे बड़ा क्षेत्र है। रूस की यूराल पर्वतमालाओं में भी नमक के भंडार हैं।

* बिल्ली, कुत्तों और दूसरे जानवरों में भी लैक्रीमल ग्लैंड्स होते हैं। ये ग्लैंड्स आंसू पैदा करते हैं, जो आंखों के अगले हिस्से को नमी प्रदान करते हैं और उन्हें साफ रखते हैं। अगर आंखों में कुछ गंदगी या कचरा आ जाए तो ग्लैंड्स आंसू

गिराते हैं और गंदगी बाहर आती है, जिसे हम सभी रोना कहते हैं। लेकिन मनुष्यों की तरह जानवर चोट लगने या दुख के कारण नहीं रोते। हमारे दिमाग में कुछ स्पेशल नर्व्स होती हैं जो भावनाएं पैदा करके ग्लैंड्स को प्रभावित करती हैं। जबकि जानवरों में ये नर्व्स नहीं होती हैं।

❋ जर्मनी के एक शहर में स्थित प्रसिद्ध लेमेगो चिकित्सालय है जो शहर के टाउन हॉल की दीवार में बनी एक खिड़की में स्थित है।

❋ विश्व प्रसिद्ध पेंटर पिकासो ने अपने जीवनकाल में १३५०० पेंटिंग, १००००० एनग्रेविंग, ३४००० पुस्तक चित्र तथा ३०० स्कल्पचर और केरेमिक्स तैयार किए थे।

❋ चांद को जियोलॉजिकली मृत माना जाता है, ऐसे में भूकंप आने या ज्वालामुखी फटने से इन निशानों के खत्म होने की आशंका नहीं है। इसके अलावा, चांद पर न हवा है और न पानी। १९६९ में अपोलो मिशन का पहला चरण हुआ था। २० जुलाई को नील आर्मस्ट्रॉंग ने चांद पर सबसे पहले कदम रखा। नील अपने साथ टीवी कैमरे भी लेकर गए थे। इसलिए जब यह अद्‌भुत नजारा घट रहा था, तो लोगों ने इसे लाइव देखा। नील और उनके साथी ने चांद पर चहलकदमी की। उन्होंने वहां से पृथ्वी पर ले जाने के लिए पत्थर और मिट्टी एकत्र की। इसके बाद अंतरिक्ष यान ईगल मिशन के तीसरे सदस्य एस्ट्रोनॉट माइकल कॉलिंस की ओर बढ़ा, जो लूनर ऑरबिट में रुके हुए थे। अपोलो ११ पृथ्वी पर २४ जुलाई, १९६९ को लौटा और सभी एस्ट्रोनॉट सुरक्षित अपने घर रवाना हो गए। मानव कदमों के आखिरी निशान अमेरिकी एस्ट्रोनॉट यूजेन करनेन के हैं, जो १९७२ में चांद पर उतरे थे। चंद्रमा के ऊपर अंतरिक्ष यात्रियों के द्वारा रखे गए कदमों के निशान आनेवाले १० अरब सालों तक नहीं मिलेंगे। चंद्रमा पर वातावरण नहीं है जिसकी वजह से वहां हवा, पानी, बारिश कुछ भी नहीं होता है लेकिन अंतरिक्ष के ऊपर गिरनेवाले बिल्कुल छोटे धूल-मिट्टी के कणों के कारण या उल्काओं के कारण यह निशान धीरे-धीरे समाप्त जरूर हो जाएंगे।

❋ आंखों से आंसू का निकलना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है किंतु आंसू हर समय नहीं निकलते। जब अत्यधिक खुशी या गम के मौके पर हम अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में असमर्थ हो जाते हैं तो आंसू का जन्म होता है। आंसू लैक्रेमेल सैक नाम की थैली से निकलता है। लैक्रेमेल सैक का स्राव नाक के रास्ते से होता है। भावनाओं के उद्रेक के समय आंखों के कोनों में एक तीखा वाष्पीय पदार्थ पैदा होने लगता है। इस तीखे वाष्प से लैक्रेमेल सैक में स्राव होने के कारण आंसू निकलने लगते हैं। आंसू एक कीटाणुनाशक पदार्थ है। यह आंखों को धोता है, जमे गर्दगुबार को बहा देता है तथा बाहरी वातावरण से जो भी अदृश्य कीटाणु आंखों में पहुंचते हैं, उन्हें नष्ट करता है। ताजा वैज्ञानिक परीक्षणों के अनुसार आंसू से बढ़कर कीटाणुनाशक वस्तु दूसरा नहीं है। यदि एक चम्मच आंसू को सौ गेलन पानी में डाल दिया जाए तो उस जल में उपस्थित सभी कीटाणु मर जाएंगे। आंसू में इतनी अधिक कीटाणुनाशक शक्ति है कि छह हजार गुने आयतन जल में भी इसका प्रभाव बना रहता है। आंसू के रासायनिक परीक्षण से ज्ञात हुआ है कि इसमें ९४ प्रतिशत पानी व छह प्रतिशत रासायनिक तत्व होते हैं जिसमें कुछ क्षार और लाइसोजाइम नामक रासायनिक यौगिक होता है। लाइसोजाइम में ही आंसू की कीटनाशक क्षमता होती है। हमारे खून को भी कीटाणुरहित रखने के लिए यह किसी न किसी रूप में उपस्थित रहता है। लाइसोजाइम कीटाणुओं को

नष्ट करने के लिए उनसे काफी समय तक युद्ध करता है। जब तक कीटाणु जीवित रहते हैं, तब तक यह उनको नष्ट करने के अपने प्रयास में लगा रहता है। अन्य कीटाणुनाशकों से इसकी यही विशेषता है। आंखें हमारे शरीर का सबसे नाजुक अंग हैं, इसलिए प्रकृति ने आंसू के रूप में हमें आंखों की सुरक्षा का एक महत्वपूर्ण उपाय दिया है।

❋ मक्खन में लगभग १४% पानी होता है।

❋ ध्रुवतारे का प्रकाश पृथ्वी पर करीब ४६ वर्ष में पहुंचता है।

❋ गुंबज-सदृश अर्धगोलीय आकाश में कोरी आंख से एक साथ करीब ३००० तारे दिखाई देते हैं।

❋ एक प्रकाश वर्ष का अर्थ होता है- ६०,००,००,००,००,००० मील की दूरी।

❋ सोते समय भी मनुष्य को २४ घंटे में १७०० किलो कैलोरी उष्मा की आवश्यकता होती है। अर्थात लगभग ७० किलो कैलोरी प्रति घंटा।

❋ जौ वह पहला अनाज था, जिसे इंसान ने अपने लिये उगाना सीखा।

❋ भारत को स्वतंत्रता १५ अगस्त १९४७ को प्राप्त हुई। इसे हम स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाते हैं। भारत का संविधान २६ जनवरी १९५० को लागू हुआ। इसे हम गणतंत्र दिवस के रूप में मनाते है। भारत का राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम है। इसके रचयिता श्री बंकिम चन्द्र चट्टोपाध्याय है।

❋ कुदरत की अद्‌भुत पहाड़ी - इस संसार में एक अद्‌भुत पहाड़ी ऐसी है, जो दिनभर के सफर में अपना कई बार रंग बदलती है। यह पहाड़ी दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया में स्थित है। इसे आयर्स राक के नाम से जाना जाता है। लेकिन सैलानियों के लिए यह गिरगिरट तथा इंद्रधनुष के नाम से चर्चित है। दुनिया की इस अजूबा पहाड़ी पर जब भोर के उपरांत सूर्य की किरणें गिरने का सिलसिला शुरू होता है तो इसका रंग जलती अग्नि की तरह दिखायी देता है। जब सूर्य की किरणें इस पर तिरछी पड़ती हैं तो यह बैंगनी रंग की दिखायी देती हैं। सायं ५ बजे उपरांत इसका रंग हरा हो जाता है, जैसे-जैसे सूर्य ढलने लगता है, वैसे वैसे यह अपना रंग गिरगिट की भांति बदलती रहती है। कई मर्तबा तो इस पर इंद्रधनुष की तरह सात रंगों का अद्‌भुत नजारा भी दिखायी देता है। दूर से ऐसा लगता है किसी जादूगर ने आसमान का इंद्रधनुष इस पहाड़ी पर चिपका दिया है।

❋ पेंसिल- पेंसिल का इतिहास पांच सौ वर्ष पुराना है। पांच सौ वर्ष पहले कम्बरलैंड नामक जगह पर एक खान से ग्रेफाइट मिला। सबसे पहले उसी ग्रेफाइट से पेंसिल बनाई गई। लेकिन तब इसका रंग-रूप आज की तरह नहीं था। अपने आज के रूप में आने में पेंसिल ने एक लंबा सफर तय किया है।

इस सफरनामे की शुरुआत जर्मनी के न्यूरेमवर्ग से होती है, जहां के फेवर परिवार ने १७६० में ग्रेफाइट से पेंसिल बनाने का कार्य शुरू किया, परंतु उसके असफल हो जाने के बाद १७६५ में एन.जे. कोन्ते नामक आदमी ने पेंसिल बनाने का कार्य आरंभ कर सफलता प्राप्त की। उसने ग्रेफाइट में चिकनी मिट्टी मिलाकर पतली सलाइयां बनाईं, फिर इन्हें मिट्टी में पकाया और तब इसे पेंसिल का रूप दिया।

आज भी पेंसिल इसी तरीके से तैयार की जाती है। सबसे पहले ग्रेफाइट को महीन पीस लिया जाता है फिर उसमें शुद्ध चिकनी मिट्टी मिलाकर आटे के समान गूंथा जाता है। उसके बाद एक मशीन की सहायता से पतली-पतली सलाइयां

बनाकर इन्हें मिट्टी में पका लिया जाता है। इन पक्की सलाइयों को चीड़ अथवा देवदार की लकड़ी की बनी खांचेदार पट्टी में एक-एक कर डालकर ऊपर से दूसरी खांचेदार पट्टी चिपका दी जाती है। इसके बाद इन्हें उपयुक्त आकार में काट कर रंगीन बनाया जाता है तथा खूबसूरत बनाने के लिए इनके ऊपर पॉलिश कर दी जाती है।

इस तरह पेंसिल बनकर तैयार हो जाती है और कारखाने से चलकर थोक विक्रेता के यहां पहुंचती है, वहां से खुदरा विक्रेताओं के यहां आती हैं, जहां से हम उसे खरीद लाते हैं तथा अपने बच्चों को देते हैं।

✻ बादलोंवाली रातें स्वच्छ रातों की अपेक्षा अधिक गर्म होती हैं। बादल पृथ्वी के वायुमंडल से उष्मा विकिरण रोकते हैं। यही कारण है कि बादलों वाली रातें स्वच्छ रातों की अपेक्षा अधिक गर्म महसूस होती हैं।

✻ पहाड़ों पर खाना देर से पकता हैं क्योंकि पहाड़ों पर ऊंचाई बढ़ने के साथ-साथ कथनांक में गिरावट आ जाती है जिससे खाना कम ताप पर ही उबलने लगता है। फलत: वहां खाना देर से पकता है।

✻ विश्व की सबसे बड़ी मस्जिद अलमलविया (इराक) में है।

✻ विश्व की सबसे बड़ी सेना चीन की मुक्ति सेना है।

✻ विश्व की सबसे लंबी सुरंग फ्रांस से इटली तक २ मील जाती है।

✻ विश्व की प्राचीन भाषा संस्कृत है।

✻ भूटान में सिनेमाघर नहीं है।

✻ फोटोक्रोमिक कांच से बने चश्मे - आजकल फोटोक्रोमिक कांच के बने चश्मों का उपयोग बहुत हो रहा है। इसकी विशेषता यह है कि इसके लेंस धूप में गहरे रंग के हो जाते हैं तथा जब सूर्य का प्रकाश इन पर गिरना बन्द हो जाता है, तो इनका रंग हल्का हो जाता है। इस प्रकार के लेंस का निर्माण सिल्वर-क्लोराइड डालकर किया जाता है।

✻ डाक टिकट- वह २६ जनवरी, १६६५ की ऐतिहासिक शाम थी, जब लाल रंग का बोइंग ४०४ विमान न्यूयार्क से चलकर लंदन हवाई अड्डे पर उतरा। इस विमान से फिनबर केनी, गयाना का एक सेंटवाला टिकट लेकर उतरे। उत्सुकतावश कई पत्रकारों, छायाकारों एवं दूसरे लोगों ने उन्हें घेर-सा लिया। श्रीमान केनी शायद इस स्थिति से पहले ही वाकिफ थे, क्योंकि उन्होंने डाक टिकट का ४६ लाख रुपये का बीमा करवाया था।

अगले दिन सभी समाचारपत्रों के प्रमुख पत्रों पर इस टिकट की तस्वीर छपी। भारत में डाक व्यवस्था की शुरुआत वैसे तो लगभग १३ वीं शताब्दी से पठान शासन में ही शुरू हो गयी थी, परंतु तब हरकारों को चिट्ठियां पहुंचाने के लिए जंगली पशुओं और डाकुओं का मुकाबला करना पड़ता था। कभी-कभी इन हरकारों को पहाड़ अथवा नदी भी पार करनी पड़ती थी इन खतरों में यदा-कदा हरकारों की दुर्घटना से मृत्यु हो जाती थी।

भारत में सबसे पहले सन १८५२ में सिंध के कमिश्नर बार्टले फेरे ने डाक-टिकट का चलन शुरू किया।

सिंध डाक के पश्चात देश के लिए आम टिकटों का चलन शुरू हुआ। उसके बाद १९३१ में पहली बार रंगीन चित्रमय डाक-टिकट जारी की गयी। इस टिकट पर नई दिल्ली से कई स्थानों की तस्वीरें मुद्रित थीं।

तब से लेकर आज तक भारत में विभिन्न अवसरों पर डाक-टिकट जारी किए जा रहे हैं।

✻ ऐस्बेटस एक ऐसा पदार्थ है, जो आग में डालने पर नहीं जलता। आग बुझानेवाले दल के लोग एस्बेस्टस से बने

कपड़े पहनकर बिना झिझक के जलते हुये मकानों में घुस जाते हैं।

✻ शोधकर्ता एक छोटी विशेष पनडुब्बी में ६ हजार मीटर की गहराई तक ही गोता लगा सकते हैं। ऐसे ही लगाए गए एक गोते में ब्लैक स्मोकर्स (समुद्र में मौजूद काले वायुमार्गों) की खोज की गई थी।

✻ पियरे और मैरी क्यूरी ने अपनी खोज रेडियम का पेटेंट कराने से मना कर दिया था। उनका कहना था कि उनकी खोज पर पूरी दुनिया का हक है।

✻ ईसाइयत के पवित्र ग्रंथ बाइबिल में केवल एक घरेलू जानवर बिल्ली का जिक्र नहीं है।

✻ बीयर से नहाना आपकी त्वचा को कोमल बनाता है।

✻ डरावनी फिल्में देखने से आप सबसे ज्यादा कैलोरी जलाते हैं। अन्य किसी तरह की फिल्मों के मुकाबले में।

✻ फिल्म अभिनेता ब्रूस ली असल जिंदगी में बेहद ही तेज फाइटर थे। उनके मूव्ज इतने होते थे कि उनके लिए फिल्म की शूटिंग के समय फिल्म धीरे करना पड़ती थी ताकि दर्शक उनके फाइट सीन और उनके मूव्ज को देख सकें।

✻ सपनों को याद रखना कठिन होता है क्योंकि दिमाग का वह हिस्सा जो लंबी चीजों को याद रखता है, नींद के समय बंद हो जाता है।

✻ हमारी हड्डियां स्टील की धातु से पांच गुना मजबूत होती हैं।

✻ एक बांस का पेड़ २४ घंटे में ३ फीट तक बढ़ता है।

✻ जर्मन देश की एक रिसर्च टीम के अनुसार सोमवार के दिन हार्ट अटैक का खतरा हफ्ते के दूसरे दिनों की तुलना में अधिक होता है।

✻ हमारे सोलर सिस्टम में सभी ग्रह एंटी क्लाकवाइज घूमते हैं परंतु शुक्र एक ऐसा ग्रह है जो घड़ी की सूई की दिशा में घूमता है।

✻ आप चाहे जितने भी दृढ़ हों पर कोई एक इंसान होगा जो आपको कमजोर बना सकता है।

✻ जरूरत से कम नींद आपको निराशा, शराबखोरी की तरफ धकेलती है।

✻ गर्मियों में बनाया गया भोजन देर तक रखने पर खट्टा या खराब या खट्टा होना जीवाणुओं के कारण होता है। जीवाणुओं के जीवित रहने के लिए उच्च तापमान और उच्च आर्द्रता बहुत ही सहायक होती है, जो गर्मियों में रहती है। इसीलिए भोजन को कम तापमान में, फ्रिज में या ठंडे पानी के बर्तन में रखकर जीवाणुओं से मुक्त रखा जाता है।

✻ किसी गिलास में बर्फीला पानी रखने पर बाह्य सतह पर पानी की बूंदे इकट्ठी हो जाती हैं क्योंकि गिलास के पानी में वाष्पन्न होने से आसपास का तापमान काफी कम हो जाता है जिससे गिलास की बाहरी सतह पर आर्द्र वायु संघनित होकर छोटी-छोटी बूंदों के रूप में इकट्ठी हो जाती है।

✻ आप चौंक जायेंगे जब आप देखेंगे कि कोका कोला का इस्तेमाल टॉयलेट धोने में भी किया जा सकता है।

✻ आपके पेट में एक दूसरा दिमाग होता है जिसे एनट्रेरिक नर्वस सिस्टम कहते हैं। इसी से अंग्रेजी में अक्सर कही जानेवाली लाइन गट फीलिंग आती है।

✻ महिलाएं सामान्य तौर पर ऐसे सवाल पूछती हैं जिनके जवाब उन्हें पहले से पता होते हैं, इसलिए बेहतर होगा कि

आप सच ही कह दें।

❋ ज्यादा सोचना एक किस्म की निराशा की तरफ बढ़ाता है और आप खुद को सामाजिक और भावनात्मक तौर पर अकेला पाते हैं।

❋ आप जिस लिफ्ट में हैं और वो नीचे गिर रही है तो आप लिफ्ट के बीच में लेटकर खुद को बचाएं।

❋ जब आप झूठ बोलते हैं आपकी नाक गर्म हो जाती है।

❋ अगर आप किसी को पहले संदेश भेजते हैं तो ९० प्रतिशत संभावना है कि वो इंसान आप में रुचि नहीं रखता है।

❋ अगर आप हेडफोन का एक घंटे तक इस्तेमाल करते हैं इसका मतलब होता है कि आपके कानों में बैक्टीरिया ७०० गुना तक बढ़ गये हैं।

आलू- इसका मूल स्थान दक्षिण अमेरिका है। भारत में आलू १७वीं सदी में आया जिसे यूरोप से पुर्तगाली लाये।

चुकंदर- चुकंदर की खेती विश्व में हजारों वर्ष पहले से होती आ रही हैं। इसका जन्म भूमध्य सागरीय क्षेत्र माना जाता है।

कपास- मूल स्थान भारत है। इसका वर्णन ऋग्वेद में है। इसकी खेती उसी समय से हो रही है।

लोबिया- मूल स्थान मध्य अमेरिका है। यह भारत में बहुत समय बाद आया था।

मूंगफली- इसका उत्पत्ति स्थान दक्षिण अमेरिका माना जाता है। भारत में सबसे पहले जौसफ फादर लाये जो वास्को डि गामा की प्रथम यात्रा के बाद आये।

ज्वार- इसकी पैदाइश के बारे में मतभेद हैं, परंतु भारत में पहले से इसकी खेती होती आई है।

मक्का- जन्म स्थान मध्य अमेरिका है। भारत में यह १६वीं सदी में पुर्तगालियों द्वारा लाया गया।

❋ हरी मिर्च का तीखापन उसके बीज में होता है या छिलके में। मिर्च का तीखापन मुख्य रूप से उसके बीज में पाई जानेवाली नली जैसी संरचना में होता है। जब कोई भी हरी मिर्च खाता है, तो मुंह से आग-सी लग जाती है। मिर्च में मौजूद एक रसायन, जिसका नाम केप्साइन है, के कारण यह होता है। यह रसायन जीभ की सतह की कोशिकाओं में मौजूद रसायनों से प्रतिक्रिया के बाद जलन पैदा करती है।

❋ रोम का सम्राट ऑगस्टस अपनी दाढ़ी स्वयं बनानेवाला प्रथम व्यक्ति था।

❋ मारे गऐ दुश्मन की ताकत प्राप्त करने के लिए भारत की डफ्लास जाति के लोग उसकी बाएं हाथ की हथेली को पेड़ के एक पते पर कील से ठोक देते हैं और उसकी ताकत ग्रहण करने के ल्लिए हथेली को तीरों से छेदते हैं।

❋ रेवेरण्ड जेरोम सी. बेरीमैन अपने ९६ वर्ष के कुल जीव में ७५ वर्ष तक अर्काडिया में मंत्री रहे थे।

❋ दिमाग - जब आप जाग रहे होते है तब आपका दिमाग १० से २३ वाट तक की बिजली उर्जा छोड़ता है जो कि एक बिजली के बल्ब को भी चला सकती है। मनुष्य के दिमाग में दर्द की कोई भी नस नहीं होती इसलिए वह कोई दर्द महसूस नहीं करता। हमारा दिमाग ७५% से ज्यादा पानी से बना होता है। आपका दिमाग ५ साल की उम्र तक ९५% बढ़ता है और १८ तक पहुंचते-पहुंचे १००% विकसित हो जाता है और उसके बाद बढ़ना रुक जाता है। एक गर्भवती महिला के दिमाग के न्युरॉनज की गिनती २५०००० न्युरॉन प्रति मिनट के हिसाब से बढ़ती है। पढ़ने और बोलने से एक बच्चों का दिमागी विकास ज्यादा होता है। जब आप एक आदमी का चेहरा गौर से देखते है तो आप अपने दिमाग

का दायां भाग उपयोग करते है। हमारे शरीर के भिन्न हिस्सों से सुचना भिन्न रफ्तार से और भिन्न न्युरॉन के द्वारा हमारे दिमाग तक पहुंचती है। सारे न्युरॉन एक जैसे नही होते कई ऐसे न्युरॉन भी होते है जो सुचना को ०.५ मीटर प्रति सैकेंड की रफतार से दिमाग तक पहुंचाते है और कई ऐसे भी होते हैं जो सूचना को १२० मीटर प्रति सेकेंड की रफ्तार से दिमाग तक पहुंचाते है।

✻ लोकनृत्य- घापाल, फूंदी लोकनृत्य राजस्थान राज्य से संबंधित है। राउफ, हिकात, मंदजास, कूद दंडीनाच लोकनृत्य जम्मू कश्मीर राज्य से संबंधित है। लाहो, बांग्ला लोकनृत्य का संबंध मेघायल राज्य है।

✻ स्काउटिंग की स्थापना वेडन पावेल ने की।

✻ गुजरात एवं महाराष्ट्र दिवस एक मई को मनाया जाता है।

✻ इंडियन सिक्योरिटी प्रेस नासिक रोड, पुणे में है।

✻ कोशिकीय एवं आण्विक जीव विज्ञान केंद्र हैदराबाद पर स्थित है।

✻ विश्व में सर्वाधिक सहकारी संस्थाएं भारत में है।

✻ भारत में असंगठित क्षेत्र, संगठित क्षेत्र की बजाय, अधिक रोजगार का सृजन करता है।

✻ भारत में कुल तिलहन उत्पादन में मूंगफली का हिस्सा सर्वाधिक है।

✻ भारत में एक करोड़ से अधिक जनसंख्यावाले तीन नगर (मुंबई, कोलकाता और दिल्ली) है।

✻ भारत में सर्वाधिक नगरीकरण गोवा राज्य में हुआ है।

✻ एशियाई विकास बैंक की स्थापना सन १९६६ ई. में हुई। (मुख्यालय- मनीला)

✻ मसालों के विश्व व्यापार में भारत का हिस्सा ४०% है।

✻ राष्ट्रीय आय की सामाजिक लेखांकन गणना विधि का विकास रिचर्ड स्टोन ने किया था।

✻ केंद्रीय बैंक द्वारा अन्य व्यावसायिक बैंकों से ली जानेवाली ब्याज दर को बैंक दर कहा।

✻ अन्तरराष्ट्रीय व्यापार में अनुकूल संतुलन की स्थिति वाली मुद्रा, जिसको प्राप्त करना कठिन होता है, को कठोर मुद्रा कहा जाता है।

✻ साख मुद्रा को ऐच्छिक मुद्रा भी कहा जाता है।

✻ भारत में पाई जानेवाली बेरोजगारी की प्रमुख प्रकृति संरचनात्मक है।

✻ अर्थव्यवस्था की कीमतों का औसत स्तर सामान्य कीमत स्तर कहलाता है।

✻ आय में बदलाव के फलस्वरूप उपभोग में बदलाव उपभोग की सीमान्त प्रवृत्ति कहलाता है।

✻ विश्व बैंक की हाल की रिपोर्ट के अनुसार क्रय शक्ति के आधार पर भारत की अर्थव्यवस्था विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

✻ चाय के उत्पादन में भारत का विश्व में प्रथम स्थान है।

✻ भारत में सर्वाधिक दूध उत्पादक राज्य उत्तर प्रदेश है।

✻ दाल के उत्पादन में भारत का विश्व में प्रथम स्थान है। (राज्यों में प्रथम महाराष्ट्र)।

❋ अमेरिका के साथ भारत का व्यापार अधिकांशत: भारत के पक्ष में होता है।

❋ १९४४ ई. में मुम्बई के आठ उद्योगपतियों द्वारा प्रस्तुत योजना बॉम्बे योजना कहलाती है।

❋ १९५० ई. में जयप्रकाश नारायण द्वारा सर्वोदय योजना प्रस्तुत की गई।

❋ चलैय्या समिति कर बँटवारे से सम्बन्धित है।

❋ केन्द्र को सर्वाधिक निवल राजस्व की प्राप्ति सीमा शुल्कों से होती है।

❋ भारत में पहला जल विद्युत शक्ति गृह सन १८९७ ई. में दार्जिलिंग में प्रारंभ हुआ।

❋ भारत में मनीऑर्डर प्रणाली की शुरुआत सर्वप्रथम सन १८८० ई. में हुई।

❋ भारत में पहला डाक टिकट सन १८५२ ई. में प्रारंभ हुआ।

❋ कृषि को उद्योग का दर्जा देनेवाला प्रथम राज्य (१९९७ ई. में) महाराष्ट्र है।

❋ विश्व बैंक के अनुसार भारत में प्रति व्यक्ति संपत्ति २५ हजार डॉलर है।

❋ पटसन का सबसे बड़ा उत्पादक देश भारत है।

❋ उपभोक्ता की बचत का सिद्धांत अल्फ्रेड मार्शल ने दिया है।

❋ केन्द्रीय एगमार्क प्रयोगशाला नागपुर में है।

❋ देश का प्रथम सूती वस्त्र उद्योग सन १८१८ ई. में कलकत्ता में तथा दूसरा कोवस जी नाना भाई द्वारा सन १८५३ ई. में बम्बई में स्थापित किया गया।

❋ काला सोना कोयला को कहा जाता है।

❋ महावीर का मूल नाम वर्धमान था।

❋ चीन की राजधानी बीजिंग है।

❋ सम्राट अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद बौद्ध धर्म अपनाया।

❋ तृती ए हिन्द (हिन्द का तोता अमीर खुसरो को कहा जाता था।

❋ सबसे अधिक कोयला झारखण्ड में है।

❋ काकोरी उत्तर प्रदेश में स्थित है।

❋ गुरुनानक का जन्म तलवंडी में हुआ था।

❋ सबसे हल्की धातु लिथियम है।

❋ सबसे कठोर पदार्थ हीरा है।

❋ जल का शुद्ध रूप वर्षा का जल है।

❋ सबसे कठोर धातु प्लेटिनम है।

❋ सबसे उत्तम कोयला एन्थ्रासाइट है।

❋ मार्श गैस मीथेन गैस कहलाती है।

❋ नोबेल गैस हीलियम कहलाता है।

✻ एममीटर से विद्युत धारा मापी जाती है।

✻ पारा का प्रमुख अयस्क सिनेबार है।

✻ एक रुपये का नोट वित्त मंत्रालय जारी करता है, जिस पर वित्त मंत्रालय के सचिव के हस्ताक्षर होते हैं।

✻ बीसवीं सदी के शुरुआती वर्षों में रुपया- अदन, ओमान, कुवैत, बहरीन, कतर, युगांडा, त्रुसियन राज्य, केन्या, शेशिलिस और मॉरीशस जैसे देशों की मुद्रा हुआ करता था।

✻ किसी भी सिक्के की ढलाई को जानने के लिए आपको उस पर छपे हुए वर्ष के नीचे देखने की जरूरत है और वहां छपे हुए निशानों को देखकर आप इस बात को जान सकते हैं कि वो सिक्का कहां ढला है।

✻ आपके दिमाग में हर दिन औसतन ६०,००० विचार आते हैं।

✻ अक्सर ऐसा कहा जाता है कि हम दिन में २०००० बार पलक झपकते है और इसके कारण हम दिन में ३० मिनट तक अंधे रहते हैं। पर असल में हम दिन में २०००० बार पलक जरूर झपकते हैं पर ३० मिनट तक अंधे नहीं रहते। क्योंकि हमारा दिमाग इतने कम समय में वस्तु का चित्र अपने आप बनाए रखता है।

✻ हमारे पलक झपकने का समय १ सैकेंड के १६वें हिस्से से कम होता है पर दिमाग किसी भी वस्तु का चित्र सैकेंड के १६वें तक बनाए रखता है।

✻ जो बच्चे पाँच साल का होने से पहले दो भाषाएं सीखते है उनके दिमाग की संरचना थोड़ी सी बदल जाती है।

✻ हंसते समय हमारे दिमाग के लगभग ५ हिस्से एक साथ कार्य करते हैं।

✻ हमारी अंगुलियों के निशानों की तरह हमारी जुबान के भी निशान भिन्न होते।

✻ विश्व में अभी भी ३० प्रतिशत लोग ऐसे हैं जिन्होंने कभी मोबाइल का प्रयोग नहीं किया।

✻ औसतन हर दिन १२ नवजात बच्चे किसी और मां-बाप को दे दिए जाते हैं।

✻ आईसलैंड में पालतू कुत्ता रखना कानून के विरुद्ध है।

✻ पिरामिडों में फैरो बादशाह की कब्र में पाया गया शहद जब खोजी वैज्ञानिकों द्वारा चखा गया तब भी वह उतना ही स्वादिष्ट था। बस उसे थोड़ा गरम करने की जरूरत थी।

✻ आजादी के बाद लम्बे समय तक पाकिस्तान भारतीय रुपयों को इस्तेमाल करता रहा, जब तक कि उन्होंने पर्याप्त मात्रा में नोट नहीं छाप लिए।

✻ दुनिया में सबसे ज्यादा प्रयोग किया जानेवाला पासवर्ड १२३४५६ है।

✻ लोग सोने से पहले वो सब सोचते हैं जो वो अपनी जिंदगी में करना चाहते हैं।

✻ खुश रहनेवालों की बजाए परेशान रहनेवाले लोग ज्यादा पैसे खर्च करते हैं।

✻ माँ अपने बच्चे के भार का तकरीबन सही अंदाजा लगा सकती है जबकि बाप उसकी लम्बाई का।

✻ पढ़ना और सपने लेना हमारे दिमाग के अलग-अलग भागों की क्रिया है इसीलिए हम सपने में पढ़ नही पाते।

✻ जीभ हमारे शरीर की सबसे मजबूत मासपेशी है।

✻ छींकते वक्त दिल की धड़कन १ मिली सेकेंड के लिए रूक जाती है।

❋ लगातार ११ दिन से अधिक जागना असंभव है।

❋ नेपाल को यूनिसेफ के कार्यकारी बोर्ड का सदस्य चुना गया।

❋ वर्ष २०१५ के हरिकृष्णा देवासरे बालसाहित्य सम्मान के विजेता- बालकृष्ण गर्ग।

❋ अंतरराष्ट्रीय पतंगोत्सव २०१६ का उद्घाटन गुजरात में किया गया।

❋ आईसीसी द्वारा मनीग्राम इंटरनेशनल कम्पनी को इवेंट पार्टनर बनाने की घोषणा।

❋ लियोनार्डो डी कैप्रियो जिसे ७३वें गोल्डन ग्लोब अवाड्र्स में सर्वश्रेष्ठ अभिनेता (ड्रामा फिल्म) का अवार्ड मिला।

❋ विदेश मंत्रालय ने ११ वें विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर विभिन्न देशों के कार्यालयों में कार्यक्रम आयोजित किये।

❋ पॉल काबा थियेबा जिन्हें बुर्किना फासो का प्रधानमंत्री घोषित किया गया।

❋ उपन्यास १७ रानाडे रोड के लेखक रवींद्र कालिया उनका जनवरी २०१६ को निधन हो गया।

❋ महासचिव जेरौम वाल्के फीका के वह अधिकारी जिनका निलंबन ४५ दिन बढ़ा।

❋ बिल गेट्स १ सेकेंड में करीब १२००० रुपए कमाते हैं।

❋ आपको कभी भी ये याद नहीं रहेगा कि आपका सपना कहां से शुरू हुआ था।

❋ हर सेकेंड १०० बार आसमानी बिजली धरती पर गिरती है।

❋ इंटरनेट पर ८०% ट्रैफिक सर्च इंजन से आती है।

❋ हमारे हर रोज २०० बाल झड़ते हैं।

❋ हमारा बाया पांव हमारे दाये पांव से बड़ा होता है।

❋ दुनिया के १०० सबसे अमीर आदमी एक साल में इतना कमा लेते हैं जिससे दुनिया की गरीबी ४ बार खत्म की जा सकती है।

❋ रूपए कागज से नहीं बल्कि कपास से बनते है।

❋ स्त्रियों की कमीज के बटन बाईं तरफ जबकि पुरूषों की कमीज के बटन दाईं तरफ होते हैं।

❋ मनुष्य के दिमाग में ८०% पानी होता है।

❋ मनुष्य का खून २१ दिन तक स्टोर किया जा सकता है।

❋ फिगर प्रिंट की तरह मनुष्य की जीभ के निशान भी अलग-अलग होते हैं।

❋ धातुओं से संबंधित विविध तथ्य -

❋ सिल्वर क्लोराइड को हार्न सिल्वर कहा जाता है। इसका उपयोग फोटोक्रोमेटिक कांच बनाने में होता है। सिल्वर आयोडाइड का उपयोग कृत्रिम वर्षा कराने में होता है।

❋ सिल्वर नाइट्रेट का प्रयोग निशान लगानेवाली स्याही बनाने में किया जाता है। मतदान के समय मतदाताओं की अंगुलियों पर इसी का निशान लगाया जाता है। सूर्य की प्रकाश में अपघटित हो जाने के कारण इसे रंगीन बोतलों में रखा जाता है। सिल्वर ब्रोमाइड का उपयोग फोटोग्राफी में होता है।

❋ चांदी के चम्मच से अंडा खाना वर्जित रहता है, क्योंकि चाँदी अंडे में उपस्थित गंधक से प्रतिक्रिया कर काले रंग का

सिल्वर सल्फाइड बनाती है, जिससे चम्मच नष्ट हो जाती है।

❋ सोना को कठोर बनाने के लिए उसमें ताँबा या चाँदी मिलाया जाता है। शुद्ध सोना २४ कैरेट का होता है। आभूषण बनाने के लिए २२ कैरेट सोने का उपयोग होता है।

❋ स्वर्ण लेपन में पोटेशियम ओरिसायनाइड का प्रयोग विद्युत अपघटन के रूप में होता है।

❋ ऑरिक क्लोराइड का उपयोग सर्प विषरोधी सूई बनाने में होता है।

❋ प्लेटिनम को सफेद सेना कहा जाता है।

❋ पारा को व्किव सिल्वर के नाम से भी जाना जाता है। इसका निष्कर्षण मुख्यत: सिनेवार से होता है। पारा को लौह पात्र में रखा जाता है, क्योंकि यह लोहे के साथ अमलगम नहीं बनाता है। ट्यूब लाइट में सामान्यत: पारा का वाष्प और आर्गन गैस भरी रहती है।

❋ सीसा सबसे स्थायी तत्व है। इसका उपयोग कागज पर लिखने में होता है।

❋ लेड आर्सेनिक नामक मिश्रधातु का उपयोग गोली बनाने में होता है। कार्बन सीसा का उपयोग कृत्रिम अंगों के निर्माण में होता है।

❋ लेड ऑक्साइड को लीथार्ज कहा जाता है, जो कि एक उभयधर्मी ऑक्साइड है। इसका उपयोग रबर उद्योग में स्टोरेज बॅटरी के निर्माण में तथा फ्लिण्ट काँच बनाने में होता है।

❋ बेसिक लेड कोर्बोनेट को व्हाइट लेड कहा जाता है। इसे सफेदा के नाम से भी जाना जाता है।

❋ लेड टेट्राइथाइल का उपयोग अपस्फोटन रोकने में किया जाता है।

❋ लता मंगेशकर को सुर की रानी कहा जाता है।

❋ भारत का पहला बोलनेवाला चलचित्र आलम आरा था।

❋ भारत का पहला सुपर कंप्यूटर परम है।

❋ भारत के राष्ट्रीय प्रतीक सत्यमेव जयते में चार मुंख हैं।

❋ महलों का शहर कोलकाता को कहा जाता है।

❋ फेसबुक की स्थापना २००४ में हुई।

❋ कोशिका का इंजन माइटोकानड्री कहते हैं।

❋ अजन्ता और एलोरा की गुफाएँ महाराष्ट्र राज्य में स्थित है।

❋ शून्य की खोज आर्यभट्ट ने की थी।

❋ मछली गिल से सांस लेती है।

❋ नेत्र दान में से दानकर्ता की आंख का कॉर्निया भाग प्रयोग में आता है।

❋ अंग्रेजों का पहला संघर्ष बहादुरशाह जफर इस मुगल शासक से हुआ।

❋ भारत में सर्वाधिक चांदी उत्पन्न करनेवाला प्रदेश राजस्थान है।

❋ रैक्सिन (रेग्जिन) कृत्रिम चमड़ा सेल्यूलोज वनस्पती पदार्थ से बनाया जाता है।

❋ भारी जल का अणुभार २० अणुभार होता है।

❋ ट्युबलाइट में पारे की वाष्प होती है।

❋ देश का पहला भारी जल का संयत्र नांगल (पंजाब) पर स्थापित किया गया।

❋ विश्व का सबसे हल्का लड़ाकू विमान तेजस (भारतीय) है।

❋ विश्व की पहली रेल सेवा इंग्लैंड (१८२६) में शुरू हुई।

❋ प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना २५ दिसंबर २००० को शुरू की गई।

❋ भारत का सबसे बड़ा रेलवे मॉडल कक्ष उदयपुर में है।

❋ शरीर में लाल रक्त कणिकाओं का निर्माण अस्थि मज्जा होता है।

❋ हिमोफिलिया, मांगोलिज्म, वर्णांधता आनुवंशिक रोग हैं।

❋ मानव जाति का अध्ययन करने को एंथ्रोपोलॉजी कहते हैं।

❋ कैलिडोस्कोप- इसके द्वारा रेखा-गणितीय आकृति भिन्न-भिन्न प्रकार की दिखाई देती है।

❋ लाइटिंग कन्डक्टर- यह उपकरण ऊंची इमारतों के ऊपर उनके ऊंचे भागों पर लगा दिया जाता है, जिससे बिजली का कोई प्रभाव नहीं पड़ता और इमारतें सुरक्षित रहती हैं।

❋ मैगाफोन- वह उपकरण है जिसके द्वारा ध्वनि को दूर स्थान पर ले जाया जाता है।

❋ मैनोमीटर- गैस का दाब ज्ञात करने में इसकी मदद ली जाती है।

❋ माइक्रोमीटर- यह इक प्रकार का पैमाना है जिसकी सहायता से मिमी के हजारवें भाग को ज्ञात कर सकते हैं।

❋ माइक्रोस्कोप- यह छोटी वस्तुओं को आवर्धित करके बड़ा कर देता है- अत: जिन वस्तुओं को आँखों से नहीं देखा जा सकता, उन्हें इस उपकरण से देख सकते हैं।

❋ माइक्रोटोम- किसी वस्तु को बहुत छोटे-छोटे टुकड़ों में काटने में काम आता है, जिनका कि सूक्ष्म अध्ययन करना होता है।

❋ ओडोमीटर- पहियेवाली गाड़ी द्वारा चली दूरी नापने के काम आता है।

❋ ओसिलोग्राफ- विद्युतीय तथा यांत्रिक कम्पनों को ग्राफ पर चित्रित करनेवाला उपकरण है।

❋ पेरिस्कोप- पनडुब्बियों में उपयोग होनेवाला ऐसा उपकरण जिसकी सहायता से पानी में डूबे हुए को पानी के ऊपर का दृश्य दिखाई पड़ सकता है।

❋ पोटेनशियोमीटर- यह विद्युत वाहक बलों की तुलना करने में, लघु प्रतिरोधों के मापन में तथा वोल्टमीटर व अमीटर के केलीब्रिशन में काम आता है।

❋ पायरोमीटर- दूर स्थित वस्तुओं के ताप को ज्ञात करने हेतु इस यंत्र का प्रयोग किया जाता है।

❋ फोनोग्राफ- ध्वनी लेखन के काम आनेवाले उपकरण को फोनोग्राफ कहते हैं।

❋ फोटामीटर- यह दो स्त्रोतों की प्रदीपन तीव्रता की तुलना करने में काम आता है।

❋ साइटोट्रोन- यह कृत्रिम मौसम उत्पन्न करने के काम आनेवाला उपकरण है।

❋ फोर्थ स्टेट समाचार पत्र को कहते हैं।

❋ ताजमहल को २०००० कारीगरों ने २० वर्ष में बनाया।

❋ अंधे लोग ब्रेल लिपि के प्रयोग से लिखते पढ़ते है जिसका विकास सन १८२४ में फ्रांस के लुई ब्रेल ने किया।

❋ संगीत में सात स्वर होते है- सा,रे,ग,म,प,ध,नि।

❋ अलाउद्दीन खिलजी सुल्तान ने स्वयं को सिकन्दर-ए-सानी पदवी से विभूषित किया था।

❋ यदि जल को ० डिग्री सेल्सियस से २० डिग्री सेल्सियस तक गरम किया जाए तो उसका आयतन पहले घटेगा फिर उसके बाद बढ़ेगा।

❋ निम्न में से ७३वां संशोधन पंचायती राज के सशक्तीकरण से संबंधित है।

❋ पतंजलि पुष्यमित्र शुंग के दरबार में था।

❋ कनिष्क कुषागवंश का शासक था।

❋ कनिष्क की राजधानी पुरुषपुर थी।

❋ चरक, नागार्जुन, अश्वघोष व वसुमित्र कनिष्क के दरबार में थे।

❋ पुरुषपुर में चैत्य का निर्माण कनिष्क ने करवाया।

❋ रेशममार्ग का संस्थापक कनिष्क था।

❋ शंक संवत (कनिष्क के राज्यरोहण) की तिथि ७८ ई. है।

❋ मगध में शासन करनेवाला प्रथम ऐतिहासक राजवंश हर्यक वंश।

❋ हर्यक वंश को पितृहता यश के रूप में जाना जाता था।

❋ रविवार की छुट्टी १८४३ में आरम्भ हुई।

❋ माउंट अबू के दिलवाड़ा मंदिर का निर्माण जैन धर्म के अनुयायियों ने करवाया था।

❋ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के पहले अध्यक्ष डब्ल्यू सी बनर्जी थे।

❋ जब कांच टूटता है तो इसके टुकड़े ३००० मील प्रति घंटा की गति से छिटकते हैं।

❋ आकाशीय बिजली कड़कने से जो तापमान पैदा होता है वह सूर्य की सतह पर पाए जानेवाले तापमान से पांच गुना ज्यादा होता है।

❋ एक वायलिन बनाने में लकड़ी के ७० विभिन्न आकार के टुकड़े लगते हैं।

❋ दुनिया के लगभग आधे अखबार अकेले अमेरिका और कनाडा में प्रकाशित होते हैं।

❋ जुराब पहन कर सोनेवाले लोग रात को बहुत कम बार जागते हैं या बिल्कुल नहीं जागते।

❋ फेसबुक बनानेवाले मार्क जुकरबर्ग के पास कोई कॉलेज डिग्री नहीं है।

❋ आपका दिमाग एक भी चेहरा अपने आप नहीं बना सकता आप जो भी चेहरे सपनों में देखते हैं वो जिंदगी में कभी ना कभी आपके द्वारा देखे जा चुके होते हैं।

❋ अगर कोई आपकी तरफ घूर रहा हो तो आपको खुद एहसास हो जाता है चाहे आप नींद में ही क्यों ना हो।

❋ बंगाल शैली- चित्रकारी की बंगाल शैली का विकास २०वीं शताब्दी के प्रारंभिक काल में ब्रिटिश राज के दौरान हुआ। यह भारतीय राष्ट्रवाद से प्रेरित शैली थी, लेकिन इसको कई कला प्रेमी ब्रिटिश प्रशासकों ने भी प्रोत्साहन दिया। रवींद्रनाथ टैगोर के भतीजे अवनींद्रनाथ टैगोर इस शैली के सबसे पहले चित्रकार थे। उन्होंने मुगल शैली सेप्रभावित कई खूबसूरत चित्र बनाये। टैगोर की सबसे प्रसिद्ध कृति भारत-माता थी जिसमें भारत को एक हिंदू देवी के रूप में चित्रित किया गया था। १९२० के बाद भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के साथ इस शैली का पतन हो गया।

❋ आधुनिक प्रवृत्ति- औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय कला पर पश्चिमी प्रभाव पूरी तरह से पड़ने लगा था। इस काल के दौरान कई ऐसे चित्रकार हुए जिन्होंने पश्चिमी दृष्टिकोण और यथार्थवाद के वेश में भारतीय विषयों का सुंदर चित्रण किया। इसी दौरान जेमिनी रॉय जैसे कलाकार भी थे जिन्होंने लोककला से प्रेरणा ली।

❋ भारतीय स्वतंत्रता के बाद प्रगतिशील कलाकारों ने स्वतंत्रोत्तर भारत की आकांक्षाओं को व्यक्त करने के लिए नये विषयों व माध्यमों को चुना। इस समूह के छह प्रमुख चित्रकारों में के.एच.आगा, एस.के.बकरे, एच.ए.गदे, एम.एफ.हुसैन, एस.एच.रजा और एफ.एन.सूजा शामिल थे। इस समूह को १९५६ में भंग कर दिया गया लेकिन छोटे से ही समय में इसने भारतीय चित्रकला परिदृश्य को पूरी तरह से बदल दिया। इस काल की एक प्रसिद्ध चित्रकार अमृता शेरगिल हैं जिन्होंने नवीन भारतीय शैली का सृजन किया। अन्य महान चित्रकारों में गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर और रवि वर्मा का नाम शामिल है। वर्तमान प्रसिद्ध चित्रकारों में बाल चाब्दा, वी.एस.गाईतोंडे, कृष्णन खन्ना, रामकुमार, तैयब मेहता और अकबर पदमसी शामिल हैं। जहर दासगुप्ता, प्रोदास करमाकर और बिजॉन चौधरी ने भी भारतीय कला व संस्कृति को समृद्ध बनाने में योगदान दिया है।

❋ राजपूत चित्रकला शैली- राजपूत चित्रकला शैली का विकास १८वीं शताब्दी के दौरान राजपूताना राज्यों के राजदरबार में हुआ। इन राज्यों में विशिष्ट प्रकार की चित्रकला शैली का विकास हुआ। हालांकि इनमें कुछ ऐसे समान तत्व हैं जिसकी वजह से इसका नामकरण राजपूत शैली किया गया। यह शैली विशुद्ध हिंदू परंपराओं पर आधारित है। इस शैली में रागमाला से संबंधित चित्र काफी महत्वपूर्ण हैं। इस शैली में मुख्यतया लघु चित्र ही बनाये गये। राजपूत चित्रकला की एक असाधारण विशेषता आकृतियों का विन्यास है। लघु आकृतियां भी स्पष्टत: चित्रित की गई हैं। इस शैली का विकास कई शाखाओं में हुआ।

❋ मालवा शैली- मालवा शैली अपने चमकीले और गहरे रंगों के कारण विशिष्ट है। मालवा शैली के रंगचित्रों की प्रमुख श्रृंखला रसिकप्रिया है।

❋ मेवाड़ शैली- मेवाड़ शैली में पृष्ठभूमि सामान्यत: बेलबूटेदार और वास्तुशिल्प से परिपूर्ण है।

❋ बीकानेर शैली- बीकानेरी शैली के अधिकांश कलाकार मुस्लिम थे। यह शैली अपने सूक्ष्म एवं मंद रंगाभास के लिए प्रसिद्ध है।

❋ बूंदी शैली- इस शैली में नारी सौंदर्य के चित्रण के लिए कुछ अपने मानदण्ड स्थापित किए गए।

❋ कोटा शैली- कोटा शैली काफी हद तक बूंदी शैली से मिलती-जुलती है। इस शैली में विरल वनों में सिंह और चीतों के शिकार के चित्र विश्वविख्यात हैं।

❋ आंबेर शैली- आंबेर शैली के रंगचित्र समृद्ध हैं और उनमें विषय वैविध्य भी है लेकिन इसमें सूक्ष्मता का अभाव है।

❋ किशनगढ़ शैली- उन्नत ललाट, चापाकार भौहें, तीखी उन्नत नासिका, पतले संवेदनशील ओंठ तथा उन्नत चिबुक सहित नारी का चित्रण इस शैली का वैशिष्ट्य हैं।

❋ मारवाड़ शैली- इस शैली के रंगचित्रों में पगड़ी की कुछ विशेषताएं हैं। रंग-संयोजन में चमकीले रंगों का प्राधान्य है।

❋ पहाड़ी चित्रकलाशैली- इस कला के चित्रित वृक्षों की बनावट पर नेपाली चित्रकला का व्यापक प्रभाव है। पहाड़ी चित्रकारों में कृष्ण गाथा अत्यंत लोकप्रिय है। बसौली शैली, गढ़वाल शैली, जम्मू शैली व कांगड़ा शैली पहाड़ी चित्रकला शैली की उपशैलियां हैं।

❋ भारतीय चित्रकारी के प्रारंभिक उदाहरण प्रागैतिहासिक काल के हैं, जब मानव गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी किया करता था।

❋ भीमबेटका की गुफाओं में की गई चित्रकारी ५५०० ई.पू. से भी ज्यादा पुरानी है। ७वीं शताब्दी में अजंता और एलोरा गुफाओं की चित्रकारी भारतीय चित्रकारी का सर्वोत्तम उदाहरण हैं।

❋ भारतीय चित्रकारी में भारतीय संस्कृति की भांति ही प्राचीनकाल से लेकर आज तक एक विशेष प्रकार की एकता के दर्शन होते हैं।

❋ प्राचीन व मध्यकाल के दौरान भारतीय चित्रकारी मुख्य रूप से धार्मिक भावना से प्रेरित थी, लेकिन आधुनिक काल तक आते-आते यह काफी हद तक लौकिक जीवन का निरूपण करती है। आज भारतीय चित्रकारी लोकजीवन के विषय उठाकर उन्हें मूर्त कर रही है।

❋ भारतीय चित्रकारी को मोटे तौर पर भित्ति चित्र व लघु चित्रकारी में विभाजित किया जा सकता है। भित्ति चित्र गुफाओं की दीवारों पर की जानेवाली चित्रकारी को कहते हैं, उदाहरण के लिए अजंता की गुफाओं व एलोरा के कैलाशनाथ मंदिर का नाम लिया जा सकता है। दक्षिण भारत के बादामी व सित्तानवसाल में भी भित्ति चित्रों के सुंदर उदाहरण पाये गये हैं। लघु चित्रकारी कागज या कपड़े पर छोटे स्तर पर की जाती है। बंगाल के पाल शासकों को लघु चित्रकारी की शुरुआत का श्रेय दिया जाता है।

❋ अजंता की गुफाएं- इन गुफाओं का निर्माणकार्य लगभग १००० वर्षों तक चला। अधिकांश गुफाओं का निर्माण गुप्तकाल में हुआ। अजंता की गुफाएं बौद्ध धर्म की महायान शाखा से संबंधित हैं।

❋ विश्व की भाषायें - दुनिया की कितनी भाषाएं हैं इसका उत्तर देना ठीक तरह से संभव नहीं है। दुनिया में कल भाषाओं की संख्या ६८०९ ई. इनमें से ९० फीसदी भाषाओं को बोलनेवालों की संख्या १ लाख से भी कम है। लगभग २०० से १५० भाषाएं ऐसी हैं जिनको १० लाख से अधिक लोग बोलते हैं। लगभग ३५७ भाषाएं ऐसी हैं जिनको मात्र ५० लोग ही बोलते हैं। इतना ही नहीं ४६ भाषाएं ऐसी भी हैं जिनको बोलनेवालों की संख्या मात्र १ हैं। दुर्भाग्यवश संचार के माध्यमों में वृद्धि के साथ ही कई ऐसी छोटी भाषाएं हैं जो लुप्तप्राय हैं। इन भाषाओं के लुप्त होने के साथ ही इनके बोलनेवालों की संस्कृति भी समाप्त हो जाएगी। पारिवारिक वर्गीकरण- संस्कृत, ग्रीक, लेटिन आदि भाषाओं का अध्ययन करने पर यह मालूम होता है कि वे किसी एक ही मूल भाषा से निकली हैं। इसी आधार पर भाषाओं को परिवारों में बांटने

का प्रयास किया जाता है। भाषा परिवारों के बारे में अलग-अलग विद्वानों की अलग-अलग राय है। भाषा परिवारों के नाम और उनमें शामिल प्रमुख भाषाएं इस प्रकार हैं- भारोपीय परिवार- यह सर्वप्रमुख भाषा परिवार है जिसके बोलनेवालों की संख्या विश्व में सबसे ज्यादा है। इस भाषा परिवार की प्रमुख भाषाएं संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश, हिंदी, बंगाली, फारसी, ग्रीक, लेटिन, अंग्रेजी, रूसी, जर्मन, पुर्तगाली, इतालवी इत्यादि है। यूराल परिवार- इस परिवार की भाषाएं यूरोप में बोली जाती है। प्रमुख भाषाएं हंगेरियन, फिन्निश और मॉर्डिविन हैं।

* पद्म पुरस्कार २०१६ की संपूर्ण सूची

पद्म विभूषण-

* धीरूभाई अंबानी- रिलायंस ग्रुप के फाउंडर (मरणोपरांत पद्मविभूषण के लिए चुने गए)।
* रजनीकांत- साउथ के सुपर स्टार।
* गिरिजा देवी- क्लासिकल सिंगर।
* रामोजी राव- लिटरेचर और एजुकेशन (जर्नलिज्म)
* यामिनी कृष्णमूर्ति- क्लासिकल डांसर।
* डॉ. विश्वनाथन शांता- मेडिसिन फील्ड में योगदान।
* श्री श्री रविशंकर- आध्यात्मिक गुरु।
* जगमोहन- जम्मू कश्मीर के पूर्व गवर्नर, पूर्व केंद्रीय मंत्री।
* डॉ. वी.के. अत्रे- साइंस एंड इंजीनियरिंग फील्ड में मशहूर।
* अविनाश दीक्षित- इंडियन अमेरिकन इकॉनमिस्ट।

पद्म भूषण

* अनुपम खेर- एक्टर।
* उदित नारायण- प्लेबैक सिंगर।
* राम वी. सुतार- मूर्तिकार।
* एच. कन्हैयालाल- थियेटर।
* विनोद राय- सिविल सर्विसेस (पूर्व कॅग चीफ)
* वाई. लक्ष्मी- लिटरेचर और एज्युकेशन।
* एन.एस. रामानुज टाटाचार्य- लिटरेचर और एजुकेशन
* बिजेंदर सिंह हमदर्द- लिटरेचर और एजुकेशन।
* प्रोफेसर डी. नागेश्वर रेड्डी- मेडिकल फैकल्टी।
* राबर्ट डी ब्लैकविल- भारत में अमेरिका के पूर्व एंबेसडर।
* स्वामी तेजोमयानंद- अध्यात्म।
* साइना नेहवाल- बैडमिंटन प्लेयर।

❋ सानिया मिर्जा- टेनिस प्लेयर।

❋ इंदु जैन- एक मीडिया ग्रुप की हेड।

पद्मश्री

❋ अजय देवगन- एक्टर।

❋ प्रियंका चोपड़ा- एक्ट्रेस।

❋ एस.एस राजामौली- फिल्म डायरेक्टर (बाहुबली)।

❋ मालिनी अवस्थी- फोक सिंगर (लोक गायिका)।

❋ उज्ज्वल निकम- मुंबई के सीनियर एडवोकेट।

❋ मधुर भंडारकर- फिल्म डायरेक्टर।

❋ भारत में रजत क्रान्ति अण्डा और चिकन का उत्पादन सम्बन्धित है।

❋ केसर के लिए पौधे का वर्तिकाग्र सा भाग उपयोग में लाया जाता है।

❋ महाजनी प्रथा का सर्वप्रथम उल्लेख शतपथब्राह्मण प्राचीन ग्रंथ में हुआ है।

❋ ललित अमरूद की उत्तम किस्म है।

❋ कृषिकार्य में लगे ट्रैक्टर की आवाज ९० डीबी स्तर से अधिक नहीं होनी चाहिए।

❋ धान में भूसी का प्रतिशत अनुमानत: २०% होता है।

❋ चावल के उन्नत बीज की प्रति हेक्टेयर बीजारोपण दर १५ किलोग्राम होती है।

❋ एक हॉर्सपॉवर ७४६ वॉट के बराबर होता है।

❋ कूड़े से हरित ऊर्जा निर्माण में उत्तर प्रदेश और पंजाब में यह राज्य अग्रणी है।

❋ ७१% प्रतिशत ग्रामीण परिवार की रसोई में परम्परागत लकड़ी, गोबर आदि से खाना बनाया जाता है। केवल १% ग्रामीण परिवार की रसोई में मिट्टी के तेल से खाना बनाया जाता है।

❋ जाबो, ग्रामीण खेती करने का तरीका नागालैण्ड में विद्यमान है।

❋ किसान चैनल का प्रधानमंत्री द्वारा २६ मई, २०१५ को उद्घाटन किया गया।

❋ मोल्डबोर्ड हल और डिस्क हैरो यह दो जुताई के प्राथमिक उपकरण है।

❋ जिस काल में मनुष्य ने घटनाओं का कोई लिखित विवरण उद्धत नहीं किया, उसे प्रागैतिहासिक काल कहते हैं।

❋ मानव विकास के उस काल को इतिहास कहा जाता है, जिसका विवरण लिखित रूप में उपलब्ध है।

❋ आद्य ऐतिहासिक काल उस काल को कहते हैं, जिस काल में लेखन कला के प्रचलन के बाद उपलब्ध लेख पढ़े नहीं जा सकते हैं।

❋ ज्ञानी मानव (होमो सैपियस) का प्रवेश इस धरती पर आज से लगभग ३० या ४० हजार वर्ष पहले हुआ।

❋ पूर्व पाषाण युग के मानव की जीविका का मुख्य आधार था- शिकार।

❋ मनुष्य में स्थायी निवास की प्रवृत्ति नव-पाषाण काल में हुई तथा उसने सबसे पहले कुत्ते को पालतू बनाया।

❋ मनुष्य ने सर्वप्रथम ताँबा धातु का प्रयोग किया तथा उसके द्वारा बनाया जानेवाला प्रथम औजार कुल्हाड़ी था।

❋ पल्लावरम नामक स्थान प्रथम भारतीय पुरापाषाण कालाकृति की खोज हुई थी।

❋ भारत में पूर्व पाषाण युग के अधिकांश औजार स्फटिक (पत्थर) के बने थे।

❋ भारत का सबसे प्राचीन नगर मोहनजोदड़ो था, सिंधी भाषा में जिसका अर्थ है मृतकों का टीला।

❋ भारत ९० देशों को सॉफ्टवेयर बेचता है।

❋ अमेरिका में ३८ प्रतिशत डॉक्टर भारतीय हैं।

❋ चीज रोलिंग- इस खेल में चीज की एक भेली को ऊंची पहाड़ी से नीचे फेंका जाताहै । किसी पहिये जैसी यह भेली करीब ४० किलो की होती है। लोग इसे पकड़ने के लिए इसके पीछे पीछे भागने लगते हैं। कोई इसकी रफ्तार से तो नहीं भाग सकता लेकिन लुढ़कते हुए लोग भी नीचे तक आते हैं और जिसके हाथ यह सबसे पहले लग जाती है वह विजेता कहलाता है।

❋ जैसलमेर का किला संसार का एकमात्र ऐसा अनोखा किला है जिसमें शहर की लगभग २५ प्रतिशत आबादी ने अपना घर बना लिया है।

❋ भारत विश्व में सबसे अधिक डाकघरों वाला देश है। इतने डाकघर संसार के किसी भी और देश में नहीं हैं।

❋ स्लाइड हाउस, फिसलन वाला घर- फिसलन वाला घर जापान के टोक्यो शहर में एक ऐसा घर है जिसके अंदर आपको ऊपर से किसी भी मंजिल पर जाने के लिए फिसल के जाना पड़ेगा जैसे फिसलन वाले झूलों के ऊपर झूलते है वैसे ही उस घर के अंदर सीढ़ियों की जगह पिछले वाला स्लाइड बनाया हुआ है। एक से दूसरी मंजिल पर जाने के लिए आप स्लाइड की सहायता ले सकते हैं। इस घर को इसके मालिक ने अपने बच्चों को आरामदायक जिन्दगी देने के लिए आकर्षक बनाया है और यह लोगों के आकर्षण का बहुत ज्यादा केंद्र बना हुआ है।

❋ कुंग फू भी भारत का- कुंग फू के जनक तत्मोह या बोधिधर्म नामक एक भारतीय बौद्ध भिक्षु थे जो ५०० ईस्वी के आसपास भारत से चीन गए।

❋ विश्व में २२ हजार टन पुदीने के तेल का उत्पादन होता है, इसमें से १९ हजार टन तेल अकेले भारत में निकाला जाता है।

❋ लाल रंग के फलों को खाने से हमारा दिल मजबूत और स्वस्थ रहता है।

❋ दुनिया में करीब डेढ़ अरब इंसान से ज्यादा ऐसे हैं जिनके पांव नीचे से बिल्कुल सीधे यानी चपटे हैं। किसी के भी गीले पैरों की जमीन पर पड़ी छाप से आप इसका अंदाजा लगा सकते हैं। इसके साथ ही खेलों में लगनेवाली हर ७ में से १ चोट पैर पर ही लगती है और अगर पांव के अंगूठे का नाखून जड़ से उखड़ जाए तो उसे दोबारा आने में ५ से ६ महीने का समय लग जाता है।

किसी भी इंसान के पांव में सबसे ज्यादा उंगलियों का रिकॉर्ड भारत के अक्षत सक्सेना के नाम है, जिसके पैर के दोनों पंजों पर १०-१० उंगलियां हैं। जबकि सबसे लंबे पांव का रिकॉर्ड अमेरिका के रॉबर्ट वैडलो के नाम है जो ३७ नंबर का जूता पहनते हैं। महिलाओं में ये मुकाम एकातेरिना लिसीना के नाम है जो रूस की रहनेवाली हैं और इनकी टांगें ४ फुट साढ़े ४ इंच की बताई जाती हैं।

महंगा इलाज- बीमारियों के इलाज में खर्च का हिसाब किताब सबको परेशान करता है पांव के सबसे महंगे इलाज का भी एक अनोखा कीर्तिमान है। अमेरिकी कोरियोग्राफर माइकल फ्लैटली के पैर में १९९९ में हुए फ्रैक्चर के इलाज का खर्च करीब ढाई अरब से ज्यादा बताया जाता है।

पूरी दुनिया की सैर- भले ही आप दुनिया तो क्या अपने देश में भी पूरा ना घूमे हो पर एक आम आदमी अपने पूरे जीवन में जितना चल कर दूरी तय करता है वो धरती के चार चक्कर काटने के लगभग बराबर होती है।

हड्डियों का हिसाब किताब- इंसान के शरीर की २५ प्रतिशत यानि ५२ हड्डियां, सिर्फ पैर में होती है, जबकि एक पैर में १०७ अस्थिरज्जु, २६ हड्डी, १९ मांसपेशी और ३३ जोड़ होते हैं। वहीं, एक पैर पर १,०००,०००,०००,००० यानि १ ट्रिलियन से ज्यादा बैक्टीरिया होते हैं।

❋ पोलैंड के अंदर ऐसा घर बनाया हुआ है जिसकी आकृति आम घर से उल्टी है। उसके मालिक ने उसका डिजाइन इस तरह तैयार किया कि उसे उल्टा बनाया गया है। उसकी छत नीचे की तरफ दिखाई गई है और फर्श ऊपर की तरफ दिखाया गया है। यह आम घरों से अलग और महंगा है। यह घर इतना विचित्र और सुंदर है कि पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। अब यहां दिन में हजारों पर्यटक इस घर को देखने आते हैं।

❋ भारत विश्व का सबसे बड़ा चाय उत्पादक और उपभोक्ता है। यहाँ विश्व की ३० प्रतिशत चाय उत्पादित होती है जिसमें से २५ प्रतिशत यहीं उपयोग की जाती है।

❋ आयुर्वेद मानव जाति के लिए ज्ञात सबसे आरंभिक चिकित्सा शाखा है। इस शाखा विज्ञान के जनक माने जानेवाले चरक ने २५०० वर्ष पहले आयुर्वेद का सम्मेलन किया था।

❋ किसी जमाने में शिकारी हिरण को पकड़ने के लिए उन्हीं की आवाज निकाला करते थे। आज यह एक प्रतियोगिता का रूप ले चुकी है। जर्मनी में हर साल दुनिया भर से लोग इसमें हिस्सा लेने के लिए आते हैं। कोई प्लास्टिक की पाइप का इस्तेमाल करता है, तो कोई सींगों का। प्यारे मेमने की आवाज भी निकालनी होती है और गुस्सैल बूढ़े हिरण की भी।

❋ इंसान की आंखों का आकार जन्म से लेकर मरण तक एक जैसा ही होता है, लेकिन उम्र बढ़ने के साथ-साथ आँख का लेंस बढ़ता रहता है।

❋ गोल्डफिश मछली अपनी आंखें नहीं बंद कर सकती क्योंकि उसकी पलकें नहीं होती।

❋ हमारा बाल डीएनए के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। आपके बाल की सहायता से आपका ब्लड ग्रुप पता किया जा सकता है और इससे शरीर की और भी बहुत सारी जानकारियां प्राप्त की जा सकती है।

❋ नमक एक ऐसी चीज है जो हर कोई अपने भोजन में इस्तेमाल करता है। यह न केवल भोजन का स्वाद बढ़ाता है बल्कि अनेक प्रयोगों में इस्तेमाल किया जाता है। अगर सब्जी में नमक कम या फिर ज्यादा हो जाए तो भोजन का स्वाद ही खत्म हो जाता है।

❋ लाल चावल में लौह तत्व भरपूर होते हैं और इसी कारण इनका रंग लाल होता है। लाल चावल के सेवन से शरीर में इन्सुलिन और ब्लड शुकर भी संतुलित बना रहता है। इसके अलावा लाल चावल में विटामिन बी-६ पाया जाता है जो शरीर में लाल खून कणिकाओं को बनाने और सेरोटोनिन निर्माण को संतुलित करने में मददगार होता है।

❋ इंसान जितनी ज्यादा ठंडी जगह में सोता है तो उसे सपने उतने ही ज्यादा डरावने आने की संभावना होती है।

❋ प्राचीन रोम के लोगों ने दुनिया को दायें और बायें जूतों के बारे में बताया, इससे पहले एक ही जूते को दोनों पाँव में डाला जा सकता था।

❋ डॉक्टर और इंजीनियर के संख्या के मामले में भारत चौथे नंबर पर है।

❋ घड़ियों में ल्यूब्रिकेंट की तरह प्रयोग किए जानेवाले तेल की कीमत लगभग ३००० डॉलर प्रति गैलन होती है।

❋ हमारी खुशी का पहला आँसू दाहिनी आँख से और दुख का पहला आँसू बायीं आंख से निकलता है।

❋ उसना किस्म के चावल में कैल्शियम, मैग्निशियम, आयरन, पोटैशियम जैसे पोषक तत्व भरपूर मात्रा में होते हैं और इसी कारण डायबिटीज (मधुमेह) के रोगियों के लिए इसका सेवन काफी फायदेमंद होता है।

❋ एक इन्सान के शरीर में पूरा ०.२ मिलीग्राम सोना होता है जिसमें से अधिकांश सोना खून में पाया जाता है। अगर ४०००० लोगों के खून को इकट्ठा करके सुखाया जाए तक जाकर ८ ग्राम सोना बन पाता है।

❋ भारतीय रेलवे दुनिया में सबसे ज्यादा कर्मचारियों की संस्था है जिसमें २१ लाख से भी ज्यादा कर्मचारी कार्यरत हैं।

❋ इस दुनिया में कोई भी नीले रंग का फल नहीं है। जानी-मानी ब्लू बेरीज भी बैंगनी (पर्पल) रंग की होती है।

❋ पहला लाइफ बोट सन १८४५ में पेटेंट कराया गया।

❋ एक रुपये में १०० पैसे होंगे, ये बात सन १९५७ में लागू की गई थी। इससे पहले इसे १६ आने में बांटा जाता था।

❋ अंग्रेजी शब्दकोष के सभी शब्दों में से सेट के सबसे ज्यादा अर्थ निकलते है।

❋ एक नवजात शिशु में लगभग १ कप ही खून होता है।

❋ अगर आधुनिक दुनिया के तनाव को हटा दिया जाए तो हम जैसे आदमी औसतन दिन में १० घंटे सोएंगे।

❋ किसी को दाढ़ी क्यों उगती हैं

स्त्री और पुरुष सभी के शरीर पर बाल होते हैं लेकिन महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों के शरीर में ज्यादा बाल होते हैं। एक सामान्य पुरुष के शरीर में टेस्टोस्टेरोन का चौथाई भाग पाया जाता है जिसकी वजह से उसे दाढ़ी निकलती है। यदि इसे रेजर से साफ न किया जाए तो यह काफी बड़ी और घनी हो जाती है।

दाढ़ी और आवाज में भारीपन की वजह से पुरुष महिलाओं से काफी अलग दिखते हैं। डाई हाइड्रो टेस्टोस्टीरॉन की वजह से पुरुषों में हेयर फॉलिकल उत्तेजित होते हैं जिसकी वजह से उन्हें दाढ़ी आती है। महिलाओं में यह एंजाइम नहीं पाया जाता है जिसकी वजह से उन्हें दाढ़ी नहीं आती है। पुरुष और महिला दोनों के हार्मोन्स में काफी अंतर होता है। पुरुष में एंड्रोजन नामक हार्मोन होता है जिससे उनके आवाज में भारीपन आता है और उन्हें दाढ़ी निकलती है जबकि महिला में एस्ट्रोजन नाम का हार्मोन पाया जाता है जिससे उनके बाकी अंगों का विकास होता है।

❋ सिर्फ मादा मच्छर ही आपका खून चूसती हैं, बेचारे नर मच्छर सिर्फ आवाज करते हैं।

❋ हिंन्दी और अंग्रेजी के अलावा नोट पर अन्य १५ भाषाओं में भी रुपया लिखा हुआ होता है जो नोट के पीछे की तरफ होता है। भारतीय नोट पर उसकी कीमत कुल १५ भाषाओं में लिखी जाती है।

❋ महिलाएं हर रोज औसतन २०००० शब्द बोलती हैं, जो पुरुषों के औसत से एक से दो हजार।

❋ भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह तनख्वाह (वेतन) के रूप में सिर्फ एक रुपया लेते थे।

❋ रौलेक्ट एक्ट को काला कानून कहा है।

❋ मुगल काल में कृषक तीन वर्गों में विभाजित थे।

❋ शिवाजी ने चौथ व सरदेशमुखी कर लगाए थे।

❋ पालखेड़ा का युद्ध पेशवा बाजीराव प्रथम व निजामुलमुल्क के मध्य हुआ।

❋ संगोला की संधि के बाद पेशवा के हाथ में सारे अधिकार सुरक्षित हो गए।

❋ दिल्ली पर हमला करनेवाला प्रथम पेशवा बाजीराव प्रथम था।

❋ रंगीला बादशाह मुहम्मद शाह शासक को कहा गया है।

❋ फ्रांस के राष्ट्रपति फ्रांस्वा ओलांद हैं।

❋ विश्व रक्तदान दिवस १५ जून को बनाया जाता है।

❋ विश्व प्रेस स्वतंत्रता दिवस ३ मई को मनाया जाता है।

❋ पृथ्वी दिवस २२ मई को मनाया जाता है।

❋ विश्व पर्यावरण दिवस ५ मई को मनाया जाता है।

❋ राष्ट्रीय युवा दिवस १२ जनवरी को बनाया जाता है।

❋ न्याय दर्शन के संस्थापक महर्षि गौतम है।

❋ भूदान आंदोलन के प्रवर्तक विनोबा भावे थे।

❋ आनंद वन की स्थापना बाबा आम्टे ने की थी।

❋ भारत सरकार ने दादा साहब फाल्के पुरस्कार १९६९ को शुरू किया।

❋ अक्तूबर १९९२ में लंदन के जितना बड़ा बर्फ का टुकड़ा अंटार्टिका था।

❋ प्रकाश को धरती की यात्रा करने के लिए सिर्फ ०.१३ सेकेंड लगेंगे। अगर हम प्रकाश की गति से अपनी नजदीकी गैलेक्सी पर जाना चाहे तो हमें २० साल लगेंगे। आमतौर पर कक्षा में पढ़ाया जाता है कि प्रकाश की गति ३ लाख किलोमीटर प्रति सेकेंड होती है। पर असल में यह गति २,९९,७९२, किलोमीटर प्रति सैकेंड होती है। यह १,८६,२८७ मील प्रति सैकेंड के बराबर होती है।

❋ हवा तब तक आवाज नही करती जब यह किसी वस्तु के विपरीत न चले।

❋ अगर किसी एक आकाश गंगा के सारे तारे नमक के दाने जितने हो जाए तेा वह पूरा का पूरा ओलंपिक स्विमिंग पूल भर सकते हैं।

❋ क्विक सिल्वर या पारा ऐसी एकमात्र धातु है, जो तरल अवस्था में रहती है और इतनी भारी होती है कि इस पर लोहा भी तैरता है।

❋ हर साल आसमानी बिजली से १००० लोग मारे जाते हैं।

❋ भारत का प्रथम गवर्नर- जनरल लार्ड विलियम बॅटिक

❋ भारत का अंतिम गवर्नर जनरल एवं प्रथम वायसराय- लार्ड कैनिंग

❋ भारत का अंतिम वायसराय- लार्ड माउंटबेटन।

❋ स्वतंत्र भारत का प्रथम तथा अंतिम (भारतीय) गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी।

❋ भारत का प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद।

❋ भारत का प्रथम मुस्लिम राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन।

❋ भारत का प्रथम उप-राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन।

❋ भारत का प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू।

❋ भारत का प्रथम उपप्रधानमंत्री एवं गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल।

❋ भारत का प्रथम शिक्षामंत्री- अबुल कलाम आजाद।

❋ भारत के केंद्रिय मंत्रीमंडल से इस्तीफा देनेवाला प्रथम मंत्री- श्यामा प्रसाद मुखर्जी (१९५०)

❋ प्रथम चीफ ऑफ एयर स्टॉफ एयर मार्शल- सर थॉमस एमहर्स्ट।

❋ भारत का प्रथम वायु सेनाध्यक्ष एयर मार्शल- एस. मुखर्जी।

❋ भारत का प्रथम नौ सेनाध्यक्ष वाइस एडमिरल आर.डी.कटारी।

❋ स्वतंत्र भारत का प्रथम कमांडर- इन चीफ जनरल-करिअप्पा।

❋ लोकसभा का प्रथम अध्यक्ष- गणेश वासुदेव मालवंकर।

❋ भारत का प्रथम चुनाव आयुक्त- सुकुमार सेन।

❋ भारत का प्रथम मुख्य न्यायाधीश जस्टिस- हीरालाल जे. कानिया।

❋ अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय में प्रथम भारतीय न्यायाधीश- डॉ. नागेंद्र सिंह।

❋ सिख धर्म के बारे में- सिख सम्प्रदाय की स्थापना का श्रेय गुरु नानक (प्रथम गुरु) को है। गुरु नानक के अनुयायी ही सिक्ख कहलाए। ये बादशाह बाबर एवं हुमायूँ के समकालीन थे। सन १४९६ ई. की कार्तिक पूर्णिमा को नानक को आध्यात्मिक पुनर्जीवन का आभास हुआ। गुरु नानक ने गुरु का लंगर नामक नि:शुल्क सहभागी भोजनालय स्थापित किए। गुरुनानक ने अनेक स्थानों पर संगत (धर्मशाला) और पंगत (लंगर) स्थापित किए। संगत और पंगत ने गुरुनानक के अनुयायियों के लिए एक संस्था का कार्य किया जहाँ वे प्रतिदिन मिलते थे। गुरु नानक की सन १२५३९ ई. में करतारपुर में मृत्यु हो गयी। गुरु अंगद (सन १५३९-५२ ई.) सिक्खों के दूसरे गुरु थे। गुरु अंगद ने नानक द्वारा शुरू की गई लंगर- व्यवस्था को स्थायी बना दिया। गुरुमुखी लिपी का आरंभ अंगद ने किया। सिक्खों के तीसरे गुरु अमरदास थे। गुरु अमरदास ने हिन्दुओं से पृथक होने के कई कार्य किए। हिन्दुओं से अलग विवाह पद्धति लवन को प्रचलित किया। अकबर ने गुरु अमरदास से गोविन्दवाल जाकर भेंट की और गुरुपुत्री बीबी भानी को कई गाँव दान में दिए। अमरदास ने २२ गद्दियों की स्थापना की और प्रत्येक प्रत्येक पर एक महन्त की नियुक्ति की। बीबी के पति रामदास सिक्खों के चौथे गुरु हुए। अकबर ने बीबी भानी को ५०० बीघा भूमि दी। गुरु रामदास ने इसी भूमि पर अमृतसर नामक जलाशय खुदवाया और अमृतसरस नगर की स्थापना की। गुरु रामदास ने अपने तीसरे पुत्र अर्जुन को गुरु का पद सौंपा। इस प्रकार इन्होंने

गुरु पद को पैतृक बनाया।

❋ जोएफ नीकपे ने १८२७ में दुनिया की सबसे पहली फोटोग्राफिक आकृति विकसित की। थॉमस एडीसन और वी.के.एल. डिक्सन ने १८९४ में फिल्म कैमरे का आरम्भ किया, पर एक तस्वीर को परदे पर लाने का काम सबसे पहले एक जर्मन पुजारी द्वारा किया गया।

❋ एक व्यक्ति बिना खाये एक महीना रह सकता है पर बिना पानी के ७ दिन। अगर शरीर में पानी की मात्रा १ प्रतिशत से कम हो जाए तो आप प्यास महसूस करने लगते है। अगर यह मात्रा १० प्रतिशत से कम हो जाए तो आपकी मौत हो जाएगी।

❋ हर मनुष्य अपने जीवन काल में लगभग आधा घंटा एक कोशिका जीव की तरह बिताता है।

❋ हर साल हमारे शरीर के लगभग ९८ प्रतिशत परमाणु बदल जाते हैं।

❋ गरम पानी ठंडे पानी से ज्यादा भारी होता है।

❋ जब अंतरिक्षयात्री अंतरिक्ष से वापिस आते है तब उनकी लंबाई दो इंच बढ़ जाती है। इसका कारण यह है कि हमारी रीड़ की हड्डी से जुड़ी लचीली हड्डियां गुरुत्व की गैरहाजरी में फैलने लगती है।

❋ जब हाईड्रोजन हवा में जती है तो इस क्रिया के फलस्वरूप पानी बनता है।

❋ प्लेटिनियम मनुष्य द्वारा बनाया गया सबसे पहला तत्व है।

❋ पूरे जीवन काल के दौरान नींद में आप भिन्न-भिन्न तरह के ७० कीट और १० मकड़ियां खा जाते हैं।

❋ आपका दिल एक दिन में लगभग १००००० बार धड़कता है।

❋ आपके शरीर की लगभग २५ फीसदी हड्डियां आपके पैरों में होती है।

❋ ऊंगलियों के नाखुन पैरों के नाखुनों से ४ गुना ज्यादा जल्दी बढ़ते हैं।

❋ एक औसतन इंसान दिन में १० बार हंसता है।

❋ छींकते समय आंखें खुली रख पाना नामुनकिन है और छींकते समय दिल की गति एक मिली सेकेंड के लिए रूक जाती है।

❋ समुद्री घास में आयोडीन पाया जाता है।

❋ खाना बनाते समय सर्वाधिक मात्रा में विटामिन नष्ट होते हैं।

❋ रजत दर्पण बनाने में ग्लूकोज का प्रयोग किया जाता है।

❋ दूध पायस कोलाइडी तंत्र है।

❋ यदि दूध से क्रीम को अलग कर दिया जा, तो दूध का घनत्व बढ़ जाता है।

❋ अस्पतालों में कृत्रिम सांस के लिए प्रयुक्त सिलेंडरों में ऑक्सीजन एंव हीलियम का मिश्रण होता है।

❋ ठंडे देशों में हिमांक कम करने के लिए कारों के रेडियेटरों में एथिलीन ग्लाइकॉल मिलाया जाता है।

❋ पुराने तैलचित्रों के रंगों को फिर से उभारने के लिए हाइड्रोजन पेरोक्साइड काम में आता है।

❋ सोडियम को मिट्टी तेल में रखा जाता है।

❋ सबसे अधिक घनत्व, सबसे भारी तत्व है- ओसमियम।

❋ सबसे कम घनत्व, सबसे हल्का एवं सबसे प्रबल अपचायक तत्व है लीथियम।

❋ सबसे प्रबल उपचायक फ्लोरीन है।

❋ सफेद स्वर्ण प्लेटिनम को कहते हैं।

❋ सर्वाधिक विद्युत चालकता वाला तत्व चांदी है।

❋ रेडॉन गैसीय तत्वों में सबसे भारी है।

❋ जो लोग उलटे हाथ से काम करते हैं उन्हें समझदार समझा जाता है लेकिन औसतन सीधे हाथ का ज्यादा उपयोग करनेवाले लोगों से नौ साल ज्यादा जीते हैं।

❋ एक औसत व्यक्ति दिन में १० बार हंसता है।

❋ कुछ देर की हिचकी व्यक्ति को कितना परेशान करती है। इसे रोकने का हर संभव प्रयास किया जाता है। लेकिन चार्ल्स ऑस्बोर्न नाम के व्यक्ति को पूरे ६९ वर्ष तक लगातार यह हिचकियां परेशान करती रहीं।

❋ अफ्रीका महाद्वीप पर बोली जानेवाली भाषाओं की संख्या १००० से भी ज्यादा है।

❋ ब्रिटिश राज घरानों को सफाई और सलीके का बेजोड़ उदाहरण समझा जाता है। इसी कड़ी में सबसे ऊपर नाम है एलिजाबेथ प्रथम का जिन्होंने स्वयं यह स्वीकार किया था कि वह तीन महीने में एक बार नहाती थीं।

❋ अंतरिक्ष में मौजूद सभी ग्रहों में एकमात्र पृथ्वी ही ऐसा ग्रह है जिसका नाम ईश्वर या किसी देवता के नाम पर नहीं पड़ा।

❋ दम घुटने के कारण व्यक्ति की मौत हो जाती है यह बात सभी जानते हैं। लेकिन अगर आप खुद अपनी सांस रोकते हैं तो आपको कुछ नहीं होगा।

❋ जिस महीने की शुरूआत रविवार से होती है, उस महीने का तेरहवां दिन शुक्रवार ही होगा।

❋ चीनी को जब चोट पर लगाया जाता है, दर्द तुरंत कम हो जाता है।

❋ जरूरत से ज्यादा तनाव आपके दिमाग को कुछ समय के लिए बंद कर सकता है।

❋ ९२% लोग सिर्फ हंस देते हैं जब उन्हें सामनेवाले की बात समझ नहीं आती।

❋ होशियार लोग ज्यादा तर अपने आप से बातें करते हैं।

❋ सुबह एक कप चाय की बजाए एक गिलास ठंडा पानी आपकी नींद जल्दी खोल देता है।

❋ डेनसिटीमीटर- इस उपकरण का प्रयोग घनत्व ज्ञात करने में किया जाता है।

❋ डिक्टाफोन- इसका उपयोग अपनी बात तथा आदेश दूसरे व्यक्ति को सुनाने के लिए रिकार्ड किया जाता हे। यह प्राय: दफ्तरों में प्रयोग किया जाता है।

❋ नमनमापी- यह उपकरण किसी स्थान पर नमन कोण मापने के लिए प्रयोग किया जाता है।

❋ डाइनेमोमीटर- इस यंत्र का प्रयोग इंजन द्वारा उत्पन्न की गई शक्ति को मापने में होता है।

❋ ऐपीडास्कोप- इसका प्रयोग चित्रों को पर्दे पर प्रक्षेपण के लिए किया जाता है।

❋ फैदोमीटर- यह यंत्र समुद्र की गहराई नापने के काम आता है।

✻ गैल्वेनोमीटर- इस यंत्र का उपयोग छोटे विद्युत परिपथों में विद्युत धारा की दिशा एवं मात्रा ज्ञात किया जाता है।

✻ गाइगर मूल काउण्टर- इस उपकरण की सहायता से रेडियो ऐक्टिव स्रोत के विकिरण की गणना की जाती है।

✻ ग्रेवीमीटर- इस यंत्र के द्वारा पानी की सतह पर तेल की उपस्थिति ज्ञात की जाती है।

✻ गाइरोस्कोप- इस यंत्र से घूमती हुई वस्तुओं की गति ज्ञात करते हैं।

✻ हाइड्रोमीटर- इस उपकरण के द्रवों का आपेक्षित घनत्व ज्ञात करते हैं।

✻ हाइड्रोफोन- यह पानी के अन्दर ध्वनि-तरंगों की गणना करने में काम आनेवाला उपकरण है।

✻ हाइग्रोमीटर- इसकी सहायता से वायुमंडल से व्याप्त आर्द्रता नापी जाती है।

✻ स्कूगेज- इसका प्रयोग बारीक तारों के व्यास नापने के काम आता है।

✻ किलोस्कोप- टेलीविजन द्वारा प्राप्त चित्रों को इस उपकरण के ऊपर देखा जाता है।

✻ सड़क और पानी, दोनों पर दौड़ती है बाइक

गिब्स कंपनी ने बिस्की नामक बाइक तैयार की है जो जमीन के अलावा पानी पर भी दौड़ती है। जमीन के साथ ही पानी पर चलनेवाली इस बाइक का नाम बिस्की रखा गया है। यह सिंगल सीटर बाइक है यानी इस पर एक ही व्यक्ति बैठकर सवारी कर सकता है। यह अपने आप में एक खास किस्म का दुपहिया वाहन है जो कि एक बटन भरके दबाने से जेट स्की में बदल जाता है और पानी पर भी दौड़ने लगता है।

बिस्की सुपरबाइक को तकनीकी तौर पर काफी एडवांस रखा गया है। यह २.३ मीटर लंबी और एक मीटर चौड़ी है। इसको मुख्य रूप से फन ड्राइविंग के लिहाज से बनाया गया है। यह बाइक महज ५ सेकैंड में अपने पहियों को समेटकर जेट में बदल जाती है। इसे बाद इसको पानी में चलाया जा सकता है। इसके अलावा यह महज ३ सेकेंड में पानीवाले मोड से रोडवाले मोड पर आ जाती है।

बिस्की बाइक की सड़क पर टॉप स्पीड १४० किलोमीटर प्रति घंटा है। वहीं पानी में भी यह ६० किलोमीटर प्रति घंटा की टॉप स्पीड के साथ दौड़ती है। यह २ सिलेंडर पेट्रोल इंजन से लैस है जो ५५ बीएचपी का पावर जनरेट करता है। इस बाइक में आराम का खास ध्यान रखते हुए बेहतरीन सस्पेंशन दिया गया है। इसके फ्रंट और रियर व्हील में हाइड्रॉलिक डिस्क ब्रेक्स दिए गए हैं। इसके व्हीलबेस १९८० एमएम और ग्राउंड क्लियरेंस १५० एमएम का है। इसका वजन महज ३४८ किलोग्राम है।

✻ बड़े जेट इंजन से निकलनेवाला एक्जॉस्ट प्रेशर इतना शक्तिशाली होता है कि किसी मंझौली कार को भी पलट सकता है। इसे जेटब्लास्ट कहते हैं। जब विमान एयरपोर्ट पर खड़ा होता है तो इसकी मशीनरी और लाइटों को बिजली एपीयू नामक एक यंत्र से मिलती है। एपीयू वास्तव में एक छोटा सा जेट इंजन होता है जो विमान के सबसे पिछले सिरे पर लगा होता है। इससे निकलते हुए एक्जॉस्ट को आसानी से देखा जा सकता है।

✻ ज्यादातर बड़े ब्रांड की लिपस्टिक मछली की चर्बी मिलाकर बनाई जाती है।

✻ विज्ञान टॉक्सिनीरिंग विधि के जरिये जहर को पेनकिलर यानी दर्द निवारक दवा में बदल सकता है।

✻ चीन में हर ३० सेकेंड में एक अपंग बच्चा पैदा होता है।

❋ भारत में आमों की बहुत सी प्रजातियां पाई जाती है। अल्फांसो हमारे देश का मशहूर आम है लेकिन इसकी कीमत भी दो लाख रुपये नहीं है। एक आम सूरज के अंडे के नाम से जाना जाता है। इसकी एक जोड़ी की कीमत दो लाख रुपये हौ और यह बड़े से अंडे की तरह होता है। इसे जापान में ही बहुत कम मात्रा में उगाया जाता है।

❋ गर्भ में सब बच्चों के मूछ बढ़ती है जो बाद में पूरे शरीर को ढक लेते है, बच्चा बाद में इन्हीं मुलायम बालों को खाता है।

❋ सेतुबन्ध काव्य की रचना वाकाटक वंश के शासक ने की।

❋ थाई रॉयल फर्स्ट क्लास ए-३८० में आप लग्जरी फ्लाइट का भरपूर आनंद ले सकते हैं। इस फ्लाइट में वेलकम ड्रिंक ऑफर करने के अलावा स्पा की सुविधा भी दी जाती है और प्राइवेसी का भी खास ख्याल रखा जाता है।

❋ दुनिया के सबसे मशहूर हवाई जहाजों में से एक है बोइंग ७४७-८ व्हीआयपी, जो सबसे लम्बा और दूसरा सबसे बड़ा एयरलाइनर है। १५० मिलियन डॉलर कीमतवाले इस हवाईजहाज की अंदर की बनावट किसी महल से कम नहीं है इसलिए इसमें बैठने पर किंग जैसा एहसास होना लाजमी ही है। इसके मालिक युसूफ लाउ हांगकांग के प्रसिद्ध अरबपति हैं। इन प्राइवेट जेट और लड़ाकू विमानों के अलावा भी ऐसे कई हवाई जहाज है जो लग्जरी के लिए पहचाने जाते हैं और जिनका सफर करने के लिए लाखों रुपये खर्च करने होते हैं लेकिन ऐसे सफर के दौरान आप खुद को किसी बादशाह से कम नहीं आंकेंगे, ये तय है।

❋ आजकल बहुत मात्रा में रेडियोएक्टिव (रेडियोधर्मी) कचरा पाया जाता है। इसे साफ करने के लिए सूरजमुखी के फूल का इस्तेमाल किया जाता है।

❋ ट्रेनों के नंबर का क्या है फंडा

अपने देश में चलनेवाली हर एक ट्रेन को एक नंबर दिया जाता है, जो ५ अंकों का होता है और यह हर ट्रेन का बिलकुल अलग नंबर होता है। यानि कि किसी भी ट्रेन का नंबर एक दूसरे से मैच नहीं करता। ये नंबर बिना वजह नहीं होता। हर एक ट्रेन के बारे में यह नंबर बहुत ही खास जानकारी देता है। वैसे तो ट्रेन के पांचों अंकों का किसी भी ट्रेन नंबर में कुछ न कुछ मतलब होता है, लेकिन ट्रेन नंबर का पहला अंक सबसे महत्वपूर्ण होता हे। इससे ट्रेन के बारे में आप बहुत कुछ जाना जा सकता है।

जब पहला अंक हो जीरो- जिस ट्रेन का नंबर जीरा से शुरू होता है वो रुटीन ट्रेन नहीं बल्कि विशेष ट्रेन होती है, जिसे विशेष अवसरों जैसे ठंड और गर्मी की छुट्टियों, या पूजा और त्यौहारों पर खासतौर पर चलाया गया होता है। ये स्पेशल ट्रेनें पूरे साल नहीं बल्कि कुछ एक महीनों के लिए ही चलती हैं।

जब पहला अंक हो एक- एक अंक से शुरू होनेवाली नंबर ट्रेन हमेशा ही लंबी दूरी की ट्रेनें होती हैं। एसी, सुपरफास्ट ट्रेनों का नंबर भी १ अंक से शुरू होता है।

जब पहला अंक हो दो- इसी तरह जब किसी ट्रेन का नंबर दो से शुरू होता है तो यह ट्रेन बहुत लंबी दूरी के लिए चलनेवाली एक्सप्रेस ट्रेन ही होगी। जब पहला अंक हो तीन- नंबर तीन से शुरू होनेवाली ट्रेनें आपको कोलकाता छोड़कर देशभर में कहीं नहीं मिलेंगी क्योंकि ये अंक सबअर्बन ट्रेन सिस्टम को दिया गया है। इसलिए ये ट्रेन नंबर कोलकाता शहर और उसके आसपास के इलाकों में रहनेवालों को ही मिलता है। जब पहला अंक हो चार- जिन ट्रेनों का नंबर अंक ४ से

शुरू होता है तो ये ट्रेनें भी पूरे देश में नहीं बल्कि दिल्ली, चेन्नई, हैदराबाद या ऐसे ही किसी मेट्रो सिटी में रहनेवालों के लिए चलती हैं। जब पहला अंक हो पांच- अंक ५ से शुरू होनेवाली ट्रेनें पैसेंजर होती हैं, जिनमें हमेशा से प्रचलित कोच लगे होते हैं। इन ट्रेनों में यात्रियों को कोई विशेष सुविधाएं नहीं मिलती हैं। जब पहला अंक हो छह- अगर किसी ट्रेन का नंबर ६ अंक से शुरू हो रहा है तो वह मेमो ट्रेन है जो कम दूरीवाले किन्हीं दो बड़े शहरों के बीच चलती हैं और ग्रामीण इलाकों से शहर आनेवालों के लिए भी उपलब्ध होती हैं।

✻ घर की आवश्यकता पूरी करने के लिए हर वर्ष लाखों की संख्या में पेड़ काटे जा रहे हैं, जिसकी वजह से धरती की हरियाली दिनों-दिन कम होती जा रही हैं और इसका नुकसान हमें ही उठाना पड़ा है। कम पेड़ों की वजह से प्रदूषण का प्रभाव पड़ रहा है। शहरों में यह समस्या और भी जटिल है। शहरों में अब पेड़ लगाने तक के लिए जगह नहीं बची है। ऐसे में घरों की जरूरत समस्या की वजह है वही इसका समाधान भी बन रहे हैं। इसका नाम है वर्टिकल फॉरेस्ट यानी कि इमारतों में ही पेड़ लगाए जाएंगे जो शहर की हरियाली को बढ़ाएंगे। इन इमारत की ऊंचाई १११ मीटर और ७६ मीटर होगी और इन इमारतों पर ९०० पेड़ लगाए जाएंगे।

✻ गिटार को दुनिया का सबसे हल्का म्यूजिक इंस्ट्रूमेंट कहा जाने लगा है, लेकिन दरअसल यह है ही नहीं। प्रतियोगिता में हिस्सा लेनेवालों को किसी रॉकस्टार की तरह पेश आना होता है और इस तरह से हाथ चलाना होता है मानो सच में गिटार बजा रहे हों। किसी जमाने में इसे बेवकूफी और पागलपन माना जाता था। लेकिन अब फिनलैंड में हर साल इसकी प्रतियोगिता होती है।

✻ पुराने समयों में नमक को सफेद सोना कहा जाता था क्योंकि उस समय इसे प्राप्त करना आसान नहीं था। रोमन में एक समय ऐसा था जब सिपाहियों को पैसे की जगह नमक दिया जाता था।

✻ बहुत ऊंचाई पर उड़ रहे हवाई जहाज एक प्रेशर टैंक की तरह काम करते हैं। ३५००० फीट की ऊंचाई पर विमान के बाहर हवा का दबाव और तापमान बहुत कम हो जाता है। ऐसी स्थिति में विमान के भीतर सामान्य वातावरण बनाए रखने के लिए बहुत शक्तिशाली कम्प्रेसर एयर कंडीशनिंग करके हवा को ऊंचे दबाव पर केबिन में भेजते हैं।

✻ एल सल्वाडोर के नगर नेजपा में प्रत्येक वर्ष ३१ अगस्त को आग की गेंदों का वार्षिक उत्सव मनाया जाता है। इसमें स्थानीय लोग कपड़े से बनी और जलनशील पदार्थ में भीगी सुलगती गेंदें सीधी एक-दूसरे पर फेंकते हैं। वर्ष १९२२ में इसी दिन एक ज्वालामुखी के फटने से उसका आग-सा दहकता लावा इस नगर में आ गया था। खतरनाक खेल होने के बावजूद आज तक इस खेल में बहुत अधिक नुकसान नहीं हुआ।

✻ बाल प्रोटीन से बना होता है जिसे केराटिन कहा जाता है। बालों में ५% सल्फर, २१% ऑक्सीजन, ५० टक्के कार्बन, १७ टक्के नाइट्रोजन और ६% हाईड्रोजन होता है। हमारे बाल रोजाना ०.३ से ०.५ की एमएम स्पीड से बढ़ते हैं और महीने भर में यह लगभग ०.५ इंच तक और सालभर में यह १५ सेंटीमीटर तक बढ़ जाते हैं।

✻ भारत की पहली यात्री रेलगाड़ी १६ अप्रैल १८५३ को मुम्बई से ठाने के बीच दौड़ी थी। इस ट्रेन में १४ बोगी थी और लगभग ४०० यात्रियों ने सफर किया था। तीन डिब्बोंवाले इंजन का नाम सिंध, सुल्तान और साहिब रखा गया था। इस रेलगाड़ी को ४० किलोमीटर का सफर तय करने में १ घंटा १५ मिनट लगे थे।

❋ गार्गी संहिता की रचना ऋषि कात्यायन ने की।

❋ अंतरिक्ष में जाने पर गोल हो जाते हैं कान

अंतरिक्ष में जाने पर लोगों के शरीर में कई तरह के बदलाव होते हैं जो आश्चर्यजनक हैं। अंतरिक्ष में यात्रा करने की सभी की कामना होती है लेकिन फिलहाल यह बड़े पैमाने पर शुरू नहीं हो पायी है। सिर्फ कुछ सलेक्टेड एस्ट्रॉनट ही अपनी रिसर्च के लिए अंतरिक्ष में जा पाए हैं। हालांकि अब आने वाले कुछ ही दशकों में अंतरिक्ष यात्रा आम होने लगेगी। अंतरिक्ष में जाने पर मनुष्य के शरीर में चौंकानेवाले बदलाव होते हैं। अंतरिक्ष में जाने पर अंतरिक्षयात्रियों को अपनी सेहत और शरीर का विशेष ध्यान रखने की सलाह और ट्रेनिंग दी जाती है। उनको अपनी मांसपेशियों समेत शरीर के कई अंगों को मजबूत और स्वस्थ बनाए रखने के लिए एक निश्चित अंतराल के बाद अभ्यास करना होता है।

दिल और कान पर प्रभाव- अंतरिक्ष में दिल प्रभावित होता है और उसकी पंप करने की क्षमता कम हो जाती है। साथ ही उसका आकार भी हल्का सा सिकुड़कर गोलाकार हो जाता है। हवा, कान का अंदरूनी हिस्सा पूरी तरह से अपना काम नहीं कर पाता है। इस कारण अंतरिक्ष में लगभग २ दिनों तक अंतरिक्षयात्रियों को मोशन सिकनेस से जूझना पड़ता है।

ग्रेविटी का प्रभाव- पृथ्वी पर ग्रेविटी के प्रभाव के कारण मनुष्य के शरीर में उपस्थित तरल पदार्थ ऊपर से नीचे की ओर प्रवाहित होता है। लेकिन अंतरिक्ष में ग्रेविटी का प्रभाव जब वापस आते हैं तो वे गोल दिखाई देते हैं।

गिर जाते हैं नाखून- अंतरिक्षयात्रियों के नाखून गिर सकते हैं।

रेडिएशन का खतरा- पृथ्वी की अपेक्षा अंतरिक्ष में अधिक रेडिएशन का सामना करना पड़ता है जिसके चलते यात्रियों पर बुरा प्रभाव पड़ता है। लंबाई बढ़ जाती है लेकिन नजर कमजोर हो जाती है। माना जाता है कि अंतरिक्ष में जाने पर व्यक्ति की लंबाई कुछ इंच तक बढ़ जाती है। ऐसा अंतरिक्ष में गुरुत्वाकर्षण बल नहीं होने के कारण होता है। वहीं, ज्यादा समय तक रहने पर अंतरिक्षयात्रियों की आंखों में कमजोरी आ सकती है। इस नेत्रदोष को विजुअल इम्पेयरमेंट प्रेशर सिंड्रोम कहते हैं।

❋ बाल हमारे दिमाग को गर्मी और चोट से बचाते हैं।

❋ इन्सान के शरीर की सभी कोशिकाओं में नमक होता है। हर मनुष्य के शरीर में २५० ग्राम नमक होता है।

❋ क्रोएशिया के एक कस्बे बेलिसा में एक ऐसा पार्क बनाया गया है, जो पूरी तरह से आलुओं को समर्पित है। इस पार्क में आलुओं के पौधों की क्यारियाँ हैं और आलुओं पर आधारित बच्चों का प्ले पार्क है जिसमें आलू के आकार के झूले व घिसरनपट्टी आदि लगे हैं।

❋ हवाई जहाज के टायरों में कारों और बाइकों की तरह नाइट्रोजन गैस भरी जाती है। इसका कारण यह है कि टेक ऑफ और लैंडिंग के समय टायर बहुत अधिक गरम हो जाते हैं। बहुत गरम टायर के भीतर नाइट्रोजन होने से आग लगने का खतरा कम हो जाता है।

❋ इटाकोलूमाइट नामक एक सैंडस्टोन (बलुआ पत्थर) पतली पट्टियों में काटने पर इतना लचकदार होता है कि इसे मोड़ा जा सकता है। परंतु यह इतना कठोर होता है कि इससे चाकुओं की धार लगाई जा सकती है।

❋ दुनिया का सबसे लम्बा रेलवे प्लेटफार्म उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में है जिसकी कुल लम्बाई १३६६ मीटर है। यानी

के १ किलोमीटर और ३०० मीटर।

✻ जब सोडियम के कणों को क्लोरीन गैस के साथ मिलाया जाता है तो नमक बनता है। काला बनाने के लिए नमक के पानी में हरड़ के बीज घोलकर बनाया जाता है। सबसे पहले काला नमक भारत में बनाया गया था।

✻ भारतीय रेलवे की पटरियों की लंबाई १ लाख ८ हजार किलोमीटर है इतनी दूरी में पृथ्वी के ढाई चक्कर लगाए जा सकते हैं। भारत की रेलगाड़ी एक दिन में जितनी दूरी तय करती हैं वो दूरी पृथ्वी से चाँद की दूरी से लगभग ढाई गुणा ज्यादा है। रेलगाड़ी में एक दिन में सफर करनेवालों की संख्या लगभग दो करोड़ ३१ लाख है यो ऑस्ट्रेलिया की जनसंख्या के बराबर है।

✻ मिस्र के किशोर फराओ (बादशाह) तूतनखामन का ताबूत ठोस सोने का बना है और इसका वजन है १११३ किलो। इस समय यही दुनिया में ठोस सोने से बनी सबसे बड़ी वस्तु है। अन्य प्राचीन कलाकृतियां जो सोने की बनी थीं वे गायब हो गई हैं। शायद उन्हें पिघलाकर बेच दिया गया। एक सोने का लबादा था जिसका वजन एक टन था। यह द एंथंस के एक्रोपोलिस में एथेना की मूर्ति पर सजाया गया था।

✻ जर्मनी के शहर न्यूरम्बर्ग स्थित एक रेस्तरां बैगर्स में लोग मेज की टच स्क्रीन पर टाइप कर आर्डर देते हैं। यह सिस्टम ग्राहकों को यह भी बताता है कि उनका दिया हुआ ऑर्डर कितनी देर में पूरा होगा। ऑर्डर के बाद खाद्य पदार्थ एक मिनी ट्रेन से आते हैं जो रसोई घर से डाइनिंग रूम तक चलती है। इस आटोमैटिक रेस्तरों में एक भी वेटर नहीं है।

✻ दुनिया के सबसे महंगे पेन की कतार में सबसे आगे है फुल्गोर नॉकटर्नस पेन, जो दुनिया का सबसे महंगा पेन है और इसे तिबाल्दी नाम की कंपनी ने बनाया है। ९४५ काले हीरों और १२३ रूबी से सजे इस पेन की कीमत है ८ मिलियन डॉलर। इसे पेन कहने से बेहतर होगा कि इसे आभूषण कहा जाए। इसे देखनेवाले हर शख्स का अरमान होताहै कि इस बेशकीमती और खूबसूरत पेन को अपने पास रख ले लेकिन इसकी कीमत का अंदाजा भर ही चौंकाने के लिए काफी है।

✻ वर्ष १९९६ के विश्व कप में ऑस्ट्रेलिया और वेस्टइंडिज ने सुरक्षा कारणों का हवाला देते हुए श्रीलंका में खेलने से इनकार कर दिया। ये दोनों मैच श्रीलंका के हक में गए। उसी विश्व कप के सेमी फाइनल में भारत और श्रीलंका के बीच मुकाबला हुआ। लेकिन दर्शकों के खराब व्यवहार के कारण ये मैच भी श्रीलंका की झोली में गया। हालांकि श्रीलंका उस समय काफी अच्छी स्थिति में था और उसका जीतना तय था।

✻ एयर बस ए३८० दुनिया के सबसे महंगे प्राइवेट प्लेन में गिना जाता है। ५०० मिलियन डॉलर के इस प्राइवेट प्लेन के मालिक सऊदी अरब के राजा हैं जो अपने शान-ओ-शौकत के लिए जाने जाते हैं और बेशकीमती चीजें रखने के शौकीन हैं।

✻ ये हवाई जहाज अपनी खूबसूरती के कारण आसमान की रानी कहलाता है। इसकी कीमत २२० मिलियन डॉलर है और अगर इसकी क्षमता की बात करें तो ये १४ लोगों को बड़ी आसानी से रख सकता है। इस बेशकीमती हवाई जहाज को प्रिन्स अल-क्लीद बिन तलाल ने साल २००० में खरीदा था।

✻ भारत संसार का सबसे बड़ा आम उत्पादक देश है तथा संसार में पैदा होनेवाले आम का ५० प्रतिशत से भी अधिक भारत में ही होता है।

✻ भूकम्प जो तबाही के लिए जाना जाता है उसमें ऐसी क्षमता होती है कि वो पानी को सोने में बदल सकता है।

❋ वैज्ञानिक रोजाना ४१ नये जीवों और वनस्पतियों की खोज करते हैं।

❋ जब दो मशहूर डिजाइनर कम्पनियाँ मिलकर कोई चीज पेश करें तो उसका अद्भुत होना लाजमी हैं। बिलकुल ऐसा ही मोंटब्लैंक मिस्ट्री मास्टरपीस पेन के बारे में भी कहा जा सकता है क्योंकि खूबसूरती की मिसाल ये पेन, वैन क्लीफ और मोंटब्लैंक जैसी दो मशहूर डिजाइनर कंपनियों द्वारा, उनकी १०० वीं वर्षगांठ पर दुनिया के सामने पेश किया गया। इस पेन की ढेरों खासियतों में से एक ये है कि इस पेन को केवल ३ श्रृंखला में ही बनाया गया और हर श्रृंखला में केवल ३ पेन ही बनाये गए। रूबी, नीलम और पन्ना जैसे रत्नों से सजे इस पेन को हीरों से भी सजाया गया है और इस पेन की कीमत ७,३०,००० डॉलर है।

❋ कश्मीर का इतिहास राजशेखर की पुस्तक राज तरंगिणी इस किताब में है।

❋ मशहूर डिजाइनर अनीता टैन द्वारा बनाया गया ये पेन दुनिया का ऐसा पहला पेन है जिसे किसी महिला ने बनाया है। १६१ रंगबिरंगे हीरे और ४३ कैरेट के मणि लगाकर इस पेन को सजाया गया है और इसकी कीमत है ९,९५,५१० डॉलर।

❋ भारत संसार का सबसे बड़ा अंग्रेजी बोलनेवाला देश है।

❋ भारत के बेंगलोर नगर में १५०० से भी अधिक सॉफ्टवेयर कंपनियाँ हैं जिनमें २६००० से भी अधिक आईटी प्रोफेशनल्स काम करते हैं। इन कम्पनियों के निर्यात से रु. २२,००० करोड़ की आय होती है।

❋ अगर आपसे कोई पूछे जूडो और कराटे में क्या अंतर है तो आप कह सकते हैं कि जूड़ो रक्षात्मक शैली है जबकि कराटे आक्रामक शैली है।

❋ संसार भर में निकाले जानेवाले सोने का लगभग पाँचवा हिस्सा भारत में खपता है।

❋ भारत में प्रतिवर्ष ८०० चलचित्र (सिनेमा फिल्म) बनते हैं, चलचित्रों की यह संख्या हॉलीवुड को भी चौंकाती है।

❋ सूंघने से बेहतर होती है याददाश्त- जब हम गहरी सांस लेते हैं और किसी चीज को सूंघते हैं तो उस चीज से जुड़ी यादें हमारे दिमाग में जगह बनाने लगती हैं।

❋ कुत्ते पागल क्यों हो जाते हैं - कुत्ते लगभग हर जगह होते हैं। उसे मनुष्य का सबसे वफादार मित्र माना जाता है। बहुत से लोग उन्हें पालते हैं, लेकिन अगर कहीं कुत्ता पागल हो जाए तो बहुत खतरनाक हो जाता है। पागल कुत्ते द्वारा काटे जाने पर सही व समय पर इलाज जरूरी हो जाता है। ऐसा न होने पर व्यक्ति की मौत भी हो सकती है। वास्तव में जिस कुत्ते को रेबीज नामक रोग हो जाए उसे ही पागल कुत्ता कहते हैं। रेबीज का रोग एक प्रकार के वायरस के कारण होता है। यह वायरस हवा में से या किसी जंगली जानवर से कुत्ते तक पहुंचती है। कुत्ते की चमड़ी पर हुए किसी घाव द्वारा यह उसके शरीर में प्रवेश कर स्नायु तंत्र तक पहुंच जाता है। यहां इस वायरस की संख्या तेजी से बढ़ती है। इससे मस्तिष्क की कोशिकाएँ बुरी तरह प्रभावित होती हैं। रेबीज से प्रभावित कुत्ते को बुखार रहता है तथा वह सुस्त रहता है। भोजन में भी उसकी रुचि नहीं रहती। चार से छह सप्ताह में यह वायरस कुत्ते के मस्तिष्क को अपनी चपेट में ले लेता है, तब कुत्ता उत्तेजित हो जाता है। उसके मुख से झाग निकलने लगते हैं। वह जोर-जोर से भौंकता भी है। इस समय वह बिना कारण किसी को भी काट सकता है। यही उसकी पागलपन की स्थिति है। इन लक्षणों के दिखाई देने के बाद कुत्ता एक सप्ताह के भीतर मर जाता है। पागल कुत्ते से बचाव बहुत जरूरी है। अगर कहीं पागल कुत्ता काट ले तो तीन दिन के

भीतर डॉक्टर की सलाह से एंटी रेबीज टीके लगवा लेने चाहिए।

❋ उचित नमक हमारे शरीर के लिए बहुत जरूरी होता है यह हमें बीमारियों से लड़ने की शक्ति देता है।

❋ फ्लाइंग मड बोट - ऐसा घर भी बना सकते हैं जो हवा में हो। जापान में एक ऐसे ही घर का डिजाइन बनाया है जो हवा में लटका रहता है। अभी तक इसका मॉडल तैयार किया गया है। इसमें एक कमरा है और इसके अंदर जाने के लिए सीढ़ियों से जाना पड़ता है।

❋ सन २२ दिसम्बर १८५१ को देश में पहली मालगाड़ी दौड़ी यह मालगाड़ी रूडकी से पिरन कलियार के बीच दौड़ी थी। हमारे देश की पहली मालगाड़ी ही देश की पहली रेलगाड़ी थी इससे रूड़की में मिट्टी और कस्ट्रक्शन का सामान ले जाया जाता था।

❋ किसी भी आपत्ति या क्रेश लैंडिंग से पहले विमान में मौजूद ईंधर की बहुत बड़ी मात्रा को वायुमंडल में डंप कर दिया जाता है ताकि विमान का भार कम हो जाए और क्रेश होने पर बहुत सारे ईंधन में आग न लग पाए। वातावरण में छोड़ा जानेवाला ईंधन पलक झपकते ही उड़ जाता है और सामान्यत: धरती तक नहीं पहुंच पाता।

❋ अमेरिका में ८० प्रतिशत लोग रोजाना दो बार अपने बालों को वॉश करते हैं। एक बाल की उम्र तकरीबन ५ सालों तक की होती है।

❋ भारत में सबसे लंबे नामवाला स्टेशन है वेंकट नरसिंह राजू वारिपेटा और सबसे छोटे नाम वाला स्टेशन है इबजे ओड़िसा में है।

❋ गर्मी में हैंडपम्प का पानी ठंडा क्यों होता है?

किसी भी मौसम में नल द्वारा जमीन से निकलनेवाले पानी का तापमान एक जैसा ही होता है। बाहरी तापमान में आए बदलाव के कारण ही यह हमें गरमियों में ठंडा तथा सर्दियों में कोसा लगता है। गर्मियों में धरती के ऊपर का तापमान बहुत अधिक हो जाता है, जिससे हमारा शरीर गर्मी महसूस करता है। हैंडपम्प के पानी का तापमान बाहरी तापमान के मुकाबले कम होता है, इसलिए ही वह ठंडा लगता है।

लोग अक्सर ही गर्मियों में हैंडपम्प चलाकर ताजा पानी निकाल कर पीते हैं। वह ताजा पानी उन्हें ठंडा लगता है। ऐसा क्यों होता है कि गर्मियों में धरती के भीतर से निकलनेवाला पानी ठंडा हो जाता है तथा सर्दियों में गरम? हमारी पृथ्वी ताप की बहुत ही बुरी चालक है। इसकी गहराई में बाहरी तापमान में आए बदलाव का प्रभाव बहुत ही मंद गति से पड़ता है। अगर आज पृथ्वी के ऊपर का तापमान ३५ डिग्री सेल्सियस से ४० डिग्री सेल्सियस हो जाता है तो इस तापमान को धरती के नीचे तीन मीटर की गहराई तक पहुंचने में लगभग ७६ दिन का समय लग जाएगा।

अगर धरती के ऊपर का तापमान ३५ डिग्री सेल्सियस से ३० डिग्री सेल्सियस हो जाता है तो तीन मीटर की गहराई पर इसका प्रभाव लगभग १०८ दिन में पड़ेगा। इससे आगे की गहराई तक पहुंचते इस प्रभाव की गति और भी धीमी हो जाती है। बहुतेक अधिक गहराई तक तो यह प्रभाव जाता ही नहीं। इस तरह हम कह सकते हैं कि धरती के ऊपर तापमान में आया बदलाव, धरती की बहुत गहराई (जहाँ से हम हैंडपम्प द्वारा पानी निकालते हैं) तक असर नहीं करता। वहाँ शताब्दियों तक तापमान स्थिर रहता है। पेरिस की एक वेधशाला के नीचे २८ मीटर की गहराई पर लगभग दो सौ वर्षों से

एक थर्मामीटर रखा हुआ है। इस थर्मामीटर का पारा अभी तक अपने स्थान से जरा-सा भी नहीं हिला। वह सदा ही एक-सा तापक्रम (+११.७ डिग्री सेल्सियस) दर्शाता है।

❋ दूध से दही बनना - बैक्टीरियम लैक्टिकी एसिडी और बैक्टीरियल एसिडी लैक्टिसी दूध में पाए जाते हैं। ये जीवाणु दूध में पाई जानेवाली लैक्टोज शर्करा का विखंडन करके लैक्टिक एसिड बनाते हैं और दूध में पाए जानेवाले कैसीन नामक प्रोटीन की छोटी-छोटी बूंदों को एकत्र करके दही जमाने में सहायता करते हैं।

❋ अधिक ऊंचाई पर उड़ते समय यदि आप विमान में पानी की बोतल खोलकर कुछ पानी पीकर बोतल को बंद कर देते हैं तो विमान की ऊंचाई कम होने पर वह बोतल सिकुड़ने लगती है क्योंकि ऊंचाई पर वायुमंडल का दबाव धरती की तुलना में कम होता है।

❋ मुर्गी जैसा कोई जानवर अंक गणित का थोड़ा सा भी ज्ञान रख सकता है। मगर चीन के शेनयांग प्रांत में एक मुर्गी है जो सरल अंकगणित जानती है। मुर्गी के मालिक का कहना है कि जब वह बोर्ड पर अंकों की ओर संकेत करके मुर्गी से सवाल पूछता है तो वह अपनी चोंच से सही स्थान पर ठक करके सरल गणनाओं के सही उत्तर दे देती है।

❋ भारत में चलने वाली सबसे धीमी गति की रेल मेतुपलयम ऊटी नीलगिरी पैसेंजर है जिसकी अधिकतम रफ्तार १६ किलोमीटर प्रति घंटा है।

❋ टीवी स्क्रीन पर दिखने लगते हैं कुछ अंक

दूरदर्शन पर कोई फिल्म या अपना पसंदीदा कार्यक्रम देखते समय आपने कई बार स्क्रीन पर कुछ अजीब से अंक देखे होंगे। कुछ लोगों को लगता होगा कि ये नंबर चैनल के कंट्रोल रूम या सेटेलाइट से दिखाए जाते हैं और वही नंबर सिर्फ हमारी ही नहीं बल्कि दुनिया के हर एक टीवी पर एक सा ही दिखता है। टीवी स्क्रीन के कोनों या कभी कभी एक्स्पर्ट के चेहरे पर भी दिखाई देनेवाले इन अंकों के पीछे का सबसे अनोखा सच तो यह है कि आपके टीवी पर दिखनेवाला कोई भी नंबर पूरी तरह से यूनिक है यानी कि वह देश में किसी भी दूसरे टेलीविजन पर नहीं दिखता। ये नंबर आमतौर पर ८ डिजिट के होते हैं और इनमें अंग्रेजी के अक्षर और १ से ० तक के अंक रैंडम क्रम में होते हैं। कुछ सेकेंड तक दिखाई देने के बाद ये नंबर अपने आप ही गायब हो जाते हैं। इस नंबर के द्वारा डिजिटल टीवी प्रदाता या चैनल यह आसानी से जान सकता है कि संबंधित नंबरवाला टीवी कनेक्शन या सेटटॉप बॉक्स किस उपभोक्ता के घर पर लगा है।

पायरेसी रोकने के लिए जरूरी- दरअसल टीवी के तमाम चैनलों पर किसी कार्यक्रम या फिल्म के दौरान यूं ही कभी भी दिखाई देनेवाले ये अजीबोगरीब नंबर्स बेवजह नहीं होते बल्कि इनका इस्तेमाल पायरेसी को रोकने के लिए होता है। इसके पीछे का तर्क यह है कि अगर कोई टीवी उपभोक्ता अपने घर के टीवी पर कैमरा या स्क्रीन रिकॉर्डर लगाकर शो या फिल्म रिकॉर्ड कर ले, तो वो पाइरेटेड वीडियो दोबारा कहीं भी दिखाया जाएगा, तो रिकॉर्डिंग में ये नंबर भी दिखाई देंगे जिससे टीवी कंपनी और चैनल को आसानी से पता चल जाएगा कि वो टीवी प्रोग्राम किस घर से रिकॉर्ड किया गया है। कई बार महंगे शो, फिल्म प्रीमियर या इवेंट्स का प्रसारण टीवी पर सिर्फ एक बार किया जाता है, लेकिन कुछ लोग उसको रिकॉर्ड करके यानी पायरेसी करके उन्हें किसी लोकल प्राइवेट चैनल को औने-पौने दामों पर बेच देते हैं या फिर इंटरनेट अथवा टोरेंट जैसी वेबसाइट पर डाल देते हैं। इससे चैनलों को आर्थिक नुकसान होता है। इसी तरह की पायरेसी को रोकने के लिए टीवी

प्रसारण कंपनियां हर टीवी स्क्रीन पर ऐसा यूनिक और रैंडम नंबर बीच बीच में डिस्प्ले करती रहती हैं, जो कि सॉफ्टवेयर द्वारा पूरी तरह से ऑटोमेटेड होता है और कभी भी कहीं भी दिखाई दे सकता है। टीवी से होनेवाली पायरेसी रोकने का यह अनोखा तरीका काफी कामयाब भी है।

✻ कनाडा में आप सांप को पब्लिक प्लेस पर नहीं ले जा सकते। ऐसा करने पर आपको जेल तक हो सकती हैं।

✻ कनाडा में चूहे का मालिक बनना आसान नहीं है। इसके लिए आपको कनाडा सरकार से अनुमति लेनी पड़ेगी। यहां तक कि आप वहां जिंदा चूहे को बेच और खरीद भी नहीं सकते।

✻ पश्चिम अफ्रीका के मातमी जनजाति के लोग मर चुके मानव की खोपड़ी का इस्तेमाल फुटबॉल खेलने में करते हैं।

✻ जम्बो जेट विमान को टेक ऑफ करने के लिए ४००० गैलन ईंधन की आवश्यकता होती है।

✻ टनलिंग माइक्रोस्कोप- युग प्रवर्तक उपलब्धियां (१९८१) इस वर्ष विभिन्न तत्वों की सतहों की वैज्ञानिक जानकारी में एक नई किस्म के माइक्रोस्कोप के आने से एक क्रांतिकारी परिवर्तन आया था। यह माइक्रोस्कोप चीजों को एक मिलियन गुना बड़ा करके दिखाने में सक्षम था। इस प्रकार की आश्चर्यजनक मैग्नीफिकेशंस को प्राप्त करने के लिए इस उपकरण में इलेक्ट्रॉन्स का एक फीचर इस्तेमाल किया गया था। जिसे टनलिंग इफैक्ट कहा जाता था। इस फीचर में इलैक्ट्रॉन्स बहुत छोटी दूरियां तय करने के लिए पतले बैरियर्स को पार करते थे। इसके परिणामस्वरूप एक इंच के आसपास के बहुत ही सूक्ष्म फीचर्स की तस्वीरें ली जा सकती थीं। उसका अर्थ यह था कि इससे ली गई तस्वीरें इतनी सूक्ष्म थीं कि इसमें मॉलीक्यूल्स तथा एटम्स अलग-अलग देखे जा सकते थे। वैज्ञानिकों के अनुसार यह नया माइक्रोस्कोप तत्वों के अध्ययन में एक क्रांतिकारी कदम था।

✻ सर्वाधिक बड़ी राइफल - अमेरिका के मिशीगन राज्य के इशपैमिन्ग स्थित डा यूपर्स टूरिस्ट ट्रेप में प्रदर्शित एक राइफल ३३ फुट ४ इंच लम्बी है। यह राइफल बहुत अच्छे ढंग से काम करती है और इसके नाम पर विश्व की सबसे बड़ी राइफल होने का रिकार्ड दर्ज है। इसके मालिक जेम्स ए डिकेन हैं। यह प्रोपेन तथा ऑक्सीजन का प्रयोग करके गोलियां दाग सकती है। इसके द्वारा दागी गई गोली ४ किलोमीटर तक वार कर सकती है।

✻ हालांकि हीरा तथा ग्रेफाइट दोनों कार्बन से बने होते हैं फिर भी हीरे में कार्बन के परमाणु इतने अधिक निकट से एक त्रि-आयामी रूप में जुड़े होते हैं परन्तु ग्रेफाइट में परमाणु बहुत ही कमजोर ढंग से शीट्स से जुड़े होते हैं।

✻ रॉकेट्स में हमेशा ऑक्सीजन टैंक्स मौजूद रहते हैं ताकि वे अपने ईंधन को जला सकें। वायु रहित अंतरिक्ष में ऑक्सीजन बिल्कुल भी नहीं होती।

✻ डीजल से चलनेवाले वाहनों को सामान्य खाद्य तेलों से भी चलाया जा सकता है।

✻ पैडल व्हील्स युक्त पहले समुद्री जहाजों का प्रयोग चीन द्वारा ४१८ ईसवी में यांगत्जे कियांग के समुद्री लुटेरों का मुकाबला करने के लिए किया गया था। इसके शॉवल व्हील्स भाप से नहीं बल्कि इसके विपरीत ट्रैंड व्हील्स पर काम कर रहे आदमियों द्वारा चलाए जाते थे।

✻ हम पक्षियों की तरह क्यों नहीं उड़ सकते - मनुष्य धरती पर रहने के लिए ही बना है। दूसरे शब्दों में उसका विकास धरती के जीवन के अनुरूप ही हुआ है। मनुष्य को पक्षी के रूप में उड़ने के लिए काफी बड़े पंख, मजबूत हड्डियों और

दमदार मांसपेशियों की जरूरत होगी। यदि आप तुलनात्मक रूप से देखें, तो एक पक्षी के वजन और उसके पंखों के आकार में एक अनुपात होता है।

प्राकृतिक विकास इसी रूप में हुआ है, इसलिए पक्षी एक सीमा से बड़े या भारी नहीं मिलते। अतीत में लगभग सात करोड़ साल पहले जब डायनोसौर धरती पर विचरण करते थे, उड़नेवाले क्वेजाकोटलस होते थे। वे विशाल प्राणी थे, पर उनके वजन और पंखों का अनुपात देखें, तो पता लगेगा कि वे सामान्य डायनोसौरों के मुकाबले काफी हल्के थे। इनके पंखों का विस्तार १० से १६ मीटर यानी ३३ से ५२ फुट तक था, जबकि वजन ७० से २०० किलोग्राम था। आज भी पक्षियों की कई श्रेणियां, जैसे बत्तख, मुर्गी, मोर और शतुरमुर्ग वगैरह पंख और वजन के असंतुलन और हड्डियों तथा मांसपेशियों की संरचना के कारण उड़ने में असमर्थ हैं।

✲ आपका दिल रोज १ लाख बार धड़कता है और साल में ३,६५,००,००० बार। ३० साल का होने तक यह एक बिलियन से अधिक बार धड़क चुका होता है। आपकी नाक और कान उम्रभर बढ़ते रहते हैं।

✲ लीप ईयर- लीप ईयर उस वर्ष को कहते हैं जिस वर्ष में ३६५ दिन होते हैं। सामान्य वर्षों में कुल ३६५ दिन होते हैं जबकि प्रत्येक चौथे वर्ष में एक दिन अधिक हो जाता है।

पृथ्वी पूरे ३६५ दिन ५ घंटे ४८ मिनट और ४६ सेकेंड में सौर्य मंडल का एक चक्कर लगाती है जिससे वर्ष का निर्माण होता है। इस तरह से प्रत्येक चौथे वर्ष का फरवरी माह २९ दिनों का हो जाता है। सामान्य वर्षों में फरवरी में २८ दिन होते हैं। यह वर्ष लीप ईयर कहलाता है। लीप ईयर में त्यौहारों एवं पर्वों की तिथि भी आगे बढ़ जाती है और यह वर्ष गणित की दृष्टि से सम होती है जिसका भाग चार से चला जाता है।

✲ चॉकलेट को मीठा बनाने का श्रेय यूरोप को जाता है, जिसने इसमें से मिर्च को हटाकर शक्कर और दूध का प्रयोग किया।

✲ कोको-कोला में पहले कोकीन का उपयोग होता था।

✲ सुबह-सुबह उठाने के लिए चाय-कॉफी की तुलना में सेब ज्यादा अच्छा पदार्थ है।

✲ अजवाइन खाने में हम उसमें पाये जानेवाली कैलोरी से ज्यादा खपत कर देते हैं।

✲ दर्द निवारक दवाइयां बढ़ाती हैं परेशानी

चिकित्सक बार-बार यह सचेत कर रहे हैं कि दर्द निवारक दवा न लें। भारत में किसी भी प्रकार के दर्द की स्थिति में कोई भी दर्द निवारक दवा देने की प्रवृत्ति बढ़ रही है, साथ ही देखा-देखी या सुनी-सुनाई कोई भी दवा दर्द रोकने के लिए ली जाने लगी है।

यह प्रवृत्ति जन स्वास्थ्य के लिए खतरनाक बनती जा रही है। बहुत सी पेन किलर दवाएं जो विदेशों में एवं विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा प्रतिबंधित है, वे यहां बिना रोक-टोक़ बेची जा रही है। ऐलोपैथी में जितने भी प्रकार की दर्द निवारक दवाएं हैं, सभी यहां बिक रही हैं जिन्हें आम आदमी बिना किसी चिकित्सकीय परामर्श के ले रहा है। सभी दर्द निवारक दवाएं शरीर के भीतरी अंगों को चौबीस घंटों के दौरान एक से अधिक लेने पर प्रभावित कर रही है।

✲ जब कोई व्यक्ति मरता है तो उसके सुनने की शक्ति सबसे अंत में जाती है।

✲ कैथेड्रल्स ईसाई धर्माचार्यों के गिरिजाघरों को कहा जाता है। कैथेड्रल शब्द आसन या सीट के लिए इस्तेमाल किए

जानेवाले यूनानी शब्द काथेट्रा से लिया गया है।

क़ैथेड्रल्स को विशेष रूप से क्रॉस की आकृति में बनाया जाता है। कैथेड्रल का प्रवेश पश्चिमी छोर से होता है।

क्रॉस के लम्बे छोर को नेव कहा जाता है। छोटा छोर जिसमें वेदी तथा गायक दलों के स्टाल होते हैं, को ऐप्स कहा जाता है। क्रॉस की बाजुओं को ट्रांसेप्टस कहा जाता है।

कुछ कैथेड्रल्स तो बहुत पहले छठी शताब्दी में बनाए गए। फिर भी यूरोप में अधिकांश कैथेड्रल १००० से १५०० ईस्वी के बीच बनाए नए।

मध्यकालीन कैथेड्रल्स आमतौर पर गोथिक स्टाइल में बनाए गए थे जिनकी बहुत ऊंची नुकीली मेहराबें, लंबी नुकीली मीनारें तथा विशाल नुकीली मेहराबदार खिड़कियां होती थीं।

बहुत से मध्यकालीन कैथेड्रल्स में खूबसूरत स्टेन्ड ग्लास खिड़कियां हैं। फ्रांस में चार्टर्स स्थित प्रसिद्ध कैथेड्रल में ऐसी १७६ खिड़कियां हैं।

❋ पानी कैसे बनता है- जब हाइड्रोजन में हवा जलती है तो इस क्रिया से पानी बनता है।

❋ छायातप- प्रकाश और अंधकार दोनों के अलग अलग आकर्षण हैं। भारतीय चिंतन दृष्टि प्रधान होने के कारण तम और ज्योति के खेल से बराबर आकृष्ट रहा है, भौगोलिक दृष्टि से भी उष्ण कटिबंध में होने के कारण छाया और आतप का वैषम्य बड़ा गहरा रहता है और इन दोनों की छटाओं के स्तर भी अनेक हैं। प्रकाश, ज्योति, दीयुति, दीप्ति, प्रभा, विभा, आभा, कांति, आलोक, उजास, आतप, चन्द्रिका ये शब्द प्रकाशवाची होते हुए भी अपनी-अपनी अलग अर्थच्छटा रखते हैं, इनके अलावा चमक, चकाचौंध, कौंध, झिलमिलाहट, टिमटिमाहट, धूप, चांदनी, उजास, उजाला जैसे शब्द भी नए और अलग अर्थ देते हैं।

❋ अमेजान के इस्तेमाल करने से पूर्व ही जीमेल को आंतरिक तौर पर दो वर्ष के लिए इस्तेमाल किया जाता रहा था।

❋ यूट्यूब डॉटकॉम का पंजीकरण १४ फरवरी २००५ यानी वैलेंटाइन डे के दिन हुआ था।

❋ गूगल अपनी आय का ९७ प्रतिशत विज्ञापनों से कमाता है। यह राशि २० अरब डॉलर के करीब है।

❋ दंत कथाओं में वर्णित उस जीव का नाम मर्मिड है जिसका आधा शरीर महिला का तथा पिछला भाग मछली का होता है।

❋ शतुरमुर्ग तथा जेब्रा साथ-साथ चलते हैं क्योंकि उनके दुश्मन एक से होते है।

❋ चीन सर्वाधिक आबादी वाले देश का नाम है।

❋ विशालतम जहाज के बारे में जानें - टाइटैनिक की विशालता का अंदाजा तो सभी को है। इससे लगभग दो गुना आकार का जहाज ओएसिस ऑऊफ द सी इन दिनों समुद्र की शोभा बढ़ा रहा है। यह पहला जहाज है जिस पर १२०० पौधों के अलावा ५६ विशाल पेड़ भी लगाए गए हैं।

आकार- यह बड़ा, बहुत बड़ा जहाज है। जहाज पर १६ डेक्स हैं और कुल वजन २२५,२८२ ग्रॉस टन है। यह जहाज एक बार में ५४०० मेहमानों और २१०० क्रू मेंबर्स को ले जाने में सक्षम है। यह समुद्र के स्तर से २३६ फुट ऊंचा है। लंबाई-चौड़ाई के पैमाने पर ११८१ फुट लंबा है। यह समुद्र की छाती पर २२ नॉट की गति से चल सकता है। इसकी

पंद्रहवीं डेक घूमने के लिए ही १५ से २० मिनट लगते हैं, जो इसकी विशालतम आकार की पुष्टि करते हैं।

पावरफुल इंजन- जहाज को पॉवर देने के लिए आधा दर्जन मरीन डीजल इंजनों की मदद ली गई है। १६ सिलेंडर वाले सामान्य तीन वार्टसिला इंजन १८८६० किलोवॉट बिजली पैदा करते हैं, तो तीन अन्य १२ सिलेंडर इंजन १३८६० किलोवॉट बिजली पैदा करते हैं। इन सभी इंजनों की मदद से ९७.०२० किलोवॉट बिजली मिलती है, जिसकी बड़ी मात्रा जहाज को चलाने में खप जाती है। इसके अलावा इस बिजली की मदद से न सिर्फ जहाज को रोशनी दी जाती है, बल्कि लिफ्ट, वॉटर ट्रीटमेंट प्लांट और अन्य कार्यों में भी इसका इस्तेमाल होता है।

सुविधाएं- यात्रियों की सुविधा के लिए सामान्य स्टेटरूम्स से लेकर प्रेसीडेंशियल सुइट तक जहाज पर बनाए गए हैं। दो मंजिला लॉफ्ट सुइट्स और लक्जरी सुइट्स के साथ बालकनी दी गई है, जहां से जहाज के भीतरी नजारे के साथ खुले समुद्र के दर्शन होते हैं। जहाज पर कैसिनों समेत एक छोटा गोल्फ कोर्स, कई नाइट क्लब्स, बार और लाउंज समेत वॉलीबॉल और बास्केटबॉल कोर्ट भी हैं। फिटनेस के शौकीनों के लिए चार स्विमिंग पूल भी जहाज की विभिन्न डेक्स पर बनाए गए हैं। बच्चों के मनोरंजन के लिए थीम पार्क और नर्सरी की जरूरत का भी खास ख्याल रखा गया है। यह पहला पानी का जहाज है, जिस पर प्राकृतिक हरियाली आच्छादित है। इस पर १२००० पौधे और ५६ पेड़ लगाए गए हैं, जो पानी पर हरी-हरी धरती का अहसास कराते हैं।

मनोरंजन पर जोर - इस विशालतम यात्री जहाज पर मनोरंजन के ढेरों विकल्प जुटाए गए हैं। संगीत प्रेमियों के लिए जैज़, कॉमेडी लाइव, डांस क्लब और ब्रॉडवे स्टाइल शो और कंसर्ट्स के लिए ओपल थिएटर है। अपने जलावतरण के शुरुआती छह माह तक ओएसिस ऑफ द सी पर दिग्गज कलाकारों के शो प्लान किए गए हैं। इसी की एक डेक पर बर्फ के शौकीनों के लिए आइस स्केटिंग की सुविधा भी जुटाई गई है। एक एक्वा थिएटर है, जहां एक साथ ६०० लोग बैठकर पानी में दिखाए जानेवाले करतबों का आनंद उठा सकते हैं। इस जहाज पर दांव लगाने के लिए द कैसीनों रॉयल भी है, जो समुद्र पर तैरता सबसे बड़ा कैसीनो है।

* १२ साल से दोस्ती है शेर और इंसान में - शेर की पीठ पर सवारी करते हुए नजर आनेवाला यह शख्स है केविन रिचर्डसन। वे पेशे से पशु वैज्ञानिक हैं, जो दक्षिण अफ्रीका के जोहनसबर्ग में किंग्डम ऑफ द व्हाइट लॉयन पार्क में खूंखार बब्बर शेर को ट्रेनिंग देते हैं। केविन १२ वर्षों से शेरों को ट्रेनिंग देते आ रहे हैं। शेरों के संग उनकी दोस्ती को आज पूरी दुनिया जानती है।

* द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद सबसे घातक लड़ाई सन १८५० में चीन लड़ी गई थी, इस लड़ाई में विद्रोहियों का नेतृत्व एक ऐसा व्यक्ति कर रहा था जो अपने आपको ईसा मसीह का भाई मानता था।

* धरती पर प्रति सेकेंड में ३ लोग जन्म लेते हैं और १.३३३३ लोगों की वृद्धि होती है। जब तक आप यह वाक्य पढ़ेंगे तब तक धरती पर लगभग १० लोग जन्म ले चुके होंगे।

* जन्मदिन के अवसर पर गाए जानेवाले हैप्पी बर्थडे गाने को कॉपीराइट है।

* इस धरती पर जीवित लोगों की संख्या मृत लोगों से ज्यादा है।

* क्या इमारतों की भी जड़ें होती हैं?

गगनचुम्बी इमारतों के आधारों को पाइल्स (स्तंभ) कहा जाता है तथा ये इस्पात या कंकरीट के बने होते हैं। पाइल्स गगनचुम्बी इमारतों के लिए ठीक वही कार्य करती हैं जो जड़ें एक वृक्ष के लिए करती हैं। ये इसे तेज हवा में उड़ जाने से बचाती हैं या फिर अपने ही भार से इसे धरती में दब जाने से रोकती हैं।

लकड़ी में कील ठोकने के लिए आप एक हथौड़े का इस्तेमाल करते हैं। धरती में इस्पात की बनी पाईल गाड़ने के लिए निर्माणकर्ता एक विशाल हथौड़े का प्रयोग करते हैं जिसे पाईल ड्राइवर कहा जाता है। एक क्रेन पाईल ड्राइवर को ऊपर उठाती है और फिर एक जोरदार धमाके के साथ इसे पाईल के ऊपर गिरा देती है। रात को पाईल ड्राईवर्स का इस्तेमाल करना कई शहरों में कानून के विरुद्ध है। वे अत्यधिक शोर उत्पन्न करनेवाले होते हैं। कुछ गगनचुम्बी इमारतों के लिए पाइल्स ५० मीटर से भी अधिक गहराई तक डाली जाती है। यह लगभग इतनी ही लम्बाई है जैसे कि एक के ऊपर एक पांच घरों को एक-दूसरे पर रखा हो।

कई बार पाइल्स के लिए धरती में बर्मे से छेद किए जाते हैं जो एक लम्बा औजार होता है और एक विशाल कार्क स्क्रू की तरह कार्य करता है और गोल-गोल घूमते हुए भूमि में गहरे अपना रास्ता बनाता जाता है। छेद में पहले इस्पात की एक छड़ डाली जाती है तथा फिर उसके इर्दगिर्द बहुत बड़ी मात्रा में कंक्रीट डाला जाता है।

✻ सरदार अजीत सिंह सुप्रसिद्ध राष्ट्रभक्त एवं क्रांतिकारी थे। वे भगत सिंह के चाचा थे। उन्होंने भारत में ब्रितानी शासन को चुनौती दी तथा भारत के औपनिवेशिक शासन की आलोचना की और खुलकर विरोध भी किया। उन्हें राजनीतिक विद्रोही घोषित कर दिया गया था। उनका अधिकांश जीवन जेल में बीता। १९०६ ई. में लाला लाजपत राय के साथ ही साथ उन्हें भी देश निकाले का दण्ड दिया गया था। इनके बारे में कभी बाल गंगाधर तिलक ने कहा था ये स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति बनने योग्य हैं। जब तिलक ने ये कहा था तब सरकार अजीत सिंह की उम्र केवल २५ साल थी।

✻ पुलिस और ज्यूडिशियल कस्टडी में अंतर - पुलिस कस्टडी तथा ज्यूडिशियल कस्टडी दोनों शब्द एक दूसरे से जुड़े होने के बावजूद एक दूसरे से अलग हैं। पुलिस कस्टडी तथा ज्यूडिशियल कस्टडी दोनों में संदिग्ध को कानून की हिरासत में रखा जाता है। दोनों प्रकार की कस्टडी का उद्देश्य व्यक्ति को अपराध करने से रोकना होता है। किसी आरोपी व्यक्ति को पुलिस कस्टडी और ज्यूडिशियल कस्टडी में भारतीय दण्ड प्रक्रिया संहिता के नियमों के हिसाब से रखा जाता है। पुलिस कस्टडी में व्यक्ति को पुलिस थाने में पुलिस द्वारा की गयी कार्यवाही के कारण रखा जाता है जबकि ज्यूडिशियल कस्टडी में आरोपी को जेल में रखा जाता है। पुलिस कस्टडी तब शुरू होती है जब पुलिस अधिकारी किसी संदिग्ध व्यक्ति को गिरफ्तार कर लेती है जबकि ज्यूडिशियल कस्टडी तब शुरू होती है जब न्यायाधीश आरोपी को पुलिस कस्टडी से जेल भेज देता है। पुलिस कस्टडी में रखे गए व्यक्ति को तब तक जेल में रखा जाता है जब तक कि उसके खिलाफ मामला अदालत में चलता है या जब तक अदालत उसे जमानत पर रिहा नहीं कर देती है। पुलिस कस्टडी में पुलिस आरोपी व्यक्ति को मार पीट सकती है ताकि वह अपना अपराध कबूल कर ले। लेकिन यदि कोई व्यक्ति सीधे कोर्ट में हाजिर हो जाता है तो उसे सीधे जेल भेज दिया जाता है और वह पुलिस की पिटाई से बच जाता है।

✻ अगर ६० वर्ष की उम्र में भी स्मोकिंग छोड़ दी जाए तो आपकी उम्र बढ़ सककती है।

✻ गर्म रंग जैसे पीला, केसरिया और लाल भूख बढ़ाते हैं। यही वजह है कि कुछ रेस्टोरेंट पीला, केसरिया और लाल रंग

से पेंट किए जाते हैं।

✻ अल्कोहल पीने के ६ मिनट के भीतर आपके दिमाग पर इसका असर शुरू हो जाता है।

✻ यहां कोई आर्मी नहीं - आईसलैंड सबसे खुशहाल है। ऐसा इसलिए है क्योंकि वहां कोई आर्मी नहीं है।

✻ नमक-चीनी टेस्ट- जन्म के चार महीने तक बच्चा नमक-चीनी का टेस्ट नहीं कर पाता है।

✻ बिल्ली की हत्या पर सजा-ए-मौत- प्राचीन मिस्र में बिल्ली की हत्या करना कितना बड़ा अपराध था। बिल्ली की हत्या पर सजा ए मौत मिलती थी।

✻ जहाज पर लाल झंडा - समुद्री डाकू के जहाज पर लाल झंडा रहता था।

✻ गोंडवाना क्षेत्र कोयले के खनिज के लिए विख्यात है।

✻ ट्रेन में इमरजेंसी ब्रेक क्या है?

किसी भी वाहन में ब्रेकिंग सिस्टम, वाहन को रोकने में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है ताकि ट्रेन या वाहन की गति को विशिष्ट सीमा के भीतर बनाए रखा जा सके। एक चलती हुई ट्रेन में ऊर्जा होती है, जिसे गतिशील ऊर्जा कहा जाता है और ट्रेन को रोकने के लिए इस ऊर्जा को ट्रेन से हटाना होता है। इसके लिए गतिशील ऊर्जा को परिवर्तित करना होता है। ऐसा करने का सबसे आसान तरीका है ब्रेक लगाना और गतिशील ऊर्जा को उष्ण ऊर्जा में परिवर्तित करना। इससे पहिये धीमे हो जाते हैं और अंत में ट्रेन रुक जाती है। ब्रेक्स को रेलवे ट्रेनों के कोचों पर धीमा, नियंत्रण त्वरण को सक्षम करने या पार्क किए जाने पर खड़े रखने के लिए उपयोग किया जाता है।

✻ पुरुषों में महिलाओं के मुकाबले ज्यादा छोटी लिखावट पढ़ने की क्षमता होती है जबकि महिलाएं सुनने में ज्यादा अच्छी होती हैं।

✻ अगर आप किसी के दाहिने कान की तरफ से मदद मांगेंगे तो आपको मदद मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

✻ पागलों की तरह चलना, पागलों की तरह ड्राइविंग करने से ज्यादा खतरनाक हैं।

✻ ८० प्रतिशत लोग अपनी भावनाएं छुपाकर रखते हैं क्योंकि उन्हें यकीन होता है कि लोग उनके दर्द को समझ नहीं पाएंगे।

✻ जागने के ५ मिनट के अंदर आप रात में देखे गए आधे सपने भूल जाते हैं और १० मिनट के अंदर ९० प्रतिशत सपने आपके दिमाग से गायब हो जाते हैं।

✻ सूर्य में हाइड्रोजन परमाणु ईंधन होता है।

✻ डॉक्टर सफेद कोट ही क्यों पहनते हैं - आप चाहे किसी भी डॉक्टर के पास चले जाएं सभी हमेशा सफेद रंग का कोट ही पहनकर रखते हैं। डॉक्टर्स का ये कोट सफेद रंग का ही होता है किसी दूसरे रंग का क्यों नहीं होता? सफेद कोट आज डॉक्टरों की पहचान बन गया है और ये सिलसिला आज का नहीं काफी समय से चला आ रहा है और अब शायद इस पहचान को बदलना मुश्किल होगा। चिकित्सा में साफ सफाई का काफी महत्व होता है और डॉक्टर्स के सफेद कोट भी सफाई की निशानी होती है। सफेद कोट पर छोटी सी गंदगी भी साफ नजर आ जाती है और ऐसे में इस बात का संकेत होता है कि अब इसे बदल लेना जरूरी है। इसके अलावा एक दूसरा कारण ये है कि सफेद रंग स्वच्छता का प्रतीक माना जाता

है साथ ही ये ईमानदारी, पवित्रता और भगवान के साथ सम्बन्ध की निशानी भी होता है। चूंकि चिकित्सा के पेशे में ईमानदारी और स्वच्छता का काफी महत्व होता है और इनका सफेद कोट इस बात को दर्शाता है कि उन्हें अपने पेशे में हमेशा ईमानदारी और स्वच्छता का ख्याल रखना है। सफेद रंग भगवान के साथ सम्बन्ध का भी प्रतीक माना जाता है और इसी कारण डॉक्टर को धरती पर भगवान का दर्जा दिया गया है क्योंकि वो हमारे शरीर को स्वस्थ रखते हैं और हमें लम्बी जिन्दगी जीने में काफी सहायक होते हैं।

✻ औरोरा डाइमेंटे पेन इसकी कीमत १.३ मिलियन डॉलर है। ३० कैरेट डी बीयर हीरों से सजे इस पेन के बारे में इसके निर्माताओं का कहना है कि ये एकमात्र ऐसा पेन है जो ३० कैरेट हीरों से बनाया जाता है। साल में केवल एक बार बननेवाले इस पेन का खोल प्लैटिनम से बनाया गया है और इसकी नोंक १८ कैरेट सोने से बनायी गयी है।

✻ अमेरिका में केवल ६ प्रतिशत नमक ही खाने के लिए इस्तेमाल किया जाता है दूसरा १७ प्रतिशत नमक ठंड के मौसम में बर्फ को पिघलाने के लिए किया जाता है।

✻ इटैलियन व्हाइट अल्बा ट्रफल- हाँगकाँग में पाया जानेवाला ट्रफल मशरूम काफी दुर्लभ है। इसकी कीमत १.०६ करोड़ रुपये है।

✻ बी-२ स्पिरिट स्टील्थ बॉम्बर ये अमेरिकी एयरफोर्स का लड़ाकू विमान ही है जो किसी ब्रह्मास्त्र से कम नहीं है। इस लड़ाकू विमान की कॉस्ट २.१ बिलियन डॉलर है इसलिए संसार के सबसे महंगे हवाई जहाजों में इसका भी नाम आता है।

✻ दुनिया में सबसे अधिक सोना निकालनेवाली कंपनी का नाम है बैरिक गोल्ड। यह कनाडा की कंपनी है और इसका कारोबार ऑस्ट्रेलिया, उत्तरी अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका और अफ्रीका में फैला हुआ है।

✻ मनुष्य के शरीर की सबसे छोटी हड्डी स्टेप्स है जो कान में होती है।

✻ मनुष्य की छाती में दोनों तरफ १२-१२ पसलियां होती है।

✻ २४ कैरेट गोल्ड १०६३ सेल्सियस पर पिघल जाता है। यह बिजली का भी बहुत अच्छा सुचालक है।

✻ सूअरों रोजाना करीब ७-८ घंटे सोते हैं।

✻ कनेर वृक्ष की ३ जातियां होती है जिनमें क्रमश: लाल, पीले और नीले पुष्प लगते हैं। इन पुष्पों में गंध नहीं होती। हृदय रोगों में जब कोई और उपाय नहीं होता है तो इसका प्रयोग किया जाता है। कनेर का मुख्य विषैला परिणाम हृदय की मांसपेशियों पर होता है। इसे अधिकतर औषधि के लिए उपयोग में लाया जाता है।

✻ उडुपी में वी के आर आचार्य मेमोरियल हाई स्कूल, कुंडापुर के ९वीं और १०वीं के स्टूडेंट्स कश्यप बी, एच विवेक गिरिधर, राश्विन रवि शेट्टी, एलॉय सेवियो मेंडोका और अमूल्या ने अपने मेंटर विकास कुमार पोरवाल के गाइडेंस में ट्रैफिक मैनेजमेंट सिस्टम बनाया है। दरअसल, ये स्टूडेंट्स हर रोज के ट्रैफिक जाम से बहुत परेशान थे। वे देखते थे कि सिर्फ जानकारी की कमी की वजह से जहां ट्रैफिक थोड़ी भी ज्यादा है, वहां और भी गाड़ियां आ जाती हैं और नतीजा होता है, लंबा ट्रैफिक जाम। यह सिस्टम सेंसर्स पर बेस्ड है। ट्रैफिक जंक्शंस पर सेंसर्स लगे रहेंगे। ये सेंसर्स वहां से गुजरनेवाली गाड़ियों की संख्या नोट करते रहेंगे। हर ट्रैफिक जंक्शन की एक फिक्स्ड ट्रैफिक कैपेसिटी होगी। ट्रैफिक बढ़ते ही सेंसर्स एलर्ट हो जाएंगे। इसकी सूचना कॉल सेंटर के जरिए सर्कुलेट कर दी जाएगी और आने-जानी गाड़ियों को उनके हिसाब से

डायवर्ट कर दिया जाएगा।

✻ सोने का सबसे बड़ा टुकड़ा ५ फरवरी १८६९ को ऑस्ट्रेलिया में मिला था। यह लगभग ६९ किलो का शुद्ध सोने का टुकड़ा है और यह जमीन से केवल २ इंच नीचे मिला था।

✻ राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राणिकरण ने राजाजी राष्ट्रीय उद्यान अभयारण्य को ४८वें बाघ अभयारण्य का दर्जा प्रदान किया।

✻ २५ अप्रैल २०१५ को आये भूकंप के कारण नेपाल की राजधानी काठमांडू १० फीट दक्षिण की ओर खिसक गई है।

✻ सम्राट पुष्पमित्र ब्राह्मण धर्म का समर्थक था।

✻ पतंगा बारूदी सुरंगों का पता लगाने में उपयोगी होते है।

मंगल का गुरुत्वाकर्षण धरती के गुरुत्वाकर्षण का एक तिहाई है। इसका मतलब ये है कि मंगल पर कोई चट्टान अगर गिरे तो वह चट्टान धरती के मुकाबले बहुत धीमी रफ्तार से गिरेगी। किसी व्यक्ति का वजन अगर धरती पर १०० पौंड हो तो गुरुत्वाकर्षण की वजह से मंगल पर उसका वजन सिर्फ ३७ पौंड होगा। मंगल की सतह पर धूल भरे तूफान उठते रहते हैं, कभी-कभी ये तूफान पूरे मंगल को ढंक लेते हैं। मंगल का वातावरण का दबाव धरती की तुलना में बेहद कम है इसलिए वहाँ जीवन बहुत मुश्किल है।

✻ अमेरिका का पहला नेशनल पार्क येलोस्टोन नेशनल पार्क है। यह २२ लाख एकड़ से ज्यादा क्षेत्र में फैला हुआ है। इसकी स्थापना १ मार्च, १८७२ को पूर्व राष्ट्रपति यूलिसेस एस ग्रांट ने कानून पारित कर की थी। इस पार्क के साथ कई पर्वत श्रृंखलाएं जुड़ी हुई हैं।

✻ मंगल पर ज्वालामुखी बहुत बड़े हैं, बहुत पुराने हैं और समझा जाता है कि निष्क्रिय हैं। मंगल पर जो खाई है वो धरती की सबसे बड़ी खाई से भी बहुत बड़ी है।

✻ पहले-पहल इंग्लैंड में वर्ष १८४० में डाक टिकट बेचने की व्यवस्था शुरू की गयी। हालांकि इसके पहले ही डाक वितरण व्यवस्था शुरू हो चुकी थी, लेकिन पत्र पहुंचाने के लिए पत्र भेजनेवालो को पोस्ट ऑफिस तक जाना ही पड़ता था।

पहले किसी भी पत्र भेजनेवाले को पोस्ट ऑफिस जाकर पत्र पर पोस्ट मास्टर के हस्ताक्षर करवाने पड़ते थे, पर डाक टिकट के आ जाने से इस परेशानी से सभी को मुक्ति मिली। जब डाक टिकट बिकने लगे तो लोग उन्हें खरीद कर अपने पास रख लेते थे और फिर जरूरत पड़ने पर उनका उपयोग कर लेते थे।

१८४० में ही सबसे पहले जगह-जगह लेटर बॉक्स भी टांगे जाने लगे ताकि पत्र भेजनेवाले उनके जरिये पत्र भेज सकें और पोस्ट ऑफिस जाने से छुट्‌अी मिल गयी। धीरे-धीरे यही व्यवस्था बाकी देशों में भी चलन में आ गयी।

✻ अनोखा मंदिर, जहां हवा में लटके हैं खंभे- कोई नहीं समझ पाया रहस्य

भारत को अगर मंदिरों का देश कहें तो गलत नहीं होगा, यहां ऐसे कई मंदिर हैं, जो अपनी भव्यता और अनोखी मान्यताओं के लिए जाने जाते हैं। ऐसा ही एक अनोखा मंदिर आंध्र प्रदेश के अनंतपुर जिले में भी है। इस मंदिर की सबसे खास और रहस्यमयी बात ये है कि इसके खंभे हवा में लटके हुए हैं।

इस मंदिर का नाम है लेपाक्षी मंदिर, जिसे हैंगिंग पिलर टेंपल के नाम से भी जाना जाता है। इस मंदिर में कुल ७० खंभे हैं, जिसमें से किसी का भी जमीन से जुड़ाव नहीं है। वो रहस्यमयी तरीके से हवा में लटके हुए हैं। लेपाक्षी मंदिर

के अनोखे खंभे आकाश स्तंभ के नाम से भी जाने जाते हैं। ये खंभे जमीन से करीब आधा इंच ऊपर उठे हुए हैं। ऐसी मान्यता है कि खंभे के नीचे से कुछ निकालने से घर में सुख-समृद्धि आती है। यही वजह है कि यहां आनेवाले लोग खंभे के नीचे से कपड़ा निकालते हैं।

मंदिर के खंभे पहले जमीन से जुड़े हुए थे, लेकिन एक ब्रिटिश इंजीनियर ने यह जानने के लिए कि यह मंदिर पिलर पर कैसे टिका हुआ है, इसको हिला दिया, तब से ये खंभे हवा में ही झूल रहे हैं। इस मंदिर में इष्टदेव भगवान शिव के क्रूर रूप वीरभद्र हैं। वीरभद्र महाराज दक्ष के यज्ञ के बाद अस्तित्व में आए थे। इसके अलावा यहां भगवान शिव के अन्य रूप अर्धनारीश्वर, कंकाल मूर्ति, दक्षिणमूर्ति और त्रिपुरातकेश्वर भी मौजूद हैं। यहां विराजमान माता को भद्रकाली कहा जाता है। कुर्मासेलम की पहाड़ियों पर बना ये मंदिर कछुए की आकार में बना है। कहा जाता है कि इस मंदिर का निर्माण विरुपन्ना और विरन्ना नाम के दो भाइयों ने १६वीं सदी में कराया था, जो विजयनगर के राजा के यहां काम करते थे। हालांकि पौराणिक मान्यता है कि इस मंदिर को ऋषि अगस्त्य ने बनवाया था। मान्यताओं के अनुसार, इस मंदिर का जिक्र रामायण में भी मिलता है और ये वही जगह है, जहां जटायु रावण से युद्ध करने के बाद जख्मी होकर गिर गये थे और राम को रावण का पता बताया था। मंदिर में एक बड़ा सा पैर का निशान भी है, जिसे त्रेता युग का गवाह माना जाता है। कोई इसे भगवान राम के पैर का निशान तो कोई माता सीता के पैर का निशान मानते हैं।

❋ महिलाओं के दिल की धड़कन पुरुषों की धड़कन से हर मिनट ८ ज्यादा होती है।

❋ आपका दिल एक बार धड़कने से ७० एमएल और १ मिनट में ४.७ लीटर और पूरे दिन में लगभग ७५७० लीटर और पूरे जीवन में लगभग १६ करोड़ लीटर खून पंप करता है। ये एक नल के ४५ साल तक खुले रहने के बराबर है।

❋ सोना हमारी त्वचा के लिए भी फायदेमंद होता है सोने के गहने पहनने से त्वचा की डेड सेल्स खत्म हो जाती है।

❋ आपका हृदय बाएं में नहीं बल्कि छाती के बिल्कुल बीच में है।

❋ कोस्टारिका में २४ अप्रैल, २०१५ को फटे ज्वालामुखी का नाम तुरीआल्बा है।

❋ अमेरिका स्थित मैसाचुसेट्स जनरल हॉस्पिटल के शोधकर्ताओं ने एक स्मार्टफोन आधारित उपकरण विकसित किया है, जिससे कर्करोग से जुड़े ट्यूमर की जांच के लिए सही मॉलिक्यूलर का पता लगाया जा सकता है। इस उपकरण का नाम डी-३ है।

❋ शिमला मिर्च के सेवन से मधुमेह और मोटापे को नियंत्रित किया जा सकता है।

❋ अल्टीमेट पावर कार- सरस्वती विद्यालय हाईस्कूल ऐंड कॉलेज ऑफ साइंस, ठाणे के विद्यार्थी आकाश डी, समृद्धि वी, श्रपा पी, अमेया पी और नेहा पी अपने शहर में बहुत-सी कारें देखते थे। इनसे ढेर सारा धुआं निकलता है। इन्हें चलाने के लिए पेट्रोल भी खूब खर्च होता है। इसी समस्या को हल करने के मकसद से इन विद्यार्थी ने अपने टीचर की मदद से एक अल्टीमेट कार डिजाइन की है। इसमें सोडियम क्लोराइड और पानी से चलनेवाले इलेक्ट्रोलिटिक इंजन का इस्तेमाल किया जाता है। यह सस्ता भी है और धुआं भी नहीं छोड़ता है।

❋ वस्तु का प्रतिबिंब आँखों के रेटिना में बनता है।

❋ हमारे दिमाग के ६० प्रतिशत हिस्से में चर्बी होती हैं इसलिए यह शरीर का सबसे अधिक चर्बी (फैट) वाला अंग हैं।

❋ नेत्रदान में आंख के कार्निया को दान किया जाता है।

❋ दुनिया भर के वैज्ञानिक मानते हैं कि सोना सिर्फ धरती पर ही नहीं बल्कि बुध, मंगल और शुक्र ग्रह पर भी मिल सकता है।

❋ मानव शरीर की सबसे लंबी हड्डी को फीमर कहते हैं। (जांघ की हड्डी)

❋ मनुष्य का खून केवल ४ तरह (ओ, ए, बी, एबी) का होता है, लेकिन गायों में लगभग ८००, कुत्तों में १३ और बिल्लियों में ११ तरह का रक्त पाया जाता है।

❋ त्वचा का कैंसर सूर्य की पराबैंगनी किरणों से होता है।

❋ नेपाल का झंडा दोहरे त्रिभुज के रूप में है।

❋ दो साल की उम्र में एक बच्चे के आहार में अधिक प्रोटीन शामिल करना चाहिए।

❋ मानव शरीर की सबसे छोटी ग्रंथि (ग्लैंड( ) पिट्यूटरी मस्तिष्क में होती है। मानव शरीर की सबसे बड़ी ग्रंथि यकृत होती है।

❋ गुर्दे में बोमन कैप्सूल पाया जाता है।

❋ कैल्शियम और फास्फोरस हड्डियों में सबसे व्यापक रूप में मिलनेवाला खनिज हैं।

❋ विटामिन ए की कमी से रतौंधी, संक्रमणों का खतरा, जीरोप्थैलमिया जैसे रोग होते हैं।

❋ दिल की बीमारियों से सबसे ज्यादा लोग तुर्कमेनिस्तान में मरते हैं। हर साल १ लाख में से ७१२ लोग।

❋ अंतरिक्ष यात्री गिलास में पानी नहीं पी सकता गिलास के जरिये किसी तरह भी पानी नहीं पिया जा सकता है। गिलास के थोड़ा सा हिलते ही पानी कक्ष में गोलियां बन कर तैरने लगता है। इसीलिए अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में पानी पीने के लिए एक सिलेंडर का इस्तेमाल करते हैं जिसमें पानी भरा होता है, और सिलिंडर के साथ एक पाइप जुड़ा होता है और उस पाइप को मुंह में डालकर पानी पीते हैं।

❋ आपका दिल शरीर के अलग होने के बाद भी तब तक धड़कता रहता है जब तक इसे पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन मिलती रहे। क्योंकि इसका खुदका विद्युत आवेग होता है।

❋ कुषाण वंश राज्य की स्थापना कुजुला कडफिसेस ने की।

❋ पाइथन (सांप) के दिल का आकार खाना खाते समय बड़ा हो जाता है।

❋ मोबाइल फोन के द्वारा सबसे पहली कॉल मार्टिन कूपर के द्वारा ३ अप्रैल १९७३ में की गई थी। ये मोटोरोला कंपनी के कर्मचारी थे।

❋ विटामिन बी-१ की कमी से बेरी-बेरी का रोग होता है।

❋ ७० प्रतिशत मोबाइल चाईना चीन में बनाए जाते हैं।

❋ विवाह की समस्या दूर करने के लिए बेला के फूलों का प्रयोग किया जाता है। इसकी एक और जाति है जिसको मोगरा या मोतिया कहते हैं। बेला के फूल सफेद रंग के होते हैं। मोतिया के फूल मोती के समान गोल होते हैं।

❋ अंतरिक्ष में यात्री को हर ९० मिनट के बाद सूर्यास्त देखना पड़ता है। अंतरिक्ष में कभी सूर्य की रौशनी होती तो कभी

बर्फ और ठंड का मौसम होने लगता है। इस बदलते मौसम से बचने के लिए अंतरिक्ष यान के ताप को द्रव परिसंचरण मशीन के द्वारा स्थिर रखा जाता है, जिससे अंतरिक्ष यात्री को बदलते मौसम का बिल्कुल भी एहसास नहीं होता। अंतरिक्ष यात्री को सोने में भी काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। उन्हें सोने के लिए अपनी आंखों पर पट्टी बांधनी पड़ती है और अपने आपको एक स्थिति में रखना पड़ता है ताकि वो इधर-उधर से टकराने से बच सकें।

❋ हर दिन आपका दिल इतनी ऊर्जा पैदा करता है कि एक ट्रक को ३२ किमी तक चलाया जा सके और पूरे जीवन में चांद पर आने-जाने के बराबर।

❋ दुनिया में ४९ प्रतिशत लोग अपना मोबाइल गेम्स खेलने के लिए इस्तेमाल करते हैं और ३० प्रतिशत लोग सोशल नेटवर्किंग के लिए इस्तेमाल करते हैं।

❋ अभी तक किसी इन्सान की सबसे कम २६ धड़कन प्रति मिनट और सबसे ज्यादा ४८० धड़कन प्रति मिनट रिकॉर्ड की गई है।

❋ १८९३ में पहली सफल हार्ट सर्जरी हुई। १९५० में पहली सफल कृत्रिम वाल्व डाली गई, १९६७ में पहली बार किसी इन्सान का दिल दूसरे इन्सान में डाला गया (यह इन्सान १८ दिन तक जीवित रहा) और १९८२ में पहला स्थायी कृत्रिम दिल फिट किया गया।

❋ पुदीना एक ऐसी औषधि है जो हाई रक्तचाप और लो रक्तचाप दोनों को नियंत्रित करती है।

❋ छोटे घर जैसा होता है अंतरिक्ष यात्री का सूट

जब कोई यात्री अंतरिक्ष यात्रा के लिए जाता है उस समय ध्वनि का स्तर १०० डेसिबल से भी ज्यादा हो जाता है जो अंतरिक्ष यात्री की सहन शक्ति से ज्यादा है। अंतरिक्ष यात्रा के समय यात्री के सुनने की शक्ति पर भी प्रभाव पड़ता है। जैसे-जैसे यात्री अंतरिक्ष की तरफ बढ़ने लगता है पृथ्वी का गुरुत्व बल धीरे-धीरे कम होने लगता है। अंतरिक्ष में यात्रा करते समय अंतरिक्ष यान में यात्री को गुरुत्व बल अपकेन्द्र बल द्वारा संतुलित कर दिया जाता है।

अन्तरिक्ष यात्री के लिए अन्तरिक्ष यान को इस प्रकार नियंत्रण किया जाता है कि यात्री को पृथ्वी के वातावरण के हिसाब से रखा जाए। धरती का वायुमंडल इस प्रकार से बना हुआ है के वो सूर्य की आनेवाली हानिकारक विकिरणों और पराबैंगनी किरणों से हमारी रक्षा करता है परंतु अंतरिक्ष में ज्यादा दूर जाने पर यह सुरक्षा कवच हमसे दूर हो जाता है, इसीलिए इससे निपटने के लिए भी प्रबंध किया जाता है।

पिछले कुछ समय में अंतरिक्ष यात्रियों की पोशाक में कई तरह के बदलाव किए गए हैं। अब तक सूट में कई तरह के बदलाव किए जा चुके हैं। अब अंतरिक्ष यात्री के लिए ऐसी पोशाक का निर्माण किया जा रहा है जिससे वो चारों तरफ एक छोटे से घर का काम करती है जिसमें यात्री की सुविधा का सारा समान मौजूद रहता है। पहले अंतरिक्ष यात्री के लिए सांस लेने के लिए १० प्रतिशत ऑक्सीजन दी जाती थी, परन्तु अब ऑक्सीजन और नाइट्रोजन को आपस में मिला दिया जाता है। इसके इलावा इस पोशाक में यात्री के द्वारा सांस के द्वारा छोड़ी जानेवाली कार्बन डाईऑक्साईड को दूर करने के लिए भी तकनीक इस्तेमाल की गई है।

❋ वर्ष २०१२ में संसार की सबसे बड़ी कंपनी एप्पल ने १ सेकेंड में ४ मोबाइल बेचे थे यानी कि प्रति दिन ३४०००

मोबाइल बेचे गए।

❋ विटामिन बी-३ की कमी से त्वचा पर दाद होना, खुजली रोग होते हैं।

❋ आपका दिल एक मिनट में ७२ बार और पूरे दिन में लगभग १ लाख बार और पूरे जीवन में लगभग २.५ अरब बार धड़कता है।

❋ पुरुष और महिला दोनों में हृदयाघात के लक्षण अलग-अलग होते हैं। एक टूटा हुआ दिल भी हृदयाघात की तरह महसूस करता है।

❋ आपके दिल का वजन २५० से ३५० ग्राम है,यह १२ सें.मी. लंबा, ८ सें.मी. चौड़ा और ६ सें.मी. मोटा यानि आपकी दोनों हाथों की मुट्ठी के आकार का होता है।

❋ विटामिन बी-२ की कमी से त्वचा का फटना, आंखों का लाल होना जैसे रोग होते हैं।

❋ आंवला गुणकारी फल है। इसमें नींबू से १७ गुना ज्यादा विटामिन सी होता है। आंवला पाचन तंत्र को दुरुस्त करता है, खून को साफ करता है और त्वचा एवं बालों का भी ख्याल रखता है। आंवला शरीर को ठंडा भी करता है।

❋ पुराणों में सम्राट अशोक को अशोक वर्धन कहा गया है।

❋ नये पैदा हुए बच्चे के दिल की धड़कन सबसे तेज होती है। (७०-१६० बीट/मिनट) और बुढ़ापे में दिल की धड़कन सबसे स्लो होती है (३०-४० बीट/मिनट)।

❋ नोकिया का ११०० मोबाइल फोन अब तक का सबसे ज्यादा बिकनेवाला मोबाईल रहा है। इस मोबाइल की बिक्री २५० मिलियन से भी ज्यादा हुई थी। मोबाइल की हिस्ट्री में यह एक रिकॉर्ड रहा है।

❋ एक औसत व्यक्ति हर रोज अपना मोबाइल १०० से अधिक बार अनलॉक करता है।

❋ विटामिन बी-५ की कमी से बाल सफेद होना, मंदबुद्धि होना जैसे प्रभाव होते हैं।

❋ दिल के धड़कने पर जो थम्प-थम्प की आवाज आती है, वह दिल में पाई जानेवाली ४ वाल्व के खुलने और बंद होने की वजह से बनती है।

❋ आपका दिल शरीर का सभी ७५ ट्रिलियन सेल्स को खून भेजता है सिर्फ आंख में पाई जानेवालीद कॉर्निया सेल को छोड़कर।

❋ एस्ट्रोनाट्स के लिए नासा द्वारा थ्रीडी प्रिंटेड पिज्जा बनाने पर काम चल रहा है।

❋ छिली हुई सब्जियों को धोने से विटामिन सी निकल जाता है।

❋ शनि ग्रह की रिंग ठोस नहीं होती है बल्कि वे धूल, बर्फ और चट्टानों से बनी होती हैं।

❋ इंटरनेट स्पेस स्टेशन को बनाने में १५० बिलियन अमेरिकी डॉलर खर्च हुए जो कि भारतीय रुपये में १०००० खरब के लगभग होता है।

❋ सबसे ज्यादा वर्षावाला स्थान- मासिन राम (मेघालय)

❋ सबसे लंबा रेलवे फ्लेटफार्म - गोरखपुर (यूपी)

❋ सबसे ज्यादा मछली पकड़नेवाला देश- जापान।

✻ चाय का सबसे बड़ा निर्यातक देश- श्रीलंका।

✻ सिंचाई की नहरों का सबसे बड़ा जाल- पाकिस्तान।

✻ अन्न का भंडार या रोटी की डलिया- यूक्रेन।

✻ अंगूर व जैतून उत्पादक देश- इटली।

✻ हीरे के व्यापार का सबसे बड़ा केंद्र- एंटवर्थ (बेल्जियम)

✻ सबसे ज्यादा गर्म जगह (अल अजीजीयाह (लीबिया)

✻ सबसे बड़ा मांस निर्यातक- अर्जेंटीना।

✻ कहवा का पात्र- ब्राजील।

✻ सबसे बड़ा पार्क- वुड वुफेलो नेशनल पार्क (कनाडा)

✻ सबसे ज्यादा कागज उत्पादक (कनाडा।

✻ सबसे ज्यादा सोयाबीन उत्पादक- अमेरिका।

✻ सबसे लंबी सुरंग- माउंट ब्लाक (फ्रांस व इटली के मध्य)

✻ नाइजर-कांगो परिवार- इस भाषा परिवार की भाषाएं दक्षिणी सहारा के इलाके में बोली जाती हैं। प्रमुख भाषाओं में स्वाहिली, शोना, झोसा और जुलु शामिल हैं।

✻ अमेरिका परिवार- इस भाषा परिवार में उत्तरी अमेरिका, मध्य अमेरिका, दक्षिणी अमेरिका, ग्रीनलैंड इत्यादि की भाषाएं शामिल हैं। प्रमुख भाषाओं में एस्किमो (ग्रीनलैंड) अथबस्कन (कनाडा और सं. रा. अमेरिका), नहुअव्ल (मैक्सिको), करीब, चेरोकी (पनामा के पूर्व में), गुआर्नी अरबक, क्वाचुआ, नुत्का इत्यादि।

✻ भारतीय भाषाएं- प्रसिद्ध भाषाविद ग्रियर्सन के अनुसार भारत में भाषाओं की संख्या १७९ और बोलियों की संख्या ५४४ है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार देश में कुल भाषाओं की संख्या ४१८ हैं, जिनमें ४०७ जीवित भाषाएं हैं जबकि ११ लुप्त हो चुकी हैं।

✻ भारत का संविधान- अपनी ८वीं अनुसूची में १८ भाषाओं को मान्यता देता है। देवनागरी लिपि में हिन्दी भारतीय संघ की भाषा है जबकि विभिन्न प्रदेशों की अपनी-अपनी सरकारी भाषाएं हैं। अंग्रेजी भारतीय संघ की दूसरी राजभाषा है। अंग्रेजी का प्रयोग केंद्र सरकार गैर-हिंदी भाषी राज्यों के साथ संवाद में करती है। अंग्रेजी नागालैंड और मेघालय की राजभाषा है। भारत का संविधान २२ भाषाओं को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा देता है जो पूरे देश में बोली जाती हैं।

✻ हिंदी और अंग्रेजी के अतिरिक्त भारत का संविधान २१ अन्य भाषाओं को मान्यता प्रदान करता है।

✻ अल्टाइक परिवार- इस भाषा परिवार की भाषाएं यूरोप (तुर्की), मध्य एशिया (उज्बेक), मंगोलिया (मंगोलियन), सुदूर पूर्व एशिया (कोरियाई, जापानी) इत्यादि में बोली जाती हैं।

✻ चीनी परिवार- यह एशिया का प्रमुख भाषा परिवार है जिसमें दुनिया की सबसे ज्यादा बोलनेवाली भाषा मंदारिन (चीनी) शामिल है। इस परिवार की प्रमुख भाषाएं मंदारिन, तिब्बती या मोट, बर्मी, थाई, मैतेई, गारो, नागा, बोंडो, नेबारी आदि हैं। यह सभी भाषाएं ध्वनि आधारित है।

❋ मलय-पॉलीनेशियन परिवार- इस भाषा परिवार में लगभग १००० भाषाएं शामिल हैं और ये भाषाएं मुख्य रूप से हिंद व प्रशांत महासागर और दक्षिण-पूर्ण एशिया में बोली जाती हैं। इस भाषा परिवार की प्रमुख भाषाएं हैं- मलाया, इंडोनेशियाई, माओरी, फिजियन, हवाइयन इत्यादि।

❋ अफ्रीकी-एशियाई परिवार- इस भाषा परिवार में उत्तरी अफ्रीका और मध्य पूर्व की भाषाएं शामिल हैं। मुख्य भाषाओं में अरबी और हिब्रू शामिल हैं।

❋ कॉकेशियाई परिवार- इस परिवार की भाषाएं मुख्य रूप से काला सागर और कैस्पियन सागर के बीच स्थित देशों के लोगों द्वारा बोली जाती हैं। जॉर्जियाई और चेचेन इस परिवार की मुख्य भाषाएं हैं।

❋ द्रविड़ परिवार- इस भाषा परिवार की भाषाएं भारत के दक्षिणी राज्यों में बोली जाती हैं। तमिल, कन्नड़, तेलुगू इस भाषा परिवार की प्रमुख भाषाएं हैं।

❋ ऑस्ट्रो-एशियाटिक परिवार- इस परिवार की भाषाएं एशिया में भारत के पूर्वी हिस्से से लेकर वियतनाम तक बोली जाती हैं। प्रमुख भाषाओं में वियतनामी और ख्मेर शामिल है।

❋ विश्व में कुल २७९२ भाषाएँ बोली जाती है।

❋ दुनियाभर में कुल ५००० भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती हैं।

❋ सानमारिनो विश्व का एक ऐसा देश है जहाँ दो राष्ट्रपति होते हैं।

❋ विश्व का पहला रिवोल्वर कोल्ट (अमेरिका) ने १८३५ में बनाया है।

❋ एक्वेस्टक ऐसा पदार्थ है जो आग में नहीं जलता।

❋ विश्व में खट्टा शहद ब्राजील के जंगलों में मिलता है।

❋ विश्व में स्पेन ऐसा देश है जहाँ कपड़ों पर अखबार छपता है।

❋ एक वर्ष में मनुष्य करीब ५ हजार ४७९ बार हंसता है।

❋ एक औसत व्यक्ति का वजन १ लाख ४४ हजार डाक टिकटों के वजन के बराबर होता है।

❋ घाघरा का युद्ध- बाबर तथा अफगानो के बीच १५२९ ई. में घाघरा का युद्ध हुआ जिसमें बाबर विजयी हुआ।

❋ चौसा का युद्ध- यह युद्ध १५३९ ई. को हुमायूं एवं शेरशाह सूरी के बीच हुआ था इसमें शेरशाह सूरी विजयी हुआ था।

❋ बिलग्राम का युद्ध- हुमायूं एवं शेरशाह सूरी के बीच १५४० ई. में बिलग्राम या कन्नौज का युद्ध हुआ जिसमें फिर से शेरशाह सूरी विजयी हुआ। पराजित होकर हुमायूं सिंध चला गया तथा शेरशाह सूरी ने दिल्ली एवं आगरा में कब्जा कर लिया।

❋ सरहिन्दी का युद्ध- १५५५ ई. में हुमायूं ने सरहिन्दी के युद्ध में सूरी के वंशजों को हराकर पुन: दिल्ली में अपना अधिकार कर लिया।

❋ पानीपत का द्वितीय युद्ध- यह युद्ध ५ नवम्बर १५५६ ई में अकबर एवं हेमू के बीच हुआ था। इस युद्ध में अकबर की सेना ने हेमू को पराजित कर दिया।

❋ तालीकोटा का युद्ध- १५६५ ई. में हुआ इस युद्ध को राक्षसी-तंगड़ी या बन्नीहट्टी का युद्ध भी कहा जाता है। यह युद्ध विजयनगर साम्राज्य एवं दक्षिण के राज्यों के बीच हुआ था। इसके परिणाम स्वरूप विजयनगर साम्राज्य का पतन हो गया।

❋ हल्दी घाटी का युद्ध- हल्दी घाटी का युद्ध महाराणा प्रताप तथा अकबर की सेना के बीच १५७६ ई. में हुआ था। इस युद्ध में मुगल सेना का नेतृत्व मान सिंह एवं आशफखाँ कर रहे थे। अकबर की सेना इस युद्ध में विजयी रही।

❋ असीरगढ़ का युद्ध- यह मुगल बादशाह अकबर का अंतिम अभियान था जिसमें अकबर ने १६०१ ई. में दक्षिण भारत के मीरन बहादुर से युद्ध किया।

❋ प्लासी का युद्ध- यह युद्ध अंग्रेजों एवं बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला के बीच १७५७ ई. में हुआ था। इस युद्ध में अंग्रेजों का नेतृत्व क्लाइव तथा नवाब की सेना का नेतृत्व मीर जाफर कर रहा था। मीर जाफर ने अप्रत्यक्ष रूप से अंग्रेजों का साथ दिया जिससे नवाब की हार हुई।

❋ पानीपत का तृतीय युद्ध- यह युद्ध १७६१ ई. में मराठों एवं अहमद शाह अब्दाली के बीच हुआ था। इस युद्ध में मराठों का नेतृत्व सदाशिव भाऊ ने किया था। मराठों की इस युद्ध में हार हो गई थी।

❋ बक्सर का युद्ध- बक्सर का युद्ध १७६४ ई. हुआ था। इस युद्ध में अंग्रेजों का नेतृत्व कैप्टन मुनरो एवं दूसरी ओर अवध के नवाब शुजाउद्दौला मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय एवं मीर कासिम की संयुक्त सेना थी अंग्रेजों ने इस युद्ध को जीत लिया। इसके बाद अवध के नवाब तथा मुगल बादशाह अंग्रेजों पर आश्रित हो गए।

❋ प्रथम आंग्ल- मैसूर युद्ध- यह युद्ध अंग्रेजों एवं मैसूर के शासक हैदर अली के बीच १७६७-१७६९ ई में हुआ था। इस युद्ध में हैदर अली विजयी हुआ एवं अंग्रेजों ने हैदर अली के साथ मद्रास की संधि कर ली।

❋ द्वितीय आंग्ल- मैसूर युद्ध- १७८०-१७८४ ई. में अंग्रेजों द्वारा मद्रास की संधि का पालन नहीं करने के फलस्वरूप यह युद्ध हुआ। हैदर अली की १७८२ ई. में मृत्यु हो गयी। हैदर अली के पुत्र टीपु सुल्हान ने मैसूर सेना की कमान संभाली। अंत में टीपू सुल्हान ने १७८४ ई. में अंग्रेजी से मंगलौर की संधि कर ली।

❋ तृतीय आंग्ल- मैसूर युद्ध- यह युद्ध १७९०-१७९२ ई. में टीपू सुल्तान एवं अंग्रेजों के बीच हुआ जिसमें अंग्रेजों का नेतृत्व कार्नवालिस ने किया था। यह युद्ध १७९२ ई. में श्रीरंगपत्तनम की संधि के साथ समाप्त हुआ।

❋ चतुर्थ आंग्ल- मैसूर युद्ध- इस युद्ध में अंग्रेजों का नेतृत्व लार्ड वेलेजली था उसने टीपू सुल्तान पर अंग्रेजों के षडयंत्र का आरोप लगाकर १७९९ ई. में आक्रमण कर दिया। इस युद्ध में टीपू सुल्तान मारा गया।

❋ चन्द्रमा सौरमण्डल का पाचवाँ सबसे विशाल प्राकृतिक उपग्रह है।

❋ चन्द्रमा की सतह और उसकी आंतरिक सतह का अध्ययन करनेवाला विज्ञान सेलेनोलॉजी कहलाता है।

❋ इस पर धूल के मैदान को शान्ति सागर कहते हैं। यह चन्द्रमा का पिछला भाग है, जो अंधकारमय होता है।

❋ चन्द्रमा का उच्चतम पर्वत लीबनिट्ज पर्वत है, जो ३५००० फुट (१०६६८ मी) ऊंचा है। यह चन्द्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर स्थित है।

❋ चन्द्रमा को जीवाश्म ग्रह भी कहा जाता है।

❋ इसके प्रकाश को पृथ्वी में आने में १.३ सेकंड लगता है।

❋ चन्द्रमा, पृथ्वी की एक परिक्रमा लगभग २७ दिन और ८ घंटे में पूरी करता है और इतने ही समय में अपने अक्ष पर एक घूर्णन करता है। यही कारण है कि चन्द्रमा का सदैव एक ही भाग दिखाई पड़ता है। पृथ्वी से चन्द्रमा का ५७% भाग

देखा जा सकता है।

❋ चन्द्रमा द्वारा पृथ्वी के चारो ओर घुमने में लगा समय (परिभ्रमण काल) २७ घंटा ७ मिनिट ४३ सेकंड है।

❋ चन्द्रमा का अक्ष तल पृथ्वी के अक्ष के साथ ५८.४८ काउ अक्ष कोण बनाता है। चन्द्रमा पृथ्वी के अक्ष के लगभग समानान्तर है।

❋ चन्द्रमा का धरातल असमतल और इसका व्यास ३४७६ कि.मी. है तथा द्रव्यमान, पृथ्वी के द्रव्यमान का लगभग १/८ है।

❋ पृथ्वी के समान इसका परिक्रमण पथ भी दीर्घ वृत्ताकार है।

❋ विश्व में सर्वाधिक सहकारी संस्थाएँ भारत में हे।

❋ भारत में असंगठित क्षेत्र, संगठित क्षेत्र की बजाय, अधिक रोजगार का सृजन करता है।

❋ भारत में कुल तिलहन उत्पादन में मूंगफली का हिस्सा सर्वाधिक है।

❋ भारत में एक करोड़ से अधिक जनसंख्यावाले तीन नगर (मुंबई, कोलकाता और दिल्ली) हैं।

❋ भारत में सर्वाधिक नगरीकरण गोवा राज्य में हुआ है।

❋ राष्ट्रीय आय की सामाजिक लेखांकन गणना विधि का विकास रिचर्ड स्टोन ने किया था।

❋ केन्द्रीय बैंक द्वारा अन्य व्यावसायिक बैंकों से ली जानेवाली ब्याज दर को बैंक दर कहा जाता है।

❋ अन्तरराष्ट्रीय व्यापार में अनुकूल संतुलन की स्थितिवाली मुद्रा, जिसको प्राप्त करना कठिन होता है, को कठोर मुद्रा कहा जाता है।

❋ साख मुद्रा को ऐच्छिक मुद्रा भी कहा जाता है।

❋ भारत में पाई जानेवाली बेरोजगारी की प्रमुख प्रकृति संरचनात्मक है।

❋ अर्थव्यवस्था की कीमतों का औसत स्तर सामान्य कीमत स्तर कहलाता है।

❋ आय में बदलाव के फलस्वरूप उपभोग में बदलाव उपभोग की सीमान्त प्रवृत्ति कहलाता है।

❋ प्राचीन भारतीय इतिहास के विषय में जानकारी मुख्यत: चार स्त्रोतों से प्राप्त होती है- धर्म ग्रंथ, ऐतिहासिक ग्रंथ, विदेशियों का विवरण, पुरात्तव संबंधी साक्ष्य।

❋ भारत का सर्वप्राचीन धर्मग्रंथ वेद है, जिसके संकलनकर्ता महर्षि कृष्ण द्वैपायन वेदव्यास को।

❋ माना जाता है वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद एवं अथर्ववेद।

❋ ऋचाओं के क्रमबद्ध ज्ञान के संग्रह को ऋग्वेद कहा जाता है। इसमें १० मंडल, १०२८ सूक्त एवं १०४६२ ऋचाएं है। इस वेद के ऋचाओं के पढ़नेवाले ऋषि को होतृ कहते हैं।

❋ इस वेद से आर्य के राजनीतिक प्रणाली एवं इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है।

❋ विश्वामित्र द्वारा रचित ऋग्वेद के तीसरे मंडल में सूर्य देवता सावित्री को समर्पित प्रसिद्ध गायत्री मंत्र है। इसके ९ वें मंडल में देवता सोम का उल्लेख है। इसके आठवें मंडल की हस्त लिखित ऋचाओं को खिल कहा जाता है।

❋ चातुष्यवर्ण समाज की कल्पना का आदि स्त्रोत ऋगवेद के १०वें मंडल में वर्णित पुरुषसूक्त है, जिसके अनुसार चार

वर्ष (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र) आदि पुरुष ब्रह्मा के क्रमश: मुख, भुजाओं, जंघाओं और चरणों से उत्पन्न हुए।

❋ वामनावतार के तीन पगों के आख्यान का प्राचीनतम स्रोत ऋगवेद है।

❋ ऋगवेद में इन्द्र के लिए २५० तथा अग्नि के लिए २०० ऋचाओं की रचना की गयी है।

❋ एक जिन्दा दिमाग बहुत नर्म होता है और इसे चाकु से आसानी से काटा जा सकता है।

❋ दिमाग में १००००० मील लम्बी रक्त वाहिकाएं होती हैं।

❋ दिमाग को ४ से ६ मिनट तक ऑक्सीजन न मिलने पर भी यह रह सकता है पर ५ मे १० मिनट तक न मिलने पर ब्रेन डैमेज पक्की है।

❋ मनुष्य का दिमाग का वजन लगभग १५०० ग्राम तक होता है।

❋ हमारे दिमाग में न्युरॉन की गिनती १०० अरब (जितने आकाशगंगा में तारे होते हैं) होते हैं और हर न्युरॉन में १००० से १०००० सायनोपसेस होते हैं।

❋ दिमाग का सतही क्षेत्रफल लगभग १८५० से ३००० वर्ग सैंटीमीटर तक होता है।

❋ वैज्ञानिक मानते हैं कि ब्रह्माण्ड में सबसे जटिल और रहस्यमयी चीज मनुष्य का दिमाग है।

❋ हेलमेट पहनकर दिमाग को चोट लगने की संभावना फिर भी ८०% रहती ही है।

❋ मानव दिमाग के अंदर एक सैकेंड में १ लाख रसायनिक प्रतिक्रियायें होती हैं।

❋ दिमाग शरीर का सबसे ज्यादा चर्बीवाला अंग है।

❋ मस्तिष्क में प्रत्येक वस्तु (सूचना) संग्रहित होते जाता है- तकनीकी रूप से मस्तिष्क के पास अनुभव, अवलोकन, पठन, श्रवण आदि प्रत्येक वस्तु (सूचना) को संग्रह करने की क्षमता होती है। जन्म के बाद से प्रत्येक वस्तु उसमें संग्रहित होते जाती है, कुछ भी नहीं छूटता। यह अलग बात है कि मनुष्य में अपने ही मस्तिष्क में संग्रहित किसी अनेक वस्तुओं (सुचनाओं) तक वापस पहुंचने याने कि अनेक घटनाओं को स्मरण रख पाने की क्षमता नहीं होती।

❋ दिमाग शरीर का लगभग २% है परन्तु यह कुल ऑक्सीजन का २०% खपत करता है और खून भी २०% उपयोग करता है।

❋ जब मनुष्य दो साल का होता है तो उसके दिमाग में किसी और समय के इलावा ब्रेन सेल्स की गिनती सबसे ज्यादा होती है।

❋ दिमाग के बारे में सबसे पहला उल्लेख ६००० साल पहले सुमेर से मिलता है।

❋ पुरुषों और महिलाओं के दिमाग की संरचना भिन्न होती है।

❋ अगर हमारी चमड़ी और मेहदे की तरह हमारे दिमाग के सेल भी बदल जाए तो हम अपनी याददाश्त गवा सकते हैं।

❋ विराम-चिन्ह- विराम शब्द का अर्थ है रुकना। जब हम अपने भावों को भाषा के द्वारा व्यक्त करते हैं तब एक भाव की अभिव्यक्ति के बाद कुछ देर रुकते हैं, यह रुकना ही विराम कहलाता है।

इस विराम को प्रकट करने हेतु जिन कुछ चिन्हों का प्रयोग किया जाता है, विराम चिन्ह कहलाते हैं। वे इस प्रकार हैं-

अल्प विराम- पढ़ते अथवा बोलते समय बहुत थोड़ा रुकने के लिए अल्प विराम चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। जैसे-

सीता, गीता और लक्ष्मी। यह सुंदर स्थल, जो आप देख रहे हैं, बापू की समाधि है। हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश विधि हाथ। अर्ध विराम- जहाँ अल्प विराम की अपेक्षा कुछ ज्यादा देर तक रुकना हो वहाँ इस अर्ध विराम चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। जैसे- सूर्योदय हो गया; अंधकार न जाने कहाँ लुप्त हो गया। पूर्ण विराम- जहाँ वाक्य पूर्ण होता है वहां पूर्ण विराम-चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। जैसे- मोहन पुस्तक पढ़ रहा है। वह फूल तोड़ता है।

✻ विस्मयादिबोधक चिन्ह- विस्मय, हर्ष, शोक, घृणा आदि भावों को दर्शानेवाले शब्द के बाद अथवा कभी-कभी ऐसे वाक्यांश या वाक्य के अंत में भी विस्मयादिबोधक चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। जैसे- हाय। वह बेचारा मारा गया । वह तो अत्यंत सुशील था। बड़ा अफसोस है।

✻ प्रश्नवाचक चिन्ह- प्रश्नवाचक वाक्यों के अंत में प्रश्नवाचक चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। जैसे- किधर चले? तुम कहाँ रहते हो?

✻ एमआरआई स्कैन क्या है और कैसे है?

एमआरआई का अर्थ होता है मैग्नेटिक रेसोनेंस इमेजिंग। इस टेस्ट में गहरे चुंबकीय क्षेत्र का उपयोग किया जाता है। इस टेस्ट में शरीर के अंदर के अंग और संचरनाओं को देखने के लिए एक बड़े कंप्यूटर और रेडियो तरंगों का उपयोग किया जाता है। ऐसा शरीर के किसी भी हिस्से की तस्वीर लेने के लिए किया जाता है। सीटी स्कैन में मरीज को हानिकारक एक्सरे से गुजरना पड़ता है जबकि इस तकनीक में ऐसा नहीं होता है। एमआरआई में प्रयुक्त रेडियो तरंगें शरीर को कोई नुकसान नहीं पहुंचाती है और ये एक लचीली तकनीक है जिसका इस्तेमाल करके हड्डियों सहित शरीर के विभिन्न अंगों में असामान्यता का अध्ययन किया जा सकता है। दिमाग और रीढ़ की हड्डी का परीक्षण करने के लिए एमआरआई बहुत उपयोगी है।

एमआरआई सकैन करवाने से पहले अपने डॉक्टर को जरूर बताएं यदि- आपके शरीर में धातु के टुकड़ें हों, आपको छर्रो या गोली से चोट लगी है, आप वेल्डर हैं (ऐसे में आपके शरीर में धातु हो सकती है)

आपके शरीर में धातु या इलेक्ट्रानिक उपकरण लगे हों जैसे कार्डियक पेसमेकर या धातु का कृत्रिम जोड़।

इस विधि का आधार चुम्बकीय अनुवाद होता है। एमआरआई करने के लिए व्यक्ति के शरीर के प्रभावित हिस्से या कभी-कभी पूरे शरीर को एक मशीन में बनी नलीनुमा गुहा में प्रवेश कराया जाता है, जिसमें अजीब तरह की आवाजें सुनाई देती हैं और कुछ समय बाद व्यक्ति को बाहर निकाल लिया जाता है। इससे कुछ देर बाद प्राप्त होती हैं। इसमें लगभग ३०-४० मिनट का समय लगता है। इस स्कैन में कोई तकलीफ नहीं होती है लेकिन एमआरआई मशीन बहुत शोर करती है जिससे बचाव के लिए आपको इयरप्लग्स दिये जा सकते हैं।

✻ आपके दांत भी फिंगर प्रिंट के समान ही यूनिक होते हैं। सभी लोगों के दातों का जोड़ा अलग अलग होता है।

✻ जयपुर के हवामहल में- लाल और गुलाबी बालू-पत्थर से बने हवामहल में सामने की तरफ से कोई प्रवेश द्वार ही नहीं है। महल में प्रवेश के लिए पिछली तरफ से ही रास्ता है। हवामहल में खिड़कियां तो ९५३ है, लेकिन कमरे ९ भी नहीं हैं। बस गलियारे ही हैं। पाँच मंजिला इस महल में एक भी सीढ़ी नहीं है।

✻ महिलाओं की जबान लम्बी होती है, लेकिन असल में पुरुषों की तुलना में छोटी होती है।

✻ रोबोटिक हथियार जो एक इन्सान के नियंत्रण में हैं, उपग्रहों को लाँच करने के लिए या अंतरिक्ष स्टेशन का निर्माण

करने के लिए और अन्य कई कार्यों के लिए स्पेस रोबोट्स का इस्तेमल होता हैं।

✻ कुमार संभव संस्कृत महाकाव्य की रचना महाकवि कालिदास ने की है।

✻ वर्जिन अटलांटिक ए३३३ अपर क्लास बेहतरीन इंटीरियर और शानदार लाइटिंग वाली इस फ्लाइट को डिस्को भी कहा जा सकता है। इस फ्लाइट की सीट पूरी तरह मैनुअल है यानी आप अपने हिसाब से अपनी सीट को सेट कर सकते हैं। इस फ्लाइट में एंटरटेनमेंट का विशेष ध्यान रखा जाता है।

✻ बच्चे अपने जन्म के कुछ साल तक सपना नहीं देखते हैं।

✻ हाथियों को मधुमक्खी से बहुत डर लगता है। मधुमक्खियों को देखते ही हाथी भी इन्सानों की तरह डर कर भाग जाते हैं।

✻ थाईलैंड में रामायण- रामायण सिर्फ भारत में ही नहीं बल्कि थाइलैंड में भी पढ़ी जाती है। थाइलैंड में पढ़ी जानेवाली रामायण का नाम रामकिन है।

✻ हर साल हजारों टन पास्ता- अमेरिकी हर साल ३५००० टन पास्ता खा जाते हैं।

✻ वेटिकन गार्ड की वर्दी- वेटिकन सिटी का हर गार्ड अभी भी १६वीं सदी में माइकल एंजलो द्वारा डिजाइन की गई वर्दी पहनता है।

✻ सबसे व्यस्त एयरपोर्ट- अमेरिका का अटलांटा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा दुनिया का सबसे व्यस्त हवाई अड्डा है।

✻ बिजली का उपयोग- अमेरिका के वाबाश और इंडियाना दुनिया के पहले ऐसे शहर हैं जिनमें बिजली का उपयोग रोशनी के लिए किया गया था।

✻ दो लोग जानते हैं कोका-कोला बनाने की विधि- दुनिया में केवल दो लोगों को कोका-कोला बनाने की विधि पता है। उन दोनों को एक साथ यात्रा करने की अनुमति नहीं है।

✻ टाइटैनिक बनाने में लगे थे ३५ करोड़- टाइटैनिक जहाज को बनाने के लिए उस समय ३५ करोड़ ७० लाख रुपए लगे थे, जबकि टाइटैनिक फिल्म बनाने के लिए १००० करोड़ के लगभग लागत आई।

✻ भारतीय राजा शंहशाह अकबर के समय ईस्ट इंडिया कंपनी इंग्लैंड में स्थापित हुई।

✻ दांत का जो भाग हमें दिखाई देता है, उसे क्राउन कहा जाता है।

✻ अगर आपके मुंह में लार की मात्रा कम है, तो आपको पूरी सही स्वाद का पता नहीं लग पाएगा।

✻ हमारे मुंह में लगभग १०००० स्वाद ग्रंथियां हैं, जिनमें से ज्यादातर जीभ पर स्थित हैं।

✻ पूरी दुनिया में हर एक मिनट में २५५ जन्म लेते हैं? इसका मतलब हर सेकेंड में ४.३ बच्चे।

✻ कतर एयरवेज बिजनेस क्लास- इस फ्लाइट में सीटों की सजावट और एंटरटेनमेंट का विशेष ध्यान रखा जाता है। इस फ्लाइट की खासियत हैं कि जहां केवल २० यूरो में ही वाई-फाई सर्विसेज भी मिल जाती है।

✻ इलेक्ट्रिक फील्ड टेमोग्राफी से बना है। इस पेंट में इलेक्ट्रिक फील्ड टेमोग्राफी का उपयोग किया गया है। यह पेंट छोटे इलेक्ट्रो को आपस में जोड़कर किसी भी सतह फिर चाहे वो प्लास्टिक हो, ड्रायवॉल हो या फिर कोई और चीज उसे यह टचस्क्रीन में बदल देता है। इसके बाद जैसे ही इस पर यूजर उंगली रखता है यह उसकी उंगली हरकतों के हिसाब से जानकारी देने लगता है।

✻ मानव शरीर में सबसे कठोर तत्व हमारे दांतों का हिस्सा इनेमल है।

✻ हर तीन में से एक शिशु के शरीर पर जन्म से ही एक निशान होता है और लड़कियों में लड़कों की तुलना में दोगुने होते हैं।

✻ बड़े हॉस्पिटल में बहुत सारे शल्यचिकित्सा और मेडिकल कार्य रोबोट के मदद से बड़े आसानी से किये जाते हैं। इन्हें मेडिकल रोबोट कहा जाता हैं।

✻ बच्चों में २० दांत होते हैं जबकि वयस्कों में दांतों की संख्या ३२ होती हैं।

✻ अमेरिका में हर साल जितने बच्चे पैदा होते है उससे ढाई गुना ज्यादा बार्बी डॉल बेचीं जाती हैं।

✻ वैसे तो एक अकेला टिड्डा घातक साबित नहीं होता लेकिन अक्सर टिड्डे झुंड में ही घूमते हैं और इनका झुंड काफी खतरनाक हो सकता है। एक टिड्डा हर रोज अपने वजन जितना खाना खाता है और इस हिसाब से अगर इनका झुंड एक फसल पर हमला कर दे तो लाखों किलो की फसल बर्बाद कर सकते हैं।

✻ सन १९८० के बाद जुड़वाँ बच्चे पैदा होने की संभावना ७६ प्रतिशत तक बढ़ गई है।

✻ बुद्धिमान लोगों की एक पहचान ये भी है कि ये बिना तथ्यों के किसी बात पर विश्वास नहीं करते।

✻ जन्म लेने के १० मिनट बाद बच्चे में इतने दिमाग का विकास हो जाता है कि वो ये समझ जाता है कि आवाज किस तरफ से आ रही हैं।

✻ मानव की आवाज उम्र के अनुसार बदलती है। जब आप यौवन तक पहुंचते हैं, तो वोकल कोड मोटी हो जाती है जिसके परिणामस्वरूप आवाज भारी हो जाती है, विशेष रूप से पुरुषों में। बाद में आवाज में जो सोपनो या बैरीटोन में बदलती है। ज्यादातर पुरुषों की बैरीटोन यानी मध्यम आवाज होती है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि पुरुषों की आवाज बुरी होती है।

✻ लोग आंखों के फड़कने का कारण अच्छे और बुरे से जोड़ कर देखते हैं और ये लोगों का विश्वास है जिस पर लोग आंख बंद करके विश्वास करते हैं। लेकिन मेडिकली मानना है कि ये खराब न्यूट्रिशंस, तनाव, अल्कोहल, ज्यादा कॉफी पीने से और थकान के कारण होता है।

✻ रोते वक्त नाक निकलने का कारण आंसू बनाने वाला ग्लैंड हैं। लेक्रिमल ग्लैंड आंखों के ऊपरी हिस्से में स्थित होता है। बहुत अधिक आंसू बनने की दशा में ये आंखों से बाहर तो निकलते ही हैं बल्कि सांस नली में भी चले जाते हैं जिससे नाक बहने लगती है।

✻ बुद्धिजीवियों की एक खासियत होती है कि ये गलतियां बहुत कम दोहराते हैं और अपनी हर गलती से सीख लेते हैं। बुद्धिमान लोग जुगाड़ भी होते हैं। ये कोई भी काम आसानी से समझकर, करने की काबिलियत रखते हैं। बुद्धिजीवी लोग किसी भी नई चीज को देखते या पढ़ते वक्त उसमें पूर्ण रुचि दिखाते हैं। इन लोगों का दिमाग किसी भी जानकारी या बात को तुरंत समझकर उस पर सवाल जवाब करने की क्षमता रखता है।

✻ हाथ-पैर की उंगलियों के जोड़ को डायरथ रॉडायल जोड़ कहते हैं जिसके बीच में एक पृकार का तरल-पदार्थ होता है। जब इन जोड़ों पर हम ताकत लगाते हैं तो इन जोड़ों में उपस्थित तरल पदार्थ, गैस के रूप में वहां से निकलता है। ये

तरल पदार्थ उंगलियों के इन जोड़ों को मजबूत बनाती हैं।

✻ किसी एक विषय की जानकारी रखना आपका बुद्धिमान नहीं बनाता। बुद्धिमान व्यक्ति हर विषय का ज्ञान रखता है और ज्यादातर समय कुछ नया सीखने और पढ़ने में लगाता है।

✻ रोज नहाना जरूरी है। हमारे यहां प्रत्येक शुभ्रकर्म में पवित्रता स्थापित करने हेतु स्नान करने का विशेष महत्व है, पर वैज्ञानिक दृष्टि से स्नान का अर्थ शारीरिक शुद्धि से है। दिनभर परिश्रम करने पर शरीर से पसीना निकलता है। हवा लगने से पसीने का द्रवभाग तो वाष्प बनकर उड़ जाता है, परन्तु अद्रव मैल इन रोम कूपों में जम जाती है। यदि इस मैल को रोज साफ न किया जाए तो कुछ दिनों बाद मैल की मोटी तह एकत्र होकर इन रोमछिद्रों को बिलकुल बंद कर देगी। इससे अंदर की मैल और दूषित वायु बाहर न आकर अंदर-ही-अंदर सड़ जाएगी, फलत: शरीर में दुर्गंध आएगी एवं भयंकर रोग होंगे। इसलिए निरोग एवं स्वस्थ रहने के लिए दैनिक स्नान जरूरी है।

✻ सबसे महंगी घड़ी लंदन में १६८० में ११ लाख के मूल्य में बनी थी।

✻ शल्यचिकित्सा से हमारा आधा दिमाग हटाया जा सकता है और इससे हमारी यादों पर भी कुछ असर नहीं पड़ेगा।

✻ दूरदर्शन देखने की प्रक्रिया में दिमाग बहुत कम इस्तेमाल होता है और इसलिए इससे बच्चों का दिमाग जल्दी विकसित नहीं होता। बच्चों का दिमाग कहानियां पढ़ने से और सुनने से ज्यादा विकसित होता है क्योंकि किताबों को पढ़ने से बच्चे ज्यादा कल्पना करते हैं।

✻ आज तक १६७००० टन सोना पाया गया है इससे ज्यादा स्टील तो आज एक घंटे में बना लेते हैं।

✻ मनुष्य के कान में मौजूद श्रवण यंत्रिका की लंबाई लगभग तीन चौथाई इंच है लेकिन इसमें ३० हजार विद्युत सर्किट समाये हुए हैं। हमारे कान इतने संवेदनशील होते हैं कि यह १२ प्रकार के विभिन्न स्वरों के अंतर को पहचान सकते हैं।

✻ भारत को इंडिया सबसे पहले यूनान वासियों ने कहा।

✻ हर बार जब हम कुछ नया सीखते हैं तो दिमाग में नई झुर्रियां विकसित होती हैं और यह झुर्रियां ही आईक्यू का सही पैमाना हैं।

✻ यदि १५ किलोटन के १०० न्यूक्लियर बमों का इस्तेमाल धरती पर हो जाए तो आसमान में काला धुंआ छा जाएगा, सूरज की रोशनी ठीक से धरती पर नहीं पहुंच पाएगी, आधी ओजोन लेयर खत्म हो जाएगी और ऐसी बीमारियों का जन्म हो जाएगा जिनका हम अंदाजा भी नहीं लगा सकते।

✻ चॉकलेट की खुशबू से दिमाग में ऐसी तरंगें उत्पन्न होती हैं जिनसे मनुष्य आराम महसूस करता है।

✻ दिमाग क्या है? कभी-कभी दिल में ये ख्याल आता है कि दिमाग भी कितने कमाल की चीज हैं। यह हर समय हमारे हुक्म के लिए तैयार रहता है। कई बार हम थक कर कहते हैं कि आज मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा। जबकि मस्तिष्क कभी थकता ही नहीं हैं। ब्रेन और माइन्ड- दिमाग और मन दो अलग अलग चीजें हैं। वैज्ञानिक आज तक पता नहीं लगा पाए कि मन शरीर के किस हिस्से में है। हमारे दिमाग में एक मिडब्रेन डोपामाइन सिस्टम (एमडीएस) होता है, जो घटनेवाली घटनाओं के बारे में मस्तिष्क को संकेत भेजता है। हो सकता है कि हम इसे ही अंतर्ज्ञान अथवा भविष्य के पूर्वानुमान कहते हैं। जिस व्यक्ति के दिमाग में यह शैली जितना ज्यादा विकसित होता है वह उतनी ही सटीक भविष्यवाणी

कर सकता हैं। अगर दिमाग से एमिगडाला नाम का हिस्सा निकाल दिया जाए तो इंसान का किसी भी चीज से हमेशा के लिए डर खत्म हो जाएगा। एक ही बात को काफी देर तक तनाव लेकर सोचने से हमारा दिमाग कुछ समय के लिए सोचने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता को खो देता है। दिमाग के बारे में सबसे पहला उल्लेख ६००० साल पहले सुमेर सभ्यता से मिलता है। हमारे दिमाग की मेमोरी असीमित होती हैं यह कंप्यूटर की तरह कभी नहीं कहेगा कि मेमोरी फुल हो गई। ये अलग बात है कि पुरानी बिना काम की चीजें यह अपने आप भूल जाता है लेकिन किसी के याद दिलाने पर वो चीजें तुरंत याद आ जाएगी। एक जिन्दा दिमाग बहुत नर्म होता है और इसे चाकू से आसान से काटा जा सकता है।

एक दिन में हमारे दिमाग में ७०००० विचार आते हैं और इनमें से ७० प्रतिशत विचार नकारात्मक होते हैं। मनुष्य के दिमाग में लगभग ३० लाख अरब तंत्र कोशिकाएं मौजूद होती हैं। इसमें मौजूद प्रत्येक कोशिका अपने संचालन के लिए वोल्टेज का दसवां हिस्सा इस्तेमाल करती है।

* एक बूंद खून में १०००० सफेद सेल और २५०००० प्लेटलेट्स होती हैं।

* कई बार जब हम आसमान की तरफ देखते हैं तो हमारी आंखों के सामने थोड़े सफेद-सफेद से डॉट्स घूमने लगते हैं। दरअसल ये हमारी सफेल ब्लड सेल्स होती है।

* परमाणु बम इतनी आवाज पैदा कर सकते हैं कि हमारे कानों के पर्दे फट जाए। परमाणु विस्फोट की तरंगें सुपरसोनिक होती है। यदि आप हमलेवाली जगह पर ठीक बीच में खड़े हो तो धमाके की आवाज सुनने से पहले ही आपकी मौत हो जाएगी। परमाणु बम २४० से २८० डीबी तक की आवाज पैदा कर सकते हैं जबकि इन्सान के कान सिर्फ १२० डीबी तक की आवाज सुन सकते है। धरती पर सबसे ज्यादा आवाज परमाणु बम ही करते हैं, इसके बाद ज्वालामुखी का नंबर आता है।

* हम चाहे तो २४ कैरेट गोल्ड को खा भी सकते है और इसकी वजह से आप बीमार भी नहीं पड़ेंगे। एशिया के कई देशों में चाय, कॉफी आदि में भी गोल्ड मिलाया जाता है।

* विश्व की विशालतम घड़ी डेनमार्क में है, जिसका उद्घाटन वहां के सम्राट ने १५ दिसंबर १९५५ को किया था। यह विश्व की सबसे अधिक ठीक समय देनेवाली घड़ी मानी गई है। इसे घड़ी निर्माता व खगोलविद् जेम्स आल्सन ने दस वर्षों में तैयार किया था। इसमें १४००० पुर्जे ५७०००० ढंग से कार्य करते हैं। निचले भाग के बीच में कैलेंडर है तथा अन्य भाग नक्षत्रों के बारे में बताते हैं।

* अगर आप अपने स्मार्ट फोन पर लम्बे समय तक काम करते हैं तब आपके दिमाग में ट्यूमर होने का खतरा बढ़ जाता है।

* अंतरिक्ष यात्रियों का हेलमेट बनाने में गोल्ड का इस्तेमाल होता है। गोल्ड सूर्य से आनेवाली खतरनाक किरणों को रिफ्लेक्ट कर देता है और हेलमेट को अंदर से ठंडा रखने में मदद करता है।

* मनुष्य के दिमाग में दर्द की कोई भी नस नहीं होती इसलिए वह कोई दर्द महसूस नहीं करता।

* खून का पहला ट्रांसफर १६६७ में दो कुत्तों के बीच किया गया था।

* हर २००० में से एक बच्चे का जन्म दांतों के साथ ही होता है।

❋ मनुष्य की आंखें एक साथ १५ लाख संदेश इकट्ठा करती हैं। अगर हम इसकी नकल तकनीकी यंत्र द्वारा करना चाहें तो हमें २५००० टीवी ट्रांसमीटरों एवं रिसीवरों की आवश्यकता होगी।

❋ विश्व की सबसे ऊंची चार मुंह वाली घड़ी विलियम्स बर्ग बेंक बुकलिन न्यूयॉर्क में है। यह न्यूयॉर्क में सड़क की सतह से ४३० फुट ऊंचाई पर लगी हुई है।

❋ इन्सान के शरीर की एक रक्त कोशिका को शरीर का पूरा चक्कर लगाने में तकरीबन ६० सेकेंड का समय लगता है।

❋ सबसे पहले मानव की आवाज को इतिहास में वर्ष १८६० में रिकॉर्ड किया गया था। यह वही साल है जब मानव आवाज का रिकॉर्ड करने के उपकरण का आविष्कार किया गया था। इसके अलावा वोकल फोल्ड के कारण वास्तव में फुसफुसाते समय नियमित स्वर में बोलने की तुलना में कठिन काम करना पड़ता है। मस्तिष्क और मानव आवाज में बहुत गहरा संबंध होता है। जब व्यक्ति गाना गा रहा होता है या सिर्फ बोलता है तो मानव मस्तिष्क अतिरिक्त सक्रिय हो जाता है। मानव की आवाज अत्यंत लचीली होती है। यह लोगों की अलग-अलग टोन में विभिन्न ध्वनियों का उत्पादन करने में मदद करती है, इसलिए प्रदर्शन के दौरान विभिन्न ध्वनि संशोधनों के साथ आता है।

❋ रेड ब्लड सेल्स ये ऑक्सीजन को लेकर चलती है और कार्बन डाइऑक्साइड को खत्म करती है।

❋ गर्भवती और स्तनपान करवाने वाली महिलाएं खून दान नहीं कर सकती।

❋ जापान में लोग ब्लड ग्रुप के माध्यम से ही आदमी के व्यक्तित्व का अंदाजा लगा लेते हैं।

❋ यदि इंजेक्शन के द्वारा सोने को बॉडी में डाल दिया जाए तो यह कर्करोग से लड़ने में मदद करता है और जोड़ो को भी मजबूत बनाता है यह १० में से ७ आदमियों पर असर करता है।

❋ पानी की सत्तह के नीचे होनेवाले परमाणु विस्फोट को अनडेक्स कहा जाता है। पानी के भीतर विस्फोट के प्रभाव कई चीजों पर निर्भर करता है, जिसमें विस्फोट से दूरी, विस्फोट की ऊर्जा, विस्फोट की गहराई और पानी की गहराई शामिल है। यदि पानी में परमाणु बम फोड़ दिया जाए तो आसपास के सारे तटीय जीव मर जाएंगे। पानी में काफी रेडियोधर्मी तत्व मिल जाएंगे। पानी के अंदर विस्फोट से उठनेवाली तरंगें और सुनामी या भूकंप के दौरान उठनेवाली तरंगें अलग-अलग होती हैं।

❋ अगर शरीर के आकार को ध्यान में रखा जाए तो मनुष्य का दिमाग सभी प्राणियों से बड़ा है। हाथी के दिमाग का आकार उसके शरीर के मुकाबले सिर्फ ०.१५ प्रतिशत होता हैं बल्कि मनुष्य का दो प्रतिशत।

❋ यदि रक्त वाहिकाओं को सिरे से सिरे तक मिला लिया जाए तो ये दो बार धरती को लपेट सकती है।

❋ दुनिया में कुछ लोग ऐसे भी है जिन्हें गोल्ड से डर लगता है इस डर को ऑरोफोबिया कहते हैं।

❋ अभी तक कृत्रिम खून नही बनाया जा सका है। ये सिर्फ प्रकृति की देन है।

❋ स्वीडन में जब कोई खून दान करता है तो उसे थैंक यू का मैसेज किया जाता है और ऐसा ही मेसेज तब भी किया जाता है जब उसका खून किसी के काम आता है।

❋ जेम्स हैरीसन नाम का व्यक्ति पिछले ६० साल में १००० बार खून दान कर चुका है और २० लाख लोगों की जिन्दगी बचा चुका है।

❋ प्लाज्मा बॉडी में प्रोटीन लेकर चलता है। ये खून को जमने से बचाता है।

❋ ९ मिनट में रिपीट होता है अलार्म

जनरल इलेक्ट्रिक की बनाई गई घड़ियों में सबसे पहले १९५६ में स्नूज बटन लगाया गया था, लेकिन १९५९ में इसे लोकप्रियता मिली। लेकिन स्नूज बटन के लिए गियर जोड़ने की वजह से दूसरे पुर्जों का तालमेल ना बिगड़े इसके लिए विशेषज्ञों ने सलाह दी कि स्नूज गियर की साइकल १० मिनट से ज्यादा या कम कर दी जाए। आखिर में निर्माताओं ने इसे नौ मिनट करने का फैसला लिया।

कुछ विशेषज्ञों का तर्क है कि १० मिनट के बाद आप गहरी नींद में चले जाते हैं, ऐसे में अगर अलार्म दोबारा नहीं बजता तो आप शायद उठ नहीं पाएंगे। इसका एक मनोवैज्ञानिक पहलू भी बताया जाता है। कहा जाता है जो लोग अलार्म घड़ी का इस्तेमाल करते हैं उन्हें लगता है कि इसे स्नूज करने से वो कुछ देर और सो भी लेंगे और उनके समय की पाबंदी भी टूटेगी नहीं। यानी वो कुछ मिनटों में उठकर अपने काम पर निकल जाएंगे।

हर सुबह जब अलार्म बजता है तो आप उसे बंद कर देते हैं और सोचते हैं कि बस दस मिनट और आपको शायद नहीं पता कि वो दस मिनट नहीं बल्कि नौ मिनट होते हैं। स्नूज बटन की मदद से हम अलार्म को कुछ देर के लिए आगे बढ़ा सकते हैं। इस बटन का आविष्कार ५० के दशक में हुआ था। जब बटन का आविष्कार हुआ था तब घड़ी के गियर की साइकल १० मिनट की थी।

❋ धरती के हर महाद्वीप से सोना निकाला जा चुका है।

❋ अगर ५ से १० मिनट तक दिमाग में ऑक्सीजन की कमी हो जाए तो यह हमेशा के लिए दिमाग खो सकता हैं। दिमाग तेज करने का सबसे आसान उपाय हैं, जमकर पानी पिएं। एक गिलास पानी पीने से दिमाग १४ प्रतिशत तेजी से काम करता है। जब तक प्यास शांत नहीं होती तब तक मनुष्य के दिमाग को ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई होती हैं।

❋ हर ३ सेकेंड में भारत में किसी न किसी को खून की आवश्यकता होती है। हर दिन दुनिया में ४०००० यूनिट खून की जरूरत पड़ती है। ३ में से १ व्यक्ति को जीवन में कभी खून की आवश्यकता पड़ती है।

❋ अमेरिका परमाणु हथियार बनानेवाला पहला देश है। यह एकमात्र ऐसा देश भी है जिसने युद्ध के लिए परमाणु बम का इस्तेमाल किया। यह अकेला अपने परमाणु हथियारों पर सभी देशों द्वारा मिलाकर किए गए कुल खर्च से भी ज्यादा खर्च करता है।

❋ अगर किसी महिला को प्रेगनेंसी के दौरान किसी अंग को कोई हानि पहुंचती है तो गर्भाशय में पल रहा बच्चा उस अंग को ठीक करने के लिए स्टेम सेल्स भेजता है।

❋ १९५८ में संयुक्त राज्य अमेरिका का एक न्यूक्लियर बम जॉर्जिया के समुद्र तट पर खो गया था। यह २०१६ में कुछ पर्यटक गोताखोरों को मिल गया। उन्होंने तुरंत ९११ पर कॉल करके इस ३.९ मेगाटन के बम को डिफ्यूज करवा दिया।

❋ बादलों से घिरी रातें साफ रातों के मुकाबले इसलिए गर्म होती है, क्योंकि बादल हीट को जमीन से हवा में रेडिएट नहीं होने देते। ऐसे में वातावरण गर्म रहता है।

❋ १८३८ से १९६० के बीच खींचे गए आधे से ज्यादा फोटो बच्चों के थे।

❋ मौत के बाद शरीर का जो अंग धरती के सबसे नजदीक होता है खून का बहाव भी उसी तरफ हो जाता है और फिर खून जम भी जाता है, ऐसा शायद गुरुत्वाकर्षण के कारण होता है।

❋ हमारे शरीर में नमक और पानी एक निश्चित अनुपात में होता है। जब खून में किसी रीजन से पानी कम हो जाता है, तो इनका अनुपात बदल जाता है। ऐसे हालात में दिमाग में मौजूद थर्स्ट सेंटर गले की नर्व्स को मैसेज भेजता है, जिससे गले में सिकुड़न होती है। इस सिकुड़न से गला सूखने लगता है और हमें प्यास महसूस होने लगती है।

❋ पूरी दुनिया में सोने की सबसे ज्यादा इस्तेमाल भारत में होती है लेकिन दुनिया के कुल सोने के उत्पादन का केवल २ प्रतिशत ही भारत में होता है। भारत में ज्यादा सोना मैसूर की कोलार की खानों से, सिक्किम राज्य से और बिहार के मानभूम और सिंहभूम जिले से निकलता है।

❋ जो महिलाएं अपनी प्रेगनेंसी के दौरान खर्राटे लेती हैं उनके बच्चे औरों की तुलना में छोटे होते हैं।

❋ वैक्यूम क्लिनर बिजली से चलनेवाली ऐसी मशीन है, जिसके द्वारा कॉरपेट, कमरों के फर्श आदि की सफाई की जा सकती है। इस मशीन में एक इलेक्ट्रिक मोटर होती है, जिसके साथ एक पंखा लगा होता है, जो तेजी से घूमता है। पंखा एक तरफ से हवा खींचता है और दूसरी ओर फेंकता है। मशीन में एक बैग लगा होता है, जो धूल और गंदगी को इकट्ठा करता रहता है। बैग में धूल इकट्ठा हो जाने के बाद उसकी सफाई करके इसे फिर से इस्तेमाल किया जा सकता है।

❋ ब्राजील देश में एक आदिवासी समूह है बोरोरो। इस समूह के सभी लोगों का एक ही ब्लड ग्रुप ओ है।

❋ हमारे पलक झपकने का समय १ सेकेंड के १६ वें हिस्से से कम होता है पर दिमाग किसी भी वस्तु का चित्र सेकैंड के १६ वें हिस्से तक बनाए रखता है।

❋ केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, भरतपुर- केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान भरतपुर (राजस्थान) का प्रसिद्ध पर्यटन आकर्षण है। इसका निर्माण लगभग २५० वर्ष पहले महाराजा सूरजमल ने करवाया था। १९६४ में जब यह उद्यान पक्षी अभयारण्य के रूप में स्थापित नहीं हुआ था तब तक भरतपुर के महाराजा इसका उपयोग बतखों के शिकार के लिए करते थे।

❋ नंदा देवी अभ्यारण्य- फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान, उत्तराखंड- फूलों की घाटी राष्ट्रीय उद्यान एक फूलों की घाटी का नाम है, जिसे अंग्रेजी मैं वैली ऑफ फ्लॉवर्स कहते हैं। यह उत्तराखण्ड राज्य के गढ़वाल क्षेत्र में है। फूलों की घाटी यूनेस्को द्वारा सन १९८२ में घोषित विश्व धरोहर स्थल नन्दा देवी अभयारण्य नन्दा देवी राष्ट्रीय उद्यान का एक भाग है।

❋ भारत में सर्वश्रेष्ठ बौद्ध मठ - भारत बहु-सांस्कृतिक भूमि है जहां लोग कई धर्मों का पालन करते हैं। बौद्ध धर्म ऐसा एक धर्म है, जिसे पहाड़ी क्षेत्रों में बहुत से लोग पालन करते हैं, विशेष रूप से तिब्बती बंधुओं को भारत में आश्रय दिया गया है। इससे जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के आसपास कई मठों की स्थापना हुई है।

❋ तवांग मठ, - अरुणाचल प्रदेश- समुद्र तल से ३५०० मीटर की ऊंचाई पर भूटान की सीमा के निकट तवांग शहर के ऊपर स्थित, तवांग मठ विश्व में सबसे बड़ा तिब्बती बौद्ध मठ है और यह भी गल्डेन नमगी लात्से के नाम से लोकप्रिय है। मठ बौद्ध धर्म का प्रतिनिधित्व करता है।

❋ रुमेटेक मठ, सिक्किम - सिक्किम में स्थित २०० मठों में से, गंगटोक के शिखर पर स्थित रमटेक मठ सबसे बड़ा और सबसे लोकप्रिय है। मठ अपने प्राचीन मूल (९वीं शताब्दी से) के शानदार और रंगीन परिदृश्य, झरने और अनछुए

नदी से पर्यटकों को आकर्षित करता है। इस जगह पर उच्च सुरक्षा है। तिब्बती नव वर्ष के ठीक पहले आयोजित एक नकाबपोश नृत्य समारोह में भी पर्यटक भाग ले सकते हैं।

❋ थिक्से मठ, लद्दाख - सिंधु घाटी में स्थित थिक्से मठ, किसी भी आगंतुक के लिए दो गुना उद्देश्य प्रदान करता है- एक भगवान बुद्ध की पूजा करना है और दूसरे को इस जगह की उल्लेखनीय पहाड़ी-आच्छादन का आनंद लेना और इस जगह का शानदार दृश्य है। इस जगह पर एक संग्रहालय भी है जिसने बौद्ध काल के दौरान प्राचीन अवशेष और कला को संरक्षित किया है। मैत्रेय मंदिर इस मठ में पर्यटकों के बीच सबसे प्रसिद्ध है। यहां भगवान बुद्ध की ४९ फीट बड़ी मूर्ति भी है।

❋ निंगमापा मठ, बालाकूपपे - मठ इस क्षेत्र में अपने तिब्बती निपटारे के लिए सबसे प्रसिद्ध है, स्वर्ण मंदिर और नामदरोलिंग मठ। मंदिर में बुद्ध की असंख्य सोने की मूर्तियां और प्रार्थना कक्ष और अनगिनत गुंबद पर्यटकों के लिए विदेशी अनुभव प्रदान करते हैं।

❋ फुकली मठ, जंसकर, जम्मू और कश्मीर- यह मठ एक मुख्य मंदिर, शिक्षण की सुविधा, एक पुस्तकालय, अपार्टमेंट और रसोईघर के कमरे के साथ कई प्रार्थना कक्षों का आयोजन करता है। पवित्र स्थान और गुफा इस जगह की सबसे प्रमुख विशेषता है।

❋ रंग बिरंगे खूनवाले जीव - इंसान समेत कई स्तनधारी जीवों का खून लाल रंग का होता है। लेकिन इसका ये मतलब नहीं कि पृथ्वी पर मौजूद हर प्राणी का खून लाल होता है।

हरा- न्यू गिनिया नाम के गिरगिट का खून हरा होता हे। हरे खून की वजह से इसकी मांसपेशियां और जीभ भी हरी होती है।

नीला- ऑक्टोपस का खून नीले रंग का होता है। ऑक्टोपस के रक्त में तांबे की मात्रा बहुत ज्यादा होती है जिसके चलते इसका खून नीला हो जाता हे। रंगहीन क्रोकोडाइल आइसफिश का रक्त रंगहीन और पारदर्शी होता है।

पीला- सी क्यूकम्बर कहा जानेवाला यह जीव देखने में भले ही हरा लगे लेकिन इसका खून पीले रंग का होता है। वैज्ञानिक अब तक इसका कारण नहीं समझ पाए हैं।

बैंगनी- पीनट वॉर्म कहे जानेवाले इस कीड़े का रक्त बैंगनी रंग का होता है। इसके शरीर में हिमोरिथरीन नाम के प्रोटीन का जब ऑक्सीकरण होता तो उसका रंग बैंगनी या कभी कभार गुलाबी होता जाता है।

रंगहीन- क्रोकोडाइल आइसफिश का रक्त रंगहीन और पारदर्शी होता है। अंटार्कटिक की गहराई में बेहद ठंडे तापमान में रहनेवाली इस मछली के रक्त में हिमोग्लोबिन (लाल रक्त वर्णक) और हिमोसाइनिन (नीला वक्त वर्णक) नहीं होता है।

❋ विश्व विरासत में शामिल भारत के टूरिस्ट प्लेस -

भीमबेटका (भीमबैठका) - भीमबेटका मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में स्थित एक पुरापाषाणिक आवासीय पुरास्थल भीमबेटका है। यह आदि-मानव द्वारा बनाए गए शैलचित्रों और शैलाश्रयों के लिए प्रसिद्ध है। इन चित्रों को पुरापाषाण काल से मध्यपाषाण काल के समय का माना जाता है। ये चित्र भारतीय उपमहाद्वीप में मानव जीवन के प्राचीनतम चिह्न हैं। यह स्थल मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल से ४५ किमी दक्षिणपूर्ण में स्थित है।

मानस वाइल्ड लाइफ सेंचुरी, असम- मानस नेशनल पार्क असम का एक प्रसिद्ध पार्क है। इसे यूनेस्को ने नेचुरल वर्ल्ड हेरिटेज साइट के साथ-साथ प्रोजेक्ट टाइगर रिजर्व, बायोस्फियर रिजर्व और एलिफेंट रिजर्व घोषित किया गया है। यह

हिमालय के फुटिहल पर स्थित है और भूटान तक फैला हुआ है, जहां इसे रॉयल मानस नेशनल पार्क के नाम से जाना जाता है। यह पार्क बालोंवाले खरगोश, असम के छतरी वाले कछुए, नाटे कदवाले सुअर और सुनहरे लंगूर सहित कई लुप्तप्राय: जानवरों का घर है।

✻ महाबोधि मंदिर- बिहार के बोधगया में स्थित इसी मंदिर के पास पीपल के पेड़ के नीचे महात्मा बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था। अब यहीं से बौद्ध भिक्षुओं की शिक्षा-दीक्षा की शुरुआत होती है। द्रविड़ आर्किटेक्चर के हिसाब से इस मंदिर का निर्माण किया गया है। इस मंदिर की ऊंचाई १८० फीट है।

महाबोधि मंदिर की खास बातें- बौद्धों के इस सबसे पुराने मंदिर को सिर्फ पत्थरों से बनाया गया था, लेकिन ये आज भी उतना ही मजबूत और खूबसूरत दिखता है। ४५ मीटर स्क्वेयर में फैले इस मंदिर का आकार पिरामिड जैसा है। मंदिर के पत्थरों पर महात्मा बुद्ध के जीवनकाल की घटनाओं को उकेर कर बताने की कोशिश की गई है।

✻ फतेहपुर सीकरी- फतेहपुर सीकरी को बनाने में पूरे १५ साल का वक्त लगा था। घूमने के लिए यहां बुलंद दरवाजा, पंच महल, दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, शेख सलीम चिश्ती का मकबरा और बीरबल भवन खास है। फतेहपुर सीकरी वही जगह है जहां अकबर के नवरत्न रहा करते थे। लगभग १४ सालों तक फतेहपुर सीकरी अकबर के राज्य की राजधानी के तौर पर जाना जाता था, लेकिन १५८५ में इसे बदल दिया गया था।

✻ हमारे शरीर के २९ एक्यूप्रेशर पॉइंटस हमारे हाथों में होते हैं। प्रेशर पॉइंट को दबाने से संबंधित अंग तक रक्त और ऑक्सीजन का संचार अच्छे से होने लगता है। एक्यूप्रेशर के अनुसार इन सभी दबाव बिंदु को सही तरीके से दबाने का सबसे सहज तरीका है ताली। हथेली पर दबाव तभी अच्छा बनता है जब ताली बजाते हुए हाथ लाल हो जाए, शरीर से पसीना आने लगे। इससे आंतरिक अंगों में ऊर्जा भर जाती है और सभी अंग सही ढंग से कार्य करने लग जाते हैं।

बेहतर होता है रक्त संचार- ताली बजाने से खून में बुरे रक्तवसा की मात्रा कम होती है, जिससे हृदयाघात जैसी समस्या की आशंका कम हो जाती है। ताली बजाने से शरीर में रक्त का संचार अच्छे से होता है जिससे फेफड़ों में अस्थमा संबंधित रोग का खतरा भी टलता है।

तेज ताली बजाने से आंख, कान, दिमाग, रीढ़ की हड्डी, कंधे आदि सभी बिंदुओं पर प्रभाव पड़ता है जिससे तनाव, अनिद्रा, आंखों की कमजोरी, पुराना सिरदर्द, जुकाम, बालों का झड़ना जैसी समस्या से राहत मिलती है।

✻ सबसे भारी घड़ी वेस्टमिन्सटर पैलेस की ब्लॉक टॉवर है। इसे एडवर्ड प्रथम ने लगवाया था। इसके ४ डायल हैं, जो प्रत्येक २ फुट ६ इंच व्यास के हैं। यह घड़ी १८५६ में ७ लाख में बनी थी। इस घड़ी का घंटा ही १५ टन का है।

✻ धरती का ८० प्रतिशत सोना अभी भी जमीन के नीचे ही दफन है। समुद्र में इतना सोना है कि अगर सारा निकाल लिया जाए तो हर इंसान के पास ४ किलो सोना होगा।

✻ जो मिसाइल परमाणु हथियारों को ले जाने का कार्य करती है उनकी स्पीड ७ किलोमीटर प्रति सेकेंड होती है। यानि ४०० किलोमीटर प्रति मिनट।

✻ सीटी स्कैन कराने से आपके शरीर पर रेडियो एक्टिव रेडिएशन का उतना ही प्रभाव पड़ता है जितना हिरोशिमा विस्फोट के समय डेढ़ किलोमीटर दूर खड़े आदमी के शरीर पर पड़ा था। एक सीटी स्कैन से हमारे शरीर में १-१०

मिलीसाइवर्स्ट तक रेडिएशन पहुंचती है।

✻ एक टन गोल्ड अयस्क से ३०० गुना ज्यादा सोना १ टन आईफोन्स से निकल जाता है।

✻ शीत युद्ध के दौरान अमेरिका ने एक एटम बम चंद्रमा पर गिराने की भी सोची थी ताकि वे अपनी सेना की शक्ति का प्रदर्शन कर सके।

✻ न्यू मैक्सिको में जहाँ दुनिया का पहले परमाणु बम का परीक्षण किया गया था आज उस जगह पर परमाणु बम संग्रहालय बना हुआ है। ट्रिनिटी साइट नाम से मशहूर यह म्युजियम साल में केवल १२ घंटे खुलता है। एक बार अप्रैल के पहले शनिवार को और एक बार अक्टूबर के पहले शनिवार को।

✻ हमारे शरीर में रक्त का ७० प्रतिशत भाग रेड सेल्स के अंदर मौजूद हीमोग्लोबिन में, ४ प्रतिशत भाग मांसपेशियों के प्रोटीन मायोग्लोबिन में, २५ प्रतिशत भाग लीवर, अस्थिमज्जा, प्लीहा व गुर्दे में होता है और बाकि बचा एक प्रतिशत रक्त प्लाजमा के तरह अंश व कोशिकाओं के एंजाइम्स में होता है।

✻ भारतीय महिलाओं के पास दुनिया का लगभग ११ प्रतिशत सोना है। ये सोना अमेरिका, स्विट्जरलैंड और जर्मनी जैसे देशों के कुल सोने से भी ज्यादा है। सोने की शुद्धता को कैरेट में मापा जाता है। सोना १०,१२,१४,१८,२२ और २४ कैरेट का हो सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा सोने का बिस्किट २५० किलो का है।

✻ सफेद ब्लड सेल्स शरीर को बैक्टीरिया और वायरस से बचाता है।

✻ आज से लगभग ५००० साल पहले सोना और तांबा दो ऐसी धातु है जो सबसे पहले खोजी गई थी।

✻ हमारी नसों में खून ४०० किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से दौड़ता है और पूरे दिन में लगभग ९६०० किमी की दूरी तय करता है।

✻ एक बच्चे का दिमाग बच्चे को दिए गए ग्लूकोज में से ५० प्रतिशत ग्लूकोज का इस्तेमाल कर लेता है, इसीलिए बच्चे ज्यादा सोते हैं।

✻ खून का थक्का बनाने में विटामिन के सहायक होता है।

✻ टिटनेस से शरीर का तंत्रिका तंत्र प्रवाहित होता है।

✻ मनुष्य के रक्त का शुद्धिकरण किडनी में होता है।

✻ ५०००० में से एक बच्चा ऐसा पैदा होता है जिसके जन्म से ही गुर्दे नहीं होते।

✻ हमारे आधे जीन्स दिमाग की बनावट के बारे में बताते हैं और बाकी बचे आधे जीन्स पूरे शरीर के बारे में बताते हैं।

✻ एक बड़े पैमाने की परमाणु लड़ाई होने से १५० मिलियन टन धुंआ वातावरण में फैल जाएगा, जिसकी वजह से शीत युग से भी अधिक ठंड हो जाएगी।

✻ खून की प्लेटलेट्स खून के जमने में मदद करती हैं। इन्हीं की वजह से चोट लगने के कुछ देर बाद खून निकलना बंद हो जाता है।

✻ हमारा दिल हर साल लगभग ४ करोड़ बार धड़कता है, किसी छुट्टी और लुब्रिकेशन की सहायता के बिना। आपका दिल से एक लाख बार धड़कते हुए सिर से पैर तक मौजूद १०००० कि.मी. से भी अधिक रेड ब्लड सेल से गुजरता है।

✻ बुद्धिजीवी लोग हर तरह की परिस्थिति में जल्दी घुल-मिल जाते हैं।

✻ सऊदी अरब में तेल के उत्पादन में सिर्फ २ डॉलर का खर्च आता है जबकि अन्य देशों में यह तेल १०० डॉलर प्रति लीटर तक बेचा जाता है।

✻ मनुष्य सबसे तेज आवाज का उत्पादन लगभग १२९ डीबीए कर सकता है। इस उच्चतम रिकॉर्ड को गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में रिकॉर्ड किया गया है। यह आवाज केंट, इंग्लैंड के एक शिक्षण सहायक द्वारा तैयार की गई है।

✻ बुद्धिमान लोग अपना ज्यादातर काम रात में करते हैं और कम आईक्यू वाले लोग दिन में सब काम निपटा लेते हैं।

✻ हर वर्ष दुनिया में असली नोटों से कहीं ज्यादा संख्या में नकली नोट छापे जाते हैं।

✻ संगीतकारों की तुलना में गैर संगीतकारों का दिमाग अलग होता है। संगीतकारों का दिमाग ज्यादा क्रियाशील होता है।

✻ भुट्टे के अनेक लाभ - एंटी ऑक्सीडेंट्स से युक्त मक्का कर्करोग रोधी होता है। वजन विटामिन ए से भरपूर मक्का आंखों की रोशनी तेज करता है। मक्का में भरपूर मात्रा में होते हैं रेशें जो हाजमा रखे दुरुस्त। बढ़ाने के इच्छुक लोगों के लिए मक्का बेहद फायदेमंद नीमिया से बचाये अनीमिया की बड़ी वजह विटामिन बी-१२ और फोलिक एसिड की कमी होना है। मक्का में दोनों की भरपूर मात्रा तो होती ही है, साथ ही इसमें लौहांश भी काफी मात्रा में होती है। लौहतत्व नयी लाल रक्त कोशिकाओं के निर्माण में बेहद जरूरी होता है। लौहतत्व की कमी भी अनीमिया का कारण हो सकती है।

ऊर्जा बढ़ाएं- कॉर्न को स्टार्च युक्त सब्जी माना जाता है। इसमें कार्बोहाइड्रेट की मात्रा काफी अधिक होती है, जो आपको शार्ट टर्म और लॉंग टर्म ऊर्जा देता है। इसके साथ ही यह मस्तिष्क और नर्वस सिस्टम को सुचारू रूप से काम करने में मदद करता है।

स्वीट कॉर्न यानी मक्का में विटामिन सी, केरोटेनाइड् और बायोफ्लेवोनॉयड काफी मात्रा में होता है, जो रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करके रक्त प्रवाह को सुचारू बनाता है।

मक्का में कार्बोहाइड्रेट और कैलोरी भी पर्याप्त मात्रा में होती है। तो अगर आपका वजन कम है, तो आपको मक्का का सेवन जरूर करना चाहिए। एक कप मक्का में १३० कैलोरी होती है।

मक्का में पाये जानेवाले एंटी-ऑक्सीडेंट्स कर्करोग से बचाने में मददगार होते हैं। यह कर्करोग फैलानेवाले फ्री रेडिकल्स से लड़ते हैं और व्यक्ति की सेहत दुरुस्त रखने का काम करते हैं और तो और इसमें मौजूद तत्व यकृत और स्तन कर्करोग में विशेष रूप से उपयोगी होते हैं।

तेल को पीने से शरीर शक्तिशाली होता है। हर रोज एक चम्मच तेल को चीनी के बने शर्बत में मिलाकर पीने से बल बढ़ता है। ताजा मक्का के भुट्टे को पानी में उबालकर उस पानी को छानकर मिश्री मिलाकर पीने से पेशाब की जलन व गुर्दों की कमजोरी समाप्त हो जाती है। पथरी निकालने के लिए भी मक्का फायदेमंद है। भुट्टे और जौ को जलाकर राख कर लीजिए। दोनों को अलग-अलग पीसकर अलग-अलग शीशियों में भर लीजिए। एक कप पानी में एक-एक चम्मच मक्का और जौ की राख घोलें फिर छानकर इस पानी को पी लीजिए। इससे पथरी गल जाएगी और पेशाब में जलन नहीं होगी।

क्षयरोग के मरीजों के लिए मक्का बहुत फायदेमंद है। क्षयरोग के मरीजों को हर रोज मक्के की रोटी खाना चाहिए। इससे क्षयरोग के इलाज फायदा होगा। खांसी के मरीजों के लिए भुट्टा बहुत फायदेमंद होता है। भुट्टा जलाकर उसकी राख

पीस लीजिए। इसमें स्वादानुसार सेंधा नमक मिला लीजिए। हर रोज कम से कम चार बार एक चौथाई चम्मच हल्का गरम पानी के साथ फांक लीजिए। खांसी समाप्त हो जाती है।

बच्चों के विकास के लिए भुट्टा बहुत फायदेमंद माना जाता है। ताजे दूधिया (जो कि पूरी तरह से पका न हो) मक्का के दाने पीसकर एक खाली शीशी में भरकर उसे धूप में रखिए।

जब उसका दूध सूखकर उड़ जाए और शीशी में केवल तेल रह जाए तो उसे छान लीजिए। इस तेल को बच्चों के पैरों में मालिश कीजिए। इससे बच्चों का पैर ज्यादा मजबूत होगा और बच्चा जल्दी चलने लगेगा।

* एक मिनट में दिल ७० से ८० बार धड़कता है।

* एक सेहतमंद इन्सान के शरीर में खून की मात्रा उसके वजन के १/१३ हिस्से के बराबर होती है।

* एक तंदुरुस्त आदमी की नाड़ी की रफ्तार औसतन ७२ फी (प्रति) मिनट है। दिमाग का बाहरी हिस्सा जिसे कार्टेक्स कहते हैं अक्ल का केन्द्र होता है। ये हिस्सा जितना बड़ा होगा अक्ल उतनी ज्यादा होगी।

* एक सेहतमंद आदमी एक मिनट में १२ से १६ बार सांस लेता है।

* बहुत खुशी या गम की खबर सुनकर दिल की धड़कन बढ़ जाती है, जिसमे रगों में ऑक्सीजन मिला हुआ खून ज्यादा तेजी से दौड़ने लगता है और आदमी को गहरा धक्का चाहे खुशी के कारण हो सहने के लिए तैयार रखता है। एक तंदुरुस्त आदमी का तापमान ९५ डिग्री होना चाहिए।

* मनुष्य के शरीर में ९६००० कि.मी. लंबी रक्त नलिकाएं होती हैं।

* मनुष्य के शरीर में लगभग ६५ प्रतिशत जल तथा ६-७ लीटर रक्त होता है।

* मनुष्य के फेफड़े का आंतरिक क्षेत्रफल ९३ वर्गमीटर होता है जो शरीर के बाह्य क्षेत्रफल का ४० गुना होता है।

* हृदय की रक्त पंप करने की क्षमता प्रति मिनट ४.५ लीटर होती है।

* मनुष्य के शरीर में २०६ हड्डियाँ तथा ६५० मांसपेशियां होती हैं। शरीर की सबसे छोटी हड्डी कान की स्टीरप तथा सबसे बड़ी जाँघ की हड्डी फीमर होती है।

* वयस्क पुरुष के मस्तिष्क का वजन लगभग १४०० ग्राम होता है।

* चर्चित कलाकार चार्ली चैप्लिन ने एक अनोखा पुरस्कार जीता था। यह था चार्ली चैप्लिन जैसे दिखने का।

* १९४५ में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना के बाद से अब तक १२० युद्ध हो चुके हैं।

* ऊंट के शरीर में पित्ताशय ही नहीं होता।

* सिद्धांतत: निम्नतम सम्भावित तापमान (-) २७३.१५ है यानी कि पूर्ण शून्य।

* अभी तक ज्ञात प्रकाश उत्पादन के स्त्रोतों में जुगनू प्रकाश का सर्वाधिक सक्षम उत्पादक है।

* मनुष्य का जबड़ा २७९ कि.ग्रा. से ज्यादा बल सहन कर सकता है।

* भारतीय रेल की शुरुआत १६ अप्रैल १८५३ में बहुत ही छोटे स्तर पर हुई थी। उस वक्त मुंबई बोरीबंदर से ठाणे तक ३४ किलोमीटर की रेल्वे लाईन पर पहली रेल चलाई गई थी, इसमें १४ डिब्बे लगे थे और इसमे कुल ४०० यात्री बैठे थे। इस छोटी सी ट्रेन में उस वक्त तीन स्टीम इंजन लगाये गये थे।

आज भारतीय रेल इस दुनिया के बहुत बड़े कारोबार में से एक हो गयी है। आज हररोज २० हजार यात्री गाड़ी चल रही हैं जिनमें हररोज डेढ़ करोड़ से अधिक यात्री प्रवास करते हैं। देशभर में ७५०० के करीब रेल्वे स्टेशन बने हुए है। करीब ९५०० मालगाड़ियों के लिये भी देशभर में पटरियों का जाल बिछा हुआ है। नौकरी देनेवाली भारतीय रेलवे दुनिया की ६ वीं सबसे बड़ी संख्या है, जिसमें आज १३ लाख से अधिक लोग काम कर रहे हैं। जो भारतीय रेलवे संख्या १६६ साल पहले बहुत ही छोटे से स्तर पर शुरू हुई थी, आज यह दुनिया की पहली पांच बड़ी संस्थाओं में से एक हो चुकी है।

❋ टेलीफोन के आविष्कारक ग्राहम बेल ने अपनी मां और पत्नी को कभी टेलीफोन नहीं किया, क्योंकी दोनों ही बहरे थे।

❋ अमेरिका १८ प्रतिशत आय ट्रांसपोर्ट पर निवेश करते हैं, वहीं अमेरिकन बच्चे प्रति वर्ष आधे बिलियन से ज्यादा डॉलर चुइंगम पर खर्च करते हैं।

❋ यूएस में बिकनेवाली पेंसिलों में से ७५ प्रतिशत पीले रंग की होती है।

❋ इलेक्ट्रिक कार का कॉन्सेप्ट नया नहीं है। ओहायो में जेकब रॉशन और चार्ल्स ईजे लैंग ने रॉश एंड लैंग कार कंपनी खड़ी की, जिसने १९०८ में सालाना ५०० इलेक्ट्रिक कार बनानी शुरू कर दी थी। हालांकि १९२८ में फंड की कमी की वजह से यह कंपनी बंद करनी पड़ी। १९०० के मध्य तक इलेक्ट्रिक कार काफी मशहूर थीं।

❋ दक्षिण अफ्रीका के ह्यूगो जानपे ने ८ से २३ जून १९८४ तक लगातार ३६६ घंटे बाल काटने, संवारने, सेट करने का रिकॉर्ड स्थापित किया था।

❋ २० मार्च १९७१ को बिल्टशायर में २ घंटे में ३७९५ बार सुई में धागा पिरोकर ब्रेनज रॉबिन्सन ने आश्चर्यचकित कर दिया था।

❋ क्यों चमकती है आसमान में बिजली- बादलों में पानी के बहुत ही बारीक कणों के रूप में नमी होती है। हवा और पानी के कणों के बीच घर्षण होता है। इस घर्षण से बिजली पैदा होती है। पानी के कण समूह में सकारात्मक और नकारात्मक चार्ज होते हैं। यह आपस में टकराने से बिजली पैदा होती है। बिजली धरती पर किसी को खोजती है, जिसके बीच से यह गुजर सके।

❋ क्यों दिखता है इंद्रधनुष- बारिश के दिनों में बूंदें प्रिज्म का काम करती हैं। नन्ही बूंदों की दो सतह होती हैं। जब सूर्य का प्रकाश बूंद के अंदर प्रवेश करता है तो पहली, सतह से टकराकर वह थोड़ा झुक जाता है। सूर्य के प्रकाश में सात रंग होते हैं। प्रकाश के रंगों के डबल बूंद में प्रवेश करने के बाद अलग हिसाब से सात रंग दिखाई देते हैं।

❋ दुनिया का सबसे ऊंचा पुल- ब्लूआर्ट पुल दुनिया का सबसे ऊंचा पुल है। यह १३२२ फुट ऊंचा और ३६८७ फुट लंबा है यह पुल पेरिस के एफिल टॉवर से भी ऊंचा है। यह पुल मेक्सिको के पहाड़ी ओर सबसे कठिन रास्तों से गुजरता है, जिसका उद्घाटन मेक्सिको को स्पेन से मिली आजादी के २०० साल पूरे होने के मौके पर किया गया था। उम्मीद जतायी जा रही है कि आम लोगों के लिए इस पुल के शुरू होते ही टूरिज्म और बिजनेस के क्षेत्र में काफी प्रगति होगी।

❋ यूनेस्को की विश्व विरासत टर्की का कैपाडोसियन क्षेत्र परीलोक से कम नहीं है। लाखों साल पहले ज्वालामुखी विस्फोट से बनी पहाड़ियों की गुफाओं में कई शहर बसे हैं। इनमें गोरेम के पहाड़ों की चोटियां फेयरी चिमनियों जैसी दिखाई देती हैं। जिनमें केव हाउस बने हैं। ओरताहिसार की पहाड़ियों में रॉक कैसल है। गजर्लित में ऐतिहासिक अंडरग्राउंड

सिटी, सेंट जॉर्जियस चर्च और मोनास्ट्री वैली है।

❋ विज्ञान की परिभाषा में नमक और हीरे की तरह ही बर्फ भी एक तरह का खनिज है। ध्रुवों पर तो यह खनिज बेभाव पड़ा है।

❋ लगभग हर हिम क्रिस्टल के मध्य में धूल का एक कण होता है। यह ज्वालामुखी की राख से लेकर बाह्य अंतरिक्ष से आया कण हो सकता है। बर्फबारी के वक्त बर्फ़ में ९५% हवा होती है।

❋ अंटार्कटिका में बर्फ की कड़ी और चपटी परत ध्वनि को इस तीव्रता के साथ परावर्तित करती है कि वहां कार्य कर चुके कुछ शोधकर्ताओं ने तो एक मील दूर से भी इंसानी आवाज सुनने का दावा किया है। ज्यादा बर्फ देख आदमी पगला भी सकता है। आर्कटिक में कई लोगों में पिब्लोक्टाक के लक्षण देखे गए।

❋ आगरा का किला- आगरा में लाल किले से पहले यहां एक किला था बादलगढ़। उस समय वहां इब्राहिम लोधी का शासन था। १५२६ की लड़ाई में उसे हराकर बाबर यहां आया और ठहरा। बाद में जब अकबर मुगल बादशाह बना, तो उसने आगरा को अपनी राजधानी बनाया। उस समय बादलगढ़ किले की हालत बहुत खराब थी। अकबर ने इस किले को फिर से बनवाया। करीब आठ साल तक यहां काम चला और आगरा का लाल किला १५७३ में बनकर तैयार हुआ।

❋ जे.जे. थॉमसन इस नोबेल विजेता ने इलेक्ट्रोन्स की खोज की थी।

❋ डाक टिकट पर महारानी विक्टोरिया का चित्र पहली बार प्रकाशित किया गया था।

❋ दोपहर या रात के १ बजने पर घड़ी की सुइयों का कोण ३० डिग्री होता है।

❋ २०१४ में ब्राजील में आयोजित किए जानेवाले फीका वर्ल्ड कप का शुभंकर विलुप्ति की कगार पर खड़े आर्मडिल्लो इस जानवर को चुना गया है।

❋ दो गैसों के मध्य दबाव के अंतर को मापने के लिए मैनोमीटर (चरपोर्शीशी) का इस्तेमाल किया जाता है।

❋ दिशासूचक यंत्र- १०५० ईसापूर्व में चीनियों ने कंपस का आविष्कार किया जो प्राकृतिक रूप से चुम्बकीय लौह अयस्क है। मॉडर्न नेविगेशन की बढ़ोतरी को जीपीएस के मुकाबले कंपस से ज्यादा सहायता मिली है।

❋ टेलीफोन- १८७६ में एलेक्जेंडर ग्राहम बेल ने टेलीफोन का आविष्कार किया। उनके टेलीफोन पर पहले शब्द थे मिस्टर वॉटसन, कम हियर, आई वांट यू।

❋ गर्मी के मौसम में भैंसे पानी में रहना पसंद करते है। काला रंग सूर्य से ताप लेकर भैसों के शरीर में गर्मी पहुंचाता है, क्योंकि यह ताप का सुचालक है, अत: गर्मी से बचने के लिए भैसों को तालाब आदि में छोड़ देना पड़ता है, जहां वे आराम से रहना पसंद करती है।

❋ प्रथम रोमन सम्राट अगस्टस (२७ ईसा पूर्व) था।

❋ हतिक्वा इसराईल देश का राष्ट्रगीत है।

❋ भारतीय अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में चोटी की पुरस्कार विजेता फिल्म को स्वर्ण मयूर मिलता है।

❋ टूल्स और टेक्निक - अपशिष्ट जल का मतलब है ऐसा पानी जिसका किसी विशेष हेतू से इस्तेमाल किया गया हो एवं जिसका पुन: उपयोग करना ठीक नहीं होता। जो अपशिष्ट जल हम उत्पन्न करते हैं उसकी मात्रा कम करना, उसका

पुन: उपयोग करना एवं उसे रिसायकल करना यही आज की सबसे बड़ी चुनौती है। फिल्में देखें, केस स्टडीज पढ़ें और अपशिष्ट जल से संबंधित रिसर्च दस्तावेज तथा रिपोर्टर पढ़ें।

खराब जल प्रबंधन के कारण भारत के अनेक सतह के तथा भूगर्भ के जल स्रोत दूषित हो चुके हैं। रासायनिक तथा बैक्टीरिया के कारण होनेवाले प्रदूषण की वजह से पीने के पानी के अनेक स्रोत दूषित होने लगे हैं एवं यह पानी पीने के योग्य नहीं रहा है। कुछ जगहों पर भूगर्भ जल में कुछ मिनरल्स की मात्रा प्राकृतिक रूप से अत्यधिक होता है, तथा नियमित रूप से ऐसा पानी पीना घातक हो सकता है।

❋ स्टेनलेस स्टील क्या है और कैसे बनता है

हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में हम स्टेनलेस स्टील से बनी चीजों का इतना ज्यादा इस्तेमाल करते हैं कि इन्हें गिन पाना आसान नहीं होगा। चाहे खाना पकानेवाले बर्तन हो या लिफ्ट को ऊपर नीचे ले जानेवाली रस्सियां हो। या फिर गैस और पेट्रोलियम को लानेवाले पाइप हो, ऐसी हजारों चीजें है जो स्टील से बनी होती है और उनके बिना हमारा काम ना घर में चल सकता है और ना ही घर के बाहर। समंदर में चलनेवाले जहाज भी स्टील से बने होते हैं और हमारा घर, सड़क पर दौड़नेवाली गाड़ियां, पुल, बांध जैसे हर बड़े निर्माण में स्टील का ही हाथ होता है।

स्टील यानी इस्पात, दो धातुओं से बना एक मिश्रण या मिश्र धातु है और जिन दो धातुओं से मिलकर इस्पात बना होता है, वो हैं लोहा और कार्बन। एकदम खरा लोहा मजबूत नहीं होता है, बल्कि अधिकतर धातुओं की तुलना में बहुत नाजुक होता है इसलिए इस शुद्ध लोहे का इस्तेमाल मजबूती और सख्तीवाले कामों में नहीं किया जा सकता।

कार्बन धातु नहीं है लेकिन जब इस कार्बन का छोटा-सा अंश पिघले हुए लोहे में मिलाया जाता है तो बननेवाला पदार्थ कार्बन से बिलकुल अलग होता है और लोहे से कहीं ज्यादा मजबूत भी होता है जिसे स्टील कहते हैं।

इसका अर्थ ये है कि स्टील एक ऐसा मिश्रण है जिसमें अधिकांश मात्रा लोहे की है और ०.२ प्रतिशत से २.१४ प्रतिशत तक कार्बन मौजूद है। कार्बन के अलावा, जरूरत के अनुसार इसमें मैंगनीज, क्रोमियम, वैनेडियम और टंगस्टन भी मिलाये जाते हैं और ये सभी पदार्थ मिलकर इस मिश्र धातु को न केवल कठोरता प्रदान करते हैं, बल्कि उसे मजबूत और टिकाऊ भी बनाते हैं। लोहे में आवश्यक मात्रा में मिलायी गई ये धातुएं लोहे को कठोर बनाती है। लोहे में जितना ज्यादा कार्बन मिलाया जाता है, स्टील उतना ही कठोर बनता जाता है।

ऐसा स्टील जिसमें जंग ना लगे, उसे स्टेनलेस स्टील कहा जाता है। ये स्टील का ऐसा प्रकार है जो हवा, आर्गेनिक और इन-ऑर्गेनिक एसि से भी खराब नही होता है। साधारण स्टील की तुलना में स्टेनलेस स्टील ज्यादा ताप सह सकता है। इसके लिए स्टील में क्रोमियम मिलाया जाता है।

स्टेनलेस स्टील बनाने के लिए स्टील में १५-२० प्रतिशत क्रोमियम और ८-१० प्रतिशत निकेल मिलाया जाता है। कई बार लोहे में ताम्बा, कोबाल्ट, टाइटेनियम, गंधक और नाइट्रोजन मिलाकर भी स्टेनलेस स्टील बनाया जाता है।

❋ म्युजिक सुनने से तनाव कम होता है।

❋ गिनिज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड की पुस्तक एक ऐसी पुस्तक है जो सबसे ज्यादा बिकती है। इसमें साल के सभी कीर्तिमानों को दर्ज किया जाता है।

❋ गर्मियों में विटामिन बी लेने से मच्छर दूर रहते हैं।

❋ ९० प्रतिशत लोगों का दिमाग यह सोचता रहता है कि हम कुछ पल के लिए बचपन की ओर चले जाएं।

❋ अगर आपके शरीर का कोई हिस्सा जल जाये तो उस पर टूथपेस्ट लगाएं।

❋ अगर आपके हाथों में फिश की स्मेल आ रही है तो टूथपेस्ट से हाथ धो लें।

❋ ठंडे पानी से नहाने से त्वचा अच्छी रहती है और तनाव दूर होता है।

❋ दिन की बजाय हम रात को आसानी से रो सकते हैं।

❋ यह सच है कि जिस तरह के आप गाने सुनते हैं उस तरह ही दुनिया को देखने लग जाते हैं।

❋ जब आदमी ज्यादा परेशान होता है तो वह अपने नाखून चबाने लगता है।

❋ दुनिया भर में इस वक्त ९ देशों के पास करीब १६३०० परमाणु बम हैं। परमाणु निशस्त्रीकरण की मांग के बावजूद यह संख्या कम नहीं हो नही है।

रूस- स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट के मुताबिक परमाणु हथियारों की संख्या के मामले में रूस सबसे आगे है। १९४९ में पहली बार परमाणु परीक्षण करनेवाले रूस के पास ८००० परमाणु हथियार है।

अमेरिका- १९४५ में पहली बार परमाणु परीक्षण के कुछ ही समय बाद अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा और नागासाकी शहरों पर परमाणु हमला किया। सिप्री के मुताबिक अमेरिका के पास आज भी ७३०० परमाणु बम हैं।

फ्रांस- यूरोप में सबसे ज्यादा परमाणु हथियार फ्रांस के पास हैं। उसके एटम बमों की संख्या ३०० बताई जाती है। परमाणु बम बनाने की तकनीक तक फ्रांस १९६० में पहुंचा।

चीन- एशिया में आर्थिक महाशक्ति और दुनिया की सबसे बड़ी थल सेनावाले चीन की असली सैन्य ताकत के बारे में बहुत पुख्ता जानकारी नहीं है। लेकिन अनुमान है कि चीन के पास २५० परमाणु बम हैं। चीन ने १९६४ में पहला परमाणु परीक्षण किया।

ब्रिटेन- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य ब्रिटेन ने पहला परमाणु परीक्षण १९५२ में किया। अमेरिका के करीबी सहयोगी ब्रिटेन के पास २२५ परमाणु हथियार हैं।

पाकिस्तान- अपने पड़ोसी भारत से तीन बार जंग लड़ चुके पाकिस्तान के पास १००-१२० परमाणु हथियार हैं। १९९८ में परमाणु बम विकसित करने के बाद से भारत और पाकिस्तान के बीच कोई युद्ध नहीं हुआ है। अगर इन दोनों पड़ोसियों के बीच लड़ाई हुई तो वह परमाणु युद्ध में बदल सकती है।

भारत- १९७४ में पहली बार और १९९८ में दूसरी बार परमाणु परीक्षण करनेवाले भारत के पास ९०-११० एटम बम है। चीन और पाकिस्तान के साथ सीमा विवाद के बावजूद भारत ने वादा किया है कि वो पहले परमाणु हमला नहीं करेगा साथ ही भारत का कहना है कि वह परमाणु हथियारविहीन देशों के खिलाफ भी इनका प्रयोग नहीं करेगा।

❋ कैलोरी मीटर से ऊष्मा की मात्रा को मापा जा सकता है। यह यंत्र जलयानों पर सही समय मापने में उपयोग किया जाता है।

❋ चिली में दुनिया का सबसे बड़ा कैमरा बनकर तैयार हो रहा है। ये इतना भीमकाय है कि इसके सामने बड़े-बड़े ट्रक

और क्रेन भी चींटी की तरह नजर आते हैं। चिली में २०१५ से इस पर काम चल रहा है और ऐसी उम्मीद है कि २०२२ तक ये पूरी तरह बनकर तैयार हो जाएगा। इस कैमरे में ३.२ गीगा पिक्सल (३२०० मेगा पिक्सल) का लेंस होगा, जिसकी एक तस्वीर को देखने के लिए १५०० हाई डेफिनिशन की स्क्रीनें लगेंगी।

✻ एक ऐसा हेयर एनालाइजर बनाया गया है, जो बालों की जांच करेगा व स्मार्टफोन पर इससे जुड़ी सभी तरह की जानकारी देगा। इस डिवाइस में इनफ्रारेड और विजिबल लाइट सेंसर लगे हैं जो बालों की जांच करने व बालों के असली रंग का पता लगाने में मदद करते हैं। ये सैंसर्स सभी तरह की जानकारी को वायरलेसली स्मार्टफोन या टैबलेट पर सेंड करते हैं जिसके बाद स्टाइलिस्ट क्लाइंट को उसके बालों से जुड़ी पूरी जानकारी देकर इन्हें ठीक करने के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दे सकता है।

✻ झूठ बोलनेवाला आंखों से आंखें नहीं मिलाता। अपने हाथों को चेहरे, गले, मुंह आदि पर घुमाता है। कभी नाक, कान आदि खुजाता है, परंतु कभी भी खुले हाथों अपने सीने पर हाथ रखता नहीं दिखेगा।

✻ एनिमेशन आर्टिस्ट कुनियो ओकावारा ने एक फोल्डिंग कार बनाया है जो सड़क पर चलते-चलते अपना आकार बदल सकती हैं। इस रोबोट का नाम अर्थ १ होगा।

✻ कम्पास नीडिल यह दिशासूचक यंत्र है। इसके द्वारा किसी स्थान पर दिशाओं का पता पड़ जाता है।

✻ गाय एकमात्र ऐसा प्राणी है जो ऑक्सीजन ग्रहण करता है और ऑक्सीजन ही छोड़ता है, जबकि मनुष्य सहित सभी प्राणी ऑक्सीजन लेते और कार्बन डाई ऑक्साइड छोड़ते हैं। पेड़-पौधे इसका ठीक उलटा करते हैं। देसी गाय के एक ग्राम गोबर में कम से कम ३०० करोड़ जीवाणु होते हैं।

✻ कार्डियोग्राफ हृदय गति को मापने में इसका प्रयोग होता है।

✻ हवा में मौजूद ९० प्रतिशत जल वाष्प महासागरों से आती है।

✻ टाइटैनिक जहाज की चिमनियां इतनी बड़ी थी कि इनमें से दो ट्रेनें गुजर सकती थी।

✻ वायरस का प्रभाव- यह वायरस डाटा को प्रभावित करने के साथ ही बहुत तेजी से मेल बॉक्स में फैल जाता है। इस वायरस के साथ टेनिस स्टार अन्ना कुर्निकोवा की फोटो अटैच होती है, जिसके कारण इस वायरस को अन्ना कुर्निकोवा वायरस कहते हैं।

✻ वाराणसी को विश्व का सबसे प्राचीन ऐतिहासिक नगर कहा जाता है, जहां पर मनुष्यों का निवास लगातार रहा हो।

✻ हमारा दिमाग एक मिनट में १००० शब्दों को पढ़ सकता है।

✻ पुर्तगाल में स्थित पैना नेशनल पैलेस सन १८४२ में राजा फर्डिनेंड द्वितीय द्वारा निर्मित एक खूबसूरत शाही महल है। इस महल का निर्माण करीब ४५ वर्षों (१८४० से १८८५) तक चला था। इस महल का निर्माण पूरा होते होते राजा फर्डिनेंड द्वितीय की मौत हो गई थी। यह महल एक राष्ट्रीय स्मारक है इसके अलावा इसे यूनेस्को द्वारा विश्व विरासत स्थल भी घोषित किया गया है। इस खूबसूरत शाही महल को देखने हर साल लाखों पर्यटक आते हैं।

✻ भारत में बायीं ओर, अमेरिका में दायीं ओर चलते हैं, क्यों?

भारत में गाड़ियां सड़क के बायीं ओर चलती हैं और मोटरकार की स्टेयरिंग दायीं ओर होती है, जबकि अमेरिका सहित

अधिकांश पश्चिमी देशों में गाड़ियां सड़क के दायीं ओर चलती हैं और मोटरकार की स्टेयरिंग बायीं ओर होती है।

सड़क पर चलने के नियम की शुरूआत- विश्व के सभी देशों में सड़क पर चलने से संबंधित नियम की शुरुआत अलग-अलग समय में हुई थी, लेकिन पुराने जमाने में विश्व के अधिकांश देशों में सड़क के बायीं ओर ही चलने की परंपरा थी और १८ वीं शताब्दी में पहली बार सड़क के दायीं ओर चलने की परंपरा की शुरुआत हुई थी।

पहली बार सड़क पर दायीं ओर चलने के नियम की शुरुआत- १८ वीं शताब्दी में संयुक्त राज्य अमेरिका में टीमस्टर्स की शुरुआत हुई थी। यह एक बड़ा वैगन होता था, जिसे घोड़ों की एक टीम खींचती थी। इन वैगनों पर ड्राइवरों के लिए बैठने हेतु सीट नहीं होते थे। अत: ड्राइवर सबसे बायें घोड़े पर बैठता था और दायें हाथ से चाबुक के द्वारा सभी घोड़ों को नियंत्रित करता था। लेकिन इसके कारण अमेरिकी लोगों को सड़क पर बायीं ओर चलने के नियम में बदलाव करना पड़ा और वे सड़क पर दायीं ओर चलने के नियम का अनुसरण करने लगे। इस बदलाव की प्रमुख वजह यह थी कि सबसे बायें घोड़े पर बैठकर सड़क पर दायीं ओर चलते हुए पीछे से या आगे से आनेवाले वैगनों पर नजर रखना आसान था।

भारत में सड़क पर बायीं ओर चलने के नियम का कारण- अमेरिका की तरह इंग्लैंड में कभी भी घोड़ों से खींचे जानेवाले वैगनों का इस्तेमाल नहीं किया गया। क्योंकि लंदन और अन्य ब्रिटिश शहरों की संकरी गलियों में इन वैगनों को खींचना आसान नहीं था। यही कारण है कि इंग्लैंड में हमेशा से सड़क पर बायीं ओर चलने के नियम का ही अनुसरण किया जाता है और १७५६ में इंग्लैंड में इसे कानून का रूप दिया गया। जैसे-जैसे ब्रिटिश साम्राज्य का विस्तार हुआ, सड़क पर बायीं ओर चलने से संबंधित नियम का अनुसरण सभी ब्रिटिश शासित देशों में किया जाने लगा।

❋ सिख धर्म के संस्थापक गुरुनानक देव थे।

❋ अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन ने लोकतांत्रिक या डेमोक्रेटिक शासन के लिए सरकार जनता की, जनता द्वारा, जनता के लिए कहा है।

❋ जय जवान, जय किसान का नारा भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने दिया था।

❋ भारत में सबसे लम्बी सड़क है- जी.टी.रोड (ग्रैंड ट्रंक रोड)।

❋ भारत का सर्वाधिक शिक्षित राज्य है केरल।

❋ इन्कलाब जिन्दाबाद का नारा सर्वप्रथम सरदार भगत सिंह ने दिया था।

❋ माओ-त्से तुंग चीन से सम्बन्धित नेता रहे हैं।

❋ भारतीय फिल्म अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा बिहार राज्य से संबंधित हैं, वे बिहार से संसद के सदस्य भी थे।

❋ आजकल चिया सीड्स का नाम बहुत अधिक सुनने में आ रहा है। यह बीज तुलसी की प्रजाति के बहुत ही छोटे आकार के होते हैं। तुलसी के बीज सब्जा के बीज के नाम से जाने जाते हैं, पर चिया सीड्स अलग होते हैं। यह दो तरह के मिलते हैं- एक तो काले रंग के, दूसरे सफेद और ग्रे कलर मिक्स, पर दोनों ही तरह के बीज पोषक तत्वों के शानदार स्रोत हैं। विदेशों में तो इनका सेवन लंबे समय से हो रहा है। चिया सीड्स में प्रोटीन, फाइबर, कैल्शियम, मैग्नेशियम, फास्फोरस प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। जिंक, पोटेशियम, विटामिन बी-१, बी-२ और बी-३ भी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।

चिया सीड्स में ओमेगा ३ फैटी एसिड होते हैं जो हृदय रोग, अर्थराइटिस तथा कोलेस्ट्रॉल के लिए अच्छा है क्योंकि इसमें भरपूर कैल्शियम होता है। ये अपने वजन से दसगुना पानी सोख लेते हैं अत: कब्ज के लिए ये बेहतरीन समाधान है। शरीर में चयापचय प्रणाली को संतुलित रखने, भूख शांत करने, पानी की मात्रा शरीर में बनाए रखने व चर्बी या वसा को कम करने के लिए लाभकारी होते हैं। इनका सेवन करने से खून में शक्कर के स्तर को संतुलित रखा जा सकता है। इनका प्रयोग- चिया बीज को किसी भी गरम खाद्य पदार्थ में नहीं मिलाना चाहिए। दो-तीन घंटे पानी में भिगोने के बाद इन्हें नारियल पानी, स्मूदी, दही, फल, शेक आदि में डाला जा सकता है। इसके अलावा पानी में थोड़ी देर भिगोकर ऐसे ही पी लीजिए। जो लोग नियमित रूप से जिम जाते हैं वे दो से तीन बड़े चम्मच चिया सीड्स ले सकते हैं और सामान्य रूप से एक बड़ा चम्मच प्रतिदिन लें।

❋ दरियाई घोड़े की चमड़ी से एक गुलाबी रंग का तरल पदार्थ रिसता है जिसके कारण तेज धूप में भी उसकी चमड़ी जलती नहीं। यह तरल पदार्थ अगर लोगों के शरीर पर लगाया जाए तो यह एक अच्छे सन-स्क्रीन लोशन में यानी धूप से सुरक्षा करनेवाली क्रीम का काम कर सकता है।

❋ यह मंदिर ७ दिन पहले ही देता है बारिश होने की सूचना

भारत देश एक ऐसा देश है जो आश्चर्यों से भरा हुआ है। इस देश के हर राज्य के हर शहर के कोने-कोने में कोई न कोई अद्‌भुत जगह मौजूद है। ऐसी ही एक जगह है उत्तर प्रदेश के कानपुर जनपद में स्थित भगवान जगन्नाथ का मंदिर जो की अपनी एक अनोखी विशेषता के कारण प्रसिद्ध है। इस मंदिर की विशेषता यह है कि यह मंदिर बारिश होने की सूचना ७ दिन पहले ही दे देता है।

यह मंदिर भगवान जगन्नाथ का मंदिर है। यह मंदिर कानपुर जनपद के भीतरगांव विकासखंड मुख्यालय से तीन किलोमीटर पर बेंहटा गांव में स्थित है। इस मंदिर की खासियत यह है कि बरसात से ७ दिन पहले इसकी छत से बारिश की कुछ बूंदे अपने आप ही टपकने लगती हैं।

तमाम सर्वेक्षणों के बाद भी मंदिर के निर्माण तथा रहस्य का सही समय पुरातत्व वैज्ञानिक पता नहीं लगा सके। मंदिर का अंतिम जीर्णोद्धार ११ वीं सदी में हुआ था। उसके पहले कब और कितने जीर्णोद्धार हुए या इसका निर्माण किसने कराया जैसी जानकारियां आज भी अबूझ पहेली बनी हुई हैं, लेकिन बारिश की जानकारी पहले से लग जाने से किसानों को जरूर सहायता मिलती है। इस मंदिर में भगवान जगन्नाथ, बलदाऊ और बहन सुभद्रा की काले चिकने पत्थर की मूर्तियां स्थापित हैं। वहीं सूर्य और पद्मनाभ भगवान की भी मूर्तियां हैं। मंदिर की दीवारें १४ फीट मोटी हैं। वर्तमान में मंदिर पुरातत्व विभाग के अधीन है। मंदिर से वैसी ही रथ यात्रा निकलती है जैसी पुरी उड़ीसा के जगन्नाथ मंदिर से निकलती है।

मौसमी बारिश के समय मानसून आने के एक सप्ताह पूर्व ही मंदिर के गर्भ ग्रह के छत में लगे मानसूनी पत्थर से उसी घनत्वाकार की बूंदें टपकने लगती हैं, जिस तरह की बरसात होने वाली होती है। जैसे ही बारिश शुरू होती है वैसे ही पत्थर सूख जाता है।

हालांकि मंदिर का आकार बौद्ध मठ जैसा है। जिसके कारण कुछ लोगों की मान्यता है कि इसको सम्राट अशोक ने बनवाया होगा, परन्तु मंदिर के बाहर बने मोर और चक्र की आकृति से कुछ लोग इसको सम्राट हर्षवर्धन से जोड़ कर देखते हैं।

✻ लोगों के चेहरे याद कैसे रह जाते हैं - कुछ लोग अपने जीवन में पिछले लगभग १० साल में मिले हुए सभी लोगों को काफी अच्छी तरह से याद रख पाते हैं। वैज्ञानिकों ने दिमाग के इस गुण का पता लगाने की कोशिश की है।

कुछ लोगों के चेहरे इतने सालों बाद भी इसलिए याद रह जाते हैं क्योंकि ये भी हमारे दिमाग में पाए जानेवाले व्हाइट मैटर पर ही निर्भर करता है। इसके बाद वैज्ञानिक मेमोरी के पीछे काम करनेवाले तंत्र को समझना चाहते थे कि क्या इस तरह का गुण पाया जाना सिर्फ मस्तिष्क की विभिन्न संरचनाओं के कारण ही होता है। इस घटना को कभी-कभी हाइपर थाइमेशिया कहा जाता है जिसमें कि यूसीआई के शोधकर्ताओं ने ५०० से ज्यादा लोगों का मूल्यांकन करने के बाद बताया कि इन लोगों की किसी को याद रखने की मेमोरी काफी ज्यादा होती है।

✻ लाल रक्त कणिका का जीवनकाल १२० दिन होता है।

✻ इन्सान के अलावा कुत्ता ही ऐसा जीव है जो आंखें देखकर इंसान के हाव-भाव पहचान लेता है। अगर आपको ये झूठ लगता है तो एक बार अपने पालतू कुत्ते को आंखों से डराकर जरूर देखे और उसके एक्सप्रेशन नोट करे आपको खुद पता चल जाएगा।

✻ भारत में बननेवाली सबसे पहली फिल्म राजा हरिश्चंद्र है।

✻ चितरंजन दास को देशबंधु के नाम से जाना जाता है।

✻ इंसान सोता क्यों है

मस्तिष्क नींद के दौरान सिकुड़ता है, लेकिन इसमें कोई नुकसान नहीं होता है। वैज्ञानिकों ने समझाया कि नींद ने मस्तिष्क के संक्रमण के लिए समय प्रदान किया है। जो न्यूरॉन कनेक्शन और विचारों के निर्माण के लिए जिम्मेदार हैं। आराम करने के लिए हालांकि इस प्रक्रिया में उन्हें लगभग २० प्रतिशत तक कम कर दिया जाएगा। इस प्रक्रिया को सिंटैप्टिक होमोस्टेसिस कहा जाता है, जिससे आराम करने और अगले दिन के लिए तैयार होने का समय मिलता है।

नींद उन्हें मजबूत बनाने और नये इनपुट प्राप्त करने के लिए तैयार करने में मदद करने के लिए सिद्ध किया गया था। दिमाग के इस सिकुड़ने की प्रक्रिया के बिना, गुण सूत्रीय प्रभाव को खत्म कर देगा। यह क्रिया नींद में सबसे अधिक काम करती है।

जानवरों के दिमाग भी सिकुड़ते हैं, जब वे सोते हैं और उचित आराम करने से पहले उन्हें ट्रिगर करने से दिमाग पर गहरा प्रभाव पड़ता है। नींद के दौरान गुणसूत्रीय प्रभाव शुरू होता है। सोते समय, शरीर मस्तिष्क गतिविधि को कम करके लाभ लेता है। उसीन्ह जो एक प्रकार का इलेक्ट्रॉन माइक्रोस्कोप है जिससे चूहों के नींद की जांच की गई। कुछ घंटों की नींद के बाद दिमाग सिकुड़ता है। इस धारणा का समर्थन करता है कि यादों और सीखने के लिए नींद का कार्य आवश्यक है।

✻ भारत में सीमेंट उत्पादन में अग्रणी राज्य राजस्थान है।

✻ काली मिट्टी कपास की खेती के लिए सर्वाधिक उपयोगी होती है। काली मिट्टी जैव पदार्थों से भरपूर होती है। काली मिट्टी में कृषि के लिए सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। भारत में काली कपासी मिट्टी को रेगुड़ के नाम से जाना जाता है।

✻ गेहूं की अच्छी खेती के लिए मध्यम ताप और मध्यम वर्षा आवश्यक है।

✻ भारत और ग्रीनविच के मानक समय में ५ घंटा ३० मिनट का अंतर है।

✻ ठंड में मुंह से भाप क्यों निकलती है

ठंड का मौसम अपने साथ ढेरों रोमांचक चीजें लेकर आता है जैसे कोहरे वाली सुबह, ठिठुरती शामें और स्वादिष्ट भोजन का जायका। ठंड में मुंह से भाप निकलना।

सांस लेने की क्रिया के दौरान हमारे शरीर में कार्बन डाईऑक्साइड और पानी बनते हैं। हमारे फेफड़ों द्वारा इस पानी का वाष्पीकरण करके, जलवाष्प के रूप में मुंह या नाक से बाहर निकाल दिया जाता है। सांस लेने और पाचन की क्रिया के दौरान भी पानी बनता है और जो पानी हमारे द्वारा हर दिन पिया जाता है उसे भी मूत्र, पसीने और वाष्पीकरण द्वारा बाहर निकाल दिया जाता है।

ठंड के दिनों में शरीर से बाहर यानी वायुमंडल का तापमान काफी कम होता है। ऐसे में जब ये जलवाष्प सांस के साथ बाहर आती है तो तुरंत संघनित होकर पानी की छोटी-छोटी बूंदों के बादल बन जाते हैं और धुआं सा दिखाई देने लगता है जिसे हम मुंह से भाप निकलना कहते हैं।

गर्मियों में शरीर से बाहर यानी वायुमंडल का तापमान बहुत ज्यादा होता है इसलिए ये जलवाष्प बाहर आने पर संघनित नहीं हो पाती और वाष्पीकरण की क्रिया तेजी से होती है जिसके कारण गर्मियों में मुंह से भाप निकलती हुई नहीं दिखाई देती।

✻ ५० किलो के आदमी को उड़ाने के लिए ३५७१ हिलियम गुब्बारों की जरूरत पड़ेगी।

✻ ऐसा कहा जाता है कि धरती के केंद्र का तापमान सूर्य से भी ज्यादा गर्म है, जो लगभग ६००० सेल्सियस है।

✻ यदि आपके पेट का एसिड आपकी त्वचा पर गिर जाए तो इसमें गड्ढा हो जाएगा।

✻ अगर आप ध्रुवीय भालू का लीवर खा लेंगे तो मर जाएंगे क्योंकि इंसान इतना ज्यादा विटामिन ए नहीं पचा सकता।

✻ चीन में हर ५ दिन में एक नई गगनचुंबी इमारत खड़ी कर दी जाती है।

✻ कनाडा के हडसन बे में आप सिर्फ नाम मात्र का गुरुत्व बल महसूस करते हैं।

✻ नालंदा विश्वविद्यालय, बिहार- नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्त वंश के शासक कुमारगुप्त ने की। स्थापना के बाद इसे सभी शासक वंशों का समर्थन भी मिलता गया। महान शासक हर्षवर्धन ने भी इस विश्वविद्यालय के लिए दान दिया। नालंदा विश्वविद्यालय के मठों का निर्माण प्राचीन कुषाण वास्तुशैली से हुआ था। यह किसी आंगन के चारों ओर लगे कक्षों की पंक्ति के समान दिखाई देते थे। सम्राट अशोक तथा हर्षवर्धन ने यहां सबसे ज्यादा मठों, विहार तथा मंदिरों का निर्माण करवाया। इस प्रकार यह बारहवीं शताब्दी तक सफलतापूर्वक संचालित होता रहा।

✻ छत्रपति शिवाजी टर्मिनस मुंबई- छत्रपति शिवाजी टर्मिनस भारत की आर्थिक राजधानी मुंबई का एक ऐतिहासिक रेलवे स्टेशन है, जो मध्य रेलवे, का मुख्यालय भी है। छत्रपति शिवाजी टर्मिनस को पहले विक्टोरिया टर्मिनस के नाम से जाना जाता था। छत्रपति शिवाजी टर्मिनस अपने लघु नाम वी.टी., या सी.एस.टी . से अधिक प्रचलित है। यह भारत के व्यस्ततम स्टेशनों में से एक है। यह स्टेशन ताजमहल के बाद भारत का सर्वाधिक छायाचित्रित स्मारक है। २ जुलाई, को इस स्टेशन को यूनेस्को की विश्व धरोहर समिति द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित किया गया।

✻ **इग्लू और एस्किमो-** इग्लू में नहीं रहते पेंग्विन - इग्लू में पेंग्विन नहीं, बल्कि इंसान रहते हैं और उन्हें एस्किमो कहा जाता है। वे खासतौर पर पृथ्वी के उत्तरी हिस्से यानी आर्कटिक क्षेत्र में पाए जाते हैं, जहां के मूल निवासियों को इनुइट कहा जाता है। पहली बार इग्लू को इनुइट लोगों ने ही बनाया था। बाद में दूसरी जगह के एस्किमो ने इग्लू बनाना शुरू किया।

एस्किमो गर्मियों के लिए अलग घर बनाते हैं और ठंड वाले घर को इग्लू कहते हैं। इग्लू का मतलब होता है बर्फ का घर। चूंकि ठंड के दिनों में वहां का तापमान ५० डिग्री सेल्सियस से भी नीचे चला जाता है, इसलिए ठंड से बचने के लिए एस्किमो इग्लू का निर्माण करते हैं। इग्लू बनाने के लिए वे ठोस बर्फ के टुकड़ों को आपस में जोड़ देते हैं।

एस्किमो- यह शब्द अमेरिका का एक मूल शब्द है, जिसका मतलब होता है, कच्चा मांस खानेवाला व्यक्ति। यह नाम उन्हें १६वीं शताब्दी में दिया गया था। अलग-अलग जगहों के एस्किमो की बोली और भाषा भी अलग-अलग होती है।

एस्किमो आर्कटिक क्षेत्र के अलावा ग्रीनलैंड, कनाडा, पूर्वी रूस के उप आर्कटिक क्षेत्रों में भी पाए जाते हैं। वर्तमान में लगभग १,३५,००० लोग इस समुदाय से आते हैं। पारंपरिक तौर पर एस्किमो को ठंड से घिरे वातावरण में रहने की आदत होती है। बर्फ की वजह से वहां पेड़ नहीं उगा पाते, इसलिए उन्हें मांस खाकर जिंदा रहना पड़ता है। वे सील, व्हेल मछली का मांस खाते हैं।

इग्लू के अंदर किसी व्यक्ति का दम न घुटे, इसलिए इग्लू की छत पर एक छेद भी किया जाता है। कई बार इग्लू को बाहर से कंबलों से भी ढक दिया जाता है, ताकि अंदर भी गर्मी बरकरार रहे। इग्लू तूफान आने पर टूटे नहीं, इसलिए उसे गुबंद का आकार दिया जाता है, कई बार सील या कैरिबू (वहां का हिरण) के चमड़े से खिड़की भी बनाई जाती है। इग्लू को बनाने में कम से कम डेढ़ घंटे का वक्त लगता है।

इग्लू कैसे रहता है अंदर से गरम- जिस तरह रजाई या स्वेटर हमारे शरीर की गर्मी को अंदर रोककर हमें गरम रखते हैं, उसी तरह बर्फ के घर भी अंदर रह रहे लोगों के शरीर से उत्पन्न गर्मी को बाहर नहीं जाने देते। यही वजह है कि ठंड से बचने के लिए एस्किमो इग्लू बनाते हैं।

इग्लू वाले होटल- कई देशों में इग्लू जैसे होटल बनाए जाते हैं। लोग इनमें ठहरकर इग्लू में रहने का अनुभव लेते हैं। लोग रात को इन इग्लू की खिड़कियों से बाहर का मनोरम दृश्य देख सकते हैं। ये देश हैं स्वीडन, फिनलैंड, नॉर्वे, ऑस्ट्रिया आदि।

छोटे आकार के इग्लू- एस्किमो जब समुद्री जीवों का शिकार करने समुद्र के पास जाते है।, तो वे पास में ही एक अस्थाई इग्लू का निर्माण करते हैं, जिसमें वे दो या तीन दिन तक रहते हैं। शिकार के बाद वे उसे तोड़ देते हैं।

मध्यम आकार के इग्लू- इस तरह के इग्लू में केवल एक बड़ा कमरा होता है, जिसमें दो परिवार आराम से रह सकते हैं। आमतौर पर ऐसे इग्लू के आसपास कई और इग्लू भी बनाए जाते हैं, जिससे वह क्षेत्र बिल्कुल गांव की तरह दिखता है।

बड़े आकार के इग्लू- इस तरह के इग्लू जोड़े में बनाए जाते हैं, जिनमें से एक इग्लू स्थाई होता है और दूसरा अस्थाई। पांच कमरेवाले स्थाई इग्लू में २० लोग रह सकते हैं। ये आपस में सुरंग से जुड़े होते हैं। अस्थाई इग्लू खास मौकों के लिए तैयार किए जाते हैं, जैसे कि पारंपरिक आयोजन या सामूहिक नृत्यों के लिए।

❊ घड़ियों का रोचक संसार- मनुष्य को समय की जानकारी के लिए प्राय: घड़ी की आवश्यकता पड़ती है। यह घड़ियां भी विचित्र प्रकार की होती हैं। अनेक घड़ियां तो अपनी किस्म, गुण व विशेषताओं के कारण संसार भर में प्रसिद्ध हो जाती हैं। विश्व की सबसे ऊंची ४ मुंहवाली विलियम गर्ग बेंक बुकलिन न्यूयार्क में है। यह न्यूयार्क में सड़क की सतह से ४३० फुट ऊंचाई पर लगी हुई है।

सबसे लंबी घड़ी लंदन में १६८० में ११ लाख के मूल्य में बनी थी।

सबसे भारी घड़ी सेंस्टमिंस्टर पैलेस की ब्लाक टॉवर है। इसे एडवर्ड प्रथम ने लगवाया था। इसके ४ डायल हैं जो प्रत्येक दो फुट ६ इंच व्यास के हैं। यह घड़ी १८५६ में ७ लाख में बनी थी। इस घड़ी का घंटा ही १५ टन का था।

विश्व की विशालतम घड़ी डेनमार्क में है, जिसका उद्घाटन वहां के सम्राट ने २५ दिसंबर १९५५ में किया था। वह घड़ी विश्व की सबसे अधिक ठीक समय देनेवाले घड़ी मानी गई है। इसे घड़ी निर्माता व खगोलविद जेम्स आल्सन ने १० वर्षों में तैयार किया था। इसमें १४००० पुर्जे ५७०००० ढंग से कार्य करते हैं। निचले भाग के बीच में कैलेंडर है तथा अन्य भाग नक्षत्रों के बारे में बताते हैं।

❊ जाने परमाणु घड़ी के बारे में - परमाणु घड़ियों का विकास अणुओं द्वारा पैदा होनेवाली स्वाभाविक आवृत्तियों को मापने के आधार पर हुआ है। इन घड़ियों की विशेषता यह है कि ये हजारों साल तक सही समय देती हैं, न सुस्त होती है, न तेज। जबकि अन्य घड़ियां इस कसौटी पर खरी नहीं उतरती हैं।

प्रत्येक परमाणु की एक स्वाभाविक आवृत्ति होती हैं जिसे गिनकर समय को मापा जाता है। ज्यादातर परमाणु घड़ियों में १४०० से ४०००० मैगाहर्टस् की आवृत्तियों को प्रयोग में लाया जाता है। अब समय का अंतर्राष्ट्रीय मानक, परमाणु सेकेंड माना गया है। इस मानक में सेकेंड वह समय है जिसमें सीजिय १३३ का परमाणु ९१९२६३१७७० कंपन करता है। सर्वप्रथम अमोनिया के अणुओं की आवृत्ति के आधार पर यह बनाई गई थी। सन १४४९ में नेशनल ब्यूरो ऑफ स्टैंडर्ड्स, वाशिंग्टन डी. सी. द्वारा प्रथम परमाणु घड़ी बनाई गई थी। बाद में सीजियम धातु से निकलने वाली परमाणुओं की किरणों से नेशनल फिजिकल लेबोरेटरी इंग्लैंड द्वारा घड़ी विकसित की गई। इसके बाद इससे भी बेहतर घड़ियों का विकास किया गया जिसमें अमोनिया मेसर, हाइड्रोजन मेसर और रुबीडियम गैस सेल की घड़ियां शामिल हैं। परमाणु घड़ियों को समय मानक के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। पोलोअल्टो, कैलिफोर्निया, अमेरिका के हियूलेटर पैकंड ने परमाणु घड़ी का निर्माण किया और उसे १९९९१ में व्यावसायिक उपयोग के लिए प्रस्तुत किया। यह परमाणु घड़ी विश्व की सबसे परिशुद्ध घड़ी है। घड़ी का नाम एचपी-५०७१ ए है, इसमें सीजियम- २ तकनीकी के साथ प्राथमिक आवृत्ति वाले मानक का संयोजन हुआ है। इसका आकार डेस्कटॉप कम्प्यूटर जितना है। यह परमाणु घड़ी इतना सही समय बताती है कि इसमें १.६ मिलियम वर्षों में मात्र एक सेकेंड तक गड़बड़ी होने की संभावना रहती है।

❊ पश्चिमी देशों में गर्मियों के महीनों में घड़ियां आगे क्यों की जाती हैं - पश्चिमी देशों में गर्मी के महीनों में घड़ी की सुईयों को आगे बढ़ा दिया जाता है। इसकी वजह यह है कि उत्तरी गोलार्ध में गर्मियों में सूरज बहुत जल्दी उगता है और देर से डूबता है। घड़ियों को आगे कर देने से यह फायदा होता है कि इससे लोग ज्यादा समय तक काम कर सकते हैं और दिन की रोशनी का ज्यादा इस्तेमाल किया जा सकता है। इसका सुझाव सबसे पहले १७८४ में सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक बैंजमिन फ्रैंकलिन ने दिया था। फिर वर्ष १९०७ में विलियम वैलैट नाम के एक अंग्रेज ने वसंत से लेकर पतझड़ तक घड़ियों को ८० मिनट आगे करने का सुझाव दिया। लेकिन ब्रिटेन की संसद ने इसे ठुकरा दिया।

आखिरकार वर्ष १९१६ में एक अधिनियम पारित किया गया, जिसके अनुसार वसंत में घड़ियों को एक घंटा आगे करने और फिर पतझड़ में उन्हें ग्रीनविच मान समय पर लौटा देना तय हुआ। यूरोपीय संसद के एक अधिनियम के अनुसार मार्च महीने के अंतिम रविवार से लेकर अक्तूबर के अंतिम रविवार तक ग्रीष्मकालीन समय लागू रहता है। इस प्रयोग को

प्रकृति के साथ सामंजस्य बिठाने का बेहतरीन उदाहरण माना जाता है।

❋ पूर्ण सूर्यग्रहण ४६० सेकेंड से अधिक समय तक नहीं हो सकता।

❋ मानव हड्डियों व दातों में कैल्शियम पाया जाता है।

❋ कृत्रिम सुगन्धित पदार्थ बनाने में एथिल एसीटेट का प्रयोग होता है।

❋ मनुष्य के शरीर में बाल्यावस्था में लगभग ७५ प्रतिशत एवं प्रौढ़ावस्था में लगभग ६० प्रतिशत जल होता है। इसमें १५ से २० प्रतिशत की कमी भी मृत्यु का कारण बन सकती है।

❋ हमारा मस्तिष्क जाग्रत अवस्था में उतना क्रियाशील नहीं होता, जितना सपने देखते समय होता है।

❋ एक रात में सोते समय सामान्यत: व्यक्ति २४ से ४० बार अपनी करवटें बदला करता है। ५-६ बार को छोड़कर उसे इसका पता भी नहीं होता। रात के समय जो लोग ठीक से नहीं सो पाते या फिर जिन्हें नींद न आने की बीमारी हो, वे सामान्यत: ७२ बार करवटें बदल कर रात बिताते हैं। जो स्वस्थ व्यक्ति से दोगुनी होती है।

❋ कोई भी व्यक्ति सोते समय खर्राटे लेना और सपने देखना, दोनों काम एक साथ नहीं कर सकता। जब खर्राटे आ रहे होंगे, तो सपने नहीं। यदि वह सपनों में खोया होगा तो खर्राटे नहीं लेगा।

❋ यदि कोई व्यक्ति पूरी रात सोने के बाद सुबह अपनी लंबाई नापे, तो उसकी लंबाई चौबीस घंटों में सर्वाधिक होगी।

❋ रात को सोते समय शरीर की जितनी लंबाई होगी, सुबह यह पौन इंच के करीब अधिक होगी।

❋ मानव शरीर की लंबाई का कम होना सदा अस्थायी होता है।

❋ हमारे शरीर में मौजूद फेफड़ों के भीतर सभी छोटी-छोटी रक्त वाहिनियों को आपस में जोड़कर रस्सी की तरह लंबा जोड़ दिया जाए तो इसकी कुल लंबाई १९१० किलोमीटर होगी।

❋ इस खदान में समा जाते हैं हेलिकॉप्टर - पूर्वी साइबेरिया में हीरे की एक ऐसी खदान है जिसे रहस्यमय बताया जाता है। मिरनी माइन नाम का यह खदान अब बंद पड़ा है। इसकी जद में आनेवाले पूरे इलाके में कोई भी हवाई जहाज या हेलिकॉप्टर नहीं निकलता, क्योंकि वह इसमें समा जाता है।

सर्दियों में यहां तापमान इतना गिर जाता है कि गाड़ियों में तेल भी जम जाता है और टायर फट जाते हैं। इस खदान को १३ जून, १९५५ को सोवियत भूवैज्ञानिकों की एक टीम ने खोजा था। इसे खोजने के लिए सोवियत जियोलॉजिस्ट यूवी खबरदीन को १९५७ में लेनिन प्राइज दिया गया था। इस माइन के विकास का कार्य १९५७ में शुरू किया गया। यह खदान १७२२ फीट गहरी और ३९०० फीट चौड़ी है। यह विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मानव निर्मित होल है। इसमें हवा का दबाव काफी तेज होता है, जिसके चलते कई बार इसके ऊपर से जानेवाले हेलिकॉप्टर इसमें समा चुके हैं। इसे खोदने के लिए कर्मचारियों ने जेट इंजन और डायनामाइट्स का इस्तेमाल किया था।

इसका क्षेत्र इतना बड़ा था कि रात के समय इसे ढंक दिया जाता था, ताकि मशीनें खराब ना हो जाएं। इस खदान की खोज के बाद रूस हीरे का सबसे ज्यादा उत्पादन करनेवाला दुनिया का तीसरा देश बन गया था। इस खदान से हर साल १० मिलियन कैरेट हीरा निकाला जाता था। वर्ष २०११ में इस खदान को पूरी तरह से बंद कर दिया गया है।

❋ असम के गुवाहाटी में रहनेवाले साधु सुखदेव बाबा शांति के सिर के बाल १५ फुट से भी अधिक लम्बे हैं।

❋ अगर मनुष्य की सभी नसों को एक दूसरे से जोड़ दिया जाये तो वे इतनी लंबी हो जायेंगी कि पृथ्वी को दो बार बांधा जा सकता है।

❋ मनुष्य २४ घंटे में २१००० बार सांस लेता है।

❋ एक सामान्य मनुष्य अपनी पूरी जिन्दगी में ३०००० किलोग्राम भोजन खा जाता है।

❋ समुद्री तूफानों के अजब-गजब नाम

समुद्रों और महासागरों में उठनेवाली भीषण तेज हवाएं और चक्रवात, जो कि न सिर्फ हजारों लोगों की जान लेते हैं, बल्कि अरबों की संपत्ति का नुकसान भी करते हैं, समुद्री तूफान के नाम से जानी जाती है। चूंकि अलग-अलग तूफान के कारण भी अलग-अलग होते हैं और इनसे होनेवाली तबाही का स्तर भी अलग-अलग रहता है। हर समुद्री तूफान को अलग-अलग नाम से (कैटरीना, नर्गिस, डॉली, सुनीता, रीटा, विल्मा, डेनिस, मोनिका, क्युटा, हैती, सैंडी आदि) जाना जाता है। मुख्यत: इन तूफानों की पहचान के लिए इन्हें अलग-अलग नाम दिये जाते हैं। एक से ज्यादा बार एक ही हिस्से में कई तूफानी बवंडर उठते हैं और तटीय शहरों, कस्बों में रह रहे लोगों के सामने बड़ी समस्या खड़ी करते हैं। इन तूफानों की सूची या तो विश्व मौसम संगठन की समितियां तैयार करती हैं, या मदद के लिए संबंधित देश का मौसम कार्यालय आगे आता है और ये ही इन तूफानों की सूचियां तैयार करते हैं। इन तूफानों के नामकरण की परंपरा की शुरूआत ऑस्ट्रेलियाई मौसम वैज्ञानिक क्लेमेंट लिडली रॉग ने १९ वीं शताब्दी के अंत में की थी। शुरू में रॉग ने समुद्री तूफानों के नाम राजनेताओं के नाम पर रखना शुरू किया। ये ऐसे राजनेता थे, जो रॉक की नजर में बिल्कुल भ्रष्ट, झूठे और मक्कार थे। रॉग ने इन्हीं भ्रष्ट नेताओं की सूची तैयार की और इनके नाम पर ही समुद्री तूफानों के नाम रख दिये। लेकिन वक्त बदलने के साथ-साथ जैसे-जैसे विज्ञान का विकास होता गया और नये-नये तूफानों के बारे में जानकारी मिलने लगी, इनको नये नाम भी दिये जाने लगे। आज आलम यह है कि दुनियाभर में समुद्री तूफानों के नाम वहां की स्थानीय भाषा के अनुसार रखा जाने लगा है। कुछ साल पहले भारत दक्षिणी भाग में भी एक तूफान आया था, जिससे बड़ी तादात में जान-माल की क्षति हुई थी। पिछले सालों में म्यांमार में एक समुद्री तूफान ने भारी तबाही मचाई थी।

❋ डी.एन.ए. के आकार को डबल हेलिक्स (दोहरी घुमावदार कुंडली) इस नाम से जाना जाता है।

❋ हवा में पाई जानेवाली तीसरी सबसे आम गैस आरगन (करीब १ प्रतिशत) है।

❋ कम्प्यूटर संबंधी सी.पी.यू. का अर्थ सैंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट है।

❋ सांची में कई बौद्ध स्मारक है- सांची भारत के मध्य प्रदेश राज्य के रायसेन जिले में स्थित एक छोटा सा गांव है। यह भोपाल से ४६ कि.मी. पूर्वोत्तर के मध्य भाग में स्थित है। यहां कई बौद्ध स्मारक हैं, जो तीसरी शताब्दी ई. पू से बारहवीं शताब्दी के बीच काल के हैं। यहां के स्तूप प्रेम, शांति, विश्वास और साहस के प्रतीक हैं। सांची का महान स्तूप सम्राट अशोक महान ने तीसरी सदी, ई. पू. में बनवाया था। इसमें एक अर्धगोलाकार ईंट निर्मित ढांचा था, जिसमें भगवान बुद्ध के कुछ अवशेष रखे थे।

इसके शिखर पर स्मारक को दिए गये ऊंचे सम्मान का प्रतीक रूपी एक छत्र था। शुंग सम्राट पुष्यमित्र ने इस स्तूप को तोड़ा था। बाद में उसके पुत्र अग्निमित्र ने इसका पुनर्निर्माण करवाया होगा। शुंग वंश के अंतिम वर्षों में स्तूप का दुगुना

विस्तार पाषाण शिलाओं से किया गया था। इसके गुंबद को चपटा करके, इसके ऊपर तीन छतरियां बनवाई गयी थीं। ये छतरियां एक वर्गाकार मुंडेर के भीतर बनी थीं। इसकी कई मंजिलों सहित शिखर पर धर्म का प्रतीक विधि का चक्र लगा था। इन्हें बाद के सातवाहन वंश द्वारा पूर्ण रूप से निर्मित करवाया गया था। इसके साथ ही भूमि स्तर की पाषाण परिक्रमा और महान स्तूप आधारशिला भी उसी काल का निर्माण हैं। एक मान्यता के अनुसार दानकर्ता, चाहे स्त्री या पुरुष हो, बुद्ध के जीवन से संबंधित कोई भी घटना चुन लेते थे और अपना नाम वहां खुदवा देते थे। कई खास घटनाओं के दोहराने का यही प्रमुख कारण भी था।

* विश्व का सबसे ऊंचा झरना एंजिल (वेनेजु एला) है।
* विश्व का सबसे बड़ा ज्वालामुखी मोनालिया (हवाई द्वीप) है।
* विश्व का सबसे बड़ा रेलवे स्टेशन ग्रांड सेंट्रल टर्मिनल (न्यूयॉर्क सिटी) है।
* विश्व का सबसे बड़ा पार्क वुड वुफेलो नेशनल पार्क (कनाडा) है।
* विश्व की सबसे बड़ी मूंगे की चट्टान ग्रेट बेरियर रीफ (ऑस्ट्रेलिया) है।
* विश्व की सबसे अधिक वर्षा का क्षेत्र मासिनराम (मेघालय) है।
* विश्व का सबसे बड़ा महल ब्रुनेई का शाही महल है।
* जीभ का रंग यदि गुलाबी दिखता है तो वह साफ होती है। यदि उसका रंग सफेद रहता है तो उस पर बैक्टीरिया की महीन परत जमी रहती है।
* सबसे बड़ी कैंची- कैनेडा के कीर सर्जिकल लिमिटेड के मिशेल फिश तथा उनकी टीम ने एक कैंची का निर्माण किया था जो अपनी टिप से लेकर हैंडल तक ५ फुट १० इंच लम्बी थी। इसका नाम विश्व की सर्वाधिक बड़ी कैंची होने का रिकार्ड दर्ज है। इस कैंची का प्रदर्शन २४ अप्रैल २००७ को विक्टोरिया में २० वीं कैनेडियान नेशनल कांफ्रेंस में किया गया था।
* बिजली के बल्ब हम सबके घरों में होते हैं। इन बल्ब में लगी तार टंगस्टन धातु की होती है। इस तार का व्यास काफी पतला होता है। टंगस्टन नामक धातु २८०० डिग्री सेल्सियस तापमान पर पिघल जाता है। यही वजह है कि कई दिनों तक तेजी से जलने के बावजूद यह तार जस की तस होती है। विद्युत बल्ब में इसके अलावा हीलियम, आर्गन, नाइट्रोजन आदि गैसें भरी होती हैं। यह तमाम गैसें निष्क्रिय होती हैं। इस कारण बल्ब में लगा टंगस्टन का तार पिघलता नहीं। जब बल्ब से विद्युत धारा बहने लगती है तब टंगस्टन धातु इस धारा का विरोध करती है। नतीजतन धातु का तार गर्म हो जाता है। उसका तापमान २६०० डिग्री सेल्सियस तक पहुंच जाता है और बल्ब से पूरे परिसर में प्रकाश फैल जाता है। इस दौरान टंगस्टन धातु के अणु तेजी से कंपन पैदा करते हैं। इस दौरान कुछ अणु तेजी से बाहर निकलते हैं। ये तमाम अणु बल्ब के कांच के अंदरूनी हिस्से में जमा हो जाते हैं। इस कारण समय के साथ विद्युत बल्ब पर कालिख चढ़ जाती है। हम बल्ब का जैसे-जैसे इस्तेमाल करते हैं, वैसे-वैसे टंगस्टन की तार पतली होती जाती है और कुछ दिनों बाद टूटकर गिर जाती है। ऐसे में हम कहते हैं कि बल्ब फ्यूज हो गया है। लगभग एक हजार घंटे तक जलने के बाद तार टूटने से बल्ब फ्यूज हो जाता है। घर-घर की जरूरत बन चुके विद्युत बल्ब का आविष्कार अमतेरिकी वैज्ञानिक थॉमस अल्वा एडिसन ने १८७९ में किया था।

❋ कागज के नोट संसार में सबसे पहले चीन में १९० ई में प्रचलित हुए थे।

❋ संवत् लिखा सबसे पुराना सिक्का १२३४ ई का डेनमार्क का था।

❋ धातु का सबसे भारी सिक्का स्वीडन में सन १६४४ ई में निकला था। उसका वजन करीब २१ किलोग्राम था एवं उस समय उसकी कीमत दो गायों की कीमत के बराबर थी।

❋ याक द्वीप पर कुछ पत्थर के सिक्के भी मिले हैं, जो करीब ३.५ मीटर ऊंचे एवं करीब ८० किलोग्राम वजन के हैं।

❋ सर्वाधिक कीमत का नोट संयुक्त राज्य अमेरिका ने निकाला था, जो १० हजार डॉलर का था। सन १९४४ ई. के बाद वैसे नोट फिर कभी नहीं छापे गये।

❋ सबसे छोटा सिक्का सन १७४० ई. में नेपाल में जारी किया गया था, जो केवल २ बाय २ मिलीमीटर का था।

❋ आकार में सबसे बड़ा नोट चीन में सन १३६८ ई. में छपा था। उसका आकार करीब ३३ बाय २३ सेंटीमीटर था।

❋ आकार में सबसे छोटा नोट रोमानिया में सन १९१७ ई. में छापा गया था। उसका आकार करीब ३.८ बाय २.७ सेंटीमीटर था।

❋ सबसे बड़ा समोसा - ब्रिटेन के ब्रेडफोर्ड शहर के ब्रेडफोर्ड कॉलेज में २२ जून २०१२ को दुनिया का सबसे बड़ा समोसा बनाया गया था। इस समोसे का वजन ११०.८ किलोग्राम था। समोसे की लंबाई १३५ से.मी., चौड़ाई ८५ से.मी. और ऊंचाई २९ से.मी. थी। इसे गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में दर्ज किया गया।

❋ भारत का राष्ट्रीय सूत्र (वाक्य) सत्यमेव जयते है।

❋ विश्व का सबसे गरीब देश भूटान है।

❋ एक औसतन लेड की पेंसिल से अगर एक लाइन खीची जाए तो वह ३५ किलोमीटर लंबी होगी जिससे ५०००० अंग्रेजी शब्द लिखे जा सकते हैं।

❋ १३८६ ईसवी में फ्रांस में लोगों द्वारा एक सुअर को एक बच्चे के कत्ल के दोष में फाँसी पर लटका दिया गया था।

❋ दुनिया की एकमात्र तैरती झील भारत में

लोकतक झील उत्तर-पूर्व भारत की सबसे बड़ी साफ पानी की झील है। इसे दुनिया के एकमात्र तैरती हुई झील भी कहा जाता है क्योंकि यहां छोटे-छोटे भूखंड या द्वीप पानी में तैरते हैं। इन द्वीप को फुमदी के नाम से जाना जाता हे। ये फुमदी मिट्टी, पेड़-पौधों और जैविक पदार्थों से मिलकर बनते है और धरती की तरह ही कठोर होते हैं। इन्होंने झील के काफी बड़े भाग को घेरा हुआ है। फुमदी का सबसे बड़ा भाग झील के दक्षिण पूर्व भाग में स्थित है, जो ४० स्क्वायर किलोमीटर तक फैला हुआ है। इस बससे बड़े भाग में दुनिया का सबसे लंबा और एकमात्र तैरता हुआ पार्क भी है जिसका नाम किबुल लामिआयो नेशनल पार्क है।

इस पार्क में दुर्लभ प्रजाति के हिरण भी पाए जाते हैं। इन्हें मणिपुरी भाषा में संगई कहा जाता है। मणिपुर के आर्थिक विकास में अहम योगदान है। इस झील के पानी का उपयोग जलविद्युत परियोजनाओं, सिंचाई और पीने के पानी के लिए किया जाता है। इसके अलावा इस झील के आसपास रहनेवाले मछुआरों की जीविका भी यही हैं। स्थानीय भाषा में इन मछुआरों को फुमशोंग्स कहा जाता है। फुमदी का उपयोग स्थानीय लोग मछली पकड़ने, अपनी झोपड़ी बनाने और अन्य

उपयोग के लिए करते हैं। इन मछुआरों की मछली पालन की कला भी अनोखी है। ये गांववाले मछली पालने के लिए फुमदी का नकली गोल घेरा बनाते हैं। करीबन १ लाख लोगों से ज्यादा इस झील पर आश्रित है।

लोकतक झील मणिपुर की राजधानी इम्फाल से ३९ किलोमीटर दूर स्थित है, जो देश के प्रमुख हिस्सों से सड़क और वायु मार्ग से जुड़ा हुआ है। पर्यटन के लिहाज से झील अनोखी जगह है, जिसमें पर्यटक अलग अलग आकार के फुमदी की सुंदरता देख सकते हैं। यह नजारा दुनिया में और कहीं देखने नहीं मिलेगा। यहां ठहरने के लिए इस झील की एक बड़ी फुमदी में सेंड्रा टूरिस्ट होम भी मौजूद है।

* इंसान के शरीर में करीब चार सौ तरह के जीवाणु रहते हैं।

* छींक की रफ्तार सौ मील प्रतिघंटा तक हो सकती है।

* साठ वर्ष की आयु तक पहुंचने पर अधिकांश लोगों के पचास प्रतिशत स्वाद तंतु समाप्त हो चुके होते हैं।

* चीन के शंघाई शहर में कुछ अस्पताल ऐसे हैं जहां नर्सों को ड्यूटी के समय लिपिस्टक लगानी अनिवार्य है।

* आइसलैंड दुनिया का सबसे पुराना लोकतांत्रिक देश है।

* बुद्धिमान व्यक्तियों के बालों में अधिक जस्ता और तांबा पाया जाता है।

* दिल्ली के सेंट स्टीफन कॉलेज से तीन राष्ट्राध्यक्षों ने शिक्षा प्राप्त की है। भारत के फखरुद्दीन अली अहमद, पाकिस्तान के जिया उल-हक और तंजानिया सलीम-एल-सलीम।

* सियोल छह सौ वर्षों से कोरिया की राजधानी है।

* इंसानी शरीर में नकली हाथ-पैरों का पहला इस्तेमाल सन १५४० में हुआ था। इसी तरह कॉन्टेक्ट लैंसों का पहला इस्तेमाल सन १८८७ में हुआ था।

* एक अनुमान के अनुसार औसत व्यक्ति की प्रत्येक भौंह में ५५० बाल होते हैं।

* इंसान के हाथ की तर्जनी उंगली सभी उंगलियों में से सबसे अधिक संवेदनशील होती है।

* कोलोजियम नामक रोमन एम्फीथिएटर का निर्माण ईसा पूर्व ८० में किया गया था। यहां ५० हजार लोग एक साथ बैठ सकते थे। यहां नृत्य-संगीत समारोह, मृत्युदंड देना व छद्म युद्ध आदि कार्यक्रम भी होते थे। माना जाता है कि सम्राट वेस्पेसियन ने इसका निर्माण अपना खजाना रखने के लिए किया था। वेस्पेसियन के बेटे टाइटस ने इसका निर्माण कार्य पूरा करवाया था।

* एक नैनो सेकेंड एक सेकेंड का एक अरबवां हिस्सा है।

* पांच रातों की आंशिक नींद के बाद शरीर में तीन ड्रिंक का असर उन छह ड्रिंक के बराबर होता है, जो नींद पूरी होने के बाद ली जाती हैं।

* औरतों को पुरुषों के मुकाबले एक घंटे की ज्यादा नींद लेनी चाहिए, ऐसा नहीं होने के कारण ही पुरुषों के मुकाबलें औरते अवसाद की ज्यादा शिकार होती हैं।

* प्राचीन यूनानी मानते थे कि भूमि के नीचे दानवों के लड़ने से भूकंप आते हैं, जबकि प्राचीन काल के जापानी सोचते थे कि जमीन के नीचे कोई विशालकाय मकड़ा है, जिसके हिलने डुलने से भूकंप आते हैं।

✻ यूनान की सरकारी मुद्रा- यह चार हिस्सों में विभक्त थी और प्रत्येक हिस्सा अलग-अलग अधिकारियों के पास रहता था। इसे एक सरकारी मुहर के रूप में ही इस्तेमाल किया जाता था। चारों हिस्से मिलने पर ही कोई दस्तावेज मान्य माना जाता है।

✻ दिल जैसी मुद्रा- मार्टिनिक में एक बार फ्रान्सीसी मुद्रा के बीच में से दिल की शक्ल के टुकड़े काटकर इन्हें छोटी रेजगारी के रूप में प्रयोग किया गया था।

✻ शराबी की मुद्रा - भारत का सम्राट जहांगीर (१५६९-१६२७) शराब का इतना शौकीन था कि उसने सोने की ऐसी मुद्राएं चलाई जिन पर उसे एक शराब का प्याला उठाकर होठों की ओर ले जाते हुए दिखाया गया था।

✻ मृत्यु मुद्रा - १/४ सेंट के बराबर मूल्य की तांबे की एक मुद्रा जो सत्रहवीं शताब्दी में स्वीडन में जहाजों पर सुरक्षित रखी गई। एक ऐसा कानून बनाकर जिसमें केवल एक और चोरी के लिए मौत की सजा निर्धारित की गई थी।

✻ बच्चों के शरीर में ३०० हड्डी होती हैं। जो बड़े होने तक आपस में जुड़कर २०६ हड्डियां रह जाती हैं।

✻ हमारी उंगलियां इतनी संवेदनशील होती हैं कि वे एक माइक्रान के ०.०२ भाग की हलचलों को भी पहचान सकती हैं।

✻ हमारे नेत्रों के देखने की क्षमता एक इंच के ४००० वें भाग से भी कम होती है। एक रेडियन के ०.०००३ हिस्से को भी आंखें देख सकती है।।

✻ एक क्रियाशील मस्तिष्क में ५२ हजार मीटर प्रति सेकेंड की गति से विद्युत संकेत इधर से उधर दौड़ते हैं।

✻ भारत की सबसे लंबी सुरंग पीर पंजाल सुरंग जम्मू कश्मीर राज्य में है।

✻ भारत व बांग्लादेश के बीच विवाद कच्चा तिवु द्वीप और न्यूमूर द्वीपों को लेकर हुआ।

✻ भारत का उत्तर से दक्षिण तक विस्तार ३२१४ किमी है।

✻ भारत के मानक समय और ग्रीनविच समय में साढ़े पांच घंटे का अंतर है।

✻ भारत की स्थल सीमा की लंबाई १५,२०० किमी है।

✻ भू-वैज्ञानिकों के अनुसार आज जहां हिमालय पर्वत है, वहां पहले टिथिस नामक सागर था।

✻ भारत में सर्वप्रथम जिम कार्बेट नेशनल पार्क, नैनीताल (उत्तराखण्ड) इस स्थान पर उद्यान स्थापित किया गया।

✻ लाहौर-दिल्ली बस सेवा सदा-ए-सरहद कहलाती है।

✻ कोयला की सर्वोत्तम किस्म एन्थ्रेसाइट होती है।

✻ इन्सान के शरीर की सबसे छोटी हड्डी उसके कान में होती है।

✻ स्विट्जरलैंड के लोग दुनिया में सबसे ज्यादा चॉकलेट खाते हैं, वह एक साल में दस किलो तक चॉकलेट खा जाते हैं।

✻ अंग्रेजी अल्फाबेट्स में सबसे ज्यादा उपयोग होनेवाला शब्द ई है।

✻ भारतीय विमान क्षेत्र के बारे में हाल ही एक अध्ययन सामने आया था, जिसमें कहा गया कि यहां तेजी से विकास हो रहा है, लेकिन एयर इंडिया इस दौड़ में पिछड़ते जा रही हैं।

✻ देसी यात्रियों की संख्या १२ प्रतिशत बढ़ती जा रही है, जबकि विदेश जानेवालों में हर वर्ष ७ फीसदी इजाफा हो रहा है। अंतर्राष्ट्रीय कार्गो का कारोबार भी १२ फीसदी की दर से प्रतिवर्ष बढ़ता जा रहा है।

✻ भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा १२२ एयरपोर्ट्स का संचालन किया जाता है। जिसमें से टॉप-५ विमानतलों से देश में पूरा विमानन कारोबार का ७० फीसदी यात्रियों का बोझा ढोया जाता है। बीते १० वर्ष में ९ प्रतिशत की औसत दर से यात्री और माल-भाड़ा क्षेत्र का विकास हुआ है।

✻ भारत में पहली व्यावसायिक विमान सेवा १८ फरवरी १९११ को शुरू हुई थी। फ्रान्स के एक पायलट ने इलाहाबाद से नैनी के बीच १० कि.मी. का सफर एक विमान में डाक लेकर किया था।

✻ जब देश में पहले टाटा की विमान सेवाएं संचालित होती थी और १९५३ में राष्ट्रीयकरण होने के बाद भी करीब २५ वर्षों तक जेआरडीटाटा ही इस कम्पनी के अध्यक्ष रहे। बाद में यह नेताओं के हाथ में गया और फिर सरकारी विमान कम्पनी की ही हालत बद से बदतर हो गई। आज भी यदि सरकारी हस्तक्षेप बंद कर दिया जाए और लालफीताशाही से एयर इंडिया को परे रखकर पेशेवर तरीके से विमान संचालित किया जाए तो एयर एंडिया के सुनहरे दिन फिर लौट सकते हैं।

✻ पानी के नीचे से ही कर सकती हैं तबाह दुनिया की सबसे ताकतवर सबमरीन्स

हाल ही में हिंद महासागर में चीन की सबमरीन दिखाई दी है, जिससे कयास लगाए जा रहे हैं कि चीन समुद्र के रास्ते भारत पर नजर रख रहा है। खतरनाक बम और मिसाइल से लैस होती है ये सबमरीन्स। सबमरीन्स के जरिए कोई भी देश अपने दुश्मनों पर छिपकर वार कर सकता है। इन्हें खुली आंखों से देख पाना मुश्किल होता है। साथ ही ये पानी अन्दर कई महीनों तक रह सकती हैं। ये मिसाइल्स से लेकर खतरनाक बम से लैस होते हैं।

✻ वर्जिनिया क्लास (यूनायटेड स्टेटस्)- टॉप ५ सबमरीन्स की लिस्ट में सबसे पहला नंबर आता है यूनाइटेड स्टेटस के वर्जीनिया क्लास का। तकनीक के मामले में ये सबमरीन सबसे ज्यादा एडवांस है। इसमें लेजर रेंजफाइंडर से लेकर हाई रिजोल्यूशन कैमरा लगे हुए हैं। साथ ही इसके सेंसर और लाइट को पकड़ने की क्षमता काफी ज्यादा है। इस समय यूएस नेवी में ऐसी करीब ७ सबमरीन्स क्रियाशील हैं। ये सबमरीन एक बार में १२ मिसाइल लांच कर सकता है इनमें टोरपिडोस की जगह स्मार्ट मिसाइल लगाई गई हैं, जो निशाने से नहीं चूकती।

✻ कूला क्लास (रुस) - रूसी आर्मी में फिलहाल इस सबमरीन के ९ यूनिट एक्टिव हैं। जबकि ६ यूनिट बेकार हो चुके हैं। ये सबमरीन अमेरिकी सबमरीन्स के मुकाबले काफी कम आवाज निकालते हैं। ये एक बार में ४० मिसाइल लांच कर सकते हैं।

✻ सिवोल्फ क्लास (यूनाइटेड स्टेटस्)- अमेरिकी नेवी में इसके ३ यूनिट एक्टिव हैं। ये सबमरीन पानी के अंदर और बाहर दोनों ही जगह अपनी स्पीड के लिए मशहूर हैं। इस सबमरीन में ५० क्रूज मिसाइल कैरी किए जा सकते हैं।

✻ स्टैचू क्लास (यूनायटेड किंगडम)- यूके नेवी की सबसे ताकतवर सबमरीन है ऐसट्यूट क्लास इसमें न्यूक्लियर हथियार भी मौजूद है। इसकी ताकत को देखते हुए ऐसे ५ सबमरीन बनाने की तैयारी है लेकिन फिलहाल आर्मी के पास एक ही सबमरीन मौजूद है। ये सबमरीन पानी के तेज दबाव को बर्दास्त कर सकता है।

✻ टाइप ०९३ शेंग क्लास (चीन८ - अभी चीनी नेवी में इस सबमरीन की ३ ही यूनिटस मौजूद हैं। लेकिन कुछ समय बाद इसके ५ और यूनिट बननेवाले हैं। इसकी मारक रेंज काफी ज्यादा है। इसमें मिसाइल दागने के लिए ६ टॉरपीडो ट्यूबस मौजूद हैं।

❋ जाने माने भाषाई विशेषज्ञ तथा शोधकर्ता डॉ. जयंती प्रसाद नोटियाल के मुताबिक आज दुनिया के १७ प्रतिशत लोगों द्वारा बोली जानेवाली भाषा हिन्दी है।

❋ सुंदर लाल बहुगुणा एवं चंडी प्रसाद भट्ट चिपको आंदोलन के जन्मदाता है, जिनका लक्ष्य वृक्षों की सुरक्षा है।

❋ दुनिया में कॉफी उत्पादन में ब्राजील सबसे पहले स्थान पर है। इसमें भारत ८ वें स्थान पर है।

❋ पहला विश्व पर्यावरण दिवस ५ जून १९७२ को मनाया गया।

❋ पेरु देश में एक पहाड़ी पर खाई में लटकता हुआ होटल बनाया गया है। साहसिक टूरिस्ट इसमें रहकर प्रकृति के सौंदर्य को करीबी से अनुभव करते हैं।

❋ चंद्रभागा मेला- भुवनेश्वर, उड़ीसा - यह मेला उड़ीसा के भुवनेश्वर की खंडगिरी में आयोजित होता है। यह मेला हर साल पूर्णिमा के दिन चंद्रभागा नदी के किनारे लगता है। यह मेला सात दिनों तक चलता है और देश के सभी श्रद्धालु नदी में स्नान करते हैं। यह मेला भी धार्मिक है जो हर साल फरवरी के महीने में लगता है।

❋ सूरजकुंड मेला - फरीदाबाद, हरियाणा - हरियाणा के फरीदाबाद में होनेवाला ये अंतरराष्ट्रीय मेला है। दुनियाभर में ये मेला आर्ट और क्राफ्ट के लिए प्रसिद्ध है। इस मेले को देखने हर साल लाखों लोग यहां आते हैं।

❋ सोनपुर मेला - सोनपुर, बिहार- बिहार में कार्तिक पूर्णिमा के दिन में गंगा नदी और गंडक नदी के संगम पर पशुओं का बड़ा मेला आयोजित होता है। पूरी दुनिया में इस तरह का मेला सिर्फ भारत में ही लगता है। इसमें हाथी, घोड़े, भैंस, गधे और पक्षियों की सभी प्रकार की नस्ल बिक्री के लिए आती है। कुल मिलाकर ये मेला पशुधन से जुड़ा हुआ है।

❋ हेमिस गोम्पा - लद्दाख, जम्मू-कश्मीर - हेमिस गोम्पा फेस्टिवल एक तरह से धार्मिक मेला है, जो बौद्ध समुदाय द्वारा आयोजित किया जाता है। यह मेला लद्दाख में स्थित सबसे बड़े बौद्ध मठ में जनवरी से लेकर फरवरी के महीने में आयोजित किया जाता है। फेमस हेमिस गोम्पा चारों तरफ से पहाड़ के चट्टानों से घिरा हुआ है। लद्दाखी संस्कृति इस मेले की विशेषता है।

❋ माघ मेला - इलाहाबाद, यूपी - माघ (जनवरी-फरवरी) में शुरू होनेवाला ये मेला हिंदू श्रद्धालुओं के एक माह तक के कल्पवास के लिए जाना जाता है। गंगा, यमुना और अदृश्य सरस्वती के संगम तट पर सैकड़ों साल से ये मेला आयोजित होता है। मकर संक्रांति से ये मेला शुरू होता है। प्रमुख तिथियों पर श्रद्धालु संगम में डुबकी लगाते हैं।

❋ ओस की बूंद - सुबह के वक्त सर्दी के दिनों में दूब या पौधों की ऊपर पानी की नन्ही-नन्ही बूंदें बिखरी होती हैं, जो सूरज के प्रकाश में मोतियों की तरह चमकती हैं। पानी की इन्हीं छोटी-छोटी बूंदों को ओस कहते हैं। देखने में यह बड़ी सुन्दर लगती हैं।

हमारे चारों ओर के वायुमण्डल में जलबाष्प होती है। रात के समय जब हवा ठंडी हो जाती है, तो यही जलबाष्प फिर से पानी में बदलकर, छोटी-छोटी बूंदों के रूप में संघनित होकर, घास और पत्तियों पर जमा हो जाती है। इसी को हम ओस कहते हैं। जब आकाश साफ होता है तो ओस अधिक बनती है। इस स्थिति में धरती की सतह से पानी का वाष्पीकरण अधिक होता है। रात में पेड़-पौधे भी अधिक ठंडे हो जाते हैं। बादल छाए होते हैं, तो ओस कम बनती है क्योंकि बादलों के कारण रात में पेड़-पौधे अधिक ठंडे नहीं हो पाते। धूप निकलने पर ओस की बूंदें गायब हो जाती हैं क्योंकि गर्मी के

कारण ये बूंदें वाष्प में बदलकर वायु में मिल जाती हैं।

❋ वैज्ञानिक खोज को बढ़ावा देती नासा - नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन जिसे संक्षेप में नासा कहते हैं, संयुक्त राज्य अमेरिका की सरकार की शाखा है जो देश के सार्वजनिक अंतरिक्ष कार्यक्रमों व एरोनॉटिक्स व एरोस्पेस संशोधन के लिए जिम्मेदार है। फरवरी २००६ से नासा का लक्ष्य वाक्य भविष्य में अंतरिक्ष अन्वेषण, वैज्ञानिक खोज और एरोनॉटिक्स संशोधन को बढ़ाना है। १४ सितंबर २०११ में नासा ने घोषणा की कि उन्होंने एक नए स्पेस लाँच सिस्टम के डिजाइन का चुनाव किया है जिसके चलते संस्था के अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में और दूर तक सफर करने में सक्षम होंगे और अमेरिका द्वारा मानव अंतरिक्ष अन्वेषण में एक नया कदम साबित होंगे।

१९५८ में हुआ था गठन- नासा का गठन नेशनल एरोनॉटिक्स एंड स्पेस अधिनियम के अंतर्गत १९ जुलाई १९५८ में इसके पूर्वाधिकारी संस्था नेशनल एडवाइजरी कमिटी फॉर एरोनॉटिक्स (एनसीए) के स्थान पर किया गया था। इस संस्था ने १ अक्टूबर १९५८ से कार्य करना शुरू किया। तब से आज तक अमेरिकी अंतरिक्ष अन्वेषण के स ारे कार्यक्रम नासा द्वारा संचालित किए गए हैं जिनमें अपोलो चन्द्रमा अभियान, स्कायलैब अंतरिक्ष स्टेशन और बाद में अंतरिक्ष खटल शामिल है। वर्तमान में नासा अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन को समर्थन दे रही है और ओरायन बहु-उपयोगी कर्मीदल वाहन व व्यापारिक कर्मीदल वाहन के निर्माण व विकास पर ध्यान केंद्रित कर रही है। संस्था लाँच सेवा कार्यक्रम (एलएसपी) के लिए भी जिम्मेदार है जो लाँच कार्यों व नासा के मानवरहित लाँचों की उलटी गिनती पर ध्यान रखता है।

१८८०० कर्मचारी कार्यरत- यह संस्था अमेरिकी सरकार के अधिकार क्षेत्र में आती है। इसका मुख्यालय वॉशिंगटन डीसी में है। इसमें १८८०० कर्मचारी कार्यरत हैं। इसका वार्षिक बजट १७.८ बिलियन अमेरिकी डॉलर है।

❋ ९३ प्रतिशत छात्र आनलाइन रिसर्च करते हैं बजाय लाइब्रेरी में।

❋ ८० प्रतिशत लोग अपनी भावनाएं छुपाकर रखते हैं क्योंकि उन्हें यकीन होता है कि लोग उनके दर्द को समझ नहीं पाएंगे।

❋ आदमियों में महिलाओं के मुकाबले ज्यादा छोटी लिखावट पढ़ने की क्षमता होती है जबकि महिलाएं सुनने में ज्यादा अच्छी होती हैं।

❋ अगर आप किसी के दाहिने कान की तरफ से मदद मांगेंगे तो आपको मदद मिलने की संभावना बढ़ जाती है।

❋ आलस्य किशोर अवस्था का एक सामान्य लक्षण है और इसे बुरे व्यवहार की श्रेणी में नहीं डाला जा सकता।

❋ उसैन बोल्ट ने जब १०० मीटर दौड़ का रिकॉर्ड तोड़ा था तब उनके शू-लेस खुले हुए थे।

❋ आपने नोट्स को बनाने के एक दिन के अंदर पढ़ लेने से, आप उन्हें ६०% से ज्यादा याद कर लेते हैं

❋ गणित करते समय चॉकलेट खाने से आपकी गणित हल करने की योग्यता बढ़ जाती है।

❋ केले से मच्छर के काटने से होनेवाली सूजन और खुजली से आराम होता है।

❋ ९७% लोगों को इस बात का नहीं पता कि लादेन अमेरिकी एजेंसी सीआईए, जिसका मुख्य लक्ष्य आतंकवाद से लड़ना भी शामिल है, का १९८० में एक एजेंट था।

❋ विश्व के दस सर्वाधिक साहसिक क्रूज में ब्रह्मपुत्र

असम बंगाल नेवीगेशन कंपनी के ब्रह्मपुत्र क्रूज को सीएनएन इंटरनेशनल ने वर्ष २०१३ के विश्व के दस सर्वाधिक साहसिक क्रूज में से एक बताया है।

सूची में अमेजन, अंटार्कटिका, उत्तरी ध्रुव, ऑस्ट्रेलिया और प्रशांत और अटलांटिक महासागर भी शामिल हैं। इस सूची में ब्रह्मपुत्र क्रूज (जंगल बुक टूर-इंडिया) का छठा स्थान है। उन्होंने बताया कि असम बंगाल नेवीगेशन कंपनी वास्तव में भारत और ब्रिटेन का संयुक्त उपक्रम है, जिसने वर्ष २००३ में लंबी दूरी की रिवर क्रूजिंग में अपनी महारत दिखाई थी। इस साल ब्रह्मपुत्र नदी में कंपनी के क्रूज एबीएन चराईडयू के दस साल पूरे हो गए। फूकन ने बताया कि कंपनी के पास बंगाल क्रूज और उसकी दूसरी नौका एबीएन सुकाफा भी है, जो क्रमश: हुगली नदी में २००७ से और गंगा नदी में २०१० से सेवाएं दे रही हैं। इसके अलावा कंपनी की तीसरी नौका एबीएन राजमहल अगले साल फरवरी से गंगा नदी में अपना वाणिज्यिक परिचालन शुरू करेगी।

ब्रह्मपुत्र क्रूज से पर्यटक जीप और हाथी की पीठ पर बैठ कर वन्यजीवन की झलक देख सकते हैं, गांव में घूम सकते हैं, चाय बगान जा सकते हैं, साइकिल या रिक्शा से शहर में घूम सकते हैं, खूबसूरत नदी द्वीप देख सकते हैं, लोक कलाओं का आनंद ले सकते हैं, पुरातत्व महत्व के स्थलों तक और तीर्थ।

❋ कोहरा व ओले - तेज वर्षा के कारण बर्फ के गोल-गोल टुकड़े भी गिरने लगते हैं। जिन्हें हम ओले कहते हैं तथा सर्दियों के मौसम में सुबह के समय कभी-कभी पृथ्वी पर एक धुएं जैसा आवरण छा जाता है, जिसे हम कोहरा कहते हैं।

वर्षा की बूंदें बादलों से जब पृथ्वी की ओर गिरती है, तो उन्हें कभी-कभी ठंडे क्षेत्र से गुजरना पड़ता है। कम तापमान के कारण वर्षा की ये बूंदें जमकर बर्फ यानी हिमकणों में बदल जाती हैं। कभी-कभी ऐसा होता है कि गिरते हुए हिमकणों को वायुमंडल में वायु की तेजी से ऊपर उठती हुई कोई धारा ऊपर उठा ले जाती है, जमी हुई बूंदें जब उस क्षेत्र में पहुंच जाती हैं, जहां वर्षा की बूंदें पहले से ही बननी शुरू हुई थी, तो इन हिमकणों में पानी के कण चिपकने लगते हैं जब ये फिर नीचे की ओर गिरते हैं, तो वायु के ठंडे क्षेत्र से गुजरने पर जम जाते हैं। इस प्रकार ओले का आकार बढ़ने लगता है। जब इनका भारत के ऊपर उठानेवाली वायु के बल से अधिक हो जाता है, तो ये ओले के रूप में जमीन पर गिरने लगते हैं। गिरते हुए ओलों का व्यास १ सेंटीमीटर से लेकर ७.८ सेंटीमीटर तक होता है।

इनका वजन लगभग ५०० ग्राम तक होता है। अगर आप किसी भी ओले को काटकर ध्यानपूर्वक देखे तो उसमें पारदर्शक और अर्धपारदर्शक बर्फ की कई सतहें दिखाई देंगी। ये परतें पानी के बार-बार जमने से ही बनती हैं। कोहरा वास्तव में एक प्रकार का बादल होता है, जो पृथ्वी के संपर्क में आ जाता है।

जब पृथ्वी की सतह के पास की वायु में जल वाष्प की मात्रा इतनी हो जाती है कि किसी निश्चित तापमान पर अधिक जलबाष्प इसमें नहीं समा सकते, तो यह पानी या बर्फ के बहुत छोटे-छोटे कणों में बदल जाता है। जब जलबाष्प में संतप्त वायु ठंडी हो जाती है। ऐसी स्थिति में अतिरिक्त जलबाष्प संघनित हो जाती है। जब जलबाष्प का संघनन पृथ्वी के निकट होता है तो यह बादल जैसे रूप में आ जाता है। इसी को कोहरा बनना कहते हैं।

कोहरे में उपस्थित पानी के छोटे कण दृश्यता को बहुत ही कम कर देते हैं। जाड़ों के दिनों में सुबह के समय में पृथ्वी की सतह ठंडी होती है, जिसके कारण वायु में उपस्थित जलबाष्प तेजी से संघनित होकर कोहरे में बदल जाती है।

सामान्य रूप से बड़े-बड़े शहरों में कोहरे की परतें, कस्बों तथा गावों में दिखनेवाली कोहरे की परतों की अपेक्षा अधिक मोटी होती हैं। इसका यह कारण है कि शहरों की वायु में धूल और धुएं के कण अधिक होते हैं, जो कोहरे में उपस्थित पानी के कणों से मिलकर इसको गहरा बना देते हैं। इस प्रकार कोहरे को हम धूम्र कोहरा भी कहते हैं। जिन शहरों में कारखाने अधिक हैं वहां धुएं के कारण कोहरा अधिक बनता है। जब कोहरा बनता है तो वह सूर्य की किरणों के साथ-साथ धीरे-धीरे अपने आप ही समाप्त हो जाता है।

✻ पानी पर तैरता यह आलीशान होटल। एक रात बिताने के लगते हैं एक लाख से ज्यादा।

लक्जरी की कोई सीमा नहीं होती है, अगर आपके पास पैसा है तो खर्च करने के लिए दुनिया कम पड़ जाती है एक ऐसा शानदार होटल जो एक नाव (याट) पर बनाया गया है। इसे १३० मिलियन पौंड की लागत से बनाया गया है, पानी पर तैरता यह शाही होटल अपने यात्रियों को जिब्राल्टर और उसके आस-पास की जगहों की सैर कराता है, स्पेन के दक्षिणी इलाके में स्थित यह जगह बेहद खूबसूरत है। इसके अलावा १४२ मीटर लंबे इस जहाज में १८९ कमरे, सुइट्स, बार और रेस्त्रां हैं। इसमें कसीनो, जिम और स्पा जैसी शानदार सुविधाएं भी हैं, यहां पर एक कमरे के लिए १८१७६ से लेकर १८१७६० रुपये प्रति रात के लिए चुकाने पड़ सकते हैं, यह शानदार पांच सितारा होटल जिब्राल्टर के आस-पास के मनोरम दृश्यों के बीच अपने मेहमानों को भरपूर आनंद देता है।

अगर आप भूमध्य सागर में एक आरामदायक और शाही जगह चाहते हैं तो यह सबसे बेहतरीन विकल्प है। यह तैरता हुआ होटल किसी ७ मंजिला इमारत की तरह लगता है। इसमें १५५०० वर्ग मीटर का फ्लांट है।

इतने बड़े आकार के लिए अगर इसे सुपर यार्ट कहा जाए तो गलत नहीं होगा, इस पांच सितारा होटल में १६७ गेस्ट रूम हैं, इसके अलावा ४ खास कमरे और १८ सुइट्स हैं, इस शाही होटल के हर कमरे से समुद्र का एक खास नजारा दिखाई देता है, हर मंजिल पर बने कमरों की कीमत अलग है। गिब्राल्टर सनबर्न यार्ट होटल एक अलग कंपनी की तरह है जो आपकी हर जरूरत को शाही अंदाज से बीच समुद्र में पूरा करता है।

इस विशालकाय यार्ट को चलाने के लिए ६ हाईड्रोलिमक इंजन लगते हैं। आप इसे समुद्र में तैरता विशाल महल कहें तो गलत नहीं होगा। मोनको और सिंगापुर में भी इसी तरह के होटल मेहमानों का मनोरंजन करने के लिए बनाए गए हैं यह आपके लिए एक परफेक्ट हॉलिडे डेस्टिनेशन बन सकता है, यह यार्ट पूरी तरह से ईको-फ्रेंडली है।

✻ विश्व की मुद्राएं

✻ भारत की मुद्रा का नाम रुपया है।

✻ अमेरिका की मुद्रा का नाम डॉलर है।

✻ ब्रिटेन की मुद्रा का नाम स्टर्लिंग पौंड है।

✻ रूस की मुद्रा का नाम रूबल है।

✻ साउथ अफ्रीका की मुद्रा का नाम राण्ड है।

✻ यूरोपीय समुदाय की मुद्रा का नाम यूरो है।

✻ सऊदी अरब की मुद्रा का नाम रियाल है।

✻ स्पेन की मुद्रा का नाम पेसेटा है।
✻ वेटिकन सिटी की मुद्रा का नाम लीरा है।
✻ लीबिया की मुद्रा का नाम न्यू पेसो है।
✻ मंगोलिया की मुद्रा का नाम तुगारिक है।
✻ चीन की मुद्रा का नाम युवान है।
✻ जापान की मुद्रा का नाम येन है।
✻ म्यांमार (बर्मा) की मुद्रा का नाम क्यात है।
✻ मलेशिया की मुद्रा का नाम रिगिट है।
✻ फ्रांस की मुद्रा का नाम फ्रैंक है।
✻ नार्वे की मुद्रा का नाम क्रोन है।
✻ थाईलैंड की मुद्रा का नाम क्रोन है।
✻ तुर्कमेनिस्तान की मुद्रा का नाम मनाट है।
✻ जर्मनी की मुद्रा का नाम ड्यूश मार्क है।
✻ कोस्टारिका की मुद्रा का नाम कोलोन है।
✻ केन्या की मुद्रा का नाम शिलिंग है।
✻ क्रोएशिया की मुद्रा का नाम क्यूना है।
✻ कम्बोडिया की मुद्रा का नाम रील है।
✻ इथोपिया की मुद्रा का नाम बिर्र है।
✻ इजराइल की मुद्रा का नाम सेकेल है।
✻ इक्वेडोर की मुद्रा का नाम सुक्रे है।
✻ अमोनिया की मुद्रा का नाम दिड्राम है।
✻ अल्बानिया की मुद्रा का नाम लेक है।
✻ हैती की मुद्रा का नाम गूर्ड है।
✻ हांडुरास की मुद्रा का नाम लेम्पीरा है।
✻ हंगरी की मुद्रा का नाम फॉरेस्ट है।
✻ सियरा लियोन की मुद्रा का नाम लियोन है।
✻ लेसोथो की मुद्रा का नाम लोती है।
✻ बनातू की मुद्रा का नाम वातू है।
✻ वियतनाम की मुद्रा का नाम डोंग है।
✻ लिथुआनिया की मुद्रा का नाम दि लिटास है।
✻ रूमानिया की मुद्रा का नाम लियू है।

✻ यूनान की मुद्रा का नाम ड्रैच्मा है।

✻ मारितानिया की मुद्रा का नाम ओगुइया है।

✻ मोजाम्बिक की मुद्रा का नाम मेटिकल है।

✻ मलावी की मुद्रा का नाम क्वाचा है।

✻ रसगुल्ला आखिर किसका - रसगुल्ला मूल रूप से बंगाली मिठाई है। जैसे मथुरा का पेड़ा, आगरा का पेठा, बरेली की बर्फी, कानपुर के ठग्गू के लड्डू मशहूर हैं वैसे ही रसगुल्ला भी बंगाल का माना जाता रहा लेकिन २०१४ में ओडिशा ने दावा किया कि रसगुल्ला बनाने की शुरुआत उसके यहां हुई। इसके बावजूद औद्योगिक नीति व प्रोत्साहन विभाग के आईपीआर सेल ने २०१७ में बंगाल को रसगुल्ले का जन्मदाता बताते हुए उसे जीआई (भौगोलिक संकेतक) दर्जा दे दिया। ओडिशा ने हार नहीं मानी और अपने दावे पर अड़ा रहा। अब इस वर्ष ओडिशा के रसगुल्ले को भी जीआई टैग मिल गया। मतलब रसगुल्ले पर बंगाल और ओडिशा दोनों बराबरी के हकदार हो गए। ओडिशा का दावा एक विद्वान अमित मोहंती की रिपोर्ट पर आधारित था जो उन्होंने राज्य सरकार को पेश की थी। इस रिपोर्ट में दावा किया गया था कि बलराम दास की १५ वीं शताब्दी में लिखी गई उड़िया रामायण में रसगुल्ले का उल्लेख है जिसे ९ सदियों से भगवान जगन्नाथ को प्रसाद के रूप में चढ़ाया जाता है। ओडिशा में इसे रसगोला कहते हैं जबकि बंगाल में यह रोसोगोल्ला कहलाता है। बंगाल अपनी भद्रलोक संस्कृति पर गर्व करता है। वह रसगुल्ले पर अपने हक की लड़ाई अदालत तक ले गया था। अब दोनों राज्यों को जीआई टैग मिलने से वे बराबरी पर आ गए।

✻ कर्नाटक में है कुत्तों का एक मंदिर - कर्नाटक के रामनगर जिले के चन्नापटना में स्थानीय लोगों ने कुत्तों का मंदिर बनाया है। इस मंदिर के देवता दो कुत्ते हैं, जो जानवरों के दो चेहरों को प्रदर्शित करते हैं। इस मंदिर में प्रतिदिन कुत्तों की पूजा की जाती है। लोगों का मानना है कि कुत्ता एक वफादार प्राणी है। वह किसी भी गलत काम को रोकने के लिए तैयार रहता है। लोगों का मानना है कि कुत्ता गांव के देवता के साथ मिलकर काम करता है।

✻ कारों में सीट बेल्ट- १९५० के दशक तक अमेरिकी ऑटोमोबाइल निर्माता हार्नेस तथा लैप बेल्ट मॉडल पर आधारित बड़ी-बड़ी सीट बैल्ट्स उपलब्ध करवा रहे थे। इन बैल्ट्स को एक स्टैंडर्ड फीचर की बजाय एक एसैसरी अधिक माना जाता है। इस वर्ष एक स्वीडिश ऑटोमोबाइल निर्माता कम्पनी वोल्वो ने एक सिंगल बैल्ट प्रस्तुत की। यह बैल्ट तीन एंकर प्वाइंट्स पर जुड़ी हुई थी जिस कारण इसे पहनना बहुत आसान था। अब उनके सभी ऑटोमोबाइल्स में ये बैल्ट्स लगाई जाने लगी थी। ऐयरोनॉटिक्स में इस्तेमाल की जानेवाली सेफ्टी बैल्ट पर आधारित इस बैल्ट के डिजाइन पर वोल्वो कम्पनी १९५९ से ही कार्य कर रही थी। सन १९०३ में सीट बैल्ट्स को बहुत महत्वपूर्ण माना गया था।

उस वक्त कारों का निर्माण अभी अपने बाल्यकाल में ही था। तब गुस्ताव डिजायर लाईबाई ने ऑटोमोबाइल्स तथा अन्य वाहनों में प्रयोग करने हेतु सुरक्षा पट्टियों के लिए पेटैंट करवाया था।

✻ प्लेटलेट्स - जीवित प्राणियों के खून का एक बड़ा हिस्सा प्लेटलेट्स (जिनमें लाल रक्त कणिकाएं और प्लाज्मा शामिल हैं) से निर्मित होता है। दिखने में ये नुकीले अंडाकार होते हैं और इनका आकार एक इंच का चार सौ हजारवां हिस्सा होता है। इसे माइक्रोस्कोप से ही देखा जा सकता है। यह बोन मैरो में मौजूद सेल्स के काफी छोटे कण होते हैं,

जिन्हें तकनीकी भाषा में मेगा कार्योसाइट्स कहा जाता है। ये थ्रोम्बोपीटिन हार्मोन की वजह से विभाजित होकर खून में समाहित होते हैं और सिर्फ १० दिन तक संचारित होने के बाद खुद नष्ट हो जाते हैं। शरीर में थ्रोम्बोपीटिन का काम प्लेटलेट्स की संख्या सामान्य बनाना होता है।

खून में मौजूद प्लेटलेट्स का एक अहम काम हमारे शरीर में मौजूद हार्मोन और प्रोटीन उपलब्ध कराना होता है। खून की धमनी को नुकसान होने की सूरत में कोलाजन नामक द्रव निकलता है जिससे मिलकर प्लेटलेट्स एक अस्थाई दीवार का निर्माण करते हैं और खून की धमनी को और अधिक क्षति होने से रोकते हैं। शरीर में जरूरत से ज्यादा प्लेटलेट्स होना शरीर के लिए कई गंभीर खतरे उत्पन्न करता है। इससे खून का थक्का जमना शुरू हो जाता है जिससे दिल के दौरे की आशंका बढ़ जाती है। प्लेटलेट्स की संख्या में सामान्य से नीचे आने पर रक्तस्राव की आशंका बढ़ती है।

✻ सबसे ऊंचा बुर्ज खलीफा - यह दुनिया की सबसे ऊंची इमारत है। यह दुबई (संयुक्त अरब अमीरात) में है। इस बिल्डिंग की ऊंचाई २७१७ फीट है। इसका निर्माण कार्य २०१० में पूरा हुआ था।

✻ मनुष्य की धमनियों में रक्त की गति ७ मील प्रति घंटा है।

✻ हमारे शरीर में मौजूद ८ ग्रंथियां ऐसी होती हैं जो लगभग २५ तरह के हार्मोन पैदा करती है।

✻ एक स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में लगभग ५ लीटर रक्त होता है।

✻ नवजात शिशु रोता है लेकिन उसकी आंखों से आंसू नहीं निकलते क्योंकि तब तक उसकी अश्रु ग्रंथियां विकसित नहीं होती है।

✻ किन्ही दो व्यक्तियों के अंगुलियों के निशान एक से नहीं हो सकते भले ही वे जुड़वा ही क्यों न हों।

✻ मानव शरीर एक ऐसी मशीन है जो जन्म से लेकर मृत्यु तक बिना रुके चलती रहती है। खास तौर पर सांस लेने की क्रिया, पाचनक्रिया और दिल के धड़कने की क्रिया सदैव चलती रहती है।

✻ मनुष्य की जीभ पर लगभग ३००० स्वाद कलिकाएं होती हैं। वृद्धावस्था में जिनकी संख्या घटकर ८०० रह जाती है।

✻ मानव शरीर में १० अरब से भी ज्यादा कोशिकाएं होती हैं।

✻ भारत के मद्रास शहर में पहली आधुनिक नक्षत्र वेधशाला (एस्ट्रोलॉजिकल ऑब्जर्वेटरी) स्थापित की गई थी।

✻ मौजूदा समय में पृथ्वी पर जीवित प्राणियों की दस लाख से अधिक प्रजातियां उपलब्ध हैं।

✻ दुनिया में किसी भी देश से अधिक आइसलैंड में सबसे अधिक इंटरनेट यूजर हैं। वहां यह दर ८६ प्रतिशत है।

✻ दुनिया के तकरीबन आधे समाचारपत्र अमेरिका और कनाडा से प्रकाशित होते हैं।

✻ डायनामाइट निर्माण में मूंगफली का भी इस्तेमाल होता है।

✻ सन १९३२ में इतनी तेज सर्दी पड़ी थी कि दुनिया के सबसे बड़े जल प्रपातों में से एक नियाग्रा फॉल्स जम गया था।

✻ मनुष्य के शरीर में मौजूद हड्डियों का एक चौथाई हिस्सा केवल टांगों में ही होता है।

✻ किसी भी व्यक्ति को याद नहीं रहता कि उसके द्वारा देखा गया सपना कहां से शुरू हुआ था।

✻ एक कुत्ते का बॉर्डर पार कर जाना ग्रीक और बुलागारिया के बीच युद्ध का कारण बना था।

✻ ठंडे पानी की अपेक्षा गरम पानी पहले बर्फ में बदलता है।

❋ अमेरिकी गृहयुद्ध के दौरान एक कप्तान जॉर्ज आर्मस्ट्रांग कस्टर को मात्र २३ वर्ष की आयु में मेजर जनरल बना दिया गया था। आज तक के इतिहास में वह जनरल बननेवाले सबसे कम उम्र के सैनिक रहे हैं। यह अस्थाई था और गृहयुद्ध के बाद वह वापस कप्तान के पद पर लौट आए थे।

❋ प्रथम विश्वयुद्ध में दक्षिण अफ्रीका के बंदर को पुरस्कृत करके कॉर्पोरल स्तर के सैनिक का खिताब दिया गया था।

❋ हवा में एक गिलास दूध का भार एक एस्पिरिन के भार के बराबर होता है।

❋ अंग्रेजी में शब्द की सबसे अधिक परिभाषाएं हैं।

❋ एक अनुमान के अनुसार ब्रह्मांड में १० बिलियन से अधिक गैलेक्सी हैं।

❋ स्टीफन हॉकिंग गैलीलियो की मौत के ठीक तीन सौ वर्ष बाद पैदा हुए।

❋ एक से दस तक का काउंटडाउन (ज्यादातर नववर्ष की पूर्व संध्या में प्रयोग होनेवाला) पहली बार १९२९ की जर्मन फिल्म डाई फ्राउ इम मोंड (द गर्ल इन द मून) में प्रयोग हुआ था।

❋ राइट हैंडेड लोगों के लिए बनाए गए उपकरणों के गलत इस्तेमाल के कारण लगभग दो हजार लेफ्ट हैंडेड लोग हर वर्ष मर जाते हैं।

❋ अंग्रेजी को विश्व की सबसे लोकप्रिय भाषा माना जाता है।

❋ अफ्रीकी महाद्वीप पर १००० से ज्यादा भाषाएं बोली जाती हैं।

❋ अंतर्राष्ट्रीय उड़ानों के सभी पायलट अंग्रेजी भाषा से परिचित होते हैं।

❋ भारत में १६५२ बोलियां या भाषाएं बोली जाती हैं।

❋ ताईवान की एक कंपनी गेहूं से डिनरवेयर बनाती है। यदि खाना न मिले तो प्लेट खाकर पेट भरा जा सकता है।

❋ नींद से जुड़ीं ज्यादातर जानकारियों को हमने २५ वर्ष पूर्व ही जान लिया था। लोगों की नींद पूरी नहीं होने के प्रमुख कारणों में चौबीस घंटे इंटरनेट की सुविधा का होना भी शामिल है।

❋ अमेरिकन एक वर्ष में ३५ हजार टन पास्ता खा जाते हैं।

❋ मिश्र से ज्यादा पिरामिड तो पेरू में हैं।

❋ क्यूबा विश्व में सबसे अधिक चीनी का निर्यात करता है।

❋ लीपेथवर्थ और हाईड के बीच की लंबाई स्ट्रीट को दुनिया की सबसे टेढ़ी-मेढ़ी स्ट्रीट कहा जाता है। उल्लेखनीय है कि दिल्ली दूरदर्शन द्वारा २९ नवंबर ९२ को प्रसारित किये गये गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड नामक कार्यक्रम में लंबाई स्ट्रीट को भी शामिल किया गया था।

❋ समुद्र के स्तर में बदलाव को जी.पी. एस. सिग्नल की मदद से मापा जाएगा। वैज्ञानिकों ने इसके लिए जी.एन.एस.एस. टाइड गॉज नामक एक उपकरण तैयार किया है। ग्लोबल पोजीशिनिंग सिस्टम स्टेशनों की मदद से समुद्री जल स्तर और इसमें होनेवाले बदलावों की निगरानी आसानी से की जा सकती है। समुद्री जल स्तर में चढ़ाव जलवायु परिवर्तन का एक स्पष्ट परिणाम है। चामर्स में पृथ्वी एवं अंतरिक्ष विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों जोहान लोकप्रिय और आर. हास. ने यह उपकरण तैयार किया है।

❊ ४ दरवाजों और ११ तालों में बंद है दुर्लभ मूर्ति, आती हैं मधुर आवाजें

भगवान विष्णु के चार स्वरूपों वाली दुनिया की दुर्लभ मूर्ति ११ तालों में कैद रहती है। शिल्पशास्त्र की दृष्टि से यह अत्यंत दुर्लभ और महत्वपूर्ण है। इसे सुरक्षित रखने के लिए मंदिर के चार द्वारों पर हमेशा ११ ताले लगे र हते हैं। पुरातत्व विभाग की अनुमति के बाद ही इसके द्वार दर्शनार्थियों के लिए खोले जाते हैं। उज्जैन का यह विष्णु चतुष्टिका मंदिर है। पुरातन महत्व की मूर्ति की सुरक्षा के लिहाज दर्शनार्थियों को जाली वाले दरवाजे से ही दर्शन करने पड़ते हैं। यह मंदिर प्रसिद्ध कालभैरव मंदिर रोड स्थित गढ़कालिका मंदिर के पास है। मंदिर बहुत साधारण आयताकार है, जिसमें चार द्वार है। तीन द्वारों में तीन-तीन और एक द्वार में दो ताले हमेशा लगे रहते हैं। मंदिर की सुरक्षा के लिए चौकीदार और रात को सुरक्षा गार्ड भी तैनात रहते हैं ताकि मूर्ति को कोई क्षति न पहुंचा सके। विशेष अनुमति पर ही मंदिर के ताले खोले जाते हैं। इस मूर्ति की सबसे खास बात यह है कि प्रस्तर (पाषाण) से अलग-अलग मधुर आवाजें आती हैं। मूर्ति के हाथों और शंख आदि को धीरे से ठोकने पर ये आवाजें निकलती हैं। प्राचीन स्मारक और पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम १९६४ के अंतर्गत इसे राजकीय महत्व का घोषित किया गया है। भगवान विष्णु की मूर्ति ९ वीं शताब्दी की है, जो पद्मासन में है। विष्णु के चार स्वरूप-वासुदेव, संकर्षण, अनिरुद्ध और प्रद्युम्न होने से इसे विष्णु चतुष्टिका कहते हैं। इसमें पांच वीरों-वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न, अनिरुद्ध और साम्व का अंकन है। इन वीरों का उल्लेख बृहत्संहिता, विष्णु धर्मोत्तर विष्णुपुराण में भी मिलता है। विष्णु चतुष्टिका की मूर्ति दुर्लभ है।

❊ मनुष्य के मस्तिष्क की विशालता: मनुष्य का मस्तिष्क कोई सामान्य वस्तु नहीं है। आप अपने दिमाग की क्षमता का अंदाजा इसी से लगा सकते हैं कि विकिपीडिया पर उपलब्ध जानकारी से पाँच गुना अधिक जानकारी संजोने की क्षमता आपके मस्तिष्क में है।

❊ दशकों से उत्सुकता का विषय- एलियन्स की जादुई दुनिया

कुछ जीव एक बार पैदा हुए फिर खत्म हो गए, फिर दूसरे जीव पैदा हुए और वो भी खत्म हो गए और ये सिलसिला लगातार काफी समय तक चलता रहा। इस खत्म होने और पैदा होने के बीच धरती पर जीवन के बीच आते कहां से थे। इसके लिए लंबे अरसे से वैज्ञानिक कयास लगाते रहे हैं और हर बार उनका ध्यान आकाश से आती उल्काओं पर टिक जाता था। आज भी कुछ वैज्ञानिकों का मानना है कि इन उल्काओं की वजह अमीनो एसिड धरती पर आया। जिसकी वजह से बैक्टीरिया जैसे जीव वजूद में आए। ऐसे एलियन्स सेल वाले लोगों को जो आकृति बनाई जा रही है वो बिलकुल वैसी ही है जैसी हम एलियन की आकृति को लेकर कल्पना करते है। बिलकुल ऐसे एलियन यान विज्ञान की इस नई सोच के मुताबिक एलियन का वजूद है। अगर इस धरती पर है तो कहीं और भी हो सकता है। लेकिन हर जगह उन्हें छुपकर-डरकर रहना पड़ता है। क्योंकि जीवन की शुरुआत उन्हीं से संभव है।

❊ यूरेनियम - यूरेनियम चांदी जैसे सफेद रंग ऐक्टिनाइड श्रेणी का एक तत्व है। इस श्रेणी में आंतरिक इलेक्ट्रॉनीय परिकक्षा (५ परिकक्षा) के इलेक्ट्रॉन स्थान लेते हैं। प्राकृतिक रूप से यूरेनियम २३८, २३५ और २३४ के रूप में मिलता है। प्लूटोनियम के बाद यूरेनियम का एटॉमिक वेट होता है। इसकी खोज १७८९ में मार्टिन हेनरिक क्लाप्रोट नामक वैज्ञानिक ने पिचब्लेंड नामक अयस्क से की। उसने नये तत्व का नाम कुछ वर्ष पहले ज्ञान यूरेनस ग्रह के आधार पर

यूरेनियम रखा। सन १८९६ में हेनरी बेक्वरेल ने यूरेनियम में रेडियो एक्टिवता की खोज की। उसके अनुसंधानों से ज्ञात हुआ कि यह गुण यूरेनियम के सब यौगिकों में तथा कुछ अन्य अयस्कों में भी है। इन निरीक्षणों के फलस्वरूप ही पिचब्लेंड अयस्क से रेडियम की ऐतिहासिक खोज संभव हो सकी थी। यूरेनियम धरती की संपूर्ण ऊपरी सतह पर फैला है। पृथ्वी की पपड़ी में यूरेनियम की मात्रा लगभग १०१४ टन है। इसके लवण रेशम को रंगने का कार्य करते हैं। सोडियम डाइयूरेनेट का उपयोग पोर्सलीन के बरतनों को रंगने में हुआ है। परमाणु ऊर्जा प्रयोगों के कारण यूरेनियम अत्यधिक उपयोगी तत्व हो गया है। एक किलोग्राम यूरनियम २३५ से ३००० टन कोयले के बराबर ऊर्जा प्राप्त की जा सकती है।

* सबसे पहले बनी अलार्म घड़ी में केवल सुबह ४ बजे ही अलार्म बज सकता था।

* टेलीविजन का सबसे पहले प्रयोग करनेवाले चार देश इंग्लैंड, अमेरिका, रूस और ब्राजील हैं।

* पूरे जीवनकाल में एक व्यक्ति इतनी लार निकाल सकता है कि उससे दो स्विमिंग पूल भर जाये।

* ८५ प्रतिशत लोग सोने से पहले वो सब सोचते हैं, जो वे अपनी जिंदगी में करना चाहते हैं।

* जीभ हमारे शरीर की सबसे मजबूत मांसपेशी है।

* महाबलीपुरम के मॉन्यूमेंट - तमिलनाडु के चिंग्लेपुट जिले में स्थित महाबलीपुरम मॉन्यूमेंट भी वर्ल्ड हेरिटेज साइट में दर्ज है। इसे ७ वीं और ८ वीं सेंचुरी में बनाया गया था। यह खास प्रकार के रथ के आकार के मंदिर के लिए जाना जाता है। इसे पल्लावा राजा ने बनवाया था। यहां शिव के हजारों स्कल्पचर भी हैं। इसे देखने के लिए भी दुनियाभर से टूरिस्ट आते हैं।

* एलोरा गुफाएं - ये गुफाएं महाराष्ट्र के औरंगाबाद के पास हैं। ये सन ६०० से १००० के बीच की हैं। यहां बौद्ध, जैन और हिन्दू तीनों धर्मों से जुड़ी आर्ट और निशान देखे जा सकते हैं। तीनों धर्मों के बीच मौजूद सहिष्णुता को यहां दिखाया गया है। यह भी वर्ल्ड हेरिटेज की लिस्ट में शामिल किया गया है और इसे देखने काफी संख्या में टूरिस्ट आते हैं।

* हम्पी की मॉन्यूमेंट - कर्नाटक के बेल्लारी जिले के हम्पी में स्थित मॉन्यूमेंट भी खास है। हम्पी विजयनगर के हिन्दू साम्राज्य की अंतिम राजधानी थी। यहां १४ वीं से १६वीं शताब्दी के अध्ययन के लिए ट्रैवलर्स आते हैं।

* पट्टाडाकल के मॉन्यूमेंट - कर्नाटक के पाट्टाडाकल में खास तौर के इलेक्ट्रिक आर्ट दिखाई पड़ते हैं। यहां काफी प्राचीन मंदिर भी है। इसे ७वीं - ८ वीं शताब्दी में बनाया गया था। इसमें सबसे खास विरूपक्षा के मंदिर को कहा जाता है। इसे राजा के युद्ध जीतने के बाद महारानी लोकमहादेवी ने बनवाया था।

* मलेशिया के पश्चिम में बसे पोलीनेशिया द्वीप में चौड़े एवं चपटे सिर सुंदरता के प्रतीक माने जाते हैं। अत: बच्चे के जन्मते ही उनके सिर के आगे-पीछे दोनों ओर लकड़ी या पत्थर के टुकड़े दबाकर इसे चौड़ा एवं चपटा करने का प्रयास किया जाता है।

* पूर्वी अफ्रीका की उकम्मा जाति की स्त्रियां सुंदरता के लिए अपने दांतों को घिसवाकर सिर मुड़ा लेती हैं।

* मलेशिया के साइक्रोनेशिया द्वीपों की आदिम जातियां बड़े-बड़े कानों को सुंदरता का प्रतीक मानती हैं। अत: सुंदर लगने के लिए कानों को छिदवाकर उनमें वजनदार बालियां पहन लेती हैं।

* पांच करोड़ वर्ष पूर्व धरती पर डायट्रीमा नामक एक मांसाहारी चिड़िया पायी जाती थी, जिसकी ऊंचाई तीन मीटर थी।

❋ सैंट पैनक्रॉस इंटरनेशनल - यूके का यह रेलवे स्टेशन देखने में महल जैसा लगता है। इस रेलवे स्टेशन को कैथेड्रल ऑफ रेलवे के नाम से भी बुलाया जाता है। यह रेलवे स्टेशन १८६८ में बना था, जो कि विक्टोरियन आर्किटेक्चर का एक बेहतरीन नमूना है।

❋ छत्रपति शिवाजी टर्मिनस - देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में स्थित छत्रपति शिवाजी टर्मिनस देखने में बेहद खूबसूरत है। इसका निर्माण १८८७ में किया गया था और १९९६ में नाम बदलकर छत्रपति शिवाजी टर्मिनस किया गया। रेलवे स्टेशन का डिजाइन फ्रेडरिक विलियम्स स्टीवंस ने किया था। यहां रोज लगभग ३० लाख लोग आते हैं।

❋ वृंदावन में बन रहे विश्व के सबसे ऊंचे चंद्रोदय मंदिर की नींव बुर्ज खलीफा से गहरी होगी। बुर्ज खलीफा दुबई में है जो दुनिया में सबसे ऊंची इमारत है। इसकी ऊंचाई ८३० मीटर है।

बुर्ज खलीफा की नींव ५० मीटर गहरी है जबकि मंदिर की नींव ५५ मीटर है। नींव में ५११ स्तम्भ होंगे और इनका निर्माण अगले साल मार्च तक पूरा कर लिया जाएगा।

इनमें से १४० स्तंभों का निर्माण हो चुका है। बाकी निर्माणाधीन हैं। यह मंदिर अपनी ऊंचाई, वनों और थीम पार्क में लाइट और साउंड के साथ ही व्रज मंडल परिक्रमा शो और लेजर शो आकर्षण का केंद्र होंगे। इसके अलावा इस पार्क में यमुना क्रीक, म्यूजिकल फाउंटेन, दिन-रात नोक़ा विहार और बगीचे होंगे। इसके अलावा १२ वन मधुवन, तालवन, कुमुदवन, बहुलवन, काम्यावन, खादिरवन, वृंदावन, भद्रवन, बिल्ववन, लोहावन, भांडीरवन और महावन भी विकसित किए जाएंगे। इस्कॉन ने इस मंदिर के निर्माण का बीड़ा उठाया है।

इस पर ७०० करोड़ रुपये की लागत आने का अनुमान है। इसे २०२२ तक तैयार कर लिए जाने की उम्मीद है। यह दुनिया का सबसे ऊंचा मंदिर होगा और इसकी ऊंचाई करीब ७०० फीट या २१० मीटर होगी। यह नई दिल्ली में स्थित कुतुबमीनार (७२.५ मीटर) से तीन गुना ऊंचा होगा।

❋ अबूधाबी, यूएई- समुद्र के किनारे बनी यह इमारत किसी महल से कम नहीं है। इसका मुख्य भवन २० लाख वर्गफीट में है। कामकाज के लिए पास में छोटे विला हैं। इसके ठीक पास में अमीरात पैलेस होटल हैं, जो ७० करोड़ की ज्वैलरी वाले क्रिसमस ट्री के कारण चर्चा में आया था। ३ हजार करोड़ की लागत वाले इस राष्ट्रपति भवन को अबूधाबी की फर्म इवान आर्किटैक्चरल और ग्रीस की कन्स्ट्रक्शन फर्म ने बनवाया था। इसे सबसे महंगा राष्ट्रपति भवन भी कहा जाता है।

❋ अस्ताना, कजाकिस्तान- कजाकिस्तान में इसिल नदी के किनारे ८० मीटर ऊंची यह इमारत राष्ट्रपति का दफ्तर है, लेकिन उनका ऑफिशियल रेजीडेंस नहीं। राष्ट्रपति दफ्तर का स्टाफ यहीं रहता है। मात्र तीन साल में बनी इस इमारत में साल २००४ से काम शुरू किया गया था। इस बिल्डिंग के टॉप पर नीले और गोल्डन रंग का डोम है। खास पत्थरों से बनी इमारत पर नीले कांच और ठीक सामने फूलों का बड़ा बगीचा इसकी सुंदरता को दोगुना करता है। हर साल वो लाख से अधिक टूरिस्ट सिर्फ इस इमारत की खूबसूरती को निहारने के लिए आते हैं।

❋ ग्रैंड क्रेमलिन पैलेस, रूस - रूस की सत्ता का प्रमुख केंद्र और दुनिया का मशहूर ग्रेट क्रेमलिन पैलेस १२ सालों में (१८३७-१८४९) बनाया गया था। रूस मेंशाही घराने के आधिकारिक वास्तुकार कोन्स्टान्टिन थोन के देख-रेख में इसे स्वर्ण महल का रूप दिया गया था। अंदर-बाहर की दीवारों पर खूबसूरत नक्काशी इसका खास आकर्षण है। वैसे, यह

जार का निवास स्थान था। इसे बनाने के लिए बरोक पैलेस और एक चर्च को तोड़ा गया था। हालांकि, बाद में दूसरी चर्च बनाई गई, जो रूस की पहली चर्च मानी जाती है।

✻ प्राग, चेक गणराज्य- दुनिया के खूबसूरत शहरों में मशहूर प्राग में ९वीं सदी के कैसल (महल) को ही राष्ट्रपति भवन बनाया गया है। सबसे पुराना और बहुत ही बड़ा महल होने के कारण गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी इसका नाम है। मार्च १९३९ में सफर के दौरान एडोल्फ हिटलर ने भी यहां आराम फरमाया था। सोवियत संघ के खत्म होने से पहले कम्युनिस्ट सरकार यहीं से शासन चलाती थी। ७० हजार वर्गमीटर के इस महल में अलग-अलग हॉल हैं, जिनमें कई विभागों के दफ्तर हैं। कभी यह रोमन और बोहेमिया के राजाओं का महल हुआ करता था। इसके एक कमरे में बोहेमिया के राजा का रत्नों से जड़ा हुआ मुकुट सलामत है।

✻ ताइपे, ताइवान - चीन के पड़ोसी देश ताइवान के राष्ट्रपति भवन को जापानी शासन के दौरान बनाया गया था। आर्किटेक्ट यूहेजी नागानो ने इसकी डिजाइन में यहां के लोकल कल्चर को दिखाने की कोशिश की है। गृहयुद्ध खत्म होने के बाद १९५० में इसे राष्ट्रपति भवन बनाया गया था। ताइवान के गवर्नर जनरल का मेन ऑफिस और कुछ दफ्तर यहीं हैं। सेकंड वर्ल्ड वॉर के वक्त इसे काफी नुकसान पहुंचा था।

✻ वॉशिंगटन, अमेरिका - व्हाइट हाउस अमेरिकी राष्ट्रपति का ऑफिशियल रेजीडेंस और ऑफिस भी है। वॉशिंगटन के १६०० पेन्सिलवेनिया एवेन्यू एनडब्ल्यू के पतेवाली इस बिल्डिंग में साल १८८० में तत्कालीन राष्ट्रपति जॉन एडम्स के बाद से अब तक सभी राष्ट्रपति यहीं रहते आए हैं। अंदर से महल की तरह बनी इस इमारत के बाहर व्हाइट स्टोन और कलर के कारण इसे व्हाइट हाउस कहा जाता है। एक्का क्रीक सैंडस्टोन से बनी इस इमारत की डिजाइन नियो क्लासिकल कहलाती है।

✻ जो आपका जन्मदिन है वही दुनिया के करोड़ से अधिक लोगों का जन्मदिन है।

✻ हमारे शरीर में जानेवाली कुल ऑक्सीजन का पांचवां हिस्सा मस्तिष्क की कोशिकाओं द्वारा प्रयुक्त किया जाता है।

✻ अंग्रेजी का सेलरी शब्द लातीनी भाषा के शब्द सेल से बना है, जिसका अर्थ है नमक। प्राचीन रोम में नमक इतना कीमती तथा दुर्लभ था कि जूलियस सीजर अपनी सेना को वेतन के रूप में मुद्रा न देकर नमक देता था।

✻ एक टन यूरेनियम से उतनी ही ऊर्जा प्राप्त होती है जितनी कि ३०००० टन कोयले से।

✻ चन्द्र ग्रहण केवल पूर्णिमा को ही पड़ता है और पूरे वर्ष ३ चंद्र ग्रहणों से अधिक नहीं पड़ सकते।

✻ आज तक दर्ज रिकॉर्ड के अनुसार दुनिया की सबसे लंबी महिला सैंडी एलेन रही हैं, जिनकी लंबाई थी सात फुट सात इंच।

✻ इंसान द्वारा बनाए गए सबसे पुराने चित्र स्पेन और फ्रांस की गुफाओं में मिलते हैं, जो करीब १८००० वर्ष पुराने हैं।

✻ अमेरिका की वायुयान निर्माता कम्पनी लॉकहीड ने विश्व के सबसे बड़े वायुयान सी-५ ए गैलेक्सी मिलिट्री ट्रांसपोर्ट को प्रस्तुत किया था। यह जहाज ६ मंजिला था और फुटबॉल के मैदान जितना बड़ा था। यह ६४०० किलोमीटर की दूरी तक बिना रूके ९१ मीट्रिक टन वजन उठा सकता था। ओरविले तथा विल्बर राइट (राइट बंधु) बड़े आरामदायक ढंग से उसके कार्गो वे में अपनी पहली ऐतिहासिक उड़ान को अंजाम दे सकते थे। यह हवाई जहाज माल के लदाई तथा उतराई के लिए आगे-पीछे दोनों ओर से खुलता था और यह आसानी से छ: हैलीकॉप्टर्स या दो लड़ाकू टैंकों को ६७ मीट्रिक टन

के मोबबाइल ब्रिजों को या १५ मोबाइल अस्पतालों को उठा सकता था। इसका २८ पट्टियों वाला लैंडिंग गिअर इस तरह डिजाइन किया गया था कि यह उबड़-खाबड़ रनवे से उड़ान भर भी सकता था और वहां उतर भी सकता था। इस प्रकार इसका प्रयोग मुश्किल क्षेत्रों में चीजों की आपूर्ति हेतु या आपदाग्रस्त क्षेत्रों में राहत सामग्री पहुंचाने हेतु किया जा सकता था।

❋ विश्व की भाषाएं - यह भाषा यूरोप के जर्मनी, ऑस्ट्रिया तथा स्विट्जरलैंड में प्रमुखत: बोली जाती है, किंतु विद्वानों की भाषा के रूप में पूरे यूरोप में विशेषकर चेकोस्लोवाकिया, पौलेंड, नीदरलैंड, हंगरी, यूगोस्लाविया, स्वीडन और नार्वे में इसका प्रचलन है, जहां इसके बोलनेवालों की संख्या लगभग २ करोड़ है। पूरे विश्व में इसे बोलनेवालों की संख्या १२.३ करोड़ हैं।

उर्दू- यह भाषा मुख्यत: भारत तथा पाकिस्तान में बोली जाती हे। इसके अलावा अन्य मुस्लिम देशों में भी इसका प्रचलन है। पूरे विश्व में इसे बोलनेवाले लगभग १०.२ करोड़ लोग हैं।

पुर्तगाली- यह भाषा ब्राजील, पुर्तगाल तथा उसके पुराने उपनिवेशों में बोली जाती है। विश्व में इसे बोलनेवाले १८.४ करोड़ लोग हैं।

फ्रांसीसी- यह भाषा मुख्यत: फ्रांस, बेल्जियम, कनाडा तथा स्विटजरलैंड में बोली जाती है। सांस्कृतिक भाषा के रूप में यूरोप में इसकी प्रतिष्ठा है। विश्व में इसे बोलनेवाले कुल १२.५ करोड़ लोग हैं।

❋ संपूर्ण विश्व में २७९६ भाषाएं बोली जाती हैं। सबसे अधिक बोली जानेवाली भाषा है चीनी। चीनी के बाद अंग्रेजी और फिर हिंदी का क्रम आता है।

चीनी भाषा- यह भाषा विश्व के सबसे अधिक ११६.७ करोड़ा लोग बोलते हैं। इस भाषा का क्षेत्र चीन तथा मंचूरिया तक सीमित है।

अंग्रेजी- इस भाषा को बोलनेवाले विश्व में कुल ४७.८ करोड़ लोग हैं। यह भाषा यूं तो सारे विश्व में बोली जाती है, किंतु प्रमुखत: ब्रिटेन, अमेरिका, कनाडा, आयरलैंड, ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड में बोली जाती है। पश्चिमी गोलार्द्ध में इसके बोलनेवाले २० करोड़ लोग हैं जिनमें से ६ करोड़ से अधिक यूरोप में, २.५० करोड़ एशिया में तथा ५० लाख अफ्रीका में हैं।

हिंदी- हिंदी मुख्यत: उत्तरी भारत की भाषा है। इसके अलावा विश्व के अन्य देशों में भी इसके बोलनेवाले हैं। विश्व में कुल ४३.७ करोड़ लोग हिंदी बोलते हैं।

स्पेनिश- यह स्पेन तथा इसके पूर्व उपनिवेशों में प्रचलित है किंतु इन सबको मिलाने पर भी कुछ स्पेनिश भाषाओं का एक चौथाई भाग ही बनता है। शेष तीन-चौथाई पश्चिमी गोलार्द्ध में है जिसमें मैक्सिको, मध्य अमेरिका, क्यूबा, पोर्टोरिका, डोमिनिकल गणराज्य तथा सभी दक्षिण अमेरिकी देश शामिल हैं। पूरे विश्व में स्पेनिश को बोलनेवाले कुछ ३९.२ करोड़ हैं।

रूसी- विश्व के कुल क्षेत्र के छठे भाग में यह भाषा प्रचलित है। पूरे रूस में यह भाषा बोली जाती है।

अरबी- अफ्रीका से एशिया तक के एक बड़े क्षेत्र में यह भाषा बोली जाती है। यह भाषा उन सभी देशों में बोली व सीखी जाती है जहां इस्लाम का प्रचार हुआ है। विश्व में इसे बोलनेवाले लगभग २२.५ करोड़ लोग हैं।

❋ द्वितीय विश्वयुद्ध में धातु की कमी के कारण ऑस्कर पुरस्कार की ट्रॉफी प्लास्टर से बनाई जाती थी।

❋ अब तक ४२ अमेरिकी राष्ट्रपतियों में से आधे आइरिश मूल के रहे हैं।

❋ विश्व की तेरह प्रतिशत आबादी रेगिस्तानों में रहती है।

❋ वियना में स्थित शोनब्रून चिड़ियाघर विश्व का सबसे पुराना चिड़ियाघर है। इसका निर्माण १७५२ में किया गया था।

❋ चीन का डाबानचेंग विंड फार्म एशिया के सबसे बड़े विंड फार्म्स में से एक है।

❋ भोपाल गैस त्रासदी के दो दशक से भी अधिक समय बीत जाने के बाद आज भी वहां हर चौथा बच्चा मृत पैदा होता है।

❋ कारों, ट्रकों, ट्रेनों और हवाई जहाजों के शोर से भी कई लोग बीमार पड़ जाते हैं।

❋ यदि वर्तमान की तरह ही इसकी खपत होती रही तो कोयले की खानें लगभग २०० वर्ष ही चलेंगी। कच्चा तेल और प्राकृतिक गैस सिर्फ ६० वर्ष तक ही चलेंगे।

❋ अंगूठे के नाखून में वृद्धि जहां धीरे-धीरे होती है, वहीं मध्य की उंगली के नाखून में वृद्धि सबसे ज्यादा तीव्र गति से होती है।

❋ स्वप्नावस्था में जहां एक सामान्य व्यक्ति भिन्न-भिन्न नजारे देखता है, वहीं जन्म से नेत्रहीन व्यक्ति स्वप्नावस्था में सिर्फ आवाजें सुनते हैं।

❋ बायें हाथ से काम करनेवाले व्यक्तियों के दिमाग का दायां भाग दूसरे भाग की तुलना में अधिक सक्रिय होता है।

❋ गुरुद्वारा हरमिंदर साहिब सिंह, पंजाब - अमृतसर के इस गुरुद्वारा हरमिंदर साहिब सिंह को श्री दरबार साहिब और स्वर्ण मंदिर के नाम से भी जाना जाता हैं। मान्यताओं के अनुसार, इस गुरुद्वारे को बचाने के लिए महाराजा रणजीत सिंह जी ने इसके ऊपरी हिस्से को सोने से ढंक दिया था, इसलिए इसे स्वर्ण मंदिर का नाम भी दिया गया था।

गुरुद्वारा श्री हेमकुंड साहिब, उत्तराखंड - गुरुद्वारा श्री हेमकुंड साहिब उत्तराखंड के चमोली जिले में है। यह गुरुद्वारा समुद्र स्तर से ४००० मीटर की ऊंचाई पर है। बर्फबारी के कारण यात्रियों की सुरक्षा के लिए इसे अक्टूबर से अप्रैल तक बंद कर दिया जाता है। यह गुरुद्वारा बेहद सुंदर होने के साथ-साथ एक बहुत ही अच्छी वास्तु कला का भी उदाहरण है।

हुजूर साहिब गुरुद्वारा, महाराष्ट्र - हुजूर साहिब सिखों के ५ तख्तों में से एक है। यह महाराष्ट्र के नांदेड़ में गोदावरी नदी के किनारे स्थित है। इसमें स्थित गुरूद्वारा सच खण्ड कहलाता है। गुरुद्वारे के भीतर के कमरे को अंगिथा साहिब कहते हैं। माना जाता है कि इसी स्थान पर १७०८ में गुरु गोबिंद सिंह का अंतिम संस्कार किया गया था।

गुरुद्वारा पांवटा साहिब, हिमाचल प्रदेश - पांवटा साहिब गुरुद्वारा दसवें गुरु श्री गुरु गोबिंद सिंह जी को समर्पित है। यह हिमाचल प्रदेश के सिरमौर जिले में स्थित है। इसी जगह पर गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने जीवन के चार साल बिताए और इसी जगह पर दशम ग्रन्थ की रचना की।

सीस गंज गुरुद्वारा, दिल्ली - यह दिल्ली का सबसे पुराना और ऐतिहासिक गुरुद्वारा है। यह गुरु तेग बहादुर और उनके अनुयायियों को समर्पित है। इसी जगह गुरू तेग बहादुर को मौत की सजा दी गई थी, जब उन्होंने मुगल बादशाह औरंगजेब के इस्लाम धर्म को अपनाने के प्रस्ताव को ठुकरा दिया था। यह गुरुद्वारा १९३० में बनाया गया था।

❋ मेसेडोनिया - मेसेडोनिया की नागरिकता पाना दुनिया में सबसे आसान है। यदि आप यहां पर व्यवसाय करते हैं

और आपने ४ लाख यूरो इन्वेस्ट कर रखा है तो आपको एक साल के अंदर मेसेडोनिया की नागरिकता मिल सकती है।

पनामा - एक मेडिकल टेस्ट पास करने और पांच साल तक पनामा में रहने के बाद आपको यहां कि नागरिकता मिल सकती है। इसे अलावा यदि आप किसी भी पनामा की नागरिकता प्राप्त महिला या पुरुष से शादी करते हैं तो यहां की सिटिजनशिप और जल्दी मिल जाएगी।

पराग्वे - पराग्वे की नागरिकता पाने के लिए आपको पहले ५ हजार २ सौ डॉलर पैराग्वियन बैंक में जमा कराने होंगे। इसके तीन साल बाद आप यहां की परमानेंट नागरिकता के लिए अप्लाई कर सकते हैं।

सेशेल्स - समुद्र और पहाड़ों से घिरा सेशेल्स रहने के लिए बहुत खूबसूरत जगह है। यहां की नागरिकता भी बड़ी आसानी से मिल जाती है। इसके लिए आपके पास डेढ़ लाख सेशेल्स करेंसी होनी चाहिए। इसके अलावा यहां के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक लाइफ में आपका योगदान होना अनिवार्य है।

✻ ननचार मंदिर, चीन - ननचान बौद्ध मंदिर डाउचन गांव वूथाईशन के शांक्सी प्रांत, चीन में है। यह ७८२ ईस्वी में बनाया गया था। तांग राजवंश में इसका निर्माण लड़कियों से किया गया था। वास्तु के हिसाब से इसे इतिहास की महत्वपूर्ण इमारत माना जाता है। मंदिर के हॉल में १७ मूर्तियां रखी हुई हैं। इसमें सबड़े बड़ी मूर्ति शाकयामुनी की है।

✻ अमेरिका और बर्तानिया देशों में मुजरिमों के डीएनए का रिकॉर्ड रखा जाता है।

✻ डीएनए टेस्ट के लिए खून, पेशाब और गाल के अंदरूनी हिस्से की परत ली जाती है।

✻ हर शख्स के डीएनए का फिंगर प्रिंट अलग-अलग होता है, सिवाय हमशक्ल जुड़वा बच्चों के, क्योंकि ऐसे बच्चों के जीन्स १००% एक जैसे होते हैं।

✻ हिंद की चादर गुरु तेग बहादुर जी को कहा जाता है।

✻ भारत का नैपोलियन समुद्र गुप्त को कहा जाता है।

✻ भारत के प्रथम शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद थे।

✻ पहला परमवीर चक्र सम्मान मेजर सोमनाथ शर्मा को मिला था।

✻ भारत की पहली महिला राज्यपाल सरोजिनी नायडू थीं।

✻ महात्मा बुद्ध ने कुशीनगर में निर्वाण प्राप्त किया था।

✻ द्रोणाचार्य पुरस्कार सन १९८५ में आरम्भ हुआ था।

✻ रोमान साम्राज्य की निशानियों में मशहूर है अमान का यह थियेटर - जॉर्डन की राजधानी अमान स्थित रोमन एम्फी थियेटर की यह फोटो ब्रिटिश मूल के आफशीन रोहानी ने क्लिक की है, जो शहर का मुख्य आकर्षण है। वे कहते हैं, इस थियेटर का अब भी उपयोग होता है, लेकिन केवल स्थानीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए। बाकी दिनों में यहां पर्यटक एवं स्थानीय लोग देखे जा सकते हैं। टीले पर बने इस थियेटर में ६००० लोगों के बैठने की क्षमता है।

✻ शाही मुकुट - मुकुट खुले एवं बंद दो प्रकार के बनाए जाते थे। खुले मुकुट खूबसूरत रूप लिए होते थे पर बन्द मुकूट सिर को पूरी तरह बंद या ढंक लेते थे। ज्यादातर बंद मुकुट ही प्रचलन में रहे हैं। मुकुट का इतिहास भी विचित्रता तथा रोचकता से भरा रहा है जैसे- प्राचीन यूनान में युद्ध जीतनेवाले योद्धाओं तथा ओलम्पिक खेलों में विजयी खिलाड़ियों को

जैतून की पत्तियों का बना ताज पहनाया जाता था।

रोम की सेना जब किसी देश को जीतकर लौटती थी तो सबसे आगे एक रथ में विजित राजा का मुकुट रखा होता था। युद्ध जीतनेवाले सेनापति को मिलनेवाला सबसे बड़ा सम्मान था, कोरोना ओबसीडियोनालिस नामक मुकुट जिसे विजित देश में उगी घास से बुनकर बनाया जाता था।

बाइजेंटाइन सम्राटों का मुकुट हीरे एवं मोतियों से जड़ी रेशम की टोपी जैसा होता था। लम्बार्डी के लौह मुकुट के भीतर लोहे का बना छल्ला लगा था जो प्रभु ईसा मसीह को सूली पर लटकाए जाते वक्त उनके हाथ-पांवों में ठोंकी गई कीलों से बना था। जब उसने इटली को जीता एवं स्वयं को इटली का सम्राट घोषित किया तो उसने भी इसी मुकुट को धारण किया था।

१३२८ में जब बवेरिया मे राजा लुईस की ताजपोशी हुई तो उसने धार्मिक कारणों की वजह से लोहे का बना मुकूट ही पहना था। सम्राट चार्ली मैग्री के मुकुट में छोटी-छोटी धार्मिक उपदेशवाली तस्वीरें बनी हुई थीं।

सेण्ट स्टीफन के मुकुट को हंगरी के सिंहासन पर बैठनेवाले ५० सम्राटों ने पहना था यानी यह मुकुट नो सौ साल तक पहना गया।

चार्ल्स चतुर्थ की बहन मार्गरेट का विवाह जब बरगंडी के ड्यूक से हुआ तो विवाह के अवसर पर मार्गरेट के लिए जो मुकुट बनाया गया उस पर मार्गरेटका लिखा था।

तुर्की के सुल्तान के मुकुट का ढांचा लकड़ी का बना था जिस पर चांदी एवं सोने की चादरों को मढ़कर हीरे लगाए गए थे।

फारस के सत्रहवीं शताब्दी के राजा ने सोने के महीन तारों से बना चिमनीनुमा मुकुट बनवाया था।

ईरान के अपदस्थ शहंशाह राजा शाह पहलवी आर्य मेहर के मुकुट में लगे हीरे दुनिया के सबसे कीमती हीरे माने जाते हैं।

ब्रिटिश शासक रिचर्ड कोर दे लॉयन का मुकुट इतना भारी था कि दो सेवक इसे शासक के सिर पर उठाए रखते थे।

ब्रिटिश शासक एडवर्ड द्वितीय के पास सोने के नौ एवं चांदी का एक मुकूट था।

* पृथ्वी पर एक इंच मिट्टी की ऊपरी परत के बनने में लगभग १००० वर्ष लगते हैं।
* गूगल से १० अरब से अधिक पेज जुड़े हुए हैं, जो हर १९ महीने में दुगने हो जाते हैं।
* कांच के टूटते समय कांच के कण ३००० मील प्रति घंटा की गति से चटकते हैं।
* मिकी माउस के रचयिता वॉल्ट डिजनी को चूहों से डर लगता था।
* पट्टियां - ठंडा जल अनेक रोगों में जादुई प्रभाव छोड़ता है। उंगली कट जाए, जल जाए, दब जाए तो ठंडे पानी की पट्टी तुरंत बांधनी चाहिए। किसी कीड़े या बिच्छू ने काटा हो, तो ठंडी गीली मिट्टी की पट्टी बांधी जा सकती है। मिट्टी का स्पर्श शरीर से होना चाहिए। मिट्टी की पट्टी पेडू पर जादू करती है। प्राकृतिक चिकित्सा में रोगी का उपचार पेडू पर मिट्टी की पट्टी से ही शुरू होता है। मिट्टी काली, पीली, दोमट, चिकनी कैसी भी हो, परंतु वह गंदी जगह की या खेत की खादवाली न हो। नदी के पास की अथवा तालाब की मिट्टी सबसे अच्छी होती है। उसमें कूड़ा-कचरा, कंकर या कठोर बजरी के कण न हों। मिट्टी को कूट-छानकर मिट्टी के कुंड में भिगोना चाहिए तथा मोटे कपड़े अथवा साफ टाट की पट्टी पर लकड़ी के पलटे से फैलाना चाहिए।
* रेडियो पर पहली बार भाषण देनेवाले पहले अमेरिकी राष्ट्रपति वारेन जी. हार्डिंग थे।

❋ टॉन्सिल्स मुंह के जरिए शरीर में आ घुसनेवाले पदार्थों को रोकने का काम करता है।

❋ भारत के केवल तीन राष्ट्रीय पर्व हैं- १५ अगस्त, २६ जनवरी और गांधी जी की जयंती २ अक्तूबर।

❋ संयुक्त राष्ट्र ने २ अक्तूबर को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस घोषित किया है।

❋ टाइम मैगजीन ने गांधी जी को १९३० के लिए मैन ऑफ द इयर चुना था। मैगजीन ने आइंस्टाइन को सदी का पुरुष चुना था और गांधी जी को दूसरे नंबर पर रखा था।

❋ आइंस्टाइन गांधी जी को बहुत मानते थे। १९३० में दोनों के मध्य पत्रों द्वारा संवाद भी हुए। गांधी जी ने आइंस्टाइन को भारत आने का न्यौता भी दिया था, मगर काम की व्यस्तता के कारण वह भारत आ न सके।

❋ पेटेंट एक ऐसी व्यवस्था है जिसके अंतर्गत किसी भी नयी खोज से बननेवाले उत्पाद पर उसे बनानेवाले या उसकी खोज करनेवाले को एकाधिकार दिया जाता है। उसके बाद कोई भी उस उत्पाद को न बना सकता है न बेच सकता है। अगर बनाना चाहे तो उसे अनुमति पत्र लेना पड़ेगा और उसपर रॉयल्टी देनी होगी। इस पेटेंट की अवधि पहले हर देश ने अपने-अपने हिसाब से तय की हुयी थी, लेकिन अब विश्व व्यापार संगठन ने उसे बीस साल कर दिया है। इसके साथ प्रोसेस पेटेंट भी होता है जिसका संबंध नयी प्रौद्योगिकी से है। किसी भी नयी तकनीक पर भी पेटेंट लिया जा सकता है। पेटेंट लेने के लिए अर्जी के साथ-साथ अपनी नयी खोज का ब्योरा देना होता है। पेटेंट कार्यालय उसकी जांच के बाद, अगर वह उत्पाद या टेक्नोलॉजी नयी है तो, पेटेंट का आदेश जारी करता है।

❋ खजुराहो के मंदिर - खजुराहो के मंदिर मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले के एक छोटे गांव में स्थित हैं। ये मंदिर बीस शानदार मंदिरों का समूह हैं। इन मंदिरों की विशेषता है उनकी सुंदर मूर्तियां। इनका निर्माण दसवीं शताब्दी में हुआ था। इन मंदिरों की मूर्तियों में जीवन के नौ रसों (भावों) को साकार किया गया है। ये नौ रस हैं - श्रृंगार, हास्य, करुण, शांत और अद्‌भुत। ये मंदिर विश्व संपदा की श्रेणी में शामिल है।

९५० से १०५० ईसवी सन् के बीच चंदेला राजाओं ने कुल ८५ मंदिरों का निर्माण किया था। ईसवीसन ११०० के बाद चंदेला राजाओं का पतन हुआ। उनके बाद इन मंदिरों की देखभाल ठीक ढंग से नहीं की गई और ये मंदिर उपेक्षा के अंधकार में खो गए। परिणामस्वरूप ये घने जंगलों के बीच समा गए।

सन १८०९ में ब्रिटिश सेना के एक सर्वेक्षक कॉर्नेट जेम्स फ्रैंकलीन ने इनकी खोज की थी लेकिन दुर्भाग्य से उसकी रिपोर्ट में लिखें अंग्रेजी शब्द रूईन्स को माइनस के रूप में लिया गया और सन १८३८ तक उसे भुला दिया गया। दूसरी बार रॉयल बंगाल इंजीनियर के एक ऑफिसर कैप्टन टी.एस. बर्ट ने इन्हें दोबारा खोजा। सन १९५० के बाद ये मंदिर पर्यटकों का आकर्षण बने।

यहां के प्रसिद्ध मंदिर हैं लगभग मंदिर और पार्श्वनाथ मंदिर (९५४ ईसवी सन) चित्रगुप्त और देवी जगदंबी मंदिर (१००० ईसवी सन) कंदरिया (१००० ईसवी सन) कंदरिया महादेव मंदिर (१०२० ईसवी सन्) इनमें कंदरिया महादेव का मंदिर सबसे प्रसिद्ध है। यह तीस मीटर ऊंचा है और इसमें ८७२ मूर्तियां हैं। हर वर्ष मार्च के महीने में देश के प्रसिद्ध संगीत कलाकार यहां आयोजित होनेवाले एक संगीत-नृत्य समारोह में भाग लेते हैं। सन् १९९९ में इन मंदिरों ने अपने निर्माण के एक हजार वर्ष पूरे किए।)

✻ दुनिया का सबसे महंगा शहर लंदन - रहने और काम करने के लिहाज से लंदन दुनिया का सबसे महंगा शहर है और न्यूयार्क तथा हांगकांग से भी आगे है। वहीं मुंबई इस मामले में १७ वें स्थान पर है। ब्रिटेन की जमीन जायदाद के विकास से जुड़ी साविल्स के सर्वे में कहा गया है कि सूची में शीर्ष २० शहरों की सूची में भारत का एक मात्र शहर मुंबई है। मुंबई १७ वें स्थान पर है और बर्लिन, जोहानिसबर्ग और रियो डी जिनेरियो से ऊपर है।

✻ पहला ज्ञानपीठ पुरस्कार १९६५ में मलयलम कवि गोविन्द शंकर कुरूप को दिया गया था।

✻ घर घर में गाई जानेवाली आरती ओम जय जगदीश हरे के रचयिता पं. श्रद्धाराम शर्मा थे।

✻ बाबर अपने समय की सामान्य रूप से बोली जानेवाली भाषा फारसी में प्रवीण था, पर उसकी मातृभाषा चागताई थी और उसने अपनी आत्मकथा बाबरनामा चागताई में ही लिखी।

✻ कैलेंडर कैसे-कैसे - दुनिया के अधिकांश देश जॉर्जियन/क्रिश्चियन कैलेंडर का इस्तेमाल कर रहे हैं, जिनमें १२ महीनों का साल होता है। १५८२ ईस्वी में पोप ग्रेगोरी ने यह पंचांग प्रचलित किया था। पहले जुलियन कैलेंडर इस्तेमाल होता था।

हिंदू पंचांग चंद्र, नक्षत्र और सूर्य पर आधारित है। भिन्न-भिन्न रूपों में यह पूरे देश में प्रचलित है। इसमें भी १२ महीने होते हैं। हर माह में १५-१५ दिन के दो पक्ष होते हैं, जिन्हें शुक्ल और कृष्ण पक्ष कहा जाता है।

इस्लामी कैलेंडर (हिजरी) चांद पर आधारित होता है। यह न सिर्फ मुस्लिम देशों में प्रयोग होता है बल्कि इसे पूरे विश्व के मुस्लिम इस्लामिक पर्वों को मनाने का सही समय जानने के लिए प्रयोग करते हैं।

✻ शुरुआत में फोन उठाने पर हेलो नहीं कहा जाता था। १८७८ में अमेरिका में पहली फोन सर्विस शुरू होने के बाद लोग बातचीत की शुरुआत अहॉय शब्द से करते थे।

✻ बैगपाइपर का आविष्कार ईरान में हुआ और रोमन उसे स्कॉटलैंड तक ले आए।

✻ चांद पर जानेवाला अपोलो ११ यान जिस वक्त जमीन पर उतरा था, उस समय उसके पास केवल ११ सेकेंड का ईंधन बचा था।

✻ अगर कोई बड़ा हादसा नहीं होता, तो सूरज ४.४ अरब साल तक हमें गर्मी और रोशनी पहुंचाता रहेगा यानी पृथ्वी पर जीवन रहेगा।

✻ कश लगाते वक्त जलती हुई सिगरेट की टिप का तापमान ७०० डिग्री सेल्सियस होता है। हालांकि बीच में इसका तापमान कम हो जाता है।

✻ आम मान्यता से उलट रेड वाइन और व्हाइट वाइन क्रमश: लाल एवं सफेद अंगूरों से नहीं बनती। कुछ व्हाइट वाइन लाल अंगूरों से बनती हैं।

✻ अधिकांशत: सपनों की अवधि पांच से बीस मिनट तक की होती है।

✻ दुनिया में चावल की पंद्रह हजार से अधिक किस्में हैं।

✻ अचआईवी एड्स का पहला संक्रमण १९३० के दशक में सामने आया था।

✻ इंसान की दाढ़ी के बाल एक वर्ष में १४० मिलीमीटर बढ़ते हैं।

✻ विंडोज २००० का कोड प्रोग्राम २९ मिलियन पंक्तियों का था।

✻ रेटीना १२० मिलियन रॉड कोशिका से बनी होती है।

✻ फ्रेंच भाषा में सरेंडर शब्द के सत्रह अर्थ होते हैं।

✻ मानव की तुलना में बिल्ली छह गुना बेहतर देख सकती है।

✻ फ्लोरिडा में घोड़ा चोरी करने पर फाँसी की सजा हो सकती है।

✻ एरिजोना में ऊँट का शिकार करना अवैधानिक है।

✻ लगभग २५०० लेफ्ट हैंडेड लोग ऐसे उपकरणों का इस्तेमाल करते हुए मारे जाते हैं जो राइट हैंडेड के लिए बनाये जाते है।

✻ जहाँ एक ओर चीन पूरी दुनिया को यह बताना चाहता है कि वो महान है, वहीं दूसरी ओर चीन के लगभग ३ करोड़ लोग गुफा जैसे घरों में रहते हैं।

✻ ऑस्ट्रेलिया के लोग घर का बल्ब खुद नहीं बदल सकते हैं। इसके लिए उन्हें एक इलेक्ट्रीशियन को ही बुलवाना होगा।

✻ दुनिया में करीब ६३ करोड़ इन्सान ऐसे हैं जो अपना देश छोड़कर दूसरे देश में स्थायी रूप से बसना चाहते हैं।

✻ मानव शरीर में इतना कार्बन होता है कि उससे ९०० पेंसिलें बनाई जा सकती हैं। इतना फास्फोरस होता है कि उससे २०० माचिस बॉक्स बनाई जा सकें और इतना पानी होता है कि दस गैलन का एक टैंक पूरी तरह भर जाए।

✻ संयुक्त राज्य अमेरिका में दस हजार से अधिक गोल्फ कोर्स हैं।

✻ लास वेगास के जुआघरों में घड़ियां नहीं हैं।

✻ कनाडा पोस्ट ने १ फरवरी १९६९ को शनिवार को डाक बांटना बंद कर दिया था।

✻ प्रतिदिन २० बैंक लूटे जाते हैं। प्रति डकैती औसतन २५०० डॉलर लूटे जाते हैं।

✻ प्रत्येक ११ मिनट में अमेरिका में एक औरत की मृत्यु स्तन कैंसर से होती है।

✻ चीन में अमेरिका से ज्यादा अंग्रेजी बोलनेवाले लोग हैं।

✻ प्रत्येक व्यक्ति अपने जन्मदिन को ९ मिलियन दूसरे लोगों के साथ शेयर करता है।

✻ औसतन एक व्यक्ति दिन में पंद्रह बार हंसता है।

✻ मानव शरीर का रक्त समूचे शरीर के भार का सात प्रतिशत होता है।

✻ दुनिया के सबसे पुराने आभूषण ३५०० वर्षों से अधिक पुराने हैं।

✻ न्यूजीलैंड में जीवित प्राणियों के प्रतिशत में करीब पांच प्रतिशत इंसानों की आबादी है, शेष जानवर हैं। इस हिसाब से वहां पशुओं की दर दुनिया के किसी भी देश से अधिक है।

✻ कुछ किस्म के बांस के पेड़ एक दिन में एक मीटर तक बढ़ जाते हैं।

✻ सबसे बड़ा सोलर पॉवर प्लांट- कामुथी, तमिलनाडु के दक्षिण भारतीय राज्य का एक छोटा शहर है। यहां दुनिया का सबसे बड़ा सोलर प्लांट है। वह कैलिफोर्निया के टोपाज सोलर फार्म से भी जल्दी, केवल ८ महीनों में बनाया गया था।

✻ सबसे ज्यादा पेड़ एक दिन में लगाए गए- यह बहुत विडंबना की आत है कि भारत देश, जो अधिक प्रदूषित शहरों का घर है वहां वायु परिवर्तन से लड़ने के लिए एक दिन में पूरी दुनिया से अधिक संख्या में पेड़ लगाए गए। इलाहाबाद में

८,००,००० से अधिक लोगों ने एक ही दिन में लगभग ५० मिलियन पौधे लगाए थे।

✻ वाइट रिवॉल्यूशन को दुग्ध क्रांति के नाम से भी जानते हैं। इसमें दूध और डेरी प्रोडक्ट्स आते हैं। गुजरात के आणंद जिमे में आणंद मिल्क यूनियन लिमिटेड (अमूल) का ऑपरेशन फ्लड इसका सबसे प्रमुख अंग है।

अमूल के संस्थापक डॉ. वर्गीस कुरियन को फादर ऑफ वाइट रिवॉल्यूशन के नाम से भी जाना जाता है।

इस रिवॉल्यूशन के बाद से हमारा देश मिल्क प्रोडक्शन में इतना स्वतंत्र हो गया कि हमारी गिनती दुनिया के दूध निर्यातकों में की जाने लगी। आज भारत दुनिया के सबसे बड़े दूध उत्पादक के साथ-साथ दूध निर्यातक भी है।

✻ लाइका नामक कुतिया पहली जानवर थी जिसे अंतरिक्ष में भेजा गया था। ३ नवम्बर १९५७ को जब तत्कालीन यू.एस.एस.आर. द्वारा स्पूतनिक - २ नामक अंतरिक्ष यान छोड़ा गया तो लाइका को उसमें भेजा गया परन्तु उसे वापस पृथ्वी पर लाने का कोई उपाय नहीं था इसलिए अंतरिक्ष में दस दिन बिताने के बाद उसकी मृत्यु हो गई थी।

✻ एबल (एक मादा रीसस बंदर) तथा बेकर (एक मादा स्किरल बंदर) पहले बंदर थे जिन्हें २८ मई १९५९ को अमेरिका द्वारा अंतरिक्ष में भेजा गया था। ये दोनों अपना भ्रमण पूरा नहीं कर पाए और सफलतापूर्वक पृथ्वी पर लौट आए। इसी तरह २९ नवम्बरी १९६१ को इनोस नामक एक नर चिम्पैंजी ने अंतरिक्ष में अपने दो भ्रमण पूरे किए और वह सकुशल पृथ्वी पर लौट आया।

✻ ९ नवम्बर १९७० को अमेरिका के ऑर्बिटिंग फ्रॉग ओटोलिथ सैटेलाइट (ओ.एफ.ओ-ए) में अरबेला नामक एक ऑर्ब-वीविंग गार्डन स्पाइडर यानी मकड़ी का प्रवेश हुआ था। इस मकड़ी ने अंतरिक्ष भ्रमण करते हुए ६० दिन बिताए थे। उसे यह जानने के लिए अंतरिक्ष में भेजा गया था कि वजन न होने का उसके जाल बुनने पर क्या प्रभाव पड़ता।

✻ स्पेस शटल कोलम्बिया (१७ अप्रैल से ३ मई १९९८ के दौरान संचालित) के एस.टी.एस. ९० नामक मिशन में एक न्यूरोलैब भी शामिल थी जिसमें चूहे के १७० बच्चे, १८ वयस्क चूहे, २२९ स्वोर्डटेल मछलियां, १३५ घोंघे, चार ऑयस्टर टोड फिश और झींगुर के १५१४ अंडे तथा लार्वा मौजूद थे।

✻ नर हिरण के सींग, नर मोर के सुंदर पंख एवं नर हाथी के दांत होते है।

✻ पानी में रहनेवाले बैक स्विर्स नामक कीड़े उल्टे होकर तैरने में माहिर होते है। ये कीड़े उड़ने में भी उतने ही कुशल होते हैं। तैरने में अपने अंगों के बजाय टांगों का इस्तेमाल करते हैं।

✻ विटामिन ए के जैविक उरूप (एनिमल फॉर्म) को रैटीनोल कहते हैं।

✻ स्नैलन चार्ट से नजर का फॉर्म टेस्ट किया जाता है।

✻ एक सेकेंड में १ बिलियन नैनो सेकंड्स होते हैं।

✻ २० वीं शताब्दी के १९६० के दशक में अर्थशास्त्र के लिए पहली बार नोबेल पुरस्कार दिया गया था।

✻ भारतीय गणतंत्र को राष्ट्रीय भाषा में भारत गणराज्य कहा जाता है।

✻ तरल तथा ठोस ऑक्सीजन का रंग पीला नीला होता है।

✻ लेबनान देश के झंडे के मध्य में एक देवदार का वृक्ष है।

✻ सैन फ्रांसिस्को में कबूतरों को खाना खिलाना गैर कानूनी है।

❋ अगर आप लास वेगास के गैम्बलिंग कैसीनो में जाएंगे तो पाएंगे कि वहां कोई घड़ी नहीं है।

❋ दिमाग शरीर के पूरे ऑक्सीजन का लगभग एक चौथाई हिस्सा उपयोग में लाता है।

❋ व्यक्ति की नाक और कान उम्रभर बढ़ते रहते हैं।

❋ छोटे शिशु एक मिनट में एक या दो बारी ही पलक झपकाते हैं, वहीं बड़े लगभग एक मिनट में १० बार पलक झपकाते हैं।

❋ लगभग २००० विभिन्न पौधों की खेती मनुष्य भोजन प्राप्त करने के लिए करता है।

❋ एक सेब में लगभग १३० कैलोरी ऊर्जा होती है।

❋ विश्व में तकरीबन ३३ प्रजातियों की लगभग ५०० घरेलू बिल्लियां है।

❋ अर्जेंटिना के न्यूफाउंडलैंड में औसतन २०६ दिन धुंआ रहता है।

❋ बाज और चील के देखने की शक्ति मानव की तुलना में तीन गुना बेहतर है।

❋ सन १९९४ में ओबेसिटी जीन्स (मोटापा बढ़ानेवाली जीन्स) की खोज के बाद अब तक वैज्ञानिकों को मोटापा बढ़ानेवाली ५० अन्य जीन्स का पता चल चुका है।

❋ भारत से करीब ९० देशों को सॉफ्टवेयर का एक्सपोर्ट किया जाता है।

❋ वर्ष १८९६ तक भारत विश्व में हीरे का एक मात्र स्रोत था।

❋ भातर में चार धर्मों का जन्म हुआ- हिंदु, बौद्ध, जैन और सिक्ख धर्म और जिनका पालन दुनिया की आबादी का २५ प्रतिशत हिस्सा करता है।

❋ धड़कन के अप-डाउन से बीमारी समझता है डॉक्टर का स्टेथोस्कोप

स्टेथोस्कोप एक ऐसा उपकरण होता है, जिसका उपयोग रोगी के रक्तसंचार की दशा तथा हृदय संबंधी रोगों की जांच के लिए किया जाता है। यह एक ग्रीक शब्द है, जिसमें स्टेथोस का मतलब चेस्ट होता है, तथा स्कोप का मतलब परीक्षण करना। यह उपकरण रोगी के हृदय से आनेवाली आवाजों को एक खोखले ट्यूब की सहायता से चिकित्सक के कानों तक स्पष्ट रूप से पहुंचाता है।

इसमें दो भाग होते हैं - स्टेथोस्कोप में दो भाग होते हैं, एक डायफ्राम जिसका उपयोग अधिक तीव्रता की ध्वनि को सुनने के लिए किया जाता है। दूसरा बेल, जिसका उपयोग कम तीव्रता की ध्वनि सुनने के लिए किया जाता है। इन दोनों भागों से आनेवाली ध्वनि को चिकित्सक के कानों तक लाने का काम खोखले ट्यूब के द्वारा होता है।

किस तरह करता है काम- हृदय के धड़कने से निकलने वाली ध्वनि को डॉक्टर स्टेथोस्कोप द्वारा सुनकर रोगों का परीक्षण करते हैं। हृदय के धड़कने से लब डब दो तरह की आवाजें आती हैं, इन्हीं आवाजों का परीक्षण डॉक्टर करता है। इसमें लब का मतलब है - जब रक्त अलिंद से निलय में जाता है। इसे प्रथम हृदय ध्वनि कहा जाता है, तथा डब को दूसरी हृदय ध्वनि कहा जाता है, जब सेमिलुनर वॉल्व बंद होता है, तथा रक्त फेफड़े के वॉल्व में जाता है। कभी-कभी नौजवानों में तीसरी हृदय ध्वनि सुनाई देती है, जो दूसरे हृदय ध्वनि के बाद ०.१-०.२ सेकंड्स के लिए उत्पन्न होती है।

❋ आज दुनिया की आबादी दिन ब दिन बढ़ती जा रही है लोगों की रहने की जगह कम होती जा रही है, इससे लोगों को

अपनी रहने का तरीका बदलना पड़ रहा है और वह छोटे छोटे घरों में रहने पर मजबूर हैं। ऐसे में वारसना, पोलैंड शहर के अंदर एक ऐसा घर है जो दुनिया का सबसे स्लिम हाउस है। इस घर की सबसे कम चौड़ाई ९२ सेंटीमीटर (३.०२ फीट) और अधिकतम चौड़ाई १५२ सेंटीमीटर (४.९ ९ फीट) है और यह दो मंजिला घर है जिसके अंदर सभी सुविधाएं उपलब्ध हैं। इसे कैरट हाउस के नाम से जाना जाता है। यह दो इमारतों के बीच के अंदर पतली सी जगह में बना हुआ है यह आर्किटेक्चर फर्म सेंट्रला के कहने पर डिजाइन किया गया था। इस घर के अंदर बेडरूम किचन बाथरूम लिविंग रूम सब कुछ बनाया हुआ है और इस घर के अंदर एक मंजिल से दूसरी मंजिल पर जाने के लिए खड़ी सीढ़ियों का सहारा लेना पड़ता है और यह घर पर्यटकों के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है। लोग बाहर से इस घर को देखने आते हैं।

❋ चॉकलेट्स ककाओ पेड़ से पाए जानेवाले बींस से बनाई जाती हैं। ये बींस काफी कड़वे होते हैं। चॉकलेट्स में चाय, कॉफी अथवा कोका कोला की अपेक्षा कैफीन की मात्रा कम होती है। अमेरिका में चॉकलेट सबसे ज्यादा पसंद की जाती है। पूरी दुनिया में खपत होनेवाली चॉकलेट का ५० फीसदी अमेरिका में खपत होती है। स्विटजरलैंड के निवासी सबसे ज्यादा चॉकलेट्स का सेवन करते हैं और अनुमानत: एक व्यक्ति औसतन १९१ एलबीएस चॉकलेट खा लेता है। चॉकलेट में थियोब्रोबीन पाया जाता है, जो कैफीन अथवा मैग्नीशियम की तरह ही होता है। बेल्जियम में लगभग १७००० लोग चॉकलेट बनाने वाली इंडस्ट्री में काम करते हैं। साधारणत: एक वर्ष में ७ बिलियन चॉकलेट्स चिप्स का सेवन लोग करते हैं।

❋ स्वाद का अहसास हमें जीभ द्वारा होता है। जीभ में स्वादों की जांच पड़ताल के लिए स्वाद केशिकाएं होती हैं। जीभ पर बहुत बारीक छोटे-छोटे तंतुओं से युक्त सैकड़ों दानेदार उभार होते हैं, इन्हें स्वाद केशिकाएं कहा जाता है। जब वस्तु जीभ के संपर्क में आते हैं, तो वे हमारी लार में घुलकर स्वाद कलिकाओं को सक्रिय कर देते हैं। यहां एक रासायनिक क्रिया होती है, जिसके द्वारा स्वाद की जानकारी शरीर के सूचना केंद्र दिमाग को मिल जाती है और हमें स्वाद का पता चल जाता है। अलग अलग तरह के स्वादों की पहचान के लिए जीभ के अलग-अलग भागों पर स्वाद कलिकाएं होती हैं। जैसे रुचिकर मीठे और नमकीन स्वादों के लिए जीभ के आगे के भाग पर और अरुचिकर कड़वे स्वादों के लिए पीछे के भाग पर व खट्टे स्वादों के लिए ये स्वाद कलिकाएं जीभ के किनारे के भागों पर रहती हैं। जीभ के बीच में स्वाद कलिकाएं नहीं होतीं, जिससे इस भाग से किसी भी तरह के स्वाद का पता नहीं चलता है।

❋ नोबेल पुरस्कार की स्थापना स्वीडन के वैज्ञानिक अल्फ्रेड बर्नाड (बर्नहार्ड) नोबेल की याद में १९०१ में की गयी थी। उनका जन्म १८३५ ई में स्वीडन के शहर स्टॉकहोम में हुआ था।

उन्होंने १८६६ में डाइनामाइट की खोज की। स्वीडिश लोगों को १८९६ में उनकी मृत्यु के बाद ही पुरस्कारों के बारे में पता चला, जब उन्होंने उनकी वसीयत पढ़ी, जिसमें उन्होंने अपने धन से मिलनेवाली सारी वार्षिक आय पुरस्कारों की मदद करने में दान कर दी थी। शांति, साहित्य, भौतिकी, रसायन, चिकित्सा विज्ञान और अर्थशास्त्र के क्षेत्र में बेहतरीन काम करनेवालों को हर साल यह पुरस्कार दिया जाता है। पहले नोबेल पुरस्कार पांच विषयों में कार्य करने के लिए दिये जाते थे। अर्थशास्त्र के लिए पुरस्कार स्वेरिजेश रिक्स बैंक, स्वीडिश बैंक द्वारा अपनी ३००वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में १९६७ में आरंभ किया गया और इसे १९६९ में पहली बार प्रदान किया गया। इसे अर्थशास्त्र में नोबेल स्मृति पुरस्कार भी कहा जाता है।

क्रीड़ा जगत

❋ खेलकूद में मजा है, पर तभी, जब खेल सुरक्षित तरीके से खेला जाए। खेल के मैदान पर पहुंचने से पहले जॉगिंग से शरीर को थोड़ा वार्मअप करना चाहिए। मांसपेशियां वार्मअप होने के बाद चोटिल होने का खतरा कम हो जाता है। चोट से बचने के लिए प्रोटेक्टिव स्पोर्टस् गैयर पहनना जरूरी है। फुटबॉल, हॉकी, बेसबॉल, सॉफ्टबॉल जैसे खेलों में भाग लेते समय हेलमेट पहनना और इसका स्ट्रैप बांधना मत भूलो। आंखों, घुटनों, कोहनी इत्यादि को चोट से बचाने के लिए भी प्रोटेक्टिव गेयर आते हैं।

खेल के कुछ नियम स्कोरिंग एवं पेनाल्टी के लिए नहीं होते, बल्कि खिलाड़ियों को चोट से बचाने के लिए बनाए जाते हैं, जैसे बेसबॉल में नियम है कि गेंद को हिट करने के बाद खिलाड़ी बैट लहरा नहीं सकते हैं, ताकि अन्य खिलाड़ियों को चोट न लगे।

❋ पहली मोटर दौड़ २२ जुलाई १८९४ में हुई।

❋ १८८४ में ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड के बीच खेले गए तीसरे टेस्ट मैच में इंग्लैंड के पूरे ११ खिलाड़ी बोल्ड हो गए थे।

❋ भारत में बैडमिंटन बहुत पहले से खेला जाता है। १८६० के दशक में भारत में पदस्थ अंग्रेज सैनिक अधिकारियों ने इसे खुले मैदान में खेला और इसे पूना नाम दिया। १८७३ में इंग्लैंड के ग्लूसेस्टर शायर में बोफोर्ट के ड्यूकों की ग्रामीण जागीर बैडमिंटन के नाम से इसे पहचाना गया।

❋ हमारा राष्ट्रीय खेल हॉकी है।

❋ होर्स पोलो की शुरूआत भारत में हुई थी।

❋ भारत के प्रमुख स्टेडियम- नेताजी स्टेडियम- कोलकाता, वानखेड़े स्टेडियम- मुंबई, नेहरू स्टेडियम- चेन्नई, नैशनल स्टेडियम- मुंबई, बेबोर्न स्टेडियम- मुंबई, फीनन स्टेडियम- जमशेदपुर, यादवेन्द्र स्टेडियम- पटियाला, रणजीत स्टेडियम- कोलकाता, बाराबती स्टेडियम- कटक, ईडन गार्डन्स- कोलकाता, ग्रीनपार्क- कानपुर, शिवाजी हाकी स्टेडियम- नई दिल्ली, जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम- नई दिल्ली।

❋ क्रिकेट के बैट की अधिकतम चौड़ाई ४.१/४ इंच व लंबाई अधिकतम ३८ इंच होती है।

❋ टेबल टेनिस के टेबल का आकार ९x५x२.१/२ फीट होता है।

❋ भारत में बास्केट बॉल की शुरुआत १९०० में अमेरिकी धर्म प्रचारकों के माध्यम से हुई। औपचारिक रूप से १० फरवरी १९५० को इसे यहां मान्यता मिली।

❋ कोपा कप का संबंध फुटबॉल खेल से है।

❋ जो विजयी होते हैं वे पीछे हट जाते हैं और जो हारते हैं, वे आगे आते हैं; इस क्रीड़ा का नाम जूड़ो है।

❋ अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में एक ही इनिंग में १७ चौके मारने का रिकार्ड १९९९ में सौरव गांगुली के नाम दर्ज किया गया है।

❋ विंबलडन टेनिस के महिला युगल का खिताब सबसे कम उम्र में जीतने का रिकार्ड स्विट्जरलैंड की मार्टिना हिंगिस के नाम दर्ज है। हिंगिस ने १९९६ में १५ साल २८२ दिन की उम्र में खिताब जीता था।

❋ सबसे ज्यादा टीवी के दर्शक खेल देखने वाले हैं। उसमें भी ओलंपिक, वर्ल्ड कप व फार्मूला वन रेसिंग के सबसे ज्यादा।

❋ राजेंद्र सिंह ने फुटबॉल के एक ही मैच में १२ गोल करने का रिकॉर्ड बनाया।

❋ बेसबॉल की गेंद पर ठीक १८० सिलाई होती है तो क्रिकेट की बॉल पर ६५ से ७० सिलाइयां होती हैं।

❋ जिमनाशियम की शुरुआत ई.पी. ९०० में हुई थी।

❋ अमेरिका में बसे एनआरआय मनोहर राव ने १७ साल की बेटी सुनीया को टेनिस में भारत का प्रतिनिधित्व करने के लिए ऑल इंडिया टेनिस असोसिएशन से पांच करोड़ रुपए की मांग की थी। सुनीया की वर्ल्ड रेंकिंग १६२ है। हालांकि ऑल इंडिया टेनिस असोसिएशन ने इस माग को ठुकरा दिया और मुंहतोड जवाब दिया कि भारत के लिए खेलना ही अपने आप में सम्मान की बात है।

❋ बॉक्सिंग को कानूनी मान्यता १९०१ में मिली।

❋ इफ्तारअली पटौदी वे व्यक्ति थे, जिन्होंने भारत व इंग्लैंड दोनों की तरफ से टैस्ट मैच खेला और वे हॉकी भी खेलते थे। उनकी मृत्यु पोलो खेलते हुए घोड़े से गिर जाने के कारण हुई। ये मंसूर अली पटौदी के पिता थे।

❋ बुधी कुन्दरन एक ऐसा खिलाड़ी था, जिसने पहले टैस्ट क्रिकेट मैच खेला, फिर रणजी ट्रॉफी में भाग लिया।

❋ ओलंपिक के पांच गोले (रिंग्स) एक दूसरे से जुड़े होते हैं। ये पांच रंगों (नीला, पीला, काला, हरा व लाल) के होते हैं जो पांच महाद्वीप को दर्शाते हैं।

❋ उत्कृष्ट खेल दिखाने के लिए भारत सरकार द्वारा हर साल अर्जुन पुरस्कार दिया जाता है। खिलाड़ी तैयार करनेवाले शिक्षक को भी हर साल द्रोणाचार्य पुरस्कार दिया जाता है।

❋ धनबा के तीन युवकों ने प्राणायाम के बल पर पेट इतना सख्त करने का रिकार्ड बना डाला कि प्वाइंट २२ की गोली भी उनके पेट से टकरा कर नीचे गिर गई।

❋ एशियाड स्वर्ण पदक विजेता सतपाल के शिष्य प्रवीण कुमार ने नाक से दूध पीकर आंखों से बौछार करने का रिकार्ड बना डाला। इससे पहले बौछारों की लंबाई ७ फुट थी, लेकिन आज ११ फुट है।

❋ रामप्रसाद ने भी आंखों की पुतलियों से १० किलो वजन उठाने का रिकार्ड बनाया।

❋ झारखंड के २३ वर्षीय सुमिता सिंह ने तीन-तीन विश्व रिकार्ड बना डाले। १) १०० कि.मी. की गति से दौड़ती विपरीत दिशाओं में जाती दो मारुति वैनों को अपने हाथों से रोककर विश्व रिकार्ड बना डाला। २) १७ नंगी तलवारों पर लेटकर ३०० किलो के पत्थर अपने पेट पर तुड़वाये। ३) बिस्कुट की तरह कांच के बल्ब भी चबा डाले। Newling ये सभी कारनामे सिरिफोर्ट सभागार में श्री लालमहल भारतीय गौरव समारोह नयी दिल्ली में हुए।

❋ हाथी पर बैठकर पोलो खेलने की शुरूआत वर्ल्ड एलीफैंट पोलो असोसिएशन ने १९८२ में की।

❋ भारत के ओम प्रकाश सिंह ने २० घंटे १० मिनट ६ सेकेंडस् तक बिना हिले-डुले खड़े रहने का रिकार्ड बनाया। उस वक्त उनकी केवल पलक झपक रही थी।

❋ चांद पर खेला गया एक मात्र खेल गोल्फ है, जो ६ फरवरी १९७१ को खेला गया।

❋ भारतीय तैराक बुला चौधरी को लाइफ टाइम अचिवमेंट खेल पुरस्कार दिया गया।

❋ क्रिकेट के साथ फुटबॉल व हॉकी में भी ११ खिलाड़ियों की टीम होती है।

❋ क्रिकेट का मानक स्टम्प २७ इंच का होता है।

❋ टेनिस ओलंपिक में एस.एम. हादी पहले भारतीय खिलाड़ी शामिल हुए थे।

❋ टेनिस खेल के लिए रामनाथन कृष्णन को पद्मभूषण व अन्य पांच खिलाड़ियों को पद्मश्री से नवाजा गया।

❋ पूरे नारियल को केवल दांतों के सहारे केवल २८.०६ सेकंडस् में तोड़ने का रिकार्ड भारत के सिदाराजू (एस.राजू) के नाम दर्ज है।

❋ बैडमिंटन का राष्ट्रीय खिताब सन् १९७१-७९ तक लगातार नौ वर्षों तक प्रकाश पादुकोण ने जीता। इसके पूर्व नंदू नाटेकर ने छह बार इसे जीता था। बाद में सन् १९८०-८७ तक सैयद मोदी ने लगातार आठ बार जीता।

❋ म्युनिक में हुए १९७२ के ओलंपिक्स में अमेरिका ने तैराकी में सात गोल्ड मेडल पाने का रिकार्ड बनाया।

❋ गीत सेठी बड़ी कम उम्र याने महज २० वर्ष की आयु में सबसे कम उम्र के बिलियर्डस् के राष्ट्रीय विजेता बने। यह १९८१ की बात है शौकिया खिलाड़ियों का विश्व खिताब उन्हें १९८४ में मिला।

❋ एशियन गेम्स में चार बार स्वर्ण पदक पाने का रिकार्ड एक मात्र खिलाड़ी पी.टी. उषा के नाम है।

❋ सबसे लंबे समय तक बेसबॉल गेम १९२० में बोस्टन व ब्रूकलेन के बीच चला था। यह २६ इनिंग का था और स्कोर १-१ रहा था।

❋ क्रिकेटर सुनील गावस्कर ने ३ बार डबल सेंचुरी का रिकार्ड बनाया।

❋ सबसे छोटी उम्र में विम्बलडन मेन्स सिंगल का खिताब जीतनेवाले टेनिस खिलाड़ी बोरिस बेकर थे। जब उन्होंने इसे जीता तब १९८५ में वे केवल १७ साल २२८ दिन के थे।

❋ भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी सचिन तेंडुलकर ने ३७ शतक बनाए हैं।

❋ एक दिवसीय क्रिकेट में सबसे तेज शतक बनाने का रिकार्ड पाकिस्तान के शाहिद अफरीदी के नाम है। उन्होंने १९९६ में नौरोबी में श्रीलंका के खिलाफ ३७ गेंदों में शतक लगाया।

❋ वेटलिफ्टिंग में वजन के लिए लोहा व अन्य मिश्र धातुओं का प्रयोग किया जाता है। लोहे से भी भारी धातु इरीडियम है।

❋ महिला हॉकी का पहला वर्ल्ड कप १९७४ में खेला गया।

❋ भारत के बॉक्सर कंवर सिंह ने चार बार अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धा में गोल्ड मेडल जीता।

❋ बेसबॉल की होम प्लेट १७ इंच चौड़ी होती है।

❋ आर. सुब्रमणियम ने एक पहिए की साइकिल से एक मिनट में १८७ बार कूद लगाई।

❋ नरेंद्र हीरवानी ने क्रिकेट के पहले मैच में १६ विकेट लेने का रिकार्ड बनाया।

❋ अब तक का सबसे छोटा ओलंपिक खिलाडी ग्रीक का जिम्नाइट डिमीट्रायस लौउंड्रास था जिसने १८९६ में ओलंपिक स्पर्धा में भाग लिया जब वह केवल दस साल का था।

❋ केवल महिलाओं के लिए पहली बार २४ अक्टूबर १९८२ को दिल्ली में मैराथन आयोजित की गई।

❋ कोई भी ऊंची कूद लगानेवाला जमीन से ऊपर एक सेकंड से ज्यादा समय तक नहीं रुक सकता।

❋ विश्वनाथ आनंद पहले भारतीय शतरंज चैंपियन हैं जो २८ दिसंबर १९८७ को ग्रेंडमास्टर बने।

❋ कामनवेल्थ गेम्स में १९५८ में पहली बार हर सिंह को बॉक्सिंग के लिए कांस्यपदक मिला।

❋ आधुनिक ओलंपिक खेलों की शुरुआत इ.स. १८९६ में हुई।

❋ अनिल कुंबले ने १९९८ के क्रिकेट मैच में १० विकेट लेने का कीर्तिमान बनाया।

❋ पहली विम्बल्डन चैंपियनशिप १८७७ में हुई थी तब उसे देखनेवाले केवल २०० लोग थे।

❋ भारतीय हॉकी संघ अब तक १८ ओलंपिक स्पर्धाओं में भाग ले चुका है।

❋ क्रिकेट का पहला टेस्ट इंटरनेशनल १८७७ में खेला गया तब आस्ट्रेलिया ने इंग्लैंड को हराया।

❋ कोलकाता में १८९५ में पहली बार हॉकी की राष्ट्रीय प्रतियोगिता आयोजित की गई।

❋ मेजर लिग बेसबॉल टीम्स् ८,५०,००० गेंदों का प्रयोग एक सीजन में करती हैं।

❋ बास्केट बॉल की खोज १८९१ में जेम्स नायास्मिथ नामक शिक्षक ने की।

❋ भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी रवि शास्त्री ने १९८४ में मुंबई के मैच में एक ओवर में छह छक्के लगाकर रिकार्ड बनाया।

❋ दिल्ली में इंडियन ओलंपिक असोसिएशन की स्थापना १९२७ में हुई।

❋ क्रिकेट के दो स्टम्पस् के बीच की दूरी २२ यार्ड्स होती है।

❋ मैराथन दौड़ की शुरुआत १९ अप्रैल १८९७ को हुई थी।

❋ बेसबॉल की शुरुआती दौर की टोपियां (Caps)□स्ट्रॉ से बनती थीं।

❋ खेल के लिए लगातार दी जानेवाली सबसे पुरानी ट्रॉफी अमेरिका कप है। यह १८५१ से शुरू हुई।

❋ यदि आप गहरी सांस लें तो यह एरोबिक्स के बराबर ही लाभ देगी।

❋ भारत में पहली बार १९६६ में दूरदर्शन पर क्रिकेट मैच प्रसारित किया गया। यह अलग बात है कि वह केवल दिल्ली तक ही सीमित था।

❋ भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान राहुल द्रविड ने १८ साल की उम्र में रणजी ट्राफी में भाग लिया था।

❋ हैंग ग्लाइडिंग स्पर्धा सबसे ज्यादा अमेरिका में होती है।

❋ कबड्डी को हु तू तू और चूड़े चुडु नाम से भी जाना जाता है।

❋ प्रमोद कुमार मिश्रा ने ३ घंटे ४५ मिनट में २०,००० रस्सी कूद का रिकॉर्ड किया।

❋ क्रिकेटर सलीम दुर्रानी ने १९६३ में एक मैच में केवल २९ मिनट में ५० रन बनाने का रिकॉर्ड बनाया।

❋ टेनिस शब्द मूल रूप से फ्रांसीसी शब्द टेनेझ से बना है जिसका मतलब है टेक दिस।

❋ स्विमिंग को ओलंपिक खेलों में १८९६ में शामिल किया गया।

❋ रगबी में आस्ट्रेलिया के खिलाड़ी सबसे आगे हैं।

❋ आस्ट्रेलिया के खिलाडी एंड्रेस गोल्ड बर्जर ने ७३८ फीट ऊंची स्की जंप ले रिकार्ड बनाया।

❋ रॉबर्ट हैरिस ने १४,९३८ मीटर ऊंचाई से ग्लाइडर उड़ान भरी।

❋ सर्फिंग खेल में अमेरिका के केली स्लॅटर वर्ल्ड चैंपियन हैं।

❋ सबसे तेज गति से स्केटिंग करने में हिरोयासू शिमिझू जापानी खिलाड़ी का नाम है।

❋ वॉलीबॉल में अमेरिका का कार्च किटाले वर्ल्ड चैंपियन है।

❋ सर्फिंग खेल में अमरीका का टेलर नॉक्स दुनिया में सबसे उम्दा खिलाड़ी है।

✻ वॉलीबॉल में रशिया सबसे आगे है।

✻ अमेरिका में बेसबॉल की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगा सकते हैं कि वहां के अध्यक्ष भी साल में एक बार इसे खेलते हैं।

✻ भारत सरकार खेलों के लिए हर साल पैसा कम कर रही है। २००४-२००५ में खेलों के लिए बजट में २३७ करोड़ रुपए का प्रावधान था जो २००५-०६ के बजट में ३०१ करोड़ रुपए का किया गया। ऊपरी तौर पर यह बजट वृद्धि दिखाता है लेकिन महंगाई को देखें तब पता चलता है पिछले साल प्रत्येक खिलाड़ी पर १.१८ रुपए खर्च किए गए तो इस साल प्रति खिलाड़ी ३० पैसे ही आए।

✻ अनिल कुंबले ने अकेले ३१ बार पांच विकेट एक इनिंग में लिए।

✻ बेल्जियम के जैकी इक्स ने ली मांस नामक रेसर कार स्पर्धा को लगातार छह बार जीता।

✻ एडवर्ड हेनरी ग्रेब को दुनिया के सबसे ज्यादा बॉक्सिंग स्पर्धाओं में यश मिला।

✻ टेबल टेनिस को १८९९ में जेम्स गिब्ब ने ईजाद किया।

✻ दाहिने हाथ के खिलाडी की तुलना में बाएं हाथ से खेलनेवाले ज्यादा अच्छे खिलाड़ी होते हैं।

✻ ब्रिटेन के फिल टेलर ने अंतरराष्ट्रीय बिलियर्ड स्पर्धा में ११ बार यश हासिल किया।

✻ मैक्स बिपागी नामक इटालियन मोटो क्रॉस चैम्पियन ने चार बार अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा जीती।

✻ मेक्सिको में हर साल के एन्रिक ॲक्लोसर को दुनिया के सबसे ज्यादा उम्र के फुटबॉल खिलाड़ी होने का गौरव प्राप्त है।

✻ रग्बी खेल में ऑस्ट्रेलिया विश्व विजेता है।

✻ स्क्वेश में ऑस्ट्रेलिया के डेविड पालमर नंबर वन हैं।

✻ दुनिया का सबसे पुराना टेनिस कोर्ट इंग्लैंड के फैकलैंड पैलेस में है।

✻ टिम माँटगोमेरी नामक अमेरिकी धावक दुनिया का सबसे तेज धावक है।

✻ कनाडा के हेन्सी पेंटर की उम्र १०० साल है पर वे इस उम्र में भी बैडमिंटन खेलते हैं।

✻ स्नो बोर्ड जंपिंग में अमेरिका का टॉस पोवर सबसे आगे है।

✻ आइस स्कीइंग में स्विट्जरलैंड की वेरनी शेडर ने लगातार तीन साल गोल्ड मैडल जीता।

✻ हाथी पर बैठकर खेला जानेवाला पोलो १९७६ में जयपुर में पहली बार खेला गया।

✻ आइस स्वीइंग २००० साल पहले स्केन्डेनोविया में शुरू हुआ।

✻ वीरेंद्र सहवाग ने ९३ गेंदों में शतक पूरा कर सुनील गावस्कर के रिकार्ड को तोड़ा। गावस्कर ने ९४ गेंदों में शतक बनाया था।

✻ ऑस्ट्रेलिया के अरमिन ऑसिंगट नामक स्कीइंग चैंपिचन ने ११२.४ किमी गति से स्कीइंग की।

✻ सर्फिंग नामक खेल १७८८ में हवाई द्वीप पर शुरू हुआ।

✻ दौड़ में स्लोवेनिया की जोलांडा सेप्लक ने सबसे ज्यादा पदक जीते।

✻ हाल में उद्योगपति विजयपत सिंघनिया ने बैलून से ६७००० फीट ऊंचे जाने का रिकार्ड बनाया। वह भी ६९ वर्ष की आयु में।

✻ महिलाओं के लिए पहली विश्व हॉकी स्पर्धा १९८७ में खेली गई।

✻ पोलो खेल में आर्जेंटीना सबसे आगे है।

✻ स्टीव्ह बजेल ने एक मिनट में ८९ पुशअप्स का रिकॉर्ड बनाया।

✻ गोल्फ की गेंद को बनाते समय उसमें शहद भी डालते हैं।

✻ टेबल टेनिस की टेबल २.४७ मीटर लंबी व १.५९ मीटर चौड़ी होती है। टेबल टेनिस की पहली अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा १९२७ में लंदन में हुई।

✻ पोलो की स्टिक को मालेट कहते हैं।

✻ स्क्वेश खेल में आस्ट्रेलिया के डेविड पालमट का स्थान दुनिया में पहला है।

✻ अमेरिका का एरोन पियरसल विश्व का नंबर वन तैराक है।

✻ अमेरिका के माइक पॉवेल ने ३० अगस्त १९९१ को टोक्यो (जापान) में आयोजित विश्व चैंपियनशिप में ८.९५ मीटर की लंबी कूद लगाकर विश्व कीर्तिमान बनाया।

✻ रफीक खान ने १९८० में शतरंज ओलंपिक का पहला रजत पदक जीता।

✻ कॉमनवेल्थ गेम्स में मिल्खा सिंह ने ४०० मीटर दौड़ में गोल्ड मेडल जीता।

✻ सुनील गावस्कर ने १९८३-८४ में मद्रास में २३६ रन (नाट आउट) बनाए थे।

✻ ड्यूक ब्यूकोर्ड ने बैडमिंटन का नामकरण किया।

✻ वर्ल्ड यूथ चेस में दीपसेन गुप्ता ने शतरंज में भारत को गोल्ड मेडल दिलाया।

✻ सरदार निहाल सिंह विम्बलडन में खेलनेवाले पहले भारतीय खिलाड़ी थे।

✻ सुमित शर्मा ने उल्टी दिशा में १०१ गुलाटियां मारीं।

✻ विश्व का पहला फुटबॉल क्लब १८५७ में बना।

✻ स्विट्जरलैंड के आईस रिसोई में २४७३ लोगों ने अकेले स्नोफाईट खेल खेला।

✻ जिनेदिन जिंदान नामक फ्रेंच फुटबॉल खिलाड़ी दुनिया का सबसे अमीर खिलाड़ी है।

✻ कराटे जापानी राष्ट्र का अर्थ है खुले हाथ। जापान-कोरिया में इसे खूब खेला जाता है पर इ.पू. ५०० में भारतीय बौद्ध गुरू जंगली जानवरों से बचने के लिए इसका प्रयोग करते थे।

✻ सुमो कुश्ती को जापान में खेल का दर्जा १६०० ई. में मिला।

✻ १९९५ में सैफ खेल स्पर्धा में भारत ने बॉक्सिंग में १० गोल्ड मेडल व २ सिल्वर मेडल जीते।

✻ ओलंपिक में नाव स्पर्धा सन् १९०० से शामिल की गई।

✻ जलतरण के लिए बजरंगी प्रसाद को भारत सरकार ने १९६१ में पहला अर्जुन पुरस्कार दिया।

✻ पहली ओलंपिक रेस ई.पू. ७७६ में हुई थी।

✻ ओलंपियाड में पहला पदक रफीक खान नामक खिलाड़ी ने जीता।

✻ अजय सिंह ने अंतरराष्ट्रीय फुटबॉल स्पर्धा में भारत का प्रतिनिधित्व कर एक के बाद एक ६ गोल (डबल हैट्रिक) करने का रिकार्ड बनाया।

✻ बैडमिन्टन को बैडमिन्टन इसलिए कहते हैं कि यह खेल सबसे पहले ग्लूस्टरशर के बैडमिन्टन हॉल में खेला गया था।

✻ टिमोयी बडयाना ने ३ घंटे पीठ की ओर उल्टी दिशा में दौड़ लगाई।

✻ गियान लुइगी बुफोन दुनिया का सबसे अमीर फुटबॉल खिलाड़ी है।

✻ हॉर्स शो जपिंग में आस्ट्रेलिया का हुगो साइमन वर्ल्ड चैंपियन है।

✻ जैसे भारत में क्रिकेट की दीवानगी है वैसे अमेरिका में फुटबॉल, यूरोप में सॉकर व जापान में बेसबॉल को लेकर लोगों में बहुत क्रेज है।

✻ अमृतपाल सिंह के पास क्रिकेट से संबंधित १९३ पत्रिकाएं, १५० पोस्टर्स, ४३ वीडियो कैसेटस् व २५ रजिस्टर्स हैं।

✻ अंतरराष्ट्रीय पोलो के सिंगम मैच में ३५ गोल बनाने का कीर्तिमान अर्जेंटीना को जाता है।

✻ खो-खो की शुरुआत बड़ौदा (गुजरात) से हुई।

✻ रणजी ट्रॉफी का नाम भारत के महान क्रिकेट खिलाड़ी महाराजा रणजीत सिंह के नाम पर पड़ा।

✻ २००३ की महिला बाक्सिंग चैंपियनशिप स्पर्धा में भारत ने ५ गोल्ड मेडल जीते।

✻ स्विट्जरलैंड, ग्रेट ब्रिटेन, फ्रांस, आस्ट्रेलिया व ग्रीस केवल पांच देश है जिन्होंने आज तक सभी ओलंपिक में भाग लिया।

✻ पहले टेबल टेनिस को पिंग पांग कहते थे।

✻ पाकिस्तान के हसन रजा टेस्ट क्रिकेट में पदार्पण करनेवाले सबसे कम उम्र के खिलाड़ी हैं।

✻ बेसबॉल क्रीड़ा मैदान को डायमंड कहते हैं।

✻ पहला अंतर्राष्ट्रीय सॉकर मैच ग्लासग्लो, स्कॉटलैंड में ३० नवंबर १८७२ को खेला गया।

✻ लेरोय डिसोजा ने बैडमिंटन में सात बार डबल्स टाइटल जीता।

✻ जब ओलंपिक में सॉकर को सन् १९०० में पहली बार खेला गया तब ब्रिटेन चैंपियन बना था।

✻ पूर्णिमा महतो ने धनुर्विद्या प्रतियोगिता में ७ गोल्ड मेडल जीते।

✻ दुनिया का पहला फुटबॉल क्लब १८५७ में दो ब्रिटिश आर्मी अफसरों ने मिलकर बनाया।

✻ वॉलीबॉल की जाली २.४३ मीटर ऊंची होती है।

✻ तमिलनाडु बास्केटबॉल संघ ने राष्ट्रीय स्पर्धा में चार बार खिताब जीता।

✻ पदम बहादुरमल ने भारतीय बॉक्सिंग चैंपियन का पहला एशियन गेम्स गोल्ड मेडल जीता।

✻ भारतीय हॉकी खिलाड़ी रूपसिंह ने एक ही मैच में ११ गोल करने का रिकॉर्ड बनाया।

✻ निशानेबाजी की विश्वस्पर्धा में दूरी ९० मीटर होती है।

✻ फुटबॉल खिलाड़ी पेले का पूरा नाम एडमंड एरन्टॉस नेसिमेन्टे द पेले है।

✻ आधुनिक ओलंपिक खेलों की शुरूआत एथेंस में १८९६ में हुई।

✻ आस्ट्रेलिया के ट्राय कॉर्सटने अंतरराष्ट्रीय मोटरसाइकिल स्पर्धा को २८ बार जीता।

✻ बेलन और ईंट फेंकने की प्रतियोगिता- इंग्लैंड में जुलाई माह में विगत तीन दशकों से ईंट और बेलन फेंकने की प्रतियोगिता होती है। इसमें ईंट फेंकने का विश्व रिकार्ड १४२ फुट और बेलन फेंकने का विश्व रिकार्ड १५६ फुट है।

✻ भारत ने क्रिकेट टैस्ट में पहली जीत इंग्लैंड को १९५२ में हराकर हासिल की।

❋ केवल १९ साल की उम्र में स्पेन के सेर्गियों गॅसियीने गोल्फ के वर्ल्ड चैम्पियन का रिकार्ड बनाया।

❋ रग्बी खेल में अमेरिका का मार्विन हैरिसक वर्ल्ड चैंपियन है।

❋ कनाडा के रिचर्ड पी. सिनर्जी ने जमीन से १४५०९ फीट ऊंचाई तक पतंग उड़ाने का विश्व रिकॉर्ड बनाया।

❋ बिलियर्ड्स में इंग्लैंड के वेली वेस्ट नामक वर्ल्ड चैम्पियन ने १५१ स्पर्धाओं में विजेता पदक जीता।

❋ भारत के तमिलनाडु में रहनेवाले एक व्यक्ति ने ५८ घंटे ९ मिनट लगातार ताली बजाकर विश्व रिकॉर्ड बनाया।

❋ ब्राजील के सुप्रसिद्ध फुटबॉल खिलाड़ी पेले का बादशाह तथा काला हीरा उपनाम से पहचाना जाता है।

❋ विख्यात क्रिकेटर डॉन ब्रैडमैन अपने खेल-जीवन में रन मशीन के रूप में पहचाने जाते थे।

❋ वेस्ट इंडीज के क्रिकेटर विव रिचर्ड्स को काला चीता के नाम से जाना जाता है।

❋ द. अफ्रीका के दो पूर्व क्रिकेटर पीटर तथा ग्रीम पोलाक क्रमश: बिग डॉग तथा लिटिल डॉग उपनाम से भी पहचाने जाते थे।

❋ कुवर सिंह ने बॉक्सिंग की अंतरराष्ट्रीय स्पर्धा में चार बार गोल्ड मेडल जीता।

❋ क्रिकेट में पहले एक ही स्टंप होता था। दो स्टंप १७७५ में लगाए जाने लगे, फिर इसके बाद तीन स्टंप लगाए गए।

❋ महिला आइस हॉकी में कनाडा सर्वप्रथम है।

❋ अर्जुन पुरस्कार देश के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों को प्रतिवर्ष यह पुरस्कार दिया जाता है। १९६१ से यह पुरस्कार प्रारंभ किया गया है।

❋ नोबेल पुरस्कार यह अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार है। भौतिकी, रसायन, औषधि, शरीर क्रिया विज्ञान, साहित्य, शांति तथा अर्थशास्त्र में से प्रत्येक क्षेत्र के प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तियों को दिया जाता है। यह पुरस्कार केमिकल इन्जीनियर एलफ्रेड नोबल की यादगार में १९०१ में शुरू किया गया।

❋ हंगरी के फ्रेंक सायमन ने दांत से ६१.८ किलो वजन की मोपेड उठाई।

❋ आइस स्केटिंग की शुरुआत १७ वीं शताब्दी में हुई।

❋ ऊंची कूद में अमेरिका के रेमंड क्लेरेंस नामक खिलाड़ी ने सबसे ज्यादा स्वर्णपदक जीते।

❋ मार्टिना नवरातिलोवा ने ४६ साल की उम्र में भी टेनिस चैंपियन का अंतर्राष्ट्रीय सम्मान पाया।

❋ बेल्जियम के रॉफ गूसेन्स ने ७५ घंटे बिलियर्ड का एक गेम खेला।

❋ बंगी जंप में ८२३ फुट ऊंची छलांग ले न्यूजीलैंड के क्रिस एलम ने रिकार्ड बनाया।

❋ आपके पांच क्वार्ट खून में बाईस ट्रिलियन (१ ट्रिलियन=$१०^{१८}$) रक्त कोशिकाएं हैं।

❋ दुनिया के चार प्रमुख फुटबॉल क्लबों में गत् फुटबॉल सत्र २००४-०५ में ४५ सौ करोड़ रुपए से भी अधिक की आमदनी की।

❋ न्यूजीलैंड के जॉन डकी व केविन शिक ने ५ घंटे टेबल टेनिस खेल कर रिकार्ड बनाया।

❋ सचिन तेंडुलकर ने कनाडा के मैच में (सितंबर १९९७) सौरव गांगुली को छिपा अस्त्र का सम्मान दिया था।

❋ मिदनापुर (पं. बंगाल) के मनोज मिश्रा ने लगातार १२ घंटे फुटबाल को सिर पर संभाल नया रिकार्ड बनाया।

❋ अफ्रीका कप फुटबॉल मैच का विजेता घाना संघ था।

✻ महिला हॉकी की चैंपियनशिप ट्रॉफी की शुरुआत १९८७ से हुई।

✻ केवल १७ साल की उम्र में पंकज अडवानी ने स्नूकर स्पर्धा जीती।

✻ धनुर्विद्या में स्लोवेनिया के रेजमोंड डेबवेक विश्व खिलाड़ी है।

✻ चीन का सबसे लोकप्रिय खेल टेबल टेनिस है।

✻ एल. दीपमाला देवी ने २० किलोमीटर पैदल चाल स्पर्धा की दूरी एक घंटे, ३९ मिनट व २९ सेकंड में तय की।

✻ विश्वनाथन आनंद ने कोरस शतरंज प्रतियोगिता पांचवीं बार जीती। ऐसा करनेवाले वे दुनिया के पहले खिलाड़ी हैं।

✻ ब्रिटिश राजपरिवार की राजकुमारी एनी ने १९७६ के ग्रीष्मकालीन ओलंपिक्स में भागीदारी की थी।

✻ इंग्लैंड में रिचर्ड द्वितीय ने फुटबॉल पर प्रतिबंध लगा दिया था क्योंकि किसानों-मजदूरों ने अपने काम पर ध्यान देना बंद कर दिया था।

✻ महेश भूपति ने १९९७ से अब तक टेनिस में दस ग्रैंड स्लैम खिताब अपने नाम किए हैं।

✻ केनेडा के सैम व्हाइटिंगहन नामक युवक ने प्रति घंटे १३० किमी की गति से साइकिल चलाई।

✻ बैक स्ट्रोक स्विमिंग में अमेरिका के एरोन पेइरसोल विश्व विजेता हैं।

✻ मैच के पहले ही ओवर में लगातार तीन गेंदों पर तीन विकेट लेने का विश्व कीर्तिमान भारत के तेज गेंदबाज इरफान पठान ने दर्ज किया।

✻ बास्केट बॉल में अमेरिका का ओला जुओन वर्ल्ड चैम्पियन है।

✻ बहादुर सिंह को अर्जुन पुरस्कार, द्रोणाचार्य पुरस्कार व पद्मश्री पुरस्कार से नवाजा गया।

✻ सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड को जोधपुरी जूतियां पहनना पसंद है।

✻ बास्केट बॉल में अमेरिका का माइकल जॉर्डन वर्ल्ड चैम्पियन है।

✻ आज से लगभग २ हजार साल पहले (बौद्धकाल में) क्रिकेट जैसा खेल, भारत में खेला जाता था। लाहौर के संग्रहालय में बौद्धकाल की एक प्रतिमा है जिसमें गौतम बुद्ध अपने साथियों के साथ यह खेल खेलते दिख रहे है।

✻ तुर्किस्तान का हलिल मल्लु वेटलिफ्टिंग का वर्ल्ड चैम्पियन है।

✻ बिलियर्ड्स की खोज सर नेविले चेम्बरलेन ने १८७५ में की।

✻ घुटनों के बल सबसे लंबी दूरी तय करने का रिकार्ड पीटर मैककिंग्ली व जॉन मुरे ने बनाया जिन्होंने ५०-६० किलोमीटर की दूरी तय की।

✻ इंग्लैंड के राजा एडवर्ड ने १३०० में फुटबॉल पर प्रतिबंध लगाया था।

✻ टेनिस स्टार मार्टिना हिंगिस ने नंबर १ का मुकाम १९९७ में पाया।

✻ बच्चों का पसंदीदा पॉकेमान पाकेट मॉन्स्टर की पहली वीडियो गेम १९९६ में बनी। जिसे जापानी वीडियो गेम डिजाइनर सतोशी ताजरी ने बनाया।

✻ सॉकर के खेल में (जब ९० मिनट का खेल हो) बॉल बमुश्किल ५२ मिनट ही खेल के मैदान में होती है।

✻ ब्राजील में फुटबॉल का विजेता पद पाने के लिए पांच वर्ल्ड कप का इंतजार किया। १९५८ में हुए वर्ल्ड कप में उन्होंने १७ वर्ष के लड़के को अवसर दिया जो फुटबॉल का जादूगर कहलाया। वह था पेले।

✻ बरमुडा में वारविक एकेडमी के खिलाड़ियों ने लगातार २६ घंटे बास्केट बॉल मैच खेला।

✻ राष्ट्रमंडल खेलों की शुरुआत १९३४ में हुई, जिसमें ७१ देशों ने भाग लिया।

✻ बैंकॉक एशियाई खेलों में भारत को हॉकी में १९९८ में गोल्ड मेडल मिला जिसे धनराज पिल्ले, मुकेश कुमार व आशीष बलाल ने दिलवाया।

✻ गोताखोरी (डाइविंग) दो तरह से होती है- प्लेट फार्म से व स्प्रिंग बोर्ड से।

✻ सचिन तेंदुलकर ने अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट स्पर्धा में अब तक ७४ शतक बनाए हैं।

✻ आस्ट्रेलिया में १८४६ में पहली बार ४४० गज की तैराकी प्रतियोगिता आयोजित हुई।

✻ स्नो बोर्डिंग में अमेरिका के रॉस पोवर ने लगातार दो बार अंतर्राष्ट्रीय स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता।

✻ पाकिस्तान के स्क्वैश खिलाड़ी जहांगीर खान को स्क्वैश का बादशाह कहते हैं।

✻ पश्चिम जर्मनी के फुटबॉलर कार्ल हाइंज रुमिनिगे को चंचल मधुमक्खी कहते हैं।

✻ वेस्टइंडिज के क्रिकेटर स्व. लैरी कांस्टेटाइन को लार्ड ऑफ क्रिकेट के नाम से याद किया जाता है।

✻ लॉन टेनिस के लोकप्रिय खिलाड़ी इवान लेंडल आइसबर्ग के नाम से जाने जाते हैं।

✻ अमरीका के प्रसिद्ध मुक्केबाज जेम्स कार्बेट को जैंटलमैन जिम कहा जाता है।

✻ फ्रेंच स्की खिलाड़ी केरिन डॉबोचेट २४२ घंटे किमी की रफ्तार से स्कीइंग करते हैं।

✻ यूक्रेन के सेर्गी नेडिम ने लगातार ७१ घंटे विंड सर्फिंग की।

✻ मुक्केबाजी को खेल के रूप में १९०१ में कानूनी मान्यता मिली।

✻ हवाई का छाड़ रोवान वर्ल्ड चैम्पियन सुमो पहलवान है।

✻ शतरंज की शुरुआत भारत में ही हुई।

✻ पुणे के कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग के ३०० छात्रों ने एक साथ १४ बार रस्सी कूद कर रिकार्ड बनाया।

✻ अब तक सबसे ज्यादा ओलंपिक मेडल्स जीतने का श्रेय सोवियत जिम्नास्टिक लारिसा लेटयीना के नाम है। उन्होंने तीन ओलंपिक में १८ स्वर्ण पदक जीते।

✻ फ्रांस के हेनरी कोरनेट ने १९ साल की उम्र में साइकिल के अंतर्राष्ट्रिय स्पर्धा में यश हासिल किया।

✻ तुर्किस्तान के हकन सुकट ने ११ सैकंड में फुटबाल में अंतर्राष्ट्रीय मैच में गोल बनाया।

✻ सॉकर देखने जाना या खेल को देखना दुनिया में सबसे ज्यादा लोग पसंद करते है।

✻ मेक रॉबर्टसन शिल्ड नामक अंतर्राष्ट्रीय गोल्फ स्पर्धा ब्रिटेन के गोल्फ खिलाड़ियों ने लगातार १२ बार जीती।

✻ भारतीय बास्केटबाल फेडरेशन की स्थापना २० अक्टूबर १९४९ को हुई।

✻ भारतीय क्रिकेट टीम एक दिवसीय रैंकिंग में दूसरे स्थान पर है। इंग्लैंड शीर्ष पर व दक्षिण अफ्रीका तीसरे स्थान पर है।

✻ दुनिया का सबसे बड़ा खेल का मैदान चेकोस्लोवाकिया के प्राग शहर में है।

✻ सानिया मिर्जा का जन्म १५ नवंबर १९८६ को हुआ। मुंबई में जन्मी सानिया मिर्जा के पिता का नाम इमरान मिर्जा है। भारत सरकार ने सानिया मिर्जा को वर्ष २००४ का ब्रांड एंबैसेडर घोषित किया था, इस वर्ष को बालिका वर्ष की संज्ञा दी गई थी।

❋ १९६३ में इंग्लैंड के एक मैदान पर खेले जा रहे एक मैच में ससेक्स के बल्लेबाज एन.आई.थामसन के बल्ले से टकराकर लुढ़कती गेंद को एक शरारती कुत्ता अपने मुंह में दबाकर बाउंड्री के पार ले गया। नियमानुसार थामसन को चार रन दिए गए।

❋ कपिल देव का पूरा नाम कपिल देव रामलाल निखंज है। उन्होंने १९७८-७९ में क्रेटा में पाकिस्तान के खिलाफ पहला एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट मैच खेला।

❋ स्कॉटलैंड में १४५७ को गोल्फ खेल पर पाबंदी लगा दी गई थी।

❋ ५ मार्च २००५ को गोल्ड कोस्ट, ऑस्ट्रेलिया में ४७ लोग एक ४० फुट लंबे सर्फबोर्ड पर सवार हुए और नया कीर्तिमान बनाया।

❋ लैक्रोस नामक खेल अमेरिका के मूल निवासी खेलते थे। मैच कई दिन तक चलता था इसका मैदान १६ मील तक का होता था और एक-एक टीम में हजार-हजार खिलाड़ी होते थे।

❋ फ्रांस के जोनायन थिबोट ने १९ फीट की दूरी से बॉस्केटबाल नेट में गेंद डालने का रिकार्ड बनाया।

❋ वर्ल्ड कप फुटबॉल मैच में ब्राजिल ने तीन बार कप जीता।

❋ बिलि बॅक्सर ने प्रतिघंटा २६५ कि.मी. गति से मोटरसाइकल चलाई।

❋ मछली पकड़ने के खेल में दुनिया में सबसे ज्यादा लोग हिस्सा लेते हैं।

❋ अमेरिका के डेरेक डेयर ने १० फीट व्यास के ४३५.५ किलो वजनी डिस्को बॉल को बनाया।

❋ टेनिस की जानकारी देनेवाली पहली किताब इंग्लैंड में १८७५ में प्रसिद्ध हुई।

❋ विश्वकप फुटबॉल में रोनाल्डो ने २००२ में ८ गोल दागकर ब्राजील को ५ वीं बार विश्व विजेता बनने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

❋ आधुनिक तरीके के ओलंपिक खेलों की शुरुआत १८९६ में हुई।

❋ अजीत बजाज नामक पहले भारतीय खिलाड़ी ने उत्तर ध्रुव पर कदम रखा। वे स्कीइंग खिलाड़ी हैं।

❋ फुटबॉल वर्ल्ड कप एक ऐसा इर्वेट है जिसकी दर्शक संख्या ४ हजार करोड़ के करीब है।

❋ १९९८ में फ्रांस में हुआ वर्ल्ड कप पूरे ३७०० करोड़ लोगों ने दूरदर्शन पर देखा।

❋ फुटबॉल मैच का पहला छायाचित्र १८६९ में इस्तेमाल में लाया गया।

❋ स्वीडन १९५८ को अकेला वर्ल्ड कप था जिसमें इटली योग्य घोषित नहीं हो पाया था।

❋ सबसे लंबे वक्त से चला आ रहा गेम शो प्राइस इज राईट है। इसके होस्ट बॉब बार्कर अब तक के सर्वाधिक अनुभवी गेम शो होस्ट हैं।

❋ फुटबॉल महासमर का पहला गोल फ्रांस के लूसियेन लौरेंट के नाम दर्ज है। १३ जुलाई १९३० को फ्रांस व मैक्सिको के बीच खेले गये विश्वकप के पहले मैच में १९वें मिनट में लौरेंट ने गोल दागा था।

❋ फुटबॉल खेलनेवाले देशों में भारत ११७ वें स्थान पर है।

❋ वर्ल्ड कप क्वार्टर फाइनल तक पहुंचने वाला पहला एशियाई देश उत्तरी कोरिया था।

❋ फुटबॉल के जादूगर पेले का जन्म ब्राजील के अति गरीब परिवार में हुआ था। फुटबॉल खेलने से पहले उन्हें बूट-

पॉलिश तक कर गुजारा करना पड़ा था।

❋ दुनिया के प्रमुख २०० गोल्फ खिलाड़ियों में भारत के चार दिग्गजों के नाम शामिल हैं। ये हैं- ज्योति रंधवा (१२२), अर्जुन अटवाल (१४३), शिव कपूर (१४९) व जीव मिल्खा सिंह (१६१)।

❋ पर्ड्यू विश्वविद्यालय के छात्रों की टीम ने १२५ चश्मों में फ्लैशलाइट की बैटरियां बदलनेवाली मशीन बनाकर रूज गोलबर्ग प्रतियोगिता जीती।

❋ फुटबॉल की विश्व स्तरीय स्पर्धा फ्रेंच व्यक्ति के दृष्टिकोण से जन्मी।

❋ भारतीय क्रिकेट के नये सितारे महेंद्र सिंह धोनी रांची में अपनी स्कूल टीम के लिए फुटबॉल खेला करते थे।

❋ सालभर तक फुटबॉल के लिए गेंद मिलती रहे इसलिए नेशनल फुटबॉल लीग को ३००० गेंद दी जाती हैं।

❋ स्विट्जरलैंड में १९५० में हुए विश्वकप फुटबॉल प्रतियोगिता में भारत की पात्रता सिद्ध हुई थी पर खिलाड़ियों के पास फुटबॉल के शूज न होने व ऐसे शूज पहनकर खेलने की आदत न होने से विश्वकप में भाग लेने का अवसर खो दिया।

❋ सन् १७७६ में क्रिकेट की पहली स्कोर बुक छापी गयी। सन् १८८४ में प्रथम क्रिकेट मैच में ग्यारह खिलाड़ी रखने की अनिवार्यता लागू की गई। सन् १८४४ में क्रिकेट का पहला अंतर्राष्ट्रीय मौच अमरीका और कनाडा के बीच हुआ था। सन् १७४४ में क्रिकेट में सर्वप्रथम पगबाधा आऊट दिया गया। सन् १८१० से टॉस की पद्धति अनिवार्य कर दी गयी। सन् १८८४ में क्रिकेट मैदान में सीमा रेखा का निर्धारण किया गया। सन् १८४६ में क्रिकेट मैदान में सर्वप्रथम स्कोर बोर्ड का प्रयोग किया गया।

❋ ब्राजील पांच बार विश्व कप फुटबॉल खिताब जीत चुका है और यह उपलब्धि हासिल करनेवाला इकलौता देश है।

❋ ऑस्ट्रेलिया के महानतम बल्लेबाज सर डोनाल्ड ब्रेडमैन ने टेस्ट क्रिकेट में ९९.९४ के औसत से रन बनाए थे। उनके रन औसत तक पहुंचना अभी तक किसी बल्लेबाज के लिए संभव नहीं हो पाया है।

❋ एशिया की सबसे ताकतवर फुटबॉल टीम दक्षिण कोरिया की है।

❋ बाउलिंग प्राचीन खेल है। ई.पू. ३२०० में इजिप्त में यह लोकप्रिय था।

❋ आज दुनिया भर के १०० से ज्यादा देशों में लगभग २५ करोड़ पुरुष व चार करोड़ महिलाएं फुटबॉल खेल रही हैं।

❋ सऊदी अरब ने १९९४ में अपने पहले वर्ल्ड कप खेल में ही अपने हुनर को दिखा दिया था।

❋ ब्राजील एकमात्र देश है जो हर वर्ल्ड कप सॉकर टूर्नामेंट में खेला है।

❋ वर्ल्ड कप फुटबॉल में इटली पहला देश रहा जिसने ७ गोल किये। उन्होंने अमेरिका को ७-१ से २७ मई १९३७ में रोम में हराया।

❋ २००७ का विश्वकप क्रिकेट वेस्ट इंडीज में हुआ।

❋ भारत के राष्ट्रीय खेल हॉकी के १९३५ में २३०० संघ थे जो २००५ में केवल १३०० रह गए।

❋ एडिडास गोल्डन बॉल एवॉर्ड विश्व के फुटबॉल फाइनल टूर्नामेंट में उल्लेखनीय प्रतिभावाले खिलाड़ी को दिया जाता है। यह एवॉर्ड १९८२ से शुरू हुआ।

❋ विश्वकप फुटबॉल स्पर्धा १९३० में ऊरग्वे में सबसे पहले हुई।

❋ अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीडन व प्राग तीन बार फुटबाल खेल में आमने-सामने हुए जबकि विश्व कप में दो बार।

✻ एशिया की सबसे प्रोफेशनल व अमीर फुटबॉल लीग जापान में खेली जाती है।

✻ विश्व कप फुटबॉल के साथ रोबोट की विश्व कप फुटबॉल स्पर्धा भी होती है। पहली बार १९९७ में पहला रोबो कप खेल आयोजित हुआ था।

✻ फुटबॉल खिलाड़ियों में पेले सबसे छोटा था (१७ साल २३९ दिन) जब उसने १९५८ में स्कोर किया जबकि रोजर मिला की उम्र सबसे ज्यादा (४२ साल ३९ दिन) १९९४ के खेल में दर्ज की गई।

✻ प्रथम ऑस्कर पुरस्कार विजेता पानेवाले भारतीय व्यक्ति का नाम सत्यजीत रे है।

✻ रूस के रोमन अब्रामोविच ने फुटबॉल विश्वकप के बॉक्स टिकट को खरीदने में सबसे ज्यादा यानी १५ लाख अमेरिकी डॉलर खर्च किये। उसने ५०० टिकट खरीदे व अपने सगे-संबंधियों-दोस्तों के साथ मैच को लाइव देखने की नई इबारत गढ़ी।

✻ बाउलिंग खेल के पहले नीति-नियम न्यूयॉर्क में ९ सितंबर १८९५ में बने।

✻ फुटबॉल मैचों का पहला सीधा प्रसारण १९७० में मैक्सिको में हुए वर्ल्ड कप के दौरान हुआ।

✻ स्कॉटलैंड के धावक स्टुआर्ट मरे की गर्दन टूट जाने के बाद डाक्टरों ने कहा कि वह दुबारा दौड़ नहीं पाएगा, पर ५ साल के भीतर ही उसने २००५ की लंदन मैराथन में हिस्सा लिया।

✻ हैरी लिबोविट्ज ने पहला छोटा बिलियर्ड टेबल बनाया।

✻ वर्तमान में जारी फुटबॉल वर्ल्ड कप के जर्मनी व स्वीडन के बीच वर्ल्ड कप के दूसरे दौर का मैच सवा दो करोड़ से ज्यादा फुटबॉल प्रेमियों ने देखा। इसे मिले दूरदर्शन दर्शक संख्या एक रिकॉर्ड है।

✻ क्रिकेट मैच के दौरान स्टंप में १९८५ में माइक्रोफोन लगाना शुरू हुआ।

✻ ब्राजील की फुटबॉल टीम के खिलाड़ी चटक पीले रंग की जर्सी पहनते हैं। इसलिए उनकी टीम को सिलेकाओ कानारिन्हा (द कैनरीज) के नाम से जाना जाता है।

✻ मिस्टर डिपेंडेबल राहुल द्रविड का जब बल्ले से दिल नहीं लगता तब वे अपनी पसंदीदा किताबों में खो जाते हैं।

✻ कोई महिला एथलीट १ घंटे में ३४ किमी दौड़ सकती है। जबकि पुरुष ३६ किमी.।

✻ सबसे तेज धावक अमेरिका का मैरिस ग्रीन है जिसने १९९९ के एथेंस ओलंपिक में ९.७ सेकंड में १०० मीटर दौड़ लगाई थी।

✻ भारत ने १९७४ में अपना पहला एकदिवसीय क्रिकेट मैच इंग्लैंड के खिलाफ खेला था।

✻ विश्व की पहली फुटबॉल एसोसिएशन लंदन में १८६३ में बनी।

✻ टेनिस में हाल ही में रॉजर फेडरर ने ब्योने बोर्ग का ग्रास कोर्ट पर लगातार ४१ मैच जीतने का रिकार्ड तोड़ा।

✻ अमेरिका के मिनेसोटा क्षेत्र के नेशनल स्पोर्ट्स सेंटर में फुटबॉल के ५७ मैदान हैं।

✻ जॉर्जिया इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालॉजी ने सन् २०५० में रोबो टीमों के बीच फुटबाल टूर्नामेंट की योजना बनाई हैं। इसकी तैयारी में उन्होंने रोबो कप यूएस ओपन प्रतियोगिता शुरू की है।

✻ पुर्तगाल के रिकार्डो पहले गोलकीपर थे जिन्होंने वर्ल्ड कप फुटबॉल मैच में तीन पेनल्टी किक बचाई थी।

✻ ओलंपिक खेल में सबसे ज्यादा आस्ट्रेलिया के खिलाड़ी भाग लेते हैं।

✻ बेल्जियम के ल्यूवन विश्वविद्यालय के ४००० छात्रों ने दुनिया की सबसे बड़े तकिया युद्ध (पिलो फाइट) का आयोजन किया।

✻ पर्सनल एनसाइन नामक घोड़ी की टांग की टूटी हड्डी में धातु के पांच पेच लगे थे, फिर भी वह १३ दौड़ों में जीती।

✻ जमैका, न्यूयार्क के एश्रीता फर्मेन कनाडा के सीएन टावर की १८९९ सीढ़ियां पोगो स्टिक की मदद से ५७ मिनट में चढ़ गए।

✻ फुटबॉल में पहली बार गोलकीपर गिया लुक्का पेगील्युआ (इटली) को १९९४ में रेडकार्ड दिखाया गया।

✻ इंग्लैंड की ओर से सिर्फ एक गेंदबाज ने एकदिवसीय क्रिकेट में हैट्रिक ली है, उस तेज गेंदबाज का नाम है जेम्स एंडरसन।

✻ भारतीय खिलाड़ी नेविले डिसूजा ने १९५६ के मेलबोर्न ओलंपिक खेल में फुटबॉल में हैटट्रिक लगाई।

✻ पतंग उड़ाए जाने को २० वीं सदी मे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर खेल के रूप में मान्यता मिली।

✻ पिट्सबर्ग एक अकेला शहर है जहां पर खेल की टीम का एक ही रंग है। काला या सुनहरा।

✻ आइ.टी.एफ. जूनियर प्रतियोगिता में अपना स्थान मजबूत करना महिला टेनिस क्षेत्र में यश की पहली सीढ़ी होती है।

✻ अंतर्राष्ट्रीय खेल स्पर्धा में रशिया के लारिसा लैटविया ने १८ पदक जीतें।

✻ १९५० में हुई पहली फार्मूला वन मॉडर्न ग्रां प्री वर्ल्ड चैंपियनशिप जियुसेप्पे फेरीना ने जीती थी।

✻ बेसबॉल में हेनरी हंक वर्ल्ड चैम्पियन हैं।

✻ ऑस्ट्रेलियन ओपन टेनिस स्पर्धा में मार्टिना हिंगिस ने १९९८ में ५ टायटल जीते।

✻ ब्राजील के महान फुटबॉल खिलाड़ी पेले को एक बार मूंगफली तक बेचनी पडी थी ताकि वह खुद के लिए फुटबॉल के जूते खरीद सकें।

✻ मई २००२ में छठीं बार शतरंज का राष्ट्रीय खिताब एस. विजयलक्ष्मी ने जीता।

✻ ब्रियान डीगन मोटोक्रॉस का वर्ल्ड चैम्पियन है।

✻ टूर दी फ्रांस साईकिल स्पर्धा लगातार तीन बार जीतने का श्रेय लांस आर्मस्ट्रांग को है।

✻ स्टंट बाइक राइडिंग में डेव मिरे वर्ल्ड चैम्पियन हैं।

✻ स्पीड बोट से १२० फीट अंतर तक छलांग लगाने का श्रेय लुसियाना के बेथू को है।

✻ टोमेटो फाइट खेल स्पेन में १९४५ में शुरू हुआ।

✻ गोल्फ बॉल पर ३३६ खांचे बने होते हैं।

✻ पहले बैडमिंटन की रैकेट सूती धागे से बनती थी।

✻ स्केटिंग को खेल का दर्जा १८ वीं सदी में मिला।

✻ क्रिकेट खेलनेवाले देश महज १२ से १५ जबकि दुनिया के ८० प्रतिशत देशों में फुटबॉल को राष्ट्रीय खेल का दर्जा प्राप्त है।

✻ लॉंस आर्मस्ट्रांग वर्ल्ड चैम्पियन धावक है।

✻ क्रिकेट में पहले स्टेंप पर बॉल रखी जाती थी।

❋ अमेरिकन कंपनियों ने ऐसी गोल्फ बॉल बनाई है जो अंधेरे में चमकती व खास एनर्जी स्मैल छोड़ती है।

❋ बास्केट बॉल खिलाड़ी माइकेल कैंपबेल ने एक घंटे में १,०७६ थ्रो किये।

❋ सिडनी में २००५ में हुए ओलंपिक में दुनियाभर से १०,६५ खिलाड़ियों ने भाग लिया।

❋ टवेंटी २० क्रिकेट का उद्‌गम न्यूजीलैंड में है जहां पूर्व कप्तान मार्टिन क्रो ने पहली बार ऐसी स्पर्धा आयोजित की।

❋ नोत्रेदाम विश्वविद्यालय की फुटबाल टीम के कोच न्यूट रॉक्रे के १३ वर्ष के कार्यकाल में टीम केवल एक मैच हारी।

❋ सिंगापुर राष्ट्रीय विश्वविद्यालय ने पैकमेन वीडियो गेम बनाया जिसे लोग ग्राफिक कंम्प्यूटर पर खेलते हैं।

❋ सेंट जोंस विश्वविद्यालय के फुटबॉल कोच जॉन गालियार्डी ने कॉलेज समय में बिना कोई ट्रेनिंग लिए दूसरे प्रशिक्षकों से कहीं ज्यादा मुकाबले जीते। वेटलिफ्टिंग में उन्हें छात्रवृत्ति मिली थी।

❋ बॉब ड्यूडेक का जन्म से ही एक हाथ था। छह साल पहले से उन्होने गोल्फ खेलना शुरू किया और आज वह ३३० यार्ड (२७५ मीटर) तक बॉल फेंक सकते हैं।

❋ स्लो साइकलिंग को अंतर्राष्ट्रीय खेल का दर्जा प्राप्त है।

❋ विलियम बेड्स ने १८८३ में इंग्लैंड के लिए टेस्ट मैच में पहली हैट्रिक ली थी।

❋ स्विमिंग, सायकलिंग व रनिंग तीनों खेलों का समावेश कर खेले जाने वाला खेल ट्राय एथलॉन है।

❋ २००४ में आईबीएफ वर्ल्ड स्नूकर में विजयी हुई भारत की अनुजा ठाकुर २००५ में विश्व बिलियर्ड्स में विश्व विजेता हुई।

❋ स्कूलों में खेल-क्रीडा के प्रोत्साहन के लिए बजट से केंद्र सरकार ने ११२ करोड़ रुपये बांटे पर वे अब तक उस पर खर्च नहीं हुए।

❋ ऊँची कूद में रशियन महिला येलेना इसिनबायेवा वर्ल्ड चैम्पियन हैं।

❋ ७० साल की ब्रिटिश लेडी ज्यूली जोन्स यह दुनिया की सबसे बड़ी उम्र की हॉकी खिलाड़ी है।

❋ पीट सम्प्रास ने १९ साल २८ दिन की उम्र में आंद्रे आगासी को ६-४, ६-३, ६-२ से पराजित कर सबसे कम उम्र के अमेरिकी खुले मेन्स सिंगल्स चैम्पियन का खिताब पाया था।

❋ पिलो फाइट का खेल हर साल न्यूयॉर्क में होता है।

❋ दुनिया के सबसे युवा क्रिकेट कैप्टन का मान भारत के नवाब मंसूर अली पटौदी को है।

❋ विंबलडन टेनिस स्पर्धा इंग्लैंड में होती है।

❋ मुंबई क्रिकेट संघ ने अब तक ३६ बार रणजी ट्रॉफी जीती।

❋ पहले राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार का सम्मान विश्वनाथन आनंद को मिला।

❋ हवाई द्वीप का पुराना खेल लावा स्लेडिंग फिर शुरू हो गया है। लोग ५० मील प्रतिघंटा की रफ्तार से बहते हुए लावा पर करतब दिखाते हैं।

❋ ब्रिज खेल में ६३५, ०१३, ५५९, ५९९ तरह से हाथ बना जा सकते हैं।

❋ भारतीय नौकायन खिलाड़ी बुला चौधरी को लाइफ टाइम अचिवमेंट क्रीड़ा पुरस्कार दिया गया।

❋ टेनिस की महारानी के रूप में जानी जाती मार्टिना नवरातिलोवा ने कुल १४३० मैचेस जीते।

❋ ओलंपिक की वेबसाइट पहले केवल ग्रीक, अंग्रेजी व फ्रेंच भाषा में ही थी।

❋ ग्रांड मास्टर का खिताब जीतने वाली ८ महिला शतरंज खिलाडी देश में है।

❋ तैरने के बेकस्ट्रोक में २०० मीटर की दूरी २ मिनट ९ सेकेंड में पार करने का श्रेय जापान के कोसेक किता जिमा को जाता है।

❋ अमेरिका की हॉल ऑफ फेम टेनिस स्पर्धा जीतनेवाले एकमात्र भारतीय खिलाडी विजय अमृतराज हैं।

❋ बिलियर्ड्स या स्नूकर एक ही टेबल पर खेला जाता है। लकड़ी के १२ गुणा ६ फीट आकार के छह पॉकेटवाला यह टेबल होता है।

❋ ऑल टाइम ग्रेट टेनिस खिलाड़ियों में रोजर फ्रेडरर का नाम है जिन्होंने इस बार के ग्रेंड स्लैम के कुल २८ में से २७ मैच जीते।

❋ चेस (शतरंज) की शुरूआत भारत से ही हुई।

❋ जर्मनी के फारवर्ड लुकस पोबो लस्की को फीका ने वर्ल्ड कप का सर्वश्रेष्ठ युवा खिलाड़ी घोषित किया।

❋ क्रिकेट में सबसे ज्यादा ८०० विकेट लेने का श्रेय श्रीलंका के मुरलीधरन का है।

❋ फ्रांस की महिला टेनिस खिलाड़ी अमेलिया मॉरेस्मो का स्थान दुनिया में पहला है।

❋ पहला ओलंपिक एथेंस में सन् १८९६ में हुआ था, जिसमें केवल ९ राष्ट्रों ने भाग लिया था।

❋ पहला अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच सन् १८४४ में संयुक्त राज्य अमेरिका तथा कनाडा के बीच खेला गया था।

❋ प्राचीन ओलंपिक खेल ईसा पूर्व ८ वीं शताब्दी में यूनान में शुरू हुए थे।

❋ जापान का राष्ट्रीय खेल जूडो है।

❋ वॉलीबॉल की खोज १८९५ में विलियम जी. मॉरगन ने की।

❋ १९३० के दशक में पैटसी हेंड्रेन ने वेस्टइंडीज के बॉलर का सामना करने के लिए पहली बार हेलमेट का प्रयोग किया था।

❋ आईस स्कीइंग २००० साल पहले स्कैन्डेनोविया में शुरू हुआ।

❋ ऑस्ट्रेलियन ओपन टेनिस स्पर्धा में सबसे कम उम्र के विजेता पुरुष वर्ग में रोडलेवर थे जिन्होंने १९५३ में १८ वर्ष दो महीने की उम्र में इसे जीता।

❋ यदि मानवीय शरीर से फेफड़े को निकाल कर पूरा चपटा किया जाये तो इसका आकार टेनिस कोर्ट के बराबर होगा।

❋ १९९९ वर्ल्ड कप फायनल में सर्वाधिक स्कोर एडम गिलक्रिस्ट ने किए।

❋ छह वर्षीय पूजा बैनर्जी ने ५ घंटे में १२ किलोमीटर तैर कर रिकॉर्ड बनाया।

❋ दिल्ली की रिचा मिश्रा ने गुवाहाटी में आयोजित ३३ वें राष्ट्रीय खेलों में अपना सिक्का १३ मेडल जीतकर जमाया। तैराकी की विभिन्न स्पर्धाओं में उन्होंने ७ स्वर्ण, ३ रजत व ३ कांस्य पदक जीते।

❋ क्रिकेटर फारूख इंजीनियर पहले भारतीय खिलाड़ी थे जिन्होंने १९६० में ब्रांड का विज्ञापन किया था। यह उत्पाद था ब्रिलक्रीम।

❋ बॉलिंग में चार बार सबीना सलीम राष्ट्रीय चैम्पियन रह चुकी हैं।

❋ शतरंज में कोनेस हम्पी एकमात्र भारतीय महिला है जिसने ग्रैंडमास्टर चैम्पियन पद पाया।

❋ पहला बास्केट बॉल मैच ११ मार्च १८९२ को खेला गया।

❋ अंतर्राष्ट्रीय फुटबॉल मैच में भारत के एस. मेवालाल ने १९५२ में पहली बार गोल की हैट्रिक की।

❋ विश्वकप फुटबॉल स्पर्धा में घुटनों पर चोट लगने व उसके ऑपरेशन के बाद ब्राजील के खिलाड़ी रोनाल्डो ने जब २००२-०३ में पुनरागमन किया तब उन्होंने ३० गोल दागे थे।

❋ बॉक्सिंग में १९५८ में हरी सिंह ने कॉमनवेल्थ गेम्स में पहला ब्रांज मेडल हासिल किया।

❋ शतरंज में भारत की एस. विजयालक्ष्मी ने छह बार राष्ट्रीय पदक जीता।

❋ भारतीय स्विमिंग चैम्पियन अनिता सूद ने अब तक सबसे ज्यादा स्वर्ण पदक हासिल किये।

❋ अब तक दुनिया में करीब ५० हजार कम्प्यूटर वायरस पहचाने जा चुके हैं।

❋ टेबल टेनिस का पहला राष्ट्रीय पदक १९३८ में कोलकाता के एम. आयुब को मिला।

❋ अब तक सबसे ज्यादा ओलंपिक पदक किसी ने जीते हैं तो वह सोवियत संघ की जिम्नास्टिक लारिसा लेटेनिया है जिसने १९५६ से १९६४ के ओलंपिक में १८ पदक जीते। यह एक कीर्तिमान है।

❋ क्रिकेट में दिये गये विशेष योगदान के लिए विस्डेन २००४ की सूची में ४० खिलाड़ियों में भारत के ६ क्रिकेटर हैं।

❋ गोल्फ खिलाड़ी व निशानेबाज पीले रंग का चश्मा पहनते हैं। इस रंग से कमरे का सही अंदाज लगा सकते हैं।

❋ एशियाड खेलों में पुरुष हॉकी में भारत ने पहला स्वर्ण पदक १९६६ में हासिल किया।

❋ नॉबर्ट रोमैनकी नामक अमेरिकी वेटलिफ्टर ने चार बार ओलंपिक मेडल पाया।

❋ ई.पू. ९०० में ग्रीक एथलेटिक्स ने जिमनेशियम की रचना की।

❋ बिलियर्ड्स में सबसे पहले भारत के विल्सन जोन्स ने १९५८ में अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार पाया।

❋ रंगभेद का समर्थन करने के कारण १९८८ में इंग्लैंड क्रिकेट टीम का भारत दौरा रद्द हुआ था।

❋ रणजी ट्रॉफी क्रिकेट मैच में मुंबई संघ ने सबसे ज्यादा बार विजेता का पदक जीता।

❋ हॉकी खिलाड़ी रूप सिंह ने १९३२ में अमेरिका के विरूद्ध मैच में ११ गोल किये।

❋ सैय्यद किरमानी ने टेस्ट क्रिकेट में केवल एक विकेट लिया उनका शिकार था अजीम हफीज।

❋ अंतर्राष्ट्रीय कुश्ती में भारत के करतार सिंह ने ६ बार जीत हासिल की।

❋ १००० रन पहली बार बनानेवाले पहले भारतीय खिलाड़ी विजय मर्चेंट हैं।

❋ १९९८ में हुई बैंकाक एशिया स्पर्धा में बिलियर्ड्स के लिए भारत को दो गोल्ड मेडल, एक सिल्वर मेडल व एक ब्रांज मिला।

❋ फुटबॉल ओलंपिक में १९४८ में पहली बार भारत ने हिस्सा लिया।

❋ इंग्लैंड के स्वॅनसी के बिशप स्कूल के १३५६ छात्रों ने एक ही रस्सी पर कूद लगाकर रिकॉर्ड बनाया।

❋ बिना कोई सेट गंवाए ग्रेड स्लैम जीतनेवालों में बोर्ग के बाद दूसरे टेनिस खिलाड़ी रोजर फ्रेडरर हैं।

❋ बैडमिंटन को यह नाम ड्यूक ब्यूफोर्ड ने दिया।

❋ सचिन तेंदुलकर ने अब तक १३२ टेस्ट मैचेस व ३६० से ज्यादा वन डे मैचों में अपना बल्ला घुमाया है।

❋ कबड्डी को हु तू तू के नाम से भी जाना जाता है।

❋ लिएंडर पेस व महेश भूपति की जोड़ी पहली बार १९९९ की फ्रेंच ओपन टेनिस प्रतिस्पर्धा में उतरी व डबल्स का विजेता पदक जीता उसके बाद २००१ तक लगातार तीन साल उन्होंने ये हैट्रिक ही बनाई।

❋ भारतीय क्रिकेट खिलाड़ी लेग स्पिनर अनिल कुंबले ने टेस्ट क्रिकेट में ६१९ विकट लिये और दुनिया का तीसरा व भारत का प्रथम खिलाड़ी है।

❋ फुटबॉल खिलाड़ी राजेंद्र सिंह ने एक ही मैच में १२ गोल बनाए।

❋ ओलंपिक प्रतियोगिता का घोष वाक्य है Faster, Higher, Stronger.

❋ सबसे ज्यादा कमानेवाले खिलाड़ी अमेरिका के गोल्फ खिलाड़ी टायगर वुड्स हैं जिनकी कमाई ८.३ करोड़ डॉलर है।

❋ १९९२ के विंटर ओलंपिक की स्कीइंग स्पर्धा में अपना जौहर दिखा चुके जॉन फेरा ने एक अनूठी स्पर्धा जीती है। उन्होंने नॉर्थ अमेरिका वाइफ कैरिंग चैम्पियनशिप में अपनी पत्नी को पीठ पर लादकर दौड़ते हुए स्वर्ण पदक हासिल किया।

❋ डेविस कप टेनिस स्पर्धा में भाग लेनेवाले पहले भारतीय खिलाड़ी एम सलीम (१९२१) थे।

❋ बहरीन की एथलीट १९ वर्षीया रुकाया ने सिर से पैर तक ढंके कपड़ों में भी न केवल दौड़ लगाई बल्कि एशियाड में २०० मीटर की रेस में गोल्ड मेडल भी जीता।

❋ तैरने की प्रतियोगिता में भारतीय खिलाड़ियों ने १९२८ के एम्स्टरडेम के ओलंपिक में पहली बार भाग लिया।

❋ सुसान विलियम्स ने ५८ सेमी. लंबा बबलगम फोड़ा।

❋ आज की दुनिया का सबसे बड़ा धनुर्धर इटली का माइकेल फ्रेंगली है।

❋ वर्ल्ड कप हॉकी के बाद विश्व रैंकिंग में विजेता जर्मनी है। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया, स्पेन, हॉलैंड, पाकिस्तान है। भारत का स्थान सातवां है।

❋ कैरम एकमात्र ऐसा खेल है जिसमें भारत १९९१ से विजेता रहा है।

❋ वर्ल्ड कप मैच में सर्वाधिक एक्स्ट्रा (९६) पाकिस्तान विरुद्ध स्कॉटलैंड में १९९९ में लिए गये।

❋ ऑस्ट्रेलिया वर्ल्ड कप मैच आठ साल पहले पाकिस्तान से हारा था। उसके बाद कभी नहीं।

❋ पहले वर्ल्ड कप फाइनल में कोई भी शून्य पर नहीं गया।

❋ अधिकतर फुटबॉल खिलाड़ी खेल में सात मील दौड़ते हैं।

❋ २००५-०६ का वर्ल्ड कप फुटबॉल स्पर्धा में उरूग्वे को सोलहवां वैश्विक मानांकन प्राप्त है।

❋ मैनचेस्टर यूनायटेड के मुख्य फुटबॉल पॉल शोल्स ने रिटायरमेंट लेने का निर्णय लिया था।

❋ कैलिफोर्निया में हर वर्ष डंडा घुमाओ प्रतियोगिता होती है। इस प्रतियोगिता में सर्वाधिक समय तक डंडा घुमाते रहनेवाला विजयी होता है। एक बार एक प्रतियोगी ने १२२ घंटे तक लगातार डंडा घुमाकर प्रतियोगिता जीती। वहीं अमेरिका में महिलाओं की एक प्रतियोगिता होती है, जिसमें उन्हें बेलन फेंकना होता है। यह प्रतियोगिता इओवा में आयोजित एक राजकीय मेले में संपन्न होती है। एक बार एक महिला ने ९०७ ग्राम भारी बेलन को १७५ फुट दूर तक फेंककर पुरस्कार जीता था।

❋ फुटबॉल वर्ल्ड रैंकिंग में भारत १४५ नंबर पर है।

✻ वीर धवल खाडे- देश के प्रसिद्ध तैराक है। ५४ वीं मलेशियन ओपन स्पर्धा में ८ मैडल जीते हैं। ५०,१००,२०० मीटर फ्री स्टाइल मैचों में तीन गोल्ड जीते हैं। ५० मीटर फ्री स्टाइल में २३.१ सेकंद का रिकॉर्ड बनाया है। इससे पहले २००८ में इसी स्पर्धा में १०० मीटर फ्री स्टाइल में रिकॉर्ड बनाया था।

✻ विश्व फुटबॉल रैंकिंग में संयुक्त अरब अमीरात १११ नंबर पर है।

✻ भारत के पूर्व हॉकी खिलाड़ी स्व. जोसेफ गॅलीबडी ने बर्लिन में १९३६ के ऑलिंपिक स्पर्धा में हॉकी मैच खेला था।

✻ जर्मनी के फिलीप कोल श्राइबर ने हैल ग्रास कोर्ट टेनिस स्पर्धा का खिताब जीता है। वे वर्ल्ड रैंकिंग में ४९ वे नंबर पर हैं।

✻ राफेल नदाल- क्ले कोर्ट के राजा की उपाधि से सम्मानित स्पेनिश टेनिस खिलाड़ी हैं। इस बार फ्रेंच टेनिस स्पर्धा छठी बार जीतने का इतिहास रचा है। राफा के उपनाम से प्रसिद्ध हैं। २०११ में अबतक ५२ सिंगल्स में से ४६ मैचों में विजयी रहे हैं।

✻ क्युबा के इरिक इर्नान्डेस ने सिर्फ एक मिनट में अपने सिर द्वारा ३१९ बार फुटबॉल हवा में उड़कर दिखाया था।

✻ गगन नारंग और अभिनव बिंद्रा ने कॉमनवेल्स गेम्स में निशानेबाजी में १० मीटर पिस्टल पेयर में स्वर्ण पदक प्राप्त किया।

✻ वर्ल्ड टेनिस रैंकिंग में भारत का सोमदेव देवबर्मन ६८ नंबर पर है।

✻ इटली के मौटो गुन्सी से सिर्फ २४ घंटों में २४ मील का अंतर स्कैटिंग करते हुए पार किया था।

✻ गियान लुइगी बफॉन-इटली का गोल कीपर है।

✻ उरूग्वे ने १९३० के विश्व कप फुटबॉल के अंतिम मैच में अर्जंटीना को हराया था। इस खुशी में इस देश में दूसरा दिन राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया गया था।

✻ राफेल नदाल- इस बार के फ्रेंच ओपन टेनिस स्पर्धा के विजेता हैं। लाल मिट्टी पर लगातार पांचवी बार विजयी हुए हैं। बीते छह वर्षों में स्पर्धा का पांचवी बार विजेता पद प्राप्त किया है। उनके खेल जीवन का यह सातवां ग्रैंड स्लेम पदक है।

✻ २००४ में संपन्न न्यूयॉर्क मैरेथान में पूरे ३७२५७ धावक दौड़े थे।

✻ स्पिनर हरभजन सिंह ने क्रिकेट टेस्ट मैच में अबतक ४०० से ज्यादा विकेट लिए हैं।

✻ दक्षिण कोरिया की खिलाड़ी किम यून- मी ने सिर्फ १३ वर्ष की उम्र में संघीय गोल्ड मैडल जीता था।

✻ १९०० में संपन्न द्वितीय ओलंपिक में सर्वप्रथम क्रिकेट व नौका रेस खेल शामिल किए गए थे।

✻ ऑस्ट्रेलिया के स्टीफन कैरनहैन ने ऑस्ट्रेलिया फुटबॉल लीग में पूरे २२६ मैचों में कप्तानी की थी।

✻ ऑस्ट्रलियाई गेंदबाज शेनवार्न ने १४५ मैचों में ७०८ विकेट लिए हैं।

✻ विश्व टेनिस डबल की रैंकिंग में लिएंडर पेस और महेश भूपति क्रमश: छठें और सातवें स्थान पर हैं।

✻ शतरंज- प्राचीन खेल शतरंज भारत में शुरू हुआ था और करीब २५०० वर्ष पूर्व पर्शिया और ग्रीस (यूनान) से होता हुआ पश्चिमी देशों में पहुंचा। शतरंज लकड़ी के एक बोर्ड पर राजा, रानी, वजीर, ऊंट, घोड़ा औरा सिपाही जैसे लकड़ी के टुकड़ों से खेला जाता है। प्रत्येक पात्र के चलने का तरीका अलग होता है।

✻ ओलिम्पिक मशाल पहली बार १९६४ में टोक्यो ओलिम्पिक से पहले नई दिल्ली आई थी। यह मशाल नैशनल स्टेडियम में रिसीव की गई थी। दूसरी बार एथेंस ओलिम्पिक से पहले २००४ में यह मशाल भारत आई थी।

✻ डेल स्टेन की गेंदबाजी - दक्षिण अफ्रीका का यह तेज गेंदबाज डेल स्टेन जब गेंद डालता है तो लगता है किसी

मिशन पर है। टेस्ट रैंकिंग में वह पहले पायदान पर हैं और उन्होंने कभी नहीं सोचा था कि अपने देश के लिए क्रिकेट खेलेंगे। दक्षिण अफ्रीका में विश्व प्रसिद्ध क्रूगर नेशनल पार्क की सीमा पर फालाबोरवा के छोटे से शहर का यह खिलाड़ी अंतरराष्ट्रीय टीम का हिस्सा होगा, यह किसी सपने से कम नहीं है। लेकिन बचपन से ही उन्हें आउटडोर गेम्स का शौक था। स्टेन ११ वर्ष की उम्र से क्रिकेट खेल रहे हैं।

❋ क्रिकेट खेल के साथ सिलीपॉइन्ट शब्द जुड़ा है।

❋ ईसा से लगभग २००० वर्ष पूर्व मेसोपोटामिया के लोग यूफ्रेटीज नदी में नौका-दौड़ की प्रतियोगिता किया करते थे। कुछ सदियों के बाद मित्र के लोगों ने भी नील नदी में नौका-दौड़ की प्रतियोगिता शुरु कर दी। आज नौका दौड़ संसार के व्यवस्थित खेलों में एक है, आधुनिक प्रकार की नौका-दौड़ की शुरुआत कैसे हुई? आधुनिक प्रकार की प्रथम नौका-दौड़ सन् १७७५ में इंग्लैंड में शुरू हुई थी। इसके बाद प्रतिवर्ष खेल के रूप में नौका-दौड़ की प्रतियोगिता होने लगी। नौका-दौड़ की प्रतियोगिताएं कई तरह से होती हैं। कुछ प्रतियोगिताओं में एक आदमी एक ही बल्ली को दोनों हाथों से पकड़कर नाव को दौड़ता है, जो कुछ प्रतियोगिताओं में दो बल्लियों को दोनों हाथों में पकड़कर नाव से दौड़ाना होता है। कुछ प्रतियोगिताओं में आठ-आठ खिलाड़ी एक-एक नाव पर सवार होकर नाव को दौड़ाते हैं। इन दौड़ों की दूरी निश्चित होती है। कुछ प्रतियोगिताओं में चार और दो व्यक्तियों की टीमों का भी विधान है। सन् १९०० से अब तक के ओलंपिक खेलों में नौका-दौड़ के १३२ फाइनल खेले जा चुके हैं। इनमें से २६ अमेरिका, २५ पूर्वी जर्मनी, १५ पश्चिमी जर्मनी और १४ ब्रिटेन ने जीते हैं। ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय की नौका-दौड़ संसार में बहुत प्रसिद्ध है। यह टेम्स नदी में पुटनी से मार्टलेक के बीच में होती है। इन दोनों स्थानों के बीच की दूरी ६.८१८ किमी (४१/४ मील) है। इस दौड़ का १६ मिनट ५८ सेकंड का कीर्तिमान ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने २० मार्च १९७६ को स्थापित किया था।

❋ नीदरलैंड की हरमन वान डेन ब्रोएक और पाईटीर क्यूएल ने ११ अगस्त १९८४ को ६५० मी. लंबी पतंग २२ मिनट ५० सेकेंड उड़ाकर रिकॉर्ड बनाया था। जापान के ६० वर्षीय काजुहिको असाबा ने ८ नवंबर १९८३ को एक ही डोरी से ५५८१ पतंगें उड़ाई थीं। अमेरिका के प्रो. फिलिप आर व जय पी कुंज ने २१ नवंबर १९६७ को ६८६० मी. ऊंची पतंग उड़ाकर गिनीज बुक में अपना नाम दर्ज करवाया। सबसे ज्यादा समय तक पतंग उड़ाने की अवधि का रिकॉर्ड १८० घंटे १७ मिनट का है। यह अमेरिका की एडमंड्स कम्युनिटी कॉलेज टीम ने २१ से २९ अगस्त १९८२ तक बनाया था।

❋ दुनिया की इकलौती इंटरकॉन्टिनेंटल स्विमिंग रेस

यह एशियन किनारे से शुरू होती है और यूरोपियन किनारे पर खत्म होती है। ६.५ किमी की रेस में २४०० खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया, इनमें १२०० तैराक तुर्की के इस्तांबुल में गत दिन ३१वीं बोसफोरस क्रॉस-कॉन्टिनेंटल स्विमिंग रेस हुई। इसमें दुनिया भर के २४०० खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। इसमें १२०० तैराक तुर्की के ही थे। ६.५ किमी की इस रेस को दुनिया की सर्वश्रेष्ठ ओपन वॉटर स्विमिंग रेस कहा जाता है। यह दुनिया की इकलौती इंटरकॉन्टिनेंटल स्विमिंग रेस (अंतर महाद्वीपीय रेस) है। इस बार रेस में १४ से ८९ साल तक के खिलाड़ियों ने हिस्सा लिया। इस रेस के लिए इस्तांबुल ने अपना शिपिंग ट्रैफिक एक दिन के लिए बंद कर लिया। रेस पहली बार १९८९ में हुई थी। तब ६४ पुरुष और ४ महिला तैराकों ने हिस्सा लिया था।

❋ दुनियाभर के विशेष स्टेडियम के बारे में जानें

दुनिया के कुछ स्टेडियम बेहद खूबसूरत हैं, तो कुछ अपनी कमाल की डिजाइनिंग की वजह से लोगों की सराहना पाते हैं। ऐसे ही कुछ अलग से स्टेडियम खास आपकी नजर। खेलों के लिए लोगों की रुचि सिर्फ गेम तक ही नहीं है। इस बात को साबित करते हैं, ये खास डिजाइन और टैक्नोलॉजी से लैस स्टेडियम्स।

मरीना बे सिंगापुर- मरीना बे की खासियत है कि यह स्टेडियम पानी पर तैयार किया गया है। यह तैरनेवाला दुनिया का सबसे बड़ा स्टेडियम है। १२० मीटर लंबे और ८३ मीटर चौड़े इस स्टेडियम को स्टील से बनाया गया है। यह इतना मजबूत है कि १०७० टन तक का वजन उठा सकता है। मतलब यह है कि इस पर ९००० लोगों के खड़े होने के बाद २०० टन स्टेज सजाने का सामान लगाया जा सकता है और उसके बाद ३० टनल के मिलिट्री व्हीकल खड़े किए जा सकते हैं। स्टेडियम में बनी गैलरी से ३० हजार लोग खेल का आनंद ले सकते हैं।

क्रोटिया गॉस्पिन डोलेक- इम्टोस्की- क्रोटिया गॉस्पिन डोलेक स्टेडियम इम्टोस्की में है। १९८९ में बने इस स्टेडियम को एनके इम्टोस्की फुटबॉल क्लब के लिए होम स्टेडियम की तरह इस्तेमाल किया जाता है। स्टेडियम की खूबसूरती इस बात में है कि इसे कुदरती नजारों के बीच ५०० मीटर गहरी झील के किनारे बनाया गया है। स्टेडियम में ४ हजार लोग बैठकर फुटबॉल मैच देख सकते हैं।

बरागा- पुर्तगाल- पुर्तगाल का यह स्टेडियम दुनिया के सबसे ज्यादा लागत वाले और सबसे अजीबो-गरीब स्टेडियमों में से एक है। इस स्टेडियम को बनाने के लिए कई बड़ी-बड़ी चट्टानों को धकेला गया। पहाड़ों को सपाट करने की वजह से इसकी लागत बढ़ते-बढ़ते ५ अरब ५२ करोड़ रुपए तक पहुंच गई। यह स्टेडियम ज्यादा पुराना नहीं है। इसे साल २००३ में बनाया गया था। यहां ३०१५४ लोगों के बैठने की जगह है। पहाड़ों के बीच बना यह अपनी तरह का इकलौता स्टेडियम है।

द फैरो-आइलैंड- फैरो आइलैंड अस्सल में नॉर्वे के समुद्र से उत्तरी अटलांटिक के बीच फैले कई आइलैंड हैं। इनका नैशनल फुटबॉल स्टेडियम समुद्र के साथ लगता है।

❋ पहली पहली बार तिरुनेश दिबाबा (ईथोपिया) महिला धावक ने एक ही विश्व एथलेटिक चैम्पियनशिप (२००५) में ५००० मीटर और १०००० मीटर की दौड़ जीती।

❋ सारायेवो- १९८४ में इतिहास के सबसे कामयाब विंटर ओलिम्पिक गेम्स का आयोजन करनेवाला यह शहर यूरोप के सबसे लोकप्रिय पर्यटन स्थल में तेजी से स्थान बनाता जा रहा है।

❋ टेनिस का ऑस्ट्रेलियन ओपन ग्रैड स्लेम प्रतिवर्ष के पहले दिन आरंभ होता है।

❋ फुटबॉल एक बढ़िया खेल है, साथ ही व्यायाम के तौर पर भी काम करता है। ६८ से ७० मी. होता है बॉल का सरकमफेरेंस। यह चमड़े या सिंथैटिक की बनती है। ४५ मिनट का खेल दो हॉफ में खेला जाता है। १५ मिनट का ब्रेक मिलता है। १० खिलाड़ी मैदान में, १ गोल कीपर होता है इस खेल में।

फुटबॉल के शौकीन बच्चों के लिए यह खेल व्यायाम है। इसे खेलने में दौड़-भाग के साथ ही दिमाग भी चौकन्ना बना रहता है। इसकी बदौलत आप दिमागी बीमारियों जैसे हाइपरटेंशन, अवसाद से बच सकते है। फुटबॉल से एकाग्रता बढ़ती

है, जिससे दिमाग स्वस्थ रहता है। इस खेल को खेलने से बच्चे ग्रुप में काम करना सीखते है। स्पोर्टमैनशिप प्रतिभा उभरती है। देश के लिए खेलने के लिए देशप्रेम जगता है। नए दोस्त बनते हैं।

पहली फुटबॉल एसोसिएशन २६ अक्टूबर १८६३ में बनी थी। पहला फुटबॉल गेम मोरटलेक में १९ दिसम्बर १८६३ में खेला गया था।

फुटबॉल लंदन ओलंपिक्स १९०५ में एक बड़े स्तर पर सामने आया। फीफा (फेडरेशन इंटरनेशनल फुटबॉल एसोसिएशन) जो कि १९३० में बनी और पहला मैच खेला गया। पहला वर्ल्ड कप १९३० में हुआ। फीफा का मोटो है- फॉर दी गेम, फॉर दी वर्ल्ड। फुटबॉल गेम लोकल क्लब की टीमों द्वारा खेला जाता है, जैसे मशहूर टीम बार्सिलोना स्पेन के क्लब की है। इसी प्रकार चेलसा, मेनचेस्टर यूनाइटेड ये सब क्लबों के नाम है।

शुरू में फुटबॉल में खिलाड़ी बदलने की अनुमति नहीं थी। सत्तर-अस्सी साल तक यही नियम रहा। फिर फीफा ने १९६० के दशक में नियम बदला, जिसके अधीन मध्यांतर के बाद कोई भी टीम एक खिलाड़ी को बदल सकती है। फिर यह तय किया गया कि एक खिलाड़ी को खेल के किसी मोड़ पर भी बदला जा सकता है। वर्ष १९७० के बाद दो खिलाड़ी बदलने की अनुमति दी गयी। १९९४ की विश्व कप प्रतियोगिता में एक ऐतिहासिक फैसला किया गया कि कई देश बहुत गर्म हैं और खिलाड़ियों में खेलते हुए पानी की कमी हो जाती है, इसलिए किसी भी अंतर्राष्ट्रीय मैच में कोई भी टीम किसी भी समय तीन खिलाड़ी बदल सकती है। लेकिन जो भी खिलाड़ी बदला जाता है, वह उस मैच में दोबारा नहीं बदला जा सकता।

✲ न्यूजीलैंड का वह खिलाड़ी जिसने १४ गेंदों में ५० रन बना कर टी-२० का दूसरा सबसे तेज अर्धशतक का रिकॉर्ड अपने नाम किया- मुनरो।

✲ तमिलनाडू के जल्लीकट्टू के खेल के लिए अनुमति देनेवाली केंद्र की अधिसूचना को उच्चतम न्यायाल में चुनौती दी गयी।

✲ लंदन ओलंपिक २०१२ की पदक तालिका में भारत का ५५ वां स्थान रहा।

✲ भारत की ओर से सबसे ज्यादा ८१ एथलीटों ने लंदन ओलंपिक २०१२ में भाग लिया।

✲ भारत को लंदन ओलंपिक २०१२ में कुछ ६ पदक मिले, बीजिंग ओलंपिक २००८ में भारत को ३ पदक मिले थे।

✲ सुशील कुमार ने ओलंपिक २०१२ खेलों में पुरुष फ्रीस्टाइल कुश्ती ६६ किलो वर्ग का रजत पदक।

✲ योगेश्वर दत्त ने ओलंपिक २०१२ खेलों में पुरुष फ्रीस्टाइल कुश्ती के ६० किलो वर्ग का कांस्य पदक।

✲ गगन नारंग ने ओलंपिक २०१२ खेलों में पुरुषों की १० मीटर एयर रायफल शूटिंग स्पर्धा का कांस्य पदक।

✲ विजय कुमार ने ओलंपिक २०१२ खेलों में पुरुषों की २५ मीटर रैपिड फायर पिस्टल स्पर्धा का रजत पदक।

✲ साइना नेहवाल ने ओलंपिक २०१२ खेलों में महिला बैडमिंटन एकल स्पर्धा का कांस्य पदक।

✲ एमसी मैरी कॉम ने ओलंपिक २०१२ खेलों में महिला मुक्केबाजी प्रतियोगिता के ५१ किग्रा वर्ग का कांस्य।

✲ राष्ट्रीय खेल दिवस २९ अगस्त को मनाया जाता है।

✲ हॉकी की एक टीम में ११ खिलाड़ी होते हैं।

✲ १९९२ के क्रिकेट विश्वकप में इंग्लैंड को हराते हुए जिम्बाब्वे ने बड़ा उलटफेर कर दिया था। पहले बल्लेबाजी करते हुए जिम्बाब्वे ने सिर्फ १३४ रन बनाए और इंग्लैंड का काम आसान कर दिया लेकिन हुआ ऐसा नहीं, इंग्लैंड की टीम १२५

रन पर ही ढेर हो गई।

❋ सांप-सीढ़ी का खेल तेरहवीं शताब्दी में संत कवि ज्ञानदेव द्वारा तैयार किया गया था। इसे मूल रूप से मोक्षपट कहते थे। इस खेल में सीढ़ियां वरदानों का प्रतिनिधित्व करती थीं और सांप सांसारिक अवगुणों को दर्शानेवाले होते थे। उस दौर में इसे कौड़ियों और पासों से खेला जाता था। खेल का उद्देश्य अच्छे कर्म को प्रोत्साहन देना है। इसमें यही संदेश दिया गया है अच्छे कर्म स्वर्ग की ओर ले जाते हैं और बुरे कर्म दोबारा जन्म चक्र में डाल देते हैं।

❋ मैराथन दौड़ - सन १८९६ में जब ओलंपिक खेलों की एथेंस (युनान में) पुन: शुरुआत हुई तो उनमें कई मील लंबी एक दौड़ का आयोजन किया गया। इस लंबी दौड़ को मैराथन दौड़ का नाम दिया गया। इसकी शुरुआत यूनान के फीडिप्पीडीज नामक सिपाही को सम्मान देने के लिए की गई थी।

ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार ईसा से ४९० वर्ष पूर्व मैराथन नामक स्थान पर यूनान और फारस में घमासान युद्ध हुआ। इस युद्ध में यूनान ने विजय प्राप्त की। इस विजय की सूचना एथेंस तक पहुंचाने के लिए फीडीप्पीडीज ने मैराथन से एथेंशस तक की लगभग ४० किमी की दूरी दौड़कर तय की थी। उसी के सम्मान में इसको मैराथन दौड़ का नाम दिया गया। सन १८९६ की प्रथम मैराथन दौड़ भी यूनान के स्पिरोज लुई ने जीती। १९२४ के ओलंपिक खेलों में मैराथन दौड़ की दूरी ४२९५ मीटर निश्चित की गई।

दूसरी मैराथन दौड़ की दूरी अलग भी हो सकती है। मैराथन दौड़ बहुत ही दिलचस्प होती है, क्योंकि इसे जीतने के लिए उम्र और प्रशिक्षण का कोई अधिक महत्व नहीं है। सन १९२२ में साउथ अफ्रीकन कोमरेड्स मैराथन ३९ वर्ष के आथर न्यूटन ने जीती थी। यह ८७९८.६ मीटर लंबी दौड़ थी।

बोस्टन एथलेटिक एसोसिएशन मैराथन सन १९५२ में १९ वर्ष के शिगेकी तनाका नामक जापानी ने जीती थी। सन १९५२ के आलंपिक खेलों में चैकोस्लोवाकिया के एमिल जैटोपेक ने मैराथन दौड़ का २ घंटे २३ मिनट ३.१ सेकेंड का नया कीर्तिमान स्थापित किया। इस दौड़ में बहुत से खिलाड़ी भाग लेते हैं।

❋ भारत की शिरीन खुशरू कियाश को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर तीन खेलों में देश का प्रतिनिधित्व करने का गौरव प्राप्त है। सन १९६८ में उन्होंने दिल्ली में आयोजित पहली महिला एशियाई हॉकी चैम्पियनशिप में भाग लिया। दो वर्ष बाद क्वालालम्पुर में खेली गई तीसरी एशिया, महिला बास्केटबॉल प्रतियोगिता (१९७०) में उन्होंने देश का प्रतिनिधित्व किया। सन १९७५ में भारतीय क्रिकेट टीम की सदस्या थीं। आकाशवाणी के मुंबई केंद्र द्वारा १ जनवरी १९३६ को बर्टी मेयर ने पहली क्रिकेट कमेंट्री प्रस्तुत की। यह मैच अखिल भारतीय महाराजा पटियाला एकादश और ऑस्ट्रेलियाई एकादश के बीच खेला गया था। तब आकाशवाणी का नाम केवल ऑल इण्डिया रेडियो हुआ करता था। आकाशवाणी नाम सन १९५८ से स्वीकार किया गया।

❋ कनाडा में गेरी सोलर नामक युवती हाथ-पैर बांधकर पांच मील तक तैरी।

❋ एशियाई खेलों की शुरुआत भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के प्रयासों से सन् १९५१ में नई दिल्ली में हुई थी। इनका आयोजन हर चार वर्ष बाद होता है।

❋ सन १९०० के पेरिस ओलंपिक में पहली बार फुटबॉल को खेलों में शामिल किया गया था।

✻ विशाल राष्ट्रीय घोड़ों की दौड़ में रेड रम नाम का घोड़ा तीन बार (१९७३, १९७४, १९७७) में प्रथम स्थान पर आया था। इसके अलावा १९७५ और १९७६ में वह दूसरे स्थान पर आया था।

✻ स्की बोबिंग (झटकों के साथ ऊपर नीचे फिसलन) के खिलाड़ी अपनी गति को १६० किलोमीटर प्रति घंटा तक बढ़ा सकते हैं। विश्व स्की बोबिंग चैंपियनशिप साल में दो बार आयोजित की जाती है, जिसमें २० देशों के खिलाड़ी भाग लेते हैं। यह प्रतियोगिता १९६७ से आयोजित की जाती है।

✻ पहला लोंसडेल बेल्ट मुक्केबाजी के लिए लंदन के नेशनल स्पोर्टिंग क्लब ने प्रदान किया था, जिसे लाइटवेट चैंपियन फ्रेडल वेल्श ने १९०९ में जीता था। वर्तमान में बेल्ट ब्रिटेन के बॉक्सिंग कंट्रोल बोर्ड द्वारा प्रदान किए जाते हैं।

स्काई डाइविंग में अब तक की गति का रिकार्ड ९८८ किलोमीटर प्रतिघंटा है। यह मनुष्य द्वारा सर्वाधिक कीर्तिमान बनाया गया है।

✻ सबसे पहली बार ओलंपिक खेलों को टीवी पर १९३६ में बर्लिन में हुए ओलंपिक खेलों के समय दिखाया गया था, जिस १,५०,००० दर्शकों ने २८ केंद्रों पर देखा था। ये केंद्र पब्लिक टीवी रूम बर्लिन में बनाए गए थे।

✻ सबसे पहला क्रिकेट टेस्ट मैच इंग्लैंड और आस्ट्रेलिया के बीच १८७७ में मेलबोर्न (आस्ट्रेलिया) में खेला गया था, जिसे ऑस्ट्रेलिया ने ४५ रनों से जीत लिया था।

✻ भारत का सबसे बड़ा खेल मैदान युवा भारतीय स्टेडियम है।

✻ एकसाथ सबसे ज्यादा खिलाड़ी रग्बी खेल में खेलते हैं।

✻ वाटर पोलो की एक टीम में सात खिलाड़ी होते हैं।

✻ वॉलीबाल की टीम में सात खिलाड़ी होते है।

✻ हीव, कैड्रल, डबल नेल्सन, डागफल कुश्ती खेल से संबंधित शब्द है।

✻ शतरंज विश्व कप दो साल बाद के अंतराल से होता है।

✻ पुट हॉल, निवालिक, कैडी, लिम्स, आयरन शब्द गोल्फ खेल से संबंधित है।

✻ बेसबॉल खेल में जो खिलाड़ी बॉल को बेटर के लिए फेंकता उसे पिचर कहते हैं।

✻ बिग पुश थ्योरी आर. रॉडन ने दिया है।

✻ स्टाननिस्लापस वावरिका उस खिलाड़ी ने लगातार तीसरी बार चेन्नई ओपन खिताब जीता।

✻ सानिया मिर्जा एवं मार्टिना हिगिस इस टेनिस जोड़ी ने डब्ल्यूटीए ब्रिसबन टेनिस ट्रॉफी जीती।

✻ सबसे अधिक देर तक एक पांव पर खड़े होने का रिकॉर्ड श्रीलंका के कुमार आनन्द (३३ घंटे) के नाम हैं।

✻ रिचर्ड सनड्रक- ८ वर्ष की आयु में रिचर्ड सनड्रक की तुलना हरक्यूलस से होने लगी थी, उन्हें लोग छोटा हरक्यूलस भी कहते हैं। इतनी छोटी उम्र में रिचर्ड सनड्रक को छोटा हरक्यूलस उनकी जबरदस्त बॉडी के लिए कहा जाता है। यूक्रेन में जन्मे, अमेरिकी बॉडी बिल्डर रिचर्ड मार्शल कलाकार और एक्टर भी हैं। उन्हें दुनिया के सबसे ताकतवर बच्चे के रूप में जाना जाता है।

गियोलिआनो क्लौडीयू स्ट्रो- ९० डिग्री पुश अप्स, कांच की बोतलों पर पुश अप्स और सबसे ज्यादा देर तक हैंडस्टैंड

जैसे कई हैरतअंगेज कारनामे इस बच्चे के छोटे हाथों का खेल है। महज ६ साल की उम्र में यह बच्चा अपनी टेलैंट की वजह से इंटरनेट पर फेमस हो गया था। आज इस रोमानियाई जिमनास्ट बच्चे की पहचान एक बॉडी बिल्डर के तौर पर भी बन चुकी है। स्ट्रो का नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज है। स्ट्रो ने साल २०११ में एक इतालवी टीवी शो पर दर्शकों के सामने स्टंट करके काफी सुर्खियां बटोरी थी।

यंग जिंलोंग- छोटा पैकेट बड़ा धमाका, यह लाइन यंग जिंलोंग पर बिल्कुल फिट बैठती हैं। ७ साल के यंग जिंलोंग की ताकत के सामने अच्छे-अच्छों के पसीने छूट जाते हैं। इस बच्चे में इतनी ताकत है कि वो एक कार तक को भी खींच सकता है। लेकिन जिंलोंग अपने से ६ गुना ज्यादा वजनी अपने पिता को ऐसे उठा लेता है मानो किसी खिलौने को उठा रहा हो।

सी.जे. सेन्टर- अमेरिका में रहनेवाला यह बच्चा महज १० साल की उम्र में फिटनेस ट्रेनर बना गया था। आप इसी बात से अंदाजा लगा सकते हैं कि इस बच्चे की बॉडी कैसी होगी। सी.जे.सेंटर एक फुटबॉल प्लेयर भी है। इस बच्चे को व्यायाम करना बेहद पसंद है कि इसने खुद की बॉडी को तो अच्छी शेप में ढाल लिया है साथ ही डीवीडी के जरिए इंटरनेट पर व्यायाम के गुर सिखाता है।

जैक स्केलेन्स चल्गर- जैक तब से बॉडीबिल्डिंग कर रहा है जब वो महज ११ साल का था। इसके बाद जैक ने इस खेल को गंभीरता से लेना शुरू कर दिया। जैक ने अपनी बॉडी शेप को बनाए रखने के लिए ४ साल से सख्त रुटीन बनाया हुआ है। जैक जब महज ११ साल के थे तब उन्होंने १७५ आयबीएस की वेटलिफ्टिंग की थी और अब उनका लक्ष्य ४०० आयबीएस की तरफ है।

❋ दुनिया का सबसे ऊंचा क्रिकेट का मैदान हिमाचल प्रदेश के चायल नामक स्थान पर है। इसे समुद्री सतह से २४४४ मीटर की ऊंचाई पर भूमि को समतल बनाकर १९९३ में तैयार किया गया था।

❋ शतरंज को नवाबों का खेल माना जाता है और इसका विकास हिन्दुस्तान से ही हुआ है। शतरंज के खेल में ६४ छोटे-छोटे वर्ग होते हैं जिन पर दो खिलाड़ियों के १६-१६ मोहरें होती है। इन मोहरों को आगे बढ़ाते हुए एक दूसरे की सेना पर आक्रमण करना होता है और अपने प्रतिद्वंदी खिलाड़ी के बादशाह को मात देनी होती है। लेकिन यह खेल इतना दिमाग खपानेवाला होता है कि इसमें जीतना आसान नहीं होता।

❋ इंडिया एक मात्र ऐसी क्रिकेट टीम है जिसने ६० ओवर, ५० ओवर और २० ओवर का वर्ल्ड कप जीता है।

❋ मुंबई के ब्रेब्रॉर्न स्टेडियम में १९८८ में खेल वन डे अभ्यास मैच में सचिव तेंदुलकर ने पाकिस्तान के लिए फील्डिंग की थी।

❋ विश्व में भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जिसमे कबड्डी खेल प्रतियोगिताओं में स्वर्ण पदक और चैंपियनशिप सबसे ज्यादा जीती है।

❋ अब तक सम्पन्न हुए सभी कबड्डी वर्ल्ड कप भारत की राष्ट्रीय कबड्डी टीम ने ही जीते हैं।

❋ विश्व का सबसे पुराना खेल पोलो है। पोलो खेलते समय दिल्ली के बादशाह कुतुबुद्दीन ऐबक कि मौत हुई थी।

❋ पहले तीन क्रिकेट विश्व कप में खिलाड़ियों ने उजली सफेद पोशाकें पहनीं और मैच लाल गेंद से खेली गई।

❋ बांग्लादेश के तल्हा जुबैर सबसे कम उम्र में क्रिकेट विश्व कप खेलनेवाले खिलाड़ी हैं। वर्ष २००३ के विश्व कप में

वे शामिल हुए थे और उस समय उनकी उम्र थी १७ वर्ष और सात दिन।

❋ अभी तक दो खिलाड़ी ऐसे हुए हैं, जिन्होंने दो अलग-अलग देशों की ओर से क्रिकेट विश्व कप के मैच खेले हैं। एंडरसन कमिंस ने वर्ष १९९२ में वेस्टइंडीज की ओर से और वर्ष २००७ में कनाडा की ओर से विश्व कप खेला है। उनके पहले कैपलर वेसल्स ने वर्ष १९८३ में ऑस्ट्रेलिया की ओर से और १९९२ में दक्षिण अफ्रीका की ओर से विश्व कप के मैच खेले। ग्रैम हिक ने भी वर्ष १९९२, १९९६ और १९९९ में इंग्लैंड की आरे से विश्व कप में हिस्सा लिया। वैसे १९८३ के विश्व कप में वे जिम्बाब्वे की टीम में शामिल थे, लेकिन कोई मैच नहीं खेल पाए।

❋ विश्व कप क्रिकेट में टेस्ट मैच न खेलनेवाले देशों में सबसे बेहतरीन रिकॉर्ड केनिया के नाम है। केनिया ने वर्ष २००३ के विश्व कप के सेमी फाइनल तक जगह बनाई थी।

❋ इंग्लैंड के डेनिस एमिस के नाम क्रिकेट विश्व कप में पहला शतक लगाने का रिकॉर्ड है। वर्ष १९७५ के विश्व कप में भारत के खिलाफ उन्होंने १३७ रनों की पारी खेली थी।

❋ विश्व का सबसे लोकप्रिय खेल फुटबॉल है।

❋ दिमाग तेज करनेवाला खेल टिक टैक टो- यह खेल काफी पुराना है। इस खेल की शुरुआत १२वीं शताब्दी में हुई थी। इसे एक बार में २ लोग खेल सकते हैं। इसमें दो सीधी ओर दो खड़ी लाइनें खींचकर इसे ९ खानों में बाँट दिया जाता है। इसमें एक खिलाडी एक्स बनाता है तो दूसरे खिलाड़ी को ओ बनाना होता हे। जो खिलाड़ी सबसे पहले तिरछे, सीधे या खड़े तीन खानों में अपने आकार बना देता है वह विजयी होता है।

❋ क्रिकेट विश्व कप में सबसे ज्यादा बार शून्य पर आउट होने का रिकॉर्ड न्यूजीलैंड के नाथन एस्टल और एजाज अहमद के नाम पर है। दोनों पाँच-पाँच बार शून्य पर आउट हो चुके हैं। एक ही विश्व कप में सबसे ज्यादा शून्य पर आउट होने का रिकॉर्ड दक्षिण अफ्रीका के एबी डी वेलियर्स के नाम है, जो एक ही विश्व कप में चार बार आउट हो चुके हैं।

❋ भारत के रेहान व रिचा मिश्रा का नाम तैराकी (स्विमिंग) खेल से जुड़ा है।

❋ अमेरिका में ९ फरवरी १९८० को लैंग मार्टिन ने गोल्फ की सात गेंदों को बिना किसी चिपकाने वाले पदार्थ की सहायता से एक-दूसरे को ऊपर खड़ा करके दिखाया था।

❋ अमेरिका के एक १५ वर्षीय किशोर जॉन सेन ने मई १९८४ में ताश के मानक पत्तों से ६८ मंजिल का ९.७३ मीटर ऊंचा घर बनाया था।

❋ फ्रांस के एलां ज्यां प्रीयू ने ६ फरवरी १९७७ को पेरिसर के निकट मॉटलेहरी में मोटरसाइकिल से १६ बसों को छलांग लगाकर दिखाया था।

❋ होपमेन कप का संबंध टेनिस से है।

❋ लंदन ओलंपिक २०१२ का समापन, भारत को ६ पदक

लंदन ओलंपिक २०१२ - वर्ष २०१२ के ओलंपिक का आयोजन २७ जुलाई से १२ अगस्त २०१२ तक लंदन में किया गया। तीसरी बार ओलंपिक की मेजबानी करनेवाले एकमात्र शहर लंदन में हुए इन खेलों में २०४ देशों के १०५०० खिलाड़ियों ने २६ मुख्य खेलों की ३०२ स्पर्धाओं में भाग लिया। इससे पूर्व लंदन में ओलंपिक खेल दो बार १९०८ और

१९४८ में आयोजित हो चुके हैं। ६ अप्रैल १८९६ में पहली बार आधुनिक ओलंपिक खेलों का आयोजन ग्रीस की राजधानी एथेंस में किया गया था।

लंदन ओलंपिक २०१२ की विशेषताएं सउदी अरब, कतर और ब्रनेइ की महिला खिलाड़ियों ने पहली बार ओलंपिक में हिस्सा लिया। दक्षिण अफ्रीका के आस्कर पिस्टोरियस ने कार्बन फाइबर ब्लेड पहनकर ४०० मीटर रिले में भाग लिया।

ओलंपिक खेलों के इतिहास में वर्ष २०१२ के लंदन ओलंपिक में पहली बार महिला मुक्केबाजी प्रतियोगिता को शामिल किया गया।

जमैका के धावक उसैन बोल्ट ने १०० मीटर दौड़ और २०० मीटर दौड़ा स्पर्धा में स्वर्ण पदक जीता। वर्ष १९७६ के बाद से ओलंपिक के इतिहास में ऐसा पहली बार हुआ है जब किसी खिलाड़ी ने लगातार दो ओलंपिक खेलों में दो ऐथलेटिक स्पर्धा का खिताब जीता हो। इससे पूर्व फिनलैंड के धावक लासे वीरेन ने साल १९७२ और १९७६ ओलंपिक खेलों की ५ हजार मीटर और १० हजार मीटर स्पर्धा में खिताब जीता था।

अमेरिका के तैराक माइकल फेल्प्स ने ४ अगस्त २०१२ को तैराकी से सन्यास ले लिया। माइकल फेल्प्स लंदन ओलंपिक २०१२ में अपना १८वां स्वर्ण पदक जीतने के साथ ही ओलंपिक खेलों में सबसे अधिक स्वर्ण पदक जीतनेवाले खिलाड़ी भी बने। सन्यास के समय माइकल फेल्प्स ने ओलंपिक खेलों में कुल २२ पदक जीते। माइकल फेल्प्स ने लंदन ओलंपिक २०१२ में भी अन्य सभी तैराकों से ज्यादा पदक (चार स्वर्ण और दो रजत पदक) जीते।

✻ दुनिया का सबसे बड़ा फ्लोटिंग स्टेडियम- द फ्लोट एच मरिना बे, सिंगापुर- सिंगापुर के द फ्लोट एच मरिना बे को दुनिया का सबसे बड़ा फ्लोटिंग फुटबॉल स्टेडियम कहा जाता है। लोगों के बैठने का बंदोबस्त सड़क की दूसरी तरफ किया गया है। स्टेडियम और ग्राउंड के बीच में से मुख्य सड़क गुजरती है। वहीं, फ्लोटिंग ग्राउंड पिच साउथ थाईलैंड के को पनयी मुस्लिम स्टिल्ट विलेज में स्थित है।

✻ डिपार्टमेंटल स्टोर की छत पर फुटबॉल मैच- एडिडास फुटसल पार्क, टोक्यो- टोयोको डिपार्टमेंट स्टोर की छत पर स्थित द एडिहास फुटबॉल पार्क है ये। यहां पर फुटबॉल खेलते हुए शहर का खूबूसरत नजारा देखने को मिलता है। वहीं, ब्राजील के रियो डी जनेरियो स्थित अ कम्युनिटी फुटबॉल स्टेडियम की लोकेशन बिल्कुल अलग है।

✻ ला पाका के बीच बना स्टेडियम- ला पाका का इस्टेडियो हरनेंडो साइल्स दुनिया का सबसे ऊंचाई पर बना नेशनल फुटबॉल स्टेडियम है। ये शहर के बीचो-बीच स्थित है। चारों तरफ बनी ऊंची-ऊंची इमारतों और घरों के बीच में फुटबॉल खेलने का अलग अहसास होता है। लोग अपने घरों से मैच का आनंद उठाते है। यहां पर इंटेंस हाई एल्टीट्यूड होने के कारण फीफा ने बोलिविया टीम का इस स्टेडियम में खेलने से मना कर दिया था।

✻ ओटमर हिटकाफेल्ड स्टेडियम, स्विटजरलैंड- ये स्टेडियम समुद्र से दो हजार मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। इतनी ऊंचाई पर होने के कारण ये यूरोप का सबसे ऊंचा ग्राउंड है। आसपास पहाड़ होने के कारण ये यूरोप का सबसे ऊंचा ग्राउंड है। आस-पास पहाड़ होने के कारण यहां फुटबॉल खेलने का अलग अनुभव मिलता है। ये स्टेडियम पूरे सालभर खुला रहता है।

✻ प्राग का एक्स्ट्राहींव स्टेडियम विश्व का सबसे बड़ा स्टेडियम है।

✻ भारत ने ओलिम्पिक में ८ स्वर्ण पदक जीते हैं जिनमें से ७ हॉकी में जबकि १ अभिनव बिंद्रा ने शूटिंग में जीता।